PRITHVIRAJ RASO

G. K. V. HARDWAR

PRITHVIRAJ RASO 1907

G. K. V. HARDWAR

PRITHVIRAJ RASO 1907

G. K. V. HARDWAR

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६९
2 II

४९५२९

पुस्तकालय
गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
विषय संख्या ६९/2 II आगत नं० ४९५२९
लेखक
शीर्षक

दिनांक	सदस्य संख्या	दिनांक	सदस्य संख्या

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय
कृपया पुस्तक के ऊपर कोई निशान आदि न लगायें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

वर्ग संख्या 69/2ZZ आगत संख्या 89429

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा 50 पैसे प्रति दिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ri-Pracharini Granthmala Series No. 4-.9

IE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

BY

nlal *Vishnulal Pandia, Radha Kishna Das*

AND

Syam Sundar Das, B. A.

CANTOS XXIX and XXXVI.

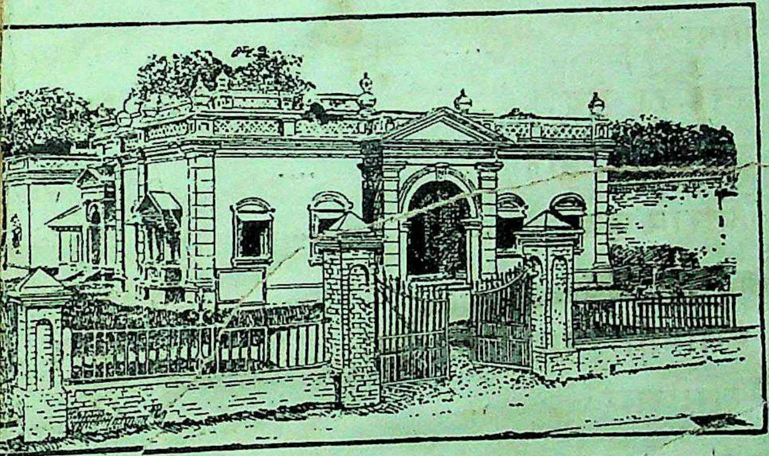

महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या, राधाकृष्णदास

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

पर्व्व २९ से ३६ तक।

CHECKED 197

BA PRINTING WORKS, AND PUBL HED BY THE

PRACHARINI SABHA, BENARES.

1907.

h 1907. [Price Re. 1-4.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३४८२८

…ी लड़ाई रो प्रस्ताव लिख्यते।

(उन्तीसवां समय।)

…हज़ार सवार लेकर दिल्ली का प्रबन्ध कैमास
…र शिकार खेलने गया, यह समाचार
ग़ज़नी में पहुंचा।

…प्रथिराज। अवनि आषेटक [१]षिल्लय॥
…असवार॥ जाइ लग्गा धर ढिल्लय॥
…तिसाह। रहे पेसोर [२]सुथनाय॥
…मत। दिली कैमास सु [३]जानय॥
…य प्रथिराज बर। गज्जन वै धर धूसियै॥
…लेस बर। सुभर सरस ढिग सुभ्भियै॥ छं०॥ १॥

…ज़नी में शाह को समाचार दिया कि पृथ्वीराज
…साथ शिकार खेलने को निकला

…ान की। उट्ट चढ़े असवार॥
…जै तषत। दिसि गज्जनै पुकार॥ छं०॥ …
…त पवँग। है गै नर भर भार॥
…षेट चढ़ि। कुहकबान हथनारि॥ छं०॥
…र नृप। सहस सट्ठि सुभ बाज॥
…गल ग्रज्जै अग्राज॥ छं०॥

…-धरत्तिव (३) ए. कृ. को.-मत्तिय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहाबुद्दीन के भेजे हुए गुप्त चर ने पृथ्वीराज के शि खेलने का समाचार लेकर ग़ज़नी में जाहिर किया।

कवित्त ॥ गोरी पठए दूत। चले च्यारों चतुरन्नर ॥
लीय षबरि प्रथिराज। चले पच्छे गज्जन धर ॥
किय सलाम जब दूत। तवहि तत्तार सु बुझ्झय ॥
कहा करंत दिल्लेस। चढ़त गिरबर धर धुज्जिय ॥
सँग [1]सत्त षट्ट सामंत चलि। तीन पाव लष्षह तुरी ॥
अनि सूर बीर नरवर सकल। उड़ी षेह धर उप्फरी ॥ छं
आषेटक दिन रमय। संग स्वानं घन चीते ॥
नावक पावक बिपुल। जक्कि दिन जामह जीते ॥
सहस तुरी बघ्घह सु। संत मेघा कलि कंठिय ॥
सीहगोस पुच्छिय सु। लंब सिरषां सिर [2]पुट्ठिय ॥
जुर्रा [3]रु बाज कूही गुहा। धानुक्की दारू धरा ॥
वहु काल भाल वदकं बिला। जम भय तव जित्तिय धरा ॥

सुलतान ने प्रतिज्ञा की कि जब मैं पृथ्वीराज को लूंगा तभी हाथ में तसबीह (माला) लूंगा।

रमै राज आषेट। सत्त एकल बल भंजै ॥
पंच पथ्थ परिगाह। रंग अप्पन मन रंजै ॥
सहस एक बाजित्र। सूर किरनह संपेषै ॥
सुनि गोरी साहाब। दाह दिल महन बिसेषै ॥
जित्तौंब जब्ब प्रथिराज कों। तब तसबी कर मांड्हौं ॥
टामंक सद्द नद्दह करों। जुगति साह तब [4]छंडिहौं ॥ छं

...रासान, रूम, हबश और बलख आदि देशों में सुल... सहायता के लिये पत्र भेजना।

(१) कृ. को. ए.-सित्त। (२) मो. को. कृ.-पुच्छिय।
(३) ए. कृ. को.-जु। (४) मो.-ठंडिहौं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कागद फटे। पेसंगी षुरसान॥
अरु बलक में। फट्टे पहु अप्पान॥ छं०॥ ८॥

...ा लिए सुलतान का पृथ्वीराज की ओर आना ...का यह समाचार पृथ्वीराज को देना।

...ोह सज्जंत। लष्ष पंचह मिलि पष्षर॥
...रि षैर। गुरज धारी लष गष्षर॥
...रह कूच। आइ गिरवान सपत्तौ॥
...दिस। जाम कर चय दिन वित्तौ॥
...ी प्रथिराज न्रप। तहां षबरि कहि दूत सब॥
...ह है गै सुभर। सजि आयौ उप्पर सु अप॥ छं०॥ ९॥

...रविवार को दो पहर के समय पृथ्वीराज ने ...किया और वह घग्घर नदी पहुंचा।

...वि तीज। सेत पष्षह कल चंदह॥
...मध्यान। चढ्यौ प्रथिराज नरिंदह॥
...हिल्लोर। भार सेसह करि भग्गिय॥
...त सकज्ज। नह सुर [1]अंमर जग्गिय॥
...र बंधे घटा। सिलह बीज सिलकावलिय॥
...ह सहनाइ सुर। नदि घग्घर मेलान दिय॥ छं०॥ १०॥

...बुद्दीन की सेना के कूच का वर्णन।

...ुर उप्परह। पैसंगी पतिसाह॥
...दल प्रबल। भग्गे राह विराह॥ छं०॥ ११॥
...हां देषिये। घंटा रव गजराज॥
...रजि। पष्षर सष्षर साज॥ छं०॥ १२॥
...न सब। पान व्यूह बर षेत॥
...मैं। छच धऱ्यौ सिर जैत॥ छं०॥ १३॥

...। (२) ए.-पापीह। (३) क.-पच्छांहीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुत्र टामंक सु दिसि बिदिसि। हुत्र संनाह सनाह ॥
हुत्र हलोहल सुब्भरम। दोज दिन इक राह ॥ छं० ॥ १४

सेना का वर्णन।

चोटक ॥ हुत्र सद्द सु सद्दह नद्द भरं। घन घेरिक कीय सु फौज व
लष लष्ष मिले दल संमिलयं। नर भद्दव बाहल संमिलयं।
छं० ॥ १५

सु अगें हयनारि अपार सजं। तिन देषत काइर दूरि भजं
तिन पिठ्ठ हजार उमत्त चले। छह रित्त [1]झरंत करी तिहलें
छं० ॥ १६

तिन पिठ्ठह फौज गहब्बरयं। धरि गोरिय मुठ्ठ नरं धरियं ॥
कमनैंत अभूल सु लष्ष लियं। तिन मध्य ततारह छच दियं
छं० ॥ १७

लष दोय गुरज्ज स गष्षरियं। षुरसान दियं दल पष्षरियं
बलकी उमराव सु सत्त सयं। निसुरत्तह लष्ष हुकम्म भयं
छं० ॥ १८

षुरसान तनं दल उप्पटयं। मनुं साइर सत्त उलट्ट भयं ॥
[2]जल बानिय [3]पानिय अद्ध सरं। लोहानिय पानिय षेत ष
छं० ॥ १९

हबसी उजबक्क हमीर भरं। कलबानिय रुम्मि अग्ग धरं
सरबानि ऐराकि मुगल्ल कती। बहु जाति अनेक अनेक भ
छं० ॥ २

मुसलमान सेना का व्यूहवद्ध होकर नदी पार कर

कवित्त ॥ फौज बंधि सुरतान। मुष्ष अग्गे तत्तारिय
मधि नायक सुरतान। नील षुरसान सु भज ॥
मोती निसुरति षान। लाल हबसी कोलं
पाचि पीठि रुस्तंम। प्रना बहु भांति अ ॥
मो. को.

(१) ए.-करंत। (२) ए.-जब। (३) मो.-ठंडिह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...इ गोरीस पहुं। बज्जा दस दिसि बज्जिया॥
...भइ उलटी मही। साइर [1]अंबु गरज्जिया॥ छं० ॥ २१॥

...ज ने भी अपनी सेना को सज्जित कर ...चामण्डराय को आगे किया।

...फौजह रची। दियौ जैत सिर छच॥
...अग्गै भयौ। मनों सु गिरवर गत्त॥ छं० ॥ २२॥

...अपनी सेना की गरुड़व्यूहाकार रचना की।

...सामंत। गरुड़व्यूहं रचि गढ्ढिय॥
...थिराज ...चंच चावंड सु गढ्ढिय॥
...ताइ ...इ गोइंद सु ठढ्ढिय॥
...ौह ...पेट पम्मारह पढ्ढिय॥
...रे। [2]कढे दोइ कलहन्न किय॥
...ल। मानहु अंधकि मार दिय॥ छं० ॥ २३॥

...का सामहना होना। एक हजार मीरों ...कैमास को घेरना।

...धार
...षे। चित्त चावंड चलायौ॥
...भुज। दुहूं भुज भार भलायौ॥
...। धार धारा हर लग्गौ॥
...ाई। भूमि तत्तारह भग्गौ॥
...पंच दुइ। दाहिम्मै किन्नौ दहन॥
...दिन पहिल कै। मच्यौ जुद्ध जानैं महन॥ छं० ॥ २४॥

...का घायल होना। मीरों की वीरता।

...तार। मारि कमनेत प्रहारै॥
...टूक। परे धारन मुहु धारै॥

(२) ए.-कढ्ढे दोई कल कियं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[1]षुर बज्जै षुरतार। चमकि चामंड चलायौ ॥
भरै बथ्थ सिर हथ्थ। एक बहु लष्षन धायौ ॥
जब परै बूंद तब बीर हुअ। सत्त घरी साहस धरै ॥
तिनमा [2]कटक चिबिधी घड़ा। एक एक पग अनुसरै ॥

कैमास का घायल होना और जैतराव का आगे बढ़ कर उसे बचाना।

षान षान आषूंद। अट्ठ सहसं बहु गष्षर ॥
परिय पंति अवनेस। पारि बहु [3]अष्षर गष्षर ॥
[4]हयौ नेज चामंड। बीर दो सहस करै भर ॥
हस्ति एक बिन दंत। तमह तिन मथ्थ सहस कर ॥
दाहिम्मराव मुरछ्यौ पर्यौ। दौर्यौ जै छोहा बलिय ॥
मानों कि अग्ग जज्जर बही। कलि छं० रिन बट का
पष्ष छं० ॥

चावंडराव ने ऐसा घोर युद्ध कि कम्म भ सुल सेना में कहर मच

छं० ॥ १
भयं ॥
धपी [5]सेन सुरतान। [6]मुट्ठि छुट्टी चावंड षेत
मनु कपाट उधर्यौ। कूह फुट्टिय दिसि बिदिसि।
मार मार मुष किन्न। लिन्न चावंड [7]उपारे ॥
परे सेन सुरतान। जाम इक्कह परि धारे ॥
गल बथ्थ घत्त गाढ़ौ ग्रह्यौ। जानि सनेहौं भिंटयौ ॥
चामंडराइ करि वर कहर। गोरी दल बल कुट्टयौ ॥

जैतराव के युद्ध का वर्णन।

जैत राइ जडधार। लियौ कर दंत मुषष कर ॥
परे बज्र सिर धार। मनों सेना सिर उप्पर ॥

(१) ए.-पुर। (२) ए.-कमंध। (३) मो.-परिकर, कृ.-पष्षर। (४) कृ.-पयौ, ए.-भयौ। (५) ... (६) मो.-तुट्ठि। (७) ए.-उपारे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंगाल । मनहु [1]डंडूर रमावै ॥
ोगिनी । डक्क नारद बजावै ॥
ीत गावत इला । तुंबर तंत बजावहीं ॥
ान दिल्लेस बर । [2]मग्ग मग्ग जस गावहीं ॥ छं० ॥ २८ ॥

देख कर सुलतान सिर धुनने लगा, जैतराव
खुरासान खां का तुमुल युद्ध हुआ ।

त पतिसाह । धाह सुनि सेना सथ्थिय ॥
थ्थि मुह धार । परे बथ्थन सों बथ्थिय ॥
जम आहुरै । सूर जुट्टै दोइ घुट्टै ॥
तन जोग । सूर मुंडावलि घुट्टै ॥
ंत अब्बूधनिय । धार धार मुह कट्टिया ॥
ुड दिष्षौ सुन्यौ । दारुन मेछ दबट्टिया ॥ छं० ॥ २९ ॥
न सूरज्ज । हथ्थ चंद्रमा महा सर ॥
र षलमलै । ताहि धर गोरिय सुब्भर ॥
किलकार । सार परमार बजायौ ॥
सुरतान । एक एकह मुष धायौ ॥
धार बुल्यौ प्रहर । तब दौर्यौ पज्जून भर ॥
पोच लष्षह बली । लष्ष एक पाइल सुभर ॥ छं० ॥३०॥

आ । निसुरत खां मारा गया । दोपहर के
ाम पृथ्वीराज की विजय हुई ।

ुह कूहं, बहै सार [4]सारं । चमक्कैं चमक्कैं, करारं सु [4]धारं ॥
नैं, बहै रत्त धारं । सनक्कैं सनक्कैं, बहै बान [5]भारं ॥
छं० ॥ ३१ ॥
ा बहैं सेल भेलं । हलक्कैं हलक्कैं मची ठेल ठेलं ॥
कूसी, सुरत्तान ठानं । बकी जोग माया, सुरं अप्प यानं ॥
छं० ॥ ३२ ॥

ड़ूक । (२) ए.-बग्ग ।
हूक हूकं । (४) ए. कृ. को.-धारं । (९) मो.-धारं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहै चट्ट पट्टं, उघट्टं उलट्टं । कुलट्टा [1]धरै अप्प, अप्पं उह
दडक्कं बजै सथ्थ, मथ्थं सुटट्टं । काडक्कं बजै सैन, सेना सु
छं० ॥ ३३

बहै हथ्थ परमार, सिरदार सारं । परे सेन गोरी, बहै रत्त
पर्यौ षान निसुरत्ति, सेना सहित्तं । हुओ सूर मध्यान, दिष्षे स
छं० ॥ ३४

एक लाख कालंजरों का धावा, कान्ह चौहान के आं पट्टी का खुलना और उसका घोर युद्ध करना ।

कवित्त ॥ कालंजर इक लष्ष । सार सिंधुरह गुड़ावै ॥
मार मार मुष चवै । सिंघ सिंघा मुष धावै ॥
दौरि कन्ह नरनाह । पटी छुट्टी [3]अंषिन पर ॥
हथ्थ लाइ [4]किरवान । रुंड माला किन्निय हर ॥
विहु बाह लष्ष लोहै परिय । आनि करिब्बर दाइ किय ॥
उच्छारि पारि धरि उपरें । कलह कियौ [illegible] उघान किय ॥
छं० ॥ ३५

भुजंगी ॥ छुटी अंषि पट्टी, मनो उग्गि सूरं । गिरे काइ[illegible], सूर बढ्ढे
लियं हथ्थ करि वार, भंजै कपारं । पियै जोगनी पत्र, कीयै
छं० ॥ ३

बहै अच्छरी हथ्थ, अन्नेक सथ्थं । करं सूर संम्हालियै, घ
करै कज्ज साईं, समप्पै सुघट्टं । लियं कन्ह गो[illegible]ी, तनं म
छं० ॥

कालञ्जर के टूटते ही सुलतान की सेना का भागना चौहान का कमान डाल कर सुलतान को पकड़

कवित्त ॥ कालंजर जब परिय । भगिय सेना पतिसाहि[illegible]र। ॥
पंच फौज एकट्ठ । कन्ह करवारि [5]सम्हारिय ॥

(१) ए.-धरा । (२) मो.-पारं । (३) ए.-अं[illegible]नि । (४) ए. कृ. को.-करिवार । (५) कृ.-सम्[illegible] माहिय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यौ पतिसाहि। लष्ष लोहा हम मान्यौ ॥
कन्ह पतिसाह को। लोहानौ सथ्थैं दियौ ॥
सहस सथ्थें चलें। कर सिर कन्ह इतौ कियौ ॥छं०॥४४॥

मेर से बादशाह को दिल्ली लाना। शाह का एक मणि और राजा को अपनी तलवार नजर दे कर घर जाना।

र तब कन्ह। गयौ अजमेर दुरग्गह ॥
ह पतिसाह। बत्त सब जंपी अप्पह ॥
गजनेस। दई इक लाल सहित मनि ॥
पतिसाह। गयौ दिल्ली सु ततच्छन ॥
करिय सामंत सब। तेग दई दिल्लेस बर ॥
करी दौड़ देय करि। [1]साहि चलायौ अप्प घर ॥
छं० ॥ ४५ ॥

कुरान बीच में दे कर कसम खाना कि अब कभी आप से विग्रह न करूंगा।

म गजनेस। करिय नव निह दिल्लेसर ॥
हम प्रीति। बरष मन सत्तह केसर ॥
सौंम। बीच पौरान कुरानं ॥
तुम अवे। तबै तुम कढ़ियौ प्रानं ॥
टक तौ मैं अवर। मुसलमान नाही धरौं ॥
सु प्रीत चलिहै बहुत। हूंन अबै ऐसी करौं ॥छं० ॥४६॥

न के अटक पार पहुंचने पर उधर से तार खां का आकर मिलना।

सुरतान। दियौ लोहानौ सथ्थैं ॥
अनुसार। काल छुट्यौ सें हथ्थै ॥
म्होलान। अटक उत्तरि इन पारं ॥

हि, चाह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोवन पथ मेलान। सहस सम्हे असवारं ॥
निसुरत्ति सुतन दरिया सुतन। आइ कियौ सल्लाम तहां ॥
आजान बाह महिमान किय। चल्यौ अप्पगज्जन रहां ॥छं०

रयसल को दूतों का समाचार देना उसका सेना ले अटक उतर रास्ते में रोकना।

रयसल हरी नवट्ट। सहस अट्ठारह सथ्थें ॥
हेरौ करि पतसाह। पुले लग्गा इन पथ्थें ॥
दूत च्यार अनुसार। कटक देष्षौ असवारह ॥
कह्यौ चरन सत्र सथ्थ। सहस दोइ सेना सारह ॥
तिन बार बज्जि चंबाल बहु। सिलह सज्जि सिरदार सहु
उत्तऱ्यौ कटक छोरिय अटक। नद्दि हुऔ उग्गंत पहु ॥छं

गाथा ॥ बज्जै पुठि चंबालं। हथ्थिय नेजं सु उप्परं फहरं ॥
जानि समुद्द उहालं। किय गजनेस हुकमयं मीरं ॥ छं०

लोहाना का शहाबुद्दीन को आगे भेज कर आ रयसल का मुकाबला करना।

कवित्त ॥ कह्यौ साह लोहान। कोंन बज्जा बज्जाए ॥
दौरि दूत तिन बेर। धनी पछिबानह धाए ॥
कूच कूच पर कूच। कौन पछिवान धनी कहि ॥
तब जान्यौ रयसल्ल। सेन आजान बऱ्यौ सह ॥
पतिसाह चलौ हौं पछि रहौं। सहस डेढ़ असवार दिय
बंधेव फौज लोहान बर। दुहूं फौज टामकं किय ॥ छं०

सबेरा होते ही रयसल्ल आ पहुंचा, लोहाना से युद्ध हो

अरुन किरन परसंत। आइ पहुंच्यौ रयसल्लं ॥
बज्जै वान बिहंग। जानि जुट्टा दोइ मल्लं ॥
संमाही आजान। तेग मानहु छबि दिठ्ठिय ॥
जानि सिषर मझि बीज। कंध रैसल्लह बुट्ठिय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोहान तनी बज्जै लहरि । कोउ हल्लै कोउ उत्तरै ॥
परनाल रुधिर चल्लै प्रबल । एक घाव एकह मरै ॥ छं० ॥ ५१ ॥
दूहा ॥ मुह मुह चमकै दामिनी । लोह बज्यौ लोहान ॥
इक उप्पर इक इक्क तर । लुथ्थें लुथ्थ समान ॥ छं० ॥ ५२ ॥

रयसल्ल का मारा जाना सुलतान का निर्भय ग़ज़नी पहुंचना ।

पयौ लुथ्थि रयसल्ल तहं । ढुंढि षेत लोहान ॥
सुबर साह गोरी न्निभय । गयौ सु गज्जन थान ॥ छं० ॥ ५३ ॥

तातार खां खुरासान खां आदि मुसाहबों का सेना सहित सुलतान से आकर मिलना और बहुत कुछ न्योछावर करना ।

कवित्त ॥ तत्तारिय षुरसान । सुतन गोरी पय लग्गा ॥
न्योछावर करि पैर । बहुत मनसा भय भग्गा ॥
लष्ष एक असवार । मिल्यौ गोरी दल पष्षर ॥
लष्ष भये दरवेस । आइ पइ लग्गे गष्षर ॥
उच्छाह भयौ गज्जन इला । गयौ मझ्झि गोरी धनिय ॥
दरबार भीर भीरन्न घन । मिलत आइ अप अप्पनिय ॥ छं० ॥ ५४ ॥

दस दिन लोहाना वहां रहा, शाह ने सात हाथी और पचास घोड़े लोहाना को दिए और पृथ्वीराज का दण्ड दिया ।

डेरा दिय लोहान । करिय मनुहारि रोज दस ॥
करिय सत्त आजान । तुरिय पंचास अप्प बस ॥
इह दिन्नौ लोहान । बियौ भेज्यौ नृप राजं ॥
लादे दाइ हजार । सत्त सै तोला साजं ॥
इक इक तुरी हथ्थी सु इक । सामंतन दीनौं सबै ॥
मुह करिय कित्ति अनेक बिधि । सुबर सूर फेरिय जबै ॥ छं० ॥ ५५ ॥

लोहाना बिदा होकर दिल्ली की ओर चला । पृथ्वीराज ने एक एक घोड़ा और एक एक हाथी एक एक सरदारों को दिया और सब सोना चित्तौर भेज दी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीष दई लोहान। चल्यौ दिल्लीय पंथानं ॥
संग सहस असवार। अप्प रिध वासव यानं ॥
दिल्लीपति सामंत। कली छत्तीसह दष्षै ॥
मिल्यौ बाह आजान। बत्त सुरतान सु अष्षै ॥
इक इक्क तुरिय हथ्थी सु इक। सामंतन पठए धरैं॥
सोवन्न रासि रंजक षहर। मुक्कलियैं चित्रँगपुरैं॥ छं०॥ ५६॥

चन्द कवि ने चित्तौर में आकर सब सेना आदि रावल की भेट की, रावल ने चन्द का बड़ा सम्मान किया।

गढ़ [1]चीतौड़ [2]दुरग्ग। भट्ट पठयौ परिमानं॥
लादे सित्त सुरंग। सित्त लै [3]तुला प्रमानं॥
दोइ हथ्थी मय मत्त। सत्त हैबर कुल राकिय॥
छत्र लियौ पतिसाह। जड़ित मनि मानिक साकिय॥
लै चंद चल्यौ चित्तोर गढ़। जाइ समप्पौ रावरह॥
बहु दान दियौ रावर समर। चल्यौ भट्ट अप्पन घरह॥छं०॥५७॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके घघर नदी की लड़ाई कन्ह पतिसाह ग्रहनं नाम ओगनतीसमो प्रस्ताव संपूरणम् ॥ २९ ॥

(१) ए. कृ. को.-चित्रकोट। (२) ए. कृ. को.-दुरगा। (३) ए. कृ. को.-तोल, तोला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ करनाटी पात्र समयौ लिख्यते ।

(तीसवां समय ।)

दूतों का दिल्ली का हाल समझ कर जैचंद से जाकर कहना।

दूहा ॥ दूत चरित दिल्ली तनौ । देषि गयौ [1]कनवज्ज ॥
चढ़त पंग सम्हौ मिल्यौ । सुबर बीर कमधज्ज ॥ छं० ॥ १ ॥
करि षलपट्ट सुरतान सौं । दल भग्गै सु विहान ॥
अब करनाटी देस पर । चढ़ि चल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ २ ॥

यद्दव की सेना साहित पृथ्वीराज का दक्षिण पर चढ़ाई करना। करनाटक देश के राजा का कर्नाटकी नामक वेश्या का पृथ्वीराज को नज़र करके संधि करना ।

कवित्त ॥ चढ्यौ सुबर चहुआन । बीर कन्नाट देस पर ॥
मिलि जद्दव बर सेन । तारि कढ्यौ सु तुंग नर ॥
दष्षिन दछिन नरिंद । सबै प्रथिराज सु गाही ॥
तिन राजन इक पाच । पठय नाइक घर थाही ॥
बर बीर जुद्ध कमधज्ज करि । भीर भगी बर बीर [2]अचि ॥
तिहि दिनां वीर पज्जून पर। षग्ग मार बोहिथ्थ [3]मचि ॥ छं० ॥ ३ ॥

करनाटकी को लेकर पृथ्वीराज का दिल्ली लौट आना।

दूहा ॥ लै आयौ नाइक्क सथ । करनाटी प्रथिराज ॥
जच तच एकठ भये । [4]सबै साज संमाज ॥ छं० ॥ ४ ॥

संवत् ११४१ में दक्षिण विजय करके पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर करनाटकी को संगीतकला में अत्यंत विद्वान केल्हन नायक को सौंप देना ।

(१) ए.- कसवज्ज । (२) ए. कृ. को.-आगि ।
(३) ए. कृ. को.-मार्गै । (४) मो.-सब कमधज्जहि साज ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ संवत इकतालीस। दिवस प्रथिराज राज भर ॥
अति सामंत उभार। आइ अति भ्रम्म ढिल्लि धर ॥
दिय थानक नाइक्क। नाम केल्हन गुन देयं ॥
अति संगीत सु बिद्य। कला संजुत्त सुनेयं ॥
ता सथ्थ चीय रतिरूव तन। बर चवद्द चातुर सकल ॥
दुव तीस सु लच्छित मति विमल। अति मति अगनित [1]बिद्यबल ॥
छं० ॥ ५ ॥

करनाटकी के नृत्य गान की प्रशंशा सुन कर पृथ्वीराज का उस के लिये कामातुर होना।

बाघा ॥ संभलि बत्त सुयं प्रथिराजं। अति अंगनि विद्याबल साजं ॥
कला सपूरन पूरन चंदं। पूरन हाटक बरन बिबंदं ॥ छं० ॥ ६ ॥
बानी जेम बीन कल सारं। स्वर जनु पंचम मझ्झ गुंजारं ॥
नष सिष रूप रूपगति उत्तं। सुभ सामंत प्रसंस प्रभुत्तं ॥
छं० ॥ ७ ॥
दरसन ताहि अवर नन दिष्षै। बासन महल मंझ तन दिष्षै ॥
सुनि सुनि रूप कला गुन सुंदरि। जग्यौ काम न्रपति [2]उर अंदरि ॥
॥ छं० ॥ ८ ॥
अति सनमान सु नाइक दीनौ। बहुर प्रसंसन साधक कीनौ ॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज की अंतरंग सभा का वर्णन।

दुहा ॥ संझ समय अंदर महल। किय सुराज ग्रह धाम ॥
अप्प बयट्ठौ राज तहँ। अनत सजग्गित काम ॥ छं० ॥ १० ॥

पृथ्वीराज के सभामंडप की प्रशंसा वर्णन।

नराज ॥ जयं सु अत्ति जग्गियं। सु धाम तेज तग्गियं ॥
सजे सुभाल आसनं। अमोल रोहि बासनं ॥ छं० ॥ ११ ॥

(१) ए.-वैद्य। (२) मो.-अति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सु दीप साम सोभयं। सुगंध गंध ओभयं ॥
कपूर पूर जंभरं। मृगज्ज बास अंगरं ॥ छं० ॥ १२ ॥
सु सज्जि सिंघ आसनं। समोल रोहि वासनं ॥
कनक्क छच दंडयं। सु रंग रंग मंडयं॥ छं० ॥ १३ ॥
अबीर [1]जष्ष कर्दमं। सरोहि ग्रेह सुर्दमं ॥
अभूत साष लोभयं। अबीर भूर ओभयं ॥ छं० ॥ १४ ॥
अयास धूम धोमरं। प्रसार वास ओमरं ॥
प्रसून ब्रन्न वन्नयं। स भूषनं स भ्रम्मयं॥ छं० ॥ १५ ॥
घनं सु सार सम्मरं। अभूत वास अम्मरं ॥
भुअं कुसम्म केसरं। सुरं अभूत जे सुरं ॥ छं० ॥ १६ ॥
तहां सु राज आसनं। सरोहि सिंघ सासनं ॥
सुपाय अंग रष्षियं। कला जु काम लष्षियं॥ छं० ॥ १७ ॥
प्रवीन भाव पायसं। विचित्र चित्र पासयं ॥
भवंति क्रंति भूषनं। सुबुद्धियं विदूषनं ॥ छं० ॥ १८ ॥
प्रसून [2]विद्धि बासनं। अभूत [3]सिद्धि आसनं ॥
बरष्ष षोडसं समं। अदोस रूपयं [4]रमं ॥ छं० ॥ १९ ॥
कला विग्यान विद्वयं। सु पास भूप सिद्धयं ॥
सिंगार सार सारयं। अभूषनं स धारयं॥ छं० ॥ २० ॥
ग्रहे विदून चामरं। सु विंभ्र राज सामरं ॥
धरंत कव्वि पन्नयं। सु कंठ थान सन्नयं॥ छं० ॥ २१ ॥
सु घन्नसार पानयं। सुगंध विद्व मानयं ॥
करें सु [5]द्रप्पकं करं। सु सष्षि [6]अद्धि संमरं ॥ छं० ॥ २२ ॥
शृंगार ग्रेह सोमयं। अभूत दुत्ति ओमयं ॥
समोभ धामयं सजं। सुबास वासवं लजं ॥ छं० ॥ २३ ॥

पृथ्वीराज की उक्त सभा में उपस्थित सभासदों के नाम।

(१) कृ. ए.-दच्छ, जच्छ, जच्छ।
(२) मो.-विद्ध। (३) मो.-मद्धि। (४) को. ए.-समं।
(५) कृ.-दर्प, ए.-दप्प। (६) मो.-अठ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ रचि धाम अभिराम। राज हरि थान वयट्ठौ ॥
दिपत [1]दीह सुभ लीह। तेज उब्भर तप जिट्ठौ ॥
बोलि [2]चंद चंडीस। बोलि जद्दव रा जामं ॥
निडुर बोलि कमधज्ज। अत्ति जामनि बल सामं ॥
बलिभद्र बोलि कूरंभ भर। लोहानौ आजानभुत्र ॥
बैठक्क बैठि आसन्न सजि। ताप सतप्पै तेज धुत्र ॥ छं० ॥ २४ ॥

कल्हन नट का करनाटी सहित सभा में आना और पृथ्वीराज का उससे करनाटी की शिक्षा के विषय में पूछना।

बोल ताम नाइक्क। सथ्थ सथ्थह सब साजं ॥
बोलि पात्र कर्नाटि। बैठि गानं बर वाजं ॥
नाटक भेद निबंध। बूझि राजन बर बत्तं ॥
कवन कला क्रत पात्र। कहौ नाइक्क निज सत्तं ॥
नाइक्क कहै प्रथिराज सुनि। एह पात्र देष्यो सु पय ॥
इह रूप रंग जोवन सु वय। कला मनोहर चिंति मथ ॥ छं० ॥ २५ ॥

कविचंद का कहना कि ऐसा नाटक खेलो जिस में निढ्ढुर राय प्रसन्न हों।

पद्धरी ॥ उच्चर्यौ ताम कविचंद बानि। नायक्क अहोमति मरम जानि ॥
सो धरौ कला विचार साज। निढ्ढुरह बयट्ठौ पास राज ॥ छं० ॥ २६ ॥
नाटक्क बिबिध बुझ्झै बिनान। विचार चार सुर तान गान ॥

नाइक का पूछना कि राजा के पास बैठे हुए सुभट ये कौन हैं।

नाइक्क जंपि हो चंद भट्ट। न्रप पास बयट्ठौ को सुभट्ट ॥ छं० ॥ २७ ॥

कविचंद का निढ्ढुरराय का इतिहास कहना।

उच्चर्यौ चंद नायक सरीस। कनवज्ज नाथ जैचंद जीस ॥
ता अनुज बंध बरसिंघ देव। ता सुअन कमध निड्ढुरह एव ॥ छं० ॥ २८ ॥

(१) मो.-देह। (२) कृ.-चंद पुंडिर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नायक्क कहै हय बत्त सच्च । आवन्न केम हुअ दिल्ली तच्च ॥
बरदाइ कहै नायक्क चिंत । आवन्न क्रित्त करन्नमित्त ॥ छं० ॥२९॥
जै सिंघ कियौ तहां उद्ध काज । अति तेज अप्प जैचंद राज ॥
लघु बेस उभय बंधव सरूप । स्रुत थान उभय षेलंत भूप ॥ ३० ॥
आइयौ महल निढ्ढुर समेक । कहि कुमर राज सद्धौ सु एक ॥
उच्चऱ्यौ ताम निढ्ढुरह देव । कर कुमर हंम मिच्छंत सेव ॥३१॥
जयचंद समुष निरषेत ताम । कल [1]कलिय लग्ग चामठ्ठ धाम ॥
करि सभा सु निढ्ढुर आइ ग्रेह । सुष धाम काम बिलसंत देह ॥
॥ छं० ॥ ३२ ॥

निढ्ढुर का शिकार खेलने जाना और प्रधान पुत्र सारंग के बगीचे में गोठ रचना ।

कवित्त ॥ समय एक निढ्ढुर । कमंध आषेट सपत्तौ ॥
बिधि कुरंग दुअ तीन । उभय एकल निज घत्तौ ॥
आइ बग्ग सारंग । सुवन सोवंत प्रधानह ॥
करिय गोठि उच्चार । सथ्य संभरे सवानह ॥
ता अग्ग गोठि सारंग सजि । घन पकवान असान रस ॥
ग्रिह गये वाग आगम सकल । लहयौ निढ्ढुर भेव तस ॥छं०॥३३॥

यह खबर सुन कर उसी समय सारंग का वहां आकर निढ्ढुर के रंग में भंग करना ।

मुरिल्ल ॥ निढ्ढुर ताम [2]गोठिलिय अप्पं । तर सेवक सारंग सु दप्पं ॥
घन पक्वान सरस गति सारं । रच्चे मंस बिबह बिसवारं ॥छं० ॥३४॥
करि क्रीडा सो गोठि अहारे । [3]चपतौ सथ्य सबै बिधि भारे ॥
सुमनह द्राव सुमन सब सोहै । कासमीर चंदन सुर रोहै ॥छं०॥३५॥
आहारे तंमोल [4]सुगंधं । मादक आइ अग्गि जहां जग्गं ॥
सुनी श्रवन सारंग सुवत्तं । आयौ आतुर [5]वग्ग तुरत्तं ॥छं०॥३६॥

(१) ए. कृ. को.-मलिय । (२) ए.-गोगिय । (३) मो.-नृप तौ ।
(४) मो.-सुरंग । (५) मो.-बेगि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[1]कठिन वाच निढ्ढुर सम बाचे। तरस्यौ निढ्ढुर तामँत राचे॥
गयौ अग्र जैचंद सु रावं। लुट्टी बस्त गोठि मनि सावं॥छं०॥३७॥

निढ्ढुर का जैचंद से सारंग की बुराई करना और जैचंद का सारंग का पक्ष करना।

संभलि वचन कुप्यौ रा पंगं। कलमलि कोप रोस सब अंगं॥
निसा महल निढ्ढुर सँपत्तौ। फेरे मुष जैचंद बिरत्तौ॥छं०॥३८॥
न संग्रह्यौ रस बसि सिर नायौ। निढ्ढुर ताम अप्प ग्रह आयौ॥
सजि सु सथ्थ जुग्गनिपुर आयौ। अति आदर करि पिथ्थ बधायौ॥
॥ छं० ॥ ३९ ॥

यह कथा सुन नायक का प्रसन्न होकर कहना कि मैं ऐसाही नाटय कौशल करूंगा जिससे राजा का चित्त प्रसन्न हो।

दुहा॥ सुनि नाइक हरष्यौ सुमन। धनि धनि बेंन उचार॥
लहै सुविद्या अर्थ गुन। जँ जँ अर्थ उचार॥ छं० ॥ ४० ॥
गाथा॥ राजनीति गति रुवं। गुन संपूर चौस एकंगं॥
जे रंजे रज ध्यानं। सुनि कविराज सब्ब संपूरं॥ छं० ॥ ४१ ॥

राजाओं के स्वभाविक गुणों का वर्णन।

साटक॥ विद्या विनय विवेक [2]वानि विमलं वर्णो कुवेरप्रभा॥
[3]सुबिचारो सु विचक्षणो रु सुमनं सौजन्य सौदंर्य्यता॥
[4]भाग्यं रूप अनूपयं रस रसं संजोग विभ्भोगयं॥
मांगल्यं संपूर सौम्य कलसं जानंत केली कला॥ छं० ॥ ४२ ॥
मृदु तत्वं मृदु गान कंच रसना मर्यादयं मंडनं॥
[5]उद्दायं उद्दार दाव उछहं एते गुना राजयं॥

(१) ए.-कानिक। (२) ए. कृ. को.-मार सलयं, विव्वेक विचारयं।
(३) ए. कृ. को.-विचारं ससु तप्प सोप सुमनं सौजन्य सौभाग्ययं।
(४) ए. कृ. को.-भाग्यं।
(५) ए.-जद्दायं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोयं जान विचार चारु चतुरं विव्वेक विचारयं॥
सोयं [1]नीति सनीत कित्ति अतुलं प्राप्तं जयं [2]जोरयं॥ छं० ॥ ४३॥

दूहा॥ फुनि नाइक जंपै सु नमि। अहो चंद बरदाइ॥
राग विनोदह चौसषट। कहौं सुनौ विधिसाय॥ छं० ॥ ४४ ॥

* दंडमाली॥ दरसन नाद विनोदयं। सुरंबंध न्रत्य समोदयं॥
गीताद्य अधि नव वादयं। अभिलाष अर्थ पदादयं॥ छं० ॥ ४५ ॥
[3]बक्रात जग्यपवीतयं। प्रासन्न प्रभुत प्रनीतयं॥
पंडीत पालक तल्पयं। ते पढ़य तर्क विजल्पयं॥ छं० ॥ ४६ ॥
प्रंमान सरन प्रमोदयं। प्रातापयंच प्रमोदयं॥
प्रारंभ परिछद संग्रहं। निग्राह पुष्टित तुष्टिहं॥ छं० ॥ ४७ ॥
प्रासंस प्रीति स प्रापयं। प्रातिग्र यासु प्रतिष्टयं॥
धीरज्ज धीर जुधं वरं। सो रज्जरव सतं नरं॥ छं० ॥ ४८ ॥

राजा का करनाटी को आने की आज्ञा देना।

दूहा॥ सुनि नायक राजन्न मति। जंपहि दिल्ली नरेस॥
पात्र प्रगट गुन सकल विधि। विद्या भाव विसेस॥ छं० ॥ ४९॥

कर्नाटी का सुर अलाप करना और बाजे बजना।

प्रथम गान सुरतान गुन। वादी नेक विनान॥
पाछें न्रत्य प्रचार भर। प्रगट करहु परिमान॥ छं० ॥ ५० ॥

नाटक का क्रम वर्णन।

भुजंगी॥ तबै बोलियं अप्प नाइकअग्गं। मुषं पात्र आरोह उच्चार जग्गं॥
धरै आप बीना सुरंसाज सारे। सुरं पंच घोरं धरे थान भारे॥
छं० ॥ ५१ ॥
धुनिं रूप रागं सुहानं उपाए। रचे च्यार रागं सुभा सुब्भ भाए॥
गियं गान अप्पं सुरं तंति मानं। रचे मंडली राय आयास थानं॥
छं० ॥ ५२ ॥

(१) मो.-तीन। (२) ए.-को.-चोवरं।
* ए. कृ. को.- में यह छंद गीता मालची नाम से लिखा है।
(३) कृ. ए.-वक्यत, वक्मत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनं सर्ब मोहे अतिं राग रूपं। तनं लग्गए तार आरंग भूपं॥
तनं षेद रोमंच उच्छाह अंगं। बयं विस्मयं बेपथं मोद रंगं॥ छं० ॥ ५३॥
दया दीन चित्तं अभिलाष जग्गं। गुनं रूप रागं जितें चित्त लग्गं॥
नषं सिष्ष जग्यौ तनं मीनकेतं। चढ़ी मत्त बेली चितं पच हेतं॥
छं० ॥ ५४ ॥

कर्नाटी के नाच गान पर प्रसन्न हो कर राजा का नाइक से मूल्य पूछना और नायक का कहना कि आपसे क्या मोल कहूं।

तबै बोलि नाइक्क राजन्न तामं। कहा मोल पाचं कहो द्रव्य नामं॥
कहै नाम नाइक्क पाचं सरीसं। कहा मोल पाचं न्रपं जोग जीसं॥
छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का नाइक को १० मन स्वर्ण देकर वेश्या को महलों में रखना।

मनं सारधं हेम अप्पेव तासं। ग्रिहं रष्षियं अप्प पाचं सुभासं॥
बिसज्जे मिहल्लं करे अप्प उट्ठे। कला काम क्रत्यं निसा पाच तुट्ठे॥
छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज का कर्नाटकी के साथ क्रीड़ा करना और रात दिन सैकड़ों दासियों का उसके पहरे पर रहना।

दुहा ॥ काम कला तुट्ठिय न्रपति। सु ग्रह पवारी द्वार॥
तिन अवास दासी सघन। अह निस रह रषवार॥ ५७॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कर्नाटी पात्र वर्णनं नाम तीसमो प्रस्ताव संपूरणम्॥ ३०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पीपा युद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(एकतीसवां समय ।)

प्रातःकाल होतेही पृथ्वीराज का और चामुंडराय आदि सामंतों का अपने अपने स्थानों पर आकर बैठना और कैमास का आकर राजा के पास बैठना ।

कवित्त ॥ महल भयौ नृप प्रात । आइ सामंत सूर भर ॥
ठट्टा दिसि [1]उच्चरिय । राय चामंड बीर बर ॥
बंभन वास जु राज । [2]कोइ मुक्कलि इन काजं ॥
चावद्दिसि अरि नन्हे । सीम कद्दै नह आजं ॥
कैमास बोलि मंची तहां । मंच लाज जिहिं लाज भर ॥
सिर नाइ आइ बैठे ढिगह । मनो इंद्र ढिग इंद्र नर ॥ छं० ॥ १ ॥

सभा जम जाने पर राज्यकार्य्य के विषय में वार्तालाप होना और उज्जैन और देवास धार इत्यादि पर चढ़ाई होने का मंतव्य होना ।

पद्धरी ॥ बैठे सु राज आरंभ गुझ्झ । पद्धरी छंद बरनैति मझ्झ ॥
बुल्लिय नरिंद जै मत्त धीर । सद्दै सु जुद्ध संग्राम श्रीर ॥ छं० ॥ २ ॥
दिसि मत्त मत्त उज्जैन काम । बंचाइ राज कग्गद सु ताम ॥
सामंत सूर तपि तोन बंधि । आवत्त रोस चलि सेन संधि ॥ छं० ॥ ३ ॥
दिन सुद्ध राज चलियै सु आज । सम बैर बीर बंकान साज ॥
जैचंद सेन दुस्सह प्रमान । षुरसान सैन सुलतान भान ॥ छं० ॥ ४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उत्तरिय ।   (२) ए. कृ. को.-कोदक ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चालुक्क बीर गुज्जर नरेस। क्रित करै जुद्ध करनी विसेस ॥
थल वटिय बीर मभिझय हुजाव। रष्षंति स्त्रूर तिन मध्य आव ॥
छं० ॥ ५ ॥
सब सबर अरी चहुँ दिस नरिंद। तिन मध्य दन्द पृथिराज इन्द॥
सो वरन बीर उज्जेन ठाम। महि मंह काल सुभथान ताम ॥
छं० ॥ ६ ॥
तिन बरन ठाम देवास तीय। संग्राम राज मंडन सु बीय ॥
बंध्यौ सु राज कग्गद प्रमान। धर धनुह धार अर्जुन समान ॥
छं० ॥ ७ ॥

पृथ्वीराज का क्रुद्ध होकर कहना कि इस तुच्छ जीवन में कीर्ति ही सार है।

द्रिग करन धरन धर धरनि पाल। सामंत स्त्रूर तिन मध्य लाल॥
देवास धीय देवास व्याह। मंड्यौ सु राज संभरि उछाह ॥छं०॥८॥
जैचंद करहु अप्पर निधान। कलि काल बत्त चल्लै प्रमान ॥
सा पुरस जीवतं विय प्रकार। संभरै एक कित्ती संसार ॥छं०॥९॥
जीरन सु जुग्ग इह चलै बत्त। संसार सार गल्हां निरत्त ॥
इह काच पिंड [1]संची सु बत्त। जै है सुजोग जोगाधि तत्त ॥छं०॥१०॥
जै है सु भान सब ग्रह प्रकार। दिष्टिये मान सो बिनसि सार ॥
वापी विरष्ष सर मढ प्रमान। मिलिहै सु सर्ब स्रगतिस्न जान ॥
छं० ॥ ११ ॥
छंडो न बीर देवा सु सुष्ष। रष्षौ सुमंत गल्हां [2]पुरुष्ष ॥छं० ॥१२॥

राजा का कहना कि कीर्ति के ही लिये राजा दधीच ने अपनी अस्थि देवताओं को दी। दुर्योधन नें कीर्ति के लिये ही प्राण दिए।

कवित्त ॥ गल्हां काज सु देव। अस्ति दधीच दीय बर ॥
गल्हां काज सरुष्ष। बज्र किन्नौ सु इंद्र जुर ॥

(१) मो.-सच्ची, ए.-पंची। (२) ए. कृ. को.-पुरिष्ष।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गल्हां काज नरिंद । बंस दुरजोध मान रषि ॥
गल्हां काज सु धात । मान अट्टत्ति भूमि लषि ॥
रष्षिहै नरन गल्हां सुबर । गल्हां रषै नृपति उष ॥
जयचंद बंध दल बल सकल । सबर [1]साइ किज्जै सरुष ॥ छं० ॥ १३ ॥

राजा की इस प्रतिज्ञा को सब सामंतों का सिरोधार्य करना ।

दूहा ॥ इह [2]परतग्या नरिँद मन । करै बनै प्रथिराज ॥
सकल सूर सामंत ज्यौं । मुहि अग्या सिरताज ॥ छं० ॥ १४ ॥

सभा में उपस्थित सब सामंतों का बल पराक्रम वर्णन ।

त्रोटक ॥ इति सामँत सूर प्रमान धरं । दरबार बिराजत राज भरं ॥
चढ़ि चच्चर चंद पुंडीर कियं । सोइ देह धरै फिरि आनँदियं ॥
छं० ॥ १५ ॥
नृप लज्ज नृपत्तिय सारँगयं । सभ पुज्जिन सामँत ता बरयं ॥
अततादृय अंग उतंग भरं । सिव सेव कियैं तन फेरि धरं ॥
छं० ॥ १६ ॥
नर निड्ढुर एक नरिंद समं । कनवज्ज उपज्जिय जास जमं ॥
गहिलौत गरिष्ट गोइंद बली । प्रथिराज समान सु देह कली ॥
छं० ॥ १७ ॥
छिति रष्षन छित्ति पजून भरं । तिन पुत्त बली बलिभद्र नरं ॥
परमार सलष्ष अलष्ष गती । तिन पुज्ज न सामत सूर रती ॥
छं० ॥ १८ ॥
कयमास सु मंचिय राज दरं । अरि अंग [3]उछाहन बीर बरं ॥
अचलेस उतंग नरिंद धरं । रन मझ्झ विराजत पंग भरं ॥
छं० ॥ १९ ॥
चावंड नरिंद सु षग्ग बली । नरसिंघ सु दंद अरिंद कली ॥
बर लंगरिराइ उतंग षलं । बय देहिय जानि सुबाहु बलं ॥ छं० ॥ २० ॥

(१) ए. कृ. को.-साइ । (२) ए. कृ. को.-परतं ग्यान । (३) ए. कृ. को.-उछाहन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[1]इक रंग सु अंग करंत रनं। कर पाइ सु अंषय हथ्थ तनं॥
लरि लोह लुहानय कित्ति करं। अरि वाइव धूर ज्यों पत्त [2]ढरं॥
छं० ॥ २१ ॥
भजि भौंह चंदेल सु षेल षगं। धर धूसन भुंमिय जंपि जगं॥
दिवराज सु बग्गरि बंध बियं। जिन कित्तिय जित्ति जगत्त लियं॥
छं० ॥ २२ ॥
उदि उद्दिग बाह पगार बली। हरि तेज ज्यौं रोर फटंत षली॥
नरनाह सु कन्ह का कित्ति करौं। भर भीषम भारथ सुद्धि धरौं॥
छं० ॥ २३ ॥
भय भट्टिय भान जिहान जपै। तिहि नाम सुने अरि अंग कपै॥
सुत नाहर नाहर के क्रमयं। तिन कंकन बंक बियं श्रमयं॥
छं० ॥ २४ ॥
रज राम गुरं षग ध्रम्म बली। जिन कित्ति दिसा दस बढ्ढि चली॥
बड़ गुज्जर राम नरिंद समं। जिन [3]कंदल रुद्धि उठंत भ्रमं॥
छं० ॥ २५ ॥
कविचंद हकारि सु अग्ग लियौ। भर भट्टिय भान भयंक बियौ॥
रघुबंसिय राम सुरंग बली। कनक्क जिन नाम नरिंद कली॥
छं० ॥ २६ ॥
बर राम नरिंद नरिंद समं। तिहि कंदल उट्ठि रुधं सु जमं॥
जिहि वस्त्र सु सस्त्रय अंग करं। घरि द्वै भर उठ्ठिज बूंद भरं॥
छं० ॥ २७ ॥
भगवत्ति अराधन न्याय करै। रघुवंसिय किल्ह नरिंद बरै॥
जिन जित्तिय जाइ पंजाव धरं। ....॥
छं० ॥ २८ ॥
जिन [4]पंडिय रावर जुद्ध जित्यौ। धर मंडव मुंड चका बरत्यौ॥
पांवार सलष्ष सु पुच बली। नृप जैत सजैत कि कित्ति कली॥
छं० ॥ २९ ॥

(१) ए. कृ. को.-इक्क रंग सुरंग। (२) ए. कृ. को-धरं। (३) कृ.-कंकनि।
(४) ए.-मंडियं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सु चलै बर भाइ [1]दुभाइ भरं । तिन सीस सु जंगल देस धरं ॥
धनवंत धनू न्रप [2]धावरयं । जित तित्त नहीं मन सावरयं ॥
छं० ॥ ३० ॥

परताप प्रथीपति नाम बरं । उपज्यौ कुल पंडव जोति गुरं ॥
तन [3]तूंअर नेत चिनेत बरं । परिहार पहार सु नाम धरं ॥
छं० ॥ ३१ ॥

सजयो जय सद्द पुंडीर बली । जिनके भुज जंगल देस कली ॥
परसंग सु षीचिय षग्ग बली । चमरालिय कित्ति नन्यंद हली ॥
छं० ॥ ३२ ॥

नव कित्ति नरिंद सु अल्हनयं । भजि भारथ कुंभज किल्हनयं ॥
सारंग सुरंगिय कित्ति बली । बर चालुक चार नक्षत्र हली ॥
छं० ॥ ३३ ॥

परि पारथ कन्न कुँवार न्रपं । तिहि पारथ पूजय जुद्ध जपं ॥
षग षंडिय [4]छिचिय छित्त रनं । सब सामंत सूर समोह तनं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

इहकारि उभै न्रप पास लिए । समतम्मि सु मंचिय मंच बिए ॥
जित जोध विरोधत राज करै । तिन मैं मुष भारथ नाउ सरै ॥
छं० ॥ ३५ ॥

कविचंद सु नामय जाति क्रमी । तिनके गुन चंपि नरिंद भ्रमी ॥
सिर अंतय आतप छच धन्यौ । कनकाबलि मंडिय मंडि हन्यौ ॥
छं० ॥ ३६ ॥

कवि कित्ति प्रमोधय राज चलौ । प्रथिराज विराजत देह बली ॥
बर मंगल बुद्ध गुरं सु धरं । सुक सक्रय बक्रय बुद्धि नरं ॥ छं० ॥ ३७ ॥
तिन माहि विराजत राज तरं । सु मनों छबि मेरय भान फिरं ॥
बर सेंगर सूर कल्यान नमं । जिहि भारथ कों प्रथिराज समं ॥
छं० ॥ ३८ ॥

(१) मो.-सुभाइ ।　(२) मो.-धीयरयं ।　(३) ए. कृ. को.-तूँअर ।
(४) ए. कृ. को.-छात्रिय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयचंद जँघारय नाहरयं। न्रप राज सु रष्षन साहरयं ॥
मकवान महीपति मीर बली। प्रथिराज सु जानत जोति छली ॥
छं० ॥ ३९ ॥

कठ हेरिय सारँग सूर बली। प्रथिसाहि न पुज्जत जोति कली ॥
जग जंबुअ राव हमीर बरं। छिति पत्ति कँगूरह सूर गुरं ॥
छं० ॥ ४० ॥

नर रूप नराइन राज भरं। भर भारथ जुग्गिनि पाच करं।
गुरराज सु कन्हय जम्म जिसौ। मग वेद चलंतह ब्रह्म इसौ ॥
छं० ॥ ४१ ॥

गुर ग्यारह सै सकसैन बरं। प्रथिराज चढ़ंतह बाज धरं ॥
चलि सेन मिली करि एकठयं। बजि बंब कि अंबर घुम्मरयं ॥
छं० ॥ ४२ ॥

झननंकत षग्ग फरी धरयं। भजि डंक ज्यौं डक्कत भूत भयं ॥
गहरात गजिंद सुरिंद समं। जनु छुट्टि जलद्द विहद्द भ्रमं ॥
छं० ॥ ४३ ॥

चलि मल्लन हल्ल ज्यों रोस रसै। जमजूथ मनों दल दंद ग्रसे ॥
हयनारि सुधारि कें कंक षगी। धरि सिष्ट सु दिष्ट कि इष्ट लगी ॥
छं० ॥ ४४ ॥

कममैत बनैत कि नेत धरं। मँडि मुष्टि मही जनु रूप करं ॥
फहराति सु बैरष वाइ बरं। सु मनैां घन फुट्टिय अग्गि झरं ॥
छं ॥ ४५ ॥

सब सेन सभा इह व्रन्न कहै। बरषा रुव संत दै छब्बि लहै ॥
छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिए तैयारी करने को कहना।

दूहा ॥ जो बुलै सामंत सय। तौ [१]चल्लै प्रथिराज ॥
करि उप्पर जैचंद कौ। अरि बंधौ सिरताज ॥ छं ॥ ४७ ॥

सामंतों का राजाज्ञा मानना।

(१) मो.-भो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ जो अग्या सामंत । स्वामि दीनी सु मानि लिय ॥
ज्यौ मंचह गुन ग्यान । धीय मानंत तंत लिय ॥
ज्यों सु भ्रम्म [1]उबरत्त । बीर चट्टौ परिमानं ॥
ज्यों गुरु बलहुअ विदुष । तत्त सोई करजानं ॥
सा भ्रम्म चिया अग्या न्रपति । मान मोह जानै न अँग ॥
सामंत सूर प्रथिराज सम । सबल बीर चल्लेत सँग ॥ छं० ॥ ४८ ॥

जैचंद के ऊपर चढ़ाई की तैयारी होना ।

दूहा ॥ अति आतुर आरंभ वल । गिनी न तिन गति काज ॥
तिन उप्पर जैचंद कौ । सो सज्जिय प्रथिराज ॥ छं० ॥ ४९ ॥

कमधज्ज पर चढ़ाई करनेवाली सेना के वीर सेनापति सामंतों के नाम और सेना की तैयारी वर्णन ।

चोटक ॥ सोइ सज्जिय सूर नरिंद बलं । छिति धारन को छिति छच कलं ॥
मति मंच बरष्षय सूर बरं । धर पर्वत ज्यौं भर कन्ह करं ॥
छं० ॥ ५० ॥
आटत्त अहीर करै बलयं । सुरष्यौ गिर एक हरी छलयं ॥
सु करै बलबीय अटत्त भरं । न्रप राज सु कंठिय कंठ गुरं ॥
छं० ॥ ५१ ॥
हरसिंघ महाबल बंधु बियौ । बरसिंघ बली अरि छच लियौ ॥
बर जद्दव जाम जुवान नरं । जिन [2]कंधय ढिल्लिय राज गुरं ॥
छं० ॥ ५२ ॥
नर नाहर टांक नरिंद नमं । तिहि कंठ अरी धर भ्रम्म तमं ॥
[3]पंचम्म पवाँर सु पुंज बरं । मद मोष बिछुट्टिय काल भरं ॥
छं० ॥ ५३ ॥
परघत्त सु पल्हन अल्हनयं । भुज रष्षिय भारय ढिल्लनयं ॥
बर तूंअर रावति बान बली । जिन कित्ति कलाधर भ्रम्म छली ॥
छं० ॥ ५४ ॥

(१) मो.-उरवत्त । (२) ए. कृ. को.-कंठय । (३) ए. कृ. को.-पंचमुष्षब बार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर बीर कँठी षुरसान [१]रनं। हय चीय अहुट्ठपती सुभनं॥
कंठीर कलंक्षत जैत बली। जिहि ओटत जंगल देस भली॥छं०॥५५॥

न्नप रूप नरिंदति वाहनयं। षुरसान दलंषिति सा हनयं॥
जसरत्ति सुरत्ति सुरत्त गुरं। षित कौं षित कंध परै न धरं॥
छं०॥५६॥

जनएस गुरेस सबंध बली। जिहि निड्डुर उप्पर पंष [२]षुली॥
परसंग पविच पविच छती। षुरसान दलं जिन जुद्ध मती॥
छं०॥५७॥

अवनीस उमाह तुरंग [३]तुरं। जिहि बंधन वास उगाहि धरं॥
जिन गुज्जर ताप तिरं तिरनं। कयमासय उप्पर कीय घनं॥छं०॥५८॥
महनंग महा सुर नैंन समं। तिन राज सु रष्षिय जित्ति क्रमं॥
बरदावलि चंद नरिंद पढ़ी। सु मनौं कल जोति सरीर बढ़ी॥
छं०॥५९॥

सभ सोहत सित्त रु पंच इकं। जिन जानत [४]मोद मयं करिकं॥
कवि नामति जित्तिय जानि तिनं। तिनकी विरदावलि जंपि फुनं॥
छं०॥६०॥

सत मैं षट राजत राज समं। तिनके जुव नाम कहोति क्रमं॥
छं०॥६१॥

उन छः सामंतों के नाम जो सब सामंतों में सब से अधिक मान्य थे।

कवित्त॥ निड्डुर स्हर नरिंद। कन्ह चहुआन सपूरं॥
जिपड़ जैत जैसिंघ। सलष पावारति स्हरं॥
जामदेव जद्दव जुवान। भारथ्थ पत्ति सिर॥
बर रघुबंसी राम। द्रग्ग महिं कौन तास बर॥
बर बीर्य रत्त [५]पच्छै सुनिय। रुधिर बूंद कंदल परहि॥
मधि मद्धि मुह्रत इक्क बर। अरि बर गन रुंधहि भिरहि॥छं०॥६२॥

(१) ए. कृ. को.-नरं। (२) मो.-हली। (३) मो.-मुरं।
(४) ए. कृ. को.-मोह। (५) ए. कृ. को.-परै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उक्त छः सामतों का पराक्रम वर्णन।

सौ सामंत प्रमान। [1]उग्गि अंकूर बीर रस॥
सज्जि भली नक्षपत्त। अंग लग्गे सुभंत तस॥
[2]राजस तम सातुक्क। साष अग्गै अधिकारिय॥
जथ्थ कथ्थ आरुहिय। रत्ति ढिल्लीपति धारिय॥
जंगलू देस जंगल न्रपति। जग लेबै बर सूर षट॥
षुरसान षान उप्पर चढ़िय। बर बीर रस बीर पट॥ छं० ॥ ६३॥

सामंतों का जैचंद पर चढ़ाई करने का मुहूर्त शोधन करने के लिये कहना।

अनल दंग अरि लग्गि। उग्गि अगिवान बीर रस॥
सामंता सतभाव। पंग उप्पर कीजै कस॥
पंच घटी सौ कोस। राज अग्गं ढिल्ली तँह॥
साम दान अरु भेद। दंड निर्नय[3]साधौ जँह॥
मन बच क्रम कह कह कल्यौ। अलप न सुर सह्य सुघट॥
दुजराज संधि गुरराज कौ। सज्जि महूरत चढ़िपट॥ छं० ॥ ६४॥

प्रत्येक सामंत पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिबिंब स्वरूप था।

चोटक॥ प्रति प्रीति प्रत्यं प्रतिबिबं न्रपं। ससि राज इकं प्रति ब्यंब पथं॥
प्रतिब्यंबह मभ्भक्ष इकंत उभै। चहुआनरु सामंत सूर सुभै॥
छं० ॥ ६५॥
दिस राकय अर्कय थान बियौ। तम भंजित तेज सु राज लियौ॥
सोइ लच्छि हयग्गय मंत षुली। रवि की किरनावलि तेज डुली॥
छं० ॥ ६६॥
पर पष्षर स्याह तुरंग रनं। सु मनों घन सोभत नैर तनं॥
सु विचें विच राजत राज रती। सु मनों प्रतिबिंब किदेव किती॥
छं० ॥ ६७॥

(१) ए. कृ. को.-"रौद्र भयानक रस"।
(२) मो.-रानत। (३) मो.-साधै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज के सब सच्चे सेवकों का एकही मंत्र ठहरा।

दूहा ॥ इत्ते मंतन इक्क मुष। न्रप सेवक अरु इष्ट ॥
एक मंच एकह बुले। वियौ न जंपै जिष्ट ॥ छं० ॥ ६८ ॥

चढ़ाई के लिये वैसाष सुदि ५ का सुदिन पक्का करके सब का अपने अपने घर जाना।

तिते सूर तिहि रत्ति बर। ग्रेह सपत्ते बीर ॥
पंचमि बर बैसाष धुर। लैजु वचन ते धीर ॥ छं० ॥ ६९ ॥

मरने के लिये मुहूर्त साध कर सब बीरों का आनन्द में मतवाला होना।

अरिल्ल ॥ अप्प अप्प गय ग्रहे सब्बूरं। मरन मह्लरत मरन न पूरं ॥
चढ़े बीर चावद्दिसि रंगं। मनों [1]घलह लिय मेघ असंगं ॥ छं० ॥ ७० ॥

प्रातःकाल सामंतों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़ कर जुड़ना।

दूहा ॥ मेघ पंति वद्दल विषम। बल दंतिय सजि सूर ॥
चढ़ि जिहाज पर दिष्षियै। धर नहिं परै करूर ॥ छं० ॥ ७१ ॥
धरनीधर तिय गुननि बर। लिय कारन परिमान ॥
सूर उगै सत पच ज्यौ। ज्यौं भद्दव बल भान ॥ छं० ॥ ७२ ॥

पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावस के मेघों से उपमा वर्णन।

चोटक ॥ सुअं बर बीर सु चोटक छंद। छिती छिति मत्त हयग्गय इंद ॥
रनं किय बीर नफीर रवद्द। ढलक्किय ढाल सु ढिल्लिय भद्द ॥ छं० ॥ ७३ ॥
घनंकिय संकर अंदुन अंद। जग्यौ मनु भारत बीरय कंद ॥
छिती छितिपूर हयग्गय भार। दिसौ दिसि दिष्षहि ज्यौं जल धार ॥ छं० ॥ ७४ ॥
ढरै दिगपाल सु अट्ठय मेर। भये भयभीत भयानक भेर ॥
सुनै स्तुति छचिय सद्द निसान। दिसा षुरसान सु बढ्ढय पान ॥ छं० ॥ ७५ ॥

(१) ए. कृ. को.-षहह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंडे मय मत्त [1]गहम्महराज। उठै बर अंकुर मुच्छ विराज॥
कहै कबिचंद सु उप्पम ताहि। मनों सुर लग्गिय चंद कलाहि॥
छं० ॥ ७६ ॥
[2]अपें प्रथिराज समप्पय बाज। तिनें दिषि पंतिय प्रब्बत लाज॥
दुअं दुअ बंधि रकेबन जोर। चढ़े बर छिचिय सूर झकोर॥
छं० ॥ ७७ ॥
हयहल पंति सुभंतिय ठांनि। मनों बगपंति घनी घट बांनि॥
मयं मय रुद्र सु रुद्रय सार। भयौ जनु अंत प्रलै दुति वार॥छं०॥७८
डहड्डह बज्जय डक्कय मात। डलै तिन बीर गिरव्वर गात॥
सु दिष्षन वांम फुरक्कय नैन। चढ्यौ जनु बीर परब्बत बैन॥छं०॥७९॥
इसे दोउ बीर विराजत रिंघ। गुफा इक मभ्भ्झ मनों दुअ सिंघ॥
चले ग्रह छंडि ग्रहग्रह सूर। कही कविचंद सु उप्पम पूर॥
छं० ॥ ८० ॥
कहै करुना रस कंतहि चीर। उद्यौ तहां जित्त भयानक बीर॥
लिषी लिष चिचय दंपति बैन। मनों पलटै दिन चाचिग नैन॥
छं० ॥ ८१ ॥
छिपा छिप होम प्रमान प्रमान। किधों चकई सुपमुक्कय मान॥
भयौ मन बीरन बीर प्रमान। भयौ करुना रस तीय प्रमान॥छं०॥८२॥
दुहूं दिसि चित्त अचित्त अलोल। मनों दुअ पास हलंत हिडोल॥
दोऊ मझ्झ रष्षय सूर सनूर। भजै करुना रस काइर पूर॥छं०॥८३॥
मिले न्रिप आइ सु ढिल्लिय थान। कहै कविचंद बषान बषान॥
छं० ॥ ८४ ॥

सामंतों की सर्प से उपमा वर्णन।

दूहा॥ स्वामि भ्रम्म सों [3]सुद्ध मन। ज्यौं [4]बांबी दिसि [5]सप्प॥
म्रग विषांन ज्यों अरिन बर। जगि बीरा रस जप्प॥ छं० ॥ ८५ ॥

सामंतों के क्रोध और तेज की प्रशंशा वर्णन।

(१) मो.-गहम्मग। (२) कृ. को.-अपं। (३) ए. कृ. को.-जुद्ध।
(४) को.-वाबी। (५) ए. कृ. को.-सर्प।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ जगति जग्य जनु बीर। जग्गि चयनेत अग्गि सिव ॥
कै मचकुंद प्रमान। गुफा बारुन सु दैत्य लिव ॥
कै [1]जग्यौ भसमास। दैत्य भग्गा गोरीसं ॥
इसे सूर सामंत। बीर चावद्दिसि दीसं ॥
दीनौ न नृपति किन निरति बर। किहु न सुनी जैचंद क्रम॥
बग्गं उपारि धाए बलिय। अभिलाषह भारथ्य श्रम ॥छं०॥८६॥

शूर वीर सामंतों का उत्साह वर्णन।

अभिलाषह श्रम गर्व। भयौ किल किंचित सूरं ॥
ज्यों नल मति दमयंत। सेन सज्जी रन पूरं ॥
भवर सद्द सम सुमन। प्रेम रस छुट्टिय जंगं ॥
सुबर राज चहुआन। करन उप्पर बर पंगं ॥
माधुरत मधुर बानी तजी। रजिय सूर रंजित सुभर ॥
छिति मत्त [2]छिती छिचिय [3]छितिग। दिपति दीप दिवलोक धर ॥
छं० ॥ ८७ ॥

फौज की शोभा वर्णन।

मोतीदाम ॥ दसं दिसि पूरग [1]मत्तय भार। चढ्यौ जनु इंद्र धनुष्षय धार॥
तुरंगन तुंग हरष्षय ईस। परक्किय नारद सारद रीस ॥ छं० ॥ ८८
छहंमित छोहय शंकर हथ्य। कहै कविचंद सु ओपम कथ्य ॥
गए गजनेस सुसथ्थय बीर। रहै लगि भौंर तिनै लगि नीर ॥
छं० ॥ ८९ ॥
मनों कुत कुंतय बारय घुल्लि। गए मनु आरद शंकर भुल्लि ॥
करुना रस केलि क्रमीनह बीर। नच्यौ अदबुद्द स रुद्र डकीर ॥
छं० ॥ ९० ॥
इकं इक रस्स सु संतिय सूर। दिपे मुष मत्त महा मति नूर ॥
सुलतानरु हिंदुअ बैर प्रमान। सुआदय जुद्ध निदान निदान ॥
छं० ॥ ९१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जग्या। (२) ए. कृ. को.-छित्त। (३) मो.-छिपग।
(१) ए. कृ. को.-मध्यय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दया बर हीन सगप्पन नथ्यि । .... ॥
उमा कृत काज प्रजापति दच्छि । तज्यौ नन मात उरग्गिय लच्छि ॥
छं० ॥ ९२ ॥
षिन्नै सिर ईस पटक्किय जट्ट । भयौ तहां जन्म सु बीरय भट्ट ॥
भिरी भिरि नंदिय दंद प्रकार । पछै दछि दच्छिय दष्षि डचार ॥
छं० ॥ ९३ ॥
इतं मिति मंत सु कंतिय राज । भयौ बर बीर भयानक साज ॥
दिसो दिसि पच्छिम हिंदुअ मेछ । बज्यौ रनतूर रवद्दय एछ ॥
छं० ॥ ९४ ॥
मली जनु जंगम जो गवरीस । दसकंधु डुलावत प्रव्वत रीस ॥
तज्यौ जहां मान लगी पिय कंध । नयौ रस संत सु मंतिय संध ॥
छं० ॥ ९५ ॥
सु जाति जरा न्रप हक्कि प्रमान । चल्यौ तिन बेर बली चहुआन ॥
छं० ॥ ९६ ॥

पृथ्वीराज का सेना को वर्ण प्रति वर्ण श्रेणीवद्ध करना ।

कवित्त ॥ चाहुआन बर बलिय । भार भारथ रस भिन्नौ ॥
मधुर सुधर सिंधुरस । अंग चावद्दिसि छिन्नौ ॥
सुबर सेन सामंत । सुबर बल बीर निनारे ॥
मझ्झ मझ्झह आवत । देव जनु जुद्ध हकारे ॥
कुसमिस्त जुद्ध देवह करन । रथ सुरत्थ हय हयति नर ॥
सामंत सूर पुज्जै नहीं । वर कंदल [1]उट्ठंति धर ॥ छं० ॥ ९७ ॥

सामंतों की वीरता का वर्णन ।

उरग विंद रवि उठै । सीस हक्कै धर नंचै ॥
देवासुर संग्राम । देव पूजा देवंचै ॥
इंद्र जुद्ध तारक्क । सोइ तत्तह अधिकारी ॥
पंच पंच पंडव सु । भीम दुर्जोधन भारी ॥

(१) मो.-उठंति ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गज मंत दंत कट्टै सु भ्रत। दैवत्त जुध सामंत रन ॥
उद्दयो जुद्ध आहुत मिति। नहिन मेच्छ हिंदू छपन ॥छं०॥९८॥

युद्ध के लिये प्रस्तुत शूर वीर सामंतों के बीच में स्थित निढ्ढुढर का वीर-मत वर्णन।

मिले सूर सामंत। मंत सज्जिय निढ्ढुर बर ॥
कहां सु प्रान संग्रहै। पंच किहि जाइ मिलै धर ॥
कोन क्रम्म संग्रहै। क्रम्म को करै सु देहं ॥
कोन जीव संग्रहै। कोन त्रिमवै सु छेहं ॥
जैचंद आनि सुरतान बर। अधर राहु लग्यौ अवर ॥
षित्त मत्ति दान दिय विप्र बर। रहसि राह लग्यो सु धर ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कह निढ्ढुर रट्ठौर। सुनहु सामंत प्रकारं ॥
कहौ देव कौ भ्रम्म। कित्ति संग्रहौ सु सारं ॥
बारि बूंद बुदबुद्द। हथ्थ वारी सु आव इत ॥
ज्यों बद्दलवै छांहि। घास अग्गी सु मत्ति भ्रिति ॥
इत्तनिय देह की गत्ति वर। तीय ठाम चिंतै सु नर ॥
मस्सान पुरान रु काम के। अंत चित्त सदगत्ति धर ॥छं०॥१००॥
अंत मत्ति सो गत्ति। अंतजा मत्ति अमत्तिय ॥
पुब्ब भ्रम्म संग्रहै। पुब्ब गत्तिय सुइ गत्तिय ॥
दैव भाव संग्रहै। काल केवल गुन वत्तिय ॥
सिंचिये वेलि जंजं बधै। तंतं बुड्ढि पुरान बर॥
त्रिघघात घात पत्तिय सु वर। सु हत काल निव्वरि सु नर ॥छं०॥१०१॥
स्वामि निंद जिन सुनौ। स्वामि निंदा न प्रगासौ ॥
अह निसि वंछौ मरन। भीर संकरैं निवासौ ॥
तव बुल्यौ महनंग। छंडि इह मंच सस्त्रगह ॥
अस्ति काज दद्धीचि। दिए सुरपत्त मत्त बहु ॥
सुरपत्ति मत्त किन्नौ सु बर। निवर अंग को अंग मय ॥
जैचंद भूमि उब्बैलि कै। चढ़हु भूमि घर दुर्ग मय ॥छं०॥१०२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाथा॥ के के न गया गुर ग्रेहं। के के न काल संग्रहे हंतं॥
मंचौ जा प्रथिराजं। रष्षे जा बीर सो सस्तं॥ छं०॥ १०३॥

साटक॥ जाता जा मनसा समस्त गुरयं, मानस्य सा सुंदरी॥
[1]ता भग्गा मन सूर काइर बरं, [2]किल किंचि किंचित रसै॥
अभिलाषं छिति गर्व तारुन विधे, संसार सहकारयं॥
वारं जा पारंग दिव्यत गुरं, दीसंति देवानयं॥ छं०॥ १०४॥

घुड़सवार शूरवीरों की चाल वर्णन।

भुजंगी॥ प्रवाहंत वाहं उचारै पवंगा। तिनै धावतैं होइ मारुत्त पंगा॥
झमैं झुंम अग्गै सुमं तीन संधै। मनों ब्रह्म विधि गंठि लै वाइ बंधै॥
छं०॥ १०५॥

पुजै पंष अंषी मनं षीन धावै। तिनं उप्पमा कोंन कविचंद लावै॥
किधौं कैसपन्नं चलै चित्त भारी। किधौं चक्करी हथ्थ [3]आवत्त तारी॥
छं०॥ १०६॥

किधौ वाय छुट्टै नहीं चाइ पावै। म्रगंराज कैसे उपम्माति लावै॥
अगंपाइ दीसे मुषं मेह कारै। मनों दिव्य वानी पढ़ै कव्वि भारै॥
छं०॥ १०७॥

धरे पाइ बाजी हढ़ंतं निभारै। मनों तार सौं तार बज्जै हकारै॥
तिनं दूरि तें अंग ओपंम ऐसे। मनों तार छुट्टै अकासं सु जैसे॥
छं०॥ १०८॥

इसे बाजि सज्जे समप्पेति राजं। दिषै सूर सामंत हथ्थें सुपाजं॥
छं०॥ १०९॥

राजा का सामंतों को अच्छे अच्छे घोड़े देना।

दूहा॥ बाज राज न्रप [4]राज दिय। बिलसि विधान बिधान॥
तिन उप्पम कबिचंद कहि। का दिज्जै धपबान॥ छं०॥ ११०॥

(१) मो.-ना। (२) ए. कृ. को.-कल।
(३) ए. कृ. को.-दीसंत। (४) ए.-गज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोड़ों की शोभा वर्णन।

रसावला ॥ धपैं बान भारैं, हकारे निनारैं। दुरैं अप्प छाया, तते अग्गि ताया॥ छं० ॥ १११ ॥

धवैं [1]अंठ भारी, मुकोटं निनारी। बरं नैन ऐसें, हरी देव जैसें ॥ छं० ॥ ११२ ॥

महा मत्त ग्रीवा, विना वाइ दीवा। उरं पुट्ठ भारी, [2]सु मासं निनारी॥ छं० ॥ ११३ ॥

तुला जानि षंभं, पला जानि अंभं। नषं डंड इद्वं, मनो डंड सिद्वं॥ छं० ॥ ११४ ॥

द्रुमं वीर डुल्लैं, कवी कित्ति षुल्लैं। मनौं वाय कांडं, परी मफ्फ होडं॥ छं० ॥ ११५ ॥

कचोलंत नीरं, पिय वाज जीरं। अवत्तें निनारे, मनौं स्वामि सारे॥ छं० ॥ ११६ ॥

इसे राज राजी, दिए वाज राजी। सु द्दै द्दै रकेबं, चढ़े बीर [3]वेबं ॥
सुरत्तान पासं, चढ्यौ बीर भासं। .... छं० ॥ ११७ ॥

शहाबुद्दीन से निस्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशंसा।

दूहा ॥ बिना हेत सगपन बिना। इष्टपना बिन राज ॥
धन्नि राज प्रथिराज कौ। षग गोरी किय साज ॥ छं० ॥ ११८ ॥

शहावुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना।

कवित्त ॥ षल गोरी सुरतान। जाइ रुंध्या रन अग्गैं ॥
हय गय रथ नर सज्जि। बीर पावस घट जग्गैं ॥
महन रंभ आरंभ। रत्त अरुनोदय सारिय ॥
चाहुआन सुरतान। बीर जैपत्त करारिय ॥
डमरू डहकि जुग्गिनि हसैं। जिम जिम बंबर धज लसैं ॥
सामंत सूर चहुआन सौं। बीर बिदुरि सस्त्रह कसैं ॥ छं० ॥ ११९॥

(१) मो.-अम्बु। (२) मो.-समंसं। (३) ए. क. को.-वेवं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा की आज्ञा बिना चावंडराय का आगे बढ़ जाना ।

मेछ महूरति सत्ति । मत्ति कीनौ रत भारी ॥
वीरा रस विढ्ढुरिय । लोह लग्गौ अधिकारी ॥
छित्ति मित्ति छिति सोभ । अंषि आवै न अंषि घिन ॥
ज्यौं नद्दव वन दिष्ट । चंपि चूवंत मंत घन ॥
रन हरषि वरष्षिय मुक्ति जिहि । धप्पि लोह कोहां करसि ॥
चावंडराइ दाहर तनौ । न्रप अग्या विन अग्र धसि ॥छं०॥१२०॥

चामंडराय जैतसी लोहाना आजानबाहु का पांच कोस आगे बढ़ कर तत्तार षां खुरसान षां पर आक्रमण करना ।

रा चावंड जैतसी । लोह आजानबाह बर ॥
रष्षे रन सुरतान । [१]मत्त लग्गे सुबीर भर ॥
पंच कोस न्रप छंडि । आप रुंध्या सुरतानं ॥
वज्र घाट वज्जीय । आइ लग्गा सु विहानं ॥
छुट्टा कि सिंघ पल काज वर । उरसि लोह लग्गा लरन ॥
तत्तार षान षुरसानपति । अप्प महूरति मरन मन ॥छं० ॥१२१॥

उक्त सामंतों के आक्रमण करने पर मुस्लमानों का कमान पर बाण चढ़ा कर अपने शत्रुओं से युद्ध करने को प्रस्तुत होना ।

भुजंगी ॥ षुरासान षानं सु तत्तार बीरं । मनों वज्र देषे सु वज्रं सरीरं ॥
महा बाहु बज्री कढ़े बज्र हथ्थें । लगे अंग अंगं निरथ्थे निरथ्थें॥
छं० ॥ १२२ ॥
छुलिक्का सु बानं कमानेन साही । इसे सूर बेगं षलं[२]लै न्रिबाही ॥
उरं मत्त मत्ते विमत्ते निनारे । मनौं देषियै बीर रत्तं प्रकारे ॥
छं० ॥ १२३ ॥

(१) मो.-मनह । (२) मो. नैत्रिबाही ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उरं काल काली जमं दड्ढ कड्ढी। किधौं दंढ्ढ जम दढ्ढ जम कर विडड्ढी॥
उरं मत्त मतं विमत्तं सु मत्ती। परें रंग चंगं छके जानि गत्ती॥
छं०॥ १२४॥
दुवं हिंदु मेच्छं तसब्बीति नंषी। सरं सठ्ठि हज्जार आवत्त लष्षी॥
तिनें हथ्थ हथ्थं मुकत्ती प्रमानं। मनों देषि देवंत देवाधि थानं॥
छं०॥ १२५॥
विधं विद्धि रूपं प्रमानंत न्यारे। भए अंग अंगं तही तथ्थ सारे॥
नचै कंध बंधं कबंधं दुरंगी। मनों बीर आवत्त भारथ्थ रंगी॥
छं०॥ १२६॥
इतौ जुद्ध करि बीर भए द्वै निनारे। घुमै सार घुम्मैं मनो मत्तवारे॥
छं०॥ १२७॥

पृथ्वीराज का ससैन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा करना और जयचंद की सहायता ले कर शहाबुद्दीन का राह छेकना।

*दूहा॥ चल्यौ राज सब सेन सजि। दिसि उज्जैनिय रंग॥
आइ साहि जग हजूरन। लयें सहायक पंग॥ छं०॥ १२८॥
गही गैल देवास की। गहन उपज्ज्यौ मिच्छ॥
नर चित्तन इच्छै कछू। ईसर औरै इच्छ॥ छं०॥ १२९॥

मनुष्य की कल्पनाएं सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बलवती है।

कवित्त॥ नर करनी कछु और। करै करता कछु औरै॥
नर चिंतन कर ईस। जिय सु नर औरै दौरै॥
रचे रचन नर कोटि। जोरि जम पाइ बस्त सह॥
छिनक मध्य हर हरै। केल किर तष्ष क्रम्म इह॥
प्रथिराज गमन देवास दिसि। व्याह विनोद सु मंडि जिय॥
अनचित्ति जग्गि गज्जन बलिय। आनि उतंग सु कंक किय॥
छं०॥ १३०॥

* मो. प्रति में पद नहीं है और पाठ के प्रसंग से क्षेपक भी ज्ञात होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का राजा बली से पटतर देकर कवि का उक्ति वर्णन।

ज्यौं बावन बलि पास। आनि अनचिंत्य छलन किय॥
उन धर ले उन [1]दीन। [2]इन सु सुर बंधि छंडि जिय॥
दसौं दिसा दल उमड़ि। घुमड़ि घनघोर आइ जनु॥
मीर मसंद ससंद। बान बहु बूंद बरषि घन॥
दोउ दीन दंद दनु देव सम। भ्रम लग्गे लग्गे लरन॥
प्रलैकाल हाल पिष्षिय निजरि। मनों मिच्च वृत्ती करन॥
छं०॥ १३१॥

युद्ध आरंभ होना।

रसावला॥ कोह लग्गे षलं, सार उड्डै पलं। अंत तुट्टै रुलं, पग्ग बेली तुलं॥
छं०॥ १३२॥
नैन रत्ते झलं, जुट्टि जाल षलं। मिट्टि मोहै मलं, कोह कै केवलं॥
छं०॥ १३३॥
रुंड नच्चै दलं, मुंड वक्कै वलं। गिद्धि सिद्धी कलं, बज्जि कोलाहलं॥
छं०॥ १३४॥
छिंछ उड्डै ललं, जानि तिंदू झलं। हथ्थ तुट्टै नलं, वृष्ष साषा ढलं॥
छं०॥ १३५॥
पंष पंषी बलं, ईस आसावरं। माल सोभै गरं, रुद्रि बुंदै झरं॥
छं०॥ १३६॥
जानि नग्गं परं, चंडि पच्चं [3]भरं। [4]मंति डक्कं डरं, भूत नच्चै षरं॥
छं०॥ १३७॥
उभ्भयं चिक्करं, बक्कि नैरु रुरं। कंपि स्यारं नरं, स्हर बढ्ढै बरं॥
छं०॥ १३८॥
झझ्झर झारै रूरं, ... छं०॥ १३९॥

स्वामिधर्म रत शूर वीर मुक्ति के पथ पर पांव देने को उद्यत थे।

(१) ए. कृ. को.-दीय। (२) ए. कृ. को.-दन सुरन बंधि छंडिय प्रिय।
(३) ए. कृ. को.-वरं। (४) ए. कृ. को.-मन्त्रि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ सार मंत मत्ते सुभट। षग ढिल्लै गज ठट्ट ॥
स्वामि ध्रम्म सद्दै रनह। मुकति सु भ्झारै वट्ट ॥ छं० ॥ १४० ॥

दोनों ओर के शूर बीर सामंतों का पराक्रम और बल वर्णन।

कवित्त ॥ कोह छोह रस पान। बीर मत्ते चावद्दिसि ॥
बलि उतंग सजि जंग। अंग जनु पंग कप्पि जिसि ॥
हय दल बल उच्छार। कढ्ढि गज दंत नडारै ॥
जनु माली महि मध्य। कढ्ढि मूला करि धारै ॥
भय सीतभीत काइर कपहिं। बहत स्त्रर सामंत रिन ॥
कलि कहर कंक बक्कहि विहसि। गहन गोम मत्तौ महन ॥
छं० ॥ १४१ ॥

कन्ह गोइन्द राय लंगरी राय और अतत्ताई की वीरता और उनके पराक्रम से मुस्लमानो की फौज का विचलाना, हासब खां खुरसान खां का मारा जाना।

भुजंगी ॥ परी भीर मेच्छं [1]तसब्बी तनष्षं। कले कंक बक हीन जीवं सु लष्षं॥
षलं कंन्ह गोइंद कोका प्रमानं। मनौ देषियै देवयं दुंद [2]थानं ॥
छं० ॥ १४२ ॥
बढ़े बीर रूपं प्रमानं निनारै। अरी अग्ग चेतं न चित्तं धरारै ॥
नचैं कंध बंधं असंधं धरंगी। मनों वीर भारथ्थ आवृत्त रंगी ॥
छं० ॥ १४३ ॥
लग्यौ लंगरी लोह लंगा प्रमानं। षगे षेत षंड्यौ षुरासान षानं ॥
उड़ै अत्तताई हयं पाइ तेजं। दलं दिष्षिये पेट पष्षे करेजं ॥
छं० ॥ १४४ ॥
हन्यौ हासबं षान सीसं गुरज्जं। गयं उड्डि गेनं सु षोपरि पुरज्जं॥
इतौ जुद्ध करि बीर भए द्वै निनारे। घुमे सार घुम्मे मनों मत्त वारे॥
छं० ॥ १४५ ॥

(१) मो--तसब्बीनि। (२) मो.-पानं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ रत्त मत्तवारे सुभट। विधि विनान उनमान ॥
तहन सुष्ष दुष्षं निजहि। मोह कोह रस पान ॥ छं० ॥ १४६ ॥

शूरवीरों का रणरंग में मत्त होना शहाबुद्दीन का कुपित होना और पृथ्वीराज का उसे कैद करने की प्रतिज्ञा करना।

कवित्त ॥ मोह कोह रस पान। बीर मत्ते चावद्दिसि ॥
तबल तुंग बजि जंग। बीर लग्गे सु बीर कसि ॥
जा दिष्षे सुरतान। नैन बड़वानल धारी ॥
प्रलय करन करवान। प्रलय इन षग्ग हकारी ॥
सुभि लोह मोह अरुनय तनह। अति उदार चिन्हय रनह ॥
प्रथिराज राज राजिंद गुर। गहन गज्जि लीनों पनह ॥ छं० ॥ १४७ ॥

युद्ध की पावस से उपमा वर्णन।

साहन बाहन बिरद। साह गोरी सयन्न सम ॥
हय गय दल विच्छरहि। रोस उच्छरहि बीर भ्रम ॥
बजहि षग्ग आवत्त। जूय उड्डुहि असमानं ॥
मनहु सिंघ गुर गज्ज। हक्कि कारिय सिर भानं ॥
दल जोरि विहसि साहाब भर। भर भर भिरि असिवर बजिय ॥
जानेकि मेघ मत्ते दिसा। निसा नभ्भ विज्जुल [1]लसिय ॥
छं० ॥ १४८ ॥

घोर युद्ध वर्णन।

चोटक ॥ इति तोटक छंद प्रमान धरं। सुनि नागकला तिहि कित्ति गुरं ॥
भिरि भारथ पारथ से उचरे। मय मंत कला कलि सें बिडुरे ॥
छं० ॥ १४९ ॥
रननंकय नागय बीर सुरं। मनों बीर जगावत बीर उरं ॥
छिति छच दुहाइय छच धरं। सु मनों बरबा हवि वज्र झरं ॥
छं० ॥ १५० ॥

(१) ए. मो.-लजिय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छिति सोहत श्रोन अपुब्ब रनं। मनों भारत पूर चली सुमनं ॥
दोउ दीन विराजत दीन उभै। रँग रत्त रमै छिति छच सुभै ॥
छं० ॥ १५१ ॥
सुमनों मधु माधव रीति इलै। सुजनो इत कंकर बीर फुलै ॥
इक अंग विमंगन हथ्थ चरै। सु मनों कल बीर कला दुसरै ॥
छं० ॥ १५२ ॥
मिति मत्त अहत्तन घाइ घटं। सु नचै जनु पारथ बीर भटं ॥
छं० ॥ १५३ ॥
कवित्त ॥ बरकि बीर भट सुभट। झुम्मि हकै चावद्दिसि ॥
इक्क इक्क आहत्त। बीर बरषंत मंत असि ॥
नचि नारद किलकंत। जग्गि जुग्गनि हक्कारिहि ॥
सार ताल वेताल। नंचि रन बीर डकारहि ॥
अंमरिय रहसि दल दुअ विहसि। करसि बीर लग्गे सु बर ॥
चहुआन आन सुरतान दल। करहि केलि समरस अडर॥छं०॥१५४॥

चालुक्य की प्रशंसा वर्णन।

नव बाजी नव हथ्थ। रथ्थ नव नवति सुभ्भ भर।
इन बज्जै असि बरह। सार बज्जै प्रहार धर ॥
केक अंत जमकंत। कढ्ढी जमदाढ़ निनारी ॥
मनु कढ्ढी जम दढ्ढ। हथ्थ सामंत सुभारी ॥
चालुक्क चंपि चक्कर कियौ। सार धार सम उत्तर्‍यौ ॥
इह करी कोइ करिहै न कोइ। करौ सु कोगुन विस्तर्‍यौ ॥
छं० ॥ १५५ ॥
दूहा ॥ जंमति जमकिय जंम सम। जम प्रमना दोउ सेन ॥
मिले बीर उत्तर दिसा। आहतह तिन नैन ॥ छं० ॥ १५६ ॥

जामदेव यादव का आध कोस आगे डटना और उसकी वीरता की प्रसंसा वर्णन।

कवित्त ॥ अद्ध कोस न्रप अग्ग। सूर रोपे पग गढ्ढै ॥
सद्द मद्द गजराज। चंडि पढ्ढै बल चढ्ढै ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लज्ज बंध संकरिय। बीर अंकुरिय दिष्ट रन ॥
सार धार बज्जी कपाट। त्रिघात घुमत रन ॥
कलमलिय कंक इम मिच्छ सह। जनु लुअ लग्गत जेठ महि ॥
जद्दव सु जाम घरि इक्कलों। जनु बडवानल चंद कहि ॥
छं० ॥ १५७ ॥

गाथा ॥ दिष्षे मुष्षय मच्छरयं। अरज दुवं सन्नाम अवनयं ॥
अच्छरि वर कर इच्छं। भ्रमत [1]फिरंत [2]गौन मग्गाइं ॥छं०॥१५८॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोरव्यूह रचना।

कवित्त ॥ मोरव्यूह रचि राज। सज्जि सब सेन सुद्ध करि ॥
चंच पीप परिहार। कन्ह गोइंद नयन सरि ॥
कंठ चंद पुंडीर। पांव जुग जैत सलष सजि ॥
निढ्ढुर भर बलिभद्र। पंष बजि बाय तेज गति ॥
सम पुंछ और सम पुंछ मन। बरन बरन छबि सिलह तन ॥
रन रोहि रच्यौ प्रथिराज महि। गिलन अप्प सुरतान रिन ॥
छं० ॥ १५९ ॥

गाथा ॥ मुच्छीजं वर मच्छरं। तं वटे अच्छरी अंगं ॥
सोयं साध प्रमानं। सा पूजी सूर सामंतं ॥ छं० ॥ १६० ॥

न्याजी खां, तत्तार खां और गोरी का उधर से आक्रमण करना और इधर से पीप (पड़िहार) नरिंद का हरावल सम्हालना।

कवित्त ॥ कर बल षान ततार। षान न्याजी षां गोरी ॥
हरवल [3]पीप नरिंद। साहि बंधी बिय जोरी ॥
मोरव्यूह चहुआन। मार धारह संधारै ॥
गिलन अप्प सुरतान। बोल बड्डा उच्चारै ॥
क्षत अक्षत सीस धारन भिरवि। जै जै जै चारन सु धुअ ॥
सुरतान सूर आवत्त वर। धन्नि सुबर सामंत भुअ ॥ छं० ॥१६१ ॥

(१) ए.-फरत। (२) ए. कृ. को.-गैन। (३) ए. कृ. को.-अप्प।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तन तरफत धर मिच्छ। वला छबि जानि नटक्कैं ॥
मत्त दन्ति आरुहैं। दंत सौ दंत कटक्कैं ॥
समर अमर करि वंदि। भये विस्रत पल[1]चारिय ॥
जहँ तहँ चंद पुडीर। चंद ज्यौं रेनि उजारिय ॥
तन ग्रेह नेह मन अंत सम। भ्रम छंड्यौ दल दलि सुभर ॥
संभरिय सूर सुरतान दल। मद्दन रंभ मच्यौ सु[2]धर ॥ छं० ॥१६२॥

युद्ध होते होते रात्रि होजाना।

हनूफाल ॥ इति हनूफालय छंद। कल विकल कल हत चंद ॥
भय निसा उदित प्रमान। चहुआन सेन सुथान ॥ छं० ॥ १६३ ॥
कर हथ्थ बथ्थन थाक। मनों मंडि बंधि चिराक ॥ छं० ॥ १६४ ॥

छः हजार दीपक जला कर भारत की भांति युद्ध होना।

कवित्त ॥ करि चिराक छह सहस। सेन उभ्भै चावद्दिस ॥
रत्तिवाह सम जुद्ध। बीर धावंत बीर रस ॥
तेज चिराक रु सस्त्र। रत्त द्रिग तेज प्रमानं ॥
सार धार निरधार। बेद छेदन गुन जानं ॥
सारूक करक्के रंक पल। निसा जुद्ध किन्नौ न किहिं ॥
सामंत सूर इम उच्चरैं। सुबर बीर भारथ्थ नहिं ॥ छं० ॥ १६५ ॥

आधी रात होजाने पर तोंअर और पड़िहार का शहाबुद्दीन आक्रमण करना और मुस्लमान फौज का पैर उखड़ना।

अद्ध होत बर रत्ति। साहि गोरी धररुंध्यौ ॥
तोंअर बर पाहार। कित्ति सा सिंधुह संध्यौ ॥
सेत बंध बंध्यौति। सूर बंध्यौ रिन पाजं ॥
जै जै जै उच्चार। धन्नि सामंत सु लाजं ॥
सुरतान सेन भग्गा सुभर। तीन बान पुंजान गय ॥
गज घंट न घंट न मत्त सुनि। सुनि जंपै बर हयति हय ॥छं०॥१६६॥

(१) ए. कृ. को.-हारिय। (२) ए. कृ. को.-भर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीप पड़िहार का शहाबुद्दीन को पकड़ लेने का दृढ़ संकल्प करना।

दोत होत मध्यान। पीप नें पन मन मंड्यौ ॥
प्रबल पानि परचंड। साहि गोरी गहि बंध्यौ ॥
सेत बंधि ज्यौं राम। चंद सुर भान सूर सधि ॥
यों लिन्नों परिहार। बालि दस कंध कंघ मधि ॥
रन छंडि हंडि धर मच्छि हुअ। लाजवंत के फिरि भरिय ॥
जय जय सु जपैं मुष धर अमर। सु कविचंद कवितह धरिय ॥
छं० ॥ १६७ ॥

प्रसंगराय खींची, पज्जूनराय के पुत्र, वीरभान, जामदेव, अत्ताताई के भाई और शहाबुद्दीन के भाई हुजाब खां का मारा जाना।

भुजंगी ॥ पन्यौ राव तिन वेर खीची प्रसंगं। जिनें षंडियं षित्तषल षग्ग अंगं॥
पन्यौ राव पज्जून पुत्तंति राजं। गयं सुर्ग लोगं करे देव गाजं॥
छं० ॥ १६८ ॥

धुक्यौ धार धक्कै अजमेर राई। दुअं सेन जंपी मुषं कित्ति चाई॥
बधं जामदेवं बधौं बीरभानं। लरी अच्छरी मझ्झ बीरं बरानं॥
छं० ॥ १६९ ॥

पन्यौ घाइ षेतं अतत्ताइ तातं। मनो देषियै भूमि कंदर्प गातं॥
पन्यौ सेन हुज्जाब गोरीस बंधं। हयं अट्ठ भग्गं सु उट्ठे कमंधं॥
छं० ॥ १७० ॥

परे ताहि दीनैं परे साहि भारे। दिषे थान थानं मिछं प्रात तारे॥
छं० ॥ १७१ ॥

शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना।

दूहा ॥ इन परंत सुरतान गहि। ग्रह निग्रह घट बीर ॥
तिन जस जंपत का कवी। जिन करि जज्जर ग्रीर ॥छं०॥१७२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ जज्जर पंजर प्रान। साह्नि गोरी गह्नि बंध्यौ ॥
बिन सेवा बिन दान। पान षग्गह षल संध्यौ ॥
फिरि ग्रह पत्तौ राज। लूटि चतुरंग विभूतिय ॥
डोला तेरह तीस। मद्धि साहाब सुभत्तिय ॥
ग्रह गयौ लियैं सुरतान सँग। जै जै जै जस लड्यौ ॥
जयचंद कनाइत चिंति जिय। मान प्रसंसन सिड्यौ ॥छं०॥१७३॥

पीपा युद्ध का परिणाम और पृथ्वीराज की निर्मल कीर्ति का वर्णन।

कवित्त ॥ मान भंजि सुरतान। मान भंज्यौ सुरतानं ॥
उन उप्पर नन कियौ। हुतौ बर बैर निदानं ॥
पंग लज्ज उब्बरै। सुनौ मंची अधिकारिय ॥
करिय षेत चहुआन। इदं पहु पंथह वारिय ॥
मुह मुच्छ सुचछ सोमेस सुअ। भुअ समान संभरि धनिय ॥
पद्धरै दीह जस चढ्ढई। धर पद्धर करि अप्पनिय ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ धन्य राज अवसान मन। रन संध्यौ सुरतान ॥
लच्छि लई चतुरंग जिति। बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ १७५ ॥

कवित्त ॥ छच मुजीक निसान। जीति लीने सुरतानं ॥
गोधर ढिल्लिय ईस। बज्जि निरघात निसानं ॥
दिसा दिसा जय कित्ति। जित्ति गावै प्रथिराजं ॥
बाल वृद्ध भर जुवन। जंग जंपै धनि लाजं ॥
सा ध्रम्म धारि छचौ न्रपति। दिपति दीप भुअलोक पति ॥
पुज्जै न कोइ सुरतान कों। मुष अयन्न पारथ्थ गति ॥छं०॥१७६॥

दूहा ॥ हालाहल वित्ते सुभर। कोलाहल अरि गान ॥
सुबर राज प्रथिराज कौं। तपय बीर बहु जान ॥ छं० ॥ १७७ ॥

सुलतान का मुक्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन।

(१) ए- कृ. को.-अपार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ छंडिदियौ सुरतान । सुजस पहु पीप मंडि सिर ॥
जित्ति जंग राजान । इच्छि पूजा इच्छी थिर ॥
भूमिय मिलि इक आइ । इक्क बंधे बस किज्जिय ॥
इक्क अप्प पहराइ । मान भजि रूमन दिज्जय ॥
आवै [1]न पार लच्छी सहज । षट्ट बरन सुष्षह रुगन ॥
चहुआन सूर संभरि धनी । तपै तेज सोमह सुअन ॥छं०॥१७८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासेके मोरव्यूह पीपा पातिसाह ग्रहनं नाम एकतीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥३१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ करहे रो जुद्ध प्रस्ताव लिख्यते ।

(बत्तीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का मालव (देश) में शिकार खेलने को जाना ।

दूहा ॥ [1]कितक दिवस वित्ते न्रप्रति । सारंगीपुर साज ॥
धर मालव मंड्यौ न्रपति । आषेटक प्रथिराज ॥ छं० ॥ १ ॥

पृथ्वीराज का ६४ सामंतों के साथ उज्जैन की तरफ जाना और वहां के राजा भीम प्रमार को जीत लेना ।

कवित्त ॥ चौअग्गानी सट्ठि । सूर सामंत [2]सु सथ्थं ॥
मालव धर प्रथिराज । सज्जि आषेटक तथ्थं ॥
बर उज्जेनी राव । जीति पांवार सु भीमं ॥
बल संमर जो गट्ट । गाहि चहुआंन [3]जु सीमं ॥
सगपन सु जीति संभरि धनिय । ग्रहन जोग सम बर न्रपति ॥
संभाग समर सुनयौ समर । समर बीर मंडन दिपति ॥ छं० ॥ २ ॥

इन्द्रावती और पृथ्वीराज का योग्य दंपति होना ।

दूहा ॥ सुबर बीर चिंतै न्रपति । बर बरनौ दुति काज ॥
बर इंद्रावति सुंदरी । बरन तकै प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३ ॥

इन्द्रावती की छबि वर्णन ।

कवित्त ॥ इंद्र सुंदरी नाम । बीय इंद्रावति सोहै ॥
बर समुंद पांवार । धरिग अति सम संग लोभै ॥
मनमथ मथन नरिंद । हाइ करि भाइह गाढ़ौ ॥
[4]रूप तरंग अंकुरित । तुंग दोऊ करि काढ़ौ ॥

---

(१) कृ. ए. को.-कितेक, केतेत, फितेक ।
(२) मो.-जु ।
(३) मो.-सुसीमं ।
(४) ए. कृ. को.-रुअत अंग, अँग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यों छिति काम जंप्यौ परित। अति सुदेह न्निम्मल झलकि।
संकुच सु काम कर [1]कलिय तिहि। [2]रिपु सुदेखि आयौ ललकि॥
छं० ॥ ४ ॥

पंचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लग्न चढ़ाना।

दूहा ॥ श्रीफल दुजबर हथ्थ करि। दैन गयौ चहुआन॥
दिन पंचमि बर भोम दिन। लगन [3]करै परमान॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इन्द्रावती के रूप, गुण और वय इत्यादि के विषय में प्रश्न करना।

दुज पुच्छै आतुर न्नपति। किहि वय किहि उनहार॥
किहि लच्छिनमति कौन [4]विधि। [5]कहि कहि सुमति विचार ॥छं०॥६॥

ब्राह्मण का इन्द्रावती की प्रशंसा करना।

कुंडलिया ॥ बय लच्छन अरु रूप गुन। कहत न बनै सु बाम॥
सारद मुष उच्चारती। साषि भरै जो कांम॥
साषि भरै जो काम। कहै सारद मुष अप्पन॥
साषि चित्त नन [6]धरै। कहिय दिष्षियं सु अप्पन॥
बलि सरूप सज्जी मदन। सुभ सागर गुर मेव॥
सो सज्जिय भज्जिय दिवह। तकि प्रथिराज बलेव॥ छं० ॥ ७ ॥

ब्राह्मण के बचनों को पृथ्वीराज का चित्त देकर सुनना।

दूहा ॥ बाल सुनत प्रथिराज गुन। [7]ढुरि ढुरि श्रवन सु हित्त॥
जिम जिम दुजबर उच्चरत। तन मन तिम तिम रत्त॥ छं० ॥ ८ ॥

इन्द्रावती की अवस्था रूप गुण और सुलच्छनों का वर्णन।

(१) मो.-कर लीय।
(२) ए. कृ. को.-फेरिपुं देख।
(३) मो.-करइ।
(४) ए.-बुध।
(५) ए. को.-किंहि किंहि।
(६) ए. कृ. को.-भरै।
(७) ए. कृ. को.-दुरि दुरि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनूफाल ॥ सुनि प्रथम बालिय रूप। बर बाल लच्छिन [1]नूप ॥
अहि संधि सैसव पाल। अजु अरक राका हाल ॥ छं० ॥ ९ ॥
सैसव सु स्त्रर समान। वय चंद [2]चढ़न प्रमान ॥
सैसव जोवत एल। ज्यों पंथ पंथी मेल ॥ छं० ॥ १० ॥
परि भोंह भँवर प्रमान। वै बुद्धि अच्छरि आन ॥
द्रिग स्याम सेत सुभाग। सावक्क स्त्रग छुटि बाग ॥ छं० ॥ ११ ॥
बिय द्रिगन ओपम कोड़। सिस भ्रंग षंजन होड़ ॥
बर बरन नासिक राज। मनि जोति दीपक लाज ॥ छं० ॥ १२ ॥
गति सिषा पतँग नसाव। ओपंम दे कवि आव ॥
नासिक्क दीपन साल। झँप देत षंजन बाल ॥ छं० ॥ १३ ॥
बिय बाल जोवन सेव। ज्यों दंपती हथलेव ॥
वैसंधि संधि अचिंद। ज्यौं मत्त जुरहि गुविंद ॥ छं० ॥ १४ ॥
* कहि ओपमा कविचंद। .... ॥
तुछ रोम राजि विसाल। मनों अग्गि उग्गिय बाल ॥ छं० ॥ १५ ॥
कुच तुच्छ तुच्छ समूर। मनों काम फल अंकूर ॥
वय रूप ओपम एह। मनों कामदप्पन देह ॥ छं० ॥ १६ ॥
वर छिन्न थक्कत तेह। जा जनक न्टप कर देह ॥
वैसंधि कविवर बंधि। ज्यों वृद्ध बाल बिबंधि ॥ छं० ॥ १७ ॥
वैसंधि संधि [3]समान। ज्यौं स्त्रर ग्रहन प्रमान ॥
वै राह ससि गिलि स्त्रर। चव ग्रहन मत्त करूर ॥ छं० ॥ १८ ॥
वर बाल वैसंधि एह। सिक्कार काम करेह ॥
लज को लज लजि छंडि। चित रंक दीन समंडि ॥ छं० १९ ॥
कहां लगि कहौं बर नाइ। तो जंम अंत सु जाइ ॥
फल हथ्थ लिय परवान। तप तुंग तो चहुआन ॥ छं० ॥ २० ॥

उज्जैन में इन्द्रावती के व्याह की जब तयारी हो रही थी उसी समय गुज्जर राय का चित्तौर गढ़ घेर लेना।

(१) ए.-रूप। (२) मो.-चढ़त।

* यह पंक्ति मो.-प्रति के अतरिक्त अन्य किसी प्राति में नहीं है। (३) ए. कृ. को.-प्रमान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ वर उज्जेनीराव । रंग बज्जे नीसानं ॥
इंद्रावति सुंदरी । बीर दीनी चहुआनं ॥
राज मंडि आषेट । समर कग्गर बर धाइय ॥
बर गुज्जरवै राव । चंपि चित्तौरै आइय ॥
उत्तरे बीर प्रब्बत गुहा । धर पद्वर मेलान किय ॥
जोगिंदराव जग हथ्थ बर । गढ़ उत्तरि [1]किरपान लिय ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का रावल की सहायता के लिये चित्तौर जाना।

दूहा ॥ छंडि बीर आषेट बर । गो मेलान नरिंद ॥
छंडि सूर सिंगार रस । मंडि बीर बर नंद ॥ छं० ॥ २२ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को अपना खड्ग बँधा कर उज्जैन को भेजना और आप चित्तौर की तरफ जाना।

कवित्त ॥ मतो मंडि चहुआन । सबै सामंत बुलाइय ॥
दै षंडो पज्जून । बीर उज्जेन चलाइय ॥
सथ्थ कन्ह चहुआन । सथ्थ बड़गुज्जर रामं ॥
सथ्थ चंदपुंडीर । सथ्थ दीनौं नृप हामं ॥
आरत्त अत्तताई सुबर । रा पज्जून सु मुक्कलिय ॥
मुक्कल्यौ गोर निद्दुर सुबर । मुक्कलि जैसिंघ परषलिय ॥ छं० ॥ २३ ॥

दूहा ॥ मुक्कलयौ कविचंद सथ । [2]न्रिप मुक्कलि गुरराम ॥
मुक्कलयौ कैमास संग । दाहिम्मों बर ताम ॥ छं० ॥ २४ ॥
सब सामंत सुसंग लै । लै चल्यौ चहुआन ॥
बरनि चिन्ह उर सल्लई । कहिग कबिय [3]बष्षान ॥ छं० ॥ २५ ॥

ससैन्य पृथ्वीराज के पयान का वर्णन।

चोटक ॥ प्रथिराज चढ्यौ सिर छत्र उपं । ससि कोटि रबी ज्यों नछित्र तपं ॥
गजराज बिराजत पंति घनं । घनघोरि घटा जिम गर्जि [4]गनं ॥
छं० ॥ २६ ॥

(१) ए. कृ. को.-करपान। (२) ए. कृ. को.-नृप।
(३) ए. बषान। (४) ए. कृ. को.-मनं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हय पष्षर बष्षर तेज [४]तुनं। किननंकहि [५]धक्कहि सेस धुनं॥
सहनाइ नफेरिय भेरि नदं। घुरवान निसानन मेघ [६]भदं॥छं०॥२७॥
घन टोप सु ओप अनेक सरं। मनु भद्दव बीज उपंम धरं॥
*किरवान कमानन तान कारं। हथनारि हवाइ कुहक्क वरं॥
छं०॥ २८॥
सुजयं प्रथिराज सु सारथयं। दुतियं कहि भारथ पारथ यं॥
छं०॥ २९॥

(४) मो.-तुमं। (५) ए.-धर्काहि। (६) मो.-नदं।

* यह पंक्ति मो.-प्रति में नहीं है।

मोतीदाम॥ चल्यौ न्रप बीर अनंदिय चंद। सु मुत्तियदाम पयंपय छंद॥
दए न्रप कग्गद भृत्त सु इष्ट। मिले सब आइस जंग न रिष्ट॥
छं०॥ ३०॥
उड़ी पुर धूरि अछादिय भान। दिसा धरि अठ्ठ न सुझ्झय [१]सान॥
बजे घन सद्द निसान सुहद्द। लजे तिन सद्द समुद्दय रद्द॥
छं०॥ ३१॥
[२]मुदे सतपच कमोदन षेरु। करे चतुरंगय संकिय मेरु॥
द्रिगपाल पयाल पुरं सरसी। तिनकै बर कन्ह परे धुरसी॥
छं०॥ ३२॥
जु अनंदिय चंद निसाचर यों। किल कंपहि तुंड जसं बर यों॥
बिफुरै बर ह्वर चिहूं दिसि यों। डरपै सुर पत्ति उरं बसि यों॥
छं०॥ ३३॥
फन फूंक फनंपति को बिसरी। धरकैं पय बज्जि घुरं दुसरी॥
जु रहे रुकि चंपि धजा न धजं। तिनसों बर [३]पांति षगं उरझं॥
छं०॥ ३४॥
बर बज्जि तंदूर तहां तबलं। निसु नंन नवीनय बंस बलं॥
जु धरैं वर गौर [४]उछंग हरं। सु कहै बर कंतिन कंपि डरं॥
छं०॥ ३५॥

(१) मो.-भान। (२) ए. कृ. को.-सुदे। (३) ए. कृ. को.-पंषियते।
(४) मो.-उछंग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जु बजावत [1]डोंरुअ डक्क सुरं। रन नंकहि जोग जुगाधि हरं॥
सजियं चतुरंग [2]प्रथीपतियं। दुतियं कथि भारथ पारथयं॥
छं०॥ ३६॥

पृथ्वीराज का सैन सज कर चित्तौर की यात्र करना और उधर से रावल के प्रधान का आना और पृथ्वीराज का रावल की कूशल पूछना।

दूहा॥ सजी सेन प्रथिराज बर। बीर बरन चहुआन॥
बरद सौर संभय मिल्यौ। चिचंगी परधान॥ छं०॥ ३७॥
उत रावर सम्हौ मिल्यौ। चिचंगी परधान॥
कहो समर रावल कहां। पुच्छि कुसल चहुआंन॥ छं०॥ ३८॥

कुंडलिया॥ मिलत राज प्रथिराज बर। समर कुसल पुछि तीर॥
कहां सेन चालुक्क कौ। कहां समरंगी बीर॥
कहां समरंगी बीर। दियौ उत्तर परधानं॥
करहेरा चिचंग। राज आहुट्ठ प्रमानं॥
गुज्जरवै गुरि[2]जंम। हक्क उत्तर पद्धर चल्लि॥
गढ़ इत्तं दस कोस। समर उब्भो समरं मिल्लि॥ छं०॥ ३९॥

प्रधान का उत्तर देना।

कवित्त॥ कहि चिचंगिय मंचि। चंपि आयौ चालुक्कह॥
तुम नन दीनौ भेद। आइ [3]मंडोवर चुक्कह॥
चिचंगी चतुरंग। आइ अड्डो करहेरां॥
जुद्ध रुद्ध चालुक्क। हुए कोऊ दिन भेरां॥
हम दैन षबर तुम मुक्कलिय। कहौं कहौ मुष मुष्ष रुष॥
प्रथिराज राज अग्गैं विवरि। कही वत्त परधान मुष॥छं०॥४०॥

पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुड़ते ही परास्त करूंगा।

(१) मो.-मोरे। (२) ए. कृ. को.-मंडहि बर।
(३) मो.-प्राति पतियां। (४) ए. कृ. को.-जंग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्प बुझ्झै चालुक्क। सेन कित्तक परमानं ॥
आइ ग्रह्यौ चिचंग। निरत दीनी नन आनं ॥
सूर सुबर आहत्त। रीति रष्षी विधि जानं ॥
इन अग्गै चालुक्क। बेर कित्ती भग्गानं ॥
जोगिंद राव जीयन बलिय। कलिय काल छप्पन बिरद ॥
समरंग बीर सम सिंघ बल। चंपि लैन चालुक दुरद ॥छं०॥४१॥

पृथ्वीराज का आगे बढ़ना।

चौपाई॥ करि अग्गे लीनौ परधानं। आतुर हीं चल्यौ चहुआनं ॥
दै गढ़ दच्छिन तच्छिन आनं। समर सजन संमुह उठि धानं ॥छं०॥४२॥

रणभूमि की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

कवित्त॥ पावस रन प्रब्बाह। अभ्भ छायौ छिति छाइय ॥
छिची छित्ति प्रमान। अभ्भ बदरं उठि झांइय ॥
आलस (१)नींदय षीझ। सत्त राजस गहि तामस ॥
धर दुह रन बुठ्ठनह। करै उद्दिम रन हामस ॥
अंगार रंभ ग्रेहं बसह। औ कुलटा सुकबीय हुव ॥
कारन्न किति औ काल मिसि। द्रवै इंद्र झरह सुलव ॥छं०॥४३॥

चालुक्य सेन की सर्प से उपमा वर्णन।

ज्यौं गुनाव गारडू। सेन चालुक मिसि साही ॥
विषम जोर फुंकयौ। सु फन ब्रह्मंडन वाही ॥
जीभ षग्ग जझ्झारि। सेन सज्जे चतुरंगी ॥
बान मंच मंने न। रसन कुंनन आवग्गी ॥
मन धीर बीर तामस तमसि। निधि चल्ले मन मध्य दिसि ॥
भोरा भुवंग भंजन भिरन। पुब्ब दई चिंतह सु बसि ॥ छं० ॥ ४४ ॥

पृथ्वीराज की सेना की पाराधि से उपमा वर्णन।

यह संभरि चहुआन। बीर पारधि षरि आइय ॥

(१) मो.-नीदरुषीज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुहुं निसान बजि समुह। भूमि पुर कंपि हलाइय॥
बीर सिंघ आहुट्ठ। बीर चालुक मुष साहिय॥
पुच्छ मग्ग चहुआन। दुहुन बर बीर समाहिय॥
उत्तरिय मनों सासुद्द तहि। उदित दीह मंगल अरक॥
जोगिंद जेम जोगिंद कसि। अष्ट कुली बंछै मुरक॥ छं० ॥ ४५ ॥

चहुआन और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना ।

दूहा॥ चालुक्कां चहुआन दल। भई सनाह सनाह॥
दोऊ सेन कविचंद कहि। बरनि बीर गुन चाह॥ छं० ॥ ४६ ॥

दोनों ओर से युद्ध के बाजे बजते हुए युद्धारंभ होना।

मोतिदाम॥ सजी बर सेन सु चालुकराइ। परे बर बीर निसानन घाइ॥
भए दल सोर चिहूं दिसि वक्क। मनों मरु पुत्त हकारहि हक्क॥
छं० ॥ ४७ ॥

अछादि अरुन्न न सुझ्झत भन्न। करें किधौं सोर कपी बर गल्ह॥
गहब्बर बैंन उचारत स्रोन। इहै जुधकार प्रकारय द्रोन॥
छं० ॥ ४८ ॥

धरं गज आगम नीम अउड्ड। छुटे बर पाइक फूलय रुड्ड॥
सुसील अफूल बन्यो हयवान। विचैं गुथि मोति कुहक्क [1]अचान॥
छं० ॥ ४९ ॥

दुहूं बिच नग्ग मगं नग पंति। परी तहां पट्टनराइ मपंत॥
जु भाल अंकूर सु सुंदप बिंद। धरी हयनारि छतीसय चंद॥
छं० ॥ ५० ॥

कसुंभिल डोरि सु पच्छिम संधि। तिठौहर बंध नरिंद सु बंध॥
लरं मधि ब्रह्म सु चालुकराव। दिसं बुलि भट्टिय दछि न काव॥
छं० ॥ ५१ ॥

दिसि वाम जवाहर मेर अराव। रच्यौ अरगंध नरिंदन चाव॥
रंग स्याम सनेत कसे घन रूप। तिन में बर छीन सुरंग अनूप॥
छं० ॥ ५२ ॥

(१) मो.-अबान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पसरी बर क्रन्न सनाह न तीर । अचवै उत कालिय के रुचि पीर ॥
सजी चतुरंगन बग्ग बनाइ । चढ़े अरि के उर चालुक राइ ॥
छं० ॥ ५३ ॥

इधर से पृथ्वीराज उधर से रावल समर सी जी का चालुक्य सेना पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ चालुक्कां चित्रंगपति । मिल्ले दिष्टि दुअ दौरि ॥
मनों पुब्ब पच्छिमहु तैं । उड़ि डंबर इल सौर ॥ छं० ॥ ५४ ॥
[1]इत चंपौ चित्रंगपति । उत चुहान प्रथिराव ॥
आइ राज उप्पर करन । बज्जि निसानन घाव ॥ छं० ॥ ५५ ॥
कुंडलिया ॥ ढाल ढलकि दुअ सेन बर । गज पंती हलि जुथ्थ ॥
मनों मल्ल आरुद्द दोउ । तारी दै दै हथ्थ ॥
तारी दै दै हथ्थ । राम अवनी अन पिष्षे ॥
दुहुन दिष्ट अंकुरिय । पाज बंधन बल दिष्षे ॥
चंपि सेन चालुक्क । बीर श्रम सों बर मिल्ले ॥
चाहुआन [2]बर सेन । ढुरी पच्छिम दिसि ढिल्ले ॥ छं० ॥ ५६ ॥

पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गज व्यूहरचना रचना ।

कवित्त ॥ [3]सब सामंत रु समर । बीर दच्छिन दिसि हंडिय ॥
चाहुआन हूसेन । गज्ज व्यूहं रचि गड्डिय ॥
एक दंत हूसेन । दंत दच्छिनह ततारी ॥
सुंड गरुअ गोयंद । राज कुंभस्थल भारी ॥
दिसि वाम सबै आकार गज । महन सीह मोरी सुबर ॥
बड्डनय अंग आहुट्ठपति । महन रंभ मच्चौ सुभर ॥ छं० ॥ ५७ ॥

युद्ध वर्णन ।

पद्धरी ॥ घन घाइ घाइ अघघाइ सूर । सिंधु औ राग बज्जै करूर ॥
हुंकार हक्क जोगिनिय डक्क । मुह मार मार [4]बज्जै बबक्क ॥ छं० ॥ ५८ ॥

(१) मो.-इन । (२) मो.-हुस्सेन । (३) को.-तब । (४) मो.-वुज्झै ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नंचयौ ईस गौ दरिद सीस। पष्षर उपट्टि घुंटै घुरीस॥
नाचंत नद्द नारद्द तुंब। अच्छरी अच्छनद जानि लुंब॥छं०॥५९॥
गिद्धिनी सिद्ध बेताल फाल। षेचर षपाल कूदै कराल॥
श्रोनित्त जानि सरिता प्रवाह। कड़कंत रुंड मुंडह सु वाह॥
छं०॥ ६०॥

चमकंत दंत मध्यै क्रपान। मानों कि ऊक लग्यौ गिरान॥
पति चित्रकोट चहुआन सेन। चालुक्क चूर किन्नौ सुरेन॥
छं०॥ ६१॥

चालुक्य राय का अकेले रावल और पृथ्वीराज से ५ पहर संग्राम करना और उन के १००० वीरों का मारा जाना।

दूहा॥ चालुक्कां परि ह्वर रन। सहस एक सुर सत्त॥
चूक चिंत चूकौ चितन। जै अचिज्ज विधि बत्त॥ छं०॥ ६२॥
पंच पहर वित्यौ समर। दिन अथवंत प्रमान॥
उभै सत्त रावर (१)समर। प्रथीराज सत आन॥ छं०॥ ६३॥

दुसरे दिन तीन घटी रात्रि रहते से फिर युद्ध होना।

निस बर घटीति (१)सत्तरह्हि। सेष जाम पल तीन॥
भिरि भोरा रावर समर। रत्तिवाह सो दीन॥ छं०॥ ६४॥

भोराराय का नदी उतर कर लड़ाई करना।

नदि उत्तरि चालुक्क बर। चिंपि सुभर प्रथिराज॥
सुभर भीम उप्पर परे। मनो कुलींगन बाज॥ छं०॥ ६५॥

घमासान युद्ध वर्णन।

भुजंगी॥ परे धाइ चहुआन चालुक्क सुष्षं। मनों मोष मद मत्त जुट्टे कुरष्षं॥
बजे कुंत कुंतं समं सेल साही। परी सार टोपं बजी तं चघाई॥
छं०॥ ६६॥

(१) ए. कृ. को.- मर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झरै सार अग्गी दझै टोप दब्भं। मनों तं चनेतं प्रलै अग्गि सज्जं॥
फटै गज्ज सीसं सिरं भेदि लोही। धसी भारती कासमीरंति सोही॥
छं० ॥ ६७ ॥

दिए नागमुष्षं गजे तं तमानं। ठनक्कंत घंटं फटै पीतवानं॥
बजे बज्ज घाई उकत्तीति चिन्हं। बकै जानि भट्टं प्रसंस्ती इन्हं॥
छं० ॥ ६८ ॥

गहै दंत सूरं चढ़ै कुंभ तंती। फिरै जोगिनी जोग उच्चारवंती॥
लगी हथ्थ गोरी गई अंग भेदी। मनों राहु सूरं बँटे माहि छेदी॥
छं० ॥ ६९ ॥

रुंधी धार मंती सुमंती उच्चारै। उतक्कंठ भेली जु रंभा विचारै॥
परैं घुम्मि सूरं महा रोस भौनं। मनों वारुनी मद्द प्रथमं सु पौनं॥
छं० ॥ ७० ॥

समय पाकर रावल समर सिंह जी का तिरछा रुख देकर धावा करना।

दूहा॥ औसरि भर पिच्छें परे। समर तिरच्छौ आइ॥
मानहुं षल हुत्तसनी। भई बीभछ्छ निधाइ॥ छं० ॥ ७१ ॥

युद्ध लीला कथन।

त्रिभंगी॥ तिय बिय अरि संतं, बहु वलवंतं, ग्यारह जंतं, अति रंगी।
त्रिभंगी छंदं, कहि कविचंदं, पढ़त फनिंदं, बर रंगी॥
बिय हुअ नय नालं, बज रिन तालं, असिवर झालं, रन रंगी।
सामत भर सूरं, दिठ्ठ करूरं, मिलि (१)अरिपूरं, अनभंगी॥छं०॥७२॥
मनु भान पयानं, चढ़ि बर वानं, मिलि बथ्थानं, असिझारं।
ओडन कर डारं, बेन करारं, तामस भारं, तन तारं॥
जुट जुट्टिय जुड्डं, जोवति दुड्डं, अरिनि अरुड्डं, अरि बक्कं।
उर धरि चालुक्कं, सूर जहक्कं, (२)मुर आतक्कं, धक धक्कं॥छं०॥७३॥
दल बल पर ओटं, सीस विघोटं, रन रस वोटं, परि उठ्ठं।
दंतं उष्पारं, कंधय मारं, अरि उत्तारं, भ्रत छुट्टं॥

(१) मो.-आसि। (२) ए. कृ. को--सुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोगिन किलकारी, हसिहिं ततारी,दै दै भारी, हिलकारी।
अरि तन तन कालं, परि वेहालं, चालुक झालं, बर सारी ॥
छं० ॥ ७४ ॥

सामंतों का जोश में आकर प्रचार प्रचार युद्ध करना।

कवित्त ॥ वीर बीर आरब्ब। चढ़िय बीरं तन हक्के ॥
चावदिसि विद्दुरे। मोह माया न कसक्के ॥
एक दिनां आहुरे। आदि जुद्धं षिति लग्गे ॥
कै छुट्टे मद मोष। जानि बीरन द्रग जग्गे ॥
घन घाइनि घाइ आघाइ घन। मति सुभाइ विभ्भाइ परि ॥
कविचंद बीर इम उच्चरै। प्रथम जुद्ध आदीत टरि ॥ छं० ॥ ७५ ॥

भोलाराय के १०सेनानायक मारे गए, उन का नाम ग्राम कथन।

दूहा ॥ संभ्र सपट्टिय बीर भर। परिग सुभर दस राइ ॥
तिय षवास परिगह न्रपति। सिर घुम्मै घट घाइ ॥ छं० ॥ ७६ ॥
कवित्त ॥ पऱ्यौ समर षावास। जित्यौ जिन सम चालुक्किय ॥
परि भट्टी महनंग। छच नष्यौ अरि सक्किय ॥
पऱ्यौ गौर केहरी। रेह अजमेरी लग्गिय ॥
परिग बीर पामार। धार धारह तन भग्गिय ॥
रघुवंस पंच पंचौ मिले। बर पंचानन और कवि ॥
चिचंग राव रावर लरत। टरय दीह अथवंत रबि ॥ छं० ॥ ७७ ॥

आधी घड़ी दिन रहने पर पृथ्वीराज की तरफ से हुसैन खां का चालुक्य पर आक्रमण करना।

घरी अद्ध दिन रह्यौ। चलिग हसेन षान भ्रम ॥
चालुक्कां दिसि चल्यौ। मोह छंड्यौ जु क्रमंक्रम ॥
असि प्रहार चढ़ि धार। मन न मोऱ्यौ तन तोऱ्यौ ॥
अस्त बस्त वज्री कपाट। दधीच ज्यों जोऱ्यौ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर रंभ बरन उतकंठती। स्वर स्वर उत कंठ मिलि॥
ढिल्लीव ढोल जीरन जुगं। गल्ह बीर जुग जुग्ग चलि॥छं०॥७८॥

एक दिन राति और सात घड़ी युद्ध होने पर पृथ्वीराज की जीत होना।

दूहा॥ निसि दिन घटिय तिसत्त बर। दल चहुआनन चीन्ह॥
भिरि भोरा रावर रिनह। रत्तिवाह सो दीन॥ छं०॥ ७९॥

गुरजर राय भीम देव का भागना।

भिरि भग्गौ सुत भुअंग कौ। गरुड़ समर गुर राज॥
फिरि पच्छौ पुंछौ पटकि। बिन सु गरब तजि लाज॥ छं०॥ ८०॥

कवित्त॥ षेत जीति चित्रंग। हथ्थ चढ्यौ चहुआनं॥
के भोरी भर सुभर। लीन अप्पह पर आनं॥
केक किए परलोक। मुक्ति लब्भौ 'जुग जानं॥
पंच तत्त मिलि पंच। सार धारह लग्गानं॥
चहुआन समर इकतन्नि मह। तहां सेन उत्तरि सुभर॥
चालुक्क भीम पट्टन गयौ। करी चंद कित्तिय अमर॥छं०॥८१॥

कविचंद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति अमर हुई।

चौपाई॥ अमर कित्ति कविचंद सु अष्षी। जा लगि ससि सूरज नभ सष्षी॥
इह काया माया जिन रष्षी। अंत काल सोई जम भष्षी॥छं०॥८२॥

पृथ्वीराज की कीर्ति का उज्वल भेष धारण कर स्वप्न में पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना।

दूहा॥ निसि सुपनंतर राज पै। कित्ति आइ कर जोर॥
नौतन अति उज्जल तनह। नीद न्रपति मन चोर॥ छं०॥ ८३॥

कीर्ति का कहना की हे क्षत्री मैं तुझे दर्शन देने आई हूं।

जपि जगाइ सोमेस सुअ। मदन भीम चहुआन॥
देत रुप छची प्रक्रति। दरसन 'तवही पान॥ छं०॥ ८४॥

(१) ए.-गुर। (२) ए. कृ. को.-छत्री।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोटि लछन सुंदरि सहज। भय सुंदरि तिन प्रेम॥
सूर सुभर डरपै रनह। तौ सुधीर कहि केम॥ छं०॥ ८५॥

कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन।

कवित्त॥ तो कित्ती चहुआन। निदरि संसारह चल्लों॥
तीन लोक में फिरौं। देव मानौ उर सल्लों॥
थान थान द्रिगपाल। फिरिव चावद्दिसि रुंध्यो॥
तन विसाल उज्जल सुरंग। दुज्जन सिर धुंदो॥
हूं सार अडर डोंरू कहन। जोग प्रमानह उत्तरी॥
चहुआन सुनौ सोमेस तन। भूत भविष्यत विस्तरी॥ छं०॥ ८६॥

दूहा॥ तो कित्ती चहुआन हौं। तीनौं लोक प्रसिद्ध॥
धीरज धीरं तन धरै। द्रवै भूमि नव निद्ध॥ छं०॥ ८७॥
हौं सु देवि सुंदरि सहज। तुम गुन गुंथित देह॥
पुव्व प्रेम अति आतुरह। लग्यौ प्रेमलह नेह॥ छं०॥ ८८॥

प्रातः काल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कविचंद और गुरुराम को सुनाना और फल पूछना।

कवित्त॥ जु कछु लिष्यौ लिलाट। सुष्य अरु दुःष समंतह॥
धन विद्या सुंदरी। अंग आधार अनंतह॥
कलप कोटि टर जाहि। मिटै नन घटै प्रमानह॥
जतन जोर जो करै। रंच नन मिटै विनानह॥
सुपनंत राज आचिज्ज दिषि। बुझ्झि चंद गुरराम तरु॥
बरनी विचित्र राजन बरहि। कही सत्ति मत्ती सु अरु॥छं०॥८९॥

गुरुराम का कहना कि वह भोलाराये का परास्त करने वाली कीर्ति देवी थी।

दूहा॥ इह सुपनंतर चिंततह। कहि सु देब जिम कीम॥
रत्ति वाह बर नरिंद सों। दीनों भोरा भीम॥ छं०॥ ९०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज के सिविर पर सहसा आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ चौकी जैत पँवार । सलष नंदन रचि गढ्ढौ ॥
ता सत्थह चालंड । भीम भट्टी रचि ठढ्ढौ ॥
महन सीह बर लरन । मार मारन रन चौकी ॥
उठी दिष्ट अरि भोज । प्रात षिभ्भिझय बर सौकी ॥
हज्जार पंच अरि टारि कैं । भोरा अरि उप्परि परिय ॥
जाने कि पुराने दंग में । अग्गि तिनक्का झरि परिय ॥ छं० ॥ ९१ ॥

रात का युद्ध वर्णन ।

रसावला ॥ अत्ति अच्छी रनं, तेग कढ्ढी घनं । रत्ति अड्डी मनं, बीज कुट्टी घनं ॥
बीर रस्सं तनं, सार भंजे घनं । हक्क मची रनं, बाह बाहं तनं ॥
छं० ॥ ९२ ॥
रुंड मुंड घनं, ईस इच्छै चुनं । षग्ग भग्गं तनं, प्राह गंगं जनं ॥
संभ रुट्ठी मनं, तार चौसट्ठिनं । भूत प्रेतं तनं, भष्य दिन्नौं घनं ॥छं०॥९३॥
जानि सीलं रुधी, कव्वि ओपम सुधी । मंन भारथ जलं, भेदि उप्पर चलं
छं० ॥ ९४ ॥

पृथ्वीराज के प्रधान प्रधान वीर काम आए, उनके नाम ।

कवित्त ॥ दै अरि पच्छौ जैत । पऱ्यौ पांवार रूपघन ॥
पऱ्यो किल्ह चालुक्क । संधि चालुक्क हजूरन ॥
पऱ्यौ वीर बग्गरी । भयौ अग्गर चहुआनं ॥
परि मोरी जैसिंघ । सिंघ रष्षी षिजवानं ॥
हलमल्यौ सबै प्रथिराज दल । दलमलि दल चालुक गयौ ॥
तिय सीत अग्गि अंधार पष । चंद तुच्छ उद्दित भयौ ॥छं०॥९५॥

दोनों तरफ के डेढ़ हजार सैनिकों का मारा जाना ।

दूहा ॥ चालुक्का चहुआन दल । लुथ्थि स देढ़ हजार ॥
सब घाइल (१)होंड़ परिय । तब मुरि मेर पहार ॥ छं० ॥ ९६ ॥

(१) मो.-दौड़े ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का खेत को तिरछा देकर चालुक पर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ जंगी सिर चहुआंन। लुथ्थि [1]ढुंढन उप्पारिय ॥
षेत तिरच्छौ मुक्कि। षिझ्झिय लग्गौ अरि भारिय ॥
यों आतुर लग्गयौ। जान चालुक्क न पायौ ॥
[2]कंन्ह बैन [3]संभलियं। फेर बर भीम धसायौ ॥
उच्छरिय पानि बर मद्द भिरि। संग लोह हक्कारि दुहुं ॥
गुज्जर नरिंद चहुआन दुहुं। परि पारस भारत्थ कहुं ॥ छं० ॥ ९७ ॥

प्रभात होते ही युद्ध आरंभ होना।

बर प्रभात बन होत। होड़ चौहान सु लग्गिय ॥
लरत सूर दिनमान। सिरह चालुक षत षग्गिय ॥
षह धरि बज्जि निसान। रत्ति आई सु भिरत्तां ॥
लोह किरन पसरंत। सूर विरुझ्झत [4]वथ गत्तां ॥
बर सूर दिष्षि काइर विडुरि। ठठुकि सूर सामंत रन ॥
दिष्षनह सूर इन काम बर। चढ़ि दिष्षन गौ सूर तन ॥ छं० ॥ ९८ ॥

दोनों सेनाओं का जी छोड़ कर लड़ना।

भुजंगी ॥ भिरे सूर चालुक्क चहुआन गत्तं। लरंते परंते उठे सूर तत्तं ॥
दिवं दच्छिनं भीम भिरि चिचकोटं। परे मार ओटे चहुआन जोटं ॥
छं० ॥ ९९ ॥
किए सूर कोटं न हल्लैं हलाए। अमी सेन दूनं रहे हथ्थ पाए ॥
रसं बीर आयौ चल्यौ मोह प्रानं। जिनैं छच बंसं धरौ ध्यान मानं ॥
छं० ॥ १०० ॥
भज्यौ चित्त [5]वाहं लजे सूर दिष्षं। तहां चंद कव्वी सु ओपम्म पिष्षं ॥
पियं चास पिष्षं सषी पास लग्गी। मनों बाल बद्दू परे [6]पाइ अग्गी ॥
छं० ॥ १०१ ॥

(१) ए.-ढंढन। (२) मो.-कैन वैनै संभलिय फेरि बर नीम धसायौ।
(३) ए.-सभंरिलिय। (४) ए. कृ. को.-वग रत्तां। (५) मो.-चाह। (६) को.-आइ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

असव्वार ऐसें सनाहंत कट्टं। मनों [1]बीय सौकी इषी भाग वट्टं ॥
उड़ै काइरं हक्क हरि जीव चासं। उपंमा करूरं फुटै नैन पासं ॥
छं० ॥ १०२ ॥

मनों पुत्तली कंठ [2]गढ़ि चिच लाही। करं जान लग्गी टगं टग्ग चाही॥
फुटै फेफरं पेट तारंग झुल्लै। मनों नाभि तें कोल सारंग फुल्लै ॥
छं० ॥ १०३ ॥

दिए नाग मुष्षी गजं हड्डु षग्गी। पितं तेज आयौ वरं जंत लग्गी ॥
उपंमा न पाई उपंमा न बंची। मनों इंद्र हथ्थं करं राम षंची ॥
छं० ॥ १०४ ॥

[3]करी फारि फट्टं करं ऐक कोरं। जकै सिंधु भारं जुरै जानु जोरं ॥
पयं जोर ऐसै प्रतंगं चलायौ। भगंद्दत्त [4]छब्बी तहां सूर पायौ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

गिरे कंध बंधं कमंधं निनारै। उपंमा तिनं की न ओपंम चारै ॥
हकै सीस नीचं धरं उंच धायौ। मनो भंगुरी रूप न्रपती दिषायौ ॥
छं० ॥ १०६ ॥

समं पाज घट्टै कितं साम काजं। तिते [5]ऊपरे सूर चढ़ि कित्ति पाजं ॥
बड़े सूर सिद्धं सिधं कोन जोगी। म्रिगं षल्ल की भंति ज्यों षाल ओगी॥
छं० ॥ १०७ ॥

दो पहर दिन चढ़ते चढ़ते ५ हजार सैनिकों का मारा जाना।

कवित्त ॥ चढ़त दीह विप्पहर। परिग हज्जार पंच लुथि ॥
बान बचन भरि नरिंद। झारि उच्चारि देव धपि ॥
षट छह बर हज्जार। रुकि मंझे चहुआनं ॥
बर कट्टन चालुक्क। मत्ति कीनी [6]परिमानं ॥
सह सेन बीर आहुठि तहां। तौ पट्टनवै कट्टयौ ॥
उच्चर्यौ बंभ भट्टी विहर। धार धार अपु चट्टयौ ॥ छं० ॥ १०८ ॥

(१) ए. कृ. को.-विंय पियं, । (२) मों.-गहि । (३) ए. कृ. को.-गजं ।
(४) ए. कृ. को.-छब्बं । (५) ए. कृ. को.-उत्तरे । (६) मो.-परिवानं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज की जीत होना और चालुक का भागना।

तब रा निंगर राव। भ्रुभ्रुभ्रु धर रावर मंडिय ॥
हक्कि सेन चहुआन। षग्ग मग्गह तन षंडिय ॥
परिगह्यि सब सथ्थ। गयौ चालुक्क बजाइय ॥
षभर षेह षग मिलिय। निरति प्रथिराज न पाइय ॥
बीरंग बीर बज्जर बिहर। भिरत बज्जि निय विप्पहर ॥
बज्जरत बीय बंभन परत। गयौ भीम तन वर कुसर ॥ छं० ॥ १०९ ॥

चालुक की सब सेना का मारा जाना।

दूहा ॥ तीस सहस बर तीस अग। गत चालुक रन मंडि ॥
तिन में कोइ न ग्रह गयौ। सार धार तन षंडि ॥ छं० ॥ ११० ॥
बाव स्हर कोइ न भयौ। धनि चालुक्की सेन ॥
सामि काज तन तुंग सौ। चिन करि जान्यौ जेन ॥ छं० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज का रणक्षेत्र ढुंढवा कर घायलों को उठवाना और मृतकों की दाह क्रिया करवाना।

कवित्त ॥ षेत ढूंढि चहुआन। समर उप्पारि समर में ॥
निठ पायौ चामंड। मिले सब मंस रुधिर में ॥
है गै बर विभ्भूत। रंक लुट्टी चालुक्की ॥
किन हय हथ्थिय लुट्टि। गयौ पति प्रब्बत [1]मुक्की ॥
दिन अठ्ठ राज चित्तौर रहि। बहुत भगति राजन करी ॥
जोगिनी न्त्रपति जुग्गिनि पुरह। जस बेली उर बर धरी ॥ छं० ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना।

दूहा ॥ ढिल्ली न्त्रप ढिल्ली गयौ। बजि न्त्रिघात सुदंद ॥
जिम जिम जस ग्रह राज करि। तिम तिम [2]रचित कबिंद ॥ छं० ॥ ११३ ॥
जस धवलौ मन उज्जलौ। न्त्रिब्बी पहुमि न होइ ॥
भूत भविच्छति व्रित्त मन। चित्तनहार न कोइ ॥ छं० ॥ ११४ ॥

(१) मो.-सुक्की। (२) ए. कृ. को.-साचित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसके पीछे पृथ्वीराज का इन्द्रावती को व्याहना।

षंडौ सुनि पठयौ सु न्रप। बंज्जि निसानन घाइ॥
बर इंद्रावति सुंदरी। विय बर करि परनाइ॥ छं०॥ ११५॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके करहे रो रावर समरसी राजा प्राथिराज विजय नाम बत्तीसमो प्रस्तावः॥३२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ इन्द्रावती व्याह।

(तेंतीसवां समय ।)

उज्जैन के राजा भीम का चंद कवि से कहना कि पृथ्वीराज का हृदय नीरस है मैं उसको अपनी कन्या न विवाहूंगा ।

कवित्त ॥ कहै भीम सुनि भट्ट । सूर बंध्यौ सुरही [1]रित ॥
[2]दीना सों प्रति प्रीति । सामि करिहै जु सामि [3]मित ॥
[4]अमृत रत्त विष होत । अमृत रस रत्त उपज्जै ॥
ग्राव ग्राव सों प्रीति । सार सों सार सपज्जै ॥
[5]कठ्ठ सों कठ्ठ बर बंधियै । नारि नरन सों वाहियै ॥
इह काज राज कविचंद सुनि । त्यों बरनी बर चाहियै ॥ छं० ॥ १ ॥

कवि चंद का कहना कि समय पाय सगों की सहायता करने गए तो क्या बुरा किया ।

सुनि भीमंग पँवार । चढ़े प्रथिराज प्रपन्ने ॥
समर दिसा चालुक्क । [6]सजे चतुरंग सपत्ते ॥
धन्नि मगन तन आनि । कित्ति चहुआन सुनिज्जै ॥
साम दान अरु भेद । दंड सुंदरि ग्रह लिज्जै ॥
मो मत्त सुनौ [7]घर जाइ तौ । न्रप बर महि कलहत्त भय ॥
गुर गुरह सब्ब सामंत ए । लज्ज बंधि तुव हथ्थ [8]दिय ॥ छं० ॥ २ ॥

भीमदेव का प्रत्युत्तर देना ।

(१) ए. कृ. को.-तत । (२) ए. कृ. को.-तदिनां । (३) ए. कृ. को.-मति ।
(४) ए. कृ. को.-रत अरत्त विष होइ अमृत रत जुरत उपज्जै । (५) मो.-कंठ ।
(६) मो.-सुजो । (७) ए. कृ. को.-पर । (८) ए. कृ. को.-दिप ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहै जोइ वरदाइ। मंत कविचंद सु आमन॥
मन वासौं मन मिलत। जियत कै कंठ सामन॥
जो वासुर सुर पंच। [1]पग्ग मंडै चहुआनं॥
तौ भाविक जिह लेष। तिहो हैहै परिमानं॥
भावी विगत्ति [2]भंजन गढ़न। दइय दुसंकह जानि गति॥
लिषि बाल सीस दुष सुष्य दुहु। सत्य होइ परमान मति॥ छं०॥३॥

यह समाचार सुन कर इन्द्रावती का शोकातुर होना।

दूहा॥ सुनि इंद्रावति सुंदरी। धरनि सरन सिर लाइ॥
कै धरनी फट्टै कुहर। कै पावक जरि जाइ॥ छं०॥ ४॥
इन भव न्रप सोमेस सुअ। जुध बंधन सुरतान॥
कै जलद्धि बूड़वि मरै। अवर न [3]वंछौं प्रान॥ छं०॥ ५॥

सखियों का इन्द्रावती को समझाना।

कवित्त॥ सषी कहै सुनि बत्त। सुतौ दानव कुल कहियै॥
अवर जाति अन्नेक। राइ [4]गुर परनह लहियै॥
करै कोन परसंग। पाइ म्रगमद घनसारं॥
कोन करै कुष्टीन। संग लहि कामवतारं॥
तो पित्त अवर बर जो दियै। तो नन जंपै अलिय वच॥
राचियै अप्प राचै तिनह। अनरचैं रचैं न सुच॥ छं०॥ ६॥

इन्द्रावती का उत्तर कि मैं राजकुमारी हूं मेरा कहा वचन कदापि पलट नहीं सकता।

दूहा॥ तुम दासी दासी सु मति। मो मति न्रप पुचीय॥
बोलि विंन चुक्कै न नर। जो वर मुक्कै जीय॥ छं०॥ ७॥

भीम का कविचंद से कहना कि तुम यहां फौज लेकर क्या पड़े हो, क्या मेरे प्रताप को नहीं जानते।

(१) ए. कृ. को.-मद्धि आयौ। (२) ए. कृ. को.-भंजी।
(३) ए. कृ. को. छंडौ। (४) ए. कृ. को.-गुन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहै भीम कविचंद [1]सुन। स्वामि काम तुम अड्ड ॥
सेन सगप्पन रीत नह। तुम दानव कुल चड्ड ॥ छं० ॥ ८ ॥

कवित्त ॥ हौं सु भीम मालव नरिंद। मोहि घर बर अच्छिय ॥
सवा लाष मो ग्राम। ठाम संपति बहु लच्छिय ॥
विधि विधान न्रिम्मान। कौन मिट्टै इह बत्तिय ॥
होनहार होइहै पुरुष। जंपै गति मत्तिय ॥
तुम कहो नाम बरदाइ बर। गुरुराज बंदै चरन ॥
ओछी सु बत्त कट्ठौ कथन। एह सगप्पन विधि बरन ॥ छं० ॥ ९ ॥

कविचन्द का कहना कि समय देख कर कार्य्य करना ही बुद्धिमत्ता है।

दूहा ॥ अहो भीम [2]सत्तह सुमति। तुम मतिमान प्रमान ॥
औसर तकि कीजै [3]जुगत। औसर लहिजै दान ॥ छं० ॥ १० ॥

भीमदेव का पज्जून से कहना कि तुम्हें बादशाह के पकड़ने का बड़ा अभिमान है इसी से तुम और को शूरबीर ही नहीं जानते।

कवित्त ॥ कहै भीम पज्जून। सुनौ पामर मतिहीना ॥
[4]अमत कियौ तुम मंत। बरन बरनी पग लीना ॥
तुम सहाव बलि बंधि। गर्व सिर उप्पर लीना ॥
गिनौं और तिल मत्त। कह्यौ न सुन्यौ तुम कीना ॥
छचीन बंस छत्तीस कुल। सम समान गिनियै अवर ॥
घरु जाहु राज सुक्कौ बरन। करन ब्याह उछ्छाह नर ॥ छं० ॥ ११ ॥

जैतराव का कहना कि भीमदेव तुम बात कह कर क्या पलटते हो।

(१) ए. कृ. को.-कहि। (२) ए. कृ. को.-सतिमत्ति।
(३) को. कृ. ए.-जु रन। (४) मो.-अमन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैतराव जम जैत। नैन लल्ले करि बोलै ॥
¹अहो भीम करि नीम। बत्त पहली तुम भोलै ॥
बल बलिष्ट केहरिय। स्यार क्यों मुष वर घल्लै ॥
लोक भाष बुझ्झो न। न्योंत बैरी को मिल्लै ॥
हम कज्ज लज्ज सांई धरम। क्यों कढ्ढय मुष बत्तरिय ॥
सु विहान बरन थप्पै मरन। आज तुम्हारी रत्तरिय ॥छं०॥१२॥

भीम का गुरुराम से कहना कि स्वार्थ के लिये विग्रह करना कौन सा धर्म है।

दूहा ॥ तब कहि भीम नरिंद सुनि। अहो सु गुर दुज राम ॥
अमत मत्त मंडौ मरन। इह सु कोन ध्रम काम ॥ छं० ॥ १३ ॥

गुरुराम का ऐतिहासक घटनाओं के प्रमाण सहित उत्तर देना।

कबित्त ॥ चिया काज सुन भीम। मिल्यौ सुग्रीव राम जब ॥
¹कहिय बत्त पय लग्गि। नाथ मो बालि हत्यौ ग्रब ॥
हरी नारि तारिका। मास षट जुद्ध सु मंड्यौ ॥
अस्ति वस्थ करि सियल। म्रतक सम बर करि छंड्यौ ॥
तुम देव सेव रसनौ ग्रहिय। अब सहाय तुम सारयौ ॥
बंधियौ सात तारह सु जिय। बलिय बान इक मारियौ ॥छं०॥१४॥

भीम का गुरुराम को मूर्ख बना कर कविचन्द से कहना कि जैतराव को तुम समझाओ।

दूहा ॥ तुम बंभन बंभन सु मति। पढ़ि पुस्तक कहि सुस्त ॥
दो घर मंगल मंडियै। इह घर जानी बस्त ॥ छं० ॥ १५ ॥
अहो चंद दंद न करहु। तुम कुल दंद सुभाव ॥
जैतराव ²मिलि राम गुरु। लै काने समझाव ॥ छं० ॥ १६ ॥

कविचन्द का सप्रमाण उत्तर देना।

(१) ए. कृ. को.-कहा। (२) मो.-वलि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ कहै चंद सुनि दंद । त्रीय कज रावन षंड्यौ ॥
[1]बैरोचन न्रप नंद । मारि अप्पन भ्रम भंड्यौ ॥
कंस कन्ह सिसुपाल । कज्ज रुकमनि जुध मंड्यौ ॥
[2]ता बंधव रुकमान । बंध मुंडवि सिर छंड्यौ ॥
सुर असुर नाग नर पंषि पसु । जीव जंत त्रिय कज भिरै ॥
रे भीम सीम चहुआन की । ता बरनी को बर बरै ॥ छं० ॥ १७ ॥

भीम का अपने प्रधान से मंत्र पूछना।

दूहा ॥ भीम पूछ परधान [3]भर । कहौ सु कीजै काम ॥
जुद्ध जुरै चहुआन सौं । ज्यों इल रष्षै नाम ॥ छं० ॥ १८ ॥

मंत्री का कहना कि इन्द्रावती पृथ्वीराज को व्याह दीजिए पर भीम का इस बात को न मान कर क्रोध करना।

कवित्त ॥ इह सु नाम [4]अन्नाम । जेन नामह घर जाइय ॥
इहै नहीं घर जोग । अगनि दीपक दिष्षाइय ॥
पहछैं ही भज्जियै । होइ दुज्जना हसाई ॥
इंद्रावति सुंदरी । देहु चहुआन प्रथाई ॥
सुनि भीम राज तत्तौ तमकि । गई बत्त बुभझी सु तुम ॥
हक्कारि जैत गुररराम कवि । षग्ग व्याह न न करैं हम ॥ छं० ॥ १९ ॥

सामंतों का परस्पर विचार बांधना।

दूहा ॥ उठि चल्ले सामंत सब । करन दंद मति ठाम ॥
जो बरनी बिन पछि फिरैं । न्रपति न मन्नै माम ॥ छं० ॥ २० ॥

रघुवंस रामपवार का वचन।

कवित्त ॥ फिरि जानी पांवार । राम रघुबंस बिचारी ॥
जीवन जो उब्बरै । मरन केवल संचरी ॥

(१) ए.-वैरीचन, बैरीबन। (२) मो.-के बंधव रुकमना।
(३) ए. कृ. को.-वर। (४) ए. कृ. को.-सन्नाम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*महंकाल बर तिथ्थ। तिथ्थ धारा उद्घारी॥
स्वामि ध्रम्म तिय तिथ्थ। मुकति संसो न बिचारी॥
पांवार सुबल मालव न्रपति। बर समुंद जिम भारयौ॥
बर नीति कित्ति सुर वर असुर। मुगति मथन संभारयौ॥छं०॥२१॥
मती मंडि सब सथ्थ। मत्त को बित्त बिचारिय॥
बर पट्टन दक्खिन्न है। धेन लैहै हक्कारिय॥
बर बाहर पालिहै। स्वामि षिष्भिहै पांवारय॥
बर आतुर धाइहै। चप्प संम्हौं हक्कारिय॥
धर दहै कोस अधकोस बर। फिरि चावद्दिसि रुंधही॥
करतार हथ्थ केतिय कला। तिहिं दुज्जन फिरि बंधही॥छं०॥२२॥

चहुआन की फौज के भीमदेव की गौओं के घेर लेने पर पट्टनपुर में खलभल पड़ना।

दूहा॥ पंच कोस मेलान करि। लिय न्रप पट्टन धेन॥
कूक कहर बज्जिय बिषम। चढ़िय भीम न्रप सेन॥ छं०॥ २३॥
उंच क्रंन अनमिष नयन। प्रफुल्लित पुच्छ सिरेन॥
रंग गंग गौ निजरि लषि। प्रज्जलि भीम उरेन॥ छं०॥ २४॥

चहुआन सेना का मालवा राज्य की प्रजा को दुःख देना और भीम का उसका साम्हना करना।

कवित्त॥ औसरि [1]बसि सामंत। धेन लुट्टिय पट्टनवै॥
बर मंडल उज्जैन। धाक बज्जिय बट्टनवै॥
ग्राम ग्राम प्रज्जरहि। हूर मानव बर बज्जै॥
सामंतारी धाक। धार मुक्किय बिधि भज्जै॥
संभरिय बीर बाहर श्रवन। बाहर हर बाहर चढ़िय॥
चतुरंग सज्जि पांवार बर। छगन हंकि छगपति बढ़िय॥ छं०॥२५॥

* महंकाल=महाकाल "उज्जैन्याम् महाकाले" इति लिङ्गपुराणोक्त बारह जोतिर्लिङ्गों में से एक उज्जैन में महाकालेश्वर नाम से प्रसिद्ध शिवमूर्ति है।

(१) मो.-सव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीम का चतुरंगिनी सेना सजकर सन्नद्ध होना ।

हय गय रथ चतुरंग । सज्जि साइक पाइक भर ॥
आइ मिले मुषमेल । दुहून कढ्ढिय असि बर बर ॥
[1]तेग मार सिर झार । धुंम धुम्मर हर लुक्किय ॥
पऱ्यौ घोर अंधियार । विछुरि निसि भ्रम चक चक्किय ॥
को गिनै अपर पर को गिनै । लोह छोह छक्कै बरन ॥
सामंत सूर जैतह बलिय । कहत चंद जुग्गति लरन ॥ छं० ॥ २६ ॥

रघुवंसराय का नाका बांधना और पज्जून का भीम की गाएँ घेर कर हांकना ।

बर सिप्रा नदि तट्ट । धाइ सामंत जु हक्किय ॥
रोकि सुष्ष रघुबंस । धेन पज्जून सु हक्किय ॥
दुतिय बीर बर टिके । भीस भारथ जिम लग्गिय ॥
सूर बिना प्रथिराज । धके जुरि षग्गन षग्गिय ॥
मुकि धेन गंठि बंधिय मिलवि । औसर षग बढ्ढिय लरन ॥
झरि सार तिनंगा तुट्टि बर । तिरछू झर लग्यौ झरन ॥छं०॥२७॥

जैतराव और भीम का युद्ध वर्णन ।

मोतीदाम ॥ तुरंगम आउ लहु गुर ठाउ । कला [2]ससि संषि जगन्नय पाउ ॥
पयं पिय छंद सु मोतियदाम । कह्यौ धर नाग सु पिंगल नाम ॥
छं० ॥ २८ ॥

मिले जुध जैतरु भीम नरिंद । मच्यौ जुध जानि हतासुर इंद्र ॥
षगें षग मग्ग परे धर मुंड । परे भर बथ्थ मरोरत झुंड ॥
छं० ॥ २९ ॥

कटक्कहि हड्डहि गूद करक्क । विछुट्टकि तुट्टहि लुंब लरक्क॥
भभक्कत बक्कत घाइल छक्क । उरझ्झत अंत सु पाइन तक्क ॥छं०॥३०॥

---

(१) ए. कृ. को.-"मिले लोह सामंत धुम्म धुम्मर हर लुट्टिय ।
(२) मो.-सति ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करक्कस केस मनों नट भंग। नचे सब सारद नारद संग॥
रनचिय बेस उलथ्थ पलथ्थ। परै धर लुथ्थि उनें उन जथ्थ॥
छं०॥ ३१॥
करें कर आवध दंड छतीस। तकै छल सांइय ध्रम्म मतीस॥
नचै भर षप्पर चौसठि नार। इसौ जुध रुद्र अनुद्र अपार॥छं०॥३२॥
गए भगि सेन सँग्राम सियार। भिदै रवि मंडल सूर सुबार॥
छं०॥ ३३॥

दूहा॥ आदि सूर पांवार बर। भीम मरन तिन जान॥
हमसि हमसि संम्हौ भिरै। षग पन मोषन पान॥ छं०॥ ३४॥

युद्ध विषयक उपमा और अलंकारादि।

पद्धरी॥ *अनिबद्ध जुद्ध आवद्ध सूर। बरि भिरत भंति दीसै करूर॥
झलमली संगि फुटि परदि तुच्छ। उप्पमा चंद जंपै सु अच्छ॥
छं०॥ ३५॥
बद्दल सु माहि दीसै प्रमान। निक्कर्यौ पंचमी भाग भान॥
†बर सांग फोरि सिप्पर प्रमांन। छरि मद्दत चंद सो भासमान॥
छं०॥ ३६॥
मानों कि राह ससि ग्रहै धाइ। पैठयौ सरन बद्दलन जाइ॥
किरवान बंकि बढ्ढे बिसाल। मनुं ससिअ डोर कढ़ि चक्र लाल॥
छं०॥ ३७॥
सिप्पर सुमंत करि तुट भमाइ। मानहु कि चक्र हरि धरि चलाइ॥
दुहुं सेन तीर छुट्टे समूह। मानों दपंति पंषिय सजूह॥छं०॥३८॥
कढ़ि इसी तेग धाइय पहार। मनुं अमं इंद्र सज्जो संभारि॥
बिरचै जु सूर बाहै बिहथ्थ। दिषि दूर चढ्ढि मनमथ्थ रथ्थ॥
छं०॥ ३९॥
भरहरै सब्ब पाइल सुभार। रिन (१)रूप देव दिसि सूर पार॥
गुरहरी भेरि वर भार सार। बज्जे सु तवल आकास तार॥
छं०॥ ४०॥

* छन्द ३५ से ३८ तक का पाठ मो. प्रति में नहीं है।
† यह पंक्ति मो. को.-कृ. इत्यादि प्रतियों में नहीं है। (१) ए. कृ. को.-सूप राज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झक झक उझक्क बद्दल दिषीव। ओपम्म चंद तिन कहत हीव॥
कट हित्त सूर जोधाइ मुक्कि। कढ्ढंत बाल ज्यों बाल रुक्कि॥छं०॥४१॥
इह सार सुद्ध मिट्टिय डरेन। जानियै बीय वयसंधि तेन॥
परि सहस सत्त दोउ सेन बीर। रवि गयौ सिंधु तीरह सु[1]तीर॥
छं०॥४२॥

सायंकाल के समय युद्ध बन्द होना।

कवित्त॥ संझ हेत बहि सार। मार [2]करि तुट्टि सनद्ध रिझ॥
सो ओपम कबिचंद। भंग छुट्टे कि बाल षिझ॥
टोप [3]ओप उत्तरै। परै विपरीत विराजै॥
मनों सु भाजन भोम। हथ्थ जोगिनि रुध काजै॥
यों भर्‌यौ सेन सम बर सुबर। नन हार्‌यौ जित्यौ न कोइ॥
दोउ सेन बीच सरिता नदी। निस कढ्ढी बर बीर होइ॥
छं०॥४३॥

दूसरे दिवस प्रातःकाल होते ही पुनः सामंतों का पान-व्यूह रचकर युद्ध करना।

होत प्रात सामंत। पान व्यूहं [4]जुध रच्चिय॥
मोती भर सामंत। पान कूरंभ रा सच्चिय॥
बर हरिन्य उथ्थट्ट। पत्ति मंडी [5]गुन राजै॥
[6]लाल रूप कविचंद। मद्धि कनइक दुति साजै॥
[7]नालीव रूप लीनो बरन। राम सुबर रघुवंस भिरि॥
कोदनि सुरंग पंती करिय। बीय सहस पुंडीर परि॥ छं०॥४४॥

युद्ध वर्णन।

मालती॥ तिय पंच गुरु, सत सत्ति चामर, बीय तीय, पयो हरे॥
मालती छंद, सुचंद जंपय, नाग षग मिलि, चित हरै॥

(१) ए. कृ. को.-नीर।　(२) मो.-कहि।
(३) मो.-ओट।　(४) मो.-सुध।　(५) ए. कृ. को.-गुर।
(६) ए. कृ. को.-लाज।　(७) मों.-नालीच।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नव सूर सलि ललि, अरिन अल मिलि, लोह झिल मिल, निझरे ॥
बर सूर तल छुटि, लजन नट्टय, बीर सबदन, बर भरे ॥ छं० ॥४५॥
मिलि सार सार, पहार बजि घट, उघटि [1]नट जिम, [2]तानयौ ॥
झलमलत तेक, सकत्ति बंकिय, ओपमा कबि, मानयौ ॥
मनौं बिट्ट जिम, बेहार ग्रह पति, कुलट तन तिय, लोकियं ॥
धन सूर धार, अधार जन जिन, धार धार, जनेकियं ॥छं० ॥४६॥
चिहुं दिसा चाहं, सूर बह बह, जूट चह्लं, निह्वयं ॥
मनु रास मंडल, गोप कन्हं, दुंप दंपति, बंधियं ॥
बर अरिर सेन, बिडारि चिहु दिसि, करषि काइर, भज्जयं ॥
बर बीर धार, पंवार सेना, परे सोम, अलुझ्झयं ॥ छं० ॥ ४७ ॥

युद्ध होते होते उत्तरार्ध में सामंतों का उज्जैन मंत्री को घेर कर पकड़ लेना ओर इन्द्रावती का चहुआन के साथ व्याह करना स्वीकार करने पर कविचन्द का उसे छुड़ा देना।

कवित्त ॥ दिन पल्लट्यौ पांवार। सस्त्र बाहै सस्त्रन पर ॥
चावद्दिसि सामंत। भीम बोल्यौ सुरंग नर ॥
तन सट्ट अरि सट्ट। बंधि लीने उज्जेनी ॥
बल छुट्यौ संग्रह्यौ। दई बर भंभर नैनी ॥
कविचंद छंडायौ बीच परि। बाल सुबर सुंदर बरी ॥
धनि सूर बीर सामंत हो। [3]जुजर जुद्ध इत्तौ करी ॥ छं० ॥ ४८॥

भीम का सब सामंतों का आतित्थ्य स्वीकार करके उनके घायलों को औषधि करना।

दूहा ॥ भीम भयानक भग्रह्यौ। सरन राम कविराज ॥
बर इंद्रावति सुंदरी। मे दीनी प्रथिराज ॥ छं० ॥ ४९ ॥

(१) मो. ए. कृ. को.-घट। (२) मो.-सौनयौ।
(३) मो.-सु बर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो मति पच्छैं उप्पजै । सो मति पहिले होइ ॥
काज न विनसै अप्पनौ । दुज्जन हँसे न कोइ ॥ छं० ॥ ५० ॥

आदर करि आने सु ग्रह । भगति जुगति बहु कीन ॥
जे भर घाइल उप्परे । जतन जिवाइ सु दीन ॥ छं० ॥ ५१ ॥

षग विवाह भीमंग रुचि । बाजे बज्जन लग्गि ॥
मंगल मिलि अलि गावहीं । गौष गौष निस जग्गि ॥ छं० ॥ ५२ ॥

इन्द्रावती का विवाह उत्सव वर्णन और सामंतों का पृथ्वीराज को पत्र लिखना कि भीम देव ने विवाह स्वीकार कर लिया है।

भुजंगी ॥ रची बेदिका बंस सोब्रन्न सोहै । जरे हेम में कुंभ देषंत मोहै ॥
लगी बेद विप्रान सों [1]गान झांईं । रचे कुंड मंडप्प सेषं न सांई ॥
छं० ॥ ५३ ॥

हसे तर्क वित्तर्क हासं सुरासं । घसे कुंकमं लाल गुल्लाल वासं ॥
उड़ै बीर [2]गोधूरकं वास रेनं । करे भेरि भुंकार गज्जत्त गेनं ॥
छं० ॥ ५४ ॥

चवै छंद बंदी ननं पार जानं । करे दान हेमं सु विद्या बिनानं ॥
भई प्रीति जेतं सुरा कव्विरानं । तिनं लेषियं कग्गदं चाहुआनं ॥
छं० ॥ ५५ ॥

दूहा ॥ लिषि कग्गद चहुआन दिसि । दिय पुची भीमानि ॥
इंद्र घरनि सम सुंदरी । कलह कुसल बर बानि ॥ छं० ॥ ५६ ॥

इन्द्रावती का शृंगार वर्णन ।

नाराच ॥ कन्यौ सुन्हांन कामिनी । दिपंत मेघ दामिनी ॥
सिंगार षोडसं करे । सु हस्त दर्पनं धरे ॥ छं० ॥ ५७ ॥

वसन्न वासि वासनं । तिलक्क भाल [3]भासनं ॥
दुनैन ऐन अंजए । चलं चलंत षंजए ॥ छं० ॥ ५८ ॥

(१) मो.-मान । (२) मो.-केदासु । (३) मो.-तासने ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुहंत श्रोन कुंडलं। ससी रवी कि मंडलं॥
सु मुत्ति नास सोभई। दसन्न दुत्ति लोभई॥ छं०॥ ५९॥
अनेक जाति जालितं। धरंत पुप्फ मालितं॥
झँकार हार नौपुरं। घमंकि घुंघरं घुरं॥ छं०॥ ६०॥
विलेपि लेप चंदनं। कसी सु कंचुकी घनं॥
सु छुद्र घंटि घंट्रिका। तमोल आप अंटिका॥ छं०। ६१॥
कनक नग्ग कंकनं। जरे जराइ अंकनं॥
बिसाल वानि चातुरी। दिषन्न रंभ आतुरी॥ छं०॥ ६२॥
अनेक दुत्ति अंग की। कहंत जीभ भंग की॥
सहस्स रुप सारदं। सरन्न रुप नारदं॥ छं०॥ ६३॥

इन्द्रावती का मंडप में सखियों सहित आना और पृथ्वीराज के साथ गठबंधन होना।

दूहा॥ करि स्रृँगार अलि अलिन सँग। रिम झिम झुंडन मंझ।
बसन रंग नवरँग रँगे। जानु कि फुल्लिय संझ॥ छं०॥ ६४॥
चौपाई॥ कर गहि षग्ग सग्ग चहुआनं। बरन इंद्र सुंदरि वर बानं॥
मन गंठे गंठिय प्रिय जानं। जानकि देव विहाह विवानं॥ छं०॥ ६५॥

भीम का चहुआन को भांवरी दान वर्णन।

दूहा॥ सत हथ्थी हय सहस्स विय। साकति साजि अनूप॥
हथलेवौ चहुआन कों। दियौ भीम वर भूप॥ छं०॥ ६६॥
नग्ग चरित चौंडोल सौ। सुर सत दासिय सथ्थ॥
दै पहुंचाइय सुंदरीं। कही बनै वर गथ्थ॥ छं०॥ ६७॥

गमन समय इन्द्रावती की माता की इन्द्रावती के प्रति शिक्षा।

मात पुत्ति परठिय सुमति। विधि विवेक विनयान॥
पति व्रत सेवा सुष धरम। इहै तत्त मति ठान॥ छं०॥ ६८॥
पति लुप्पै (१) लुप्पै जनम। पति वंचै वंचाइ॥
इहै सीष हम मन धरौ। ज्यों सुहाग सचवाइ॥ छं०॥ ६९॥

(१) मो.-छप्पे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का बंदियों को दान देना।

बंदिन दान प्रवाह दिय। लिय सुंदरि जुध जीति॥
दुहुं जस न्रम्मल छंद [1]गुन। पढ़न कविन इह रीति॥ छं० ॥ ७० ॥

सामंतों की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त॥ धनि सामंत समथ्थ। जेन न्रप बिन जुध जित्तिय॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन जस किद्धि विदित्तिय॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन बरनी बर संध्यौ॥
धनि सामंत समथ्थ। जेन भीमंग [2]रन बंध्यौ॥
सामंत धन्नि जिन कित्ति बर। ढिल्ली दिस पायान कर॥
बैसाष मास अष्टमि सितह। कित्ति संचरिय देस पर॥छं०॥७१॥

विवाह के समय उज्जैन की शोभा वर्णन।

ढिल्लिय पति सिनगार। हट्ट पट्टन की सोभा॥
गौष गौष जारीन। दिष्षि चिय नर सुर लोभा॥
भूंगल [3]भेरि नफेरि। नद्द नीसान म्रदंगा॥
नाना करत संगीत। ताल सौं ताल उपंगा॥
गाजंत नभ्भ गज्जिय गुहिर। न्रप प्रवेस सुंदरि करि॥
सामंत जैत पयलग्गि प्रथ। प्रथक प्रथक परसंस करि॥छं०॥७२॥

दहेज वर्णन।

च्चार अग्ग च्चालीस। मत्त अप्पे गजराजिय॥
सौ तुरंग तिय अग्ग। बीस चव अप्पि सु पाजिय॥
इक अमोल सुंदरी। सत्त तिय दासिय बिंटिय॥
सबै सथ्थ सामंत। रहे भर करिय अमिंटिय॥
सामंत करी प्रथिराज बिन। करै न को रबि चक्क तर॥
सुंदरी सहित अरि जीति कै। गए बीर अष्टमि सु घर॥छं०॥७३॥

शुक्ला अष्टमी को सामंतों का दिल्ली के निकट पड़ाव डालना।

(१) मो--गुर। (२) ए. कृ. को.-वर। (३) ए. कृ. को. फेरि न फेरि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ बर अष्टमि उज्जल पषह । तिथि अष्टमि रवि [1]भीर ॥
अष्ट कोस दिल्लीय तें । चिय मुक्किग तिन बीर ॥ छं० ॥ ७४ ॥

उसी समय लोहाना का पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन का पत्र देना।

गय सुंदरि सम्हौ न्रपति । गवन करन चहुआन ॥
लोहानौ सम्हौ मिल्यौ । दै कग्गद [2]सुरतान ॥ छं० ॥ ७५ ॥

लोहाना का कहना कि सुरतान दंड देने से फिर कर दिल्ली पर आक्रमण करना चाहता है।

कवित्त ॥ मेषग्गाही सेन । दंड पलट्यौ सु विहानं ॥
अपुठौ भर चतुरंग । सजे दस गुनौ प्रमानं ॥
बर कमान षुरसान । रोहि रंगे रा गष्षर ॥
हबस हेल षंधार । सज्जि घल्ली फिर पष्षर ॥
पंजाब देस पंचौ नदी । बर मंगै मंग्गी सु बर ॥
चहुआन राह मैं [3]मग्गिली । मते मच्छ कट्टन उगर ॥ छं० ॥ ७६ ॥

पृथ्वीराज का इन्द्रावती को घर पहुंचा कर युद्ध की तैयारी करना।

दूहा ॥ सुनिय साहि गोरी सु बर । बर भरयौ चहुआन ॥
लै सुंदरि पच्छौ फिर्‌यौ । बर बज्जे नीसान ॥ छं० ॥ ७७ ॥

इन्द्रावती की रहाइस।

दिस दच्छिन तच्छिन महल । सुंदरि समुद समप्पि ॥
सकल सत्त दासी अनुप । न्रप इंद्रावति अप्पि ॥ छं० ॥ ७८ ॥

सुहागस्थान की शोभा वर्णन और इन्द्रावती का सखियों सहित पृथ्वीराज के पास आना।

(१) ए. कृ. को.-बीर। (२) ए. कृ. को.-चहुआन।
(३) मो.-निगली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ अगर कपूरति महल। सार घनसार सु रम्मिय ॥
धूप दीप सुग्गंध। दीप दस दिसि हत [1]जम्मिय ॥
सेज सुरंगति रंग। हेम नग जरे जरानं ॥
दिए भीम भूपाल। भोग साजं सु सबानं ॥
न्नप देषि अचंभ समानि मन। मुष आतुर देषन महल ॥
आनिय सु सेज चिय अलिन मिल। अलि गुंजत उप्पर चहिल ॥
छं० ॥ ७९ ॥

इन्द्रावती की लज्जामय मंद चाल का वर्णन।

दूहा ॥ हंस गवन हंसह सरन। गनि गति मति सारद्द ॥
रूप देषि भूल्यौ न्नपति। रचिय विरंचि विहद्द ॥ छं० ॥ ८० ॥

सुहाग रात्रि के सुख समाचार की सूचना।

कवित्त ॥ रस विलास उप्पज्यौ। सषी रस हार सुरत्तिय ॥
ठांम ठांम चढ़ि हरम। सद्द कहकह तह मत्तिय ॥
सुरत प्रथम संभोग। हंह हंहं सुष रट्टयि ॥
ना ना ना परि न्नबल। प्रीति संपति रत थट्टिय ॥
शृंगार हास्य करुणा सु रुद्र। बीर भयान विभाछ रस ॥
अदभूत संत उपज्यौ सहज। सेज रमत दंपति सरस ॥ छं० ॥ ८१ ॥
सुकी सरस सुक उच्चरिग। गंध्रब गति सो ग्यान ॥
इह अपुब्ब गति संभरिय। कहि चरित्त चहुआन ॥ छं० ॥ ८२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके इन्द्रावती व्याह सामंत विजै नाम तेतीसमों प्रस्ताव संपूरणः ॥३३॥

(१) ए. कृ. को.-नम्मिय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ जैतराव जुद्ध सम्यौ लिख्यते।

(चौंतीसवां समय।)

पृथ्वीराज का सप्रताप दिल्ली का राज्य करना।

कवित्त॥ किहि भेषत प्रथिराज। किहित भेषत चिहु पासं॥
किहि भेषत दिसि विदिसि। कहौ मनया उल्हासं॥
किहि उमाह उच्छाह। कौन ओपम द्रग राजै॥
सो उत्तर कविचंद। देव गुरुराज विराजै॥
सजि मान बीर चतुरंगिनी। कमल गहन सुरतान बर॥
नव रस विलास जस रस सकल। तपै तुंग चहुआन बर॥ छं०॥ १॥

ढाई वर्ष पश्चात पृथ्वीराज का षट्टू बन में शिकार खेलने को जाना और नीतिराव कुटवार का शहाबुद्दीन को भेद देना।

नीतराव षिचीय। भेद लै ग्रह चहुआन॥
दिल्लि कौ (१)ग्रह भेद। लिष्यौ कग्गद सुरतानं॥
बरष उभै षट मास। फेरि सु विहान पलान्यौ॥
षट्टू बन प्रथिराज। बहुरि आषेटक जान्यौ॥
सामंत सूर सथ्थहन को। बर बराह बर षिल्लइय॥
दैवान जोध चहुआन बर। भिरि दुज्जन भर ढिल्लइय॥ छं०॥ २॥

पृथ्वीराज के साथ में जाने वाले शिकारी जतुओं की गणना और षट्टू बन में शहाबुद्दीन के दूत का आना।

सत चीता द्वादसति। स्वांन अच्छे सु रंग दह॥
बीय अग्ग च्यालीस। सीह बर गोस कहंदह॥
सत्त सत्त म्रग अच्छ। सत्त दह अग्गति (२)पाजी॥
आषेटक प्रथिराज। बीर ओपम अति राजी॥

(१) मो.-बर। (२) ए.-षाजी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उप्परति राय षट्टूति बर। मिलि बसीठ गोरी सु बर॥
मंगे हुसेन साहाबदी। पंच देस बंटन सु धर॥ छं०॥ ३॥

पृथ्वीराज का सामतों से सलाह लेना।

मुक्कि राज आषेट। सूर सामंत [1]बुलाइय॥
सुबर साह गोरीस। आनि उप्पर षरि आइय॥
मंगे धर पंजाब। षान हुसेन सु मग्गे॥
दुष्ट भ्रत्त अवसान। दिए कग्गद लिषि अग्गे॥
संमुहे सूर सामंत बर। दै मिलान संम्हौ षरिय॥
चालंत जेम लग्गत दिवस। झुकि लग्यौ गोरी [2]गुरिय॥ छं०॥ ४॥

दूहा॥ बेगि सूर सामंत सह। मिले जाइ चहुआन॥
सिंधु विहथ्थें दूत मिलि। गोरी वै सुरतान॥ छं०॥ ५॥
अनंगपाल तीरथ्थ गय। बंधव रण सुरतान॥
बैर बीर ढिल्लिय [3]तनह। बर मंगै चहुआन॥ छं०॥ ६॥

शहाबुद्दीन के दूत का बचन।

कवित्त॥ बर बसीठ उच्चरै। साहि जानौ पहिलौ ना॥
अप्पौ पहु हुस्सेन। साहि [4]जानौ दस गुंना॥
कंक बंक करतें। नरिंद कबहु क घर छिज्जै॥
भिर गोरी तिन भरह। रहट घट्टी घट भज्जै॥
दुप्परह छांह दौसै फिरत। भावी गति दिष्षी किनह॥
मिलि थप्पि मत्त प्रथिराज बर। करहु एक बुद्धी सुनह॥छं०॥७॥

पृथ्वीराज का कहना कि ऐ ढीठ बसीठ तू नही जानता कि अभी कौन जीता और कौन हारा राज्य सुख के लिये कर्तव्य छोडना परे है।

(१) मो.-वुलाये। (२) मो.-सुरिय।
(३) मो.-तिनह। (४) मो. जादौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरे ढीठ वस्सीठ। कौन हाऱ्यौ को जित्यौ॥
[1]किन वित्तग वित्तयौ। कोन बित्तग अब बित्यौ॥
पंच तत्त पुत्तरी। पंच हथ्थन कर नच्चै॥
अजै बिजै गुन बंधि। चित्त तामस रस रच्चै॥
बंछै जु सुष्ष फल राजगति। वह करतार सु नन करै॥
उच्चरै कित्ति छल ना रहै। तब लग्गै गल बल परै॥ छं० ॥ ८॥

कहां गजनी है और कहां दिल्ली और कै वार मैंने उसे बंदी किया।

दूहा॥ कै कोसां ढिल्ली धरा। कै कोसा गज्जान॥
षंडा सौ [2]कर बंधिया। चहुआना [3]सुरतान॥ छं० ॥ ९॥
मैं रष्यौ *हुस्सेन बर। बर बंध्यौ सुरतान॥
उट्ठाए बस्सीठ बर। बर बज्जे नीसान॥ छं० ॥ १०॥

दोनों ओर की सेनाओं की सजावट की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

मोदक॥ दसमत्त पयो लहु पंच गुरं। षग पन्न हरे बिष पत्त [4]बरं॥
बर सुद्ध प्रयान हुलास छबी। कहि मोदक छंद प्रमान कबी॥
छं० ॥ ११॥
जु सजी चतुरंगन दान दियं। कबि दोउअ सेन उपम्म कियं॥
[5]सुत षंजन ज्यों बुधगत्ति पढ़ी। सति सीतल [6]बात प्रमान बढ़ी॥
छं० ॥ १२॥
बर रत्त रषत्त सुरत्त बनं। तिन की छबि पावस सज्जि घनं॥
सु बजे बर बीर निसान बजं। सु मनों घन पावस सज्जि गजं॥
छं० ॥ १३॥

(१) ए. कृ. को.-बिन। (२) ए. कृ. को.-बर। (३) ए. कृ. को.-षुरसान।
(४) मो.-हरं। (५) मो.-सत। (६) ए. कृ. को.- बाल।
* हुसेन शब्द से यहां मीर हुसेन से अभिप्राय नहीं है बरन उसके पुत्र से तात्पर्य्य है जैसा कि समय ३१ में भी दिखाया जा चुका है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजावत बीर जंजीरन सूर। कँपै सुर बीर पयालनपूर॥
उड़ि रेन चिहूंदिसि विथ्थुरियं। मुदरी द्रग अठ्ठत धुंधरियं॥
छं० ॥ १४ ॥
तिह ठौर रसं अप वंधब से। तिनके सुष बाल भुअंग ग्रसे॥
बर जग्गत नेन सु मेन मुचें। तहां क्रूर नसें नर आइ नचें॥
छं० ॥ १५ ॥
अम सूर तिनं अभिलाष रिनं। बर ग्रब्ब बलं बर बंसु तनं॥
कल किंचित संकर सूर दियं। बर बीर म्रजादन लाज लियं॥
छं० ॥ १६ ॥
सहनाइय सिंधुअ अद्दरियं। तिन ठौर भयानक संचरियं॥
बर पंच सु दीह ससी चढ़ियं। बर बीर अवाज दिसं बढियं॥
छं० ॥ १७ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज और पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना।

गाथा॥ तं बीरं जल गंभीरं। आव यों उप्पटौ सेनं॥
गोरी दिसि चहुआनं। चहुआनं गोरीयं साहि॥ छं०॥ १८॥

इधर से चहुआन और उधर से शहाबुद्दीन का युद्ध के लिये उत्सुक होना।

कुंडलिया॥ इह सु राज आतुर [1]षरिय। सुरतानह प्रथिराज॥
भूमि भार कछु [2]बढ्ढयौ। सो उत्तारन [3]काज॥
सो उत्तारन काज। परे आतुर दोउ दीनह॥
तिन अर बस चर परे। को इन [4]छट्टै मति हीनह॥
अप्पन सुसिंह बहुरे [5]सुरह। चक्कई चक मुक्कै नहीं॥
अप्पन सुहथ्थ भरही परै। दया न किज्जै मन इही॥ छं०॥ १९॥

(१) ए. कृ. को.-धरिय। (२) ए. कृ. को.-छंटयौ।
(३) मो.-पार। (४) मो.-छंडै।
(५) ए. कृ. को.-सुहर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहाबुद्दीन का सिंध नदी तक आना और चहुआन को दूतों द्वारा समाचार मिलना ।

दूहा ॥ चढ़त सिंध सुरतान [1]दल । दूत सपत्ते आइ ॥
चर चरित्त चहुआन दल । कहै साह सों जाइ ॥ छं० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना ।

कवित्त ॥ नहिन इंद्र प्रथिराज । सोम नंदन सिवरं दिसि ॥
बर इंद्रह दीसै न । महल मंड्यो सु दुहु निसि ॥
जबही हम संचरे । काल तबही दिसि पासं ॥
परत वाह लष्यंत । दिष्ट देवन सुष बासं ॥
लच्छीन [2]ग्रीव बस बीर रस । दह दिसि भिरि दानव मिलिय ॥
मेलान कोस परपंच को । गौरी वै संम्हौ चलिय ॥ छं० ॥ २१ ॥

चहुआन सेना में सूरबीरों का उत्साह करना और कायरों का भय भीत होना ।

दूहा ॥ इह अवाज चहुआन दल । बंटि सेन सु बिहान ॥
काइर भर सह उच्चरै । कहि बंधन सुरतान ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ हाइ हाइ कहि साहि । चरनि वरज्यौ सु विहानं ॥
झुझझ रहैं कै [3]जाइ । जु कछु पत्तौ चहुआनं ॥
बरन मेच्छ बर हिंदु । सुनत रन पन कर हेरी ॥
जय जानी अन चंप । पंच चतुरंग सु भेरी ॥
भुअ बीर रूप गोरी सु बर । मुक्कि भयानक [4]भट्ट जिम ॥
पलटयौ भेष देषत सयन । बर बज्जै नीसान तिम ॥ छं० ॥ २३ ॥

चलते समय सेना का आतंक वर्णन ।

चंद्रायना ॥ बर बज्जिग नीसान, दिसान पयान हुअ । वहानी ॥
उड्डि उछंगिय रेन; सु मेरनि भान भय ॥ ॥ छं० ॥ ५२ ॥

(१) ए. कृ. को.-पुल । (२) ए. कृ. को.
(३) मो.-नीय । (४) मो.-तद्दृ. को.-सरक दंती ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोरी वै भौ राह रयन हर मिग्गई।
गज असवारन ह्रर निब्रत्त सु लग्गई ॥ छं० ॥ २४ ॥

शाही सेन की सजावट की वर्णन ।

गीतामालवी ॥ गुर पंच सत्तति चामरे कवि, जोग नव गति संधयौ ॥
सब पाइ पिंगल सावरें लहु, बरन अच्छिर बंधयौ ॥
लगि गीत मालति छंद चंदय, दवरि साहित गोरियं ॥
गज मद्द नद्दय छिरह भद्दय, अननि दिन दिन जोरयं ॥छं०॥२५॥
घन चल्यौ गिरि जनु चले दिस दिस, बीय बग्ग उरब्बरे ॥
तिन देषि मन गति होत पंगुर, दान छुट्टि पटे भरे ॥
गजदंत कंतिय झलकि उज्जल, पिष्षि पंतन रा इयं ॥
रबि किरनि बद्दल पसरि धावै, वाय पंकति सज्जयं ॥छं०॥२६॥
गज करत दंत सुभंत ऊरध चंद, उप्पम मंडिकै ॥
मनो बग्ग पंतिय वार, [1]उड़गन मोह दिसि सो छंडिकै ॥
धर मत्त दंतिय सेन वंधिय, इम्भ छबि [2]कवि तामयं ॥
मनों मेघ बरषत विज्ज कौंधत, अभ्भ बुढ़ि गिरि स्यामयं॥छं०॥२७॥
गति नाग गिरवर गात दीसै, कूट कज्जल उज्जले ॥
धर चलत गिरवर बरुन बारुन, स्याम बद्दल हलिचले ॥
[3]झटकंत सुंड दिपंत पाइक, बनि समथ पसु पुज्जवै ॥
अति सेन सापरि कोन पुज्जै, जोग जुगति सु [4]लज्जवै ॥छं०॥२८॥
षय लष्ष मीरति साह गोरिय, भार झुझ्झ अलुझ्झवै ॥
षुरसान षान अरब्ब आरव, सज्जि सेन [5]सझ्झवै ॥ छं० ॥ २९ ॥

शहाबुद्दीन का स्वयं सम्हल कर सेना को उत्कर्ष देना कि अव की पृथ्वीराज अवश्य पकड़ लिया जाय ।

त्रूटी ॥ मजे बर साह तुरंगम तुंग। लजै कविचंद उपंम कुरंग ॥
[illegible]ं सित चोर गुरै गज गाह। तिनं उपमा बरनी नन जाइ ॥
छं० ॥ ३० ॥

(१) ए. कृ. का.
(२) ए. कृ. को.-इम्भ छबिद्दता, छविद्ध।
(३) मो.-पार।
(४) ए. पुज्जवै।
(५) ए. कृ. को.-सुहर।
(५) ए. कृ. को.-अंवझवै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जु सजे हय गोरियसाहि षरे । तिन देषि रबी रथ के बिसरे ॥
दिषि सेन तिनं उपमा सु करी । सु मनों नदि पूर छिली दुसरी ॥
छं० ॥ ३१ ॥

[1]कहि चंद कविंद इदं कवितं । गुरु बंक पिपं मन कै चढ़तं ॥
बजि बाज कुह्न धर सद्द षुरं । सु मनों कठतार बजंत तुरं ॥
छं० ॥ ३२ ॥

गज गाह गुरं सित सोभ षगे । मनों सेत बेऊरन भान लगे ॥
नभ कै तिमरं जित के समरं । मनु उट्ठि किरन्न सु पाल परं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

विय ओपम चंद बनी बनिकैं । सु धसें मनु गंग तरंगनि कैं ॥
जग हथ्थ बनें हय के सिरयं । गलि प्रब्बत हेम द्रुमं बरयं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

बर पष्षर सोभ करै तनयं । मनु अर्क अरक्क बिचें घनयं ॥
तिनकैं हर वाय फुलिंग सजै । सु कहैं कविचंद कुरंग लजै ॥
छं० ॥ ३५ ॥

बुहु रैनन आसन जी डरयं । [2]मग मत्त मनों बहरें बनयं ॥
मन मत्ति तिहां इत अत्ति पढ़ी । हय नष्षत रागन सांस कढ़ी ॥
छं० ॥ ३६ ॥

बिय बाय अरक्कन बंध चढ़ै । कविचंद पवन्नन बाद बढ़ै ॥
सु उड़ै नन धावत धूरि षुरं । गतिमान सुसील विसाल उ[illegible] ॥
छं० ॥ [illegible]

पय मंझत अश्वत आतुरयं । बिरचे नच प[illegible]ध कों मिलन धाई ॥
दुहु पार अषार अबड्ड षरी । मन[illegible] धार धारं रजं रज्जकीसं ॥
छं० ॥ ५१ ॥

हय अप्पिय भत्तन साहि ब[illegible]ानी । ढुंढी लुथ्थि पावै न नद्दी वहानी ॥
[illegible]नी । .... ॥ छं० ॥ ५२ ॥

(१) मो.-कविचंद । ([illegible] (२) ए. कृ. को.-सरक दंती ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रातः काल होते ही जमसोजखां और नवरोजखां का युद्ध के लिये सेना तैयार करना।

दूहा ॥ सबै सेन गोरी सु बर। चढ़िग षान जमसोज ॥
प्रात सेन चतुरंग सजि। उठ्ठि षान नवरोज ॥ छं० ॥ ४० ॥

चहुआन का सेना तैयार करना।

चौपाई ॥ ढल[1] मिली ढाल चिहुं दिसि बनाइ। [2] डम्मरी उठ्ठि आकास छाइ॥
अचरनचरन गोरीस [3] साईं। सेन चहुआन हथ्थें बनाई ॥
छं० ॥ ४१ ॥

दोनों सेनाओं का मुंहजोड़ होना।

दूहा ॥ समर सउप्पर समर किय। चावदिसि अहनग्ग ॥
मुष गोरी चहुआन भिरि। ज्यों रावन लगि अग्ग ॥ छं० ॥ ४२ ॥
चौपाई ॥ समह्यौ रन चहुआन सपठ्ठिय। वजिग वाय सुभ्भिभ्भ[4] नदि उठ्ठिय॥
धुंधर अन बद्दर निसि भद्दौं। सुभ्भिक्ष न अंष कन्ह सुनि नद्दौं ॥
छं० ॥ ४३ ॥

युद्ध समय के नक्षत्र योगादि का वर्णन।

कवित्त ॥ अट्ठ अट्ठ जोगिनिय। सुक्र सम्हौ सुरतानं ॥
दिसा सूल दिसि बाम। बैर कन्हा चहुआनं ॥
सिंघ बाम भैरवी। गहक बोली गोरी दिसि ॥
...च... रवि नवों। राह ग्यारमो सुरंग ससि ॥
शहाबुद्दीन का ...
... पहकि। गहक मझझ घूघू वहक ॥
अव की पृथ्वीराज ...
... परों बूंद बेबंग हक ॥ छं० ॥ ४४ ॥
...गी ॥ सजे बर साह तुरंगम तुगी रन किहुं कीन।
...ं सित चोर गुरै गज गाह ॥रन भरन दोउ दीन ॥ छं० ॥ ४५ ॥

(१) ए. कृ. का.
(२) ए. (२) मो.-मम्मरी।
(३) मो.-पार।
(४) ए. पुज्जनै (४) ए. कृ. को.-न दिट्ठिय।
(५) ए. कृ. को.-सुहर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों सेनाओं में रन वाद्य वजना और उससे सूर वीर लोगों तथा घोड़े हाथी इत्यादि का भी प्रसन्न होकर सिंह नाद करना और क्रुद्ध हो युद्ध करना।

भुजंगी ॥ परे धाइ धीइ दील हीनं न जुद्वे। मुषं मार मारं तिनं मान सद्दे॥
परी आवधं होड़ बज्जै निसानं। बजे हक्क सूरं दमामें न जानं॥
छं० ॥ ४६ ॥

बढ़े आवधं हथ्थ सामंत सूरं। घुर वै निसानं बजै जैत [1]पूरं॥
कढ़े बे सनाहं झनक्के उनंगी। मनों आवधं हथ्थ बज्जै चिनंगी॥
छं० ॥ ४७ ॥

परै पीलवानं मदं [2]मरक दंती। ढली ढाल ढालं ढलक्कं तुरंती॥
फुरै हथ्थ ऊनं मुरक्की उरक्की। मुरै धार धारं सुधारं मुरक्की॥
छं० ॥ ४८ ॥

तुटै सिप्परं कोर फूलै समंती। ग्रस्यौ राह सूरं छटै नभ्भ हुंती॥
परै सार तीरं छनक्कंत बज्जै। सदं तीतरं जेम सों पच्छि गज्जै॥
छं० ॥ ४९ ॥

वहै सीर गोरी पछै दै सभानं। भगै पच्छिनी पंति पावै न जानं॥
तुटै सीस जुझ्झै कमंधंत नच्चै। चलै रुद्धि धारं चिह्नं पास गच्छै॥
छं० ॥ ५० ॥

धरा भारती गंग पारथ्य आई। मनों उपठि सो सिंध कों मिलन धाई॥
फुटी वारि धारं चली ईस सीसं। लगे धार धारं रजं रज्जकीसं॥
छं० ॥ ५१ ॥

मनो तप्त लोही परे बूंद पानी। ढुंढी लुथ्थि पावै न नद्दी वहानी॥
मनं मोद लै सीस मुद्राह कीनी। .... ॥ छं० ॥ ५२॥

(१) मो.-सूरं। (२) ए. कृ. को.-सरक दंती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठं उर्द्ध सीसं उपंमा समूलं। मनो पावकं प्रलय धों ओन लक्षं॥
दोऊ दीन धाए मनें कोपरीसं। तिनं क्रोध करि धार आकास सीसं॥
छं० ॥ ५३ ॥

परें लुथ्थि लुथ्थी अलुथ्थी जबै वै। इसौ जुद्ध देषौ न दानव्व देवै॥
छं० ॥ ५४ ॥

लड़ाई होते होते तीसरे पहर शहाबुद्दीन का सामहने से पृथ्वीराज पर आक्रमण करना।

कवित्त ॥ चतिय पहुर पर पहुर। बीर घरियार ठनक्किय।
गोरी वै सो हथ्थ। चंपि चहुआन सु [1]तक्किय॥
घरिय इक्क बनि सेन। सूर सामंत परष्षिय॥
धरि ओड़न करि बग्ग। बैर सु विहान षरक्किय॥
कर बार धारि सिप्पिर करह। एक होइ [2]उप्पर तरै॥
दिसि वाम चंपि दुज्जन दलह। उसरि सेन सम्हौ भिरै ॥छं०॥५५॥

पृथ्वीराज का अपनी बीरता से शत्रु सेना को विड़ार देना।

षिझि नंष्यौ है नरिंद। भूमि धुज्जिय षुरतारं॥
मनों बद्दर [3]गज्जयत। सद्द पर सद्द पहारं॥
उड्डिय नाल चमंकि। मभ्भ धुंधर छबि लग्गिय॥
रबि ओपम कविचंद। चंद मावस घन उग्गिय॥
अरि सेन भग्गि दिसि विड्ड़रिय। परे मध्य सेना घनिय॥
धनि धनि नरिंद सोमेस सुअ। इहु अरि तें तिन वर गनिय॥
छं० ॥ ५६ ॥

इस युद्ध में दोनों ओर के मृत सरदारों के नाम।

इत्त षान मारूफ। फिरत उसमान षान ढहि॥
इन दुज्जन हय नंषि। बाग आजान बाह गहि॥

(१) मो.-चक्किय। (२) ए. कृ. को.-सिष्पर।
(३) ए. कृ. को.-गज्जंत, गरजंत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतै दीह अथ्यम्यौ। सूर बर सिंधु [1]सपन्नौ।
मुकत तट्ट मिलि सूर। स्याम रन अप्प अपन्नौ॥
साषला सूर [2]सारंग ढहि। जुरि जुवान पंचाइनौ॥
केहरौ गौर अजमेरपति। पन्यौ झुझ्झि रन भाइनौ॥ छं० ॥५७॥

सूर्य्योदय के समय की शोभा वर्णन।

दूहा॥ निसि घट्टिय फट्टिय तिमिर। दिसि रत्ती धवलाइ॥
सैसब में जुव्वन कछू। तुच्छ तुच्छ दरसाइ॥ छं० ॥ ५८॥

दूसरे दिन प्रहर रात्रि रहने से दोनों सेनाओं की तैयारी होना।

कवित्त॥ जाम निसा पाछली। सेन सज्जिय दोउ बीरं॥
सामंता चहुआन। आनि गोरी कछमीरं॥
भान पयानन भयौ। करे द्रिग रत्तह चढ्ढिय॥
ता पहिले पायान। जोध रन असुरन कढ्ढिय॥
अदिहार बीर गोरी सुबर। चाहुआन दिन सुदिन घन॥
करतार हथ्थ कित्ती कला। लरन मरन तकसीर नन॥ छं० ॥५९॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घोर युद्ध वर्णन।

भुजंगप्रयात॥ पन्यौ साहि गोरी सुरत्तान गाजी। चपी [3]गज्ज सेना क्रमं पंच भाजी॥
तहां बाहुऱ्यो बीर बीरं नरिंदं। लग्यौ धार धारं सची कित्ति चंदं॥
छं० ॥ ६०॥
अनी एक मेकं घरी अद्ध पच्छी। फटी सेन गोरी मुरी सो तिरच्छी॥
दोऊ दीन बाहै दोऊ हथ्थ लोहं। पन्यौ जानि वाराह पारद्धि रोहं॥
छं० ॥ ६१॥
कटे कंध बंधं कमंधं निनारे। मनों पत्त रत्तं वसंतं सुडारे॥
ननं अश्व चल्लै चलैं हथ्थ रोजं। ननं चित्त चल्लै रबी रथ्थ दोजं॥
छं० ॥ ६२॥

(१) मो.-सथत्तौ। (२) मो.-सामंत। (३) ए. कृ. को.-राज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घनं अश्व फेरें चलै अश्ववाहं। तिनं की उपमा कवीचंद गाहं॥
ग्रहं पत्ति अग्गै रहै ज्यों कुलट्टं। चितं हत्ति चल्लै अग्गै स्वामि घट्टं॥
छं० ॥ ६३ ॥

बरं कज्ज माला ग्रहीं रंभ सथ्थं। चढ़ै धार धारं भिदै रव्वि रथ्थं॥
रही रंभ रंभी टगंटग्ग आई। मनों पुत्तली कट्ट करसी लगाई॥
छं० ॥ ६४ ॥

हहंकार बीरं हहंकार पाई। मनों पातुरं चातुरं सो दिषाई॥
दोऊ बाह सेना दोऊ बीर ठेलं। मनो डिंभूरू जानि 'हड्डूड षेलं॥
छं० ॥ ६५ ॥

तजे आवधं सब्ब इक तेग साहं। करे भाग बिंबं अरी कोप वाहं॥
जबै विड्डुरी सेन गोरी नरिंदं। दिषे थान थानं मनों प्रात चंदं॥
छं० ॥ ६६ ॥

परे षान चौसट्ठि दुहुं बाहु राई। दुहूं मुक्तती रास कवि कित्ति गाई॥
छं० ॥ ६७ ॥

शहाबुद्दीन का हाथी पर से गिर पड़ना और चहुआन सेना का जोर पकड़ना।

दूहा॥ परत साहि गोरी सुधर। है गै भूमि भयान॥
रन रुंध्यौ सुरतान कों। परी बींटि चहुआन॥ छं० ॥ ६८॥

शहाबुद्दीन के गिरने पर सलषराज का आक्रमण करना और यवन वीरों का शाह की रक्षा करना।

भुजंगी॥ परी बींट गोरी सुरे मीर षानं। तबै साहि गोरी गह्यौ कोपि वानं॥
न को कंध कट्टै चाहुआन तिन्नं। पर्यौ धाइ पावार भर सलष दिन्नं॥
छं० ॥ ६९ ॥

लग्यौ सत्त बेनं सुलित्तान साह्यौ। तहां मीर मारुफ अग्गैं गुराय्यौ॥
घरी अद्ध झुझ्यौ करी छत्त धारं। बहै सब्ब सामंत विचि तौन धारं॥
छं० ॥ ७० ॥

(१) ए.-हड्डडड्ड।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुटै आवधं सब्ब अरि हथ्थ लाजी । तबै आइ सीसं [१]गुरज्जं त वाजी ॥
गजं गहन प्राहार निठ्ठं ढहायौ । तबै गज्जनी साह पावार साह्यौ ॥
छं० ॥ ७१ ॥

जैतराव (प्रमार) का शहाबुद्दीन को पकड़ कर पृथ्वीराज के सम्मुख प्रस्तुत करना ।

कवित्त ॥ गहि गोरी सु विहान । हथ्थ आप्यौ चहुआनं ॥
चामर छत्त रषत्त । तषत लुट्टे सुरतानं ॥
गोरी वै हुस्सेन । बीर [२]तुट्टे आहुट्टिय ॥
मान तुगं चहुआन । साहि मुष के बल षुट्टिय ॥
मध्यान भान प्रथिराज तप । बर समूह दिन दिन [३]चढ़े ॥
जस जोति मंत संभर धनिय । चंद बीज जिम बर बढ़ै ॥छं०॥ ७२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके राजा आषेटक मध्ये गोरी पातसाह आगमन जैतराइ पातिसाह बंधन नाम चौतीसमो प्रस्ताव संपूर्णः ॥ ३४ ॥

(१) ए. कृ. को-गुरं गुरज । (२) ए. कृ. को.-षुटे । (३) मो.-बढ़े ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते ।

(पैंतीसवां समय ।)

पृथ्वीराज से जालंधर रानी की माता का कहना कि मैं कांगड़ा दुर्ग को जाना चाहती हूं और आप इस का वचन भी दे चुके हैं।

कवित्त ॥ कितक दिवस [1]निस मात । आइ जालंधर रानी ॥
कहै राज सों बचन । हूं सु कंगुर द्रुग जानी ॥
तो तुट्टी कर पान । लेह में वाचा दष्षिय ॥
भोट भान धुर जीति । पल्ह पच्छैं फिरि अष्षिय ॥
हम्मीर भीर अग्गें करै । दल [2]भज्जै मति सत्ति करि ॥
बरनी सु लच्छ लच्छी सहज । परनि राज आवहु सु घर ॥छं०॥१॥

पृथ्वीराज का कांगड़े के राजा के पास दूत भेजना।

दूहा ॥ चलिय राज कंगुर दिसा । [3]दयौ [4]भाट फुरमान ॥
कै आवै हम सेव पय । कै जीत्तौं नृप भान ॥ छं० ॥ २ ॥

दूत के बचन सुनकर कांगड़े के राजा भान का क्रुद्ध होकर दूत को डपटना।

कवित्त ॥ तब सुनि भान नरिंद । सबद उभभार अतुर बर ॥
रे जंगली जुवान । मोहि पुज्जै अप्पन बर ॥
[5]जो षजूआ अति तेज । तोइ का दिनयर लोपै ॥
[6]जो इचना अति सूर । तोइ का [7]भाठी कोपै ।

---

(१) मो.-मिस । (२) मो.-भग्गै ।
(३) मो.-दिसौ । (४) ए. कृ. को.-भोट ।
(५) ए. कृ. को.-जौ षजुआ । (६) ए, कृ. को.-जौ इचदा । (७) मो.-भात्री ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हूं नीति जानि अन्नित न करि। तूं लोभी आतुर अतुर ॥
इनि बात मोहि आगे अवन। आई फुनि जैहै सु तुर ॥ छं० ॥३॥

दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को वहां की बात निवेदन करना।

दूहा ॥ सुनि रु दूत पच्छौ फिर्‌यौ। कही राज सों बत्त ॥
तमकि तोन लीनौ न्रपति। मनों सुजोधन पथ्थ ॥ छं० ॥ ४ ॥

इधर से पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर से भानराज का बढ़ना और दोनों में युद्ध छिड़ना।

कवित्त ॥ चढ़िग राज प्रथिराज। सथ्थ सामंत सूर भर ॥
है गै रथ चतुरंग। गोरि जंबूर नारि सर ॥
कूंच कूंच अरि भान। आइ अड्डो षग बज्यौ ॥
जनु कि मेघ में बीज। तमकि तातौ होइ रज्यौ ॥
आवत झरत झारत परत। श्रोन धार 'धर पैर चलि ॥
इत उत्त सूर देषै लरत। घरी पंच रवि रथ न हलि ॥ छं० ॥ ५ ॥

युद्ध वर्णन और उस समय योगिनियों का प्रसन्न होकर नृत्य करना।

दूहा ॥ भिरत भान अति छोह करि। जन जन मुष मुष जानि ॥
घोर विछुट्टी दामिनी। सब चकचौंधिय आनि ॥ छं० ॥ ६ ॥
कवित्त ॥ षग वाहिय भिरि भान। अरिन अड्डर धर किन्नौ ॥
जय जय मुष उच्चार। सीस उम्मापति लिन्नौ ॥
रिझरु लिंग उत मंग। असिय विष जंग सु ढरयौ ॥
ठंडौ मंडि असंध। नहि भौ अंग जु परयौ ॥
बीभच्छ भयानक भय उमा। रुद्र रुद्र मुष हास हुअ ॥
सिंगार बीर अच्छर बरन। नव रस सुनहिं नरिंद दुअ ॥ छं० ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध से प्रसन्न हो गंधर्वों का गान करना।

दूहा ॥ स्रम भिलाष गंधर्व [1]हुअ। नारद तुम्मर गान ॥
संकर कल किंचित भयौ। चाहुआन प्रम्मान ॥ छं० ८ ॥

पृथ्वीराज का जय पाना।

कवित्त ॥ जीति समर भिरिभान। परी अरि मग्ग अरिष्टह ॥
रन मुक्कि न ग्रह [2]गइय। बरत अच्छरि नन दिठ्ठह ॥
कहुं त मंस कहुं अंस। हंस कहुं सस्त्र बस्त्र कह ॥
ब्रह्मथान शिवथान। थान देषिय न जम्म जह ॥
दीयौ न अगनि रवि भेद ननि। तत्व जोति जोतिह मिल्यौ ॥
इह दीष चरित प्रथिराज ने। कवित [3]एह जुग जुग चल्यौ ॥
छं० ९ ॥

सायंकाल के समय राजा भान की सेना का भागना।

इह परंत चहुआन। मोष लभ्यौ सु रथं रबि ॥
दिन पूरन पुनि भयौ। मिटे झंकुरन भान छबि ॥
दिन पूरन पुनि भयौ। हरह भग्गी [4]उतकंठं ॥
भग्गि मनोरथ रंभ। [5]ब्रह्म भग्गी चित गंठं ॥
झल हलत नीर काइर मुषन। प्रलय सुभर रनरत्त रह
दिन पति पतन्न सह तप्प तन। भान भान भेदंत [6]नह ॥ छं० ॥ १० ॥

राजा भान का शोच वश होकर कंगुर देवी का ध्यान करना और देवी का कर कहना कि मैं होनहार नही मेट सकती।

तब कंगुर पालहंन। चित्त चिंता उप्पन्नी ॥
सुनि भोटी भर मरन। सरन कोइ सुद्धि न मन्नी ॥

(१) मो.-भय। (२) मो.-नइय
(३) मो.-एक। (४) मो.-उप कंठं। (५) ए. कृ. को.-प्रतियों में "चतुरानन भगिचित टारि रथ मग्ग मुर्गली" (सुगत्ती) अधिक पाठ है। (६) मो.-सह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निसि अंतर करि ध्यान। मात कंगुर आराधी॥
सो आई न्रप सुपन। कहै सुनि बात अगाधी॥
[1]सोभति अनेक जानै न को। मो सेवा को परि लहै।
भावी विगत्ति हों प्रकृति हौं। तो प्रधान झूठह कहै॥ छं०॥ ११॥

सवेरा होतेही भोटी राजा का मंत्री को बुला कर स्वप्न का हाल सुनाना।

चौपाई॥ वचनन मात कही समझाइय। निसि पल भ्रमित गमत बरु आइय॥
भोटी न्रप कन्हा [2]पै आइय। काली कन्ह कि हंकि जगाइय॥
छं०॥ १२॥
तब कन्हा परधान बुलाइय। मात वचन की जुगति सुनाइय॥
दिल्लीपति दल लै चढ़ि आइय। करौ सुमति जिहि होइ भलाइय
छं०॥ १३॥

प्रधान कन्ह का कहना कि मेरे रहते आप कुछ चिंता न करें मैं शत्रु का मान मर्दन करूंगा।

अरिल्ल॥ का चिंता सु विहानं। * कन्ह होइ जाकै परधानं॥
स्वामि बचन किन्नौ परमानं। लरि भंजौ दुज्जन चहुआनं॥
छं०॥ १४॥

भोटी राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना।

कवित्त॥ सो सुपनंतर राज। रैन दिट्ठौ सु कह्यौ रचि॥
बर बंसी [3]ससिपाल। पलह आयौ सु सेन सचि॥
लष्य एक असवार। लष्य दह पाइल भारी॥
अप्प सेन उप्परें। जुगं जुग गहि उच्चारी॥
घरि अद्ध अद्ध अप सेन मुरि। पच्छि उररि दुज्जन परिय॥
चढ़ि गयौ बीर परबत गुहा। सामंता कुंडल फिरिय॥ छं०॥ १५॥

(१) ए. कृ. को. मो भति। (२) ए. कृ. को.-पै।
* राजा भानराय भोटी के प्रधान कर्मचारी का नाम "कन्ह" था।
(३) मो.-सिसुपाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का रघुवंसराय और हाहुलीराय हम्मीर को कंगुर गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना।

बर रघुबंस प्रधान। राज मंत्री विचारिय ॥
बोलि बीर हम्मीर। भेद जानै धर सारिय ॥
बाट घाट बन जूह। धरा पद्धर नद घाटं ॥
अव्व जान व्रिमान। कोन पद्धर [1]बन बाटं ॥
अगवान देहु नारेन बर। कछुक मंत जंपौ सु तुम ॥
जालंधराज जंबू धनी। स्वामि ध्रम्म [2]मंडहित हम ॥ छं० ॥ १६ ॥

हाहुली राय का कहना कि इस दुर्गम बन प्रान्त को सहज ही जीतूंगा।

सुनि हाहुलि हम्मीर। हथ्थ जोरै न्रप अग्गै ॥
सकल भूमि कौ भेद। राज जानै ए भग्गै ॥
अति सु बिकट बन जूह। चढ़ै संग्राम न होई ॥
अश्व पाय गज पाइ। चढ़न किहि ठौर न कोई ॥
बन बिकट जूह परबत गुहा। बर बेहर बंकम विषम ॥
दारुन भयानक अति सरल। बर प्रस्तर नहिं जल सुषम ॥
छं० ॥ १७ ॥

कंगुर गढ़ के पहाड़ जंगल इत्यादि की सघनता और उसके विकटपन का वर्णन।

भुजंगी ॥ बनं जा विषंमं विषं बाज कंटं ॥ घनं व्याघ्र आघातता नद्द घंटं ॥
षद्दं जा षजूरी घनं जूय भोरं। जिनै वास आसं लगे पंक मोरं ॥
छं० ॥ १८ ॥
घनं पामरं जाति बंधै धनंकी। गिरं देखतें गत्ति भाजै मनंकी ॥
झरै झरनि झोरं सु आघात सोरं। [3]जितें सद्दया सद्द ता अंग मोरं ॥
छं० ॥ १९ ॥

(१) मो.-बर। (२) मो.-मंडहि न हम। (३) मो.-जिनैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हयं तज्जि राजं चलै हथ्थ डोरं। इकं इक्क पच्छै बिपं जन्न जोरं॥
बजै सद्द सद्दं परछंद उठ्ठै। सुनै कन्न सोरं सु धीरज्ज छुट्टै॥
छं० ॥ २० ॥

इकं होइ राजं पथं सत्त [1]रुद्दै। दियै हथ्थ तारी तिनं कोन [2]बद्दै॥
तबै मुक्कले राज नारेन बीरं। ननं षग्ग मग्गं सधै इक्क तीरं॥
छं० ॥ २१ ॥

न्त्रपं काम नाही [3]प्रधानं प्रवानं। दोऊ सेन रघुबंस अरिसेन भानं॥
छं० ॥ २२ ॥

उक्त दोनों वीरों का घुड़चढ़ी सेना को हुसैन खां के सुपुर्द करके आप पैदल सेना सहित किले पर चढ़ाई करना।

दूहा॥ मानि मंत चहुआन कौ। मुकलि दीय दोइ बीर॥
ताजी तुंग समप्पियै। [4]षां हुसेन दिय भीर॥ छं० ॥ २३ ॥

नारेन और नीति राव का घोड़ों पर सवार होकर चढ़ाई करना।

कवित्त॥ तब लगि पान सु पान। हथ्थ नारेन मंडिलिय॥
नमि चरननि कर बाहि। रोस आरोहि अंषि विय॥
ताजी तुंग सु अप्पि। जेन रुक्के बर बिय करि॥
नीतिराव कुटवार। संग दीनौ नरिंद बरि॥
बारंग बीर बज्जर बहिर। निधि निसान बज्जे सुभर॥
नेपुरह अप्प बरनी बरा। जस मुकट्ट प्रथिराज बर॥ छं० ॥ २४ ॥

कंगुर दुग पर आक्रमण करने वाले वीरों की प्रशंसा वर्णन।

बर भरियं बर अप्प। लियौ फुरमान नरिंदं॥
लाज राज विंटयौ। जानि पारस बिच चंदं॥
स्रींय काज स्रीराम। सु छल हनमंतह तैसे॥

(१) ए. क्रु, को.-रुंधै। (२) ए. क्र. को.-वंधै।
(३) ए. कृ. को-प्रधानं। (४) ए.-खान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामि काज सामंत। बियौ धर मझ्झझब जैसे ॥
जस तिलक हथ्थ चहुआन कौ। दुज्जन दल जित्तन चल्यौ ॥
रवि वार सुरंग सु सत्त में। गुन प्रमान जंबुअ घुल्यौ ॥ छं० ॥ २५ ॥

नारे (पीठ की सेना के नायक) के चढ़ाई करते ही शुभ शकुन होना।

पद्धरी ॥ नारेन जंबु गढ़ चढ्यौ काज। बोलहित वाम कौदहति ताज ॥
दाहिने म्रग्ग संमुह फुनिंद। नौरूप बोल बोलहित हद्द ॥
छं० ॥ २६ ॥
हंकरै सिंह कोदहति वाम। उत्तरै [१]देवि दाहिन सु ताम ॥
दिसि वाम कोद घू घू टहक्क। फुनि करै हक्क केकी पहक्क ॥
छं० ॥ २७ ॥
उत्तरै [२]दार वाराह [३]सथ्थ। डहकरै सांड़ दिसि वाम तथ्थ ॥
[४]बन्नर विरूर दाहिनै सद्द। सुनियै न क्रन्न नंदनी नद्द ॥ छं० ॥२८॥
[५]कुरलंत बाम सारस समूह। मुक्कइ न गिद्धि पच्छै अजूह ॥
कुरलेत कग्ग चित्तहत हीन। हंसीय बाम आनंद कीन ॥छं० ॥२९॥
हां कहत हल्ल करि गट्ट मथ्थ। चहुआन पिथ्थ रिझ्झेव तथ्थ ॥
हाहल्लराव दीनौ विरद्द। आनंद बज्जि नीसान नद्द ॥ छं० ॥ ३० ॥

सेना का हल्ला कर के क्रोध से धावा करना।

दूहा ॥ हां कहतें ढीलन करिय। हलकारिय अरि मथ्थ ॥
* तार्थे विरद हमीर को। हाहुलि राव सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ३१ ॥
चढ़ि चल्ले बंदन [६]सुकन। भागह जे प्रथिराज ॥
बर प्रब्बत बैदेस सधि। बीर बजी रन बाज ॥ छं० ॥ ३२ ॥

युद्ध और वीरों की वीरता वर्णन।

(१) मो.-देव। (२) ए. कृ. को.-डार।
(३) ए. कृ. को.-रथ्थ, हथ्थ। (४) ए. कृ. को.-बंदर।
(५) कृ.-कुरलेत। (६) मो.-सगुन।
* छंद नं. ३० का आधा और ३१ संपूर्ण मो. प्रति में नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्धरी ॥ आएस लीन जुग्गिन नरेस। सजि सिलह सुभर मंडी सु भेस ॥
सिंगिनी सुध्य गौ गंठि थाल। अरि अंग षतंग भै पाति [1]काल ॥
छं० ॥ ३३ ॥

नेजा सुरंग बंबरि विपान। अट्ठार टंक षंचै कमान ॥
धज सुरँग रत्त गजराज हालि। जानं कि भमि बद्दलति चालि ॥
छं० ॥ ३४ ॥

अति इत्त दहकि धर धरकि हल्लि। चतुरंग सेन चिहुं पास चल्लि ॥
चासंत तीर सब तुंग मानि। गढ़ मुक्कि गड्ड ओछंडि थान ॥ छं० ॥ ३५ ॥

आबाज बज्जि दस दिसा मान। भूमियां संकि गय मुक्कि थान ॥
वल्लभ सु बाल गय बाल मुक्कि। रो रध्य नारि चकि नय सु चक्कि ॥
छं० ॥ ३६ ॥

फट्टे दुकूल नग नगन चढ्ढि। मंगलिक जानि वन्नौर कढ्ढि ॥
[2]फुटि अंसु वास रस गत दिषाहि। नौग्रह सु हेम गिरि मल्ल गाहि ॥
छं० ॥ ३७ ॥

नंषैति हार कहुं बाल नारि। तिन की उपंम बरनी सुभार ॥
तुट्टंत सुत्ति पग पगन मान। नंषंत तीय पिय को निसान ॥
छं० ॥ ३८ ॥

के दुरत धाइ चित चिचसाल। जानहिं सुचित्त पुत्तलिय बाल ॥
ता मध्य जाइ रहै षंचि सास। मानहु कि रचि चिचह बिलास ॥
छं० ॥ ३९ ॥

सुर सुकी दीन भइ बाल बाम। अग्गै सुबाल दीसहि सु ताम ॥
कविचंद सु ओपम एक वार। उतऱ्यो राह रूपह सवार ॥
छं० ॥ ४० ॥

चिचहति साल रष्षीति बाल। नह परहि बंदि ते तिहति काल ॥
दझ्झवै [3]वाहि मदिरत्ति रिझ्झि। चल्लै न पाइ मानं उलझ्झि ॥
छं० ॥ ४१ ॥

(१) ए. कृ. को.-षाल।
(२) ए. कृ. को.-फेटे, फेट्टे।
(३) मो.-नाहि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देषंत सुमन गति भई पंग । रुठ्ठई काम रति कोटि रंग ॥
नठ्ठई उगति तिन देषि बाल । मानो कि रास मझ्झें गुपाल ॥

अकेले रघुवंस राम का किले पर अधिकार कर लेना ।

दूहा ॥ बंस दुजन घर गाहि फिरि । तब लगि दुजति सपन्न ॥
एकल्ल रघुबंस ने । लै गढ़ सबर प्रपन्न ॥ छं० ॥ ४३ ॥

सब सामंतों का सलाह करके (रामरेन) रामनरिंद को गढ़ रक्षा पर छोड़ना और सब का गढ़ के नीचे पृथ्वीराज के पास जाकर विजय का हाल कहना ।

कवित्त ॥ सबै सूर सामंत । पलह बंध्यौ गढ़ लिन्नौ ॥
थप्यौ राम नरिंद । हथ्थ फुरमान सु [1]दिन्नौ ॥
तुम रहियौ इन थान । जाइ कंगुर सँपत्तौ ॥
मिलौ जाइ प्रथिराज । राज सम्हौ प्रापत्तौ ॥
आनंद फते तप तुझ्झ बल । धन समूह आइय सु धर ॥
सुब्भर सुघाइ तेरह परे । बिय दाहिम्म नरिंद बर ॥ छं० ॥ ४४ ॥

सब भोटी भूमि पर चहुआन की आन फिर जाना और भान रघुवंस का हार मान कर पृथ्वीराज को अपनी पुत्री व्याहना ।

सबै भूमि अरि गाहि । आन फेरी चहुआनं ॥
पऱ्यौ भान रघुबंस । बीर बंचे फुरमानं ॥
माल्हन वास नरिंद । राज रष्यौ तिन थानं ॥
बर बंध्या अरि साहि । षून कढ्यौ परवानं ॥
बर बरनि बीर प्रथिराज बर । बर रघुबंस बुलाइयौ ॥
दिन देव दसमि बर भूमि वर । तदिन सु रंगन पाइयौ ॥ छं० ॥ ४५ ॥

नियत तिथि पर व्याह होना ।

(१) ए. कृ. को.-लिन्नौ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ परिनि बीर प्रथिराज बर। बर सुंदरी सु लच्छ ॥
देव व्याह दुज्जन दवन। दिन पद्वरौ सु अच्छ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

भोटी राज की कन्या के रूप गुण का वर्णन।

कवित्त ॥ [1]दच्छिन वृत्त सुनाभि। तुंग नासा गज गमनी।
सासनि गंध रु षंजु। कुटिल केसं रति तरनी ॥

(१) मो.-द्रिपत।

बर जंघन मृदु पंथ। कुरँग लज्जे छबि हीनं॥
इह ओपम कविचंद। हथ्थ करतार सु कीनं॥
वर बरनि बीर प्रथिराज बर। घन निसान बज्जै सुबर।
जंबूअ राव हम्मीर ने। ध्रम्म काज दीनौ [1]सुधर ॥ छं० ॥ ४७ ॥

भोटी राज की तरफ से जो दहेज दिया गया उसका वर्णन और पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर नव दुलहिन के साथ भोग विलास करना।

बर बरनी दै हथ्थ। गुंट अप्पे जु एक सौ ॥
चौर मृगंमद मधुर। च्रम्म दीनि सु सत्त सौ ॥
अट्ठ सुरंग गजराज। बाज ताजी सौ दासी ॥
बर लच्छी चतुरंग। चंद [2]पिष्षिय सोभासी ॥
ढिल्लीव नाथ ढिल्ली दिसा। अरिन जीति बर परनि कै॥
संजीव काम बोलिय सु ढिंग। बर निसान बर बरनि कै ॥छं०॥४८॥
दूहा ॥ आयौ न्रप ढिल्ली पुरह। बर बज्जे त्रिघोस ॥
डोला पंच नरिंद सँग। मधि सुंदरी अदोष ॥ छं० ॥ ४९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके कांगुरा विजै नाम पैंतीसमों प्रस्ताव संपूर्णः ॥ ३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-जु कर। (२) ए.-दिष्षी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(छत्तीसवां समय।)

पृथ्वीराज का शिकार के लिये षट्टूपुर जाना।

दूहा ॥ इक तप पंग नरिंद कौ। सुनि अवाज सुरतान ॥
आषेटक प्रथिराज गय। षट्टूपुर चहुआन ॥ छं० ॥ १ ॥

रणथंभ में राजा भान राज्य करता था उसकी हंसावती नामक एक सुंदर कन्या थी, और चँदेरी में शिशुपाल वंसी पंचाइन नाम राजा राज करता था।

कवित्त ॥ रा जद्दव रिनथंभ। भान पंचाइन भारी ॥
हंसावति तिन नाम। हंसवति गत्ती सारी ॥
[1]अवनि रूप सुंदरी। काम करतार सु कीनी ॥
मन मन्नवै विचार। रूप सिंगार स लीनी।
लष्षन वतीस लच्छी सहस। अति सुंदरि सोभा सु कवि ॥
अस्तम्म उदै वर [2]बक्र विच। दिष्षि न कहुं चक्रंत रवि ॥छं०॥२॥

हंसावती की शोभा वर्णन।

नाग वेनि सुनि पीन। कंति दसनह [3]सोभत सम ॥
अंषि पदम पच मनु। भाल अष्टम रति प्रतिक्रम ॥
सिषा नाभि गज गत्ति। नाभि दछना व्रत सोभै ॥
सिंघ सार कटि चारु। जंघ रंभा जुषि लोभै ॥
सुंदरी सीत सम वरि चरित। चतुर चित्त हरनी बिदुष ॥
सत पच गंध मुष ससिय सम। नैन रंभ आरंभ रुष ॥ छं० ॥ ३ ॥

(१) मो.-अवरि। (२) को.-चक्र। (३) मो.-सोभतं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चँदेरी के राजा का हंसावती पर मोहित होकर रणथंभ को दूत भेजना।

गाथा॥ बर बंसी [1]ससिपालं। चिंत्त जस संभलं बालं॥
मन बयनं तन [2]बद्धै। रिनथंभं [3]मुक्कवै दूतं॥ छं० ॥ ४ ॥

चँदेरी के दूत का रणथंभ में जाकर पत्र देना।

अरिल्ल॥ दूत आइ बर बीर सपत्ते। जग्गद हथ्थ दिए बर तत्ते॥
हंसावति अप्पै बर [4]रंभं। तजौ वेग उभ्भौ रिन थंभं॥ छं० ॥ ५ ॥

रणथंभ के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उत्तर देना कि मैं चंदेरी पति से युद्ध करूंगा उसके घुड़कने से नहीं डरता।

कवित्त॥ रा जद्दव रिन भान। तमकि कर चंपि लुहट्टी॥
बर रनथंभ उत्तरी। बीर बस्सी [5]अहुट्टी॥
बर कग्गद [6]कर फेरि। सुभ्रि करियै बर राजन॥
मतै बैठि कुंडलौ। ध्रम्म छत्री जिन भाजन॥
बुल्लइ न एन दुज्जन भिरन। तरन तार साधन मरन॥
बर बीर जुद्ध चालुक रन। हक्कायौ दुज्जन भिरन॥ छं० ॥ ६ ॥

कुंडलिया॥ रिन थंभह वर उप्परै। चढ़ि गढ्ढौ करि साहि॥
हंस मरत रा भान कौ। धसि उप्पर धर धाइ॥
धसि उप्पर धर जाइ। सुजस जंपै सब कोई॥
जोग मग्ग लभ्भनह। षग्ग मग्गह मत होई॥
अलप आव संसार। सिद्ध साधकह अथंभह॥
सब्ब जोग सहक्रम्म। सब्ब तीरथ रनथंभह॥ छं० ॥ ७ ॥

---

(१) मो.-शिशुपालं। (२) मो.-बद्धे।
(३) ए. कृ. को.-मुक्कले, मुकले। (४) ए. कृ. को.-उम्भं।
(५) ए.-उहठीं। (६) ए. कृ. को.-बर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चँदेरीपति का कुपित होकर रणथंभ पर चढ़ाई करना।

कवित्त ॥ सुनि बंसी ससिपाल। बीर पंचाइन कोप्यौ।
सद्द मद्द गज जेमि। तमसि धीरज सम लोप्यौ॥
रिनथंभह दिसि थंभ। दियौ बर बीर मिलानं॥
गय हय दल चतुरंग। सजे तिन बेर प्रमानं॥
बर बीर अग्ग बसीठ चलि। राजद्दी संमुह दिसा॥
परनाइ कुंअरि हंसावती। सु बर कोपि आयौ निसा॥ छं० ॥ ८॥

चँदेरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को भेजना और एक शहाबुद्दीन के पास मदत के लिये।

दूहा ॥ जस बेली रिनथंभ न्त्रप। फल पच्छै न्त्रप आइ॥
रा जद्दव सुरतान सौं। कहि बर जाइ सुधाइ॥ छं० ॥ ९॥

स्त्री के पीछे रावण दुर्योधन इत्यादि का मान प्राण और राज्य गया।

कवित्त ॥ सीय [1]रष्षि रावनह। लंक तोरन कुल षोयौ॥
कपट रष्षि दुरजोध। षग्ग षोहनि दल [2]गोयौ॥
मंतहीन बर चंद। कियौ गुरवार सुहिल्लौ॥
क्रम्म रष्षि रघुराइ। अजै जान्यौ न पहिल्लौ॥
रनथंभ मंडि छंडी [3]सरन। भिरन कहौ बर बीर सब॥
ससिपाल बीर बंसी [4]बिलस। हम देषै आयौ सु अब॥ छं० ॥ १०॥

जीव रक्षा के लिये देव दानवादि सब उपाय करते हैं।

जीवन बलह विनोद। अलह नब्बी घन संगहि॥
जीवन बलह विनोद। आस आसन्न असुर गहि॥

(१) ए.-रषी। (२) मो.-षोयौ।
(३) ए. कृ. को.-रसन। (४) मो.-विमल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जा जीवन सुंदर। सुगंध बर बंधव लोकै ॥
जा जीवन काजें। कपूर पूरन प्रभु कोकै ॥
जा जियन देव दानव मिलन। किलमन कलि आवन गवन ॥
तिन भवन छंद छंडित गहर। तजित तुंग तन सो भवन ॥छं०॥११॥

भानुराय यद्दव का बसीठ की बात न मानना।

दूहा ॥ रा जद्दव बर भान नैं। बहु मंग्यौ बर हट्ट ॥
बाजी बार पयानरै। तुंगी तेरह ठट्ट ॥ छं० ॥ १२ ॥

बसीठ का लौट कर चँदेरीपति की फौज में जा पहुंचना।

इह सुनि बीर बसीठ उठि। भानह हल्यौ न हल्ल ॥
तीस कोस सम्हो मिल्यौ। बर पंचाइन ढल्ल ॥ छं० ॥ १३ ॥

पंचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरीखां हुजावखां आदि सरदारों का आना।

कवित्त ॥ अग्गिवान उजबक्क। धाइ भाई परवानिय ॥
ता पच्छैं साहाब। षान बंधे तुरकानिय ॥
ता पच्छैं नूरी हुजाब। सेई संचारिय ॥
केलीषान कुलाह। सब्ब सेनी कुटवारिय ॥
बानिक्क बीर दुल्लह सुजर। भाइ षान रन अंभ बर ॥
ससिपाल बीर बंसी विलस। बर आयो रनथंभ पर ॥ छं० ॥ १४ ॥

दोनों घनघोर सेनाओं सहित चँदेरी के राजा का आगे बढ़ना।

दूहा ॥ पंचाइन बल पष्परै। [1]यह रनथंभह काज ॥
कंक बंक बर कट्टनह। चढ़ि चल्ल्यौ रन राज ॥ छं० ॥ १५ ॥

चँदेरी राज की चढ़ाई का वर्णन।

भुजंगी ॥ ससीपाल बंसी चल्यौ कोपि रथ्थं। मनों बंक चक्कं धस्यौ आनि पथ्थं ॥
जलं जुब्बनं जूथ धावै दुरंगा। करै कूंच उंचं [2]उरज्जैं तुरंगा ॥छं०॥१६॥

(१) ए. कृ. को.-हय, हथ्थ। (२) मो.-उरझ्झै, उरजै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कढ़े बत्त रत्ती मुषं रत्त आहौ। कहैं अश्व आठू रनंथंभ ढाहौ॥
ससीपाल बंसी चंदेरीय रायं। उठ्यौ छत्र सीसं कवी देषि गायं॥
छं० ॥ १७ ॥

नगं पंति मुत्ती सिरं हेम दंडी। ग्रहं अट्ठ मानों ससी मेरछ मंडी॥
फिरी पंति राई रिनंथंभ घेऱ्यौ। मनों भावरी भान सुम्मेर फेऱ्यौ॥
छं० ॥ १८ ॥

रनथंभपति भान का पृथ्वीराज से सहायता मांगना।

दूहा ॥ घन घेऱ्यौ रिनथंभ पर। लिषि ढिल्ली परवान॥
तब जद्दव रा भान ने। दिय कग्गद चहुआन॥ छं० ॥ १९ ॥

भानराय का पृथ्वीराज को पत्र लिखना।

कवित्त ॥ रा जद्दव बीराधि। बीर गुज्जह अनुसरयौ॥
हयदल पयदल गज। अरोहि रिनथंभ यौं अरयौ॥
धंधेरा धंधेल। चंद ससिपालह वंसिय॥
अध लष दलहि हिलोर। जोर गरुवंतं गंसिय॥
हम्मीर राव हाड़ा हठी। षीची राव प्रसंग दुह॥
प्रारंभ करै संभरि धनी। जौरै बंध पुमान सह॥ छं० ॥ २० ॥

उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का समर सिंहजी के पास कन्ह को भेजना।

दूहा ॥ सुनि कग्गद चर चिंत कैं। तिथि सातें चहुआन॥
समर सिंघ रावर दिसा। गुर जन मुक्यौ कान्ह॥ छं० ॥ २१ ॥

कन्ह का समरसिंह के पास पहुंच कर समाचार कहना।

कवित्त ॥ बर पंचाइन सबर। सबर बंसी ससिपालं॥
घेऱ्यौ तिन रनथंभ। सुबर जंपे बर कालं॥
मान बीर पुक्कार। धाइ आई ढिल्लीवै॥
अद्ध अद्ध पहु पंग। सध्य अद्धौ बर है वै॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोगिंदराव जग हथ्थ बर। महन रंभ उप्पर सबर॥
कालंक राइ कप्पन विरद। [1]तुम आओ रचि सेन बर॥ छं०॥ २२॥

समर सिंह जी का सेना तैयार करके कन्ह से कहना कि हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे।

दूहा॥ चित्रंगी चतुरंग सजि। बर रनथंभ सु काज॥
बर सहेट रावर समर। आवन बदि प्रथिराज॥ छं०॥ २३॥
चलत कन्ह चहुआन बर। कहि चतुरंगी राज॥
तुम अग्गैं हम आइहैं। आवन सुधि प्रथिराज॥ छं०॥ २४॥

तथा यहां से रनथंभ केवल ६५ कोस है इसलिये तुम से आगे जा पहुंचेंगे।

पंच कोस बर सट्ठि अग। चीतौरह रनथंभ॥
तुम अग्गैं हम आइहैं। महन रंभ आरंभ॥ छं०॥ २५॥

कन्ह का कहना कि पृथ्वीराज का दिल्ली से तेरस को चले हैं और राजा भान पर बड़ी बिपत्ति है।

कवित्त॥ महन रंभ आरंभ। कन्ह चालत मन मंडिय॥
अठ्ठ दौह हम अग्ग। राज तेरसि ग्रह छंडिय॥
बर बंसी ससिपाल। गंज लग्गिय न्रप [2]भानं॥
धरति धवर [3]तह नाम। सेत मिसि देही दानं॥
अग्रहन ग्रहन रिनथंभ मति। इह सुमित्र आयौ पढ़न॥
कालंक राइ कप्पन विरद। महन रंभ बध्यौ बढ़न॥ छं०॥ २६॥

समरसिंह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नहीं है कि शरणागत को त्यागें और बात कह के पलटें।

(१) मो.- तुम आओ सेना बरन।
(२) ए. कृ. को.-मान। (३) ए. कृ. को. नाहि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनि कन्ह चहुआन। रीति आहुट्ट ग्रेह कुल ॥
सरन रष्षि कढ्ढइन। मिलै जो कोटि देव बल ॥
संग्रामं हरषै न। सुबर षची बर धायौ ॥
रन रष्षै रजपूत। छत्र छल छांह नवायौ ॥
द्रिग रत बल बंसै सुबर। बेद भ्रम्म बंध्यौ चवै ॥
कालंक राइ कप्पन बिरद। कित्ति काज नव निधि द्रवै ॥छं०॥२७॥

समरसिंह का कन्ह की दी हुई नजर को रखना।

दूहा ॥ तिय हजार तेरह तुरँग। हस्त मत्त बर तीन ॥
मनि गन मुत्तिय साख दस। रष्षे कन्ह सु बीन ॥ छं० ॥ २८ ॥
पूज कुलह चहुआन दय। वे सब मनि [1]गनि साह ॥
लच्छिय सब हथ्यिय ग्रहन। दीना सब्ब समाहि ॥ छं० ॥ २९ ॥

कन्ह का यह कह कर कूच करना कि तेरस को युद्ध होगा।

चले कन्ह बर संग न्रप। समर सजग्गी आउ ॥
तेरसि त्र्यंबक बज्जिहै। धरकि बीर उमराउ ॥ छं० ॥ ३० ॥

दसमी सोमवार को समर सिंह जी की यात्रा की मुहूर्त वर्णन।

कवित्त ॥ घरी पंच बर सोम। दैव दसमी ग्रह सारिय ॥
दुष्ट दान करि मंच। सुगुर पंचमि बुध [2]चारिय ॥
अद्व चार भय स्हर। फेरि नव मीन न भग्गा ॥
ष्पसुर सुगुर वक्रयौ। छंड बिय थानति अग्गा ॥
चिचंग राइ रावर समर। महा जुद्ध संग्राम रजि ॥
दस कोस बीर मेलान दै। सुबर बीर चतुरंग [3]सजि ॥छं०॥३१॥

यात्रा के समय समर सिंह जी की चतुरंगिनी सेना की शोभा वर्णन।

पद्धरी ॥ सजि चल्यौ समर रावर सु तथ्य। जानै कि सरित सागर समथ्थ ॥

(१) ए. कृ. को.-बर साहि, बर साई।
(२) ए. कृ. को.-चारिय।
(३) ए. कृ. को.-राजि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बज्जे निसान दिसि दिसि प्रमान। मानों समुद्द गिरि [1]गजिय थान॥
छं० ॥ ३२ ॥

सुझ्झै न भान रज [2]मझि सलीव। चक्कीय चक्कवे चलि सु क्षीव॥
चतुरंग सेन चल्लिय सुरंग। बहु रुक्कि अंभ घन नभ्भ संग॥
छं० ॥ ३३ ॥

सहनाइ भेरि कल कलनि बज्जि। जल होइ थलनि थल जलन रुझ्झि
उन्नयौ मेह हय गय प्रमान। मद [3]चलहि गंध गज शिर समान॥
छं० ॥ ३४ ॥

वर रंग नेज कल मिली ताहि। बर बरन बीच सोहंत जाहि॥
पाइन पयाल द्रगपाल हल्लि। चतुरंग सेन चिचंग चल्लि॥
छं० ॥ ३५ ॥

घन जिम निसान बज्जे विसाल। जोगिंद मत्त जग हथ्थ भाल॥
पावस समूह रावर नरिंद। भिषजार भट्ट मोरन गिरिंद॥
छं० ॥ ३६ ॥

कोकिल नफेरि पप्पीह चीह। बोलंत सद्द कवि मधुर जीह।
बरषहति दान गज [4]मद्द मान। फरहरहि धज्ज बगपंति मान॥
छं० ॥ ३७ ॥

अंदून सद्द झिंगुर झँकार। सुझ्झहि भसद्द बदि श्रवन यार॥
पावस समूह करि समर चल्लि। रिनथंभ दिसा मेलान मल्लि॥
छं० ॥ ३८ ॥

सुसज्जित सेनाओं सहित रणथंभ गढ़ के बाएं ओर पृथ्वीराज और दाहिने ओर से समर सिंह जी का आना।

कवित्त ॥ बाम कोद प्रथिराज। छंडि रनथंभ सँपत्तौ॥
वर दच्छिन समरंग। बीर जोगिंद प्रपत्तौ॥
दुहुन बीर गढ़ चंपि। सुकवि ओपम तिन पाई॥

(१) ए. कृ. को.-गज्जि। (२) मो.-मधि।
(३) मो.-लीहं। (४) मो.-मत्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंभ अंत डोलंत। हथ्थ बरनै रस माई॥
चहुआन सेन चित्रंगपति। चावद्दिसि बर बिड्डुरिय॥
बर ढोह छंडि चंदेर न्रप। जुग्गिनि ह्वै सम्हौ भिरिय॥ छं० ॥३९॥
दूहा॥ उत चंपे चहुआन ने। इत चंपे चित्रंग॥
मूंदि सास अरि सम दरी। जनु [1]चंप्यौ सु म्रदंग॥ छं०॥ ४०॥

पूर्व में पृथ्वीराज और पश्चिम में समरसिंह जी का पड़ाव था और बीच में रणथंभ का किला और शत्रु की फौज थी।

कवित्त॥ प्राची दिसि चहुआन। रह्यौ पच्छिम चतुरंगी॥
दुहूं बीच [2]रिनथंभ। बीच अरि फौज सु रंगी॥
दुहूं सेन [3]समकंत। [4]नग्ग मत्ता गज अग्गी॥
मनु राका रबि उदै। अस्त होते रथभग्गी॥
ससिपाल बीर बंसी [5]विमल। दुहुन बीच मन मेर हुअ॥
षह मिलै षेह षग्गह हन्यौ। चवै चंद रबि दंद दुअ॥छं०॥४१॥

किले और आस पास की रणभूमि की पक्षी से उपमा वर्णन।

अनल पंष अंकुर्यौ। जुद्ध पंचाइन मंड्यौ॥
इक सपंष षग बीय। पेट रनथंभ सु छंड्यौ॥
पीठि पंड पावार। सु वर हुअौ नष पंषं॥
एक मुष्ष वन बीर। धीर उभ्भौ विय मुष्षं॥
न्त्रिम्मान बंभ बर पुंछ कवि। पुच्छ पाइ साधन समर॥
दुह लोह कढ्ढि परियार तें। समर मोह भूल्यौ अमर॥ छं० ॥४२॥

उस युद्ध भूमि की यज्ञ स्थल और पावस से उपमा वर्णन

भुजंगी॥ मिले आइ [6]धायं सु आहुठ्ठ राई। लगे बीर बथ्थै लगे लोह धाई॥
कढ़ी बंक अस्सी ससी बीय गत्ती। बरै ज्वाल सूरं मनों हब्बि तत्ती॥
छं० ॥ ४३॥

(१) ए. कृ. को.-चंपी। (२) ए.-चतुरंग। (३) ए. कृ. को.-चमकंत।
(४) ए. को.-नग, नगा। (५) ए. कृ. को.-त्रिसल। (६) ए. कृ. को.-धाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करै हक्क सीरूं महा मार मारं। धरं कित्ति सीसं तुरं पार पारं॥
बजै सस्त्र बीसं [१]तुरित्तं बषानं। तिनं सद्द अग्गैं दुरै वै निसानं॥
छं० ॥ ४४ ॥

धकै आइ सूरं बिधं कन्ह हथ्थं। थकी रंभ उतकंठ मनों पंग तथ्थं॥
लगै धार धारं धरक्कै विवानं। गहै हथ्थ छुट्टै चलै देवथानं॥
छं० ॥ ४५ ॥

कटै सुंड डंडं कथै दंत तथ्थं। मनों ज्यों पुलंदी कढ़ै कंद हथ्थं॥
धनं धक्क हथ्थं रसं रंक मत्तं। मनों दंपती संजुधं की सुरत्तं॥
छं० ॥ ४६ ॥

परै ढाल ढीचाल गज ढाहि सूरं। महा दिष्षियै बीर रूपं करूरं॥
कटै कंध सूरं उड़ै छिंछ भारी। झरै फूल तथ्थं सिरं हुंड भारी॥
छं० ॥ ४७ ॥

जगी जोगिनी जुद्ध देषैं [२]जरूरं। उड़ै रैंन रावत्त कच्छे करूरं॥
धराधाव श्रोनी पलं भद्द जानं। गजे सूर जुद्धं दिसानं दिसानं॥
छं० ॥ ४८ ॥

तपै तेज तेजं सु नेजं सुरंगं। मनो विज्जमाला चमक्कंत चंगं॥
धनुष्षं कमानं धरे मेघ मद्दं। रवै दंड दंडं नफेरी सबद्दं॥छं०॥४९॥
बहै षग्ग बानं मनों बग्ग पानं। रचै चित्त चहुआन षेतं किसानं॥
भिरै भंति भारी परै जूह राजं। ढरै घाइ धंधेर बंधी सु पाजं॥
छं० ॥ ५० ॥

[३]इलावार पूरं सरित्तान श्रोनं। तिरै रुंड मुंडं मछं जानि तोनं॥
सुषं मेद पाटं सु घाटं षुमानं। भिरे भौर भारी सु ग्रब्बे उमानं॥
छं० ॥ ५१ ॥

गहै नाग सुष्षी अरी जा उठायौ। मनों चंद संदेस पच्छै पठायौ॥
ग्रहै रंभ मालं भरं ग्रीव बालं। रचै ईस सीसं गरै रुंडमालं॥छं०॥५२॥
पऱ्यौ षग्ग षीची भरं चिचकोटं। जलं पष्प मच्छी धरं जानि लोटं॥
तहां गत्ति मत्तं न सुष्षं न दुष्षं। थकी जंमसालं लरे सूर पिष्षं॥
छं० ॥ ५३ ॥

(१) मो.-तुट्टित। (२) ए. कृ. को.-करूरं। (३) मो.-इलाचार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महादेव जुद्ध दिष्यौ मेस यानं । धनी चित्रकोटं [1]धसी सेन जानं ॥ छं० ॥ ५४ ॥

चँदेरी की सेना और रुस्तमा खां के बीच में रावल समर सिंह जी का घिर जाना ।

कवित्त ॥ उत बंसी ससिपाल । इतै रुस्तम्म दुंद बल ॥
बिचै समर रावर । नरिंद बीरन गाहरमल ॥
उतै तेग उभ्भारि । इतै सिंगनि धरि बानं ॥
छंडि निधक अरियान । उररि पारी परि तानं ॥
रन तुंग अवर चिंते रिपुन । छवि मुष रुष मुक्कै नहीं ॥
भर सुभर दार रष्षन सु बर । समर समर उभ्भौं पही ॥छं०॥५५॥

पृथ्वीराज का रावल की मदद करना ।

सम लरत्त बर समल । दिष्षि चहुआन कियौ बल ॥
बांम मुष्ष अरोहि । नीर असि झल्ल मुषह झल्ल ॥
सौ सामंत छै सूर । सथ्थ प्रथुराज सु धायौ ॥
सार कोट अरि जोट । षग्ग षल षंभ हलायौ ॥
जै जैत दैत जै करहि । दैव बीर आनँद बढ्यौ ॥
तारुन्न तुंग तन तेज बर । असि पहार धर भर चढ्यौ ॥छं०॥५६॥

रनथंभ के राजा भान का समर सिंह जी से मिलना और पृथ्वीराज का भी चरन छूकर भेंट करना ।

दूहा ॥ रा जदव रिनथंभ तजि । मिलिय राव प्रति मान ॥
समरसिंह रावर सु प्रति । चरन चंपि चहुआन ॥ छं० ॥ ५७ ॥

समर सिंह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनों का मिल कर युद्ध के लिये प्रस्तुत होना ।

(१) ए. कृ. को.-मधी । (२) ए. कृ. को.-कीय ।

३६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*दिन धवलो धवली दिसा। धवल कंध भारथ्थ॥
समरसिंघ रावर मिल्यौ। चाहुआन समरथ्थ॥ छं०॥ ५८॥
मझि फौज प्रथिराज बल। रा जद्दव दिसि बाम॥
समरसिंघ दच्छिन दिसा। चढ़ि संग्राम सु काम॥ छं०॥ ५९॥

चँदेरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनों सेना के बीरों का उत्साह और ओजस्विता एवं युद्ध का दृश्य वर्णन।

छंद त्रिभंगी॥ ससिपालय बंसी, मिलि रन गंसी, बीर प्रसंसी, बर बीरं।
सेंमुष चहुआनं, दुति दरसानं, तमकि रिसानं, चित धीरं॥
तुरसी रस मंजरि, पति [1]समनंजरी, ग्रह दिय अंजरि, भ्रग रारी॥
बर टोप सु कंतिय, सूर सुभंतिय, बद्दर पंतिय, जम रारी॥छं०॥६०॥
गोरष्षन पाइय, कंठन लाइय, कढ़ि असि धाइय, विरुझाई॥
परि जोगह सोकं, दिय दिषि धोकं, बसि सुरलोकं, सरसाई॥
†वीरंग विचारैं, डक्क हकारैं, मंचं मारैं, उभ्भारैं।
छं०॥ ६१॥
अफफार कि फारं, असि बर तारं, बंसेति मारं, सिर सूरं॥
बर टोप समेतं, सिष्षर तेतं, असि आलेतं, हँसि हूरं।
[2]हारी रउ चिन्हं, हथ्थ न लिन्हं, भयउ सभन्नं, ब्रह्मचारं॥
छं०॥ ६२॥
बर दरसि कपालं, बिय लिय मालं, हसि बर बालं किल कालं।
‡नचि नारद पूरं, बजि रन तूरं, बरि बरि सूरं, धरि मालं॥

* "मो" प्रति में छन्द ५८ प्रथम और ५९ उस के बाद आया है परंतु प्रसंग में यही सिलसिला टीक जँचता है।

(१) ए.-समनेजरि। † यह पंक्ति मो. प्रति में नहीं है।

(२) ए. कृ को.-हारी चिर चिन्ह।

‡ यह पंक्ति ए. को कृ तीनों पंक्तियों में है, केवल मो. प्रति में नहीं है, परंतु इस का ठाप गौण मालूम होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर ब्रन्न सु तुट्टं, धर धर लुट्टं, ओपम घट्टं, कविराजं।
ओपम्म विराजं, ज्याजल काजं, मच्छवराजं, सक साजं॥
छं० ॥ ६३ ॥

चष छिंछत ओनं, लगि घटि कोनं, उप्पम होनं, घन घाई।
कवि ओपम तासं, सूर विलासं, माधव मासं, फिरि आई॥छं०॥६४॥

युद्ध में मारे गए सैनिक वीरों की गणना।

कवित्त॥ दस क्रम्मन अरि ठेल। मुरिय पंचाइन सेनं॥
बीर छक्क उत्तरी। सुत्ति भिरि रन रत नैनं॥
सुरस पियौ प्रथिराज। प्रगटि अंषिन जल झलकिय॥
पी अधरा रस पीन। प्रातसौ की मुष जक्किय॥
चहुआन सु बर सोरह परिग। समर सिंघ तेरह चिघट॥
ससिपाल बीर बंसी सुबर। सहस पंच लुथ्थय सुभट॥ छं० ॥ ६५ ॥

पृथ्वीराज का अपनी सेना की पांच अनी करके आक्रमण करना।

दूहा॥ निग्रह [1]नर बंछत न्रपति। अहि गवन्न सुष वान॥
पंच अनी करि षेत चढ़ि। षेत अरक चहुआन॥ छं० ॥ ६६ ॥

युद्ध के लिये सन्नद्ध हुए वीरों के विचार और उनका परस्पर वार्तालाप।

[2]जिन गुन प्रगटत पिंड। सोई सिंघार सूर बल॥
स्रत्त [3]कुलस तन जान। लभ्भ कित्तीति सुभट कल॥
जिहि मरन्न मन सूर। मरन जेही मन उत्तरि॥
पंच पंच पथ गोत्र। फिर न एकट्ठे नर नर॥

(१) ए. कृ. को.-निग्रह नन्नर।
(३) ए. कृ को.-प्रतियों में यह छन्द दुबारा लिखा हुआ है। पाठ भेद कुछ भी नहीं है।
(४) ए. कृ. को.-कुसल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घरियार रूपि सु कुठार घट। तंत मुक्ति लग्गी नदिय॥
सिंचीय कित्ति तर अमिय में। धुम्र व्यापं लग्गंन दिय॥छं०॥ ६७॥

हंसावती की घरयार से और दोनों सेनाओं की छाया से उपमा वर्णन।

दूहा॥ बाल कुँअर घरियार घरि। विय तरवर [1]बर छीह॥
जिम जिम लग्गे तिम अरिय। ढाहन ढाहै दीह॥ छं०॥ ६८॥

सेना के बीच में समर सिंह की शोभा वर्णन।

कुंडलिया॥ पंच चिराकन मभ्भ न्रप। सो सोभित जुग्गिंद॥
मुनि ग्रह सत्तह बीस [2]थह। लिय पारस मंडि चंद॥
लिय पारस मँडि चंद। सुभ्भित ससिपाल सु बंसिय॥
अप्प सामि बर जानि। कित्ति जंपै रन धंसिय॥
सुनिय बेंन बुल्लियै। घोरि ढंकी अरि रंचै॥
कपट द्रोह करि इक्क। पथ्थ टारै [3]पच पंचै॥ छं०॥ ६९॥

प्रातःकाल होते ही समर सिंह जी का अपनी सेना को चक्रव्यूहाकार रचना।

दूहा॥ इम निसि बीर कढ़िय समर। काल फंद अरि कढ्ढि॥
होत प्रात चिचंग [4]पहु। चकाव्यूह रचि ठढ्ढि॥ छं०॥ ७०॥

समरसिंह जी के रचित चक्रव्यूह का आकार और क्रम वर्णन।

कवित्त॥ समरसिंघ रावर। नरिंद कुंडल अरि घेरिय॥
एक एक असवार। बीच बिच पाइक फेरिय॥
मद सरक [5] तिन अग्ग। बीच सिल्लार सु भीरह॥

(१) मो.-बर बीह। (२) ए. कृ. को.-हथ।
(३) ए. कृ. को.-पंच पंच। (४) ए. कृ. को.-पंग।
(५) ए.-विन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोरंधार विहार। सोर छुट्टै कर तीरह ॥
रन उदै उदै बर अरुन हुअ। दुह्न लोह कढ्ढी विभर ॥
जल उकति लोह हिल्लोरही। कमल हंस नंचै[1] सु सर ॥छं०॥७१॥

युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ करं लोह कढ्ढै, रसं रोस बढ्ढै। अँगं अंग गढ्ढै, कथं स्रर कढ्ढै ॥ छं० ॥ ७२ ॥
असी अंच उढ्ढै, थटं थट्ट गढ्ढै। हकं सीस रढ्ढै, षगं स्रर कढ्ढै ॥ छं० ॥ ७३ ॥
गिधं लोल रट्टै, द्रुनं नंच ठट्टै। युती रंभ पट्टै, अँतं तुट्ट जुट्टै ॥ छं० ॥ ७४ ॥
सिरं अंग बढ्ढै, लोहं पच्छ कढ्ढै। करं कित्ति मढ्ढै, वकं बीन नढ्ढै ॥ छं० ॥ ७५ ॥
सुषं चंद पढ्ढै, ...। सिँघ सभ्भ रंनी, लुथ्थिं लुथ्थ घन्नी ॥ छं० ॥ ७६ ॥
संधि तुट्टं ऐसे, कंधं बंध्य जैसे। ...., ... ॥ छं० ॥ ७७ ॥

समरसिंह की युद्ध चातुरी से राजा भान का उत्साह बढ़ना और तिरछे रुख पर पृथ्वीराज का आक्रमण करना।

दूहा ॥ समरसिंघ दिष्षत सुबर। उप्पारे रन भान ॥
दइ समान दुज्जन दवन। तिरछौ परि चहुआन ॥ छं० ॥ ७८ ॥

चँदेरी की सेना का तुमुल युद्ध करना।

रसावला ॥ इसी सेन राई, चँदेरी सुभाई। षगं षोलि धाई, अरी सीस घाई ॥ छं० ॥ ७९ ॥
भिरंतं बजाई, रजं तम्म छाई। विरुझझाई धाइ, असी बंक झाई ॥ छं० ॥ ८० ॥

(१) मो.-जु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किरच्चं उड़ाई, ससी व्यं'व पाई। सुतं [1]राति छाई, कवी कित्ति गाई॥ छं० ॥ ८१ ॥

उमा ज्यों बताई, बरं पंच पाई। चवंसट्ठि ताई, ... ॥छं०॥८२॥

लही मुग्ति रासी, अबी अब्बि नासी। उपं राज जीतं, सु भारथ्थ बीतं॥ छं० ॥ ८३ ॥

रावल समरसिंह जी और चंदेरी के राजा का द्वन्द युद्ध और चन्देरी के राजा (बीर पंचाइन) का मारा जाना।

कवित्त ॥ बर बंसी ससिपाल। समर रावर रन [2]जुद्धे ॥
अमर [3]बंध चिचंग। बीर पंचाइन बद्धे ॥
सबै सथ्थ सामंत। षेत ढोल्यौ विरुझाइय ॥
गुरिन गयौ अरि ग्रहन। लद्द नन लुथ्थि न पाइय ॥
प्रथिराज बीर जोगिंद न्रप। दिष्ट देव अंकुरि रहिय ॥
बंधनह वत्त बंधन दिवन। दिष्टकूट हसि हसि कहिय ॥छं०८४॥

युद्ध के अन्त में रणथंभ गढ़ का मुक्त होना। हुसैन खां और कन्हराय का घायल होना।

लुट्टि लच्छि चिचंग। राज रिनथंभ [4]उबारे ॥
षेत ढुंढि चहुआन। कन्ह चहुआन उपारे ॥
उभै घाइ बर अस्स। घाइ आहुट्ठ अठोभिय ॥
पंच घाइ हुस्सेन। षान चौंडोल घालि लिय ॥
प्रथिराज बीर बीरंग बलि। निसि सपनंतर अद्ध पहि ॥
[5]यागत्ति जागि देषै न्रपति। तबह कन्ह जलयान लहि ॥छं०॥८५॥

(१) ए. कृ. को.-रारि। (२) मो.-सद्धे। (३) ए. कृ. को.-बांधे। (४) मो.-उचारे। (५) ए. कृ. को.-मत्ति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का स्वप्न में एक चन्दवदनी स्त्री के साथ प्रेमालिङ्गन करना और नींद खुलने पर उसे न पाना।

हंस [1]सुगति माननी। चंद जामिनि प्रति घट्टी॥
इक तरंग सुंदरि सुचंग [2]हथ नयन प्रगट्टी॥
हंस कला अवतरी। कुमुद बर फुल्लि समथ्थै॥
एक चिंत्त सोइ बाल। मीत संकर अस रथ्थै॥
तेहि बाल संग मैं पूछुय लिय। बरन बीर संगति जुवह॥
जाग्रत्त देवि बोलि न कछू। नवह देव नन मान वह॥छं०॥८६॥

पृथ्वीराज से कविचन्द का कहना कि वह स्त्री आपकी भविष्य स्त्री हंसावती है कहिए तो मैं उसका स्वरूप रंग कह डालूं।

दूहा॥ *सो सुपनंतर देषि वह। सो तुअ बर बर नारि॥
वे वर गज्जि नरिंद तूं। हँसि हँसि पुच्छि कुंआरि॥ छं० ॥ ८७॥
एन बयन रूपह रवन। इन गुन इन उनमान॥
धीरत्तन पूजंत बर। सुनहु तौ कहूं प्रमान॥ छं० ॥ ८८॥

हंसावती के स्वरूप गुण और उस की वयःसन्धि अवस्था की सुखमा और उसके लालित्य का वर्णन।

हनूफाल॥ सुनि सुबर बरनी रूप। तिहि चढ़न बै न्रप भूप॥
दिन धरत सैसव एह। बालत्त तज्जन देह॥ छं० ॥ ८९॥
वय काम दिन पछितान। आवंन दिन सुभ जानि॥
इन काज असुभ प्रमान। ज्यों सहिव तजि अनि ध्यान॥छं०॥९०॥

(१) मो.-गति। (२) मो.-हष

* इस छन्द मे यद्यपि पृथ्वीराज और चन्द कवि किसी का नाम स्पष्ट नहीं है परंतु छन्द के भाव से यह ज्ञात होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन धनक वेदी काम। [1]द्रिग काल गौरभ वाम॥
जंजीर भौंह चढ़ाइ। देषंत काम बजाइ॥ छं०॥ ९१॥
बरछिन्न उन्नित बाल। बर काम चित चढि साल॥
चित हरुअ गरुअ सुहंत। गुर गरू होत पढ़ंत॥ छं०॥ ९२॥
जिम जिम सु विधा आइ। तुछ भरत तुछ सरसाइ॥
मति लघू अलघु प्रमान। [2]अंब निबंद समान॥ छं०॥ ९३॥
बर मत्त पिछली जीअ। तहां रसन [3]हीनति पीय॥
गति हंस चढ़त सुभाइ। सुत बंटि [4]जसु अभिलाइ॥ छं०॥ ९४॥
सैसब सु सुतन सुषाइ। जोवन्न रस सरसाइ॥
तिसहूंत गजगति जानि। ....॥ छं०॥ ९५॥
जसु पन्न चित क्रम मान। जिम संधि प्रथम गियान॥
प्राचीय मुष रंग स्वर। प्रगट्यौ सु काम करूर॥ छं०॥ ९६॥
बर बाल माहि सरूप। घट धरक कपट अनूप॥
वय बाल [5]जोवत काज। किप कपट उत्तर लाज॥ छं०॥ ९७॥
मधु मधुर [6]अमृत जानि। बेजियन सीषत बानि॥
मति मत्ति बरनी षाइ। तहां बाल बेस [7]छिकाइ॥ छं०॥ ९८॥

पृथ्वीराज उक्त बातों को सुनही रहा था कि उसी समय भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना।

कवित्त॥ कहि सुपनंतर [8]न्रपति। सु वह ओताल वढ़ाइय॥
तव लगि [9]भान नरिंद। बीर दुजराज पठाइय॥
[10]वर दुजराज पठाय। रतन उर कीनौ अष्षी॥

(१) ए. कृ. को.-द्रग का लगौ सुभ वांम।
(२) मो.-अंबं विन्द समान।
(३) मो.-हीनित।
(४) मो.-अभि जनु माइ।
(५) ए. कृ. को.-जोवन।
(६) ए. कृ. को.-उंतम।
(७) मो.-लुकाय।
(८) मो.-उपति।
(९) ए. कृ. को.-मानं।
(१०) ए. कृ. को.-"हय हथ्थिय मनि मुत्त रतन उर किन्हो रष्षी"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दरबार में बड़े बड़े योधा हैं पर उनके समान एक भी नहीं है।

तब तो शहाबुद्दीन ने क्रोध में आकर ततार खां को लड़ाई के लिये फौज तैयार करने की आज्ञा दी और वह आप अंदर चला गया। उस रात्रि को रात भर शहाबुद्दीन के मन में चहुआन के बैर ने बस कर नींद न आने दी। उसे कभी शेख और कभी पृथ्वीराज आँखों के साम्हने देख पड़ता था। प्रातःकाल होते ही शहाबुद्दीन ने बड़ी भारी सेना सज कर हिन्दुस्तान की तरफ चलने की तैय्यारी की। ज्यों ही शाह सवार हुआ कि बहुत से अपशकुन होने लगे, जिन्हें देख कर अरब खां ने कहा कि अपशकुन हो रहे हैं इससे आज की तैय्यारी बंद कर दी जाय। यह सुन कर सुलतान ने कहा कि तू कायर है और अपने प्राणों के भय से ऐसा कहता है। यह कह कर उसने कूच कर दिया। जब सुल्तान सिंधु नदी तक पहुँच गया तो मीर हुसेन के दूतों ने सुलतान की चढ़ाई की खबर मीर से की। इधर पृथ्वीराज के कान तक भी यह खबर जा पहुँची। तब पृथ्वीराज ने अपने मंत्री कैमास और कन्ह, चन्द, पुंडीरादि सामन्तों को बुला कर उक्त संवाद की सूचना दी। निदान सब की सलाह यही ठहरी कि वह युद्ध द्वारा ही पराजित किया जाय और उसी समय फौज तय्यार की गई। सब सामंत और चतुरंगिनी सेना महल के दरवाजे आ उपस्थित हुई। ज्योंही पृथ्वीराज घोड़े पर सवार हुए गुरुराम राजप्रोहित ने आ कर राजा को तिलक किया और राजा ने पुरष्कार में बहुत सा दान दिया। ईश्वर का स्मरण करता हुआ ज्योंही पृथ्वीराज ससैन्य आगे बढ़ा कि और भी अनेक प्रकार के शुभ शकुन हुए—ज्योंही पृथ्वीराज की सेना दिल्ली से बाहर हुई कि मीर हुसेन भी एक हजार कड़र सिपाहियों सहित पृथ्वीराज के साथ हो लिया। दस कोस चलने पर फौज का पड़ाव डाल दिया गया।

उधर शहाबुद्दीन के गुप्तचरों ने उसे भी पृथ्वीराज की चढ़ाई की खबर कर दी, जिसे सुनते ही उसने अपनी फौज तैय्यार की और वह बड़े सज धज से आगे बढ़ा और दो दिन की राह एक दिन में तै कर के सारुंडपुर में उसने पड़ाव डाला। इसका समाचार कैमास को एक दूत ने एक घड़ी रात रहे आकर कहा। कैमास ने तुरंत अपने शिविर से निकल कर फौज की तैय्यारी करवाई और आप राजा के पास जाकर शाहके आगे बढ़ने की उसने खबर दी। इधर तो सब सेन पहिले से ही युद्ध पिपासाकुलित होकर तैयार खड़ी थी। पृथ्वीराज स्नानध्यानादि से निश्चिंत होकर शालिग्राम की शिला और तुलसी की माला गले में धारण कर धनुष बाण तलवार नेजा इत्यादि अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हो घोड़े पर सवार हुआ और उसने "जै हर" शब्द मुख से उच्चारण कर के घोड़े की गरदन ठोंकी जिसके उत्तर में जयकार के चिन्ह में घोड़े ने भी गरदन उठाई और वह पृथ्वी को खोदता हुआ फड़क उठा। पृथ्वीराज मीर हुसेन के डेरे में गया जो पहिले ही से सन्नद्ध बैठा था। राजा का आगमन सुनते ही घोड़े पर सवार होकर "रहमान" का स्मरण करता हुआ वह पृथ्वीराज के पास आया और उसने झुक कर सलाम किया और राजा ने सादर उसका उत्तर दिया और तब मीर हुसेन की और अपनी सब सेना सहित पृथ्वीराज आगे बढ़ा।

जब शहाबुद्दीन के दूतों ने उसे जाकर खबर दी कि पृथ्वीराज की सेना एक योजन पर आगई है तब शहाबुद्दीन ने फौज तयार कर के पाँच टुकड़ों में विभक्त कर के व्यूहबद्ध की। दक्षिण पक्ष में तत्तार खां; बांए पक्ष में खुरासान खां, हाज़ी खां, गाजी खां और राजी खां को; हरावल में मीर जमाम खां; मीर कमाम खां, और महब्बत खां को पिष्ट में तथा रुस्तम खां को मध्य में रक्खा। अनेक प्रकार के रण वाद्यों को बजाती, रंग बिरंगे निशान उड़ाती हुई सब सेना सहित शहाबुद्दीन सारुंडा के बाँई ओर आन जमा। तब तक पृथ्वीराज भी देखा देखी के वार में पहुँच गए और शहाबुद्दीन की फौज को देख कर पृथ्वीराज ने मीर हुसेन की तरफ देखा, निदान मीर हुसन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ने भी अपनी अनी सहित आगे बढ़ कर पृथ्वीराज को सलाम किया और कहा "कि हे राजन् आपने क्षत्री धर्म्म की निर्वाह कर के मेरी रक्षा की है सो आज मैं भी शहाबुद्दीन का शिर काट कर श्रीमान् के चरणों में समर्पण करता हूं। इसके उत्तर में पृथ्वीराज ने कहा कि वास्तव में ऐसा ही होगा मैं भी आज तुम को गजनी के तख्त पर बैठालूंगा। यह सुन कर मीर ने पृथ्वीराज को पुनः सलाम किया और उसने बाँई तरफ अपनी फौज सम्हाल कर दुरुस्त की। पृथ्वीराज ने जद्दव राय, महनसी, बड़रामगूजर, मंडलीक, जहिराज आदि सामन्तों को सेना सहित मीर हुसेन की सहायता करने की आज्ञा दी। दाहिनी ओर कैमास, चामुंड राय, चन्द्रसेन चंद पुंडीर, जुम्फ सिंह पम्मार, गहलौत, तुंवरराय परिहार आदि सामन्त ४००० सेना सहित व्यूहबद्ध हुए, बीच में पृथ्वीराज और गोइन्दराय; देवराज, कन्ह, प्रसंग खीची, कनकू बड़गुज्जर आदि अपनी अपनी सेना सहित हरावल अर्थात् साम्हने की पंक्ति में। पृथ्वीराज की सेना इस प्रकार व्यूहबद्ध होकर आगे बढ़ी और बीस हजार सेना के साथ तातार खां से चार हजार सेना सहित मीर हुसेन का साम्हना हुआ। दोनो फौजों के मेल में आते ही दोनों फौजों के घुड़सवारों ने घोड़े छोड़ दिए और पैदल हो कर मुकाबिला किया। मीर हुसेन के साथ १००० और तातार खां के साथ ७००० सवार थे। मुठभेड़ होते ही दोनों ओर के बीर सिपाही अपने अपने स्वामियों का हित चाहते हुए हथियार चलाने लगे। जीवन का मोह छोड़ कर बीर सिपाहियों ने ऐसा युद्ध किया कि क्षण मात्र में लोथ पर लोथ अटै गई और रक्त की नदी बह निकली। अन्त में ततार खां की फौज भाग उठी और उसकी ढाल (निसान) गिर पड़ी। पांच हजार बीरों के साथ ततार खां मारा गया और तीन सौ मुसलमान और दो सौ हिन्दुओं के साथ मीर हुसेन काम आया। इस युद्ध में तीस कमंध उठे। तब अपनी फौज को खुरासान खां ने आगे बढ़ाया और उससे और चामुंड राय से साम्हना हुआ। जब युद्ध होते होते दो पहर हो गया तब वह सरदारों के सहित घोड़े पर से उतरा और इधर से चामुंड राय ने भी घोड़ा छोड़ दिया किन्तु मिलान होते ही चामुंड राय ने खुरासान का काम तमाम किया और खुरासान खां की फौज भाग कर बादशाह की सेना में जा मिली। बादशाह का दाहिना हाथ तो टूट ही चुका था। निदान खुरासान खां के मरते ही पृथ्वीराज की फौज ने बड़े क्रोध से उमंग में आकर आक्रमण किया। यद्यपि शिकस्त खाने से शहाबुद्दीन की सेना का मन उत्साहहीन हो गया था किन्तु अपने स्वामी की उत्तेजना से वे लोग भी डट गए और दोनों ओर से बड़ा घोर घमासान लोहा झरा। मुठभेड़ होते ही पृथ्वीराज का नामी सरदार मंडलीक नामक खीची मारा गया। मंडलीक के कमंध ने मुसलमानों के नामी नामी ४० वीरों को मारा। जब उस सेना के बड़े बड़े अमीर उमराव और सेनापति काम आए तो फौज की भी हिम्मत कम हो गई और वह भाग उठी। इधर से पृथ्वीराज की फौज ने पीछा किया। मुसलमान भागते जाते थे और चहुआन की फौज उन्हें मारती हुई आगे बढ़ती जाती थी। शहाबुद्दीन जो अपनी सेना को हिम्मत दिलाने के लिये डटा हुआ था चहुआन के सामन्तों से घेर लिया गया। चामुंड राय ने साम्हने से जाकर ललकारा। चन्द्रसेन और पुंडीर ने बाँई तरफ से और कैमास ने दाहिनी तरफ से आकर घेर लिया। और चामुंड राय और पुंडीर ने दोनों तरफ से आनकर बादशाह के दोनों हाथ पकड़ लिए।

सूर्य्योदय से एक घड़ी ५ पल पर लड़ाई आरम्भ हुई और चार घड़ी दिन रहे शहाबुद्दीन पकड़ गया। सुलतान की तरफ से २० हजार सैनिक न्याजी खां, गाजी खां, मीर खां, मान खां, कम्मान खां आदि सरदार और सात हजार हाथी घोड़े इत्यादि मारे गए। पृथ्वीराज के कुल १३०० सिपाही और मंडलीक खीची, टीकम राय, रामराव पमार ये सरदार मारे गए। इस युद्ध में ४० कमंध खड़े हुए। इस प्रकार विजय प्राप्त कर और शहाबुद्दीन को कैद करके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज आनन्द मनाता हुआ डेरें पर आया और उसने रण क्षेत्र में से मीर हुसेन का शव खोज किए जाने की आज्ञा दी। जब चित्ररेखा को यह ज्ञात हुआ कि उसका सब गुणआगर नवनागर बीर प्रेमपात्र इस अनित्य शरीर को रणक्षेत्र में त्याग कर सूक्ष्म शरीर से वैकुंठ का आनंद ले रहा है किन्तु वहां भी उसे मेरे मिलने की अभिलाषा कदापि लगी हुई है, तो उसने तुरन्त पृथ्वीराज के सम्मुख आकर प्रणाम किया और वह ईश्वर स्मरण करती हुई मीर हुसेन के शव के साथ जीवित कब्र में गड़ गई।

पृथ्वीराज ने ५ दिन पर्य्यन्त शहाबुद्दीन को अपने एक विशेष मेहमान की तरह बड़े प्रेम से रक्खा। पांचवें दिन मीर हुसेन के पुत्र को उसके हवाले कर दिया और तीन बार सलाम करवा कर और यह सौगंद लेकर कि अब वह पुनः हिन्दुओं पर चढ़ाई करने की चेष्टा न करेगा उसे छोड़ दिया।

इस प्रकार शहाबुद्दीन गज़नी को लौट गया। वहां के अमीर उमरावों ने अपने बादशाह के जीवित कैद से छूट आने की बधाई में बड़े बड़े उत्सव किए और खैरात बांटी और शहर के सब पीर पठानों को चादरें चढ़ाई और उनकी पूजा की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखेटक चूक वर्णन।

[दसवां समय]

शहाबुद्दीन को पृथ्वीराज की कैद से छूट कर आए हुए एक वर्ष व्यतीत हो गया किन्तु शहाबुद्दीन को पल भर भी कल नहीं पड़ती थी। उसे उठते बैठते सोते जागते पृथ्वीराज से अपने अपमान का बदला लेने की धुन सवार थी दिल्ली से लौट कर गज़नी पहुँचते ही उसने हुसेन के लड़के को कैद कर दिया और वह एक महीने पांच दिन में वहां से किसी प्रकार निकल कर फिर पृथ्वीराज के पास आ गया और पृथ्वीराज ने भी उसे सादर स्थान दिया। इससे शहाबुद्दीन की कौड़ी और भी जल रही थी। एक दिन शहाबुद्दीन के एक गुप्तचर ने समाचार दिया कि पृथ्वीराज नागौर के खट्टू बन में शिकार खेलने के लिये आने वाला है। यह समाचार उसे नीतिराव नामक एक चत्री से मिला था जो कि प्रायः नित्य प्रति दिल्ली के समाचार गज़नी को भेजा करता था। उक्त समाचार पाकर शहाबुद्दीन का कलेजा फूल उठा। उसने तुरंत ही हाज़ी खां, गष्पर शाह, महम्मद गाज़ी आदि सरदारों को बुला कर उक्त समाचार कह सुनाया और खट्टू बन की ओर स्वयं जाने के लिये तैयारी करने का हुक्म दिया और ततार खां और खुरासान खां को आज्ञा दी कि तुम लोग चतुर एयारों को लेकर स्वयं खट्टू बन में जाओ और इस बात का भेद लो कि पृथ्वीराज कितनी सेना के साथ और किस तरह शिकार करने आता है और हम लोग किस तरह अपनी फलसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं। इस तरह भेदिए दूतों को आगे भेज कर शहाबुद्दीन, खुरसान खां, गाजी खां, गष्पर साह, पष्पर साह, मीर मुहम्मद, वाजीद खां, आदि सरदार और आठ हजार घुड़सवार सेना सहित खट्टू बन में आ पहुँचा और उसने छिप कर एक बड़े घेरे में पड़ाव डाल दिया।

पृथ्वीराज भी ५०० पैदल, पांच सौ सवार, एक हजार कुत्ते, ५५ चीते और बहुत से शिकारी पक्षी और परिकर की भीड़ भाड़ सहित निश्चिंतता पूर्वक खट्टू बन में पहुंचा। एक रात विश्राम कर दूसरे दिन प्रातः काल होते ही पृथ्वीराज, कन्ह, सलष, पंवार, रघुवंश चहुआन, कविचंद इन सामन्तों को साथ ले और सारी फौज परिकर को छोड़ कर जंगल में घुस पड़ा। शहाबुद्दीन जो कि पहिले ही से ताक में लगा हुआ था पृथ्वीराज को अपनी सेना के केन्द्र में जानकर उस पर आ टूटा। कविचंद को इस विषय में प्रथम ही से कुछ संदेह था। इसलिये उसने पहिले ही से सामन्तों से सचेत रहने को कह दिया था किन्तु उन लोगों पर इस बात का विशेष प्रभाव न पड़ा। जब एकाएक मुसलमान सेना ने घेर लिया तब उनको चेत हुआ और तुरंत ही चार सरदार तो पृथ्वीराज के चारों तरफ तलवार निकाल कर अटल वीर रूप से डट गए और कन्ह ने आगे बढ़ कर हरावल पर धावा किया। उस आठ हजार मुसलमान सेना में इन पांचों राजपूत वीरों की अनुपम छटा प्रस्फुटित होती थी। क्षण क्षण में उन राजपूत वीरों पर वीर रस और यवन सेना पर करुणा रस का प्रभाव जमता जाता था। शहाबुद्दीन के सरदारों ने अपना सा खूबजोर मारा पर वे पृथ्वीराज की छांई दाबने में भी समर्थ न हो सके। जो आगे जाता था वह वहीं टूट कर दो हो जाता था। इस प्रकार केवल उक्त पांच सामन्तों ने ९५५ मुसल्मानों को मार डाला और तब तक पृथ्वीराज के शिविर में भी इस बात की चरचा फैल गई। इसलिये उसकी सेना भी सज कर आ पहुंची और छली यवनों का नाश करने में तत्पर हुई। भला जो सेना केवल पांच सामन्तों का साम्हना करने में भी समर्थ न हो सकी थी वह अब इस वीर दल के साम्हने कब ठहर सकती थी। निदान मुसलमान सेना के पैर उखड़ गए और सब लोग तीन तेरह हो गए। शहाबुद्दीन ने भी अपनी पहिली गति का स्मरण कर के इन्हींका साथ देना उचित जाना और सब के साथ साथ जीते जागते गज़नी पहुँच कर उसने ख़ैर मनाई। इधर वीर पृथ्वीराज पुनः आनन्द से खट्टू बन में शिकार करता हुआ निश्चिन्त भाव से विचरने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्ररेखा समय ।

[ग्यारहवां समय ।]

एक समय कविचन्द ने हुसन ख़ां से चित्ररेखा की उत्पत्ति के विषय में पूछा। तब उसने इस प्रकार वर्णन करना आरम्भ किया कि एक समय वीर शहाबुद्दीन ने अपने समस्त शूर वीर मंत्री पुरासान ख़ां, मारूफ़ ख़ां, तत्तार ख़ां, इत्यादि सरदारों को बुलाकर पूछा कि सिंध के किनारे राज्य करने वाला छोटा सा सरदार * अरब खां मेरी सेवा करना स्वीकार नहीं करता इस हेतु उस पर ससैन्य चढ़ाई कर के उसे अपने अधीन करना चाहिए। इस प्रकार शहाबुद्दीन की आज्ञा पाकर मंत्रियों ने ५०० हाथी, एक लाख सवार, काबुली, पंजाबी, रूमी, गोरी, अरब इत्यादि जाति के मुख्य मुख्य एक लाख शूर वीरों की सेना तैयार करके शहाबुद्दीन सहित हमला किया। निदान शहाबुद्दीन भी स्वयं उक्त सेना के साथ हो लिया। जब सिन्धु की सरहद पर पहुँचा तब उसने अपना डेरा वहीं पर डाल दिया और निसुरत्त खां को अरब खां के पास भेजकर कहल भेजा कि यदि वह चित्ररेखा वेश्या को दंड स्वरूप मुझे देना स्वीकार करे और सदैव के लिये मेरी सेवा करना भी स्वीकार करे तो मैं भी उसे क्षमा कर दूंगा। अरब खां शहाबुद्दीन की विकट सेना और उसके वीर बलवान सरदारों के पराक्रम से स्वयं डर गया था, निसुरत्त खां से बड़े आदर से मिला और उसने बादशाह की आज्ञा को भी सादर स्वीकार कर लिया। बरन साथही उसके गज़नी के दरबार में उच्चपद पाने की अभिलाषा से सनातन हिन्दू धर्म्म को त्याग करके मुसलमानी मत भी उसने स्वीकार कर लिया जिस पर निसुरत्त खां ने उसकी बड़ी प्रशंसा की और उस समय अद्वितीय रूप लावण्यमई परम सुन्दरी चित्ररेखा को लाकर शहाबुद्दीन को नज़र किया जिसके लिये बादशाह ने उसको बहुत कुछ इनाम दिया और किसी झगड़े झंझट खून बहाव के बिना चित्ररेखा को सहज ही में पाकर मन ही मन आनान्दित होता हुआ वह गज़नी को लौट चला। गज़नी पहुंच कर चित्ररेखा और शहाबुद्दीन की परस्पर दिन प्रति प्रीति बढने लगी। अन्त में यहां तक हो गया कि सुलतान सर्वथा चित्ररेखा के प्रेम के वशीभूत हो गया। एक मात्र उसी के प्रेम में मग्न होकर अपनी सब क्रियादि कों भुला कर उसी की प्रसन्नता की चेष्टा में वह मग्न रहता। यह खबर सुन कर कविचंद अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

* "अरब खां' यह मुसलमानी नाम है किन्तु आगे कथा के सम्बन्ध से ज्ञात होता है कि वह कोई हिन्दू क्षत्री राजा था किन्तु उसका असली नाम क्या था सो मालूम नहीं और न कहीं पर लिखा मिलता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोला राय समय।

[बारहवाँ समय ।]

संवत ११३६ चैत्र सुदी दुतिया शुक्रवार को पुष्य नक्षत्र में भोलाराम भीमदेव गुजरात के राजा का शिवपुर अर्थात् आबू के राजा सलष पँवार पर चढ़ाई करने और सोमेश्वर जी का उसको सहायता देने का वर्णन इस समय में है।

शुकी अर्थात् कविचंद की स्त्री का इच्छनी कुमारी के विवाह की कथा पूछना और कविचंद का उसे सविस्तर वर्णन करना।

कविचंद बोला कि जिस समय प्रतापी पृथ्वीराज अजमेर और दिल्ली का स्वतंत्र राज्य करता था उसी समय आबूगढ़ में सलष नामक पँवार राजा नीति धर्म्मयुक्त राज्य करता था, सलष सत्पुरुष साधुओं की रक्षा करता हुआ सदैव दुष्टों को दंड देने में तत्पर रहता था। उसके मंदोदरी और इच्छनी नामक दो कन्याएँ और जैत नामक एक पुत्र था। सलष ने अपनी ज्येष्ठ पुत्री मंदोदरी का विवाह गुजरात के प्रतापी राजा भोलाराय भीम से कर दिया था और इच्छनी को पृथ्वीराज के साथ विवाह करने का उसका संकल्प था।

भोलाराय भीमदेव का मंत्री अमरसिंह सेवरा नामक एक जैन धर्मावलम्बी ब्राह्मण था जो कि तंत्र और मंत्र शास्त्र में अद्वितीय निपुण और परम शक्तिसंपन्न था। उसने एक समय अमावास्या को चन्द्रमा का दर्शन करा के राज्य के समस्त माननीय प्रसिद्ध पंडितों को मूर्ख और झूठा प्रमाणित करके सब का सिर मुड़वा दिया था। भीमदेव की स्त्री मंदोदरी के साथ जो प्रोहितानी, मालिन, इत्यादि अन्यान्य स्त्रिएँ आबू से आई थीं उन्होंने इच्छनी कुमारी के अद्वितीय रूप लावण्य की अत्यन्त प्रशंसा की जिसे सुनकर भीमदेव का मन कामातुर होकर उसी के ध्यान में मग्न हो गया। अस्तु उस का यह ध्यान यहां तक बढ़ा कि सोते जागते सदैव इच्छनी कुमारी की मनोहर मूर्ति ही उसकी आखों के साम्हने फिरा करती और इस धुन में वह पागल सा हो गया। अंत में उसने प्रधान द्वारा सलष को एक पत्र लिख भेजा जिस का आशय यह था कि तुम अपनी कनिष्ठा कुमारी इच्छनी का विवाह मेरे साथ कर दो, उसका वाग्दान जो तुम पृथ्वीराज को कर चुके हो उसका ध्यान भी भुला दो, यदि ऐसा न करोगे तो तुम्हें सपरिवार नष्ट भ्रष्ट करके मैं आबूगढ़ पर अपना अधिकार करूंगा और बलवत इच्छनी कुमारी को अपनाऊंगा। इस पत्र को लेकर भीमदेव का प्रधान जब आबू पहुँचा तो राजा सलष ने उसे अपने दमाद के यहां से आया जान सादर स्थान दिया और पांच दिन बड़े सम्मान से रक्खा। पाचवें दिन दरबार लगा और प्रधान भी बुलाया गया। कुशल प्रश्न हो जाने पर प्रधान ने उक्त पत्र सलष को समर्पण किया जिसे पढ़ते ही सलष ने कहा कि मैं ने चालुक्य को मंदोदरी ब्याह करके सम्बन्ध किया था किन्तु वह अनीति करता है कि इच्छनी के रूप पर मोहित हो कर अब उसे भी बरा चाहता है। मैं उसे पृथ्वीराज से ब्याहने का संकल्प कर चुका हूं और मैं अपने दृढ़ संकल्प को प्राणों के बदले भी कदापि पलटने का नहीं। पत्र का सारांश जान कर जैतसिंह की तो विचित्र ही दशा हो गई। क्रोध से मुख आरक्त हो उठा, ओठ फड़कने लगा, शरीर के रोमांच खड़े हो गए। उसके क्रोध की मात्रा यहां तक बढ़ी कि उसने झिल्लाकर तलवार निकाल ली और वह कहने लगा कि भीमदेव बड़ा पाखंडी है उसे आकर्षन, मारन मोहन इत्यादि के मंत्र यंत्रों का बड़ा गर्व है। वह क्षत्री नहीं है और न उसे क्षत्रियों से काम पड़ा है। वह इस प्रकार पाखंड से बल बढ़ा कर अपने को अमर मानता है। यह सर्वथा भूल है। इस पर भीमदेव के मंत्री से न रहा गया और वह कहने लगा कि तुम लड़के हो भीमदेव के आर्थिक और सैनिक बल से परिचित नहीं हो, इससे ऐसा कहते हो। वह क्षणमात्र में पुंगल गढ़, आबू, मंडोवर और अजमेर इत्यादि को बिना प्रयास ले सकता है। यदि भीमदेव रूस जावेगा तो सपरिवार आपकी और नौकोटि मारवाड़ की प्रजा की रक्षा करने वाला

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुझे कोई नहीं दीख पड़ता है। यह सुन कर राजा सलष ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया कि मेरी सहायता गोवर्द्धनधारी श्रीकृष्णचन्द आनन्द कन्द करेंगे। इस प्रकार पिता पुत्र दोनों का एक मत देख कर प्रधान ने कहा कि अच्छा यदि आपकी ऐसी इच्छा है तो सावधान रहिए। मैं जाता हूं और अब राजा के सहित शीघ्र ही आकर आपका बल देखूंगा। ज्यों ही उधर भीमदेव के मंत्री ने पीठ फेरी कि राजा सलष ने इच्छनी कुमारी के व्याह की तय्यारी कर दी और उक्त संवाद की स्पष्ट सूचना देते हुए पृथ्वीराज को भी एक पत्र लिख कर उसके पास मंत्री को भेजा जिसको पृथ्वीराज ने बड़े आदर से लिया और उसकी कही हुई सब बातें सुन कर सलष के पत्र को बड़े आदर से पढ़ा। यथासंभव शीघ्र ही इच्छनी से व्याह करने का समाचार पाकर पृथ्वीराज के आनन्द की सीमा न रही। उसने तुरन्त ही सलष के मंत्री को पांच हाथी १०० घोड़े पांच सौ रुपए और नाना प्रकार के वस्त्र आभूषण देकर विदा किया और आप स्वयं बीर सामन्तों सहित सज कर आबू की ओर चला। इस समाचार के पाते ही भीम देव आग बबूला हो गया। उसने एक पत्र लिखकर पृथ्वीराज के पास भेजा कि सलष मेरा शत्रु है तुम्हें उचित है कि तुम कभी भी उसका पक्ष न करो, उसका पक्ष करके मुझ से बैर बिसाह लेना भला नहीं है। उसने साथही सिंध, सोरठ, कच्छ इत्यादि अपने अधीन के राजाओं को बुला कर आबू पर चढ़ाई करने की तय्यारी की और अपने परम मित्र मंत्री अमर सिंह की मंत्रणानुसार उसने नियत समय पर ससैन्य आबू की तरफ़ प्रस्थान कर दिया और आबूगढ़ से कुछ दूरी पर पड़ाव डाल दिया। आधी रात के समय जब कि अमर सिंह सेवड़ा के मंत्र बल के कारण वह रात्रि पावस की रात्रि से भी अधिक अंधेरी और भयावनी बन रही थी भोला राय भीम देव ने दक्षिण की तरफ से आबू गढ़ पर आक्रमण किया। पँवार सलष जोकि इस आक्रमण की सम्भावना से प्रथम ही से सदैव सैनसहित सचेत रहा करता था भीमदेव का आक्रमण रोकने में तत्पर हुआ। बड़ी देर तक युद्ध हुआ। दोनों ओर के सहस्रों बीर काम आए। अन्त में खेमकरन खंगार, बीर सिंह, जरासिंह इत्यादि बीरों के सहित सलष पँवार मारा गया और आबू गढ़ पर भोला राय भीमदेव का अधिकार हो गया। आबू गढ़ में सब राज्य भर में भीमदेव की दुहाई फिर गई। आबू के गढ़ पर भीमदेव का पताका फहराने लगा। इस प्रकार भीमदेव आबू में एक महीने पांच दिन रह कर गुजरात को चला गया।

भीमदेव ने अपने राज्य पट्टनपुर में आकर शहाबुद्दीन महम्मद गोरी को एक पत्र लिखा कि आप अपने दल बल सहित दिल्ली नगर को घेरिए और मैं नागौर पर आक्रमण करूंगा। इस प्रकार आप और हम दोनों मिलकर के पृथ्वीराज पर जय प्राप्त करें। यह पत्र अपने एक चतुर विश्वास पात्र सभासद मकवान को देकर उसने समझाया कि हे वीरवर मैं जो कुछ यह कार्य्य कर रहा हूं वह सब एकमात्र इच्छनी कुमारी के ही लिये है। मैं उस रमणी रत्न के लिये अपना सर्वस्व आहुति करने को प्रस्तुत हूं। उसी के लिये आबूगढ़ की लड़ाई में मेरे परिवार के अनन्त जन संहार हुए हैं। हे मित्र मेरे मन का तब ही दुःख दूर होगा जब शहाबुद्दीन मेरे इच्छानुसार मेरे मन्तव्य में सहमत हो जाय और मैं पृथ्वीराज पर आक्रमण कर के दिल्ली का राज्य स्वयं नष्ट कर डालूं। इस प्रकार समझा कर और बहुत से घोड़े चमर, पश्मीना इत्यादि शहाबुद्दीन को अपनी ओर से भेंट देने के लिये देकर उसने मकवान को गज़नी की ओर भेजा। मकवान ने गज़नी पहुँच कर शहाबुद्दीन से साक्षात् किया और भरे दरबार में भीमदेव का पत्र पेश किया और उसका मूल अभिप्राय भी कह सुनाया जिसे सुनते ही शहाबुद्दीन का मुख लाल हो गया, ओष्ठ फड़कने लगे। उसने फड़कती हुई भुजाओं से अपना तीर उठाकर कमान पर चढ़ाया और कहा कि मैं स्वयं काफ़िरों का नाश करूंगा तभी खुरसान में रहूंगा। बादशाह का ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वचन सुन कर ततार खां, न्याजी खां, पिरोज खां, रुस्तम खां, उजबक खां, निसुरत्त खां इत्यादि सभासदों ने भी हां में हां मिला दी। बादशाह पुनः बोला कि दान खड्ग विद्या और संपति ये वस्तुएं सांझे में नहीं होतीं। रे मूढ़ दूत यह पृथ्वी वीरभोग्या है, तुच्छ भीमदेव मुझ से क्या शेख़ी मारता है। मैं उसे भी नष्ट भ्रष्ट करने में समर्थ हूं। यह सुनकर मकवान बोला कि भीमदेव भी ऐसा दुर्बल नहीं है वह भी म्लेच्छों को नीचा दिखा सकता है। तब शहाबुद्दीन फिर बोला कि पहिले पृथ्वीराज को नष्ट कर के तब भोलाराय भीमदेव की भी खबर लूंगा। यह सुनकर मकवाना सगर्व बोला कि हे शाह! जिस समय भीमदेव का दल बल चलता है तब पृथ्वी डोलती है और काल भी भयभीत होता है। चालुक्क राय के सम्मुख जालंधर, बंग, तिलंग, कोकन, कच्छ, परोट, मरहट्ट इत्यादि कोई भी ठहर नहीं सकते, सब उसको नवते हैं। यह वही प्रतापी भीमदेव है जिसने बघेलों को जीता, आबू को तोड़ा, और यदवों को हराया। उसे जीतना सहज नहीं है। ब्रह्मा ने उस अद्वितीय वीर को स्वयं अपने करकमलों से रचा है। मकवाना का यह गर्व शहाबुद्दीन सह न सका और वह उसे मारने पर उद्यत हुआ किन्तु वज़ीर ने समझाया कि दूत मारा नहीं जाता ऐसा करने में बड़ा ही कलंक और अपयश होगा। इस पर शहाबुद्दीन तो निस्तब्ध हो रहा किन्तु एक सभासद बोल उठा कि यद्यपि दूत का मारना नीति विरुद्ध है किन्तु यह दूत भी कैसी असभ्य वाणी बोलता है। इस दृश्य को देखकर वीर मकवाना से न रहा गया और उसने उपरोक्त सभासद को एक ऐसा हाथ मारा कि उसका सिर धड़ से पृथक होकर लोटने लगा। अपने प्रिय सभासद को मरा देख कर शहाबुद्दीन से न रहा गया और उसने तुरंत ही मकवाना का हृदय बाण से बेध दिया। वीर मकवाना ने मरने से प्रथम ही हैजम और हुजाब नामक दो सरदारों को और मार डाला और तब वह आप मरा। जब यह समाचार भीमदेव को मिला तो उसके क्रोध और पश्चाताप का ठिकाना न रहा। एक तो आशा के विरुद्ध फल हुआ, दूसरे प्रिय सामन्त मकवाना भी मारा गया। इसलिये भीमदेव को पृथ्वीराज तो भूल गया। उसने गज़नी पर चढ़ाई करने का विचार किया किन्तु ज्योंहीं इसने राज महल से बाहर प्रस्थान किया कि आग लगने का बड़ा भारी अपशकुन हुआ। उधर से शहाबुद्दीन ने भी हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने को बड़ी भारी सेना एकत्र करके प्रस्थान किया, नागौर में पड़े हुए पृथ्वीराज को जब इन तैय्यारियों की सूचना मिली तो उसने भी सब सूर सामन्तों को जिरहबख्तर सम्हालने की आज्ञा दी। उस समय नागौर में उसके पास केवल ८ हजार सेना थी। इसलिये उसने दिल्ली से चार हजार सेना और मंगवाई और १२ हज़ार सेना को सन्नद्ध करके वह बैठ रहा। पृथ्वीराज की केवल १२ हजार सेना ही भीमदेव और शहाबुद्दीन को धूल चटाने को बहुत थी। जब शहाबुद्दीन का पड़ाव सारुंडा में आन पड़ा और भोलाराय की सेना सोझती में आन पहुँची तब कैमास ने पृथ्वीराज से कहा कि अब यह समय दोनों शत्रुओं को पराजित करने के लिये बहुत ही उपयोगी है। इस समय हम अपनी इतनी ही सेना से बहुत कुछ कर सकते हैं। कैमास का यह प्रस्ताव पृथ्वीराज ने प्रसन्नतापूर्वक स्वीकार कर लिया और इसके निश्चय के लिये उसी रात को सब सामन्तों की सभा करके उक्त प्रस्ताव पर विचार किया गया। इसको सब वीर सामन्तों ने भी सादर स्वीकार किया और युद्ध आरम्भ के विषय में अपना अपना मत प्रगट किया। चामुंड राय, जैतराव, देव राव बग्गरी, बड़गुजर इत्यादि वीरों ने प्रतिज्ञाएँ कीं कि हम लोग दोनों दलों का क्षण मात्र में नाश करेंगे। हम वीर लोगों का जन्म ही स्वामिकार्य्य के लिये है और कैमास का मंत्र सर्वथा माननीय है। दूसरे दिन प्रातःकाल जब कि पृथ्वीराज नगर के बाहर सब सेना की देख भाल कर रहा था उस समय लोहाना आजानबाहु भी पाँच हजार सेना सहित नागौर में आ उपस्थित हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज ने अपनी सेना के दो बराबर भाग किए। एक भाग का सेनापति कैमास और उपसेनापति चामुंड राय हुआ और दूसरी सेना का सेनापतित्व पृथ्वीराज ने स्वयं अपने ही हाथ में रक्खा। दोनों शत्रुओं की राह रोकने के लिये दोनों सेनाओं की तय्यारी एक ही साथ की गई। पृथ्वीराज ने कैमास को तो भोलाराय भीमदेव के मुकाबिले के लिये नागौर में छोड़ा और आप अपनी अनी लेकर शहाबुद्दीन के मुहासिरे पर सारुंडे की तरफ रवाना हुआ।

उधर भोलाराय भीमदेव एक तो इच्छनी के बिरह वियोग में प्रथमही से खान पान छोड़ बैठा था तिसपर भी शहाबुद्दीन से अपमानित होने पर तो उसके क्रोध और दुःख का ठिकाना न रहा, न तो इच्छनी कुमारी का चित्र उसकी आंखों के साम्हने से टलता था, न पृथ्वीराज और न शहाबुद्दीन का अटल वैर उसे पल भर कल लेने देता था। जब कैमास की चढ़ाई का सँदेसा भोलाराय भीमदेव के कानों तक पहुँचा तो उसने अपने राज्यमंत्री मुख्य मुख्य सभासद और सेनानायकों की एक सभा की जिसमें राम रन प्रमार, गुरगुंठीर झाला, वीरदेव बघेला, गंगडामी राजप्रोहित, धर्मधुर बघेला, अमरसिंह सेवरा, इत्यादि का यह मत हुआ कि दोनों शत्रुओं से युद्ध किया जाय, किन्तु सारंगदेव, पैरंभराय इत्यादि कई सरदारों का यह मत था कि चहुआन से विग्रह न करके संधि कर ली जाय और दोनों मिल कर विदेशी धर्मशत्रु शहाबुद्दीन से युद्ध करें। उन्होंने भीमदेव से कहा कि पृथ्वीराज का केवल इतना अपराध है कि उसने सलख को शरण रक्खा, परन्तु सलख ने यदि मंदोदरी का आपके साथ व्याह करके इच्छनी कुमारी को न व्याहा तो कोई अपराध नहीं किया। झालाराव तथा कई अन्य अन्य चत्री सरदारों ने इसी मत का अनुमोदन किया और कहा कि गत वैर को भुलाकर पृथ्वीराज से संधि कर लेनी ही उत्तम है। ये बचन अमरसिंह सेवरा को बाण से लगे। उसने क्रोधित हो कर कहा कि तुम लोग यह क्या कह रहे हो मैं मंत्र बल से चहुआन के मंत्री कैमास को बश करूंगा और शस्त्रबल से शहाबुद्दीन को जीतूंगा। भैरव भट्ट चरन चन्द्र और पाटरिया रान इत्यादि जैन धर्म्मावलंबी वीरों ने अमरसिंह की बात का अनुमोदन किया। इच्छनी की विरहाग्नि में विह्वल हृदय भीमदेव को भी यही मत भा गया।

उधर नागौर में कैमास अपनी मोरचाबंदी कर रहा था, इधर अमर सिंह उसे मंत्र बल में बंदी करने के लिये नाना प्रकार के यांत्रिक, तांत्रिक प्रयोग में दत्त चित्त था। कैमास नागौर से बढ़ कर भोलाराय भीमदेव की फ़ौज पर छापा मारने के लिये तय्यार हो ही रहा था कि अमर सिंह सेवरा का भेजा हुआ भाट बड़े साज बाज से नागौर में आ पहुँचा। उसने कैमास से मेल कर अमरसिंह की दी हुई एक बहुमूल्य मोतियों की माला नजर की और संधि पत्र पेश किया। उस पत्र में प्रथम परस्पर के शिष्टाचार लिखे थे तिस पीछे बहुत कुछ अपनी बड़ाई लिख कर एक सुन्दरी स्त्री का चित्र लिखा हुआ था और लिखा था कि तुम इस स्त्री को लो और आनन्द करो, जिसके देखतेही कैमास की बुद्धि "किं करतव्य विमूढ़" हो गई। अमरसिंह के मंत्र के वशीभूत होकर वह उस चित्र पर ऐसा मोहित हो गया कि उस समय से अमरसिंह की इच्छा के विरुद्ध कोई भी कार्य्य करने की समर्थ्य न रख सका। अमरसिंह सेवरा के मंत्रबल से आकर्षित लाले नामक खत्री की परम स्वरूपवती कन्या के प्रेमपाश में कैमास ऐसा मुग्ध हो गया कि अपने स्वाभाविक स्वामिधर्म्म को बिलकुल ही भूल गया। पृथ्वीराज के नाम को भी भूल गया और भीमदेव की आज्ञा का निपट वशवर्ती बन गया और इसी से समस्त नागौर नगर में भीमदेव की दुहाई फिर गई।

दिल्ली में जब कविचंद को स्वप्न में इस बात का समाचार मिला कि नागौर पर भीमदेव का दखल हो गया है और कैमास अमर सिंह सेवरा के मंत्रबल में ऐसा वशीभूत हो गया है कि वह सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य्य चालुक्य के इच्छानुसार ही करता है, नागौर नगर में वेदधर्म्म का ह्रास और जैनधर्म्म का प्रकाश हो रहा है, इसी से वहाँ की प्रजा बड़ी ही दुखित है और पृथ्वीराज को इस विषय में कुछ भी नहीं मालूम है, तब तो कविचंद से न रहा गया वह सबेरा होते ही कुछ थोड़ी सी सेना लेकर नागौर की तरफ चल पड़ा। वहाँ पर पहुँच कर देखता क्या है कि जो कुछ स्वप्न में देववाणी द्वारा सुना था वह सब रत्ती रत्ती साचात् पाया। वह सीधा कैमास के पास गया और उसे उसने बहुत कुछ समझाया किन्तु वहाँ सुने कौन। वह तो बेचारा अपने को भी भूला हुआ था—इसलिये चन्द ने योगिनी की आराधना की और उन्हें मंत्र द्वारा प्रसन्न कर के प्रार्थना की कि वह अमर सिंह की इस मंत्रमाया को नष्ट भ्रष्ट कर देवे और मंत्री कैमास को अमर सिंह के मंत्रपाश से मुक्त करे। कविचंद की प्रार्थना स्वीकृत हुई और धीरे धीरे नागौर से मंत्रशक्ति द्वारा आच्छादित अंधकार घटने लगा। जब अमर सिंह को यह समाचार ज्ञात हुआ तो वह स्वयं नागौर में दौड़ा आया और चंद के साथ तांत्रिक संग्राम करने में प्रवृत्त हुआ। दोनों ने अपने अपने इष्टदेवों की आराधना कर के एक दूसरे की शक्तियों का ह्रास और अपने अपने तेज के प्रकाश करने की चेष्टा आरम्भ की। अन्त में कविचंद की ही जै हुई और अमर सिंह पराजित हो कर अपने साथियों सहित नागौर से भाग निकला। इस प्रकार शत्रुओं को निकाल कर जब कविचंद कैमास के पास गया तो कैमास ने लज्जित हो कर सिर नीचा कर लिया। वह कविचंद के साम्हने भी न देख सका। तब कविचंद ने उसे आश्वासन दे कर कहा कि हे बुद्धिवर कैमास इसमें तुम्हारा दोष नहीं है, यंत्र मंत्र से देवता भी वशीभूत हो जाते हैं तब मनुष्य की गणना ही क्या है। ऐसे समझा कर उसने कैमास को संतोष दिया और भोलाराय भीम देव पर चढ़ाई करने को उत्साहित किया। कविचंद ने कहा कि हे वीर कैमास अब तुम भीम देव को परास्त करके ही अपना मुख उज्ज्वल करो। उधर दिल्ली में जब कैमास के मंत्रवश होने का समाचार पहुंचा तो सब राज्य में खलबली पड़ गई। कन्ह, चामुंड राय, चंद पुंडीर आदि सब सामन्त पृथ्वीराज को अजमेर में छोड़ कर नागौर की तरफ चल दिए। इन सब के पहुंचने पर कैमास के उत्साह का ठिकाना न रहा। उसने तुरंत ही तय्यारी कर दी और इन वीर सामन्तों की सूक्ष्म परन्तु बलिष्ट सेना लेकर बड़ी सावधानी से भीमदेव के मुकाबिले पर वह जा डटा। भीमदेव तो इस होनहार से प्रथम ही से सचेत था। उसकी चतुरंगिनी सेना आठ प्रहर चौसठ घड़ी सन्नद्ध रहती थी। जब से कविचंद ने कैमास को मंत्र बल से मुक्त कर के अमर सिंह का मान धूलिधूसरित कर दिया था उस समय से भीमदेव का भी दिल दहल गया था और इसीलिये वह सदैव अपनी रक्षा के लिये विकट विश्वास पात्र वीरों की चौकस चौकी रखता था। जब कैमास की यह थोड़ी सी फौज मुठ भेड़ में जा पहुंची और एक रात राह की थकावट मिटा कर दूसरे दिन युद्ध करने का विचार करके पड़ाव डाले पड़ी थी तो भीमदेव ने सप्तमी को सात घड़ी रात जाने पर कैमास पर सहसा आक्रमण कर दिया। यद्यपि कैमास की फौज थोड़ी थी भीमदेव के अनन्त दलबल में यह थोड़े से शूर सामन्त आटे में नौन के समान थे किन्तु इनमें खारापन नोन से भी कहीं अधिक था। भीमदेव का आक्रमण होते ही ये लोग भी सम्हल उठे। दोनों ओर से लोहा झरने लगा। तीर, तुबक, तलवार, कटार, बर्छी, बाँक, बिछुए इत्यादि की खचाखच मार होने लगी। दोनों तरफ के शूर वीर असार संसार को छोड़ कर स्वर्ग को जाने लगे, बड़े बड़े मतवाले हाथी सामन्तों की तेज़ तलवार से दो दो टूक हो हो कर नदी की कगारों से गिरते थे, इस युद्ध में बाजी खाँ जो कि भीमदेव का एक सरदार था पाँच हजार वीरों के सहित बड़ी ही वीरता के साथ काम आया।

अनन्द विक्रम सं० ११४४ अष्टमी को चंद्रोदय होने पर आधी रात के समय पुनः युद्ध प्रारंभ हुआ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर से कैमास का सेन समूह सज धज कर चला उधर से भीमदेव की प्रचण्ड सेना आई। इस युद्ध में कैमास की सेना का सेनापति चामुण्डराय था जिसने अपने बाहुबल का अद्वितीय पराक्रम प्रगट किया। इकतीस हज़ार भीमदेव की सेना और बीस हज़ार कैमास की सेना इस वीर का अद्वितीय पराक्रम देख कर चकित थी। बड़े बड़े शूरवीर इसकी वीरता की सराहना करते थे, मोहनसिंह परिहार, नाहर राय, निड्डुरराय, पज्जूनराय इत्यादि सामन्त भी शत्रु की सेना को कृषी की भांति काट रहे थे, पृथ्वीराज की तरफ़ से चामुण्डराय जैतसी, बड़ गुज्जर, रामराय, कन्ह चौहान, पज्जूनराय, प्रसंग राय षीची, चंदपुंडीर, महनसीग मारू, देवराज बग्गरी, सलष देवराज का भाई और पुत्र, निड्डर वीरसिंह आदि वीर अपनी अपनी सेना सहित कैमास के साथ में थे। भीमदेव की तरफ़ के सारंगदेव, नरसिंह, बरसिंह आदि सरदार भीमदेव की तरफ से भी ससैन्य प्रस्तुत थे। उस धूँधली रात में उक्त वीरों की तेज तलवारों की चमक बड़ी ही भली मालूम देती थी। जिस सवार पर उन का हाथ पड़ता था वह घोड़े सहित दो टूक हो जाता था। मतवाले हाथियों के कुंभ को सहज विदीर्ण करने वाली असिधारा से वह वीर अपने अपने शत्रुओं के दलसमूह को काई सा फाड़ रहे थे। दो शत्रुओं से दबाया हुआ भीमदेव यद्यपि बड़े ही सोच विचार में व्यस्त था पर तौभी अपनी सेना के उत्साह के लिये मतवाले हाथी पर सवार क्रोध से आंखें लाल लाल किए हुए युद्ध में प्रस्तुत था। राम राय बड़ गुज्जर की आँख उस पर पड़ गई। वह चालुक्य सेना को काटता हुआ वहां आ पहुँचा और भीमदेव के हाथी को उसने एक ऐसा हाथ मारा कि वह ढोल सा ढलक गया और भीमदेव भी पृथ्वी पर गिर कर लोटपोट होगया जिससे उसकी क्रोधाग्नि बड़े वेग से प्रज्वलित हो उठी और वह तुरंत दूसरे हाथी पर सवार हो कर जीवन की आशा छोड़ कर कैमास का प्राण लेना ठान कर उस पर झपटा। जहां राजा वहां फौज। भीमदेव की फौज भी राजा को कैमास की तरफ बढ़ता देख कर उसी ओर झुक पड़ी। चामुंड राय ने जब कैमास के सिर पर यह आपत्ति देखी तो वह भी अपना मोरचा छोड़ कर कैमास की सहायता के लिये आ पहुँचा। कैमास की मोड़ पर और सब सेना भी मुड़ पड़ी। उधर भीमदेव इधर चामुंड राय और कैमास दोनों अपने अपने स्वामिकार्य्य के लिये प्राण को तुच्छ जान कर हथियार चलाने लगे। क्षण मात्र में वह वीर रस करुणा रस मिश्रित देख पड़ने लगा। पाँच घड़ी पर्य्यन्त बड़ा ही घोर युद्ध होता रहा। अन्त में भीमदेव की सेना भाग गई। पृथ्वीराज की जै हुई। दोनों तरफ की १६००० फौज मारी गई, तेरह हजार भीमदेव की तरफ़ की, और तीन हजार कैमास की। पृथ्वीराज के तरफ़ के पंथमा राव परिहार मोहल मल्लीन महीराव सहदेव इत्यादि सर्दार काम आए। आबू पर पृथ्वीराज का राज्य स्थापित हुआ और जैतसी प्रमार वहां का सूबेदार नियत किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सलष युद्ध समय।

(तेरहवां समय)

उधर जब भीमदेव से कैमास का युद्ध आरंभ हो गया तब इधर पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन का भेद लेने के लिये दूत भेजा। वह चतुर दूत शीश पर जटा बनाए शरीर में विभूति रमा कर दंभ, कपट, पाखण्ड, और आडंबर से भरी हुई ज्ञान चरचाओं का उच्चार करता हुआ शहाबुद्दीन के लश्कर में गया और वहां का राई रत्ती सब भेद लेकर पुनः पृथ्वीराज के पास उसी भेष में आया। पृथ्वीराज के सम्मुख आ कर उसने आशीर्वाद और अपना परिचय दिया। तब पृथ्वीराज के पूछने पर उसने इस प्रकार कहना आरम्भ किया कि हे राजन् शहाबुद्दीन के साथ तीन लाख सेना है। जब उस ने सारुंडपुर के बाहर पड़ाव डाला तब मैं इधर को आया हूं। उसकी सेना का विवरण इस प्रकार है कि दस हजार विशालकाय गष्षर, बत्तीस हजार काबुली, सत्तर हजार काश्मीरी, तिरपन हजार हबशी जोकि तलवार के युद्ध में बड़े निपुण हैं, पैंतीस हजार रूमी, तेंतीस हजार फिरंगी अर्थात् गोरांग विलायती, सत्रह हजार पठान, दस हजार पंजाबी जाट, पन्द्रह हजार उसके पासबान के आदमी और पच्चीस हजार सब सागिर्द पेशा परिकर के आदमी हैं। इस प्रकार वर्णन की हुई सेना के तीन लाष मनुष्य सब ही बड़े पराक्रमशाली और बलवान हैं। उनकी विकट विकट मूँछ और भयावनी मुखाकृति देख कर सहज ही भय उत्पन्न होता है। इस प्रकार दूत के वचन सुन कर पृथ्वीराज क्रोध से इस प्रकार फड़क उठा जैसे पूँछ दवाया हुआ काला साँप फुँफकारने लग जाता है। पृथ्वीराज का रुख देख कर लोहाना आजानबाहु बोला कि यदि यह निर्लज्ज यवन अपने हठ से नहीं चूकता, बार बार व्यर्थ सिंह की पूँछ पकड़ने का साहस करता है तो अब की गज़नी समेत इसे न लौट दूँ तो मेरा नाम लोहाना आजानबाहु नहीं।

पृथ्वीराज की युद्ध के लिये तैय्यारी जान कर आबूराज सलष पँवार का पुत्र जैतसी भी सेना सहित पृथ्वीराज के दल बल में आ मिला। सेना तय्यार हो कर खड़ी हुई और जब राजा घोड़े पर सवार होने लगा तो गुरुराम प्रोहित ने राजा को तिलक किया और आशीर्वाद दिया कि शीघ्र जाइए और शत्रु अपने राज्य की सीमा न दबाने पावे वहीं परास्त किया जाय। इस प्रकार पृथ्वीराज केवल पन्द्रह हजार सिपाहियों की चुनी हुई सेना लेकर शहाबुद्दीन के तीन लाख दल बल का साम्हना करने के लिये सारुंडपुर की तरफ बढ़ा। पाँच सौ सिपाहियों सहित लोहाना सेना के आगे रहता और पाँच हजार सेना सहित पृथ्वीराज सेना के मध्य में रहता। इस प्रकार से कूच करके वे दिल्ली से तीन दिन में सारुंड पुर के पास जा पहुंचे। यह खबर जब शहाबुद्दीन को लगी तो उसने भी खुरासान खां रुस्तम खां फीरोज खां इत्यादि अपने मुख्य मुख्य सेनापतियों को बुला कर युद्ध के लिये तय्यारी करने की आज्ञा दी और युद्ध के लिये प्रस्तुत फौज के बीच में खड़े हो कर उसने कहना आरम्भ किया कि हे भाइयो वार वार की हार की अबकी वार कसर निकाल लेनी चाहिए। अब की वार तुम्हारी वीरता यही है कि बाजी जाने न पावे। उधर रात व्यतीत होतेही चहुआन भी बढ़ आए। पूरब से चहुआन और पश्चिम से शहाबुद्दीन की सेना की मुठभेड़ हुई। शहाबुद्दीन की तरफ से खुरासानी सेना हरावल में थी। वे लोग पृथ्वीराज की थोड़ी सी सेना देख कर बड़े वेग से झपटे परन्तु लोहाना ने उन्हें सहज ही मार भगाया। सलष पँवार का पुत्र जैतसी चौहान के फौजी निशान की रक्षा पर दृढ़ था। रामराय बड़गुज्जर ततार खां के मुकाबिले पर था। बीर पृथ्वी राज की थोड़ी सी सेना असंख्य यवन दल में धसकर उसी में खिल्लत मिल्लत हो गई और उसने ऐसे विकट पराक्रम से युद्ध किया कि अखंड धूल आच्छादित हो जाने के कारण आकाश नहीं सूझ पड़ता था। जब इस प्रकार विकट मार हो रही थी तो बीर कन्ह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौहान भी कैमास का साथ छोड़ कर ससैन्य सारुंडपुर में आ पहुँचा और उसने युद्ध होता देखकर चढ़ी सवारी धावा कर दिया। अद्वितीय वीर कन्ह चौहान उस अगम्य यवन सेना में इस प्रकार धस पड़ा जैसे सुंदर सुंदर पुरैन से आच्छादित स्वच्छ जलवाले गहरे सरोवर में मतवाला हाथी पैठ पड़े। वह यवन सेना के बड़े बड़े मुख्य सरदार और सूरबीरों को कमल नाल की नाईं तोड़ तोड़ कर डालने लगा। दोनों ओर के सेनापति सरदार स्वामिधर्म्म धारण किए हुए बड़ी वीरता से युद्ध कर रहे थे। आकाश में देवांगनाएँ उन बीरों का पराक्रम देखती थीं। इसी समय पृथ्वीराज के प्रोहित गुरुराम ने यवन सेना पर एक पत्र लिखकर बाण द्वारा चलाया जिसके बल से समस्त यवन सेना मोहित सी होकर युद्ध करने में शिथिलता करने लगी। यह देख कर इश्वर से मीर हाजी खां काज़ी ने भी अपना मंत्र चलाया जिससे यवन सेना की मोहनिद्रा भंग हो गई और दोनों दल पुनः प्रचार प्रचार कर लड़ने लगे। पृथ्वीराज की सेना बराबर यवन दल को छिन्न भिन्न करती हुई शहाबुद्दीन के संनिकट पहुँचने लगी। यह देख कर शहाबुद्दीन ने घोड़े को छोड़ कर हाथी की सवारी की। तब शहाबुद्दीन का एक पासबान मुसाहिब मारुफ़ खां बोला कि अब क्या किया जाय। जिस पर सेनापति ख़ुरासान खां का सब दारमदार था उस काजी ने भी पराक्रमहीन हो कर तसबी हाथ से छोड़ दी है। यह सुन कर ख़ुरासान खां अन्यान्य सरदारों सहित बादशाह के निकट आगया और चारो ओर से घेर कर उस की रक्षा करने लगा। भगवान चन्द्र देव के समान वीर पृथ्वीराज सेना के मध्य में स्थित नक्षत्रों के समान तेजोमय अपनी वीर सेना सहित बराबर आगे बढ़ता ही जाता था। इस समय पँवार राज सलष का पुत्र जैतसी हरावल में था। पन्द्रह बीस हजार सेना का तीन लाख सेना से मुकाबला करना भी तो सहज नहीं है। इसी से जैतराव के ऊपर बड़ी भीर पड़ रही थी परन्तु वीर जैतराव इसकी तनिक भी परवाह न करके अपने धर्मकार्य में तन मन से प्रवृत्त था। जब जैतराव एक बड़े टेढ़े मौके पर फँस गया तब पृथ्वीराज ने स्वयं उस की सहायता की जिस के लिये जैतसिंह बहुत कृतज्ञ हुआ और इस से उस का साहस ऐसा बढ़ा कि उसने अपने अद्वितीय पराक्रम से यवन सेना का मुँह मोड़ दिया। घड़ी भर में बड़े बड़े मीरजादे पीरजादे प्राणों के भय से भाग निकले। शहाबुद्दीन ने हाथी छोड़ कर घोड़े पर सवार हो कर प्राण झोंकते हुए अपनी सेना को धैर्य्य दिलाना चाहा किन्तु यह सब चेष्टा निष्फल हुई। समस्त यवन सेना भाग निकली। पृथ्वीराज ने लूट करते हुए उसका पीछा किया और सलष पुत्र जैतराव ने बादशाह को बंदी कर लिया। इस युद्ध में शहाबुद्दीन के एक लाख सैनिक और तेरह नामी नामी सरदार खेत रहे। अंत में संवत ११३६ माघ सुदि ६ को शहाबुद्दीन पकड़ कर बंदी बनाया गया। सारुंडपुर में पृथ्वीराज का दखल हुआ।

शिशिर ऋतु के अन्त में संवत ११३६ अनन्द चैत्र सुदि ६ को इच्छनी कुमारी से पृथ्वीराज ने ब्याह किया और शहाबुद्दीन से दंड लेकर तब उसे पुनः मुक्त कर दिया। इस प्रकार कविचंद ने सारुंडपुर के युद्ध की कथा अपनी स्त्री से वर्णन की॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इच्छनी व्याह कथा।

(चौदहवाँ समय)

कविचंद की स्त्री ने कहा कि हे पति यह रमणीक कथा सुन कर मुझे बड़ा आनन्द हुआ। रात दिन मुझे वही ध्यान रहता है। अच्छा अब जो मैं पूछती हूं वह बतलाइए। यह सुन कर कविचंद ने अपनी प्रिया का सिर अपनी गोद में रख कर कहा कि अच्छा पूछो मैं कहताहूं। तब शुकी बोली कि हे प्यारे आपने चालुक्य भीमदेव के परास्त होने और शहाबुद्दीन के बंदी किए जाने की कथा तो कही अब इच्छनी व्याह की कथा वर्णन करके मुझे कृतार्थ कीजिए।

यह बात सुन कर कविचंद बोला कि जब उचित दण्ड देने पर शहाबुद्दीन छोड़ दिया गया तो उस दण्ड में प्राप्त सब मणिमुद्रा सलष को दिया गया और आबू का राज्य भी सलष को दिया गया और बहुत कुछ भूमि और भी दी गई। तब ग्रीष्म ऋतु के अन्त में, आबूराज सलष ने अपने भानु नामक प्रोहित के हाथ जड़ाऊ नारियल अक्षतादि सहित इच्छनी कुमारी की लग्नपत्रिका पृथ्वीराज के यहां भेजी। जिस दिन श्रीलक्ष्मीजी कुबेर के स्थान गई उसी दिन लग्न हाथ पर रक्खा गया। लग्न का उत्सव हो जाने पर पृथ्वीराज ने आबू से आए हुए मनुष्यों से पूछा कि इच्छनी की अवस्था क्या है, उसके सब रूप गुणों का वर्णन करो। यह सुन कर वे लोग बोले कि हे राजन् इच्छनी कुमारी इस समय बालकपन को त्याग करती और यौवन को प्राप्त होती हुई वयःसंधि नायिका है। उसकी सुकुमार अवस्था इस समय मकर की संक्रान्ति से उपमा देने योग्य है। उसकी बालपन रूपी निशा का दिन प्रति ह्रास होता जाता है और दिवस रूपी यौवन चढ़ता हुआ उसके लावण्य में विलक्षण योग दे रहा है। हे राजन्! उसके अनंग स्थलों पर श्यामता चढ़ रही है, किशोरता के साथ साथ कटि क्षीण होती हुई एक अद्वितीय शोभा का भण्डार होरही है। हे राजन्! हम लोग क्या कहें उसकी उपमा न तो हम विवाहिता दमयन्ती से दे सकते हैं, न हम उसकी उपमा शची से दे सकते हैं जिसका पति देवपति इन्द्र है, न हम उसे लक्ष्मी कह सकते हैं जोकि विषैले शेष नाग पर विराजमान है, न हम उसको रति कहने में समर्थ हैं जो कि सदैव अपने पति के अतनु होने के दुःख से दुखित होने के कारण क्षण भर कल नहीं पाती, न हम दुष्ट रावण की स्त्री मंदोदरी से ही उसकी उपमा दे सकते हैं। हे पृथ्वीराज! इच्छनी कुमारी की इस समय वह अवस्था है जिस की चाह में सुवर कवि हमेशा रहते हैं और उन्हें वह समय बड़ी कठिनता से प्राप्त हो सकता है।

पृथ्वीराज ने लग्न लेकर आए हुए मनुष्यों को विदा करके बारात की तैयारी की। कुछ थोड़ी सी सेना और कन्ह निड्डुर, बली गहलौत, भौहा चंदेल, वीरसिंह परिहार, दाहिम कैमास, चामुंडराय, आजानबाहु लोहाना और गुरू रामप्रोहित को साथ लेकर असाढ़ वदि ३ को बारात चली। प्रकृति के प्रभाव से बादलों ने उमड़ कर सूर्य को आच्छादित कर लिया और मंद मंद सुगंधित वायु बहने लगी जिससे बारात कुशलतापूर्वक आनन्दध्वनि करती हुई प्रसन्नतापूर्वक आबू के निकट जा पहुंची। बारात के आगमन की खबर जब जैतराव को लगी तो वह भी अपनी चतुरंगिनी सेना सज कर उचित आडंबर के साथ अगवानी करने के लिये आगे बढ़ा और नगर के बाहर ही बरात से जा मिला। दोनों सेनाओं का परस्पर मिलाप होते हुए ऐसा ज्ञात होता था मानों श्रावण भादों के गरजते हुए गंभीर बादल समुद्र से मिल रहे हों। इस प्रकार मिलाप होकर वह आनन्द उनमत्त दोनों दल आबू नगर में पैठा जहां द्वार द्वार पर बंदनवार, तोरण, कलश, पताकों की छवि अद्वितीय छटा दिखा रही थी। आबू नगर के समस्त हाट बाट चौहटों पर साफ सुथरे सुगंधित जल का छिड़काव था। ऊपर अट्टालिकाओं पर सोलहों शृंगार और बारहों आभूषणों से सुसजित मंगलामुखी महिलाएँ मधुर मधुर गीत गान करती हुई पृथ्वीराज

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की छवि देख रही हो थीं और इधर पृथ्वीराज के वीर सामन्त उनके गान की तान में मस्त होकर अपने लालची लोचनों को छविसुधारस पान कराते चले जाते थे। इस प्रकार मत्त मतंग की मंद मंद चाल से जब बारात राजद्वार पर पहुंची तो वहां के तोरण बंदनवार पताकाओं तथा अन्य मांगलीक वस्तुओं का विस्तार कहना तो व्यर्थही है। द्वार पर सहस्रों सुहागिन स्त्रियाँ स्वर्णकलश लिये खड़ी मंगलगान कर रही थीं। दुलहा के द्वार पर पहुंचते ही सबने मोतियों के प्रेमाच्छत छोड़ना आरंभ किया। ब्राह्मणों ने वेदध्वनि आरंभ की, और गान वाद्य होते हुए पृथ्वीराज का टीका होने लगा। पृथ्वीराज की छवि देख कर इच्छनी कुमारी की माता के आनन्द का तो पार ही न था। टीका होजाने पर बारात सादर जनवासे में पहुंचाई गई।

उस दिन रात भर विश्राम करने पश्चात् दूसरे दिवस प्रातःकाल जैतराव स्वयं जनवासे को गया और विनयपूर्व्वक पृथ्वीराज सहित सब बारात को भोजन के लिये लिवा लाया। सुखपूर्व्वक भोजन हो जाने पश्चात् इधर तो सखियाँ उबटन स्नान करवा कर नाना प्रकार के वस्त्र आभूषणों से इच्छनी कुमारी का शृङ्गार करने लगीं, उधर दूलह का शृङ्गार होने लगा। लग्न आजाने पर दूलह ने मंडप में प्रवेश किया और स्त्रियों ने मंगलगान आरम्भ किया। विवाह की समस्त सामग्री तो पहिले ही से प्रस्तुत करके चौक पूर वेदिकादि रची हुई थी। लग्न का वेध होतेही पंडितों ने दूलह दुलहिन की गांठ जोड़ कर उन्हें पेट पर बैठाकर गणेशपूजन किया। इसके अनन्तर नवग्रह कुलदेवता अग्नि ब्राह्मण आदि का पूजन कर शाखोच्चार किया गया। उस उपस्थित ब्राह्मण मंडली ने वेदमंत्र उच्चारण करते हुए दूलह दुलहिन को आशीर्वाद दिया। अन्त में सलष राज निज रानी सहित गाँठ जोड़े हुए मंडप में आए और वेद विधान युत इच्छनी का कन्यादान करके पृथ्वीराज से बिनीत भाव से बोले कि हे भद्र सोमेससुत! मैं यह कन्या आपकी सेवा में समर्पण करता हूं सो इसे अपनाइए।

यह सुन कर कन्ह चौहान आनन्द से बोल उठे कि हे सलषराज यह आनन्दमय दंपति सदैव दिल्ली गढ़ में इस प्रकार शोभित रहेंगें जैसे शिव पार्वती सहित कैलाश की शोभा बढ़ाते हैं।

इस प्रकार लग्न साध कर पृथ्वीराज जनवासे में आए। पीछे से ज्योनार का बुलावा आया। जिस के साथही सब बारात ज्यौनार को गई। नाना प्रकार के खट्टे, मीठे, मधुर, तीखे, सलौने इत्यादि षट रस व्यंजन परोसे गए। सबने आनन्दपूर्व्वक भोजन करना आरम्भ किया। उधर स्त्रियों ने गाली गाना आरम्भ किया जिसे सुन कर वीर बारातियों का चित्त द्विगुणित प्रसन्न हो रहा था। इस प्रकार ज्यौनार हो जाने पर दूसरे दिवस पलकाचार हो जाने पर कुमारकलेऊ होकर पृथ्वीराज दुलहिन सहित जनवासे में आए और अगनित द्रव्य कवि, चारण, ब्राह्मण और भिक्षुकों को लुटाया गया। उधर से सलष राज का भेजा हुआ दहेज भी आया जिसमें एक हजार रथ जिसमें मोतियों की झालरें लग रही थीं उनपर एक एक नायिका अपनी दो दो दासियों सहित सवार थी। साथ में सौ हाथी थे जोकि लक्षों का आभूषण पहने थे। घोड़े ऊँट आभूषण इत्यादि का वर्णन ही क्या करना है। इस प्रकार दहेज देकर भी सलष राज ने संतुष्ट न होकर लज्जा प्रगट की। बारात के चले जाने पर बचा हुआ अन्न पांच दिन पर्य्यन्त आबू की समस्त प्रजा में बाँटा गया।

जिस समय बारात बिदा होने लगी उस समय सलषराज ने एक हाथी सौ घोड़े ऊनी सूती, पश्मी, रेशमी, और जरकसी पांच सिरोपाव दूलह की भेंट किए। साथही इसके इच्छनी कुमारी के जमदार में अकूत बहुमूल्य वस्त्र भर कर दिए गए, गंगाजमनी दस कलश, एक गंगाम, दस सोने के थाल, बीस रत्न जड़ित लोटे और बटलोही इत्यादि दिए गए, एक बीस मन का बड़ा कोपर और १०० मन का हंडा, रेशम की डोरियों से बिने हुए अगनित पलंग पीनसें भी दी गई, दास, दासी इत्यादि कुमारी की पीनस के इर्दगिर्द चलते थे। इन सब डोलियों के आगे सलष राज के भेजे हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यान्य परिकर के लोग चलते थे। पृथ्वीराज के वीर सामंतों को भी सलष राज ने सादर सिरोपाव पहनाए, तथा एक एक अंगूठी और एक एक घोड़ा भेंट दिया। इसके सिवाय बारात के अन्यान्य राज्यकर्म्मचारियों और महाजनों और परिकर के लोगों को यथायोग्य भेंट देकर सानन्द सलषराज ने विदा किया और आप स्वयं बारात को पांच कोस तक पहुँचाने आए। लौटते समय सलषराज ने पृथ्वीराज से विनीतभाव से निवेदन किया कि हे वीरपति चौहान मुझ से जो अपराध हुआ हो क्षमा करना, मेरे पास आपको देने योग्य कुछ भी नहीं है इससे मैं आप की सेवा में आजन्म के लिये अपना सिर समर्पण करता हूं। इस प्रकार निर्विघ्नता से इच्छनी कुमारी को व्याह कर सानन्द सकल बारात अजमेर जा पहुंची। बारात के दूलह दुलाहिन सहित सकुशल अजमेर आजाने पर समस्त नगर निवासी आनन्द से उमड़े न समाते थे। बालक, वृद्ध, युवा, स्त्री, पुरुष सब ही आनन्द में मग्न थे।

इस प्रकार कथा सुन कर कविचंद की स्त्री बोली कि हे पति अब कुछ इच्छनी कुमारी के सौन्दर्य्य का वर्णन कीजिए। यह सुन कर कविचंद बोला कि हे प्रिया उस अद्वितीय सुन्दरी इच्छनी कुमारी के सौन्दर्य्य को मैं वर्णन करूं ऐसी सामर्थ्य मेरी जिह्वा में नहीं है, किन्तु सुन प्रिये तेरे चित्तविनोदार्थ कुछ कहता हूं। इस प्रकार प्रेम भरे बचन कह कर कविचंद ने इच्छनी कुमारी का नष सिष, मनोहर शब्दों में वर्णन करना आरम्भ किया और कविचंद की स्त्री को सुनते सुनते प्रातःकाल हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औगोलिक … जो … किसी नहीं पढ़ सकती।

मुगल युद्ध कथा।

[पन्द्रहवां समय।]

वीर पृथ्वीराज चहुआन ने धूमधाम से इच्छनी कुमारी को व्याह कर जब आबूगढ़ से अजमेर की ओर कूंच किया तो यह समाचार पाकर मेवात के मुगल सरदार को चौहान वंश से निज वंश का पूर्व्व वैर स्मरण हुआ और अपने पूर्वजों का बदला लेने का यही एक अच्छा अवसर जान कर छिपके उसने पृथ्वीराज को मार कर सब साज सामान लूटना चाहा इसलिये मुद्गलराय ससैन्य सन्नद्ध होकर जमुना के किनारे किसी औघट घाट पर पृथ्वीराज की बाट रोक कर डट रहा।

पृथ्वीराज की बरात का पड़ाव जमुना के किनारे बनप्रान्त में पड़ा हुआ था और आधी रात के समय सब लोग पंथ की थकावट से थकित हो कर निद्रा में निमग्न हो रहे थे, केवल कैमास जागते थे। पासही एक वृक्ष पर घुघ्घू की बोली सुन कर वे विचारमुग्ध होकर चारों ओर देखने लगे। तो पाते क्या हैं कि निड्डुरादि सब सामन्त पड़े सो रहे हैं, उस बड़े दल बल में कोई भी सचेत नहीं है, और बाईं ओर साक्षात् भगवती की मूर्ति कुछ कह रही है जिसको कि वे समझ न सके इसलिये उन्होंने प्रोहित गुरूराम को सचेत करके उक्त वृत्तान्त आद्योपान्त कह सुनाया और पूछा कि इसका तात्पर्य्य अब आप बतलाइए। तब गुरूराम ने उत्तर दिया कि इस विषय में कविचंद से पूछिए वे इस का यथार्थ उत्तर देंगे। तब कैमास ने कविचंद को सब हाल कह सुनाया जिसे सुन कर कविचंद ने इस प्रकार कहना आरंभ किया कि राजा पृथ्वीराज के पूर्वजों में आना नाम से एक राजा हो गया है जिस के दस पुत्र थे और परस्पर सदैव विरोधी रहते थे। इससे वे इकट्ठे न रह सके और सब तीन तेरह हो गए, केवल बीसल देव जी के पिता यहां अजमेर की गद्दी पर रहे और वे लोग आपस में मिलकर इस राज्य के शत्रु हो गए। जिस समय अजमेर में बीसलदेव जी राज्य करते थे उस समय उस विरुद्ध दल का स्वामी जैसिंह नाम से एक क्षत्री था। इस ने जब बीसलदेवजी के राज्य में उत्पात मचाया तो उन्हों ने इसे मार कर भगा दिया और वह जाकर पर्व्वत में रहने लगा। निदान तब से सोमेश्वरजी के समय तक वे खटपट करते ही रहे। अन्त में सोमेश्वर जी ने उन्हे हार पर हार देकर ऐसा खदेड़ा कि वे जाकर रोमियों की शरण में रहने लगे और वह भूमि आबू के प्रमार राजाओं के हाथ लगी जिस वंश में कि अब तक आबू का राज्य स्थित है। अब जब सोमेश्वरजी के पुत्र चहुआन-कुल-कमल राजा पृथ्वीराज राजसिंहासन पर विराजमान हुए तब उन दुष्ट मुगलों की होनहार ने उन्हें फिर से उत्तेजित किया है किन्तु यह अवश्य है कि उनका तारागण के समान तेज पृथ्वीराज के प्रताप के सम्मुख मलीन होगा। यह कथा सुन कर प्रसन्न हो सब लोग जहां के तहां निद्रानिमग्न हुए।

प्रातःकाल होते ही पृथ्वीराज ने नींद से उठ कर नित्यक्रिया संध्यावंदनादि से निश्चित होकर वस्त्र पहिन शस्त्र लगा घोड़े पर सवार हो कर शिकार खेलने की तय्यारी की। साथ में सात पांच सैनिक और सामंत भी हो लिए। जिस समय पृथ्वीराज निर्जन बन प्रान्त में पहुँचे तो मुगलराज ने रास्ता रोक रक्खा, यह देख कर वीर पृथ्वीराज लवलेश मात्र भी भय न करके शत्रुओं के बीच में धस पड़े और बनैले हिंसक पशुओं का शिकार करने के स्थान में उन पुरातन धर्म्मशत्रु नरपशुओं का शिकार करने में प्रवृत्त हुए। पृथ्वीराज के सामंत सिपाही भी जहां तहां लोहा झाड़ने लगे। इस प्रकार मार होते होते क्षणमात्र में ही पृथ्वीराज रूपी बड़वानल ने उस यवन दल समुद्र को नाश कर दिया। वीर राजपूतों की मार को मुगल के साथी सह न सके। इसलिये जिसे जहां राह मिली सब तीन तेरह होकर भाग निकले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चहुआन के सामंतों ने मुगलराज को बंदी कर लिया। इस प्रकार मुगलराज को बंदी कर नवल नव बधूटी इच्छनी कुमारी सहित पृथ्वीराज आनन्द से अजमेर में आ पहुंचे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुंडीरदाहिमी विवाह कथा।

[सोलहवां समय।]

इच्छनी कुमारी का विवाह हुए एक वर्ष व्यतीत हो गया पृथ्वीराज का वह बर्ष नवीन मुग्धा नायिका इच्छनी कुमारी के साथ बड़े ही आनन्द प्रमोद में व्यतीत हुआ, किन्तु राजाओं का चित्त स्थिर नहीं रहता। पृथ्वीराज अपने पराक्रम से शत्रुओं को पराजित कर ज्यों ज्यों नित प्रति नव कीर्ति प्राप्त करता जाता था त्यों त्यों उसे नित नवयोवनाओं के संग कामक्रीड़ा की इच्छा होती थी। निदान जब पृथ्वीराज ने चन्दपुंडीर की कन्या के रूप गुण और यौवन की प्रशंसा सुनी तो उसका लालची चित्त उस कमलकली का मकरन्द रूप पान करने की लालसा में उनमत्त सा हो उठा और उसने अपनी यह इच्छा चंदपुंडीर पर प्रगट की जिसे सुन कर चंदपुंडीर ने भी प्रसन्नतापूर्वक अपनी सुकुमार कुमारी को पृथ्वीराज के साथ ब्याह देना स्वीकार कर लिया और यथासंभव शीघ्र ही उत्तम लग्न ठहरा कर पृथ्वीराज को लग्न चढ़ा सुख सारे से अपनी कन्या का विवाह उसके साथ कर दिया।

विषयासक्त पुरुष की जितनी इच्छा पूर्ण होती जाती है उतनी ही उसकी विषयबासना और बढ़ती है। नवीन फल, फूल तथा स्त्री को देख कर चित्त में चोभ उतपन्न होना तो स्वाभाविक ही है। इधर तो पृथ्वीराज चंदपुंडीर की नवयोवना कन्या के साथ केलक्रीड़ा कर ही रहा था उधर दाहिमी कैमास की बहिन के रूप यौवन की प्रशंसा सुन कर उस से भी ब्याह करने की उसने इच्छा प्रगट की। कैमास के पिता ने भी यह प्रस्ताव स्वीकार कर लिया और प्रसन्नतापूर्वक अपनी दोनों कन्याएं पृथ्वीराज को ब्याह दी और बरात बिंदा होने के समय आठ सखी तिरसठ दासी और बहुत से हाथी घोड़े वस्त्र आभूषणादि दहेज में दिए। पृथ्वीराज इस प्रकार चंदपुंडीर की पुत्री पुंडीरदाहिमी के साथ विवाह कर के इस केलक्रीड़ा में उनमत्त मतंग की भांति प्रवृत्त हुआ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिस्वप्न प्रस्ताव।

(सत्रहवां समय।)

कुँअरपन में पृथ्वीराज को आखेट से बड़ी प्रीति थी। एक समय पृथ्वीराज अजमेर के पश्चिम प्रान्त के रमने में शिकार खेलने गए। इनके साथ में लोहाना, लंगरीराय इत्यादि सब सामन्त और अनगिनत हाथी घोड़े और पदाति सैनकों की भीड़ थी। इस दल बल के विषम कोलाहल से सारा बन गूंज उठा। मेघस्पर्शी पहाड़ों और उनकी कंदराओं में उस कोलाहल की ध्वनि प्रतिध्वनित हो कर भयानक रूप से गूंज उठी, जिसे सुन कर तद्वनवासी जीव भयभीत हो कर आतुरता और भय से भौचक से भटकने लगे। एक गिरिगुहा में सोता हुआ सिंह उक्त कोलाहल से उकता कर उठ बैठा और अत्यन्त क्रोद्धित हो कर पृथ्वीराज के इस सेनसमूह की ओर बढ़ा। सिंह की विकराल आकृति को देख कर घोड़े आदि पशु भभक उठे और बनरखों ने यह खबर पृथ्वीराज को दी जिसके सुनते ही वीर पृथ्वीराज धनुष पर बाण संधान कर आगे बढ़ा और सिंह सिंहनी दोनों में से सिंह को ही लक्ष कर के उसने बाण छोड़ा किन्तु निशाना खाली गया। तब पृथ्वीराज तलवार लेकर झपटा और उधर से अत्यन्त कुपित होकर साक्षात् कराल काल स्वरूप सा वह सिंह भी पृथ्वीराज पर झपटा किन्तु पृथ्वीराज ने एक ही हाथ में उसे मार गिराया जिसे देखते ही सब सेना में आनन्दध्वनि हो उठी।

सब सेना में जहां तहां पृथ्वीराज की बीरता का बखान होने लगा और पृथ्वीराज अपने सब सामंतों सहित एक वृक्ष की छाया में बैठ कर श्रम दूर करने लगा। शिकार में मारे हुए जानवरों का ढेर भी एक तरफ लगा दिया गया। तब संजमराय का पुत्र पृथ्वीराज को अपने बलवीर्य्य की परीक्षा देने की इच्छा से उठा और एक एक हाथ में भारी भारी गज कुंभ को फाड़ने लगा और एक बाण संधान करके जो उस हन्त पशुओं के ढेर में उसने मारा तो वह बांण बड़े बड़े बराह चीते साबर हिरण हाथी आदि के शरीरों को पार कर बारापार हो गया जिसे देख कर पृथ्वीराज ने बड़ा आदर और अत्यन्त प्रसन्नता प्रगट करते हुए उस नव युवा कुमार को बहुत से प्रशंशित शब्दों से संबोधन कर के कहा कि मैं तुझ पर बड़ा प्रसन्न हूं अभी कहना व्यर्थ है मैं तुझे ऐसा पारितोषिक दूंगा कि तूं भी प्रसन्न हो जायगा। इस के पश्चात सब लोग आगे बढ़े तो देखते क्या हैं कि एक सर्प अपनी बामी के द्वार पर एक हाथ ऊंचा फन उठाए खड़ा है और एक देवी * उसके फन पर नृत्य कर रही है। यह देख कर सब ने यह बात राजा से कही जिसे सुन कर पृथ्वीराज ने अत्यन्त आश्चर्यान्वित हो कर अपने दरबार के प्रसिद्ध ज्योतिषी महिर नामक पंडित से इसका फल पूछा, जिस पर महिर ने उत्तर दिया कि इस का परिणाम तो मेरे बिचार में यह आता है कि आप को अनायास कुछ बड़ा धन और भूमि मिलनी चाहिए और आप के शत्रुओं का क्षय हो। इतने में सवारी और आगे बढ़ी तो पृथ्वीराज ने स्वयं उक्त दृश्य अपनी आंखों देखा कि उस सर्प के फन पर नाचती हुई देवी राजा को देख कर प्रसन्नता प्रगट करती थी और उस सर्प के फन पर से उड़ कर वह पास वाले एक रसाल वृक्ष पर जा बैठी और चोंच से कतर कर उसने एक फल नीचे डाला। यह देख कर ज्योतिषी महिर आगे बढ़ा और उसने वह फल ला कर राजा को दिया और कहा कि यह शुभ शकुन का प्रसाद लीजिए। इतने में उस सर्प की सर्पिनी ने आकर सर्प को कुछ खाद्य पदार्थ अर्पण किया जिसे सर्प ने प्रसन्नतापूर्व्वक खा लिया और तब वह सर्प सर्पिनी दोनों चल दिए। यह देख कर पृथ्वीराज ने फिर महिर से पूछा कि इसका भी फल कहिए तब उसने उत्तर दिया कि इस शकुन का फल यह सिद्ध होता है कि कोई भूम्याधिकारी तुम्हें अपना भूभाग स्वयं समर्पण करके आप तुम्हारी सेवा करे। यह सुन कर

* प्रसंग से मालूम होता है कि देवी लाल की नाई छोटी खूबसूरत चिड़िया को कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज बड़ा प्रसन्न हुआ। कुछ दूर और आगे बढ़ कर सुन्दर जल और छाया से आच्छादित स्थान देख कर पड़ाव डाल दिया गया। उस दिवस मध्यान्ह में उस स्थान पर भोजन पान हुआ और बेला ढलने पर वहां से अजमेर की तरफ सबने कूच किया।

उसी दिन सायंकाल को पृथ्वीराज सेना सहित सानन्द अजमेर पहुँच गया। रात्रि को जब कि पृथ्वीराज अपने राजमहल में सुखशैय्या पर सुसुप्ति अवस्था में बेसुध पड़ा हुआ था तो देखता क्या है कि पीत वस्त्र धारण किए माथे पर लाल तिलक दिए केश बिखराए हुए एक अद्वितीय सुन्दरी स्त्री उस के पास आई। पृथ्वीराज ने उस से पूछा कि तू कौन है? तब वह स्त्री बोली कि हे वीर पृथ्वीराज मैं वीरभोग्या भू देवी हूं। मेरे हृदय में सदैव वीर पुरुष की ही इच्छा रहती है। मैं अपने सूक्ष्म हाव भाव और कटाक्ष से वीर पुरुषों का ही चित्त क्षोभित करती हूं। इस के विरुद्ध कायर पुरुष की ओर मेरी देखने की भी इच्छा नहीं होती और मैं वीर पुरुषों के लिये अनेकानेक कष्ट सह कर भी नाना भांति के उतमोत्तम गुणमय पदार्थ उत्पन्न करती हूं। उस भूदेवी की लावरायता का मधुर पराग पान करके पृथ्वीराज का मन मकरन्द एक तो प्रथम ही से उन्मत्त सा हो रहा था तिस पर उस के ऐसे बचन सुन कर तो उसके आनन्द का ठिकाना न रहा उस का मन एक बिचित्र भाव से क्षोभित हो उठा। भूदेवी ने पुनः कहना आरंभ किया कि हे पृथ्वीराज खट्टू बन में अगनित धन धरा हुआ है सो वह तुझे प्राप्त होगा और उसने कहा कि अजमेर में अजय पाल नामक एक प्रतापी पुरायवान राजा राज्य करता था। एक समय प्रातः काल जब कि वह पूजन कर रहा था एक ब्राह्मण ने आकर उससे एक सहस्र मुद्रा दान चाहा। होतव्य बश राजा ने देने से इन्कार कर दिया तब उस दरिद्र ब्राह्मण ने कुपित हो कर शाप दिया कि यदि इस द्रव्य पर इतना स्नेह है तो जा तू जन्मान्तर में भी सर्प होकर इस की रक्षा करता रहे। हे राजा तू नहीं जानता कि धन का संचय करके सत्कार्य्य में व्यय न करना बड़ी भारी मूर्खता है। संचित की हुई माया, मध्य दिन की छाया और विषय का सुख सब क्षणिक होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्लीदान प्रस्ताव।

[अट्ठारहवां समय।]

एक समय पृथ्वीराज सभा में विराजमान थे कि दिल्ली से एक दूत आया और उसने एक पत्र कैमास को दिया। कैमास ने वह पत्र पढ़ा तो उसमें अनंगपाल की तरफ़ से लिखा था कि मैं अब वृद्ध हुआ इसलिये तप करने की इच्छा से बदरिकाश्रम को जाना चाहता हूं और अपना यह दिल्ली का राज्य तथा सम्पूर्ण वैभव आपको संकल्प करने की मेरी इच्छा है। पत्र सुन कर सब लोग विचार करने लगे। कोई कहता है कि इसी समय दिल्ली चलाना चाहिए, कोई कहता है कि पृथाकुमारी का विवाह हो जाने पश्चात जाना अच्छा होगा। निदान कैमास ने वह पत्र सोमेश्वर के सम्मुख उपस्थित किया। तब सोमेश्वर जी ने सब सामन्तों और विचारवान राज्य कर्म्मचारियों को एकत्र करके एक सभा की जिसमें चंदपुंडीर के मत के अनुसार यही निश्चय हुआ कि आता हुआ राज्य छोड़ना भला नहीं। यह निश्चय हो जाने पर सब ने कविचंद से पूछा कि हे बरदाई, अब यह बतलाना आप का काम है कि अनंगपाल अपनी परंपरा संपत्ति पृथ्वीराज को क्यों समर्पण करते हैं? यह सुन कर कविचंद ने देवी का ध्यान किया और अनंगपाल और व्यास का संवाद जो कि दिल्ली किल्ली की कथा में वर्णन किया जा चुका है यथावत कह सुनाया और कहा कि दिल्ली में पृथ्वीराज का राज्य खूब तपेगा। यह सुन कर पृथ्वीराज ने दिल्ली जाना निश्चय कर लिया और दूसरे दिन अपनी अंतरंग सभा में उक्त आगत दूत को बुलाकर पूछा कि हे चतुर दूत! यह तो बतलाओ कि मेरे नाना अनंगपाल जी को सहसा वैराग्य उत्पन्न होने का कारण क्या है? पृथ्वीराज के ऐसे वचन सुन कर वह दूत अनंगपाल के स्वाभाविक गुणों तथा उसकी नीति निपुणता की प्रशंसा करता हुआ बोला कि अभी किञ्चित ही समय व्यतीत हुआ है कि राजा अनंगपाल जी ने सुसुप्ति अवस्था में एक स्वप्न में देखा कि सम्पूर्ण तोंअर वंश दक्षिण की ओर जा रहा है। ऐसा स्वप्न देख कर राजा की निद्रा भंग होगई उसने शयन से उठते ही ईश्वरस्मरण करके मुख प्रक्षालन किया और अपने इष्टदेव नरसिंह जी का स्मरण करते हुए पुनः वह निद्रा में निमग्न हो गया। प्रातःकाल के समय पुनः वह स्वप्न में क्या देखता है कि जमुना जी के किनारे पर एक सिंह बैठा हुआ है और एक दूसरा सिंह उस ओर से पैर करके गया और उक्त सिंह के सम्मुख बैठ गया। दोनों सिंह परस्पर प्रेम प्रकाश करते हुए प्रेमालाप करने लगे कि इतने में अनंगपाल जी की नींद खुल गई। इस पर राजा ने अत्यन्त आश्चर्य्यान्वित हो जगजोति नामक प्रसिद्ध राज्यज्योतिषी को बुला कर उक्त स्वप्न का ठीक ठीक फल कथन करने की आज्ञा की। अस्तु ज्योतिषी ने धीरभाव से अपनी विद्या द्वारा विचार कर कहा कि हे राजन्! जमुना की कगार पर बैठे हुए सिंह तो आप हैं और उस पार से आया हुआ सिंह आप का दौहित्र पृथ्वीराज है। अब यहां चौहान वंश का राज्य स्थापित होना संभव है। अतएव आपको भी उचित है कि आप यह राज्यभार पृथ्वीराज के सिर सौंप कर बदरिकाश्रम में जा भगवद्स्मरण कर अपना परलोक सुधारिए। ज्योतिषी की इस भविष्य व्याख्या का प्रभाव महाराज के चित्त पर ऐसा पड़ा कि उन्होंने आप को राज्य दे कर स्वयं बदरिकाश्रम में तप करना ही अपना दृढ़ मन्तव्य निश्चय कर लिया और ज्योतिषी को बिदा कर तुरंत ही राज्यमंत्रियों को बुला कर अपना मन्तव्य कह सुनाया और उन्हें अपना अपना मत प्रकाशित करने की आज्ञा दी। इस पर सब ने नाना प्रकार की नीतियुक्त युक्तियों को दृढ़ प्रमाणों से पुष्ट करते हुए राजा को यही मंत्र दिया कि आप की यह कल्पना उचित नहीं है किन्तु राजा के मन में एक न आई और उन्होंने यह पत्र दे कर मुझे आप की चरण सेवा में भेजा है। यह सुन कर पृथ्वीराज ने दूत को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कह कर बिदा किया कि नाना जी को मेरे आने की सूचना दे दो और इधर अपने दिल्ली जाने की उसने तय्यारी कर दी।

पथ्वीराज ने बड़े ठाट बाट से अपने सूर सामन्त और परिकर सहित उत्तम मुहूर्त में अजमेर से दिल्ली को प्रस्थान किया। पृथ्वीराज के दिल्ली पहुँचते ही सम्पूर्ण दिल्ली नगर में घर घर बधाए होने लगे, दिल्ली के हाट बाट चौहटों और गली कूचों में कदली वृक्ष और पुष्प मालाओं की छटा देख पड़ती थी, घर घर मेघस्पर्शी हवेलियों के गोखों और झरोखों में वरण वरण के वस्त्र और आभूषणों से सुसज्जित मंगलामुखी स्त्रियों की छबि छटा देखते ही मन मुग्ध होता था। निदान अनंगपाल जी ने शुभ लग्न ठीक करा के संवत् ११३८ मार्गशीर्ष शुक्ल ५ गुरुवार को मृगशिरा नक्षत्र, सिद्धनाम योग में पृथ्वीराज को दिल्ली के पाट पर बैठाया।

दूसरे दिन दिल्ली और अजमेर की सब सेना सहित पृथ्वीराज की सवारी निकली। आनन्दध्वनि होते हुए नाना प्रकार के गान वाद्यों सहित सवारी सब नगर और मुख्य मुख्य देवस्थानों में होकर राजमहल के द्वार पर आई। सायंकाल के समय बड़ा दरबार लगा। पृथ्वीराज राजगद्दी पर विराजमान हुए। दोनों राज्यों के मुख्य मुख्य राज्यकर्म्मचारी और सरदार लोग अपने अपने अदब से आ आ कर पृथ्वीराज को सादर जुहार करते और यथाशक्ति नजरें देते थे। दिल्ली के राज्यकर्म्मचारी परिजन और महाजन लोग दरबार में आए और पृथ्वीराज को नजरें दे दे कर निज निज योग्यतानुसार सब ने आसन ग्रहण किया। सब ने प्रसन्नतापूर्वक पृथ्वीराज को दिल्ली का राजा स्वीकार किया और पृथ्वीराज ने भी अंत में सब को पान सिरोपाव इत्यादि देकर बिदा किया। इधर यह शुभ समाचार सोमेश्वर के पास भेजा गया जिसे सुन कर सोमेश्वर तथा उसकी रानी फूली अंग न समाती थी। अजमेर नगर में भी यह बात घर घर फैल गई और वहां के बाल वृद्ध सभी युवा युवती भी आनन्द में मग्न भांति भांति के उत्सव करने लगे। दूसरे दिन अनंगपाल सब से विदा हो कर अपनी धर्म्मपत्नी सहित बदरिकाश्रम को चले गए और पृथ्वीराज नीति न्याय सहित दिल्ली का राज्य शासन करने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ माधो भाट कथा।

[उन्नीसवां प्रस्ताव।]

अनंगपाल के बदरिकाश्रम चले जाने पश्चात् पृथ्वीराज ने दिल्ली नगर की दसों दिशाओं में दस भैंसों का बलिदान करवाया और भांति भांति की पूजा होमादि से दिल्ली नगर के ग्राम्य देवताओं तथा निज कुल देवताओं को शान्त कर निश्चिंतता पूर्वक दिल्ली का स्वच्छन्द राज्यदंड अपने हाथ में लिया।

उधर शहाबुद्दीन को अहर्निशि इसी बात की चिंता लगी रहती थी कि किसी प्रकार पृथ्वीराज से अपने अपमान का बदला लेना चाहिए। जब उसने यह निश्चय जान लिया कि मैं बल करके पृथ्वीराज को परास्त करने में समर्थ नहीं हूं तब उसने कूटनीति का आश्रय ग्रहण किया और गज़नी से माधव भाट नामक अपने एक मुसाहिब को पृथ्वीराज का भेद लेने के लिये हिन्दुस्तान में भेजा। माधव भाट ने दिल्ली में आकर अपनी उच्च विद्याओं और बुद्धिविलक्षणता से पृथ्वीराज के सभासदों को प्रसन्न करना आरंभ किया। उसने पृथ्वीराज के खास कलम (पेशकार) धर्मायन कायस्थ पर तो ऐसी मोहनी डाली कि वह तन मन से उसका चेरा हो गया। उसी के द्वारा वह राज्यसभा तक जा पहुँचा। माधव भाट छहो शास्त्र और अट्ठारहो पुराण का मर्म जानने वाला था, ज्योतिष और काव्य शास्त्र में परांगत तथा संस्कृत और पारसी भाषा में विशेष योग्यता रखता था। उसने अपने गुणों से पृथ्वीराज को भी ऐसा मोहित किया कि दरबार में प्रति दिन उसका आदर बढ़ने लगा। राजा की विशेष कृपा होने के कारण अन्यान्य सामन्त भी उस पर प्रेम करने लगे और जब उसने अच्छा अवसर पाकर पृथ्वीराज के राजनैतिक तथा व्यावहारिक चालों की पूर्ण मीमांसा और जांच कर ली और प्रथक प्रथक शूर वीर, सामन्त, राज्यकर्म्मचारी और प्रजा की रीति भांति का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लिया। तब एक महीने पश्चात् उसने विदा माँगी। निदान राजा ने भी उसके छद्म वेष की ओर कुछ भी ध्यान न देकर बहुत सा धन रत्न देकर उसे विदा किया।

माधव भाट दिल्ली से चल कर कुछ दिनों में रास्ते का भेद भाद लेता हुआ गजनी जा पहुँचा। उस के आने की खबर पाकर शहाबुद्दीन ने तुरंत ही उसे दरबार में बुलाया और पूछा कि पृथ्वीराज का क्या समाचार लाए सो कहो? तब माधव भाट ने पृथ्वीराज के दिल्ली गोद जाने और अनंगपाल का तप करने के लिये बदरिकाश्रम जाने का समाचार कह कर पृथ्वीराज की समस्त बाह्य और अतरंग नीति रीति का विवरण कह सुनाया, जिसे सुन कर डाह के मारे शहाबुद्दीन का हृदय जल उठा। मित्र की सम्पत्ति देख कर प्रसन्न होने वाले तो थोड़े ही सज्जन होते हैं किन्तु शत्रु के वैभव पर डाह करना तो स्वाभाविक ही है। पृथ्वीराज एक तो प्रथम ही बलवान था अब उसके पास द्विगुण सम्पत्ति और सैन बल हो जाने से वह शहाबुद्दीन को निपट अजेय देख पड़ने लगा किन्तु उसने हिम्मत न हारी। उसने उसी समय तातार खां, खुरसान खां, नशरत खां, ममरेज खां, आजान खां, सुलतान खां, मारूत खां, मीर जम्मन खां, रुस्तम खां, गजनी खां, मीर मुहम्मद, शेख चम्मन खां आदि सरदारों को बुला कर एक अन्तरंग सभा रच कर माधो भाट का कहा हुआ सारा समाचार यथावत् कह सुनाया और पूछा कि अब इस बलवान शत्रु को परास्त करने का शीघ्र यत्न क्या करना चाहिए। जब तक पृथ्वीराज से अपने अपमान का बदला ले लूंगा तब तक मुझे संसार शून्य देख पड़ेगा। शहाबुद्दीन के ऐसे बचन सुन कर सब ने एक मत हो कर उत्तर दिया कि हुजूर की जो ऐसी इच्छा है तो हम लोगों को कोई उज़र नहीं। हम तो उसी से प्रसन्न हैं जिस में जहांपनाह की प्रसन्नता हो। इसलिये बड़ी सेना सज कर शत्रु को जीता जाय। पर हम लोगों को माधो भाट की बातों पर विश्वास नहीं होता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह आप का नौकर है पर फिर भी हिन्दू ही तो है। न जाने उस की बात में क्या भेद हो इसलिये जब तक यहां फौजी तय्यारी की जाय तब तक एक ऐयार उस ओर भेज दिया जाय कि वहां की ठीक ठीक खबर मिल जाय। निदान सर्वसम्मति अनुसार महमूद खां नामक चतुर दूत दिल्ली को भेजा गया और यहां जहां तहां बड़े जोर शोर से फौज की तय्यारी की जाने लगी। वैतनिक फौज के अतिरिक्त अन्यान्य मातहत जागीरदार तथा अन्य मित्र मुसलमानी राज्य की सेना का जोड़ तोड़ करके बड़ा भारी दल इकट्ठा किया गया।

इधर महम्मद खां सूफ़ी * वेष बदल कर दिल्ली की तरफ रवाना हुआ। उसने दिल्ली में पहुँच अपने आचार के करिस्मों से नगर निवासियों का चित्त प्रसन्न करते हुए अपना यथोचित कार्य्यसाधन करना आरम्भ किया। अनंगपाल का बनवास करना और दिल्ली में पृथ्वीराज का राज्य स्थापन होना तो उसे सहज ही में मालूम हो गया। तत्पश्चात उसने धर्म्मायन के पास जाकर उसको बादशाह तथा माधो भाट का पत्र दिया। धर्म्मायन ने दूत को सादर स्थान दिया और पृथ्वीराज की राज्य प्रणाली का सब ब्योरा समझा कर कहा कि पृथ्वीराज को यहां बास करते सात पक्ष अर्थात् साढ़े तीन मास हुए हैं, कैमास को पांच पक्ष, चामुण्ड राय को चार पक्ष, लोहाना अजानबाहु को १॥ पक्ष और कन्ह को यहां निवास करते १ पक्ष हुआ है। शनैः शनैः अजमेर से सब सामंत यहां आकर वास करेंगे। शेष गुप्त समाचार पत्र में लिख कर उसने उसे गज़नी को बिदा किया।

महम्मद खां ने उसी अपने पूर्वोक्त सूफी वेष में आकर शहाबुद्दीन को सलाम किया। शहाबुद्दीन ने उसे पहिचान कर बड़े आदर से पूछा कि कहो क्या समाचार हैं। तब उसने दिल्ली में केवल छः दिन रह कर धर्म्मायन की कृपा से जो छ महीने का समाचार पाया था सो सब कह सुनाया और कहा कि दिल्ली की समस्त प्रजा पृथ्वीराज की नीति और उसके व्यावहारिक आचरणों से परम संतुष्ट है। सब सूर वीर सामन्तों का तो यह हाल है कि वे पृथ्वीराज की इच्छा से भी आगे चलने वाले हैं और इसी प्रकार वह भी उनकी मान मर्य्यादा का सदैव ध्यान रखता है। उसकी प्रजा में कोई भी दरिद्र नहीं है सब लोग अपने अपने वर्णाश्रमानुसार कार्य्य करते हुए अपना धर्म्म पालन करते हैं और मुसलमानों के सब परम शत्रु हैं। इसके ऐसे बचन सुन कर शहाबुद्दीन ने अपने मंत्री तत्तार खां को बुलाया और दूत का आप कथनोपकथन उसे यावत् सुना कर उससे पूछा कि अब क्या करना चाहिए। पृथ्वीराज के प्रबल प्रताप की कथा सुनकर तो मेरा हृदय कंपित होता है। यह सुन कर तत्तार खां बोला कि जिस प्रकार पृथ्वीराज के राज्य शासन का समाचार मिला है वास्तव में वह हम लोगों के लिये भयप्रद है और जो कुछ समाचार है वह सर्वथा ठीक भी है किन्तु इससे हमको हिम्मत न हारनी चाहिए क्योंकि धर्मायन कायस्थ की, जो कि पृथ्वीराज के दरबार का एक प्रधान कर्म्मचारी है और हमारा सच्चा सहायक है, सहायता से हमें अपनी विजय प्राप्त होने की पूर्ण आशा है। अतएव अब बिना विलंब किए सेना सज कर दिल्ली पर आक्रमण करना चाहिए। इस प्रकार तत्तार खां की उत्तेजक सलाह से शहाबुद्दीन का दिल भी भर गया और उसने जहां तहां पत्र परवाने भेजने की आज्ञा दे कर अपने लश्कर के तय्यार होने की आज्ञा दी। दूसरे दिवस प्रातःकाल ही गाजे बाजे बजाती हुई शाही सेना राज्य महल के सम्मुख आ उपस्थित हुई। शहाबुद्दीन भी घोड़े पर सवार होकर सेना में आ मिला और हिन्दुस्तान की ओर चल पड़ा। उसने गज़नी से बारह कोस चल कर नारौल नामक गांव में पड़ाव डाल दिया और तीन दिन पर्य्यन्त वह वहां ही रहा, जब तक उसके अन्यान्य जागीरदार मैमार लोग अपनी अनी कनी सेना सहित रंग बिरंगे निशानों को फहराते हुए शाही सेना में आ मिले।

* सूफी मुसलमानी फकीरों का एक फिरका होता है जो कि बड़े आचार से रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहाबुद्दीन इस प्रकार यहां पर दो लाख फौज इकट्ठी कर के आगे बढ़ा और सिन्ध नदी तक नियमानुसार पड़ाव पर पड़ाव डालता हुआ चला आया। सिंध नदी पार कर के दिन रात लगातार कूंच करने लगा।

शहाबुद्दीन के सिंध पार करने की खबर जब पृथ्वीराज के कान तक पहुँची तो उसने उसी समय राज्यमंत्री कैमास और सिपह-सालार कन्ह को बुला कर शहाबुद्दीन की धृष्टता का समाचार कह सुनाया और उनका स्पष्ट मत पूछा। तब कैमास ने कहा कि अब इस समय यही कर्तव्य है कि वह अपनी सीमा न चापने पावे। आगे ही बढ़ कर उसे दण्ड देना उचित है। कैमास का यह मत अन्य सब सामन्तों ने भी स्वीकार किया और दरबार बरखास्त होने पर शहाबुद्दीन के आक्रमण का समाचार सब सेना में कानों कान फैल गया। तब सब शूरवीर धर्म्मशत्रु यवनों को दण्ड देने के लिये उत्साहपूर्वक अपने अपने बाने बाने सजकर तय्यारी करने लगे। दूसरे दिवस प्रातःकाल ही चतुरंगिनी सेना सज कर प्रस्तुत होगई। पृथ्वीराज सुनहरे आभूषणों से सुसज्जित हाथी पर सवार हो कर उस दल रूपी जल में साक्षात् कमल सा सुशोभित होने लगा एक तरफ से कैमास ने और एक तरफ से कन्ह ने समस्त सेना की जांच की और तब पृथ्वीराज के आज्ञानुसार प्रस्थान का आदेश दिया गया। आज्ञा पाते ही भांति भांति का जुझाऊ बाजा बजने और मारू राग का गान होने लगा जिससे शूरवीरों का मन उन्मत्त और कायरों का कलेजा कांपने लगे। इस प्रकार सत्तर हजार सेना सहित अनियम कूच करते हुए शहाबुद्दीन की सेना से ६ कोस की दूरी पर *पानी पत के मैदान में पड़ाव जा पड़ा।

उधर से शहाबुद्दीन भी बराबर बढ़ा चला आता था। जब उसकी फौज मुठभेड़ में आगई तब पृथ्वीराज के आज्ञानुसार * मारू की ध्वनि के सहारे पर सामन्तों ने सेना की मयूर व्यूहाकार रचना प्रारम्भ की। निड्डुर और कैमास एक पक्ष पर, अत्ताताई और बलिभद्र दूसरे पक्ष पर रहे। कुछ सेना सहित पृथ्वीराज पिंड स्थान पर स्थित रह कर पैर और नख की रक्षा पर रहे, पज्जून राय पूंछ पर, चंद पुंडीर चौंच और महन सिंह पड़िहार कंठस्थान पर रहे। इस मयूर व्यूह की रक्षा के लिये सहायक सेना सहित दाहिनी ओर कैमास, और सकट व्यूह रचकर महन सिंह मारू और भौंहा चंदेल सहित चामुंड राय अग्र भाग में रहे। इसी प्रकार अन्य अठारह सामन्त पीछे पृष्ठ पर सहायता देने को सन्नद्ध रक्खे गए। कन्ह अपने पक्ष पर आठ अन्य सामन्तों को दृढ़ रखकर आप राजा के पास आकर राजा के (छत्र स्थान पर) खवास खाने में बैठे। मुसलमान सेनापति ने अपनी सेना की अर्धचन्द्रकार व्यूह रचना की जिसकी एक अनी पर खुरसान खां और ततार खां थे और एक अनी पर पीरोज खां था और सुलतान स्वयं मध्यभाग में था। इस प्रकार व्यूह रचना हो जाने पर वीर क्षत्री दल ने यवन सेना रूपी सर्पों के भक्षण करने के लिये उनपर आक्रमण किया। उस समय धौंसों की धुंकार और मारू की हुंकार सुन कर वीर शिरोमणि शूर वीर फूले अंग नहीं समाते थे और कायर पुरुष प्राण के भय से जहां तहां पलायन में तत्पर थे। दोनों ओर के वीर योद्धा लोग अपने अपने स्वामियों की जयप्राप्ति की अभिलाषा से एक दूसरे पर टूट पड़े। दोनों ओर के दल बद्दलों से बाण रूपी जल की बौछार पड़ने लगी, घनघोर तुपक और शतघ्नियों की गर्जना से मेदनी कंपायमान होती थी, बीच बीच में चमचमाती हुई तलवारें विद्युत प्रभा को मात करती थीं। उस युद्ध स्थल में अवयव रहित जीव के धड़ धड़ाधड़ मेंढक से कूदते

* मूल पुस्तक में जलपंथ करके लिखा है यथा "आति कूचह कूच दलं खरियं। जल पंथह जाय सु उत्तरियं"॥

* मारू एक विशेष बाजे का नाम है। उस समय में इसी मारू के इसारे पर कवायद सिखाई जाती थी जिस तरह कि आज कल बिगुल से काम लिया जाता है। पाठकों को ध्यान रहे कि फ़ौजी कवायद कोई नई चीज नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थे। उधर से खुरसान खां ने आगे बढ़कर पृथ्वीराज पर आक्रमण करना चाहा तो इधर से कन्ह ने बढ़ कर एकही बार में उसे मार भगाया। कन्ह की इस चोट में खुरसान खां अपनी दो हजार सेना के मारे जाने पर पीछे हटा। सब मुसलमानी सेना के पैर उखड़ गए किन्तु बादशाह के क्रुद्ध होकर धैर्य्य देने पर वे लोग फिर से बटुर पड़े और स्वामिधर्म्म रूपी दीपशिखा पर अपना प्राण पतिंगा बारने लगे। शहाबुद्दीन ने इस प्रकार जोर बाँध कर तत्तार खां की सलाह के अनुसार खुरासानखां को फिर से पृथ्वीराज पर धावा करने को कहा कि जिसमें सब का ध्यान उसी ओर जाय और आप तत्तारखां के सहित हरावल तोड़ने पर मुस्तैद हुआ, किन्तु वीर सामन्तों के सम्मुख उसकी एक भी कला न चली। प्रबल राजपूतों की दपेट से वह अर्ध चन्द्राकार यवन सेना पूर्ण चन्द्रमा स्वरूप बन गई और तब चहुआन रूपी राहु ने उसे सहज ही में ग्रस लिया। शहाबुद्दीन तथा अन्य प्रधान यवन सैनिकों ने अपना सा प्रबंध किया किन्तु कुछ भी चारा न चला और यब सेना भाग उठी। तब पृथ्वीराज के आज्ञानुसार प्रमार जैत ने तत्तार खां की अनी का पीछा किया। पृथ्वीराज कन्ह सहित आप अन्य यवन मृगों का शिकार खेलने लगा और चामुंडराय ने घेर कर शहाबुद्दीन को कैद कर लिया। यह युद्ध वैसाख सुदि १० बृहस्पतिवार ११३८ को हुआ। इस युद्ध में दोनों ओर के निम्न लिखित सरदार काम आए।

पृथ्वीराज की ओर के।

भीम....	मान्य सामन्त
भारवरह	कन्ह का पुत्र
श्यामदास....	"
जसधवल	लोहाना का पुत्र
केंसरि सिंह	" का भाई
रनवीर सोलंकी	विभुराज का पुत्र
सागरह खींचीं	प्रसंग राव खीची का पुत्र
महन राय	" का भाई
हरि प्रमार	" " "
वीरध्वज "	सिंध राज का पुत्र
भीमसिंह बघेल	"
लष्षनसिंह	रामराव का पुत्र

शहाबुद्दीन की ओर के।

शेर खां, सुलतान खां, मारु मीर, मीर जहान, मीर जुम्मन, गजनीं खां, मीर महम्मद, मीर फतेह जंग, (हसन) खां, अन्नर (अनार) खां ये १० मुख्य सेनापति और अट्ठारह हजार साधारण सैनिक काम आए। उक्त सामन्तों के सिवाय १००० हिन्दू सैनिक और भी मारे गए और दोनों तरफ के ७००० घोड़े मारे गए।

चामुंडराय जब शहाबुद्दीन को बंदी करके उसे पृथ्वीराज के पास लाया, तब पृथ्वीराज के आज्ञानुसार यवन सेना का सब रखत बखत अर्थात डेरा डंडा लूट लिया गया। दिल्ली आकर १ महीने पर्य्यन्त बादशाह को कैद रख कर तब बहुत सा दण्ड लेकर पृथ्वीराज उसे छोड़ा और उससे पाए हुए दण्ड की संपत्ति में अपनी तरफ से भी कुछ मिला करके सब सामन्तों को यथायोग्य बाँट दिया।

इसके आगें अब पृथाविवाह वर्णन करके तब फिर पृथ्वीराज को गड़ा हुआ धान प्राप्त होने और फिर से बादशाह को बाँध करके छोड़ने की कथा वर्णन की जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मावती विवाह कथा ।

[बीसवाँ समय ।]

पु. DH. N. 9

पूर्व दिशा में समुद्रशिखर गढ़ नामक एक सुदृढ़ दुर्ग था, जहाँ एक विजयपाल नामक यादववंशी क्षत्री राज्य करता था। उसके राज्य की सीमा पूर्व की ओर समुद्र पर्य्यन्त थी। उसके केवल १०००० जिरहवख्तर वाले सवार थे और सब मिला कर वह बहुत से हाथी और तीन लाख पैदल का स्वामी था। उसके राज्य में प्रजा प्रसन्न और राज्यकोष सब तरह द्रव्य से परिपूर्ण था। उसके दस पुत्र और दस पुत्रियाँ थीं। विजयपाल की पद्मसेना नामक रानी बड़ी ही सुन्दर और राजा को बहुत ही प्यारी थी। उसी के गर्भ से पद्मावती नाम से एक अत्यन्त रूप और गुणवती कन्या उत्पन्न हुई।

पद्मावती जिस प्रकार वयः प्राप्त होती जाती थी उसी प्रकार उसका रूप लावण्य शुक्ल पक्ष के चन्द्रमा के समान प्रति दिन बढ़ता जाता था। उसका अद्वितीय सौन्दर्य्य कवियों के काव्य का आधार, ब्रह्मचारी, मुनिजन तथा पशु पक्षियों का भी मन हरण करने वाला था। कुछ बड़ी होने पर वह चित्त-विनोदार्थ बाग में जाने लगी। एक दिन एक सुग्गे के रंग रूप पर हृदय से मोहित हो गई और उसे पकड़ कर महलों में ले गई। यहां उसे स्वर्ण के पिंजरे में बन्द कर यत्नपूर्वक रखने लगी। जिस दिन से वह सुग्गा पद्मावती के हाथ लगा उस दिन से उसे खेल कूद सब भूल गया। वह सब दिन उसी अपने प्यारे सुग्गे की सेवा में रह कर ही अपना चित्तविनोद करती, अहर्निशि उसे राम राम पढ़ाती और उससे वार्तालाप करती हुई दिन व्यतीत करती थी। एक दिन उसने सुग्गे से पूछा कि हे सुग्गे तूं बड़ा चतुर है तुझ से मेरा चित्त बड़ा प्रसन्न है अब तूं मुझे यह बतला कि तूं कौन से देश का रहने वाला है? । यह सुन कर सुग्गा बोला कि हे सुन्दरी! मैं दिल्ली का रहने वाला हूं जहां का राजा पृथ्वीराज भूप्रख्यात अद्वितीय प्रबल प्रताप वाला और महान बलवान है। उसने तीन बार गजनी के बादशाह को कैद करके छोड़ दिया है। उसका शारीरिक बल ऐसा है कि उसके धनुष पर लोह शृंखला की प्रत्यंचा चढ़ती है और वह शब्द वेधी बाण मारता है। सुन्दर तो ऐसा है कि मानो साक्षात कामदेव का ही अवतार है। पद्मावती पृथ्वी-राज के इस प्रकार रूप गुण की महिमा सुन कर उस पर तन मन से मोहित हो गई और उसी समय से निरन्तर पृथ्वीराज के ध्यान में मग्न रहने लगी।

संवत् ११३६ में जब पद्मावती की अवस्था ब्याह योग्य हुई तब राजा विजयपाल ने अपने कुल प्रोहित को बहुत सा धन रत्न देकर पद्मावती के लिये वर की खोज में भेजा, वह चलते चलाते जब उत्तर की ओर गया तो वहां पहाड़ी राज्यों में कमाऊं के राजा कमोदमणि को पद्मावती के योग्य वर जान कर उसने उसे लग्न चढ़ा दिया और घर पर आकर राजा विजयपाल को उक्त विषय की सूचना दी। इस समाचार को पाकर राजा ने राज्यकर्म्मचारियों को ब्याह की तय्यारी करने की आज्ञा दी। उधर से कमोदमणि भी दस हजार सवार तेतीस हजार पैदल और ८४ हाथी और बहुत से ऊंट इत्यादि लेकर बड़ी सज धज की बारात सजकर समुद्रशिखर गढ़ को चल दिया। समुद्रशिखर गढ़ में भी घर घर नित नाना भांति के उत्सव हो रहे थे। यद्यपि यह गान वाद्य और उत्सव सब प्रजा के चित्त को महान आनन्द प्रदायक थे किन्तु पद्मावती इससे इतनी दुखित थी कि मानो यह ब्याह लग्न साक्षात उसकी मृत्यु सा निकट आ रहा था। उसने बहुत कुछ सोच विचार कर पृथ्वीराज को एक पत्र में यह लिखा कि आप यहां आकर राज्यमहल के पश्चिम ओर शिवालय से मुझे हर ले जाइए। जो आप पांच दिन में मुझे संकेत स्थल पर न मिलेंगे तो मैं अपना प्राण त्याग दूंगी। इस प्रकार पत्र लिख कर उसने सुग्गे के गले में बाँध दिया और उसे दिल्ली की ओर जाने की प्रेरणा की। निदान वह सुग्गा एक दिन रात को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली जा पहुँचा और उसने वह पत्र पृथ्वीराज को जा दिया। पत्र के पढ़ते ही पृथ्वीराज भी कुछ थोड़े से सामन्तों की सेना साथ लेकर, दिल्ली की गढ़रक्षा चामुण्डराय के सिर सौंप कर समुद्रशिखर गढ़ की ओर चल दिया। जिस दिन कमोदमणि की बारात समुद्रशिखर गढ़ पहुँची उसी दिन पृथ्वीराज भी जा पहुँचा और उसी दिन इस विषय का समाचार शहाबुद्दीन के कान तक पहुँचा, जिसके सुनते ही शहाबुद्दीन फूल कर कुप्पा हो गया। उसने इस अवसर पर पृथ्वीराज को धोखे से पकड़ लेने का मन्तव्य मन में ठान लिया और बड़ी भारी सेना सहित पृथ्वीराज की राह रोक कर वह अड़ रहा और कविचन्द ने इस विषय की सूचना पृथ्वीराज को दी।

उधर तो गान वाद्य सहित बड़े गाजे बाजे से बारात नगर में घूम रही थी इधर पद्मावती पृथ्वीराज के रंग में रँगी हुई कंठस्थगत प्राण संकट में पड़ी हुई राजमहल की गोख में बैठी टकटकी लगाए दिल्ली की तरफ देख रही थी कि इतने में सुग्गे ने आकर पृथ्वीराज के आगमन की सूचना दी। शुकदेव अरुण द्वारा चाहुआन सूर्य्य के आगमन की सूचना पाकर पद्मावती का हृदयपद्म प्रफुल्लित हो उठा। उसने ततक्षण ही सोलहों शृंगार और बारहों आभूषणों से सुसज्जित हो कर सहेलियों सहित शिवार्चन के लिये यात्रा की। शिवालय में पहुँच कर उसने शिवपार्वती की पूजन कर पृथ्वीराज से प्रीति होने का बरदान मांगा और ज्योंही वह मन्दिर के बाहर आई कि पृथ्वीराज ने हाथ पकड़ कर उसे अपने साथ घोड़े पर बिठा लिया। सब सखी सहेली और वाहक जन चित्रलिखे से देखते रह गए। किसी किसी ने यह समाचार कुमोदमणि को दिया तो वह अपनी सेना सज कर पृथ्वीराज के पीछे पड़ा परन्तु चहुआन के वीर सामन्तों ने उसे सेना सहित सहज ही में मार भगाया और पृथ्वीराज पद्मावती सहित दिल्ली की ओर चला। जब यह समाचार शहाबुद्दीन को मिला कि पृथ्वीराज पद्मावती को व्याह कर इधर ही आ रहा है तो वह भी अपने सामन्तों को सज कर उन से बोला कि इस समय सन्नद्ध रहो, अब की पृथ्वीराज को पकड़ ही लेना है। जब पृथ्वीराज का लश्कर पास आया तो उसने आक्रमण किया। पृथ्वीराज तो प्रथम ही इस घटना की सूचना पाकर सावधान था। उसने यवनसेना का साम्हना किया और पलक मारते लोह की झार झरने लगी और लोहू के कुंड भरने लगे। कन्ह ने झपट कर शहाबुद्दीन के हाथी को घेर लिया और सहज ही उसे पकड़ कर पृथ्वीराज के सम्मुख ला कर प्रस्तुत किया। इस युद्ध में ५०० मुसलमान और ५० राजपूत योद्धा खेत रहे। वीर पृथ्वीराज इस प्रकार गोरी पद्मावती को प्रेम से और शहाबुद्दीन गोरी को आतंक से गिरफ्तार करके साथ लिए हुए खुशी खुशी दिल्ली जा पहुँचा और ज्योतिषियों से शुभलग्न सुधाय बड़ी धूमधाम से पद्मावती का उसने पाणिग्रहण किया। इसी व्याह की बधाई में शहाबुद्दीन को उसने छोड़ दिया और आप अन्तःपुर में पद्मावती के छबि मकरन्द में मुग्ध होकर मत्त मलिन्द की भांति कामक्रीड़ा में रत हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथा व्याह कथा।

[इक्कीसवाँ समय ।]

सोमेश्वर को पृथ्वीराज के सिवाय पृथाकुमारी नाम की एक कन्या भी थी। जब इसकी बाल्यावस्था का ह्रास और इसके अंग अंग में कामदेव का प्रवास होते हुए यौवन का प्रकाश होने लगा तब सोमेश्वर ने हिन्दूकुल सूर्य्यवंशावतंस चित्तौराधिपति रावल समरसिंह को पृथाकुमारी के योग्य वर जान कर प्रोहित गुरु राम और कन्ह चहुआन को लग्न लेकर रावल जी के पास चित्तौर भेजा। लग्न के साथ में तेरह बलवान और तेज घोड़े, मोतियों की माला और बहुत सा धन रत्न भेजा। कन्ह और गुरु राम ने चित्तौर पहुँच कर जिस समय वस्त्र शस्त्र आभूषणों से सुसज्जित सर्वगुणसंपन्न सिंह समान योगीराज समरसी जी को सभा में बैठा हुआ देखा तो इनका भी चित्त प्रसन्न हो गया। ये लोग मन ही मन कहने लगे कि अद्वितीय सुन्दरी पृथाकुमारी के योग्य यही वर है। धन्य है ईश्वर को जिसने यह रति काम, सिय राम, नल दमयन्ती, अर्जुन द्रोपदी, इन्द्र सची का सा संयोग जोड़ दिया है—गुरु राम ने शुभ मुहूर्त्त साधन कर वैसाख वदी ५ को रावल जी के हाथ पर लग्न रक्खा—लग्न चढ़े जाने पर उक्त तिथि के एक महीने पश्चात् विवाह का दिन नियत हुआ। लग्न चढ़ जाने पर कन्ह और गुरु राम को पाँच दिवस पर्यन्त बड़े आदर भाव से पहुनई में रावल ने रक्खा और चलते समय गुरु राम को बहुत सा धन रत्न और सिरोपाव देना चाहा; किन्तु गुरु राम ने उसे लेना स्वीकार न किया और विनीतभाव से प्रार्थना की, कि आप का दर्शन पाने से ही हमारे पाप दूर हो गए हमको अब अधिक क्या चाहिए। इस प्रकार लग्न चढ़ाकर कन्ह और गुरु राम अजमेर में आए तो यहां भी विवाह की तय्यारियां होने लगीं— जहां तहां घर घर द्वार द्वार कदली के विटप और वंदन वार की बहार देख पड़ती थी। अजमेर के हाट बाट चौहटे राजपथ पर, सर्वत्र स्वच्छता और सुगंध की छटा छा रही थी। राजमहल में अहिर्निशि प्रसन्नबदना स्त्रियों का गान वाद्य तथा नाना प्रकार का आनन्द नाद हुआ करता था। विवाहोत्सव के आनन्द में उमगे हुए राज्यकर्म्मचारी से लेकर दास दासी पर्य्यन्त अपने अपने कार्य्य को कुशलतापूर्व्वक संपादन करते हुए फूले अंग नहीं समाते थे। *चूतात और †अटाले में षट रस पदार्थों के अटंब लगने लगे तथा दिल्ली और अजमेर की प्रजा के दरिद्र दूर भागने लगे। इधर पृथ्वीराज ने अपने अधीनस्थ तथा समान व्यवहार वाले राजाओं को निमंत्रण भेजे और एक पत्र ऊंचे फरहरे सहित शहाबुद्दीन के पास भेजा।

विवाह की तिथि आते आते सब न्यौतार अजमेर में आ पहुँचे। नियत समय पर बरात भी नगर के निकट आ पहुँची। ऐसा समाचार पाते ही सब सूरबीर सामंत योद्धागण और न्यौतार लोग अपने रथ हाथी घोड़े इत्यादि को स्वर्ण रजत साजों से सज सज कर अपने ठाठबाठ के साथ राज्य महल के द्वार पर आ जमे। पंचाल राज जैतसिंह प्रमार, भौहा चंदेल, नाहनर कन्ह, पज्जून राय सिंह नग और आजानबाहु अजमेर की तरफ के पंच होकर सब दल बहल सहित बारात की अगवानी को आगे बढ़े। नगर के बाहर से बारात की अगवानी करके सादर बरात को लिए हुए नगर में से निकले और नगर के दूसरी ओर बारात का पड़ाव दिया गया। लग्न का बेध होने पर जब रावल जी अपने बीर सिसौदिया सरदारों सहित सज धज कर राजद्वार पर आए उस समय की सुखमा अपार थी। जहां तहां अटा अटारी ओख, गोख और झरोखों में झाँकती हुई मृगनयनी पिकबयनी मंगलामुखी स्त्रियाँ कल कंठ से गान करती हुई

---

* वह स्थान जहां पर अन्न, मेवे, मिष्टान्न इत्यादि का भंडार रहता है।

† जहां भोजन पकाया जाता है अथवा परिपक्व भोजन इकट्ठा जमा रहता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी भासित होती थीं मानो इस योगिराज समर सिंह और सती पृथा कुमारी के संबन्ध से प्रसन्न हुए धर्म्मराज की प्रेरणा से इन्द्र की भेजी हुई अप्सराएँ आकाश में आनन्द बधाई दे रही हों। राजद्वार नाना प्रकार के प्रफुल्लित मंगलमय ललित लताओं से आच्छादित हो रहा था। तिस पर लटकती हुई मोतियों की झालरें इस आनन्द से जड़ वृत्तों के सजीव होकर हास्य करने का दृश्य दिखाती थीं। राजद्वार के एक तरफ राव जी के सगे सम्बन्धियों की भीड़ थी और भीतरी तरफ स्त्रियां माथे पर स्वर्ण कलश धारण किए हुए रावल जी तथा उनके संबन्धी और सरदारों के नाम से मंगल गान करती थीं। समरसिंह का वीर वेष देखकर पृथाकुमारी की माता तो खुशी के मारे फूली अंग न समाती थी।

गोधूली बेला में रावल समरसिंह जी ने विवाह मंडप में प्रवेश किया। वहां पर पांच सौ वेदज्ञ और दो हजार छंद और तर्क शास्त्र के ज्ञाता पंडित लोग मंत्र पाठ कर रहे थे। एक हजार पौराणिक कथाओं के ज्ञाता चारण लोग विरदावली पढ़ रहे थे। उस मंडप में लटकती हुई मोतियों की झालरें अनुपम शोभा की भंडार थी। चाहुआन के घर में उस विवाह मंडप में होता हुआ यज्ञ इन्द्र सहित आठो देवताओं को भाग देने वाला था। उस समय के दान मान और सम्मान की छटा देख कर कुबेर भी छकित होता था। पाणिग्रहण का लग्न ज्यों ज्यों निकट आता जाता था त्यों त्यों सब का आनन्द बढ़ता जता था। भांवरि पड़ते समय चाहुआन ने रावलजी को पहिली भांवरि में मेवात के ६० गांव दूसरी भांवरि में ११ हाथी, तीसरी भांवरि में कन्यादान किया और चौथी भांवरि में अनन्त हेम रत्नादि दान किया। ततपश्चात् रणथंभ का देश दिया और गुरुराम प्रोहित को पृथा कुमारी के संग चित्तौड़ जाने की आज्ञा दी। साथही इसके ऋषीकेश वैद्य को धन्वन्तरि का पद दे कर और कवि चन्द के पुत्र जल्हण को भी रावलजी को दान किया। उसी समय निमंत्रण में आए पंचाल, कर्नाट, गुजरात भांडर इत्यादि देशों के राजा और एलचियों ने भी नजर दहेजें और व्यवहार में असख्य धन दिया। पृथ्वीराज के सामन्तों ने भी व्यवहार में बहुत कुछ दिया।

इस प्रकार सब के व्यवहार को पृथ्वीराज ने आदरपूर्व्वक ग्रहण करके बहुत कुछ अपनी तरफ से भी मिलाकर रावल जी को दे दिया। इस प्रकार सानन्द विवाह समाप्त हुआ और तब रावल समर सिंह जी दरबार में आकर बैठे। उस समय पृथ्वीराज और समर सिंह बराबर बैठे हुए सूर्य्य और चन्द्रमा की भांति सुशोभित होते थे और दोनों ओर के सामन्त लोग उनके आसपास बैठे हुए साक्षात तेजोमय तारागण से प्रतीत होते थे। पृथाकुमारी का विवाह एक मात्र करुणा रस रहित आठो रसों से परिपूर्ण सानन्द समाप्त हुआ। तब पृथ्वीराज के १२ सामन्तों ने १२ दिन तक बराबर एक एक दिन बारात का न्योता किया। इसलिये रावल जी को १२ दिन तक और अजमेर में रहना पड़ा। बारहवें दिन बहुत सा दान दहेज पृथ्वीराज ने अपनी तरफ से देकर बारात को विदा किया। जिस समय बारात चलने को हुई कि उस के पश्चिम ओर में सूर्य्योदय होते ही स्यार बोला जिसका शब्द सुन कर रावल जी ने जगजोति नामक अपने ज्योतिषी से इसका फल पूछा और उसने इस प्रकार वर्णन किया कि इस जुग्गिनिपुर में चाहुआन के राज्य पर पश्चिम दिशा से बार बार आक्रमण होंगे जिससे यहां की पृथ्वी भरपूर रुधिर से परिपूर्ण होगी और चाहुआन का यश संसार में विस्त्रित होगा। किन्तु अन्त में आक्रमण कर्ताओं की ही जय होगी और दिल्ली में यवन राज्य स्थापित होगा। चाहुआन और उनके सम्बन्धी और सामन्तों की कीर्तिमात्र शेष रह जायगी। चलते समय सोमेश्वर जी ने ५० हाथी १०० घोड़े १०० दासी और बहुतसा धन रत्न द्रव्यादि रावल जी को दहेज में दिया। रावल जी इस प्रकार प्रसन्नतापूर्व्वक पृथाकुमारी को व्याह कर सानन्द चित्तौड़ में आए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होली कथा।

[बाइसवां समय।]

एक दिन पृथ्वीराज ने कविचन्द से पूछा कि हे बरदाई फाल्गुण मास में जो लोग छोटे बड़े का कुछ भी विचार न करके पागलों की भाँति अश्लील शब्दों का उच्चारण करते हैं, खाद्याखाद्य पदार्थों का कुछ भी विचार न करके सब कोई घृणित और निषिद्ध पदार्थों को एक दूसरे के ऊपर डालते हैं इसका क्या कारण है सो मुझ से कहो। पृथ्वीराज के ऐसे बचन सुनकर कविचन्द बोला कि चाहुआन कुल में ढुंढा नामक एक राक्षस था और ढुंढिका नामक उसकी एक बहिन थी। जिस समय ढुंढा अजमेर और दिल्ली का सिमाना छोड़कर काशी को चला गया और वहां तप करने लगा तो ढुंढिका भी काशी को गई, किन्तु जब तक यह पहुँचे कि ढुंढा ने अपना शरीर काट काट कर होम कर दिया (जिसके अंश से आप और ये सब सामन्त लोग उत्पन्न हुए हैं)। यह देखकर ढुंढ़िका अत्यन्त दुखित होकर भाई के वियोग में स्तब्ध चित्त होकर तपस्या करने लगी। जब उसे निराहार तप करते करते कुछ अधिक काल व्यतीत होगया तब पार्वती जी ने प्रसन्न होकर उससे कहा कि तूं जो कुछ बर मांगेगी वह पावेगी। पार्वती के ऐसे बचन सुनकर वह आमिषाहारी राक्षसी बोली कि यदि आप प्रसन्न हैं तो मुझे यह बर दीजिए कि मैं आबाल, वृद्ध, युवा जितने मनुष्यों को पाऊं खाती जाऊं। ढुंढिका का यह प्रस्ताव सुनकर पार्वती ने इस धर्म्मसंकट में पड़कर यह समाचार महादेव जी से कहा। तब महादेव जी ने कहा कि उससे यह कह दो कि वह जिस किसी को पागल की भाँति बौराया असभ्य कर्म करते हुए राक्षस स्वरूप पावे उसे सवर्ग भाव मान कर कदापि भक्षण न करे। इसके विरुद्ध जिन्हें सीधा सादा पावे उन्हें सहज ही खा जाय और इश्वर पवन को आज्ञा दी कि ऐसी धूल उड़ावे कि सर्वत्र अंधकार मच जाय और सब मनुष्य बौरा कर तीन दिन तक असभ्य कर्म करने लग जांय जिसमें ढुंढिका मनुष्यों को भक्षण न कर सके। निदान तभी से यह होली का व्यवहार प्रचलित हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-10.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia,

AND

Syam Sundar Das, B.

CANTOS XXXVI to XLI

महाक... राइ

पृथ्वीरा

जिसको

मोहनलाल वि

और

श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

सम्पादित किया।

पर्व्व ३६ से ४३ तक।

...ED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE
NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1907.

मूल्य १।)] Issued 15th July, 1907. [Price

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओ३म् * ९/९८२

पुस्तक की संख्या.................. ९८३८

पुस्तकालय–पञ्जिका–संख्या..........

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कोई महाशय १५ दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकता। अधिक देर तक रखने के लिये पुनः आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

(३६) हंसावती ... ... पृष्ठ १०७३ से १०९७ त

(३७) पहाड़ ... समय ... ... ,, १०९९ ,, १११८

(३८) बरु... कथा ... ... ,, १११९ ,, ११२८

(३९) ... बंध समय ... ... ,, ११२९ ,, ११५२

(४०) पज्जून छोंगा नाम प्रस्ताव ... ,, ११५३ ,, ११५६ ,,

(४१) पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव ... ,, ११५७ ११६३ ,,

(४२) चंद द्वारका समय .... ,, ११६५ ११७७ ,,

(४३) कैमास जुद्ध (अपूर्ण ... ,, १२०० ,,

रासोसार ,, ९३ ,, १०४ ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिथ पंचम रवि भोम। लगन प्रथिराज सु थप्पी॥
कमलहु सुरीज किन्नौ कनक। किति लभ्भी दुज्जन बहिय॥
तप तेज भान मध्यान ज्यौं। तिन चौहान चंदह कहिय॥छं०॥९९॥

और उक्त रनथंभ के युद्ध की रत्नाकर से उपमा वर्णन।

बर पंचाइन समर। दंड मुक्किय बर मुक्किय॥
मथी सेन सम्मूह। रतन कित्ती फल रुक्किय॥
लच्छि भाग चहुआन। हथ्थ हंसावति लद्दिय॥
अम्रत भाग चिचंग। सेन हाला हल सद्दिय॥
बारुनी बीर अस्सिय सु झर। अरिन पाइ जस रतन लिय॥
मह महन रंभ हथ्यह कपट। सिंभ सीस बर अप्प लिय॥छं०॥१००॥

लग्न के समय के अन्तरगत पृथ्वीराज का बारू बन को शिकार खेलने के लिये जाना।

दूहा॥ तब लगि मंतन लगन दिन। न्रिप आषेटक जाइ॥
बारू बन उभ्भौ न्रपति। मात दरस निस पाइ॥ छं०॥ १०१॥

पृथ्वीराज के बारू बन में शिकार करते समय सारंग राय सौलंकी का पितृबैर लेने का विचार करना।

कवित्त॥ बारु विरल बन न्रपति। राइ आषेटक सारिय॥
सारंग चालुक चूक। रूक तिहि बेर विचारिय॥
समरसिंघ चढ़ि हथ्थ। हथ्थ आवै चहुआनं॥
पिता बैर बहु बंध। हुऔ कर नार समानं॥
बर बैर सपुत्तन निक्कसै। ज्यौं आगम अरि अंगयौ॥
बर बीर बैर ससि सनिह लगि। गुन प्रधान बर मंगयौ॥छं०॥१०२॥

सारंगदेव का कहना कि पितृबैर का लेना वीरों का मुख्य कर्तव्य है।

दूहा॥ बैर काज बर नंद सुत। बर बैरोचन हत्त॥
करि वसीठ माली सुतन। बैर पुब्ब मन जित्त॥ छं०॥ १०३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ सुनि मंचीवर बैर। राम रावन *सिर सज्जिय ॥
बैर काज ग्रहभेद। करन उरजन सिर भज्जिय ॥
बैर काज सुग्रीव। बाल जान्यो न बंधगति ॥
बैर बीति सुर इंद्र। बैर चिंतिजैं इसी भंति ॥
चहुआन समर लभ्भै जु तत। चंद सूर जिम ग्रेह लिय ॥
बर चूक दान अग लग्गिहै। कित्ति एक जुग जुग चलिय ॥ छं० ॥ १०४ ॥
[1]कित्ति काज परधान। राज राजन सुख चुक्किय ॥
कित्ति काज विक्रम्म। देश देसह धर लुक्किय ॥
कित्ति काज पंवार। सीस जगदेव समप्पौ ॥
कित्ति काज बर सिवरि। [2]मध्य कर कट्टि सु अप्पौ ॥
⁂ रष्षंत [3]अचल गल्हां जियन। कीरति सब जग भल कहै ॥
सकंग एक जुग्गन विरह। रहै तौ गुर भल्हा रहै ॥ छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ केहरि कल केहरी हिरन। करन जोग मैं ईस ॥
कोइक उत्तर देषिये। गल्ह बोहथी सीस ॥ छं० ॥ १०६ ॥

सारंग राय* का नागौद के पास मंगलगढ़ के राजा हाड़ा हम्मीर से मिल कर उसे अपने कपट मत में बांधना।

कवित्त ॥ मंगल गढ़ मंगलिय। नयर नागदह मिलंतह ॥
है हाड़ा हम्मीर। नैन बाह्न सु जुरंतह ॥
पारधिरा प्रथीराज। चूक मंड्यौ चालुक्कां ॥
हाड़ा सौं हथलेव। मूल कट्टन [4]सालुक्कां ॥
भंभरी भीर भौनिग तनय। परि पगार उद्दिग्ग तन ॥
पंचारि राइ पट्टनपती। तिवर तेग बत्ते कहन ॥ छं० ॥ १०७ ॥

* "सारंग राय" भीम देव का पुत्र था। यद्यपि यह बात इस छन्द में स्पष्ट नहीं लिखी गई है परंतु इस "पिता वैर वहुवन्ध, हुओ कर नार समान" पंक्ति से उक्त आशय निकलता है।

(१) ए. कृ. को.- किसी को परधान राज हरिचन्द न मंकिय

(२) ए. कृ. को.-मंस। (३) ए. कृ. को.-अचर।

⁂ ए. कृ. को.-प्रतियों में "कित्ती काज श्रिय राम राज भाभीछन दोनों" पाठ है और दूसरी पंक्ति "कित्ती काज विक्रम्म जैसे देसह धर लुक्किय" नहीं है। (४) ए. कृ.-को.-चालुक्कां।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* सारंग राय का पृथ्वीराज और समरसिंह जी के पास न्योता भेजना।

दूहा ॥ भोजन मिस चालुक ने। [1]पाइक पाइक कीन ॥
ग्रेह कपट्ट सु मंडि कै। करि जु निवंतन कीन ॥ छं० ॥ १०८ ॥
बरन राव रावन्न ढिंग। बर चालुक सु थान ॥
समर सिंघ चहुआन कों। न्योतन को बलवान ॥ छं० ॥ १०९ ॥

यहां एक एक मकान में पांच पांच शस्त्रधारी नियत करके कपट-चक्र रचना।

कवित्त ॥ एक ग्रह बिच बीच। सुभर [2]सन्नाहति पंचै ॥
पंच घट्टि पंचास। बीर अंबी रज संचै ॥
तक्क लोह सह दीन। करै चालुक सु चल्लै ॥
आषेटक चहुआन। समर रावर बर मिल्लै ॥
भोजन्न भंति रस बीर बर। बर प्रबोध ग्रह दिसि चलिय ॥
मन तन्न सुष्ष मिट्ठै सघन। सुबर बीर संगह हलिय ॥छं०॥११०॥

हाड़ा राव का पृथ्वीराज और समर सिंह से मिल कर शिष्टाचार करना।

दूहा ॥ आज हनंदे पाप बर। ग्रह बड्डे बड़राइ ॥
समरसिंघ चहुआन मिलि। दुष्ष हनंदे आइ ॥ छं० ॥ १११ ॥

कवि का हाड़ाराव पर कटाक्ष।

बर प्रमान ग्रह ग्रेह कै। भेद चूक तिन जानि ॥
घालि पिटारी उरग कों। मेल्है को ग्रह आनि ॥ छं० ॥ ११२ ॥

पृथ्वीराज को नगर में पैठतेही अशकुन होना।

गाम वाम पैसत न्त्रपति। बन न्त्रप बोलत सद्द ॥

---

* इस प्रवन्ध में चालुक शब्द से सारंग राय से ही अभिप्राय है।

(१) को. मो.-धाइक। (२) मो.-सन्नाहित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फेरि बीर दष्षिन भयौ। बैरी करन निकंद ॥ छं० ॥ ११३ ॥

ज्योनार होते हुए वार्तालाप होना।

करिय सबर मनुहार न्रिप। चित्त धरं धरकत्त ॥
भोजन पिधि विधि सकल भय। अकल अपूरब बत्त ॥ छं० ॥ ११४ ॥

उसी समय किले के किवार फिर गए और पृथ्वीराज पर चारों ओर से आक्रमण हुआ।

कवित्त ॥ दै किपाट चिहुं कोद। राज मुक्यौ सु मंझ ग्रह ॥
ठाम ठाम सब सथ्थ। सूर सामंत सथ्थ रहि ॥
घोरंधार विहार।। बिपन बर बर बन मुक्किय ॥
संझ सपत्ते राज। चूक चालुक्क सलुक्किय ॥
प्रथिराज सथ्थ सामंत सह। बर षवास लोहान भर ॥
बर बंघ उभै सेवक चिगट। समर काज उम्भौ समर ॥छं०॥११५॥

दूहा ॥ तकि बकि उट्ठे [1]सुभर। चंपे चालुक राइ ॥
हाइ हाइ मची समुष। बकत बीर प्रथिराइ ॥ छं० ॥ ११६ ॥

सारंगदेव के सिपाहियों का सबको घेरना और पृथ्वीराज के सामन्तों का उनका साम्हना करना।

कवित्त ॥ चिहूं कोद बर सूर। तेग कट्ठी सु हकि कर ॥
बज्र कट्ठि कुंडली। करिय मंडली रजं फिरि ॥
लहि न और अवसान। कढ़ी बर [2]अभ्भि सु सस्सी ॥
झरि चालुक सब देह। सिरह बट्ठी मन हस्सी ॥
कैधूं दुबड्डि बंदर सिरह। हलधर हल सिर झारयौ ॥
सामंत सट्ठि ग्रह कूदि कैं। फिरि पारस अरि पारयौ ॥छं०॥११७॥

रावल जी और भीम भट्टी का द्वन्द युद्ध।

रावगीन बर समर। भीम भट्टी जु कंध परि ॥

(१) ए. कृ. को.-समर। (२) ए. कृ. को.-आसि असे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेग हथ्थ झकझोर । बीर लिन्नों सु बथ्थ [1]भरि ॥
दुतिय घात आघात । घाइ [2]अग्गा बर बाहै ॥
कमल पंति दंती । समूह दारुन जल गाहै ॥
घट घाव भंग भेदै नहीं । चीकट जल घट बूंद जिम ॥
आहुट्ट उग्र साहस करिय । पच तरोवत अरिन तिम ॥छं०॥११८॥

पृथ्वीराज का *नागफनी से शत्रुओं को मारना ।

दूहा ॥ नागमुषी चहुआन लिय । अरिन करन्न सु दाह ॥
[3]हद्द नंषि उच्चाइ अरि । ज्यों कल बंधि बराह ॥ छं० ॥ ११९ ॥

घोर घमसान युद्ध होना और समस्त राज्य महल में खरभर मच जाना ।

मोतीदाम ॥ रन बीर रवद्द कहै कवि चंद । सु मोतिय दाम पयं पय छंद ॥
कढ़ै बर आवध बज्जत तूर । उठे परसद्द महल्लन मूर ॥
छं० ॥ १२० ॥
नचै बर उट्ठि धरं धर स्रूर । करै हक देषि उससि करूर ॥
जु तक्कत अच्छर जालिन मझ्झि । रही तिन मभ्भ सुकीव समुभ्भ ॥
छं० ॥ १२१ ॥
दिषी दिषि [4]सुक्किव अच्छरि जुथ्थ । उपावहि [5]मत्त जु सुंदर तथ्थ॥
उपावत मत्त सु छोड़न घट्ट । चलंत है विझ्झि अगम्मनि वट्ट ॥
छं० ॥ १२२ ॥
[6]अपज्जस कित्ति तज्यौ अस राइ । चल्यौ अप अग्ग छुड़ावत जाइ ॥
बरं कुलटा छँडि छंडि सु केउ । झुझ्झै उल कत्ति तज्यौ करि पेउ ॥
छं० ॥ १२३ ॥
जु पीय वियोग सह्यौ नह जाइ । चली बर नारि अमग्गन धाइ ॥
लरंतह भूपति भान कुंआर । करै मनु [7]वज्जय बज्र प्रहार ॥
छं० ॥ १२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-परि । (२) मो.-लग्गा ।
(३) मो.-हट्ट नंषिड । * 'नगफनी' एक शस्त्रविशेष । (४) मो.-सुकवि,कुक्कवि ।
(५) ए. को. मंत । (६) ए.- अयंजस । (७) मो.-बजूह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लरै भर चालुक चंपत घट्ट। सचीरह नारि अगंम सुभट्ट॥
म्रिगं म्रिग लज्जन दच्छन जाइ। भजै क्रम स्वर [1]चियं गय पाइ॥
छं०॥१२५॥

कढ़ी बर तेग लग्यौ ग्रह धन्न। उड़ै बर मग्ग अलग्ग [2]क्रसन्न॥
सु उज्जल छीह चल्यौ रुधि छेदि। मनों जल गंग सु भारति भेदि॥
छं०॥१२६॥

तजै जर जम्म भिदै रवि जाइ। परै धर मुत्ति जु स्वरन आइ॥
॥छं०॥१२७॥

रामराय बड़ गूजर का हाथी पर से किले के भीतर पैठ कर पारस करना।

कवित्त॥ बर बड़ गुज्जर राम। कूह वज्जिग बर धायौ॥
पीलवान अरियान। [3]पील अरि पूर लगायौ॥
नारिगोरि सा बात। तीर जज जोर सु बट्ठी॥
मीन रूप रघुवंस। पूर सम्हौ अरि चट्ठी॥
कल मलिनि कलिनि कलि कलन कल। लोह लहर सम्हौ हली॥
अरि घरा फुट्टि बर [4]धार सों। सुमन लोह उड्डै मिली॥छं०॥१२८॥

कविचन्द द्वारा "युद्ध" एवं सारंग देव के कुकृत्य का परिणाम कथन।

पंच क्रमन दस हथ्थ। [5]लुथ्थि पर लुथ्थिय हुट्टिय॥
न को जियत संचयौ। न को जुझ्झयौ बिन षुट्टिय॥
कोन जम सु जुझ्झवै। वैर मंगै सु पुव्व अब॥
व्याज तत्त अप्पीय। मूल अप्पयौ कुटँब सब॥
अदिहार बीर चालुक्क कौ। नको षेत बिन मुक्कयौ॥
संभाग बीर चहुआन कौ। सबै सध्ध झोरी कियौ॥छं०॥१२९॥

(१) ए. कृ. को.-त्रियंअग (२) ए. कृ. को.-सक्रन्न। (३) ए.-पीर।
(४) ए.-धरा। (५) मो.-"लोथि पर लोथ"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पज्जून राय के पुत्र कूरंभराय का बड़ी वीरता के साथ मारा जाना ।

कवित्त ॥ [1]सुत पज्जून नरिंद । बीर कूरंभ नाम हर ॥
अस्त बस्त अरु सस्त । टूक लभ्भै न ढुंढ धर ॥
बिहत बीच अरु षंड । एक [2]उग्गरि षँडेक भय ॥
कवि आयौ गुर तीय । नभ्भ कहि सहिस अत्ति हय ॥
ढुंढंत अत्ति न सुझ्झि परै । लोह किरचि रच्यौ रह्यौ ॥
भेद्यौ राह रुपह सु रवि । बरन बीर बैकुंठ गयौ ॥ छं० ॥ १३० ॥

इस युद्ध में एक राजा, तीन राव, सोलह रावत और पंद्रह भारी योद्धा काम आए ।

कवित्त ॥ तीन राइ रजवार । सु इक्क रायत्तन सोरह ॥
रावत्तन दस पंच । सेन संभरिपति जोरह ॥
नागर चाल नरिंद । रैन [3]रावत पट्टनवै ॥
इते राइ अंगए । चूक एक्कन ठट्टनवै ॥
उहिग दार पांवार पर । पहुर तीन तुच्यौ करन ॥
आचिज्ज सूर मंडल सुन्यौ । सहु सथ्थैं [4]बंध्यौ सुतन ॥छं०॥१३१॥

रेन पवांर (सामंत) की प्रशंसा ।

कुंडलिया ॥ मरन न लड्डौ तुंग तिहि । सब सथ्थई पंवार ॥
सोमेसर नंदन [5]छला । गहि गज्जे गंमार ॥
गहि गज्जे गंमार । तेग तोरिन बर जारन ॥
चूक मूक्कि चालुक्क । स्वामि कढ्यौ बर बारुन ॥
[6]है हलान हथ्थियन । रयन रायत्तन सिड्डे ॥
सह सथ्था तन ताइ । तुंग तिन मरन न लड्डे ॥ छं० ॥ १३२ ॥

रेन पंवार के भाई का सारंग को पकड़ना और पृथ्वीराज का

(१) मो.-सत । (२) ए.-ठगरि । (३) मो.-रावन ।
(४) ए. कृ. को.-मंडयौ । (५) ए. कृ. को.-कला । (६) मो.-हेसतथ्थान बंधेरन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे छुड़ा कर हम्मीर को तलाश करके उससे पुनः मित्र भाव से पेश आना।

कवित्त ॥ बंध रेन लिय रज्ज। चाइ चालुक छंडायौ ॥
ढकि सेन संभरी। हेल हम्मीर बढ़ायौ ॥
षेल षग्ग षुमान। पान जोरैं जल पीनौ ॥
सो षीची परसंग। राइ तुस्सै दल लीनौ ॥
अंकुर्‌यौ अरिन रिनथंभ सौं। सजि जद्दव बीरन बलिय ॥
रवि राह सस्सि संमुह गहन। जानि छछुंदरि अप्पलिय ॥छं०॥१३३॥

तेरह तोमर सरदार और अन्य बारह सरदार सारंग की तरफ के काम आए।

भयौ भूमि भूचाल। संष समरी आहुट्टै ॥
सजि सद्दै सिंदूर। सिंह पिंडी रवि तुट्टै ॥
तट्टे तेरह [1]तुरँव। सथ्थ बंबर बर धारी ॥
बार बार रावत्त। हस्त बर बाहर रारी ॥
अदभूत जुद्ध चहुआन किय। मिलि षुमान चल्ल्यौ षलह ॥
अजहूं सु अजब जुग्गिनि जगहि। पल संभरि पंषिन पलह ॥
छं० ॥ १३४ ॥

हुसेनखां का अमरसिंह की बहिन को पकड़ लेना और रावल जी का उसे छुड़ा देना।

कुंडलिया ॥ बंधे बर हुस्सेन। षान बल सुबर कुँआरिय ॥
रन जित्ते दुज्जनह। कोइ न मंडै रारिय ॥
कोइ न मंडै रारि। मेछ संदरी बघेरी ॥
समरसिंह सुनि क्रूह। चियं बंधत फिरि हेरी ॥
[2]धीठ षान दै आन। हद्द अहरत्तन संधे ॥
धीठ जमन हंकार। समर हेतु बर बंधे ॥ छं० ॥ १३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-तुररा। (२) ए. पीठ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रावल अमरसिंहजी की प्रशंसा और अमरसिंह का उनको अपनी बहिन ब्याह देना।

दूहा ॥ अमर बंध रष्यो अमर। अगि दीनौ बर माल ॥
जस बेली चतुरंग कौं। बरन घल्लि उर माल ॥ छं० ॥ १३६ ॥

चौपाई ॥ जसबेली [1]बरिगौ चतुरंगी। चढ़ि चौंडोल ग्रेह अनभंगी ॥
बरन राव रावल संजोगी। सु धर फेरि चाल,क्क न भोगी ॥
छं० ॥ १३७ ॥

आधी रात को समाचार मिलना कि रणथंभ के राजा को चन्देल ने घेर लिया है।

कवित्त ॥ अद्व रयनि संदेह। सद्द सावद्द कवीयस ॥
पत्यौ बीर जद्दव। नरिंद चंदेल [2]छवीयस ॥
गूड़राइ सचसलह। जुद्ध लोहं लरि बित्ते ॥
मुत्यो सेन पुब्बहि। पसार पच्छिम भरि जित्ते ॥
[3]अप्पाह अप्प बीतक बित्यौ। बंधि चंदेल सज्जै सुद्दर ॥
आवद्ध बीर मत्तौ कहर। गही गल्ह बंधी सु धर ॥ छं० ॥ १३८ ॥

षुमान और "प्रसंगराय" खीची का रणथंभ की रक्षा के लिये जाना।

गाथा ॥ जित्ताराय षुमानं। निसानें सद्दयं धायं ॥
छुट्टा रन रनथंभं। षा षग्गे षीचियं रायं ॥ छं० ॥ १३९ ॥

चौपाई ॥ षीचीराइ हमीर अवन्निय। दोइ चहुआन घरम्म भवन्निय ॥
चालुक्कां सों चूक सवन्निय। दुत्तिय दीपंता निरवन्निय ॥ छं० ॥ १४० ॥

कवित्त ॥ दूसासन अंग में। राज विहंग गति कीनौ ॥
मध्यदेश मालव नरिंद। हंसध्वज भीनौ ॥
नीलध्वज कर धरिग। विप्र बंदन संपन्नौ ॥

(१) ए. कृ. को. षरिगो। (२) ए. कृ. को.-सवीयस। (३) कृ. अप्पांह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नालिकेल तरू फूल। अनंद सौंनह सुभ किन्नौ॥
सत पच लगन लभ्भह भरिय। घरिय अठ्ठ तेरह तिनह॥
रनथंभ सेन संचरि न्रपति। करिय अवधि ताकरि रनह॥
छं०॥ १४१॥

पृथ्वीराज का रणथंभ ब्याहने जाना।

दूहा॥ आगम बीर बसंत कौ। रन जित्ते जुधवान॥
बर हंसावति सुन्दरी। चलि ब्याहे चहुआन॥ छं०॥ १४२॥

पृथ्वीराज की स्तुति वर्णन।

गाथा॥ रंग सुरंग सुदीहं। ज्यौं कुंजिन मेलयं सब्बं॥
बय रुष मुष अंकुरियं। सा मिलयं बंकुरी मुच्छं॥ छं०॥ १४३॥

दूहा॥ मुच्छ रवन्निय राजमुष। बर बंधिग सुरतान॥
तीन दिनन आवन लगन। आय सगंध पुरान॥ छं०॥ १४४॥

दोधक॥ ग्रंथहु ग्रंथ पुरान कुरानय। राज रसं बरुनौं बरु जानय॥
नीति अनीति सुभं सरसानय। लभ्भरु कित्ति लही चहुआनय॥
छं०॥ १४५॥

संपय राज स कोकिल संठिय। जानि जुवान न जानि सु पुठ्ठिय॥
गायन गाइ सुअथ्थ सु अथ्थिय। संभ्रय गानकला कल सथ्थिय॥
छं०॥ १४६॥

छंदह छंद रसे रस जानन। कंठ कला मधुरे मधु आनन॥
उद्दिम सेन उदार सुधारिय। [1]न्रज्जय रूप सरूप सुरारिय॥
छं०॥ १४७॥

दूहा॥ स्रवन रवन अरु सिष भवन। पवन चिविध तन लग्ग॥
बापी कूप [2]तड़ाक द्रुष। विधि व्रंनन कवि लग्ग॥ छं०॥ १४८॥

पृथ्वीराज का आगवन सुनकर उन्हें देखने की इच्छा से हंसावती का झरोखे से झांकना।

(१) ए. कृ. को.-नृयज्जय, नृयजय। (२) ए कृ.को.-सटाक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सा सुंदरि हंसावती। सुनि श्रोतान सुरुष्य॥
बर दिष्टा नन मानियै। बेला लग्गि गवष्य॥ छं०॥ १४९॥
सुनि आयौ चहुआन अप। गुरुजन बंध्यौ जानि॥
तब मति सुंदरि चिंतवै। भेदक गौष वषान॥ छं०॥ १५०॥

गौख में से देखती हुई हंसावती की दशा का वर्णन।

कवित्त॥ पंथ बाल पिय झंकि। सुभ्रित विंटियं सु राजै॥
मनों चंद उड़गन विचाल। मेरह चढ़ि भाजै॥
सुनिय श्रवन दै सैन। अलिन अलिमैन सरोजं॥
रति मच्छर मति काम। जानि अच्छरि सुर सोजं॥
धावंत वेस अंकुरित वपु। बसि सैसव तिन बेस धुरि॥
श्रोतान सुष्य दिष्टान धनि। यह कहि चलि सैसव बहुरि॥
छं०॥ १५१॥

दूहा॥ प्रथम बत्त श्रोतान सुनि। सुष पै दिषहि सलोइ॥
सच्च बात झूठी चवौ। तब जिय सुष्य न होइ॥ छं०॥ १५२॥
सुनि श्रोतान सु मन्निय। दिषि दिष्टांत सचीय॥
बीज चंद पूरन्न जिय। बधै कला मनि जीय॥ छं०॥ १५३॥

हंसावती के शृंगार की तय्यारी।

बर बेहरि देषी न्रपति। गौ न्रिप न्रिपबर थान॥
बालु सुअंबर काज कौं। बर बज्जे नीसान॥ छं०॥ १५४॥

हंसावती की अवस्था की सूक्ष्मता वर्णन।

आभूषन भूषन न्रपति। वैसँधि कहि न कविंद॥
कवि ब्रनन इह लग्गि चिय। ज्यों बृद्धत लघु चंद॥ छं०॥ १५५॥

हंसावती का स्वाभाविक सौन्दर्य्य वर्णन।

कवित्त॥ बर भूषन तजि बाल। सुबर मज्जन आरंभिय॥
सोइ छबि बर दिष्यनह। कोटि (१)ओपम पारंभिय॥

(१) मो.-उपमा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर सैसव बर चंपि। कंपि चिंहु कोद झपायौ ॥
सो ओपम कविचंद। जौन्ह बूड़त नल धायौ ॥
बालपन बीर बर मिंच पन। रबि ससि करि अंजुरि भरिय ॥
बय बाल [1]उबीचन प्रीति जल। सैसव तें हरई करिय॥ छं० ॥१५६॥

नेत्रों की शोभा वर्णन।

दूहा ॥ बर सैसव अच्छर नहीं। जोवन जल बर मैंन ॥
बाल घरी घरियार ज्यौं। नेह नीर बुड़ि नैन ॥ छं० ॥ १५७ ॥

हंसावती के स्नान समय की शोभा।

मोतीदाम ॥ कि बाल प्रमोद सु मज्जन चंद। सुमुत्तिय दाम पयं पय छंद ॥
चटिं भिंजि बार रही लपटाइ। मनौ दिढ़ सुक्क लग्यौ ससि आइ ॥
छं० ॥ १५८ ॥
बि ओपम दै बरनै कविराज। द्रवै ससि रीस दसं मदु आज ॥
बहै जल भेदि सु कुंकम बार। तिनं उपमान लहै कवि चार ॥
छं० ॥ १५९ ॥
जु राहय चास पियै विष सोम। द्रवै मुष चंदह मत्तह भोम ॥
करैं बर मज्जन सज्जन नारि। धरैं धन धारत संत सँवारि ॥
छं० ॥ १६० ॥

हंसावती के शरीर में सुगंधादि लेपन होकर सोलहो शृंगार और बारहो आभूषण सहित शृंगार की उपमा उपमेय सहित शोभा वर्णन।

नराच ॥ कियं सुरंग मज्जनं। नराच छंद रज्जनं ॥
सुगंध क्रेस पासयौ। बिहथ्थ हथ्थ भासयौ ॥ छं० ॥ १६१ ॥
उपम्म जीस साधयौ। बिरंचि लेष बाधयौ ॥
जु बुद्धि रासि भासयौ। सजीवता प्रगासयौ ॥ छं० ॥ १६२ ॥

(१) ए. कृ. को.-उलीचन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१]जु केस मुत्ति संजुरे । ससी सराह दो लरे ॥
मनीस बाल साच ज्यौं । कि कन्ह कालि नाच ज्यौं ॥छं०॥१६३॥
घरी नबैन कथ्थयौ । जु कन्ह कालि मथ्थयौ ॥
तिलक्क भाल भासयौ । भलक्क काल साचयौ ॥ छं० ॥ १६४ ॥
विधार गंग पावयौ । जु तिथ्थराज आसयौ ॥
द्रसंत सोमता वरं । कलीन भद्र सावरं ॥ छं० ॥ १६५ ॥
सुभाव वान [२]बाढ़यौ । सुराह कंपि [३]ठाठयौ ॥
सु पट्टि बाल ठानयौ । सु राह रूप जानयौ ॥ छं० ॥ १६६ ॥
उपम्म नेन ऐनसी । मनौं कि मीन मैनसी ॥
कवी [४]निसंक जानयौ । उपम्म चित्त मानयौ ॥ छं० ॥ १६७ ॥
भवन्न जीव छंडयौ । ससीम रूप मंडयौ ॥
उपंम बिंब उग्गनं । कमल्ल जासु सुम्मनं ॥ छं० ॥ १६८ ॥
रुलंत मुत्ति सोभई । उपम्म अत्ति लोभई ॥
अग्रत्त तार विच्छुरी । दु चंद अग्ग निक्करी ॥ छं० ॥ १६९ ॥
सु तारि हंस सामरं । अनेक भेस तामरं ॥
विभास रूप जामरं । सु चंद चित्त साहरं ॥ छं० ॥ १७० ॥
रतन्न बिंब जानयं । सु चंदबी प्रमानयं ॥
चिवल्लि ग्रीव सोभई । जु पोति पुंज [५]लोभई ॥ छं० ॥ १७१ ॥
ससीरु राह छंडि कैं । असंन बैठि मंडि कैं ॥
डरं हरा विसाल यौ । कि ईस दीप मालयौ ॥ छं० ॥ १७२ ॥
उरं चिअंग जित्तयौ । जु सुक्क बग्ग पंतयौ ॥
कि काम बीर भंजयौ । दहत्ति ग्रेह रंजयौ ॥ छं० ॥ १७३ ॥
उपंम ईस [६]कुच्चयौ । अनंग नीति रच्चयौ ॥
रोमंग तुच्छ राजयं । उपम्म ता विराजयं ॥ छं० ॥ १७४ ॥

(१) मो.-सु । (२) मो.-बाढ़कौ । (३) मो..ठाढ़कौ ।
(४) ए. कृ. को.-संक ।
(५) मो.-लुम्भई । (६) ए.-चक्कयौ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उरज्ज पच काम को। लिषै जोवंत वाम कौ॥
कटी अलप्पता ग्रही। मनों कि रिद्धि रंकई॥ छं०॥ १७५॥
कि सोभ द्वै न्रपं रही। तुला कि दंडिका कही॥
रुलंत छुद्र घंटिका। सदंत सद्द दंडिका॥ छं०॥ १७६॥
जु जेहरी जराइ की। घुरंत नद्द पाइ की॥
नितंब अद्व तुंबियं। प्रबाल रंग [1]षुब्बियं॥ छं०॥ १७७॥
कि काम रथ्थ चक्कए। चलंत एड़ि वक्कए॥
उलट्टि रंभ जंघनं। करी सु नास पिंडनं॥ छं०॥ १७८॥
उपंम रंग राजही। जलज्ज भांति साजही॥
बसन्न सेत बन्नयं। उपम्म कव्वि भन्नयं॥ छं०॥ १७९॥
मनों कि दीय अंभयं। सुभंत मध्य रंभयं॥
दसन्न जोति दामिनी। मनों अनंग भामिनी॥ छं०॥ १८०॥
सुगत्ति हंस लीनयं। सिंगार सोभ कीनयं॥
झंकार झंजनं झनं। मनों कि सोर भद्दनं॥ छं०॥ १८१॥
सु कासमीर रंगयं। जु एड़ि जावकं लयं॥
मनों कि हंस सावकं। चलै बिद्रुम्म भावकं॥ छं०॥ १८२॥
[2]जरित्त मुद्दका नगं। सु जोति अंगुली लगं॥
जुवास रास चासयं। मनों हुतास पासयं॥ छं०॥ १८३॥
[3]दिपंति नष्ष बीसयं। रवी ससी सुरीसयं॥
नव ग्रहीय पुच्चिया। उपम्म कब्बि बंचिया॥ छं०॥ १८४॥
जु चंद राह षेदि कै। कि हस्त चंद भेदि कै॥
उभै तिषट्ट भूषनं। सजंत मेटि दूषनं॥ छं०॥ १८५॥
चलंत वाम कोड़यं। तजंत हंस होड़यं॥
उमग्गि प्रिथ्थि देषनं। अलीन मझ्झ पेषनं॥ छं०॥ १८६॥
सु सैसवं लगंत रष्पि। मुक्कियं दरस्स दिष्पि॥
॥ छं०॥ १८७॥

(१) मो.- षुम्भियं,को.-पुब्बियं। (२) मो.-जरित। (३) मो.-दियत्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसावती के वस्त्र आभूषणों की शोभा वर्णन।

हनूफाल ॥ सुर मनौं कौकिल जोड़। अवजंघ रंचन होइ ॥
अंबर कमल्ल पुटन्न। रितु देषि सीत बसन्न ॥ छं० ॥ १८८ ॥
इह संधि रंभ दसन्न। बनि रवनि प्रीत बसन्न ॥
कसि कासमीर सुरंग। झंकार पिंड अभंग ॥ छं० ॥ १८९ ॥
नग जरित मुद्रिक पानि। रवि परी होड़ सुजानि ॥
नौ ग्रहिग्र पुंचिग्र हथ्थ। उपम्म चंद सु कथ्थ ॥ छं० ॥ १९० ॥
सोई चंद उप्पम षेदि। कै हँसत हिमकर भेदि ॥
बर एड़ि मंडि सुरंग। जनु प्रभा रवि ससि संग ॥ छं० ॥ १९१ ॥
षट दून भूषन सज्जि। सजि सजत सैसव लज्जि ॥
नग मुत्ति जेहर जोड़। गति हंस तजहित होड़ ॥ छं० ॥ १९२ ॥
बर चरन लगि चिंपयान। पय परस चलि चहुआन ॥
कर वाम [1]पान सलाइ। बे काज क्रम अगदाइ ॥ छं० ॥ १९३ ॥
तव लग्गी सैसव रष्षि। मो [2]कंत दरसन दष्षि ॥ छं० ॥ १९४ ॥

हंसावती के केशरकलित हाथ पावों की शोभा वर्णन।

कुंडलिया ॥ बर कुंकुम सब सथ्थ रंगि। बहु सथ [3]नृप बर सथ्थ ॥
सो ओपम बर राज लहि। कबि बरनन लहि कथ्थ ॥
कवि बरनन लहि कथ्थ। फिरिय गुर राजहि कथ्थैं ॥
मन ससितर काम की। प्रात उग्गत रवि सथ्थै ॥
[4]सुभ्रत रवि ससि रूप। एक असु जीव काम तर ॥
पंचानन तिन होइ। पंच प्रथिराज देव बर ॥ छं० ॥ १९५ ॥

पृथ्वीरज का विवाह मंडप में प्रवेश।

दूहा ॥ वंदन वर आयौ नृपति। तोरन संभरिवार ॥
प्रीति पुरातन जानि कै। कामिन पूजत मार ॥ छं० ॥ १९६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-यान। (२) मो.-कहन। (३) मो.-उप।
(४) मो.-कै सुभूत ससि रूप।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज के रत्नजटित मौर (व्याह मुकुट) की शोभा और दीप्ति वर्णन।

कुंडलिया ॥ नग मग जटित सुमेर सिर। तन तर वर मन सोभ ॥
पंच उभै ग्रह चंद सिर। संग सपत्तौ लोभ ॥
संग सपत्तौ लोभ। जुड्ड तट वर अन रुक्की ॥
रहै न्रपति दै आन। नैन चितवत फिर मुक्की ॥
षंचन पष चिमनिय। ति नर तरुनी मन [1]लग्गा ॥
रन रावत जिम रेह। सूर भंगन ग्रह नग्गा ॥ छं० ॥ १९७ ॥

हंसावती का सखियों सहित मंडप में आना।

चौपाई ॥ सत संग किन्न अवंत अली। नंषत बर अचित [2]पाय चलि ॥
पिय तन देषि रुप रस [3]सानि। पंषि मनौ नव पंजर आनि ॥
छं० ॥ १९८ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती का सौन्दर्य्य देख कर प्रफुलित होना।

कवित्त ॥ बंदि सु बर चहुआन। मंझ ग्रह काज सु लिन्नौ ॥
बाल रूप अवलोकि। महुर महुरं रस पिन्नौ ॥
द्रिग सौं द्रिग संमुहे। पीय उमगे द्रिग ओरन ॥
सो ओपम प्रथिराज। चंद ज्यौं चंद चकोरन ॥
नव भमर पिठ्ठ वर कमल में। कै मकरंद भुलावहीं ॥
आनंद उगति मंगल अभिष। सो कवि बरनन गावहीं ॥छं०॥१९९॥

पृथ्वीराज का हंसावती के साथ गठबन्धन होना।

दूहा ॥ वर अंचल सोमेस चित। बंधि बीर बर नारि ॥
देवक्रम दुज क्रम कहौ। सो बर बीर कुआरि ॥ छं० ॥ २०० ॥

संहावती के अंग प्रत्यंग में काम की अलौकिक लालिमा का वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-भग्गा मग्गा।
(२) ए. कृ. को.-पिय।
(३) मो.-मानी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ बैनि नाग लुट्यौ। बदन ससि राका लुथ्यौ ॥
नैन पदम पंषुरिय। कुंभ कुच नारिंग छुथ्यौ ॥
मद्धि भाग प्रथिराज। हंस गति [1]सारंग मत्ती ॥
जंघ रंभ बिपरीत। कंठ कोकिल रस मत्ती ॥
ग्रहि लियौ साज चंपक बरन। दसन बीज दुज नास बर ॥
सेना समग्र एकत करिय। काम राज [2]जीतन सुधर ॥छं०॥२०१॥
दूहा ॥ कवि लघु लघु बत्ती कही। उकति चंद नन छेव ॥
मनों जनक बंदन कवन। जानु कि बंदै देव ॥ छं० ॥ २०२॥

इसी समय दिल्ली पर मुसलमान सेना का आक्रमण करना और ५० सामंतों का उस आक्रमण को रोकना।

कवित्त ॥ चढ्ढिग सब सामंत। चूक सब सेन सु दिष्षिय ॥
षट दस बर सामंत। मरन केवल मन लिष्षिय ॥
षंत निसुरत्ति समूह। जूह दैवान सु धाइय ॥
मार मार [3]उचरंत। मार कहि समर सु साइय ॥
इत उतह सब्ब सामंत रजि। तिन अरि तन तिन बर करिय ॥
मानव न नाग दिन आइ जुध। सुबर जुद्ध रत्ती करिय ॥
छं० ॥ २०३ ॥

पृथ्वीराज के सामंतों और मुसलमान सेना का युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ सूर सम्हें परे, सेन भग्गे लरे। काफरं विड्डुरे, लोह मची झरे॥
छं० ॥ २०४ ॥
पारसं तं फिरं, सूर हक्के करं। कढ्ढियं षंजरं, नंष्षि लोहं करं ॥
छं० ॥ २०५ ॥
सूर बथ्थं परं, मोह मोहं परं। कूक बज्जी षरं, लोह वडप्फरं ॥
छं० ॥ २०६ ॥

(१) ए. कृ. को. सारद। (२) मो.-जीपन।
* यद्यपि यहां पर दिल्ली का कोई जिक्र नहीं है परंतु यह बात आगे छ० २१० में खुलती है।
(३) ए. कृ. को.-उचंत, उच्चंत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्ग उट्ठी भरं, बीर बाजं ढरं। श्रोन रतं [1]धरं, अंत आलुभ्झरं॥
छं० ॥ २०७ ॥

ह्वर जा उच्चरं, रारि उग्गं जरं। लज्ज पञ्च परं, लोह लोहं करं॥
छं० ॥ २०८ ॥

बास साजं भरं, रैनि अद्धी बरं। बाज कुट्टी भरं, षान भारा भरं॥
छं० ॥ २०९ ॥

ढाह मीरं धरं, मभ्भ रोसं ररं। सानि सामं नरं, घाइ घुम्मे षरं॥
छं० ॥ २१० ॥

दूहा ॥ कन्ह बंध मभ्भें रह्यौ। रहे सु जैत कु आर॥
द्वै मुक्किव सामंत गौ। उप्पर मेर पहार॥ छं० ॥ २११ ॥

दूसरे दिवस प्रातः काल सुरतान खां का आक्रमण करना।

कवित्त ॥ प्रात षान सुरतान। सेन [2]बंधी अहसारी॥
बर सोभै कविचंद। चंद अष्टमि आकारी॥
अर्द्ध चंद्र महमूंदि। अर्द्ध षुरसान षान करि॥
मध्य भाग रुस्तम्म। सेन षुरसान जित्ति [3]वरि॥
दल धरकि भरकि सिप्पर लई। अरुन दीय उद्दिम सुभर॥
चिचंग राइ रावर समर। चढि मंग्यौ [4]बंधव अमर॥छं०॥२१२॥

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं की चढ़ाई के समय की शोभा वर्णन।

चोटक॥ सारंग चह्यौ कविचंद भनं। रन नंकिय बीर नफेरि घनं॥
छननंकहि घंटन घंटन की। तन नंकहि भेरि भयंटन की॥
छं० ॥ २१३ ॥

घननंकहि घुघ्घर पष्ष रनं। ठननंकहि आइ प्रसद्द घनं॥
[5]बर चिक्किय चक्कि मिले पलटे। दिषि घुघ्घुर रेनिय अस्स घटै॥
छं० ॥ २१४॥

(१) मो.-भरं। (२) मो.-बन्धे।
(३) ए. कृ. को.-बर। (४) ए. कृ. को.-बंध्यौ। (५) ए. कृ. को.-"वर चाक्किय"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमके तम तेज पहार उठे। बहुरे किधु पावस अभ्भ बुठे॥
कविचंद सु अंसुय [1]साव धरे। चय [2]नेत्त जु गंग समीर घरे॥
छं० ॥ २१५ ॥
दोउ दीन अनंदिय तेग छुटी। सु बनै चहुआनय सार टटी॥
छं० ॥ २१६ ॥

तब तक पृथ्वीराज का भी युद्ध के लिये तैयार होना।

दूहा ॥ उट्ठि ढाल चहुआन बर। बढ़ि अवाज परवान॥
सुनि बरनी सों रत्त तिन। सत छुट्टे बर थान॥ छं० ॥ २१७ ॥

थोड़ी ही देर युद्ध होने पीछे मुसलमान सेना के पैर उखड़ गए।

कवित्त ॥ धुअ्र मुष रावर समर। षान निसुरत्ति षेत तजि॥
घरी अद्ध बजि लोह। सबै चतुरंग सेन भजि॥
जुद्ध कंध कुल नास। षान निसुरत्ति अहुट्टे॥
चामर छच रषत्त। तषत है वै बर लुट्टे॥
प्रथिराज बीर रावर समर। मिलि [3]नषिच पति ग्रहन गिरि॥
धर लज्जि लज्जि आहुट्ठ पति। तीन वार अट्ठंग गिरि॥छं०॥२१८॥

युद्ध के अन्त में लूट में एक लाख का असवान हाथ लगना और पीरोज खां का मारा जाना।

जीत लियौ चतुरंग। चारु चतुरंग समोरी॥
[4]एक लष्य प्रम्मान। ढाल गोरी ढंढोरी॥
षां पिरोज परि षेत। षेत को का उप्पारी॥
समर सिंघ रावर। नरिंद झोरी करि डारी॥
बज्जे निसान जयपत्त के। बिन सुरतानै लुट्टि दल॥
नीसान नद्द उनमद्द के। चामर छच रषत्त तल॥ छं० ॥ २१९ ॥

(१) मो. साच। (२) मो.-नेत्र। (३) ए. कृ. को.-नछित्र।
(४) मो.-" एक लष्ष पम्मर प्रमांन " ए. कृ. को.-एक लष्ष पष्षर प्रमांन।
(५) मो.-" बिन सुरतान सु लुट्टि छल "।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का सब सामन्तों को हृदय से लगा कर कहना कि मैं आपका बहुत ही अनुगृहीत हूं।

मिले आइ चहुआन। सब्ब सामंतन मन्ने॥
उच्च भाव आदर सु। दीन उर चंपि सु लिन्ने॥
नैन चैन नन बैन। हीन सुषन्न कढ़ि दोऊ॥
बर समान तुम राज। तेग राजन विधि कोऊ॥
रष्षयौ गाम रतिवाह दै। तुम कंधें ढिल्ली नयर॥
चिचंग राव रावर समर। [1]पाघ सीस बंधी अमर॥छं०॥२२०॥

पृथ्वीराज का रावल समर सिंह के पौत्र कुंभा जी को संभर की जागीर का पट्टा लिखना।

दूहा॥ [2]तेजसिंह सुत समरसी। तिह सुत कुंभ नरेस॥
संभरि संभरि वार दै। दौहित्तौ सोमेस॥ छं० ॥ २२१॥

समर सिंह का उस पट्टे को अस्वीकार कर लौटा देना।

कवित्त॥ तब चिचंग [3]नरेस। षिझवि नंष्यौ बर पट्टौ॥
तुम ढूंढा कुल ढुंढ। सु मनि ऐसी मति ठट्टौ॥
हथ्थ नीच करतार। हथ्थ उप्पर गजत्त गुर॥
हम आहुट्ट मझामि। स्वामि कहिजै सु [4]उंच बर॥
कालंक राइ कप्पन [5]विरुद। कुलह कलंक न लग्गयौ॥
दग्यौ न हाथ [6]चित्तौर पति। हम जगत्त सब दग्गयौ॥छं०॥२२२॥

---

(१) कृ.-पाय।

(२) छंद २२१ की प्रथम पंक्ति का पाठ ए. कृ. को.-तीनों प्रतियों में समान है जिसका अर्थ होता है कि "समरसी का पुत्र तेजसी तिसका पुत्र कुम्भकरन जो कि पृथ्वीराज का भांजा था किन्तु मो.-प्रति में तेज सिंह चित्रंग सुत नाम भरिग भर वेष" पाठ है, इससे उक्त अर्थ में भेद पड़ता है।

(३) मो.-नरिंद। (४) मो.-चंद। (५) ए. कृ. को.- बिरद्ध।

(६) कृ.-चीतौर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर सिंह का चित्तौर जाना ।

दूहा ॥ ग्रेह गयौ चित्रंग पति । गौ ढिल्लिय न्रप छेह ॥
मास बीय बित्ते न्रपति । मतौ मंडि न्रप एह ॥ छं० ॥ २२३ ॥

पृथ्वीराज का हंसावती के प्रेम में मस्त हो जाना ।

विमल विलोकन कोक रस । सोक हरन सुष सत्त ॥
समुष हंस प्रभु नीलप्रभ । विभ्रम वर द्रिग मत्त ॥ छं० ॥ २२४ ॥

हंसावती के प्रथम समागम का वर्णन ।

भुजंगी ॥ द्रिगं मंच मंचं सुमंचं प्रमानं। वियं केलि करनी विधानं सुजानं॥
निजं नेह नीलं सु कीलं कलानं । मुषं मूल बिप्पं सु देवं सधानं ॥
छं० ॥ २२५ ॥

मयं मोह मंडं सु बंदीन दानं । हयं हेम हट्टं पताका सु थानं ॥
[1]सु श्रंषं च सोभा स सोभा स मंचं । [2]छयं छंद जोतीय संसाइ तंचं॥
छं० ॥ २२६ ॥

पियं पेम तंचं सु कंतं सु थानं । सुराया बिहंगं सु पुची प्रमानं ॥
लियं ग्रेह सज्ज्या प्रथंमं अलीनं । मनों मत्त मातंग [3]बंध्यौ कलीनं॥
छं० ॥ २२७ ॥

बचं अंकुसं हेट हेटं चलावै । दुरै देषि जालंतरे फेरि नावै ॥
छुट्यौ सैसवं लज्ज तें प्रेम आसं । फिरे जानि बाला तनं प्रेम आसं॥
छं० ॥ २२८ ॥

सया हंस हंसावती नील थाहं । कवी केलि कंठे थकी सच्च स्याहं॥
उरं अंत घोरं विवाहं विरोरं । कला केलि बट्टी विहानं सजोरं ॥
छं० ॥ २२९ ॥

दनौ देव ज्यौं आनि सहान सेजं । सदा स्वेद षेदं हुओ प्रात हेजं॥
.... । .... ॥ छं० ॥ २३० ॥

---

(१) कृ. को.-सुयं । (२) मो.- " छय दुत्तिय छंन्द छम्माय तंत्रं ।
(३) मो.-बन्धे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुग्धा हंसावती की कोक कला में पृथ्वीराज का मुग्ध हो कर कामान्ध वृषभ की नाईं मस्त होना।

*कवित्त ॥ अगह गहन रमि रमन। रवन रमि रवन सु छुट्टिय ॥
दहिय [1]वदन सहि रहिय। सरस रस सौर सु लुट्टिय ॥
महिय लहिय नहिं नहिय। [2]हड्य हय हयह यथा [3]हह ॥
सहिय सेज कह कहिय। चंषि चिंचनिय सन्न यह ॥
कामंध अंध मुद्दह द्रषभ। भ्रमन भ्रमावह तिलक सन ॥
इह अर्थ सर्थ जानन सु गह। अगह मुगद्धन मन हसन ॥ छं० ॥ २३१ ॥

हंसावती के मन का पृथ्वीराज के प्रेम में निर्म्मल चन्द्रमा की भांति प्रफुल्लित हो जाना।

दूहा ॥ मन हिय रत्तन मुगधनिय। रमि राजन निय नेह ॥
नमिय निसा कर [4]म्रग रथिय। निसि न्रिम्मल दिय छेह ॥ छं० ॥ २३२ ॥

शनै शनैः हंसावती के डर और लज्जा का ह्रास होना और उसकी कामेच्छा का बढ़ना।

छंद कमंध ॥ न्रिम्मली नेह नासा। दिट्ठ एन लग्गी सु चासा ॥
छेहंग कामी रसा। संचान भग्गी चसा ॥ छं० ॥ २३३ ॥
हंसावती संकुची। दासी प्रीति संवची ॥
†पुस्तका पढ़ि विस्तरी। कथा गाथा प्रेम बिस्तरी ॥ छं० ॥ २३४ ॥
दंत कंडक निस्तरी। हास विलास सुस्तरी ॥ छं० ॥ २३५ ॥

हंसावती के बढ़ते हुए प्रेम रूपी चद्रमा को देख कर पृथ्वीराज के हृदय समुद्र का उमड़ना।

काव्य ॥ गगन सरस हंसं स्याम लोकं प्रदीपं।
सस [5]सज बंधू चक्रवाकोपि कीरा ॥

* यह छन्द मो.-प्रति में नहीं है। (१) को.-सवद।
(२) ए.- हरय। (३) को.हय। (४) मो.-मग्गथिय। (५) मो.-समं ससं।
† इस छन्द का पाठ चारों प्रतियों में उलट पलट है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिमिरगजम्रगेद्रं चन्द्रकातंप्रमाथी ।
विकसि अरुन प्राची भास्करं तं नमामी ॥ छं० ॥ २३६ ॥
अमृतमय शरीरं सागरा नंद हेतुं ।
कुमुद बन विकासी रोहीणी जीव तेसं ॥
मनसिज नस बंधु माननीमानमर्द्दी ।
रमति रज निरमनं चंद्रमा तं नमामी ॥ छं० ॥ २३७ ॥

दिवस के समय रात्रि को पृथ्वीराज से मिलने के लिये हंसावती ऐसी व्याकुल रहती जैसी चकोर चन्द्र के लिये ।

मुरिल ॥ बंछय चंद चकोरत राजन । [1]हंसनि हंस उदै भयौ साजन ॥
बिहु निसि नेह निसाकर बढ्ढिय । कनक जेम कसि कर [2]आहुट्टिय॥
छं० ॥ २३८ ॥

गाथा ॥ उवनि फलनी फंदा । विसनी पत्त वलाकरे हथ्थं ॥
मरकति मनि भाजन्ने । परठियं पहुप सु तीयं ॥ छं० ॥ २३९ ॥

पावस का अन्त होने पर शरद का आगम और शीत का बढ़ना ।

झिल्ली झिंगुर खरी । गायन पुचीय ललित लुब्भरियं ॥
पहुकिय षंष [3]सु हासं । झलकिय सीताइ मदं मंदाइं ॥छं०॥२४०॥
किय मंडि स पुक्करियं । मैनं राइ सिरीय बंधायं ॥
पर दार चौर साही । पुक्कारे जाहु रे जाह ॥ छं० ॥ २४१ ॥

शीत काल की बढ़ती हुई रात्रि के साथ दंपति में प्रेम बढ़ना ।

पंपट करि करतारं । हंसा सयनेव हंस सह पायं ॥
निसि बड्डय अंकुरियं । कुक्कडयं [4]कंठ कल्लायं ॥ छं० ॥ २४२ ॥
अचलीय नेह ससी हर । [6]रसनह रंगी सुरंगयं देहं ॥
उवकंठय संदेसं । गावै एकंतं चित्त सलाइं ॥ छं० ॥ २४३ ॥

(१) ए. कृ. को.-हसति, हंसति । (२) ए.-आहुट्ठिय । (३) ए. कृ. को.-सहासं ।
(४) मो.-कंठक । (५) ए. कृ. को.-"अचलिय नेह से सहिए" ।
(६) ए. कृ. को.-रसरह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे मौनं करि कोकिलयं। जलधर सम एह कंठ [1]उंचत॥
बिकसित कर जल बंदे। बिकसित रमे कोक सावासी॥ छं०॥२४४॥
संग्राम गए सूरो [2]संपगे। होइ चंद्रोदए॥
विविधा काम तीयं। अवसर रत्त [3]काम लभ्भाइं॥ छं०॥ २४५॥
गाहा नक्किय तत्तो। सदानं नूपुरं उरवा॥
[4]जिह अंकुर पव्वितं। भूतं जुथ्थांइ मंग भंगुरयं॥ छं०॥ २४६॥
जोई छविना वेनं। रचया सि महिला न रूप मह कमले॥
तां नंचिय सु बियोगे। निमहं मुत्तंच जुग्ग जुग्गाए॥छं०॥२४७॥

हंसावती पृथ्वीराज की और पृथ्वीराज हंसावती की चाह में अहिर्निसि मस्त रहते थे।

प।- आरंभत चिययं। चिय आरंभ कंतं [5]चित्तायं॥
सो तिय पिय पिय पतो। मा पिमं [6]विद्दमं धामं॥ छं०॥ २४८॥
अजा [7]सन्न जो होजा। कंठायं पयो हरं फलयं॥
दीहंते सय लष्यं। हसनं रस नाय स बकियं होइं॥ छं०॥२४९॥
*जोती अहर सहाओ। उचसिया कील कंतायं॥
सो तिय अग्ग सुहाई। दिस असनी रसं नायं॥ छं०॥ २५०॥
कवित्त॥ रयनि पंच संकुलित। पंच लज्जित दुरि लोइन॥
भिरत उभय भिरि षग्ग। मग्ग लग्गिय जुर जोइन॥
[8]मिलत चतुर इक रीय। अतुर ग्रह ग्रहं [9]दद्दुर बल॥
कमल कमल मंडिय सु चित्त। नष अष [10]बष्य बल॥
आरति सोइ दइता बिछुरि। पार [11]समुद्र न नेह लहि॥
इय प्रात पतिव्रत प्रथम पहु। नवति चित्त आचंभ लहि॥छं०॥२५१॥

इस समय की कथा का अंतिम परिणाम वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-उचंती। (२) ए.-संष। (३) ए. कृ. को.-कान।
(४) ए. कृ. को.-"निद अंकुरं ए वित्त"। (५) ए. कृ. को.-वितायं।
(६) मो.-वंदयं। (७) ए. कृ. को.-सानंजं।
* यह छंद ए. कृ. को.-तीनों प्रतियों में नहीं है।
(८) मो.-माचित। (९) ए. कृ. को.-दुदुर।
(१०) मो.-चष्ष। (११) मो.-समुद्रिन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ हंसराइ [1]हंसनिय । पानि ग्रहनी ग्रह हल्लिय ॥
मालव द्रुग्ग देवास । [2]वास मुह्रत नव वल्लिय ॥
हय गय धुर धर अम्म । क्रम्म कित्ती अति दानह ॥
ता पाछे रनथंभ । प्रीति षीची चौहानह ॥
चित्रंग राइ रावर रमिय । [3]देव राज जद्दव वहिय ॥
वित्तिय वसंत रिति अभ्भरिय । अचल एक कित्ती रहिय छं०॥२५२॥

समर सिंह जी और पृथ्वीराज की अवस्था वर्णन ।

दूहा ॥ वत्त कवित्त उगाह करि । चंद छंद [4]कविचंद ॥
समर अठारह बरष दस । दिवस त्रिपंच रविंद ॥ छं० ॥ २५३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हंसावती विवाह नाम छत्तीसमो प्रस्तावः संपूर्णम् ॥ ३६ ॥

(१) ए..संसनिय । (२) मो.-वःस मुहंत नवल्लिय ।
(३) ए. कृ. को.-बेदराज । (४) मो.-कवि छंद ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पहाड़राय सम्यौ लिष्यते ।

(सैंतीसवां समय ।)

कविचंद की स्त्री का पूछना कि पहाड़राय तोंअर ने शहाबुद्दीन को किस प्रकार पकड़ा ।

दूहा ॥ दुज सम दुजी सु उच्चरिय । ससि निसि उज्जल देस ॥
किम तूंअर पाहार पहु । गहिय सु असुर नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पूछना कि पृथ्वीराज का क्या हाल है ।

कवित्त ॥ संवत सर च्यालीस । मास मधु पष्य ध्रम्मधुर ॥
चतिय दीह अहरुन्न । उदित रबि व्यंब बरन तर ॥
अलिय आल आलोल । गरुअ [1]गज्जे [2]विसम्म गन ॥
रस रसाल मंजरि । तमाल पल्लव कमल्ल मन ॥
साहाब दीन सुरतान भर । आनि द्वार ठड्डौ सु बर ॥
अष्यै ततार षुरसान षां । कहा षबरि चहुआन घर ॥ छं० ॥ २ ॥

तत्तार खां का उत्तर देना ।

गाथा ॥ उच्चरि षान ततारं । अरि वरजोर अतर अत्तारं ॥
सामंत सूर सभारं । मत्त अमित समित जमकारं ॥ छं० ॥ ३ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करने की सलाह करना ।

भुजंगी ॥ कहै साह साहाब तत्तारषानं । रचौ मंडलीं मंडि दीवान यानं ॥

(१) मो.-गज्ज । (२) ए. कृ. को.-विसंग मन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरी [1]षान दिष्षौ बरं आसमानं। [2]करौ कूंच सेना प्रकासंत भानं॥
छं० ॥ ४॥

दलं लष्ष तीनं गजं बाज पूरं। तिनं तेज तोनं करं कित्ति ख्वरं॥
अनंहद्द नीसान नद्दे कि नूरं। नचे भूत बैताल मत्ते मदूरं॥
छं० ॥ ५॥

हलाहल्ल झंकार हुंकार भारौ। तुटै तेक तानं झरं ढुमि धारौ॥
करै सेन मग्गं नचै जोगमाया। घनं निंदरे चोर नंचै न छाया॥
छं० ॥ ६॥

सुरं सिंदनं सोभ सा भानं लोलं। सजे सेन राजौ रसालं सदोलं॥
रचै रंभ रंभा विमानं विमानं। जयं सद्द देवी [3]दिमानं दिमानं॥
छं० ॥ ७॥

मनों साल भंजीक तेजं प्रकारं। रची स्वामि संची रची मंडिरारं॥
धजं धूमरं सेत पीतं सुरंगे। रितं राज अग्गै मनूं फूलि [4]दंगे॥
छं० ॥ ८॥

असं बेस कंपी ढुरी चौर मज्जी। चढ़े काम फजरं पती पीत सज्जी॥
निहारं विहारं उपं हार हारं। बरें अग्रसेना मध [5]ब्रत्त पारं॥
छं० ॥ ९॥

रचे तुंड तुंगं तियं एक नैनं। सजे ताल वैताल सिंदू सबैनं॥
बनै अच्छरी कच्छि विम्मान गैनं। पतं जुग्गिनी पानि इच्छंत रैनं॥
छं० ॥ १०॥

नचै रंग नारद्द मंडै अनूपं। चमू च्यारि भारं भरं सद्दि रूपं॥
अनी कोर आकार आकृत्ति नूपं। बढ़ी भाग पथ्थी पयो उंच ओपं॥
छं० ॥ ११॥

(१) ए. कृ. को.-पान। (२) मो.-करौ कूच सेनाइ सासंत भानं।
(३) ए. कृ. को.-विमानं विमानं। (४) मो.-हंगे।
(५) मो.-आत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महौ मंडि माया रहै लोपि मालं। षिले [1]षग्ग अग्गं बलं बोलि तालं॥
नवं नद्द नीसान [2]भेरी भयानं। मनों मेघ गज्जे [3]कयानं पयानं॥
छं० ॥ १२॥

दूसरे दिन गजनी राजमहल के दरवाजे पर सहस्रों मुसलमान सेना का सज कर इकट्ठा होना।

दूहा ॥ [4]तब ततार षुरसान षां। सुनौ साह साहाब॥
अरि अभंग दल सक्क रस। अमित तेज बल आब॥ छं० ॥ १३॥
अरुन बरुन उद्दित अरुन। बढ़ि प्राची रुचि [5]रूप॥
मेच्छ सामि चढ़ि सेत अस। रन दिल्ली सम भूप॥ छं० ॥ १४॥

समस्त सेना का दस कोस पूर्व्व को बढ़ कर पड़ाव डालना।

कवित्त ॥ अरुन कोर बर अरुन। बंदि साहाब साहि चढ़ि॥
दिसि प्राची दष्षिन [6]विपथ्थ। पच्छिम उत्तर बढ़ि॥
सेस भाग भै भाग। भोमि संकुचि कुकंपि निल॥
गमन सेन उड़ि रेन। गेंन [7]रवि षत्त धुंध इल॥
दस कोस थान दल उत्तरिग। घन अवाज घर रिपु [8]परिग॥
गत मेच्छ मंडि मंडल सुमति। गति सु जंग अग्गर धरिग॥छं०॥१५॥

दूहा ॥ रत निसान डग मग अरुन। जिम दीपक बसि बात॥
सुनिव चंप अति साह मन। तन विकंप अकुलात॥ छं० ॥ १६॥

अरिल्ल ॥ मिले मेच्छ मंडल भर भीरं। अतुलित पान षान संधीरं॥
उठत बयन अप अप्प समीरं। साहि [9]बढ़ौ थिर कर कंठीरं॥छं०॥१७

शहाबुद्दीन की आज्ञानुसार दीवान खास में गोष्ठी के लिये उपस्थित हुए सदस्य योद्धाओं के नाम।

(१) मो.-पग्ग। (२) ए. कृ. को.-भेभी। (३) मो.-पयानं कयानं।
(४) ए. कृ. को.-तवि। (५) ए. कृ. को.-रूपि। (६) मो.-विथ।
(७) मो.-रवि। (८) मो.-परिय। (९) ए. कृ. को.-थटौ थट्ठौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनूफाल ॥ घम घम्म बज्जि निसान। चढ़ि सेंन कंपि दिसान ॥
पहु ओर कोरति भान। भर मंडि साहि दिवान ॥ छं० ॥ १८ ॥
बर मंच षान ततार। जुरि जुद्ध सेन करार ॥
षुरसान रुस्तम षान। [1]बाजिंद मीर प्रमान ॥ छं० ॥ १९ ॥
मनसूर सेर हुजाब। जिन दान षग जम आब ॥
[2]महमंद कम्मन काल। तिन तेज अरि भै चाल ॥ छं० ॥ २० ॥
मन ज्वांद जम्मन धीर। तेजम्म षान गँभीर ॥
बेहद्द षान जिहान। निसुरत्ति आजम मान ॥ छं० ॥ २१ ॥
ममरेज से रनसिंघ। भजि जात तिन अरिभंग ॥
मुलतान षान मसद्द। भारथ्थ षान सुहद्द ॥ छं० ॥ २२ ॥
आमोद जाजन पीन। तिन हक्कि अरि तन छीन ॥
आषेट आतस मीर। सारुफ सेर गँभीर ॥ छं० ॥ २३ ॥
सुरतान [3]मंडि दिवान। बर मंच करि परमान ॥
॥ छं० ॥ २४ ॥

सभा में तत्तार खां का नियमित कार्य के लिये प्रस्ताव करना।

दूहा ॥ मिले मीर भर षान सब। रचि दिवान दरबार ॥
मंड मसूरत्ति मत्त बर। तब षुरसान ततार ॥ छं० ॥ २५ ॥

वितंड खां का सगर्व अपना पराक्रम कहना।

कवित्त ॥ मीरषान से रनवितंड। हक्किय हक्कारिय ॥
सनमुष साहि सहाब। बोलि बह बह बक्कारिय ॥
हनों सेन हिँदवान। ऐन चहुआनह संधौं ॥
अरि अरिन्न अरि भीर। हक्कि हक्कों षग [4]षंधौं ॥

(१) मो.-बाजीद। (२) ए.-महमूंद।
(३) ए.-संझि, कृ.-मांझि। (४) ए. कृ. को.-बन्धौं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गज बाज साजि जथल्ल पथल्ल। षल अंदुन भंजौं [1]भरन॥
भुअ भाष भित्त मंकोद रन। कै [2]घोरह जीवन धरन॥छं०॥२६॥

खुरसान खां का राजनीति कथन।

पद्धरी॥ षुरसान षान कहि सुनि ततार। संची सु बत्त जंपौ सु ढार॥
दल जोर तेज हिंदू अकार। बर मंच सेन रष्यौ [3]विषार॥
छं०॥२७॥
बुल्ल्यौ वितंड काली तमंकि। तम छतें जुद्ध [4]किम साह संकि॥
संग्रहौ सेनपति हिंदुराज। बंधों अषारि षल षग्ग बाज॥छं०॥२८॥
निसुरत्ति मीर जंपै सु तब्ब। तम हसे साह किज्जैं न ग्रब्ब॥
॥छं०॥२९॥

दूहा॥ रावन ग्रब्ब विनाश रज। एन सीस हयबीर॥
अप्पा कोनन उच्छयौ। कालू से रनमीर॥छं०॥३०॥

पद्धरी॥ पुनि अष्षि साहि निसुरत्ति बैन। सुरतान आन भरकान [5]नैन॥
कुहि बाज तेन चालंत पब्ब। भीषंग कंपि हैं ग्रब्ब सब्ब॥छं०॥३१॥
राई सुमेर करते न बार। [6]अल्लह सुआल ऐसो विचारि॥
बिन साह तेज बढ्ढें सु ग्रब्ब। इष्षै न ताहि अल्लह अदब्ब॥छं०॥३२॥
मनो न संक चहुआन सूर। बंधव सुमंत्र भर मंच पूर॥
बेलू विलाइ नदि बंधि वारि। बिन सेन कंक चहुआन च्यारि॥
छं०॥३३॥
* हिंदू सहस्स दस सामसंद। दल गैन लेस तन तेक कंद॥
बुल्लाइ बैनपति समर मंड। बंचै विचार सु विहान चंड॥
छं० ३४॥

बादशाह का (लोरक राय) खत्री को पत्र देकर धम्मायन के पास दिल्ली भेजना।

(१) ए. कृ. को.-सरन। (२) ए. कृ. को.-घोरहि। (३) ए. कृ. को.-विचार।
(४) मो.-क्यों। (५) मो.-दैन। (६) ए. कृ.-अलहसुआल।
*ए. कृ. को.- "हिन्दु सु हद सोमेस नंद। लग्गे न लेस तन तेक कंद"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाथा ॥ [1]बुल्लि सु दूत हजूरं। मंडे पत्रीय बीर पचायं ॥
अप्पित पान प्रमानं। कथ्थी गाथाय सूर चहुवानं ॥छं०॥३५॥

दूहा ॥ बोलि दूत चव निकट लिय। दिय सु पत्र तिन हथ्थ ॥
कहौ जाइ ध्रम्मान सों। सजि चहुआन समथ्थ ॥ छं० ॥ ३६ ॥

दूत का दिल्ली को जाना और इधर चढ़ाई के लिये तैयारी होना।

गाथा ॥ निज के वीसा रुढं। वर साहाब ढिल्लीयं ग्रासं ॥
बरति मंच मष किन्नं। गज्जीय मद्द भद्द नीसानं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ गए दूत चलि निकट चव। करि सलाम बर साहि ॥
पुर डंकिन कंकन सजन। बलि आतुर बर ताह ॥ छं० ॥ ३८ ॥

दूत का दिल्ली पहुंचना।

स्याम [2]पष्प पूरन क्रमिग। पहु जुग्गिनपुर नैर ॥
दिय कग्गर ध्रम्मान कर। बर [3]ग्रिम्मै रिन बैर ॥ छं० ॥ ३९ ॥

दूत का धम्मायन से मिलना।

गाथा ॥ दिय पत्री ध्रम्मानं। पानं गहि पाइ नाइ बर मथ्थं ॥
भर चौहान समथ्थं। सज्जौ सम साह कज्जयं वैरं ॥ छं० ॥ ४० ॥

धम्मायन का पत्र पढ़ कर बादशाह के मत पर शोक करना।

दूहा ॥ कायथ कागर वंचि कर। हायथ [4]हाय सु कीय ॥
साहि काल सुब्भर सभर। आय पहुंच्यौ दीय ॥ छं० । ४१ ॥

धम्मायन का दरवार में जा कर यह पत्री कैमास को देना।

बचनिका ॥ पत्री ध्रम्मन बाचि कैं देहु। बहुरि दरबार गएहु ॥
कैमास कों तसलीम कीनी। पत्री सु हाथ दीनी ॥ छं० ॥ ४२ ॥

(१) ए. कृ. बुल्लवि। (२) मो.-साह। (३) मो.-पथ्थ।
(४) ए. कृ. को.-मंगै। (५) ए. को. हीय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहाबुद्दीन की पत्री का लेख।

चौपाई ॥ हम तुम घरतें सौगँध कीनी। नाते ध्रम्म दुद्द हैं चीन्ही ॥
दानव देव आदि भी लग्गे। तातें बैर पुरातन [1]जग्गे ॥ छं० ॥४३॥
ज्यों ज्यों हम तुम बजिहैं [2]धार। त्यौं त्यौं सुकवि गाइहैं सार ॥
अमर नाम साहिब का सांचा। पानी पिंड षेह का कांचा ॥छं०॥४४॥
हम तुम में वंध्या अहंकार। मरदां ध्रम्म पुरातन धार ॥
मरदा अलि भारथ्था वेती। मरद मरै तब निपजै षेतौ ॥ छं० ॥४५॥

दूहा ॥ मरदां षेती षग मरन। [3]अथ्थि समप्पन हथ्थ ॥
सो सच्चा कच्चा अवर। कोइ दिन रहै सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कथा रही पैगंबरा। अरु भारथ्थ पुरान ॥
तातें हठ हजरत्ति है। सुनौ राज चहुआन ॥ छं० ॥ ४७ ॥

धर्म्मायिन का कैमास के हाथ में पत्र देना।

दिय पत्ती इह कहि सु कर। करि सलाम तिय बार ॥
साहिब तुम सन लरन कौ। आयो सिंधु उतार ॥ छं० ॥ ४८ ॥

कैमास का पत्र पढ़ कर सुनाना।

सुनि मंत्री नृप अष्षि सम। बंचि पत्त तिन बार ॥
कंच कूंच षंधार पति। आयो सिंधु उतार ॥ छं० ॥ ४९ ॥

पत्री सुनकर पृथ्वीराज का सामंतों की सभा करना।

सुनि पत्ती चहुआन ने। सम सामंतन राज ॥
बात परठ्ठिय सब भरन। अप्प अप्प [4]भरसाज ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज का उक्त पत्री का मर्म सब सामंतों को समझाना।

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। सुनौ सामंत सूर भर ॥
गज्जनेस चतुरथ्थ। विरथ आयौ सु अप्प [5]पर ॥
साज बाज मय मत्त। षग्ग बर भर उभ्भारिय ॥

(१) ए. कृ. को.- लग्गे। (२) ए. को.-धारैं। (३) ए.-हथ्थि।
(४) मो.-बल। (५) ए. कृ. को.-सुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतरि वेग नदि सिंधु। सुनिय धुनि अर उत्तारिय ॥
सज्जौ समथ्थ सामंत सब। संमर चावर डंब रन ॥
सुरतान खान खुरसानपति। दल बद्दल पावस परन ॥छं०॥५१॥

सामंतों का उत्तर देना।

तमकि राज प्रथिराज। कहै समंत सूर भर ॥
चाहुआन समरथ्थ। पथ्थ भारथ्थ चारु चर ॥
सिंधु साह गज गाह। षग्ग षंडौ पल षित्तह ॥
कर अंजुलि रिषि [1]अस्ति। चंद अचवन दल कित्तह ॥
हर हार सार संमुष समर। अमर मोह जग्यौ अमर ॥
ज्यों मान व्योम आरूढ़ [2]धरि। बनी चमू चौसर चमर ॥छं०॥५२॥

पृथ्वीराज का पच्चीस हजार सेना के साथ आगे बढ़ना।

अरिल्ल ॥ चढ्यौ राज प्रथिराज सु राजन। [3]पाव लष्य दल बल गज बाजन॥
चामर छच रषत्त निसानं। मनं घनघोर दिसान दिसानं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

कूच के समय सेना की शोभा और उसका आतंक वर्णन।

चोटक ॥ चढ़ि राज महा भर सेंन भरं। उडि षेह षुरं रुकि सूर करं ॥
बनि अच्छरि चच्छरि चारु बरं। किल [6]कौतिग भूत बेताल वरं॥
छं० ॥ ५४ ॥
मुष छंद सु चंद बरं पठियं। [4]मुष जुग्गिनि अंग वियौ गहियं ॥
सुर सद्द जयं जयरं [5]कथयं। चल चंचल सूर चढ़े कसियं ॥
छं० ॥ ५५ ॥
तल ताल करालति कूक करं। .... ॥
दोइ आइस दूत ससाहि दलं। तिन अष्षिय सेन निकट्ट कलं॥छं०॥५६॥

(१) ए. कृ. को.-अगस्ति, अगस्त। (२) ए. कृ. को.-ढरि।
(३) मो.-तीन फौज रच्चे गज बाजन। (४) ए. कृ. को.-सुख।
(५) ए.-पथयं। (६) ए. कृ. को.-कौतिक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का पड़ाव डालना।

दूहा॥ सुनि अवाज सुरतान दल। हरषि राज प्रथिराज॥
कोस पंच दुअ संवचिग। हिंदुअ मेच्छ अवाज॥ छं०॥ ५७॥

अरुणोदय होते ही पृथ्वीराज का शत्रु पर आक्रमण करना।

उदय भान प्राची अरुन। चढ्यौ राज सजि सेन॥
उर पातर कातर [1]हसे। मेच्छ पीर फर सेन॥ छं०॥ ५८॥
गाथा॥ अच्छरि कच्छिय गैनं। चैनं चवसठ्ठ गैन गोमायं॥
हर हरषे हारायं। जुड्ड सज्जाइ दो दसा दीनं॥ छं०॥ ५९॥

हिन्दू और मुसलमान दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना।

दूहा॥ मिलिवि सेन अरुन सु अनी। तनी तनी दुअ [2]दीन॥
असुर ससुर सज्जे सयन। दोउ बीरां रस भीन॥ छं०॥ ६०॥

शहाबुद्दीन का अपने सैनिकों को उत्तेजित करना।

भोटि साहि भर षान सब। पति पुच्छी इह बत्त॥
अरिय प्रचंड प्रचंड दल। करहु समर सक मत्त॥ छं०॥ ६१॥

सूर्योदय होते होते दोनों सेनाओं में रणवाद्य बजना और कोलाहल होना।

अरिल्ल॥ प्रगटित भान पयानिति पूरं। वाजिग दुंदभि धुनि सुर क्रूरं॥
चढ्यौ साहि संमर करि स्हरं। अरुन बरुन मिलि तथ्य [3]सनूरं॥
छं०॥ ६२॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर धावा करना।

दूहा॥ ढलकि ढाल बहुरंग बर। [4]गुरुत मत्त गजराज॥
झलकि नीर बपु दल चढ़िय। मनों पावस गुर राज॥ छं०॥ ६३॥

(१) ए. कृ. को.-जिसे। (२) ए. कृ. को.-दीम।
(३) ए. कृ. को.-न थूरं। (४) मो.-"गुरतम चढ़ि गजराज"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों सेनाओं के उत्कर्ष से मिलने की शोभा और यवन सेना का व्यूह वर्णन।

भुजंगी ॥ ढलक्की सु ढालं, हलक्के ति [1]ह्लरं। धमक्के धरा, नाग नीसान[2]पूरं ॥
किलक्कै सुभैरुं, बजे बाज तूरं। झलक्कैं सुनेजा धरा [3]धूम धूरं ॥
छं० ॥ ६४ ॥

बरक्के वितालं, बजै तार तालं। करै कूह कूहं, जगी जोग मालं ॥
नचै सट्ठि चारं, करै राग सिंधू। वकैं भूत प्रेतं, कठें तार तिंदू ॥
छं० ॥ ६५ ॥

मिली सेंन सेनं, टगी लग्गि [4]नेंनं। वढ़ी काल काया, चढ़ी गिद्धि गैनं॥
भरं भीर भीरं, भिरैं बीर भारं। रची अट्ठ फौजं, विचै साहि सारं॥
छं० ॥ ६६ ॥

मुषं अग्ग मंने, षुरासान अन्नी। भरं चिम्मनं, षान तेयं दिठन्नी ॥
दिसं वाम मारुफ, पीरोज सज्जे। दिसा दच्छनं, चिम्मनं जम्मरज्जे ॥
छं० ॥ ६७ ॥

अनी च्यारि पिट्ठं, अनी दोइ अग्गं। गुरं गौर तारं, फरी पाइ कग्गं॥
जग्यौ जगं जोरं, हुआै बीर सोरं। घनंनद्द नीसान, भद्दं सघोरं ॥
छं० ॥ ६८ ॥

दूहा ॥ भर सहाब सज्जिय अनी। जिवन जोर चतुरंग ॥
सुभर प्रफुल्लित वीर मुष। काइर कंपत अंग ॥ छं० ॥ ६९ ॥

हिन्दू सेना की शोभा और उपस्थित युद्ध के लिये उस के अनी भाग और व्यूह वद्ध होने का वर्णन।

भुजंगी ॥ चढ्यौ राज चहुआन कुप्यौ करूरं। बढ़ी बेद साषी चढ़ी जाग रूरं॥
ढलक्की सुढालं सु ढालं धमक्कै। करं क्तत षग्गं सु पट्टे चमक्के ॥
छं० ॥ ७० ॥

(१) ए.-निषानं। (२) ए.-मेरं, क्र.-मूरं।
(३) मो.-"धरा धूर पूरं"। (४) मो.-गैनं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घनंआगमं जानि विज्जू दमक्के । घनंघोर नीसान नादं घमक्के ॥
रची पंच [1]सेना मधे [2]मंडि राजं । गजं बाजि रोहं हयन्नार साजं॥
छं० ॥ ७१ ॥

मुषं अग्ग कैमास चावंड सूरं । सहस्सं अठं सेन गज बाजि पूरं ॥
[3]भुजा दच्छिनं भीम कन्हं किवारं । सतं तथ्य सामंत सेनं सवारं॥
छं० ॥ ७२ ॥

दिगं वाम पंम्मार आबू [4]प्रईसं । चमू च्यारी सोभं भिरी आनि सीसं ॥
[5]रसं रौद्र मंड्यौ षगं [6]षंडि जीसं । फिरैं बेक ढालं [7]दुरैं नागरीसं ॥
छं० ॥ ७३ ॥

पछं जाम जाजं दलं सिंघ साजं । सयं पंच पंचास संगी विराजं॥
दहं तीन पंचं [8]तथं पंच सज्जं । इलं लेष नंदं गनं गेन गज्जं ॥
छं० ॥ ७४ ॥

घमं घम्म नीसान रीसान बज्जं । सबद्दं [9]सु सद्दं सु सिद्दं सु लज्जं॥
चढ़े मेच्छ हिंदू मिली जुद्ध अन्नी। कथी व्यास भारथ्य सा आज वन्नी॥
छं० ॥ ७५ ॥

कुरं पंड बंध्यौ बधे आप अग्गे । इसे मेच्छ हिंदू भरं षग्ग लग्गे ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दोनों सेनाओं की अनियों का परस्पर यथाक्रम युद्ध होना।

दूहा ॥ जनुकि पथ्थ भारथ्थ भर । लगि कुर पंड प्रचंड ॥
चाहुआन दल मेच्छ दल । हक्कि हय गय झुंड ॥ छं० ॥ ७७ ॥
इत हिंदू उत मेच्छ दल । [10]रन चढ्ढे बर धीर ॥
हक्कि तेज असि बेग बढ़ि । लगे सुभर हर भीर ॥ छं० ॥ ७८ ॥

(१) मो.-फौजं । (२) ए. कृ. को.-मधं । (३) ए. कृ. को.-दिसा ।
(४) मो.-अईसं । (५) मो.-"रसं शङ्कर माडि षग षांडे जीसं" ।
(६) ए. कृ. को.-षंड । (७) ए. कृ. को.-ढलै, ढलैं ।
(८) ए. कृ. को.-मयं । (९) ए. कृ. को.-सुसज्जं ।
(१०) ए. कृ. को.-चल्ले चढ़ि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध का दृश्य वर्णन।

दंडमाल॥ मेछ हिंदू जुद्ध घरहरि। घाइ घाइ अघाय घर हरि॥
रुंड मुंडन षंड षर हर। मत्त बहुत सुरत्त भरहरि॥ छं० ॥ ७९॥
भग्ग काइर जूह भीरन। छंडि जल स्वरिज्ज धीरन॥
रुंड चढ्ढिय रचि थर हरि। रक्त जुग्गिनि पत्र पिय भरि॥छं०॥८०॥
चवत कीरति अच्छ अच्छरि। सुफटि पट्ट सुपट्ट फर हरि॥
सिद्ध स्वरन बीर जुरि जुरि। ....॥ छं० ॥ ८१॥
प्रबल पीलिय पाल सेनिय। विचलि थल दिग परै ऐनिय॥
गोम गैंन निसान नंगिय। थान थान बिवान संगिय॥ छं० ॥८२॥
भुअन भिरि भुअधार धारन। श्रोन तुच्छिय हीर झारन॥
हिंदु मेच्छ अघाइ घाइन। नंचि नारद जुद्ध चायन॥ छं० ॥८३॥
गाथा॥ नंचिय नारद मोदं। क्रोधं घन देषि सु भट्टायं॥
हर हरषिय हारं। पत्तो चंद भानं भा यानं॥ छं० ॥ ८४॥

सायंकाल होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम करना।

दूहा॥ थकि झुझ्झत संध्या सपत। सपत भान पायान॥
पहु प्राची बजि पंचजन। लह स्वझत गोयान॥ छं० ॥ छं० ॥ ८५॥

प्रातःकाल होतेही इधर से कैमास का और उधर शहाबुद्दीन का अपनी अपनी सेना को सम्हालना।

कुंडलिया॥ पहुलग्गे चामंड सुभर। अरु चिमन्न चतुरंग॥
इंद्रजीत लछिमन रहसि। बहसि बढ़ी [१]सु तुरंग॥
बहसि बढ्ढि सु तुरंग। पंच साइक भाले भिलि॥
फुनि गोरी दाहिम्म। सु हय छंडे सु बंधि कलि॥
जिम रघुपति पतिलकं। बकं कंकन कर अग्गी॥
तिम गोरी दाहिम्म। सु हय छंडे जुध लग्गी॥ छं० ॥ ८६॥

(१) मो.-चतुरंग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर्य्योदय होतेही दोनों सेनाओं का आगे बढ़ना और अपने अपने स्वामियों का जैकार शब्द करना।

कवित्त ॥ उदय भान पापान । कोर दिष्षिय दल चढ्ढिय ॥
हय गय [1]नर आररिय । सद्द पर सद्दन बढ्ढिय ॥
अच्छरि तन सच्छरिय । व्योम विम्मानह चढ्ढिय ॥
दिष्षि सूर सामंत । देव जैजै मुख पढ्ढिय ॥
हथ्थिय सुधारि हथनारि धरि । गजैनारि करनारि बजि ॥
चढि हिंदु मेछ मुह मिलि अनिय । मनों अम्भ पावस सु रजि ॥
छं० ॥ ८७ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे पर वाणों की वर्षा करना ॥

दूहा ॥ भर भीषम तीकम अमर । धनुष बान अग्रान ॥
हिंदुअ मीर सुइक्क हुअ । मीरचंद सनमान ॥ छं० ॥ ८८ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे में पैठ कर शस्त्रों की मार करना।

भुजंगी ॥ मिले हिंदु मेंछं अनी एक मेकं। [2]बजे षग्ग धारं रजे तोन तेकं ॥
करं पच [3]सत्ती चवै [4] सिंध नद्दं । अवै श्रोन गंडूष षग्गं उनंगं ॥
छं० ॥ ८९ ॥
उठें रत्त पीतं घमं धूम रंगं । सतं [5] सेत नीलं जलं जात संगं ॥
उठं पच [6]डंडूर सर सोभ सज्जी । मनों डंड सालं समंडं डरज्जी ॥
छं० ॥ ९० ॥
वितालं वितालं रजे ताल प्रेरं । गिरं मेच्छ हिंदू घनं घाइ बेरं ॥
जमं जांम जग्यौ जमानं सुजग्गं । तिलं [7]तिभ्भ अग्गं बढ़े षग्ग षग्गं॥
छं० ॥ ९१ ॥

(१) ए. कृ. को.-अर ।
(२) मो.-"बजे षग्ग घोरं जेतो झत्ततेकं" ।
(३) ए. कृ. को.-सट्ठी । (४) मो.-सिद्ध ।
(५) मो.-सेल । (६) ए.-डेंडूर । (७) ए. कृ. को.-तिल्ल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयं अग्गि जग्गौ जनू जग्य जूनं। रते अंग अंगं चले संग [१]सूनं॥
चढ़ी गिद्धि गैनं छयौ बान भान। परे पाइ सामंत सो चंद जानं॥
छं० ॥ ९२ ॥

जिमं पंड[२]कै रूं परे मझ्झि जुद्धं। सही सच्च, कथ्थी षगं बद्धि उद्धं।
कवीचंद कथ्थी कुरष्षेत हेतं। इसे हिंदु मीरं चढ़े बंदि नेतं॥
छं० ॥ ९३ ॥

युद्ध भूमि में वैताल और योगिनियों के नृत्य की शोभा वर्णन।

कबित्त ॥ नेत बंधि हिंदू। नरिंदं सामंत मत्तभर॥
मीर भार असरार। सबें ढाहे सु सद्धि सर॥
पथ्थ जेम भारथ्थ। कथ्थ सुभ्भे जिम कथ्थिय॥
सु कविचंद बरदाइ। एम कथ्थिय रन बत्तिय॥
घन घाइ आघाइ सुघाइ घट। तेक तानि नंचिय करस॥
चहुआन राइ सुरतान दल। न्त्रत्य बीर मंड्यौ सरस॥ छं० ९४॥

दूहा॥ तेग तार मंडिय समर। नच्चिय नंच बिन षैर॥
चाहुआन सुरतान रिन। रचे न्त्रत्य बर बैर॥ छं० ॥ ९५॥

योगिनी भूत वैताल और अप्सराओं का प्रसन्न होना और सूरवीरों का वीरता के साथ प्राण देना।

भुजंगी ॥ रचे न्त्रत्य बर बैर [३]हिंदू रु मीरं। म्रदुंमंदलं तज्ज राजंत धीरं॥
घनं गज्ज नीसान ईसान सोरं। करें न्त्रत्य भूतं रचें और कोरं॥
छं० ॥ ९६ ॥

करंताल भालं बजें रंग रंगं। भ्रमै गिद्धि गैनं नचै चारि जंगं
सुरं सुंदरी नंदरी चढ्ढि व्योमं। छबी छब्बि छायं बरं बार सोमं॥
छं० ॥ ९७ ॥

उड़ैं रत्त गुल्लाल फूले सु [४]फागं। षलं षग्ग कूचं समं माल लागं॥
उठें गाइनं नंचि तोरंत तानं। लगें षग्ग पत्तं सु पेरंत मानं॥छं०॥९८॥

(१) मो.-रूनं। (२) ए. कृ. को.-केरं।
(३) मो.-हिन्दू समीरं। (४) ए. कृ. को.-फागं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटै अद्ध सीसं बढ़े रत्तजानं। रतं पट्ट बंध्यौ मनों रिक्झि भानं॥
सुरं सट्ठि नद्द चवै मुष्ष गानं। फिरें जुद्ध जोधं बढ़े मोह बानं॥
छं० ॥ ९९ ॥

बढ़े मांस प्रासाद भूतं अहूरं। रतं पानि डारं तकै हूर नूरं॥
हरै रत्त रूपं कचं कुंच वासं। विधिं छित्ति राजी रसं रंग रासं॥
छं० ॥ १०० ॥

नचै प्रेत पानं बिना सीस केलं। मनों अग्ग फागं जगे न्रत्य षेलं॥
षगं घंटि नाना कटे रुंड सेषं। इभं रूढ़ सट्ठी निनें नारि देषं॥
छं० ॥ १०१ ॥

बकै मत्त हालाहलं षग्ग षंडे। जिसे राम रन मझ्झ रावन्न मंडे॥
नवं नारिका बाटिका वीर तुट्टै। घनं घाइ प्रघ्घाइ जुग जोग छुट्टै॥
छं० ॥ १०२ ॥

युद्ध रूपी समुद्र मथन को उक्ति वर्णन।

कवित्त ॥ नव बढ्ढिय नाटिका। षग्ग कढ्ढी असु हक्किय॥
हिंदु मेच्छ मिलि षेत। अप्प अप्पन चढ़ि कंकिय॥
रा चावँड रा जैतसी। राइ पज्जून [1]कनक्कह॥
मीर षान भर पंच। षग्ग वट्टए तननंकह॥
वपु वेद चन्द बानी विमल। विढुरि षग्ग षल षेत बढ़ि॥
कँवल सु कढ्ढि [2]सुरतान दल। लिय रतन्न मथि देव दधि॥
छं० ॥ १०३ ॥

कुंडलिया ॥ मथि कढ्यौ सुरतान दल। दधि केवल मन वढ्ढि॥
मीर षान मारूफ दल। बीर विमानन चढ्ढि॥
वीर विमानन चढ्ढि। दिष्ट बढ्ढी बारह परि॥
भर चंदेल विरंभ। षेत झोरी सुभोंह भर॥
गय नंगचंद अम्रत झरिग। कुसुम गुच्छ कविचंद पथि॥
विम्मान पथ्थ रवि कुंत रथ। षग्ग नेत कढि केल मथि॥
छं० ॥ १०४ ॥

(१) ए. कृ. को.-कमक्कह। (२) मो.-षुरसान, षुरसांन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस युद्ध में जो जो वीर सरदार मारे गए उनके नाम और उनका पराक्रम वर्णन।

मोतीदाम ॥ मथ्थो सुरतानय सेन पयार। लई जस कीरति चंद सुचार ॥
परे रन मझ्झ चंदेल सुचाइ। परे बहु षान सुघाइ अघाइ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

पऱ्यौ धर बाहर [1]राइति साल। धरड्डर षग्गन तुट्टिय ताल ॥
बरें कर अच्छर सुच्छर माल। धकड्डक काइर छत्ति विसाल ॥
छं० ॥ १०६ ॥

झुकि झझुकि तुंडन अड्ड कमड्ड। मनों हरि चक्रन केतन बड्ड ॥
पऱ्यौ घन [2]घाव सु वीरमदेव। हयग्गय विड्डिय छच अनेव ॥
छं० ॥ १०७ ॥

बिनों सिर नंचत मीर कमंध। हये हय नाग नरभ्भर संध ॥
लयौ धर सीस सुभ्यौ असि साइ। हनैं लगि पंचय पंचय धाइ ॥
छं० ॥ १०८ ॥

[3]हए लगि पंचल पिम्मन घाइ। ....
[4]पऱ्यौ पीरोज सु रावन नंद। करे [5]नय कीतिग सूरन चंद ॥
छं० ॥ १०९ ॥

चले दल चंचल दो सुरतानं। लगे कर देषि चँदेल परानं ॥
परे मफरद्द सुमंच [6]विभीर। लगे ग्रहलुट्टि क्रषी कर कीर ॥
छं० ॥ ११० ॥

गिरे सु पिरोज तिलत्तिल गात। विय छवि छंछ बढ़ी हबिपात ॥
[7]रजे रति आगभ राव वसंत। नगम्मनि जंग परे बर संत ॥
छं० ॥ १११ ॥

(१) मो.-राय विसाल।
(२) मो.-घाय। (३) ए. कृ. को.-हनैं, हने।
(४) ए. कृ. को.-"परयौ पुं पीरोजं" (५) ए. कृ. को.-जय।
(६) ए. कृ. को.-विमीर। (७) मो.-रते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गही तरवार विपानि सु झारि। नवंतिय वाइस अंत उतारि ॥
पऱ्यौ सम बाज सु हाजमषान। रचे गज इंद्र सु [1]ब्रह्म धियान ॥
छं० ॥ ११२ ॥

कऱ्यौ मन सूर तिलत्तिल षग्ग। उड़े रिन [2]पत्तरि तप्पत अग्ग ॥
चढ़े सारूप सु गैवर रूप। छयौ सम सीस धरब्बर भूप ॥ छं० ॥ ११३ ॥
भिरें भर हिंदुअ मीर अघाइ। गिरे दस पंच सहस्सह छाइ ॥
.... । .... छं० ॥ ११४ ॥

युद्ध होते होते रात्रि हो गई।

दूहा ॥ गिरे मेच्छ हिंदू सुभर। हय गय घाइ अघाइ ॥
[3]सुंड रुंड मुंडन झरत। रत्त झाकि झुकि ताइ ॥ छं० ॥ ११५ ॥

उपरोक्त वीरों के मारे जाने पर पहाड़ राय तोमर का हरावल में होकर स्वयं सेनापति होना।

भिरि तूंअर लिय बग्ग भरि। हय करि नीर प्रवाह ॥
सघन घाइ संमुष [4]समर। लगे मेच्छ पति थाह ॥ छं० ॥ ११६ ॥

पहाड़राय तोमर का बल और पराक्रम वर्णन।

घाइ घाइ तन छाइ छिति। रत्त छिंछ उछरंत ॥
भर तोंवर हर जिम तमकि। लग्गि [5]जमन गज अंत ॥ छं० ॥ ११७ ॥

कवित्त ॥ भर तोंअर अभि रत्त। धरत कर कुंत जंत अरि ॥
गजन बाज धर ढारि। धरनि बर रत्त जुघ्य परि ॥
भग्गि मीर काइर कनंक। हिय पत्त [6]मुच्छि [7]द्रढ़ ॥
भग्गि सेन सुरतान। दिष्षि भर सुभर पानि कढ़ ॥
उभ्भारि सिंगि कुंभन छरिय। झरिय श्रोन मद गज ढरिय ॥
हर हरषि हरषि जुग्गिनि सकल। जै जै जै सुर उच्चरिय ॥ छं० ॥ ११८ ॥

(१) मो.-ब्रह्म सुधान। (२) मो.- पातरि।
(३) ए. कृ. को.-मुंड। (४) ए.-ससन, कृ. को..सस्न। (५) मो.-जमुन।
(६) ए. कृ. को.-मुट्ठि। (७) मो.-द्रग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुतिया का चन्द्रमा अस्त होने पर युद्ध का अवसान होना ।

दूहा ॥ प्रदिपद परिपातह पहर । समर सूर चहुआन ॥
दिन दुतिया दल दुअ उरझि । ससि. जिम सद्धि पिसान ॥
छं० ॥ ११९ ॥

तृतिया को दोनों सेनाओं में शान्ति रही और चतुर्थी को पुनः युद्धारंभ हुआ ।

कवित्त ॥ दिन चतिया बर तुंग । झुक्कि झारन झुकि झुक्किन ॥
हिंदु मेच्छ हय हक्कि । धक्क बज्जिय भर इक्कन ॥
कटि मंडल घटि घुम्मि । झुम्मि झंझरिन अकालहि ॥
भूत बीर बेताल । मंस तुट्टत भ्रम चालहि ॥
दसकंध कोपि रघुपति रहसि । बिहसि चंद बढ्ढिय बदन ॥
चतुरथ्थ जुद्ध जंगिय जगी । रंगि कंक डक्किन रदन ॥ छं० ॥ १२० ॥

चतुर्थी के युद्ध में वीरों का उत्साह क्रोध उत्कर्ष वर्णन और युद्ध का जलमय वीभत्स दृश्य वर्णन ।

दंडक ॥ चवथि जुद्ध उदोत आरनि । सुभर भीर समुष्ष धारनि ॥
कोपियं चहुआन भरहर । घाइ कुंजर ढाहि धरहर ॥ छं० ॥१२१॥
श्रोन द्रोन प्रवाह थरहर । अंत अंतन अंत झर हर ॥
[1]तार तान विताल करि करि । तेग षेंचत पाइ परि परि ॥
छं० ॥ १२२ ॥
घुम्मि झुम्मि निसान बज्जिय । अगम मेघ असाढ़ गज्जिय ॥
धुनि सु असि असमान रज्जिय । दिष्षि देव विमान छज्जिय ॥
छं० ॥ १२३ ॥
कंपि कायर लज्जि लज्जिय । [2]विकल मुष ह्वै [3]निकलि भज्जिय ॥
समुष तोंवर साह सज्जिय । [4]विचल अरि कर तेग तज्जिय ॥
छं० ॥ १२४ ॥

(१) मो.-तार वितान विताल कर कर । (२) ए. कृ. को.-विमल ।
(३) ए. कृ.को.-निकरि । (४) ए.-विमल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीर बहुरि विशेष वानय। छुट्टि छाय अकास भानय॥
रेन सूर दिसान थानय। सोक कोक [1]अलोक आनय॥छं०॥१२५॥

झमकि सुर मुष सस्त्र लग्गिय। दमकि दिसि दिसि षग्ग नग्गिय॥
रत्त पत्त प्रवाह झरि झरि। ईस सीस [2]सजंत गुरि गुरि॥छं०॥१२६॥

मच्छ मच्छन कच्छ कच्छिय। दलन दोन कलोन अच्छिय॥
अंत [3]दंतिय दंत पाइन। गिद्ध जुग लै उड़ी चाइन॥ छं० ॥१२७॥

नषत षित्त सुहत्त फिरि फिरि। मष्पि डोरि पसारि कर धरि॥
रुहिर सर सम बहत धार स। भँवर पंषिन काक पारस॥
छं० ॥ १२८ ॥

मौका पाकर पहाड़ राय का शहाबुद्दीन के हाथी के पर तलवार का वार करना और हाथी का भहरा कर गिरना।

हनूफाल॥ रंगिय रदनु जुग्गिन बीर। है गै पारि असि [4]वर मीर॥
तोवँर राइ दिष्यौ साहि। नंष्यौ बाज सनमुष आइ॥छं०॥१२९॥

डारिय तेग सिर करि षीज। *गिर पर जनु कि करकिय बीज॥
करि कर वारि गज धर ढाहि। [5]गैंवर गिरत निक्करि साहि॥
छं० ॥ १३० ॥

तोंवर दिष्षि राह पहार। गैंवर दिष्षि है कँध डारि॥
भावरी भग्गि जव्व मेछान। जै जै जै जंपियं चहुआन॥छं०॥१३१॥

मुसलमान सेना का घवरा कर भाग उठना।

दूहा॥ भग्गि सेन सुरतान सब। रव लग्गी मुष तक्कि॥
गह्यौ साहि तोंवर [6]पुरस। जानि राह ससि बक्क॥ छं० ॥ १३२ ॥

(१) ए. कृ. को.-असोक जानय। (२) मो.-जाति।

* मो.-गिर पर जानु करंकिय वीन-पाठ है और ए. कृ. को.-प्रतियों में "गिरि पर किंकर कीय वीज" पाठ है किन्तु इन दोनों पिठों में छन्दोभंग होता है। (३) ए. कृ. को.-तंतिय।

(४) मो.-चर। (५) मो.-गिर चंत गैवर निकर साह। (६) मो.-पुरिस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी सेना भाग उठने पर शहाबुद्दीन का चकित होकर रह जाना और पहाड़ राय का उसका हाथ जा पकड़ना और लाकर उसे पृथ्वीराज के पास हाजिर करना।

कवित्त ॥ जुग्गिनि गन गर सिंधु। करत उच्चार सार मुष ॥
अछि अच्छरि बर इच्छ। विसन अक पानि नैन सिष ॥
बज्जि ताल बेताल। रज्जि बर [1]तुंड चंड सँग ॥
ओन छोनि छय छंछ। गुंज गन देन रत्ति अँग ॥
[2]मुरि मेच्छ घाइ घट सघन परि। हथ्थ घालि सुरतान लिय ॥
जित्तो जु आनि सोमेस सुअ। अभै सुभै अंगन घटिय ॥छं०॥१३३॥

सुलतान सहित पृथ्वीराज का दिल्ली को लौटना और दंड लेकर उसे छोड़ देना।

गहि गोरी सुरतान। अप्प ढिल्ली सँपत्तौ ॥
माह सुकल पंचमी। बार भ्रगु बर दिन वित्तौ ॥
किय सु दंड पतिसाह। सहस सत्तह सुभ हैंवर ॥
दुरद षट्ट प्रम्मान। वहै घट रित्त मद्द झर ॥
कोटिक द्रव्य न्रप हेम लिय। घालि सुषासन [3]पठय दिय ॥
कलि काज कित्ति बेली अमर। सुभत सीस चहुआन किय ॥छं०॥१३४॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके तोंवर पहाड़ राइ पातिसाह ग्रहन नाम सैंतीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥३७॥

(१) ए. कृ. को.-तंड। (२) मो.-मुरि सेन धाइ मिछ सछन परी।
(३) मो.-पट्ठ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ बरुण कथा लिष्यते ।

(अड़तीसवां समय ।)

"सोमेश्वर" सांसारिक सम्पूर्ण सुखों का आनन्द लते हुए स्वतंत्र राज्य करते थे ।

दूहा ॥ सुष लुट्टहि लुट्टहि मयन । अरि धर लुट्टै धाइ ॥
अंग नवनि करि उब्बरै । है षुर षग्गह चाइ ॥ छं० ॥ १ ॥

चन्द्र ग्रहण पर सोमेश्वर जी का समाज सहित यमुना जी पर ग्रहण स्नान करने जाना ।

सोम [1]ग्रहन सुनि सोमन्नप । कालंद्री मन आनि ॥
[2]है गै जन सब संग लै । तहां बोले बिप्र ठानि ॥ छं० ॥ २ ॥

सोमेश्वर जीके साथ में जाने वाले योद्धाओं के नाम और पराक्रम वर्णन ।

मोती दाम ॥ जुषोड़स दान विचारिय राज । रची विधि ज्यौं [3]बध [4]देवति साज ॥
तहां ढिगोसिंघ पँवार पवित्त । [5]सुभ्रम्मय भ्रम्म तहां बिपचित्त ॥
छं० ॥ ३ ॥
जुगौर गुरंबर सिंह सुसंग । जिनै करि जज्जर देहिय जंग ॥
तहां ढिग संजम राव नरिंदु । धरे जनु इंद्र विराजत [6]चन्द ॥
छं० ॥ ४ ॥
सुबाहन बीर बली कुनि तथ्य । तिने कलि भ्रम्मन दूजि यकथ्य ॥
तहां गुर राज [7]विराजत ताम । तिदिष्ट बचिष्ट मनों ढिग राम ॥
छं० ॥ ५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-ग्रहनी । (२) ए. कृ. को.-होम जग्य ।
(३) ए. कृ. को.-बुध । (४) मो.-देवनी ।
(५) ए कृ. को.-सुधर्मय घूम नहीं वियाचित । (६) ए. कृ. को.-इन्द, इन्द्र । (७) मो.-बिरामत ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सु और अनेक महाभर मंझ । अमंत क्रमंत [१]सयन्तिय संझ ॥छं०॥६॥

उक्त समय पर पूर्णमा की शोभा वर्णन ।

साटक । मुंदी मुष्य कमोद हंसति कला, चक्कीय [२]चक्कं चितं ।
चंदं किरन कढ़ंत पोइन पिमं, भानं कला छीनयं ॥
बानं मन्मथ मत्त रत्त जुगयं, भोग्यं च भोगं भवं ।
[३]निद्रा वस्य [४]जगत्त भक्त जनयं, वा जग्य कामी नरं ॥ छं० ॥ ७ ॥

मोटक ॥ *चकी चक्क चक्किय चित्त मयं । बिछुरे बिय दिष्षिय संझ मयं ॥
† जु पयो भ्रिम तत्त मझं सुरबी । सु मनों दिसि दिस्सि सिंदूर [५]जबी ॥
छं० ॥ ८ ॥

घन सोर द्रुमं करि पंष घनं । सु मनों लगि पारसियं पढ़नं ॥
अलि वासिय पंकज कोक नदं । कुलटा बसि छैल रसं विमिदं ॥
छं० ॥ ९ ॥

विरही जन दिष्टि सु धाम ढुरी ।उलटैं बसि डोरि ज्यों चंग उरि॥
बजी बर देवल झल्लर झूर । तिसं घरु सिंगिय सिङ्गन पूर ॥छं०॥१०॥
[६]कपी मुग धापिय केलि कठोर । मुदै हसि प्रौढत सुंदर चौर ॥
छबि दीपक द्वारन जोति जगै । जनु दंपति नैन सुभे उमगै ॥
छं० ॥ ११ ॥

जु लगीं धुम्र घुंमर रैनन मंडि । चलै क्रम चोर मगं [७]पियं छंडि ॥
‡ जुरसे रस चामर सीस इसे । दिषि दीपक जोति पतंग जिसे ॥
छं० ॥ १२ ॥

विरहा उर झारिय केलि करी । इन दाहिय देहरु प्रीति धरी ॥
विरही चिय मुष्य सु दुष्य [८]सदं । कुम्हिले जनु पंकज कोक नदं ॥
छं० ॥ १३ ॥

---

(१) ए. कृ. को-सपन्निय ।　(२) मो.चक्कीचितं ।　(३) मो.-निद्रया ।
(४) ए. कृ. को.-जगंत ।　* ए. कृ. को.-"कवि चक्क सु चक्किय" ।
† ए. कृ. को.-जु पयोध पतंत भझं सुरबी ।　(५) मो.-वची ।
(६) मो.-किपि ।　(७) ए. कृ. को.-पिम ।
‡ ए. कृ. को.-"जुरसे रस बामर सीदक से" ।　(८) ए. कृ. को.-मुदं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जु सँजोगय भोग सुषं सरसे। सु कमोदिन चंद फुलै दरसे॥
जु ग्रिहं ग्रह जोवत दीप जुवं। जु वए मनु काम के बीज भुवं॥
छं० ॥ १४ ॥

अर्द्ध रात्रि के समय ग्रहण का लग्न आने पर सब का यमुना के किनारे पर जाना।

दूहा ॥ साँझ समय ससि उग्गि नभ। गइ जामिनि जुग जाम॥
ग्रहन समय दिषि होतही। जमुन पधारे [1]ताम॥ छं० ॥ १५ ॥

वरुण के वीरों का जाग्रत होना।

स्नानं जंकी नौ न्रपति। जल रक्षा जगि बीर॥
[2]हक्कारे संमुष उठे। मंगन जुद्ध [3]सरीर॥ छं० ॥ १६ ॥

इधर सामंत लोग शस्त्र रहित केवल दूब और अक्षत आदि लिए हुए खड़े थे।

ए बिन वस्त्र रु सस्त्र बिन। हस्त दरभ कुस कोस॥
तिल तंदुल जव पुहप कर। बरन दूत उठि रोस॥ छं० ॥ १७॥

वीरों का गह्हरे जल में शब्द करना।

अति प्रचंड गहराइ गल। गल गज्जे बल बीर॥
स्याम बरन भय भीत दिषि। धीरन छुट्टै धीर॥ छं० ॥ १८ ॥

जलवीरों के सहज भयानक और विकराल स्वरूप का वर्णन।

कवित्त ॥ अति उतंग बज्रंग। उदित उर जोति रत्त द्रिग॥
अरुन रुधिर नष अधर। बस्त्र नन अस्त्र सस्त्र ढिग॥
दसन ऊंच सिर केस। वेस भय भग्गिव पासं॥
अति उनाह जम दाह। कौन मंडै जुध आसं॥
कल कलह बचन किलकंत सुर। सुर बाजत जनु धुनि धमनि॥

(१) मो.- बाम। (२) ए. कृ.- को.-हहकारे।
(३) ए. कृ. को.-समीर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम करत केलि जल संचरत। तुम [1]संमुह कोइ [2]मत अवनि॥
छं० ॥ १९ ॥

सांमतों का ग्राव पर चढ़ जाना।

दूहा ॥ सुभट दिष्ष करि क्रोध उर। भये भयानक सूर॥
सस्त्र हथ्थ दिष्षे नहीं। *ग्राव ग्रहे जलपूर॥ छं० ॥ २० ॥

जल वीरों के उछारने से वेग से जो जल ग्राव पर पड़ता था उसका दृश्य वर्णन।

कवित्त ॥ परत ग्राव जल पूर। झरत जनु रुष्ष फल सुबन॥
बजत घात आघात। फुरत अवसान बीर तन॥
रावत्तन अवसान। देव दुंदुभि अधिकारी॥
[3]जोग ग्यान चय मान। बनिक बुधि मोहि सुनारी॥
राजेंद्र दान सिद्धह तपह। भुगति जुगति विधि [4]कोविदह॥
इत्तनी बत्त अवसान मिलि। मनहु मंच जनु गुन भिदह॥
छं० ॥ २१ ॥

जल के बीच में जल वीरों की आसुरी माया का वर्णन।

आवरि कर वर करह। भिरत भारथ [5]पच्चारिय॥
अंग अंग संग्रहहिं। इक्क इक्कत अधिकारिय॥
अधम जुद्ध जुरि करहिं। करहिं बल कपट अनंगिय॥
कबहु धूम वे करहि। करहि कव झार झरन्निय॥
कब्बहूं मेघ [6]उट्ठें सुजल। कब्बहिं करन ग्रावह बरष॥
उच्चरहिं बैन बहु बीर बर। बिरचि कबहु बुल्लैं हरष॥ छं० ॥ २२ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुमूढ़। (२) ए. कृ. को.-मति।
*ग्राव यह शुद्ध संस्कृत शब्द है यथा-शब्दकल्पद्रुम "पृथ्वी तावत् त्रिकोण विपिन नद नदी ग्रावरुद्धं तदद्धम्"। इसका तात्पर्य डेलटा से है।
(३) मो.-ज्यों। (४) मो.-कोबदह।
(५) ए. कृ. को.- परचारिय (६) मो.-वुट्ठे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलवीरों के बहुत उपद्रव करने पर भी सोमेश्वर के सामंतों का भयभीत न होना ।

कबहुं सस्त्र सर परहिं । कबहुं डक्कें डक्कारिहिं ॥
तीन लोक तन [1]हकहिं । बकहिं बीरन बक्कारहिं ॥
अकल कलह बल करहिं । समहि संग्राम सुधारहिं ॥
अजुत जंग उद्धरहिं । *कलह बल धार उधारहिं ॥
सामंत भूमि भंजहिं भिरहिं । गिरहिं परहिं उठ्ठहिं लरहिं ॥
सोमेस सूर संक न [2]गनहिं । विरचि गाल गल बल करहिं ॥
छं० ॥ २३ ॥

वीरों को स्वयं अपना पराक्रम वर्णन करके सामंतों का भय दिखाना ।

हम सु भयंकर बल अभूत । सुभटन [3]हक्कारिहिं ॥
हम सु [4]प्रवत्त प्रमान । कनिष्ठ अंगुरि उप्पारहिं ॥
हम समुद्र प्रम्मान । डोहि जल पहुमि [5]प्रवाहहिं ॥
दैषी सुनी [6]न कोइ । सोइ ब्रह मंडल गावहिं ॥
किन काम धाम तजि वाम सुष । आइ सपत्त जमुनि निसि ॥
चर बेर निसाचर हम फिरहिं । नीर रमें तिल लेइ धसि ॥
छं० ॥ २४ ॥

वीरों का राजा सहित सामंतों पर आसुरी शस्त्र प्रहार करना ।

दूहा ॥ [7]इह कहि के लग्गे लरन । गैन गुंज जल फार ॥
मामहु भारथ अंत कौ । भार उतारन हार ॥ छं० ॥ २५ ॥

सामंतों का वीरों से यथाशक्ति युद्ध करना ।

कवित्त ॥ काल संक अहुरहि । तार बज्जत प्रहार सुर ॥
जम्मुन [8]जल अंदोल । बीर बोलंत बीर गुर ॥

(१) मो.-तकँहि । * कृ. को.-कबहि वीरन वक्कारहिं । (२) मो.-गिनहिं ।
(३) ए. कृ. को.-हक्कारिय । (४) ए. कृ. को.-चंड प्रव्वत समान ।
(५) मो.-प्रवानहि । को.-प्रवाहिहि । (६)-न होइ । (७) मो.-एह कहे । (८) मो.-सजन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलह केलि सम केलि। ठेलि कढ्ढै चावद्दिसि ॥
एक ग्राव वरषंत। एक फारंत नष्ष कसि ॥
परि मुच्छि मध्य विक्रम बलिय। जुद्ध निसाचर बिषम [1]ऋषि ॥
बर बीर धीर धप्पे लरन। फहु पट्टत न्रप सोम [2]लषि ॥छं०॥२६॥

इसी प्रकार अरुणोदय की लालिमा प्रगट होते देख वीरों का बल कम होना और सामंतों का जोर बढ़ना।

पद्धरी ॥ तिम [3]तिम सु बीर तामसत थोर। दिन उगन [4]बढ़ै रजपूत जोर ॥
वड्डे [5]जु मल्ल मुट्ठी प्रहार। फट्टै कि भूम पट तार तार ॥छं० ॥२७॥
उच्छरत जमुन जल इन प्रकार। क्रीड़ंत जानि मद गज फुंकार ॥
तरफरहि मध्य जल इन प्रकार। कपि कोप नंषि गिरि समुद सार॥
छं० ॥ २८ ॥
बर भरहिं करहिं लत्तननि हाइ। * बज्जंत बज्र जनु विषम घाइ ॥
रन रह बहस्सि उच्चार बैन। इतनैं भयो [6]परताप गैन ॥छं०॥२९॥
निसिचरन दिष्षि जब समय सूर। झलमलत किरन न्रिमल करूर ॥
तमचरह पूर प्रगटी किरन्न। प्रगटीं सु दिसा विदिसान अन्न ॥
छं० ॥ ३० ॥
तब लग्गि पंच भर परिय मुच्छ। निसचर उतंग करि जुद्ध गच्छ ॥
छं० ॥ ३१ ॥

प्रातःकाल के बाल सूर्य्य की प्रतिभा वर्णन।

दूहा ॥ ज्यों सैसब में जुवन [7]कछु। तुच्छ तुच्छ दरसाइ ॥
यों निसि मध्यह अरुन कर। उदित दिसा [8]लसाइ ॥ छं० ॥ ३२ ॥
*रत्ति रही वर विलगि बर। ज्यों ससि कोरह राह ॥
हरि डढ्ढै बाराह धर। कै हरि चंपत राह ॥ छं० ॥ ३३ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-विषि। (२) ए. कृ. को. लिषि।
(३) ए. कृ. को.तिमति। (४) मो.-वछै। (५) मो.-मुगल।
* मो.-वज्र लेत हृथ्थ जम्बू विघाइ। (६) ए. कृ. को.-परभात।
(७) ए. कृ. को.-कव। (८) मो.-ललसाइ। * मो.-"यों रत्ति ही रविलग वर"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुर्योदय होते ही वीरों का अन्तर्ध्यान होना और सोमेश्वर सहित सब सामंतों का मुर्छित होना।

अरिल्ल ॥ गच्छिय सुद्ध निसाचर बीर। परै धर मुच्छि सु पंच सरीर ॥
किए तन पान प्रमानन जान। सु देवहि दुंदुभि जानिय गान ॥
छं० ॥ ३४ ॥

सव मुर्छित पड़े हुइ थे उसी समय पृथ्वीराज का वहां पर आना।

दूहा ॥ मृतक समानति मृतक परि। रहिग जीव छिपि छान ॥
तब लगि तहँ प्रथिराज रन। आनि सपत्ते [1]पान ॥ छं० ॥ ३५ ॥

निज पिता एवं सब सामंतों की ऐसी दशा देख कर पृथ्वीराज के हृदय में दुःख होना।

साटक ॥ [2]सोहिष्यं न्रप राज तात निजयं। बीभच्छ इच्छा क्रुधं ॥
कालं केलिय छिंछ रुद्द तनयं, रुद्रं सु संरत्तयं ॥
माते तामस रस्स कस्स असुरं, [3]हालाहलं नैनयं ॥
राजं जा प्रथिराज चिंति तनयं, पुच्छै गुरं [4]ततगुरं ॥ छं० ॥ ३६ ॥

यमुना के सम्मुख हाथ वांध कर खड़े हो पृथ्वीराज का स्तुति करना।

दूहा ॥ जमुन सनंमुष जोर कर। अस्तुति मंडिय मुष्य ॥
तूं माता दुष भंजनी। रंजन सेवक सुष्य ॥ छं० ॥ ३७ ॥

यमुना जी की स्तुति।

भुजंगी ॥ नमो मात मातंग [5]सूरज्ज जाया। नमो देवि भग्गी जमं पै [6]कहाया॥
जगं अंधकूपं सु दीपक्क गन्नी। नदी कौन [7]पुज्जै सु तेरी करन्नी ॥
छं० ॥ ३८ ॥

(१) ए. कृ. को.-प्रान। (२) ए. कृ. को.- सो दिष्यं। (३) ए. कृ. को.-हाली। (४) ए. कृ. को.-सद्गुरं, तदुरं। (५) मो.-सूरिज्ज। (६) ए. कृ.को.-कहाये। (७) मो.-पूजै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महा ध्रम्म धारन्न तारन्न देही। निकस्सी सलीलं सु सेलं समेही॥
बलीभद्र रष्षी हरष्षी हलंदी। तुअं नाम पासं सुभै सो कलंदी॥
छं०॥ ३०॥
त्रयं ताप भंजै जगत्तं जनन्नी। तुयं सेपियं सेसु नंमं सरन्नी॥
तुही तारनी जुग्ग हारन्नि पापं। तुहीं मात [1]करनी अघं कष्ट कायं॥
छं०॥ ४०॥
तुही याम सूरं जलं मुक्ति धारा। तुही नभ्भ मातंग नर लोग सारा॥
तुहीं साधवी मात नष्षं समानी। तुही तारनं लोक त्रै लोक रानी॥
छं०॥ ४१॥
तुही बाल बेसं तुही वृद्ध काली। तुही तापसं ताप आपं सुराली॥
तुअं तट्ट सेवैं जिते [2]तिद्व सिद्धं। तिते मुक्ति मुक्ति मनं बंछ दिद्धं॥
छं०॥ ४२॥
तुही [3]मद्दनं मथ्थनं तेज धारा। तुहीं देवता देव त्रय लोक हारा॥
तुही जोगिनी जोग जोगं कपालं। तुही कल्प [4]में कंप राषंत आलं
छं०॥ ४३॥
तुही विस्स रुपं तुहि विस्स माया। तुही तारनं जन्न संसार आया॥
कियौ अश्वमेधं पुनर्जन्म आवै। नही जन्म मातंग तो ध्यान पावै॥
छं०॥ ४४॥
तुअं ध्यान मातंग अस्नान पूरं। करै अर्घ [5]आचार उग्गंत सूरं॥
तनं तम्मनं तं जयं निर्विकारी। इसी जमुन [6]अप्पं सदिष्षी अकारी
छं०॥ ४५॥

स्तुति के अन्त में पृथ्वीराज का यमुना जी से वर मांगना।

कवित्त॥ गंगा मूरति विसन। ब्रह्म मूरति सरसत्तिय॥
जमुना मूरति ईस। दिव्य दैवन मुनि यप्पिय॥

(१) ए. कृ. को.-कर वत, कर वत्त।
(२) ए. कृ. को.-"सिद्धं सिद्धंति"।
(३) मो.-मद्दंत।
(४) ए. कृ. को.-में कप्प।
(५) ए.-आचार।
(६) ए. कृ. को.-अप्पं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिली जाइ [1]झल मंग। गंग सागर अवधारिध ॥
ता सोमेसर रोग। दोष दोषह तन टारिय ॥
अब सुभट सहित देवी सु तन। करि निरमल तन मोह मय ॥
इह कहत जग्गि न्रप मूरछा। प्रति बुल्लौ प्रथिराज तय ॥छं०॥४६॥

सोमेस की मूर्छा भंग होने पर पृथ्वीराज का पुनः ब्रह्मज्ञान की युक्तिमय स्तुति करना।

साटक ॥ [2]त्वं मे देह सु भाजनेव [3]सरिसा जीवं धनं प्रनायं ॥
दाहं अग्गि सु क्रम्म दारुन धरै आवस्य [4]बंदं करं ॥
सं रुद्धं जम जोग तिष्टत तनै अद्धं पलं मध्ययं ॥
जीवी वारि तरंग चंचल धियं विस्मत [5]अन्नंतरं ॥ छं० ॥ ४७ ॥
आसा अस्य सरोवरीय सलिलं पंषी वरं [6]सुद्दयं ॥
सुष्यं दुष्यय मध्य वृच्छ तवयं साषास्य चै गुन्नयं ॥
मोहं पत्तय रत्त वृन्नव क्रमे फूलं फलं धारनं ॥
एकश्रय संतोष दोष तिगुना अस्याय वा निर्गुनं ॥ छं० ॥ ४८ ॥
यों भूतं आभूत बर्ष सु सतं आयुर्बलं अदभुतं ॥
तेषा अर्द्धं निसा गतं रवि उभै बाल्यैच वृद्ध गता ॥
प्राप्तं जोवन रत्त मत्तय रसं व्याधं क्रुधं बंधनै ॥
ना भूतं संसार तारन गुनै [7]संभार निस्तारयं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

इस प्रकार मूर्छा जगने पर पृथ्वीराज का गन्धर्व यंत्र का जप करना जिससे मूर्छित लोगों का शिथिल शरीर चैतन्य होना।

दोहा ॥ ग्यान ध्यान अस्तुति करिय। भयसु प्रसन्नय देव ॥
राज सहित सामंत सब। जगे मूरछा एव ॥ छं० ॥ ५० ॥
गंध्रव मंच सुदृष्ट [8]जिय। आराध्यौ प्रथिराज ॥
[9]बरुन दोष तन ताप गय। उठि निद्रा जनु भाज ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जल गंग। (२) ए. कृ- को.-त्वमे। (३) ए.-ससी।
(४) ए. कृ. को.-सबदं। (५) ए. कृ. को.-नर। (६) मो.-सुठयं।
(७) मो.-संसार। (८) ए. कृ. को.-हुअ। (९) ए. कृ. को.-बरन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का सोमेश्वर को सिर नवाना ।

पद्धरी ॥ प्रथिराज राज सिर नामि जाइ । जानंत मरम तुम सकल राइ ॥
सरिता रु ताल वापी अन्हाइ । निसि समय वरुन तन धरिय पाइ ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सरवरिय केलि सोइत्त [1]आइ । पाताल ईस क्रीलै सुभाइ ॥
सुमिरै न नाम सन सुद्ध [2]ध्याइ । उपजै सु विघन कै धर्म जाइ ॥
छं० ॥ ५३ ॥

भौसेन तत्र तहँ एक ठाइ । करि वेद पठन तहँ विप्र गाइ ॥
करि होम जाप किस्नह पराइ । भए सुद्ध पाय गए तन [3]पुलाय ॥
छं० ॥ ५४ ॥

सोमइवर को लिवा कर पृथ्वीराज का राजमहल में आना ।

दूहा ॥ वरुन दोष मेंट्यौ सुप्रथु । ग्रेह संपते आय ॥
देषि पराक्रम सोम नृप । फूल्यौ अंग न माय ॥ छं० ॥ ५५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके वरूण कथा नाम अड़तीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ३८ ॥

(१) ए. कृ. को.-पाइ ।
(२) ए.-पाइ, कृ. को.- धाइ । (३) ए. कृ. को.-फुलाइ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सोमबध सम्यो लिष्यते ।

(उन्तालीसवां समय ।)

भीमदेव की इच्छा ।

कवित्त ॥ गुज्जर धर चालुक्क । भीम जिम भीम महाबल ॥
कोइ न चंपै सीम । कित्ति बर रीति अचंगल ॥
सोमेसर संभरिय । तास मन अंतर सल्लै ॥
प्रथीराज ढिल्लीस । रीस तस [1]अंतर बल्लै ॥
मिलि मंत तत्त बुझ्झवि मरम । करिय सेन चतुरंग सज ॥
धर लेउ आज दुज्जन दवटि । एकछ्छच मंडोति रज ॥ छं० ॥ १ ॥

भीमदेव का दिल्ली पर आक्रमण करने की सलाह करना ।

पद्धरी ॥ संभरिय राज गुज्जर नरेस । रत्तौ जु साम दानह [2]असेस ॥
[3]कालिंद कूल जंगलिय जास । प्रथिराज अकस रष्षै इलास ॥छं०॥२॥
चंपौ जु अप्प उर रषै डंस । मन मध्य भीम इम भूमि गंस ॥
हारे जुआरि कलमलिय [4]षेल । चालुक्क चित्त इम [5]मिलन सेल ॥
छं० ॥ ३ ॥
कुलटा छयल्ल जिम मिलन हेत । इम षगन षेत चहुआन चेत ॥
जिम चंद सूर मनि राहु केत । कलमलिय चलिय उर भीम तेत ॥
छं० ॥ ४ ॥
रानंग देव झाला नरिंद । बुल्यौ सु राइ चालुक इंद ॥
[6]तमि कह्यौ ताम हौ इतत रोस । झलहलत अग्गि ज्यों जग्गि कोस ॥
छं० ॥ ५ ॥
बुल्लाइ सब्ब मर इक्क ठौर । चढ़िवाइ बेगि बर करौ दौरि ॥
षेलंत नारि नर लेइ गढ्ढ । इम लेउ भूमि षल षग्ग बढ्ढि ॥छं०॥६॥

(१) मो.-अंबर । (२) ए. कृ. को.-अरेस । (३) मो.-कालंद ।
(४) ए. कृ. को.-श्वेत । (५) ए. कृ. को.-मलन । (६) मो.-मत ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिम करिव बाल घर मिटत धूरि। तिम इला आउ चहुआन चूरि ॥
भज्जंत भौल जिम घर सुहाल। संभरिय भूमि इम करों हाल ॥
छं० ॥ ७ ॥

कवित्त ॥ बोलि कन्ह कह्वौं नरिंद। रानिंग राज बर ॥
चौरा सिम जयसिंघ। बीर धवलंग देव धर ॥
धौल हरै सुरतान। बीर सारँग मकवानं ॥
जूनागढ़ तत्तार। सार लग्गयौ परवानं ॥
मत मंति सज्जि चालुक्क भर। पुब्ब बैर साल्यौ हियैं ॥
केतीक बत्त संभरि धरा। रहै रंग चच्चर कियैं ॥ छं० ॥ ८ ॥

गाथा ॥ सोझत्ती रन जित्ता। केवा किन्न संभरी राजं ॥
[1]तं केलि कलहंतं। सज्जै स्हल षग्ग [2]मग्गायं ॥ छं० ॥ ९ ॥

सब सरदारों का कहना कि वैर का बदला अवश्य लेना चाहिए।

कवित्त ॥ बोली राव रानिंग। बोलि चौरासिम भानं ॥
स्यामा स्याम नरिंद। भीर कह्वौ रन थानं ॥
अति उदार अति रूप। भूप साइँ रन रष्षन ॥
चाहुआन बरसिंह। [3]घिक्ष्यौ बड़वानल भष्षक ॥
जै जैत कित्ति संसै न करि। सुबर बैर कह्वौ विषम ॥
भारथ्थ कथ्थ भावै भवन। सुभर मुत्ति लब्भै सुषम ॥ छं० ॥ १० ॥

दूहा ॥ सुषम पिंड संग्रहिय बर। जुग जोग [4]नह लब्भ ॥
हिम ग्रीषम पावस सु तप। करै बीर प्रति अब्भ ॥ छं० ॥ ११ ॥

भीमदेव के सैनिक बल की प्रशंसा।

भुजंगी ॥ करै बीर बीरं सु बीरं प्रकारं। लगे राह चहुआन सो जुद्ध सारं ॥
सु रावत्त रत्ता अभीरत्त कोनं। करै षेत भीमंग कौ सोन जोनं ॥
छं० ॥ १२ ॥

(१) ए. कृ. को., "तंकेलि कुलहंता"। (२) ए. कृ. को.-मग्गाइं।
(३) मो.-षिज्यौ। (४) ए. कृ. को.-नहिं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करै कोन जमजोति जोत्यं प्रकारं । गनै कोन वेलू सु गंगा प्रकारं ॥
गिनै कोन तारक्क ते [1]तेज भोरै । लरै कोन चालुक्क सों जुद्ध सोरै ॥
छं० ॥ १३ ॥

भीमदेव की सेना का इकट्ठा होना ।

गाथा ॥ फट्टै पुडु फुरमानं । धाये धराजित्त जिताइं ॥
इम जुट्टै सब सेनं । ज्यों भू नीर वद्दि सरताइं ॥ छं० ॥ १४ ॥

भीमदेव की सेना की सजावट और सैनिक ओजस्विता का दृश्य ।

विअष्परी ॥ जुट्टे दल पहु पंग [2]अपारं । हैगै बर भर लब्भि न सारं ॥
बनै हयं पय पंष समानं । षह भूमी जनु पंष उड़ानं ॥ छं० ॥ १५ ॥
गज गज्जै गज्यौ जनु नीरं । भद्दव बद्दल जानि समीरं ॥
दिषियै स्हर नूर षह पूरं । संध्या सागर [3]नूर करूरं ॥ छं० ॥ १६ ॥
चल्लै मल्ल मंग मल्हारे । धावैं धर पग पाहर कारे ॥
कच्छे कच्छै बंधै डोरी । चंदन षोरि षिलै जनु होरी ॥ छं० ॥ १७ ॥
जिन पग भूमि न ढिल्लैं कोई । विचरै लरै जानि जम दोई ॥
पाइक पग पिल्लै जनु नट्टं । षंडा कढ्ढि बढ़े गज [4]दट्टं ॥ छं० ॥ १८ ॥
गोरी बिन तिन लोह न छिज्जै । धार अनी कर बर ठेलिज्जै ॥
चंचल अस्वह [5]नंषत स्हरं । स्हर तेज जिन मुष्य सनूरं ॥ छं० ॥ १९ ॥
बंकी भोह भयंकर नैनं । फूली बंबर लग्गे गैनं ॥
रत्ते [6]स्वामि ध्रम्म रस रंगं । जोग जुगति मन चढ्ढत जंगं ॥
छं० ॥ २० ॥
नेह न देह न माया ग्रेहं । चिंतत सदा ब्रह्म मन लेहं ॥
तेग त्याग मन मंड न अंगं । सुब्भत सेन मनों सुभ्र गंगं ॥ छं० ॥ २१ ॥
गट्ट परे न्रप गाहत गट्टं । जिम वाराह मोथ रस दट्टं ॥

---

(१) मो.-मेज । (२) ए. कृ. को.-प्रपारं । (३) ए. कृ. को.-सूर ।
(४) मो.-वढ्ढं, वट्टं । (५) मो.-जनुंषत । (६) मो.-साम ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औगुन अंग न स्वामित जंगं। ज्यों सह गोन दुहागिल रंगं॥
छं० ॥ २२ ॥

यों आतुर रत्ते षग मग्गं। ज्यों कुलटान छैल मन लग्गं॥
दसहूं दिसि दारुन दल बट्टं। ज्यों धुर बद्दल भद्दव चट्टं॥छं०॥ २३॥

सिलह सज्जि बढ्ढे बल बंकं। रीछ लंगूर मनों कपि लंकं॥
दिष्षत सेनह नैन भुलाई। मानहुं साइर [1]पार डुलाई॥छं०॥ २४॥

अमरसिंह सेवर परिमानं। भैरूं भट्ट तत्त बुधि जानं॥
बंभन लीला लच्छिन मंडे। देव क्रंम सब बंधि रु छंडे॥ छं० ॥ २५॥

सांम रूप सेवर परिमानं। दान रूप बर भट्ट सुजानं॥
भेद रूप दुज राज वकारं। डंड रूप चारन आकारं॥ छं० ॥ २६॥

लीने भीम संग चव मंची। दुष्ट अरिष्ट रमे जिन [2]जंची॥
सुर्ग मृत्य, पाताल सुसंकं। अस आडंबर मंडत कंकं॥ छं० ॥ २७॥

भोलाराय भीम का साम दाम दंड और भेद स्वरूप अपने चारों मंत्रियों को बुलाकर उचित परामर्श की आज्ञा देना।

दूहा॥ साम दाम अरु भेद करि। निरनै दंड रु सार॥
च्यारि दूत चतुरंग मन। बर सिघंन आकार॥ छं० ॥ २८॥

ए बुलाइ चालुक्क बर। मंची भोरा राज॥
अमरसिंह सेवर प्रसन। मंच जंच गुन काज॥ छं० ॥ २९॥

[3]इनहिं समीप बुलाइ करि। बोलिय भीम नरिंद॥
ज्यों तुम जंपौ [4]त्यौं करौं। तुम [5]छत मो सुख [6]निंद॥ छं०॥ ३०॥

मंत्रियों का कहना कि इस कार्य्य में विलंब न करना चाहिए।

जंपि सु मंची मंच तब। सुनि भीमंग सुदेव॥
धरती वर पर अप्पनी। लेत न कीजै [7]छेव॥ छं० ॥ ३१॥

(१) ए. कृ. को.-पाइ।
(२) ए.-मंत्री। (३) मो.-इनह। (४) ए. कृ. को. ज्यौं।
(५) मो.-बत। (६) ए. कृ. को.-न्यंद। (७) ए. कृ. को. सेव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज्य प्राप्त करने की लालसा से गत भीषण घटनाओं का ऐतहासिक उदाहरण ।

साटक ॥ भूमीनं धर ध्रम्म क्रम्म [1]निरतं, बंध्यो बधें पाडवं ॥
भूमी काज दधीच आस मृगया, नित्तं बज्रं कारनं ॥
केकइयं भुम्र काज रामय बनं, दसरथ्थ मंगे बरं ॥
सा भूमी क्रित कारनेव स्वरसा, स्नेहाययं भूमयं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

पुनः मंत्रियों का आख्यान कहना ।

कवित्त ॥ जा जीवन जग पाइ । आइ अवनी रस रंगह ॥
जो जा जीवन वलह । विनोद रषह मन पंगह ॥
जा जीवन कज्जह । कपूर पूरन प्रभु कोवह ॥
जा जीवन आरंभ । कित्ति सा ध्रम्म सु रोपह ॥
जिहि काज जियन तप जप करहि । भमर गुफा साधहिं अवस ॥
तिहि जियन [2]त्यागि मंडय कलह । तौ भूमिय लभ्भै सु [3]रस ॥
छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ सो जीवन इम पहुनि करि । अच्छित सती समान ॥
चावहिसि नर्ष्षे निडर । वौ लभ्भै [4]मिम पान ॥ छं० ॥ ३४ ॥

भोलाराय का सेन सज कर तय्यारी करना ।

सुनत मंत चल्लिय न्त्रपति । सज्जि सेन चतुरंग ॥
जनु बद्दल षह उन्नए । दिट्ठ न परत [5]नभंग ॥ छं० ॥ ३५ ॥

सेना के जुड़ाव का वर्णन

अरिल्ल ॥ हाला हलं मिलत्तं सेनं । [6]ज्वाला मलि [7]ज्वालाह छत्तेनं ॥
दैवत देव बंधि चतुरंगी । है हिलन्न हिंदू दल [8]नंगी ॥ छं० ॥ ३६ ॥

(१) मो.-सरसं । (२) मो.-काज ।
(३) मो.-सर । (४) ए. कृ. को.-पिम ।
(५) ए. कृ. को.-भमंग । (६) मो.-क्षाला ।
(७) मो.-क्षालाह । (८) ए. कृ. को.-लग्गी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाथा ॥ सो चतुरंगय सेनं। हय गय सज्जि बीर उर रेवं ॥
अरुनोदय गुन मंतं। जानिज्जै सूरतं बीरं ॥ छं० ॥ ३७ ॥

भीमदेव के सिर पर छत्र की छाया होना।

उग्यौ छत्र छिति राज सिर। चिषत बीर रस पान ॥
यों सब सेना रज्जियैं। ज्यौं जोगिंद जुवान ॥ छं० ॥ ३८ ॥

कवि की उक्ति कि मंत्री सदैव भला मंत्र देते हैं परन्तु वे होनहार को नहीं जानते।

कहहि मंच मंचिय सुमति। विधि विधि सुविधि न जान ॥
कै भंजै कै रंजई। कै [1]दिवत्त प्रमान ॥ छं० ॥ ३९ ॥

सेना का श्रेणीवद्ध खड़ा होना।

आनिग्र [2]अक्षित साल गुन। विधि चालुक्क सयन्न ॥
पुब्ब बैर सोझित्ति कौ। झिरि भंजै रिन तन्न ॥ छं० ॥ ४० ॥
पंच सहस पंचौ सुक्रत। पंचौ पंच प्रक्रत्त ॥
पंच रष्षि पंचौ ग्रहै। तौ भारथ्थ सु जित्त ॥ छं० ॥ ४१ ॥

सेना समूह का क्रम वर्णन।

दूहा ॥ सली मिली कज्जल वरन। भेक भयानक भंति ॥
तिन अग्गैं धर मँडे। तिन अग्गें गज पंति ॥छं०॥४२॥

उक्त सनासमूह की सजावट के आतंक की पावस ऋतु से उपमा वर्णन।

माधुर्य ॥ गज पंति चल्लिय जलद हल्लिय गरज नग घन भुल्लियं ॥
हल हलन घंटन घोर घुंघर नाग दुब्भर डुल्लियं ॥
गत लग्गि गिरवर पुरहि तरवर हलहि धरवर धाहही ॥
झलकंत दंत कि पंत बग घन धाम कल सति गावही ॥छं०॥४३॥

(१) ए. कृ. को.-देवत्त। (२) मो.-अनीत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गज बहत मदद्दद [1]मनहुँ घन भद छुट्टि छिंछन उभ्भरै ॥
पग जोरि मोरि मरोरि सुर जनु दिष्षि सुरपति लुभ्भरै ॥
बनि पीलवाननि ढाल हालनि बनिय बैरष साजही ॥
मनुं सिषर गिरि वर काम अंगन छच चमर कि राजही ॥
छं० ॥ ४४ ॥

अंध धुंधन चलत मग्गन सुनत बज्जन चल्लही ॥
वै कोट ओटन अगड़ मन्नत सिषर गिर रद झल्लही ॥
दल मुष्य मंडिय मेंघ छंडिय मनहु सुरपति वज्जयं ॥
सुर सोम सोमह मभ्भक्त मोमह ग्रेह तजि प्रज भज्जयं ॥ छं ॥ ४५ ॥
परि देस देसन रौरि दौरिय सुनिय संभरि रज्जयं ॥
बर मंगि बाजिय सिलह संजिय [2]वद्दै भोरा अज्जयं ॥ छं० ॥ ४६ ॥

इसी अवसर में मुख्य सामंतों सहित पृथ्वीराज का उत्तर की तरफ जाना और कैमास के संग कुछ सामंतों को पीठि सेना की तरफ आने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ उत्तर वै विजयंत। रोह रत्तौ प्रथिराजं ॥
सोमेसर ढिल्लीस। संग सामंत सुराजं ॥
षीची राव प्रसंग। जाम जद्दौं घट भारिय ॥
देवराज बग्गरिय। भान भट्टी षल हारिय ॥
उद्दिग्ग बाह [3]पग्गार भर। बलिय राव बलिभद्र सम ॥
इत्तनें रष्षि कैमास सँग। कलह कूच किन्नौ सुक्रम ॥ छं० ॥ ४७ ॥

पृथ्वीराज के चले जाने पर उन सब सामंतों का भी चला जाना जिनके भुजबल के आश्रित दिल्ली नगर था।

दूहा ॥ जिन कंठन ढिल्ली नयर। ते रष्षे प्रथिराज ॥
रसित स्वामि अभ्यंतरह। कलह न [4]इच्छन काज ॥ छं० ॥ ४८ ॥

(१) मो.-मनल। (२) मो.-वहौ।
(३) ए. कृ. को.-पागार। (४) ए. कृ. को.-इछत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनत पुकारह छोह छकि। सत्तिय सत्त प्रमान ॥
चढ़त सोम चढ्ढे हयन। विंटि नछिचन भान ॥ छं० ॥ ४९ ॥
रन बन घन सोमेस सुत। सज्जि सेन चतुरंग ॥
को विद गुन मन ज्यौं रमत। ज्यौं भर जानत जंग ॥छं०॥५०॥

उसी समय पूर्ववैर का बदला लेने के लिये भीमदेव का अजमेर पर चढ़आना, प्रातःकाल की उसकी तैयारी का वर्णन।

कवित्त ॥ नाग कलं मलि भार। सार सज्जत रन रज्जन ॥
दै दुवाह चालुक्क। भीम भारथ सों लग्गन ॥
सोझत्तौ बर बैर। बहुरि हालाहल मच्चौ ॥
भरन पहुंचिय [1]आव। लेष लंघै को रच्चौ ॥
करि [2]न्हान दान इष्टं सु जप। भट अभंग सज्जे समुद ॥
विगसंत नयन दिय बयन। मनों प्रात फुल्लै कुमुद ॥छं० ॥ ५१ ॥

इधर कन्ह और जैसिंह के साथ सोमेश्वर का भीमदेव के सम्मुख युद्ध करने के लिये तय्यार होना।

कुसुम जुद्ध कुसुमेक। कुसुम संग्रम कुसुमेकह ॥
आदि जुद्ध संपनौ। दैव बद्धौ दुति देकह ॥
संभरि वै संभरिय। राज सोमेसह कन्नं ॥
उत्तर दिसि प्रथिराज। गयौ उत्तर दिसि मन्नं ॥
जै सिंह देव जै सिंह सुत्र। धुत्र प्रमान पय [3]डड धरौ ॥
इल अचल अचल लग्गन नदिय। गरिल ग्गागर उब्भरौ ॥
छं० ॥ ५२ ॥

सोमेश्वर की सेना की तय्यारी वर्णन।

हनुफाल ॥ सजि सेन सोम अपार। सुनि सज्ज सेन प्रकार ॥
सोमेस सूर विचार। सजि चढ़े बीर जुझार ॥ छं० ॥ ५३ ॥

(१) ए. कृ. को.-आउ। (२) मो.-कान्ह।
(३) कृ. को. मो.-डंड।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*धरा धरा कंपिय भार। .... ॥
चढ़ि राइ चालुक पान। धर धरिय दिल्लि सुथान॥ छं० ॥ ५४ ॥
सुनि श्रवन संभरि राज। बर बज्जि [2]विजयत बाज॥
तन [3]चविधि तूल तरंग। विधि मंडि बीर बिजंग॥ छं० ॥ ५५ ॥
दल देषि सूर सुरंग। उर होत अरियन पंग॥
ढलकंत ढिल्लिय ढाल। मधु माध नूत तमाल॥ छं० ॥ ५६ ॥
छुटि अचंग अच्छुतुपार। पाहार फारि प्रहारि॥
उड्डि हत्त तिड्डिय सेन। मनों राम लंका लेन ॥छं० ॥ ५७ ॥

सैनिकों का उत्साह सोमेश्वर की वीरता और कन्हराय का वल वर्णन।

कवित्त॥ चिविध साज वड्डिय। अवाज भेरी कोकिल सुर॥
भवर भुंड झंकार। चौर मोरह दुरंत बर॥
बर बसंत सम वीर। नच्चि तोषार चिंभगिय॥
[4]रन रत्तौ सोमेस। भीम भारथ अनभंगिय॥
दल धरकि भरकि काइर सरकि। हरषि सूर बज्जिय करस॥
कन्हा नरिंद प्रथिराज बिन। सुभर कंक मंडिय सरस ॥छं०॥५८॥

युद्ध आरंभ होना।

दूहा॥ सुबर वीर मंड्यौ समर। रन उतंग सोमेस॥
दै दुबाह [1]दुज्जन घरी। घरी सु अक्क तरेस॥ छं० ॥ ५९ ॥

कन्ह का वीरमत और तदनुसार सेनापति उसका व्याखान।

कवित्त॥ जा दिन जीव रु जम्म। क्रम्मता दिज जम पच्छै॥
सुष्ष दुष्ष जय अजय। लोभ माया नन सुच्छै॥

---

* यद्यपि यह पाठ मो.-प्रति में ५३ छंद का चतुर्थ चहण करके दिया हुआ है किन्तु अन्य तीनों ए. कृ. को.-प्रतियों में छ० ५३ के चतुर्थ चरण का "सजि चढ़े वीर सुझार" पाठ है। अतएव यह पाठ भेद नहीं हो सकता, आगे चल कर छंद भंग भी है—इस से मालूम होता है कि इसके साथ का दूसरा चरण लेखक की भूल से छूट गया है। (२) मो.-विजयसु। (३) ए. कृ. को.-त्रिधि। (४) को. कृ.-नर, ए.-मर। (१) ए. कृ.-दुज्जनं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काल कलह संग्रह्यौ। मोह पंजर आरुद्धौ॥
[१]मुगति मग्ग सुझ्झै न। ग्यान अंतह किन सुद्धौ॥
प्रतिव्यंब अंब अंबह जुगति। भुगति क्रम्म सह उद्धरै॥
केवल सु भ्रम्म [२]षिचिय तनह। कन्ह कंक जौ सुद्धरै॥ छं०॥ ६०॥

दूहा॥ बीर गज्जि गज्जिय विदुष। * नर निरदोष सदोष॥
संभरवै [३]संमर सुमति। नृप लगि सुमत जमोष॥ छं०॥ ६१॥

कन्ह की आंखों की पट्टी खुलना।

कवित्त॥ सजिय सकल सन्नाह। दाह जनु दंगल पट्टिय॥
सुमरि साह इक देव। द्रुवन दल देषि [४]दपट्टिय॥
छुट्टिय पट्टिय नयन। भइ दुंदभी गयन्ना॥
तेग वेग झम झमिय। मच्च आरीठ भयन्ना॥
फूलह सु धार धर कन्ह वर। कर पर छुट्टिय छह घरिय॥
पग सट्ठि नट्ठि भीमंग दल। बल अभूत कन्हा करिय॥छं०॥६२॥

दोनों हिंदू सेनाओं की परस्पर ओजास्विता का वर्णन।

दूहा॥ काल चंपि बर चंपि कल। नर निर्घोष निसान॥
सुबर बीर हिंदुअ सयन। बर बीरा रस पान॥ छं०॥ ६३॥

कन्हराय के युद्ध का पराक्रम वर्णन।

† कलाकल॥ कलहंतय केलि सु कन्ह कियं। जु अनंदिय नंदिय ईस बियं॥
नचि [५]नौ रसमं इक कन्ह भरं। मय मंचि भयानक अंत करं॥
छं०॥ ६४॥
झमकंत सु दंतन असि झरी। जनु विज्जुलि पष्पत मेघ परी॥
उड़ि धुंधरियं निय छाइ जनं। जनु सज्जिय [६]जुग्ग जुगद्दि पनं॥छं०॥६५॥

(१) कृ. को.-मुकाति, ए.-सुकाति। (२) ए. कृ. को.-छत्री। (३) ए.-संभर।
* ए. कृ. को.-नर निर षोस दोष। (४) ए.-दुपट्टिय, मो. को.-ऊपट्टिय।
(५) मो.-नौ रस में। (६) मो.-सज्जि।

† इस छंद को "को" प्रति में मधुराकल करके लिखा है और "मो" प्रति में भ्रमरावली करके लिखा है परंतु भ्रमरावली छंद यह है नहीं भ्रमरावली अथवा नलिनी छन्द ५ सगन का होता है पर इस छंद में केवल चारही सगन हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजि [1]डौरुत्र डक्क निसान घुरं। जनु बीर जगावत बीर उरं ॥
दुत्र सेन बलं त्रसियो बरषी। नचि जुग्गनि षप्पर लै हरषी ॥
छं० ॥ ६६ ॥

[2]जिनके सिर मार दुझार झरै। वहु-यौ नन पंजर आय परै ॥
छं० ॥ ६७ ॥

कवित्त ॥ कहर भगर जिम षेल। ठेल सेलन सम ठिल्लहिं ॥
इक्क धुकत धर तुट्टि। *इक्क वल्लन गल्ल मिल्लहिं ॥
इक्क कमंध उठंत। इक्क त्रंतन त्रालुझ्झहिं ॥
इक्क हथ्थ [3]पग झरहिं। टिक्कि षग [4]पग बिन झुझ्झहिं ॥
[5]तरफरत इक्क धर मीन जनु। रन रवन्न [6]छिचिन कन्यौ ॥
घन घाइ घुम्मि घट धुक्कि धर। इम सु जुद्ध कन्हह [7]भिन्यौ ॥
छं० ॥ ६८ ॥

कन्ह राय का कोप।

किन्न दंति बिन दंत। सुभट सीसन बिन किन्निय ॥
हय किन्निय बिन नरनि। सेन भीमह करि झिन्निय ॥
[8]षुद्दा बिन किय काल। बाल बर बिगरिन दिष्षिय ॥
पल हारिय पल पूर। सूर कन्हा भय भिष्षिय ॥
कीनी सुकित्ति भूमी अचल। सचल सस्त्र सह झंझरिय ॥
मदमत्त गंध महियों [9]ढुरिय। मनों वाय वच्छह गुरिय ॥ छं० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ सत्तह [10]आराधिय सुमहि। हरि दाढा ग्रन जान ॥
[11]सो संभरि सोमेस बर। सो कीनी पहिचान ॥ छं० ॥ ७० ॥

(१) ए. कृ. को.-डरुअ। (२) मो.-जिनें।
* मो.-इक्क वल भग्गल मिल्लहि।
(३) ए. कृ. को.-षग। (४) मो.-षग। (५) ए. कृ. को.-तरफंत।
(६) ए. कृ. को.-छत्री। (७) ए. कृ. को.-लन्यौ। (८) ए. षुधा, कृ.-षुदया।
(९) मो.-ढुरत। (१०) ए. कृ. को.-आधारिय।
(११) ए. कृ. को. से भरिवे सोमेस वर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी सेना को छितर बितर देख कर भीम देव का रोस में आकर स्वयं युद्ध करना।

कवित्त ॥ मध्य रूप मध्यंत। मध्य [1]भ्रम्मन तन मोचन ॥
सिद्ध सुरध अनुरद्ध। वृद्ध वय कामति सोचन ॥
[2]पुत्र बिना बिन बंध। बल सु बंध्यौ भीमंदे ॥
सार सुक्रत आरद्ध। सुष्ष लष्षं तंमंदे ॥
बंभनिय बिनै सद्धी सयन। *नय तरत्त रत्ती सुगति ॥
सोमेस सूर सोमेस सों। सार लग्गि बीरह सुभति ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कन्ह और भीम देव का परस्पर घोर युद्ध होना।

रसावला ॥ रसं बीर मत्ते, लरै लोह तत्ते। धुरा कन्ह मत्ते, रनं [3]रोस पत्ते ॥
छं० ॥ ७२ ॥
मनों काल [4]दंते, रसं रुद्र रत्ते। झरै फुल्ल पत्ते, विमानं विहत्ते ॥
छं० ॥ ७३ ॥
षगंगे विहत्ती, उड़ै गज्ज मुत्ती। असं मंस कत्ती, रुधी धार रत्ती ॥
छं० ॥ ७४ ॥
उमा हाथ कत्ती, उछारंत छत्ती। महा भीम मत्ती, इसी रुद्र रत्ती ॥
छं० ॥ ७५ ॥
तजै मोह वंसं, मिलै हंस हंसं। झरै अंत झूमी, मनों मेघ भूमी ॥
छं० ॥ ७६ ॥

कवि की उक्ति।

कवित्त ॥ सघन घाय त्रिघाइ। †मऱ्यौ को मरन अहुट्टिय ॥
सूरबीर संग्राम। धीर भारथ्थ स जुट्टिय ॥
कोन षेत तजि गयौ। कोन हाऱ्यौ को जित्तौ ॥
लिषं अंक बिन कंक। कोन माया रस वित्तौ ॥

(१) मो.-भ्रम्मं। (२) ए. कृ. को.-पुत्रि।
* मो.-"नयन तरत तरती सुगति"। (३) मो.-सोम। (४ ए. कृ. को.-मत्ते।
† मो.-"मुन्यो कौमर आहुट्टिय"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छह घरी श्रोन असिवर उझौ । धार मार रुधि धार चलि ॥
संजुत्त अग्गि धूमह स जुत । [1]छलि बलि बीर बलिष्ट बलि ॥ छं ॥ ७७ ॥

युद्ध स्थल की उपमा वर्णन ।

सिद्धि रिद्ध विथ्थुरिय । लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय ॥
श्रोन सलिल बढ़ि चलिय । मरन मन किंकन जुट्टिय ॥
कलमल सिर वहि गुरिय । नयन अलि वास सु वासिय ॥
जंघ [2]मगर कर मीन । कच्छ षुप्परि षग चासिय ॥
पोइनी अंत सेवाल कच । अंगुलि पग करि झिंग झरि ॥
सोमेस सूर चहुआन रन । भीम भयानक जुद्ध करि ॥ छं० ॥ ७८ ॥

दूहा ॥ हय गय जुद्ध अनुद्ध परि । बहत सार असरार ॥
*मानों जालुग अंत कौ । आनि सँपत्तौ पार ॥ छं० ॥ ७९ ॥

कन्हराय का भीम देव के हाथी को मार गिरना ।

कवित्त ॥ सोमेसर अरि सूर । ढाहि [3]दीनै [4]बरि वानै ॥
नल कूबर मनि ग्रीव । जमल भग्गा [5]तरु कान्है ॥
वे सराप नारद प्रमान । दरसन हर लद्धिय ॥
इन तमंग उत्तरै । सार कट्ठे बर बद्धिय ॥
त्रिध्घात घात मत्तौ कलह ।असुर सुरन मत्तौ [6]महन ॥
कट्ठै सुरत्त कित्तिय सुभट । सु कविचंद [7]कित्तौ कहन ॥छं०॥८०॥

दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध ।

भुजंगी ॥ बजे बीर बीरं सु सारं षनक्कै । महा मुक्ति बत्ते सु बीरं रनक्कै ॥
गजे बीर बद्दं करन्नाल सद्दं । सनाहं सस्हूरं बहै सार हद्दं ॥छं०॥८१॥
नचै जंग रंगं ततथ्थे तथंगं । [8]लचै रंक चित्तं मनं सूर [9]पंगं ॥
बढै वंक कंकं ससंकौ धरानं । नगं नग्ग जुट्टे अमग्गं परानं ॥छं०॥८२॥

(१) ए. कृ. को.-बलि । (२) ए. कृ. को.-मकर ।
* ए. कृ. को. मनो जोग जुगत्ति को । (३) ए. कृ. को.-दीनौ ।
(४) ए. कृ. को.-वर । (५) मो.-तर । (६) ए.-सहन ।
(७) मो.-कीरति । (८) ए. कृ. को.-जंग ।
(९) ए. कृ. को.-चलै ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठनक्कंत घंटं रनक्के नफेरी। मया मोह दोषन्न ह्वरन्न [1]नेरी॥
धरं धार ढौरैं ढंढोरें सु ढालं। मनों चक्र फेरैं कि पंकं कुलालं॥
छं० ॥ ८३॥

जामराय यद्दव और उसके सम्मुख खंगार का युद्ध करना, दोनों की मतवाले हाथियों से उपमा वर्णन।

कवित्त॥ समर समुद भीमंग। मध्य वड़वानल राजं॥
चाहुआन चालुक्क। रोस जुट्टे बल साजं॥
दल दष्षिन जदु जाम। कलप अंती कर कुप्पौ॥
[2]ता मुष्षह षंगार। झार अग्गी भर रुप्पौ॥
बिरचे कि [3]महिष बलबंड बल। दल [4]चमूह चवदंत हुअ॥
न्नप काम जाम इक जहर भर। बहर रूप पिष्षे ति दुव॥ छं० ॥ ८४॥

रसावला॥ जदू जाम जोधं, षंगारं सुरोधं। भरं भार कुद्दं, रमै रोस उद्दं॥
छं० ॥ ८५॥

करें केलि कंकी, घुते लज्ज पंकी। करूरं करारे, मनों मत्तवारे॥
छं० ॥ ८६॥

पियैं लोह छक्कं, बकै मार हक्कं। धरा धीर धूनें, फिरं अश्व ह्वनें॥
छं० ॥ ८७॥

विना दंत दंती, किए कुद्दवंती। गिरैं कूट कारे, झरैं रत्त धारे॥
छं० ॥ ८८॥

परैं [5]सार मारे, भयानं निनारे। हयं पाइ एकं, फिरैं षेत केकं॥
छं० ॥ ८९॥

दुअं मुष्ष लग्गैं, डिगै नाति डिग्गैं। परैं लोह पूरं, गिनै नाति ह्वरं॥
छं० ॥ ९०॥

वहै श्रोन धारं, झरैं [6]झिन्न तारं। .... छं० ॥ ९१॥

उक्त दोनों वीरों की मदान्ध बैल से उपमा वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-भेरी। (२) मो.-तसु। (३) ए. कृ. को.-बलष।
(४) ए. कृ. को.-समूह। (५) मो.-मार। (६) ए.-फिरन, कृ. को. मो.-झिरन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाथा ॥ यों लग्गे रन सूरं। ज्यों मत्ते [1]वृषभ रोस रंगाइं ॥
गरजैं धर षुर षुंदे। तक्कैं घाइ अप्प अंगाइं ॥ छं० ॥ ९२ ॥

इन वीरों का युद्ध देख कर देवताओं का विस्मित होना और पुष्प वृष्टि करना।

दूहा ॥ अंमर धर पन्नग असुर। पिषि सह रष्षित नैन ॥
सुमन ससंभ्रम पिष्षि क्रम। सुमन स [2]वृष्टिय गैन ॥ छं० ॥ ९३ ॥
सघन घाइ घूमत विघट। षिलै कि पन्नग मंच ॥
विस भोए डंविस सबल। [3]सगति नहीं जुग [4]जंच ॥ छं० ॥ ९४ ॥

सोमेश्वर जी के वाम सेनाध्यक्ष बलभद्र का पराक्रम वर्णन।

कवित्त ॥ वाम अंग सजि संग। बलिय बलिभद्र विरचि रन ॥
सेत चमर गज सेत। सेत गज झंप करनि गन ॥
सेत हयन गज गाह। घंट घूंघर घनघोरं ॥
वष्पर पष्पर जीन। सार दड्डुर दल रोरं ॥
गज गाज बाजि नीसान धुनि। अति उब्भर दल जोर वर ॥
बजि लाग राग सिंधू स धुनि। करन सु उयल्ल [5]पत्थल्लधर ॥ छं० ॥ ९५ ॥

भीम देव की सेना का भी मावस की रात्रि के समान जुट कर आगे बढ़ना।

दूहा ॥ पावस मावस निसि धुनिय। सजि सारंगी आइ ॥
षिभिर षेत घन घाइ मिलि। जानिक लग्गी लाइ ॥ छं० ॥ ९६ ॥

सोमेश्वर जी की तरफ के बहुत से *कछवाहे वीरों का मारा जाना

(१) मो.-मनयं रोसं। (२) मो.-द्रष्टिय।
(३) मो.-सकति,। (४) ए.-तंत्र। (५) मो.-पथ्थ।

* कछवाहा क्षत्रियों की एक जाति विशेष को कहते हैं। वर्तमान जैपुर राज्य उसी वंश में है। कवि ने इस कछवाहा शब्द के लिये प्रायः कूरंभ शब्द प्रयोग किया है जो कि कूर्म्म (कच्छप, कछुवा) शब्द का अपभ्रंस है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुजंगी ॥ मिले सेन [1]सूरं करूरं करारे। छुटै बान कम्मान करि बार धारे॥
परैं कत्तियं घात निरघात बीरं। फिरं रुंड मुंडं तनं तच्छ [2]नीरं॥
छं० ॥ ९७ ॥

उड़ैं दंत सुंडं भसुंडं निनारे। मनों कज्जलं कूट अहि चंद दारे॥
उड़ै टोप टूकं गुरज्जं प्रहारे। मनों सूर सीसं षसे चंद तारे॥
छं० ॥ ९८ ॥

भई तीरयं भीर अप्रेव मानं। सरं पंजरं पथ्थ षंडेव जानं॥
मिले सेल भेलं भएकं भयंती। कुटे धान मानों धनं कूटकंती॥
छं० ॥ ९९ ॥

रजं रज्ज रज्जे सुरज्जे अनूपं। रमैं जानि वारंत भूपाल भूपं॥
जिनं कछ्छ वच्चं धरं ध्रम्म धारै। तिनं झल्लियं षग्ग अरि सस्त्र झारै॥
छं० ॥ १०० ॥

जिते काछवाचं जितं ध्रम्म धारी। तिनं ठिल्लियं भार भर भीर फारी॥
धरं धुक्कियं धार कूरंभदेवं। सुभै सस्त्र सज्या मनों संत नेवं॥
छं० ॥ १०१ ॥

भीमदेव की सेना का चारों ओर से सोमेश्वर को घेर लेना।

दूहा ॥ दच्छिन पच्छिम वाम दल। दत्त अनुड्डिय सार॥
गोल गहर गाजी अनी। सोमेसर अरि भार॥ छं० ॥ १०२ ॥

उस समय चहुआन बीरों का जीवन की आशा छोड़ कर युद्ध करना।

गाथा ॥ बज्जे रन रनतूरं। गज्जे गहर सूर षल चूरं॥
मंडे निजर करूरं। छंडे मरन मोह सासूरं॥ छं० ॥ १०३ ॥

सोमेश्वर और भीमदेव का परस्पर साम्हना होना।

साटक ॥ पिष्षेयं सोमेस गुज्जर धनी, मचकंदु निद्रा तयं॥
जलधेयं गंजाल कोपित वलं, हालाहलं नैनयं॥

(१) ए. कृ. को.-सार। (२) मो.-तीरं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो वंडं करवान कर्णित दलं, अज्जुन आयातयं ॥
श्री बीरं चहुआन वानति बलं, चालुक्क संघातयं ॥ छं० ॥ १०४ ॥

भीमदेव और सोमेश्वर दोनों की सेनाओं का परस्पर युद्ध करना।

भुजंगी ॥ बढ़े बान चहुआन चालुक्क षेतं। महा मंच विद्या गुरं सुक्र जेतं॥
घने घोर नीसान गज्जे गहारं। उठे जानि प्रासाद बर्षा [1]प्रहारं ॥
छं० ॥ १०५ ॥

बजी भेरि भंकार नफ्फेरि नादं। तड़क्कंत बिज्जू करन्नाल सादं ॥
छुटी बान जंची उड़ी गेन अग्गी। [2]महादेव बीरं चवं निद्र भग्गी॥
छं० ॥ १०६ ॥

सहन्नाइ सिंधू सुरं हर्ष वीरं। नचैं ताल संमाल वेताल श्रीरं ॥
नचैं न्त्रत्य नीसान नारद्द धाई। चढ़ी व्योम विम्मान अपछरि सुहाई॥
छं० ॥ १०७ ॥

जके जष्य गंधर्व कौतिग्ग हारी। प्रलैकालयं ष्याल [3]ष्यालं विचारी ॥
दुवं दिग्गपालं दुवं छत्रधारी। दुवं ढाल ढिंचाल मल्लं करारी ॥
छं० ॥ १०८ ॥

दुअं [4]तबल दारं दुवं बिरद वानं। दुअं भूमि संघार हिंदू हदानं ॥
दुअं सूर पूतं दुअं [5]कस्य याए। दुअं दंद दारुन्न बाजे बजाए ॥
छं० ॥ १०९ ॥

दुअं लोह मेवाड़ मंडूर मानं। दुअं हंकि हंकार बढ्ढे ब रानं ॥
दुवं सैंन स्याही जलं बद्दलानं। दुअं गज्ज गुम्मानयं तेज भानं ॥
छं० ॥ ११० ॥

रची चच्चरी लोह डंडं डरारी। प्रछ्त्तीय वेरा अचंती करारी ॥
[6]सरं जाल भालं भिदै जंच जीवं। हयं हीस मंडे गरज्जे करीवं ॥
छं० ॥ १११ ॥

(१) मो.-पहारं। (२) ए. कृ. को.-महाबीर देवं।
(३) को.-पत्री, ए. कृ. को.-क्षत्री। (४) ए.-तन्न, कृ. को.-तत्र।
(५) को.-अस्व, ए. कृ.-अस्य। (६) ए. कृ. को.-रसं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुटै हड्ड मंसं धरंगं अभंती। गहै अंत गिद्धी गयंनं भमंती॥
उछैं छीछ तारं अपारं उतंगं। सुरं दृष्ट बंधूक पूजं [१]जुतंगं॥
छं० ॥ ११२ ॥

छटें मभ्भ सभ्भं नरं केक कच्चे। लरें जंग हथ्थं बिना केक रच्चे॥
उड़ै षुप्परी षग्ग झारं करारी। मनों चंद सूरं दधी पूज धारी॥
छं० ॥ ११३ ॥

किते घाइ अघघाइ घट घूम लुट्टै। [२]तिनं जम्म म्रनं क्रमं बंध छुट्टै॥
किते लोह छक्के रनं भूमि घूमें। तिनं वास वैकुंठ कै ठाम धूमै॥
छं० ॥ ११४ ॥

जिते अंग अंगं परे टूटि न्यारे। तिनं उप्पजै मुक्ति कै भूम त्यारे॥
कहै कव्वि वष्षान किं वर्नि तेनं। फलै [३]क्रुष्षि पच्छं मरनं जितेनं॥
छं० ॥ ११५ ॥

कवित्त॥ हालाहल वित्तयौ। सार मत्तौ झोलाहल॥
जुग्गिनि जय जय जपहिं। पस्सु, पंषिन कोलाहल॥
धर परंत ढुरि धरनि। उत्त मंगत्तिहि कारहि॥
झर झरंत षग्गाह। बीर डंकिनि ढक्कारहि॥
महि मचि महूरत मरन रन। सद्द जाइ जय सुर करिय॥
चहुआन सूर सोमेस रन। षंड षंड तन झरि परिय॥छं०॥११६॥

अपना मरण निश्चय जान कर सोमेश्वर का अतुलित वीरता से युद्ध करना और उसका मारा जाना।

हय गय नर भर परिय। भिरिय भारथ सम्मानं॥
सोमेसर संचयौ। मरन निहचै उनमानं॥
रत्त रंग सवरंग। जंग सारह उभ्भारै॥
हक्कि मार धकि सार। झुम्मि झग सार [४]सु रारै॥
कलहंत कंक अनभूत हुअ। उड़हि हंस हंसन मिलहि॥
तन तुट्टि रुधिर पल हड्ड सन। कै कमंध उठि रन षिलहि॥छं०॥११७॥

(१) ए. कृ. को.-भुतंगं। (२) मो.-तनं। (३) ए.-ऋष्षि। (४) मो.-सुसारै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमेश्वर के साथ मारे गए हाथी घोड़े पदाती एवं रावत सामंतों की संख्या कथन।

बाजि नंषि सोमेस। सहस बर इक्क प्रमानं॥
[1]तिन मध कहि पंचास। बीर भारथ भरि पानं॥
तीन तीस षट परे। पऱ्यौ सोमेसर षेतं॥
गिद्धि सिद्धि वेताल। कंक बंध्यौ सिर नेतं॥
लभ्भी सु मुगति अदभुत जुगति। हंस हंकि हंसह मिल्यौ॥
सोमेस करी सोमेस गति। पंच तत्त पंचह मिल्यौ॥ छं०॥ ११८॥

सोमेश्वर का मरना और भीमदेव का घायल होकर मूर्छित होना।

दूहा॥ जुज्झि पऱ्यौ सोमेस धर। डोला चालुक राय॥
दुहूं सेन झरि धर परे। बजी बत्त षग चाइ॥ छं०॥ ११९॥
नए भृत्य न्रप रिष्षि कै। ज्यों फिरि करिहैं झुज्झ॥
चतुरानन चिंता भई। नर भारथ्थ अबुज्झ॥ छं०॥ १२०॥

सोमेश्वर को मुक्ति सहज ही मिली।

गाथा॥ जा [2]मुक्ति जोगिंद। कालं काह भ्रम्म भ्रमाइं॥
सा मुक्ती सोमेसं। इक्क छिने लभ्भियं राजा॥ छं०॥ १२१॥
भूमी भरंत भरयं। कलयं कर कथ्थि कथ्थेवं॥
जै जै जंपि जगत्तं। है है नभ्भ सद्द सुर यायं॥ छं०॥ १२२॥

पृथ्वीराज का सोमेश्वर की मृत्यु सुन कर भूमि शय्या धारण करना और षोड़सी आदि मृत्युकर्म्म करना।

कवित्त॥ सुन्यौ राज प्रथिराज। भूमि सिज्जा अवधारिय॥
तात काज तिन पिंड। दान षोडस विचारिय॥
भद्द मद्द सद्दयौ। राज गति अब्ब प्रकारं॥

(१) मो.-तिन मध्य सु पंचास। (२) ए. कृ. को.-मुक्ति, मुक्ति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वादस दिन प्रथिराज। भूमि सज्या संथारं॥
विन भोग भोज इक टंक करि। सुहथ दान दिय राज बर॥
दिन्नौ न कोइ दैहै न कोइ। इतौ दान जनमंत नर॥छं०॥१२३॥

पृथ्वीराज का भूमि गो स्वर्णादि दान करना और पण करना कि जब तक भोराराय को न मार लूंगा न पाग बाधूंगा न घी खाऊंगा।

अठ्ठ सहस दिय धेंन।। *तब प्रथ्थी विधि धारिय॥
हेम स्रृंग षुर हेम। तौल द्वादस हिमसारिय॥
जुगति जुगति विधि नान। दान षोड़स विस्तारं॥
तात वैर संग्रहन। लेन प्रथिराज विचारं॥
छ्त मुक्कि पाघ बंधन तजिय। सुह्त बीर लीनौ विषम॥
चालुक्क भीम भर गंजिकै। कढ़ौ तात उद्रह सुषम॥ छं०॥१२४॥
अरिल्ल॥ धिग ताहि ताहि जीवन प्रमान। सध्यौ न तात बैरह बिनान॥
राजिंदु द्दष्टि रग तेत नेन। बध्यौ सु रोसु उर उमडि गेन॥ छं॥१२५॥

पृथ्वीराज का भोराराय पर चढ़ाई करने की इच्छा करना परन्तु मंत्रियों का पृथ्वीराज को अजमेर की गद्दी पर बैठाने का मंत्र देना।

दूहा॥ सजन सेन चाहैं न्वपति। बैर तात प्रथिराज॥
पाठ पुब्ब बैठन मतौ। पच्छ सु जुद्धह काज॥ छं०॥१२६॥

पृथ्वीराज का राज्याभिषेक।

कवित्त॥ बोलि बिप्र प्रथिराज। तत्त बुद्धी अधिकारिय॥
राज क्रंम सब जान। ध्रम्म क्रम्मह तन धारिय॥
जग्य जाप मति जोग। क्रम्म बंधन बल बंधन॥
दिषत [1]मुष्ष जनु [2]ब्रह्म। पाप भंजन जन सज्जन॥

* मो.-"तब प्रथिराज सुधारिय" पाठ है।
(१) मो.-सुष्ष। (२) मो.-ब्रिम्म।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोगिंद जोग पुज्जै नहीं। काल चिदस जानै सुमति ॥
सासँाति सूर सोमह करन। सुविधि सूर मंडी सुभति॥ छं० ॥ १२७॥

दूहा ॥ राज विप्र बोले सुव्रत। जजन सुजग्य पवित्र ॥
तत्र कोइ पुज्जै नहै। क्रम बारन बर मित्र ॥ छं० ॥ १२८ ॥

पृथ्वीराज का दरवार में बैठना और विप्रों का स्वस्तयन पढ़ कर तिलक करना।

पद्धरी ॥ आएसु विप्र दरबार बार। [1]साधंत जोग मति सिद्ध [2]सार ॥
मतिवंत [3]रत्ति प्रथमीत जोग। जुग जगति सेव तिन [4]देन भोग॥
छं० ॥ १२९ ॥

पूजै प्रकार [5]साधन अनेव। तिन प्रसंन होइ तन मद्धि देव ॥
देषेति बिप्र इन विधि प्रकार। जानंत बुद्धि तत्ती प्रचार ॥
छं० ॥ १३० ॥

महि मगन मंडि नहिं निकट फंद। दिष्षंत देह आनंद कंद ॥
प्रथिराज इंद्र राजिंद जोग। अप्पै सु मुक्ति अरु भुक्ति भोग ॥
छं० ॥ १३१ ॥

धर धरनि भिरन दै दान राज। सोवन्न भूमि मंडी विराज ॥
पद सहस सहस बर हेम इक्क। अप्पै सु दान मानह विसिक्क ॥
छं० ॥ १३२ ॥

[6]जोगिंद [7]मत्ति प्रथिराज किन्न। बर बीर धीर साधंत भिन्न ॥
छं० ॥ १३३ ॥

पृथ्वीराज का ब्राह्मणों को दान देना और दरवार में नृत्य गान होना।

दूहा ॥ विविध दान परिमान करि। निगमबोध सुभ थान ॥
लिय दिष्षा जहां ध्रम्म सुत। करि अभिषेक न्रपान ॥ छं॥ १३४ ॥

(१) कृ.-साबधन। (२) ए. कृ. को.-चार।
(३) ए. कृ. को.-रत्त। (४) कृ. ए.-नैंन। (५) को. मो.-राजन।
(६) ए. कृ. को.-जोगिंद्र। (७) मो.-मंति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्रमरावली ॥ नव बीर नवं रस बीर नच्यौ। भ्रमरावलि छंद सु चंद रच्यौ ॥
सिधि बुद्धिय विप्र समान धरं। मति जानत तत्त सुमत्ति गुरं ॥
छं० ॥ १३५ ॥
गुर जानन गो विध तत्त सुरं। मनु बिंब सु बिंबर रंभ डरं ॥
चिय दिष्षिय रंभति रंभ गती। .... ॥ छं० ॥ १३६ ॥
वय स्याम सषी गुन गौर धरं। कविचंद सु ब्रनन कित्ति करं ॥
तमकी तम तेज किरंन [1]रजं। तिन देषत चंद कलाति लजं ॥
छं० ॥ १३७ ॥
गुर सत्त वुधं गुरमत्त ग्रसं। तिन कै उर काम ककन्न नसं ॥
षहकें नग ज्यों गज मग्ग फिरैं। तुटि वार प्रहारत धार धरैं ॥
छं० ॥ १३८ ॥
.... । मनु तारक तेज ससी उचारैं ॥
छलकै छिति मत्ति जराइ जसं। झलकै जनु मुत्तिय मुत्ति गसं ॥
छं० ॥ १३९ ॥
गुर च्यार ग्रहं गुरु जीव रवी। प्रगटी जनु जोति सु तेज हवी ॥
॥ छं० ॥ १४० ॥

दर्बार में सब सामंतों सहित बैठे हुए पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ प्रगटि राज दर जोति। रंग रवनी रस गावहिं ॥
पाट बैठि प्रथिराज। सब्ब सामंत सु भावहिं ॥
दधि तंदुल हरि दूब। सुभ्भ रोचन कसमीरं ॥
मनों भान में भान। प्रगटि कल [2]किरन सरीरं ॥
दिष्षियै बाल गावत सरन। सपत सुरस [3]षट राग [4]मति ॥
संसार भेद आभेद [5]रत। पत्ति [6]प्रक्षति साधत [7]सुरति ॥छं०॥१४१॥

(१) ए.-जरं। (२) ए. कृ. को.-किरति। (३) ए. कृ. को.-घट।
(४) ए. कृ. को.-गति। (५) मो.-रन। (६) ए. कृ. को.-प्रगति।
(७) मो.-सुरनि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुजंगी ॥ कुरंगी सु चंगीं द्रपंगीति वाले। इकं मोल अंमोल लोलंत भाले॥
गरे पुप्फ माला विसालाति धारैं। मयंका मुषी कंठ [1]कलयंठ सारैं॥
छं० ॥ १४२ ॥

दूहा ॥ वित मति गति सारंत विधि। न्रप जै जै प्रथिराज॥
मनों इंदु सुरपुर गहन। उदै करै मनु साज॥ छं० ॥ १४३ ॥
लोइ स पते तिन महल। जहँ सामंत नरिंद॥
इच्छिनि अंचल गंठ जुरि। मनों इंद्रानी इंद्र॥ छं० ॥ १४४ ॥

भुजंगी ॥ न्रपं इंच्छिनी गंठि बंधी प्रकारे। मनों कामता काम की बुद्धि तारें॥
दुहूं रंग रंगी सु रंगीति साधी। मनों जीव गुर राह एकंत बाधी॥
छं० ॥ १४५ ॥
सही सत्त मंतं प्रकारे निनारे। मनों मेनिका रंभ आषे अषारे॥
बरं देषि असमान अभिमान जानै। बने कौन व्रन्नंत ता बुद्धि दानै॥
छं० ॥ १४६ ॥

दूहा ॥ चौअग्गानी लच्छि दै। सब सामंतन सथ्थ॥
जस जा हथ्थन बिप्प के। भौ कामिनिति समथ्थ ॥छं०॥१४७॥

गाथा ॥ उभै राम बर सूरं। सामंतं सत्त षट दूनं॥
ता अप्पन प्रथिराजं। चौ अग्गा लच्छि संग्रामं॥ छं० ॥ १४८ ॥

इच्छनी से गठबन्धन हो कर पृथ्वीराज का कुलाचर संबन्धी पूजन विधान करना।

भुजंगी ॥ भई कामना काम कामित्त राजं। दियौ कन्ह चहुआन हथ्थी विराजं॥
उभै राज राजंग जोगिंदु मित्तं। मनो देवता जीव के जग्य जत्तं॥
छं० ॥ १४९ ॥

पृथ्वीराज का राज गद्दी पर बैठना। पहिले कन्ह का और तिस पीछे क्रमानुसार अन्य सब सामंतों का टीका करना।

दूहा ॥ प्रथम तिलक सिर कन्ह किय। दुत्तिय निडर रठौर॥
इन अग्गह सुभ संत करि। तापछ सुम्भर और॥ छं० ॥ १५० ॥

(१) मो.-कलकंक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ कियौ तिलक बर कन्ह। पाट प्रथिराज विराजहि ॥
मनो इंद्र अरधंग। हथ्थ इंदीवर राजहि ॥
चमर सेत सोभंत। ढुरत चावद्दिसि सीसं ॥
मनों भान पर धरिय। किरनि ससि की प्रति रीसं ॥
अवनीस इंद्र लग्यौ तपन। धुअ सुतेज तप उद्धरन ॥
सुरतान गहन मोषन करन। बहु बीरां रस संविधन ॥ छं० ॥ १५१ ॥

पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन।

कनक दंड सिर छच। सुभत चौहान सीस पर ॥
कै तरत्त ससि भान। तेज मंगल जंगल गुर ॥
ग्रह सुसंत संग्रहन। पंच पंचौ अधिकारिय ॥
चावद्दिसि चहुआन। दिष्टि नवग्रह बल टारिय ॥
प्रज मिलिय आनि बढ्यौ अनँद। चंद छंद चातिग रटहि ॥
प्रथिराज सु बर दुज्जन मनह। काल व्याल कारन ठटहि ॥ छं० १५२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोला भीम विजय सोमेस बंधनो नाम उनचालिसमों प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥३९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पज्जून छोंगा नाम प्रस्ताव लिष्यते*।

(चालीसवां समय ।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर दिल्ली आना।

दूहा ॥ †सुनि कगद प्रथिराज जब । बध्यौ भीम सोमेस ॥
आतुर षरि आयौ जहां । दिल्लि देस नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

पज्जून राय कछवाहे की पट्टन के संग्राम में वीरता वर्णन।

दूहा ॥ कित्ति कला कूरंभ वल । कहत चंद बरदाय ॥
ज्यों पट्टन संग्राम किय । जाइ सु भोरा राइ ॥ छं० ॥ २ ॥
सुनी राज प्रथिराज ने । झाला रानिँग सूय ॥
विरद बुलावै महबली । छोंगा सज्यौ सधूय ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय के सिर पर छोंगा‡ बांध कर लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना।

कवित ॥ छोंगा ला सिर छच । सीस बंध्यौ पज्जूनं ॥
जस जयपत्त जु आनि । करै परसन सह (१)जनं ॥
अप्पातें घर रैठि । रीस कीनी चालुक्का ॥
छीय षटक्के साल । बात संभरि बालुक्का ॥
पुच्छैव पल्ह कूरंभ कों । अप्पानौ दल टारियौ ॥
पज्जून मलयसी बीर वर । करन कूच उच्चारयौ ॥ छं० ॥ ४ ॥

* मो.प्रति में "पज्जून कछवाहा छोंगा नाम प्रस्ताव" ऐसा पाठ है ।
† यह दोहा मो.-प्रति मे नहीं है और पाठ से भी क्षेपक ज्ञात होता है ।
(१) ए. कृ. को.-दूनं ।
‡ एक प्रकार का राजसी या सरदारी चिन्ह जो पगड़ी के ऊपर बांधा जाता है जिसे झांगी भी कहते हैं । सरपेंच, कलगी तुर्रा, इत्यादि का एक भेद है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना कि भोलाराय इस समय सोनिंगर के किले में है और यहां पर पज्जूनराय का चढ़ाई करना ।

दल भोला भीमंग। साल चिंतिउ सोनिंगर ॥
किये कूच पर कूच। काल घेऱ्यौ कि कूट गिर ॥
चंद मंडि ओपम्म। सरद राका परिमानं ॥
उदधि मझि जिम अनिल। जलधि लंका गढ़ जानं ॥
दल दूत राज पिथ्थह कहिय। हक्काऱ्यौ पज्जून बल ॥
तुम जाइ जुरौ [1]ऊपम करौ। हनौ राज भीमंग दल ॥ छं० ॥ ५ ॥

दूहा ॥ सकल सूर कूरंभ बर। सथ लिन्नौ अप [2]जत्ति ॥
समर धीर बीरत सबर। लज्जी परै न [3]भत्ति ॥ छं० ॥ ६ ॥

पज्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन ।

पद्धरी ॥ चढ्यौ बीर पज्जून कूरंभ सथ्थं। मनों कच्छियं जोग जोगी समथ्थं ॥
दुअं तोन बंधे दुअं लै कमानं। *मनों उत्तरा पथ्थ पारथ्थ जानं ॥ छं० ॥ ७ ॥

दुअं असं बंसं रचे रथ्थ जोरं। लगे पाइ छची उठी भोमि भोरं ॥
कियौ पट्टनं कूच चालुक्क थानं। अपं सथ्थ बीरं सु लीए जुवानं ॥ छं० ॥ ८ ॥

पुछै पंथ पंथी तनं सच्च जंपै। सुनै दुष्ट बैरी तिनं तेज कंपै ॥
इकं चित्त इष्टं [4]निजा साइ मानैं। इसे बीर कूरंभ रैवान जानैं ॥ छं० ॥ ९ ॥

तहां घेरियं ग्राम चालुक्क रायं। अचानक्क बीरं दरव्वार आयं ॥
॥ छं० ॥ १० ॥

(१) ए. कृ. को.-ऊपर। (२) ए. कृ. को.-जित्ति।
(३) ए. कृ. को.-मित्ति। * मो.-मनों उत्त पारथ्थ जानं।
(४) ए. कृ. को.-जिन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ *चौकी भीमानी चढ़ै । झाला रानिंग सथ्थ ॥
छौंगा बीर महाबली । बर बीरा रस कथ्थ ॥ छं० ॥ ११ ॥

पज्जून राय का घेरा डालना। मलय सिंह का मुकाबला करना।

कवित्त ॥ चंपि काल पज्जून । बीर भोरा भीमंदे ॥
कै आयौ उप्परै । फुट्टि पायाल सबद्दे ॥
सकल सेन चमक्यौ । बीर भोरा उठि जग्यौ ॥
मलैसीह मुष काल । हाल सम [1]व्याल सु [2]भग्यौ ॥
[3]बक्कार बीर छौंगा गह्यौ । सिर मंडन लिय हथ्थ धरि ॥
आए सु सीस पज्जून करि । समर बाल बीरं सुबरि ॥ छं० ॥ १२ ॥

पज्जूनराय का चाबुक भुल जाना और फिर सात कोस से लौट कर चालुक की भरी सेना में से चाबुक ले जान।

दूहा ॥ लै छौंगा बर [4]बीर चलि । चावक भूल्यौ हथ्थ ॥
सात कोस ते बाहुर्यौ । बर बीरा रस कथ्थ ॥ छं० ॥ १३ ॥
पट्टन हट्टन मझ्झ ते । लै आयौ फिरि धीर ॥
ता पाछैं बाहर चढ्यौ । दल चालुकी बीर ॥ छं० ॥ १४ ॥

चालुक सेना का पीछा करना और पज्जून राय का उसे परास्त करना।

भुजंगी ॥ चढ़े पच्छ चालुक्क सो सज्जि सेनं । हकारे नरिंदं सु कूरंभ तेनं ॥
सुने सद्द कन्नं फिरे तथ्थ बीरं । छुटै तीर तीरं मनों सिंधु नीरं ॥
छं० ॥ १५ ॥
बजै घाइ अघ्घाइ गज्जै हवाई । बजै आवधं मझ्झ आवद्ध झाई ॥
मिले बीर बीरं स्वयं सूर भारे । परे रंग जंगं मनों मत्तवारे ॥
छं० ॥ १६ ॥
झरै सार सारं खिनंगीस उठ्ठे । मनो झिंगनं भद्दवं रैनि वुठ्ठे ॥
घनं रत्त घंटै उभा बीर रत्तं । परै अठ्ठदह बीर कूरंभ पत्तं ॥छं०॥१७॥

* ए. कृ. को.-"षिझ्झी विमान चिढ़्ढ़यो"। (१) ए. कृ. को.-व्यालह।
(२) ए. कृ. को.-लग्यौ। (३) ए.-चंक्कार। (४) ए.-वालि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परे सहस चालुक्क इ बान वीरं। तहां इत्तनैं भान अस्तं म नीरं ॥
छं० ॥ १८ ॥

छौंगा देकर भीमदेव का पट्टन को जाना और मलय सिंह और पज्जून राय की कीर्ति का स्थापित होना।

दूहा ॥ मलैसीह पज्जून रा। दस दिसि कित्ति अवाज ॥
दै छौंगा भोरा फिऱ्यौ। गयौ सुपट्टन राज ॥ छं० ॥ १९ ॥

पज्जून राय का पृथ्वीराज को छौंगा नजर करना।

गयौ सुचालुक ग्रेह तजि। रही कनै गिरि [1]लाज ॥
छौंगा कूरंभ रावलै। [2]कर दीनौ [3]प्रथिराज ॥ छं० ॥ २० ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को ही छौंगा दे देना और एक घोड़ा और देना।

राज सु छौंगा फेरि दिय। बर है बर आरोहि ॥
घटि चालुक [4] बढ़ि कूरमा। अयुत पराक्रम सोह ॥ छं० ॥ २१ ॥
मलैसिंह रानिंग सुत। सुब्भर भोरा राज ॥
कूर्म अचानक यों पऱ्यौ। ज्यौं तीतर पर बाज ॥ छं० ॥ २२ ॥
*पज्जुन राइ महाबली। मलैसिंह धर पारि ॥
छौंगा लै पाछे फिऱ्यौ। सुनि चालुक्क पुकार ॥ छं० ॥ २३ ॥

चन्द कवि की उक्ति से पज्जून राय के वीर शिरोमणि होने की प्रशंसा।

बहुत जुद्ध कीनौ सुबर। सुभर तेज [5]प्रथिराज ॥
भट्ट चंद कीरति तवै। कूरंभह सिरताज ॥ छं० ॥ २४ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पज्जून कछवाहा छौंगा नाम च्यालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥४०॥

(१) ए. कृ. को.-लज्ज। (२) मो.-कर दीनौ। (३) ए. कृ. को.-प्रथु हथ्थ। (४) मो.-बधि। (५) ए. कृ. को.-तवी। *छन्द २१ और २२ मो.-प्रति में नहीं है। इन छन्दों में पुनरुक्ति है इस से इनके क्षेपक होने का भी सन्देह हो सकता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव लिष्यते ।

(एकतालीसवां समय ।)

जै चंद के उभाड़ने से बालुका राय सौलंकी और शहाबुद्दीन की सेना का दिल्ली पर आक्रमण करना ।

दूहा ॥ [1]बालुका हिंदू कमध । और सु गोरी साहि ॥
सामभेद जैचंद किय । पति दोली सम ताहि ॥ छं० ॥ १ ॥

दूत का पृथ्वीराज को यह खबर देना ।

कवित्त ॥ आइ षबरि चहुआन । [2]सु दल बालुकराइ सजि ॥
आइस पंग नरेस । साह साहाब बैर कजि ॥
लष्ष दोइ भर दोइ । पुरह षोषंद सुआइय ॥
दिषि है गै अनमत्त । दूत ढिल्ली दिसि धाइय ॥
प्रथिराज रुधिरु कारी कढ़िय । समह राम [3]प्रोहित रढ़िय ॥
सुरतान समध बालुक कमध । [4]कहें कोन चम्मू चढ़िय ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का विचार करना की पज्जून राय से यह कार्य्य होना संभव है ।

चालुका परि राइ । बीर बज्जे नीसानं ॥
सकल सूर सामंत । षग्ग मग्गं किय पानं ॥
सबर सेन सुरतान । राज प्रथिराज विचारिय ॥
विन कूरँभ को दलै । नृपति इह तथ्य उचारिय ॥
जो चियन बस्य नन द्रव्य बसि । मरनसु तिन जिम तन मनैं ॥
सिर धरै काम चहुआन कौ । वियौ काम चित्त न गनै ॥ छं० ॥ ३ ॥

---

(१) मो.-चालुक्का ।
(२) मो.-"सुबर चालुक्का राह सजं ।
(३) ए. कृ. को.-प्रोहि ।
(४) मो. कहौ कान चंढ़े ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को बुलाना।

दूहा॥ बोलि राज प्रथिराज तब। पान हथ्थ दिय [1]साज॥
कहौ जाइ कूरंभ [2]कौं। इह किज्जै हम काज॥ छं०॥ ४॥

पृथ्वीराज का सभा में बीड़ा रखना और किसी का बीड़ा न उठाना सबका पज्जूनराय की प्रशंसा करना।

कवित्त॥ सुनि सुबत्त कूरंभ। कोइ झिल्लै न पान बर॥
बड़गुज्जर दाहिम्म। चूर चालुक्क चंपि धर॥
परमारह कमधज्ज। बीर परिहारय भट्टिय॥
सकल सूर बर नटे। काल चंपै मति घट्टिय॥
पज्जूनराइ षग अग्गरौ। करै नाम निरमल सु धर॥
इन सम न कोइ रजपूत रन। डरहि काल [3]दिष्षिय [4]निजर॥
छं०॥ ५॥

पज्जूनराय का भरी सभा में बीड़ा उठा कर दोनों शत्रुओं का ध्वंस करने की प्रतिज्ञा करना।

ए कूरंभह बीर। धीर आहत धनुद्धर॥
*जो मह नह पूजंत। जोग षल षंडन सब्बर॥
इनह अप्प बल दौरि। जाइ असि असि अरि झारिय॥
एकल्लै पज्जून सिंघ। परि पिसुन पछारिय॥
लै पान सीस कूरंभ धरि। सकल सूर सामंत नटि॥
चालुकराइ हिंदू दुसह। विषम काल व्यालह सु जुटि॥छं०॥६॥

सुलतान और कमधुज्ज के दल की सर्प और अफीम से उपमा और पज्जूनराय की गरुड़ और ऊँट सें उपमा वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-बाज। (२) ए. कृ. को.-सौं। (३) ए. कृ. को.-दिष्षै।
(४) ए. कृ. को.-नजरि। * मो. प्रति-जोगन पुज्जै जोग षल षंडन बीर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ कालव्याल सुरतान दल । कमध सु पंषय कूट ॥
हरि वाहन पज्जून दल । ते सजि धाए [1]ऊँट ॥ छं० ॥ ७ ॥

पज्जूनराय के बीड़ा उठाने पर सभा में आनन्द ध्वनि होना ।

भुजंगी ॥ लियौ पान पज्जून कूरंभ राइं । स्वयं जानते सोइ कीनी सु भाइं ॥
मिलि अग्गि कूरंभ सोचित्त जानं । गई हट्ठ चहुआन सुरतान मानं ॥
छं० ॥ ८ ॥
बजै दुंदुभी देव देवं सु थानं । भयौ मुष्ष कूरंभ चितं स भानं ॥
॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज का पज्जूनराय को घोड़ा देना ।

दूहा ॥ लरन हथ्थ लिय तेग बर । बगसि राज तब बाज ॥
लिय कूरँभ कुल उज्जले । सीस नवाइ समाज ॥ छं० ॥ १० ॥

चढ़ाई के लिये तय्यार हो कर पज्जूनराय का अपने कुटुम्ब से मिलना और उसके पांचों भाइयों का साथ होना ।

कवित्त ॥ [2]षग्ग बंधि कूरंभ । आइ पज्जून अप्पन भर ॥
सुबर बीर बलिभद्र । तात पज्जून सथ्थ वर ॥
कन्ह बीर बर बीर । सिंघ पाल्हन्न सुधारं ॥
मलयसिंह सब हथ्थ । संग लीने भर सारं ॥
चित स्वामिध्रंम सो अरि भिरन । लरन मरन तकसीर नन ॥
सुनि राग बीर काइर धरकि । बजिग बीर नीसान घन ॥ छं० ॥ ११ ॥

पज्जून राय की चढ़ाई की शोभा वर्णन ।

दूहा ॥ बजिग बीर नीसान घन । पावस सक्र समीर ॥
चढ़िग जोध पज्जून [3]भर । सज्जि हयग्गय बीर ॥ छं० ॥ १२ ॥
भुजंगी ॥ चढ्यौ बीर बलिभद्र कूरंभ रायं । कला पथ्थ कोटं सुजोटं दिषायं ॥
छबी तेज मुष्षं सु सोभंत बीरं । मनों केवलं अंग बीरं सरीरं ॥
छं० ॥ १३ ॥

(१) ए. कृ. को.-जूटं । (२) कृ. को.-षगा । (३) मो.-परि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चढ्यौ बीर संगं नरं सिंग रायं। दिठी दिठ्ठ दिठ्ठी मनों बेद गायं ॥
चढ्यौ राइ पज्जून छत्तं सुधारे। बदै जाहि स्वामी रवी रत्त भारे॥
छं० ॥ १४ ॥
द्रुमं सीस फेरै पजूनं सहेतं। मनों बाज राजं परं बंधि नेतं ॥
चढ़े सेत बंधी सयं सज्जि सारं। तियं पंचमी पूर आदीत वारं ॥
छं० ॥ १५ ॥

पज्जून राय के कूच की तिथि वर्णन।

दूहा ॥ तिथि पंचमि रवि बार बर। छंडि पंच भर आस ॥
चढ़े जोध है गै परिय। [1]मुगति सु लूटन रासि ॥ छं० ॥ १६ ॥

पज्जून राय का कृत वीरताओं का वर्णन।

साटक ॥ [2]धीरंजं धर धीर कूरम बली, पज्जून रायं बरं ॥
जित्तं तं सुरतान मान सरसं, आहत्त बानं बिषं॥
भूयो बाल भुआल भारथ कतं, क्रष्णो धरा धट्टियं ॥
तं काजं बर बीर धीर धरयं, संसार मुक्तं बरं ॥ छं० ॥ १७ ॥

पज्जून राय की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ सेन कूरंभ बीर। डपटीय जानि साइर गंभीर ॥
बंधिय सुतीन कूरंभ मंत। जाने कि जोग जोगाधि अंत ॥ छं० ॥ १८ ॥
तहां हुए सगुन ए सुध्र रूप। दाहारसिंघ रवि रथ्थ जूप ॥
दाहिनैं पूठ म्रग म्रगिय जाय। बामह सुबीय सारस सुभाय ॥
छं० ॥ १९ ॥
उत्तरै तार देवीति वार। डहकंत सद्द जुग्गिनिय भार ॥
म्रगराज मिल्यौ दंतह प्रमान। [3]बंदै सुराज पज्जून जान ॥छं०॥२०॥

पज्जून राय का यवन सेना के मुकाबिले पर पहुंचना।

दूहा ॥ सकल सूर कूरंभ बर। भान भयग मुष बीर ॥
तबै राइ चालुक बर। आइ [4]सँपत्तौ तीर ॥ छं० ॥ २१॥

(१) ए. कृ. को.-मुकाति। (२) ए. कृ. को.-धीरज्जं।
(३) ए.-वद्दै, कृ.-वंदै। (४) ए. कृ. को.-संपनौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमधुज्ज और यवन सेना से पज्जून राय का साम्हना होना।

आइ सँपत्त सूर भर। सुरताना कमधज्ज॥
कूरंभह पज्जून सम। चढ़े जोध गुर गज्ज॥ छं०॥ २२॥

दोनो प्रतिपक्षी सेनाओं का अतंक वर्णन।

पद्धरी॥ दुअ दीन हिंदु संमुहु प्रमान। चालुक्क राइ अरि मलन भान॥
चहुआन सूर रबि जेम बीर। पट्टन सु राइ अरि ग्रसन धीर॥
छं०॥ २३॥
कूरम्म दान षग रूप दीन। अज्ञान जान रज रूप कौन॥
छं०॥ २४॥

दूहा॥ करिग सेन संमुष सुबर। गरूड़ व्यूह किय बीर॥
लरन मरन भारथ्थ क्रत। जज्जर करन सरीर॥ छं०॥ २५॥
[1]ग्रिद्ध ब्यूह कूरंभ करि। नाग व्यूह सुरतान॥
षा ततार षुरसान पति। मंडि फौज मैदान॥ छं०॥ २६॥

पज्जून सेना के व्यूहवध्य होने का स्वपष्टीकरण।

कवित्त॥ [2]पग जद्दव परिहार। पुच्छ पामार सुधारिय॥
भट्टी सेन विषम्म। पिंड पावं अधिकारिय॥
जानु होइ पुंडीर। नष्य उर मंस अंस करि॥
चंच अंष सुभ जीह। बीर कूरंभ [3]पयद्धरि॥
[4]ग्रीवा सुजोति गज गाह गहि। [5]लहि लोहानौ [6]ठौर बर॥
छचह [7]मुजीक पज्जून सह। दौरि पऱ्यौ बलिभद्र बर॥ छं०॥ २७॥

युद्ध की तिथि।

घरिय सत्त दिन रह्यौ। बार नौमीति सुक्र बर॥
पंच बीस आवट्टि। *यट्टि लोथं सुबंधि थर॥

(१) मो.-गरुड़। (२) मो.-पंग। (३) ए. कृ. को.-राइ धरि।
(४) ए. कृ. को.-ग्रीवह। (५) ए. लरि। (६) मो.-मीठि। (७) मो.-मुनीक।
*ए. कृ.- को.-"लुथ्थि पर लुथ्थि वंधि थर"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूरम्मह षग झारि। सार भारथ्थ सु किन्नौ॥
सार बज्ज घरियार। टोप टंकार सु झिन्नौ॥
आचार चारु राजन बरे। मरे बीर रजपूत वर॥
संग्राम सूर कूरंभ सम। नर न नाग दानव्व [1]सुर॥ छं०॥ २८॥

श्लोक॥ मानवं दानवं नैवं। देवांनां कुरु पांडवो॥
कूरम्म राइ समो बीरं। न भूतो न भविष्यते॥ छं०॥ २९॥

पज्जून राय की सेना का बड़ी वीरता से युद्ध करना।

कवित्त॥ हाइ हाइ कहि घुट्ठ। इट्ठ बलिभद्र अंमरिय॥
बलिय तप्प कूरंम। सार साहित्त घुम्मरिय॥
यों पजून दल मल्यौ। सोइ ओपम कवि भाइय॥
कमल पंति गजराज। सरित सभ्भह झुकि ग्राहिय॥
घन घाइ अघाइ सुघाइ घट। करिय एम कूरंभ घट॥
सुघ्घाट आइ कुघघाट किय। सुभट घाइ भारथ्थ [2]थट॥ छं०॥ ३०॥

दूहा॥ सुभट घाइ भारथ्थ भिरि। ते अंगन दिष्षाइ॥
रुधि सुकै कद्दम हुए। हय तरंग सुभ्भाइ॥ छं०॥ ३१॥

इस युद्ध में पज्जून राय के भाइयों का मारा जाना।

जुद्ध सुचालुक राइ तहँ। च्यार बंध परि षेत॥
पंच भ्रात कूरंभ बर। उप्पारे सु अचेत॥ छं०॥ ३२॥

पज्जून राय की जीत होना और शत्रु सेना का माल मता लूटा जाना।

कवित्त॥ उप्पारिग पज्जून। बीर बलिभद्र उपारिग॥
उप्पारिग पाल्हन नरिंदु। घाव [3]सठ्ठं तन धारिग॥
परि पंचाइन कन्ह। जैत जैसिंह जुवानं॥
हिंदु बीर दभ्भज्ञान। मेच्छ गड्डन परिमानं॥

(१) मो.-अमर। (२) ए.-तट।
(३) ए. कृ. को.-सठे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लुट्टे दरब्ब गज बाजि रथ। रिंघ राव उप्पारयौ ॥
जस जैत लियौ कूरंभ रन। जीवन अवनि सु धारयौ ॥ छं ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज के प्रताप की प्रशंशा।

दूहा ॥ * आज भाग चहुआन घर। आज भाग हिंदवान ॥
इन जीवत दिल्ली धरा। गंज न सक्के आनि ॥ छं० ॥ ३४ ॥

पज्जून राय का भाइयों की क्रिया करना और २५ दिन गमी मना कर दान देना।

कोस षट्ट चहुआन बर। संमुष गय बर बीर ॥
उभै बीस अरु पंच दिन। न्हाइ दान दिय धीर ॥ छं० ॥ ३५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासाके चालुक समागम पज्जून विजय नाम इकतालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥ ४१॥

(१) ए. कृ. कौ.-नर।

* छन्द ३४ मो.-प्रति में नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चंद द्वारका समयौ लिष्यते ।

(बयालीसवां समय।)

कविचंन्द का द्वारिका को जाना ।

दूहा ॥ चलन [1]चिंत चंदह कन्यौ । चलि द्वारिका सु चित्त ॥
मंगि सीष प्रथिराज [2]पहु । सजिय सकल ग्रप सथ्थ ॥ छं० ॥ १ ॥

कविचंद का यात्रा समय का साज सामन और उसके साथियों का वर्णन ।

कवित्त ॥ दोइ सहस है बर [3]बिसाल । सत [4]वारुन [5]सथ्थह ॥
सत गयंद रथ रूढ़ । साज आसन प्रथि रज्जह ॥
पलक बेद जोजन प्रमान । थटे * संघल क्रत पाइय ॥
साज लष्ष तन लष्ष । सकल बस्र कोरि सजाइय ॥
धानुक्क धार सत अठ्ठ चलि । करन तिथ्थ जाचह चलिय ॥
सत सुभट दान दिय तुरिय गज । मनहु जमन सागर मिलिय ॥
छं० ॥ २ ॥

चन्द का चित्तौर के पास पहुंचना ।

[6]गज घंट्टन चंवाल । भेरि सहनाइय बज्जिय ॥
चलत आइ चित्रकोट । पुरन त्रियलोक [8]सुरज्जिय ॥
कन्ह मान लेय न कविंद । जोजन दुअ दिष्षिय ॥
श्रृंगारिय गढ़ हट्ट । [9]मनों इंद्रासन पिष्षिय ॥

(१) मो.-चित्त । (२) मो.-पैं । (३) ए. कृ. को.-विलास ।
(४) ए. कृ. को.-बारुनह । (५) मो.-समथ्थह ।
*पाठ अधिक है । (७) मो.-घज । (८) ए. कृ. को.-पराष्षिय ।
(९) मो.-मनों इन्द्र थान विसिष्षिय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजि चंब बंब वज्जन बहुल। मन उच्छाह भिष दान दिय॥
गढ़ मद्धि धाम मनु राम पुर। कवि सु [1]तथ्य डेरा करिय॥छं०॥३॥

चित्तौर गढ़ की स्थापना का वर्णन।

*दूहा॥ गिरवर भूंगर गहर बन। प्रबल पेषि जल ठौर॥
चित्रंगद मोरी बसिय। दै गढ़ नाम चितौर॥ छं०॥ ४॥

चित्रकोट गढ़ की पूर्व कथा।

कवित्त॥ चित्रकोट दिय नाम। बंधि चित्रंगद सर बर॥
पंषि असंष निवास। सघन छाया तट तरवर॥
बुरज कोट कंगुरा। गौष जारी चित्रसारी॥
महलायत चहबचा। झिरन कारंज किनारी॥
पागार पोरि आगार करि। थान सदेवत पिष्षयौ॥
छतीस बंस महिचंद कहि। मोरी नाम सु रष्षयौ॥ छं०॥ ५॥

उक्त मोरी का गोमुष कुंड बनवाना।

अरिल्ल॥ गोमुष कुंड बंधि फुनि मोरिय। सुर पति विपन सोभ सब चोरिय
भार अठार उगी बन राइब। देषि कें रीझ रह्यौ बरदाइय॥छं०॥६॥

एक सिंहनी का ऋषि के शिष्य को खालेना।

कोरि कढ़ि पाषान महि। गिरि कंदर इक रिष्य॥
मुहु अग्गे सिंघनि भषत। हनि बालक तिहि सिष्य॥ छं०॥ ७॥

सिंहनी की पूर्व कथा।

कवित्त॥ नगर अजोध्या न्रपति। नाम कीरत्ति धवल्लं॥
सर ऊसुरि तातट्ट। रमत सिक्कार सयल्लं॥
तानि वान कम्मान। हनिय हिरनी ग्रभ वंतिय॥
तरफंरत अवलोकि। स्रोन घन धार स्रवंतिय॥
उतपन्न ग्यान बैराग लिय। कुंवर स कोसल संजुगत॥
अड़ सट्ठि करे तीरथ अटन। चित्रकोट महि तप तपत॥ छं०॥८॥

(१) ए. कृ. को.-सथ्थ। *-छन्द ४ से ले कर छन्द १९ पर्य्यंत मो.-प्राति में नहीं है और पाठ से भी यह अंश क्षेपक मालूम होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्धरी ॥ तप तपत आइ चित्रकोट मद्धि। सहचरिय जाइ इह करिय सुद्धि ॥
सुनि कान बानि रानी प्रफुल्लि। उतरन महल्ल सोपानि भुल्लि ॥
छं० ॥ ९ ॥
अनुराग सुत्तपति कौ हरष्य। उठि चलिय मिलन मारग गवष्य ॥
चकचूर भइय परि पहुमि आइ। तड़िता कि तेज तारक दिपाइ ॥
छं० ॥ १० ॥
जल जलनि विष्य गिरि झंप पात। पावहि न गत्ति इह सत्ति बात ॥
जप तप्प तिथ्थ अस्नान दान। कोटिक्क पढहु पंडित पुरान ॥ छं० ॥ ११ ॥
अंतह सुमत्ति गति होइ सोइ। अहंकार उभ्भर जिन करहु कोइ ॥
॥ छं० ॥ १२ ॥

कवित्त ॥ बघिनि होइ विकराल। आइ गिरि कंदर प्यासिय ॥
प्रगटि पुब्ब तामस्स। भंजि अँग जंगल ग्रासिय ॥
दंत कंति चमकंत। जरित कुंदन मय मेषं ॥
ईहा [1]मोह करंत। जनम पछिलो संपेषं ॥
असराल चष्प अंसू ढरत। पंसुरहि तुच मंस गलि ॥
इक मास लग्गि अनसन्न करि। गय नंगन उड़ि हंस चलि ॥ छं० ॥ १३ ॥

दूहा ॥ कित्ति धवल धीरज्ज धरि। अब्बन आइ उपकंठ ॥
राम नाम सभलाइ सुर। कुंअर पाइ बैकुंठ ॥ छं० ॥ १४ ॥
रघुवंसी राजिंद नें। मन हटक्कि रषि तब्ब ॥
ग्रभवंती हिरनी हनी। तिहि वदलो लिय अब्ब ॥ छं० ॥ १५ ॥

कविचंद का आना सुन कर पृथाकुमारी का कवि के डेरे पर जाना।

कवित्त ॥ कवि सु सथ्थ मति प्रबल। बोलि सहचरी मत्ति बर ॥
नव नव रस भोइन। अनंत इंद्रानि इंद्र घर ॥
रुप माल सु विसाल। मेघ माला सुभ मंजरि ॥
मदन बेलि मालति। विसाल सत अट्ठ अनंबर ॥

(१) क्रु.-पोह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नरकंध रथ्थ के आरुहिय। ढंकि छब्बि मनों अंब जल॥
प्रति चलिय भट्ट कट्टन दरिद। मोघ निरषि मनुराज थल॥
छं० ॥ १६ ॥

कितक छब्बि वस्त्रंग। मद्धि माला मुत्तिय मनि॥
सीतारामी सहस। कनक थारी सत बीजनि॥
अगर पान अड़सठ्ठ। रजक पालिका पठाइय॥
सुवन इक्क पुत्तरिय। कर सु सारँग [1]मुह गाइय॥
मुक्कलिय प्रथा कबि थान कहं। भरन भार अभ्रन भरिय॥
प्रति प्रति सु दान मानह प्रबल। कवि सषियन आदर करिय॥
छं० ॥ १७ ॥

कवि का चित्तौर जाना।

दूहा॥ दिय बहोरि न्रप नगर कों। प्रिथ आसीस पढ़ाइ॥
प्रति सुनंत मति दति प्रबल। करिस [2]क्रूप कल नाइ॥छं०॥१८॥
नील कंठ सिव दरस करि। मात भवानी भेटि॥
फुनि नरिंद चित्रंग मिलि। चंद दंद तन मेटि॥ छं० ॥ १९ ॥

कवि का किले में भोजन करने जाना। पृथा का उसे भोजन परोसना।

अरिल्ल॥ प्रतिहारन रावन पधराइय। बोलि मंच भोजन बुलवाइय॥
करन प्रथा जेवन परिमानं। उड़ि घुम्मर अम्मर सु प्रमानं॥
छं० ॥ २० ॥

[3]लोह कुंड रचे सुर सच्ची। कुरछन भारि दियंत सु षिच्ची॥
मनों ओपमा में छबि [4]रच्ची। जेबैं बरन अठारह जच्ची॥छं०॥२१॥
एकलिंग अवतार सु धारिय। नारि केल पुज्जै नर नारिय॥
कलिनि कलंक काल कटि भारिय। जेंबै सब परिगह परिवारिय॥
छं० ॥ २२ ॥

(१) ए.-सुह। (२) ए. कृ. को.-कूप, कूंर।
(३) मो..लहो। (४) मो.-मेछ ते रंची।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केसर अगर धौरि सब किद्धिय। पान सुपारि कपूर प्रसिद्धिय ॥
हथ्थी है मोती नग विद्धिय। दान मान रावर कर दिद्धिय।
छं० ॥ २३ ॥

कन्ह अमरसिंहादि सामंतों का पृथा कुमारी को उपहार देना।

कनक साज दै तुरी पठाइय। कन्ह एक गज मुत्तिय गाहिय ॥
अमरसिंघ गज मुक्ति सुभाइय। जो चित्रंग भ्रत्य सम राइय ॥
छं० ॥ २४ ॥

मोरी रामप्रताप महाभर। सुष्पासन आरोहिय उप्पर ॥
मोती जिरित मोल घन सज्जर। दीय सु दान मान अपरंपर ॥
छं० ॥ २५ ॥

चन्द का चित्तौर से चलना।

दूहा ॥ चलिय चंद पट्टन पुरह। अहि सिर पर धरि पीर ॥
पंथ एक पष्षह चलिय। द्रिग सागर दिषि नीर ॥ छं० ॥ २६ ॥

द्वारिकापुरी में पहुंच कर श्रद्धा भक्ति से दर्शन और यथाशक्ति दान करना।

कवित्त ॥ उत्तरि हथ्थिय बाजि। *पाइ प्रति मिले सु मंगन ॥
दिट्ठिय देवल धज्ज। पाप परहरि अँग अंगन ॥
गजत पिट्ठ गोमतिय। भान तप तेज विराजिय ॥
सागर जल उच्छलै। पाप भंजन पाराजिय ॥
रिनछोर राइ दरसन करिय। परिय मोह मानुष्ष पर ॥
सुरथान मान इतनी सुचित। देवलोक कैलास दर ॥ छं० ॥ २७ ॥

दूहा ॥ हाटक मंडप छच लहि। मुत्तिय [२]पंतिन माल ॥
मनों चंद बहु भान मझ। कल मष कट्टत काल ॥ छं० ॥ २८ ॥

फिरि परदछ दरसन करिय। हुअ परतष्षि प्रमान ॥
तब अस्तुति सु प्रनाम करि। प्रभा विराजिय भान ॥ छं० ॥ २९ ॥

* मो.-पाइ प्रति चले सु मंगल। (२) ए.-वंतिय, पंतिय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविचंद कृत रणछोड़ जी की स्तुति।

रसावला॥ तुअं देह हट्टी, तुअं मान घट्टी। तुअं बीर दट्टी, तुअं थान थट्टी॥
छं० ॥ ३० ॥

तुअं लोक पालं, तुअं जालमालं। तुअं भाल भालं, तुअं द्रिग्गपालं॥
छं० ॥ ३१ ॥

तुअं देस दष्षी, तुअं भौर भष्षी। तुअं द्वीप रष्षी, तुअं सर्ग सष्षी॥
छं० ॥ ३२ ॥

तुअं तीन रष्षी, तुअं ब्रह्म लष्षी। तुअं पंथ रोही, तुअं गोप मोही॥
छं० ॥ ३३ ॥

तुअं सच्च दोही, तुअं सग्र सोही। तुअं सिद्धि तूंही तुअं रिद्धि सोही॥
छं० ॥ ३४ ॥

तुअं सर्ब अंडं तुअं तीन कुंडं। तुअं षित्त [1]षंडं, तुअं थार मुंडं॥
छं० ॥ ३५ ॥

तुअं ग्यान गट्टं, तुअं रंभ थट्टं,। कवीचंद पट्टं, गयौ दूर हट्टं॥ छं०॥३६॥

दूहा॥ हरिहर वच सच वारि बर। पुर धरि सिर पर इंद॥
मनुँ गुर तरु फर भार नमि। झलमलि हल्लि गोविंद॥छं०॥३७॥

देवी की स्तुति।

भुजंगी॥ नमो तुं नमो तुं नमो तुं कुमारी। नमो तुं नमो तुंज संसार सारी॥
नमो तुं अभष्षी नमो बीज भष्षी। नमो रिष्ष पूजंत सज्जंत सष्षी॥
छं० ॥ ३८ ॥

नमो तुं रटै राज राजं रजाई। नमो [2]तुंज संसार तें सिद्ध पाई॥
नमो तंत जालं त्रिकालंत राई। नमो विश्वथानं [3]गिरंजा गिराई॥
छं० ॥ ३९ ॥

*नमो ससिपालं अकालं अभष्षी। नमो कालजन्मं न कालं न सष्षी॥
नमो एक भग्गी भरत्तार पंचं। नमो कोरि कोरं करत्तार संचं॥
छं० ॥ ४० ॥

(१) ए. कृ. को.-पंडं। (२) ए. कृ. को.-तूझ, तुझ, तुझे। (३) ए. कृ. को. गिरज्जा।
* मो.-नमो ससि पालं अकालंत राई। नमो काल जमन्न कालं नसाई॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नमो सिद्ध तुं रिद्ध तुं दद्धि पानी। नमो काल तुं भाल तुं साल रानी॥
नमो कित्ति तुं मंच तुं गीत गानी। नमो आदि तुं अंत तुं जोग जानी॥
छं० ॥ ४१ ॥

नमो विश्व तुं भिस्त तुं भार भारी। नमो जोग तुं जीव तुं जुग्ग चारी॥
नमो भूमि तुं धूम तुं अंब पानी। नमो तप्प तुं ताप तुं अट्ठरानी॥
छं० ॥ ४२ ॥

नमो बाल तुं वृद्ध तूं हाल चाली। नमो भान तुं मान तुं मुक्ति माली॥
नमो व्याघ्र तुं सार तुं वाग वद्दं। नमो भुंड मुंडं तुहीं पारि सद्दं॥
छं० ॥ ४३ ॥

नमो पत्र तुं छत्र तुं छित्ति धारी। नमो वृद्ध तुं वृक्ष तुं अघ्घ हारी॥
नमो रूपतुं रंग तुं राग [1]रत्ती। नमो भील तुं भाव तुं सील [2]सत्ती॥
छं० ॥ ४४ ॥

नमो ध्रत्त तुं वृत्त तुं वारु बानी। नमो चंद चंडी सदा चारु मानी॥
छं० ॥ ४५ ॥

कवि का होम कर के ब्राह्मण भोजनादि कराना।

दूहा॥ करि असतुति ससतुति सुबर। होम हवन हरि नाम॥
सोवन तुला सु साज बर। करि सुभट्ट सुचि काम॥ छं० ॥ ४६ ॥
हय हथ्थी सत दान दिय। रथ रथ्यिय [3]द्रब दिद्ध॥
हाटक चीर [4]वसुंधरा। कवि घर दीन सु निद्ध॥ छं० ॥ ४७ ॥

द्वारिकापुरि में छाप लगवाने का महात्म्य।

कवित्त॥ * जे द्वारामति जाइ। छाप भुज नाहिं दिवावहिं॥
ते दरवारह चढ्ढि। न्याय हय पिठ्ठ दगावहिं॥
हरि चरन्न करि सेव। रहि न उभ्भै जुरि करि वर॥
ते वागुरि अवतरे। अधोमुष [5]झूलत तर वर॥
दीनौ न जिनहि परदच्छिना। दंडवत्त करि सुद्ध उर॥

(१) ए. कृ. को.-रंगी। (२) ए. कृ. को.-संगी। (३) ए. कृ. को.-घर।
(४) ए. कृ. को.-अनत अनि। * छन्द ४८ और ४९ दोनों मो.-प्रति में नहीं हैं तथा क्षेपक जान पड़ते हैं। (५) ए.-झूमत, को.-भूलत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*कविचंद कहत ते वृषभ होइ। अरहट जु [1]परिरंत नर ॥छं॥४८॥
भद्र भेषनह हुए। जाइ गोमत्ति न न्हावै ॥
तजै न ध्रम सेवरा। होइ करि केस लुचावै ॥
मुष पावन हन करै। वस्त्र धोवै न विवेकं ॥
आहु अंष परंत। करत उपवास अनेकं ॥
दरसन्न देव मानै नहीं। गंगा गया न श्राद्ध क्रम ॥
कविचंद कहत इन कहा गति। किहि मारग लग्गै सु भ्रम ॥
छं० ॥ ४९ ॥

द्वारिकापुरी से लौट कर चन्द का भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर में आना।

बंदि देव द्वारिका। करिय अति दान अचग्गल ॥
पट्टन पति भीमंग। मनो चंदन मिलि अग्गर ॥
वास भट्ट गरलंत। लपटि लग्गा मन [2]डाहर ॥
तिन सेवर बदि बद्द। चंद मावस उग्गा बर ॥
तिन नगर पहुच्चौ चंद कवि। मनों कैलास समाष लहि ॥
उपकंठ महल सागर प्रवल। सघन साह [3]चाहन चलहि ॥छं०॥५०॥

पट्टनपुर के नगर एवं धन धान्य की शोभा वर्णन।

सहर दिष्षि अंषियन। मनहु बद्दर वाहनु दुति ॥
इक चलंत आवंत। इक्क ठलवंत नवनि भति ॥
मन दंतन दंतियन। इला उप्पर इल भारं ॥
बिप भारथ परि दंति। किए एकठ व्यापारं ॥
रजकंब लष दस बीस बहु। दोइ गंजन बादह पऱ्यौ ॥
अनेक चीर स्रूपरु फिरंग। मनों मेर कंठै भऱ्यौ ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-फिरत। (२) ए. कृ. को.-दारह।
* "कविचन्द कहत" ऐसा पाठ कहीं भी नहीं पाया गया है कथाक्रम, काव्य, भाषा आदि ४८ और ४९ छन्दों की बहुत कुछ भिन्न है अत एव इन दोनों छन्दों के क्षेपक होने का सन्देह है।
(३) ए. कृ. को.-बाहन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पलक बिबिध घन भार। रतन मुत्तिय द्रिग रंजत ॥
गज भरि लिज्जै कोरि। दान चुक्कत मति मंजत ॥
मनों गुल फूलिय धरनि। किद्ध नवग्रह ताराइन ॥
लेय न इव हिम दान। रज्ज साला हिम भाइन ॥
भाषन सु भाष कट्ठै मुषह। सिर स्वानह तरु धरु धवल ॥
प्रतिबिंब बसहु द्रय मानि मन। कबि मोहन दिष्षीय बल ॥छं०॥५२॥

पट्टनपुर के आनन्दमय नगर और वहां की सुन्दरी स्त्रियों की शोभा वर्णन।

अर्द्धनराच ॥ बजान बज्जयं घनं। सुरा सुरं अनंगनं ॥
सदान सद्द सागरं। समुद्दयं पटा भरं ॥ छं० ॥ ५३॥
[1]म्रग्यंद कै गजं बरं। .... ॥
हलं मलं हयं गयं। नरा नरं नरिंदयं ॥ छं० ॥ ५४ ॥
गिरं वरं [2]सुरा धरं। सबद्द सागरं पुरं ॥
अनेक रिद्धि भानयं। नवं निधं सु जानयं ॥ छं० ॥ ५५ ॥
भरे जु कुंभयं घनं। इला सु पानि गंगनं ॥
असा अनेक कुंडनं। .... ॥ छं० ॥ ५६ ॥
सरोवरं समानयं। परीस रंभ जानयं ॥
बतक्क सार संमयं। अनेक हंस क्रम्मयं ॥ छं० ॥ ५७ ॥
भरै सु नीर कुंभयं। .... ॥
अरूढ़ काम रष्ष्यं। सु उत्तरी समष्ष्यं ॥ छं० ॥ ५८ ॥

राज्य उपवन में चन्द का डेरा दिया जाना।

दूहा ॥ दिय डेरा कुंदन सुढिग। जे लीने सुरतान ॥
तर ते वर तंबू तनिय। मनहु कलस कै भान ॥ छं० ॥ ५९ ॥
गज बंधे गज साल में। हय बंधे हयसाल ॥
अद्ध कोस विस्तार अति। भई भीर भर चाल ॥ छं० ॥ ६० ॥

(१) ए. कृ. को.-मृगदं कगजं गरं। (२) मो.-सुधा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किनक जान भोरा कह्यो। दिल्लीपति दानेस॥
अंबाई बर दान इन। नाम चंद ब्रह्म बेस॥ छं० ॥ ६१॥

भीमदेव का कविचन्द के पास अपने भाट जगदेव को भेजना।

कवित्त॥ कहै भीम जगदेव। जाहु तुम चन्द [1]समष्षन॥
नग मनि मुत्तिय माल। परसपर बाद सपष्षन॥
दियौ सु हथ्थिय एक। सत्त हय इक ऐराकिय॥
लै सु जाहु तुम लष्षि। भट्ट पुच्छौ [2]मनुहाकिय॥
षल दुऽ भट्ट आयौ बरै। करि झुझ्झौ मंचह सुपरि॥
आरंभ डंभ सुनियै बहुत। कर पिछानि मन षेद करि॥ छं० ॥ ६२॥

जगदेव का कविचन्द से मिलना।

दूहा॥ चर लग्गा दिसि कवि चरा। आयौ भोरा भट्ट॥
करिय अनूपम रूप दुरि। बेस अचंभम [3]नट्ट॥ छं० ॥ ६३॥
दीवी जाल कुदाल ढिग। अंकुस पैरी हथ्थ॥
पूछै भोरा भट्ट इह। किन समान इह कथ्थ॥ छं० ॥ ६४॥

जगदेव का अपने स्वामी भीमदेव के बल वैभव की प्रशंसा करना।

कवित्त॥ सोमेसर किन बध्धिय। चंद जानौ वह गत्तिय॥
आबू गढ़ किन लीन। भीम चालुक जुध मत्तिय॥
इह दरिया कौ राव। सिद्ध पट्टनवै नंदन॥
इह सु जुद्ध तें बड़ौ। गाज धामह गति गंमन॥
कवि जुगति जानि अधिकौ कहौं। बुझ्झौ नाहिन मरम गति॥
इह पंच दीह में जानिहौ। इह तुम इह हम जुद्ध मति॥छं०॥६५॥
दूहा॥ मिलिय परसपर रसन रहि। मिलि नाहर इक ठौर॥
बत्त घत्त भर सब्ब मिलि। [4]सह अप्पिय द्रब कौर॥ छं० ॥ ६६॥

(१) मो. सलष्षन। (२) मो.-मनुहारिय।
(३) ए. कृ. को.-मन भट्ट, भट्ट। (४) मो.-"सह अप्पिय इव कोर"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साज बाज सब फेरि दिय । प्रथु किय कित्ति अपार ॥
जगद्देवह भोरा भनिय । [1]काह सु कवित्त उचार ॥ छं० ॥ ६७ ॥

कविचन्द का पृथ्वीराज की कीर्ति का उच्चार करना ।

सोमेसर किन बधिय । सार संमुह किन सज्जिय ॥
कन्ह पीर क्यों सहिय । किद्ध किन आबू कज्जिय ॥
इह गुज्जरी नरेस । वह सु दिल्ली विरदा मैं ॥
क्रूष पीर आदरै । साम उदरे हत धामैं ॥
वागुरिन हत्त अवतार गनि । भिरि भुअंग भोरा सुबर ॥
अवतार लियौ कलि उप्परौ । कलि प्रगटिय मनु सहस कर ॥
छं० ॥ ६८ ॥

पुहमि राइ हस्तिनी । च्यार हंडी [2]रंधानिय ॥
इक गज्जनी सहाव । सुइ सूंपी तुर [3]तानिय ॥
इक्क राइ परमार । सधर सिर वानग जित्यौ ॥
करन मंद चालुक्क । दई तिहुवार विधुत्तौ ॥
मेल्ही जु तीन तिहु राइ घर । सु इह बत्त जुग सब कहिय ॥
इम चन्द कहै जगदेव सुनि । एक राइ तुम उब्बरिय ॥ छं ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ दस लष्षन भष्षन करै । प्रथु सामत कुमार ॥
भोरा उठि गोरा गयन । तब सिर छच उभार ॥ छं० ॥ ७० ॥
चढ़ि भोरा तुम उप्परैं । दरियापति दस लष्ष ॥
[4]षग्ग साहि भंजै सुभर । सित्त सूर पति भष्ष ॥ छं० ॥ ७१ ॥

जगदेव का कहना कि अच्छा तो तुम अपने पृथ्वीराज को लिवा लाओ ।

कवित्त ॥ दइय सीष जगद्देव । जाहु तुम लै आऔ प्रभु ॥
जदिन सूर सामंत । तदिन पिष्षौ सुरत्ति सुभ ॥
ताम करिग तुम सुथिर । पाव चंचल होइ जैहैं ॥

(१) को.-कवि । (२) ए. कृ. को.-रंधानिग । (३) ए. कृ. को.-सुरतानिग ।
(४) ए. कृ.-सुग्ग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेछ मिलै षट षंड। परम [1]उतमंग जुध जुरहैं ॥
रन षुध संपूरन भग्गिहै। जब महिमानी हम करै ॥
जगदेव भट्ट संची चवै। चंद भट्ट इम उच्चरै ॥ छं० ॥ ७२ ॥

भोराराय भीमदेव का चन्द के डेरे पर आना।

दूहा ॥ आइ सु भोर चंद ग्रह। हय गय नर भर भार ॥
सथ्थ सपन्नौ तथ्थ सब। बज्जा बज्जिय सार ॥ छं० ॥ ७३ ॥

देषिय डेरा भीम न्रप। उच्चै ग्रह आवास ॥
गौष पट्टिका बनि गरुअ। देषिय बादर [2]रास ॥ छं० ॥ ७४ ॥

कविचंद का भीमदेव को अगवानी देकर मिलना।

आदर करि आसीस दिय। भुअ भोरा भीमंग ॥
सिद्ध दिद्ध जै सिंघ तुअ। तिन पहु पुज्जि पवंग ॥ छं० ॥ ७५ ॥

कविचन्द का भोराराय भीमदेव को आशीर्वाद देना।

पद्धरी ॥ जिन सिद्ध दिद्ध लिद्धी विषंड। अन्नेक दीप वाहन उतंड ॥
जिन धर मनुष्य पहिरे न चीर। कलि कूट रूप देषंत बीर ॥ छं० ॥ ७६ ॥

गिर धरै कंध उप्पारि नंष। पहिरे सु एक ओटं सुपंष ॥
प्रति तिरें मच्छ सागर पयाल। बहु लिए रतन अन्नेक माल ॥
छं० ॥ ७७ ॥

तिन जीति लिए बहु रिद्धि देस। सब दीप सझ्झ गुज्जर नरेस ॥
मझ्झि दीप रोम राहब कुसाब। संजाल दीप प्रति काल आव ॥
छं० ॥ ७८ ॥

गिरवान दीप कंचन गुहीर। [3]तिन झुझ्झ दझ्झि आसिष्य बीर ॥
हय मुष्ष ग्राह चर अंब एक। तिन जीति लिए जल जानि [4]देक ॥
छं० ॥ ७९ ॥

(१) ए. कृ. को.-उतकंठ। (२) को.-राव, ए.-रात।
(३) ए. कृ. को.-जिन। (४) ए. कृ. को.-टेक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाहन अरोहि लीने असंष। प्रति पान पुरातन लड़ पंष ॥
अवतार सेस लीनौ अवन्नि। इन भंति चंद्र कवि करि तवन्नि ॥
छं० ॥ ८० ॥

कविचन्द और अमर सिंह सेवरा का परस्पर वाद होना और कविचन्द का जीतना।

कवित्त ॥ तब पुच्छिय भीमंग। तुम बरदान सु दिद्धिय ॥
बाद [1]बद्धि देवंग। सुपन पिष्षिय मन सिद्धिय ॥
चंद देव किय सेव। तिन सु अमरा बुल्लाइय ॥
थूल रथ्थ आरूढ़। चंद असमान चलाइय ॥
तरवर सुपत्त बैठौ तिनह। फिरि न वाद कीनौ बलिय ॥
नट्टी जु सषी उपजी अनल। सुरस बंचि नंचौ कलिय ॥ छं० ॥ ८१ ॥
अरिल्ल ॥ जीता वे जीता चंदानं। परि पिष्षिय रष्षिय रंभानं ॥
मुष बुल्लै जै जै चहुआनं। नाटिक करि नंचै निरवानं ॥ छं० ॥ ८२ ॥
हल हलंत तंबू हल हिलियं। बंदि भत्त है गैं पति चलियं ॥
चंद मंच पट्टन चल चलियं। मनों अंब ताराइन तुलियं ॥
छं० ॥ ८३ ॥

भीमदेव का अपने महल को लौट जाना।

दूहा ॥ आरोहिय असु उप्परह। उड़ी रेन धुर षेह ॥
भोरा चढ़ि सोरा भयौ। गयौ अप्पने ग्रेह ॥ छं० ॥ ८४ ॥

कविचन्द का सुरतान की चढ़ाई की खबर सुनकर दिल्ली को प्रस्थान करना।

प्रथु कागद चंदह पढ़िय। आयौ षरि गजनेस ॥
कूच कूच मग चंद षरि। पहुंच्यौ घर दानेस ॥ छं० ॥ ८५ ॥

इति श्री कविचन्द विरचिते प्रथिराज रासके चंद द्वारिकागमन देव मिलन परस्पर वादजुरन नाम बयालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ४२ ॥

(१) मो.-छंद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ कैमास जुद्ध लिष्यते ।

(तेंतालीसवां समय ।)

एक समय शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पृथ्वीराज के विषय में चर्चा करना ।

गाथा ॥ इक दिन साहि सहाबं । अष्षिय समह षान तत्तारं ॥
अरु षुरसान विचारं । संमर समुष राज प्रथिराजं ॥ छं० ॥ १॥

तत्तार खां का वचन ।

उच्चरि ताम तत्तारं । अरि अति जोर स्हर सम रारं ॥
सम कैमास विचारं । षट्ट दिसि मंत साह साहाबं ॥ छं० ॥ २ ॥

कैमास युद्ध समय की कथा का खुलासा या अनुक्रमणिका और शाह की फौजकशी का वर्णन ।

हनूफाल ॥ बर मंच किय सुरतान । कैमास दिसि परवान ॥
चहुआन दिल्लिय चिंत । षट्टू अ दिसि मन षंति ॥ छं० ॥ ३ ॥
संवत्त हर च्यालीस । बदि चैत एकमि दीस ॥
रवि वार पुष्य प्रमान । साहाब दिय मेलान ॥ छं० ॥ ४ ॥
चय लष्य [1]अस असवार । बानैत सहस चिआर ॥
पयदल सु लष्य प्रचंड । चय सहस मद गल झंड ॥ छं० ॥ ५ ॥
चलि फौज दुंदभि बज्जि । भद्दव कि अंबर गज्जि ॥
बाने सु गज्जि सिरज्जि । सुर राज विपन विरज्ज ॥ छं० ॥ ६ ॥
दस कोस दिय मेलान । षह षेह रुंधिग भान ॥ छं० ॥ ७ ॥

(१) मो..लष ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहाबुद्दीन का सिन्ध पार करके पारसपुर में डेरा डालना।

दूहा ॥ पारसपुर तहां सरित तट। उतरि आय साहाब ॥
[1]रबि उग्गत दल कूच किय। उलटि कि साइर आब ॥ छं० ॥ ८ ॥
हनूफाल ॥ उलथ्यौ कि साइर आब। सम चढ़े षान नबाब ॥
तत्तार मंच सु प्रौढ़। षुरसान षानति [2]गूढ़ ॥ छं० ॥ ९ ॥
मारुफ षान [3]सुमन्न। बर लाल षान [4]महन्न ॥
आकूब तेजम षान। ममरेज बंधव मान ॥ छं० ॥ १० ॥
सब लिए हय गय रिद्धि। उत्तरिय षानति सिद्ध ॥ छं० ॥ ११ ॥

दिल्ली से गुप्तचर का आना।

दूहा ॥ उतरि साद बर सिंधु नदि। किय मुकाम सब सथ्थ ॥
निसा महल सुरतान किय। बोले षान समथ्थ ॥ छं० ॥ १२ ॥
आइ भट्ट केदार बर। दै दुवाहु तिन वार ॥
कहैं साहि के दार सम। कहौ अर्थ गुन [5]चार ॥ छं० ॥ १३ ॥
[6]मंडि भट्ट रिन जंग गुन। साहि पथ्थ सम सोइ ॥
तन विभूति सिंगी गरै। आइ दूत तब दोइ ॥ छं० ॥ १४ ॥
धम्माइन काइथ सुकर। इह लिष्षी अरदास ॥
आषेटक षेलन न्रपति। मन किय षट्टू पास ॥ छं० ॥ १५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

परी हक्क दस दिसि न्रपति। चढ़ि चल्लौ [7]चहुआन ॥
धर गुज्जर अरु मालवै। सब दिसि परत भगान ॥ छं० ॥ १६ ॥

शाह का समाचार पाकर गुप्त गोष्ठी करना।

सुनिय बत्त [8]इम दूत मुष। भय चलचित सुरतान ॥
[9]गुज्ज महल सब बोलिकै। बैठे करन मतान ॥ छं० ॥ १७ ॥

(१) मो.-रति। (२) मो.-सूढ़। (३) ए. कृ. को.-मुसन्न।
(४) ए. कृ. को.-षान हसन्न। (५) ए. कृ. को.-चाइ। (६) ए.-मंनि।
(७) ए. कृ. को. सुरतान। (८) ए. कृ. को.-ए। (९) ए. कृ. को.-गुह्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्धरी ॥ साहाब कहै तात्तार षान। उपजै सुमंच अष्षौ सवान ॥
[1]ढिल्लीय तें जु प्रथिराज आय। कैमास आन कीनी सहाय ॥ छं० ॥ १८ ॥
[2]फिरि गयें लाज घट्टै अनंत। झुझ्झंत हारि तो सेंन अंत ॥
आषूव तम्मि आषैति वार। सम लालषान हस्सन हकार ॥ छं० ॥ १९ ॥
हम च्यारि षान बंधव सु प्रीति। साहाब साहि आने सु जीति ॥
कै जियत करैं घोरह प्रवेस। कै गहैं पथ्थ मक्का विदेस ॥ छं० ॥ २० ॥
सामंत कितक बल सूर कौन। लग्गे सु एम जिम चून लौन ॥
च्यारों सु बंध हम बल [3]अछेह। देही सु प्रथक जिय एक [4]एह ॥ छं० ॥ २१ ॥
जीवंत बंध आनें सु राज। हम जुद्ध करैं साहाब काज ॥ छं० ॥ २२ ॥
दूहा ॥ सुनिय मंच सब षान मुष। बंध्या जोर सहाब ॥
रह षट्टू दिसि चल्लियें। उलट कि साइर आब ॥ छं० ॥ २३ ॥

शहाबुद्दीन का आगे बढ़ना और पृथ्वीराज के पास समाचार पहुंचाना।

कवित्त ॥ ग्यारह सें च्यालीस। चैत विदि सस्सिय दूजौ ॥
चल्यौ साहि साहाब। [5]आनि पंजाबह पूज्यौ ॥
लष्ष तीन असवार। तीन सहसं मय [6]मत्तह ॥
चल्यौ साहि दर कूच। [7]फटिय जुग्गिनि घुर वत्तह ॥
सामंत सूर विकसे उअर। काइर कंपे कलह सुनि ॥
कैमास मचि मंचह दियौ। ढिंग बैठे चामुंड [8]फुनि ॥ छं० ॥ २४ ॥

पृथ्वीराज का कैमास सहित सामंतों से सलाह करना।

दूहा ॥ कह्यौ मंत कैमास तहँ। सजि आयौ सुरतान ॥
अब विलंब किज्जै नहीं। दल सज्जौ चहुआन ॥ छं० ॥ २५ ॥

(१) मो.-"दिल्लीय तेज पृथिराज आय"। (२) मो.-परि गए। (३) ए. कृ. को.-अछेक।
(४) ए. कृ. को.-मेक। (५) मो.-आय पंजाब सु पुज्यौ। (६) मो.-सत्तह।
(७) मो.-पटिय। (८) मो.-पुनि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेर बेर आवंत इह । मानै मेछ न संधि ॥
उरह लौन प्रथिराज कौ । आनौ साहि सु बंधि ॥ छं० ॥ २६ ॥
सुनत बचन कैमास के । कही राव चावंड ॥
आन राज चहुआन पिथ । हौं मारौं गज झुंड ॥ छं० ॥ २७ ॥
सुनि संभरि नृप मौज दिय । हैवर सहस मँगाइ ॥
मनि मोती सोव्रन रजक । हसती [1]सपत अमाइ ॥ छं० ॥ २८ ॥
गैवर दस हय सात सै । दिय कैमासह राइ ॥
तुरी तीन सै बीज गति । दै चावंड चितचाइ ॥ छं० ॥ २९ ॥

पृथ्वीराज की सेना की चढ़ाई और सामंतो के नाम कथन ।

भुजंगी ॥ चल्यौ संभरी नाथ चहुआन राजं । चढ़े लष्य [2]पावं समं सूर साजं ॥
चलै मुष्य अग्गै सुहथ्थी हजूरं । मनो प्रब्बतं झिरन मद झरत पूरं ॥
छं० ॥ ३० ॥
चल्यौ मंच कैमास सा काम अग्गै । वियौ राइ चावंड सम बीर सग्गै ॥
जूचल्यो लंगरीराइ रन्न जंगं । सकं राइ गोइंद सा काम अंगं ॥
छं० ॥ ३१ ॥
*चल्यौ चच्च कन्हा नरं नाह रन्नं । चले बीर पामार तेजं तिनन्नं ॥
†बरं बीर नर सिंघ हर सिंघ दोऊ । भरं राम वड़ गुज्जरं कनक सोऊ ॥
छं० ॥ ३२ ॥
चल्यौ अचल सूरं सुजंगं जुरन्नं । चल्यौ चन्द पुंडीर चन्दं बरन्नं ॥
नरं निद्दुरं सूर कमधज्ज रायं । चल्यौ बघ्घ बघघेल रन जुरन चायं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

शहाबुद्दीन की सेना की चढ़ाई और यवन योद्धाओं के नाम ।

भुजंगी ॥ चल्यौ तमकि षुरसान साहाब भानं ।
चली फौज तत्तार षुरसान षानं ॥
वरं रुस्तमं षान [3]आषूब मानं ।
सुभै फौज साजी किधौं समुद पानं ॥ छं० ॥ ३४ ॥

---

(१) मो.-सत्त अनाइ । (२) मो.-एकं ।
* ए.कृ.को-चल्यौ सथ्थ काका नरनाह कन्हं । † ए. कृ. को.-बरं वीर हरसिंह वरसिंह दोऊ ।
(३) मो.-आकूब ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिपै षान दरियाव दरिया समानं। लुप्यौ अश्व [1]षुर षेह रवि आसमानं॥
चव्यौ पष्षरं धार पति षान षानं । उभै सोर सिंगी चली पंति बानं॥
छं० ॥ ३५ ॥
चव्यौ मलिक मंमार षां ताजषानं। फतेषान पाहारषां बंध ज्वानं॥
अलूषान [2]आलंम ते अग्ग बानं। सुभै गष्षरं षान कम्माल षानं॥
छं० ॥ ३६ ॥
चव्ययौ [3]पतिक मारुफषां सो अमानं। चल्यौ पहिलवानं सु गाजी [4]पठानं॥
चल्यौ हब्बसी एक हब्बीबषानं। चल्यौ समसदीषान रुम्मी अपानं॥
छं० ॥ ३७ ॥
चल्यौ ग्यास दीचस्त गरुअत्त षानं। चल्यौ चिच षानं गुरं बीर दानं॥
छं० ॥ ३८ ॥

दोनों सेनाओं का चार कोस के फासले पर डेरा पड़ना ।

दूहा ॥ चारि कोस चौगिरद रन । दोऊ समद समान ॥
उत साहिब षुरसान कौ । इत संभरि चहुआन ॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज की सेना का आतंक वर्णन ।

भुजंगी॥ चव्यौ साहि साहाब करि जुद्ध साजं। करी पंच फौजं सुभं तथ्थ राजं॥
बरं मद्द वारे अकारे गजानं। [5]हलै रत्त चौंसट्ठ बैरत्त बानं॥छं०॥४०॥
षरौ फौज में सीस सुविहान छचं। तिनं देषतें कंपई चित्त सचं॥
तहां धारि हयनारि कमनेत पचं। .... ॥ छं० ॥ ४१ ॥
तहां लष्ष पाइक्क पंती सपेषं। तहां रत्त वैरष्ष की बनिय रेषं॥
तहां तीन पाहार मै मत्त जोरं। तिनं गज्जतें मंद मघवान सोरं॥
छं० ॥ ४२ ॥
तहां सत्त उमराव सुरतान जोटं। मनों पेषियै मध्य साहाब कोटं॥
इमं सज्जि सुरतान [6]रिन चढ्ढि अप्पं। बिना राइ चहुआन को सद्दै तप्पं॥
छं० ॥ ४३ ॥

(१) मो.-पुर हेवरं । (२) ए. कृ. को.-आगंम । (३) ए.कृ.को.-मलिक ।
(४) ए.को.-प्रमानं । (५) ए.कृ.को.-"हलें रत्त चौंरं सवै रत्तवानं"। (६) मो.-चढ्ढीय अप्पं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहाबुद्दीन की सेना का षट्टूबन की तरफ़ कूच करना।

कवित्त ॥ षबरि आइ प्रथिराज। निकट सुरतान सुहाइय ॥
सज्जि सूर गज बाजि। धाक दुरजन दल पाइय ॥
किय मुकाम दिन च्यार। रहे गोइंदपुरा मह ॥
सुनि अवाज संसार। लष्ष चयमीर सु संग्रह ॥
सत लष्ष पच्छ भर आइ मिलि। कहै चंद बरदाइ बर ॥
चहुआन कलह सुरतान सम। धमधमंकि धुन्निय सु धर ॥ छं० ॥ ४४ ॥
दूहा ॥ चल्यौ साहि षट्टू दिसा। दिय मेलान मिलान ॥
लाल हसन आकूब सम। च्यारि भए अगिवान ॥ छं० ॥ ४५ ॥

शाह के सारुंडे में आने पर पृथ्वीराज का पुनः सामंतों से सलाह करना।

कवित्त ॥ च्यारि षान अगवान। साहि सारुंड सु आइय ॥
सुनिय षबरि चहुआन। मंचि कैमास बुलाइय ॥
कहै राज प्रथिराज। साहि आयौ तुम उप्पर ॥
दल सज्जौ अप्पान। जुरें जिम आइ अडब्भर ॥
इह कहै राव चामंड तब। राज रहै षट्टू धरह ॥
हम जाइ जुरें सामंत सब। बंधि साह आने घरह ॥ छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज का चावंडराय की प्रशंसा करना और प्रातः काल होते ही तय्यारी की आज्ञा देना।

कहै राज प्रथिराज। राइ चामंड मह्रा भर ॥
तुम कुलीन बर लज्ज। लज्ज मो तुमह कंध पर ॥
रहत घटै मुहि लज्ज। बंधि आनै लज बढ्ढै ॥
कहै ताम कैमास। राज दिन सुध लै चढ्ढै ॥
इह कहिरु घाव नीसान किय। भर सामंत सु बोलि लिय ॥
प्रथिराज चल्यौ रबि उग्गतह। पंच कोस मेलान दिय ॥ छं० ॥ ४७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाह का मुकाम लाडून में सुन कर पृथ्वीराज का पंचोसर में डेरा डालना।

दूहा ॥ किय मुकाम चहुआन दल। पुर पांचो[१]सर नाम ॥
सुनी षबरि सुरतान की। लषि लाडून मुकाम ॥ छं० ॥ ४८ ॥

कैमास को शाह के प्रातः काल पहुंचने की खबर मिलना।

दूत आइ पहरेक निसि। कही षबर कैमास ॥
पहर एक पतिसाह कौं। मो पच्छै दिषि पास ॥ छं० ॥ ४९ ॥

पृथ्वीराज की सेना की तय्यारी होना और कन्ह का हरावल बाँधना।

कवित्त ॥ राज पास कैमास। षबरि सुरतान कही अप ॥
सजौ सेन अप्पान। जाइ सनमुष मंडै [२]वप ॥
पंच फौज साहाब। करिय भर पंच सु अग्गर ॥
सजौ फौज अप्पान। नाम लिषि लिषि तहां सुभ्भर ॥
मन्नी सु बत्त सामंत मिलि। पंच फौज राजन करिय ॥
अन भंग जंग [३]न्रप नाह नर। कन्ह कंक अग्गें धरिय ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज की पंचअनी सेना का वर्णन।

भुजंगी ॥ [४]सजौ मंचि कैमास की फौज दूजी। सथें पंच हज्जार है अनिय पूजी ॥
सुभैं पंच हज्जार कमनैत पाले। बरं पंच में मंत मै मत्त[५] वाले ॥
छं० ॥ ५१ ॥
तहां कन्ह चहुआन सामंत साजे। तबै [६]तीसरी फौज बाजिच बाजे ॥
सहस पंच असवार गैहै सु पंचं। सहस पंच [७]मालै सहै लोह अंचं ॥
छं० ॥ ५२ ॥
सज्यौ गरुअ गहिलौत गोइंदराजं। चली फौज चौथी करै लोह साजं ॥

(१) ए. कृ. को.-रस, रस नाम। (२) मो.-पत्र। (३) मो.-नर नाह नृप।
(४) मो.-करी। (५) ए. कृ. को.-चाले।
(६) मो.-तीस करि। (७) ए. कृ. को.-वाले याले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरं पंच हथ्थी सहस पंच बाजं। सयं पंच हज्जार ढिंग [1]भलै पाजं॥
छं० ॥ ५३ ॥
सजी पंचमी फौज पामार जैतं। तहा पंच हज्जार असवार षेतं॥
सुभे पंच हज्जार पाले पचंडं। तिनं संग मै मत्त बर पंच [2]ठड्डं॥
छं० ॥ ५४ ॥
इसी पंच फौजै चल्यौ सज्जि अप्पं। विना साहि साहाब को सद्दे तप्पं॥
प्रथीराज चहुआन करि चढ्यौ रीसं। सुभै दूधके फेन सम छच [3]सीसं॥
छं० ॥ ५५ ॥

शहाबुद्दीन का भी अपनी फौज को पांच अनी में सजे जाने की आज्ञा देना।

दूहा ॥ सुनी बत्त साहाब तब। सजि आयौ चहुआन॥
फौज पंच सज्जौ सु भर। मीर मलिक सब्बान॥ छं० ॥ ५६ ॥
भुजंगी ॥ सुभे गोरियं जंग ठड्डौ गुमानं। उभै लष्ष बाजं सु तथ्थं प्रमानं॥
उभै लष्ष पाले लरै लोह पानं। .... ॥ छं० ॥ ५७ ॥
अढ़ी सहस मैमत्त मद झर प्रनारं। दुजी ओपमा झिरत झिरना प्रहारं॥
भलै मीर देषे दिये देढ़ [4]लष्षं। इमं चढ्ढियं षान तत्तार भष्षं॥
छं० ॥ ५८ ॥
तियं फौज षुरसान षां चढ्ढि तेजं। उभै लष्ष असवार बर बाज मेजं॥
उभै लष्ष कमनैत हथनारि हथ्थं। सजे फौज नौहथ्थ दस जुद्ध सथ्थं॥
छं० ॥ ५९ ॥
बनी फौज चौथी चढ्यौ षान षानं। सुअं षान षंधार बर विरद वानं॥
दुअं लष्ष असवार पष्षे दुलष्षं। अढ़ी सहस हथ्थी कम नैत लष्षं॥
छं० ॥ ६० ॥
असी सहस असवार करव लह [5]सेनं। सवै अंग सन्नाह विन दोइ नेनं॥
इकं षान षानं सुतं लाल षानं। चलै लष्ष दै जंग रस जुरन ज्वानं॥
छं० ॥ ६१ ॥

(१) मो.-भेले, भल्ले। (२) ए. कृ. को.-बड्ढं।
(३) मो.-बीसं। (४) मो.-लब्बैं, मर्ब्बै। (५) ए. कृ.-सहेनं, को.-काव सनेहं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजी पंचमी फौज बनि ब्रंन एवं। गुरं गष्परं षग्ग कट्टै रनेवं॥
बली मरद कंमाल षा बधं सथ्थं। लियै सक्त मनसातकी गुर्ज हथ्थं॥
छं० ॥ ६२ ॥

सजे लष्ष द्वै सुभट करि लोह सारं। तहां देषि पाइद्दलं दुष्ष जारं॥
तहा पंच हज्जार गट्टै गयन्नं। सजी पंचयं फौज सा [1]इंद्र व्रन्नं॥
छं० ॥ ६३ ॥

रणक्षेत्र में दोनों फौजों का बीच में दो कोस का मैदान देकर डटना और व्यूह रचना।

दूहा॥ [2]द्वै दल बीच सकोस द्वै। प्रथीराज कहि बात॥
चौकी चढ़ि चक्रह कटक। दल अरियन करि घात॥ छं० ॥ ६४ ॥

चौपाई॥ चढ़िय सुचक्र सेन चहुआनं। सुबर सूर जोधा परिमानं॥
उत सज्ज्यौ चक्रह सुरतानं। दीसै फौज मनों दधि पानं॥ छं० ॥ ६५ ॥
कटक चक्र रच्यौ सुरतानं। प्रथीराज सज्जिग तिहि थानं॥
षरी षबरि कहियौ परिमानं। पंच फौज पंचौ [3]चहुआनं॥ छं० ॥ ६६ ॥

डामर॥ चढ्यौ सुरतान, सुन्यौ चहुआन, तमंकि कटी किरवान कसी।
मय मत्त सुमंत, पढ़े बर पंत। सहस द्वै सूर, सहस्स असी॥
दस सट्ठि हजार, चले [4]पयदाज, जमाति सु जुग्गिनि जानि हसीं।
बर बान कमान, छयौ असमान, अरी मुष संमुह, फौज धसी॥
छं० ॥ ६७ ॥

युद्ध सम्बन्धी तिथिवार वर्णन।

कवित्त॥ ग्यारह सै च्यालीस। सोम ग्यारसि बदि चतह॥
भए साह चहुआन। [5]लरन ठाढ़े बनि षेतह॥
पंच फौज सुरतान। पंच चहुआन बनाइय॥
दानव देव समान। ज्वान लरनं रिन धाइय॥

(१) मो.-सावून्न इन्दं। (२) ए. कृ. को.-द्वै दल कोसह बीच द्वै।
(३) मो.-सुरतानं। (४) मो.-पयदार। (५) मो.-मरन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहि चंद दंद दुनिया सुनौ। बीर कहर चच्चर जहर ॥
जीधान जोध जंगह जुरत। उभय मध्य वित्यौ पहर ॥ छं० ॥ ६८ ॥

अनीपत योद्धाओं की परस्पर करनी वर्णन और अग्न्यास्त्र युद्ध।

भुजंगी॥ प्रथीराज पतिसाह रिन जुरत जोधं। मनों राम रावन्न संभरिय क्रोधं ॥
जुरे षान तत्तार कैमास मंची। दुअं षिष्फि लग्गे दुअं भूप छिची॥
छं० ॥ ६९ ॥
समं कन्ह षुरसान रिन जुरि क्रपानं। उड़ी षेह पुरयं न सुभ्झंत भानं॥
गहिल्लौत राजंस गोइंद पानं। उतै धनिय षंधार षां षान षानं ॥
छं० ॥ ७० ॥
चल्यौ कोपि परचंड परमार जैतं। उतै गष्षरं भाम कंमाल षेतं ॥
छुटै नारि हथनारि बानैत बानं। करै भ्रत्य चहुआन सुरतान आनं॥
छं० ॥ ७१ ॥
तहाँ कोपि बाहंत बर तेग राजं। इकं एक ने जे [1]लरै छोह लाजं॥
इकं एक सेलंत कड्ढंत कोपं। इकं एक जमदढ्ढ करि सेइ धोपं॥छं०॥७२॥
इकं एक फरसी सु कड्ढंत हथ्यं। इकं एक गुरजं लरै सूर बथ्यं॥
इकं एक हथ्थीय हथ्थी जुरंता। इकं एक सूरं उठैं भू[2]भिरंता॥
छं० ॥ ७३ ॥

द्वादसी का युद्ध।

दूहा ॥ इम बित्ती एकादसी। होत द्वादसी प्रात ॥
रवि उग्गत सम द्वै लरैं। हिंदू तुरक न्रघात ॥ छं० ॥ ७४ ॥
भुजंगी॥ कहूं एक न्यारे परैं रुंड मुंडं। उड़ै श्रोन छंछं जरे जानि [3]डुंडं॥
इकं सूर सेलं करं कढि तेगं। *इकं हथ्य कम्मान संचत्त वेगं॥
छं० ॥ ७५ ॥
इकं इक्क हथियार बिन लात घातं। इकं मुष्टिकं मुष्टि किय गात पातं॥
इमं वित्ति मध्यान अस्तिमिति भानं। इकं जम्मदढ्ढं लरैं लै जुवानं॥
छं० ॥ ७६ ॥

(१) मो.-तरे। (२) ए. कृ. को.-तुरंता। (३) ए. कृ. को.-झुंडं।
* मो.-"इकं अस्व कीनं रिनं वायु वेगं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इकं बीर बर बीर बैठे [1]विमानं। इकं ह्रर ह्ररं निरष्षंत पानं॥
इमं जाम द्वै जुद्ध करि रहे ठाढ़े। गुरे [2]बाज गजराज नरराज गाढ़े॥
छं०॥ ७७॥

पृथ्वीराज का यवन सेना में अकेले घिर जाना और चामंडराय का पराक्रम।

कवित्त॥ घेर्‍यौ न्रप चहुआन। संग सब सथ्थिय छुट्टौ॥
जंग करै चामंड। षरिग गज भुंडन जुट्टौ॥
बाग लेइ बगमेलि। सेल मैंगल सिर फुट्टौ॥
करन कढ्ढि करिवार। दंत सम भसुँड सु तुट्टौ॥
तुट्टौ सु दंत सम सुंड मुष। रुष किन्निय सुरतानं [3]तन॥
दल दंत करत दाहर सुतन। मद वारुन दारुन दलन॥ छं०॥ ७८॥

दूहा॥ कलह राइ चामंड [4]करि। इह मार्‍यौ गजराज॥
साह गहन कों मन कर्‍यौ। चढ्यौ [5]हांस लै बाज॥ छं०॥ ७९॥

कवित्त॥ गुरि गयंद गोरी नरिंद। चतुरंग दल सज्जिग॥
उर निसान घुंमरिग। आइ उप्पर सिर तज्जिग॥
जहां हक्यौ तहां भिर्‍यौ। तिनह घर नदी पलट्टिय॥
षग्ग ताल बाजंत। सीव तरवर बन तुट्टिय॥
[6]कतरीय पुरष गय घर मुरिग। चंद बरद्दिय इम भन्यौ॥
भाजंत भीर तुष्षार चढ़ि। चौंडराव चाबक हन्यौ॥ छं०॥ ८०॥

चार यवन सरदारों का मिलकर चामंड राय पर आक्रमण करना।

दूहा॥ लाल षान मारुफ षां। हसन षान आकूब॥
च्यार लरे चामंड सौं। षग्ग गहौ तुम षूब॥ छं०॥ ८१॥

(१) ए. कृ. को.-गुमानं। (२) मो.-राज।
(३) मो.-नन। (४) ए. कृ. को.-कहि।
(५) मो.-हंस। (६) ए. कृ. को.-कसरी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ षूब षान तहां लाल । बान बरषंत बीर पर ॥
हद्द मरद मारुफ । [1]नेज फेरंत कहर कर ॥
हसन षान सेहथ्थ । षग्ग बाहंत सीस पर ॥
कढ्ढि कटारिय जंग । अंग आकूब इक्क भर ॥
भर भार सह्यौ भुज दुअन पर। दाहिम्मै कीनो समर ॥
कविचन्द कहै बरदाइ बर । कलह केलि भूले अमर ॥ छं० ॥ ८२ ॥
लाल षान दुअ बान । तानि सुरतान आन किय ॥
एक लग्गि हय अंग । एक चामंड बंधि हिय ॥
सकति छंडि मारूफ । जंघ [2]हय उर मद्दि भिद्दिय ॥
हसन षान तरवारि । मारि द्वै घा मुष किद्दिय ॥
आकूब कटारी कढ्ढि कर । घल्लिय चामंडह गरें ॥
सुभ्भिय सुभट्ट संग्राम इम । भगल षेल नट्टह करें ॥ छं० ॥ ८३ ॥

कैमास का चामंड राय की सहायता करना ।

दूहा ॥ च्यारि षान चामंड इक । एकाकी जुरि जोध ॥
अंग अम्म दाहिम्म कौ । भिऱ्यौ भीम सम क्रोध ॥ छं० ॥ ८४ ॥

चामंडराय का चारों यवन योद्धाओं को पराजित करना ।

कवित्त ॥ क्रोध जोध जुरि जंग । [3]अंग चावँडराइ जुरि ॥
षग्ग जग्गि करि रीस । सीस सिप्पर समेत ढुरि ॥
एक घाव आकूब । षूब जस लियौ लोह लरि ॥
हसन मारि कट्टारि । पारि मारूफ मुऱ्यौ धर ॥
मारूफ मुऱ्यौ उछऱ्यौ हसन । आकूबह सिर धर पऱ्यौ ॥
सह दूअ आन चहुआन किय । लाल षान रन बिफ्फुऱ्यौ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

लाल खां का वर्णन ।

दूहा ॥ लाल ढाल ढिंचाल ढिग । [4]लाल बरन हय अंग ॥
लाल सीस सिंधुर धजा । लाल षान किय जंग ॥ छं० ॥ ८६ ॥

(१) ए. कृ. को.-तेज । (२) मो.-हथ ।
(३) ए. कृ. को.-इह । (४) ए. कृ. को.-अंग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ लाल बरन वानैत। षग्ग कढि आन जुद्ध किय ॥
षान षान किय घाउ। कंध कटि गिऱ्यौ तास हय ॥
निरषि राइ चामंड। बिरचि फिरि बीर पचाऱ्यौ ॥
गहिय तेग षां लाल। अग्ग न्रप धरनि पछाऱ्यौ ॥
धर डारि रिदय पर पाव दिय। केस गहै बंकुरि करहि ॥
एकध्य सुनौ हिंदू तुरक। जै जै सुर नारद [१]करहि ॥ छं० ॥ ८७ ॥

लाल खां का मारा जाना।

दूहा ॥ लाल षान के केस गहि। सिर धरि करि दुअ षंड ॥
दूसासन ज्यों भीम बल। रन ठट्ठौ चामंड ॥ छं० ॥ ८८ ॥

कैमास और चामंड राय का वार्तालाप।

कवित्त ॥ रन ठट्ठौ चामंड। मंचि कैमास पहुत्तौ ॥
[२]हयह चढ़ायौ आइ। बहुरि मुष बचन कहंतौ ॥
तूं मेरौ लघु बंध। इतौ दुष कौन सहंतौ ॥
[३]तो बिन जग सब धंध। अंध हुअ अवनि रहंतौ ॥
चढ़ि बाज आज संग्राम में। राज लाज मो भुजनि पर ॥
हठि हसन षान आक्कूब से। षल षंडे ते अंग बर ॥ छं० ॥ ८९ ॥

दूहा ॥ षल षंडे तुम अंग बर। [४]रगत बरन किय अंग ॥
रहि ठट्ठौ इक षिनक रन। करौं निरिषि हौ जंग ॥ छं० ॥ ९० ॥

कुंडलिया ॥ कहै राइ चामंड तब। तुम मेरे बड़ भ्रात ॥
क्यों षिची देषै षरै। कलि न अमर इह [५]गात ॥
कलि न अमर इह गात। बान मो मति तिम किज्जै ॥
हम तुम हय हक्कारि। बंधि सुरतानह लिज्जै ॥
बिरचि मार मच्चाइ। तवहि गज्जन पति [६]ग्रहिहै ॥
लरत कित्ति होइ तुरत। तुरक हिंदू सब [७]कहिहै ॥ छं० ॥ ९१ ॥

(१) मो.-कहिय। (२) मो.-हयानि।
(३) मो.-"तौ बिन जग जनु धंध अंध हुअ अवनि परंतौ।" (४) ए. कृ. को.-रकत।
(५) मो.-घात। (६) ए. कृ. को. ग्रहियै। (७) ए. कृ. को.-कहियै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैमास का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ ताज बाज सहबाज षां। जाज षान महबूब ॥
मान मर्दन कैमास कौ। लगि षुरसानह षूब ॥ छं० ॥ ९२ ॥

कवित्त ॥ सुनत साहि की बत्त। सत्त सब मित्त सम्हारै ॥
करत कलह [1]अम्मान। बान कम्मान प्रहारै ॥
सस्त्र सार की मार। हक्क मंची तहां टेऱ्यौ ॥
जब्बरजंग नीसान। मनहुं बद्दल घन घेऱ्यौ ॥
जिम पथ्थबान कर बेग गहि। च्याऱ्यौ कैमासह लगे ॥
दिष्षेव सबल संग्राम भर। व्रह्म जोग निंदह जगे ॥ छं० ॥ ९३ ॥

नीर मीर [2]सक सस्त्र। मंचि कैमास तमकि तम ॥
कर गहि कठिन कमान। बान बाहंत पथ्थ जिम ॥
जाज षान दुअ बान। तानि माऱ्यौति पऱ्यौ धम ॥
तप्पि बाज सहबाज। मरद [3]महबूब मुरहि किम ॥
अहंकार धर बिमन महि। जाइ जुऱ्यौ चामंड सम ॥
दुअ करत जुद्ध मंची सरिस। लरत घाव दुअ घरिय श्रम ॥ छं० ॥ ९४ ॥

मध्यान्ह के उपरान्त सूर्य्य की प्रखरता कम होने पर दोनों दलों में घमसान युद्ध होना।

भुजंगी ॥ धरिय जुद्ध द्वै घरिय बितो मध्यानं। जुरे ज्वान हथ्थं सुबथ्थं जुधानं ॥
दलं दोई बीरं बरं जुद्ध बानं। धकं धक्क हक्कंत षेतं सु ढानं ॥ छं० ॥ ९५ ॥

वहै सस्त्र अम्मान कम्मान बानं। गिरैं तथ्थ हिंदू तुरक्कं अघानं ॥
करै सूर सूरं सु घावं क्रपानं। इकं तेग लग्गे सु ठट्ठे [4]घुमानं ॥ छं० ॥ ९६ ॥

मनों घुमाई ध्यानं जोगिंद बानं। लरै सूर सामंत जो जाउ मानं ॥
जुरै जंम रंगं सु ठट्ठै गुमानं। तहा मंचि कैमास महबूब षानं ॥ छं० ॥ ९७ ॥
पछै पच्छवानं तता तेज ज्वानं। इसे सुभ्भियै तथ्थलै षग्ग पानं ॥

---

(१) मो.-असमान। (२) मो.-सब।
(३) मो.-महमूंद। (४) मो.-गुमानं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घनं घाव बज्जंत सो द्दै[1] समानं। जुरे बाज सो बाज सम जुद्ध ठानं॥
छं० ॥ ९८ ॥

जुरे च्यार षानं सु चावंड [2]मानं। जुरै अंग अंगं करै अप्प [3]मानं॥
भजै काइरं कलह देषे कपानं। .... छं० ॥ ९९ ॥

रुप्यौ मंच महबूब दुअ जुद्ध थट्टं। तिनं बाहियं उअर नह तेग तुट्टं॥
तबै थरहरे काइरं कंपि नट्ठं। तहां ताज षां षान राषंत पुट्ठं॥
छं० ॥ १०० ॥

दलं देवता जुद्ध देषे विमानं। तहां देव मिवरंत अछरीय गानं॥
तहां चौसठी करत भरि पच चल्ली। तहां रंभ घालंत गर माल भल्ली॥
छं० ॥ १०१ ॥

तहां स्वांमि कामं [3]लरै हिंदु मीरं। इमं सस्त्र वस्त्रं षुटे तीर तीरं॥
तहां मल्ल जिम लरैं बलवंत श्रीरं। .... छं० ॥ १०२ ॥

तहां लसत धंसतं सुवानं घतानं। जिसे मत्त आमत्त मत्ते मतानं॥
तिसे दरसियं स्त्रर दंतं दँतानं। तहां हथ्थजोरं सु हस्ती हतानं॥
छं० ॥ १०३ ॥

सुभै ठाम ठामं परे तुरक भुंडं। तहां हद्द हिंदू भये षंड षंडं॥
तहां करत सरितान में मगर तुंड। .... छं० ॥ १०४ ॥

तहां कच्छ सिर मच्छ फरके भुजानं। तहां केस कुस दंत बगपंति मानं॥
तहां भोर ज्यों भँवर हथ्थं करारं। तहां कंज कर धार उरधार धारं॥
छं० ॥ १०५ ॥

तहां चक्क चक्की सु सोभंत नैनं। तहां तीसरी नदिय बहिपाय ऐनं॥
तहां श्रोन की सरित जल पूर भल्ली। तहां चौसठी पच भरि कुंभ चल्ली॥
छं० ॥ १०६ ॥

द्वादसी का युद्ध वर्णन।

दूहा ॥ चैत प्रथम उज्जास पष। मंगल बारसि सुद्ध॥
कैमासह चामंड सम। किय सहाब बर जुद्ध॥ छं० ॥ १०७ ॥

(१) ए. कृ. को.-समानं। (२) ए. कृ. को.-पानं। (३) मो.-लहै पग्ग बीरं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों सेनाओं के मुखिया सरदारों का परस्पर तुमल युद्ध वर्णन।

कवित्त॥ घरिय दोइ बर जुद्ध। क्रुद्ध जोधा रन जुट्टे॥
मंचि मिया महबूब।[1]जंग से अंग निहट्टे॥
परिय मीर[2]सिर मार। भार दुअ भुज बर पिल्लै॥
घायत्तन घन घुंमि। चाय पिची षग षिल्लै॥
षग षेल मेल महबूब सिर। कैमासह कर टारियौ॥
तकि बाज षान बल[3]चंड करि। गहि गिरदान पछारियौ॥
छं० ॥ १०८ ॥

चिंति राइ चामंड। इतें उत निरषि उभय तन॥
षग्ग करह षनकंत। मंचि सहबाज घाव घन॥
पहुंचि जाज परिहार। धार मीरन सिर बड्ढिय॥
रन जित्यौ दाहिम्म। कित्ति पहुमी पर चड्ढिय॥
दल दल्यौ सबल दाहर सुतन। कहै धन्य हिंदू तुरक॥
सुनि बत्त साह संमुह[4]अरिय। जनु असि वर उग्गयौ अरक॥
छं० ॥ १०९ ॥

अपनी फौज हारती हुई देख कर शहाबुद्दीन का अपने हाथी को आगे बढ़ाना।

रसावला॥ मत्त मत्तं लरी, मेछ दाहिम्मरी। सेन साहाबरी, हारिमा संभरी॥
छं० ॥ ११० ॥

काइरं कंपरी, जुद्ध देषे डरी। जेन पष्षंबरी, तेन धीरं धरी॥
छं० ॥ १११ ॥

षग्ग षग्गें जुरी, सस्त्र कट्टे अरी। रंभ आयं बरी, प्रेम बीरं बरी॥
छं० ॥ ११२ ॥

ईस मालं धरी,[4]ग्ग्म जालंधरीं। राइ चामंडरी, जैत लद्धी घरी॥
छं० ॥ ११३ ॥

(१) ए. कृ. को.-जंम। (२) मो.-पर।
(३) ए. कृ. को.-चंड। (४) ए. कृ. को.-ढिल्या।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेग लग्गी तरी, मेच्छ ग्रभ्भंटरी। मीर छुट्टे धरी, साहि ढिल्ल्यौ करी॥
छं० ॥ ११४ ॥

शाह के आगे बढ़ने पर यवन सेना का उत्साह बढ़ना।

कवित्त॥ करिय साहि ठेलंत। मीर हक्कंत प्रबल दल॥
षां ततार रुस्तम्म। मीर मंगोल सबल बल॥
चक्रसेन चहुआन। लोह बाहंत आय षल॥
नर हय गय गुंजार। लोह लग्गंत हयद्दल॥
असि मार धार आकास उड़ि। उट्ठि जुरंत कमंध रिन॥
चहुआन चक्र सुरतान लगि। तन तिषंड षंडे [1]करिन॥ छं० ॥ ११५ ॥

शहाबुद्दीन का बान वर्षा करके सामंतों को घायल करना।

तब सहाब सुरतान। बान कंमान कोपि धरि॥
अलूषान आलंम। सार बहि [2]कढ़ी सु पुप्परि॥
चक्रसेन सिर षंडि। कियौ दह भरे लोह लरि॥
षां ततार रुस्तंम। षांन षुरसान रहै डरि॥
उर डरपि धरकि हिंदू तुरक। हूर नूर सामंत मुष॥
कविचन्द देषि कीरति करत। लरत अप्प अपनी सु रुष॥ छं०॥११६॥

दूहा॥ अप्प अपानी रुष लरत। करत अंग अँग मार॥
चक्र सेन चहुआन कौ। भरनि सह्यौ भुज भार॥ छं० ॥ ११७॥

कवित्त॥ भरनि सह्यौ भुज भार। साह सकबान प्रहारिय॥
एक बान चामंड। लग्गि भुज दंड मुहारिय॥
दुतिय बान सिर बहिग। चक्रसेनह सिर संधे॥
सुकर कढ्ढि अप बान। षंचि बसतर [3]सम संधे॥
बर बंधि घायक षग्ग गहि। बिजल षान बगसी बह्यौ॥
कैमास राइ चामंड मिलि। धन्य दुअन जै जै कह्यौ॥ छं० ॥११८॥

१) मो. किरन, करन। (२) ए. मो.-कढ्ढि।
(३) ए. कृ.-सस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैमास और चामंडराय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सरदारों का रक्षा करना।

कैमास रु चामंड। साहि गज तेग प्रहारिय॥
अलूषान आलंम। सीस दुअ घाइन पारिय॥
चक्रसेन षग बहिग। चमर कर सिर सम तुट्टिय॥
बहि क्रपान कासिम्म। [1]लरत धर पर धर लुट्टिय॥
लुट्टंति मीर तिहि साह रिन। छच धार छचिय षगन॥
दाहिम्म जुद्ध दिषि ब्रह्म सुर। भय तुंमर नारद मगन॥ छं० ॥११९॥

चक्रसेन का मारा जाना।

अलूषान धर उठिग। पानि धरि षग्ग षनंक्यौ॥
चक्रसेन कटि कंध। सिलह फुटि तनह ननंक्यौ॥
उमड़ि उट्ठि अधकाइ। घुमड़ि घन घाइ घनंक्यौ॥
तीन भरन किय घाउ। ठाम तिन तनह [2]ठनंक्यौ॥
जुध करत षग्ग तिय जोध सम। चक्रसेन सिर धर पऱ्यौ॥
बोहिथ्थ बीर तरवारि सर। उभय हथ्थ धर [3]रन तिऱ्यौ॥ छं० ॥१२०॥

चक्रसेन का वंश और उसका यश वर्णन।

*धर कर गहि तरवार। हेत हिंगोल सँभारिय॥
चढ़त साहि ढिग सज्जि। बाज सिर ताज बिहारिय॥
सचह बरस सपन्न। राय बाहर कौ जायौ॥
कलिजुग जस विस्तरिय। बहुरि बैकुंठ सु आयौ॥
बिन सिर कमंध करिवार गहि। षगन [4]मारि षल षंड किय॥
मारयौ मीर [5]जद्दव मलिक। बीर परे पारंत बिय॥ छं० ॥१२१॥

त्रयोदशी बुधवार को पृथ्वीराज की जय होना।

---

(१) मो.-लगन। (२) ए. कृ. को.-तंक्यौं। (३) ए. कृ. को.-रत रिऱ्यौ। * मो.-धर तर कर करिवार। (४) मो.-सार। (५) ए. कृ. को.-जत्र दल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ त्रयोदसी सुदि चैत की । गयौ लरत बुधबार ॥
समर साह चहुआन सम । भर भारथ किय सार ॥ छं० ॥ १२२ ॥

भुजंगी ॥ भरं भारथं कीय तिन बेर बीरं । जुरे संभरी साहि सिरदार औरं ॥
नरं काइरं झम्मले भग्ग भीरं । चढ़ौ मीर मारूफ मुष नीर धीरं ॥
छं० ॥ १२३ ॥
तहां च्यारि बंधौ भए एक सूरं । लगे मंच कैमास दिष्षै करूरं ॥
लगे बान कंमान फुट्टै परारं । कियं छिन्न सन्नाह देही विहारं ॥
छं० ॥ १२४ ॥
तहां राग मारू बजै तबल तूरं । घुरै घोर नीसान ईसान दूरं ॥
तहां षान हिंदवान भए चक्र चूरं । तहां हूर रंभा बरै बरह सूरं ॥
छं० ॥ १२५ ॥
तहां मेछ भग्गे भए प्रात तारे । तहां मंचि कैमास जित्यौ अषारे ॥
छं० ॥ १२६ ॥

दूहा ॥ जित्ति मंचि सुरतान घर । बंधव चौंड हजूर ॥
उभै लष्ष असुरान के । मेटि प्रबल दल पूर ॥ छं० ॥ १२७ ॥

कैमास और चामंडराय का शहाबुद्दीन को दो तरफ से दबाना और उसके हाथी को मार गिराना ।

कवित्त ॥ मेटि प्रबल दल पूर । साह संमुह गज पिल्ल्यौ ॥
बाज राज चामंड । मंचि बंधव मिलि ठिल्ल्यौ ॥
संगि बाहि कैमास । पीत बान्ने बिच थट्टिय ॥
गहिय समर चामंड । तुंड पर करिय निहट्टिय ॥
कट्टिय सु सुंड गज दंत सम । गिरत गज्ज साहाब धर ॥
दाहिम्म गह्यौ गज्जन असुर । जय जय सुर सद्द अमर ॥ छं० ॥ १२८ ॥

चौपाई ॥ प्रथीराज जित्यौ परगासं । साह सहाब ग्रह्यौ कैमासं ॥
सचह षान परे चिहु पासं । जै जै सबद भयौ आयासं ॥ छं० ॥ १२९ ॥

दोनों भाइयों का शाह को पकड़ कर पृथ्वीराज के पास लेजाना ।

कवित्त ॥ अमर सद्द जयकार । डारि साहाब कंध हय ॥
लै मंची सुरतान । बंधि बिय राज पास गय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिष्षि न्रपति साहाब । ताम अप्पन हिय डरयौ ॥
किय हुकम्म चहुआन । आनि सुष्यासन धरयौ ॥
न्रप जीति चल्यौ दिल्ली पुरह । उप्पाऱ्यौ चामंड बर ॥
ढुंढयौ षेत दाहिम तहां । उप्पारिग केइक सुभर ॥ छं० ॥ १३० ॥

कैमास का रणाक्षेत्र में से घायल और मृत रावतों को ढुँढ़वाना ।

उप्पारिग चहुआन । राज बंधव सु चक्रधर ॥
रामकिन्न गहिलोत । बंध रावर सु समर बर ॥
उप्पारिग नरसिंघ । बीर कैमास अनुज्जिय ॥
सामल सेषा टांक । नेह जंजरिय बंध बिय ॥
उप्परि षेत सामंत षट । षट्टूपुर भारथ परिग ॥
दल हिंदु सहस असुरह अयुत । रहे षेत कंदल करिग ॥छं०॥१३१॥

रण में मृत्यु होने की प्रशंसा ।

दूहा ॥ जे भग्गे तेऊ मरे । तिन कुल लाइय षेह ॥
भिरे सु नर गय जोति मिलि । बसे अमरपुर तेह ॥छं०॥१३२॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर सुलतान को छोड़ देना और वह दंड सामंतों को बांट देना ।

कवित्त ॥ गय ढिल्ली प्रथिराज । दंड सुरतान सीस किय ॥
गज द्वादस दल सोभ । बाज हज्जार अठ्ठ दिय ॥
अरध दंड प्रथिराज । दियौ कैमास चौंड मिलि ॥
दंड अरध दिय राज । सुभर उप्पारि मंझ रिन ॥
पतिसाह गयौ गज्जनपुरह । बड्डाइय सामंत बर ॥
जै जै सु सबद सब लोक किय । चंद अष्षि कीरति अमर ॥छं०॥१३३॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके षट्टू बन मध्ये कैमास पातिसाह ग्रहनं नाम तेंतालीसमो प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥४३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ भीम बध समयौ लिष्यते ।

(चौंवालिसवां समय।)

पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर शोक करना और सिंघ प्रमार का वीर वाक्यों से धैर्य्य देना ।

दूहा ॥ उर अड्डौ भीमंग नृप । नित्त षटक्कै घाइ ॥
अगनि रूप प्रगटै उरह । सिंचै सचु बुझाइ ॥ छं० ॥ १ ॥

पिता बैर सिर संसहै । अरु रमनी रस रंग ॥
दिन दिन सो जल श्रोन सम । पियै सचु अनभंग ॥ छं० ॥ २ ॥

कवित्त ॥ सुनिय बत्त प्रथिराज । भीम सोमेस सड्डि रन ॥
हरि हरि मुष उच्चार । किन्न प्रथिराज सुभट गन ॥
करत दुष्ष चहुआन । बरजि पंमार सिंघ तहां ॥
आदि ध्रंम [1]षिचीय । करे संताप तात कहां ॥
षग धार षंडि तन मंडि जस । तब सुर लोकह संचरै ॥
आजानबाह अवनीस सम । आबू वै इम उच्चरै ॥ छं० ॥ ३ ॥

पृथ्वीराज प्रति सिंह प्रमार के बचन ।

कहै सिंघ पामार । बत्त चहुआन चित्त धरि ॥
गुज्जर धर उज्जार । पारि प्रज्जारि छार करि ॥
सोमेसर सुरलोक । तोहि संभरिय लज्ज भुअ ॥
कितक बत्त चालुक्क । किम सु ऊंगमय जुद्ध तुअ ॥
सुरतान भूमि कंकर जहां । तहं थानौ मंडौ भलौ ॥
तुछ सुभट संग करि विकट घट । पुन अप्पनं ग्रेहां चलौ ॥ छं० ॥ ४ ॥

(१) मो.-छत्रिय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का पिता के नाम से अर्घ देकर दान करना और पितृ वैर लेने की प्रतिज्ञा करना।

दूहा॥ स्नान सलिल अंजुलि करिय। पुनि सु पिंड दै तात॥
सहस धेन संकलप करि। ग्रंथौ कथ्य व्रतांत॥ छं०॥ ५॥

कवित्त॥ कहै राज प्रथिराज। सुनहु सामंत सूर [1]सम॥
जो निरमान भवस्य। सोई संपजै क्रंमक्रम॥
जदिन भीम संग्रह्यौ। सोम उग्रह्यौ तदिन रन॥
जोगिनि बीर बेताल। करौं संतुष्ट [2]चपति तिन॥
घृत छंडि पाद्य बंधन तजिय। सजिय अप्प संभरि दिसह॥
अवतार भूत दानव प्रबल। अगनि अंग प्रज्वलि रिसह॥छं०॥६॥

गाथा॥ जाइ संपते सूरं। ग्रेहं ग्रेह अप्प अप्पानं॥
पिष्षिय नैरवि रूपं। भूपं बिना दुब्बलं [3]सहरं॥ छं०॥ ७॥

प्रातःकाल पृथ्वीराज का सब सामंत और सैनिको की सभा करके अपने बैर लेने का पण उनसे कहनां।

दूहा॥ भूमि सयन प्रथिराज करि। निसा बिहानी निठ्ठ॥
[4]अरुन समै उद्योत हौं। मंडि सभा सुभ बिठ्ठ॥ छं०॥ ८॥

पद्धरी॥ बोले सु कन्ह चहुआन राइ। [5]आनंद चित्त सब बैठि आइ॥
कर जोरि सभा सब उठ्ठ ताह। नरनाह बिरद [6]छज्जंत जाहि॥छं०॥९॥
चष पटी रहत जिन रत्ति दीह। बज्जंग अंग [7]संगऱ्यौ सीह॥
तन तच्छ तुच्छ ह्वै घट्ट घुम्मि। तब बीर सूर सोमेस भुम्मि॥
छं०॥ १०॥

(१) मो.-सव। (२) मो.-नृपति।
(३) ए. कृ. को.-सहयं। (४) मो.-असन।
(५) ए. कृ. को.-आदर अनंत, ए.-आइर अनंत। (६) ए. कृ. को.-सज्जंत।
(७) ए. कृ. को.-संकऱ्यौं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपमालिका कथा

तेइसवां समय]

एक दिन पृथ्वीराज ने कविचंद से कहा कि दीपमालिका के उत्सव के विषय में जो कुछ जानते हो सो कहो। पृथ्वीराज के ऐसे बचन सुन कर कविचन्द ने उत्तर दिया कि सतयुग में सत्यव्रत नामक राजा का पुत्र राजा सोमेश्वर बड़ा प्रतापी और पुण्यवान था, वह प्रजापालन में बड़ा दक्ष था इसलिये लोग उससे बड़े प्रसन्न थे। सोमेश्वर की राजधानी की प्रधान नगरी जहां वह स्वयं सपरिवार निवास करता था भांति भांति के पुष्प और पल्लवों से परिवेष्टित समुद्र के तट पर स्थित थी। उस सत्यवती नगरी में सत्यश्रम नामक एक दरिद्र ब्राह्मण भी रहा करता था। एक दिन उसकी स्त्री ने अपने पति से कहा कि हे पति इस धनहीन जीवन से मृत्यु अच्छी। जिस पुरुष के पास धन नहीं है वह जीवित अवस्था में भी मृतकवत् है। स्त्री के ऐसे बचन सुन कर सत्यश्रम ने विष्णु भगवान का नियम पूजन और ध्यान किया। तब विष्णु ने उसे ब्रह्मा के पास भेजा और ब्रह्मा ने उसे शिव की आराधना करने को कहा। भाग्यवश रुद्र ने उसकी तपस्या से प्रसन्न हो कर कहा कि तूं मेरी अनुगामिनी माया का ध्यान कर, सांसारिक सब कार्य्य उसी द्वारा संपादन किए जाते हैं। निदान उस ब्राह्मण ने वैसा ही किया और उसके ३ महीने १३ दिन की तपस्या में देवी ने प्रसन्न होकर उसे ऋद्धि सिद्धि और १४ रत्न दिए। तब ब्राह्मण ने अपने मन में कहा कि ऋद्धि सिद्धि से क्या होगा। ऐसा विचार कर वह राजा की सेवा करने लगा। एक दिन उसे अकस्मात ज्ञान हुआ कि कार्तिक की अमावास्या को लक्ष्मी उसके वर आती है और दीपक जलते समय तक रहती है। दीपक शान्त होने पर वह अन्य दीपक प्रज्वलित स्थान में चली जाती है।

उस ब्राह्मण को राज्य सेवा करते करते जब चार वर्ष व्यतीत हो गए तो एक दिन राजा ने उससे कहा कि ब्राह्मण वर मांग। यह सुनकर ब्राह्मण ने कहा कि मैं यही चाहता हूं कि कार्तिक मास की अमावास्या को मेरे सिवाय किसी के घर में दीपक न जलने पावे। ब्राह्मण के ऐसे बचन सुन कर राजा ने कहा कि हे ब्राह्मण जो तुमने माँगा सो पावोगे; किन्तु तुम अवश्य अपनी उलटी बुद्धि पर पछताओगे। इस समय तुम मुझ से अन्न, धन, स्वर्ण पृथ्वी जो कुछ माँगते वह मैं प्रसन्नतापूर्वक देता। इसका कुछ भी उत्तर न देकर वह ब्राह्मण अपने घर गया और एक मन तेल और सवा सेर रुई मँगाकर अपनी कुटीर में दीप मालिका के उत्सव का प्रबन्ध करने लगा। जब अमावास्या की तिथि निकट आई तब वह पुनः राजा के पास गया और उसने पूर्वोक्त बरदान के पूर्ण किए जाने की प्रार्थना की। निदान राजा ने भी आज्ञा दी कि अमावास्या के दिन मेरे राज्य भर में कहीं भी दीप ज्वाला देख न पड़े। तब ब्राह्मण ने अपने घर आकर बहुत से दीपक जलाए और अपना गृह बाहर भीतर से सर्वत्र खूब प्रकाशमान करके वह बैठ रहा। जब आधी रात के समय लक्ष्मी समुद्र से निकली तो सर्वत्र अंधेरा देख कर ब्राह्मण के ही घर गई और उसने विचार किया कि इसी स्थान में सर्वदा रहूंगी, और ब्राह्मण के सम्मुख साक्षात् होकर उसे बरदान दिया कि तेरे यहां सात जन्म पर्य्यन्त बास करूंगी। यह चरित्र देखकर उस ब्राह्मण का बालसखा दरिद्र वहां से चुप के से चल दिया; परन्तु ब्राह्मण ने उसे दौड़ कर पकड़ लिया और कहा कि मैं तुझे कदापि जाने न दूंगा; तुम मेरे लंगोटिया यार हो अब भी तुम्हें उचित है कि तुम मेरा साथ न छोड़ो और आनन्द से तुम भी एक कोने में रह कर इस पुंश्चली लक्ष्मी को कहीं जाने मत दो; परन्तु दरिद्र ने उसकी एक न मानी और यह कहता हुआ कि अब मैं इस नगर भर में कभी न आऊंगा, वह भाग गया। उसी घड़ी से ब्राह्मण का घर धन धान्य से परिपूर्ण हो गया सर्वत्र धन रत्न के आश्चर्य्यजनक अटंब लग गए। उसी घड़ी से दीपमालिका का प्रचार हुआ है॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन कथा ।

[चौबीसवां समय ।]

एक समय मरूभूमि से दिल्ली को आते हुए जब कि पृथ्वीराज का डेरा षट्टू बन में पड़ा हुआ था पृथ्वीराज ने अतरंग सभा में बैठे हुए अपने बुद्धिमान मंत्री कैमास की बुद्धि की बहुत ही प्रशंसा करके उससे पूछा कि हे मंत्रिवर इस बन में सुन्दर जल से सुशोभित एक सरोवर के किनारे एक पाषाण मूर्त्ति है जिसके शीस पर लिखा है कि "सिर कट्टे धन संग्रहे सिर सज्जे धन जाय" इसका तात्पर्य्य जानने के लिये बड़े बड़े बुद्धिमान चक्रित चित हो रहे हैं। अब तक इसका मूल भेद कोई भी न जान सका; इस हेतु अब मैं तुमसे पूछता हूं तुम बतलाओ कि उक्त लेख का क्या अर्थ है। पृथ्वीराज के ऐसे बचन सुन कर कैमास ने उत्तर दिया कि सुना जाता है कि गत समय में वीर बाहुन नामक कोई बड़ा प्रतापी राजा था, वह महान इन्द्रियलोलुप और प्रजापीड़क था। उसने प्रजा को कष्ट देकर यह अगनित द्रव्य का भंडार इकट्ठा किया। किन्तु प्रजा ने अत्यन्त दुखी होकर एकचित होकर उसे शाप दिया कि वह निःसन्तान मृत्यु को प्राप्त होवे। निदान प्रजा की प्रार्थना स्वीकार हुई और काल पाय ऐसा ही हुआ। सो हे महाराज! यह सब धन उसीका संचय किया हुआ है। इसका निकालना भी बहुत ही सरल है। यदि आप इस धन को निकालना चाहते हैं तो चित्तौराधिपति रावल सरम सिंह जी को बुला लीजिए और तब इस कार्य्य में हाथ डालिए; क्योंकि जयचन्द, शहाबुद्दीन, भीमदेव इत्यादि आपके शत्रु निरंतर आपकी ताक में रहते हैं; इसलिये उत्तम यही होगा कि सब प्रकार से अपना पक्का प्रबन्ध कर के तब धन निकाला जाय। कैमास के ऐसे नीति भरे बचन सुन कर राजा ने उसे अपने पास बुला कर बड़े आदर से बैठक दी और सिरोपाव भी दिया और कहा कि हे मंत्रिवर मैं तेरी सलाह से परम प्रसन्न हुआ हूं। और उसी समय चन्दपुंडीर को बुला कर एक पत्र देकर उसे रावल समरसिंह जी के पास चित्तौर भेजा।

चन्द पुंडीर अपने साथ में रावल जी को भेट में देने के लिये पृथ्वीराज के दिए हुए बहुत से हाथी, घोड़े, पट, वस्त्रादि लेकर चित्तौर पहुँचा और सादर रावलजी से मिला और पृथ्वीराज का दिया हुआ पत्र रावलजी को नज़र करके उक्त धन संबन्धी समाचार आद्योपान्त सुनाने लगा। इसे सुन कर और पत्र को पढ़ कर योगिराज रावल समरसिंह जी ने हँस कर उत्तर दिया कि हे चन्द पुंडीर इस संसारचक्र की गति विलक्षण ही है। एक मांस के लोथड़े को एक गिद्ध लाता है और अन्य गिद्ध लड़ कर उससे वह लोथड़ा छीना चाहते हैं। और इस धर पकड़ में वह लोथड़ा किसी और के ही हाथ लगता है। रावल जी के ऐसे बचन सुन कर चंद पुंडीर फिर बोला कि हे रावल जी आपका बचन तो सर्वथा सत्यही है परन्तु पृथ्वीराज को एक मात्र आपही का बल भरोसा है वह आप ही के भरोसे पर अपने बड़े बड़े शत्रुओं को कुछ भी नहीं समझते। इस हेतु मैं यही प्रार्थना करता हूं कि आप पृथ्वीराज के उत्साह को भंग न करके कृपापूर्व्वक दिल्ली पधारिए और धन निकालने में उनकी सहायता भी कीजिए।

चन्द पुंडीर के ऐसे बचन सुन कर रावलजी एक बड़ी भारी सेना लेकर नागौर की ओर चल पड़े। पड़ाव पर पड़ाव करते हुए जब रावल जी नागौर में आए तब धर्म्मायन ने सब समाचार शहाबुद्दीन को लिख भेजे। जब रावल जी दिल्ली से दस कोस की दूरी पर रह गए तब दूत ने दिल्ली में जा कर पृथ्वीराज के दरबार में समाचार दिया जिसे सुन कर पृथ्वीराज अपने सब सूर सामन्तों और सेना सहित रावल जी की अगवानी के लिये दिल्ली से आध कोस आगे बढ़ आए और सादर समर सिंह जी को दिल्ली लिवा ले गए। वहां पर अनंग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाल जी के रहाइस भवन में रावल जी को डेरा दिया गया और सब भांति से उनकी सेवा सुश्रुषा होने लगी। दो दिवस योंही व्यतीत हुए। तीसरे दिन पृथ्वीराज ने रावल जी और सब सामन्तों सहित एक अतरंग सभा की, जिसमें धन निकालने के विषय में उचित युक्ति विचारने का प्रस्ताव किया गया। निदान फिर भी बुद्धिमान कैमास के विचार से यही निश्चय हुआ कि शहाबुद्दीन का मुहासरा पथ्वीराज स्वयं रोकें और भीमदेव का पंथ रावलजी रोकें और तब इधर धन निकालने का यत्न किया जाय।

निदान इस प्रकार परामर्श पक्का हो जाने पर पृथ्वीराज और रावल समर सिंह जी समस्त सूर सामन्त और अपनी अपनी सेना समेत नागौर को चले। वहां पहुँचकर रावलजी के मतानुसार दो दो कोस के अंतर पर शहाबुद्दीन के मुहासिरे पर पृथ्वीराज और भोला राय के मुहासिरे पर रावलजी ने डेरा डाला। उधर इस बात की खबर शहाबुद्दीन के पास भी जा पहुँची। ज्योंही शाह ने सुना कि दिल्लीपति नागौर में धन निकालने के लिये आगए हैं, वह भी चुनिन्दा मुसलमान वीरों की बड़ी भारी सेना सजकर नागौर की तरफ चल पड़ा। उसने रास्ते में चलते चलते भी सेना को चक्रव्यूहाकार रक्खा और अब की बार पृथ्वीराज को अवश्य ही बंदी बना लूंगा ऐसा बिचारता हुआ बड़ी धूम धाम से वह नागौर के निकट आन अड़ा। इस प्रकार शाह का आना जानकर रावल जी ने बहुत प्रकार से समझा बुझाकर मंत्री कैमास को तो धन रचा पर नियत किया और आप शाह पर आक्रमण करने के लिये प्रस्तुत हुए। प्रातःकाल होते ही रावल जी शाह की ओर बढ़े। रावल जी की असीम सेना के चलने से धूलि उड़ती हुई देख कर शहाबुद्दीन भी ताड़गया और इसलिये आप भी आने बाने से दुरुस्त होकर रावल समरसी जी से समर करने के लिये साम्हने हुआ। इधर से बीर राजपूत उधर से मुसलमान योद्धा लोग अपने अपने अस्त्र शस्त्र चमकाते, हृदय में इष्ट देवों का स्मरण करते और मुख से अपने अपने मालिकों की जै जैकार की पुकार करते हुए भूखे सिंह की भांति एक दूसरे पर टूट पड़े। हाथी हाथी से, घोड़े घोड़े से और पदाती पदाती से भिड़ पड़े। रण क्षेत्र में दोनो सेनाओं की मुठभेड़ होते ही दोनो दलों के मुखिया सरदार भी एक दूसरे को प्रचार प्रचार कर वार करने लगे। प्रबल प्रहार ने रुस्तम खां के भाई मूर खां को मार गिराया। उधर से रुस्तम ने प्रहार राय को भरपूर हाथ मारा। इसी प्रकार दोनों ओर के सूरवीर रणमदोन्मत्त हो लड़ने लगे। रण क्षेत्र में रक्त की धार बह निकली; जिसमें पड़े हुए मुंड मुंड हाथी पहाड़ से और श्रेणीबद्ध शस्त्र धारी शूरवीरों की कतार नदी की कगार सी नजर आती थी। सारे दिन खूब लोहा भरा। हिन्दू और मुसलमान दोनों जी छोड़ कर लड़े, अन्त में आधी घड़ी दिन रहते बीर राजपूतों ने मीर पीरजादों को पीछे पिछेल दिया।

ज्योंही सूर्य्य भगवान अपने प्रकाश को संकुचित करते हुए अस्ताचलगामी हुए, कायर कमल संकोच से सिर नीचा करने लगे, कुमोदिनी गण प्रसन्नचित चन्द्रमा की ओर चित्त दे चहकने लगी, विहंग गण कोमल कोमल पत्तों की आड़ में किवाड़ देकर अपने अपने घोसलों में चुहचुहा कर चुप होने लगे, उधर समस्त दिन के समर श्रम से श्रांत दोनों सेना के सूरवीर गण अपने अपने स्वामियों की आज्ञा से अपने अपने शिविर समूह की ओर लौट पड़े और सब जमादार सिपाही इत्यादि अपने अपने स्थान पर जम कर जगत के जंजाल को तिलांजुली देकर निर्मूल हो निद्रा देवी की गोद में पैर पसार सोने में मस्त हुए। इधर रावल समरसी जी और पृथ्वीराज, उधर शहाबुद्दीन अपने अपने प्रशस्त शिविरों में सोते थे और उनके सगे विश्वासपात्र सरदार लोग सावधानी से पहरों पर सन्नद्ध थे। चामुंडराय निड्डुरराय अत्ताताई और जैतराव रेन प्रमार और कन्ह का भतीजा पृथ्वीराज के पहरे पर थे। और रुस्तम खां, तातार खां, नूरी खां, हुजाब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खां, महमद असाकेली खां और खोखर खां आदि मुसलमान सरदार शहाबुद्दीन की चौकी पर थे। रात्रि इसी प्रकार व्यतीत हुई। दूसरे दिवस पूर्व्व दिशा में सूक्ष्म सफेदी नज़र आते ही कुक्कुटने ज्योंही कड़कदार आवाज लगाई कि उसी समय दोनों सेनाओं में खर भर पड़ गई, सब सूर सिपाही लोग अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हो कर रणभूमि में शत्रुओं के रक्त की पिपासा से आकुलित हो नायकों की आज्ञा की प्रतीक्षा करने लगे। एक घड़ी दिन चढ़ते चढ़ते वीर पृथ्वीराज भी शूर बीरों के छत्तीसों बाने और जिरह बख़्तर धारण कर मतवाले मैंगल पर सवार हो कर अपनी सेना के मध्य में आकर सुशोभित हुआ और उसने शत्रु सेना पर आक्रमण करने की आज्ञा दी। पथ्वीराज की आज्ञा पाते ही युद्ध रँगराते मदमाते वीर राजपूत उस असंख्य यवन सेना पर ऐसे टूटे जैसे भेड़ों के समूह पर भेड़िया दौड़े। दाहने रुख़ से पृथ्वीराज और बाएँ रुख से समर सिंह जी ने आक्रमण किया। तब मुसलमान सेना भी अल्लाह बिसमिल्लाह करती हुई हृदय में अपने स्वामी की जय की अभिलाषा करती हुई, युद्ध में प्रवृत्त हुई। पूर्व्व दिशा में उदयाचल स्थित बाल सूर्य्य की कोमल लालिमा में दोनों सेनाओं के उज्वल शस्त्रों की चमचमाहट से चकाचौंध सी छा जाती थी। उस समय रण वाद्यों की बड़ घड़ाहट, प्रवल वायु वेग से उड़ने के कारण उत्तंग और प्रशस्त निशानों की फड़फड़ाहट, अग्न्यास्त्रों की धड़धड़ाहट, बान की बौछार और गोले गोलियों की सनसनाहट को सुन कर शूरबीरों को तो सुख होता था परन्तु कायर कपूतों के तो प्राण पखेरू ही पयान किए जाते थे। शाह की तरफ से अरब खां सेनापति था और उमर खां सहायक सेनानायक का कार्य्य संपादन करता था। उसने अपने बीरत्व पराक्रम और बुद्धिमता से राजपूत सेना से ११ दिन पर्य्यन्त साम्हना किया; अन्त में बारहवें दिन पांच घड़ी दिन चढ़ने पर मुसलमान सेना के पैर उखड़ ही पड़े। ऐसा समाचार पाकर पीठि सेनानायक खुम्मान खां ने बहुत जोर मारा और मुसलमान सेना को हिम्मत देनी चाही; जिससे वास्तव में मुसलमान सेना ठहर गई और यवन लोग जी तोड़कर युद्ध करने लगे। इसी प्रकार जब मध्यान्ह होगया और २००० गष्वर काम आ चुके तब मुसलमान सेना ने राजपूतों पर घोर आक्रमण किया। इसी प्रकार चोटें होते होते जब आधी घड़ी दिन शेष रह गया तब निसरत्त खां याकूब खां और तत्तार खां ने सेना की तीन अनी कर के राजपतों पर तीन ओर से प्रबल आक्रमण किया और ऐसी बुद्धिमानी और बीरता दिखाई कि राजपूतों के पैर उखड़ पड़े। यह देख कर रावल समरसिंह जी और पृथ्वीराज हाथी से उतर घोड़ों पर सवार होकर प्राण का मोह छोड़ कर शत्रु सेना में घुस पड़े और अपनी उज्वल असि द्वारा वे बड़े बड़े यवन योद्धाओं को खंड खंड करके धराशायी करने लगे। उनके पीछे पीछे अन्यान्य राजपूत बीर भी अपनी अपनी माई के सपूत पूत होने का परिचय देने में तत्पर हुए और पावस के बद्दल की भांति संघटित यवन सेना को राजपूत लोग प्रवल वायु स्वरूप बन कर काई सा फाड़ने लगे; उधर मुसलमान भी पांव पीछे देना जहन्नुम में जाने से भी बुरा जानते थे। इसीलिये दोनों सेनाओं में खूब लोहा झरा किन्तु आखिर मुसलमान लोग रावल जी की तेज तलवार की धार के सम्मुख ठहरने में असमर्थ हो उठे। उधर पृथ्वीराज ने अपने हाथी को शहाबुद्दीन के सम्मुख झुकाया तब शाह पृथ्वीराज पर सघन बाणों की वर्षा करता हुआ अपनी सेना से बोला कि "अय बहादुरो, खाने और सोने में तो सब इन्सान बराबर हैं मगर सच्चा बहादुर वही है जो दुश्मन के सामने सीना खोल कर अड़े। गोकि मुझे यह पूरा यक़ीन है कि आप लोग अपने नाम पर और मेरे काम पर अपनी जान और जहान कुछ भी चीज़ नहीं समझते मगर तब भी कहता हूं कि जिसका जी चाहे यहां से बिला शक चला जाय और अपने बाल बच्चों से मिले। मगर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मेरा तो यही क़सद है कि यातो इसी मैदान जंग में मरूंगा या जिस ख्वाहिश से गज़नी से चला हूं उसे पूरा करके छोड़ूंगा। मैं यह भी जानता हूं कि बिला मतलब कोई सींक नहीं हिलाता, क्या देव क्या जि़न्नत क्या इन्सान सब मतलब के यार हैं। इन्सान दौलत और आराम चाहता है तो शहीद देव व जिन्न परिसतिश के खाहिशगार है, मगर सच्चा नौकर वही है जो वक्त मुशकिल मालिक के काम आवे, सच्चा मित्र वही है जो मित्र के चित्त की गति जानता हुआ उसे सदैव प्रसन्न करने का यत्न करे और कोई वस्तु उससे छिपावे भी न और जो सच्चे दिल से मुहब्बत करता है वही दोस्त है।" सुलतान के ऐसी बातें सुन कर सब मुसलमान सरदार शाह के सद विचार की प्रशंसा करते हुए जी खोल कर लड़ने लगे। इधर कन्ह ने खुरासान खां के भाई का साम्हना किया और उसे एकही वार में मार गिराया। इससे मुसलमान सेना और भी घबड़ा उठी। उधर पृथ्वीराज ने अपनी सेना को उत्तेजित करते हुए म्यान से खड्ग खींच लिया और शहाबुद्दीन पर आक्रमण किया। इनके साथही चामुंडराय, बलभद्र, पीप पड़िहार और निढ्ढुरराय ये चार सामन्त भी धरो पकड़ो की ध्वनि मचाते हुए शाह के चारों ओर झुक पड़े। अपने स्वामी की रक्षा करने के लिये शाह के पांच सरदारों ने जो कि खवासखाने की जगह पर तैनात थे, बड़ा पराक्रम दिखाया किन्तु अन्त में वे मारे गए और शहाबुद्दीन भी पकड़ लिया गया। तब तो मुसलमानी सेना निपट निराश होकर भाग उठी और सब शाही रखत बखत जहां का तहां पड़ा रह गया जो कि विजयी राजपूत सेना ने राई रत्ती करके लूट लिया। शहाबुद्दीन के बंदी होते ही समस्त सेना में जय जय कार शब्द होने लगा। जहां तहां बीर राजपूत सैनिक आनन्द ध्वनि करते हुए स्वामी के उत्साह को द्विगुण उत्तेजित करते थे। इस युद्ध में पृथ्वीराज ने चतुर्दशी रविवार को विजय प्राप्त की।

इस प्रकार गज़नी के बादशाह शहाबुद्दीन पर विजय पाने पश्चात् आनन्दसूचक अतरंग सभा में गुरूराम ने पृथ्वीराज से कहा कि महाराज अब आप दिल्ली को चलिए और वहां पर इस विजय का उत्सव मना कर तब पुनः शुभ मुहूर्त साधकर धन निकालने को आइए तो अच्छा होगा। गुरूराम के ऐसे बचन सुनकर राजा ने काका कन्ह और दाहिम्म राय कैमास की तरफ देखा तो उन्होंने भी गुरूराम के बचनों का अनुमोदन किया। तब राजा पृथ्वीराज रावल समरसिंह जी कैमास तथा सब सेना को षट्टू बन में छोड़ और आप जामदेव, पज्जून राय, बलभद्र, जैतप्रमार, काका कन्हराय, अरिसिंह आदि छ सामन्तों और थोड़ी सी सेना को लेकर फाल्गुण सुदि १३ को दिल्ली की तरफ पधारे और दस दिन में पंथ पूरा करके दिल्ली जा पहुँचे। शत्रु पर विजय प्राप्त करके बीर पृथ्वीराज का शुभागमन सुनकर राजकुमार सब सेना और शहरवालों की भीड़ भाड़ सहित दिल्ली के बाहर आध कोस पर्य्यन्त पिता की अगवानी करने के लिये पैदल पधारे। राजा ने कुमार से सादर मिलाप करके उन्हे अश्व पर सवार होने की आज्ञा दी। और तब आप सब सेना सहित आगे बढ़े। चैत बदि ७ को पृथ्वीराज दिल्ली में पहुँचे। वहां उन्होंने सानन्द सबसे मिलाप करके सुख से भोजन किया और नाना प्रकार के भोग बिलास से सुखी होकर, शहाबुद्दीन को अपने साम्हने बुलवा कर सेवकों को आज्ञा दी कि उसे सुख से सम्मान सहित रक्खो।

शहाबुद्दीन के पकड़े जाने का समाचार जब गज़नी में पहुँचा तो वहां के राज्य उपमंत्री तत्तार खां ने एक चतुर खत्री को सब प्रकार से समझा बुझा कर और एक पत्र देकर दिल्ली की ओर भेजा। यह लोरक राय नामक खत्री पांच सौ सवारों सहित बारह बारह कोस का पड़ाव करता हुआ दिल्ली के नगर द्वार पर आ पहुँचा। वहां उसने सब दिन विश्राम कर के दो घड़ी दिन रहने पर दिल्ली नगर में प्रवेश किया और राजद्वार पर जाकर दरबार में इतला करवाई कि गजनी से तत्तार खां का भेजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुआ राजदूत श्रीमान के दर्शनों की अभिलाषा से द्वार पर उपस्थित है। यह समाचार पाकर राजा ने उसे सम्मुख बुलवाया। तब लोरक राय ने दरबार में पहुँच कर राजा को सादर प्रणाम किया और राजा की आज्ञा पाकर वह एक ओर अदब से बैठ गया। कुछ देर में राजा का रुख देखकर वह चतुर दूत फिर उठा और राजा को तीन वार झुक कर प्रणाम करके उसने तत्तार खां का दिया हुआ पत्र राजा के पेशकार मधुशाह के साम्हने सादर पेश किया। राजा की आज्ञा पाकर मधुशाह ने उस पत्र में लिखी हुई शहाबुद्दीन को मुक्त किए जाने के विषय में तत्तार खां की अर्ज़ी पढ़ सुनाई, जिसे सुन कर राजा ने हँस दिया। बुद्धिमान मधुशाह राजा की दृष्टि से उनके आंतरिक अभिप्राय को ताड़ गया; और इसलिये उसने लोरक राय को युक्तिपूर्व्वक दरबार से विदा कर दिया।

दूसरे दिन लोरक राय पुनः दरबार में उपस्थित हुआ और उसने पृथ्वीराज की वीरता धीरता और सहनशीलता की बहुत कुछ प्रशंसा कर के पुनः बादशाह के मुक्त होने की बात चलाई। पृथ्वीराज ने उसकी बातों का कुछ भी उत्तर न देकर उससे प्रश्न किया कि शहाबुद्दीन का गोरी नाम क्यों पड़ा।

राजा के ऐसे बचन सुन कर लोरकराय बोला कि महाराज! गजनी में जलालुद्दीन नामक एक क्रूर बादशाह राज्य करता था। वह ऐसा विषया-सक्त था कि उसके महल में ५१० हरमें (रानियां) थीं; किन्तु साथही इसके वह निष्ठुर और निस्स्नेह भी बड़ा था। वह जिस हरम के गर्भवती होने की खबर पाता उसका सर अपने हाथ से काट लेता था और वह केवल इसी भय से कि गर्भ से जन्मा हुआ पुत्र कहीं मुझे मार कर आप राज्य का अधि-कारी न बन बैठे; किन्तु न जाने क्या सोच कर निजाम शाह नाम के एक फकीर की सेवा वह बहुत किया करता था। उसकी सेवा से प्रसन्न हो कर फकीर ने आशीर्वाद दिया कि तुझ को एक प्रतापी पुत्र उत्पन्न होगा। फकीर का आशीर्वाद सुन कर शाह के शिर पर मानो वज्र पात हुआ। वह घब-ड़ाता हुआ घर आया तो सुनता क्या है कि एक बेगम गर्भवती है; परन्तु जब तक शाह उसके मारने का विचार करे कि वह भयभीत बेगम महल से निकल कर भाग गई। इसके पांच वर्ष पश्चात् शाह जलालुद्दीन भी जहन्नुम रसीद हुआ। तब राज्य कर्म्मचारी गण बड़े सोच विचार में पड़े कि अब इस अराजक प्रजा का पालन किस भांति होना संभव है। तबतक एक शेख ने आकर कहा कि एक अद्वितीय तेजस्वी बालक नगर के बाह्यप्रान्त में गोर अर्थात् कब्रिस्तान में रहता है, तुम उसे ही अपना बादशाह बनाओ। चलो, मैं तुझे उस बालक को दिखादूं। जब सब लोग उसके साथ हो लिये तो वहां जाकर देखते क्या हैं कि एक ५ वर्ष का परम प्रतापी बालक बैठा हुआ बाल क्रीड़ा कर रहा है। सब लोग उसका तेजस्वी स्वरूप और होनहार पुरुषों की आकृति देख कर उसे सादर राज्य महल में लाए और नजूमियों को उसके जन्म फल कहने की आज्ञा दी तो उन लोगों ने कहा कि यह बड़ा प्रतापी बादशाह होगा। यह भारतवर्ष में भी मुस-लमानी शासन की नींव डालेगा और जिससे यह बार बार बंदी किया जायगा, उसे ही यह नाश करने वाला होगा।

इस प्रकार जब लोरक राय शहाबुद्दीन की पूर्व कथा वर्णन कर चुका; तब पथ्वीराज बोले कि शाह के पास शृंगारहार नामक एक सिंहलद्वीपी परम सुन्दर प्रशस्तकाय हाथी है। वह और उसके साथ ३० हजार घोड़े हमको दंड में दिए जांय तो हम तुम्हारे बादशाह को छोड़ देवें। इस पर लोरक राय ने उत्तर दिया कि श्रीमान् की जैसी मर्जी होगी वही किया जायगा परन्तु हमारी प्रार्थना यही है कि शाह छोड़ दिया जाय। इस प्रकार प्रतिज्ञा करके लोरक राय ने गज़नी को एक पत्र लिख कर वहां से उक्त हाथी और घोड़े मँगा कर पृथ्वीराज को समर्पण किए; और तब शाह को छुड़ा लिया। शहाबुद्दीन कैद से छुटकर गज़नी जा पहुँचा और वहां उसके सूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामन्त और साथी लोग नाना भांति से आनन्द मनाने और अपने परवरदिगार को धन्यवाद देने लगे।

इधर पृथ्वीराज उस दीर्घकाय शृंगारहार को निरंतर अपनी आँख के साम्हने रखता था; वह हाथी सात हाथ ऊंचा नौ हाथ लंबा और दस हाथ मोटा था। जिस समय पृथ्वीराज गिरिपुत्र ऐसे गयंद पर सोने चांदी का साज सज कर सवार होता था उस समय ऐसा सुशोभित होता था मानों पृथ्वी को तारण-तरण करने के लिये इन्द्र के अंश का आविर्भाव हुआ हो। एक दिन पृथ्वीराज उस हाथी पर सवार होकर शिकार करने के लिये पधारे तब तक नरनाह कन्ह भी साथ में हो लिए, दोनों नरसिंह बीर उस सघन बन में विचरते फिर रहे थे कि बनरखे ने आकर खबर दी कि महाराज पास ही में एक बड़ा भारी सुअर है। तब राजा ने उसको रोकने की आज्ञा दी और वह आप स्वयं उसकी ओर बढ़ा; चारों ओर से घिर जाने पर उस सुअर ने हुंकार शब्द करते हुए जो बढ़ना चाहा कि राजा ने उसे वाण से मार कर धराशायी किया। तब तक एक शेर का समाचार मिला जि। सुन कर राजा ने प्रसन्नता प्रगट करते हुए कहा कि मैं तो अब इसका शिकार किए बिना न रहूंगा और ततक्षण ही वह पारधी के कहे हुए संकेत स्थल की ओर मुड़ पड़ा। थोड़ी ही दूर चलने पर देखा गया कि नदी के किनारे एक बिकराल सिंह एक वृषभ के मृत शरीर को भक्षण कर रहा है। ऐसा देख कर राजा ने उसके हांके जाने की आज्ञा दी; इधर से महावत ने भी शृंगारहार को उसी तरफ झुकाया। यह सब कोलाहल सुन कर वह सिंह बड़े ही वेग से राजा की तरफ झपटा और राजा ने भी तीर चलाया पर चूक गया। तब खवास खाने में बैठे हुए कूरंभ राय ने खड्ग से सिंह को दो टूक कर के गिरा दिया। इस वीरता से सब सेना तथा राजा ने स्वयं कूरंभ राय की बड़ी प्रशंसा की। इस प्रकार शिकार करके राजा जब दिल्ली लौट आए तब कविचंद ने शेर के शिकार सम्बन्धी उक्त समाचार को सुनकर राजा पर पुष्प वर्षा करके आशीर्वाद देते हुए अपने हार्दिय आनन्द की सूचना और बधाई दी।

दूसरे दिवस राजा ने प्रोहित गुरुराम से धन निकालने के लिये षट्टू बन को चलने के लिये शुभ मुहूर्त्त पूछा। अतएव गुरुराम ने वैशाख सुदि ३ को प्रस्थान निश्चय किया। तदनुसार ही महाराज ने यात्रा की। रास्ते में नाना प्रकार के मांगलीक वस्तुओं का दर्शन करते हुए जब पृथ्वीराज षट्टूबन में पहुंचे तब रावल जी ने आगे बढ़ कर सादर मिलाप किया। इधर पृथ्वीराज ने भी योगिराज रावल को शाह छोड़े जाने और शिकार इत्यादि का समाचार सुना कर प्रसन्न किया।

इस प्रकार उस दिन पंथ का परिश्रम निवारण करने पश्चात् राज्यमंत्री कैमास से राजा ने धन निकालने के विषय में पूछा। तब कैमास ने वहां का भेद वर्णन किया और राजा, रावल जी तथा मुख्य मुख्य सामन्त और कुछ सेना को लेकर उपरोक्त पाषाण लिपि के पास पहुंचे। कैमास ने उस बीजक को पढ़ा तो उसमें ये वाक्य लिखे थे—

दोहा ॥

ऊरध अंगुल सठ त्रिसठ, तीर कहत चवसाठि।
तहां अच्चर त्रिम्यो सु इम, सर में द्रव्य अनिठ॥
भरि प्रसंक अंगुल भरिग, तिय अंगुल सत अंक॥
अंगुल अंगुल अंक में, एकादसो प्रसंक ॥२॥

कैमास ने बीजक के तात्पर्य को भली भांति समझ कर और तदनुसार ही अपने हाथ से स्थान को माप कर वहां पर खोदने की आज्ञा दी। रावल जी ने वहां पर अनिष्टों के नष्ट होने के अभिप्राय से प्रथम पूजनार्चन किया और तब खुदवाना आरंभ किया। कुछ ही गहरा खुदने के अनंतर एक पाषाण पुतरी पाई गई जिसके माथे पर कुछ अंक खुदे हुए थे। निदान उसे भी कैमास ने पढ़ा तो उसमें लिखा था कि "सब सामंत लोग मुझे देख कर न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंसे तो पाषाण को देखें।" निदान शुभ मुहूर्त का वेध होते ही कमान की मूठ के बीच की ताली निकालने के लिये ज्योंही उसे तोड़ा गया कि एक बड़ा भारी सर्प फनफना कर निकला जिसको देख कर और तो सब लोग भागे परन्तु चन्द ने मंत्र द्वारा कील कर उस सर्प को पकड़ लिया और तब सब लोग धन देखने लगे।

चंद की बात मान कर (संवत ११३८) महाराज पृथ्वीराज स्वयं धन निकालने के लिये वहां आए और आज्ञा दी कि इस शिला का सिर काट कर धन निकाला जाय; राजा की इस आज्ञा के देते ही वह भूमि कांपने लगी और एक हुंकार शब्द भी हुआ। शस्त्र की नोक से एक पत्थर हटाया गया जो कि तीस अंगुल मोटा था जिसमें से बारह अंगुल मोटे हंडे का मुंह दबा था। इस प्रकार खजाने का मुहं खुल गया। जब बारह हाथ और खोदा गया तो वहां से एक महा भयानक देव निकला और नाना भांति की राक्षसी माया करके युद्ध करने लगा। जब उसने अधिक उपद्रव किया तब चंद ने देवी को स्तुति और अर्चना से प्रसन्न करके आवाहन किया और उस राक्षस के बध करने की प्रार्थना की। जब देवी उस दैत्य का बध कर चुकी तब चंद ने विनीत भाव से पुनः प्रार्थना की कि हे माता हम लोग इस धन की पूर्व्व कथा जानने के बड़े अभिलाषी हैं। सो कृपा कर कहिए तो बड़ा अनुग्रह हो।

चंद के ऐसे वचन सुन कर देवी ने कहा कि हे पुत्र, सतयुग में मंत्र, त्रेता में सत्य, द्वापर में पूजा और कलियुग में वीरता प्रधान है। हे कविचंद गत समय में रघुवंश में कोई आनन्द नामक राजा बड़ा वीर और पराक्रमी था परंतु साथ ही इसके वह अधर्मी अन्यायरत और प्रजापीड़क भी था। जहां कहीं ऋषि ब्राह्मणों के यज्ञादि की चरचा सुनता कि उसे बिध्वंस कर देता। इसलिये ऋषियों ने उसे शाप दे दिया जिससे उसका शरीर उसी समय भस्म हो गया और तब से वह दैत्य रूप धारण कर इस स्थान पर निवास करने लगा। इसके बहुत दिन पश्चात उसी रघुकुल को भगवान रामचन्द्र ने जन्मधारण कर पवित्र किया। इस प्रकार काल तो पुराना हो गया परन्तु यह लक्ष्मी अब तक ज्यों की त्यों बनी हुई है।

देवी के मुख से ऐसे वचन सुन कर पृथ्वीराज ने प्रार्थना की कि अब कृपा कर ऐसा बर दीजिए कि धन निकालने में अब किसी प्रकार का विघ्न उत्पन्न न हो। इस पर देवी एवमस्तु कह कर अन्तर्ध्यान हो गई। तब देव ने चन्द से कहा कि मेरे पिता रघुवंशी धर्म्माधिराज थे। उनका अन्यायी पुत्र आनन्द चन्द मैं ही हूं। शाप से मर जाने बाद मेरा नाम वीर पड़ा। यह सब धन मेरा ही संग्रह किया हुआ है। इसी कारण मेरी यह गति हुई। निदान इसी प्रकार अपने पिता तथा अपनी वीरता की प्रशंसा करते हुए उसने अपने साम्हने ही धन निकाले जाने को कहा; तब चन्द ने पूछा कि हे वीर अब तुम्हारी प्रसन्नता के लिये हमारे महाराज क्या कार्य्य करें। यह सुन कर वीर बोला कि मेरे लिये ब्राह्मणों से जप करवाओ और महिष का बलि दो। इस प्रकार कहके वह वीर अन्तर्ध्यान हो गया।

तदुपरान्त राजा ने विद्वान पण्डितों को बुलवा कर पूजन करने की आज्ञा दी और आप, रावल जी, चंद, कैमास तथा अन्य छ प्रधान सामन्तों सहित वहां ही बैठे। उस स्थान के खोदे जाने पर एक बड़ा भारी पत्थर का स्वच्छ दालान निकला उसमें एक स्वर्ण के मणिजटित हिंडोले पर एक सोने की पूतरी बीणा बजाती और नाचती हुई निकली; जिसे देख कर सब के सब आश्चर्य्य में पड़ गए। तब चंद ने कहा कि यह मायारूपी पूतरी है और ध्यान द्वारा वीर से उस का वृत्तान्त जानकर कहा कि यह पुतरी ऋद्धि रानी का अवतार है। इस से डरिए मत, इस हिंडोले को पूजन में रख देना उचित होगा। इस प्रकार वार्तालाप हो ही रहा था कि उस पूतरी की एक कटाक्षमय दृष्टि से गुरु राम और चन्द मूर्छित होकर गिर पड़े; परन्तु कुछ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देर में फिर से सम्हल कर उठ बैठे। तब गुरुराम ने पृथ्वीराज से पूछा कि यह जो धन अब तक प्राप्त हुआ है सो तो श्रीमान नजर ही कर चुके; आगे अब क्या किया जाय सो आज्ञा दीजिए।

दूसरे दिवस सब धन सम्मुख रक्खा गया। राजा पृथ्वीराज और रावल समर सिंह जी पहिले तो देवी पूजन को गए। वहां दस महिष बलि करके और देवी की प्रसन्नता प्राप्त करके दोनों बीर पुरुष प्रेम पूर्व्वक एक ही सिंहासन पर बैठ कर उक्त धन का निरीक्षण करने लगे। उसी समय पृथ्वीराज ने रावल जी को आधा धन बाँट देने की इच्छा प्रगट की; परन्तु रावल जी का रुख न देख कर चुप हो रहे। और उनके अनुचरों को यथायोग्य द्रव्य प्रदान करके उन्हें प्रसन्न किया। तदुपरात रावल जी ने भी आग्रह पूर्व्वक विदा मांग कर चित्तौर चलने की तय्यारी की; तब पृथ्वीराज ने उन्हें ५ हाथी और १०० घोड़े देकर बिदा किया। चंद कवि और कैमास कुछ दूर पर्य्यन्त पहुँचाने गए। जब कैमास रावल जी को पहुँचा कर लौटे तब राजा की आज्ञानुसार वह सब धन हाथियों पर लदवा कर ससैन्य दिल्ली की ओर यात्रा की गई। निदान ज्येष्ठ सुदि १३ रविवार को राजा पृथ्वीराज दिल्ली में दाखिल हुए। इनका आगमन सुन कर राजकुमार ने सब राजसी ठाट बाट सहित नगर के बाहर आकर अगवानी की। उस दिन दिल्ली नगर भी अपनी सजधज और प्रतिभा से इन्द्रपुरी को परास्त करने का अभिमानी था; अटा अटारी गोख और झरोखों में मंगला मुखी स्त्रियां कलकण्ठ से गान करती थीं। राज द्वार पर नौबत झड़ती, बंदीजन विरदावली पढ़ते और ब्राह्मण लोग स्वस्तिवाचन कह रहे थे। राजा ने महलों में जाकर सब रानियों को प्रसन्न किया। दूसरे दिवस राजा ने दरबार में बैठ कर उस संपति का आधा भाग यथायोग्य सब सामन्तों में बांट दिया। शेष को राज्य कोष में जमा किए जाने की आज्ञा दी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शशिवृता वर्णन।

(पचीसवां समय।)

पृथ्वीराज के खट्टूबन में गड़ा हुआ धन प्राप्त करने की कथा समाप्त करके कवि शशिवृता के व्याह की सविस्तर कथा इस प्रकार से वर्णन करता है।

गरबीली ग्रीष्म ऋतु के अवसान और पावस के आरम्भ में एक समय जब कि पृथ्वीराज, केशर कुकुमादि अष्टसुगंधमिश्रित घवसार का शरीर में लेप किए हुए लहलहाती हुई ललित लताओं, प्रस्फुटित पुष्पों और हरे भरे तृण समूह से पूरित उद्यान में, सेवक, सामन्त और सखाओं सहित बैठा हुआ स्वछन्दता से प्रकृति का आनन्द ले रहा था उसी समय चन्द्रोदय नामक एक नट ने आकर प्रणाम किया। राजा ने प्रसन्नतापूर्व्वक उसका प्रणाम स्वीकार कर के उसे अपनी नाट्य विद्या सम्बन्धी कलाएं दिखाने की आज्ञा दी। अतएव नट ने मृदंगी, दण्डिका ताली, कलही, श्रुत, धुर्द्धरी आदि प्रबन्धबद्ध गीत और नृत्य इत्यादि दिखला कर राजा को सन्तुष्ट किया।

नट की नाट्य एवं नृत्यादि कलाओं के खेल से प्रसन्न हो राजा पृथ्वीराज ने उसे बैठने की आज्ञा दी और पूछा कि हे चतुर नट, तेरा नाम ग्राम क्या है सो कह। यह सुन कर नट ने उत्तर दिया कि हे महाराज! देवगिरि नामक नगर में सोमवंशी यादव राज्य करता है जो कि एक उत्तम राज्य शासक होने के सिवाय संगीत विद्या और कलाओं में भी अत्यन्त निपुण है। मैं उसी राजा के दर्बार का नट हूं। अपने दर्बार से सीख (छुट्टी) लेकर कुरुक्षेत्र की तीर्थ यात्रा करने जा रहा था, श्रीमान् की गुणग्राहकता के विषय में सुन कर दिल्ली को आया हूं। तब पृथ्वीराज ने पूछा कि हे नट, तुम्हारे राजा की कन्या का विवाह कहां हुआ? नट ने उत्तर दिया कि प्रथम तो उसका सम्बन्ध उज्जैन के राजकुमार से होना निश्चय हुआ था किन्तु यह सगाई तोड़ दी गई है और अब वह व्याह कन्नौज के राजा के भतीजे के साथ होगा। अन्नदाता! वह राजकुमारी शशिवृता ऐसी सुन्दर है कि मुझ से उसके सहज सौन्दर्य्य और स्त्रियोचित गुणों का वर्णन कदापि नहीं किया जा सकता।

पृथ्वीराज ने सभा विसर्जन कर नट को एकान्त में बुलाकर पूछा कि शशिवृता के विषय में जो कुछ कहना हो अब कहो। तब नट बोला कि घणी क्षमा, अन्नदाता, मैं क्या कहूं। उस चद्रमुखी, मृगलोचनी, कलकंठी, सुकनासा, गजगामिनी, सर्वाङ्ग सुन्दरी सुकुमार राजकुमारी शशिवृता का ऐसा मनोहर स्वरूप है मानो ब्रह्मा ने भूमि पर दूसरी मैनिका का निर्माण किया हो। नट के ऐसे बचन सुन कर पृथ्वीराज के हृदय में शशिवृता के सौन्दर्य्य का चित्र सा खिंच गया। उसने उत्सुक होकर नट से पूछा कि कोई ऐसा उपाय भी है जिसमें शशिवृता का व्याह मुझ से हो। इस पर नट ने उत्तर दिया कि इस विषय में श्रीमान् से मैं फिर कभी निवेदन करूंगा परन्तु अपने वश भर आपके लिये संतोष जनक प्रयत्न करने में किसी प्रकार की त्रुटि भी न करूंगा।

पृथ्वीराज ने नट को तो एक हाथी, पांच घोड़े और बहुत सा द्रव्य देकर विदा किया और वह कुरुक्षेत्र को चला गया, परन्तु राजा का चितचकोर शशिवृता के रूपराशि रूपी शशधर की धुन में ऐसा निमग्न हुआ कि उसे अहर्निशि कल्पसम व्यतीत होने लगा। राजा ने अपनी अभिलाषा की पूर्ति के लिये शिव की आराधना की और आशुतोष शिव ने उसे वांच्छित वर्दान भी दिया; परन्तु उससे पृथ्वीराज की आशालता को एक प्रकार का सहारा होने से उसकी निज प्रेयसी से सम्मिलन की लालसा दिन प्रति दूनी बढ़ने लगी। पावस का प्रवेश होते ही पृथ्वीराज की विरह वेदना और भी बढ़ने लगी, ज्यों ज्यों जल की वृष्टि अधिक होती, पपीहा, मोर मेंढ़क बोलते, झिंगुर झनकार करते, जुगनू दम दमाते, घन घहराता और बिजली चमचमाती त्यों त्यों राजा की शशिवृता प्रति विरह वेदना बढ़ती ही जाती थी। जब पावस का अवसान और स्वच्छ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरद ऋतु की अवाई हुई, तब प्रकृति के निर्मल होने के साथ ही पृथ्वीराज की हृदयस्थ प्रेयसी प्रतिमा भी मानो स्वच्छ भाव से भासित होने लगी। सुन्दर सर सरिताओं का निर्मल जल, उसमें कल्लोल करते हुए पक्षी समूह, वन और उपवन की लहलहाती हुई लौनी लताएं और सुगन्धित सुमन राजा की कामेच्छा को अत्यन्त उद्दीपित करते थे; प्रफुलित कुमोदिनी और कमल तो पृथ्वीराज के कलेजे पर कटारी का काम करते थे इसी समय पृथ्वीराज ने अपने मन बहालने के लिये निज स्वाभाविक व्यवसाय एवं व्यसन अर्थात् शिकार खेलने की इच्छा की। राजा की आज्ञा होते ही समस्त शिकारी साज सामान सज कर दुरुस्त हो लिए। नियत दिन मंगल वार को पृथ्वीराज अपनी मित्र मंडली एवं सामंतों सहित शिकार करने के लिये जंगल को पधारे। पृथ्वीराज के साथ में अगनित वागुर, जाल, शिकारी बैल, चीते, कुत्ते, हिरन, श्रीगोस और कुही, बाज, जुर्रा आदि शिकारी पक्षी भी थे। जंगल में पहुंच कर जहां तहां शिकारी जानवर छोड़े गए और राजा एक उत्तम स्थान में ठहर कर अपने पालित पशुओं एवं वधिकों का जघन्य कार्य्यकौशल निरीक्षण करने लगे। राजा जिस समय इस व्यवसाय में व्यस्त होकर वधिकों को इनाम दे रहे थे तब तक एक बनरखे ने खबर दी कि अमुक स्थान में एक बड़ा भारी वाराह है। उसने यह भी कहा कि उक्त स्थान ऐसे समारोह के साथ जाने योग्य नहीं है। ऐसा सुनते ही पृथ्वीराज बंदूक कँधे पर रख कर अकेले ही उस बनरखे (बधिक) के साथ हो लिए। उस समय राजा के साथ में गतिसिंह (सिंह-गति) नामक स्थान भी था जिसपर पृथ्वीराज का अत्यन्त प्रेम और विश्वास था। राजा ने बड़ी कठिनता से उक्त स्थान पर पहुंच कर वाराह को एक ही गोली से मार गिराया। राज ने उस बधिक को बहुत सा इनाम दिया। एक दिन और भी उसी गहन बनमें ठहर कर दूसरे दिन दिल्ली को प्रस्थान किया।

कविचन्द के इतनी कथा कह चुकने पर उसकी स्त्री ने कहा कि हे शुक! राजा पृथ्वीराज और शशिवृता के गंधर्व विवाह का सम्पूर्ण प्रबन्ध वर्णन कीजिए। ऐसा सुन कर कविचन्द ने कहा कि जिस समय दक्षिण दिशा में स्थित देवगिर के राजा शशिवृता के पिता राजा भानराय यादव का भेजा हुआ ब्राह्मण शशिवृता का टीका लेकर कन्नौज में पहुंचा और उसने जयचन्द के दर्बार में अपने आने की खबर कराई तो जयचन्द ने उसे तुरन्त ही अपने पास बुला कर उसके आने का कारण पूछा। तब ब्राह्मण ने कहा कि मैं देवगिरि के राजा भानराय का प्रोहित हूं। मैं उन्हीं की कन्या का लग्न लेकर आपके भतीजे को चढ़ाने आया हूं।

जयचन्द की सभा में वर्तमान एक गंधर्व उक्त वृत्तान्त के सुनते ही देवगिर की तरफ चल दिया और नगर के बाहर एक रमणीक उपबन में सखी समूह सहित बाल क्रीड़ा करती हुई शशिवृता के पास सुन्दर हँस के स्वरूप में जा पहुंचा। राजकुमारी शशिवृता ने उस हंस को प्रसन्नता पूर्व्वक पकड़ लिया और उसे अपने कोमल कर कमल पर बिठा कर वह कहने लगी कि हे पक्षि वर, तुम्हारा निवासस्थान कहां है? यह सुन कर हंस ने उत्तर दिया कि मैं वास्तव में गंधर्व हूं और इन्द्र की आज्ञा पाकर इस स्वरूप से तुम्हारे पास आया हूं। तब शशिवृता ने कहा कि हे त्रिकालज्ञ गंधर्व आप मुझे यह बतलाइए कि मैं पूर्व्वजन्म की कौन हूं और मेरा विवाह किसके साथ होगा। इस पर हंस वेषधारी गंधर्व ने उत्तर दिया कि तुम पूर्व्वजन्म की चित्ररेखा नाम की अप्सरा हो, कोई विशेष अपराध हो जाने से इन्द्र के शाप वश तुम्हें मानव शरीर धारण करना पड़ा। तुम्हारे पिता ने तुम्हारा ब्याह कन्नौज के राजा के भतीजे वीरचन्द से करना विचारा है परन्तु वह वर तुम्हारे योग्य नहीं है क्यों कि वह एक ही बर्ष बाद युद्ध में मारा जायगा। ऐसा विचार कर इन्द्र ने दयापूर्व्वक मुझे तुम्हारी सहायता करने के लिये भेजा है। हंस की ऐसी विचित्र बाणी सुन कर शशिवृता ने उससे कहा कि आपने मेरे ऊपर माता पिता के संमान वात्सल्य प्रगट

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किया है अतएव अब आप जिसे बतलावेंगे मैं अपना व्याह उसीके साथ करूंगी। तब हंस ने कहा कि दिल्लीपति चहुआन ही तुम्हारे योग्य बर है, इस समय वह एक अद्वितीय वीर पुरुष है, उस ने गुजरात के राजा महाबली भीमदेव को परास्त किया और गज़नी के बादशाह सुलतान शहाबुद्दीन को कई बार बांध बांध कर छोड़ा दिया है। इस पर शशिवृता ने उत्तर दिया कि तो आपही वहां जाकर पृथ्वीराज के हृदय में मेरे प्रति अनुराग उत्पन्न कराइए और यदि उन्होंने मुझे न स्वीकार किया तो मैं शरीर त्याग दूंगी।

इस प्रकार शशिवृता के हृदय में पृथ्वीराज के अतुल अनुराग का अंकुर अंकुरित करके वही हंस वेशधारी गन्धर्व पृथ्वीराज के पास चला। सुन्दर स्वच्छ चन्द की कला के समान स्वेत एवं हिमवत धवल देहधारी हंस गहन बन में विहार करता हुआ पृथ्वीराज के समीप आकर फिरने लगा, पृथ्वीराज ने ज्यों ही उसे हाथ बढ़ा कर पकड़ना चाहा कि वह उसी समय ब्राह्मण के स्वरूप में हो गया, उसने सायंकाल के समय राजा को एकान्त में पत्र देकर कहा कि महाराज यादव कुमारी शशिवृता ऐसी सुन्दर है कि मैं ही क्या कोई भी उसके अनुपम लावण्य और प्राकृतिक सौन्दर्य्य का यथावत वर्णन नहीं कर सकता। बयःसन्धि अवस्था में होने से उसकी अंग शोभा इस समय ऐसी जगमगा रही है जैसे पूर्णिमा को सूर्य्य के अस्त और चन्द्रमा के प्रकाश होने के समय प्रकृति की शोभा होती है। एवं राजन उस सुकुमार कुमारी की बाल्यावस्था शिशिर ऋतु के अवसान के समान ह्रास और बसंत ऋतु के आरंभ के समान उसके यौवन का प्रकाश होता आता है। उसके बाल्यावस्था सम्बन्धी साधारण अवयवों का प्राचीन पत्रों के समान काट छांट होता हुआ उसके सुकोमल अंग नवीन कोंपों की भांति कुसुमित हो रहे हैं। अधिक क्या कहूं वह सुकुमारी स्वयं बसंत ऋतु की फुलवारी की क्यारी के समान मुनि मनहारी, संसार सुखमा की मूर्ति बन रही है। एक तो पृथ्वीराज का मन पहिले ही से शशिवृता की याद में व्यग्र था तिस पर हंस के मुख से ऐसी उपमाएं सुन कर पृथ्वीराज की कामाग्नि एवं उसका भविष्य प्रिया प्रति अनुराग ऐसा बढ़ा कि उसे सब रात्रि शशिवृता की ही मूर्ति स्वप्न में दिखाई दी। प्रातःकाल होते ही राजा ने पुनः उससे मिल कर शशिवृता के विषय में वार्तालाप छेड़ा और इस समय उसने शशिवृता के पिता के कन्नौज दूत भेजने, शशिवृता की उस सम्बन्ध प्रति विरक्तता होने और उसको पृथ्वीराज प्रति प्रीति होने की कथा कह सुनाई। उसने कहा कि हे राजन् वह चित्ररेखा अप्सरा का अवतार शशिवृता आपको बर पाने के लिये व्रत धारण करके सदा शिव का पूजन करती है, अतएव मैं उन्हीं शिव की प्रेरणानुसार आपके पास आया हूं। अब जहां तक आपसे हो सके जल्दी कीजिए और शशिवृता से मिलिए।

हंस के मुख से ऐसे अलौकिक युक्तिमय वचन सुन कर पृथ्वीराज ने पूछा कि हे सर्व विद्याओं में विज्ञ, सब रसों में सरस शृंगार रस के शिरोमणि हंसराज, मैं आपसे यह जानना चाहता हूं कि जो कवियों ने स्त्री जाति के चार भेद कहे हैं उन का सूक्ष्म विवरण क्या है और शशिवृता उनमें से किससे सम्बन्ध रखती है। इस पर हंस ने उत्तर दिया की महाराज जिस स्त्री की जिह्वा लाल हो, सिंह के समान जिसके अंग हों, वाणी मधुर हो, रति सम हो, प्रभावाती हो, शील हो, कुलीन हो जिसके स्तन साधारण और उदर सम हों वही स्त्री सर्वोत्तम कही गई है। आगे जो कवियों ने स्त्रियों के चार लक्षण कहे हैं वे ये हैं—पद्मनी उस स्त्री को कहते हैं जिसके केश कुटिल हों, स्तन गोल हों, दंत पंक्ति स्निग्ध हो, जिसके शरीर से कमल की सी गंध आती हो, वीणा स्वर समान जिसकी बाणी हो, निद्रा काम क्रीड़ा और प्रवाद में कम प्रीति करने वाली हो, धैर्य्य, क्षमा, शीलादि सद्गुण जिसके स्वाभाविक हों, सब भांति के बस्त्रों पर जिसकी रुचि रहती हो। हंसिनी उसे कहते है जिसके केश ऊर्द्ध हो,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तन वक्र, दांत चमकीले, गंध मधुर, जो कामक्रीड़ा में अधिक प्रीति करने वाली हो, नेत्र जिसके खंजन की भांति चित्रित, विशाल और चंचल हों और हृदय जिसका सदैव अनिस्थिर हो, किन्तु पति की प्रेम मूर्ति का चित्र सदैव चित्त से चिंतन करती हुई, जो उस से मान की अभिलाषिनी हो। चित्रनी उसे कहते हैं जिसके केश बड़े और चन्द्रमा के समान मनहरण मुख हो, जिसके शरीर से मृगमद की गंध आती हो, कोकिला के समान जिसका उच्चारण हो, रति में प्रीतियुक्त हो, जिसके नेत्र शील, लज्जा और आलस्य से भरे हुए हों और वह छवि की खानि सहज क्षमावान, मोहनी मंत्र के समान कटाक्षमय दृष्टिपात से ही हृदय पर आघात करती हो। और संखिनी उसे कहते हैं जिसके केश छोटे और सूक्ष्म हों, स्तनतल क्षीण हो, दांत मोटे हों, उच्चारण मधुर हो, उदर और कटि मोटी हो, जिसके शरीर से दुर्गन्ध आती हो, कम बोले और अधिक सोवे, शील और गम्भीरता हीन सदैव कलहकारिणी हो, आचार विचार में स्वच्छन्द हो स्त्रियोचित सद्गुणों से रहित, व्यभिचार में दत्तचित्त ऐसी असंख अवगुण की मूर्ति शंखिनी स्त्री का स्वामी सदैव सांसारिक सुखों से वंचित रहता है। हे राजन वह यादव कुमारी सुकुमारी शशिवृता इनमें से उपरोक्त प्रथम श्रेणी की स्त्री है। उसके उठते हुए यौवन ऐसे सुशोभित होते हैं मानो उसके हृदय कमल पर आसीन मनोज महाराज ने अपनी रक्षा के लिये दो दृढ़ दुर्ग निर्माण किए हों। इस अवस्था में उसके सुरंग नख और एड़ी माणिक और कमोदिनी की रक्त प्रभा का उपहास करते हैं, हंसशिशु की चाल को नीचा दिखाने वाले, उस गजगामिनी कामिनी के जंघा और पिंडुरी काम की खराद एवं अनंग के रंग से रँगे हुए स्वर्ण के खम्भे से सुशोभित होते हैं। उसके बड़े बड़े कोमल और सुडौल नितम्ब मनसिज की शय्या के गुलगुले गेंडुए से ज्ञात होते हैं। उसकी क्षीण हीन लङ्क पर आरोपित उतंग अग्रभाग तुला का सा कांटा तुल रहा है, सुन्दर सुकोमल उदर पर विराजमान रोमराजि ऐसी प्रतीत होती है मानो मुख चंद का अमृतपान करने की लालसा से सुमेर शिखर पर चींटियां चढ़ रही हों, उसकी ग्रीवा शंख एवं कपोत की ग्रीवा के समान है, उसकी सुढार चारू सुन्दर चिबुक पर रक्खा हुआ नील विन्दु इकट्ठा हुआ चन्द का कलङ्क सा मालूम होता है। उसके सुढार दुतिमय दांतों की दमक दामिनी की दीप्ति सी प्रदीप्त होती है, उसकी नासिका कीर की नासिका का लाज्जित करती है, उसके स्वाभाविक कटाक्षमय नेत्र देखने वाले के कलेजे को काढ़े लेते हैं, उसका प्रशस्त ललाट साक्षात् अनंग भवन के सुचित्रित आंगन के समान शोभित है, उसके सुकोमल काले सटकोर घुंघरारे सिवार सम सूक्ष्म केश रेशम को मात करते हैं और उनसे गुही हुई अलकें साक्षात सर्पिणी सी विराजती हैं, हे राजन् उस आनन्द मूर्त्ति रसिक मन हारिणी राजकुमारी की सुन्दरता को मैं क्या कहूं उसे देख कर बड़े काव्यविशारद चतुर कविजनों का चित्त चकित होना सम्भव है।

पृथ्वीराज ने पुनः पूछा कि हे हंसराज अप्सरी का अवतार क्यों कर हुआ सो कहो? यह सुनकर हंस बोला कि एक समय महादेव जी स्वर्ग में इन्द्र के स्थान पर पधारे तब इन्द्र ने आशुतोष शिव को सादर सुभग आसन दे अर्घपादादि पूजा से प्रसन्न किया और उनकी रुचि जानकर इन्द्र ने अप्सराओं को नाना प्रकार के नृत्य गान से उन्हें संतुष्ट करने की आज्ञा दी, तदनुसार रंभा, घृताची, मेनिका मंजुघोषा, उर्वसी, केशी इत्यादि देवाङ्गनाएँ नाना प्रकार के वस्त्र और आभूषणों से सुसज्जित हो उच्च स्वर से उत्तमोत्तम राग रागनियों का अलाप और ताण्डवादि नृत्य कर कर शिव के सम्मुख कामोद्दीपक कटाक्षों सहित हाव भाव बताने में प्रवृत्त हुईं। संयोग वश चित्रेरखा के स्वरूप पर मोहित हो महादेवजी क्षणमात्र के लिये काम के वशीभूत से हो गए। इस लिये उन्होंने कुपित हो कर उक्त अप्सरा को शाप दिया कि वह स्वर्ग से पतित होकर मृत्युलोक में मानवी शरीर धारण करे। शिव जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के शाप से भयभीत हुई उस अप्सरा ने विनीत भाव से स्तुति कर के शिव जी को किसी प्रकार प्रसन्न किया तब उन्होंने कहा अच्छा तू मृत्युलोक में देवता के समान बलवान और प्रतापी पति पावेगी। यह कह कर महादेवजी तो कैलाश को चले गए और अप्सरा स्वर्ग से पतित हो उसी क्षण शशिवृता के नाम से देवगिरि के राजा भान के घर जन्मी, हे महाराज सो उसका यह अवतार आप ही के लिये हुआ है। यद्यपि शशिवृता के माता पिता उसे कान्यकुब्जेश्वर के भतीजे को व्याहना चाहते हैं परंतु वह अपना तन मन आप पर न्योछावर कर चुकी है; अतएव अब आपको भी उचित है कि यथासम्भव शीघ्रही उसकी प्रेमपिपासा को पूरा कीजिए। हंस की ऐसी बातें सुन कर पृथ्वीराज ने पूछा कि शशिवृता को मेरे प्रति अनुराग क्यों कर हुआ, हे हंसराज, इसका भी कारण बतलाइए। तब हंस ने उत्तर दिया कि देवगिरि के या-वराजा भान के मंत्री आनन्द चन्द की बहिन का नाम चान्द्रिका था। उसका विवाह हिसार प्रान्तान्तर्गत नगर कोट में एक बड़े धनाढय और गुणवान पुरुष से हुआ, दैव योग से चन्द्रिका के पति का सहसा परलोक वास होगया, तब वह पतिविहाना दुःखित चित चन्द्रिका स्वसुराल से आकर देवगिरि में ही रहने लगी, वह मंत्रिपुत्री पठन पाठन, गान, वाद्य इत्यादि स्त्रियोचित गुणों में अत्यन्त दक्ष और चतुर थी इस लिये राजा भानु ने उसे शशिवृता को शिक्षा देने के लिये नियत कर दिया। चन्द्रिका शशिवृता को पढ़ाते समय बहुधा आप के अतुल बल पौरुष और प्रताप का बार्तालाप किया करती थी जिसे शशिवृता बडे चाव से चित्त लगाकर सुना करती थी। इस प्रकार दो वर्ष व्यतीत होने पर जब शशिवृता का यौवन काल आया तो उसका मन मकरन्द आपही के यश कमल पर मोहित हो गया और वह आपकी प्राप्ति के लिये शिवजी का पूजन करने लगी अतएव आशुतोष शिवजी ने प्रसन्न हो कर आपके साथ बिवाहे जाने का वर उसे दिया और मुझे आपके पास प्रेषित किया। पृथ्वीराज ने कहा कि उसके पिता ने जयचन्द के ही घर क्यों व्याह ठहराया! तब हंस ने कहा कि आप इसको क्या पूछते हैं उसे वही घर ऊँचा तो क्या? परन्तु यह अवश्य है कि यादव के प्रोहित ने कनवज्ज जाकर कुम्भा को टीका चढ़ा दिया और वह कमधुज्ज पचास हज़ार सेना के साथ सज धज से व्याहने आ रहा है। पृथ्वीराज ने कहा कि तब मैं भी दस हज़ार रणकुशल सेना लेकर चलने को तय्यार हूं किन्तु आप कृपा कर विवाह की नियत तिथि और शशिवृता से मिलने के संकेत स्थल की सूचना मुझे दीजिए, तब हंस ने कहा कि विवाह की तिथि माघसुदी १३ है। आपको वहां पहुंच कर शशिवृता से शिवजी के ही शिवालय पर मिलना चाहिए; यह कह कर हंस तो उड़ कर आकाश मार्ग में लोप होगया और यहां पृथ्वीराज शशिवृता से मिलने के लिये जाने की तैयारियां करने लगे।

हसं के चले जाने पर पृथ्वीराज ने दस हज़ार अश्वारोही सेना सजी जाने की आज्ञा दी। राजाज्ञानुसार माघबदी ५ शुक्रवार को प्रातःकाल से ही कन्ह, कैमास, जैतराव प्रमार, पज्जूनराव कछवाहा, चावण्डराव, जैतराव, गोइन्दराव, रामराय रघुवंसी, प्रसंगराय खीची, निढ्ढुरराय रट्ठौर, लंगरीराय, सलष प्रमार, देवराज बग्गरी, हाहुलीराय, हम्मीर, लोहाना आजानबाहु, नरसिंह, बीरसिंह और लष्षराज बघेला समस्त सूर सामन्त स्वयं सिंधी, कच्छी, पहाडी, अरबी, ताजी, आदि उत्तमोतम खेत के कुलीन और लक्खी कुल्ला कुम्मैत, सिरगा, सुरंग, गुलाबी, हरिया, समद स्याह, हंसी आदि अनेकानेक रंग के घोड़ों पर, भांति भांति के अस्त्रों शस्त्रों से सुसज्जित होकर, अपनी अपनी रणकुशल अस्वारोही अनी कनी सेना सहित राजद्वार पर आ उपस्थित हुए। वे वीर वानैत सिपाही सामंतोंके घोड़े अपनी जातीय तेजस्विता के कारण तनिक भी स्थिर न रह कर जहां तहां नट की सी कलाबाजियां कर रहे थे। तब तक स्वयं पृथ्वीराज भी अपने शक्ति नामक घोड़ेपर सवारहोकर उनके बीच मेंआकर डटगया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिस समय पृथ्वीराज घोड़े की पीठ पर सवार हो कर चलने को था कि साम्हने ही छिद्रमय काले कलश, मुक्त केश कामिनी के दर्शन हुए, इन अशकुनों को देख कर राजा ने चन्द से इसका फल कहने को कहा तब। चन्द ने उत्तर दिया कि इसके पहिले जो शुभ सूचक शकुन हो चुके हैं उससे कार्य्यसिद्धि की सूचना तो अवश्य ही प्रतीत होती है; परन्तु ये अपशकुन केवल इतनाही बतलाते हैं कि यातो यात्रास्थान पर ही या घर पर लौट कर कुछ विग्रह और रक्तपात होना आवश्यक है। उसने पुनः कहा कि इसमें सन्देह ही क्या है, क्योंकि आपसे और जयचन्द से एक तो पूर्व्व से ही विरोध भाव चला आरहा है अब इस अवसर पर तो मानों आहुति में घी डालना है। इधर जब कि पृथ्वीराज रास्ते ही में थे जयचन्द के भतीजे ने भी एक लाख दस हज़ार सुसज्जित सेना सहित माघबदी ९ को देवगिरि की तरफ़ कूच किया, और अपनी अवाई का समाचार दूत द्वारा देवगिरि के राजा भान के पास भेजा।

ज्योंही शशिवृता ने यह समाचार सुना कि जयचन्द का भतीजा बड़ी भारी बरात सजकर उसे व्याहने के लिये शीघ्रही देवगिरि को आरहा है और पृथ्वीराज का अब तक पता भी नहीं है वह पृथ्वीराज के विरह वियोग से और भी व्याकुल हो कर और अपने को उपेक्षित बर के साथ व्याहे जाने से बचाने के लिये आत्महत्या करने पर उद्यत हुई। उसकी यह दशा देख कर उसकी सखी सहेली और सहचरी आदि उसके विरह विदग्ध व्याकुल मन को शांत्वना देने के लिये उससे बोलीं कि हे सखी शशिवृता तूं क्यों वृथा रोरो कर प्राण देती है। यदि तेरी सच्ची भावना पृथ्वीराज में है तो तुझे वही बर मिलेगा, रोने और वृथा विलाप करके अपने सुकुमार शरीर को कष्ट देने से क्या लाभ। इस व्यर्थ अलाप विलाप से होनहार नहीं मिटता। बलि ने इन्द्र का वैभव लेने को यज्ञ किया था परन्तु उसे बंधनयुक्त होकर पातालही में बास करना पड़ा। कहां तो रामचन्द्रजी को राजतिलक होने वाला था और कहां उन्हें भावी के वश होकर बन बास भोग करना पड़ा, सीता जी को रावण हर ले गया, और वे रामचन्द्र स्त्री वियोग के संताप से तप्त हृदय होकर बन में भटकते फिरे; हे सखी इतिहास में इस प्रकार के सहस्त्रों प्रमाण विद्यमान हैं कि होनहार की गति अमिट है, मनुष्य सब कुछ करना चाहता है परन्तु होता वही है जो होनहार होती है, इसलिये हे सखी तूं शोक को छोड़ कर शान्ति भाव धारण कर। सब ने सब कुछ समझाया बुझाया परन्तु शशिवृता कब किसी की सुनती थी, उसे तो एक मात्र पृथ्वीराज के बिना सब संसार सूना सूझता था। अतएव किसी प्रकार यह समाचार राजा भान के कान तक भी जा पहुंचा।

जब राजा भान ने भी देखा कि शशिवृता किसी प्रकार से नहीं मानती और वह सचमुच प्राण देने को तय्यार है, तब उसने अपने मंत्री हम्मीर सम्मीर को बुला कर सब हाल कह सुनाया और उनका भी मत पूछा। तब हम्मीर सम्मीर ने सलाह दी कि एक तो प्रथमही आपको सब सोच विचार कर काम करना था और जो आपने जयचन्द के घर टीका भेजही दिया, वहां से बारातही आरही है तब अब क्या है। आपको निज धर्म्मानुसार उचित तो यही है कि आप शशिवृता का व्याह कमधुज्ज से ही करें। यद्यपि मंत्रियों की यह सलाह राजा भान को अनुकरणीय थी परन्तु संतान का स्नेह भी तो ऐसी वस्तु है कि जिससे मनुष्य क्षणमात्र के लिये बावरा सा होजाता है। अस्तु जब राजा भान ने देखा कि मंत्रियों का मत मानने से बेटी के प्राणों पर आ बनेगी तब उसने एक गुप्त दूत पृथ्वीराज के पास प्रेरित किया और लिख भेजा कि आप शिवालय पर आइए वहीं पर शशिवृता आपको मिलेगी।

इधर पृथ्वीराज ने सेना का भार तो नरनाह कन्ह के सिर सौंप दिया और आप निड्डुर राय और जद्दवराय बग्गरी इन दोनों सामंतो सहित देवगिरि के पास जा पहुंचा। रात्रि भर तो उसने नगर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहरी प्रान्त में एक उपवन में विश्राम किया। दूसरेही दिन वह सज बज कर विवाहोत्सव में सुसज्जित देवगिरि नगर की शोभा देखने को निकल पड़ा। उस ने देखा कि समस्त नगर के हाट बाट चौहटे बड़ेही साफ़ और सुथरे बने हुए हैं और स्वच्छ सुगंधित जल से सींचे गए हैं, जहां तहां ऊँचे ऊँचे मकानों के गोख और झरोखे फूल माला और बन्दनवार से सजे हुए हैं। उनमें बैठ कर झांकती हुई सुन्दर कोमलाङ्गी स्त्रियां साक्षात् देवाङ्गनाएँ सी सुशोभित हो रही हैं।

हंस द्वारा तो इस बात की खबर पहिले ही शशिवृता को लग चुकी थी कि पृथ्वीराज शीघ्रही आन पहुंचता है। इस लिये वह सदैव अपने महल की गोख में बैठी पृथ्वीराज के दर्शन की बाट जोहा करती थी। जिस समय पृथ्वीराज शशिवृता के महल के सम्मुख पहुंचा और उसने आँख उठाकर ऊपर को देखा तो उसकी और शशिवृता की आँखें चार हो गईं। उस निमेष काल में दोनों के आंखों में ऐसी बातें होगईं मानो वे सनातन के परिचित हों। पृथ्वीराज को देखते ही शशिवृता के मृग शिशु के से बड़े, मीन एवं खंजन से चंचल और शूल की हूल से भी अनियारे नेत्र निमेष मात्र में एक ऐसा विलक्षण कटाक्ष कर गए कि जिसका भाव रसिक शिरोमणि मनोन्मत्त मनुष्यों के सिवाय अन्य कोई भी नहीं जान सकता। वे कानों से लग कर फिर लज्जा से पलाच्छादित हो गए। मानो पृथ्वीराज की यशकथा सुनने वाले कानों से उन्होंने पूछा कि क्या यही पृथ्वीराज हैं और उनसे संतोष जनक उत्तर पाकर उन्हों ने पृथ्वीराज को प्रेम मूर्ति को हृदयस्थ कर लिया।

उपयुक्त समय को उपस्थित हुआ जान कर शशिवृता ने पिता से कहला भेजा कि मैंने बाल्यावस्था से शिव जी का पूजन किया है। अब मैं शान्ति के लिये आशुतोष सदाशिव को अन्तिम अर्घ्य देना चाहती हूं यदि आज्ञा हो तो शिव जी का पूजन कर आऊं। यह सुन उसके माता पिता ने प्रसन्नता पूर्वक आज्ञा दी और उसकी सखी सहेलियां उसका उबटन आदि करने लगीं, जिस समय सखियों ने शशिवृता को वस्त्र विहीन कर के उसके गुहे हुए केश पास और वेणी को छोड़ दिया उस समय वह ऐसी शोभित होती थी मानों स्वर्ण स्थम्भ पर से सार्पिणी अवतीर्ण हो रही हों।

उबटन लगाने बाद स्वच्छ जल से नहला धुला कर सुगंध संयुत लेप शशिवृता के शरीर में लेपण किए गए तदन्तर सोलहों शृंगार और बारहों आभूषणों से सुसज्जित करके जब उसे सखियों ने संवार कर तैय्यार किया तब उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग से अनुपम लावण्य रस टपक रहा था; उसकी पुष्प गुंथित वेणी ऐसी मालूम होती थी मानों सर्प राज स्वयं पुष्प माला के बीच में विराज रहे हों और मांग पर सुहाग सूचक सिन्दूर ऐसा मालूम होता था मानों अरुणोदय के अंशुमाली भगवान अंधकार को फाड़ कर निकल रहे हों, उसके कानों के रत्न जटित कर्ण फूल ऐसे भासित होते थे मानों उसके मुख चन्द की प्रभा की सहायता के लिये दोनों तरफ़ दो सूर्य्य प्रकाशमान हों। उसके स्वच्छ अच्छे ललाट पर बारीक बिंदा ऐसा सोहता था मानों चन्द्रमा की गोद में बुध विराज मान हो। उसकी सुरंग कंचुकी के बीच में चंपक वर्ण युगल कुचकलश ऐसे भासित होते थे मानों वे उसके हृदयस्थ कामराज के किले के दो बुर्ज हों।

इस प्रकार सुसज्जित हो कर शशिवृता शिव पार्वती का पूजन करने के हेतु प्रस्थान करने के लिये रत्नजटित चौडोल * में सवार हुई। शशिवृता की चौडोल के आस पास १२ चौडोलें और थीं जिनमें उसकी सखी सहेलियां थी। वे सब चौडोलें पांच सौ दासियों से घिरी हुई थीं। उनके आस पास चारों ओर राजा भान की सेना के पांच पांच सौ सवारों का घेरा था और तब कमधुज्ज के पचास हजार पैदलों की भीड़ थी। इस तरह से

* चौडोल--लकड़ी के ढांचे की एक पालकी सी बनाई जाती है और उसके ऊपर कपड़ा मढ़ा जाता है। किसी २ राजपूतों में अब भी यह चाल है कि जिस दिन वहां से बारात चलती है उसी दिन लड़की चौडोल में बैठकर नगर के देवी देवताओं का पूजन करने जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शशिवृता घर से निकल कर पूजने चली। पूजा करके जिस समय वह शिवालय की तरफ़ बढ़ी और उसने शिवालय के शिखर पर स्थित त्रिसूल को देखा तो एक तो शिव प्रति भक्ति और दूसरे पृथ्वीराज के प्रति प्रेम इन दोनों भावों का आविर्भाव शशिवृता के हृदय में इस प्रकार से हुआ कि उसकी विचित्र ही गति होगई। वह शिव जी का नाम स्मरण करती हुई और पृथ्वीराज का कुशल मनाती हुई आगे बढ़ने लगी। जिस समय वह शिवालय पर पहुंच कर चौडोल से उतरी तो मनही मन चौकन्नी होती हुई शिवजी की प्रदक्षिणा करने लगी कि इधर सेना में बड़े उत्कर्ष से मधुर मधुर वाद्य ध्वनि होने लगी, सखी सहचरीं भी मंगल गीत गाने लगीं तब तक कमधुज्ज का भतीजा भी शिवार्चन की इच्छा से कुछ थोड़े से सखाओं सहित उसी तरफ़ आता देख पड़ा जिसे देख कर किसी किसी मुँहलगी सखी ने कहा कि "वही शशिवृता का पति आरहा है" यह बात शशिवृता को बहुत ही खटकी परन्तु वह कुछ कह न सकी, और अवसर पर पृथ्वीराज को पति पाने की फिर शिवजी से प्रार्थना करने लगी। तब तक पृथ्वीराज भी सात हजार शस्त्रधारी सूर सामंतो के साथ वहां पर आ पहुंचा, पृथ्वीराज के सब सिपाही शरीर में विभूत रमाए नंगे सिर कांवरी टांगे, हाथों में त्रिशूल लिए, शिव शिव उच्चारण करते हुए, ठीक कंथाधारी योगियों का सा वेष बनाए थे, परन्तु उनकी गुदड़ी के भीतर छूरी, चक्र, कटार, बिछुआ, बाँक आदि सब मुठमार हथियार थे; वे सब कपटवेषधारी योगी शृंगी नाद करते हुए कमधुज्ज की फौज में निधड़क पैठ पड़े जिन्हें देखतेही शशिवृता ताड़ गई कि ये योगी पृथ्वीराज के ही सामन्त हैं और अपनी इच्छित अभिलाषा की पूर्ति का सुअवसर जान कर वह शिव जी का धन्यवाद सूचक अभिवादन करने लगी।

तब तक पृथ्वीराज भी अपने बानैत घोड़े पर सवार हुआ आ पहुंचा। पृथ्वीराज को देखतेही शशिवृत्ता के लज्जा से नेत्र नीचे होगए, उसके हृदय में अब तक जो सम्मिलन की उत्कंठा थी वह तो शान्त हुई परन्तु अब उसे आन्तरिक कामाग्नि व्याकुल करने लगी। जिस समय पृथ्वीराज ने अपने शत्रुशूलक बलवान भुजदण्ड को बढ़ा कर सुकोमल शशिवृता के कर कंज को पकड़ा उस समय ऐसा मालूम होता था मानो लहलहाती हुई नवीन बल्लरी को मदोन्मत्त मतवाले हाथी ने पकड़ लिया हो। पृथ्वीराज के हाथ पकड़ते ही शशिवृता को अपने जन्मदाता माता पिता एवं जीवनाधार जननी जन्मभूमि और सखी सहेली तथा सहचरियों के विछोह की याद आगई। यद्यपि एक समय वह था कि वह पृथ्वीराज के नामही पर प्राण न्यौछावर करती थी, किन्तु इस समय जन्मभूमि के अकृतृम प्रेम ने उसको भी क्षणमात्र के लिये भुला कर कुमारी शशिवृता के हृदय को विह्वल कर दिया जिससे उसके अनियारे नेत्रों से आँसुओं की धारा बह कर निकलने को थी परन्तु ऐसे मंगलमय समय पर अमंगल सूचक चिन्ह को निवारण करना ही उचित जान कर शशिवृता ने अपने कोमल कलेजे को पाहन सा कठिन बना लिया। उसके अधिकतर रोकने पर भी जो दो एक कज्जलमय अश्रुबिन्दु उसके कोमल कपोलों को स्पर्श करते हुए उन्नत उरोजों पर आकर ठहर गए वे ऐसे सुशोभित होते थे मानो सोने की कसौटी पर कस्तूरी कसी गई हो। जिस समय पृथ्वीराज ने देवालय की सीढ़ियों पर से बढ़ कर कामरूपी करि एवं पवन के वेग से झकझोरी हुई ललित ललाम बल्लरी वत् शशिवृता का कर कमल पकड़ कर हृदय से लगाते हुए अपने साथ घोड़े पर उसे बिठा लिया उस समय पृथ्वीराज स्वयं रौद्ररस की मूर्ति बनगया और शशिवृता उक्त कारण वश करुणा रस का अवतार स्वरूप थी, सामन्त एवं सैनिक गण स्वामी सेवा के लिये वीर रस में रंगे हुए थे, और कमधुज्ज के पक्षपाती भयानक रस में पगे थे।

जिस समय पृथ्वीराज शशिवृता को अपने साथ घोड़े पर बिठा कर चलने लगे उस समय चारों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरफ धरो पकड़ो शब्द का कोलाहल होने लगा। मूर्तिमान नवरस के मूर्ति स्वरूप महादेव जी के शिवालय के चारों तरफ एक क्षण पहिले शृंगार रस का श्रोत बह रहा था, शशिवृता की सखियां विवाह समय के मंगल गीत गा रही थीं, जहां तहां बंदीजन विरदावली पढ़ रहे थे, कमधुज्ज की फौज के सैनिकों में परस्पर हास्यमय वार्तालाप के फुहारे उड़ रह थे। वे सब इस समय बीररस में परिवर्तन होने लगे। बीरोत्तेजक उच्चस्वर कड़खों ने सुन्दर स्त्रियों के सुकोमल स्वर को परास्त कर दिया, मेघ की गर्जन के समान रणवाद्यों के भीषण और कठोर रव ने अन्यान्य मंगल वाद्यों को रद्द कर दिया। जयचन्द का भतीजा कमधुज्ज बीरचन्द जो केशरिया बाना पाहिने सिर पर पुष्पों का मौर बांधे विवाह की आनन्द बधाई में मस्त मन शिव जी का दर्शन करने आ रहा था वह भी यह अपूर्व्व दृश्य देख कर चौकन्ना हो गया और तलवार निकाल कर पृथ्वीराज की तरफ झपटा। उसके अन्यान्य सूर सामन्तों ने झपट कर पृथ्वीराज से शशिवृता को छीनना चाहा परन्तु यह क्यों कर हो सकता था। पृथ्वीराज के साथी योद्धा गण भी अपनी अपनी कपट गूदड़ी फटक कर उसके अन्दर छिपे हुए अपने राजपूती बाने खड़ खड़ाते हुए मार मार करने लगे। इधर स्वामिधर्मधारी कमधुज्ज के योद्धा भी उन पर शस्त्र बरसाने लगे। उन दोनों दलों के अटपटे वीरों की झपट झपट कर विकट मारा मार से लोहे के हथियार परस्पर खटपट होते थे। उनसे इस प्रकार का शब्द प्रगट होता था, मानो जंगल में आग लगने से बांस की गोठें चटक रही हों। किसी किसी वीर की खोपड़ी फट जाने से जो कुछ कुछ भेजी देख पड़ती थी वह ऐसी मालूम होती थी मानो काला कौवा खीर खा रहा हो। सब सैनिकों एवं स्वयं कमधुज्ज के विवाह समय के रंग विरंगे नाना रंग के वस्त्रों पर ताजे ताजे रक्त के छीटे पड़े हुए विचित्र ही छटा दिखाते थे। पहर दिन चढ़ने से पहर दिन रहते तक बराबर इसी प्रकार की खचाखच मार होती रही। तब तक पृथ्वीराज शशिवृता को लिये मार काट करता हुआ अपनी सेना के पड़ाव में आगया।

तदनन्तर क्रमबद्ध युद्ध होने लगा। कमधुज्ज ने राजा भान की सेना सहित अपनी सेना को सर्प व्यूहाकार बनाया, मनबंध नामक सोलंषी पुच्छ स्थान पर, गुज्जर राय पग स्थान पर, स्वयं कमधुज्ज धड़ स्थान पर, कमधुज्ज का भाई फन स्थान पर और कूरंभ जिह्वा स्थान पर नियत हुए। इधर पृथ्वीराज की आज्ञानुसार चहुआन सेना मयूर व्यूहाकार रची गई, इधर चुंच स्थान पर कन्ह, पायँ पिंड और पच्छ स्थान पर गहलोत, पुच्छ स्थान पर रामराय रघुबंशी, चरण स्थान पर पुण्डीर आदि योद्धा रहे। इस प्रकार क्रमबद्ध होकर जिस समय दोनों सेनाएं परस्पर निर्द्वन्द युद्ध करने पर उद्यत हुईं उस समय कायरों के कलेजे काँपते थे और सूर बीर योद्धाओं का हृदय उमंग से फूला नहीं समाता था, वीर लोगों का प्रशस्त प्रदीप्त ललाट चन्द्रमा सा चमक रहा था, टेढ़ी मूछें कानों से टकरा रहीं थी और वे अपने अपने चंचल चपल घोड़ों को कुदाते हुए शत्रुओं के सम्मुख होकर अपने अपने पराक्रम दिखाने के लिये उत्सुक थे। तब तक पृथ्वीराज की आज्ञा से नरनाह काका कन्ह की आंखो पर से पट्टी हटाई गई। वह व्यूह मुख पराक्रमी काका कन्ह शत्रु सेना पर इस प्रकार से टूटा जैसे मतवाला हाथी हथनी पर, क्षुधित मृगराज मृग पर, सिंह गजराज पर, और बाज तीतर पर टूटता है। कन्ह चहुआन बड़े बड़े मतवाले हाथियों के दांत पकड़ पकड़ कर उखाड़ने और सवारों सहित घोड़ों को पटक पटक कर मारने लगा। कमधुज्ज के सैनिक लोग भी खूब मार करने लगे। इसी प्रकार झनाझन लोहा झरते झरते सांझ का समय हो गया और राजा भान का पुत्र मारा गया। इसलिये राजा भान ने तो लोहा मान लिया और वह अपनी ढाल गिरा कर गढ़ को चला गया, परन्तु कमधुज्ज ने हार न मानी। उसने अपनी सेना को और उत्साहित करके युद्ध को बराबर जारी रक्खा, यहां तक कि तीन घड़ी रात्रि चली गई दसों दिशाओं में अधिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्धेरा छा गया परस्पर की जान पहिचान में फ़र्क पड़ने लगा और तब उस दिन के युद्ध का अंत हुआ।

युद्ध समाप्त होने पर रात्रि के समय शिविर में सब सामंतो के बीच में बैठे हुए राम रघुवंश ने कहा कि स्वामिधर्म्म सम्बन्धी जो यह रणक्षेत्र है सो सूरवीर पुरुषों के लिये साक्षात् काशी के समान है तलवार की धार वरना और पीठ असी है, इस रीति से तलवार के बीच का जो लोहा है सूर वीरों के लिये वही काशी के समान उस मुक्ति का दाता है जो कि योगी लोग सहस्रों वर्ष तप करके भी नहीं पा सकते। उसी समय गुरुराम ने पृथ्वीराज को विष्णु पंजर कवच दिया।

दूसरे दिन पौ फटते ही जिस समय शीतल मंद सुगंध त्रिविध बयार वह रही थी तारागण मंददुति हो रहे थे कुमोदिनी लज्जा से संकुचित सी हो रही थी, अरुणोदय की लालिमा से दसों दिशाओं में लाली छा रही थी, मधुर मधुर कलरव कर कर मानों सूर्य्य को आशीर्वाद देते हुए चक्रवाकों के जोड़े परस्पर मिल रहे थे उसी समय सामंत लोग शैय्या को त्याग कर स्नान ध्यान बंदनादि नित्त क्रिया से निश्चिन्त हो कर स्वामिसेवा में शीश देने के लिये अपने अपने अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होने लगे। पृथ्वीराज भी अपने बीरबर सामंतों के बीच में इस प्रकार सुशोभित होने लगा जैसे नक्षत्रों के बीच चन्द्रमा और समस्त ग्रहों में सूर्य्य सुशोभित होता है। गुरु राम ने राजा को विष्णु पंजर कवच पहनाया और आशीर्वाद देकर शत्रु के सम्मुख युद्ध करने की आज्ञा दी।

उधर यादव राजा भानु और कमधुज्ज की सेनाएं भी परस्पर मिल कर व्यूहबद्ध हुई पृथ्वीराज की तरफ़ चली आरही थीं। कमधुज्ज की सेना का व्यूह इस प्रकार का था। सब से आगे हरावल में देवगिरि की सेना तिस के पीछे मुसलमान सेना तिस के पीछे हाथियों की पंक्ति तिस पीछे हथनार और कुहुक बान आदि और सब के पीछे अपनी निज अश्वारोही सेना लगाई गई थी। कमधुज्ज के अश्वारोही सैनिक वीरों के घोड़े ऐसे चंचल और चपल थे कि वे अपनी चपल चाल से चंचला को भी मात करते थे। उनकी द्रुत चाल से अकाश में आच्छादित धूलि से चक्रवाक सूर्य्यस्त का समय जानकर अपने दंपति के बिछोह की आशंका से व्यस्त हो रहे थे। सवारों के नेजों की अनी इस प्रकार घनी थी कि जिनके बीच से पक्षी भी पर न हिला सकता था और चढ़ते हुए सूर्य्य की किरणों में उनकी चमक से ऐसा मालूम होता था मानों आज दामिनी ने मेघों को त्याग कर भूमि पर ही अपना निवास स्थान स्थिर कर लिया हो। कमधुज्ज की सेना के हाथियों की जंजीरों की झनकार अगनित झिंगुरों के रव को मात करती थी और उन मतवाले हाथियों के कपोल से बहता हुआ मद पावस ऋतु के पहाड़ी झरने की भांति झर रहा था। जिस समय सेनापतियों की आज्ञानुसार दोनों दलों ने रणवाद्यों का भीषण रव करते हुए एक ने दूसरे पर चढ़ाई की उस समय वह रणभूमि साक्षात् पावस ऋतु का क्रीड़ास्थल स्वरुप बन रही थी।

वीर रस के आवेश में आकर जिस समय सूर बीर योधाओं ने क्रोधित हो परस्पर एक दूसरे पर खड्ग और खाड़ों के वार किए उस समय सहज भीरु हृदय कायरों के कलेजे कँपे जाते थे। वे मोहवश अपने नश्वर जीवन को नित्त मान कर रण भूमि से भाग जाने की इच्छा करते थे, परन्तु बीर लोग कलेजे के छिन्न भिन्न होजाने पर खिन्न मन न होते थे। वे बराबर सीना साम्हने किए हुए निज स्वामी के जय की अभिलाषा किए हुए मार करते जाते थे। उनके बज्रवत शरीर में जितने अधिक क्षत होते वे उतने ही अधिक क्रोधित और भयानक होते जाते थे। शूर बीर लोग शरीर का रक्त निकल जाने पर भी अपने स्थान पर अचल रूप से डटे हुए मार मार करते थे। उन शूरवीर पुरुषों के अवयव कट कट कर गिरे हुए बिना पानी के मछली के समान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तड़फड़ाते थे। कटार बिछुआ छूरी आदि के घाव लगने से किसी किसी के आंत कलेजे और फेफड़े निकल पड़ते थे, किसी का सिर कट जाने पर धड़ तो बराबर खेत में खड़ा खड्ग से खेलता था और मुंड पृथ्वीपर पड़ा हुआ मार मार शब्द उच्चार करता था। इसी विकट मारामार के समय में वीरचन्द के हाथी पर खवास खाने में बैठा हुआ पूज नामक खवास अपने स्थान पर से कूद कर समरभूमि में सम्मुख युद्ध करने लगा, वह वीर रस में मतवाला मदमत्त गयन्द की भांति झपट झपट कर किसी किसी पर वार करता और उसे तुरन्त काट कर दो कर देता था। पूज खवास जिस समय हाथी के मस्तक पर कुम्भस्थल के बीचों बीच तलवार का वार करता था उस समय उसकी उज्वल एवं चमकदार तलवार काले काले दँतारे हाथी के मस्तक पर इस प्रकार से शोभित होती थी मानो पावस के मेघों को फाड़ कर चन्द्रमा निकलता आता हो। इसी वीरता से युद्ध करते करते पूज खवास मारा गया। उसके मरतेही वीरचन्द के चित्त में ऐसा कुछ भय और अनित्यता का संचार हुआ कि वह उसी समय मंत्रिमंडली को एकत्र कर के वर्त्तमान अवस्था पर विचार करने बैठ गया। अतएव उसके मंत्रियों ने कहा कि एक मात्र स्त्री के लिये सहस्रों मनुष्यों का रक्तपात होना ही हमारे विचार से ठीक नहीं है। यद्यपि रामचन्द्र सुग्रीव और पांचो पांडव अपने अपने समय में अद्वितीय वीर, बलवान, प्रतापी और पराक्रमी पुरुष होगए हैं परन्तु समय विशेष पर वे भी अपनी अपनी विवाहिता स्त्रियों की रक्षा यावत् एवं यथार्थ रूप से न कर सके। अर्जुन गोपिकाओं की रक्षा करने में असमर्थ हो गए। हे राजकुमार अच्छे अच्छे उस्ताद अपने काम में चूक जाते हैं, इससे क्या। अतएव हमारा विचार तो यही है कि जिस प्रकार से बने इस उपद्रव की इति ही कर देना उत्तम है। मंत्रियों का यह विचार वीरचन्द कमधुज्ज के मन में बैठ गया और उसने उसी समय अपनी सेना को फिरने की आज्ञा दी।

वीरचन्द की आज्ञानुसार कमधुज्ज सेना का रुख कुछ ढीला पड़ने से चहुआन सेना का वेग और भी बढ़ उठा। उसने समझा कि कमधुज्ज सेना लोहा मान कर ही मनहार हो रही है परन्तु वास्तव में कमधुज्ज सेना का बल नहीं घटा था इसलिये वे भी सामन्तों के मुकाबिले पर डट गए और कमधुज्ज वीरचन्द ने देख लिया कि इस समय रणोन्मत्त योद्धाओं को युद्धविमुख करना उसके वश का नहीं है तब वह भी अन्तिम वारा न्यारा होने तक के लिये आंखें मीच कर युद्ध करने लगा। यह सब लौट फेर दुपहर के समय हुआ था दो पहर से सायंकाल तक दोनों ओर से खूब लोहा झड़ता रहा। दोनों सेनाओं में से कोई भी न मुरी, न मनहार हुई। सायंकाल में सूर्य्यास्त के समय मृत पूज खवास के भाई ने कमधुज्ज की तरफ से और राम राय बड़गुज्जर ने पृथ्वीराज की तरफ से धावा किया। इस बाजी में निड्डुर राय ने बड़ा पराक्रम दिखाया। वीरचन्द यद्यपि निड्डुर राय का भतीजा था परन्तु उसका उसने कुछ भी विचार न कर के केवल चहुआन पृथ्वीराज के नमक का ही विचार किया और कमधुज्ज के सहस्रों सिपाही मारे गए। पूज खवास का भाई भी निड्डुर राय के हाथों मारा गया उसके सिवाय कमधुज्ज सेना के नौ मुखिया सेनापति और भी काम आए। कमधुज्ज की सेना के पूज खवास, देव सिंह मोरी, किल्ह काम जादव भाटिया पंगराय मोरी, और पांचो भाइयों सहित बालिभद्रराय ये योद्धा मारे गए। इधर पृथ्वीराज की ओर से चन्द पुंडीर, सारंगदेव, बलिभद्र, जैत पँवार सलख, लष्षन आदि वीरों ने अद्वितीय पराक्रम दिखाया। वीरचन्द के पिता के सिर पर जो चांदी का श्वेतछत्र चमचमा रहा था उसे तोड़ कर चन्द पुंडीर ने एक ऐसा वाण मारा कि जिससे वह छत्र कट कर दूर जा गिरा। छत्र के कटतेही तमाम सेना में कोलाहल मच गया और कमधुज्ज स्वयं भयभीत हो उठा। आकाश में चन्द्रमा का थोड़ा थोड़ा उजेला था। जब वह भी अस्त होगया और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमि पर पड़े हुए मृत एवं घायलों के कारण योद्धाओं को निपट अंधेरे में युद्ध करने में असुविधा होने लगी तब दोनों ओर से फरहरा फिर गया युद्ध बन्द होगया और दोनों ओर के योद्धा गण सूर्य्योदय पर्यन्त किंचित विश्राम लेने के लिये अपने अपने शिविर शैली की तरफ चल दिए।

सूर्य्यास्त होने पर अंधकारमय रात्रि के राज्य काल में जिस समय समस्त संसार के प्राणी मात्र दिन भर के व्यवसाय और परिश्रम से निश्चित हो कर निद्रा देवी की गोद में निस्तब्ध रूप से पांव पसार कर सोते हैं उसी समय प्रीतिपास में बँधा हुआ मधुप, दंपति बिछोह से दुखी चक्रवाक और युद्धस्थल में शत्रु, दुःख से विहित शूर बीर निमेष मात्र के लिये सुखी नहीं होते। वे सदैव सूर्य्योदय का ही चितवन किया करते हैं एवं रात्रि के समय जब की श्रमित सेना सोती है संयोगिनी स्त्रियां अपने अपने स्वामियों के गले का हार होती हैं उस समय भी कुमोदिनी और बियोगिनी को कल नहीं पड़ती। यह तो पाहिलेही कहा जा चुका है कि पृथ्वीराज सदा से अपने सामन्तों के साथ ऐसा व्यवहार रखता था कि वे उसका अपने प्राण से भी अधिक सम्मान करते थे, इधर पृथ्वीराज भी कभी कोई काम उनकी इच्छा के विरुद्ध न करता था। उपरोक्त युद्ध का अवसान होते ही सामन्त लोगों ने एक सभा रची और उसमें उन्होंने परस्पर गुप्त गोष्ठी द्वारा निश्चय करके पृथ्वीराज से कहा कि "आप तो शशिवृता को ले कर दिल्ली को चले जाइए इधर हम लोग शत्रु का साहम्ना करेंगे।" इस पर पृथ्वीराज ने उत्तर दिया कि वीर योद्धाओ मुझे तुम्हारे बल का पूरा भरोसा है परन्तु क्या चन्द्रमा के बिना सम्पूर्ण तारागण ही चन्द्रमा का कार्य्य संपादन कर सकते हैं, क्या बिना सूर्य्य के दिवस हो सकता है, यद्यपि हनुमान जी बड़ेही पराक्रमी और रामचन्द्र जी के सच्चे भक्त थे परन्तु क्या वे लङ्का को अकेले विजय कर सके? हे बीर सखाओ, मैं नहीं चाहता कि मैं तो दिल्ली में जा कर सुख सहवास करूं और तुम लोग विदेश में वृथा प्राण दो, मेरे भाइयो यहां तुम्हारे हृदय बाण से बेधे जांय, तुम्हारे कण्ठ पर शत्रु की तलवार कहर करे और मैं अपने हृदय से प्रियतमा को लगाऊं। हा! ऐसा नीच व्यवसाय मुझसे न हो सकेगा, जो कुछ तुम लोगों के लिये होगा वह मुझे भी होगा। यद्यपि राजा का ऐसा रुक्ष उत्तर किसी को अच्छा न लगा परन्तु किसी ने इसका प्रत्युत्तर भी न दिया और यही विचार और वादाविवाद होते होते दिशाओं में हलकी हलकी सफेदी की झलक देख पड़ने लगी। इसे सूर्य्योदय के समय की सूचन जान कर सामन्तों ने जहां तहां अपने अपने हरवे कमर से लगाए, तब तक और सब सेना भी सजकर दुरुस्त हो गई। इस दिन निड्डुर राय सेनापति नियत किए गऐ। वह कमधुज्ज बीर निड्डुरराय सूर्य्योदय के पहिले ही सेना सहित रणक्षेत्र पर जा पहुंचा। उधर से बीरचन्द कमधुज्ज की सेना भी रणभूमि में आ डटी और दोनों दलों में फिर से अस्त्र शत्र चल उठे, बाण बर्ष उठे, लोह झड़ उठे खड खेल उठे, लोहू बह उठा और रुंड हांक उठे। दोनों सेनाओं के बीर सैनिक लोग यद्यपि दो दिन से बराबर युद्ध के व्यवसाय से श्रमित थे परन्तु उनका दिल दूना होरहा था। डंके पर चोट पड़ते ही उनके दिल फिर से हरे भरे हो गए और वे परस्पर एक दुसरे को ललकार ललकार कर वार करने लगे। इस प्रकार स्वामिसेवा में दत्तचित्त, वीररस मदमाते बीर जो रणभूमि में मारे जाते हैं वे वास्तव में स्वर्ग को ही जाते हैं क्योंकि वे उस समय माया मोह आदिक नीच भावों से विरक्त हो कर उच्च भावों को धारण किए हुए केवल मरना मारना ही देखते हैं। इन दोनों दलों के शूर बीरों ने दिल खोल कर ऐसा युद्ध किया कि आशुतोष शिव की रुंडमाला पूर्ण हुई, योगिनियों का खप्पर भरपूर हुआ, शशिवृता और पृथ्वीराज की विरहाग्नि शान्त होकर उनकी हार्दिक अभिलाषा भी पूर्ण हुई।

जिस समय पृथ्वीराज से उत्तर पाकर सामन्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग इधर लड़ने की तय्यारियां कर रहे थे उसी समय पृथ्वीराज शशिवृता के पास गया। उसने शशिवृता से प्रेममय वार्तालाप करते हुए उसे सब भांति से संतुष्ट किया। तब शशिवृता बोली कि हे स्वामी यद्यपि आपके योद्धा लोग सब भांति बलवान और पराक्रमी हैं परन्तु लज्जावश मैं और तो कुछ नहीं कह सकती केवल मेरी इतनी प्रार्थना है कि यह जीवन सादर आपको समर्पण है और इसकी बनी बिगरी सब आपही के हाथ है। हे नाथ अधिक क्या कहूं? यह सुन कर पृथ्वीराज बोले कि "हे प्रिये मैं तुझे सदैव कुसम्ब के रंग की भांति हृदय में धारण किए रहूंगा। मेरे रहते तुझे किसी प्रकार की चिन्ता को चित्त में स्थान न देना चाहिए। मैं शपथ करके कहता हूं कि मैं तेरी तीनों अवस्थाओं में इसी प्रकार एक सी प्रीति रक्खूंगा जैसी कि तुझसे अभी इस युवा अवस्था में है। पृथ्वीराज के ऐसे संतोषप्रद बचन सुन कर शशिवृता उसके पैरों से लिपट गई और उससे दिल्ली चलने की प्रार्थना करने लगी। इस समय पृथ्वीराज बड़े अड़चन में पड़ गया। जब तक पृथ्वीराज शशिवृता से निश्चित होकर शिविर के बाहर हुआ तब तक उसे समाचार मिला कि शत्रु सेना बिचल उठी और खेत निड्डुर के हाथ रहा।

इधर वीर निड्डुर ने बिकट पराक्रम कर के कमधुज्ज की सेना को भगा दिया और वीरचन्द को घेर लिया। सब सामन्तों ने तो चाहा कि उसे पकड़ कर बंदी बना लें परन्तु पृथ्वीराज ने कहा उसे पकड़ने से क्या मतलब, अपना काम हो चुका अब उसे जाने दो। पृथ्वीराज की ऐसी आज्ञा पाकर निड्डुर ने वीरचन्द को छोड़ दिया और रण भूमि में चहुआन पृथ्वीराज की विजय का डंका बज उठा

जब भानराय यादव ने देखा कि कमधुज्ज सेना तीन तेरह हो कर जिधर तिधर भाग गई और वीर पृथ्वीराज ने विजय पा ली तब उसने शेष १२ डोलियां भी पृथ्वीराज के साथ बिदा कर दीं। इस प्रकार शशिवृता सहित तेरह डोलियों को लिए हुए वीरचन्द कमधुज्ज को युद्ध में परास्त कर के विजय के बाजे बजाता हुआ पृथ्वीराज दिल्ली को लौट आया। पृथ्वीराज दिल्ली नगर में सुन्दरी शशिवृता के साथ विहार करते हुए इन्द्र की भांति स्वच्छदता और स्वतन्त्रता से राज्य करने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवगिरि समय।

[छब्बीसवां प्रस्ताव।]

पृथ्वीराज तो शशिवृता को लेकर दिल्ली को चला गया; परन्तु चन्द के भाई ने लज्जाग्रस्त हो कर पृथ्वीराज से हार खाने की कसर राजा भान पर निकालनी चाही; इस लिये उसने देवगिरि के किले के चारों ओर अपनी फौज का घेरा डाल दिया और एक दूत द्वारा सम्पूर्ण समाचार जयचन्द के पास लिख भेजा। इधर राजा भान ने भी अपने को असीम आपत्तिग्रस्त जान कर पृथ्वीराज को लिखा कि आपके ही कारण आज मेरा किला धिरा हुआ है और उसने कन्नौज से कुमक भी माँगी है न जाने भविष्य में क्या हो मैं आपको लिख चुका आगे जो आप जानें सो करें।

वीर चन्द के भेजे हुए दूत ने कन्नौज पहुंच कर उक्त पत्र जयचन्द को दिया और नीची गरदन करके खड़ा हो रहा। दूत को इस प्रकार तन क्षीण मन मलीन देख कर जयचन्द ताड़ गाय कि समाचार के लक्षण शुभ नहीं देख पड़ते परन्तु तब भी उसने अपने अनुमान को निश्चय करने की इच्छा से दूत से पूछा कि कुशल तो है? चुप क्यों हो, जो कुछ कहना हो सो कहो। तब दूत ने उत्तर दिया कि पत्र से तो आपको सब हाल मालूम हो ही जाय गा; आगे हाल यह है कि देवगिरि नगर में अपनी बारात पहुंचने के पहिले ही से पृथ्वीराज पड़ा हुआ था; उसका पड़ाव देवगिरि से आधे कोस की दूरी पर थी। निड्डुर राय उस सेना का सेनापति था; बस उसी ने नव दुलहिन को हरण कर लिया और निड्डुरराय ने लड़ाई ठान कर अपनी सेना को नीचा दिखलाया, इस कर्तव्य में राजा भान का भी कुछ मेल मालूम होता है; इस लिये श्रीमान ने देवगिर के दुर्ग पर डेरा डाल कर मुझे आपके चरणों में भेजा है। दूत के ऐसे बचन सुनते ही क्रोध से जयचन्द का मुख लाल हो गया। उसने आवेश में आकर कहा कि पृथ्वीराज को इतना गर्व है कि उसने जान कर भी मेरे कार्य्य में बाधा दी। मैं नहीं चाहता था कि परस्पर व्यर्थ विरोध बढ़े परन्तु कोई क्या करे, होनहार रोकने से नहीं रुकती। अच्छा यदि उसने ऐसी धृष्टता की तो मैं उसे उसका फल भी चखाऊंगा। पृथ्वीराज अपनी जिस सेना के भरोसे इतना घमण्डी बना है, उस सब को मेरा एक मीर वदां नेश्तनाबूद और बरबाद कर सकता है। जयचन्द ने उसी समय अपने राज्य मंत्रियों को बुला कर समस्त समाचार कह सुनाया और आज्ञा दी कि मेरे सब सम्बन्धी और मित्र राजाओं के पास उक्त समाचार की सूचना देते हुए पत्र भेजे जावें कि वे यथा सम्भव शीघ्रही समय पर एकत्रित हो सकें और यहां अपनी राजधानी में सब सेना अपने युद्ध सम्बन्धी सब सामान से सुसजित हो रहे मैं आज इस समय पण करके कहता हूं कि पृथ्वीराज चौहान और देवगिरि के राजा को मार करके तब राजसूय यज्ञ करूंगा।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही कन्नौज राज की चतुरंगिणी सेना भांति भांति के अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर राजद्वार पर जुटने लगी। जयचन्द की सवारी का घोड़ा भी सज कर द्वार पर लाया गया। वह लाल रंग का कुलीन, तेजस्वी तुरंग अपनी अधिक चपलता के कारण इधर उधर चटकता हुआ ऐसा भला मालूम देता था मानो कुकर्मी मकरकेतु को भस्म करने के समय शिव जी के तीसरे नेत्र से निकला हुआ अग्नि का तिनका अश्व के स्वरूप में परिणत हो गया हो। जयचन्द के घोड़े की पीठ पर सवार होते ही जिस समय वह घोड़ा थिर रूप से डट कर खड़ा हो गया उस समय ऐसा भान होता था मानो भूमि ने अश्व का रूप धारण कर के सपक्ष होकर आकाश में जाने की इच्छा की हो और उस पर कुपित हो कर इन्द्र ने बज्राघात करके उसके चापल्य को दमन कर दिया हो। जयचन्द के सवार होने पर अचल स्वरूप से वह घोड़ा खड़ा रहा परन्तु खुरी करता हुआ ऐसा सुशोभित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता था मानो चतुर वेश्या नृत्य करने के लिये उद्यत हो रही हो। उसकी पूँछ चौरसी डोल रही थी, अयाल खुले और खड़े हुए कान ऐसे मालूम होते थे जैसे वायु से हिलती हुई दीपक की जोति हो उसके बड़े बड़े नेत्र शालिग्राम की सी शिलाएं से शोभित होते थे एवं ऐसे भले लगते थे जैसे शान्त और श्रमित पथिक अंजुली भर भर कर जमुना जल पान कर रहे हों। जयचन्द के घोड़े पर सवार होते ही तीस लाख अन्य पैदल सेना और दस लाख (मुसलमान) मीर बन्दे तितर बितर अवस्था से एकत्र जुट कर तुरन्त ही इस प्रकार से श्रेणी बद्ध और व्यूहवद्ध हो गए जैसे देवेच्छा से पूर्वकृत कर्म्मों का फल एकत्रित हो जाता है।

जिस समय जयचन्द चलने लगा उसकी सुकुमार स्त्री विरह वेदना से व्याकुल हो गई। जयचन्द की इस नवोढ़ा प्रियतमा का ऐसा सहज सुन्दर सुकोमल स्वभाव था कि रात्रि में पति से पृथक होकर चन्द्रमा के उजियारे में काले काले भ्रमर को देख कर वह भयभीत होती थी। ज्यों ही उसने सुना कि उसके कमल कलेजे का मकरन्द जयचन्द उसे त्याग कर प्रातःकाल ही परदेश को पयान करने के लिये प्रस्तुत है त्योंही उसकी सुखमामय मनहरण मुखकान्ति मन्द सी पड़ गई। केसर कपूरादि मिश्रित घनसार उसके शरीर में घाव से करने लगा; उसे संपूर्ण सुख की सामिग्री शत्रु सी सूझने लगी एवं वह सब आमोद मय व्यवसायों से विरक्त हो कर चित्र लिखी पूतरी सी रह गई। विरह ज्वाला के जोर से प्रज्वलित हो उठते ही जो कभी दो एक बूंद आंसू निकल कर आंख के कोने पर स्थिर रह जाते थे वे ऐसे प्रतीत होते थे मानो चित्रकार ने चातक का चित्र रच कर उसे मोती चुँगाया हो; यदि वह अश्रु बूंद किसी प्रकार वहां से मुक्त हो कर कोमल कपोल को स्पर्श करता हुआ उसके वक्षस्थल पर आकर विलीन हो जाता तो ऐसा ज्ञात होता था मानो उसके नेत्र रूपी कमंडल से पतित गंगाजल को कुच रूपी सदा शिव जी ने सादर शीश पर धारण कर लिया हो। यदि कोई सखी सहेली उसको इस अवस्था में देख कर उसे सचेत करने की चेष्टा करती तो वह लज्जा शील सुन्दरी स्वास विच्छेद कर मृतप्राय की भांति निश्चेष्ठ हो कर रह जाती थी। उस रात्रि का एक एक निमेष उसे काल रात्रि के कल्प सम व्यतीत होता था। उस की सखी सहचरी जो उसे आंचल से पवन करके सचेत किया चाहतीं उसे वह मंद मंद पवन लू की भांति लगती थी, उस सुकुमार सुन्दरी की असीम विरह वेदना का सविस्तर वर्णन कहां तक करें उसकी उस समय ऐसी दशा हो रही थी जैसे चन्द्रमा के ग्रास होने के समय उसकी प्रियतमा कमोदिनी की हो जाती है। यह सब कुछ था परन्तु राजा जयचन्द ने उसकी ओर कुछ भी ध्यान न दिया और प्रातःकाल होते ही अपनी नौ योवना धर्म्मपत्नी को उसी विकल अवस्था में छोड़ कर राजा पृथ्वीराज पर बदला चुकाने की इच्छा से देवगिरि पर आक्रमण करने के लिये सब भांति के सैनिक समान से सुसज्जित हो कर चल दिया।

राजा जयचन्द महलों से निकल कर घोड़े पर सवार हुआ, उसकी सैनिक ध्वजा बड़े भारी वृक्ष की भांति आगे आगे चलने लगी तिसके पीछे समस्त शूर वीर योद्धा लोग थे। उसी समय नरवर के राजा का छोटा भाई अमरसिंह गहलौत और पर्व्वत के समान दीर्घकाय पंगुरराय भी उसकी सेना में आ मिले। सब सेना के पीछे हाथियों की भीड़ थी, उन हाथियों पर जरकसी सिरी और भसुंड पर सिन्दूरी ऐसी भली मालूम होती थी मानो कज्जल गिरि पर्व्वत पर सूर्य्य और मंगल दोनों एकत्र यथास्थान विराज रहे हों, अथवा पृथ्वी पुत्र मंगल ने पृथ्वी से और सूर्य्य ने आकाश से अकार परस्पर भेंट भलाई की हो। जयचंद की तय्यारी होते समय यद्यपि नाना भांति के भयंकर अपशकुन हुए किन्तु उसने भले बुरे सबको विधिनिर्मित होनहार के सिर पर छोड़ कर कुछ भी किसी की परवाह न की।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर देवगिरि के राजा भानुराय यादव का भेजा हुआ दूत भी पृथ्वीराज के पास आ पंहुचा। राजा पृथ्वीराज जो चखोक पहिले नवयौवना प्रियतमा के साथ काम क्रीड़ा में रत साक्षात् काम का स्वरूप हो रहा था यादव राज का समाचार पत्र पढ़ते ही शंकर अर्थात् वीर स्वरूप बन गया। उसी समय उसे यह भी समाचार मिला कि मीर हुसैन के वैर का बदला लेने की लालसा में लिप्त शहाबुद्दीन अपने भाई पल्हन खान को बदरी बन में तपस्या करते हुए अनंगपाल के पास भेज कर उन्हें उभाड़ना चाहता है। यह सब सोच विचार कर पृथ्वीराज ने चित्तौराधिपति रावल समर सिंह जी को एक पत्र लिखा, जिसमें उनसे प्रार्थना की गई कि वे इस गाढ़े समय में अवश्य सहायता दें। जब यह पत्र रावल जी के पास पहुंचा तो उन्हों ने लिखा कि जब उधर शहाबुद्दीन भी प्रपंच रच रहा है तो ऐसे समय में आपको दिल्ली छोड़ना उचित नहीं है। आप कुछ सामन्त हमारे साथ कर दीजिए। हम इधर देवगिरि की तरफ़ का प्रबन्ध कर लेंगे। रावल समर सिंह जी की यह सलाह पृथ्वीराज ने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर ली और यहां से चामंडराय और जैतसी को उनकी मदद के लिये भेज दिया। निदान तब रावल समरसिंह जी ने अपने भाई अमरसिंह को कुछ सेना सहित उक्त दोनों सामन्तों के साथ देवगिरि की तरफ़ भेज दिया।

इधर जयचन्द का भतीजा वीरचन्द बराबर देवगिरि के किले को घेरे हुए अखमं रूप से डठा हुआ था; चामंडराय ने पहुंच कर दूर ही अपनी सेना का पड़ाव डाल कर किले में घेरे हुए राजा भान से सैनिक सैनों (इशारों) से वार्तालाप करके यह निश्चय किया कि वीरचन्द की फौज पर रात्रि को धावा किया जाय। अस्तु पावस की घनघोर अँधियारी रात्रि में जब कि अपना ही हाथ नहीं सूझता था झलाझल मेह बरस रहा था बिजली कोंद रही थी और तड़ातड़ तड़कता हुआ बादल मेदनी को कंपायमान कर रहा था, एक तरफ़ से चामंडराय ने और दूसरी तरफ़ से राजा भान ने वीरचन्द की सेना पर आक्रमण किया। एक तो वे लोग विचारे वर्षा के कारण स्वयं असुविधा में पड़े हुए थे परन्तु जब उनपर बाण वर्षा की बौछार भी पड़ने लगी तब वे लोग भी अताने बताने सज कर अपना बचाव करने लगे। लड़ाई होते होते जिस समय पहर रात्रि बाकी रह गई तब रावल जी के भाई अमर सिंह ने स्वयं चन्द के हाथी के सर में संपाफनी सेल का एक ऐसा वार किया कि जिससे वह विकल होकर लवालोट हो गया।

इधर से जयचन्द बराबर बढ़ता चला जाता था, दूतों द्वारा उसके पास पल पल के समाचार भी पहुंचा करते थे। ज्योंही उसने उपरोक्त भीषण दुर्घटना का समाचार सुना रातों रात चल कर सवेरा होते वह भी देवगिरि के सिवाने रणभूमि पर आ गया। उसने चढ़ी सवारी चलते युद्ध में हिस्सा जा लिया। परन्तु सूर्योदय होते होते किसी तरह युद्ध बन्द हो गया। इस युद्ध में गोयन्द राय का भाई हरचन्द, नरसिंह राय का छोटा भाई और कन्ह पुंडीर पृथ्वीराज की तरफ़ के और वीर बाघेल और जयचन्द का पुत्र आदि सामन्त खेत रहे।

यद्यपि जयचन्द की इच्छा थी कि देवगिरि को चढ़ी सवारी तोड़ लिया जाय, परन्तु जब उसने वहां जाकर देखा कि दस कोस के विस्तार में पक्के कोट और खांई से घिरा हुआ अभेद्य दुर्ग सहज ही हाथ नहीं आ सकता तब उसने भी अपने लश्कर का पड़ाव डाला और राजनैतिक चाल द्वारा वहां के भूमिया तथा द्वाररक्षक रावतों को उत्कोच देकर अपने वशीभूत कर के क़िला फ़तह करने का मत पक्का किया, तदनुसार यथासमय यथासाध्य चेष्टा भी की गई किन्तु वह सब निष्फल हुई। देवगिरि के स्वामि धर्म धारी सेवकों ने यही उत्तर दिया कि आपके दिए हुए किंचित धन के लोभ में आकर हम लोग अपने सनातन स्वामी को धोखा न देंगे, वरन इस तन पिंजर में प्राण पखेरू के रहते रहते स्वामिसेवा पर अटल स्वरूप से डटे रहेंगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयचन्द तो इन प्रपंचो में लगा था, रावल जी के भाई अमरसिंह और चामंडराय समय पा कर बराबर मार काट किया करते थे। इस आपत्ति से उकता कर जयचन्द ने किले पर सुरंग लगाने की आज्ञा दी; परन्तु किले की पहिली ही खाई अत्यन्त गहरी होने के कारण यह सब चेष्टा निष्फल हुई। जयचन्द के साम, दाम दंड ये तीनों राजनैतिक अस्त्र व्यर्थ गए तब उसने भेद नामक चौथे अस्त्र का प्रयोग करके शत्रु पर जय प्राप्त करने की इच्छा की। इस हेतु उसने चर-कार्य्य में चतुर कीर्तिपाल नामक भाट को राजा भान के पास भेजा; कीर्तिपाल ने राजाभान के पास जाकर कहा कि जयचन्द चाहता है कि आप मुझ से संधि करलेवें क्यों कि वास्तव में हमारा आपका कुछ विरोध नहीं है, और हम और आप दोनों मिल कर इस चहुआन सेना का नाश कर दें। राजा भान से कीर्तिपाल ने ये सब बातें एकान्त में कही थीं किन्तु कीर्तिपाल ने मंत्री को बुला कर सब हाल कह सुनाया। तब मंत्री ने उत्तर दिया कि हे राजन सर्प, सिंह, दुर्जन पुरुष, अग्नि और स्नेहहीन सम्बन्धी तथा शत्रु इनकी बातों का क्या विश्वास? जयचन्द की चालों में न आना ही उचित है। यह कह कर उसने कीर्तिपाल से कहा कि यदि हमसे सम्बन्ध रखना था और यदि वे हमारे हितेच्छु थे तो चढ़ कर ही क्यों आए, बस यदि हमसे मिलना चाहते हैं तो किले को भेद कर के ही मिलें। हे कीर्तिपाल! यही जाकर जयचन्द से कह देना। इस प्रकार रूखा उत्तर पाकर कीर्तिपाल वहां से उठ आया और जयचन्द को उसने सब समाचार कह सुनाया। यह सुनते ही जयचन्द क्रोध से लाल हो उठा, परन्तु करे तो क्या करे, किले पर तो कुछ चारा चलने का नहीं था। इसलिये उसने किले का घेरा छोड़ कर देवगिरि के राज्य में अपने थाने बैठा दिए और राज्य पर एक प्रकार से कच्चा दखल कर लिया, परन्तु राजा भान ने इस पर कुछ हाथ पैर न हिलाया। तब तो जयचन्द के मंत्रियों ने सलाह दी कि अपनी राजधानी से अधिक दूर होने के कारण इस राज्य का अपने शासनाधीन रहने पर भी उचित प्रबन्ध तो किया ही नहीं जा सकता और जो होनहार थी वह तो हो चुकी, दूसरे यह राज्य भी उस अमूल्य रत्न की तुलना योग्य नहीं है जो कि हाथ से जाता रहा, इसलिये इसे योंही छोड़ कर अब कन्नौज को चलिए। अतएव यह मत जयचन्द ने भी निर्विवाद स्वीकार कर लिया और उसने सब दल बल सहित आश्विन बदि ९ को देवगिरि से कन्नौज की तरफ कूच किया॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रेवा तट समय।

[सत्ताइसवां समय]

देवगिरि के युद्ध में विजय प्राप्त करके चामंड राय दिल्ली को आया। पृथ्वीराज भी बड़े आदर सम्मान के साथ उससे मिले। परस्पर के कुशल प्रश्न तथा आवश्यक वार्तालाप से निश्चिंत हो कर चामंड राय ने पृथ्वीराज से कहा कि हे राजन्! जिस हाथी के लिलाट पर शिव जी ने अपने हाथ से तिलक करके उसे इन्द्र की सवारी के लिए दिया था अथवा जो कि ऐरावत के नाम से प्रसिद्ध है उसीके जोड़े के लिये पार्वती जी ने स्वयं एक हथनी निर्माण करके उसके साथ कर दी। उसी उक्त दंपति से उत्पन्न हुए हाथियों के झुंड के झुंड रेवा (नर्मदा) के किनारे पर पाए जाते हैं। इसके सिवाय वह रमणीक स्थान नाना प्रकार के सिंह व्याघ्रादि पशुओं से पूरित है। यदि आप वहां पर चल कर शिकार करें तो आपका चित्त अत्यन्त प्रसन्न हो। उस गहन बन में भद्र मंद मृग और साधारण चारों जाति के हाथियों के झुंड के झुंड पाए जाते हैं। यह सुन कर राजा पृथ्वीराज ने कविचन्द से पूछा कि देवताओं का वाहन ऐरावत पृथ्वी पर किस कारण वश आया। तब कविचन्द ने उत्तर दिया कि प्राचीन समय में हिमाञ्चल पर्व्वत के उपकंठ में एक बड़ा भारी बर्गद का पेड़ था जिसकी अत्यन्त ऊंची ऊंची शाखाएं आकाश को स्पर्श करती थीं। उसके सन्निकट एक मुनि का आश्रम था। अवकाश के समय आकाश से आया, बन में विहार करता हुआ ऐरावत उक्त स्थान पर आ पहुंचा। उसने एक तो उस सुन्दर बड़ की शाखाएं तोड़ डालीं दूसरे मुनि का आश्रम भी नष्ट भ्रष्ट कर दिया। ऐरावत के इस अत्याचार से कुपित हुए ऋषि ने शाप दिया कि वह आकाशगामिनी गति से हीन हो जाय और उस पर मनुष्य सवार हों। अस्तु इस प्रकार ऋषि के शाप के कारण ऐरावत अपनी आकाशगामिनी शक्ति से वंचित होकर अंग देश के पूर्व्व प्रदेश में स्थित गहन बन में जहां कि नाना प्रकार के कमल और कुमोदिनी समूह से आच्छादित निर्मल जलमय अच्छे अच्छे सुवृहत् सरोवर शोभायमान है, आनन्द से केल क्रीड़ा करता हुए समय व्यतीत करने लगा। उसी बन में पालकाव्य नामक एक ऋषि रहते थे। पालकाव्य और ऐरावत में ऐसी घनी प्रीति हो गई कि वे एक दूसरे को देखे बिना पल भर भी न रहते थे दैव योग से चंपापुरी का राजा रोमपाद वहां पर शिकार करने आया और वह ऐरावत को पकड़ कर अपनी राजधानी को ले गया। इधर हाथी के विरह में पालकाव्य दिन दिन दुबला होने लगा। अन्त में वह उसी सोच में मर गया और हाथी की योनि में जन्मा।

ब्रह्मा ऋषी की तपस्या का प्रताप बढ़ता देख कर उसकी तपस्या भंग करने के लिये रंभा ने इन्द्र की आज्ञानुसार ऋषि का तप भ्रष्ट करने के लिये यथासाध्य उपाय और च्येष्टा की; उससे ऋषि का चित्त तो चंचल न हुआ वरन उसने कुपित होकर रंभा को शाप दिया कि वह हथिनी होजाय। निदान रंभा हथनी का रूप धारण कर बन में विहार करती हुई हाथीभेष धारी पालकाव्य के पास आ पहुंची। उन दोनों में अत्यन्त प्रीति और दाम्पत्य स्नेह बढ़ गया और वे दोनों साथ साथ रह कर रेवा के किनारे विचरने लगे, उन्हींसे उत्पन हुए हाथी रेवा के किनारे पाए जाते हैं

राजा पृथ्वीराज आजन्म से मृगया व्यसन लोलुप था ही, उपरोक्त आख्यान सम्बन्धी सुन्दर बन प्रान्त और उसमें स्वछन्दता से विहार करते हुए गज समूह मृग जूह और सिंहादि पशुओं का हाल सुनकर उसकी शिकार करने की इच्छा प्रबल हो उठी। पृथ्वीराज को अधिक उत्कंठा इस बात की थी कि उक्त स्थान जयचन्द की राजधानी में था। पृथ्वीराज ने उसी समय रेवातट की तरफ शिकार करने की तय्यारी की। जिस समय पृथ्वीराज अपने सब सामंत रावत सूर वीर सिपाही और अगनित शिकारी सामान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहित रेवातट को जा रहा था, उस समय भान विस्तरी खंडल गढ़ी का राजा, नंदीपुर का राजा और रेवानरिंद आदि भूमिपाल पृथ्वीराज की सेवा में आए।

गुप्त रीति से संतत लाहौर में रहने वाले शहाबुद्दीन के जासूस ने गज़नी को लिख भेजा कि पृथ्वीराज सेना सहित रेवातट पर शिकार खेलने गया है। यह सुनतेही शहाबुद्दीन ने दरबार में पान का बीड़ा रख कर कहा कि जो इस बीड़े को खा कर पृथ्वीराज को पकड़ कर मेरे पास लावे उसे मैं बहुत कुछ इनाम दूंगा। इतना सुनतेही तत्तार खां और मारूफ खां ने वह बीड़ा उठा कर शहाबुद्दीन को प्रणाम किया और कुरान को हाथ में लेकर कौल किया कि जो हम अब की बार पृथ्वीराज को पकड़ कर न लावें और दिल्ली पर अधिकार करके राजपूत सेना में प्रसिद्ध बलवान चामंडराय को मार न गिराएं तो हमारा नाम न हो तो नहीं!!।

इधर पृथ्वीराज ने उस समय लाहौर के प्रतिनिधि शासक चन्दपुंडीर को परवाना भेज कर अपने आने का समाचार जता दिया और आप कभी ६ और कभी ८ कोस का मुकाम करता हुआ पंजाब की सींध में चलने लगा। जिस घड़ी पृथ्वीराज ने पंजाब की भूमि पर पैर रक्खा उसी समय मुसल्मानी सेना ने भी वह सीमा पार की।

जब रेवा के किनारे शिकार करते हुए पृथ्वीराज को खबर लगी कि मुसल्मानी सेना बड़े भारी समारोह के साथ इस ओर आ रही है तब उसने सब सामंतों को एकत्र कर के पूछा कि अब क्या करना चाहिए? यह सुन कर पृथ्वीराज के राज्यनीति विशारद मंत्रियों ने उत्तर दिया कि वृथा अपनी तरफ से उपद्रव मोल लेना उचित नहीं, क्योंकि इस समय अपना बल पाहिले का सा नहीं है इससे उचित यही है कि इस प्रबल दल को किसी उपयुक्त नैतिक युक्ति द्वारा टाल दिया जाय। इस बात के सुनतेही पज्जून राय, प्रसंग राय खीची, देवराय बग्गरी आदि सामन्त बोले कि यह सब मंत्र तंत्र व्यर्थ है। "भरत" का वचन है कि यह जीवन अग्नि ज्वाला से झुर से वृक्ष में लगे हुए पत्र के समान है, न जाने कब वायुलगते ही इस का पतन हो जाय अतएव इस सुअवसर पर चूकना क्या? जब कि शत्रु साम्हने आ गया है तो उससे लोह लेना ही अच्छा है। जैत राव ने कहा कि मेरा विचार तो यों है कि लाहौर के पास ही शहाबुद्दीन से युद्ध छेड़ा जाय और तब तक इधर अपने इष्ट मित्र सगे सम्बन्धियों को परवाने लिख कर इस बात की सूचना दे दी जाय कि वे भी यथा अवसर सहायता के लिये आ जावें। मैं ने एक बार शाह को पकड़ा है अब फिर भी पकड़ ने की प्रतिज्ञा करता हूं। तब तक रघुवंश राम बड़गुज्जर बोला हे वीर सामन्त भाइयो, शाह आगया, अपना दिल छोटा न करो, गज, सिंह, सूरवीर पुरुष इनका यही नियम है कि जहां मिले वहां मार खांय। हम लोग वीर सामंतों का काम समय असमय गीला सूखा देखना नहीं है, हम लोग किसी की मंत्र सलाह क्या जानें; हम तो केवल मरना जानते हैं। शहाबुद्दीन को कई बार बाँध चुके हैं अबकी फिर से बाँधे तो अपने पिता करणसिंह के पुत्र नहीं तो नहीं। यह सुन कर कविचन्द ने उत्तर दिया कि रे गँवार गूजर, ऐसी बेसमझी बूझी बातों में ही राज्य सत्यानाश होते हैं।

परस्पर वादविवाद बढ़ता देख कर पृथ्वीराज ने कहा कि इन व्यर्थ बातों से क्या लाभ, जो बात आगे आई है उसका विचार करो। यह कह कर वह तो अपने सयनागार में चला गया, इधर सब सामन्त लोग भी अपने अपने डेरे को गए। अभी आधीरात का समय था कि लाहौर से एक दूत आया और वह पृथ्वीराज को सोते से जगा कर उसी वक्त उसके पास जाकर कहने लगा कि श्रीमान शहाबुद्दीन अट्ठारह हजार हाथी और अट्ठारह लाख और सब सेना के साथ इस तरफ बढ़ता आरहा है। उसने कहा कि इस प्रकार शाह की अवाई का समाचार सुन कर पचास हजार सेना के साथ चंद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुंडीर ने नदी का नाका जा बाँधा है और मुझे आपके पास भेजा है। चन्दपुंडीर को रास्ते में डटा हुआ देख कर शहाबुद्दीन ने मारुफ खां, तत्तार खां, खिलचीखां नूरी खां हुजाब खां महम्मद खां आदि सर्दारों से गोष्ठी करके उसने अपनी सेना को दो भागों में बाँटा। महमूद खां, मंगोल लल्लरी, सहबाज खां, जहांगीर खां आदि सेनानायकों और निज पुत्र सहित एक सेना को लेकर सुलतान ने तो चिनाब पार करने की तय्यारी की और आलम खां, मारूफ खां, उजबक खां आदि तीस यवन वीरों को कुछ सेना सहित उस पार अपनी सहायता के वास्ते रक्खा। जिस समय शहाबुद्दीन सेना सहित नदी में आया, इधर से वीर चन्दपुंडीर ने उसको जा रोका। दोनों दलों में बड़ी देर तक लोहा झड़ता रहा अन्त में चन्द-पुंडीर घायल हो गया और शाह सब सेना सहित चिनाब पार हो आयाहै उसने बराबर बढ़ते हुए लाहौर के पांच कोस उस तरफ़ अपना पड़ाव डाला है।

दूत के मुख से ऐसे बचन सुनते ही क्रोध से पृथ्वीराज का मुख लाल हो गया, दोनों भुजाएं फड़क उठीं, ओठ फड़ाफड़ा उठे। उसने उसी समय आज्ञा दी कि प्रातःकाल ही शहाबुद्दीन के ऊपर चढ़ाई की जाय। उसने कहा कि यदि अब भी फिर शहा-बुद्दीन को कैद करके न छोडूं तो मैं सोमेश्वर का पुत्र नहीं। यों कह कर पृथ्वीराज रात्रि के शेष दो प्रहर व्यतीत होकर सूर्य्योदय की इस प्रकार इच्छा करने लगा जैसे रात्रि में दंपती विछोह से दुखी चक्र-वाक, कठिन व्याधि पीड़ित रोगीजन वैद्य के द्वार पर जाने के लिये सूर्य्योदय की इच्छा करती हैं, एवं जिस प्रकार पतिविहीना स्त्री संसार को असार जान कर पति की मृत्यु के साथ अपने भस्मी भूत शरीर को भी भस्म कर देने की इच्छा करते है। नियमानुकूल सबेरा होते ही चन्द और तारा गणों का प्रकाश मंद हो गया, दीप शिखा भी द्युतिहीन हुई। इधर पृथ्वीराज और उसके सामन्त एवं अन्यान्य सैनिक सूर वीर सूर्य्योदय से कमल की भांति प्रफुल्ल चित्त हो उठे। उस दिन मंगल वार और तिथि पंचमी थी। पृथ्वीराज की आज्ञा पाते ही समस्त राजपूत सेना चन्द्रव्यूहाकार होगई वे सच्चे स्वामिसेवी एवं समरभूमि में शरीर त्याग कर स्वर्ग में अप्सराओं से मिलने की अभिलाषा से भरे हुए राजपूत बच्चे उत्साह ओज और आतंक सूचक ध्वनि करते हुए शत्रु सेना की तरफ इस तरह बढ़ते जाते थे जैसे मद से भींगे हुए गगडस्थल वाला मदोन्मत्त मातंग मेघस्पर्शी उत्तंग तरुवर की तरफ उसे तोड़ने के लिये बढ़ता जाता है। उधर यवन सेना में ऊंचे हाथियों पर बैठे हुए योद्धाओं के मणिमय वस्त्र एवं स्वच्छ चमकीले हथियार ऐसे सुशोभित होते थे मानों मंद ज्योति उड़गन समूह सूर्य्य के प्रखर ताप से उत्तापित हो कर पृथ्वी की ओर आ रहे हैं। राजपूत सेना जो चन्दव्यूहाकार रची गई थी उसमें रावल जी, राजा पृथ्वीराज एक सिरे पर, हुसैन खां और चन्दपुंडीर दूसरे सिरे, पर रामराय रघुवंशी और साखला सूर सारंग देव ऐसे स्थान पर थे जहां से ठीक शहाबुद्दीन का साम्हना पड़ता था। पावस के प्रबल दल बद्दल रूपी यवन सेना को देखते ही प्रचंड पवन रूपी मेवाड़पति रावल समर सिंह जी ने उस पर इस वेग से आक्रमण किया कि वे छिन्न भिन्न होने लगे। उनके पीछे जैतराव और तिस पीछे चामंडराय ने धावा किया। जिस समय युद्ध आरम्भ हुआ पूर्ण मध्यान्ह काल होने में आधी घड़ी शेष थी। चन्दपुंडीर ने छक पाकर यवन सेना पर तिरछे रुख से इस प्रकार धावा किया कि उनके पैर उखड़ पड़े। यह देख कर शहाबुद्दीन मनहार होकर घबराने लगा परन्तु तत्तार खां ने उसे धैर्य्य देकर समझाया कि मेरे रहते आप किसी बत की चिन्ता न करें। इस प्रकार शाह को संतोष देकर तत्तार खां अपनें सैनिकों को उत्तेजना जनक वाक्यों से सम्बोधन करता हुआ आगे बढ़ा। अपने सरदारों को झुकता हुआ देख कर यवन सेना भी अपने स्वामी की जय की अभिलाषा करती और धरो, पकड़ो, मारो इत्यादि नाना प्रकार के भयानक शब्द करती हुई हिन्दू सेना पर टूट पड़ी। उधर से खिचली अर्थात् खिलजी खां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अगुवा देख कर इधर से माधव राव सोलंकी हरावल में होकर उसके साम्हने हुआ। दोनों वीर पहिले तो तलवारों से युद्ध करते रहे परन्तु जब दोनों की तलवारें टूट गईं तब वे दोनों मल्ल युद्ध करते हुए परस्पर कटारों के वार करने लगे और यवन सेना के कई एक सिपाहियों ने मिल कर माधव राव को मार डाला। यह देखते ही गोइन्दराय का भाई यवन दल रूपी समुद्र को दीर्घकाय मगर की भांति मथता हुआ खिलजी खां के ऊपर टूटा परन्तु उसे भी कई एक मुसल्मान सिपाहियों ने काट कर टूक टूक कर दिया। गोइन्दराय के भाई का नाम जय सिंह था। इसने अपने शरीर के एक एक अवयव कटते कटते अद्वितीय पराक्रम किया, मरते मरते सहस्रों यवन योद्धाओं को पञ्चतत्व में लीन कर के आप स्वर्ग में अप्सराओं के साथ विहार करने लगा। चन्दपुंडीर के भाई वीर पाल्हन ने खुरासान खां का साम्हना पकड़ा, परन्तु जब तक यह खुरासान खां पर वार करे कि उसने एक ऐसा हाथ मारा कि पल्हन का सिर कट कर अलग जा खड़का और कमन्ध नाचने लगा। इधर जब खिलजी खां के मुकाबले में दो तीन अच्छे अच्छे वीर काम आए तब सारंग देव ने उस पर आक्रमण किया, सारंग देव ने अपने घोड़े को एड़ देकर खिलजी खां के हाथी के मस्तक पर जा टपकारा। इस अद्भुत कौशल से इधर तो हाथी चिक्कार उठा उधर सारंग देव ने खिजली खां को मार कर दो कर दिया। गोइन्दराय सिसोदिया वीर तत्तार खां के सम्मुख जा पहुंचा। उसने जिस समय तत्तार खां के हाथी का दाँत पकड़ कर दे पटका और तलवार से एकही वार में मय दतूसरों के भसुंड से सुंड उतार दिए उस समय ऐसा मालूम होता था मानों कंस की मखशाला में कृष्ण ने कुवलिया पील को पछाड़ा हो! कूरंभराय के पुत्र नरसिंह ने खांड़ा खींच कर ख्वाजा की खोपड़ी पर मार उसे एकही वार में खपाना चाहा परन्तु उसने गिरते गिरते नरसिंह के पेट में कटारी भोक दी जिससे उसके पेट की अंत मेदा मज्जा आदि बाहर निकल पड़ीं। वह वीर उसकी कुछ भी परवाह न कर के करारे वार करता ही रहा। इसी प्रकार युद्ध होते होते सायंकाल हो गया।

दूसरे दिन सूर्योदय होतेही पुनः युद्ध आरंभ हुआ। इस युद्ध में जैतराव का भाई लष्पन प्रमार हरावल का अनीपति था। उसने बड़ा पराक्रम और वीरता दिखाई। लष्पन के मारे जाने पर इन्द्र की अप्सारएं इस बात की आशा ही करती रह गईं कि वे उस नव युवक वीर को आलिङ्गन कर सकें और वह वीर न्द्र और चन्द्रमंडल दोनों को बेध कर सूर्य्य की प्रभा में लीन हो गया। इसने पहर दिन चढ़ते चढते तक युद्ध किया था। लष्पन कुमार के मारे जाने पर भीमदेव जंघारा हरावल पर झुका, जिस समय वीर रस मदमत्त मतंग की भांति सर्वाङ्ग शरीर में विभूति चढाए त्रिसूल खप्पर आदि कपालिकों की समस्त सामिग्री लिए शृंगी नाद करता एक मात्र कटार लिए हुए यवन सेना पर टूटा उस समय अच्छे अच्छे योद्धाओं के होश छूट गए। उसके पश्चात् सुन्दर केशर मय चन्दन की खौड़ दिए, हिए पर पुष्प माला धारण किए हुए वीरता के छत्तीसों वस्त्र लिए हुए लंगरी राय ने पसर की, जंघाराय भीम कटारे और लंगरी राय तेगे से मुसल्मानी सेना को इस प्रकार से उजाड़ करने लगे जैसे हनुमान जी के अग्नि लगाने पर लंका उजड़ रही थी। इस तरफ आजानबाहु लोहान अजब ही मजा कर रहा था। वह जिस लंबे चौड़े काबुली वीर के सीने में कटार मार करके वारा पार कर देता तो ऐसा मालूम होता था मानो किसी दृढ़ दुर्ग का द्वार खोला गया हो! इस दिन के युद्ध में तेरह हिन्दू सरदार और चौसठ मीर काम आए। दूसरे दिन मीर हुसैन के पुत्र हुसैन खां ने मारूफ खां का मुकाबला किया और उसे घायल करके गिरा दिया, यह देख कर उजबक खां उसके मुकाबले पर आया। दोनो में बड़ी देर तक बड़ी ताक झांक की मार होती रही अन्त में उजबक खां ने एक ऐसा हाथ मारा कि जिससे हुसैन खां

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क भी गहरी चोट लगी और उसका घोड़ा कट कर जमीन पर लोट गया। इस युद्ध में शहाबुद्दीन विकट व्यूह से रचित स्वयं तलवार लिए मरने मारने पर उद्यत था। शाह की बातों से तैश में आकर खुरसान खां ने बड़ा पराक्रम दिखाया परन्तु राम राय रघुवंसी ने उसे खूब ही छकाया, राजपूत वीरों की विकट मार के मारे जब यवन सेना पस्त हिम्मत हो उठी तो कुछ सामंतो ने मिल कर शहाबुद्दीन पर आक्रमण किया और उसे घेर कर पकड़ना चाहा। यह देख कर शाह ने एक बान से रघुबंस राम गुसाईं और दूसरे से भीम भट्टी को घायल किया तीसरा बाण जब तक चढ़ता था कि पृथ्वीराज ने आकर उसके गले में कमान डाल दी।

पृथ्वीराज इस प्रकार यवन सेना को जीत शहाबुद्दीन को पकड़ कर दिल्ली को चला। दिल्ली में आकर पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन को एक महीने तीन दिन तक कैद रक्खा, बाद इसके गजनी के अमीर उमराओं के अत्यंत विनीत भाव से विनती करने पर ९ हजार घोडे, सात हाथी और बहुत सा जवाहिरात आदि नजर लेकर शाह को सकुशल उसके घर गजनी भेज दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनंगपाल समय।

[अट्ठाइसवां समय]

राजा अनंगपाल तोमर दिल्ली का राज्य पृथ्वी-राज को सौंप कर आप बदरिकाश्रम में तप करने चला गया था। परन्तु उसने पुनः दिल्ली में आकर पृथ्वीराज से विग्रह क्यों किया इसी का वर्णन इस समय में किया जाय गा।

तोमर वंश के कुल प्रोहित व्यास जी के विज्ञान मय बचनों ने अनंगपाल के हृदय पर ऐसा अधि-कार कर लिया कि उसने उसी समय पृथ्वीराज को अजमेर से बुला कर दिल्ली का राज दे दिया. और आप संसार को असार जान बदरिकाश्रम में तपस्या करने चला गया। उधर अनंगपाल तपस्या में रत हुआ इधर वीर पृथ्वीराज दिल्ली राज्य का राज्य शासन करने में प्रवृत्त हुआ। किसी को भला लगे या बुरा, किसी को दुःख हो या सुख, परन्तु इस परिवर्तनशील संसार चक्र का चरखा जिसे लोग होनी या विधना का लिखा हुआ कहते हैं एवं जिसके ही अधार पर सब पृथ्वी. वायु आकाश, सूर्य्य, चन्द्र और अन्यान्य चमकदार सितारे स्थिर है, अप्रतिहत रूप से चला करता है। इस सृष्टि का रचयिता ब्रह्मा पंच महाभूत सहित इस काल में लीन हो जाता है परन्तु सब के शासक काल का ग्रास कभी भी खाली नहीं जाता, इसी काल चक्र के अनु-सार जिस समय पृथ्वीराज दिल्ली का स्वामी हुआ तब यह समाचार सारे भारतवर्ष में फैल उठा। साथ ही इसके इस बात की भी चरचा चल उठी कि पृथ्वी-राज अधर्म शासन करता है। दिल्ली राज्य के पूर्व्व कर्म्मचारी तथा प्रतिष्ठित प्रजा वर्ग को राजकीय स्वत्वों से रहित करके अपने सगे सम्बन्धियों का अधिकार बढ़ा रहा है। येही बातें उड़ती हुई अनंग-पाल के कान तक जा पहुंची। यह सुनते ही अनंगपाल ने पृथ्वीराज के इस कृतघ्न आचार पर कुपित होकर पश्चाताप करते हुए कहा, हा! ऐसे भी लोग संसार में हैं कि उपकार की तरफ़ तनिक भी ध्यान नहीं देते!!

पृथ्वीराज को दिल्ली राज्य मिलने का समाचार पा कर मालवे के राजा के जो कि सोमेश्वर से परस्पर शत्रुता रखता था, हृदय में डाह की ज्वाला जल उठी। उसने उसी समय अजमेर पर चढ़ाई करके सोमेश्वर को जीत लेने और फिर दिल्ली पर आक्रमण करने की इच्छा से, गष्पर, गोंड़, मदौड़, और सोर पुर आदि के अपने मित्र राजाओं को बुला भेजा। इस प्रकार अपनी और उपरोक्त मित्र राजाओं की चतुरं-गिणी सेना सहित हसस्त्रबाहु के वंश में उत्पन्न यादव वंशी मालवा का राजा अजमेर पर चढ़ चला और सोरपुर के पड़ाव पर कुछ दिन ठहर कर उसी घाट से चंवल पार हुआ।

मालवपति के चढ़ आने का समाचार जब सोमेश्वर ने सुना तो उसे बड़ी चिन्ता उत्पन्न हुई। उसने विचार किया कि समस्त सेना और परिकर सहित पृथ्वीराज तो दिल्ली में पड़ा हुआ है यदि इस प्रबल शत्रु से युद्ध करके मैं परास्त हो गया तो व्यर्थ मेरे नाम में टीका लगेगा। मैं इस अजेय उज्वल चहुआन कुल में कालिमा कहलाऊंगा, अस्तु यह सब सोच विचार करते हुए उसने नरसिंह प्रमार, बीरसिंह गौंड़, वीर वाहन आदि सामन्त मित्रों और गुरुराम को बुला कर पूछा कि इस समय मुझे क्या कर्तव्य है? उन सब ने परस्पर सम्मति करके उत्तर दिया कि इस समय यदि साम्हने से युद्ध किया जायगा तो अपनी सेना बहुत थोड़ी होने के कारण हार खाने की अधिक आशंका है अतएव हमारा मत यह है कि त्रयोदसी को रात्रि के समय सेन सज कर सोते हुए शत्रु पर धावा करके उसे छल से ही परास्त किया जाय। यह सुन कर सोमेश्वर बोले, हे मित्रो यद्यपि तुम्हारा यह मत मेरे हित के लिये है परन्तु हा! इस अनुचित व्यापार का साधन मुझ से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना।

—o—

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं।

	मूल्य	डांकव्यय
लिक मुहम्मद की अखरावट	।=)	)॥
विवर बिहारीलाल-(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	=)	)॥
गद्यकाव्यमीमांसा-(पण्डित अम्बिकादत्त व्यास रचित)	।)	)॥
हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित)	।)	)॥
समालोचना-(पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	)॥
समालोचनादर्श-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित) ...	≡)	)॥
कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र-(पण्डित नारायणपांडे रचित) ...	॥)	-)
विसूचिका चिकित्सा	।)	)॥
हरिश्चन्द्र-पर्व-(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	)॥
भगवद्गीता-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित) ...	।-)	)॥
ओथेलो-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	≡)	)॥
नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) ११ भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य-प्रति भाग	१)	-)
हिन्दी लेकचर-(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	-)	)॥
ध्रुवदास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	॥≡)	-)
सदलमिश्र की चन्द्रावती	।-)	)॥
सूदन कवि का सुजानचरित्र	२)	=)
लाल कवि का छत्रप्रकाश	१।)	-)
नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी	।=)	)॥
प्राचीन-लेख-मणि-माला-१ भाग (बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित) ...	१)	-)
अशोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	।)	)॥
...ल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित)	।-)	)॥
पृथ्वीराजरासो-पहिला भाग (समय १-११)	४)	।)
" दूसरा भाग (समय १२-२८)	४)	।)
कुमारसम्भवसार (पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित) ...	≡)	।॥
श्रीधर का जंगनामा	॥।)	-)
धम्मपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	-)
सभा के पुस्तकालय की सूची	=)	)॥
मनोविज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित)	॥)	-)
चन्द्रशेखर का हम्मीर हठ	॥)	)॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)	१)	-)
वैज्ञानिक कोश (बाबू श्यामसुन्दरदास सम्पादित)	३॥)	=)॥
दादूदयाल की बानी	१॥।)	=)
कवि नूरमुहम्मद की इन्द्रावती १ भाग	१॥)	=)
यूरोपीय दर्शन (पण्डित रामावतार पांडेय लिखित)	॥।)	-)
प्रबोधचन्द्रिका	॥।)	-)
वनिताविनोद	१)	=)
नवीन दृष्टि में प्रवीन भारत	१)	-)
गीतावली	।)	)॥
योगदर्शन	२)	-)
गुरु गीता	।)	)॥
रामचरितमानस		॥।)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की ६ पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं। अन्तिम पुस्तकों का मूल्य सभासदों के लिये ६॥) रु० है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-11.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHIYA JU.

CANTOS XLIV to XLVIII.

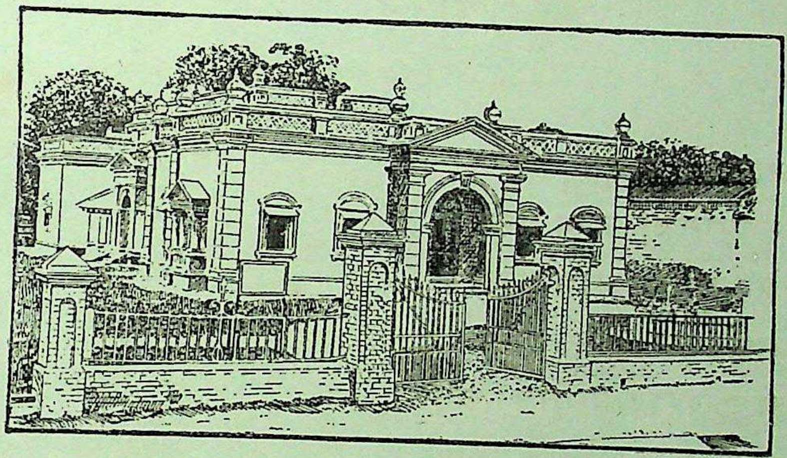

महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

तज्जियै । सही जैत तौ [illegible]

मोहनलाल विष्णुलाल [illegible] महूरत सझि ॥

कुँअर कन्हैया जू की सहायता [illegible] छं० ॥ २० ॥

से

सम्पादित किया ।

पर्व्व ४४ से ४८ तक ।

[illegible]ED AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1907.

मूल्य १।)] Issued 15th September, 1907. [*Price Re. 1-4.*

५१ / १४३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओ३म् *
पुस्तक की संख्या ८२/७८३
पुस्तकालय-पञ्जिका-संख्या १८३१८
पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कोई महाशय १५ दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकता। अधिक देर तक रखने के लिये पुनः आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

सूचीपत्र।

—:o:—

(४४) भीमवध समय	पृष्ठ १२०१ से	१२२७ तक
(४५) संयोगिता जन्म प्रस्ताव	,, १२२९ ,,	१२५८ ,,
(४६) विनयमंगल नाम प्रस्ताव	,, १२५९ ,,	१२७४ ,,
(४७) सुकवर्णन	,, १२७५ ,,	१२९१ ,,
(४८) बालकरराइ प्रस्ताव (अपूर्ण)	,, १२९३ ,,	१३२८ ,,
रासोसार	,, १०५ ,,	१३६ ,,

———o———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुनि आइ जाम जद्दव नरिंद। जमनेस भेम वज्जंग ज्यंद ॥
वलिभद्र आइ कूरंभ देव। बहु भंति भूय जिन करत सेव ॥ छं० ॥ ११ ॥
पुंडीर आइ तहां चंद वीर। सम इष्ट इष्ट शृंगार और ॥
अतताइ आइ चहुआन चंड। जनु भीम भयानक सभा पंड ॥
छं० ॥ १२ ॥

लंगरी राव तहां बैठि आइ। जगि जुद्ध समै जनु अगनि वाइ ॥
गहिलौत आइ गोइंद राउ। पर भूम भूम देयंत दाउ ॥ छं० ॥ १३ ॥
लघु दिघ्घ सूर सामंत सब्ब। बैठे जु आइ दरबार[1] तब्ब ॥
फुनि चंद चंड बरदाइ आय। जिन प्रसन देव द्रुग्गा सदाय ॥
छं० ॥ १४ ॥

प्रथिराज कही सब्बहि[2] सुनाइ। सोमेस भीम जिम सम उपाइ ॥
सजि सेन जुरी गुज्जर नरिंद। षनि षोदि कढ़ौ[3] चालुक्क कंद ॥
छं० ॥ १५ ॥

अप्रमान बत्त भीमंग कीन। जिम जीति जुद्ध सोमेस लीन ॥
गर्भनी गर्भ कढ़ौं नरीन। प्रथिराज नाम तौ विप्र दीन ॥ छं० ॥ १६ ॥
जहां जहां निसंक बंके मवास। षनि षोदि डारि दीजै अवास ॥
छं० ॥ १७ ॥

ज्योतिषी का गुजरात पर चढ़ाई के लिये मुहूर्त साधन करना।

दूहा ॥ करि प्रनाम सामंत सब। बोलिय जोतिगराइ ॥
सद्धि महूरत चढ्ढियै। जिम अग्गै जैताइ[4] ॥ छं० ॥ १८ ॥
व्यास आन दिष्षिय लगन। घरी महूरत जोइ ॥
इन समयै जो सज्जियै। सही जैत तौ होइ ॥ छं० ॥ १९ ॥
हक्कान्यौ जगजोति नृप। कहौ महूरत सद्धि ॥
जीति होइ सद्धौं बयर। सिंचो अग्गि समद्धि ॥ छं० ॥ २० ॥

ज्योतिषी का ग्रह योग और सुदिन मुहूर्त वर्णन करना।

(१) मो.-दरबार। (२) मो.-सबन।
(३) ए.-चढ़ौं। (४) ए. कृ. को.-जैपाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ केंद्रीय ससि सोम । भोम पंचम अधिकारिय ॥
राह बीर अष्टमो । वक्र सत्तम सुद्दारिय ॥
जंगम थावर धरिय । हलिय तिन नाम सेन भर ॥
कहै विप्र प्रथिराज । राज पंचम पंचम गुर ॥
[1]मन काम होइ सो किज्जियै । अरि जित्तह पद्धर दिवस ॥
पिट्ठीय पवन रष्षै महन । तौन बसाइय काल बस ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ रैनि परै संमुह अरिय । चक्र जोगिनी अग्ग ॥
दई होइ दुज्जन सयन । तौ तन भग्गै षग्ग ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ कहै व्यास जगजोति । राज चहुआन प्रमानिय ॥
गुज्जर गुज्जर सयन । बैर सोमेसर ठानिय ॥
एक लष्ष आरुहहि । लष्ष लष्षन षग रुंधहि ॥
होइ जैत चहुआन । पानि भीमंग सु बंधहि ॥
[2]गुजरात होइ तुअ ग्रेहनिय । एक बत्त संमुह मँडौं ॥
जो मिटै बत्त इह जोग कोइ । तौ हथ्थह पचौ छँडौं ॥ छं० ॥ २३ ॥

पृथ्वीराज का लग्न साध कर अपनी तय्यारी करना ।

दूहा ॥ विक्रम अरु चहुआन न्रप । पर धरती सकबंध ॥
असम समै साहस [3]हसह । हिंदुराज दुअ कंध ॥ छं० ॥ २४ ॥
चढ़ि चल्लिय सज्ज्यौ सयन । बोलि भ्रत्य प्रथिराज ॥
लगन महूरत सद्धि कै । बट्ठि निसान अवाज ॥ छं० ॥ २५ ॥

कवित्त ॥ जित्ति राज बर साज । बीर बीरह रस सज्जिय ॥
विजै जिति दिजैपाल । सोइ राजन जस [4]छज्जिय ॥
तर उतंग इल [5]मूल । भूप [6]बल्लिय चित चढ्ढिय ॥
जय जय जय उच्चार । देव दानव नर पढ्ढिय ॥
सामंत गत्ति साध्रम्म धर । उद्धारन बर बैर षल ॥
चहुआन सज्जि चालुक्क पर । बीर बीर बढ्ढे [7]सबल ॥ छं० ॥ २६ ॥

(१) मो.-मम । (२) ए. कृ. को.-हुअ गुज्जर । (३) मो.-करान ।
(४) ए. कृ. को.-सज्जिय । (५) ए. कृ. को. रूप ।
(६) ए.-चाल्लिय । (७) ए.-सकल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाथा ॥ इच्छिनि अच्छित मानं । वितीतं जाम भग्गयो नध्यं ॥
अरुनोदय चहुआनं । म्रगया आइ पच्छिमं थानं ॥ छं० ॥ २७ ॥

पृथ्वीराज का शिकार के मिस पश्चिम दिसा को कूच करना।

कवित्त ॥ सा म्रगया चहुआन । राज सज्जी दिसि पच्छिम ॥
सब सेना जानी न । राज एकंग सु अच्छम ॥
आषेटक सजि बीर । भयौ अरुनोदय जोगं ॥
चिहूं दिसिन संभरिय । सेन सज्जी मति भोगं ॥
जित्त तित्त फौज़न हलिय । चलिय सूर सामंत बर ॥
संपत्त जाइ चहुआन कौं । निढ्ढुर करिय जुहार सिर ॥छं०॥२८॥

राजा के साथ सैन्य सहित निढ्ढुर राय का आन मिलना।

दूहा ॥ निढ्ढुर मन संजुरि सयन । मिलिय आन प्रथिराज ॥
[1]मनु टिड्डिय धरि उल्लटिय । कै चिकूट पर कप्प ॥ छं० ॥ २९ ॥
पंच सबद बाजे गहिर । घन घुंमर बरजोर ॥
जंग जुझाऊ बज्जिया । बढ्यौ श्रवंनन सोर ॥ छं० ॥ ३० ॥

पृथ्वीराज की तय्यारी का वर्णन, भीमदेव को इसकी खबर होना और उसका भी तैयारी करना।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ राज प्रथिराज सेन । कंपि चले कोपि जनु लंक लेन॥
जनु उदधि उलटि छंडिय मजाद । दहवट्ट करन गुज्जर प्रसाद ॥
छं० ॥ ३१ ॥
चर चरत चरित जंगल नरेस । बढ़ि चले मध्य भीमंग देस ॥
सब षबरि कही भीमंग जाइ । सजि सेन सूर चहुआन आइ ॥
छं० ॥ ३२ ॥
सामंत नाथ सामंत जोर । बट्टे कि जानि दरिया हिलोर ॥
चौसठि हजार परिमान [2]तेह । अनभंग जंग बट्टे बलेह ॥छं०॥३३॥
घ्रत तज्यौ पान चहुआन राइ । चिंतैं सु चित्त बल विषम घाइ ॥

(१) मो.-ज्यों। (२) मो.-तेन, बलेन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चहुआन कन्ह गोयंदराइ। सिव सीस उदक छंड्यौ रिसाइ ॥
छं० ॥ ३४ ॥

बर भरे अन्य भट घट [1]अभंग। अप अप्प विहसि सिर लगिन भंग॥
अप्पान बंध अप करौ राइ। जिम जुरो षग्ग षल विषम घाइ ॥
छं० ॥ ३५ ॥

सब कही षबर सो सुनी दूत। [2]झलहलिय रोस जैसिंह पूत ॥
फरकंत बांह थरकंत कंध। चष [3]चढ़ि कपाल भुअ हुअ असंध ॥
छं० ॥ ३६ ॥

बुल्लाइ सब्ब भर राजकाज। सम कह्यौ जुद्ध तिन करन साज ॥
परवान फट्ट देसान देस। तिन के सु चढ्ढि आए नरेस ॥छं०॥३७॥

दुअ सहस षान तेजी पठान। हयनारि धारि सँग कुहकवान ॥
चढ़ि कच्छ देस कच्छी बलान। हय सहस तीन पष्षर पलान ॥
छं० ॥ ३८ ॥

चढ़ि सहस डेढ़ सोरठ्ठ ठाट। तिन सहस विषम अवघट्ट घाट ॥
चढ़ि काकरेंच कोली करूर। कामनेत कहर अन भूल रूर ॥
छं० ॥ ३९ ॥

चढ़ि झालवारि झाला अभंग। तिन लरत लोह रवि उगिन भंग॥
चढ़ि मचि [4]मुकुंद कावा नरेस। तिन चढ़त सुनत उड़ि जात देस।
छं० ॥ ४० ॥

चढ़ि कठ्ठवार कट्ठी नरिंद। तिन सचु सुष न दिन राति न्यंद ॥
लघु दिग्घ और को गने देस। इतने कटक्क आए असेस ॥
छं० ॥ ४१ ॥

चढ़ि सुभट और गुर [5]गुरज षंड। जनु [6]जुरन जुद्ध कुरु षेत पंड ॥
छं० ॥ ४२ ॥

भीमदेव की तय्यारी का समाचार पृथ्वीराज को मिलना।

(१) मो.-अनंट। (२) मो.-झलहलत।
(३) ए. कृ. को.-चरि। (४) मो.-कुद।
(५) ए. कृ को.-गुजर। (६) ए.-जुरत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ चढ़े देषि चालुक्क दल। बहुरे संभरि दूत ॥
भेष दिगंबर दुति तनह। जे अवधूत न धूत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
गनि गनिका कविचंद की। ठग विद्या परवीन ॥
दूत धूत अनभूत मन। नवनि राज तिन कीन ॥ छं० ॥ ४४ ॥
गाथा ॥ संमुष पिष्षिय राजं। बुल्ले बयन सुहित्त सुभाजं ॥
चढ़ि चालुक्की गाजं। नर भर समुद उलटि जनु पाजं ॥छं०॥४५॥
दूहा ॥ एक लष्य सेना सकल। अकल कलीनह जाइ ॥
इक्क सहस मद गज करी। दिष्षिय जानि बलाइ ॥ छं० ॥ ४६ ॥

पृथ्वीराज की प्रतिज्ञा।

कवित्त ॥ इम भंजो भीमंग। जुद्ध जौ माहिं जुरै रन ॥
ग्रीषम [1]पवन सहाय। दंग जरि जात सघन घन ॥
इम भंजो भीमंग। भीम कुरुनंद पछारिय ॥
यों भंजो भीमंग। सगति महिषा सुर मारिय ॥
इम जुरों जुद्ध भीमंग सम। अगनि तेज वायं हिता ॥
प्रथिराज नाम तद्दिन धरौं। उदर फारि कढ्ढौं पिता ॥छं०॥४७॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते हुए आगे बढ़ना।

दूहा ॥ आषेटक खेलन चलिय। करिय पंति भर साज ॥
चावद्दिसि बन बिंटि कै। मद्धि संपतौ राज ॥ छं० ॥ ४८ ॥
*अरिल्ल ॥ मन इच्छा आषेटक लग्गिय। षग षंती मन मभभह जग्गिय ॥
जमुन विहड़ बिंटिय बहु बंके। भालि सिंह वाराहन हंके ॥छं०॥४९॥

पृथ्वीराज का गहन बन में पड़ाव पड़ना।

दूहा ॥ जमुन बंड बंके विषम। हंकत पत्तिय संझ ॥
जो जहां ह्तौ सो तहां। हुअ डेरा बन मंझ ॥ छं० ॥ ५० ॥
सूर उदय जे [2]बढ़ि हुते। उत्तरि संध्या सूर ॥
अन्न पान पहुंच्यौ सकल। कहा नीरे कहा दूर ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-जनों पचमं। * मो.-मुरिल्ल।
(२) ए. कृ. को.-चढ़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुकम नकीबत कह फिरै। डेरा डेरा गाहि॥
जो जिय जा ढिग निक्करै। राज न षिज्जै ताहि॥ छं० ॥ ५२ ॥

कैमासादि सब सामंतों का रात्रि को राजा के पहरे पर रहना।

गाथा ॥ उत्तरि सेन सुराजं। निद्रा छुभित सब्ब सेनायं॥
पासं न्रप कयमासं। सो सुत्ते षग्ग बंधाइं॥ छं० ॥ ५३ ॥
यों सुत्ता सब सेनं। सा निद्रा चंपियं बीरं॥
मोह चंपि विग्यानं। [1]निद्रा ग्यान [2]नठ्ठियं कालं॥ छं० ॥ ५४ ॥
कवित्त ॥ राज पास कैमास। कन्ह कनक्क सबूरा॥
सब्बर सूर पांमार। जैत साहिब अबूरा॥
[3]सलष अलष पुंडीर। दई दाहिंम चामंडं॥
*सागुर गुर सिरमौर। राज हंमीरति षंडं॥
सारंग सूर कूरंभ बलि। बर पहार तूंअर सुभर॥
लंगरीराव लोहान बर। गहिग सेन बर बीर पर॥ छं० ॥ ५५ ॥

एक पहर रात्रि रहने से शिकार किया जाने की सलाह।

जाम एक निसि पच्छ। बत्त आषेट विचारिय॥
सुनौ सब्ब सामंत। मंत्त इह चित्त सु धारिय॥
जंत जीव जग्गै न। तंत क्रम सिद्ध न होई॥
पुब्ब श्रवन संभव्यो। निगम [4]जंपे बर लोई॥
चिंतयौ चित्त चिंता सुमन। मास तीय तिय सद्द सुनि॥
निरवान राज प्रथिराज गुन। [5]सुबर सगुन बज्जे सु धुनि॥
छं० ॥ ५६ ॥

कन्ह का रात्रि को स्वप्न देखना और साथियों से कहना कि सबेरे युद्ध होगा।

(१) को.-निज। (२) ए. कृ. को.-नट्ठियं।
(३) ए. कृ. को.-सकल।
* मो.-"सागर गुर सिर मौर राज संभीरति षंडं"।
(४) ए. कृ. को.-चंपे। (५) मो.-सुगुर सुवन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरिल्ल ॥ इहै चित्त चिंती चहुआनं। बर मासत्ति सद्द सुनि कानं ॥
घरी अद्ध अद्धं निरमानं। कहै बीर कन्हा चहुआनं ॥ छं० ॥ ५७ ॥

दूहा ॥ प्रात प्रगट बत्ती कहिय। आगम चिंति प्रमान ॥
सुबर काल बित्ती घरिय। कलह परै परथान ॥ छं० ॥ ५८ ॥

गाथा ॥ श्रवनं [1]सुनि सामंतं। रत्तं आचिज्ज मत्तयं [2]युद्धं ॥
आगम होइ प्रमानं। भूकंपं [3]पक्कयं षंडं ॥ छं० ॥ ५९ ॥

मुरिल्ल ॥ कालं सुचंपि कालं कराल। इन सगुन सूर आवत्त ताल ॥
आमुझ्झ सुझ्झ नंजिय प्रकार। बर बीर भीर विस्तार भार ॥
छं० ॥ ६० ॥

स्वप्न का फल।

दूहा ॥ कहिग सूर सामंत सब। कहि आगम सत काज ॥
सिंघ दीप दुज्जन भिरन। मरन सु अरि प्रथिराज ॥ छं० ॥ ६१ ॥
जिहित सूर सोमेस हनि। सोइ सगुन रन भीम ॥
सोई सगुन ए सह्यिै। काल न चंपै सीम ॥ छं० ॥ ६२ ॥

सबेरे कविचन्द का आशर्वाद देना और राजा का स्वप्न कथन।

अरुन उदै जग्गो नृपति। निकट भट्ट सिरनाइ ॥
सरन कमल थल भरन मुष। फूलें आनंद पाइ ॥ छं० ॥ ६३ ॥

चौपाई ॥ मुदत कमोदनि उदयति भानं। विसत वसंमति अभ्भुत थानं ॥
को चंपै कै मरन जरूरं। यों मत मंत विमंत करूरं ॥ छं० ॥ ६४ ॥
चढ़ि पति घट्टि सु सब्ब रसालं। अर वरि वीर अरं वरि भालं ॥
जिते सगुन दिषि रत्ति प्रमानं। तिते कहे चक्रित चहुआनं ॥
छं० ॥ ६५ ॥

दूहा ॥ संभरि रा संभरि सुकथ। सगुन सु प्रातय राज ॥
कछु सगुन निसि उच्चर्‌यौ। सुनहु सु जंपहु काज ॥ छं० ॥ ६६ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुर। (२) ए. कृ. को.-सूरं। (३) मो.-कीनर्यं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहै सब्ब पयलग्गि भर। भर निहचै सामंत॥
जु कछु राज दिष्यौ नयन। जंपि झंपि बर कंत॥ छं०॥ ६७॥
गाथा॥ सो संघौ निसि सद्दं। बद्दे कन्ह तीनयो सद्दं॥
नं जानय किंमानं। परिमानं किंनयं होइं॥ छं०॥ ६८॥

राजा के स्वप्न का फल।

चोटक॥ दिन सद्द सगुन्नन मद्द घरी। कलहंत विषंमति बीर भरी॥
कलि कारन मोकलि वानि रसं। घरि एक घरी महि जुद्ध रसं॥
छं०॥ ६९॥
भय [1]भ्रत्त भयानक बीर भटं। कलहंत कलेवर बीर घटं॥
छं०॥ ७०॥
दूहा। कलह कलेवर बीर घट। सगुन सु हृत्तिय पान॥
सुबर राज बढ़ै विषम। देवासुर जु समान॥ छं०॥ ७१॥

कन्ह के ज्ञानमय वचन।

नको जियत दिष्यौ नयन। न को मरत दिष्यान॥
मान गरभ आवन [2]गमन। कर नंच्यौ बंधान॥ छं०॥ ७२॥
[3]धंधौ नट्ट सुभट्ट भ्रम। जस अपजस लभ [4]हानि॥
जिन जिन जुरि धर नष्ययौ। सो दुरजोधन जानि॥ छं०॥ ७३॥
सो दुरजोधन जोधवर। सग्गुन बंधिय पान॥
सुई अग्र नन भूमि दिय। बर भारथ्थ प्रमान॥ छं०॥ ७४॥

पृथ्वीराज का सेना सहित शिकार करना, बन की हकाई होना।

गाथा॥ बर भारथ्थ प्रमानं। जानं जुद्धाय बीतयौ घटयं॥
अद्दत हृत्तं चारौ। सगुनानं लभ्भियं पारें॥ छं०। ७५॥
मुरिल्ल॥ चढ्ढिय पत्ति घटि आवरि सूरं। सुघट घटय जमुना जल पूरं॥
पथ इंदय अवत्ति पति सूरं। भयति काल विग्यानति सूरं॥छं०॥७६॥
दूहा॥ सुर विग्यान विग्यान पति। भयति भयंतर जुद्ध॥
कानन बीर सु हक्कयौ। सुबर बीर गुन सुद्ध॥ छं०॥ ७७॥

(१) ए. कृ. को.-भ्रत्य। (२) ए. कृ. को.-जनम।
(३) मो.-बंन्धौ। (४) ए. कृ. को.-भांन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन हंकन न्रप हुकम भय । जहँ तहँ गज्जत सूर ॥
तबल तूल च'बक चहिय । कह नीरे कह दूर ॥ छं० ॥ ७८ ॥

घुंघर गज घंटानि धुनि । हय गय हस मह लच्छ ॥
सयन सब्ब सोवत जगिय । कानन हांकिय पच्छ ॥ छं० ॥ ७९ ॥

बन में खर भर होते ही एक भूखे सिंह का निकलना ।

कवित्त ॥ छुटत तीर चिंहु पष्ष । सद्द बज्यौ सु सूर घन ॥
सिंह सद्द पर सद्द । बज्जि पर सद्द मत्त पन ॥
रद विमद्द गज भग्ग । बान भग्गे मन आररि ॥
हाइ हाइ आरिष्ट । दिष्ट लग्गे पति गारुरि ॥
गौम्रत्त भूत पंचाप नय । कानन पति कानन झुकिय ॥
कोई सु भज्जि मूलन रजिय । ज़त्ति काल कालह बकिय ॥ छं० ॥ ८० ॥

दूहा ॥ सिंघ छुधित निद्रा ग्रसित । सिंघनि सिसु यह पथ्य ॥
काल नाग नागिन जग्यौ । बर बीरां रस हथ्थ ॥ छं० ॥ ८१ ॥

सिंह का वर्णन ।

पद्धरी ॥ भाल्यौ सु सिंघ इक षेल वार । सूतौ सु मद्ध कंदर लवार ॥
लद्धी सु वास नर निकट जानि । ग्रज्यौ सु गर्ज्ज नभ घोर वानि ॥
छं० ॥ ८२ ॥

पुच्छिय पटक्कि मंडिय सु सीस । बक्कारि उंच सिर दुदस दीस ॥
छुट्टंत झाल जुगनेन दीस । चाटंत मुच्छ रिस अधिक हीस ॥ छं० ॥ ८३ ॥

तिष्षे सु जोर जमदट्ठ वंत । फट्टंत धरनि हथ्थल तुरंत ॥
हथ्थीन सीस नष हनि तुषार । देषंत दंत जनु काल धार ॥
छं० ॥ ८४ ॥

सिंघनि सु पास ससि दोइ तथ्थ । लीनौ सु घेरि सामंत सथ्थ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

सिंह का कन्ह के ऊपर झपट कर वार करना ।

कवित्त ॥ झपटि लपटि जनु अग्ग । कन्ह दिसि किन्न लटक्किय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतुल घाइ बल अतुल। अग्गि जनु जग्गि भटक्किय॥
जाजुल्लित गंभीर। गह्ग्र सहस्र उच्चारिय॥
हाइ हाइ आरिष्ट। राज हक्कम बक्कारिय॥
असवार चूकि चप्पौति हय। करि कुंडल कम्मान रजि॥
नर नाह वाह अवसान फबि। परिय बथ्थ नर अस्व तजि॥
छं० ॥ ८६ ॥

कन्ह का सिंह का सिर मसक कर मार डालना।

इत सु कन्ह उत सिंघ। जन्हु जुग जानि प्रलै बर॥
दुअ दंतिन दल दलन। दुअह [1]जम जोध अडर डर॥
कंध कष तिन चंपि। कन्ह कढ्ढिय कट्टारिय॥
पेट फारि धर डारि। फेरि पग भूमि पछारिय॥
सिर फट्टि भेज भेजिय उडिय। हड्डु मंस नस भ्भूर हुअ॥
जय जय सु सद्द षह भूमि भय। बलि बलि कन्ह नरिंद सुअ॥
छं० ॥ ८७ ॥

भंज्या सिंघह सूर। कन्ह जंगह चहुआनं॥
भयौ नूर मुष सूर। सगुन लद्धौ परिमानं॥
उहांइ सेन सजि राज। गुज्ज बुझ्झी न मसूरति॥
कूच कूच उप्परे। देस पट्टन धर चूरति॥
आकास मध्य तारा तुटै। यों तुट्टी अरि सेन पर॥
कल मलत सेस काइर कंपत। कीजहि उज्जर जारि धर॥
छं० ॥ ८८ ॥

कन्ह के बल और उसकी बीरता की प्रशंसा।

गाथा॥ सूरं किरन प्रकारं। सारं मार जुद्ध मय मत्तं॥
कै देवत्त विछुट्टा। कै [2]जुट्टा कालयं करनी॥ छं० ॥ ८९ ॥

अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर सामंतों सहित राजा का आगे कूच करना।

(१) मो.-सु। (२) मो.-तुट्टा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ सज्जि सिलह सामंत । मत्त मत्त जनु चल्लिय ॥
[1]सो चौसट्ठि हजार । भार भारथ वै हल्लिय ॥
चामर छत्र रषत्त । छत्र दीनौं सिर कन्हं ॥
छुट्टियि पट्टिय अंषि । बिरद नरनाह जिनन्हं ॥
सेनाधि पत्ति कन्हा कियौ । अग्ग फौज प्रथिराज बर ॥
पचछली फौज निद्दुर बलिय । ता पच्छैं पंमार भर ॥ छं० ॥ ९० ॥

दूहा ॥ कूच कूच जिम जिम चले । तिम तिम छंडत मोह ॥
ज्यों [2]बंध्यौ दुज राज नें । तिथि पचाजह सोह ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कूच के समय पृथ्वीराज की फौज का आतंक वर्णन ।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यो राज चहुआन सूर । दैवत्त वाह दुज्जन करूर ॥
गुज्जर नरेस पट्टन प्रवास । दल बढ़ै राज जंगल सु चास ॥ छं० ॥९२॥
कलमलिय काय कंकह कठोर । *सारथ्थ किस्न सम राज जोर ॥
करि गिरद सेन सज्जी सभंति । मानौं कि भांति किरनाल पंति ॥
छं० ॥ ९३ ॥
कलमलित कमठ भर पिठ्ठ भूमि । सल सलित सेस सामंत भूमि ॥
हलमलत ग्राव बंके मेवास । पल भलत पंषि सम सहि न चास ॥
छं० ॥ ९४ ॥
चल मलत रैन सुझ्झै न पंथ । भल मलत सूर जनु समय अंथ ॥
नल टलत चित्त काइर सु संक । गल बलत सूर जनु कप्पि लंक ॥
छं० ॥ ९५ ॥
नल कलत अस्व रह बल सु चाल । तल फलत ढाल हिरनाल फाल ॥
दल हलत जानि सरिता सपूर । झलहलत छौल साइर हिलूर ॥
छं० ॥ ९६ ॥
थल जलत दूक मिलि कीच उठ्ठि । मिलि चलित संसि सामंत सुठ्ठि ॥
फल फलित मरन बंछत जिन्हैं न । कल कलत चंद कबि बल तिन्हैं न ॥
छं० ॥ ९७ ॥

(१) मो. सौ, कृ.-सी । (२) मो.-बन्ध्यौ । * मो.-"सारथ्य कि सूर सम राज जोर" ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का भीमदेव के पास एक † चुल्लू भेजना।

दूहा ॥ अही चंद चंदह मरन। दिन दिन [१]सल्लै दुष्ष ॥
कहौ जाइ चालुक्क सम। मंगै बैर समुष्ष ॥ छं० ॥ ९८ ॥
† ले चल्लौ न्रप भीम कौं। चंगी दोय रसाल ॥
एक सुरंगी पद्यघरी। इक कंचुकी भुजाल ॥ छं० ॥ ९९ ॥
कवित्त ॥ मन मानै सोइ गहौ। करिव चित्तं इकतारं ॥
इह संसार सुपन्न। अपन झुभ्झै इक वारं ॥
चंद हथ्थ कहि पठय। भीम सम संभरि वारं ॥
तात बैर संग्रहन। वचन तत्तं उच्चारं ॥
गज भाट सुभंर घट भंजि तुअ। सरित चलाउं रुधिर की ॥
धार सिंचि सोमेस कहुं। तपति बुझाउं उअर की ॥ छं० ॥ १०० ॥
रामाइन मघवान। बरषि घन अम्रत धारं ॥
बालमीक पीयूष। सींच लव रघुपति रारं ॥
अरजुन सयन समेत। आनि बब्बर पताल मनि ॥
बेद व्यास भारथ्थ। सकल छोहनि दीपक बनि ॥
चहुआन कहाइय चंदकर। पिता बैर कज इह बयन ॥
*चालक्क भीम उन सम सुनहु। तुमह जिवावन अब कवन ॥
छं० ॥ १०१ ॥

चन्द का भीमदेव के पास जाकर युक्ति पूर्व्वक कहना कि पृथ्वीराज अपने पिता का बदला लेने को तय्यार है।

चल्यौ चंद गुज्जरह। गरै जारी जंजारह ॥
नीसरनी कुद्दाल। दीप अंकुस आधारह ॥

(१) ए. कृ. को.-चल्लै।

† चुल्लू=स्मरण रहे कि यह चुल्लू Challenge का अपभ्रंश नहीं है। यह राजपुतानी भाषा का प्रचलित शब्द है जिसे बुन्देलखंड में चिन्नू चुन्नू भी कहते हैं। इसका अर्थ "किसी को अपने मुकाबले के लिये धमकी देना भड़काना या उभाड़ना है।

* छन्द ९९ से लगा कर छन्द १०१ पर्य्यन्त मो. प्रति में नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कस्त स्हूल संग्रहैं । गयौ चालुक दरवारह ॥
इह अचंभ जन देषि । मिल्यौ पेषन संसारह ॥
भेय्यौ सु भीम भोरा सुभर । कहिय बत्ति संभरि बयन ॥
हो भट्ट चट्ट बोलहु कयन । कहा इहै डंबर सयन ॥ छं० ॥ १०२ ॥
एन जाल संग्रहो । जाम जल भीतर पड़यौ ॥
इन नीसरनी ग्रहो । जाम आकासह चढ़यौ ॥
इन कुद्दालैं षनौ । जाम पायाल पनट्ठौ ॥
इन दीपक संग्रहो । जाम अंधारैं नट्ठौ ॥
इन अंकुस असिवसि करों । इन चिस्हूल हनि हनि सिरों ॥
जगमगै जोति जग उप्परैं । तोडर प्रथम नरिंदरैं ॥ छं० ॥ १०३ ॥

भीमदेव का उत्तर देना कि मैं भी उसे दंड देने को प्रस्तुत हूं जो मेरे संमुख आवे ।

जाल ज्वाल करि भसम । करस नीसरनी कट्टौं ।
घन भंजों कुद्दाल । दीप कर पवन झपट्टौं ॥
अंकुस अंकुर मोडि । तिनह चस्हूल संकोड़ों ॥
हनन कहै ता हनौं । जोति जग मच्छर मोड़ों ॥
हौं भीम भीम कंदल करों । मो डर डंक अचंभ नर ॥
मम करइ ग्रब्ब धरि लज्ज अब । बित्तक पुब्ब परचि पर ॥ छं० ॥ १०४ ॥
रे डंदर [1]विड्डाल । कोइ कारन भिर मच्चौ ॥
रे गिड्डिन सिर हंस । दैव जोगह सिर नच्चौ ॥
रे म्रग वघ सँग्राम । लरैं बर अप्पन आयौ ॥
रे अप्पह सो समर । करैं मंडुक जस पायौ ॥
आचंभ ब्रह्म गति वह नहीं । बार बार तुहि सिष्षियै ॥
प्रज्जरैं झार तरवर गिरह । का दीपक लै दिष्षियै ॥ छं० ॥ १०५ ॥
बैन बाद सो करैं । होइ भट्टह को जायौ ॥
गारि रारि सो भिरैं । जेन रस षष्ष न पायौ ॥
हथ्थ बथ्थ सो भिरैं । घरह धन बंधव [2]बट्टैं ॥
इह सोमेसर बैर । लेहु अप्पन सिर सट्टैं ॥

(१) ए. कृ. को.-बिल्लाउ । (२) ए.-बढ्ढै ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम कहौ जाइ संभरि बयन। इन डिंभन डिंभरु डरै॥
संचऱ्यौ दरक हकै चरत। [1]सज्ज फटकै निक्करै॥ छं० ॥ १०६॥

चन्द का भीमदेव के दरबार से कुपित होकर चला आना।

दूहा॥ चंद मंद मन आतुरह। उद्यौ रत्त करि नेंन॥
फिरि पहुंच्यौ न्रप पिथ्थ पै। कहैं चरक्का बेंन॥ छं० ॥ १०७॥

भीमदेव का अपने भाट जगदेव को चंद के पास भेज कर अपनी तय्यारी की सूचना देना।

कवित्त॥ सुनौ भट्ट जगदेव। कहै भोरा भीमंदे॥
तुमहु चंद पै जाहु। षबरि पायान दियंदे॥
जो कछु तुम बुल्लए। ज्वाब मंगन हौ आयौ॥
ज्यौं सुत्तौ सुष उरग। मीड़ि बर पुंछ जगायौ॥
आयौ नरिंद गुज्जर सबर। करिय सेन चतुरंग भर॥
मो दिट्ठ दिट्ठ पुच्छिय सयन। बयन [2]वाद मनो न उर॥
छं० ॥ १०८॥

जगदेव बचन।

कहु मिसरे छेड़यौ। राउ गुज्जरी नरेसर॥
दीबा जाल कुदाल। कहमि वह सह आडंबर॥
कह मिसरै कैमास। जास पुच्छंत विचष्षन॥
चामँड रा कहां गयौ। बहुत राया बर दष्षन॥
कह मिसरे कन्ह बिष्पनौ। जग्गदेव संचौ चविय॥
वंभन हय या दिद्व धर। कह मिसरें संभरि धनिय॥ छं० ॥ १०९॥

चन्द वचन।

वार बार षेलयौ। सरस बत्तडिया गुज्जर॥
अब विगत्ति [3]लभ्भिहैं। [4]मिरच चव्वै ज्यों गज्जर॥

(१) मो.-"क्यों छज्ज फट्टकै निक्करै"। (२) ए. कृ. को.-झुंठ।
(३) ए कृ. को.-लागे है। (४) मो.-मिरच चढ्ढे ज्यौं गज्जर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तूंअंनि राव मजाम। जिके रन अंगन जित्ता ॥
इन संभरिवै राव। कोड़ि सै सहस विघत्ता ॥
भेदयौ नहीं गुर अष्षरौ। कविय वयन संम्हौ सरै ॥
कर नहीं मंच बौछिय तनौं। घत्ते हथ्थ सप्पा हरै ॥ छं० ॥ ११०॥

जगदेव का चन्द का रूखा उत्तर सुन कर भीमदेव के पास फिर जाना।

दूहा ॥ सुनि सु बेंन जगदेव फिरि। कहि भोरा भीमंग ॥
आयौ नृप चहुआन सजि। हय गय भर चतुरंग ॥ छं० ॥ १११ ॥

पृथ्वीराज का निढ्ढुर को युद्ध का भार सौंपना।

कवित्त ॥ ढिग बुलाइ प्रथिराज। हथ्थ निड्ढुर कर धारिय ॥
सकल सूर सामंत। जुद्ध मग्गह अधिकारिय ॥
आदि राज पहु आदि। आदि सम जुद्ध समंडौ ॥
दैव काल संग्रहौ। बलह भारथ जिम पंडौ ॥
मन्नै अनन्य संसार सह। छिति छचिन महि छजत रज ॥
एकंग अंग जंगह अटल। करन जुरौ सामंत सज ॥ छं० ॥ ११२ ॥

निढ्ढुर का पृथ्वीराज को भरोसा देकर स्वामिधर्म की प्रशंसा करना।

कहि निभ्भर सामंत। जूह जंगन दल मंडन ॥
समर समै रति स्वामि। तनह तिनुका सम षंडन ॥
इक्क उभत जुध उद्व। इक्क गज दंत उषारहि ॥
इक कमंध उठि लरहि। इक्क रुधि बीर बकारहि ॥
संभरि नरिंद तुम संभरौ। धरिय उदर इम एह बल ॥
बड़ बंस अंस दानव [1]प्रबल। करहु मोह हम भाग बल ॥ छं० ॥११३॥

निढ्ढुर का कन्ह राय की प्रशंसा करना।

दूहा ॥ बालप्पन जोवन बिरध। [2]रन रत्तौ जोधार ॥
कन्ह दलन अरि मंडइय। नन तिरुका करि डार ॥ छं० ॥ ११४ ॥

(१) मो.-अचल। (२) ए. कृ. को.-नर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन अंषिन भर पट रहै। सोइ छुट्टै है ठाम ॥
कै सज्या वामा रमत। कै छुट्टत संग्राम ॥ छं० ॥ ११५ ॥
जे बंके विरदन वहै। नरन नाह जग जप्प ॥
कै भारथ भीषम सुभट। कै रामायन कप्प ॥ छं० ॥ ११६ ॥

पृथ्वीराज का निढ्ढुर को मोती की माला पहनाना।

अमुल माल मुत्तिय सजल। मोल लष्य गुन मान ॥
अप उरते उत्तारि न्रप। दीनी निढ्ढुर दान ॥ छं० ॥ ११७ ॥

निढ्ढुर का सेना की तय्यारी करके स्वयं युद्ध के लिये तय्यार होना।

कवित्त ॥ हालाहल उर झाल। माल मुत्तिय दुति राजै ॥
रवि कंठह जनु गंग ॥ ईस जनु सीस विराजै ॥
सुभर निडर रट्ठौर। बज्जि नीसान गराजै ॥
जैसै बज्जत डंक। बीर बढ्ढत बल ताजै ॥
मंडई मरन मन अरि कलन। चलन चित्त मन अटल हुअ ॥
सब सेन मध्य इम राजई। षह मग्गह ज्यौं जानि धुअ ॥ छं० ॥ ११८ ॥

पृथ्वीराज का कन्ह को पवाई पहिनाना।

दूहा ॥ फुनि कन्हा प्रथिराज न्रप। (१)पाव पवंग परट्ठि ॥
लेइ नहीं मन संभ मल। निठ्ठ चढ़ाईय हट्ठि ॥ छं० ॥ ११९ ॥

कन्ह का युद्ध में अपने रहते हुए सोमेश्वर के मारे जाने पर पछतावा करना।

कन्ह कहै न्रप जंगल। मोहि सजीवन भिट्ठ ॥
सोम अरिन तन सद्दयौ। पंजर हंस न नट्ठ ॥ छं० ॥ १२० ॥

निढ्ढुर का कन्ह को संतोष दिला कर उत्साहित करना।

कवित्त ॥ एक समें सुग्रीव। चिया न रष्यिय अप्प बल ॥
एक समै द्रुज्जोध। करन रष्ये न जित्ति षल ॥

(१) ए. कृ. को.-पाट। (२) मो.-भीमंग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक समै श्री राम। सीय बनवास अरिन ग्रहि॥
एक समै पंडवन। चीर रष्यौ न द्रोपदह॥
तुम कन्ह कंक अकलंक कहि। इष्ट रूप हम सब जपहिं॥
तुम तेज अंषि देषत नयन। मोर अप्प सम भर जपहिं॥छं०॥१२१॥
दूहा॥ निद्दुर कन्ह प्रमोधि इम। सोलंकी सीमंग॥
सुनि आए धाए दुसह। दल दारुन भीमंग॥ छं०॥ १२२॥

सेना का सज कर आगे बढ़ना।

गाथा॥ जाइ संपते स्हरं। पट्टन सेनाय मंड भारथ्यं॥
तातं बैर प्रमानं। बट्टे बीराइ बीर षल याइं॥ छं०॥ १२३॥

चहुआन और चालुक्य की सेनाओं का परस्पर मुठभेड़ होना।

दूहा॥ दिषादिषी दुअ सेन भय। नारि गोर गहरानि॥
कुहकबान आघात उठि। उड़िय अग्गि असमान॥ छं०॥ १२४॥
अग्ग पच्छ बाजू बियन। दल मंडै दुअ राइ॥
तत्त तुरी जे तत भरे। असि कट्टै घन घाइ॥ छं०॥ १२५॥

भीमदेव के घोड़े की चंचलता का वर्णन।

कुंडलिया॥ फिरत तुरी चालुक्क रन। बर रष्पै चिहु कोंन॥
नस चंपै न सु ढिल्लवै। ज्यों बंदर को छोंन॥
ज्यों बंदर को छोंन। मुष्प भंजै नन षंचै॥
तेज तुरी नष्पते। जानि आसन मन संचै॥
राग समंचै बाग। सीर लष्पै पति हेरै॥
लिषिय चित्र असवार। मत्त मत्ते हय फेरै॥ छं०॥ १२६॥

दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे से भिड़ना और उनका विषम युद्ध।

दूहा॥ कढ़त बैर बंकम विषम। विषम ज्वाल छिति सार॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सार सरीरन झेल नह। भए [1]निचिंत पहार ॥ छं० ॥ छं० ॥१२७॥

रसावला ॥ [2]मिले बीर भट्टं, सुरंग सुथट्टं। हवी हथ्थ छुट्टं, नरं स्हूर लुट्टं॥
छं० ॥ १२८ ॥

मनों लागि नट्टं, झरैं हड्ड फट्टं। मनों कढ [3]कंठ, बहै तेग तट्टं ॥
छं० ॥ १२९ ॥

मनों चट्ट पट्टं, सिरं गुर्ज फट्टं। फुटै दद्दि मट्टं, षगं गे उहट्टं ॥
छं० ॥ १३० ॥

परै सीस कट्टं, धपै लोह थट्टं। मुषं मार रट्टं, छुटी कन्ह पट्टं ॥
छं० ॥ १३१ ॥

अगी ज्यों लपट्टं, परै बट्ट बट्टं। धरा ज्यों रपट्टं, गजं दंत झट्टं ॥
छं० ॥ १३२ ॥

मनों कंद जट्टं, मिले बथ्थ चट्टं। मनों मल्ल हट्टं, गजं यों उहट्टं ॥
छं० ॥ १३३ ॥

मनों भीम हट्टं, ढहै ढाल बट्टं। मनों चट्ट अट्टं, लगौ तीर तट्टं ॥
छं० ॥ १३४ ॥

उरं फारि फट्टं, नचै ईस नट्टं। उमा अग्ग थट्टं, रुधं काल चट्टं ॥
छं० ॥ १३५ ॥

[4]धरं माल अट्टं, पलं गिद्धि गट्टं। लगै गैन घट्टं, बहै सुर्ग वट्टं ॥
छं० ॥ १३६ ॥

मगं मग्ग [5]थट्टं, मुकत्ती स लुट्टं। [6]रिनं षत्त फटं, ... ॥छं॥१३७॥

कन्हराय की पट्टी छूटना और वीर मकवाना से कन्ह का युद्ध होना।

दूहा ॥ पट्ट छुट्टत कन्ह चष। षल धारा धर बज्जि ॥
मानों मेघन मंडली। वीर बीजली रज्जि ॥ छं० ॥ १३८ ॥

कवित्त ॥ इत सु कन्ह चहुआन। उतह सारँग मकवाना ॥
बल बड्ढ बल बंड। जानि कंठीर लोहाना ॥

(१) मो.-तिचित्त। (२) मो.-जुंर। (३) ए. कृ. को. कढ्ढं।
(४) को.-वरं, मो.-रवं। (५) मो.-हट्टं। (६) मो.-रिषं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर कट्ठे करिवारि । भार ठिल्लिय भर भारी ॥
स्वामिधर्म सुद्दरै । बार द्दत्ती सु करारी ॥
लिष्ये जु अंक विधि कंक जिहि । आनि सपत्तिय सो घरिय ॥
अदभूत रुद्र रस विस्तऱ्यो । सु कविचंद छंदह धरिय ॥छं०॥१३९॥

मकवान का माराजाना ।

दूहा ॥ षत फट्टे सारंग ने । रस जम कन्हा वंत ॥
[1]झुक्कि पऱ्यौ मकवान रिन । गल गज्जे सामंत ॥ छं० ॥ १४० ॥

सामंतों का परक्रम और शूरवीर योद्धाओं की निरपेक्ष वीरता की प्रशंसा ।

रंडरि धर [2]सारंग की । परत पहुमि मकवान ॥
सूर सु गज्जै जंगली । भै भग्गौ अरियान ॥ छं० ॥ १४१ ॥
सिद्धि न लभ्भै सिद्धि जै । ते लद्धी सामंत ॥
छाया माया मोह बिन । विमन सुमन धावंत ॥ छं० ॥ १४२ ॥
कवित्त ॥ द्रुमति तजत बर अंत । रत्त चच्चर सी झारन ॥
अप्प अप्प संग्रहै । पार दुज्जनन उतारन ॥
सार सुगति संग्रहै । जियन सुपनौ करि जानै ॥
राति दिष्षि जंजाल । प्रात पीछे न पछानैं ॥
यों जानि सूर सद्दत रनह । बन सु अग्गि जनु वाय बसि ॥
स्वामित्त तेज तिम तन तपन । दोष न लग्गे जीर जस ॥छं०॥१४३॥
गाथा ॥ उठ्ठय आवत झारं । धारं पाहार पंति सुभटायं ॥
घहर घोष घन भट्टं । यों बरषंत बीर बंकायं ॥ छं० ॥ १४४ ॥
दूहा ॥ बहुरि न हंसा पंजरह । जे पंजर तुटि धार ॥
हंस उड़ा जब [3]नट्टथीं । पंजर सार असार ॥ छं० ॥ १४५ ॥
कवित्त ॥ पहर एक भर भरह । टोप असिवर वर बज्जिय ॥
बषर पषर जिन साल । सूर सामंत न भज्जिय ॥

(१) मो.-झुझ्झि । (२) ए. कृ. को.-चालूक ।
(३) ए. कृ. को.-लट्टथी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हय हय हय उच्चार। घाय घायल घट गज्जिय ॥
चह चह चबंक बजिय। तुट्टि पाइक बिन तज्जिय ॥
रोस रसि वसिय सामँत रसिय। अयुत युद्ध उद्वह गतिय ॥
सामंत सूर दिसि सुर लरत। कहत धन्य राजन रतिय ॥छं०॥१४६॥

रणक्षेत्र की सरित सरिताओं से उपमा वर्णन।

गाथा ॥ साभर मती सरित्तं। गुज्जर पंडेव धार धारायं ॥
दुश्र तद रुधिर उपट्टं। वहै प्रवाह हथ्थियं बाजं ॥ छं० ॥ १४७ ॥

दूहा ॥ हथ्थि वाजि नर भर बहत। सिंघनि धुनि गरजंत ॥
एक घरी अदभूत रस। रुद्र भयो विसमंत ॥ छं० ॥ १४८ ॥

मोतीदाम ॥ मिले चहुआन सु सत्तय बीर। तजै भव मोह भजै षग श्रीर॥
झरै सिर झार दुधार प्रवाह। परें रन में ज्युँ मदंध गवार ॥
छं० ॥ १४९ ॥
उठै धर श्रोनिय छिंछ उतंग। सु पावक ज्वाल मनों गिरि शृंग ॥
उड़ै घन सार झनंकत षग्ग। मनों जुग जुग्गिनि लग्गिय मग्ग ॥
छं० ॥ १५० ॥
भनंत कि भौंर कि तीरन तार। विठं तजि पंकज फुट्टत फार ॥
परे बहु पंतिय सोलंक सेन। लियौ तिन तात सुबैर बलेन ॥
छं० ॥ १५१ ॥
इसे रन रंग सुभैत सुढार। मनों मय मत्त परे बिकरार ॥
छुटंतय तीर सुभंत सुमार। उड़ै जनु झिंगन भद्दव पार ॥छं०॥१५२
[1]दमंकत तेज सु बंकिय बज्जि। रहै रन राज फवज्ज सु सज्ज ॥
॥ छं० ॥ १५३ ॥

प्रसंगराय खीची का पराक्रम वर्णन।

कवित्त ॥ षिझि षीची परसंग। समुद अरि ग्रहन कि गस्सिय ॥
बड़वानल वलिबंड। षग्ग षोहनि दल षस्सिय ॥
बढ़त सेन तेइ जरहि। पढ़त जनु भस्म कुढ़ी हुय ॥

(१) ए. कृ. को.-मदंकत।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहं तहं जंगल सूर। कढ्ढि सुष सकै न आन कुय॥
कर पच मंच जुग्गिनि जगहि। रजि पलहारिय पुट्ठ विन॥
चमरैत बैत जनु किंसु बन। इम तन रज्जिय सोभ तिन॥छं०॥१५४॥
षिझ्झि नरिंद हय नंषि। बज्जि षुरतार कंपि भुअ॥
अष्ठ सु चल [1]दस विचल। कंपि संपात पात हुअ॥
उठिय [2]मुष्प मुछ बंक। सीस लग्गौ असमानं॥
पंषि जान पावै न। करहि कुंडल कंमानं॥
घरि एक घावि विभ्रम भयौ। हाइ हाइ मच्चौ कलह॥
तिन सद्द सिंभ सिंभासनह। उघरि बीर दिष्षौ पलह॥छं०॥१५५॥
गाथा॥ यों कुट्टे सुर सारं। घावं घड़य घन सु लोहारं॥
भद्रं सूर प्रकारं। आभद्रं द्रुज्जनो ग्रेहं॥ छं०॥ १५६॥

भीमदेव की फौज का विचलना।

साटक॥ आभद्रं बर ग्रेह दुज्जन वरं, भद्रं न्वपं राजयं।
जे भग्गा सामंत बीर बसुधा, तत्तेव जीवंतयं॥
भग्गा सनेय बीर चालुक रनं, मुत्ती वरं मुक्कयं॥
अंती अंत सु अंत अंतरु [3]रतं, जुत्ती तुमंतं करी॥ छं०॥ १५७॥

शूरवीर पुरुषों के पराक्रम की प्रशंसा।

दूहा॥ काल व्याल सम कर ग्रहन। भिरत परत अरि तथ्य॥
दिव देवासुर उच्चरै। धन्न सु छचिय हथ्य॥ छं०॥ १५८॥
सूर हथ्य हथ्यिय ग्रहिग। चरत भान आनंद॥
सूरज मंडल [4]भेदिते। जोति जगत्ति न इंद॥ छं०॥ १५९॥
घट [5]घट्टै लुट्टै मुगति। छिति छुट्टै रति चाव॥
यों मत मत्ते रत्त रन। ज्यों बलि वावन पाव॥ छं०॥ १६०॥
गाथा॥ वामन दिठ्ठ सु पावं। ईसं जच्चि मुर्वीयं सहयं॥
एकक पाइक सूरं। सो जित्ते तीनयं लोकं॥ छं०॥ १६१॥

(१) ए. कृ. को.-दल। (२) ए. कृ. को.-मुछछ भुव। (३) मो.-रन।
(४) मो.-मोदिकै। (५) मो.-घुटै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामिधम्म सुध मत्तं । सुधयं मत्ताइ तत्त गुनयं मो ॥
धीरं धीर अधीरं । धीरं छुट्टेव हथ्थयं दिघ्घं ॥ छं० ॥ १६२ ॥

परस्पर घमसान युद्ध का दृश्य वर्णन ।

चोटक ॥ सुमिले चहुआन चलुक्क अनी । जु [1]बजे जनु देवय दिव्य धुनी ॥
रनकावत षग्गत हथ्थ करैं । मनु बीर जगावत बीर उरैं ॥
छं० ॥ १६३ ॥

गहि चच्चरसी चवरंग रजं । मनों भद्दव बद्दल मद्द गजं ॥
सपरै गज कंक करंन भरं । सु उड़ै जनु पंतिय पंष भरं ॥
छं० ॥ ॥ १६४ ॥

भननंकय बीरति बीर सयं । स नचै जनु रुद्रय बीर हयं ॥
ततथे ततथुंगय सार रजी । उड़ि काम किरच्चिन मंत गजी ॥
छं० ॥ १६५ ॥

पल में पल वित्तय पंच उड़ै । बहु-यौ नन कालय बीर बुड़ै ॥
मसुरत्ति सरत्ति सरत्त रसौ । सु उड़ै जनु सार सपत्ति बसौ ॥
छं० ॥ १६६ ॥

मय मंत सु मंति न दंति यता । भजि बीर डरावन साज हिता ॥
रननंकत तुंग तुरंग रनं । झननंकहि षग्ग सुमग्ग घनं ॥
छं० ॥ १६७ ॥

दुअ बीर दुहाइय हथ्थ पढ़ैं । सु बढ़ै तनु विज्जुल हथ्थ कढ़ै ॥
॥ छं० ॥ १६८ ॥

दूहा ॥ बढ़ि विज्जल सथ हत्ति कर । गुर घर घंमति वाउ ॥
देव दिषै देवत रिझै । धनि सामंत सु घाउ ॥ छं० ॥ १६९ ॥

कवि का कहना कि कायर पुरुषों की अपगति होती है ।

गाथा ॥ तब कैमास सु जुद्धं । बुधं किन्न तौनयो वारं ॥
आवत्त हत्तिय चायं । न चायं नेह नारियं बीरं ॥ छं० ॥ १७० ॥
बंचै मुगत्ति [2]न बंचै । बंचै स्वामित्त जुद्धनो बरयं ॥
सा घट घट भौ थिरयं । जंगम जुक्काय थावरं बीरं ॥ छं० ॥ १७१ ॥

(१) मो.-वने । (२) मो.-सु ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपाइ ॥ थिर थावर जंगम नह बीरं । बज्रंगी धर बज्र सरीरं ॥
बज्र घाइ आघात न छुट्टै । फिरि फिरि मुक्त रास करि लुट्टै ॥
छं० ॥ १७२ ॥

दूहा ॥ ढाहि सेन चालूक बर । घटिय सेन चहुआन ॥
दुहुं मझ्झै कोविद्द ज्यौं । धर छंडै नह थान ॥ छं० ॥ १७३ ॥

चौपाइ ॥ धूअ धूअ थानय नन छंडै । भान संझ संझ्या गुन षंडै ॥
कैबर रत्त अट्टत्तत चाई । कैवर सूर परे घन घाई ॥ छं० ॥ १७४ ॥

दूहा ॥ बजहि घाव घरियार जिम । राइन दोऊ सेंन ॥
चालुक्कह चोहान रिन । भयौ भयानक गैंन ॥ छं० ॥ १७५ ॥

पृथ्वीराज और भीमदेव का साम्हना होना और कन्ह का भीमदेव को मार गिराना ।

मोतीदाम ॥ मिले रिन चालुक संभरिनाथ । बजी कल कूह सु बज्जन हाथ ॥
ढहै गज गुंजत रोस चिकार । परें हय तुट्टि अदभ्भुत रारि ॥
छं० ॥ १७६ ॥

जहां तहां संग फुटै धर पार । बहै सर स्रोन कि जावक धार ॥
भई सिर छाह कमानन तीर । फुटै धर पंजर धुक्कि गहीर ॥
छं० ॥ १७७ ॥

भयानक भेष भयं असकंक । थलप्पल रुद्रि मची जनु पंक ॥
अदभ्भुत कंक विरच्चिय बीर । कढ़ी अस कोह भरक्किय भीर ॥
छं० ॥ १७८ ॥

उतें न्रप भीम इतें [1]चहुआन । गही कर नागनि सी असि [2]पान ॥
[3]घनद्दिन भीम रह्यौ घट जंत । सु आनि कें आज [4]पहूंचिय अंत ॥
छं० ॥ १७९ ॥

करौं धर रंडरि गुज्जर देस । हकारिय भीम भयानक भेस ॥
हहंकिय भीम न पावहि जानि । [5]बिठाउन सोमह सुर्ग ढिगान ॥
छं० ॥ १८० ॥

(१) ए. कृ. को.-प्राथिराज । (२) ए. कृ. को.-साज ।
(३) ए. कृ.को--घनद्दन । (४) मो--सिपंत । (५) मो.-वैठे ऊत ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पचारिय कन्ह सु पिथ्थ पछाय। हनै किन स्हरन निक्करि जाइ॥
कियं सुनि घाव सु संभरि वार। वही अस कंध जनेउ उतारि॥
छं०॥ १८१॥

धुकंत सु घाव कियौ भर भीम। सु रेंषसि सेष बही असि हीम॥
जयं जय जंपय देव दिवान। रही घर अच्छरि अच्छ विमान॥
छं०॥ १८२॥

धरें सिर राजन अंमर फूल। परी सुनि चालुक सेनह झूलि॥
जितं तित उट्ठहिं छिंछ अनंत। निपज्जिय षेत प्रवालिय [1]भंत॥
छं०॥ १८३॥

जितं तित हक्कत सीस धरंन। भयानक भेष बकंत बरन्न॥
कमंध करंत जितंतित घाइ। हनंत फरंत कि भूत बिलाइ॥
छं०॥ १८४॥

जितं तित घाइल घूमत सार। [2]रनंकिन छक्कि कि छक्कि गमार॥
जितं तित तर्फत लुथ्थि चिहार। [3]जलं मझ्झि डारि कै मीन कहार॥
छं०॥ १८५॥

जितं तित हथ्थिय लुट्टत भूमि। रची जनु भीम भयानक भूमि॥
जितं तित घाइल पारत चीस। लरै जनु प्रेत करी कल रीस॥
छं०॥ १८६॥

जितं तित श्रोन भभक्कत घाइ। फटै जनु नाव दऱ्याव मझ्झाइ॥
भयं इम भीम भयानक अंत। सु बैठि विमान सुरप्पुर जंत॥
छं०॥ १८७॥

भई रिन जीति जयं प्रथिराज। बजे रनयंच सबद्दय बाज॥
जपै सुर चारन गंध्रब भाट। मिले सब आनि फवज्जनि थाट॥
छं०॥ १८८॥

जयं जय सद्द सु जंपिय भेव। झरै सिर पुप्फ सु अंबर केव॥
॥ छं०॥ १८९॥

(१) मो.-नंत। (२) ए. कृ. को.-रनंमाने। (३) मो.-लठं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्ह की तलवार की प्रशंसा।

कवित्त ॥ सिलह मझ्झ षग धार। बीय उग्यौ ससि सोभै ॥
कै नव बधु नष षित्त। काम आकार अलोभै ॥
मरम बीर कत्तरी। दिसा वर तिलक पुब्ब बर ॥
कै कुंची शृंगार। बहुरि सोभै ओपम धर ॥
सोभंत चंद की कला नभ। कल कलंक सोभै न तन ॥
ढुंब्यौ जु षेत सामंत नैं। बुझ्यौ राज तामंस मन ॥ छं० ॥ १९० ॥

चहुआन का पितृ वैर बदलने पर कवि का बधाई देना।

दूहा ॥ लियौ बैर चहुआन नृप। बजि निरघोष सु घाव ॥
चावद्दिसि सेना फिरी। बर बीरां रस चाव ॥ छं० ॥ १९१ ॥

पृथ्वीराज के सामंतो की प्रशंसा।

बीरां रस बर बढ़िय भर। घट्टिय घट तन पंत ॥
जंम तजत जोगिनि सुजस। धनि सामंत सु मंति ॥ छं० ॥ १९२ ॥
गाथा ॥ लज्जी कज्ज मरिज्जैं। उदरं हत्त घाव घन घड़यं ॥
कठिन कष्य कलहंतं। मरनं पच्छ निपज्जै साइं ॥ छं० ॥ १९३ ॥
गरजि तबै वेतालं। रन रंगेव रचियं काली ॥
पलहारी पल पूरं। हूरं हूर बरन बरनाई ॥ छं० ॥ १९४ ॥

सायंकाल के समय युद्ध का बंद होना।

संझ सपत्तय हूरं। भेषं भयान भंतियं कूरं ॥
करुन बीर रस पूरं। नूरं दुअ सेन दिष्षाइं ॥ छं० ॥ १९५ ॥
दूहा ॥ राति रहे तिन रनह मैं। सब सामंत [1]षट हूर ॥
धाइ रहै घट घाइ सों। भयौ प्रात बर नूर ॥ छं० ॥ १९६ ॥

प्रभात समय की शोभा वर्णन।

कवित्त ॥ निस सुमाय सत पच। मुक्कि अलि [2]भ्रम तक सारस ॥
[3]गय तारक फटि तिमर। चंद भग्यौ गुन पारस ॥

(१) ए. कृ. को.-सत। (२) ए. कृ. को.-भ्रमन। (३) ए. कृ. को.-गंत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देव क्रम्म उघघरहि। बीर बर क्रम्म सुनिज्जह॥
सोर चक्र तिय तजिय। नयन घुघघू रस भिज्जह॥
पहु फट्टि फट्टि गय तिमर नभ। बजिग देव धुनि संष धुर॥
भय भान पनान न उघऱ्यौ। करहि [1]रोर द्रुम पष्प तर॥छं०॥१९७॥
सरद इंद प्रतिव्यंब। तिमर तोरन किरनिय तम॥
उग्गि किरन वर भान। देव बंदहि सु सेव क्रम॥
कमल पानि सारथ्थ। अरुन संभारति रष्षै॥
जमुन तात जम तात। करन कंचन कर बरषै॥
ग्रीषम जवास बंध्यौ कमुद। अरुन बरुन तारक चसहि॥
सामंत सूर दरसन दिषिय। पाप धरम तन बसि लसहि॥छं०॥१९८॥
मुरिल्ल॥ के विगया महि मंडल सूरं। षग षंडे बर बीर सपूरं॥
हनिग राव भीमंग सु हथ्थं। बढ्ढी किति जिति मनमथ्थं॥
छं०॥ १९९॥

रणक्षेत्र की सफाई होकर लाशें ढूंढ़ी गईं।

कवित्त॥ भिरिग सूर सामंत। लुथ्थि पर लुथ्थि अहुट्टिय॥
सघन घाव पम्मार। बीर बीरां रस जुट्टिय॥
[2]बढ़वि सेन दोउ बीर। षेत ढुंढ्यौ न बीर दुहुं॥
उतर भुम्मि भारथ्थ। सार नंष्यौति सार मुह॥
बय ध्यान मान सम स्याम दिष। किय कीरत्ति अचल कलह॥
सामंत सूर सम सूरतन। कवि सु चंद जंपै बलह॥ छं०॥ २००॥

युद्ध में मरे हुए सूरवीर और हाथी घोड़ों की संख्या।

डेढ हजार तुरंग। परे रन बीर बीर भट॥
अड्ड सहस हथ्थी प्रमान। आरुहिय मेघ घट॥
पंच सहस षरि लुथ्थि। दंत सों अंत अलुझिझय॥
दइय काल संग्रहै। लिषे बिन कोइ न भुझिझय॥
दै घरी श्रोन बरषंत धर। पति पहार घर डोलयौ॥
सामंत सूर स्वामित्त पति। जीभ चंद जस बोलयौ॥ छं०॥ २०१॥

(१) ए. कृ. को.-रोम। (२) ए. कृ. को.-चढ़वि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार की असारता का वर्णन।

है संसार प्रमान। सुपन सोभै सु वस्त सब॥
दिष्टमान बिनसिहै। मोह बंध्यौ सु काल अब॥
काल सत्य षट्टीक। आज बंध्यौ नर ग्रेही॥
दया देह संभवै। दया बंधै तिन देही॥
सामंत सूर साध्रम्म धनि। सज्जिय भज्जिय जानियै॥
संसार असत आसत्त गति। इहै तत्त करि मानियै॥ छं०॥ २०२॥

दूहा॥ बँध्यौ भीम जब राज प्रथि। बैर लियौ षगबाहि॥
दोहित संजम सूर कौ। कीनौ कचरा राइ॥ छं०॥ २०३॥

दस बंदर कचरा दिये। दियौ चमर छत्र साज॥
चौरासी बंदर महै। और रषै प्रथिराज॥ छं०॥ २०४॥

भोम दई दीनों तिलक। लीनो कचरा संग॥
*प्रथीराज दिल्ली चले। काढ़ि बैर अनभंग॥ छं०॥ २०५॥

गुजरात पर चढ़ाई करके एक मास में पृथ्वीराज का दिल्ली को वापिस आना।

कवित्त॥ तात बैर संग्रह्यौ। जीति जैपत्त सु लिन्नौ॥
ढीली पत्तौ राज। कित्ति संसार स भिन्नौ॥
न्त्रिप संधव (१)सो उदर। सोइ सामंतनि रष्षिय॥
एक (२)मग्ग उग्रहै। एक मग्गह रस भष्षिय॥
पंचमी दिबस रवि वार बर। इंद्र जोग तहां बरति तिय॥
दिन चढ़ै राज प्रथिराज जय। जै हय गय नर भर समय॥छं०॥२०६॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके भोलाराय भीमंग बधो नाम चौवालीसमो प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ४४॥

*छन्द २०३ से २०५ तक मो.-प्रति में नहीं है।

(१) मो.-जो। (२) ए. कृ. को.-मया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथसंयोगिता पूर्व जन्म प्रस्ताव लिष्यते ॥

(पैंतालिसवां समय।)

पृथ्वी का इन्द्र प्रति वचन ।

दूहा ॥ कहै चंडि सुरपति सुनहि । धरनि [1]अघावहु लोहि ॥
रामाइन भारथ्थ [2]छुध । रही निहारै तोहि ॥ छं० ॥ १ ॥

इन्द्र का उत्तर देना ।

कवित्त ॥ [3]सा वसुमति बर चवै । सुनहु बर चंड दंड सुर ॥
रामायन रन वद्द । राम रावेन भान [4]भुर ॥
[5]धर मुष्षै क्यों [6]रहै । कहन हर हार तार गर ॥
ह्वर समर सुर धष्षि । अष्षि जन पष्षि तष्षि कर ॥
धक धार सार करिवार कर । मार मार मुष उच्चरिय ॥
असुचर अचंभ चव मंस चर । रुधिर केम अचिपत परिय ॥छं०॥२॥

दूहा ॥ कर जोरैं सुर राज सों । कहत असंभम बात ॥
कोपि गोप उरगनि गरति । कीन श्रोन आघात ॥ छं० ॥ ३ ॥

तदनुसार राम रावण युद्ध ।

सिर स्यंदन लोचन अलग । घोरन अनि जग घोर ॥
बरषि बीर रस बहुल सर । सोसि सार रत धोर ॥ छं० ॥ ४ ॥

राम रावण युद्ध का आतंक ।

हनूफाल ॥ हक हक्कि देव अदेव । धर कंपि धर धरकेव ॥
पिठ कमठ कट्ठ करुर । अत कजत काइर नूर ॥ छं० ॥ ५ ॥

---

(१) मो.-अवावहि । (२) मो.-वृध । (३) मो.-सच्च सुमति ।
(४) मो.-सुर । (५) मो.- तुम । (६) मो.-रहौं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलि मध्य बीर करूर । जग षग्ग लग्गि [1]गरूर ॥
पथ पथ्य अंमर हूर । दह दिग्ग सुष्षम [2]नूर ॥ छं० ॥ ६ ॥
चवअंत अंत नमंत । छुय लोक चामर जंत ॥
बिम्मान [3]मानिय रूढ़ । [4]अंबरन रचिय गूढ़ ॥ छं० ॥ ७ ॥
छत [5]बिछति [6]रघु लछिराय । रथ निगछ सुर हय चाय ॥
भाल भयंक जाम अतंक । सेन सु भूमि सेन पतंक ॥ छं० ॥ ८ ॥
बातन तात तेज अपान । उपट उपट्टि दीन सु घान ॥
लगि रघुपग्ग अंग उतंग । गो परिवान दग्गि पतंग ॥ छं० ॥ ९ ॥
सुर सुर राज सोच दिवांन । जय जय अच्छि कच्छि बिमान ॥
॥ छं० ॥ १० ॥

मुरिल्ल ॥ अंमर जय जय सद्दिय अंमर । रेनि ऐनि अक बद्दिय संमर ॥
संमर अंमर [7]कौतिक जच्छिन । छाय छलं छिति भद्र सु पच्छनि ॥
छं० ॥ ११ ॥

गीता मालची ॥ सुमिरंत सुमिरिय मंच मूरध उरध हंकह धक्कयं ॥
* किल किलकि दनुज कि यच्छ भूत कि जलकि किल्लय कल्लयं ॥
बक [8]बकय डोंरू डमर अंमर चमर बपुअस पंगुरं ॥
झलमलत भाल बिसाल बिधु बर अंब रालक अंमरं ॥ छं० ॥ १२ ॥
जट बिकट तट जल उछ्रत हलि हलि प्रजलि नलिनिय चच्छयं ॥
[9]चव अग्ग सट्ठिय चवति चवदिसि पत्त जोगिनि कच्छयं ॥
भुअ इंद जीति सभीति ह्वै अरि अभै लच्छिन जाइयं ॥
उड़ि अस्त्र अंग सु सस्त्र निसजर गिरित गिरधर छाइयं ॥ छं० ॥ १३ ॥
बिनि रंग अच्छरि व्योम व्योमनि ताल बाल बितालयं ॥
सुर श्रवत श्रम जल चवत संमर पानि अंजुल मालयं ॥
छं० ॥ १४ ॥

(१) ए. कृ. को.-करूर । (२) ए. कृ. को.-तूर । (३) मो.-मानिन ।
(४) ए. कृ. को.-अंमरन । (५) ए. कृ. को.-बिछकि ।
(६) ए.-रघु । (७) ए. कृ. को.-कौतक ।
* मो.-किल किलकि दनुज कि दनुज कि जल के किलयति कल्लयं ।
(८) ए. कृ. को.-बहुय । (९) ए..अब ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ पजलिंदग चवरंग। छत्त रत छिंछ छाइ भर ॥
अग्ग रित्ति रिति राइ। चाइ नक कोप रंग बर ॥
निसचर बन चर चमर। अरिन लग्गे अरि [1]धाइन ॥
जुत्त तत्त करि सीस। पाइ कर कंजन छाइन ॥
अरि इंद्रजीत भय भीत ह्वै। भूत भंति तंडव चरनि ॥
किल किलकि अमर अंजुल पहुय। लच्छि राइ मूरध धरनि ॥
छं० ॥ १५ ॥

ऊधो ॥ चढ़ि [2]चढ़ि गूढ़ मंच अमंच। हक्कि सु हक चक्रिय वंत ॥
नत नुत्त चाप सु इष्ष। सरसाइ भू भरतिष्ष ॥ छं० ॥ १६ ॥
देह तिस्हल सेल [3]सबान। बलि मुष उरवि सेज सजान ॥
वेस निसंक स्यंदन रूढ़। वंकवि कूल रासिव स्हढ़ ॥ छं० ॥ १७ ॥
कंपिय कोपि कंप करूर। नागति गोपि गरनि गरूर ॥
अनुचित लच्छि रघुपति चेत। किंनर नाद नारद केत ॥छं०॥१८॥
फिरि परदच्छि दच्छिन देव। त्रिभुवन स्वामि अमित अनेव ॥
हरि हर हर न होरन ताप। निकट निकंठ काटत जाप ॥छं०॥१९॥
आसन असन अनल [4]गरूत। रघुपत्ति रघुकुल धूत ॥
धारत धरनि धारनि हेत। सोपन करहु घोरन चेत ॥ छं० ॥ २० ॥
राघव धरन [5]प्रषन प्रचाल। षग सुर गवन कित्ती काल ॥
तजि [6]भज्जि अहि गन बान। जय जय चवत सेवग यान ॥छं०॥२१॥

दूहा ॥ तजी तूझ भजि भजि सरै। भजि भजि रघुपति रूढ़ ॥
गोप गोप गर गर [7]गरनि। छिन इक गुनपति गूढ़ ॥ छं० ॥ २२ ॥

कवित्त ॥ [8]निसि निसंक स्यंदन सु। वंक कल कंक तंग लुपि ॥
चढ़िय देव मंडल मरुत्त। आवन्न धूप धुपि ॥
कृष्ष गोप गहि गोप। डारि ऊरन्न अंग लगि ॥

(१) ए. को.-धाइय, छाइय। (२) मो.-चढ़ि। (३) ए. कृ. को.-तिवान।
(४) मो. गत रूत। (५) ए. कृ. को.-प्रसन।
(६) ए. कृ. को.-भाति। (७) मो.-सिरनि।
(८) मो.-निकसि संक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाष साष म्रग मंकु। सेन भुमि सेन प्रान दगि ॥
जय जयति सद्द नारद चवत। कर किन्नर तारच्छि भजि ॥
तजि पासि पास तन दर बिकर। कहि रघुपति [1]जम भ्रित्त रजि ॥
छं० ॥ २३ ॥

मेघनाद और कुम्भकर्ण का युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ भज्जि ताप तन मानि मन। बाल व्याल उड़ि सेन ॥
सोषि स्रोन तद्दिन सरनि। रह्यौ राज बिनु चेन ॥ छं० ॥ २४ ॥
लच्छि राइ भर पंच मिलि। मंडि सरस धनुबान ॥
इंद्रजीत भर अवनि परि। छयौ अमर असमान ॥ छं० ॥ २५ ॥
हय बज्जी दस मुष दरनि। भय मंदोदरि बाम ॥
जाइ जगावहु कुंभ कहुं। हनै रिपुन घन जाम ॥ छं० ॥ २६ ॥
उठ्यौ कुंभ अवनी सु रर। करि जग्गत घन रीस ॥
सुर किंनर धुनि सबद बर। पिष्षहु पग्गन सीस ॥ छं० ॥ २७ ॥

गाथा ॥ दानं प्रमद प्रमादं। परयं भर कुंभ बद्धि लासायं ॥
सम गुच्छन धर धारं। चढ़ि चढ़ि अटन रटन [2]रित जेयं ॥
छं० ॥ २८ ॥

विज्जुमाल ॥ किलकि किलकि कूक। बज्ज दनु गन्न भूक ॥
तजि बद्द बध्धन थूर। भज्जि सुरगन भूर ॥ छं० ॥ २९ ॥
कहकि कुंभ कनंक। चिहूं दिग्ग बर नंक ॥
मुरि [3]मुरि मेर षंड। जुर छरि जूर मंडि ॥ छं० ॥ ३० ॥
रन रेन छय स्हूर। मिल कहक वित्तूर ॥
दह दिग्ग जगि अग्ग। बर मंस रम लग्ग ॥ छं० ॥ ३१ ॥
नचि नचि भय भूत। रमत सुरेस स्हूत ॥
चव चव [4]सद्धि ताल। भवति भल कराल ॥ छं० ॥ ३२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-जुम। (२) ए. कृ. को.-जित।
(३) ए. कृ. को.-मर। (४) ए. कृ. को.-साद्धि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[१]कुपित कुंभक रष्षि। गरुअ गड्ढ गरषि॥
थेइ थेइ पुर नाद। वितल उचित माद॥ छं०॥ ३३॥
प्रगटि [२]दानव दल। प्रलय सम अस मल॥
गहबर धुन पान। रोस रघु असमान॥ छं०॥ ३४॥
रिन तत नित्त पंच। तनकि तनकि रंच॥
उड़ि भर भुज भूर। तरसि [३]मष वतूर॥ छं०॥ ३५॥
पच्छ छिन छिनकंन। करि रघुराय रंन॥
ऊरध भूरध षंड। मरि कुंभ राइ दंड॥ छं०॥ ३६॥
समर अंमर ऐन। अवत चवत चैन॥ छं०॥ ३७॥

दूहा॥ पऱ्यौ कुंभ धरनी सु धर। षंड षंड तन तेह॥
मानौं प्रबल सनूर ढरि। चढ़ि पंछी नल छेह॥ छं०॥ ३८॥
सजि डंबर घन सीस पर। सज स्यंदन [४]षर षेह॥
चढ़ि दससिर रघुपति विहसि। रहसि बढ़ी रन केह॥ छं०॥ ३९॥
हल हल सेनन चर चरन। उड़ि आडंबर धूरि॥
बजे तूर बनचर चमू। देव पंचजन पूर॥ छं०॥ ४०॥

राम रावण का युद्ध।

गीतामालची॥ मौसद्द नद्दि निसान स्यंदन सेन अंकुरि सेनयं॥
झिलि रहसि रघुपति राइ रावन गज्जि आनक ऐनयं॥
थिर भान व्योम विमान निज्जर जच्छि रच्छिन अच्छनी॥
[५]नग नाग नागिनि पच षचन मत्त मत्तन [६]वच्छनी॥ छं०॥ ४१॥
किल किलक काल विताल मालनि व्याल जालन तंडवं॥
डव डवरू डोरुँअ करह किन्नर करत कुंडल षंडवं॥
मिलि दैत्य वंस अदैत्य अंसह संधि सिंधुर नद्दयं॥
गन गिद्धि अंबर छाइ पच्छिन डंकि डंकि नरद्दयं॥ छं०॥ ४२॥
तन तुनकि चामर चाप चंपिय ताप कंपिय तिप्पुरं॥

(१) मो.-कुपित। (२) ए. कृ. को.-दानव। (३) मो.-सम चल नूर।
(४) ए. कृ. को.-षन। (५) ए. कृ. को.-गन।
(६) ए. कृ. को.-चच्छनी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तर तरकि चिक्कुट चक्र चक्रिय धक्क पंक्रिय ईसुरं ॥
उड़ि चक्र स्यंदन चूर चामर षेर चच्चर षंडयं ॥
दानव दुरासय पलं आसय समर घन बर मंडयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
धुर सेत पीत सुरंग [1]सातक स्रोन नील अकासयं ॥
जनु जून वृज भूभंति अंतर पत्त रिति निल तासयं ॥
परि सूर सुरगन चवत जय सुर अंचि कर मुकतामरं ॥
बढ़ि कंध दस कुल पित्त षंचर बढ्ढि बर रन [2]धूमरं ॥ छं० ॥ ४४ ॥
गिरि गिरिन दस ग्रव सोषि सर खिग रह्यौ राज अभष्षयं ॥
सुरपत्ति मुष अग मंडि जंपिय राम रावन कथ्थयं ॥ छं० ॥ ४५ ॥

रामचन्द्र जी की उदारता।

दूहा॥ चवत राज सुरराज सौं। इह रघुकुल ब्यौहार ॥
लेत लंक छिन इक लगी। देत न लग्गी बार ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कहै देवि सुर देव सौं। लंक भभीषन अप्पि ॥
रघुपति से सांई सिरह। तूं किम रही अधप्प ॥ छं० ॥ ४७ ॥

इन्द्र का वचन।

घन तोमर अरि दल अलय। सस्त्र सस्त्र बर मंच ॥
तिन रत चपत न छिन भई। ढबि ढुरि ढुंढि भ्रमंत ॥ छं० ॥ ४८ ॥
अब कनवज दिल्ली बयर। दलन दुअन बड़ षेद ॥
रुंड मुंड षंडन षलन। विधि बंधी बदि बेद ॥ छं० ॥ ४९ ॥
चंडि बरन पुज्जाइ चिष। मंडि मुंड डर माल ॥
जो कनवज दिल्लिय बयर। भरहि पच रज बाल ॥ छं० ॥ ५० ॥

इन्द्र का एक गंधर्व को आज्ञा देना कि वह पृथ्वीराज और जयचन्द में शत्रुता का सूत्र डाले।

कवित्त॥ मति प्रधान गंधर्ब। देव दिव राज बुलायौ ॥
कलह करौ भारथ्थ। मत्ति अप्पनी बढ़ायौ ॥
भूमि भार उत्तार। कलह कित्तिय विस्तारौ ॥

(१) ए. कृ. को.-सायक। (२) ए. कृ. को.-धीमरं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहुआन कमधज्ज । बीर बिग्रह जग्गारौ ॥
करि कीर रुप कनवज गयौ । उभय दिवस दिष्षिय पुरिय ॥
बंभनिय मदन अंगन सु तरु। निसि निवास तहां उत्तरिय ॥
छं० ॥ ५१ ॥

कन्नौज की शोभा वर्णन ।

श्लोक ॥ सतयुगे काशिकादुर्गे । त्रेतायां च अयोध्यया ॥
द्वापरे हस्तिनावासं । कलौ कनवज्जका पुरी ॥ छं० ॥ ५२ ॥

गंधर्व की स्त्री का उससे संयोग के पूर्व जन्म की कथा पूछना ।

दूहा ॥ गंध्रव त्रिय प्रिय पुच्छि [1]बर । नाथ कथा समुझाय ॥
संजोगिय अवतार कहि । न्रप ग्रह ज्यों [2]जमि आइ ॥ छं० ॥ ५३ ॥

गंधर्व का उत्तर देना कि वह पूर्व जन्म की अप्सरा है ।

राज पुत्रि उतपत्त सुनि । इह अप्छरि अवतार ॥
[3]सुमन श्राप म्रत लोक महिं । हूरन करन संहार ॥ छं० ॥ ५४ ॥

कविचंद का अपनी स्त्री से संयोगिता के जन्मान्तर में शापित होने की कथा कहना ।

सुकी सुनै सुक उच्चरै । पुब्ब [4]संजोय प्रताप ॥
जिहि छर अच्छर मुनि छर्‍यौ । जिन त्रिय भयौ सराप ॥छं०॥५५॥

शिव स्थान पर ऋषि की तपस्या का वर्णन ।

चोपाई ॥ जटा बीर शंकर सिव थानं । गिरिजा गहिर गंग परिमानं॥
साधत रिष्षि तहां जर नाम । गइ दस इंद्र हन्यौ तिन कामं ॥
छं० ॥ ५६ ॥

श्लोक ॥ त्वचा इन्द्रिय नेत्रस्य, नासा कर्णय जिह्वया ॥
हृदय जंघ सुमासश्च, दस इन्द्रिय पराक्रमं ॥ छं० ॥ छं० ॥ ५७ ॥

(१) मो.-रस ।
(२) ए. कृ. को.-जम ।
(३) ए. कृ. को.-सुमत ।
(४) मो.-संजोग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सुन्दर स्त्री को देख कर ऋषि का चित चंचल होना।

[1]जहं प्रसाद सिव निकट प्रमानं। मनों ईस तहं आतम जानं॥
गुरु मुक्ती यह भम्यौ विसेषं। षिमा नाम एक सुंदरी देषं॥
छं० ॥ ५८॥

कवित्त ॥ बाल नाल सरिता उतंग। आनंग अंग सुज॥
[2]रूप सु तट मोहन तड़ाग। भ्रम भए कटाच्छ दुज॥
प्रेम पूर विस्तार। जोग मनसा विध्वंसन॥
दुति ग्रह नेह अथाह। चित्त करषन पिय तुट्टन॥
मन विसुद्ध बोहिथ्थ बर। नहि थिर चित जोगिंद तिहि॥
उत्तरन पार पावै नहीं। मीन तलफि लगि मत्त विहि॥छं०॥५९॥

उक्त स्त्री का सौंदर्य वर्णन।

पद्धरी ॥ दिष्टी सु दिष्ट विषया कुमारि। जनु लता लोंग कै काम धारि॥
मनमथ बजार मनमथ्थ.धाम। मनमथ्थ तड़ाग कै प्रेम [3]वाम॥
छं० ॥ ६०॥

जीवनि सु मुत्ति छिन एक रंग। मन मीन फंद जनु चरि अनंग॥
षंचन कितक्कि कुचि इष्ट जानि। रति रचिय सचिय जनु सोभ सानि॥
छं० ॥ ६१॥

दिठि दिठ्ठ टरिय नह नेन चास। चक्कोर चंद जनु अमिय ग्रास॥
देषंत नेन नह चेन अंग। विंध्यौ सु वाम नेनन निषंग॥
छं० ॥ ६२॥

स्वर भंग कंप वेपथ्थ पथ्थ। फुरकंत नयन इम भय अवथ्थ॥
पब्बय समान मन नेन भिंटि। फुथ्यौ सु दूध मनु छाछ छंठि॥
छं० ॥ ६३॥

बद्दल समूह सब गगन छाइ। फट्टे कि जानि छिन छुट्टि बाइ॥
मुरछाइ रह्यौ इम ब्रह्म बाल। व्यापंत सीत जनु तरु तमाल॥
छं० ॥ ६४॥

(१) मो.-तहां। (२) ए. कृ. को.-सूप। (३) ए. कृ. को.-वानि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साटक ॥ जा जीवंत पसार पार सुमती, रत्तं हरी ध्यानयं ॥
षिमया कामय चित्त सित्त षिमया, षिमया रसं [१]हृद्वयं ॥
सा सुपनंतर दीह रत्ते मुषं, प्रानंपि षिमया रुषं ॥
ना सुझ्झै बिय ध्यान [२]पन्नर [३]रुषं, षिमयाय षिमया मुषं ॥ छं० ॥ ६५ ॥

परंतु ऋषि का पुनः अपने मन को साधकर वदरिकाश्रम पर्य्यंत पर्य्यटन करके घोर तप करना।

गाथा ॥ षिमया सुष मय भ्रमियं। रमयाइ अंग कीटयो मनयं ॥
चित्त न जिन लषि भुअंगं। सो भिद्दव काम वामाइं ॥ छं० ॥ ६६ ॥

कवित्त ॥ प्रथम तिथ्थ अड़सट्ठि। न्हाय बद्री [४]तप रत्तौ ॥
जठरागनि करि चपत। छुधा निद्रा चस जित्तौ ॥
हिम रित हिम तन तुटहि। पंचगिन ग्रीसम सहयौ ॥
बरषा काल प्रचंड। [५]मेघ धारह बपु [६]बहयौ ॥
कर धूम पान मुष अद्ध रहि। कर अंगुष्ठ नर देव हरि ॥
सत बरष ध्यान लग्गौ भयौ। जोति चित्त चिहुटी सुहरि ॥
छं० ॥ ६७ ॥

ऋषि के तप का तेज वर्णन और उससे इन्द्र का भयभीत होना।

दूहा ॥ तप बल कंपत सुभर भुअ। रह्यौ ध्यान दिव देव ॥
सुत्त तेज द्रिग सिथल हुअ। लह्यौ सुरप्पति भेव ॥ छं० ॥ ६८ ॥
तब चिंतिय सुरराज मन। का विचित्र वर वाम ॥
आदि अंत सोधिय सकल। अप्छरि अप्छरि नाम ॥ छं० ॥ ६९ ॥

इन्द्र का अप्सराओं को आज्ञा देना कि वे तेजस्वी तापस का तप भ्रष्ट करें।

(१) मो.-वृज्जयं। (२) कृ.-पडर।
(३) ए. कृ. को.-दृग। (४) ए. कृ. को.-पति।
(५) ए. कृ. को.-मेय। (६) ए. कृ. को.-सहयौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोलि घृताची मेनिका। रंभ उरबसी रूप ॥
जानि सुकेस तिलोत्तमा। मंजुघोष सुनि भूप ॥ छं० ॥ ७० ॥
अति आदर आदर कियौ। कह्यौ आप इह बैन ॥
छलह सुमंतन जाइ कै। रहै राज सुष चैन ॥ छं० ॥ ७१ ॥

अप्सराओं का सौंदर्य्य वर्णन।

गाथा ॥ नयनं नलिन नवीनं। गवनं गयं मत्त तुलायं ॥
बैनं पर भ्रत दीनं। झीनं कट्टि म्रगं राजेसं ॥ छं० ॥ ७२ ॥
अर्य्या ॥ *सपत सुर गान निपुना। न्रत्य कला कोटि आलया मानं ॥
तार तरलेव भ्रमरी। भ्रमरी भ्रमरी सय सयसं ॥ छं० ॥ ७३ ॥

मंजुघोषा का सुमंत ऋषि को छलने के लिये मृत्यु लोक में आना।

कवित्त ॥ भो आयसि सुरराज। मंजुघोषा सुनि बत्तिय ॥
म्रत्य लोक में जाहु। सुमति छल छलौ तुरत्तिय ॥
दुसह तेज को सहै। मोहि आसन डर डुल्लिय ॥
सेस संकि कलमलिय। नेन तिय तालिय षुल्लिय ॥
जल षंचि सुरन हिय दुष्ष धरि। नहिन सु रस उड़गन भुअन ॥
तप ताप देव सब कलमलत। सुकज काज रष्षहि दुअन ॥
छं० ॥ ७४ ॥
दूहा ॥ षग षगपति आसन ग्रह्यौ। गए बित्ति बहु काल ॥
रंभ षिमा सम रूप धरि। आय [1]सपत्ती ताल ॥ छं० ॥ ७५ ॥
मानि बैन सुरराज लिय। नरपुर पत्तिय आइ ॥
जहं ताली लग्गी सुमति। तहं नूपुर बज्जाइ ॥ छं० ॥ ७६ ॥

मंजुघोषा का लावण्य भाव विलास और शृंगार वर्णन।

अप्छरि अट्ठ विमान [2]बनि। कुसुम समान सरीर ॥
नग जगमग अँग अँग सुबनि। कनक प्रभा दुति चीर ॥ छं० ॥७७॥

*छन्द ७३ मो.-प्रति में नहीं है।
(१) ए. कृ. को.-संपतौ। (२) ए. कृ. को.-रचि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नराज ॥ बनी विमान कामिनी। मनों दिपंत दामिनी ॥
दुती उपंम लोभयं। कि इंद्र चाप सोभयं ॥ छं० ॥ ७८ ॥
उरंबसी सु केसयं। तिलोत्तमा सुदेसयं ॥
सु मुंजघोष रंभयं। घृताचि मेनका सुयं ॥ छं० ॥ ७९ ॥
सुरंग अंग सोहनी। मनों कि अष्ट मोहनी ॥
मुसक्कि मंद हासयं। विगास कौल भासयं ॥ छं० ॥ ८० ॥
सु नेन डोल भोंरही। कि कौंल भौंर झोरही ॥
तिहाइ भाइ ठानही। जुगिंद चित्त [1]भानही ॥ छं० ॥ ८१ ॥
मरोरि अंग मारहीं। सकेलि सुद्ध सारहीं ॥
विलास नेन लग्गवै। तिमुच्छि काम जग्गवै ॥ छं० ॥ ८२ ॥
विराज मान मोहनी। सु कौंल माल सोहनी ॥
चवंत बेन माधुरी। न कोकिला सु माधुरी ॥ छं० ॥ ८३ ॥
प्रवीन कोक केलयं। कुकी कुकेकि केलयं ॥
सुभाय वास अंग की। सुगंध [2]गंध भंग की ॥ छं० ॥ ८४ ॥
विमान छंडि उत्तरी। मनों कि चित्र पुत्तरि ॥
सुमंत मुष्ष ठट्ठियं। प्रवान पान [3]पट्ठियं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
दिषत मेंन लग्गयं। जिहाज जोग भग्गयं ॥ छं० ॥ ८६ ॥

अप्सरा के गान से ऋषि की समाधि क्षणेक के लिये डगमगाई।

दूहा ॥ करिय गान विविधान सुर। ताल काल रस भाइ ॥
छिनक पलक मुष उघ्घरिय। अच्छरि रही लजाइ ॥ छं० ॥ ८७ ॥

अप्सरा का शंकित चित्त होकर अपना कर्त्तव्य विचारना।

उलटि गयै सुरपति हंसै। [4]रहैं रषीस रिसाइ ॥
इह चिंता मन उप्पज्जिय। फिर दिव लोक सुजाइ ॥ छं० ॥ ८८ ॥
जौं न छरौं तौ देव डर। रिषि तप जप्प प्रचंड ॥
[5]दुहुं विधि संकत कामिनी। स्राप ताप सुर दंड ॥ छं० ॥ ८९ ॥

(१) ए. कृ. को.-तानहीं। (२) ए. कृ. को.-भंग।
(३) ए. कृ. को.-ठट्ठियं।
(४) मो.-रह रिषि भाय रिसाय। (५) मो.-दादु विधि संक न सामिन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उलटि गई सुर घरनि घर। देवन देव बुलाइ ॥
इंद्र रोस कै डर डरौ। आप ताप डर पाइ ॥ छं० ॥ ९० ॥

तब तक ऋषि का पुनः अखंड रूप से ध्यानमग्न होना।

मन माया भ्रम दूरि करि। फिरि लग्यौ रिषि ध्यान ॥
ब्रह्म जोति प्रगटी उरह। रंभ प्रगट्टिय आन ॥ छं० ॥ ९१ ॥

मुनि की ध्यानावस्थित दशा का वर्णन।

कवित्त ॥ बहुरि गई रिषि पास। सांस जिन गहिय उरध गति ॥
मूल पवन द्रिग बंधि। गरजि ब्रह्मंड मेघ अति ॥
बंक नाल जल षंचि। [1]सींचि उर कमल प्रफूल्लिय ॥
ब्रह्म अगनि प्रज्जरिय। पाप करि भसम समूल्लिय ॥
तब मारग सुज्यौ मीन जल। पंछि षोज पायौ सगुन ॥
सुनि तार सु बज्जै करन बिन। सद्द स्वाद छंडिय त्रिगुन ॥ छं० ॥ ९२ ॥
तालिय लग्गिय ब्रह्म। लीन मन जोति जोति मलि ॥
कमल अमल उघ्घरिय। हृदय अवनीय धरनि [2]अलि ॥
त्रिकुटिय ताटंक लग्गि। भ्रगुटि गंगा तन मंडिय ॥
रिष्षि सवद्द श्रवन्न। नद्द अनहद्द सु बज्जिय ॥
अधमुष ऊरध चरन करि। गति पत्तिय मंडल गगन ॥
ता रिषहि जगावत सुंदरिय। रच्यौ सु धुनि मझ्झह गगन ॥
छं० ॥ ९३ ॥

वाद्य बजना और अप्सरा का गाना।

दूहा ॥ जंच मृदंग उपंग सुर। धुनि झंझर झनकार ॥
करत राग श्रीराग सुर। कर बर बज्जत तार ॥ छं० ॥ ९४ ॥
चट्टुवात माठा धुआ। गीत प्रवंध प्रवीन ॥
[3]उघटत ललिता ललित पिय। पुजवति सुर कर बीन ॥ छं० ॥ ९५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सिंचि कमर उर फूलिय।
(२) ए. कृ. को.-उर। (३) ए. कृ. को.-उघटन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्लोक ॥ [1]मृदंगी दंडिका ताली। धुरधुरी स्तुति काहली ॥
गीत राग प्रबंधं च। अष्टांगं नृत्य उच्यते ॥ छं० ॥ ९६ ॥

मुनिका समाधि भंग होकर कामातुर हो, अप्सरा के आलिङ्गन करने की इच्छा करना।

दूहा ॥ सोर सुरनि के सुर जग्यौ। भग्यौ ध्यान जगईस ॥
चित्त चक्रित करि सोच मन। इह अपुब्ब कहा दीस ॥ छं० ॥ ९७ ॥
नूपुर धुनि श्रवननि सुनत। भई ध्यानगति पंग ॥
ताली छुट्टिय गगन मय। षुल्लिय पलक मन लग्ग ॥ छं० ॥ ९८ ॥
कहिय रिष्य सुर अच्छरी। कन्या गंध्रब जष्य ॥
कै नागिनि जनमी कुंअरि। तो सिव [2]रष्या रष्य ॥ छं० ॥ ९९ ॥

अप्सरा का अन्तर्ध्यान हो जाना।

कामातुर चिय कर ग्रह्यौ। तप जप छंडिय आस ॥
[3]हँसि छुड़ाइ कर तड़ित मन। गई अवास अयास ॥ छं० ॥ १०० ॥

मुनि का मुर्छित हो जाना, परंतु पुनः सम्हल कर ध्यानावस्थित होना।

छिन इक धर मूरछि पऱ्यौ। चित कलमल्यौ अधीर ॥
बहुर ग्यान मन आनि कै। मुनि वर भयौ [4]सधीर ॥ छं० ॥ १०१ ॥
कवित्त ॥ फिरि उत्तरि मन धऱ्यौ। हेमगिरवरह ध्यान धरि ॥
चित्त ब्रह्म लवलीन। बरष सित कियौ तेम करि ॥
छुधा पिपासा जीति। नींद निसि नसिय इंद्रि तस ॥
बहुत जतन तप कियौ। बंधि हढ़ पवन उरध बस ॥
पीवंत वाम दक्षिन मुचै। कुंभक पूरक जोग बल ॥
करि उर्द्ध चरन ध्यान सु रह्यौ। गह्यौ पंथ गगनह अकल ॥
छं० ॥ १०२ ॥

(१) मो.-मृदंकी। (२) मो.-रछ्या।
(३) ए. कृ. को.-सहि। (४) ए. कृ. को.-अधीर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविचन्द की स्त्री का अप्सरा के सौंदर्य्य के विषय में जिज्ञासा करना।

दूहा ॥ सुकी सुकह पुच्छै रहसि। नष सिष बरनहु ताहि ॥
जा दिष्षन मुनि मन टऱ्यौ। रह्यौ टगट्टग चाहि ॥ छं० ॥ १०३ ॥

अप्सरा का नख सिख वर्णन।

साटक ॥ चरने रत्तय पत्त राइ रितए, कंजाय [1]चंद्राननै ॥
मातंगं गय हंस मत्त गमने, जंघाय रंभाइने ॥
मध्यं छीन म्रगेन्द्र भार जघना, नाभिंच कामालए ॥
सिंभे सिंभ उरज्ज नयनयौ, एने ससी भालयौ ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अर्धमालची ॥ तल चरन अरुनति रत्तए। जल नलिन सोक सपत्तए ॥
नष पंति कंतिय मुत्तए। जनु चंद अछ्त जुत्तए ॥ छं० ॥ १०५ ॥
नग जरलि नूपुर बज्जए। कलहंस सबद विलज्जए ॥
गति मत्त गरव गयंदए। छबि कहत कविवर चंदए ॥ छं० ॥ १०६ ॥
गहि पिंड कनक विमानयं। रंग रंग बंदन सानयं ॥
कर करिय जंघति ओपमं। रंग फटिक केसरि सोपमं ॥छं०॥१०७॥
घन जघन सघन नितंबयं। छिन काम केलि विलंबयं ॥
कटि सोभ बर म्रग राजयं। कहि चंद यौं कविराजयं ॥छं०॥१०८॥
बनि नाभि कोस सुकज्जयं। मनु काम भ्रमरय रंजयं ॥
रव मधुर म्रदु कटि किंकिनी। झलमलत नग फननी [2]कनी ॥
छं० ॥ १०९ ॥
सलि उदर त्रिबलि त्रिरेषयौ। कुच जघन मंडि सु भेषयौ ॥
बनि रोमराजि सपंतयं। प्रतिबिंब बैनि सुभंतियं ॥ छं० ॥११०॥
उर उरज जलज बिराजही। कलधूत ओफल लाजही ॥
उर पुहप हार उहासियं। इक होत जोजन वासियं ॥छं०॥१११॥
गर लजति कंठतु कामिनी। कलयंठ कोक सुधामिनी ॥
रचि चिबुक बिंद सु स्यामए। जनुं कमल बसि अलि धामए॥छं०॥११२॥

(१) मो.-चन्द्रायने। (२) मो.-कली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलि पुहप तिलक सु नासिका। जनु कीर [1]चुंच प्रहासिका॥
तिन मुत्ति बेसर सोभए। ससि सुक्र मिलि रसि लोभए॥छं०॥११३॥
तस नयन षंजन कंजए। सुरराज सुर मन रंजए॥
चाटंक नग जर जगमगै। त्रिय चक्र करि ससि पर जगै॥छं०॥११४॥
त्रिय भौंह बंकित अंकुरी। जनु धनुक कामति [2]संकुरी॥
तसु मध्य तिलक जराइ कौ। [3]रविचंद मिलि रस आइ कौ॥छं०॥११५॥
गुथि केस चिक्कन बेनियं। जनु ग्रसित अहि ससि ऐनयं॥
सित दिव्य अंमर अंमरं। नह मलिन होत अडंबरं॥ छं०॥ ११६॥
अंगवास [4]आस सुगंधयं। सग चलत मधुव्रत संगयं॥
सम उदधि मथि कीनौ हरी। फटि फन प्रगटित सुंदरी॥छं०॥११७॥

अप्सरा के सर्वाङ्ग सौंदर्य्य की प्रशंसा।

मालिनी॥ हरित कनक कांतिं कापि चंपेव गोरी।
रसित पदम गंधा फुल्ल राजीव नेंत्रा॥
उरज जलज सोभा [5]नभिकोसं सरोजं।
चरन कमल हस्ती लीलया राजहंसी॥ छं०॥ ११८॥
दूहा॥ कामालय सो संदरो। जिम अरि अग्गि अनंग॥
विधि विधान मति चुक्कयौ। कियै मेन रन अंग॥ छं०॥ ११९॥
मालिनी॥ अधर मधुर बिंबं, कंठ कलयंठ रावे।
दलित दलक भ्रमरे, भ्रिंग भ्रुकुटीय भावे॥
तिल सुमन समानं, नासिका सोभयंती।
कलित दसन कुंदं, पूर्न चद्राननं च॥ छं०॥ १२०॥

कवि की उक्ति कि ऐसी स्त्रियों के ही कारण संसार चक्र का लौट फेर होता है।

दूहा॥ न्याय छुट्यौ मुनि रूप इन। सुरति प्रीय त्रिय आहि॥
जा मोहै सुर नर असुर। रहैं ब्रह्म [6]सुष चाहि॥ छं०॥ १२१॥

(१) ए. कृ. को.-हंस। (२) ए. कृ. को.-संहरी। (३) ए. कृ. को.-रचि।
(४) ए. कृ. को.-सास। (५) ए. कृ. को.-नासिका। (६) मो.-सुभ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ इनह काज सुर धरत । सूर तन तजत ततच्छिन ॥
परत कंध नंचत कमंध । पर हनत स्वामि रन ॥
भरत पत्र जुग्गिनि समत्त । रति पिवत पिवावति ॥
चरम चष्य पल भ्रवत । पंछि जंबुक न अघावत ॥
पुनि वपु किरच्चि करतें समर । तब लहंत रस अच्छरिय ॥
तजि मोह पुत्त पुत्तिय सु तिय । बरत बरंग नभच्छरिय ॥छं०॥१२२॥

दूहा ॥ तिन मोहनि मोह्यौ सु मुनि । मोहे इंद्र फुनिंद ॥
नर नरिंद जुग जोग रत । उड़ उड़गन रवि इंद ॥ छं० ॥ १२३ ॥

अप्सरा का योगिनी भेष धारण करके सुमंत ऋषि के पास आना ।

कवित्त ॥ तीय धर्‌यौ तन जोग । श्रवन मुद्रा सु [1]फटिक मय ॥
करि अष्टंग विभूति । न्हाय जनु निकसि सिंधु पय ॥
जटाजूट सिर बंधि । दिसा दस अंमर मानिय ॥
सिंगी कंठ धराइ । जोग जंगम सिव जानिय ॥
पवनं सु अरध ऊरध चढ़ै । बंक नालि पूरै गगन ॥
धरि ध्यान सुमन नासिक धरै । रहै ब्रह्म मंडल मगन ॥छं०॥१२४॥

दूहा ॥ तजिग भोग मन जोग धरि । निकट सुमंतह आइ ॥
करिवर डँवरू डहडह्यौ । अंबर सव सिव भाइ ॥ छं० ॥ १२५ ॥

अप्सरा के योगिनीवेष की शोभा वर्णन ।

कवित्त ॥ गिरिजा पसुनह संग । गंगनह झलक अलक जल ॥
भूतन प्रेत पिचास । [2]मयन नह त्रतिय गरल गल ॥
कटिन बंधि गज चर्म । [3]पहरि अँग अंग दिगंबर ॥
नह गनेस षट बदन । पुच गननंदि भ्रंग सुर ॥
नहविय लिलाट पट तिलक ससि । व्याल न माल बनाइ उर ॥
नाहिन त्रिशूल त्रिपुरारि पल । नह कर लग्गिय धवल धुर ॥
छं० ॥ १२६ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-फटिक । (२) ए. कृ को.-नयंन । (३) मो.-पहिर अंग अंगनि वर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुनि का छद्मवेषधारिणी योगिनी को सादर आसन देकर बातें करना।

बहु आदर आदरिय। [1]अरघ आतिथि तिहि दिन्नौ ॥
करिय ग्यान गुन गोष्ट। कष्ट बहु तप करि किन्नौ ॥
डुलिग इंद्र रबि चंद्र। इंद्र सुर लोकह मानिय ॥
मो अग्गै कर जोरि। देव सब तजत गुमानिय ॥
तब्बह सु ग्यान मन उप्पन्यौ। देव दुषी करि सुष लह्यौ ॥
चिदनंद ब्रह्मपद अनुसरिय। धरिय ध्यान [2]गगनह रह्यौ ॥
छं० ॥ १२७ ॥

तपसी लोगों की क्रिया का संक्षेप प्रस्तार वर्णन।

दूहा ॥ मात गरभ आवागमन। मेटि [3]भ्रमन संसार ॥
ज्यों कंचन कंचन मिलै। पय पय मभ्क संचार ॥ छं० ॥ १२८ ॥
सोइ ग्यान तुम सों कहौं। निरगुन गुन विस्तार ॥
बरन्यौ वपु बैराट हरि। जा मुनि लहै न पार ॥ छं० ॥ १२९ ॥
पद्धरी ॥ कहौं ग्यान मंतं सुमंतं विचारौ। गहौं अद्ध मूलं उरद्धं संचारौ ॥
धरौं ध्यान नासा चिदानंद रुपं। त्रिकुट्टी [4]त्रिलोकी स्वयं जोतिरूपं॥
छं० ॥ १३० ॥
पियों बंकनालं चढ़ै दंड मेरें। सुनै सद्द अनहद्द अनटत्त टेरें ॥
धुनी अंतरं जोति जानौ गियानी। जपै मंत्र हंसं सु सोहं विनानी॥
छं० ॥ १३१ ॥
सरं नाभि मूलं सरोजं प्रकासै। दलं अष्ट [5]पद्मं तहां सो उहासै ॥
तपत्तं कनक्कं चरन्नं [6]भ्कलक्कै। दसं अंगुलं नालि हिरदै ढलक्कै ॥
छं० ॥ १३२ ॥
जिमं पुप्फ कल्ली तिमं कंज फूलै। करै जोग उद्धं धरै वाय मूलै ॥
तहां देव अंगुष्ट मानंत वासै। धरै अष्ट वाहं बसै देव बासै ॥
छं० ॥ १३३ ॥

(१) मो.-अरध। (२) मो.-गगनं। (३) ए. कृ. को.-विभ्रमन।
(४) मो.-त्रलोकं। (५) मो.-संतं। (६) ए.-चलक्कै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दलं अष्ट कंजं सु रुदान देवं। रहै मध्य भानं अलष्षं अछेवं॥
रहै भान मध्ये ससी सो निरत्तं। ससी मध्य अग्गी रहै रूप रत्तं॥
छं० ॥ १३४ ॥

सु ज्वाला मई तेज तामें विराजै। तहां पिट्ठ सिंघासनं देव साजै॥
रतन्नं जरे बज्र [1]कोटीस कोटी। तहां देव नाराइनी जोति मोटी॥
छं० ॥ १३५ ॥

[2]भ्रगुं लच्छिनं वक्ष कौस्तुभ्भ सोहै। धरै चक्र पद्मं गदा कंबु रोहै॥
धरैं [3]पानि षग्गं धनुं [4]वान सल्लं। इसौ ध्यान दिष्षौ महा जोग बल्लं॥
छं० ॥ १३६ ॥

महा पद्मकोसं परागंति तासी। महा उज्जलं कांति फटिकं प्रभासी॥
तहां सूर कोटी ससी कोटि सीतं। वयं वाय कोटी मृदं नाच नीतं॥
छं० ॥ १३७ ॥

[5]क्रितं सेत त्रनं [6]अरक्तं सु चेता। जुगं द्वापरं पीत कलि क्रष्ण [7]नेता॥
निराकार देवं अकारं सु ध्यानं। रहै आप आपं गुहं पच्छि थानं॥
छं० ॥ १३८ ॥

अछेदं अभेदं प्रमानं न मानं। अकासं न वासं न जानं पुरानं॥
न रूपं निरूपं अरूपं समथ्थं। रहै [8]सास मैवास करि देह रुथ्थं॥
छं० ॥ १३९ ॥

कह्यौ रूप बैराट गुर जौ बतायो। जिसौ अरजुनं क्रष्ण भारथ [9]सुनायौ॥
महाकास सीसं चरनं पतालं। कढ़ी नाभि सुर्गं दिसा बाहु पालं॥
छं० ॥ १४० ॥

द्रुमं रोम उद्रं समुद्रं सु इभ्भं। गिरं अस्त नैनं ससी [10]सूर नभ्भं॥
नदी तास नारी महा [11]प्रान प्रानी। कहै देव बेदं [12]न जानंत जानी॥
छं० ॥ १४१ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सूरं। (२) ए. कृ. को.-श्रियं। (३) ए. कृ. को.-सांग।
(४) ए. कृ. को.-मुसल्लं। (५) ए. कृ. को.-प्रभा।
(६) मो.-अनुक्तं सुनेता, ए.-अरस्तुं। (७) मो.-त्रेता।
(८) ए. कृ. को.-साम। (९) ए. कृ. को.-बनायौ।
(१०) ए. कृ. को. सूर। (११) ए. कृ. को.-बाहु। (१२) ए. कृ. को.-जनानं न।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगै रैंनि दीहं महा जोग जोगी। विराटं सरूपं कहै भोग्य भोगी ॥
निराकार आकार दोऊ विमायौ। कहै देव औतार गुर जो बतायौ॥
छं० ॥ १४२ ॥

अप्सरा की सगुन उपासना की प्रशंसा करना।

दूहा ॥ मन मानै सोई भजहु। कष्ट तजहु तुम दिह ॥
सुरति प्रीति हरि पाइयै। उर मेटहु संदेह ॥ छं० ॥ १४३ ॥
सुरग बसै फिरि धर बसै। मनो ग्यान मन ईस ॥
गरभ दोष मेटहु प्रबल। उर धरि ध्यान जगीस ॥ छं० ॥ १४४ ॥

दसों अवतारों का संक्षिप्त वर्णन।

दूहा ॥ कहै ब्रह्म अवतार दस। धरे भगत हित काज ॥
रूप रूप अति दैत्य दलि। द्रुपद सुता रषि लाज ॥ छं० ॥ १४५ ॥

कवित्त ॥ मचछ कच्छ बाराह। अप्प नरसिंह रूप किय ॥
वामन बलि छलि दान। राम छिति छच छीन लिय ॥
लंकपती संहऱ्यौ। उभय बलदेव हलायुध ॥
दयापाल प्रभु बुद्ध। रहै धरि ध्यान निरायुध ॥
कलि अंत कलंकी अवतरहि। सत्य ध्रम्म रष्षन सकल ॥
करि सरस रास राधा रमन। मवन ग्यान ब्रह्मह अकल ॥छं०॥१४६॥

अप्सरा का कहना कि परमेश्वर प्रेम में है अस्तु तुम प्रेम करो।

दूहा ॥ कपट ग्यान मुष उच्चरे। मन छल धूत अधूत ॥
कपट रुप कंठोर कर। चरन चित्त अवधूत ॥ छं० ॥ १४७ ॥
इह कहि छल संध्यौ तिनह। भै बिन प्रीति न होइ ॥
हर छल तजि हर रूप करि। मान प्रगट्टिय सोइ ॥ छं० ॥ १४८ ॥

नृसिंहावतार का वर्णन।

कवित्त ॥ पीत बरन कजलीय। छोह आरोह सरप जनु ॥
दसन सु तिष्ष कुदाल। नयन बिय वज्र धऱ्यौ तनु ॥
बज्र बंक अंकुस गयंद। नष कुंभ विदारन ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर्द्ध केस काग सद्द । गरब दंतौ [1]दल गारन ॥
धर पर्राक पंछ मुंछाल छल । पीठ दिट्ठ अवधू पर्‍यौ ॥
भय भीति कंपि कामिनि कुटिल । धाय विप्र अंकह भर्‍यौ ॥
छं० ॥ १४९ ॥

मुनि का कामातुर होकर अप्सरा को स्पर्श करना ।

दूहा ॥ उर उरोज लग्गत सु मुनि । सर सरोज हति काम ॥
रोमंचित अंग अंग सिथल । मन मोह्यौ सुरवाम ॥ छं० ॥ १५० ॥
दिष्षत अप्छरि अष्ट उन । रह्यौ नेन मन लाइ ॥
देह भुलानौ नेह वै । और न सूझै काय ॥ छं० ॥ १५१ ॥
भ्रमन भयानक सुपन छल । सिंघन अवधू संग ॥
जानिक पंष परेवना । करि डँवरू इन अंग ॥ छं० ॥ १५२ ॥
कामजारि सिव भसम किय । वार विभूत रति सोक ॥
भोग भुगति रति सुंदरी । द्रिढ़ नह जाग न जोग ॥ छं० ॥ १५३ ॥

अप्सरा का कहना कि ऐसा प्रेम ईश्वर से करो मुझसे नहीं ।

गाथा ॥ वनिता वदंत विप्पं । जोगं जुगति [2]केन कम्मायं ॥
स्यामा सनेह रमनं । जनमं फल पुब्ब दत्ताइं ॥ छं० ॥ १५४ ॥

उसी समय सुमंत के पिता जरज मुनि का आना ।

दूहा ॥ चित्त चल्यो मन डगमग्यौ । रच्यौ रूप रस रंग ॥
आनि पहुंतो जरज रिषि । दही भात ज्यों डंग ॥ छं० ॥ १५५ ॥

मुनि का लज्जित होकर पिता की परिक्रमा पूजनादि करना ।

अरिल्ल ॥ पहर एक पर निठ्ठ । जगाइय अप्प गुर ॥
भौ लज्जा लवलीन । विचारत अप्प उर ॥
जाइ सु पत्तौ तात । सु नेनन भेदयौ ॥
भेट्यो अंगन अंग । अनंगह षेदयौ ॥ छं० ॥ १५६ ॥
दूहा ॥ देषि तात परदच्छ फिरि । भय लज्जा लवलीन ॥
षिमा अरथ तप रंभ कै । काम कामना भीन ॥ छं० ॥ १५७ ॥

(१) मो.-लग्गरन । (२) मो.-कवन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरज मुनि का अप्सरा को शाप देना ।

पहचानी रिषि सुंदरी। कुस गहि कीनौ दाप ॥
भ्रगुटि बंक रिस नैन रत। दिय अच्छरी सराप ॥ छं० ॥ १५८ ॥
हम रिष्षीसर बन बसत। रसह न जानै एक ॥
कंद भषत तन कष्ट करि। लेइ आप इक मेक ॥ छं० ॥ १५९ ॥

सुमंत का लज्जित होना और जरजमुनि का उसे धिक्कारना ।

कवित्त ॥ नयन चकित दुअ बाल। भाल भ्रकुटी दिषि तातह ॥
गयौ बदन कुमिलाइ। जानि दीपक लषि प्रातह ॥
पुच कवन तप तप्पौ। भयौ बसि काम वाम रत ॥
इनहि आप करों भस्म। कवन छंडैष तोहि हित ॥
वपु क्रोधवंत रिषि देषि करि। रंभ अरंभ न कछु रह्यौ ॥
सम अग्नि रूप रिष्षीस रिषि। तबह आप रंभह कह्यौ ॥छं०॥१६०॥

जरज मुनि के शाप का वर्णन ।

कलह [1]करतही डहि कुबुधि। कलहंतर कहि एह ॥
पुहची भार उतारनह। जनमि पंग कै ग्रेह ॥ छं० ॥ १६१ ॥
कवित्त ॥ [2]एम छल्यौ चयवार। रोस करि आप आप दिय ॥
मृत्य लोक अवतार। नाम तुअ कलहप्रिया किय ॥
इन अवधू मन छल्यौ। सुष्षनन लहहि चीय तन ॥
पित पति कुल संहरहि। पीय तो हथ्थ रहै जिन ॥
जैचंदराइ कमधज्ज कुल। उअर जुन्हाइय पुच छल ॥
संजोग नाम प्रथिराज बर। दुअ सुमार अनभंग दल ॥छं०॥१६२॥

अप्सरा का भयभीत होकर जरजमुनि से क्षमा प्रार्थना करना और मुनि का उसे मोक्ष का उपाय बतलाना ।

दूहा ॥ श्रवन सुनै रंभह डरिय। रही जोर कर दोइ ॥

(१) ए.कृ. को.-करनहि । (२) ए.-एक ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब सांई अपराध मुहि। सुगति कहो कब होइ॥ छं० ॥ १६३॥

पद्धरी॥ कर जोर करत बीनती रंभ। [1]साष्यात रूप तुम सम सु ब्रह्म॥
संसार रूप साइर समाज। कट्टनह पार तुम तहं जिहाज॥
छं०॥ १६४॥

[2]पालै सु ध्रम्म रिषि क्रम्म जोग। चै काल क्रम्म षट रहत जोग॥
अबला अवध्य हम अंग आहि। कहि क्रोध देव क्यों करिय ताहि॥
छं०॥ १६५॥

उद्धार होइ सो कहो देव। तुम चरन सरन नहिं और सेव॥
सु प्रसन्न होइ रिषि कहिय एह। अवतार लेहु पहुपंग गेह॥
छं०॥ १६६॥

तुम काज जग्य आरंभ होइ। जैचन्द प्रथी दल दंद [3]दोइ॥
भुम्मीय भार उत्तार नारि। फुनि सर्गलोक कहि तोष [4]व्यार॥
छं०॥ १६७॥

इह कहि रु रिष भय अप्प थान। दुष पाइ रंभ बैठी विमान॥
गइ सुरग लोग सब सषिन संग। [5]कुमिलाइ बदन मन मलिन अंग॥
छं०॥ १६८॥

अप्सरा के स्वर्ग मे पात न होने का प्रकरण। तीनों देवताओं का इन्द्र के दरबार में जाना और द्वारपालों का उन्हें रोकना।

कवित्त॥ एक दीह बर इंद्र। रमन क्रीड़ा अधिकारिय॥
ता देषन चयदेव। ब्रह्म, सिव, विष्णु सुधारिय॥
ए चलंत तिन थान। इंद्र दरवानति रुक्कै॥
मूढ़ मत्ति जानिय न। दैव गत्ती गति पक्कै॥

---

(१) ए. कृ. को.-साक्षात रंभ।
(२) ए. कृ. को.-पालो।
(३) ए. कृ. को.-होइ।
(४) ए. कृ. को.-यार, पार।
(५) ए. कृ. को.-कुम्हिलाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घरि एक तमसि तामस तिहुन। बहुरि घात सुर उच्चरिय॥
जानेन काल न्त्रिमान गति। तिन विधान विधि संचरिय॥छं०॥१६९॥

विष्णु का सनत्कुामरों के शाप से पतित द्वारपालों की कथा कहना।

विधि न जंपि आश्रम्म। इंद्र दरवान न जानिय॥
सुक सनकादि सनक्क। सनंद सनातन [1]न्यानिय॥
ए दरवान अबुद्ध। लच्छि रोकिय परिमानिय॥
सनत सनंदन देव। [2]मुनौ व्रत आदि भिमानिय॥
ए कुंअर पंच पंचो हटकि। पंच बाल पंचौ प्रकृति॥
रिषि बर न होइ तामस कबहुँ। सो ओपम कवि राज मति॥
छं०॥१७०॥

गाथा॥ हटकि सु अग्र प्रमानं। अन्नानं साध दारूनो बरयं॥
ज्यों रिषि नाम समथ्थी। तामसयं द्वार पालक्कं॥ छं०॥१७१॥

माटक॥ स्याम स्यामय स्याम मूरति घने, उच्चापितं बुदबुदौ॥
नारेषं नासेष उच्चत ननं, दीर्घं न रूपं [3]वरं॥
नंमाया चलयं बलति किरिया, एकस्य जोती तहं॥
बैकुंठं गुरू मुक्ति धामति धरं, नापत्ति नो तावहुं॥ छं०॥१७२॥

दूहा॥ मापत्ते रिषि थान तिन। दै सराप तिन वार॥
हरि विरोध तो सद्धि है। तो सध्यौ करतार॥॥ छं०॥१७३॥

पद्धरी॥ पाधरी छंद बरनंत सुभ्भ। [4]बस्वरन बीर कल बरन रुभ्भ॥
अवतार एक एकह प्रकार। ससिपाल दंत [5]बक्रह विधार॥
छं०॥१७४॥

अवतार दुतिय जौ कह्न मंडि। अवतार क्रिष्ण गोकुलह छंडि॥
तिन काज क्रिष्ण अवतार कीन। भूभार हरन अवतार लीन॥
छं०॥१७५॥

---

(१) ए. कृ. को.-न्यारी। (२) ए. कृ. को.-मुनि। (३) मो.-परं।
(४) ए. कृ. को.-वलवीर वीर कलं बलन रुझ्झ। (५) मो.-चक्रह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवतार दुतिय चयबर विरोध। राजस्थ जग्य सुत ध्रम्म सोध॥
अवतार दुतिय हिरनाकुसस्स। हरिमेव कुस्स विय बंध [1]गस्स॥
छं० ॥ १७६॥

नरसिंह सिंह अवतार किन्न। मानुच्छ सिंह नन देव भिन्न॥
छायान घाम [2]नन सस्त्र [3]घाय। सिव को प्रसाद लीनों [4]सुचाय॥
छं० ॥ १७७॥

भरभरिय भार वर पच काज। रामहति राम जंपै विराज॥
छं० ॥ १७८॥

हिरणाक्ष हिरनाकुश बध।

दूहा॥ हरी लच्छि हरनंकुसह। दुत्र [5]विजुद्ध किय देव॥
एकं त्यों पाताल प्रति। एक षंभ प्रति सेव॥ छं० ॥ १७९॥

गाथा॥ सो षिभ्भियं प्रहलादं। किं थंभं मझ्झयौ भनई॥
जंजं थानन हुत्तौ। तौ किन्नौ थंभयं भारं॥ छं० ॥ १८०॥

दूहा॥ थंभ भार फुट्टौ सुबर। नष हति घाम न छाह॥
बर सिंघासन बैठि कै। बर बैकुंठह जांह॥ छं० ॥ १८१॥

रावण और कुम्भकरण बध।

साटक॥ राजा रामवतार रावन [6]बधं, कुंभ हत्तौ कर्नयं॥
सीतायं प्रति बोधितं प्रति [7]लतं, प्रत्यंग [8]प्रत्यंगितं॥
सा राजं प्रतिराज राज कपितं, चौकूटयं कूटजं॥
जंहत्ती धर धार उप्पम कवी, चक्कीय चक्कं फिरं॥ छं० ॥ १८२॥

गाथा॥ यों उड्डा कपि कंक। प्रब तर गाम प्रस्थरं लोयं॥
जिम घर सराय थानं। उड्डै सा भाजनं मुक्ति॥ छं० ॥ १८३॥

दूहा॥ यों उड्डी लंका सुधर। चिया बैर प्रतिपाल॥
हर बंदे गोबिंद कथ। बर बैकुंठह हाल॥ छं० ॥ १८४॥

(१) मो.- कस्स। (२) मो.-तन। (३) ए. कृ. को.-पाय।
(४) मो. सुभाय। (५) मो.-सु। (६) मो.-विधं।
(७) मो.-लनं। (८) ए. कृ. को.-प्रसंगिनं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिदेवताओं के पास इन्द्र का आप आकर स्तुति करना।

चौपाई ॥ सो बोलिय इंद्रह परदारं। हरि रुक्यौ तिय देव सँसारं ॥
सुनि सु इंद्र अस्तुति बर कीनिय। चरन सुरज बर सीस सु दीनिय ॥
छं० ॥ १८५ ॥

भुजंगी ॥ तुहीं देवता देवतं विष्णु रूपं। किते इंद्र कोटं नचै कोटि रूपं ॥
नचें कोटि ब्रह्मं रबिं कोटि तेजं। ससी कोटि सीतं सुधा राज सेजं॥
छं० ॥ १८६ ॥

किते कोटि जं कोटि से दुष्ट ढाहे। किते कोटि कंदर्प्प लावन्य लाहे॥
किते कोठि सामुद्र मज्जाद दिड्ढिं। किते कोटि कल्पं तरं मुक्ति सिद्धं॥
छं० ॥ १८७ ॥

वलं कोटि पोनं द्रिगं कोति भारी। तुहीं तारनं तेज संसार सारी ॥
तुही विष्णु माया अमायात तूहीं। तुहीं रत्ति दीहं तुही तेज जूही॥
छं० ॥ १८८ ॥

तुहीं तू तुहीं तू तुही सर्व भूतं। तुहीं आदि अंतं तुहीं मध्य हूतं॥
जहां हूं न हूं तूं तहां तूं न नाहीं। गनौं हूं न देही रहै तूं समाहीं॥
छं० ॥ १८९ ॥

तुंही ताप संताप [1]आत्ताप तूंही। कह्यौ इंद्र लग्यौ चरनं समूंही ॥
छं० ॥ १९० ॥

इन्द्रानी का त्रिदेवताओं का चरण स्पर्श करना।

दूहा ॥ कहि रु इंद्र सचीव सों। पय लग्यौ चय देव ॥
हरिचरनन छुंडै नहीं। लोहरु चंमक मेव ॥ छं० ॥ १९१ ॥

स्लोक ॥ कोटि सक्र विलासस्य। कोटि देव महावरं ॥
इंद्र ध्यान समो सिंघो। [2]पंचाननस्य राजयं ॥ छं० ॥ १९२ ॥

अप्सराओं का नृत्य गान करना और शिव का उक्त अप्सरा को शाप देना।

(१) ए. कृ. को.-अत्तातु, अतात। (२) मो.-पजाननस्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ लै आई रंभा सवन । अद्व परी संग साज ॥
हाहा हूहू संग सजि । ए गुन गंध्रव गाज ॥ छं० ॥ १९३ ॥

चोटक ॥ गुन ग्रंध्रव गंध्रव लीन गुनं । इति चोटक छंद प्रमान सुनं ॥
सहतें बरनं बरनं रति राजं । नचै गुन अप्छरि अप्छरि काजं ॥
छं० ॥ १९४ ॥

रचै बर इंद्रति इंद्रह [1]साज । .... ॥
लई पहु पंजलि वाम प्रकार । जपं जय इंद्र तियं जपि त्यार ॥
छं० ॥ १९५ ॥

षिज्यौ सुनि शंकर देव प्रकार । तजै चय देव कह्यौ इँद्र सार ॥
कह्यौ गुन मंत गनेस प्रकार । भयौ तहं शंकर श्राप सु सार ॥
छं० ॥ १९६ ॥

पतंन पतंन कह्यौ तियवार । परै प्रति भूमि भयंकर सार ॥
छं० ॥ १९७ ॥

अप्सरा का शिव से अपने उद्धार के लिये प्रार्थना करना।

दूहा ॥ गहि चरन्न मुकै न हरि । रंभ कंपि इन भाइ ॥
मांनौ चल दल पत्तसौ । छीन वाइ विरुझाइ ॥ छं० ॥ १९८ ॥

गाथा ॥ कहु कब मुज उद्धारं । सुद्धारं कब्बयं होई ॥
तो पत्ती प्राकारं । इंद्रं चरन कब्ब सेवाइं ॥ छं० ॥ १९९ ॥

उपरोक्त अप्सरा का स्वर्ग से पतित होकर कनौज के राजा के घर जन्म लेना।

कवित्त ॥ सुनहि रंभ पहुपंग । पुचि बर ग्रेह देव गुर ॥
बर कनवज्ज प्रमान । गंग अस्नान सार कर ॥
इंद्र मरन बंछई । गँग स्नान जिय काजं ॥
ता कारन तुहि चीय । श्राप सुध्यौ गुन भाजं ॥
पहुपंग ग्रेह जनमिय तदिन । तिय सराय तरुनिय भइग ॥
आरंभ विनेमंगल पढ़न । तदिन महूरत बर लइग ॥छं०॥ २००॥

(१) ए. कृ. को.-काज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्नौज के राजा विजयपाल का दक्षिण दिशा पर चढ़ाई करना।

कनवज्जह कमधज्ज। राज विजपाल राज बर॥
हय गय नर बर भीर। सकल किय सेन जित्त पर॥
बीर धीर बर सगुन। भार उद्धार महामति॥
मत्तिराम चितविद्य। बीय [1]रंमाधि राज रति॥
संचर्‌यौ सेन सजि विजै नग। सकल जीति भर राज धर॥
सुरवस्थ दिस्य न्रप संग किय। क्रम्यौ [2]देस दक्षिन सुधर॥ छं०॥२०१॥

समुद्र किनारे के राजा मुकुंद देव सोम वंशी का विजयपाल को अपनी पुत्री देना।

सोम बंस राजाधिराज। मुक्कंद देव प्रभु॥
सरित समुद्र सुतटह। कटक मय मग्गि न्रयन नभु॥
तीस लष्ष तोषार। लष्ष गेंवर गल गर्ज्जहिं॥
दसह लष्ष पयदलह। पुलत दस छचति रज्जहिं॥
दिव दिवस रीति संचह जपति। जगन्नाथ पूजत दिनह॥
दिगविजय करन विजपाल न्रप। सपत कोस मिल्यौ तिनह॥
छं०॥ २०२॥

मुकंद देव की पुत्री का जयचंद के साथ व्याह होना।

अति आदर आदरिय। सहस दस दीन गयंदहु॥
धन असंष घन मुत्ति। [3]रतन घट समुनि मन्नदहु॥
सौ प्रजंक रजकंति। कोटि दस पाट पटंबर॥
दिय पुची सु विसाल। दासि सें [4]सत्त अडंबर॥
परषी सु पुत्ति जयचंद दिषि। सुभ्भ जुन्हाइय आसरिग॥
बर सबर पंच दंपति दिनह। पानि ग्रहन उत्तिम करिग॥
छं०॥ २०३॥

(१) ए. कृ. को.-रमादि। (२) मो.-देह स दच्छिन।
(३) ए. कृ. को.-रतन समुनि धन मनिंदह। (४) ए. कृ. को.-सपत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ अति सु ललित्त सरूप विय । रमहित राजन संग ॥
इक्क थार भोजन करहिं । अति सुष न्रपति प्रसंग ॥छं०॥२०४॥

विजयपाल का रामेश्वर लौं विजय प्राप्त करके अनेक राजाओं को वश में करना।

परिग देव दच्छिन दिसह । अंग भयौ सुभ देव ॥
सेत बंध अनु सरिय मग । गोवल कुंड संगेव ॥ छं० ॥ २०५ ॥
तोरन तिलंगति बंधि न्रप । विप चढ़ि चिफिर चिकोट ॥
विद्या नैर सुजीति न्रप । सेत समुद्र सओट ॥ छं० ॥ २०६ ॥

नराज । करन्न नाट संकला पनेक भूप राजनं ॥
समुद्र ईषि भूप बंधि मैथिली सु भाजनं ॥
सुचंब कोटि मच्छरी सुरंग राय कुंकनं ।
पुलिंग देश पैं फिरी फिरंग जीति संषिनं ॥ छं० ॥ २०७ ॥
असेर देस षानयं गँभीर गुज्जरी धरं ।
जु मंडवी मलेच्छ नट्ठ गुंड देस सो धरं ॥
जु मागधं (१)मवन्न मुष्य चंद्रकास नट्ठयं ।
गुपाचलं गुरावयं प्रकास सोभ पट्ठयं ॥ छं० ॥ २०८ ॥
सुप्रच्छते प्रकार साध काम कग्गलं मिलं ।
अधंम धम्म सद्ध भूमि पंग राज संषिलं ॥ छं० ॥ २०९ ॥

कवित्त ॥ लयौ सुगढ़ सोव्रन्न । कोट भंज्यौ पर कोटह ॥
गोपाचल गैनंग । चक्कित बज्जी सिर चोटह ॥
सोव्रन गिर सिरताज । तट्ट लग्गे भग्गे षल ॥
दिय भोरा भीमंग । एक हथ्थौ मद सब्बल ॥
दिय सीष कुंअर गज अठ सुबर । मोरा चलि पट्टन भनिय ॥
विजपाल चले दिगपाल चलि । मंडोवर महि अप्पनिय ॥
छं० ॥ २१० ॥

सेतबन्द रामेश्वर के पड़ाव पर गुजरात के राजा के पुत्र का विजयपाल के पास आना और उसे नजर देना।

(१) ए. कृ. को.-मन्नील।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ सेत्रुंजा डेरा सु पहु। लिय रसाल सिधराइ ॥
मानक मुक्तिय दिव्य [1]नग। लै पैलगि भोराइ ॥ छं० ॥ २११ ॥
दस कुजाव संजाबरी। दस घट बानी सिद्ध ॥
हथ्थिय सथ्थिय सौंपकिय। रिध दीनी नव निद्ध ॥छं०॥२१२॥
कवित्त ॥ भोरा कुअर सुं भेट। सिंघ लग्यौ तट सागर ॥
लाष दोय बाजी वितंड। नगर भग्ग बहु नागर ॥
सत्त लष्य तोषार। पंति कनवज्ज प्रमानं ॥
लष सत्तरि गय गुरहि। तपै ग्रीषम जिम भानं ॥
जलथान जाइ धूलग्गि रह। रह्यौ एक बड़वानलह ॥
चहुआन देस तष्पह सुधर। पंच षंड कनवज्ज पह ॥छं०॥२१३॥

दिग्विजय से लौट कर विजयपाल का यज्ञ करना।

गाथा ॥ किय दिगविजै विहारं। जित्तवि सकल राइ किय संगे ॥
पुर कनवज्ज संपत्ते। बज्जन बहुल बज्जि आनंदं ॥छं०॥२१४॥
दूहा ॥ मंडि जग्य विजपाल न्रप। भूपन तुंग विनास ॥
जय जयचंद विरद्द, बर। हठ लग्गो [2]इतिहास ॥ छं० ॥ २१५ ॥

विजयपाल की दिगविजय में पाई हुई जैचंद की पत्नी को गर्भ रहना और उससे संयोगिता का जन्म लेना।

अरिल्ल ॥ अति वरजो वा जुन्हाइय नारि। चंद्र जेम रोहनि उनहारि ॥
अति सुष बरस दुअट्ठ प्रमानं। ता उर आनि संजोगिन थानं ॥
छं० ॥ २१६ ॥
दूहा ॥ घटि बढ़ि कलहन अनुसरै। पेम सदीरघ होत ॥
कलि कनवज दीपक सुमति। चंद्र जुन्हाई [3]जोति ॥ छं० ॥ २१७ ॥
कवित्त ॥ जिते जुन्हाइय जोति। राज गवरी गुर बंध्यौ ॥
जिनं जुन्हाइय चंद। अष्ट पर्वत वित नंध्यौ ॥

(१) ए. कृ. को.-गन।
(२) ए. कृ. को.-अतिहास। (३) मो.-सौति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनं जुन्हाइय चंद । तुंग तिरुहन विप्रानय ॥
जिनं जुन्हाइय चंद्र । कंठ कंठेर सु बानय ॥
जयचंद जुन्हाइय पंगुरै । असी लष्ष हैवर [1]परिग ॥
जयचंद जुन्हाइय राज बर । बरनिय अरधंगह धरिग ॥छं०॥२१८॥

दूहा ॥ पुब्बकथा संजोग की । कही चंद बरदाइ ॥
पंग घरह जुन्हाइ उर । आनि प्रगट्टिय लाइ ॥ छं० ॥ २१९ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संजोगिता पूर्व जनम नाम पैंतालिसमों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४५ ॥

(१) ए. कृ. को.-परिग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ विनय मंगल नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

(छियालिसवां समय।)

अप्सरा के संयोगता के नाम से जन्म लेकर शाप से उद्धार पाने का वर्णन।

दूहा ॥ पुब्ब कथा संजोग की। कहत चंद बरदाइ ॥
सुनत सुगंध्रव गंध्रवी। अति आनंद सुहाइ ॥ छं० ॥ १ ॥
जनम संयोग संजोग विधि। कहि कविराज प्रकार ॥
जिम भविष्य भव निरमयौ। तिम सराप उद्धार ॥ छं० ॥ २ ॥

शाप देकर जरज ऋषि का अन्तर्ध्यान हो जाना और सुमंत का तप में दत्तचित्त होना।

चौपाई ॥ एक सराप षिमा अवतारं। जरित रिष्य हरद्वार सुधारं ॥
तिन सिष सिष्षि छिमाद्दत लिन्नौ। मनो तत्त [1]रस तत्त सुभिन्नौ ॥

* संवत ११३६ में संयोगिता का जन्म वर्णन।

दूहा ॥ ग्यारह सै च्यालीस चव। पंग राज स्रू मंडि ॥
बर पंचम ससि तीय ग्रह। जनम संयोग विषंड ॥ छं० ॥ ४ ॥
ससि न्त्रिमल पूरन उग्यौ। निसि निरमल अति रूप।
न्त्रिप न्त्रिप कन्या व्याहता। मरन अदब्बुद भूप ॥ छं० ॥ ५ ॥
जंजं बालत पढ़ै गुन। तंतं बढ़ति काम ॥
सिंद्धि [2]विभंतर तिय सहज। लछि लच्छिन विश्राम ॥ छं० ॥ ६ ॥

(१) ए. कृ. को.-तत्त रस लिन्नौं। (२) ए. कृ. को.-त्रिपंतर।

* छन्द ४ के अंत में विखण्ड शब्द "संवत ११३६" की सूचना देता है—यथा (वि = दो+ खण्ड = टुकड़ा) जनम संयोग–विखण्ड = संयोगता की आयु के आधोआध समय मे अर्थात् संवत् ११४४ में राजा पंग ने राजसूययज्ञ आरम्भ किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोगता का दिन प्रति बढ़ना। और आयु के तेरहवें वर्ष में उसके शरीर में कामोद्दीपन होना।

कवित्त बढ़ै बाल जो दीह। घरिय सो बढ़ै स सुंदरि॥
और बढ़ै इक मास। पाष बढ्ढै रस गुंदरि॥
मास बढ़ै षटमास। रित्त बढ्ढै सु बरष बर॥
बरष बढ़ै सुंदरी। होइ षट मध्य बरष झर॥
पूरंन बाल षट विय बरष। नव मासह दिन पंच बर॥
ता दिनह बाल संजोग उर। मदन वृद्ध मंडिय [1]सुधर॥ छं०॥ ७॥

संयोगता के हृदय मंदिर में कामदेव का यथापन्न स्थान पाना।

इह संजोइय राज। पुत्ति बत्तीसह लच्छिन॥
रची विधाता काम। धाम कर अप्प विचच्छिन्न॥
छाजै छचिय गौष। [2]गुमट कलसा छबि छाजिय॥
करिय रास आवास। सरस रस रंग विराजिय॥
तिन चित्रसाल चित्रत सुरंग। मनसिज आगम अंग अँग॥
मन आस वास बसि मंदिरह। प्रथम दीप दीनौ सुरंग॥ छं०॥ ८॥

संयोगता के सौन्दर्य्य की बड़ाई।

दूहा॥ उड़गन सम सहचरि सकल। उड़पति राजकुमारि॥
नव रस आए देह धरि। कोन त्रिया अनुहारि॥ छं०॥ ९॥

संयोगता का भविष्य होनहार वर्णन।

हनूफाल॥ संजोगि नाम सुजान। जिन तात बिजय किआनि॥
इह लच्छिनेव बतीस। इह पच्छ छत्त विदीस॥ छं०॥ १०॥
इह उंच ग्रेह समान। भुअ राहनी हत आनि॥
इन पानि बर चहुआन। जिन बंधिलिय सुरतान॥ छं०॥ ११॥

(१) मो.-सुधर। (२) ए.-मुगट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन काज राजस्त्र जग्य। मिलि राइ सहस विभग्य॥
कलहंत काज सरूप छिति रत्ति श्रोनित भूप॥ छं० ॥ १२ ॥
इन रूप राचत देव। इन इंद्र वधु अह मेव॥
इन सुरन षोड़स दीन। इकतीस लच्छन भीन॥ छं० ॥ १३ ॥
भौ रुद्र माल विसेष। पर कलह कामिनि लेष॥
इन संबऱ्यौ बह राज। भिरि सहस छचिय [1]छाज॥ छं० ॥ १४ ॥
घटि मुकुट मुकुटनि पान। रवि कोटि उग्गिय जान॥
मिलि छच छचन धाह। सोइ छांह मंडय बाह॥ छं० ॥ १५ ॥
सुनि साति [2]सत्तत काज। रन पानि बर भृत आज॥
इन कलह कामिनि नाम। संसार समनह वाम॥ छं० ॥ १६ ॥
इन पाइ पौरुष इंद्र। [3]ज्यों रुषमिनी रु गोविंद॥
दुज दुजन दुर्जन लाग। सुक सुनत श्रवन विभाग॥ छं० ॥ १७ ॥
दस सहस छच विभंग। रुधि भिन्न षोनिय अंग॥
परि लष्य छचिय जुद्ध। इन बरह कित्ति असुद्ध॥ छं० ॥१८॥
छिति छच बंधन व्याह। तिहि सुचर मंडल धाह॥
वर मिलन बेस विरूप। चढ़ि चलन मनमथ भूप॥ छं० ॥ १९ ॥
जिहि जियन मरन सु [4]लाह। दुअ नयर संगल [5]धाह॥
षट भाष भाषन जान। संजोग जोवन पान॥ छं० ॥ २० ॥
बंधि षंड राज सुराज। कनवज्ज राजन साज॥
धम्मारि काम विलास। संजोग रूप प्रहास॥ छं० ॥ २१ ॥
सुक सुकी केलि विभग। सुनि श्रवन भव अनुराग॥
चित विलषि उलषि कुमारि। लगि पढ़न केलि धमारि॥ छं० ॥२२॥
अस ससिर रिति अत्तीति। पति तात ग्रह छिति जीति॥
संजोगि वारिय मंडि। दुज दुजन गंध्रव छंडि॥ छं० ॥ २३ ॥
उअ मेह [6]मोर मराल। पप्पीप सद्द सराल॥
उअ दष्य अंबर मंडि। मधु माधुरी सुव छंडि॥ छं० ॥ २४ ॥

(१) मो.-काज। (२) ए.-संतन।
(३) ए. कृ. को.-ज्यों रुषमनी रू गुविन्द। (४) ए. कृ. को.-लार।
(५) ए. कृ. को.-धार। (६) ए. कृ. को. मोह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इह लग्गि केलि अहार। तिय ताल तेह सहार॥
इह केतकिय सब छंडि। नव नलिन नागिन षंडि॥ छं०॥ २५॥
इय चंद एह प्रहास। घट एह मध्य दुवास॥
कनवज्ज राजन मझ्झि। दिस षंड राइ सु मझ्झि॥ छं०॥ २६॥
स्लोक॥ *अन्यथा नैव पिष्यंति। द्विजस्य वचनं यथा॥
प्राप्ते च योगिनी नाथे। संजोगी तत्र गच्छति॥ छं०॥ २७॥

संयोगता प्रति जयचन्द का स्नेह।

दूहा॥ सुत्र संयोग [1]समुष्ष सुष। दिष्ष सभोजन राइ॥
अति हित नित नित्तह करै। तिय रयनी न विहाइ॥ छं०॥ २८॥
सुअठ्ठ आरि अपनी करै। स्तरै न सीषह तात॥
पढ़न केलि कलरव करै। कहत अपूरब बात॥ छं०॥ २९॥
नेवज पुप्फ सुगंध रस। बज्जन सद्द सुढार॥
सुरति काम पूजन मिलहि। एक समै चयवार॥ छं०॥ ३०॥

संयोगिता के विद्यारम्भ करने की तिथि आदि।

पद्धरी॥ ससि तीय थान रवि भोग जोग। दिन धऱ्यौ देव पंचमि संजोग॥
संजोग बहुत उर पढ़न गत्ति। दिन धऱ्यौ देव राजन सु मत्ति॥
छं०॥ ३१॥
दूहा॥ अति विचित्र मंडप सुरँग। अंगन [2]सस सहकार॥
अध सु लाल कूंअरि पढ़त। सद्रिस प्रतंम सु मारि॥ छं०॥ ३२॥
पढ़त सु कन्या पंगजा। सुंदर लच्छिन रूप॥
मानहु अंदर देषियै। मदन पचासन भूप॥ छं०॥ ३३॥
लहु भगिनि तारा सुअन। अति सु चंग प्रति रूप॥
जिन जिन भेद अभेद गति। जं जं मंडहि धूप॥ छं०॥ ३४॥

संयोगता का योगिनी वेष धारण कर अपनी पाठिका (मदन वम्हनी) के पास जाना।

* इस श्लोक की प्रथम पंक्ति के आगे मो. प्रति के पाठ का एक पत्रा खंडित है।

(१) को.-संमुष्ष सुख। (२) ए.-तस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरिल्ल ॥ ए लज्जा सों लज्जहि बाल। दिगंबरह वस्त्र गुन चाल ॥
जगत वस्त्र सो रामय भोग। वस्त्र रचै नहिं राचै जोग ॥ छं० ॥ ३५ ॥

योगिनी वेष में संयोगिता के सौन्दर्य्य की छटा वर्णन।

दूहा ॥ सो रष्षी सुंदरि सु बिधि। मदन वृद्धि दिय हथ्थ ॥
सो कीनी मदनं सुवृद्धि। अति कोविद गुन कथ्थ ॥ छं० ॥ ३६ ॥

कवित्त ॥ अति कोविद गुन कथ्थ। मदन कीनी भँति वृद्धह ॥
जोग जिहाजन जाइ। ताहि जल मद्भित [1]सद्धह ॥
अति भय मित्तिय बाल। रूप राजति गुन साजति ॥
आभूषन पट धरै। देव बद्धू दिषि लाजति ॥
आरंभ अंबता धाम मधि। अति विसुद्ध चिह्नु पास सषि ॥
संजीव जोग जंगम [2]सवै। तप सुतप्प मध्या सु लिषि ॥ छं० ॥ ३७ ॥

संयोगिता का लय लगा कर पढ़ना और पाठिका का उसे पढ़ाना।

दूहा ॥ लय लग्गिय भग्गीय गुन। अति सुंदर तिन साथ ॥
एक मत्त दस अग्गरिय। विनय पढ़ावत गाथ ॥ छं० ॥ ३८ ॥
इक सत पंचत अग्गरी। राज कन्य रज रूप ॥
तिन मध्ये मध्यात में। काम विराजत भूप ॥ छं० ॥ ३९ ॥
तादिन तें द्वै दुजन बर। पढ़िय सु शास्त्र विचार ॥
उन आरंभ अरंभ करि। आप सपत्तिय बार ॥ छं० ॥ ४० ॥

एक दिन ब्राह्मणी का अपने पति से संयोगिता के विषय में प्रश्न करना।

आय सपत्तिय बाल बर। बेदिषि चष सह बाल ॥
मानौ रस अलि अलिनि कौ। लै आयहु ग्रह काल ॥ छं० ॥ ४१ ॥

(१) ए. कृ. को.-सद्धिय। (२) ए. कृ.-वसे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ि संजोग संजोग द्रत। विजय सु देवह दाव ॥
चक्कह चक्क सु वेन बस। दिषि संजोग अनहाव ॥ छं० ॥ ४२
जाम एक निसि पच्छिली। दुजनिय दुजबर पुच्छि ॥
प्रात अप्प घर दिसि उड़ै। जे लच्छिन कहि अच्छि ॥ छं० ॥ ४३ ॥

ब्राह्मण का संयोगिता के भविष्य लक्षण कहना।

कवित्त ॥ इन लच्छिन सुनि बाल। न्रिपति करि रुधिर प्रकारह ॥
बहु छचिय झुझिहैं। रुंड हरि हार अधारह ॥
गिद्ध सिद्ध वेताल। करै क्रत्यह कोलाहल ॥
इह लच्छिन सुनि सच्च। वाल लच्छित जिन चाहल ॥
संजोग फूल फल नन दियन। ए कन्या जिम प्रथम तिम ॥
कलहंत राज छची सुबर। भविस बात होवै सु तिम ॥ छं० ॥ ४४ ॥

दूहा ॥ तिन कारनहों जक्ष गुन। भुगति मुगति सह देन ॥
सो कन्या पहुपंग कै। आय सपत्तिय मेन ॥ छं० ॥ ४५ ॥
जयति जग्य संजोग बर। दिषि अंगन लष चार ॥
एक अलष्वन भिन्नहै। सो कलहंतर साल ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कलहंतरि सुंदरिय बर। अति उतंग छिति रूप ॥
तिन समान दुज पिष्य कै। मदन लभ्भ तन [1]भूप ॥ छं० ॥ ४७ ॥

गीतामालची ॥ लषि लषित अच्छिर, सषिन सच्छिर, नमित गुरजन, अंगुरं।
लहु गुरु सुमंडित अगन छंडित, दूह गाह, समुद्दरं ॥
सक [2]सगन संचित, अगन बंचित, जगन मगन, प्रबंधयं ॥
उग्गाह गाह, विगाह चंचल, नष्ट निहचल, छंदयं ॥ छं० ॥ ४८ ॥
छिति छच बंधति, चित्त बित्त, सु नगन निंधति, अंभयं ॥
हरि हरय अंसय, विमल वंसय, रूप गंसय, अंसयं ॥
सुभ अलस साटक, काम हाटक, भाष षटक सु संचयं ॥ छं० ॥ ४९ ॥
संजोग जोगय, सुमति भोगय, थप्पि जोगय, भोगयं ॥
इन काल विद्धं सब्ब सिद्धं, एक दोष संजोगयं ॥

(१) को.-सूल। (२) को.-लगन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मय मंत मंतिय, कांम कंतिय, विज्ज जंतिय उच्चयं ॥
जं कहै अच्छरि, पढ़ै तच्छिर, लिषै नच्छिर, मंडियं ॥
छं० ॥ ५० ॥

पाषान लीहं, दीह तीहं, काम सीहं, विच्छुरै ॥
कवि करै कित्तिय, मत्ति इत्तिय, जीह तित्तिय, उच्चरै ॥
छं० ॥ ५१ ॥

संयोगिता का मदन वृद्ध ब्राह्मणी के घर पढ़ने जाना और संयोगिता का योवन काल जान कर ब्राह्मणी का उसे विनय मंगल पढ़ाना।

कवित्त ॥ मदन वृद्ध बंभनिय। ग्रेह हिंडोल संजोगिय ॥
कनक डंड परचंड। इंद्र इंद्रिय बर जोइय ॥
परहि लत्त हिंडोल। दुजन उप्पम तिन पाइय ॥
कनक षंभ पर काम। चंद चकडोल फिराइय ॥
लग्गें नितंब बेनिउ [1]बढ़ि। सो कवि इह उप्पम कही ॥
सैसव पयान कै करतही। कामय [2]वग्गी कर गही ॥ छं० ॥ ५२ ॥

अरिल्ल ॥ षुत्ते अंब कदंब कुरंगा। तै किरपल पछै अनभंगा ॥
चक्रित बत्त सुनि बाल प्रकारं। सह सुंदरि सोभत सिरदारं ॥
छं० ॥ ५३ ॥

दूहा ॥ सजि सु पंग बर व्याह क्रत। बहु रचना गुन लाहु ॥
बाल सु वय जिम बाल मुन। त्यों समुझै गुन चाह ॥ छं० ॥ ५४ ॥

कवित्त ॥ एक सु पुत्तिय पंग। देव दक्षिन देवग्रह ॥
मेनहीन माननी। हीन उपजै अरंभ कह ॥
मनमोहन मोहनी। निगम करि बत्त प्रकारं ॥
आसमान इष्षियै। नाग नर सुर नहिं [3]भारं ॥
अष्षौ उमाह मंगलविनय। भ्रम्म सकल जिम मुगति मति ॥
सुनि मत्ति गत्ति रत्तिय सुबर। विधि विधान निरमान गति ॥
छं० ॥ ५५ ॥

(१) ए. कृ.-बेनी उन्नटि। (२) ए. को.-काम अवंगी। (३) ए.-नारं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ विनय मंगल पाठ का प्रारम्भ।

बचनिका॥ मदन वृद्ध बंभनी संजोगिता कौं बिनय मंगल
पढ़ावति है सु कैसो बिनय मंगल॥

दूहा॥ सुकल पच्छ बंभनि सुकल। सुकल सु जुवति चरित्त॥
बिनय विनय बंभनि कहै। बिनय सु मंगल वृत्त॥छं०॥५६॥
*मुगध [1]मुद्ध प्रौढ़ा प्रकृति। सुबर बसीकर चित्त॥
सुनि विचित्र बाला विनय। श्रवन सवहिन चित्त॥ छं०॥५७॥

विनय मंगल की भूमिका।

चोटका॥ प्रथमं उठि प्रात मुषं दरसं। उतमंग सुअंग पयं परसं॥
विनया गुन तुच्छ विभच्छ मनं। हरहं जय काम सु ताम मनं॥
छं०॥५८॥
ग्रह गामिय रैनि परप्परसं। प्रगटी तय भावन ताम रसं॥
द्रिग द्रप्पन लैह बदन्न [2]हसं। प्रति प्रीतय चारु चषं दरसं॥
छं०॥५९॥
भय कामिनि काम मनं वृतलौ। सिषि नासिष पानि कुअहृत जौ॥
मन वृत्ति सु गत्ति मनं गहनं। रह रत्त सु व्रत्त बरं बहनं॥
छं०॥६०॥
जियर्यं जिय रस्स रसं रसनं। भय भीर उवृत्त पयं बसनं॥
परि पिम्मह पिम्म सबक्क कसं। जह ईजह दिद्वित हीय [3]ससं॥
छं०॥६१॥
भुगतं बर अंन वरं विनयं। प्रथमं निज काल ग्रिहं गननं॥
भव रूप चिरूप तनं लहनं। अनि ईस नसीस समं वहनं॥छं०॥६२॥
अनि पूज न जाप न ईसगनं। पति पूज मनोरथ लम्भि मनं॥
पिय दिष्षहि दिष्षि मुगद्ध मनं। वय बद्धिय ताम सुकाम बनं॥
छं०॥६३॥
बसनं रुचि पीय सुकीय घरं। तन मंडन भूषत ताम करं॥

(१) ए.-मुद्ध। (२) ए. कृ. को.-इसं। (३) मो.-सरस।

*यहां से मो.-प्रति का पाठ पुनः आरंभ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहनं रस सार शृंगार बनं। गति गंठिय ग्रंथ सु काम मनं॥
छं० ॥ ६४ ॥

इति गत्ति चरित्त जुधाम धरं। सु जितै त्रिय कंत अधीन करं॥
छं० ॥ ६५ ॥

पति का गौरव कथन।

दूहा॥ जो बनाय बनिता बनिय। सषी न मंगल माल॥
सषि आग्रह मानै नहीं। पिय छंडै ततकाल॥ छं० ॥ ६६ ॥

उव निस बस दूती ग्रहन। [1]सषिन विलंब न बग्ग॥
पियन पियहि अंतह करन। करहित सुभग [2]अभग्ग॥ छं० ॥ ६७ ॥

धं धीरज विरहै बनह। आतमेछ अप सिद्ध॥
तं तन मन मान न धरहि। करै सु कामह विद्ध॥ छं० ॥ ६८ ॥

स्त्रियों की पति प्रति अनन्य प्रेम भावना।

मुरिल्ल॥ तूं धनयं मनयं तुअ [3]मत्तिय। तूं हियय जियय तुअ गत्तिय॥
तू बरयं धरयं तुअ तत्तिय। तू पियय नियय निज रत्तिय॥छं०॥६९॥

तूं ग्रहयं नरयं नय नत्तिय। तूं गतयं जपयं जक जत्तिय॥
तूं सहयं वसयं घन घत्तिय। तूं दियय छियय छवि हत्तिय॥
छं० ॥ ७० ॥

तूं सहयं दुहयं दुह कत्तिय। तूं विनयं दिनयं दिन गत्तिय॥
तूं तपयं अपयं अप नत्तिय। तूं सथयं नथयं सथ सत्तिय॥
छं० ॥ ७१ ॥

पाठिका का उपरोक्त व्याख्या को दृढ़ करना।

कवित्त॥ विलसि भाइ भामिनिय। जाम जामनिय प्रमानहि॥
विलसि काम कामिनिय। ताम तामिनिय प्रमानहि॥
हों सुबंभ बंभनिय। रंभ रंभान सिषावन॥
श्रवन मूढ़ मन मूढ़। रूढ़ रंजन गहि दावन॥

(१) मो.-सखिय। (२) मो.-अभंग। (३) ए. कृ. को.-मुत्तिय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तन तुंग द्रुग्ग उग्रह हिम सु। सुनि सु बाल हर धवलु [1]हन ॥
चंदनह चारु चंदन कुसुम। तन चिषान चिग्गुन पवन ॥छं०॥७२॥

विनय भाव की मर्य्यादा गौरव और प्रशंसा।

जुगति न मंगल बिना। भुगति बिन शंकर धारी॥
सुगति न हरि बिन लहिय। नेह बिन बाल हथारी॥
जल बिन उज्जल नथ्थि। नथ्थि न्त्रिमान ग्यान बिन॥
कित्ति न कर बिन लहिय। छित्ति बिन सस्त्व लहिय किन॥
बिन मात मोह पावै न नर। बिनय बिना सुष ग्रसिन तन॥
[2]संसार माह विनयौ बड़ौ। विनय बयन मुहि श्रवन सुनि॥
छं० ॥ ७३॥

सुआ सार विनय का एक आख्यान वर्णन करता है और रति और कामदेव उसे सुनते हैं।

दूहा॥ [3]निकट सुकी सुक उच्चरय। कर अवलंबित डार॥
मवरिय अंब [4]सु अंब लगि। सुनत सु मारनि मार ॥छं०॥७४॥
विनय साल [5]सुक सुकनि दिषि। सर संभरिय अपार॥
मानो मदन सुमत्त की। विधि संजोगि सु सार॥ छं०॥ ७५॥

मान एवं गर्व की अयोग्यता और निन्दा।

साटक॥ मानं भंजन नेहमान [6]न्त्रगुना, सज्जन्न सा दुर्ज्जनं॥
मानं छंदय तोरनेव जुरयं, मानेव मंदं पिमं॥
मानं छंदय तोरनेव गुनयं, मानेपि नरुयं बुरं॥
इक्कं मानय बार भारथ गुरं, आवंत मानं लघुं॥ छं०॥ ७६॥
दूहा॥ न भवति मान संसार गुन। मान दुष्ष को मूल॥
सो परहरि संयोग तूं। मान सुहागिनि [7]सूल॥ छं०॥ ७७॥

(१) ए. कृ. को.-सुनइ। (२) ए. कृ. को.-सारसा।
(३) ए. कृ. को.-निकर। (४) ए. कृ. को.-नंत।
(५) मो.-विनय सार सुक्कीय दिवि। (६) मो.-त्रगुना। (७) मो.-मूल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय का गौरव ।

एक विनय गरुअंत गुन । अब्बह विनयति सार ॥
सीतल मान सु जंपियै । तौ बन दझ्झै [1]तुसार ॥ छं० ॥ ७८ ॥

विनय की प्रशंसा और उसके द्वारा स्त्रियोचित साधनों का वर्णन ।

विनय महा रस भंतिगुन । अवगुन विनय न कोइ ॥
जोगीसर विनय जु पढ़ै । मुगति सलभ्भै सोइ ॥ छं० ॥ ७९ ॥
विनय नहीं जौ पंषियन । तरु नहिं दोष दियंत ॥
फल चष्षै पत्तइ हतें । मानय गुनय गहंत ॥ छं० ॥ ८० ॥
एकै विनय सभग्ग गुन । तजत न विनय अरिष्ट ॥
जाने घर सूना हुआ । भोइ नता करि मिष्ट ॥ छं० ॥ ८१ ॥
मो पुच्छै जौ सुंदरी । तौ जिन तजै सुरंग ॥
जिम जिम विनय अभ्यासिहै । तिम तिम पिय मनपंग ॥छं० ॥८२॥

कवित्त ॥ विनय देव रंजिये । बिनय वहु विद्य देइ गुर ॥
विनय द्रव्य लहि सेव । विनय विष तजै अप्प सुर ॥
विनय दत्त अदतार । विनय भरतार हार उर ॥
विनय करह करतार । विनै संसार सार सुर ॥
वय चढ़त चढ़ै विनया सुबर । सव शृंगाररति भार वपु ॥
बंभनिय भनै संजोग सुनि । विनय बिना सब आर तपु ॥छं०॥८३॥

चौपाई ॥ बंभनियं भनियं संजोई । वयसंध्या सु सुधा बुधि भोई ॥
तूं सक सौतिन पिय बसि होई । विनय सुबुद्धि देहि बुधि तोही ॥
छं० ॥ ८४ ॥

दूहा ॥ विनय उचारन चारु मुष । दिष्षिय सारन सार ॥
कामत्तन सुद्धै सगुन । कंत करै उरहार ॥ छं० ॥ ८५ ॥

चंद्रायन ॥ काम धरा धरकंत सुरत्तौ । तब संजोगिनी बोल्ल अहित्तौ ॥
[2]अच्छिर छंद सु चंद विरत्तौ । सक्करया पय मुष्षह पित्तौ॥छं०॥८६॥

(१) ए. कृ. को.-तुषार । (२) ए. कृ. को.-अछिर छंद सुछन्द सु वित्तौ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाथा ॥ मुष पित्तौ पति रोगै । लग्गै विषमाइ सक्करं मुषयं ॥
जंतुर पये सुबाले । कामं रत्ताय मोहनो धरयं ॥ छं० ॥ ८७ ॥

उपरोक्त कथनोपकथन के प्रमाण में एक संक्षेप आख्यान ।

कबित्त ॥ एक काल सुंदरी । दोइ भगनी अधिकारी ॥
एक मान सद्दयौ । एक वनिया विञ्चारी ॥
जिन चय किन्नौ मान । सुष्ष तिन देह न लद्धौ ॥
अंतकाल संग्रहै । चित्त तन मोह विलुद्धौ ॥
जामंति अंति सा गत्ति हुई । ता मत्ती सारन [1]सुबर ॥
ऊरद्द नरक बहु भोगि कै । जम्म लभ्भ पसु पंषि [2]तर ॥छं०॥८८॥

स्त्रियों के लिये विनय धारणा की आवश्यकता ।

दूहा ॥ जिन चिय लभ्यौ विनय रस । सुष लद्धौ तन मंझ ॥
विनय बिना सुंदर इसी । बिन दीपक ग्रह संझ ॥ छं० ॥ ८९ ॥
कवित्त ॥ ज्यों बिन दीपक ग्रेह । जीव बिन देह प्रकारं ॥
देवल प्रतिम बिह्नन । कंत बिन सुंदरि सारं ॥
लज्या बिन रजपूत । बुद्धि बिनु भोग न जानिय ॥
बेद बिना बर विप्र । करन बिन कित्ति न ठानिय ॥
विनय बिना [3]सुंदरि अध्रम । कंत देइ दूनौ सु दुष ॥
संजोगि भोग विनयौ बड़ौ । लहै विनयमंगल सुसुष ॥छं०॥९०॥

विनयहीन स्त्री समाज में सुशोभित नहीं होती ।

गाथा ॥ [4]बेदयौ बंचितं विप्रं । भेषजं बहु लोइ ग्रंथयं गुनयं ॥
सब जंजार सु जानं । जुन्हाई नेव जानयं तत्तं ॥ छं० ॥ ९१ ॥
तंतू विनय बिहूंनी । युं दिट्ठाइ सुंदरी तनयं ॥
यो [5]वासंतति काल । पत्तं बिना तरवरं रचयं ॥ छं० ॥ ९२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-सुनर । (२) ए. कृ. को.-तन ।
(३) ए. कृ. को.-सुधर । (४) ए. कृ. को.-बेदया बंचित विप्पौ ।
(५) मो.-यौ बासंत सुकालं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ बहु लज्जा कहि जात चिय । तन मंडन अवलान ॥
[1]काल बसंत रु बाल ग्रह । सो मतिमंत सुजान ॥ छं० ॥ ९३ ॥

एक मात्र विनय की प्रशंसा और उपयोगिता वर्णन।

कवित्त ॥ विनय सार संसार । विनय बंध्यौ जु जगत सब ॥
विनय काल निक्काल । विनय संसार सूर [2]अब ॥
विनय बिना संसार । पलक लब्भै न सुष्य तनु ॥
जहां जाइ सो रिप्प । ग्राह संग्रह्यौ देह जनु ॥
न्रप रीति विनय लग्गी रवनि । विनय उचारन चार रस ॥
विनय बिना सुंदरि इसी । सुपन होइ उद्यान [3]जस ॥ छं० ॥ ९४ ॥

सोरठा ॥ विनय तरुन अरु बाल । विनय होइ जुब्बन दिनन ॥
तौ पहुँ प्रतिपाल । विनय सु हृदय बंधि रस ॥ छं० ॥ ९५ ॥

दूहा ॥ भरत भाम तारन सुरस । विनय भाष जस साष ॥
जिम जिम विनय सु संग्रहै । तिम लब्भै अभिलाष ॥ छं० ॥ ९६ ॥

कवित्त ॥ विनय सार संसार । विनय सागर रसधारी ॥
विनय उतारन पार । मुक्ति अप्पन अधिकारी ॥
विनय लहै सब जुगति । विनय बिन भक्ति न होई ॥
विनय सुरस उच्चार । पार कट्ठन रस होई ॥
गुनवंत निगुन सग्गुन अगुन । विनय बिना तन बालयौ ॥
गुन बिना धनुष क्रम बिन सुफल । [4]उभभ्भर मठ देवालयौ ॥
छं० ॥ ९७ ॥

दूहा ॥ विनय सुबंधी सुबुध हिय । जौ सुष चाहत बाल ॥
विनय न छंडय सुंदरी । तिन एंनन प्रतिपाल ॥ छं० ॥ ९८ ॥

गाथा ॥ बाले विनयति सारं । देहं मध्य तत्त ज्यौ जीवं ॥
त्यों जीवं सुष देही । विनय बिना बालयं नेहं ॥ छं० ॥ ९९ ॥

दूहा ॥ विनय सुरस बंभनि कहै । पढ़न सुपंग कुंआरि ॥
बलह बसि दूजैं सुबल । तौ बसि बलह सु नारि ॥ छं० ॥ १०० ॥

(१) मो.-काल वसैं तरु बालग्रह । (२) मो.-रस, कृ. को.-सब ।
(३) मो.-तस । (४) ए. कृ. को.-उज्जर मढ़ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम सुरस हथ्थै अपन। तो हथ्थै अप पीव ॥
सुनि संजोग संजोग है। जीव दै लीजै जीव ॥ छं० ॥ १०१ ॥

कवित्त ॥ निकट सुष्य संजोग। पीय अप्पन बसि होई ॥
सोइ विनय संजोग। तीय पिय बदन न जोई ॥
सोई विनय संजोग। अप्प छाडै विषया रस ॥
सोई विनय संजोग। दई किज्जै अप्पन बसि ॥
सोइ एक विनय जौ तूं पढ़ी। बढ़ी मत्ति चढ़ि चंद बिय ॥
रति छंडि मान क्रिमबीय चिय। तो ग्रह जोवन संचलिय ॥
छं० ॥ १०२ ॥

कं बसि कीनी कंत। विनय बंध्यौ परिमानं ॥
जिम जिम विनयति बढ़ै। सुष्य तिम तिम सरमानं ॥
विनय नेह तन सजल। सिंचि सुष बेलि बढ़ावै ॥
फल अमृत-संग्रहौ। मान सब कहीं दिढ़ावै ॥
सो विनय बिना नारीन क्यौं। बिनय बिना संसार सह ॥
पसु पंषि जीव जल थल जिमय। विनय बिना संयोग वह ॥
छं० ॥ १०३ ॥

गाथा ॥ सम विस हर विस गंत्तं। अप्पं होइ विनय बसि बाले ॥
षट नवरस दुअ सद्दें। गारुड़ विना मंच साभ्फरियं ॥
छं० ॥ १०४ ॥

कवित्त ॥ विनय सथ्थ जस जीव। विनय भोगवन सुष्य वर ॥
विनय देन रसपान। विनय आचरन अमृत धर ॥
अद्ध रयनि अंतरै। विनय सुंदरि अभ्यासै ॥
मान नेह संग्रहै। मान भंजै गुन भासै ॥
इम बिनै बाल मुक्कै न तूं। सुनहिं सुकी सुक श्रवन कथ ॥
लच्छिन सहज्ज अरु विनय गुन। दिषित माल उप्पर सुतथ ॥
छं० ॥ १०५ ॥

दूहा ॥ विनय पढ्यौ संजोग सुभ। तन में विनय सुभंत ॥
ज्यों जल बलि जलहीं जियै। विनय जियै बर कंत ॥ छं० ॥१०६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति विनय मंगल कांड समाप्त।

चंद्रायन॥ सुनि संजोग सिषावन सावन संभ्झरिय।
हीय हितानिय पीर न पावै बंझरिय॥
गुर 'गुज्जं नन कन्न जमावन जुग्ग हुअ।
अच्छिर अच्छ प्रमान विराजत मभ्झ धुअ॥ छं०॥ १०७॥

ब्राह्मणी का रात्रि को पुनः अपने पति से संयोगिता के विषय में पूछना और उसका उत्तर देना।

मुरिल्ल॥ सुंधरता तर रत्तिर रत्तिय। दुज्ज दुजानी वत्तर मत्तिय॥
प्रोग प्रियं रज राजन मंडिय। जीहा जाम उभै षट [2]षंडिय॥
छं०॥ १०८॥

दुजी का दुज से कथा कहने को कहना।

कवित्त॥ मदन वृद्ध बंभनिय। मार माननिय मनोवसि॥
कामपाल संजोग। विनय मंगलति पढ़ति रस॥
तहां सहारंतर एक। अंग अंगन घन मौरिय॥
सुक पिक पंषि असंष। बसहि वासर निसि घोरिय॥
इक वार दुजी दुज सों कहै। सुनहि न पुब्ब अपुब्ब कथ॥
उतकंठ बधै मन उल्लसै। रहहि नींद आवै [3]सुनत॥ छं०॥ १०९॥

दुज का उत्तर।

दूहा॥ दुज फुनि दुजि सौं उच्चरिग। कहि राजन बर बत्त॥
जाग भोग जुद्धह जुरन। करन सु कारन हित्त॥ छं०॥ ११०॥

पृथ्वीराज का वर्णन।

कवित्त॥ एक राव संभरीय। दुतिय जोगिनि पुर भूपति॥
तेज मौज अजमेर। उअर उद्दारति मूरति॥
बान मध्य वय मध्य। मध्य मह महि तन मोचन॥

(१) ए. कृ. को.-गुज्झंनन।
(२) मो.-घट पंडिय।
(३) ए. कृ. को. सुनत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छिति छितान धर अम्म। आम धर हिय रति रोचन ॥
छचि देव देव मंडल सभा। इक इक अषि अषंडलिय ॥
सुरतान बंधि षुरसान रति। मंत अषंड सुदंड लिय ॥ छं० ॥१११॥

कथा सुनते सुनते ब्राह्मणी का निद्रामग्न होजाना।

दूहा ॥ सुनत कथा अछिवत्तरी। गइ रत्तरी बिहाय ॥
दुज्ज कह्यौ दुजि संभल्यौ। जिहि सुष अवन सुहाय ॥ छं० ॥ ११२॥
होत प्रात तब पठन तजि। धाइ हिंडोरन आइ ॥
इह चरित्त दुज देषि कै। पछ जुग्गिनिपुर जाइ ॥ छं० ॥ ११३ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संयोगिता कौ विनय मंगल वरननो नाम छियालीसमो प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सुक वर्णन लिष्यते ।

(सैंतालीसवां समय ।)

संयोगिता का यौवन अवस्था में प्रवेश ।

दूहा ॥ मदन वृद्ध ग्रह बंभनिय । पढ़न कुँआरिक वृंद ॥
बार बार लोकन करहि । जिम नछिच विच चंद ॥ छं० ॥ १ ॥
बालप्पन अप्पान सुष । सुष्य कि ज़ुव्वन मैंन ॥
सुभर श्रवन साषिन करहि । ढुरि ढुरि पुच्छत नैंन ॥ छं० ॥ २ ॥
[1]स्लोक ॥ प्राप्तं च पंग ग्रेहं । जग्य [2]जापय होमनं ॥
तच बंधं दंड देहा । राजा मध्य महावत् ॥ छं० ॥ ३ ॥

शुक और शुकी का दिल्ली की ओर जाना ।

हनूफाल ॥ इति हनुफालय छंद । गुरु च्यार नभ जिम चंद ॥
उड़ि चले दंपति जोर । चित्तइ स [3]पिथ्थह ओर ॥ छं० ॥ ४ ॥

शुक का ब्राह्मण के वेष में पृथ्वीराज के दरबार में जाना ।

जित संभरी वृतथान । वर मंच इष्ट संमान ॥
पते सुढिल्लिय थान । अपभेद किय परिमांन ॥ छं० ॥ ५ ॥
नरभेष धरि साकार । दुज भेज मुक्क्यौ सार ॥
दिषि ब्रह्म भेस अकार । किय मान अर्ध अपार ॥ छं० ॥ ६ ॥

ब्राह्मणी का संयोगिता के पास जाना ।

दूहा ॥ सोई दुज दुजनी करै । बहु तरवर उड़ि जानि ॥
सो सहार संजोग किय । तीयह रम्य सु थान ॥ छं० ॥ ७ ॥

दुज का पृथ्वीराज से संयोगिता के विषय मे चर्चा करना ।

(१) अन्य प्रतियों में गाथा करके लिखा है ।
(२) ए.-जायं । (३) को.-कृ.-पिथ्थिह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ कहै सु दुज दुजनीय। सुनौ संभरि न्रप राजं ॥
तीन लोक हम गवन। भवन दिष्षे हम साजं ॥
जं हम दिष्षय एक। तेह नभ तड़िक अकारं ॥
मदन बंभनिय ग्रेह। नाम संजोगि कुमारिं ॥
सित पंच कन्य तिन मध्य अव। अवर सोभ तिन समुद बन ॥
आकास मज्झि जिम उडगनिन। चंद विराजै मनों भुवन ॥ छं०॥८॥

दूहा ॥ मदन चरित्त सु बंभनिय। मदन कुंआरि सु अंग ॥
सोइ बत्त कनवज्ज पुर। पंग पुत्ति मम चंग ॥ छं० ॥ ९ ॥

गाथा ॥ अप्पन तन छवि दिष्षं। सिष्षं भेदाइ दुष्षनो जीवी ॥
दुष्षं संभरि राइं। कह्यियं आज आगमं नीरं ॥ छं० ॥ १० ॥

दूाह ॥ अप्पन तन छवि देषि कै। सुष भरि दिष्षी नाहि ॥
दुष्ष संभरिय अनूरँग। वर ओपम नहिं ताहि ॥ छं० ॥ ११ ॥

कवित्त ॥ भाजन अग्गि उतिष्ट। मध्य चमकंत गरिष्टं ॥
मिलि नषत्त भंजनं। नाभि दिव चरित सु मिष्टं ॥
धन्नि धन्नि उच्चार। कह्यौ रषि जरजित नामं ॥
गरभ जुन्हाइय जाह। होइ सुष किति सु तामं ॥
जैचंद पुत्ति कलहंत गति। विधि अनेक ह्लनंन करिय ॥
कनवज्ज वास गंगा सु तट। संत सुमंत सु विस्तरिय ॥ छं० ॥ १२ ॥

संयोगिता की जन्म पत्रिका के ग्रह नक्षत्रादि वर्णन।

दूहा ॥ इह कहंत गुरराज न्रप। जनम पत्रिका बाल ॥
जन्म सुषादी उद्धरिय। को यह उंच रसाल ॥ छं० ॥ १३ ॥

कवित्त ॥ दुजनी दुज पुच्छयौ। दुज्ज दुजराज कवघ्यौ ॥
मंगल बुध गुरु सक्क। सन्नि सोमार चवघ्यौ ॥
केइंद्री गुर केत। राह अष्टम अधिकारिय ॥
इन नछित्त दुज कहै। देव जगि पंगह ढारिय ॥
निरमान रंभ अवतार धरि। काम गनं गुन विस्तरिय ॥
कलहंत नाम कलि जुग्ग महि। बर बंछै सोइ संभरिय ॥ छं०॥१४॥

स्लोक ॥ जन्मस्य पंचमो चैव। राहकेतं नक्षत्रया ॥
पंगानी च जया पुत्री। मूल भारथ्य मंडिनी ॥ छं० ॥ १५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छः महीने में विनय मंगल प्रकरण का समाप्त होना।

दूहा ॥ इह कहंत षट मास गय। लिषि अंकूरा बाल ॥
पच्छ दीय बर काढ़ि कै। लिषि जनमोति रसाल ॥ छं० ॥ १६ ॥

विनय मंगल समाप्त होने पर ब्राह्मणी का संयोगिता से पृथ्वीराज और दिल्ली के सम्बन्ध की कथा कहना।

पद्धरी ॥ लिषि छंद बंध जनमोति ताम। तिहि दीह धऱ्यौ बर वाम काम ॥
तिन दिना तुच्छ हर नयन काज। जानियै वीर बाला विराज ॥
छं० ॥ १७ ॥
तन चिगुन भए देवत्त लाज। आवंत लाज की लाज साज ॥
दिन धरउ पढ़न जंपन सुबाल। मंगलति विनय मंगल विसाल ॥
छं० ॥ १८ ॥

अनंगपाल के हृदय में वैराग उतपन्न होने का वर्णन।

इह पढ़हि बाल अप ग्रेह थान। ढिल्ली नरिंद कग्गर सु ताम ॥
बरजै न कोइ मंची प्रमान। जिन देहि भुम्मि दुरजनति दान ॥
छं० ॥ १९ ॥
सिंगार संग अनगेस राज। पायौ न पुच फल नीठ साज ॥
सत्तरिरू सत्त वर्षह रसाल। पयौ सुदीह अन्नं सु काल ॥ छं० ॥ २० ॥
आना नरिंद तस वंस राज। चिंत्यौ जु अप्प दोहित्त काज ॥
चिंतिय अचिंत मनि मित्त मित्त। जंघार भीम ओड़न विअत्त ॥
छं० ॥ २१ ॥
अनगेस ईस अनगेत पुज्ज। लिषि भोज बंध प्रारंभ कज्ज ॥
छं० ॥ २२ ॥
दूहा ॥ अनग सपत्ता कथ्थ कथि। सोधि सु बंधव बीर ॥
करि अप्पन तिथ्थह गवन। को साधंन सरीर ॥ छं० ॥ २३ ॥

मंत्रियों का अनंगपाल को राज्य देने के लिये मना करना।

चोटक ॥ मय मंत गुरू दस हार पयौ। सह कंकन चामर तीन नयौ ॥
षट हाटक चोटक छंद बली। सु कही कविचंद उपंग भली ॥ छं० ॥ २४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन ठौर बरंजत मंच पथं। नन मानिय राज कथा न कथं॥
भिरि भंजय रंजय प्रज्ज सबै। जिन जाइ सु तिथ्य अनंग अबै॥
छं० ॥ २५ ॥

धर रषिय लच्छि सुमंत मनं। उपजै तिम मद्धि विकार सनं॥
क्रत काम कला लषि षोडसयं। बरदाइ कहै सोइ देवतयं॥
छं० ॥ २६ ॥

अरिल्ल ॥ उत्तर दिसि औरह उड्डाई। कागद लिषि प्रोहित्त बधाई॥
तब राजंन सुनत लै लग्गी। बढ़ि आनंद हृदय तब जग्गी॥छं०॥२७॥

अनंगपाल का पृथ्वीराज को राज्य देदेना।

भुजंगी ॥ लबं चित्त चिंता सुचिंता बिचारी। ननं मंच मानै गुरं धीर कारी॥
चवं चिंत चिंता अचिंता प्रमानं। मयं बीर बीरं लघू दिव्य पानं॥
छं० ॥ २८ ॥

प्रथीराज राजंत दोहित्त पुत्तं। तिनं वंस मातुल्ल अति प्रीत पत्तं॥
झलक्के झँगूरं लिषे पेषि हथ्थं। हितं राज अंगं अनंगेस पुत्तं॥
छं० ॥ २९ ॥

पृथ्वीराज की कूटनिति से प्रजा का दुःखित होकर अनंगपाल के पास जाना।

दूहा ॥ आइ संपते लोग बर। संभ धरड्डर काज॥
नवन रीत राजस कही। जानि कुलंगन बाज॥ छं० ॥ ३० ॥

अनंगपाल का पुनः वदरिकाश्रम को चला जाना।

कवित्त ॥ संचरि सीच सुटत्त। राज पत्तौ सु धाम न्रप॥
फल सु प्रीति हित हेम। सेत दिष्षयौ रजक अप॥
अनंग पाल छितिपाल। मुक्कि चल्ल्यौ सु तिथ्य भ्रम॥
हेवर चीर रतंन। गयो बदरी सुटत्त क्रम॥
यों मिले सब्ब परिगह न्रपति। ज्यों जल झर बोहिथ्य फटि॥
दिसि दिसा च्यार अचरिज्ज बर। बजि निसान नीसान घटि॥
छं० ॥ ३१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाथा ॥ ऐरापति फनिगंगं। चामर मराल मालती पहुयं ॥
ता अंबीय प्रमानं। उज्जल कित्तीय सोमजा सूरं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

दसों दिशाओं में सुविस्त्रित पृथ्वीराज की उज्वल कीर्ति का आकाश में दर्शन होना।

अति कित्ती अति उज्जली। बरने वा चंदयो कब्बी ॥
जानिज्जै परिमानं। राजानं संमयो नथ्यिं ॥ छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ वह मंडल न्रप देषि कै। चंद सु ओपम पाइ ॥
मानौ चंद सरद्द कौ। संग उड़ग्गन आइ ॥ छं० ॥ ३४ ॥

दै दुज्जनि दुज उत्तरह। दुह्न रूप चमकंत ॥
कोइ कहै प्रतिव्यंब है। को कहै प्रीति अनंत ॥ छं० ॥ ३५ ॥

संयोगिता का वर्णन।

कवित्त ॥ चंद बदनि म्रगनयनि। भौंह असित को वंड बनि ॥
गंग मंग तरलति तरंग। बैनी भुअंग बनि ॥
कीर नास भ्रगु दिपति। दसन दामिनि दारमकन ॥
छीन लंक श्रीफल अपीन। चंपक बरनं तन ॥
इच्छति भ्रतार प्रथिराज तुहि। अहनिसि पूजति सिव सकति ॥
अध तेरह बरष पदंमिनी। हंस गमनि पिष्षहु न्रपति ॥ छं० ॥ ३६ ॥

बारह के बाद और तेरह के भीतर जो स्त्रियों की वयःसंधि अवस्था होती है उसका वर्णन।

दूहा ॥ तिहि तन बन न्रप सों कहै। दुहुं अंतर सिसु बेस ॥
जुब्बन तन उद्दिम कियौ। बालप्पन घटनेस ॥ छं० ॥ ३७ ॥
बालप्पन तन मध्य वय। गादरि तन चष नूर ॥
ज्यों बसंत तरु पल्लवन। इछ उठ्ठन अंकूर ॥ छं० ॥ ३८ ॥
बय बालत्तन मध्य इम। प्रगट किसोर किसोर ॥
राकापति गोधूर कह। आभा उद्दित जोर ॥ छं० ॥ ३९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यों दिन रत्तिय संध गुन। ज्यों उष्णह हिम संधि ॥
यों सिस जुब्बन अंकुरिय। कछु जुब्बन गुन बंधि ॥ छं० ॥ ४० ॥
ज्यों करकादिक मकर मैं। राति दिवस संक्रांति।
यों जुब्बन सैसव समय। आनि सपत्तिय कांति ॥ छं० ॥ ४१ ॥
यों सरिता अरु सिंध सँधि। मिलत दुहून हिलोर ॥
त्यौं सैसव जल संधि में। जोवन प्रापत जोर ॥ छं० ॥ ४२ ॥
यों क्रम क्रम बनिता सु बय। सैसव मध्य रहंत ॥
सीतकाल रबि तेज ससि। घामरु छांह सुहंत ॥ छं० ॥ ४३ ॥
सैसव मध्य सु जोबनह। कहि सोभा कबिचंद ॥
पाव उठै तर छांह छबि। पोज न नीच रहंत ॥ छं० ॥ ४४ ॥
जीति जंग सैसव सुबय। इह दिष्षिय उनमान ॥
मानों बाल विदेस पिय। आगम सुनि फुल्लिकाम ॥ छं० ॥ ४५ ॥
गाथा ॥ यों राजति वय राजं। सैसव मध्येय सोभियं सारं ॥
ज्यों जल जोर प्रमानं। कमलानं कोर उच्चयं होइं ॥ छं० ॥ ४६ ॥
दूहा ॥ यों सैसव जुब्बन समय। विधि बर कौन प्रकार ॥
ज्यों हथलेवहु दंपती। फेरे फिरिअन पार ॥ छं० ॥ ४७ ॥
यों राजत अवनी कला। सैसव में कछु स्याम ॥
ज्यों नभ परिवा चंद तुछ। राह रेह बल ताम ॥ छं० ॥ ४८ ॥

स्त्रियों के यौवन से वसंत ऋतु की उपमा वर्णन।

पद्धरी ॥ उत्तरन ससिर रति राज नाइ। अह संधि जिसें निसि संधि पाइ ॥
जुब्बनह अवन सैसव सुनाइ। कछु संक अंग पै निडर ताइ ॥ छं० ॥ ४९ ॥
सैसव सुससिर रितुराज थान। मानहिं बसंत जुब्बन न आन ॥
अनमंध मधुप मधु धुनि करंत। पंचहि कटक्क सिसिरह वसंत ॥
छं० ॥ ५० ॥
भुअ नीच नेन नचै नवाय। आवंत जुवन जनु करि बधाय ॥
जिम सीत मंद सुगंध वाय। कछु सकुच एम बर करहि पाइ ॥
छं० ॥ ५१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुब्बन नवत्त सिसु सरिर मंद । बिरही सँजोग रस दुअनि छंद ॥
मीन मन मंत मह्हि सुनि बसंत । जुब्बन उछाह सिसु सिसर जंत ॥
छं० ॥ ५२ ॥
अंकुरिन पत्त गडुरित डार । सिसु मध्य स्याम ज्यौं सोमि सार ॥
पिय ओर पिया जिम दिष्षि लुक्कि । सिसु मध्य वेस इम आइ ढुक्कि॥
छं० ॥ ५३ ॥
उर धक्कि सिद्ध सैसव सु सुट्ठ । जिम मैंन मोज जुब्बन सउट्ठ ॥
कलयंठ कंठ रष्षै संवारि । मिलिहै बसंत करिहै धमारि ॥छं०॥५४॥
चिय तरस पुच्छ उट्ठीय कोर । जल मीन जाल ज्यौं हलत डोर ॥
मुक्कलित वाय तरु हलत छीन । त्यौं काम तेज चलि नैन मीन ॥
छं० ॥ ५५ ॥
संजोगि अंग जोबन चढ़ंत । तहं उट्ठि ससिर आयौ बसंत ॥
वयभोग बुद्धि सुंदरि सहज्ज । रितुराज गयै जिम रैनि लज्ज ॥
छं० ॥ ५६ ॥
दूहा ॥ जनम सुष्ष जोबन जई । उई सु सैसव ठार ॥
संभरि न्रप संभरि धनी । तनह सु भौ रति मार ॥ छं० ॥ ५७ ॥
सजि सुपंग राजा सुभर । दिसि दिसि जित्तन वान ॥
उभै दिसा बर मंच जित । अट्ठदिसा भर षान ॥ छं० ॥ ५८ ॥

संयोगिता की बड़ी बहिन का व्याह और उसकी सुन्दरता।

कवित्त ॥ एक सु पुचिय पंग । दीय दक्षिन सु देव ग्रह ॥
मान हीन माननिय । रूप उप्पम रंभा कहि ॥
सुबर काम रति बाम । मनौं फेरिय सो आनिय ॥
कमल अनूपम काज । कछू ओपम मन मानिय ॥
लच्छन बतीस वयसंधि इह । सो ओपम अग कथ्थयौ ॥
चढ़नह सुमनमथ चित्त रथ। चढ़न मत्ति चित रथ्थयौ ॥
छं० ॥ ५९ ॥

संयोगिता के सर्वाङ्ग शरीर की शोभा का वर्णन।

पद्धरी ॥ संजोग संधि जोबन प्रवेस । चितमंडि सुनौ संभरि नरेस ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीपंड पंक कुंकम सुरंग। मानों सु करी कर मरदि लंग॥
छं० ॥ ६० ॥

उप्पमा नष्ष आवै न कब्बि। तिन पड़ी होड़ मयुषन सरब्ब॥
इक अंग उपम कहियै सुदुत्ति। तारकन तेज द्रप्पन सु मुत्ति॥
छं० ॥ ६१ ॥

पिंडुरी अंग झलकत सु रूर। मनु रत्त रंग कंचन कि चूर॥
ओपम्म नष्ष फिरि कहि उपाइ। कन्नैर कली फूलंत राइ॥
छं० ॥ ६२ ॥

पिंडुरी पाइ सोभंत बाम। अँभ ओन षंभ सोवन्न बाम॥
उर जंघ दंड ओपम निरंग। गज सुंड डिंभ कै ओन रंग॥
छं० ॥ ६३ ॥

नित्तंब तुंग इन भाइ कब्बि। धरि चक्र सँवारि दुज बाम रब्बि॥
नित्तंब भाग उत्तंग छंड। मनु तुलत काम धरि लंक दंड॥
छं० ॥ ६४ ॥

लंकह प्रमान मुठ्ठीत घट्टि। बैनी ढलक्क दीसंत पुट्ठि॥
चिंतै सुकब्बि ओपंम ओर। नागिनि सु हेम षंभह सुजोर॥
छं० ॥ ६५ ॥

राजीव रोम अंकुरिय वार। मानों पपील बंधी विलार॥
गति हंस चलत मुक्कत विचार। सिषवंत रूप गहि बंधि भार॥
छं० ॥ ६६ ॥

कुच सरल दरस नारिंग रंग। मरदे कि कुंक कंचन उपंग॥
जोवन प्रसंग इह रूप हद्द। छुर करी हरी मुक्कै मसद्द॥
छं० ॥ ६७ ॥

तब लग्गि होत हम थान मत्ति। जब लग्गि आन सैसव किरत्ति॥
अधबीच बात हम सुनी तास। कहि लेषि लोग आवै न हास॥
छं० ॥ ६८ ॥

कलग्रीव रहे चिवलीय चाह। बैठोति चंद आसनति राह॥
अध अधर अरुन दीसै सुरंग। जानै कि बिंब फल चंद जंग॥
छं० ॥ ६९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओपम सुचंद बरदाइ लीन। मनु अगर चंद मिलि संग कीन॥
मधु मधुर बानि सद सहति रंग। कलयंठ कंठ केकीन लंघ॥
छं० ॥ ७० ॥
बर दसन पंति दुति यों सुभाइ। मोइक्क चंद जुब्बन बनाइ॥
नासिक अनूप बरनी न जाइ। मनों दीप भवन त्रिघ्घात पाइ॥
छं० ॥ ७१ ॥
सुंदरि बदन्न इनौ बनाइ। मानों रघ्घरवि दीपह मनाइ॥
कहां लगि कहों चहुआन बाम। सैसव सुबाल कंपैति काम॥
छं० ॥ ७२ ॥
अंबुज नयन्न मधुकर सहित्त। षंजन चकोर चमक्कंत चित्त॥
बैनीति साल सोभै बिसाल। मनों अरध उरग चढ़ि कनक साल॥
छं० ॥ ७३ ॥
दूहा॥ इह सुनि न्नपति नरिंद दिन। भय श्रोतान सुराग॥
तव लगि पंग नरिंद कै। बाजे बाजन लाग॥ छं० ॥ ७४ ॥

ब्राह्मण के मुख से संयोगिता के सौंदर्य्य की कथा सुनकर पृथ्वीराज का उस पर मोहित हो जाना।

सुनि संजोगि अपुब्ब कथ। पंग चरित्त न काज॥
मंच मदन बंभनि उभै। जोगिनि मुक्कै राज॥ छं० ॥ ७५ ॥
जो चरिच चिंतै मनह। सोई रूपक (१)राइ॥
न्निप अग्गै हर बंधि कै। कल कनवज्जह आइ॥ छं० ॥ ७६ ॥
कवित्त॥ भय अनंग न्नप अंग। श्रवन श्रोतान सु बढ्ढिय॥
संभरि संभरिनाथ। पंच बानन तन दढ्ढिय॥
मध्य हिय न छिन टरहि। श्रवन मन नैंन निरष्षै॥
चित्त गयंदह फेरि। रति न मानै बिन दिष्षैं॥
संभरि सुवत्त संभरि न्नपति। फुनि फुनि पुच्छै तिन सु कथ॥
बुधि मदन सु बंभनि केलि सुनि। कुटिल तमकि चढ्यौ सु रथ॥
छं० ॥ ७७ ॥

(१) ए. राह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज की काम वेदना और संयोगिता से मिलने के लिये उसकी उत्सुकता का वर्णन।

कुटिल तमकि रथ चढ़त। बढ़िय श्रोतान कल न तन॥
निसा दिवस सुपनंत। राज रष्योति मद्धि मन॥
फिरै संजोगिअ पास। और रस मुक्किलि राजं॥
देउं द्रव्य मन बंछि। जाइ प्रमुधै चिय आजं॥
दुज चलै उछि कनवज्ज दिसि। ग्रेह सपत्त बंभनिय॥
चहुआन तेज गुन दुति सबल। सुनत संजोगी तं गुनिय॥छं०॥७८॥

सती का ब्राह्मणी स्वरूप में कन्नौज पहुंचना।

दूहा॥ दुज सबद्द उच्चै कहै। कब कहि नीचं बैन॥
देषि संयोगि अचिज्ज बहु। तब करि उंचे नैन॥ छं०॥ ७९॥
देषि संयोगि अचिज्ज हुअ। पुच्छत पंग कुमारि॥
कोन देस को भेस बनि। क्यों आवन सु विचार॥ छं०॥ ८०॥

यहां पर ब्राह्मणी का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना।

पद्धरी॥ सुनि एक राइ संभरि नरेस। पुरसान षान बंधे असेस॥
धनु धनुक धार अर्ज्जुन समान। मनि रतन निद्धि जस आसमान॥
छं०॥ ८१॥
बर तेज ओज जमजोर जोर। अरि छिपै तेज मनु चंद चोर॥
जिन बान तेज गज सुक्कि मद्द। चतुरंग सज्जि चव कलन छद्द॥
छं०॥ ८२॥
इह जोग बीर सुवौं न बीर। बेधत्त सत्त बर एक तीर॥
कनवज्ज रीति बजि जेय कंध। इह धक्कि राज सह होइ [1]निंध॥
छं०॥ ८३॥
जोगिनी भूप औधूत रूप। कहां कहौं रूप पंषी अनूप॥छं०॥८४॥

पृथ्वीराज के स्वाभाविक गुणों का वर्णन।

(१) ए.-निद्ध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साटक ॥ लज्जारूपगुणेन नैषध सुतो, वाचा च धर्मों सुतं ॥
बाने पार्थिव भूपति समुद्दिता, मानेषु दुर्योधनं ॥
तेजे सूर समं ससी अमिगुनं, सत् विक्रमो विक्रमं ॥
इंद्रो दान सुशोभनो सुरतरू । कामी रमावल्लभं ॥ छं० ॥ ८५ ॥
दूहा ॥ दुज सुकही उप्पम भली । कथा सु उत्तम रीति ॥
बढ़ि आनंद सु छंद नन । सुनिग रीति सा रीति ॥ छं० ॥ ८६ ॥
दुज्ज दिसा अलिय जु अवन । द्रिग अच्छरि दिसि जाइ ॥
मनु सैसव जोबन बिचै । बाल बसीठ कराइ ॥ छं० ॥ ८७ ॥

उक्त वर्णन सुनकर संयोगिता के हृदय में पृथ्वीराज प्रति प्रीति का उदय होना ।

जिमि जिमि सुंदरि दुजि बयन । कही जु कथ्य सँवारि ॥
बरनन सुनि प्रथिराज कौ । भय अभिलाष कुँआरि ॥ छं० ॥ ८८ ॥
असन सेन सोभा तजी । सुनित अवन कुंआरि ॥
मन मिलिबे की रुचि बढ़ी । और न चित्त दुआर ॥ छं० ॥ ८९ ॥
गाथा । अमिए अंमिय बचने । रचने बाल ध्यान प्रथिराजं
गोलक डुलै न थानं । जानै लिष्षि चिचयं चरितं ॥ छं० ॥ ९० ॥

पृथ्वीराज की कीर्ति का वर्णन ।

मोतीदाम ॥ अमग्गत दान कहै दुज पान । सुनी सुनि मान कथा चहुआन॥
इकं इक बत्त सबै न्रप पाइ । सबै चहुआन दुती तन छाइ ॥
छं० ॥ ९१ ॥
सकंबिय विक्रम ज्यों परमान । सतं सत ज्यों सिवरी उन मान ॥
बलदै बाह सहस्रयराज । प्रति प्रति काम सु मोचन काज ॥
छं० ॥ ९२ ॥
विधिं विधि भागति पूरन तेज । ससी सस सीतल ज्यों न्रप केज ॥
सति सत्तह ज्यों हरिचंद समान । बलबुद्धि साइर ज्यों उनमान ॥
छं० ॥ ९३ ॥
रसं रज राजत जोति प्रकार । भयंकर भीषम ज्यों करसार ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सयंक्रत पालग पंचव जोति। तिनं मति एक अमंतिय कोति॥
छं० ॥ ९४ ॥
प्रतिं प्रति पारथ ज्यों प्रथिराज। करी कबिचंद सु ओपम साज॥
मघवा सुमहीपति कौ बल बीर। तिनै बर विद्र बरष्षत नीर॥
छं० ॥ ९५ ॥
धराधर हिंम सुतं लछिराज। उद्यौ मनु इंद्र सु प्राचिय काज॥
छं० ॥ ९६ ॥

ब्राह्मण का कहना कि चाहुआन अद्वितीय पुरुष है।

दूहा ॥ या समान जौ राज होय। तौ कहियै प्रति जोति॥
ना समान चहुआन कौ। तौ कहि ओपम कोति॥ छं० ॥ ९७ ॥
कंत सुकंति सु दिष्षि इम। दुहु ओतान बढ़ाय॥
दुहु दिसि पंग नरिंद दल। हत्त अहत्त समाय॥ छं० ॥ ९८ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज से विवाह करने की प्रतिज्ञा करना।

कवित्त ॥ सीय लीय हत राम। सुहत नलराज दमंती॥
सिव हत लीनौ सिवा। कृष्ण हत रुकमनि कंती॥
हत ज्यों काली धर्‍यौ। बीर बाहन शंकर बर॥
ज्यों हत लिय हतभान। भान पत्ती सुमंत वर॥
हत लियौ देव देवत नृपत। हत सँयोगि चहुआन वर॥
बर बरौं एक एकह सु हत। कै चहुआन बिसान नर ॥छं०॥९९॥
मन अभिलाष सु राज। बरन सुंदरी भइय मति॥
जौ तन मध्यें सास। मोहि संभरिय नाथ पति॥
कै कुआंर पन मरौं। धरौं फिरि अंग पहुमि पर॥
तौ राजा प्रथिराज। आन मन इंछ नहीं बर॥
इम चिंत चित्त कुंआरी सु हत। रही भोइ मन मोन अहि॥
कलहंत बीज महि मंडि दुज। अप्प सपत्ते ग्रेह कहि ॥छं०॥१००॥
दूहा ॥ यों हत लीनौ सुंदरी। ज्यों दमयंती पुब्ब॥
कै हथलेवौ पिय करौं। कै जल मध्यें डुब्ब॥ छं० ॥ १०१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोगिता का पृथ्वीराज के प्रेम में चूर होकर अहर्निशि उसीके ध्यान में मग्न रहना।

मुरिल्ल ॥ बिय पंगानि कुमारि सुमार सुमार तजि।
घरी पहर दिन राति रहै गुन पिथ्थ भजि ॥
भेदं भंजै और जोर मन में लजिहि।
लषि पुच्छहि चिय वत्त न तत्त प्रकास किहि ॥ छं० ॥ १०२ ॥

वसंत ऋतु का पूर्ण यौवनाभास वर्णन।

दूहा ॥ सिसिर समय दिन सरस गत। मधु माधव वल मंडि ॥
भार अष्टदस बेल तरु। पच पुरातन छंडि ॥ छं० ॥ १०३ ॥
नूतन रत मंजरि धरिय। परिमल प्रगटि सुवास ॥
छच रुचिर छवि काम जनु। अलि तुट्टत सुर रास ॥ छं० ॥ १०४ ॥

पद्धरी ॥ आगम बसंत तरु पच डार। उठि किसल नइय रँग रत्त धार ॥
अंकुरित पच गहरति डार। लहलहति जंग अट्ठार भार ॥
छं० ॥ १०५ ॥
मधुपुंज गुंज कमलनि अधीन। जनु काम कोक संगीत कीन ॥
तरु तरनि कूकि कोकिल सभार। विरहिनी दीन दंपति अधार ॥
छं० ॥ १०६ ॥
कलरव करंत षग द्रुमति रोर। निसि बीति सिसिर रतिराज भोर ॥
चिय पुरुष चषनि रुचि अनंग बढ्ढि। दंपति अनंग विरहिनी जढ्ढि ॥
छं० ॥ १०७ ॥
द्रुम अवनि राजरित गवन कीन। नव मुग्ध मध्य कंतन अधीन ॥
ग्रह ग्रहनि गान गायंत नारि। मन हरति मुग्ध मध्या धमारि ॥
छं० ॥ १०८ ॥
तन भरति रत्त रँग पीत पानि। हिय मोद प्रगट तन धरत जान ॥
द्रुम हुअ वसंत आगम अवन्नि। मदमत्त करिय जनु गवन वन्नि ॥
छं० ॥ १०९ ॥
मसि भींज दिननि पिय तन बनंग। अवतार अवनि जनु धरि अनंग ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुष हर्ष गंड मंडल प्रकास। फरकंत अधर मधु रस विलास॥
छं० ॥ ११० ॥

विगसंत कमल छवि नयन मंडि। बंधूक अरुन रुचि षंडि छंडि॥
मधुमास सुक्ल निसि रुचिर चंद। बहि गंधपवन छबि सीत मंद॥
छं० ॥ १११ ॥

हुअ रोम पंचसर अंच देह। कलमलिय ज्वलिय बनिता सनेह॥
निसि प्रथम प्रहर तट गवन कीन। सुभ सोभ वाग मन हुअ अधीन
छं० ॥ ११२ ॥

सगपन्न धार इक लिय चढ़ाइ। जल्लैव इक्क अँग पवन पाइ॥
पिष्षे सु बाग बानिक रसाल। निरषंत नयन सोभा बिसाल॥
छं० ॥ ११३ ॥

निर्जन बन में यक्षों के एक उपवन का वर्णन।

दूहा॥ उपबन घन बद्दल बरन। सीत पवन द्रुम जाल॥
चित्तरेष बल्लिय बिटप। अवलबि ताल तमाल॥ छं० ॥ ११४ ॥

तरु तल जल उज्जल अमल। टपकत फल रस भार॥
कुंज कुंज विगसत बसन। तन बढ़ि धात अपार॥ छं० ॥ ११५ ॥

पतत पत्र नहिं धर रहत। बानक बान उजास॥
चंद जोति जल बानि बनि। होड़ होत रस भास॥ छं० ॥ ११६ ॥

कवित्त॥ फलन भार नमि साष। जीभ रस स्वाद विवस घट॥
सुमन सघन बरषंत। गीत संगीत कोक रट॥
बँधि चहबच्चनि नीर छब्बि छचन रंग धानिय॥
मंडित मंडप गौष। सुभग सालनि छबि न्यारिय॥
संभरिय राव बैठक बनक। कनक अलक कंचन पुरिय॥
प्रथिराज मुदित मादक तनह। बाज राज नंष्यौ तुरिय॥ छं० ॥११७॥

पृथ्वीराज का दरवान को जीत कर भीतर बगीचे में जाना।

कढ़ि धरनि षुरतार। भारु भर सेस ससंकिय॥
उड्डि नाल असमान। उग्गि आकास चंद विय॥
पत पंषिय भर हरिग। अंग थर हरिग रष्षि कन॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इक्क श्रवन झंझरिग । कठिन कवियान अष्य तन ॥
तुट्टिय पटाटि दवि अंग तुटि । विफरि अंग तूरिय सु रहिय ॥
सोमेस सूर चहुआन सुअ । तास कित्ति चंदह कहिय ॥छं०॥११८॥

बाग गिरद बर कोट । तास दरवान हुकम किय ॥
एकाकी हम रमत । कोइ न आवंन लहै बिय ॥
बैठि दरह दरवान । जानि जमदंड हथ्थ धरि ॥
पिष्य करह कम्मान । टंक पचीस जोर जुर ॥
लग्गे सु फिरन द्रुम द्रुम निकट । जषनी जष दरसन भयौ ॥
देषंत सोभ भुल्लिय नयन । मैंन रत्ति आनंग ठयौ ॥ छं० ॥ ११९ ॥

यक्ष यक्षिनी और पृथ्वीराज का वार्तालाप ।

दिष्षि जष्य प्रथनाथ । हाथ जुग जोरि नवंनि किय ॥
कवन काज इत अवन । नाम तुम कवन पुरुष चिय ॥
जष्य नाम दुष दवन । नाम रवनी रस वल्लिय ॥
नाटिक विविध विचित्र । करन आगम रस रल्लिय ॥
सिर नाइ पिष्य कीनिय नवनि । कछू मोहि अग्या कहौ ॥
सु गंध धूप मिष्टान फल । करौं प्रगट बन पुर लहौ ॥ छं० ॥ १२० ।

यक्ष का कहना कि अवश्य कोई बड़े राजा हो ।

दूहा ॥ कहिय जष्य प्रथिराज सम । बानक इक्क अनूप ॥
दुरि पिष्यो द्रुम सघन तर । तुम कोइ भूप अनूप ॥ छं० ॥ १२१ ॥

पृथ्वीराज का वहां पर नाना भांति की सुख सामग्री मंगवा कर प्रस्तुत करना ।

पद्धरी ॥ सेवकन बोलि करि हुकम कीन । सुगंध धूप रस कल रसीन ॥
आवत्त वस्त लग्गै न वार । जहं तहँति आनि कीजै अमार ॥
छं० ॥ १२२ ॥

मुष होत हुकम सेवक प्रवीन । सब बस्त आनि अम्मार कीन ॥
भरि कनक कुंड बर कासमीर । म्रिगमद जवादि अनपार भीर ॥
छं० ॥ १२३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपूर कलस तहं धरिय आनि। कुमकुमनि कुंड सुभ भरिय थान ॥
केतकि कमल्ल केवर कुसुम्म। मालती बेल जाती सुरम्म ॥छं०॥१२४॥

चपक्क फूल पड्डुर अपार। जहं तहँति आनि, किन्ने अमार ॥
तंबोल तच बानक्क अनंत। वुध विविध जाहि भूलत गनंत ॥
छं० ॥ १२५ ॥

दारिम्म दाष केला रसीन। अषरोट नासपाती नवीन ॥
नारियर पिंड षज्जूर आनि। विज्जौर और फल विविध बानि ॥
छं० ॥ १२६ ॥

घृत दुग्ध मिस्र पकवान ढेर। आनंत तिनह लग्गी न बेर ॥
किय बिदा सब्ब सेवक बहोरि। दुरि बैठि पिथ्थ इक हच्छ ओर ॥
छं० ॥ १२७ ॥

गंधर्व राज का आना और नाटक आरंभ होना।

दूहा ॥ निमष होत गंध्रव्व इक। सँग नाटिक आरंभ ॥
तंतिताल बीना म्रदंग। सँग अच्छरि लिए रंभ ॥ छं० ॥ १२८ ॥

अप्सराओं का दिव्यरूप और शृंगार वर्णन।

पद्धरी ॥ कुमकुमनि नीर कर मुष पषारि। अचवंत अमिय वर गंगधार ॥
करि गंध लेप अंगनि बनाइ। रचि कुसुम अंग गहने बनाइ ॥
छं० ॥ १२९ ॥

तंबोल बरनि कपूरषंड। फुनि कछे न्रित्य नाटक्क मंडि ॥
स्वर सपत ताल कल मनहरंत। बनि बीन जंच हथ्थन धरंत ॥
छं० ॥ १३० ॥

कटतार तार पट तार पाइ। संगीत भेद बरन्यो न जाइ ॥
रस राग रंग छत्तीस मंडि। धुनि धरत सिद्ध तन धर्म षंडि ॥
छं० ॥ १३१ ॥

जब रची रुचिर बीना प्रवीन। नारह नाद तंती अधीन ॥
रस सरस हास बरन्यो न जाइ। सुभ कर्म्म धर्म्म सुत्र सोम पाइ ॥
छं० ॥ १३२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाटक्क उट्ठि फुनि बैठि देव। करि भोग भोज मिष्टान सेव ॥
हुअ चपति अंन कपूर मंडि। तंबोल तच कर बिरा घंडि ॥
छं० ॥ १३३ ॥

सब सथ्थ बहुरि इक रह्यौ जष्षि। तिहि सथ्थ इक गंध्रब्ब इष्ष ॥
तिहि कह्यौ जष्ष रस रह्यौ आज। इह कवन आनि सब सँचिय साज ॥
छं० ॥ १३४ ॥

पृथ्वीराज के आतिथ्य से प्रसन्न होकर गंधर्व का उन्हें एक सर्वसिद्ध कवच देना।

तिहि कही जष्ष जिहि क्रत्त काम। सोमेस पुच प्रथिराज नाम ॥
गंध्रब्ब कही सुष प्रसन होइ। इक देउ मंच तन अभय सोइ ॥
छं० ॥ १३५ ॥

सुनि जष्ष लीन प्रथिराज ताहि। मन मुदित अंग सुष रहे चाहि ॥
गंध्रब्ब मंच दीनौ स धीस। सिर धारि हथ्थ दीनी असीस ॥
छं० ॥ १३६ ॥

गंधर्व जष्ष बहुरे अकास। तिहि निसा पिथ्थ तहं किन्न वास ॥
छं० ॥ १३७ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके सुकवर्ननं नाम सैंतालिसमों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ४७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ बालुका राइ सम्यौ लिष्यते ॥

(अड़तालिसवां समय ।)

राजसूय यज्ञ सम्बन्धी कार्यों के सम्पादन करने के लिये राजाओं को निमंत्रण भेजे जाना ।

कवित्त ॥ राज राज सब काम । करें राजसु आरंभै ॥
नीच काम अरु ऊंच । अब्ब कामह प्रारंभै ॥
नीति काम अरु ध्रम्म । बाज गज क्रम परिहारं ॥
देस देस फुरमान । दिए पहुपंग अपारं ॥
मंत्री सुमंत मति बंधि कै । सबै देस फौजें फटी ॥
बर कित्ति करन जुग जुग लगै । इह कमंध जैचँद यटी ॥छं०॥१॥

यज्ञ की सामग्री का वर्णन ।

नराज ॥ ह्यियंत सोधि राजस्थ जुराज जग्गि जोगयं ।
सवस्स राज सामदंड भेदि बंध भोगयं ॥
सु दान मान अप्पि पान दैवयं न बोधयं ॥
सवर्त्त वत्तमान रे अनेक निद्धि सोधयं ॥ छं० ॥ २ ॥
सुबन्न भार लाष एक मुत्ति भार साठयं ।
रजक्क भार कोटि एक धातु भार नाठयं ॥
तुरंग भार लाषए गजेंद्र ग्रेह लष्षयं ।
कपूर कासमीरयं अनेक भार सष्षयं ॥ छं० ॥ ३ ॥
पटंबरं स अंबरं सुगंध धूप डंबरं ।
सदत्त लाष च्यारि वा सदासि [1]नेस अंतरं ॥
सुमंत नाम नोदरे प्रजा प्रसन्न संतरं ॥
.... ॥ छं० ॥ ॥ ४ ॥

(१) ए.-नेम ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षटानु अंस भाग विप्र संभ्भने सुपचयं ॥
सु षोडसा प्रमान दोंन वेद वान अप्पयं ।
विराम गर्व दर्वने सु मंचि मंच भागयं ।
विचारि वीर राजह्र जयंति ¹जोति जागयं ॥ छं० ॥ ५ ॥

यज्ञ के हेतु आह्वान के लिये दसों दिशाओं में जयचन्द का दूत भेजना।

दूहा ॥ राज जग्य आरंभ किय । सेंबर सहित सँजोग ॥
मिलि मंगल मंडप रचिय । जहां विविध विधि ²भोग ॥छं०॥६॥
दिसि मंडल षँड षंडलह । पंग फिरे जु बसीठ ।
बल बंधौ दल हिंदु जौ । बंधौ मेच्छ सो ढीठ ॥ छं० ॥ ७ ॥
मत मंडित छंडित कलह । बल दीरघ प्रति बाम ॥
कहै पंग न्रप डंच मति । रहै सु रष्यौ नाम ॥ छं० ॥ ८ ॥

गाथा ॥ केकेन गया महि मंडलायं । बज्जाए दीह दसहाईं ॥
विप्पफुरें जास कित्ती । तेगया न विगया ह्लंतीं ॥ छं० ॥ ९ ॥

जयचन्द का प्रताप वर्णन।

कवित्त ॥ स्वर्ग मंच जीतयौ । नाग जीतयौ मंच बल ॥
बल जीते द्रिगपाल । चढ़वि हैवै अभंग भर ॥
मुगत माल द्रगपाल । जित्त छल गोरे मारे ॥
द्रव्य सबल बल अग्ग । जग्य करनह अधिकारे ॥
चिहुं तेज चक्क ससि काल ज्यौं । तपै तेज ग्रीषम सु रवि ॥
संसार मान न्रप तेज बल । यौं सु धरा तौ तेज तवि ॥छं०॥१०॥

गाथा ॥ पहुवी कालह बलियं । कालह नमा कित्तियं बलियं ॥
जे नर कालह छलयं । ते कित्ती संजीवनं करयं ॥ छं० ॥११॥

जयचन्द का पृथ्वीराज को दिल्ली का आधा राज्य बांट देने के लिये संदेसा भेजने की इच्छा करना।

(१) ए.-जोगि । (२) ए.-जोग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्धरी ॥ उच्चरै वीर पहु पंगराइ। हम मात तात द्रिग विजय चाइ ॥
मुक्कलै दूत बर मंच काज। मातुलह बंस प्रथिराज राज ॥छं०१२॥
हिंदू न जानि गुरु गुरुअ पत्ति। चिचंग राइ साहसह हत्त ॥
धर धरनि बंटि बिब्भाइ लच्छि। जानै सु राज जिन तजो गच्छि ॥
छं० ॥ १३ ॥
बंधौ समेत जिन बलह भूमि। बरषै सुराज ताम्सं [1]अतूमि ॥
बर मिलै आइ पहुपंग पाइ। ढिल्ली समेत सोरों लगाइ ॥छं०॥१४॥
अप्पैज भूमि तुम सेव जाइ। .... ॥
जिम जिम सु बमौ तुम चित चढ़ंत। तिम तिम सु दान पंगहु बढंत॥
छं० ॥ १५ ॥
अनि ठौर षेद जिनः करौ चित्त। अप्पै सु भूमि दस गुनिय हित्त ॥
को करै पंग सों बल प्रमान। दिष्यौ न तीन लोकह निदान ॥
छं० ॥ १६ ॥
अब अमित मंत इह तत्त जानि। गुरुबत्त तत्त मंची सु ठानि ॥
पय लग्गि सुनि रु परधान तब्ब। पहुपंग राइ बर हुकम सब्ब॥छं०॥१७॥

जयचन्द का पृथ्वीराज के लिये संदेसा।

कवित्त ॥ मातुल हम तुम इक्क। इक्कि बंसह निरधारिय ॥
आदि बंस कमधज्ज। बरन छचिय अधिकारिय ॥
तुम संभरि चहुआन। बसौ अजमेरति बीरं ॥
पंग देस सब भूमि। मंगै सो अड्ड उरीरं ॥
यों कियौ मंत ग्रह अप्प बर। सुमति बोलि परधान न्रप ॥
छिति मत्ति छित्ति जीपन धरा। सुबर सूर साहस सु तप ॥छं०॥१८॥

जयचन्द की आज्ञानुसार कवियों का जयचन्द की विरदावली पढ़ना और मंत्री सुमंत का जयचन्द को यज्ञ करनें से मना करना।

(१) ए. अनूमि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्धरी॥ थप्पै सुभट्ट राजह्न पंग। नर हरै पाप करवत्त गंग॥
धुनि धुनि सु विप्र बोलैति बेद। तन करै न्विमल अघ करै छेद॥
छं० ॥ १९ ॥
ग्रह ग्रहन हेम कसि कसि सु नारि। मानों कि ह्नर ससि क्रिम्म तार॥
जगमगै हेम विधि विधि बनाइ। जिम निगम अंत बसि बरुन आइ॥
छं० ॥ २० ॥
ग्रह ग्रहन कलस तोरन समान। कैलास सिषर प्रतपै सुभान॥
ग्रह ग्रहन गौष रष्षत बनाइ। कैलास डरह ससि अब्ब पाइ॥
छं० ॥ २१ ॥
ग्रह ग्रह कि पाट जगमग जराइ। कैलास लग्गि नवग्रह रिसाइ॥
*कलि अंत पथ्थ कनवज्ज राइ। .... छं० ॥ २२ ॥
सतपती सील धर धम्म चाव। सुनि रोस कियौ पहु पंग राव॥
मागधहु सूत बंदनि बुलाव। .... छं० ॥ २३ ॥
पुच्छयौ सु बंस कमधज्ज ग्रब्ब। हम बंस जग्य किहि कियौ पुब्ब॥
जिहि बंस जग्य नन होइ राज। भुगतौ न भूप सुष सर समाज॥
छं० ॥ २४ ॥
तुम बंस भए कमधज्ज ह्नर। कीनौ सु राज राजस्स भूर॥
तब बंस भयौ बाहन नरिंद। अंतरिष रथ्थ चलि अग्ग कंद॥
छं० ॥ २५ ॥
तुम बंस भयौ पूरूर 'रूर। रथ च्यारि चक्र जिहि जीति ह्नर॥
सतसिंधु ह्नर जिह रथ्थ चील्ह। तुम बंस भयौ न्रप राज नील॥
छं० ॥ २६ ॥
तुम बंस भयौ नलराइ अंद। नैषद्ध हार हौं धऱ्यौ बंध॥
षट चक्र भए कमधज्ज आदि। किन्नौ नरिंद जिह बरुन बाद॥
छं० ॥ २७ ॥
जीमूत धऱ्यौ जिहि चक्र सीस। संसार कित्ति कीनी जगीस॥

* इस स्थान पर छंद के कुछ अधिक अंश खंडित मालूम होते हैं क्योंकि यहां के पाठ में अर्थ नितान्त खंडित होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को कहै पंग सों दुष्ट ¹आय । मंडै सुजग्य निहचैत राय ॥
छं० ॥ २८ ॥

बारुन्न भूमि हय गय अनग्ग । परठंत पुन्न राजह्न जग्ग ॥
सोधिग पुरान बलि बंस बीर । भूगोल लिषित दिष्षित सहीर ॥
छं० ॥ २९ ॥

छिति छच बंध राजन समान । जित्तेति सकल हय गय प्रमान ॥
पुच्छै सुमंत परधान तब्ब । अब करहु जग्य जिम चलहि कब्ब ॥
छं० ॥ ३० ॥

उत्तर स,दीन मंची सुजानि । कलिजुग्ग नाहि विय जुग प्रमान ॥
करि भ्रम्म देव देवल अनेव । षोडसा दान दिन देहु देव ॥
छं० ॥ ३१ ॥

मो सीष मानि न्रप पंग जीव । कलिजुग्ग नहीं अर्जुन सु भीव ॥
झुकि पंगराव मंची समान । लहु लोह अब्ब बोलहु अयान ॥
छं० ॥ ३२ ॥

जयचन्द का मंत्री की बात न मान कर यज्ञ के लिये सुदिन शोधन करवाना ।

दूहा ॥ पंग वचन मंचीस उर । मन भिट्यौ न प्रमान ॥
ज्यौं सायक फुट्टै नहीं । गुरु पथ्थर परजान ॥ छं० ॥ ३३ ॥
पंग परठ्ठिय जग्य जब । बत्त विविध धर बज्जि ॥
बर बंभन दिन धरहु सुभ । लगन महूरत रज्जि ॥ छं० ॥ ३४ ॥

मंत्री का स्वामी की आज्ञा मानकर दिल्ली को जाना ।

मानि हुकम पहुपंग कौ । चलि मंची बुधि बीर ॥
कै साधै चहुआन कों । कै धर बंटै धीर ॥ छं० ॥ ३५ ॥
राज बचन सेवक सुभ्रम । तत्व बचन करि जानि ॥
दिस दिल्ली ढिल्ली धरा । संभरि वै परिमान ॥ छं० ॥ ३६ ॥

भुजंगी ॥ संभारियं राज चित्तं पुनीतं । जहा साधियं मंच मंची अनीतं ॥

(१) ए.-अग्राह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनं हत्त जान्यौ व्रितं बक्क स्त्ररं। मनौं साधनं हत्त संसार चूरं॥
छं०॥ ३७॥
व्रिप भ्रम्म जानैं इसे स्त्रर पांचौ। मनौं पंग देही दुती अंग सांचौ॥
छं०॥ ३८॥

सुमंत का दिल्ली पहुँचना।

दूहा॥ मुक्कलि धर पत्ते न्रपति। दूत सु भ्रम्म सुचार॥
मनौं पंग देही दुती। सुबरि बुद्धि उद्धार॥ छं०॥ ३९॥

पृथ्वीराज का सुमंत का यथोचित सत्कार और सम्मान करना।

कवित्त॥ मिलत राज प्रथिराज। करिय आदर अधिकारिय॥
देव भगति परमान। देव जिम जचत सु चारिय॥
बर मिष्टान सु पान। मध्य अम्रत फल धारिय॥
रंग रंग घनसार। अंग म्रगमद अधिकारिय॥
मतवंत हत्ति छोड़ें नहीं। डर न चित्त नन उच्चरहि॥
घट द्यौस गए बित्तें सुभरं। दै कग्गद गुन बिस्तरिय॥छं०॥४०॥

मंत्री सुमंत का पृथ्वीराज को जयचन्द का पत्र देकर अपने आने का कारण कहना।

कवित्त॥ हरन दच्छ ज्यौं जग्य। सेव कीनी कुबेर बर॥
यौं सेवा प्रथिराज। जानि पहुपंग करै नर॥
भगति भाव विश्राम। ताप जप जाप देव सम॥
घट सुदीह कग्गर प्रमान। उद्धऱ्यौ बीर क्षम॥
जं कह्यौ जुद्ध जैचंद बर। विधि विधान निरमान गति॥
जैचंद मंत जौ गूढ़ कौ। कह्यौ राज राजन सुगति॥ छं०॥ ४१॥
साटक॥ सोयं इंद्रयप्रस्थ कारन वरं, जुम्भभैव गंध्रव गुरं॥
सोयं ता परचंड देबि बलयं, पंचे छठं [1]बंधवं।
नायं भीम द्रुयोध भूमित बलं, एवा किता अग्रजं॥
सोयं मंगय राज राजन बरं, मातुल्ल मातुल वरं॥ छं०॥ ४२॥

(१) ए.-बंधकं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमन्त की बातें सुन कर पृथ्वीराज का अपने राज्य कर्म्मचारियों से सलाह करना।

पद्धरी ॥ तिहि मंत काज प्रथिराज राज। बोले सु बीर भर बर बिराज ॥
प्रथिराज सथ्य सामंत सत्त। इक अंग अंग पंचौ सु रत्त ॥
छं० ॥ ४३ ॥

जानहि सु तत्त सा भ्रम्म सूर। देषत नरिंद बल करि करूर ॥
बोल्यौ सु गुरुअ गोयंद राज। आहुट्ठ मझ्झ सामंत लाज ॥
छं० ॥ ४४ ॥

बोल्यौ सु धनिय धारा नरिंद। आरंभ सलष पामार इंद ॥
गंभीर गरुअ भारौति भुम्मि। साइरह मझि नमनझि घुम्मि ॥
छं० ॥ ४५ ॥

बोलयौ बीर नरनाह स्वामि। भारथ्थ बीर पारथ्थ जामि ॥
छल छच छित्ति निढ्ढुर नरिंद। जैचंद बंध भारथ्थ कंद ॥
छं० ॥ ४६ ॥

दुजराज गुरू षट ध्रम पवित्त। बोलए अवर जैमंत सत्त ॥
इहि विधि प्रमान सामंत रत्त। बोलै न बोल ते चित्त मत्त ॥
छं० ॥ ४७ ॥

सामंतों की सत्कीर्ति।

दूहा ॥ मत्ति धीर सामंत सब। अति पवित्त गुन काज ॥
एक एक भुज लष्ष बर। लष्ष लष्ष सिरताज ॥ छं० ॥ ४८ ॥

जयचन्द का यज्ञ के लिये पृथ्वीराज को बुलाना।

पद्धरी ॥ पहुपंग राव राजसू जग्य। आरंभ रंभ कीनौ अचग्ग ॥
जित्तए राज सब सिंघ बार। मिल्लए कंठ जनु मुत्ति हार ॥
छं० ॥ ४९ ॥

जुग्गिनिय पुरह सुनि भयौ षेद। आवहि न माल मझ्झह अभेद ॥
मुक्कले दूत तब तिन रिसाइ। असमथ्थ सेस किम भूमि षाइ ॥
छं० ॥ ५० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंधो समेत सामंत सथ्थ। उत्तरहि आनि दरबार अथ्थ॥
सुनि दूत चले दिल्लिय सु थान। आजानबाहं जहं चाहुआन॥
छं०॥ ५१॥

पहुंचे सु इंद्र पथ्थह सु थान। गुदराइ बत्त जैचंद नाम॥
हज्जूर बोलि पट्ठाय राज। क्यों आइ इत्त सो जंपि काज॥
छं०॥ ५२॥

कन्नौज के दूत का पृथ्वीराज से मिल कर जयचन्द का संदेसा कहना।

तब दूत कहिय दिल्ली नरेस। आ एस जं जैचंद नरेस॥
राजसू जग्य आरंभ कीन। दस दिसन भूप फुरमान दीन॥
छं०॥ ५३॥

छिति छच बंध आए सु सब्ब। तुम चलहु बेगि नह बिरम अब्ब॥
फुरमान दीन चहुआन तोहि। कर छरिय दाबि दरबान होहि॥
छं०॥ ५४॥

पृथ्वीराज के सामंतों का जयचन्द के यज्ञ में जाने से नहीं करना और दूत का कन्नौज वापिस आना।

बुल्लै न बैन प्रथिराज ताह। संकरै सिंघ गुर जननि चाह॥
उच्चरे गरुअ गोयंद राज। कलि मझ्झ जग्य को करै आज॥
छं०॥ ५५॥

सतजुग्ग कहहि बलिराय कीन। तिहि किंत्ति काज चिहुलोक दीन॥
त्रेता सु कीन रघुवंसराइ। कुब्बेर कनक बरष्यौ सु आइ॥
छं०॥ ५६॥

धर ध्रम्म पुत्र द्वापर सु नाइ। तिहि पथ्थ बीर अरु हरि सहाइ॥
(१)इल दर्व गर्व तुम अप्रमान। बोलहुत बोल देवन समान॥
छं०॥ ५७॥

(१) कृ. दल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानौव तुम्ह षची न कोइ। निरबीर पहुमि कबहूं न होइ॥
जंगलह वास कालिंद कूल। जानै न राज जैचंद मूल॥
छं० ॥ ५८ ॥

जानंहित देस जोगिन पुरेस। आनल्ल बंस प्रथ्थिय नरेस॥
कै बार साह बंधयौ जेन। भंजिय सु भूप भिरि भीमसेन॥
छं० ॥ ५९ ॥

संभरि सकोप सोमेस पूत। दामित्त रूप अवतार भूत॥
तिहि कंध सीस किम जग्य होइ। जो प्रथिय नहीं चहुआन कोइ॥
छं० ॥ ६० ॥

देषी सु सभा तिन सिंघ रूप। मानै न जग्य मन अन्य भूप॥
आदरहु मंद उठि चलि बसीठ। ग्रामिनी सभा बुधजन बईठ॥
छं० ॥ ६१ ॥

कन्नौज के दूत का अपने स्वामी का प्रताप स्मरण करके पृथ्वीराज की ढीठता को धिक्कारना।

कवित्त ॥ मन विचारि बसीठ। आप आयन दै तारी॥
बंछै जंबुक मरन। बथ्थ पंचानन भारी॥
मरन लोइ बंछैत। हथ्थ जमदठ्ठह षोलै॥
अजा मरन बंछैत। बार दीपो संग डोलै॥
बंछई मरन कातर वितर। सूर हक्क पचारई॥
गामी गमार घर बैठि कै। पंग राइ बक्कारई॥ छं० ॥ ६२ ॥

दूहा ॥ जौ बरपंग नरिंद है। हों जानू बर जोर॥
ज्यों अगस्ति साइर पियौ। त्यों ढिल्ली धर तोर॥ छं० ॥ ६३ ॥
जोबन वैबर बिनै बर। कहै पंग सों अज्ज॥
मंत अवैठी गैठ है। आन मान कमधज्ज॥ छं० ॥ ६४ ॥

दिल्ली से आए हुए दूत के वचन सुन कर जयचन्द का कुपित होना और चालुका राय का उसे समझा कर शान्त करना। यज्ञ का सामान होना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्धरी ॥ फिरि चलिग तबै कनवज्ज संझ । भय मलिन मुष्ष जनु कमल संझ॥
तिन दूत पंग अग कहिय बैन । अति रोस कीन रग तैत नैन ॥
छं० ॥ ६५ ॥
बुल्ल्यौ सुमंत परधान तन्न । कनवज्ज नाथ करि जग्य अन्न ॥
बोलै सुमंच मंची प्रमान । उद्धरन जग्य कलि जुग्ग पान ॥
छं० ॥ ६६ ॥
बालुका राइ बोल्यौ हकारि । साधन सु जग्य बहु जुद्ध सार ॥
षुरसानषान बंदेति मीर । सो भाग दसम अप्पै सरीर ॥छं०॥६७॥
ऐसै जु सज्जि चौसठि हजार । अप्पैति मेछ पहुपंग बार ॥
नीसान बार वज्जेति चंग । बज्जी अवाज दिसि दिसि अनंग ॥
छं० ॥ ६८ ॥
घोषंद बाद बालुकाराज । रष्पियै जग्य को रहै साज ॥
जब लग्गि गहौ चहुआन वाहि । तब लग्गि ताहि टरि काल जाहि॥
छं० ॥ ६९ ॥
ए आसमंद न्रप करहि सेव । उच्चरहिं काम सो होइ देव ॥
सोवन्न प्रतिम प्रथिराज जानि । थप्पियै पवरि दरबार बानि ॥
छं० ॥ ७० ॥
सेंवर सँजोग अरु जग्य काज। बुध जननि बोलि दिन धरहु आज॥
मंचीन राव परमोधि जामि । घुम्मे सबार नीसान ताम ॥
छं० ॥ ७१ ॥
सब सदन बंधि बंदरनि बार । काटंत हेम ग्रह ग्रह सु तार ॥
भूषन सु दान सुर सम अचार । आनंद इंद्र सुर सम बिचार ॥
छं० ॥ ७२ ॥
धवलियै धाम देवल सु चीय । तम हरन कलस रविव्यंब बीय ॥
धज मगन रोर जनु मधु अछीय । जनु रचिय बंभ कैलास बीय ॥
छं० ॥ ७३ ॥
इक बार संजोइय सषिन प्रत्ति । मुसकाय मंद इह कहिय बत्त ॥
आचिज्ज एक सषि उरह अत्ति । बद्लीय बिद्धि मो मनह गत्ति ॥
छं० ॥ ७४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोगिता के हृदय में विरह बेदना का संचार होना।

गाथा ॥ बंबुरे मलय मरुतं। जगुरे पिक पराग पर पंचं ॥
उतकंठं भार तस्ना। मन मान संके मयं मत्ति ॥ छं० ॥ ७५ ॥
मानीय दाह बाले। पुत्तलिका पानि ग्रहनायं ॥
एकंत सेज सहव्वं। लज्जा विया बिनया साई ॥ छं० ॥ ७६ ॥

चंद्रायन ॥ कंचन ग्रेह सु मोतिय बंदर बार हुअ।
ता ओपम बर भट्ट बिचार सु एम जुअ ॥
मेर चरंनन गंग तरंगनि जानकी।
कि मेर चरन्न किरन्न भई लगि भान कीं ॥ छं० ॥ ७७ ॥
तिन ग्रेहनि में फिरत संजोगी सोभई।
रति कौ रूप न होइ काम तन लोभई ॥
मनों मधुक मन मंधि मनं मधि ही करी।
कोटि रत्ति कौ तेज रत्ति वह उन्हरी ॥ छं० ॥ ७८ ॥

अरिल्ल ॥ अंकुर पान चरावत वच्छं। मनों माननि मिस दिष्षि अनुच्छं ॥
सहचरि चरित परस पर वत्तय। मनों सजोइ सँजोग मनमथ्यय ॥
छं० ॥ ७९ ॥

गाथा ॥ बज्जाइ गाह श्रवनं। नयनं चित्तेहि दिठ्ठ लग्गाहं ॥
ग्रामान ग्राम लज्जा। आनंगा अंकुरी बाला ॥ छं० ॥ ८० ॥

संयोगिता का सखियों सहित क्रीड़ा करते हुए उसकी मानसिक एवं दैहिक अवस्था का वर्णन।

पद्धरी ॥ राजन अनेक पुचीति संग। षटवीय बरष नन लसति अंग ॥
के जुबति संग हासद सुरंग। मिल लिषहि भाम नव नव अनंग ॥
छं० ॥ ८१ ॥
संजोगि संग जुवती प्रबीन। आनंद गान तिन कंठ कीन ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ८२ ॥

गाथा ॥ आनन उछंग चिबुकी। आलोली इछं संजोगी ॥
बरनीय पानि पत्तो। दीहास तामि अठ्ठ मंझामि ॥ छं० ॥ ८३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्धरी ॥ कोमल किसोर किंचित सुरंग। अधरें तंमोर अच्छें दुरंग ॥
सुभ सरल बाल वल्लीस थोर। अंकुरहि मान मनमथ्थ जोर ॥
छं० ॥ ८४ ॥

जुब्बन जुवत्ति रचि कहहि बत्त। श्रवनन्नि सीर निकु नयन रत्त ॥
मुक्कहि न लोह लज्जा सुरत्त। निरधनिय मनहुँ धन गहिय हथ्थ ॥
छं० ॥ ८५ ॥

गाथा ॥ हा हंत सा सषिन्ना। या सुंदरि कथ बर यामि ॥
बालियं विधि विहिन्ना। संयोगीय जोगिनी पानी ॥ छं० ॥ ८६ ॥

संयोगिता की वय और उस के स्वाभाविक सौन्दर्य का वर्णन।

मोतीदाम ॥ बयजोग संजोग बसंतह जोग। कहै कविचंद समावरि भोग ॥
अनं मधु मद्दु मधुं धुनि होइ। बिना रस जोबन तीय अलोइ ॥
छं० ॥ ८७ ॥

मनं मिन लीन बसंतत राज। सु इच्छत सैसब जोबन बाज ॥
कहूं कहु अंकुरि कुंपरि नाहि। तहां बिन सैसव जोबन जाहि ॥
छं० ॥ ८८ ॥

कहै भमरी जगि होपति आज। भई न्रप बार बसंतह राज ॥
तहां बजि घुंघर जोबन भाइ। जगावहिं सैसव सेन सुनाइ ॥ छं० ॥ ८९ ॥

दूहा ॥ सैसव रिति तुछ तुच्छ हुअ। कछु वसंत धरि भाव ॥
मानों अलि दूतनि भई। नीदनि वेगि जगाव ॥ छं० ॥ ९० ॥

संयोगिता के यौवन काल की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन।

पद्धरी ॥ अधर तपत पल्लव सु वास। मंजरिय तिलक षंजरिय पास ॥
अलि अलक कंठ कलयंठ मंत। संयोगि भोग बर भुअ वसंत ॥
छं० ॥ ९१ ॥

मधुरे हिमंत रितुराज मंत। परसपर प्रेम सो पियन कंत ॥
लुट्टहित भोर सुग्गंध वास। मिलि चंद कुंद फूले अकास ॥
छं० ॥ ९२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बन बग्ग मग्ग हलि अंब मोर। सिर ढरत जानि मनमथ्थ चोर॥
चलि सीत मंद सुगंध बात। पावक्क मनों बिरहनी पात॥
छं० ॥ ९३॥
कुह कुह करंत कलयंठ जोट। दल मिलहि जानि आनंग कोट॥
तरु पलव पीत अरु रत्त नील। हरि चलहि जानि मनमथ्थ पील॥
छं० ॥ ९४॥
कुसमेष कुसुम नवधनुक साज। मंगी सुपंति गुन गरुअ गाज॥
संजर सुवान सो मनहु नेह। विद्दारि जानि जुअ जननि देह॥
छं० ॥ ९५॥
ऊषलिय चलिय चंपक सरूप। प्रज्जरहि प्रगट कंद्रप्प कूप॥
कर वत्त पत्त केलुकि सुकंति। विहरंत रत्त विछुरंत छत्ति॥
छं० ॥ ९६॥
परिरंभ अनिल कंदलि सुपान। सिर धुनहि सरस धुनि जान तान॥
भंवुरि झमूर अभिराम रम्म। नन करहिं पीय परदेस गम्म॥
छं० ॥ ९७॥
फूलिग पलास तजि पत रत्त। रन रंग ससिर जीतौ वसंत॥
दिष्षहि तपंत जिहि कंत दूर। थकि बोलि बोलि जल रहिय पूरि॥
छं० ॥ ९८॥
संजोग भोग जुवती प्रवीन। पै कंठ नट्टि दुह भगिअ लीन॥
रवि जोग भोग ससि नीय यान। दिन धर्‍यौ देव पंचमि प्रमान॥
छं० ॥ ९९॥
सोय जग्य उदीपन बाल काज। विलसन विलास मंझौज साज॥
पर उछव दषिन दीनौ मिलान। विग्रहन देस चढ़ि चाहुआन॥
छं० ॥ १००॥

पृथ्वीराज का अपमान हुआ जान कर संयोगिता का दुखित होना और पृथ्वीराज से ही व्याह करने का पण करना।

श्लोक॥ अन्यथा नैव पिष्यंति। दुज वाक्यं न मुंचते।
प्रापतं जोगिनी नाथो। संजोगौ तत्र गच्छति॥ छं० ॥ १०१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ जगत बत्त जोगिन पुरह । सुनिय कित्ति कमधज्ज ॥
भनै अप्प विभ्रंम मन । नमि सामंत सुरज्ज ॥ छं० ॥ १०२ ॥
दूत वचन कग्गद सयन । थप्पि वत्त सासत्त ॥
चमकि चित्त चहुआन न्रप । तमि सामंत विरत्त ॥ छं० ॥ १०३ ॥
सुनिय वत्त दिल्लौ न्रपति । थप्पो पोरि प्रथिराज ॥
अब जीवन बंछौ न्रपति । करहु मरन कौ साज ॥ छं० ॥ १०४ ॥

अपनी मूर्ति का दरवान के स्थान पर स्थापित होना सुनकर पृथ्वीराज का कुपित होकर सामंतों से सलाह करना।

कवित्त ॥ मो उभ्भै पहुपंग । जग्य मंडै अबुद्धि कर ॥
जो भंजौं इह जग्य । देव विध्वंसि धुंम परि ॥
कच करवत पाषान । हथ्थ छुट्टै बर भग्गै ॥
प्रजा पंग आरुही । बहुरि हथ्था नन लग्गै ॥
प्रथिराज राज हंकारि बर । मत सामंत सु मंडि धर ॥
कैमास बीर गुज्जर अठिल्ल । करौ स्तर एकट्ठ बर ॥ छं० ॥ १०५ ॥

सब सामंतों का अपना अपना मत प्रकाशित करना।

मत्त मंडि सामंत । गरुअ गोयंद उचारिय ॥
पंग जग्य तौ करै । भूमि नन बीर संहारिय ॥
लाष बीर मध्यियै । गयन कंकन प्रति साजन ॥
बनसी मध्य समुद्र । मथन रन रतन सुराजन ॥
परधंकि धंकि राजन गरै । पहुमि कहो चहुआन नहिं ॥
निरबीर पहुमि सोइ होय बर । पंग जग्य कलजुग्ग महिं ॥
छं० ॥ १०६ ॥
पंच स्तर एकंग । सथ्थ सामंत सत्त भर ॥
घाव सेन सजि सेन । राज प्रथिराज प्रीति नर ॥
राज गुरू दुजराम । राज रष्षन बल राषन ॥
अप्प सजिय सामंत । सज्जि सब स्तर एक मन ॥
सामंत स्तर षोषंद कजि । पंग भज्जि अग्गर सुधर ॥
बालुकराव निंदह कढ़िय । षग्ग मग्ग मंगै गहर ॥ छं० ॥ १०७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जयचन्द के भाई वालुकाराय को मारने के लिये तैयारी होना ।

दूहा ॥ काज बीर बालुक सु हत । सज्जि सेन चतुरंग ॥
तिन कारन भंजन सु जगि । बाजि बीर अनभंग ॥ छं० ॥ १०८ ॥

कन्ह चहुआन और गोइन्दराय आदि सामंतो का कहना कि कन्नोज पर ही चढ़ाई की जाय ।

पद्धरी ॥ सुनि मंत तंत जुग्गिनि पुरेस । मंतेव भेव मन मंडि तेस ॥
कज मंत संत जोगीय थान ॥ सब बढ्यौ कोप भर आसमान ॥
छं० ॥ १०९ ॥

बुल्लाइ सबें भर राज काज । पंमार सलष सम जैत आज ॥
निढ्ढुरह राव जामानि जाद । चंदेल भूप भौंहा सु वाद ॥छं०॥११०
कैमास भासई तेज रासि । दाहिम्म बोलि अग्गैं उहासि ॥
पुंडीर चंद लंगा अभंग । बग्गरी देव षीची प्रसंग ॥ छं० ॥ १११ ॥
सामंत सूर मिलि एक थान । मंतेव मंत विधि चाहुआन ॥
तुम सुनिय तुम .... । ...., ... ॥ छं० ॥ ११२ ॥ ॥
हम लाज राज तुम सीस साज । तुम रचिय बुद्धि सो कत्यकाज ॥
तमि कहिय राव गोयंद तब्ब । भंजों निकट्ट कनवज्ज सब्ब ॥
छं० ॥ ११३ ॥

तब कही कन्ह सुनि चाहुआन । सजि सेन जुरौ कनवज्ज थान ॥
मचाइ कूह कनवज्ज थाह । षंडहि सु रान विधि जग्य राह ॥
छं० ॥ ११४ ॥

उच्चरिग वत्त जामानि जद्द । सजि चढ़ौ जूह कजि कूह नद्द ॥
भंजियै देस कमधज्ज राज । उज्जारि थान ऊचान राज ॥छं०॥११५॥
पुक्कार कूह उट्ठे करार । भंजहि सु जेन भय जग्य भार ॥
उच्चर्यौ चंद पुंडीर ताम । कैमास मंत पुच्छौ सु हाम ॥छं०॥११६॥
मति सिंधु सद्द गुन अग्गरेस । बुद्धंत बुद्ध मनजा असेस ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आनंद सुनिय सामंत सब्ब। भय मोद मंन अस सुनिय तब्ब ॥
छं० ॥ ११७ ॥

कैमास ताम जंपै सभेस। कमधज्ज सुबल दल अस्स हेस ॥
बालुकाराय षोषंद थान। भंजियै तास हनि जूह जान ॥
छं० ॥ ११८ ॥

दग्गियै धाम पुर नैर नेस। पुक्कार भार फुट्टै असेस ॥
बिग्गरै जग्य जैचंद राज। जस होइ कित्ति सुभ्र सोम काज ॥
छं० ॥ ११९ ॥

दाहिंम मंत सुनि भर उहास। मन्नेव मंत सो धंनि हास ॥
आनंद राज प्रथिराज ताम। थपि मंत पत्त निज्ज निज्ज धाम ॥
छं० ॥ १२० ॥

कैमास का कहना कि बालुकाराय को मार कर ही यज्ञ विध्वंस किया जा सकता है।

कवित्त ॥ रष्षि थान षोषंद। राइ बालुक्क प्रमानं ॥
दिय अड्डौ चहुआन। जग्य मूलं रषि वानं ॥
रष्षि सेन समरथ्थ। गरू आदर भर मन्निय ॥
सो संभरि चहुआन। बीर अंकुरि चित्तवन्निय ॥
सामंत सूर बर बोलि बर। मंति बैठ ढीलीम पहु ॥
चय जाम सिंघ घरियार बजि। बीर बीर लग्गे सु पहु ॥ छं० ॥ १२१ ॥

गाथा ॥ दिढ़ करि मंच सहाऔ। पत्तौ धाम राज सा भृत्तं ॥
अंतर महल उहासौ। आग्रंमेस तथ्थ चहुआनं ॥ छं० ॥ १२२ ॥

दूसरे दिन सभा में आकर पृथ्वीराज का बालुकाराय पर चढ़ाई करने के लिये महूर्त देखने की आज्ञा देना।

अरिल्ल ॥ बोलि तथ्थ मंची कयमासं। राजा मानिय दू आभासं ॥
और सबै सामंत सुरेसं। दिय सनमानि बहोरि नरेसं ॥ छं० ॥ १२३ ॥

गाथा ॥ सिंघासने सुरेसं। सम अरोहि धीर ढीलीसं ॥
मत्त पयान विचारं। .... ॥ छं० ॥ १२४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ बोल्यौ बंभन सूर तहां। कही सु जिय की बात ॥
सो दिन पंडित देषि हम। जिन दिन चलैं संघात ॥ छं० ॥ १२५ ॥

ब्राह्मण का यात्रा के लिये सुदिन बतलाना।

दूहा ॥ तब बंभन कर जोर कहि। सुनौ सु बात नरिंद ॥
पुष्य नषित रविवार है। तिन दिन करौ अनंद ॥ छं० ॥ १२६ ॥

उक्त नियत तिथि पर तैयारी करके पृथ्वीराज का अपने सामन्तों को अच्छे अच्छे घोड़े देना।

पद्धरी ॥ रबि जोग्य पुष्य ससि तीय थान। दिन धर्‌यौ देव पंचमि प्रमान॥
पर उछह दिषन कीनौ मिलान। विग्रहन देस चढ़ि चाहुआन ॥ छं० ॥ १२७ ॥

साहनिय ताम सद्यौ सुरेस। बिलहान वाह अप्पौ सुवेस ॥
हय मुकट मुकुट ऐराक बंस। चहुआन कन्ह अप्पौ उतंस ॥ छं० ॥ १२८ ॥

आरब्ब उंच जति पंषराव। समपौ सु राव गोयंद ताव ॥
मानिक्क महोदधि मध्य जात। निरषंत नैन थक्कै न गात ॥ छं० ॥ १२९ ॥

चमकंत षुरिय विज्जल विभास। समयौ सु राव निढ्ढुरह तास ॥
लहराक तेज अग्गाध भाल। मापंत छोनि पुज्जै न ताल ॥ छं० ॥ १३० ॥

तुरकेस गात गरुअंत भेस। समपौ सु राव पज्जून तेस ॥
लटि पाल जाति षंधार मज्झ। समपौ सु राव पम्मार सज्जि ॥ छं० ॥ १३१ ॥

रेसमी रीस मानै न मग्ग। कूदंत मंत पय धर अलग्ग ॥
हयरोह सोह मन्नै सु भेस। विलहान जैत अप्पौ जु हेस ॥ छं० ॥ १३२ ॥

तेजाल चाल वरबाह बंस। कैमास तास अप्पौ सु हंस ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चेटकी चित्ररूपी रसाल । समयौ सु जद्द जामान ताल ॥
छं० ॥ १३३ ॥

सोझाल मंझ नाचंत थाल । गति रंभ जेम रच्चंत ताल ॥
न्रप जीह जीह जंपै सुभाइ । समपौ सु साज चावंडराइ ॥
छं० ॥ १३४ ॥

गति सुबर भ्रमर मह्हरेस ताजि । समदेहु राज पाहार गाजि ॥
रंगेस उंच लष्षन सु भेस । समपौ सु राव लंगी नरेस ॥
छं० ॥ १३५ ॥

रा राम देहु मदनेस साजि । माथुरह सरस कनकूय मांझि ॥
पटसूत पटे परसंग राव । परमार सिंघ कंकन सुभाव ॥
छं० ॥ १३६ ॥

बग्गरी देव दै तेजदाम । सिंघली सिंघ पामार ताम ॥
बहरी सु चाल तेजाल काल । समपौ सु राव भौंहा भुंहाल ॥
छं० ॥ १३७ ॥

परचई रोह जिम चित्त भाजि । मह्हनसी सु जंगम देहु साजि ॥
हय बाज साज साजे सुभेस । सो देउ बरन बंधव सुरेस ॥
छं० ॥ १३८ ॥

बह्रत कुरंगगति कुरँगवाह । बलिभद्र अप्पि उतंग राह ॥
सोझाल फाल कनकू सु देव । रंगाल राव विंझह बिरेव ॥
छं० ॥ १३९ ॥

महरीस जाति मह्हरेस थान । आजानबाह अप्पौ लुहान ॥
कनकू कनक रूपी सु तेव । पहुमीस पाय मनों दझझदेव ॥
छं० ॥ १४० ॥

गिरवर उतंग गरुअत्त गात । पाहार फट्टि गुरु पाइ घात ॥
साकत्ति साज सब्बै सुभाइ । चहुआन समप्पौ अत्तताइ ॥
छं० ॥ १४१ ॥

सारसी सूर रथ कित्ति कीम । किंगन समप्पि लोहान धीम ॥
हैअवरह अवर अत देहु जाम । बोले समंझ गुरराम ताम ॥
छं० ॥ १४२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आएस दीन सा साहनेस । विलहान देहु श्रत अवर जेस ॥
सद्देव अप्प मुष सिलह दार । समदेहु सिलह श्रत गात सार ॥
छं० ॥ १४३ ॥

अंदर प्रवेस पावक्क पुज्जि । आसीस मंच दिय गरुअ गज्जि ॥
दिय अतिथ दान हय मंगि राज । आनयौ ताम साकत्ति साज ॥
छं० ॥ १४४ ॥

वर पाच जेम परठंत पाइ । मंडैति थाल जिम तत्त थाइ ॥
कलमोर जेम मंडै कराल । मभ्भंमि पीठ मनु कट्ठताल ॥
छं० ॥ १४५ ॥

विस्साल उच्चर अच्छौ पड़च्छि । निरषंत रथ्थ स्हरिज्ज सच्छि ॥
मानिक्क मनोहर छब्बि लाल । हर बास भास गौसम विसाल ॥
छं० ॥ १४६ ॥

बिन चसम चसम समकंति दीस । लालप्पि लोह चंपैति रीस ॥
अचवंत सुच्छ अंजुलिय अप्प । चमकंत छाह भय तेज वप्प ॥
छं० ॥ १४७ ॥

उर जाइ सुद्धि रुचि राग बाग । वर नइ जेम लेयंत लाग ॥
मंडंत उद्व तंडव सु उंच । परसंत पाइ मनु ध्यान रुंच ॥
छं० ॥ १४८ ॥

अति उंच दृढ्व भर षुरासान । पित मात विमल कुल संभवान ॥
अंनिय सु साजि सिंगार पाट । विंजंति चोर जिम पुंछ राट ॥
छं० ॥ १४९ ॥

चमकंत पुरिय दामिनि दमंकि । पटतार तार धरनिय धमंकि ॥
मंगेव चढ्यौ चहुआन जाम । जै जया सबद आयास ताम ॥
छं० ॥ १५० ॥

पृथ्वीराज के कूच के समय का ओजस्व और शोभा वर्णन।

दूहा ॥ चढ़ि चल्यौ प्रथिराज हय । जै मुष बंदी जंपि ॥
बिकसे सूर सुभट्ट तन । कलच सु कातर कंपि ॥ छं० ॥ १५१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जग्य विध्वंसे पंग कौ। धर लुट्टैं परवान॥
मंति सूर सामंत सह। चढ़ि चल्लौ चहुआन॥ छं० ॥ १५२॥

तैयारी के समय सुसज्जित सेना के बीच में पृथ्वीराज की शोभा वर्णन।

गाथा॥ इक तौ सहबलयं। एक तौ होइ सहसयं बरयं॥
एक तौ दस दूनं। एक तौ परबलं लष्षं॥ छं० ॥ १५३॥

कवित्त॥ सुबर बीर मिलि सकल। सेन राजी रंजन बर॥
बज्रपाट निरघात। राज चिहुं अप्परि मंगुर॥
मनों सूर छुटि किरन। समुद छुट्टिय बडवानल॥
सजे सेन चतुरंग। राज आभंग बीर बल॥
षोषंद काज जीपन प्रथम। बालुक्कां भंजन सुभर॥
निड्डर नरिंद पुंडीर भर। करन राज अग्गें सगुर॥ छं० ॥ १५४॥

सैना सज कर पृथ्वीराज का चलना और कन्नौज राज्य की सीमा में पैठ कर वहां की प्रजा को दुःख देना।

दूहा॥ गोडंडा षल मित्तरी। धर जंगली बिहान॥
यों बंधे सह सूर बर। चढ़ि चल्लौ चहुआन॥ छं० ॥ १५५॥
है गै बधि बंधन विविध। धन सड्डी ग्रह बीर॥
चावद्दिसि धर पंग की। ज्यों कलपंतर तीर॥ छं० ॥ १५६॥

गथा॥ जो धर पंग नरिंद। सो भंजे सूरयं धीरं॥
ज्यों गुर सूलत अंगं। सो लग्गे सिंधयं पानं॥ छं० ॥ १५७॥

बालुका राय का परदेश की तरफ यात्रा करना।

मुरिल्ल॥ संबर काम चढ्यौ चहुआनं। बालुक्का परदेस प्रमानं॥
है गै दल चतुरंगी पानं। भ्रम भंजन मन उग्यौ भानं॥
छं० ॥ १५८॥

पृथ्वीराज की सेना की संख्या तथा उसके साथ में जाने वाले योद्धाओं का वर्णन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनूफाल ॥ चढ़ि चल्यौ राज चुहान। बोलेव सूर समान ॥
गिन लिए सूर सु ध्रित्त। भर सहस सजि दह सत्त ॥ छं० ॥१५९॥
नीसान हून समान। भेरीय साद सुरान ॥
बल बढ़िय राजस बीर। जनु उपटि समुद गँभीर ॥ छं० ॥ १६० ॥
भए सकल एकत जाम। गुन सकल ग्रह विदु राम ॥
अग्गै सु कन्ह चहुआन। ता पच्छ बलिभद्र जान ॥ छं० ॥ १६१ ॥
उछंग अंग सनाह। सथ लिए सूर सबाह ॥
मद्देस जंगल देस। चढ़ि चलिय दिल्लि नरेस ॥ छं० ॥ १६२ ॥
मिसि सज्यौ जानि कराल। दाहंत ग्राम सु ढाल ॥
मिलि चलिग षोषंद पास। बढ़ि बीर जुद्धस आस ॥ छं० ॥ १६३ ॥
मन सुष्ष साजहि जुद्ध। हनि ताहि क्रम्महि सुद्ध ॥
कलि कूह मंचि करार। धर अरिन कूटहि धार ॥ छं० ॥ १६४ ॥
षिनि षेह लोपिय व्योम। दिसि बिदिसि धुंधरि धोम ॥
रिधि मंधि लुट्टहि अप्प। वर सस्त्र सस्त्र सुदप्प ॥ छं० ॥ १६५ ॥
धर ढरहि भाजहि एक। मधि हनहि आप अनेक ॥
बहु मोल वस्त्र समोच। सम हरहि सब्ब हि सोच ॥ छं० ॥ १६६ ॥
संचरिय धाह विधाह। हल्लाय दिसि दिसि राह ॥
दल सैल व्योम संपूर। कलि कूह हत्ति करूर ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सब नैर भंगर कूक। सज्जियै अंतस जक ॥
षोषंद नर सुर थान। समपत्त अत्ति उतान ॥ छं० ॥ १६८ ॥

बालुका राय की प्रजा का पीड़ित होकर हाहाकार मचाना।

मुरिल्ल ॥ छुट्टे दिसा दिसा चहुआनं। संमर काम समावर जानं ॥
परजा मिलिय करै बुंवानं। '(१)संभरि भारथ रह रिसवानं ॥
छं० ॥ १६९ ॥

चाहुआन की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

कवित्त ॥ दिसि पहु उट्ठिय धोम। भोम लग्गिय आयासह ॥

(१) ए. कृ.-"संभरित भर थर हरि संवान"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निधि लुट्टिय चतुरंग। रंक हुअ राज राजसह ॥
निधि पति निधि घट्टिय। सु रंक बड्डिय लच्छिय पन ॥
बाला संधि विसंधि। राग ग्रीषम रिति सुष्पन ॥
घरियार घरिय बड्डय घटै। सो ओपम परमानियै ॥
निधि पत्ति रंक रंका सु पति। विषम गत्ति गुर जानियै ॥
छं० ॥ १७० ॥

पृथ्वीराज का भुज्ज पर अधिकार करना।

सुपति पत्ति घोषंद। सुनिय बालुकाराय बर ॥
धर धामह कामधज्ज। भुज्ज मंडिय कपाट भर ॥
अरि भय किम औसेर। बड्डिय अग्गर न्रप दीनिय ॥
राज तेज यों लग्ग। जोग माया क्रम चीनिय ॥
जद्यपि न्रपत्ति बहु बल कियौ। नट विद्या चित्तह धरिय ॥
प्रथिराज पानि जल बढ़ि विषम। आगस्ति रूप होइ अनुसरिय ॥
छं० ॥ १७१ ॥

धीम अंषि देषीय। कान संभरि पुकार बर ॥
समै जागि लषि कलंक। जीव अरु रहै नहीं धर ॥
रबि नट्ठौ ससि छिप्यौ। चंद भग्गौ भग्गा सुर ॥
पवन गवन नन करै। सीत पालै न अत्ति बर ॥
जो चलै मेर धूवह चलै। भिलै सात जोगी तदप ॥
जो चलै अरक पच्छिम परक। बल छुट्टै बालुक्क बय ॥
छं० ॥ १७२ ॥

पृथ्वीराज की चढ़ाई की खवर सुनकर बालुका राय का आइचर्य्यान्वित और कुपित होना।

धाह याह घो षंद। सुनिय बालुक्क राव रव ॥
लघु बंधव जैचंद। राइ मंकेस असंभव ॥
सो संभलि कलि कूह। ऊक हुड्डिय दिसि दिसि दर ॥
नह सुन्यिै अस्तुत्ति। नयर सब गाजि गहब्बर ॥
बालुका राइ इम उच्चरै। कहौ बत्त कारन सु कल ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मम करहु धाह थिर होइ करि। कवन तेग बंधी सु कल ॥
छं० ॥ १७३ ॥

पृथ्वीराज का नाम सुनकर बालुका राय का सेना सजना।

किन रुद्धौ सुश्र तरनि। कहै नैरीपति संजम ॥
आज राज जैचंद। कवन उद्देग करै दम ॥
तबै जाइ धाह्लन। सुनहि मंकेस राउ सुअ ॥
दीलीवै चहुआन। तेन उज्जारि जारि भुअ ॥
सुनि बाद वादि नीसान किय। अप्प बोलि सज्जे [1]सुभर ॥
सज होइ चढ़ौ बद्धौ सिलह। अनीं बंधि आषाढ़ बर ॥
छं० ॥ १७४ ॥

बालुका राय का सैन्य सहित पृथ्वीराज के सम्मुख आना।

चढ़ि आयौ चहुआन। देस विध्वंसिय अग्गिय ॥
बर बालुका राइ। बीर बाजे रन जग्गिय ॥
अवित ढीठ चहुआन। बरै बीरं सुअ आनी ॥
धर धूसे धन लुट्टि। जग्य धूसें पंगानी ॥
बर बीर धीर तन तोन बँधि। बालुकराव सु झुक्किया ॥
प्रथिराज सेन संम्हौ बिहर। ताजी तुंग सु नष्षिया ॥ छं० ॥१७५॥

चाहुआन से युद्ध करने को जाने के लिये बालुकाराय का हार्दिक उत्कर्ष और ओज वर्णन।

चढ़त राव बालुक्क। आस लग्गी भो भग्गा ॥
सो ओपम कविचंद। देव बानीन चिरग्गा ॥
ज्यों नव बल्लभ प्रीति। काम कामी सो जग्गा ॥
सोइ सनेह सुबंध। प्रीति लागी तन लग्गा ॥
पुक्कार सथ्थ साथें चल्यौ। कल सथ्थें गोली चलै ॥
रोर चमक साथें उठै। त्यों बर कवि ओपम पुल्लै ॥ छं० ॥ १७६ ॥

(१) ए. को. सुनर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चहुआना संमुहौ। राव बालुक उठि धायौ ॥
छीन लगन पथ दूरि। बरन बरसें बर आयौ ॥
तुच्छ दिवस क्रम बहुत। क्रत्य आतुर चित चाहुय ॥
सबैं सेन संमूह। बीर रोसह बरलाइय ॥
लागयौ रोस सामंत सथ। अप्प थान नन तज्यौ किहुं ॥
दिठ परत राइ चहुआन बर। बालुक बर साज्यौ समहुं ॥
छं० ॥ १७७ ॥

चाहुआन राय की सेनसंख्या।

दूहा ॥ सेन सहस बत्तीस भर। चढ्यौ स जंगल जूह ॥
नैर छंडि बाहिर चले। तब रज दुष्षिय ऊह ॥ छं० ॥ १७८ ॥

दोनों सेनाओं की परस्पर देखादेखी होना।

कवित्त ॥ पंधे षेत करसनी। स्तूर धावै चावद्दिसि ॥
धन लूटत ज्यौं रंक। लज्ज लग्गै न बरं तस ॥
अंबरीष ग्रभ श्राप। जेम दुर्वास चक्र कस ॥
जिम देवासुर देव। सबद जिम तरै कब्बि रस ॥
अहत्त जुद्ध हिंदू तुहन। सुबर बीर लग्गे बिरद ॥
संप्रत्ति बीर बाराह बर। सुथिर भए न्त्रिंमल सरद ॥ छं० ॥ १७९ ॥

गाथा ॥ रन डंबर अंबर उत्तानं। देषे डहर सेन समरानं ॥
सज किय सेन अप्प परसंसे। आप जाति गुन नाम सरंसे ॥
छं० ॥ १८० ॥

सुनियं तामं नाद निसानं। आयौ सेन ससुष चहुआनं ॥
दल दुअ ताम हुअं दे ठालं। बज्जे नद्द सद्द भूझालं ॥ छं० ॥ १८१ ॥

गाथा ॥ दल दुअ हुअ देठालं। गज्जे नाद बीर बिसरालं ॥
सज्जे सेन सु चालं। बंधे फौज कमध फसि कालं ॥
छं० ॥ १८२ ॥

बालुका राय की सुसज्जित सेना को देख कर चाहुआन सेना का सन्नद्ध और व्यूहबद्ध होना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरिल्ल ॥ बँधी फौज देषी चहुआनं । सज किय सेन आप सम्वानं ॥
बंधे सिलह सूर सूरानं । गज्जै सीस सुभर असमानं ॥ छं० ॥१८३॥
सज्जि सेन सामंत सूर बर । गज्जे गेन सु लग्गि महाभर ॥
बंधे गरट चले गति मंदं । मानि सूर सामंत अनंद ॥छं०॥१८४॥

दोनों हिन्दू सेनाओं का परस्पर युद्ध वर्णन ।

दूहा ॥ जीवंतह कीरति सु लभ । मरन अपच्छर हूर ॥
दो हयान लड्डू मिलै । न्याय करै बर सूर ॥ छं० ॥ १८५ ॥
चले सज्जि दूनों सयन । दिठ्ठे दिठ्ठ करूर ॥
सामिध्रम्म सा क्रंम गुर । सो संभारै सूर ॥ छं० ॥ १८६ ॥

रसावला ॥ हिंदु हिंदू भिरं । काल हत्ते सुरं ॥
एक एका गरं । बीर डक्कं करं ॥ छं० ॥ १८७ ॥
तार बाजे हरं । गेनं लग्गा नरं ॥
अंत दंती जरं । नाल कढ्ढै सरं ॥ छं० ॥ १८८ ॥
हंत चीहं चरं । घात सोभै सरं ॥
भार वडप्फरं । लोह लोहं करं ॥ छं० ॥ १८९ ॥
देवती सेन रं । वज्र नाली करं ॥
पंग वीरं छरं । सूर मत्ते जुरं ॥ छं० ॥ १९० ॥
सिंघ छुट्टै पलं । बीर मत्ते दलं ॥
ढाल ढालं ढलं । बीर चंपे मिलं ॥ छं० ॥ १९१ ॥

बालुकाराय का युद्ध करना ।

कवित्त ॥ बर बालुका विसाल । सस्त्र बाहंत उचारिय ॥
पंग भूमि रतनंन । स हय घाए अधिकारिय ॥
मद्धि समुद बालुका । पुब्ब हीरा गल लग्गा ॥
रतन षटू सत छंडि । जिरह लय लरने लग्गा ॥
दल मद्धि एम षोषंद पति । ज्यों ग्रीषम मावसि रवै ॥
डोलन सु चित्त बन बायतें । चल पत्तन कर करनवै ॥छं०॥१९२ ॥

बालुकाराय की वीरता और उसका फुर्तीलापन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अँग चतेन बहि हथ्थ। सम्ब्र लागत जड़ धारिय॥
लोह लगत सिलहान। दोष परगत्तिय हारिय॥
लोह संक नन करै। लाज संका न द्दिसा करि॥
छच भ्रम्म चूकंत। सूर संकै न पग्ग धर॥
नब बधुअ संक रत्ता गरुअ। कुल संकै कुल बधु सकल॥
कमधज्ज जुड चहुआन सों। सुबर बीर घरि पंच छल॥ छं०॥१९३॥
घरिय पंच साधंत। सूर साधै असि मर नर॥
बाल,का अरि राज। सबै भगा जु क्रम्म धर॥
पग पुच्छानन दियै। षेल असिवार परिमानं॥
मोष मह्व असि रेष। परज रज बंने धानं॥
अति बीर सुग्रह तजि रोस बर। इम उकंस चहुआन रिन॥
न्त्रिप जैत बीर विभ्भर भगति। सुबर बीर आरन्न धन॥ छं०॥१९४॥

बालुकाराय का रणकौशल।

बाज सस्त्र छितिमंत। बीर बरषंत मंच असि॥
सस्त्र धार बाजै प्रहार। वेताल लाल रसि॥
कमल विमल विछुरंत। कमल नंचत बर बरतन॥
इक्क च्यारि सिर च्यारि। नीर किन्नौ जु बीर गुन॥
सुर बचन रचन सुरलोक गति। काम धाम धामार तजि॥
बाल,काराव चह,आन सों। दुतयि बीर भारथ्थ सजि॥ छं०॥१९५॥

सूरता की प्रशंसा।

चर चालै पय रहै। भान चालै न अचल हुअ॥
मंत अचल कर सुचल। इक न चलंत सूर भुअ॥
अति उतंग दिसि जोति। जोति ऐसे गतिमानं॥
कुटिल चिया चंचल सु। बीज चाव हिसि धानं॥
जिन मुष सु बीर न्त्रिम्मल सु बर। सार झलै ते जलझली॥
मैं मंत पंथ रुक्के सुबर। मुगति पंथ पंथा षुली॥ छं०॥१९६॥
दूहा॥ मुगति मग्ग पंथा षुली। सबर थापि पति सूर॥
जिन गुन प्रगटित पंड कुल। तिहि सँधारिग सूर॥ छं०॥१९७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालुकाराय का घिर जाना और उसका पराक्रम।

कवित्त ॥ बीर कुंड मंडलिय। परिय बालुकाराय फुनि ॥
चंद मंडि ओपंम। मनों पावस्स मोर धुनि ॥
सिंधु समान भए। तेज बडवानल तुंगं ॥
हेम मज्झि नग धरिय। सूर फिरि मेर सुरंगं ॥
जयपत्त जुद्ध बोलिय सुभर। जं बोल्यौ तं कर कियौ ॥
चहुआन सिंधु लग्गे गिलन। [1]चर अगस्ति मंतह नयौ ॥
छं० ॥ १९८ ॥

युद्ध स्थल का चित्र दर्शन।

चोटक ॥ घरिएक भयानक बीर हुअं। बर बज्ज निसान निसान धुअं ॥
अमयं श्रम षेद कटंत बरं। मिटि गाबर सीस नवाइ गुरं ॥
छं० ॥ १९९ ॥

दुहु बीरन बीरह हथ्थ धकं। सु मनौ कर तोर निसान डकं ॥
दुहु बीर बिरोधत हथ्थन ही। दुहु दीनह जानि गुमान गही ॥
छं० ॥ २०० ॥

जु परें रुधि सीस कनंछ धरे। सुमनों गिर तिंदुअ अग्ग जरै ॥
गज दंतनि सूर दुलग्गि फिरै। तिनकी उपमा [2]कविचंद धरै ॥
छं० ॥ २०१ ॥

जल जावक धाम प्रनार परै। निकसी जनु मध्य झलंग तिरै ॥
सु किधों ससि निक्करि हथ्थ धरी। निकसो बल लागत फूल झरी ॥
घन घाव कियें सिर सूर तुटै। तिन की उपमा कविचंद रटै ॥
मनों धर वामन मापन को। बलि रूप कियौ विधि आपन को ॥
छं० ॥ २०२ ॥

बालुका राय का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना। पृथ्वीराज का उसके हाथी को मार भगाना।

(१) ए.-चमू। (२) को. मति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ भोर परी प्रथिराज। देषि बालुका मंत गज ॥
चंपि मुट्ठि दिढ़ पानि। सीस बाहीय कुंभ रजि ॥
टुट्टि सीस मुति बरसि। रुधिर भीजै लग्गे असि॥
सुमनों मग्ग पुति पान। चंपि निकल्लिय ओपम तस ॥
जुद्ध स एह भंजौ जलह। आदि चंपि सो दिन चरिय ॥
दैवत्त बलह प्रथिराज दुति। छंद चँदकवि उच्चरिय ॥ छं० ॥ २०३ ॥

पृथ्वीराज की सेना का पुनः दृढ़ता से व्यूहबद्ध होना। व्यूह का वर्णन।

भुजंगप्रयात॥ सँभारे सबै स्वामि ध्रम्ममिंति सूरं। बरं बंस रस्सं असं संस नूरं॥
तबै उच्चर्‍यौ .... दिराजं सहाजं। समं मंत ईसं सु दाहिम्म राजं ॥
छं० ॥ २०४ ॥
समं साजियं फौजं सु ओजं कमंधं। करौं साज आजं अनी अन्न मंधं॥
तबै जंपि राजं सु दाहिम्म दप्पौ। नरंनाह बंधं तुमं काम थप्पौ ॥
छं० ॥ २०५ ॥
मुषं अग्ग कन्हं सु सामंत राजं। गुरूराव गोयंद सम दच्छ नाजं॥
बरं सज्जियं बाइयं निद्दुरेसं। मध्यं रच्चियं अप्प राजगं तेसं ॥
छं० ॥ २०६ ॥
सचे सब्ब राषे सु सामंत सूरं। गुरं बीर वाजिच बज्जे करूरं ॥
चले फौल सज्जे समं भट्ट थट्टं। गहारं भरं सेन देषे गिरट्टं ॥
छं० ॥ २०७ ॥

बालुका राय का अपने वीरों को प्रचार कर उत्साहित करना।

तबै उच्चर्‍यौ ऊंच बालुक रायं। निजं नाम आभासि अप्पं सहायं॥
सनंमुष्ष दृष्षै अनी चाहुआनं। दहे देस सीसं गुरं ग्राम यानं ॥
छं० ॥ २०८ ॥
भयौ काम काजं जपं चंद आजं। निजं ध्रम्म मन्ने कुलं कृत्य लाजं॥
सुने गज्जियं दट्ठ जुद्धं सनट्ठं। मुषं रत्त नेनं तनं तेन बट्ठं ॥छं०॥२०९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों सेनाओं में परस्पर घोर संग्राम होना। संग्राम वर्णन।

मिल्यौ बालुकाराइ गज्जं नरिंदं। समं सेल चहुआन करि षग्ग दंदं॥
सजी सेन चतुरंग तारंग रुष्षं। लग्यौ चंपि प्रथिराज ता गज्ज मुष्षं॥
छं० ॥ २१० ॥

भरं भीर भारी उभारी कमानं। भिरें सेन कमधज्ज अरु चाहुआनं॥
बले दून सेनं मिलं बान बानं। मनों बूंद भद्दं मद्दं मेघ जानं॥
छं० ॥ २११ ॥

गजे सूर सूरं लगे हथ्थ बथ्थं। दुअं उच्चरें आन ईसं दुअथ्थं॥
बजी सार धारं समं सार सारं। मुषं उच्चरे मार मारं करारं॥
छं० ॥ २१२ ॥

समं बीर बाजिच बाजिच बाजे। धरक्कें धरारं सु गो गेंन गाजे॥
तुटैं सीस दीसं रुरें रुंड मुंडं। परें गज्ज भाजें सु तुट्टैं भुसुंडं॥
छं० ॥ २१३ ॥

फटै जठ्ठरं सठ्ठरं सं विहारं। फरं फेफरं डिंभरू तुट्टि भारं॥
विछुट्टैं डरं डिल्लरं अंतरेसं। भभक्कंत श्रोनं सश्रोनं अनेसं॥
छं० ॥ २१४ ॥

कटैं कट्ट बाजंत षग्गं करारं। मनों कट्ट कबारि कूटे कुहारं॥
उरा फार फूटंत पट्टे उलट्टे। मिले हथ्थबथ्थं समं भट्ट चट्टे॥
छं० ॥ २१५ ॥

छुरी जम्म दट्टं सनट्टं प्रहारं। जरादं जरं तुट्टि उट्ठंत सारं॥
तटक्कंत टोपं गुरज्जं प्रहारं। फटै सीस दीसें विकट्टं विहारं॥
छं० ॥ २१६ ॥

मुडक्कंत कंधं कडक्कंत हड्डं। फडक्कंत फेफं सरे फंस मड्डं॥
दडक्कंत श्रोनं प्रहारे सपूरं। गडक्कंत कंधं सु घायंति ऊरं॥
छं० ॥ २१७ ॥

धरं सीस हक्कंत धक्कंक जीहं। नचै षग्ग कंमंध धप्पंत दीहं॥
हहक्कंत हक्कंत नाचंत बीरं। पलं चारु गोमाय गाजंत तीरं॥
छं० ॥ २१८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घहं राइ चौसट्ठि उपट्टि मद्दं। नचै ईस सीसं डकै डक्क नद्दं॥
गहै अंत गिद्धी झड़प्पंत तुट्टं। पलं चार चारं अहारंत लुट्टं॥
छं० ॥ २१९ ॥

प्रसारं प्रवारं घनं श्रोन भारं। गहं राइ नादं नदी जेम नारं॥
यलं मंस हड्डं सुयट्टं असेसं। गहै हंस चारी भरै हंस एसं॥
छं० ॥ २२० ॥

हहक्कार हंकार हक्कार हक्कं। हबक्कं हबक्का धरे धीर धक्कं॥
गहैं केस केसं प्रहारै परेसं। हने छंडि आवद्ध आवद्धनेसं॥
छं० ॥ २२१ ॥

समं सूर बथ्थं लरै सूर सथ्थं। बिनानं सु मच्छं पयं ढीक पच्छं॥
कुलं अप्प ईषे बरै आन ईसं। उक्कसंत क्रंसं रजे बीर रीसं॥
छं० ॥ २२२ ॥

बिना पाइ घायं करै षग्ग टेकं। हुये षंड षंडं विहडं विसेकं॥
महा जुद्ध आजुद्ध देषे अपारं। परे हथ्थ सामंत सा सूर भारं॥
छं० ॥ २२३ ॥

बरे इष्षि थोरष्ष नोवीर द्वंदं। रसं बीर नारद्द नंचै अनंदं॥
इसों जुद्ध हूतें दुअं जाम वित्ते। मिरें मंत माहिष्ष ज्यों मंस चित्ते॥
छं० ॥ २२४ ॥

कन्ह और बालुकाराय का युद्ध, बालुकाराय का मारा जाना।

दिषे कन्ह चौहान बालुक्क रायं। उदै दिठ्ठ सोकी समं सज्जि घायं॥
तबै बालुकाराइ उभ्भारीय षग्गं। करै कन्ह हेलं रुहेलं त्रिभंगं॥
छं० ॥ २२५ ॥

हने बालुकाराइ सो षग्ग झट्टं। कह्यौ कन्ह झल्लं सु सेलं नि हट्टं॥
हयौ सेल षंडं कमंडं सजूरं। सिल्है फौरि फुट्टै पटे पुट्टि भूरं॥
छं० ॥ २२६ ॥

धरं झारियं कन्ह सेलं जु नंषे। पर्यौ बालुका राइ सो भूमि धष्षे॥
हन्यौ बालुकाराइ देष्यौ समथ्थं। सबं देषि सामंत आमंत हथ्थं॥
छं० ॥ २२७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगी फौज कमधज्ज सा छंडि षंतं। हन्यौ बालुकाराइ देष्यौ समथ्थं ॥
छं० ॥ २२८ ॥

कवित्त ॥ पऱ्यौ राव सारंग । बीर सझौ बड़गुज्जर ॥
ईस सीस संभऱ्यौ । सोइ लीनौ स बंधि उर ॥
गंग दुचित नदि कंपि । उमा भै दीन प्रमानं ॥
सीस ईस ससिकंठ । हथ्थ बड़गुज्जर थानं ॥
रुंधेव पंच पंचौ मिलिय । सबर बीर तत्तौ सँगति ॥
षोषंद राव झुझ्झ्यौ सरस । स बर बीर भारथ्थपति ॥ छं० ॥ २२९ ॥

बालुकाराय के मारे जाने पर उसके बीर योद्धाओं का जूझ जाना ।

परतन नर भर भीर । सिंधु बझौ चहुआनं ॥
जे हलए उत्तरे । गयौ बहु हथ्थ निधानं ॥
कुल भारें रजपूत । रहे पथ्थर परिमानं ॥
.... । राज चझौ चहुआनं ॥
बालुकाराइ भारे कुलह । पथ्थर ज्यों मंडे रह्यौ ॥
चहुआन बार बज्जी विषम । तंत बेर उब्भि न गयौ ॥ छं० ॥ २३० ॥

बालुकाराय की राजधानी का लूटाजाना ।

चाहुआन भय राज । सुभर बालुका राज बर ॥
अब लुट्टौं घर धेन । अबहि दभ्भिझ्यै परड्डर ॥
धर किपाट बालुका । हूर अंतर संपत्ते ॥
पूरन आहुति दीय । पंग जग्यह आहुत्ते ॥
बालुकाराइ पंजर पऱ्यौ । देषि उभय चहुआन धर ॥
मोरिया भंजि दोइ बंधि धरि । चर नठ्ठा कासी बह्वर ॥ छं० ॥ २३१ ॥
तजि सु नारि भजि पीय । विसरि आतुर भय पंजर ॥
पिय कोमल सुंदरी । परत पिच्छल सहर धर ॥
कंचन पत्त परात । हूर कल मोती धारे ॥
नूत पच परिहार । चंद ओपंम बिचारे ॥
तारक्क बाल मंगलति ग्रह । कै नष सुंदरि पारियैं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओपम चंद बरदाइ कवि। जातें चालु विचारियै ॥ छं० ॥ २३२ ॥

बालुकाराय के साथ मारे गए वीरों की संख्या वर्णन।

दूहा ॥ परत सु बालुक राय रन। सहस पंच सम सथ्थ ॥
उभय घटी मध्यान उध। धनि सामँत सु हथ्थ ॥ छं० ॥ २३३ ॥
ढिल्ली ईसय सत्त षत। परे सु कटि रन थान ॥
सबे सत्त सामँत कुसल। जै लद्धी चहुआन ॥ छं० ॥ २३४ ॥

बालुकाराय के शौर्य्य की प्रशंसा वर्णन।

कवित्त ॥ धनि बालुक्काराय। सेन सध्यौ चहुआनं ॥
पंग जग्य बिगरंत। अंग नित मान सु सानं ॥
सार धार झिल्लोर। सेन धुंसै दुज्जन दै ॥
प्रथम रारि परि कन्ह। बल्लि बारुन बंभन वै ॥
सामंत सेन एकट्ठ हुअ। संमुह सेन सु धाइया ॥
गोदंड संड नीसान बर। चंपि चुहान बजाइया ॥ छं० ॥ २३५ ॥

बालुकाराय के पक्षपाती यवन योद्धाओं की वीरता का वर्णन।

पऱ्यौ जुद्ध बालुका। मीर बच्चा षंधारं ॥
ते सम पंग कुमार। षग्ग बज्ज्यौ बर सारं ॥
मिलि सामंत सरोस। रीठ बज्जी झाराहर ॥
मनों मेघ मद्धि बीज। बाल झंझरि ओराझर ॥
सौ सठि सहस मंझ्झ मिलिय। धनि सामंत सु हथ्थ हिय ॥
भारथ्थ पथ्थ दुत्तौ विषम। चंद छंद बत्त कहिय ॥ छं० ॥ २३६ ॥
चौपाई ॥ बज्जियं बीर आयास तूरं। गज्जियं काल आषाढ धूरं ॥
*सजी सेन नाइक दिन मानं। सजियं पति दंती विंमानं ॥
छं० ॥ २३७ ॥

जैचन्द की सेना और मुस्लमान सेना का पृथ्वीराज का मुख रोकना।

* इस छन्द में नीचे की दोनों पंक्तियां तो चौपाई की हैं परन्तु ऊपर की दोनो पंक्तियां छन्द भुजंगमप्रयात ही की हैं। पाठ तीनों प्रतियों में समान है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुजंगप्रयात ॥ मिले मीछ कमधज्ज अरु चाहुआनं । बजी सार सारं सु धारं प्रमानं ॥
लगी डंबरी रज्ज आयास छायं । निसा पंति गिद्धी रुधिंहन्न पायं ॥
छं० ॥ २३८ ॥

तहां चंद बरदाय ओपंम तब्बी । मनों बाद गंठी परे ऊगि रब्बी ॥
मिले जोध हथ्थं तिवथ्थं बकारे । परे चंद भट्टीन छुट्टे पचारे ॥
छं० ॥ २३९ ॥

बजे घाइ आघाय घायं घुरक्की । मनों नीर मभ्भें तिरंजे तुरक्की ॥
लगै टोप तेगं सु तूटतं दीसै । मनो मुक्कि छुच्छू छुटे बीज दीसै ॥
छं० ॥ २४० ॥

घरी अद्ध दीहं रह्यौ ता प्रमानं । तबै बाहुर्‌यौ पंग पाइक्क मानं ॥
सबै मीर बंदा तुरक्काम षानं । कहैं पक्करौ चाहते चाहुआनं ॥
छं० ॥ २४१ ॥

धर्‌यौ पंग मोरी सु षंधार सारौ । जिनें रोकियं कन्ह चहुआन भारौ ॥
छं० ॥ २४२ ॥

दूहा ॥ चर तिन आनि स बींट बर । मिलि रोक्यौ प्रथिराज ॥
पंति पंग हय जंग परि । तिहु पुर बज्जन बाज ॥ छं० ॥ २४३ ॥
परि पारस भृत पंग घन । लाग निसानति बान ॥
विंटि सेन प्रथिराज बर । जानि समुंद प्रमान ॥ छं० ॥ २४४ ॥

पृथ्वीराज की उक्त सेना पर चढ़ाई और वीरों के मोक्ष पाने के विषय में कवि की उक्ति ।

कवित्त ॥ होत प्रात प्रथिराज । चढ्यौ सामंत सूर सँग ॥
चतुरानन वर दिष्ष । पर्‌यौ चिंता सजीव अँग ॥
सिरजत लग्गै बार । मरत इन बार न लग्गै ॥
चित्त चेत सिरजूं सु जूह । उतकंठ सु भग्गै ॥
इतनौ सु एह अंदेह मनि । मरन जुद्ध संग्राम मन ॥
ए जीव रचि फेर न परें । मुगति बंध बंधे सघन ॥ छं० ॥ २४५ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घरिय अद्धदिन चढ़त। स्वर छुटि जुरन सु बड्ढे ॥
अप्प अप्प मुष रोकि। अरिन मुष दोऊ सड्डे ॥
अनी मुष्य जरि मुष्य। सोइ उच्चाय सु डारिय ॥
घरिय च्यार सौ च्यारि। जानि घरियार सु मारिय ॥
तट छुट्टि कमंध सु बंधि उठि। भगर थट्ट नट षिल्लयौ ॥
चामंडराय दाहर तनौ। बर दुज्जन भर ढिल्लयौ ॥ छं० ॥ २४६ ॥

चहुआन और मुसलमान सेना का घोर युद्ध।

भुजंग प्रयात॥ करी ठेलि दूनौ अनी एकमेकं। घटं लष्य दूनं भिरे राव एकं।
पियै बारुनी सार तुट्टै दुदीनं। उतं उथ्थलै भेजि घज्जानि धीनं॥
छं० ॥ २४७ ॥
गड़े मद्धि अग्गी सजोगीन होई। रजं सत्त सासत्त संसत्त लोई॥
लगें लोह तत्ते रुधिं घुट घुट्टै। परें कुंभ षग्गे अघं कन्न छुट्टै॥
छं० ॥ २४८ ॥
परें बथ्थ बथ्थं विरुझ्झाय छुट्टें। मनों मुक्ति सारी दुअं हथ्थ लुट्टें॥
बहें बान कमान जंबूर गोरं। सकें उड्डि नाहीं तहां पंषि तोरं॥
छं० ॥ २४९ ॥
महाबीर धीरं लरें ते तरफ्फैं। मनों पंग जंगी बली पंष अप्पैं॥
तहां बीर सों बीर बीरं डकारं। तहां कोपियं राम बारड उषारं॥
छं० ॥ २५० ॥
हयं अस्सवारं समेतं उठायौ। मनों तापरी ताप माते उचायौ॥
घरी तीय तीयं सु भारथ्थ वित्यौ। रिनं संभरीराव चैवेर जित्यौ॥
छं० ॥ २५१ ॥

कन्नौज की सेना का भागना और पृथ्वीराज की जीत होना।

कवित्त॥ भगिय सेन सा पंग। भगिय चतुरँग भुज मोरिय॥
बर बालुका सु राय। सेन चहुआन ढँढोरिय॥
बर शृँगार प्रथिराज। हुअ सु तिन बेर प्रमानं॥
कायर हथिय प्रमान। समुद उत्तरि चहुआनं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालुकाराय भारौ कुलह । पारथ जिम मध्यह रच्यौ ॥
दोहित्त पंग कमधज्ज कौ । संभरि वै हथ्थह ग्रच्यौ ॥ छं० ॥ २५२ ॥

दूहा ॥ बर बालुका सु राय नृप । निधि लुट्टिय चतुरंग ॥
विय सुदेस बर भंजनह । बज्जा बज्जि सु जंग ॥ छं० ॥ २५३ ॥

बालुकाराय की स्त्री का स्वप्न ।

कवित्त ॥ जे भील गत हुंत । सोइ कीनिय करतारं ॥
जंघ गत्ति धरि लंक । लंक जंघा मति सारं ॥
नेनह दिइ सरोज । केस अहि विंध सु किन्निय ॥
परबत संभ्क चढ़ंत । मेलि सांई सुध बन्निय ॥
भय भज्जि राज प्रथिराज बर । गामनि जित राजन सु गति ॥
तजि आस बास सासन सु पिय । सुबर बीर बीराधि मति ॥
छं० ॥ २५४ ॥

बालुकाराय की स्त्री की विलाप वार्ता ।

भुजंगप्रयात ॥ जिनें साजतें धूम धूमें नरिंदं। लगी धूम आयास सो भंजि चंदं॥
तुरी बारजं राय षोषंद बद्दं । तहा बालुकाराय संग्राम सद्दं ॥
छं० ॥ २५५ ॥

तहां बालुकाराय दानै सु मानै । तिने भंजिया भूप घटि चाहुआनै
षगं षग्ग षट्टे सु धक्का हलाई । जहां पारसीराव सूरं गुराई ॥
छं० ॥ २५६ ॥

छतेरी छनेरी भंडेरी बरारी । तिनं चंद चंदेरि नैरी निहारी ॥
जिने तारिया कालपी कन्हरायं । जिने मंडिया जुद्ध प्रथिराज सायं॥
छं० ॥ २५७ ॥

जिने आल पिंडाइ राचक्क चक्के । बरं रोरिया दाइ संग्राम सक्के ॥
जिने जग्य जारे धरे गंग पारे । जिने संभरी थाट तंडे निवारे ॥
छं० ॥ २५८ ॥

जिने भंजियं भीम पुर भीम भंजे । जिने भंजिया जाय गोधंग हंजे ॥
जिने भंजियं जाय प्रथमं सु कासी । भए सूर सामंत उत्तं उदासी ॥
छं० ॥ २५९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिने भंजियं जाय मेवात ग्रामं । जिने बैर सों सेन सज्जे समानं ॥
जिने भंजियं भीम सोमेस भारी जिने राजधानीं सबे पाय पारी ॥
छं० ॥ २६० ॥

जिने आलगी जोग षंडे षषेली । जिने माथुरी मोह मोहंत खेली ॥
जि सोरीपुरं रोरि पारा जगायं । .... छं० ॥ २६१ ॥

कियं दीन बंबारि प्रथिराज तोरी । षगं षीच षंगार बल्लोच मोरी ॥
तहां ग्रीव बंबारि अग्रीव फूटी । तहां गोधनं धेन चौनान लूटी ॥
छं० ॥ २६२ ॥

जिने देस पट्टेर जोरी विछोरी । ते तजें पो पीय कंठं सु गोरी ॥
तिनं तीर नद्द चालहं चाल झंषे । तहां झंपरहि जेम गज झंप लष्षे ॥
छं० ॥ २६३ ॥

तिनं चीर समीर झारंत तुट्टे । मनों रत्ति रंजं तरं पत्त छुट्टे ॥
तिनं ग्रीव नगजोति रहि फुट्टि पव्वै । .... ॥ छं० ॥ २६४ ॥

तमंचे सिषर जमदाह लग्गे । .... ॥
तिनं भस्म मज्जारि मिटी म्रग्गएनी । तहां चलहि तिन तेज मुषचंद रेनी॥
छं० ॥ २६५ ॥

तहां बीज फल जानि घन कीर धाए । तहां दसन बालभे दसनं छिपाए॥
तिनं सद्द सहरोस सहरोस संकी । तहां थर हरे थकि रही हीन लंकी ॥
छं० ॥ २६६ ॥

कव्वि रटि रटति पिय पीऊ जंपै । एम रिपु खनि प्रथिराज सु कंपै ॥
॥ छं० ॥ २६७ ॥

वाघा ॥ सेंबर काम चढ्यौ चहुआनं । कंपै भै चिय दुज्जन वानं ॥
बर छुट्टत नीवी न सम्हारै । लेहिं उसास प्रहार प्रहारै ॥छं०॥२६८॥

अंगुरि एक ग्रहै कर बालं । दूजै कीर निवारंति जालं ॥
थान थान विहवल भइ बालं । मुत्तिन उर बर तुट्टित मालं ॥
छं० ॥ २६९ ॥

सो ओपम कविचंद सु पाई । मनों हंस कटि पंछ चिलाइ ॥
छं० ॥ २७० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न हो सकेगा। शास्त्र का बचन है कि निद्राग्रस्त, मल मोचन करते हुए, शौच स्नान पूजना दि करते हुए, मंत्र का जाप करते हुए इत्यादि मनुष्यों को कपट से मारना महापाप और क्रूरता है; इस लिये मेरे किए तो यह न हो सकेगा। राजा के ऐसे बचन सुन कर सामन्त लोग बोले कि राजनीति की आज्ञानुसार राजा को समयोचित कार्य्य करना चाहिए। क्या त्रेता में चक्रवर्ती राजा रामचन्द्र ने समुद्र को बाँधते और बलि को मारते समय छल नहीं किया? क्या नृसिंह ने हिरण्यकश्यप को विदारते समय छल नहीं किया? कृष्ण ने कंस को पछारते समय क्या छल नहीं किया? यह सुन कर सोमेश्वर चुप होरहे और सूरवीर योद्धाओं ने युद्ध के लिये अताने बताने बाँधने शुरू किए। यह देख कर सोमेश्वर ने भी अपने रणबाँकुरे बीरों का साथ देने के लिये अस्त्र शस्त्र धारण किए। सब रावत योद्धाओं ने शौचादि से निश्चित होकर गंगाजल और तुलसीपत्र पान किए, तदनन्तर जिरहबख्तर से विभूषित होकर तन्न, त्रंस, तून, तोमर, सेक, सर, सारंग, शूल, शक्ति, सेल, सावल्ल, कत्ती, कञ्ज, चक्र, कृपान, चक्री, अशनी, दंड, भिडमाल, मुग्दर, मूसल, हल, द्विस्फोट, परिघ, पाश, परश, छरिका, नाराज, नसी, नालिका अर्थात् बन्दूक आदि शूरवीरों के छत्तीसों बाने बाँधे।

मालव के राजा यादवराय ने चंबल पार करके बरवाम नगर के पास डेरा डाला। राजा सोमेश्वर अपने रणोन्मत्त शूर सामंतों सहित धावा मार कर आधी रात्रि के समय बरवाम पहुंच गया। सोमेश्वर ने जाते ही चढ़ीसवारी यादव राज्य की सेना पर आक्रमण किया। यादव सेना को सोमेश्वर के आने की अब तक खबर भी न थी। जब चहुआन सेना यादव के सैनिकों को काट काट कर लोथों से पड़ाव पाटने लगी तब वे भी सचेत होकर युद्ध करने लगे, परन्तु सोते जागते में बड़ा फर्क होता है। सोमेश्वर की सेना ने पहिले से अच्छे नाके बाँध कर हथियार छेड़ा था, इस लिये घरी रात रहते रहते यादव सेना भाग उठी और मालव नरेश राजा यादवराय अत्यन्त घायल होकर सोमेश्वर जी के सिपाहियों से पकड़ लिया गया। सोमेश्वर जी ने बड़े आदर भाव से यादवराय को अजमेर में लाकर रक्खा और उसकी दवा भी करवाई। एक महीने बाद जिस दिन यादवराय ने स्नान किया सोमेश्वर जी ने बड़ा दान पुण्य करवाया और फिर सादर उसे उसकी राजधानी को भेज दिया।

पृथ्वीराज के पक्षपातमय राज्य शासन से दुखित दिल्ली के प्रतिष्ठित पुरुषों और राज्यकर्मचारियों नें अनंगपाल की शरण में जा पुकारा। उन्हों ने कहा कि हे महाराज! जिस समय से पृथ्वीराज दिल्ली का राजा हुआ उस समय से आपकी प्यारी प्रजा अनाथ एवं भिखारी की भांति मारी मारी फिर रही है। अनंगपाल के प्रधान मंत्री ने कहा, हे महाराज! आपने उस समय हमारी बातों पर कुछ भी ध्यान न दिया, आपने व्यास जी की बातों में आकर पृथ्वीराज को राज्य सौंप दिया। यदि आप को राज्य देकर देव सेवा करना ही अभिप्रेत था तो आप उसे अपने किसी निज भाई भतीजे को दे दिए होते। आपकी प्रजा असहाय की भांति कलपती फिरती है और आप तप करते हैं इससे आपको क्या फल होगा। कौरव पांडवों के बीच भूप्रख्यात् भारत का युद्ध इसी भूभाग के लिये हुआ। रावण ने इसी भूमि के लिये भाई विभीषण को मार कर निकाल दिया, और सपरिवार अपना प्राण दिया। इसी भूमि के लिये बलि बंधन में पड़ा, मुंज ने भोज के मारने की आज्ञा दी और कन्ह तोमर ने अपने देखते पुत्र को विष दिया। हे राजन् आपने सदैव भूल की। पहिले तो किल्ली दिल्ली करके अपने अखंड राज्य को खंडित किया तिस पर भी पृथ्वीराज को राज्य दिया। राजा को उचित है कि वह जिसे चाहे धन धान्य हाथी घोड़ा और जो चाहे सो दे दे परन्तु अपने राज्य की तिल भर भी भूमि कदापि न दे।

मंत्री की इन बातों ने अनंगपाल के दिल पर ऐसा असर किया कि उसने उसी समय पृथ्वीराज के पास एक दूत प्रेरित करके कहला भेजा कि मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारे व्यवहारों से अप्रसन्न हूं इस लिये तुम दिल्ली का राज्य छोड़ कर इसी समय अजमेर को चले जाओ। दूत के ऐसे बचन सुनते ही पृथ्वीराज क्रोध से जलकर आग बबूला हो गया। उसने दूत को दपट कर कहा रे मूढ़ यदि उन्हें ऐसा ही करना था तो पहिले ही सोच विचार कर राठौरों को क्यों न गोद ले लिया। मेरे रहते अब वे दिल्ली नगर का द्वार देखने की इच्छा न करें। यह सुनते ही उक्त दूत उठ कर खड़ा हो गया और बोला, हा! यह एक आश्चर्य्य की बात है कि जिसका धन धाम लिया जाय उसीको धता बताया जाय? तब पृथ्वीराज पुनः बोला रे मूढ़ बसीठ, राज्य कौन किसको देता है। जैसे दूध में माधुर्य्य स्वाभाविक ही होता है उसी भांति पृथ्वी पुरुषार्थी पुरुषों के पास आप आ जाती है, फिर उससे वह भूमि लेने की जो मूर्ख इच्छा करता है वह आप नाश को प्राप्त होता है। मैं उन्हें क्या कहूं, उनकी तो जरा रूपी ज्वर से जर्जरित जीर्ण बुद्धि सठिया गई है, परन्तु यह प्रसंग तुम लोगों के लिये विषमूल होगा। पृथ्वीराज की ऐसी बातें सुनकर वह दूत तनक्षीण मनमलीन होकर अनंगपाल के पास उलटा फिर गया। उसने अनंगपाल से कहा कि मैंने तो पहिलेही कहा था कि आप वृद्ध हुए अब इस प्रपंच में पैर न दीजिए परन्तु आपने न माना। वह राज्यमद मतवारा दैत्यवंशी बलवान चहुआन सुई के अग्रभाग भर भूमि देना भी स्वीकार नहीं करता। प्रथम तो आपने राज्य खोकर देश देशान्तरों में बात फैलाई, मालूम होता है कि आप को अब भी अपनी प्रतिष्ठा प्यारी नहीं है और हँसी कराने की इच्छा है।

यह सुनते ही अनंगपाल के अंग अंग में आग सी लग गई उसने उसी समय बिना सोचे विचारे कुछ फौज लेकर दिल्ली की तरफ कूच कर दिया। जब यह समाचार पृथ्वीराज को मिला तो उसने कैमास से कहा कि इस समय मेरा मन विचित्र विपत्ति में फँसा हुआ है। यद्यपि वे (अनंगपाल) मुझपर चढ़ करके आगए हैं परन्तु मेरी इच्छा नहीं होती कि मैं उनका मुकाबला करूं, इधर दिल्ली छोड़ कर जाते भी नहीं बनता। तब कैमास बोला कि आप उनसे लड़िए न, केवल अपने किले का प्रबन्ध कर लीजिए। निदान पृथ्वीराज ने ऐसाही किया। उधर से अनंगपाल सेना सहित दिल्ली के किले की दीवारों के पास आजमका और दनादन आग बरसाने लगा। अनंगपाल चार दिन तक बराबर लड़ाई करता रहा परन्तु पृथ्वीराज ने अपनी रक्षा करने के सिवाय और कुछ भी न किया। अस्तु जब अनंगपाल ने देख लिया कि वह अभेद्य दुर्ग उसके काबू का नहीं है तो वह चुपके से उलटा फिर गया और अपनी सेना को अजमेर के सिवाने छोड़ता हुआ आप फिर से बदरिकाश्रम को चला गया।

अनंगपाल दिल्ली से लौट कर बदरिकाश्रम न जाकर हरिद्वार में पड़ा रहा। वहां से उसने अपने मंत्री के मतानुसार पृथ्वीराज के पास फिर एक दूत भेजा। उसे पृथ्वीराज ने फिर भी वही उत्तर दिया। उसने कहा कि आपने जो भूमि संकल्प कर के दे दी उसे लेकर अब आप क्या करेंगे। आप वृद्ध हैं और जब आपने स्वयं राज्य त्याग कर के तापसीवृत्ति धारण करली तब आपसे और राज्य से प्रयोजन ही क्या? जैसे मेघों से वर्षा हुआ जल पुनः आकाश में नहीं जाता, पेड़ से पतन हुआ पत्ता फिर डाल में नहीं लगता, टूटा हुआ तारा फिर आकाश में नहीं जाता, सिंह जिस प्रकार लांघी हुई वस्तु को नहीं मारता और न भक्षण करता है वैसेही आप अपना दिया हुआ दिल्ली का राज्य अब नहीं पासकते। मैं जानता हूं कि आप शहाबुद्दीन के कान लग कर ऐसा कर रहे हैं। आप उस निर्लज्ज यवनराज के कहने में आकर क्यों वृथा अपने सत् धर्म्म और साहस को चौपट करने पर उतारू हुए हैं। वह जैसा आप है वैसा ही आप को करना चाहता है। स्मरण रखिए वह वही सुल्तान है जिसे मेरे सामन्तों ने कई बार कैद कर कर के छोड़ दिया है। जब ये बातें अनंगपाल ने सुनीं तो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने उसी समय एक दूत गजनी को रवाना किया। उधर लाहौर से नीतिराय खत्री ने पहिलेहीं सब समाचार शहाबुद्दीन को लिख भेजा था इधर अनंगपाल के दूत ने भी अनंगपाल का समचार कह सुनाया।

शहाबुद्दीन तो सदैव इसी टोह में लगा रहता था कि कब समय हाथ आवे और कब मैं दिल्ली पर दौरा करूं। अनंगपाल का प्रार्थना पत्र पाते ही वह तत्तार खां, खानखाना, खुरासान खां, मारुफ़खां, कमाल खां, कमान खां, नौशेर खां, आदि मुसाहिबों को साथ लेकर हिन्दुस्तान की तरफ़ चल पड़ा। अपनी चतुरंगिनी सेना सहित जब शहाबुद्दीन सिन्धु नदी पार हो आया तब उसने अपने मंत्री तत्तार ख़ां को अनंगपाल के पास हरिद्वार भेज कर कह पठाया कि मैं आगया, अब आप भी आकर सोनपुर के पड़ाव पर मुझ से मिलिए। इधर अनंगपाल तो पहिले से तय्यार बैठा था उसने दिल्ली की प्रजा की सहायता से धन पाकर बहुतेरे हाथी घोड़े लेकर नवीन सेना तय्यार कर रक्खी थी। तत्तार खां के पहुंचतेही अनंगपाल अपने उन सब सूरवीर सिपाहियों सहित जो कि उसके साथ ही बैरागी हो गए थे, दिल्ली की तरफ़ चला और सोनपुर के पड़ाव से दस कोस आगे शहाबुद्दीन से जा मिला। अनंगपाल के आने का समाचार पाकर शहाबुद्दीन ने उसे चार कोस आगे बढ़कर बड़े भावभगत से लिया और अपने बराबर बैठाल कर बड़ी खातिरदारी और तवाज़ा की।

शहाबुद्दीन को अनंगपाल ने पांच हाथी पचास घोड़े और बहुत सा जवाहिरात नजर किया जिसके बदले में बादशाह ने उसे एक तलवार एक तीर कमान और एक अमूल्य सिरोपाव दिया। तदनन्तर अनंगपाल ने कहा कि मैंने आपको जिस लिये इतना कष्ट दिया सो तो आपको भली भांति सूचित कियाही जा चुका है अब मेरी यह प्रार्थना है कि कल्हही दिल्ली पर चढ़ाई करके पृथ्वीराज का दर्प चूर्ण किया जाय। इस का शहाबुद्दीन ने तो कुछ भी उत्तर न दिया परन्तु उसका मंत्री तत्तार ख़ां बोला कि पहिले एक परवाना पृथ्वीराज के नाम लिख भेजिए यदि वह उसीसे मान जाय तो वृथा सहस्रों मनुष्यों का नाश क्यों हो और यदि न मानें तो फिर देखा जायगा। उसका यह मत शहाबुद्दीन तथा अनंगपाल दोनों ने स्वीकार किया और उसी समय एक परवाना दिल्ली को रवाना किया गया।

जिस समय यह परवाना पृथ्वीराज के साम्हने पढ़ा गया तो उसमें शहाबुद्दीन की तरफ से लिखा था कि हे पृथ्वीराज! अनंगपाल ने तप करने को जाते समय अपना राज्य आपकी रक्षा में छोड़ दिया था, कुछ आपको दे नहीं दिया था; अब वे तप करके अपना राज्य आप भोग करना चाहते हैं अतएव आपको उचित है कि उनका राज्य उन्हें सौंप दीजिए। सनातन की रीति है कि चरवाहा जो गाएं चराता है वे उसकी नहीं होजातीं। राजा अपने घोड़े पर जिस मनुष्य को मालदारी करने के लिये रखता है वह घोड़ा उस सईस का नहीं समझा जाता। इसी भांति दिल्ली राज्य पर आपका कुछ अधिकार नहीं है। मैं आपको मित्र की भांति यह सलाह देता हूं कि आप घर में वृथा विग्रह की जड़ न जमाइए नहीं तो अच्छा न होगा। ये बातें सुनतेही पृथ्वीराज ने कहा कि अनंगपाल ऐसे ऐसे एक क्या कई शहाबुद्दीन की सहायता लेकर क्यों न आवे परन्तु वह इस तरह से तिल भर भूमि न पा सकेगा।

पृथ्वीराज का ऐसा सूखा जवाब सुन कर उधर तो दूत ने पीठ फेरी इधर पृथ्वीराज ने अपने मंत्री को युद्ध के लिये तय्यारी करने का हुक्म दिया। वहां क्या था, केवल हुक्म की देर थी; पृथ्वीराज के वीर वर सामंत तथा अन्यान्य सैनिक सूरवीर राजपूत तो सदा युद्धक्षेत्र में प्राण देकर स्वर्ग के सोपान पर पैर देने को उद्यत रहते थे। बात की बात में दस हजार सेना तय्यार होगई और पृथ्वीराज उसके साथ होकर सोनपुर की तरफ़ चला। इधर शहाबुद्दीन को भी इस बात का समाचार मिल गया कि पृथ्वीराज लड़ाई का निशाना उठाए हुए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आ रहा है, अस्तु उसने भी अपने सिपाहियों और सिग्हसालारों को सचेत होने की सूचना दी। पृथ्वीराज के आते आते मुसल्मान सेना सन्नद्ध हो रही। उस सेना के बाम पक्ष में मारूफ खां; दाहिने में खुरासान खां, हरावल में तत्तार खां और अनंगपाल और पीछे शहाबुद्दीन थे। इधर पृथ्वीराज की सेना सर्पव्यूहाकार थी, जिसके मुख भाग पर कैमास, मध्य में पृथ्वीराज और पूंछ पर चामंड राय था। रणमदोन्मत्त सेना के मध्य में स्थित पृथ्वीराज ने हाथ उठा कर कहा, हे वीरो, आपकी बहादुरी इसीमें है कि अनंगपाल मारे न जावें उन्हें जीतेही पकड़ लेना। इतने में दोनों सेनाओं की देखा देखी हुई और कैमास ने अपने घोड़े की बाग उठाई। पश्चिम दिशा से आए हुए यवन दल बद्दल पर सपूत राजपूत वीर ऐसे टूटे जैसे भेड़ पर भूखा मृगराज टूटता है। वे नमकहलाल मुसलमान भी अल्लाह अल्लाह का हल्ला करते हुए अस्त्र शस्त्र चलाने लगे; दोनों ओर से ढोल, भेरी, रब्बी, नगारे, शृंगी, शंख, सहनाई आदि रणवाद्य बजने लगे। इन रणवाद्यों की भीषण ध्वनि और बीरोंटी की तानें सुन सुन कर वीरों के दिल दूने होने लगे। दोनों ओर के सूर सिपाही लोग वीररस मदमाते मतंग की भांति एक दूसरे से भिड़ रहे थे। उनकी बिकट मारा मार से सोनपुर का मैदान रक्त का सरोवर बन गया, सहस्त्रों हाथी, घोड़े ऊंटों के सर धर टांग पैर कटे पड़े नजर आते थे। इसी समय अवसर पाकर कैमास ने अनंगपाल को जा घेरा और बड़ी मार काट के बाद उसे जीता पकड़ लिया। यह देख कर शहाबुद्दीन को बड़ी ईर्षा उत्पन्न हुई और वह अपनी अनी को उत्साह देता हुआ आगे बढ़ा तब उसे चामंडराय ने धर दबाया। मुसल्मान सैनिक बड़ी देर लों ठहरे परन्तु अन्त में चामंडराय ने शहाबुद्दीन को पकड़ कर बांध लिया और अपने घोड़े के कंधे पर डाल कर पृथ्वीराज के साम्हने ले गया। इस युद्ध में सात हजार मुसल्मान और पांच सौ राजपूत काम आए। इस प्रकार युद्ध जीत कर पृथ्वीराज ने मैदान साफ किए जाने की आज्ञा दी। इस युद्ध में जो मुसल्मान मारे गए थे उन्हें मिट्टी दिलाई गई और हिन्दू बीरों की यथोचित रीति से दाह क्रिया करवाई गई।

पृथ्वीराज ने अपने शिविर में आकर शहाबुद्दीन को सम्मुख लाए जाने की आज्ञा दी। राजा की आज्ञा पाते ही राज्यमंत्री कैमास ने शहाबुद्दीन को दरबार में लाकर हाजिर किया। उस समय शहाबुद्दीन का भय एवं संकोच के कारण मुख सूख रहा था आखें नीची हो रही थीं और उसकी जबान से बात भी न निकलती थी। पृथ्वीराज की आज्ञा पाकर शहाबुद्दीन नीचा सिर किए बैठ गया; तब पृथ्वीराज ने अनंगपाल से कहा कि आप तो बुद्धिमान हैं आप इस निर्लज्ज शहाबुद्दीन के कहने में क्यों आगए। तब तक गोइन्दराय गहलौत बोला कि हे सब सामन्तो सुनो इसमें राजा अनंगपाल का कुछ दोष नहीं है इन सब प्रपंचों का रचयिता यही शहाबुद्दीन है। इसके सिवाय अन्यान्य सामन्तों ने भी जो जिसके मुँह आया सो कहा; परन्तु उस का न तो शहाबुद्दीन ने न अनंगपाल ने ही कुछ उत्तर दिया। तब पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन से बीस हाथी सौ घोड़े और दो लक्ष मुद्रा दण्ड लेकर और उसे अपनी तरफ से एक पाग सिरोपाव देकर गजनी को बिदा किया और आप अनंगपाल को साथ लिवाकर वह दिल्ली को आया।

जब अनंगपाल दिल्ली में एक साल रह चुके तब उन्होंने एक दिन अपने मंत्री से पूछा कि हे मित्र तूं मुझे ऐसी सलाह दे जिसमें मेरे धर्म कर्म दोनों की पाति रहे, तब वह बुद्धिमान मंत्री बोला कि मैं क्या कहूं आप तो स्वयं सब जानते हैं। हे राजन् अब आपका शरीर जरावस्था के कारण जीर्ण हो गया है, आप अपने जीवन के तीन आश्रमों का सम्पूर्ण भोग कर चुके हैं अस्तु अब आप को चतुर्थ आश्रम सन्यस्त के अनुसार बन में रहकर तप करना ही उचित है क्योंकि राजपाट धन धान्य विषय सुखादि जो कुछ है सब यावत् रूप में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्यमान रहेगा परन्तु अपने शरीर के नाश होने पर अपने लिये कुछ भी नहीं है, जिसके भाग का होगा सो भोगेगा। तदनन्तर अनंगपाल ने रानी का मत पूछा। स्त्रियों का चित तो हमेशा विषयलोलुप होता ही है, अस्तु रानी ने कहा कि आप पृथ्वीराज से पंजाब देश का आधा भूभाग लेकर उसी पर राज्य करते हुए शेष दिन बिताइए; मेरी तो यही सलाह है आगे जो आपके व्यास जी कहें सो कीजिए। रानी के ऐसे बचन सुन कर राजा ने व्यास जी को बुलाया और यही प्रश्न उनसे भी किया। तब व्यास जी बोले हे राजन् आपको अन्तिम समय में यह क्या प्रपंच सूझा है, आपकी राज्यगद्दी पर पृथ्वीराज ऐसा प्रतापी पुरुष राज्य शासन करता है। इससे आपको भी प्रसन्न होना चाहिए। आप राज्य का लोभ छोड़ कर बदरिकाश्रम में जा ईश्वर का स्मरण करो, जिससे आपका परलोक बने। आप इस वित्त के लोभ की अत्त करके चित्त को दुविधा में डालकर अन्त में सत्त को न डिगाइए, इसी वित्त के लोभ की अत्त से पुत्त पित्त और मित्त भी शत्रु हो जाते हैं।

व्यास जी के ऐसे बचन अनंगपाल ने बे आनाकानी स्वीकार कर लिए और उसी समय पृथ्वीराज के पास कहला भेजा कि मैं बदरिकाश्रम को जाना चाहता हूं तब पृथ्वीराज ने अनंगपाल के पास आकर कहा कि आपको जप, तप, धर्म, कर्म, ध्यानादि जो कुछ करना हो यहीं रहकर करिए, मैं सब तरह आपकी सेवा करने को प्रस्तुत हूं। पृथ्वीराज ने बहुत कहा पर अनंगपाल ने एक भी न मानी। तब पृथ्वीराज ने दस लाख मुद्रा सौ दास दासी साथ में देकर उन्हें बदरिकाश्रम को बिदा किया और आप स्वयं हरिद्वार तक पहुंचाने गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घघर नदी का युद्ध।

[उन्तीसवां समय।]

गजनी में शहाबुद्दीन को पृथ्वीराज के भूत पूर्व्व पेशकार धर्मायन द्वारा समाचार मिला कि पृथ्वीराज सब सामंत और ६० हजार सवारों सहित अहेर के फेर में फिर रहा है और दिल्ली का राज्य सिंहासन थोड़े से सैनिकों सहित केवल कैमास से रक्षित है। शहाबुद्दीन ने यह समाचार पाकर अपना दूत भेज कर जब सब पूरा पूरा भेद मंगा लिया तब इस अवसर पर दिल्ली को विजय करने की इच्छा से वह सब सरदारों के बीच पण कर के बोला कि अब तो जब मैं पृथ्वीराज पर विजय प्राप्त कर लूंगा तभी तसबी (माला) हाथ में लूंगा और तब तक के लिये समस्त राजसी व्यसनों का भी त्याग करता हूं। यह कह कर खुरासान, रूम, हबस, और बलष आदि देशों के बादशाहों को सहायतार्थ पत्र भेजे जाने की आज्ञा देकर आप अपनी सेना की तय्यारी करने में रत हुआ। तब शहाबुद्दीन यथासंभव शीघ्रही बड़ी भारी सेना इकट्ठी करके दस दस कोस का पड़ाव करता हुआ भारत और अफगान की पहाड़ी सीमा तक आगया। तब दिल्ली के राज्य दूतों ने पृथ्वीराज के पास दौड़ कर यह खबर दी जिसे सुन कर वह वीर पुंगव पृथ्वीराज भी मृगया त्याग चैत्र सुदी ३ रविवार को शाह का रास्ता रोकने के लिये चल दिया और समयानुसार मोरचा बांधकर घोघर (घघर) नदी के तीर पर आडटा। उधर से शहाबुद्दीन भी अपनी सेना को पान व्यूहाकार रचकर चला आता था। उसकी सेना में आगे हथनाल तिस पीछे उँटनाल और तिस के पीछे एक लाख धनुर्धारी और तिस पीछे एक लाख गष्बर और खुरासानी, सात सौ वलखी सरदार निसुरत्त खां के ताबे में और हबशी रूमी इत्यादि सरदारों की कतारें सुशोभित थीं। इस प्रकार साज बाज से चल कर जब वह घनघोर घटा की नाईं नदी के उसी तीर पर आडटा तब

१०वां पृष्ठ

इधर से पृथ्वीराज ने भी चामुंड राय को हरावल का सेनापति नियत करके अपनी सेना को गरुड़ व्यूहाकार रचा, जिसमें चामुंड राय चुंच, पृथ्वीराज पंख, अत्ताताई धड़, गोइन्दराय पर, जैत पँवार पेट और कन्ह चौहान पूंछ की रक्षा पर नियत हुए। उधर से शहाबुद्दीन नदी के इस पार आने के लिये बढ़ा और इधर से राजपूत सेना ने उसे रोकने की चेष्टा की। निदान बीच नदी में दोनों दलों का मुठ भेड़ हो गया। पहिली चोट चामुंड राय और तत्तार खां की हुई जिसमें एक हजार मुसलमान मरे और तत्तार खां पीछे हट गया। इस पर उधर से आठ हजार गष्बरों[१] ने धावा किया और उनसे घिर कर जब चामुंड क्षत विक्षत हो कर मूर्छित होने लगा तब वहां पर जैत राव जा पहुंचा और उसने ऐसी मार की कि मुसलमानी सेना के पैर उखड़ने लगे तब उधर से खुरासान खां ने बढ़ कर जैतराव का साम्हना किया। इन दोनों में जब जी जान से छिड़ रहा थी कि इधर से पज्जून राय ने धावा किया और उसके मुकाबिले में उधर से निसुरत्त खां उतर पड़ा। इस तरफ जबतक उक्त सरदार सरदारों और सैनिक सैनिकों का परस्पर द्वंद युद्ध हो रहा था, कि इधर नरसिंह वीर काका कन्ह चहुआन की पट्टी खोल दी गई। पट्टी के खुलते ही वह सूर्य्य के समान तेज-धारी वीर अपनी किरण रूपी तेज तलवार द्वारा एक लाख काले कुंलिजरों में धस कर उन्हें काई सा काटने में प्रवृत्त हुआ। इधर चामुंड राय पज्जून जैतराव इत्यादि सामन्तों ने मुसलमानी हरावल को तोड़ा। उस वक्त इधर अकेले कन्ह ने बादशाह को जा दबाया। जिस कन्ह चहुआन का नाम सुनकर उस समय रसातल के वीर कांपते थे, उसके साम्हने भला ठहरे कौन? ऐसा विचार कर बादशाह ने स्वयं भागना चाहा, किन्तु कन्ह ने उसके गले में कमान डाल दी और सहस्रों मुसलमानी सेना के देखते देखते उस शाह शहाबुद्दीन को अनाथ की स्त्री

(१) मुसलमानी एक जाति—शहाबुद्दीन इसी सेना के बीच में रक्षित था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सा बांध लिया। बादशाह के बँधते ही मुसलमानी सेना प्रबल बयार से पीड़ित बद्दलों की भांति छिन्न भिन्न होकर भाग उठी। राजपूत सेना ने उसे कुछ दूर खदेड़ कर जो कुछ माल असबाब पाया अपने हाथ किया। इधर कन्ह ने बादशाह को लाकर पृथ्वीराज के साम्हने पेश किया और तब उनकी आज्ञानुसार ही उसे अपने साथ अजमेर में ले जाकर बड़े आदर भाव से रक्खा।

इधर जब पृथ्वीराज मृगया से संतुष्ट होगया तब उसने दिल्ली में आकर कैमास गोइन्द राय निड्डुर सलष, कन्ह, पज्जून राय, प्रसंग राय खीची, हाहुलि राय. हम्मीर इत्यादि सामंतों की अंतरग सभा की जिसमें शहाबुद्दीन के विषय में विचार किए जाने का प्रस्ताव पेश हुआ। इस पर अन्य सब सामन्तों ने यह मत प्रगट किया कि अब की बार इस दुष्ट का बध करना ही उचित है। इस नीच को न लज्जा है, न भय, न क्षमा और शील का व्यवहार सज्जनों के साथ किया जाता है, न कि ऐसे धृष्ट और कुटिल के साथ। राजन्! दुष्ट को दण्ड न देना ही पाप की वृद्धि करना है। यह सुनकर कन्ह ने कहा कि आप लोगों का कहना वास्तव में यथार्थ है किन्तु मेरे कहने से उसे अब की एक बार और छोड़ दीजिए। जो अब भी न मानेगा तो अबकी मैं स्वयं उसका सिर अपने ही हाथ से काटूंगा। निदान कन्ह की बात राजा ने भी स्वीकार की। फिर सब ने कहा कि एक गज़नी को छोड़ कर कन्धार और पश्चिम के अपने सब देश जो अब की दण्ड में दे तो छोड़ा जाय नहीं तो नहीं। इस पर पुनः कन्ह ने कहा कि नहीं अब की बार भारतवर्षान्तर्गत पंजाब का ही प्रदेश उसके हाथ से लेकर उसे छोड़ दिया जाय तो अच्छा है। निदान यह बात भी राजा ने मान ली। तब कन्ह ने अजमेर पहुंच कर शहाबुद्दीन से सब हाल कहा। उसने एक मणि कन्ह को नजर की। कन्ह शहाबुद्दीन को साथ लेकर फिर दिल्ली जा पहुंचे. वहां पर शहाबुद्दीन ने दो घोड़े और अपनी तलवार पृथ्वीराज को नजर करके बड़े विनीत भाव से कहा कि मैं अब की बार अपने दीन (इसलाम) की कसम करके कहता हूं कि अब फिर कभी भी आपके विरुद्ध आचरण करने की चेष्टा न करूंगा और अब से मैं और आप सदैव मित्र भाव से रहेंगे। उसके ऐसे बचन सुनकर पृथ्वीराज ने दो हजार सवारों की सेना साथ देकर लोहाना आजानबाहु को साथ करके उसे सहर्ष विदा किया। जब शहाबुद्दीन अटक के किनारे पहुंचा तो रयमल जो कि शहाबुद्दीन का जानी दुश्मन था तेंतीस हज़ार सवार लेकर आ पहुंचा। तब लोहाना ने बादशाह को तो ५०० सवारों सहित आगे रवाना कर दिया और आप रयमल का मुकाबिला करके उसे मार गिराया। तब आगे बादशाह से जा मिला। तब तक तातार खां निसुरत्त खां आदि वीर भी गज़नी से दो लाख सेना सहित बादशाह से आमिले और बड़े गाजे बाजे से आनन्द मनाते हुए उसे गजनी ले गए। शहाबुद्दीन ने गज़नी पहुंचकर १० दिन लोहाना को अपना मेहमान रक्खा और चलते समय १०० हाथी १००० घोड़े और अपना मणिजटित राज्यमुकुट और ७००००० नगद द्रव्य देकर बिदा उसे किया।

लोहाना ने दिल्ली में आकर वह सब द्रव्य पृथ्वीराज के चरणों में रक्खा और वहां का सब समाचार और राजा प्रजा का व्यवहार कह सुनाया। पृथ्वीराज ने उन घोड़े हाथियों में से एक एक घोड़े और एक एक हाथी क्रम से सब सामंतों को बाँट दिए और वह उक्त राजमुकुट और सब द्रव्य कविचंद के हवाले करके उसे रावल जी के पास चित्तौर को भेजा। चंद ने चित्तौर में जाकर उक्त लड़ाई का सब समाचार कहा और वह सब द्रव्य पृथ्वीराज की ओर से सौगात की तरह रावल जी को नजर किया, जिसे उन्होंने भी प्रसन्नता पूर्व्वक स्वीकार किया और कविचंद को बहुत सा धन द्रव्य देकर सादर विदा किया॥

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर्नाटी पात्र समय।

[तीसवां समय ।]

कन्नौज राज्य के गुप्त दूतों ने जयचन्द के दरबार में समाचार दिया कि दिल्लीपति पृथ्वीराज ने (उक्त) घघर नदी के युद्ध में शहाबुद्दीन को परास्त करके कर्नाट देश पर चढ़ाई की। उस समय पृथ्वीराज के प्रबल दलबल के आतंक से दब कर दक्षिण देशीय सब राजा उससे नम्रता पूर्वक मिले और उन्होंने कर्नाट देशीय एक परम सुंदरी वेश्या पृथ्वीराज को समर्पण की जिसे लेकर संवत् ११४१ में पृथ्वीराज दिल्ली को लौट आया और अल्पवयस्का वेश्या को नाट्य और संगीत विषय में शिक्षा देने के निमित्त तद्विषय सम्बन्धी परम विद्वान कल्हण नाम नट को उसे सौंप दिया।

कल्हण की उत्तम शिक्षा के कारण वह कर्नाटी वेश्या थोड़े समय में नृत्य गान विद्या में दक्ष होगई उधर उसके अंग अंग में अनंग राज के उमंग की प्रतिभा पड़ने लगी। स्वाभाविक हावभाव कटाक्षादि से परिपूर्ण होकर चतुरों का चित्त चुरानेवाली वह विचित्र वामा बन गई। जब यह समाचार पृथ्वीराज के कानों तक पहुंचा तब उसका सहज रसलोलुप मन मलिन्द, कर्नाटी के आनन्द मय छबि मकरंद को पान करने के लिये उनमत्त सा हो उठा। इसलिये उसने उसी दिन अपने अंतरंग सभा मंडप को नाना प्रकार की सुखकर सामिग्रियों से सजावाया और कविचंद रामराय, जद्दव, निड्डुराय, बलभद्र, कूरंभराय लोहाना आजानबाहु आदि समवयस्क सामंतों सहित वहां स्वर्ण सिंहासन पर आन बैठा और कल्हण सहित कर्नाटी को बुलाए जाने की उसने आज्ञा दी। जब कल्हण कर्नाटी सहित सभा में आ उपस्थित हुआ, और राजा की आज्ञानुसार साज सम्हाल कर नाटक खेलने को उद्यत हुआ, तब कविचंद बोला कि हे नटवर ऐसा नाट्य कौशल दिखलाओ जिसमें संगीत विद्या के परम प्रवीण राजा के पास बैठे हुए बीर निड्डुर राय का भी चित्त प्रसन्न हो। कविचंद के ऐसे बचन सुन कर नट बोला कि राजा के पास बैठें हुए ये सुभट कौन हैं? तब कविचंद ने उत्तर दिया कि ये बीर निड्डुर राय कन्नौज के महाराज जयचंद के भाई हैं। यह सुन कर नट ने पुनः प्रश्न किया कि हे कवि वर अब कृपापूर्वक यह भी बतलाइए कि आपका आना यहां क्यों कर हुआ?

नट की ऐसी बात सुनकर कविचंद बोला कि एक समय जयचंद, निड्डुर राय और विजय सिंह राजमंत्री महल में एकान्त बैठे हुए थे। यथासमय विजय सिंह ने बंदशाह से मित्रता के विषय में बात छेड़ी जिस पर निड्डुर राय ने सर्वथा असम्मति प्रकाश की। उसके दूसरे ही दिन निड्डुर राय ने अपने मित्रवर्ग सहित नगर के बाहर राज्य मंत्री के पुत्र सारंग देव के बाग में जलसा रचा। यह समाचार पाकर सारंगदेव दौड़ता हुआ आया और इनके रंग में भंग करने लगा, वीर निड्डुर राय ने उससे तो कुछ न कहा परन्तु वे क्रोध भरे जयचंद के पास आए और उससे सब हाल निवेदन किया। इस पर जयचंद ने सारंग के ही पक्ष का समर्थन किया। निदान जयचंद का यह अविचार और अपमान निड्डुर राय से सहन न हो सका, इस लिये वे उसी समय कन्नौज को त्याग कर दिल्ली चले आए। अतएव यहां महाराज पृथ्वीराज ने आप को यथायोग्य सम्मान करके आपको अपने ही भाई के समान दर्बार में रक्खा है।

कविचंद के निड्डुर राय की कथा कह चुकने पश्चात नट ने मंगलाचरण गान करके राजाओं के लक्षण वर्णन किए और फिर पर्य्यायक्रम से रसमय अभिनय प्रारंभ करके महाराज और वहां उपस्थित सब सभासदों का चित्त प्रसन्न कर दिया। राजा ने स्वयं अपने मुख से कर्नाटी के नृत्य गान की प्रशंसा करते हुए कहा कि हे नट तुझे इस परिश्रम के लिये क्या पारितोषिक दिया जाय। तब नट नम्र भाव से बोला कि भला मैं श्रीमान् से क्या निवेदन करूं। निदान राजा ने उन नट को १० मन स्वर्ण प्रदान करके कर्नाटकी को महल में रक्खे जाने की आज्ञा दी। महल में उस कर्नाटी के सहस्रों दास दासी सेवा में रहते और राजा स्वयं रात्रि दिवस उसी के प्रेमालाप और काम कृत केलि क्रीड़ा में रत रहता॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीपा युद्ध।

[एकतीसवां समय।]

एक समय पृथ्वीराज शौचादि नित्य क्रिया से निश्चिन्त हो, स्नान संध्या बंदनादि कर, रत्न जटित सुन्दर आभूषण स्वच्छ वस्त्र, अस्त्र शस्त्रादि धारण कर, मस्तक पर राजमुकुट पहिन सभा में आ विराजे। उधर से राज्य मंत्री कैमास ने आकर अपना आसन ग्रहण किया। थोड़ी देर में चामुंड राय, कन्ह, पुंडीरादि, चंद कवि सहित सब सामंत लोग यथानियमित स्थान पर बैठ कर सभा को सुशोभित करने लगे। संपूर्ण सभासदों के जुट जाने पर यह चर्चा चली कि कन्नौज राज्य के सीमा-स्थित उज्जैन, धार, देवास आदि नगरों पर चढ़ाई कर के उन्हें विजय किया जाय अथवा नहीं? धीर वीर जैमत्त के ऐसे बचन सुन कर पृथ्वीराज ने कहा कि इस तुच्छ जीवन में एक मात्र कीर्ति ही सार है। मरने के पश्चात यह पंचभौतिक शरीर जहां तहां अपने अपने अंशो में विभक्त हो जाता है। जीव से और इस संसार से जो संबन्ध है वह शरीर के ही रहते तक है। इस लिये एक मात्र कीर्ति संपादन के हेतु राजा दधीचि ने अपनी अस्थि (हड्डी) भी देवताओं को दे दी और दुर्योधन ने कीर्ति के ही लिये अपने प्राण दिए पर हाथ से पण न जाने दिया। अतएव मेरा मत यही है कि जयचंद के विरुद्ध सेना सजी जाय। इस प्रकार राजा की प्रतिज्ञा सुन कर सब सामन्तों ने उसे स्वीकार किया। कन्ह, पर्व्वत राय, केहरि कंठीर हरसिंह, वीरसिंह, जाम राय जद्दव, नाहरराय, तोंअरराय, जैतराव, निड्डुर राय इत्यादि सामन्तों ने अपने अपने तहत की सब सेना बात की बात में सुसज्जित कर ली। पृथ्वीराज की आज्ञानुसार वह सब चतुरंगिणी सेना छः भागों में बांट कर निड्डुरराय, कन्ह चहुआन, जैतसिंह प्रमार, जामदेव जद्दव, रामराय रघुवंसी और कैमास की हुकूमत में बाँटी गई और पृथ्वीराज आप स्वयं सब सेना का मुख्य सेनापति बना।

इस प्रकार सब तरह से सेना की पूरी तय्यारी हो चुकने पर सब सामंतों ने आग्रहपूर्व्वक गुरूराम प्रोहित से चढ़ाई करने के लिये शुभ मुहूर्त साधन करने की प्रार्थना की। निदान गुरु राम ने भी राजा का रुख पा 'वैशाष शुक्ल ५' का सुदिन निश्चय करके कह सुनाया। पृथ्वीराज और सब सामंत यद्यपि प्रथक प्रथक देहधारी थे किन्तु वास्तव में वे सब सामन्तों का प्रतिबिंब स्वरुप थे या यदि इन सब सामन्तों को किरण मान लें तो पृथ्वीराज को भास्कर स्वरूप मानना ही युक्तिसंयुत होगा। गुरुराम के मुख से रणमुहूर्त का शुभागम सुनते ही वे सब बीर सामंत आनन्द में उनमत्त से हो उठे और उनका वह दिन बड़े ही चाव और आनन्द में व्यतीत हुया।

यात्रा के लिये नियत उपरोक्त तिथि के प्रातःकाल अरुणोदय के समय से ही सब सामंत लोग काले काले दीर्घकाय मतवाले हाथियों पर बैठ बैठ कर राजमहल के सम्मुख आ आ कर धुँवाधार बद्दल से जुटने लगे। उनके पीछे पीछे रंग विरंगी अनी कनी चतुरंगिनी सेना भी पावस के बहुरंग मेघों के समान आच्छादित होती चली आती थी। हाथियों के दांत बगपांत और चमचमाते हुए उज्वल शस्त्र साक्षात सौदामिनी से भान होते थे। उस समय सब सामंत लोग क्रोध, उमंग और उत्साह से भरे हुए ऐसे मालूम होते थे जैसे विषैला काल सर्प बामी की ओर शुद्ध रहता है किन्तु उसके बाहर चलता हुआ सदैव वक्रगामी होता है। सब सेना के जुट जाने पर सहकारी सेनाध्यक्ष निड्डुर राय ने सब सेना को यथा वर्ण प्रथक प्रथक श्रेणीबद्ध किया और आप स्वयं सब सेना के बीच में खड़ा होकर कहने लगा कि हे भाइयो, यह जो हम तुम इस समय मिले हुए खड़े एक दूसरे को देख रहे हैं, यह सब कुछ भी नहीं है। मरने के पश्चात् यह पंचभौतिक शरीर निज निज अंशों से पंचतत्त्वों में और आत्मा आत्मा में लीन हो जायगा। मरने के पश्चात् न कोई कर्म है न उसका भोग है। जैसे तप्त तवे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर जल की बूंद का और बदर की छांह का कोई समय निश्चित नहीं है इसी प्रकार इस भस्मीभूत शरीर की स्थिरता का भी कोई निश्चय नहीं। परन्तु यह बात विषयाशक्त कायर पुरुषों को केवल उसी समय स्मरण आती है जब कि वे अपने किसी आत्मीय जन का दाह करने स्मशान को जाते हैं या स्त्री संभोग के अन्त में अथवा कथापुराणादि को सुनते समय भी उन्हें इसका स्मरण होता है। परन्तु भाइयो, वीरलोगों को इस चण भंगुर शरीर की अनित्यता और स्वामिसेवा का गौरव सदैव स्मरण रखना उचित है क्योंकि अन्तिम समय में जैसा ध्यान बँधा रहता है उसीके अनुसार पुनर्जन्म होता है अतएव अब इस समय जीवन की आशा सर्वथा त्याग करके ही युद्ध के लिये सन्नद्ध हो जाओ। निड्डुर राय के ऐसे बचन सुन कर सब सूर वीरों ने अपने प्रधान अस्त्रों से सलामी लेकर जैजैकार ध्वनि करके आकाश को प्रतिध्वनित कर दिया और सेनापति की आज्ञानुसार यथारीति श्रेणीबद्ध हो कर वे प्रस्थान करने लगे।

उधर तो शहाबुद्दीन सदैव इसी टोह में रहता था कि कब समय पाऊं और कब पृथ्वीराज को घर दबाऊं। उसने बड़े बड़े राजनैतिक चुटकलों द्वारा लचों रुपया व्यय करके पृथ्वीराज की तरफ के सैकड़ों मनुष्य इसीलिये अपना रक्खे थे कि वे समय पर केवल सही सही समाचार दिया करें जैसा कि पाठकों को अभी कई बार पढने में आचुका है। निदान इस प्रस्थान की खबर भी शहाबुद्दीन तक पहुंच गई और वह अपने विचार से मोरचेबन्दी के उत्तम स्थान छांट कर रास्ते में आ डटा। इधर से राजपूत सेना मुकाम पर मुकाम कूच करती चली जाती थी और दो दो चार चार पड़ाव आगे गुप्त चर भी चलते थे। उन गुप्तचरों ने अपने अधिपति चामुंडराय को बादशाह के राह रोकने की खबर दी। तब वह वीर चामुंडराय कुछ थोड़ी सेना लेकर पृथ्वीराज के बिना जाने ही आगे बढ़गया और रातोंरात चलकर तत्तारखां की अग्रगामिनी सेना पर उसने छापा जा मारा। इस राजपूत सेना के आक्रमण कर देने पर मुसलमान लोग अपने अपने आले बाने सम्हाल कर साम्हने हो गए। निदान इधर जब तक चामुंडराय और तत्तारखां की परस्पर हाथा बाँही हो रही थी, तबतक पृथ्वीराज सब दल बल सहित देवास की तरफ आगे बढ़े जाते थे। मनुष्य आशा के वशीभूत होकर मनमाना हाथ पैर मरता है परन्तु होता वही है जो कुछ होनहारस्वरूप ईश्वरेच्छा होती है। निदान आगे जयचंद की बड़ी भारी कुमक लिये हुए शहाबुद्दीन अखम रूप से डँटा हुआ था। जब पृथ्वीराज की सेना मुठभेर में जा पहुंची तब उधर से मुसल्मान सेना जो पहिले से ही इसके आगमन की प्रतीक्षा कर रही थी अस्त्र शस्त्र सम्हाल कर तैयार होगई। इधर से पृथ्वीराज ने भी हल्ला बोल दिया। अपने अपने सेनापति सरदारों की आज्ञा पाते ही दोनों सेना के सूरवीर योद्धागण स्वर्ग के मग पर पदार्पण करने को उत्सुक होते हुए शत्रुओं को प्रचार प्रचार कर मारने में रत हुए। शहाबुद्दीन के दृढ़ मन्तव्य के अनुसार मुसल्मान योद्धाओं का यही मत था कि जिस तरह बने पृथ्वीराज को पकड़ लेना है और इसीलिये जान हथेली पर रख कर वे युद्ध कर रहे थे। उनकी ऐसी प्रबलता देखकर कन्ह, गोइन्दराय, लंगरीराय और अत्ताताई क्रोध से अधर कंपाते हुए मतवाले मतंग की भांति यवन सेना में धँस पड़े और उधर के बड़े बड़े बीरों को सहज ही सिवार की नांई नाश करने लगे। इस प्रकार उक्त चार बीरों के कोप के कारण जब हासबखां और खुरासानखां दो मुख्य सर्दार धराशायी हो गए तब मुसल्मानों के पांव उखड़ने लगे। यह देख कर शहाबुद्दीन ने सभों को बड़े उत्कर्ष से ललकारा और आप स्वयं उस कठिन मारामार के समय में घोड़े की बाग उठाता हुआ वह आगे बढ़ा। तब इधर से पृथ्वीराज ने भी राजपूत बीरों को उत्तेजक वाक्यों से संबोधन करते हुए उस समर क्षेत्र में पण किया कि अब की बार इस म्लेच्छ को पकड़ कर अवश्य ही इसे इसकी निर्लज्जता और शठता का पुरस्कार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देना है । पृथ्वीराज के ऐसे बचन सुन कर एक ओर से चालुक्क राय, और दूसरी ओर से जामदेव जद्दव ने आध आध कोस का रुख दे कर शाही सेना को बीचों बीच दबाया और पृथ्वीराज ने शेष सेना को स्वयं मयूरव्यूहाकार रचकर सम्मुख से आक्रमण किया । इस पर शहाबुद्दीन की तरफ से न्याजीखां तथा तत्तारखां ने सेना की बाग सम्हारी । पृथ्वीराज की ओर से पीप (पीपा) पड़िहार हरावल में था अतएव शहाबुद्दीन से ही उसका मुकाबला पड़ा । दोनों ओर खचा खच होते होते रात्रि होगई सेना नायकों की अनिच्छा होने पर भी सिपाहियों ने लड़ाई से मुंह न मोड़ा । तब छ हाजार मसालें जला कर युद्धभूमि में उपस्थित की गईं और युद्ध बराबर होता ही रहा । जब आधी रात्रि हो गई तब पीप पड़िहार और कीर्तिसिंह तोंअर ने बादशाह को घेर लिया । जिसके ऊपर दार मदार था जब उसी के प्राण संकट में पड़गए तब सिपाही और साधारण सेना नायकों की कौन पूछे । जिधर जिसका जी चाहा सब तीनतेरह हो उठे और पीपा पड़िहार ने शहाबुद्दीन को बंदी कर लिया ।

इस प्रकार शहाबुद्दीन को बंदी करके पृथ्वीराज ने दिल्ली में आकर पीपा पड़िहार को बहुतसा धन पारितोषिक में दिया और बादशाह को बिना दण्ड लिए ही मुक्त कर दिया । इस युद्ध में प्रसंगराय खीची पज्जूनराय का पुत्र, वीरभान, जामदेव, अत्ताताई के भाई और शहाबुद्दीन का भाई हुजाबखां इत्यादि सरदार मारे गए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करहरा युद्ध।

(बत्तीसवां समय।)

एक बार पृथ्वीराज केवल ६४ सामंतो के साथ मालवा देश की भूमि में शिकार खेलने के लिये पधारे। मालवपति उज्जैन के राजा भीमदेव ने सादर पृथ्वीराज को अपना स्वामी स्वीकार किया और अपनी बेटी इन्द्रावती का पाणिग्रहण भी पृथ्वीराज के साथ कर देने की प्रतिज्ञा की।

जिस समय पृथ्वीराज के डेरे मालवे के जंगलों ही में पड़े हुए थे, भीमदेव ने अपने कुल प्रोहित के हाथ पंचमी मंगलवार को इन्द्रावती का टीका पृथ्वीराज के पास भेज दिया, जिसे पृथ्वीराज ने सादर स्वीकार किया और टीके के पश्चात् विधिवत नेगचार होजाने पर पृथ्वीराज ने उज्जैन से टीका लेकर आए हुए ब्राह्मण को बुलाकर पूछा कि हे विप्र उस कुमारी इन्द्रावती की क्या अवस्था है अथवा और भी जो तुम उसके सौन्दर्य्य और स्वरूप के विषय में जानते हो सो कहो। राजा के ऐसे वचन सुन कर वह ब्राह्मण बोला कि अन्नदाता, मैं किस मुख से उस सुकुमारी कुमारी के रूप गुण की प्रशंसा करूं। घणीखमा! उसकी शैशव अवस्था का ह्रास और यौवन का दिनप्रति शरद चंद के समान प्रकाश हो रहा है। उसके स्याम सचक्कन सटकारे कारे कच मकरन्द की स्यामता को मंद करते हैं, उसके चन्द्रमा समानतेजोमय उज्वल ललाट में लाल बिन्दी ऐसी सुशोभित होती है मानो चन्दमण्डल में मंगल विराजमान है। उसके धनुषाकार वक्र भृकुटियों के नीचे सुन्दर सूक्ष्म वरौनी प्रत्यंचा स्वरूप हैं और उनके मध्य में स्यामता सहित स्वच्छ और बड़े बड़े नेत्र मीन दीन एवं खंजन इत्यादि को लज्जित करने वाले साचात् पंचबाण के बाण से भी प्रखर हैं। उस की नासिका दीपशिखा को, कपोल गुलाब पुष्पों को, ओष्ठ विद्रुम को, दंतपंक्ति कुंदकली को मंद दुति करते हुए देखने वालों के मन को सहज मोहित करते हैं। उसकी उठती हुई सूक्ष्म रोमराजि सर्प के समान सरकती सी जाती है। और कोमल वक्षस्थल पर कमल कली के समान युग यौवन अभी उसकते आरहे हैं। हे अन्नदाता, और मैं कहां तक कहूं वह सर्वांग सुन्दरी नवेली नवला साचात् कामदेव की स्त्री रतिरानी का प्रतिबिम्ब स्वरूप है।

इस प्रकार टीका चढ़ाकर प्रोहित ने व्याह की पक्कायत का समाचर उज्जैन में दिया तो वहां क्या राजा क्या प्रजा सबके घर घर आनन्द बधाई होने लगी और राज्यगृह में नित नव मंगल गान होते हुए इन्द्रावती के व्याह की तैय्यारी होने लगी। इधर पृथ्वीराज को समाचर मिला कि गुर्ज्जर नरेश भीम देव चालुक्य ने चित्तौर पर आक्रमण किया है इस बात के सुनते ही पृथ्वीराज ने रस रास छोड़ रावल जी की सहायता के लिये चित्तौर की तरफ जाने का विचार निश्चय किया, पज्जून राय को अपना खड्ग * बँधा कर उज्जैन की तरफ भेजा और अन्य सब सामन्तों को ले कर वह आप स्वयं चित्तौर की तरफ चलदिया। पृथ्वीराज अपने सूर सामन्त और सुसज्जित सेना सहित दिनदून पड़ाव करता हुआ चित्तौर की तरफ़ जाने लगा। इस प्रकार चलते हुए जब वह आधी दूर गया होगा कि उधर से रावल जी का प्रधान इधर को आता हुआ मिला। पृथ्वीराज ने पहिले तो उससे रावल जी का कुशल समाचार पूछा और फिर पूछा कि भीमदेव की सेना कहां पर है और रावल जी इस समय सेना सहित क्या उद्योग कर रहे हैं। पृथ्वीराज के प्रश्नों का उत्तर प्रधान ने संक्षेप में देकर कहा कि भीमदेव की सेना इस समय चित्रकोट से दस कोस के अन्तर पर है परन्तु शीघ्र ही मुठभेड़ हुआ चाहता है।

* राजपूत राजाओं में पहिले यह रिवाज थी कि यदि किसी कारण वश वर बरात में स्वयं न जा सके तो उस का कोई अमात्य उसका खड्ग या कटार लेकर बर के स्थान में व्याहने जाया करता था। अन्यान्य सब नेग तो वहीं पुरुष संपादन करता था, केवल भाँवरी उसी कटार के साथ पड़ती थी और इस रीति से हुआ व्याह उसीका व्याह माना जाता था जिसकी कि वह कटार होती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और इसी विचार से रावल जी की आज्ञानुसार मैं आपको ही यह समाचार देने के लिये दिल्ली जा रहा था। पृथ्वीराज बोला कि वह वही तो भीमदेव है जिसे मैंने अगनित बार गैल की धूलि चटाई है। मेरे इन्हीं समन्तों के साम्हने उसने कई बार पीठ दिखाई है और अब भी वह अपने किए पर पछतावेगा।

उधर भीमदेव जबतक चित्रकूट गढ़ पर आक्रमण करने को था कि पृथ्वीराज जी भी वहां पहुँच गए। पृथ्वीराज ने उक्त प्रधान को तो रावल जी के पास भेजा और उसने आप स्वयं चढ़ीसवारी चालुक्य सेना पर हल्ला बोल दिया। पारधी के समान पृथ्वीराज की सेना से सताए जाने पर वह सर्प रूपी चालुक सेना समूह अपना खड्ग रूपी फन उठा कर इस तरफ बदल पड़ा। तब तक उधर से रावल जी ने भी आक्रमण कर दिया। दोनों तरफ से दो प्रबल सेनाओं से दबाए जाने पर भी बीर भीमदेव जरा न हिचका और जी खोलकर तलवार चलाने लगा। पृथ्वीराज के अधिसेनानायक हुसैनखां * ने अपनी सेना को गजव्यूहाकार रचा जिसमें आप और अत्ताताई दन्त स्थान पर रहे, गोइन्दराज को सुंड और राजा को कुम्भस्थल स्थान पर नियत किया। उसने महनसिंह मोरी और कन्ह को वाम और चित्तौर के सवल सामन्तों को दक्षिण पक्ष पर प्रेरित किया। निदान इस प्रकार व्यूहबध्य दोनों विकट सेनाओं से अकेले भीमदेव ने ५ प्रहर युद्ध किया। इस युद्ध में उसके १००० योधा काम आए।

दूसरे दिवस तीन घड़ी रात्रि रहते से फिर युद्ध आरम्भ हुआ। इस दिन भीमदेव ने नदी पार करके स्वयं रावल की सेना पर आक्रमण किया किन्तु वह मेवाड़ी बीर प्रथमही सचेत था; इसलिये उसने हरावल का छापा सम्हाल कर तिरछा रुख देकर ऐसे जोर से धावा मारा कि चालुक्क सेना के छक्के छूट गए। इधर से पृथ्वीराज के सामन्तों ने भी मार का सिलसिला जारी कर दिया, और जब दिनभर घनघोर युद्ध होते होते भीमदेव के १० बड़े सेनानायक भी मारे जा चुके पर तौभी भीमदेव ने हिम्मत न हारी; तब आधी घड़ी दिन रहते हुसैनखां ने प्राणों का मोह छोड़कर आक्रमण किया और पृथ्वीराज के सूर्य्यरूपी प्रखर प्रताप से हुसैनखां ने चालुक (सोलंकी) सेना को परास्त करके मार भगाया।

भीमदेव तो हार मानकर गुजरात की तरफ चलदिया परन्तु पृथ्वीराज चित्रकूटगढ़ में न जाकर बराबर अपने शिविर में ही डटा रहा। दूसरे दिन, रात्रि को स्वप्न में क्या देखता है कि उसकी कीर्ति दिव्य रूप धारण किए हुए उत्तमोत्तम वस्त्र आभूषणों से सुसज्जित उसके पास आई और बोली कि क्षत्रियों में श्रेष्ठ पृथ्वीराज! मैं तेरी दिगदिगन्तर व्यापिनी उज्ज्वल कीर्तिदेवी हूं और तुझपर प्रसन्न होकर तुझे दर्शन देने आई हूं। इतना कहकर कीर्ति देवी तो अन्तर्ध्यान होगई किन्तु राजा की निद्रा उसी समय भंग हो गई तब राजा ने गुरुराम को बुलाकर उक्त कीर्ति के दर्शन का वृत्तान्त कह कर उसका कारण पूछा? गुरुराम ने कहा कि हे राजन् यह स्वप्न भोलाराय भीमदेव के पराजय का स्वरूप था। इसके पश्चात् पृथ्वीराज पुनः निद्रादेवी की सुखमय गोद मे शीश रखकर सोने लगा। रात्रि के पिछले पहर में जब कि पृथ्वीराज के शिविर में सिवाय पहरेदार सिपाहियों के और कोई भी नहीं जागता था भोलाराय भीमदेव ने ५००० शूरबीरों सहित पृथ्वीराज के निज शिविर पर सहसा आक्रमण कर दिया। इस अकस्मात घटना से सब सेना में कूह मच उठी जो जहां सोते जागते नंगे उघारे पड़े थे जिसे जो हथियार मिला लेकर दौड़ पड़े और भीमदेव के आक्रमण को रोकने में तत्पर हुए। इस रात्रि की लड़ाई में पृथ्वीराज की तरफ के रूपधन प्रमार (जैतप्रमार का छोटा भाई) किल्ह और सिंध मामक उसका हजूरी, बीर बागरी, जैसिंह, मोरी रक्खीसिंह, खेजबान इत्यादि नामी नामी सर्दार काम आए। दोनों

* नवम समय में बर्णन किए हुए शहाबुद्दीन के भाई चित्ररेखा के प्रेमपात्र मीरहुसैन का पुत्र 'हुसैनखां।' दसवां समय देखो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेना के १५०० वीर सिपाही खेत रहे। भीमदेव का नामी सेनापति मेरपहाड़ इस युद्ध में काम आया। यह रात्रि का युद्ध कृष्ण १० को हुआ था। चन्द्रमा निकलते निकलते उस दिन का युद्ध बन्द होगया।

दूसरे दिन प्रातःकाल से पुनः लोहा झड़ना आरम्भ हुआ। उधर से चालुक्य इधर से पृथ्वीराज दोनों ओर के शूर वीर दिल तोड़कर एक दूसरे को प्रचार प्रचार कर मारने लगे। दो घड़ी में समस्त रण भूमि रक्त से परिपूर्ण होगई। जहां तहां पड़े हुए मनुष्य और पशुओं के शव उस रक्त सागर में जल जन्तु से तैरते भान होते थे। कहीं कहीं मांसाहारी पशु रक्त मांस पान करने में मस्त थे। कहीं जम्बुक गृद्धादि एक एक लोथड़े पर लड़ कर मरे जाते थे। उस समय बीर लोग आनन्द के मारे फूले नहीं समाते, परंतु कायर और क्लीव जहां तहां भागे जाते थे। निदान इस प्रकार लत्थपत्थ युद्ध होते हुए दो प्रहर दिन व्यतीत होगया और भीमदेव की तरफ ५००० सपूत सैनिक खेत रहे। तब भीमदेव भाग उठा। कुछ सेना तो पहिलेही खप चुकी थी। शेष इस भाग भगोड़ में पृथ्वीराज के क्रुद्ध योधाओं की शिकार बनी। तात्पर्य्य यह कि गुजरात तक भीमदेव के ३०००० सिपाहियों में से तीस भी साथ न पहुंचे।

इस प्रकार भीमदेव को भगाकर पृथ्वीराज ने रणक्षेत्र में से अपने सैनिकों की लाशें उठवाईं और उनका यथाविधि मृतक संस्कार करवाया। तब वह विजय के बाजे बजाता मेघस्पर्शी रंग विरंगे निशान उड़ाता दिल्ली को आया।

आगे अब पृथ्वीराज के साथ इन्द्रावती के विवाह की कथा वर्णन की जायगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन्द्रावती व्याह।

(तेंतीसवाँ समय।)

पृथ्वीराज के भेजे हुए कविचन्द, चन्दपुंडीर, जैतराव आदिक सामंत जब उज्जैन पहुँचे और भीमदेव से मिलकर उन्होंने पृथ्वीराज के चित्रकूट को चले जाने का समाचार कहा और अपने आने का अभिप्राय भी वर्णन किया तब भीमदेव बहुत बिगड़ा और बोला कि हे चन्दबर्दाई, समान वस्तुओं का ही परस्पर मेल, सम्बन्ध व व्यवहार होता है जो पुरुष ऐसा निष्ठुरहृदय है कि ठीक विवाह का अवसर छोड़ अन्यत्र युद्ध के लिये चला गया और उसने तुम लोगों को मेरे पास भेजा ऐसे पुरुष को मैं अपनी कन्या कदापि न व्याहूंगा। यह सुनकर कविचन्द बोला कि पृथ्वीराज यदि गाढ़े समय पर सगे की सहायता करने को कटिबद्ध हुआ तो क्या बुरा किया! आपके सम्मान और मर्य्यादा के विचार से इन्होंने हम लोगों को तो आपके पास भेज दिया है। तब भीमदेव ने यह पण किया कि जो पृथ्वीराज ५ दिन में न आवेगा तो फिर मैं व्याह न करूंगा, चाहे जो हो।

यह समाचार जब इन्द्रावती के कान तक पहुँचा कि भीमदेव पांच दिन की अवधि टर जाने पश्चात् उस का विवाह फिर पृथ्वीराज के साथ न करेगा तब उसने भी पण किया कि यदि मेरा विवाह होगा तो शहाबुद्दीन को बार बार बंधन और मोच्च करनेवाले पृथ्वीराज से ही होगा अथवा मैं प्राण परित्याग करूंगी। इसी प्रकार इन्द्रावती नाना प्रकार के संकल्प विकल्प करती हुई शोक से अधीर हो उठी। यह देखकर उसकी सखियां उसे सान्त्वना देने के लिये बोलीं कि उस दानव कुल में उत्पन्न पृथ्वीराज के लिये इतना मोह क्यों करती हो। तुम्हारे पिता उससे कहीं सर्वोत्तम रूप गुण सम्पन्न वर ढूंढेंगे और भला कहो तो मृगमद की गन्ध से सुवासित शरीरवाली यदि चन्दन की चाह और चर्चा करे तो हेउ सका तक बुद्धिमान समझा जाय। उनकी ऐसी बातें सुनकर इन्द्रावती बोली कि हम राजकुल उत्पन्न राजकुमारी हैं हमारे दृढ़ विचार कल्पनामात्र असंगत और चणिक नहीं होते।

अवधि बीत जाने पर भी जब पृथ्वीराज की ओर से कोई संदेसा भी न आया तब भीमदेव ने सामन्तों से कहला भेजा कि तुमलोग यहां क्यों पड़े हुए हो, क्या मेरा बल प्रताप तुम्हें नहीं मालूम है। इसके उत्तर में कविचन्द ने अपने साथियों सहित स्वयं भीमदेव के दरबार में जाकर कहा कि श्रीमान्-समय को देखकर कार्य्य करना चाहिए, शास्त्रों में समयानुसार कार्य्य करनेवाले को ही बुद्धिमान कहा गया है। तब भीमदेव पज्जूनराय की तरफ इशारा करके बोला कि तुमने बादशाह को पकड़ लिया बस इसी धुन में फूले नहीं समाते हो और दूसरे को चत्री ही नहीं गिनते। तब तो जैतराव से न रहागया और वह क्रोध से रक्त नेत्रकरके ओष्ठ फड़काता हुआ बोला कि भीमदेव यह क्या कह रहे हो, सम्हल कर बात करो। इस पर भीमदेव ने शान्त स्वभाव से गुरुराम से कहा कि थोड़े से स्वार्थ के लिये परस्पर व्यर्थ विग्रह करना भला कौनसी बुद्धिमत्ता है। तब गुरुराम बोले कि सुग्रीव और रामचन्द्रजी की मित्रता, बलि और रावण का बध इत्यादि ऐतिहासिक घटनाओं का कारण एक मात्र स्त्री ही है। यह सुन कर भीमदेव चिढ़कर बोला कि तुम तो निरे ब्राह्मण ही हो, आशीर्वाद देना और पुस्तक पढ़ना जानते हो। इन राजनैतिक विषयों को क्या जानो। तब कविचन्द बोला कि हे राजन् कंस और शिशुपाल का वध, रुक्मकेश का बन्धन एक मात्र रुक्मिणी के कारण हुआ। यह क्या संसार में कोई भी प्राणी ऐसा नहीं है जो प्राणप्यारी प्रिया के प्रेम के लिये प्राण का परित्याग करने में पीछे पड़े। निदान भीमदेव ने बात बढ़ती देखकर उन्हें तो युक्तिपूर्व्वक बिदा किया और मंत्री को बुलाकर पूछा कि अब क्या करना चाहिए? अस्तु मंत्री ने भी यही बचन कहा कि इस व्याह का कर देना ही कल्याणकर है; परन्तु भीमदेव के मन में यह बात न आई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर सामन्त लोग विचारने लगे कि यदि हमलोग परस्पर विग्रह न करके चले भी जांय, तौभी पृथ्वीराज कब मानने वाले हैं। निदान रघुवंस राम ने कहा किं एक दिन ऐसे भी मरना वैसे भी मरना, फिर ऐसा सुअवसर कठिनता से मिलता है इसलिये और सब सोच विचार छोड़कर इस समय बल से ही कार्य्य लेना ठीक है। यह सलाह पक्की होजाने पर प्रातःकाल होतेही सामन्तों ने उज्जैनगढ़ के द्वार द्वार पर मोरचेबन्दी कर ली। क्षणमात्र में सारे उज्जैन नगर में कूह मचगई। जब यह समाचार भीमदेव तक पहुँचा तो वह भी अपनी चतुरंगिनी सेना सजकर आ पहुँचा। निदान इधर से रघुवंश राम तो नाकेबंदी की देख भाल पर रहा, पज्जूनराय ने उज्जैन के हरावल पर हमला किया और जैतराव स्वयं भीमदेव से युद्ध करने लगा। दोनों ओर से खूब लोहा झड़ा परन्तु सायंकाल तक किसी की हार जीत न हुई; इसलिये दूसरे दिन फिर लड़ाई ठनी और दोपहर तक बराबर खचाखच तलवार चलती रही। दोपहर तक लड़ते लड़ते सामन्तों ने भीमदेव को घेरकर बेदाग पकड़ लिया और युद्धाग्नि शान्त हुई। निदान कविचन्द ने भीमदेव को बहुत कुछ समझा बुझाकर इन्द्रावती का व्याह पृथ्वीराज से करदेना स्वीकार कराके उसे छोड़ दिया।

तब तो भीमदेव की भी आँखें खुल गईं। उसने पिछली सब बातें भुला कर सैन सहित सामंतों का आतिथ्य स्वीकार किया और चहुआन के घायलों को भी बड़े आदर से रख कर उनकी दवा दारू का प्रबन्ध करा दिया।

इधर उज्जैन नगर में घर घर इन्द्रावती के विवाह का उत्सव होने लगा, उधर सामन्तों ने इस बात की सूचना देने के लिये पृथ्वीराज को पत्र लिख भेजा। विवाह की तिथि आ जाने पर सोलहो शृंगार बारहो आभूषणों से सुसज्जित सुन्दरी इन्द्रावती सखियों सहित शुभ स्थान सूचक नव पल्लवाच्छादित विवाह मंडप में लाई गई। वेदपाठी ब्राह्मणों ने वेद मंत्रों का उच्चारण करते हुए पृथ्वीराज के खड्ग के साथ इन्द्रावती का गठबंधन कर दिया। और उसी खड्ग के साथ विधिवत भांवरी पड़ी। भीमदेव ने भांवरी के समय १०० हाथी, एक हजार घोड़े, सौ पीनसें और बहुत से दास दासी दान किए।

इस प्रकार विवाह के नेगचार समाप्त हो जाने पर जब इन्द्रावती दिल्ली को बिदा होने लगी तब उसकी माता ने कहा कि हे पुत्री, स्त्रियों का मुख्य धर्म पति की सेवा करना ही है, उसकी इच्छा तथा आज्ञा के विरुद्ध कोई भी कार्य न करे। स्त्री का पति के जीवन से जीवन, पति की मृत्यु से मृत्यु होती है।

इस प्रकार सब सामंत लोग पृथ्वीराज के न होते भी उज्जैनपति भीमदेव को युद्ध में परास्त करके और इन्द्रावती को विवाह कर गाजे बाजे से विजय के निशान उड़ाते दिल्ली की तरफ़ चले। जब दिल्ली से आठ कोस इधर रह गए तब उन्होंने अपने आने का समाचार भेजा। निदान उधर से लोहाना ने आकर अगवानी की और तब सबने सानन्द नगर में प्रवेश किया। शुभ लग्न आने पर दुलहिन ने भी राजमहल में प्रवेश किया। राजमहल का दक्षिण भाग इन्द्रावती के रहने के लिये दिया गया और १०० दासियां उसकी सेवा में नियत की गईं।

सुहाग रात्रि की रात को, इन्द्रावती का निवासस्थान भीमदेव के दिए हुए नाना प्रकार के नवीन नवीन साज बाजों से सुसज्जित करके सजाया गया। जहां तहां मृगमद, अगर, अरगजा, केसर, कुंकुम आदि के गंध से समस्त महल महक रहा था। उस आनन्द आगार में स्वर्ण सिंहासन पर बैठा हुआ पृथ्वीराज इन्द्रावती की प्रतीक्षा कर रहा था। तब तक सहेलियों में मिली हुई इन्द्रावती भी आगई और कामातुर पृथ्वीराज ने अधीर हो कर उसे तुरंत ही अपने हिए का हार बना लिया। यह चरित्र देख कर आड़ में से देखती हुई अन्यान्य रानियां हँस पड़ीं और किलक कर तालियां देने लगीं। निदान उस रात्रि को उस सुहाग स्थान में शृंगार, हास्य, करुणा, रौद्र, वीर, भयानक, वभित्स और अद्भुत शान्ति नवो रसों ने वारी वारी प्रवेश किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैतराव युद्ध ।

[चौतीसवां समय ।]

इन्द्रावती को व्याहने पश्चात, पृथ्वीराज ढाई वर्ष पर्य्यन्त निश्चित भाव से दिल्ली की राजश्री का भोग और राज्य का निरीक्षण परीक्षण करता रहा। उसके अनन्तर एक दिन पृथ्वीराज ने आज्ञा दी कि शिकारी सामान तय्यार किया जाय और षट्टू बन में भी सब प्रकार बन्दोवस्त मुनासिब होजाय। इधर जबतक यह सब तय्यारियाँ होने लगीं तब तक नीतराव कुतवाल ने उक्त समाचार की सूचना शहाबुद्दीन के पास भेज दी। जब यहां सब साज समाज तैय्यार होगया तब पृथ्वीराज ७ चीते, १२० कुत्ते, ४२ श्रीघोस, १०० मृग और और भी नाना प्रकार के शिकारी जानवरों और कुही जुर्रा बाज इत्यादि बहुतसी शिकारी चिड़ियों को लिवाकर सब सामन्तों सहित षट्टूबन की तरफ़ चला। षट्टू बन में जाकर पृथ्वीराज ने डेरा डाला ही था कि शहाबुद्दीन का भेजा हुआ दूत राजा के शिविर के द्वार पर आ उपस्थित हुआ। पृथ्वीराज की आज्ञानुसार उस दूत ने राजसभा में जाकर शहाबुद्दीन का दिया हुआ एक पत्र पेश किया और कहा कि शहाबुद्दीन ने कहा है कि समस्त पंजाब देश और हमारा अपराधी हुसैनखां हमको दे दिया जाय अन्यथा अच्छा न होगा। अतएव तदनुसार मैं भी अर्ज़ करता हूं कि शहाबुद्दीन का कहना मानकर आप उससे मेल करलें, इसीमें भला है, क्योंकि समय की गति कोई जानता नहीं, आगे पीछे न जाने क्या हो। उस दूत के ऐसे वचन सुनकर पृथ्वीराज का क्रोध से मुख लाल होगया। वह बोला कि रे मूर्ख बसीठ! रे शठ!! तू नहीं जानता कि अबतक कौन जीता और कौन हारा। क्या इस पर भी हम शहाबुद्दीन ऐसे अधम मनुष्य से डरें। वह तो मनुष्यही है। एक बार साक्षात् यम भी क्यों न साम्हने आजाय किन्तु हम (क्षत्री लोग) राज्यसुख की लालसा से कर्तव्य का त्याग न करेंगे। भला तू विचार भी तो कर कि कहां गजनी और कहां दिल्ली और मैंने कितनी वार उसे कैद कर कर के सहजही जाने दिया। निदान इसका कुछ भी उत्तर न देकर वह दूत चुपके चला गया और यथातथ्य समाचार शहाबुद्दीन के सम्मुख उसने कह सुनाया।

दूत का कहा हुआ समाचार सुनकर, शहाबुद्दीन ने क्रुद्ध हो युद्ध के लिये तय्यारी बोल दी और असंख्य यवन दल सहित वह दिल्ली की तरफ़ आने लगा। जब शहाबुद्दीन सिन्ध नदी तक आगया और यह समाचार पृथ्वीराज को मिला तो उसने भी इधर से अपनी राजपूत सैना तय्यार कर के शहाबुद्दीन से आगे चलकर मिलने के लिये कूच किया। मुसल्मानों से युद्ध करने के लिये जाते हुए राजपूत उत्साह के मारे फूले अंग न समाते थे। साथही उसके जो कहीं कोई कपूत कायर थे उनके सहजही प्राण सूखे जाते थे। इसी प्रकार उधर से मुसल्मान सेना भी ढाई वर्ष का अवकाश पाकर फिर से निर्लज्ज कदलीवृक्ष की तरह लहलहा उठी थी, तिस पर शहाबुद्दीन दिनप्रति पड़ाव से कूच करते समय नाना प्रकार की उत्कर्षजनक वक्तृताएं देता हुआ सिपाहियों को उत्साहित किया करता था। उसे बात बात में पृथ्वीराज को पकड़ लेने की ही धुन सवार थी। निदान जब दोनों सेनाएँ एक दूसरे के साह्मने आगईं तब शहाबुद्दीन की तरफ़ से जमशेरख़ां और नवरोज़खां सेनानायक बनाए गए। इधर से जैतराव प्रमार सेनानायक हुआ। जैतराव की आज्ञानुसार राजपूत सेना भी सन्नद्ध होकर श्रेणीवद्ध खड़ी हो गई। धौंसें की धुंकार तुरही की पुकार से दिशाएँ गूंज उठीं। उस समय युद्ध के लिये उपस्थित दोनों सेनाओं में बजते हुए रणवाद्यों को सुनकर कपूत कायरों के कलेजे काँपते थे। घोड़े, हाथी, ऊंट जहां तहां तड़फड़ाते हुए आगे बढ़ने को उत्साह दिखाते थे। निदान सेनानायकों की आज्ञा पाते ही दोनों सेनाएँ शौर्य्य के वेग से भरी हुई यह इधर से और वह उधर से एक दूसरे पर टूट पड़ीं। झनाझन तलवार झड़ी, रुधिर की धारा चलने और लोथ पर लोथ पड़ने लगी। इस प्रकार घोर घमासान युद्ध

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होते होते तीसरे पहर पर शहाबुद्दीन ने "साम्हने का दबाव देकर" बांई तरफ से स्वयं पृथ्वीराज पर आक्रमण किया। परन्तु पृथ्वीराज की तेज तलवार के साम्हने डँटने की हिम्मत न पड़ी और अन्त को आँख मीच कर उसे स्वयं हटना पड़ा। युद्ध होते होते सायंकाल होगया परन्तु हार जीत किसी की न हुई। शहाबुद्दीन की तरफ के मारुफ़ ख़ां और उस्मान ख़ां लोहाना आजान बाहु के हाथ से और पृथ्वीराज की तरफ़ के वरसिंह और सांखलासूर दो नामी सर्दार पंचत्व को प्राप्त हुए।

युद्ध श्रम से श्रान्त दोनों सेनाओं ने रात्रिभर विश्राम करने पश्चात् दूसरे दिन सवेरे से फिर कमरें कसीं और अरुणोदय होते दोनों दल रणक्षेत्र में जा जमे। बाल सूर्य्य की कोमल किरणों की प्रभा से विद्युत समान चमचमाते हुए अस्त्र शस्त्रों को चमकाते हुए वेएक दूसरे को मारने लगे। जिस रणक्षेत्र में रात्रिभर गीदड़ गीध आदि पशुओं ने खमच मचा रक्खा था उसी भूमि में फिर से ताजे रक्त के फ़ौआरे छूटने तथा मनुष्य और हाथी घोड़ों की खोपड़ियों के फूटने का शब्द होने लगा। अन्त में चहुआन सेना ने ऐसा जोर पकड़ा कि मुसल्मानों की हिम्मत हारने लगी। ऐसेही समय में अवसर देख कर जैतराव ने शहाबुद्दीन को जाकर घेर लिया और स्वयं अपनी तलवार के वार से शहाबुद्दीन के हाथी का जबरदस्त तंग काट दिया। तंग के कटते ही हाथी तो भाग उठा और शहाबुद्दीन हौदे सहित भहराकर पृथ्वी पर आ गिरा। बस फिर क्या था। जैतराव ने स्वयं मुस्कराते हुए जाकर शहाबुद्दीन का हाथ थाम लिया और कैदी की भांति लाकर उसे पृथ्वीराज के सम्मुख प्रस्तुत किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कांगुरा युद्ध प्रस्ताव।

(पैंतीसवां समय।)

एक समय जालंधरी रानी ने पृथ्वीराज से कहा कि आपने कांगड़े के भोटी राजा को परास्त करके वह किला मेरे लिये खाली करा देने के लिये कहा था सो कृपा कर अब वह बचन पूरा कीजिए। इसके दूसरे ही दिन इधर तो फौजी तय्यारी होने लगी उधर कांगुर को एक दूत यह कह कर भेजा गया कि भोटी राजा भान या तो शरण में आकर सेवा स्वीकार करे अथवा युद्ध के लिये सन्नद्ध हो जाय।

पृथ्वीराज के भेजे हुए दूत को भोटी राजा भान ने यह कह कर उलटा फेर दिया कि मुझे उससे युद्ध करने में कोई भय नहीं है। जब उसकी इच्छा हो चला आवे। पृथ्वीराज दूत के ऐसे वचन सुन कर मारे क्रोध के लाल हो उठा। उसने उसी समय कांगुरा गढ़ पर आक्रमण करने के लिये कूच कर दिया। उधर भान देव पहिले ही से रास्ता रोके हुए पड़ा हुआ था। इस लिये रास्ते ही में दोनों सेनाओं का साम्हना हो गया, जिसमें पांच पहर पर्यन्त घोर युद्ध होने के पश्चात् भीमदेव को परास्त हो कर भागना पड़ा। हारी हुई सेना सहित आगे आगे भोटी राजा भागता जाता था और पीछे पीछे पृथ्वीराज की सेना बढ़ती जाती थी। भीमराय भोटी पहाड़ी जंगलों में हिलबिलान हो कर कांगुरे के सुरक्षित किले में जा छिपा। परन्तु पृथ्वीराज ने अपनी सेना का पड़ाव जंगलों के बाहर ही रक्खा। इस स्थान पर एक चोट और हुई जिसमें दिन भर काट मार होती रही किन्तु परिणाम फिर भी वही हुआ।

कांगुरे के दुर्ग में जाकर भोटी राज ने नाना प्रकार से देवी की पूजा करके पृथ्वीराज के साथ जय पाने का बरदान चाहा किन्तु देवी ने यही उत्तर दिया कि मैं तेरी रक्षा करूंगी परन्तु होन हार को सर्वथा मेटना मेरी शक्ति के बाहर है। उसी रात्रि को भोटी राज ने स्वप्न में देखा कि पृथ्वीराज ने एक बड़ी भारी सेना सहित उसको घेर लिया है। इस स्वप्न से घबड़ा कर उसने अपने मंत्री कन्ह को बुलाकर उसे स्वप्न का हाल सुना कर कहा कि इस स्वप्न से मेरा चित्त तो अत्यन्त व्याकुल हो रहा है इस लिये अब तुम जो कुछ उचित जानो सो करो। इस पर भोटी राज के मंत्री कन्ह ने बड़ी बीरता से उत्तर दिया कि मेरे रहते आप कोई चिन्ता न करें। इस प्रकार कह कर कन्ह गढ़ की रक्षा का उचित प्रबन्ध करने लगा।

इधर पृथ्वीराज के सब सामन्तों ने परस्पर मिल कर यह मंत्र निश्चय किया कि आधी सेना सहित पृथ्वीराज तो उसी स्थान पर खेमाजन रहें और रघुवंसराय प्रमार और हाहुलीराय हमीर जो कि पहाड़ी युद्ध विद्या में विशारद हैं आधी सेना सहित गढ़ कांगुरे पर पर अक्रमण करें। इस प्रकार मन्तव्य निश्चय हो जाने पर हाहुलीराय हम्मीर केवल पैदल सेना लेकर दुर्गम पहाड़ी मार्ग पर से हो कर कांगुरे दुर्ग की तरफ़ बढ़ने लगा। जिस समय हाहुलीराय हम्मीर क़िले पर आक्रमण करने को था उसी समय * हुसेन खा कुछ घुड़चढ़ी सेना लेकर सहायता के लिये जा पहुंचा। रास्ता साफ़ हो ही चुका था इस लिये नारेन और नीतिराव कुटवार दो बीर और भी कुछ घुड़सवारों सहित जा पहुंचे। इस तरह धीरे धीरे पृथ्वीराज की एक बड़ी भारी सेना एकत्रित हो गई। तब पैदल सेना की बाग रामरेन प्रमार ने अपने हाथ में ली और दो तरफ से किले पर इस प्रकार रणचातुर्य्य से आक्रमण किया कि गढ़ रक्षक सैनिक इनकी वार को जरा भी न सह सके जो जहां थे सब तीन तेरह होकर भाग निकले और किले के ऊपर रामरेन ने पृथ्वीराज के नाम का निशान रोप दिया।

इस प्रकार गढ़ पर विजय प्राप्त करके सब सामन्तों के मतानुसार कुछ फौज सहित रामरेन

* मीर हुसेन का लड़का।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रमार गढ़ रक्षा पर रहा बाकी कुछ लोग पृथ्वीराज के पास विजय की बधाई का समाचार देने आए। उसी समय भोटी राज भीम ने भी अपना एक दूत पृथ्वीराज के पास भेजकर कहला भेजा कि अब मैं सब प्रकार से श्रीमान् की सेवा करने को तैय्यार हूं साथ ही इसके मेरी इतनी इच्छा है कि आप मेरी पुत्री का पाणिग्रहण स्वीकार कीजिए। भोटी राज का ऐसा संदेसा पाकर पृथ्वीराज शीघ्र ही अपनी सब सेना सहित कांगुरे गढ़ में जा पहुंचे। और भोटी राज की कन्या के साथ व्याह करके नव दुलहिन सहित विजय के बाद्य बजाते हुए दिल्ली को चले आए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हँसावती नाम प्रस्ताव ।

[छत्तीसवां समय ।]

एक तो स्वदेशी शत्रु कन्नौजराज जैचन्द ही सदैव पृथ्वीराज के ग्रास करने की चिन्ता और चेष्टा में दत्तचित्त रहता था, दूसरे विदेशी शत्रु शहाबुद्दीन के अनायास आक्रमण की आशङ्का भी रहा करती थी। इस लिये पृथ्वीराज ने दिल्ली से कूच कर के शिकार के बहाने पट्टूपुर के जंगल में डेरा जा डाला।

उस समय रणथंभ के किले में यादववंशी राजा भान और चन्देरी में शिशुपालवंशी राजा पञ्चाइन राज्य करते थे। राजा भान की हंसावती नाम एक बेटी थी जोकि उस समय पृथ्वीतल पर अद्वितीय सुन्दरी और स्त्रियोचित सब गुणों से सम्पन्न साक्षात् रतिरानी का अवतार मानने योग्य थी। उस सुकुमारी कुमारी की नागिन के समान वेणी, विद्युतप्रभावत् दन्तद्युति, पंकज पांखुरी के समाम नेत्र, अष्टमी के अर्द्धचन्द्र के समान उज्वल ललाट, दीपशिखा सी नासिका, एवं रोम राजि, अमृत कुण्ड के समान नाभि स्थल, सिंह की सी क्षीण कमर, कन्दलीखंभ के समान सुढार जंघा, गज के समान चाल, सरसिज समूह के समान सुवासित स्वेद गंध और पूर्ण शशि के समान मुख कान्ति देखने वाले चतुरों के चित्त को सहज बेहाल करती थी।

चन्देरीपति शिशुपाल वंशी राजा पंचाइन हंसावती के सौन्दर्य की चर्चा सुन कर उस पर जी जान से मोहित हो गया। इस लिये उसने हंसावती के पिता राजा भानराय को एक पत्र लिखकर, दूत के द्वारा कहला भेजा कि हंसावती का व्याह मेरे साथ कर दो और किला भी छोड़ दो। यह समाचार पाकर भानुराय गुस्से के मारे लाला हो गया। उसने उसी समय अपने सगे सरदारों से सलाह करके दूत को उत्तर दिया कि मेरे तन पिंजर में प्राण पखेरू के रहते चन्देरी पति का ऐसा साहस करना वृथा है। रणथंभ के रणक्षेत्र में मर कर मुझे अलभ्य मोक्ष मार्ग की यात्रा करना स्वीकार है परन्तु चन्देरीपति का प्रस्ताव स्वीकार नहीं है। यह सुनकर दूत चलता हुआ और उसने ज्यों का त्यों सब हाल अपने स्वामी से कह सुनाया, जिसे सुनते ही वह क्रोध और कामना की ज्वाला से ज्वलित होकर मदान्ध हाथी की तरह अधीर हो उठा। उसने उसी समय अपनी समस्त चतुरंगिणी सेना सजकर हंसावती को बरबस व्याह लेने की इच्छा से रणथंभ की तरफ कूच किया और उधर एक पत्र शहाबुद्दीन की सेना में इस अभिप्राय से भेजा कि रणथंभ के विजय करने में वह भी उसे सहायता दे।

राजा पंचाइन ने एक दूत और भी भानराय के पास भेजा जिसने आकर भानुराय से कहा कि संसार में जितने बड़े बड़े सामाजिक विग्रह हुए हैं वे सब स्त्री के ही कारण हुए हैं और आज इसी कारणवश चन्देरीपति आप पर आक्रमण करने आया है। संसार में धर्म कर्म सब कुछ इस जीवन की रक्षा के लिये किया जाता है। सुर नर नाग असुर गन्धर्व आदि सब जीवन रक्षा के लिये यत्न करते हैं। फिर आप क्यों वृथा जरा सी बात के लिये मरने मारने पर उतारू हैं। इस पर राजा भान ने फिर भी वैसा ही कड़ाचूर उत्तर दिया और अपनी सेना में जंगी तय्यारी होने का हुक्म दिया। निदान दूत फिर भी उलटा फिर गया और तीस कोस चल कर राजा पंचाइन के पास पहुँच कर उसने सब हाल कह सुनाया। तब तक उधर शहाबुद्दीन के भेजे हुए शाह का धा-भाई उजबक खां, साहब खां तुर्की, नूरी हुजाब, केली खां कुलाह आदि यवन सरदार एक अच्छी रणकुशल सेना लिए हुए पंचाइन की सहायता के लिये आपहुंचे।

जब यह समाचार भानराय के पास पहुंचा तो उसने इस युक्त सेना को अजेय और प्रबल जान कर स्वयं भी पृथ्वीराज का सहारा लेना चाहा। बस उसने फौरन दिल्ली को एक दूत रवाना कर के लिख भेजा कि पचास हजार सेना के साथ चन्देरीपति ने रणथंभ को धूलिधूसित करने के लिये आक्रमण किया है। अस्तु इस गाढ़े समय पर मुझे आपही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का आसरा है। यह पत्र पाकर पृथ्वीराज ने फौरन रणथंभ की तरफ कूच कर दिया और इधर काका कन्हं को रावल जी के पास भेजा। कन्ह ने चित्तौर में जाकर रावल समरसिंह जी से सब हाल कह सुनाया और यथासंभव शीघ्रही रणथंभ की रक्षा करने की प्रार्थना की जिसे रावल जी ने स्वीकार कर लिया और कहा कि तुम चलो हम पृथ्वीराज से पहिले ही वहां आ पहुंचते हैं। यहां से रणथंभ ६५ कोस का मार्ग कुछ अधिक नहीं है। इस पर कन्ह ने कहा कि पृथ्वीराज १३ को चल चुके। रणथंभपति भानराय पर बड़ी विपत्ति पड़ी है। फिर आगे आप जानें? कन्ह के ऐसे बचन सुन कर रावल जी ने सगर्व प्रत्युत्तर दिया कि हे कन्ह हम वप्पावंशी लोगों की जबान नहीं टलती। क्षत्रियों का यही धर्म है कि संग्राम की सूचना पाकर हर्षित होना, शरणागत की रक्षा करना, वेद धर्म से विहित बचन न बोलना, और सुकीर्ति के लिये सर्वस्व आहुति कर देना। निदान यह कह कर कि तेरस के दिन डंका बजेगा कन्ह तो रवाना हुआ, इधर रावल जी ने जंगी फौज के सजे जाने की आज्ञा दी। दसमी सोमवार के दिन पांच घड़ी दिन चढ़े शुभ मुहूर्त में रावल समरसिंह जी ने रणथंभ की तरफ यात्रा की। जिस समय रावल जी की सेना चलती थी तो आकाश में आच्छादित धूलि के मारे सूर्य्य नहीं देख पड़ता था। लालिमामय कोमल किरणों की आभा से उज्वल अस्त्र शस्त्र चंचला से चमचमाते थे। ढोल धौंसा आदि के गंभीर गड़ गड़ शब्द से पावस के बद्दर की गर्जना का भाव भासित होता था, बीच बीच में नफेरी, वीणा, सहनाई आदि उच्चस्वर वाद्यों की ध्वनि पावस के पक्षी सी बोलती जान पड़ती थी। जहां तहां रंग बिरंगी उत्तंग ध्वजाएं फहराती हुई ऐसी जान पड़ती थीं मानों सैनिक ओज उड़ कर आकाश को स्पर्श करने की च्येष्टा कर रहा हो। इस प्रकार पावस के समान ओजमान रण कुशल सेना को लिये रावल समरसिंह जी रणथंभ जा पहुंचे। वहां किले के बाएँ तरफ तो पृथ्वीराज के डेरे पड़े थे और दाहिने तरफ रावल समरसिंह जी के शिविर स्थापित हुए।

एक तरफ से रावल समरसिंह जी की सेना व्यूह बद्ध हुई दूसरी तरफ से चंदेरीपति पंचाइन की और दोनों किले के मैदान में एक दूसरे से जुट पड़े। दोनों सेनाएँ एक दूसरे पर इस प्रकार से टूटीं जैसे क्षुधित सिंह मृगसमूह पर टूटता है। दोनों सेनाओं के वीर योद्धा अपने अपने प्रतिपक्षियों पर प्रचार प्रचार कर वार करते और मरने से जरा नहीं डरते थे। यदि एक दूसरे पर तलवार का वार करता तो वह उसके कलेजे में सेल पेल देता। कोई किसी के पंजर में खंजर खोंसता तो दूसरा उसके पेट को कटार से विदारता। इस प्रकार मारामार होते होते वह साधारण भूमि रक्त से भर गई। जहां तहां रुंड फड़फड़ाते और मुंड भडभड़ाते नजर आने लगे, बड़े बड़े हाथियों के जो शिथिल होकर मृत प्रायः पड़े थे घावों से बहते हुए रुधिर के पनारे पावस के पहाड़ी झरने से भासित होते थे। योगिनी और वीर वेताल रुधिर मांस मज्जा को पान कर आनन्द में उन्मत्त हो कर गान करते थे और घायलों के प्यास की चटक से गले घुटे मरते थे।

निदान इसी प्रकार युद्ध होते होते एक तरफ से चन्देरी पति पंचाइन और दूसरी तरफ से रूस्तमखां ने रावल जी को बीच में दे कर घेर लिया तब तक पृथ्वराज ने अपने निज सामन्तों सहित आकर शत्रु दल को छिन्न भिन्न कर दिया। उधर किले से राजा भान भी आ पहुंचा और तब तीनों सेनाओं ने एकत्रित व्यूहबद्ध हो कर युद्ध आरम्भ किया। राजा पृथ्वीराज हरावल में, राजा भान बाएँ और रावल जी दाहिने पक्ष पर थे। पृथ्वीराज को हरावल में देख कर वीर पंचाइन और उसके सहकारी यवन सरदारों ने बड़े बेग से तेगा चलाते हुए धावा किया। परन्तु इधर से सामन्तों ने भी अच्छे हाथ किए। ये लोग जिस मीर बन्दे की खोपड़ी पर हाथ मारते थे वह मय टोप और जिरहबख्तर खीरे की तरह चिर कर दो हो जाता था, इस युद्ध के अन्त में सोलह सूर वीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चहुआन के, तेरह रावल समरसिंह जी के और पांच हजार सैनिक चंदेरीपति के खेत रहे।

दूसरे दिन प्रातः काल फिर से जंगी निशान उठे। पृथ्वीराज ने अब की बार अपनी सेना को पांच टुकड़ों में विभक्त किया। शत्रु के सम्मुख संग्राम के लिये सुसज्जित सन्नद्ध सामन्त और सैनिक परस्पर कहते थे "भाइयो, यह पंचतत्त्वमय शरीर सदैव रहने का नहीं है। एक न एक दिन मृत्यु होनी अवश्य है और मरने पर प्राकृतिक अंश अपने अपने मूल स्वरूप में लीन हो जायंगे, केवल कीर्ति ही संसार में स्थिर रहती है। इस लिये इस समय शत्रु के सम्मुख शूरता से मरना ही श्रेयस्कर है और जो हम तुम चार आदमी इस समय इकट्ठे हैं फिर भी ऐसे जुड़ेंगे, इस बात की कदापि सम्भावना नहीं। प्यारे भाइयो, इस असार संसार सागर से जीवन रूपी घड़े में कर्तव्यरूपी जल भर कर अखम कीर्ति की बेलि को सींच दो, जिसमें अक्षय आनन्द रूपी मोक्ष फल लग कर सदैव के लिये अपने संतोष का कारण हो।

सुसज्जित पंचअनी सेना के बीच रावल समरसिंह जी इस प्रकार सुशोभि होते थे जैसे सत्ताइस नक्षत्रों के बीच चन्द्रमा। अकाश में अरुण देव की आभा का भास होते ही रावल जी ने आज्ञा देकर समस्त सेना को चक्रव्यूहाकार रच कर शत्रु को चारों ओर से घेरा। यह व्यूह इस क्रम से रचा गया था—प्यादों की कतार के बीच बीच एक एक घुड़सवार, तिसके अग्रभाग में हाथी और बीच में तीरन्दाजों की भरमार थी। शत्रुसेना को चतुर्दिक से घेर कर जब शस्त्रों की वर्षा होने लगी और उमी के बीच बीच में तोमर, तबल, तेगा, तलवार आदि उज्वल शस्त्र भी चमचमा उठे उस समय ऐसी शोभा भासित होती थी मानों पावस ऋतु के तलातल भरे हुए तालाब में सरसिज समूह के ऊपर हंसों के बच्चे नाच रहे हों। सेना नायकों की आज्ञा होते ही सहज स्वभाव क्रोधी सैनिक योद्धा परस्पर भिड़ पड़े। क्षण मात्र में उनके चन्द्रमा की किरण से उज्वल शस्त्र रिपु रक्त से सराबोर हो कर लाल लाल देख पड़ने लगे। इधर तलवार लगने से सर दूर जा खड़कता रुंड फड़फड़ाता हुआ लोटने लगता, उधर गृद्धादि पक्षी और शृगालादि पशु एक एक मांस के लोथरे के लिये झगड़ कर और ही अभिनय दिखाते थे। इसी समय रावल जी के इशारे से राजा भान ने हरावल की अनी पर जोर देकर साम्हने का बल बाँधा। यह देख कर चन्देरी की फौज एक दम हरावल के मौके पर जुट पड़ी। तब तक राजा पृथ्वीराज ने तिरछे रुख से धावा कर के क्रम बद्ध व्यूह को विडार दिया। समरसिंह जी स्वयं चन्देरी की फौज की मार काट करने लगे। समरसिंह जी के भाई अमरसिंह ने चन्देरीपति राजा पंचाइन का साम्हना किया और उसे एक ही हाथ में मार गिराया बस फिर क्या था, उसी दम सब फौज तीन तेरह हो कर भाग उठी और खेत पृथ्वीराज के हाथ रहा। खेत की देख भाल होने पर मीरहुसैन और नरनाह कन्ह अगनित घाओं के कारण क्षत विक्षत शरीर घायल पड़े पाए गए। निदान इन दोनों वीरों को डोलियों में लिवा कर सब सेना सहित पृथ्वीराज पानीपत को गए।

वहां एक रात पृथ्वीराज ने स्वप्न देखा कि एक गजगामिनी, मृगनयनी, चन्द्रवदनी स्त्री जिस की शोभा का समूह साक्षात् बाल सूर्य की किरणों सहित प्रस्फुटित कमल बन की शोभा समूह का तिरस्कार करता था, उसके पास आई। पृथ्वीराज ने उस सुन्दरी के यौवन का आनन्द भी लिया। परन्तु ज्योंही नींद खुली त्योंही न तो वह सुन्दरी थी न वह हास विलास। निदान पृथ्वीराज ने उसी समय अपने सच्चे सखा कविचन्द को बुलाकर सब हाल कह सुनाया जिसे सुन कर कविचन्द ने उत्तर दिया कि वह स्त्री आप की भविष्य प्रिय पत्नी हंसावती है। हे राजन् यदि मेरी बात का आपको विश्वास न हो तो सुनिए मैं उस नव यौवना के सौन्दर्य्य का मानचित्र वर्णन करता हूं। यह कह कर कविचन्द बोला कि वह वयःसन्धि सुन्दरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साक्षात कामदेव की सी कमान है, उसका प्रशस्त ललाट अनंग अगन, भौंह प्रत्यंचा और चक्षु बाण के सामन पैने हैं। उसके सब अंग सुढार यथा-स्थान पीन क्षीण, हंस की सी चाल, गुलाब से गाल और मनोज के मद से भरे हुए उसके मुख मंडल की आभा अरुणोदय के समान लालिमामय है। वह निष्कपट लज्जाशील बाला मधुर मधुर वचन उच्चार कर मानों अमृत के प्याले पिलाती है।

इस प्रकार बातें हो ही रही थीं कि तब तक राजा भान के भेजे हुए प्रोहित के आने का समाचार मिला। निदान प्रोहित भी सभा में बुलाया गया उसने विवाह के लग्न तिथि की सूचना देकर विदा मांगी। तब तक इधर पृथ्वीराज ने शिकार खेलने की इच्छा से बारूबन की तरफ़ कूच किया।

पृथ्वीराज के बारूबन में शिकार खलने की खबर पाकर भीमदेव के पुत्र सारंग ने अपने मंत्रियों से कहा कि इस समय मुझे अपने पितृवैर लेने का अच्छा मौका हाथ आ गया है। उसने कहा कि वैर का बदला लेने के लिये राम ने रावण पर चढ़ाई की, सुग्रीव ने भाईचारे का विचार न करके बालि का बध करवाया, वैर का बदला लेने के लिये इन्द्र दैत्यों पर चढ़ाई किया करता है इत्यादि और क्षत्रियों का तो यह मुख्य धर्म है कि पिता का वैर लेवें। आज हम पृथ्वीराज रूपी सूर्य्य को समय पाकर राहु के समान ग्रास कर अनुपम कीर्ति लाभ कर सकते हैं। भाइयो ! संसार में मनुष्य शरीर पाकर कीर्ति का संपादन करना ही मुख्य कर्तव्य है, कीर्ति के लिये विक्रमादित्य ने देश विदेश पर चढ़ाई की और राजा जगदेव ने अपने हाथों से अपना माथा काट कर देवी को समर्पण किया। अस्तु, इस समय मेरा तो यही विचार है कि या तो पृथ्वीराज को मार कर पिता का बदला लेकर कीर्ति सम्पादन करूं या इसी प्रयत्न में मारा जाऊं। इस पर उसके मत्रियों ने भी हां में हां मिला दी। निदान उसी समय नागोद के पास मंगलगढ़ का हाड़ा राजा मारीचि की भांति कूटचक्र रचने पर पक्का किया गया।

इधर तो मंगलगढ़ में सारंग स्वयं ज्यौनार के लिये भोजन इत्यादि का प्रबन्ध करने लगा। उधर हाड़ा सरदार ने पृथ्वीराज के पास जा कर सविनय निवेदन किया, "आज आप और रावल जी मेरे घर को पवित्र कीजिए। पृथ्वीराज ने उस की प्रार्थना स्वीकार कर ली और रावल जी के सहित वे मंडल गढ़ को चले। ज्योंही नगर के सिवाने पहुंचे कि सिहं के गर्जन करने का भयानक अपशकुन हुआ। इससे रावल जी के दिल में एक प्रकार का खुटका पैदा हो गया। जब सब लोग किले के अन्दर हो गए और जहां तहां सब अपने अपने कांसे पर बैठ कर भोजन करने लगे कि धड़ धड़ चारों तरफ़ से किले के दरवाजे बंद कर दिए गए और प्रत्येक मकान के कोने में जो पांच पांच सिपाही पहलेही से सन्नद्ध रक्खे गए थे, सारंगदेव का इशारा पाते ही धरो मरो पकड़ो का शब्द करते हुए रावल जी और पृथ्वीराज पर चारों तरफ़ से टूट पड़े। यह अनयास द्वंद देख कर ये दोनों वीर भी अपने कतिपय साथियों सहित म्यान से तलवारें निकाल कर खड़े हो गए और संघटित शत्रु दल को काई सा काटने लगे। रावल जी और पृथ्वीराज तो जिस किसी पर वार करते वह ककड़ी सा कट कर दो हो जाता, परन्तु इनके शरीर पर किसी का भी वार इस प्रकार कारगर न होता जैसे मिट्टी के चिकने घड़े पर जल के कण नहीं ठहरते।

इधर ये लोग उद्दंड स्वरूप से आत्मरक्षा में प्रवृत्त थे ही उधर यह समाचार किसी तरह किले के बाहर पड़ी हुई सेना में जा पहुंचा। निदान वहां से रामाराय बड़गुज्जर ने किले पर आक्रमण किया। इधर किले वालों ने उन्हें रोकने के लिये बाणों की वर्षा करनी आरम्भ की, परन्तु वे कर्तव्यनिष्ठ धर्मरत स्वामि-सेवा में प्रवृत्त साहसी सामंत लोग मार काट करते किले की दीवार तक जुमक आए और दीवार के पास हाथी लगा कर पहिले पहल रामराय बड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुज्जर किले के भीतर कूदा, तिसके पीछे एक के बाद दूसरे सूरवीर किले में धस पड़े। किले के भीतर संकीर्ण मैदान में खूब मार मची। दीवार, द्वार, देहरी, छत सर्वत्र लाल लाल लोहू के छींटे नजर आने लगे। जहां तहां खून के कुंड भर गए और रूंड मुंडों के ढेर के ढेर अटे गए। इस युद्ध में पज्जूनराय के पुत्र ने बड़ा पराक्रम दिखलाया। वह वीर पुरुष सहस्त्रों शत्रुओं को काटता हुआ धज्जी धज्जी हो कर कट मरा। इस युद्ध में एक राजा, तीन राव, सोलह रावत और पन्द्रह बड़े बड़े योद्धा काम आए। चालुक सारंगदेव की तरफ के तेरह तुरंत योद्धा खेत रहे। अन्त में रामरेन पँवार ने सारंग देव को और प्रसंगराय खीची ने हम्मीरहाड़ा को पकड़ लिया। निदान उन्हें पृथ्वीराज ने छुड़ा दिया। इसी धर पकड़ के समय मीरहुसैन ने सारंगदेव की बहिन को घेर लिया, यह देख कर रावल जी ने उसे ललकारा और चालुका सुंदरी को अभयदान दिया। इससे सारंगदेव के मन में रावल जी के गौरव की बड़ी ही श्रद्धा हो गई, उसने वह कुमारी रावल जी को विवाह दी और वह भूमि भी रावल जी को देदी। रावल समरसिंह जी ने नवीन सुन्दरी को चौडोल में बिठा कर चित्तौर को भेज दिया।

इधर आधी रात को एक दिन पृथ्वाराज के पास खबर पहुंची कि रणथंभ के किले पर चन्देल राजा ने फिर भी आक्रमण किया है और पश्चिम का मोरचा तोड़ भी लिया है, परन्तु पूर्व के मोरचे ने उसे परास्त किया। गूड़ राय और सत्रसाल दो वीर काम आए। चन्देल पकड़ा गया और राजा भान की जीत हुई।

कुछ दिन के बाद रणथंभ के राजा का कुलप्रोहित भी आ पहुंचा और नारियल, पुष्प, दूब, रोली, अक्षत आदि मांगलीक सामग्री सहित पृथ्वीराज को लग्न का टीका चढ़ा कर चलता हुआ। विवाह की लग्न तिथि भी जब निकट आई तब चहुआन पृथ्वीराज ने हंसावती को ब्याहने के लिये पुनः रणथंभ को जाने की तय्यारी की। सर्वाङ्गसुन्दर, कमल नेत्र, वंकमुच्छ, रमणी मात्र का मन हरण करने वाला, रीति नीति का ज्ञाता, शहाबुद्दीन को बार बार पकड़ कर छोड़ देने वाला, पृथ्वीराज जिस समय रणथंभ में पहुंचा तो वहां नाना प्रकार के गान वाद्य और उत्सव होने लगे। इस अमित आनन्द उल्लास का सुकुमारी हंसावती के हृदय पर कुछ और ही असर पड़ा। वह अपने अद्वितीय पति की झांकी लेने के लिये झरोखे से झांका करती थी। अपनी निज सखी सहेलियों सहित उत्तंग अट्टालिका पर बैठी हुई हंसावती इस प्रकार सुशोभित होती थी जैसे तारों की कांति को कुचल कर कलाधर गिरि के शिखर पर विराज रहा हो। उस मनोजमय मन वारी रतिमूर्ति सुन्दरी के सुढार सरोज ऐसे नेत्र स्वाभाविक लज्जाशीलता और सखियों के कटाक्ष से संकुचित होकर सेनों से ताकते हुए साक्षात् चंचला के चापल्य को चूर्ण करते थे। हंसावती की स्वाभाविक भावमय मंद मंद मुसकान देख कर ऐसा भासित होता था मानो पूर्णबिंब चंद मंडली में चंचला विराजमान हो रही हो। सहजसुन्दर सुन्दरी हंसावती की वह अवस्था थी कि जिसे हम पूर्णतया वयःसन्धि भी नहीं कह सकते, क्योंकि उसके अंगों में शैशव का आभास केवल उतनाही था जितना कि अस्तप्राय दुतिया के चन्द्रमा का उजेला होता है।

जब स्वयंवर का समय निकट उपस्थित हुआ तब सखी सहेलियों ने हंसावती को वस्त्र विहीन कर के उपटन करना आरम्भ किया। उस समय उसके अनंग के रंग से भरे हुए सुकोमल अंग प्रत्यंगों से इस प्रकार शोभा प्रस्फुटित होती जैसे रजनी के अवसान समय जुन्हैया के बूड़ने और सूर्य्य के प्रकाशमान होने से प्रकृति की शोभा होती है। हंसावती के गोरे गोरे गात पर भींग कर लिपटी हुई लटें ऐसी शोभा देती थीं मानों चन्द्रमण्डल पर सर्प चढ़ रहे हों और उन केसर समान सूक्ष्म केशों से बहता हुआ जल ऐसा भासित होता था मानों राहु के भय से चन्द्रमा विष पान करता हो और भूमि उसे कर्षन कर रही हो। इस प्रकार स्नान कराकर जब सखियों ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसे, सीस में सुगंध लगा कर, नवीन वस्त्र पहिनाए तथा सोलहो शृंगार, बारहों आभूषणों से सुसज्जित कर विवाह मंडप में प्रस्तुत किया उस समय उसकी शोभा अकथनीय थी। हंसावली के सँवार हुए केशपास के ऊपर दोहरी मोतियों की लड़ी ऐसी भली मालूम देती थी जैसे दो चन्द्रमाओं ने राहु का ग्रास किया हो। सीस पर नगजटित सीसफूल कालिया के फन पर गोविंद के पद पद्म से ज्ञात होते थे ललित ललाट पर रोली की बिन्दी गंगा जमुना के संगम पर तीर्थराज सी आसीन हुई जान पड़ती थी। उसके अनियारे नैन मीनकेतु के से तीर, लालिमामय गोल गोल कपोल गुलाब कैसे फूल, चिबुक पर स्याम बुन्दा चन्द्रमण्डल पर पग रोप कर अड़ा हुआ राहु सा प्रतीत होता था। उसकी जीभ कमल पुष्प की पांखुरी सी और उसके सुढार कंबुवत कण्ठ की त्रिवली पर काली पोत का छूटा ऐसा मालूम होता था मानों चन्द्रमा का ग्रास छोड़ राहु आसन मार कर बैठा हो। तदुपरान्त हृदय पर रुरती हुई दोहरी मोतियों की लड़ी चन्द्रमण्डल से निकली हुई अमृत की सी धार, उसके युग उरोज शिव से और सूक्ष्म रोमराजि दीपशिखा सी भासित होती थी। क्षुद्र घण्टिका से सुसज्जित उसकी पतली कमर योवन के तौलने की तराजू सी जान पड़ती थी। उसके पीन नितंब आधे तुंबा से, जंघा हाथी की सी सुंड और पिंडुलों मनोज की चारपाई के पाये सी सुशोभित होती थीं। उसकी केसरकलित जावक रलित, एड़ियां कुसुम कैसे फूल और पांवों में पहिने हुए पाजेब वा घूँघरुं से होता हुआ मन्द मन्द शब्द भौंरे की सी गुंजार मालूम होता था। उसकी कोमल कलाई पर नौरत्नी पहुँची ऐसी मालूम होती थी जैसे चन्द्रमण्डल के चतुर्दिक नवग्रह परिक्रमा कर रहे हों। निदान सोलहों श्रृगार, बारहों आभूषणों से सजबज कर जब वह चन्दवदनी मृगलोचनी कोकिलबैनी, गजगामिनी कामिनी सर्वाङ्गसुन्दरी हंसावती सखियों के सहित तरुण तरुलता पल्लवों से आच्छादित विवाहमंडप में आई उस समय ऐसा भान होता था मानों बदरी के बीच एक दम सूर्य्य का प्रकाश हो उठा हो।

नटनागर चहुआन पृथ्वीराज ने मंडप में प्रवेश किया। पृथ्वीराज के शीश पर नवरत्न जटित मुकुट ऐसा सुशोभित होता था जैसे समस्त ग्रहों ने परस्पर का द्वेषभाव छोड़ कर चन्द्र मंडल पर एकत्र आसन आ जमाया हो। पृथ्वीराज आकर पटे पर बैठे ही थे कि सखियां हंसावती को लेकर आईं। जिस समय दोनों आमने साम्हने हुए और दोनों की आखें चार हुईं कि बस दोनों मन ही मन घुल गए। दोनों के लालची लोचन परस्पर के छविसुधा को पीकर इस प्रकार मस्त हो गए जैसे कमलकली के अन्दर मकन्दर को बटोर कर भौंरा स्तम्भित होकर रह जाता है। इधर चहुआन का चित्त हंसावती ने अंचल में बाँध लिया और उधर चहुआन ने हंसावती के मन को मुट्ठी में ले लिया। जो पृथ्वीराज सहस्रों शत्रुओं से अजेय था उसे सुकुमारी कुमारी अबला नामधारी हंसावती ने मनसिज की सुसज्जित सेना स्वरूप निज स्वाभाविक सौन्दर्य्य की सहायता से सहज ही जीत लिया।

इधर तो ये विवाह के सुखसारे हो रहे थे उधर शहाबुद्दीन ने दिल्ली को खाली जान कर सुरतान खां के तहत में एक बड़ी भारी सेना वहां भेजी। जब यह यवन-सेना-समूह दिल्ली के पास आकर ठहरा और यह समाचार सामंतों को मिला तो उधर से केवल साठ सामन्तों ने रात्रि को धावा किया और सुसुप्त शत्रु सेना को मार काट करके एक प्रकार से बिल्कुल बलहीन कर दिया। और जब तक वे लोग धरो पकड़ो कहते कटते मरते अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हुए तबतक ये लोग पुनः किले को लौट आए। दूसरे दिन प्रातःकाल सुरतान खां ने अपनी सेना को अर्द्धचन्द्र व्यूहाकार रच कर किले पर आक्रमण किया। इधर से रावल जी के भाई अमरसिंह जी ने मैदान का मुहासरा लिया। दोनों दलों में खूब लोहा बरसा। दोनों तरफ के बहुत से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूरवीर सिपाही खेत रहे। अन्त में अमर सिंह जी की जीत हुई और यवन सेना भाग निकली। इस लड़ाई में यवन सेना का एक नामी सरदार पीरोज खां खेत रहा और सब एक लाख का रखत बखत सामंतों के हाथ लगा।

ज्योंही यह समाचार पृथ्वीराज तक पहुंचा कि वह स्वाभाविक वीर समस्त प्रस्तुत रसरंग की सामग्रियों से विरक्त सा हो उठा और उसने उसी समय दिल्ली की तय्यारी कर दी, परन्तु जब तक वह*दिल्ली पहुंचे पहुंचे, तब तक सामन्तों ने स्वयं शत्रु का हटा दिया था। पृथ्वीराज ने सब सामंतों को एक एक कर के गले लगाया और कहा "हे मेरे भाइयों, मैं तुम्हारी क्या प्रशंसा करूं और तुम्हें क्या कहूं। यह दिल्ली का राज्य तो सर्वथा तुम्हारे ही बल भरोसे पर है।" पृथ्वीराज ने अमरसिंह जी की भी बड़ी खातिर की और स्वयं अपने हाथ से उनके सिर पर पाग बाँधी।

पृथ्वीराज ने अपने भाँजे, समरसिंह जी के पुत्र (१)कुंभा जी के नाम संभर की जागीर का पट्टा लिखा कर उन्हें अर्पण करना चाहा, परन्तु रावल जी ने उसे यह कह कर फेर दिया कि असुर वंश में अवतीर्ण तुम स्वयं जैसे लालचीचित्त हो वैसे ही औरों को भी विचारते हो। हम अटुट वंशी किसी के साम्हने हाथ फैलाना नहीं जानते, दूसरों को दान देना जानते हैं! इस पर चतुर चहुआन कुछ उत्तर न देकर चुप हो गया।

तदन्तर दिल्लीपति पृथ्वीराज के मुकुटमणि, छत्रछाया स्वरूप रावल समरसिंह जी तो चितौर को चले गए। और पृथ्वीराज चपल नव बधूटी, नवोढ़ा प्रियतमा राजहंसी हंसावती के साथ कामान्ध वृषभ की भांति काम क्रीड़ा में प्रवृत्त हुआ।

प्रथम समागम की रात्रि को जिस समय सखियां हंसावती को शयनागार में ले गई और वह शैय्या के पास पहुंची उस समय उसकी विचित्र ही दशा थी। यद्यपि उठते हुए यौवन का उमंग उसे प्रियतम पृथ्वीराज के गले से लगने के लिये उत्तेजित करता था परन्तु स्त्रियोचित स्वाभाविक लज्जा भी तो मानों उसके पैर पकड़ कर पीछे को खींचती थी। इसी ठेलम ठेल में सखियों ने ढकेल कर उसे पलंग पर पवार दिया और आप किवाड़ देकर द्वार पर से कहकही मार कर हँसने लगीं। उधर नटनागर पृथ्वीराज ने संकुचित प्रिया हंसावती को उछँग में उठा लिया और प्यार से पुलकारता हुआ वह आमोद प्रमोद की बातें कर अभिप्राय सिद्धि की घातें करने लगा। उस समय हंसावती तो कमल कली की भाँति संकुचित होती हुई सी सी कर आहां और ना ना की पुकार करती थी और पृथ्वीराज मदकलित कपोल कामान्ध कुंजर की तरह बेकसक होकर काम कलाओं के कृत्य में दत्तचित्त था। निदान इसी प्रकार ज्यों ज्यों दिन व्यतीत होने लगे त्यों त्यों हंसावती के चित्त में लज्जा का ह्रास और कामेच्छा का प्रकास होने लगा। तमाम दिन तो वह सखियों के साथ इधर उधर की कथा कहानी और पोथी पुराण में बिताती और रात्रि होते ही कंत के हिये का हार हो जाती। पृथ्वीराज और हंसावती का प्रेम यदि पावस में तमाल और बल्लरी की भाँति था तो शरद में शशि और चकोर की भाँति हो गया परन्तु इसके उपरान्त जब शीतकाल आया तब तो वे दोनों परस्पर कस्तूरी और कज्जल की तरह एकमय होकर दिन बिताने लगे।

---

* मूल पुस्तक में इस बात का कुछ भी स्पष्ट लेख नहीं है कि यवन सेना ने किस स्थान पर चढ़ाई की, परन्तु छन्द २१७ के दूसरे चरण "सुनि बरनी सौं रत्त दिन सत छुट्ट यर थान" और छन्द २२० के ५ वें पद "रष्षयो काम रति वाह वे तुम कधे दिल्ली नयर" से यही अर्थ निकलता है। दूसरे दो लड़ाइयां होने पर भी पृथ्वीराज का शामिल होना नहीं बतलाया गया है, न राजा भान का। इससे स्पष्ट है कि सुरतान खां का यह आक्रमण दिल्ली पर था।

(१) तेज सिंह सुत समर सी, तेहि सुत कुंभ नरेस।
संभरि संभरि बार वे दौहित्तो सोमेस ॥
"तब चित्रंग नरेश : दिभ्भह नंष्यो पर पट्टो" ॥२२१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहाड़राय समय।

[छैंतीसवां समय।]

एक दिन कविचंद की स्त्री ने कहा कि हे पति पहाड़ राय तूँअर ने यवन बादशाह शहाबुद्दीन को कब, किस प्रकार और क्योंकर पकड़ा सो कृपा कर सब कथा कहिए?

तब कविचन्द बोला कि संवत् ११४०[१] में चैत्र मास शुक्ल पक्ष की तृतिया के प्रातःकाल की बात है। बसंत ऋतु की शीतल मंद सुगंधित त्रिविध बयार बह रही थी, भाँति भाँति के तरु लता पल्लव और उनमें रंगबिरंगे प्रस्फुटित पुष्प शोभा दे रहे थे। रसालवृक्ष की मंजरियों पर मलिन्द गुंजार करते थे। उसी समय शहाबुद्दीन ने निज महलों से निकल कर सदर दरबार में पदार्पण किया। उधर उसके सब दरबारी लोग आ आ कर यथास्थान आसन पर आसीन होने लगे। निदान शहाबुद्दीन ने अपने मंत्री तत्तार खां और खुरासान खां से कहा कि कहो तो पृथ्वीराज का क्या समाचार है? इस पर तत्तार खां ने उत्तर दिया कि वह सहजोर शत्रु अपने समस्त शूरवीर सामन्तों सहित सकुशल राज्य शासन कर रहा है। यह सुनते ही शहाबुद्दीन बोला कि यथासंभव शीघ्र ही एक सभा की जाय और उस में विचार करके पृथ्वीराज पर आक्रमण करने का उचित मन्तव्य निर्धारित किया जाय। शाह का इस प्रकार हुक्म पाकर तत्तार खां ने उसी समय सेना में समाचार जाहिर कर दिया और दूसरे दिन प्रातःकाल ही सुसज्जित सेना राजद्वार पर एकत्री होने लगी। समस्त सेना के एकत्रित हो जाने पर शहाबुद्दीन भी एक दीर्घकाय हाथी पर सवार होकर पूर्व्व दिशा को यात्रा करने के लिये तय्यार हुआ। उस दल बल के बीच स्वर्ण के आभूषणों से सुसज्जित हाथी पर जवाहिरात जटित वस्त्र और गहने पहिने हुए शहाबुद्दीन ऐसा सुशोभित होता था जैसे समुद्र के बीच मंदराचल पर अचलरूप से सूर्य्य विराजमान हो। सेना के आगे आगे मेघस्पर्शी राते राते निशान वायु वेग से डगमगाते चलते हुए ऐसे सुहाते थे मानो हवा के झोंक से बाधित बड़ी बड़ी दीप शिखाएं हिल रही हों और उनके पीछे पीछे चलते हुए सिपाही उन पर प्रान पवारने वाले पतिंगे तो थे ही।

गजनी से चलकर दस कोस के ऊपर पड़ाव डाल दिया गया और वहां पर खुरासान ख़ां, रुस्तम ख़ां, वाजीद ख़ां, मनसूर सेर हुजाब ख़ां, महमूद ख़ां, कम्मन ख़ां, जम्मन ख़ां, निसुरत्त ख़ां, ममरेज़ ख़ां, रनसिंह, सुलतान ख़ां, मारूफ ख़ां, सुरतान ख़ां, इत्यादि मीरों की मंडली एकत्र करके शहाबुद्दीन ने आगत युद्धप्रबन्ध पर वाद विवाद होकर मुनासिब राय तै की जाने की आज्ञा दी। ज्योंही तत्तार ख़ां शाह का उक्त अभिप्राय कह कर चुप हुआ त्योंही मीर वितंड ख़ां अकड़ता हुआ कड़क कर बोला "जहांपनाह के इक़बाल से सारी हिन्दू सेना को धूलि धूसित करके पृथ्वीराज को मैं सहज ही बाँध कर बँधुआ बना सकता हूं। प्रबल दल को विदार कर दुश्मन को मार कर नमक को बजाना ही बहादुरों का काम है। अगर ऐसे वक्त पर वह मारा भी जाय तो बिहिस्त का तख़्त मिलता है और दुनियां में नाम होता है।" यह सुन कर निसुरत्त ख़ां ने तत्तार ख़ां से कहा कि अगर मुझ से सच पूछिए तो यही कहूंगा कि हिन्दू सेना बड़ी ही बलवान और पराक्रमशाली है। इस पर वितंड ख़ां गुस्से से लाल होकर मूछों पर ताव देता हुआ फिर बोला कि यह क्या कहते हो, मैं सब हिन्दू सेना को मारूंगा और पृथ्वीराज को पछारूंगा। तब तो बुद्धिमान निसुरत्त खां से न रहा गया और वह बोला कि तुम्हारा यह गुरूर फुजूल है। रावण और सहस्रबाहु ऐसे योद्धा अपनी मगरूरी के ही कारण मारे गए। और क्या कहूं जिन हिन्दूओं ने काल ऐसे रणवांकुरे बहादुर को मार डाला उनके साम्हने तुम

[१] संवत्सर च्यालीस, मास मधु पष्प धम्मधुरं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या ही हो। वह फिर भी बोला कि तुम्हारी इस कपोलकल्पना की उस समय सब कलई खुल जायगी जब रणबांकुरे हिन्दू सामंतों का साम्हना होगा। परन्तु इससे हमारा यह भी अभिप्राय नहीं है कि भयभीत हो कर डर जांय। जो परवरदिगार राई का पर्वत कर सकता है वही हमारे हुजूर की टेक रक्खेगा। इसलिये उसी का आसरा भरोसा और गुमान करना मुनासिब है। लिहाजा हलकारा भेज कर चहुआन को लड़ाई का पैगाम दे दिया जाय और तब यहां से कूंच किया जाय।

अस्तु यह बात शहाबुद्दीन तथा उसके समस्त उपस्थित सभ्यों ने प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर ली और तदनुसार एक खत्री दूत एक पत्री के साथ उसी समय दिल्ली को रवाना किया गया। दूत ने दिल्ली पहुंच कर वह पत्र धर्म्मायन को दिया और सब जबानी हाल भी कह सुनाया, जिसे सुनते ही धर्म्मायन अधमरा सा हो गया और बोला "बस मैंने जान लिया कि अब शहाबुद्दीन का आयुर्बल क्षीण हुआ"। निदान धर्म्मायन ने दूत को तो वहीं छोड़ा और आप शाह का ख़रीता लेकर दर्बार में दाखिल हुआ और मौका पाकर उसने वह पत्र कैमास को देकर उसे पृथ्वीराज के सम्मुख पेश करने को कहा; राजा की आज्ञा पाकर कैमास ने वह पत्र पढ़ सुनाया जिसमें लिखा था "हमारा तुम्हारा [१]देवासुर संग्राम का पुरातन अवशिष्ट वैर इस समय प्रचण्ड रूप से जाग्रित हो रहा है। हम तुम संग्राम में जैसे वीरता के काम करेंगे वैसे ही कवि लोग हमारा तुम्हारा सुयश गावेंगे। और आखिर को दुनियां में नामही रह जाता है। मरने पर यह पंच भौतिक शरीर पंच महाभूतों में लीन हो जाता है हमारे तुम्हारे दोनों के हृदय में सनातन गौरवशाली आत्म-अभिमान का बीज बोया जा चुका है। आत्म-अभिमान ही मर्दों की निशानी है। दुनिया में अगर कोई कुछ कर सकता है तो इसी आत्म-अभिमान के सहारे से। जो मर्द आत्माभिमानी पीछे मर गए व अपना नाम अमर कर गए। हमारे तरफ पैगंबर और आपके तरफ महाभारत के वीरों का यश अमर है। इसी से हमारा ऐसा हठ है।"

शहाबुद्दीन को ऐसा पत्र पाकर पृथ्वीराज ने सामन्तों से कहा, "हे सामन्तो, सुनो! गज्जनी पति शहाबुद्दीन चतुरंगिनी सेना सज कर दिल्ली पर चढ़ाई करने को आ रहा है और वह सिंध नदी के इस पार आ गया है। अस्तु अब तुम लोग भी आने बाने से दुरुस्त होकर वायुवेग स्वरूप धारण कर यवन दल बद्दल को छिन्न भिन्न कर दो। पृथ्वीराज के ऐसे बचन सुन कर सामन्त लोग बोले कि यदि वह आता है तो आने दीजिए हमें क्या? जैसे अगाध उदधि को अगस्त एक अंजुली से अचै गए, जैसे गरुड़ ने सर्प समूह को भक्षण कर लिया, वैसे ही हम भी शत्रुओं का नाश करने के लिये सन्नद्ध हैं।

निदान इधर से पृथ्वीराज भी पच्चीस हजार सेना के सहित शहाबुद्दीन का वार बचाने के लिये दिल्ली से चल पड़ा। जिस समय राजपूत वीरों का विकट दलबल चलता था उस समय मेदनी काँपती थी और आकाश में आच्छादित सघन धूलि के कारण सूर्य्य अदृष्ट सा हो जाता था। इसी प्रकार कूच दर कूच चलते पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन की सेना से दस कोस के फासिले पर पड़ाव डाल दिया। उधर शहाबुद्दीन को भी चहुआन के आ पहुंचने का समाचार पहुंचा और इस लिये वह भी सचेत हो बैठा। दूतों द्वारा बातचीत तै होकर दूसरे दिन प्रातःकाल ही दोनों दलों में द्वन्द होना निर्द्धारित हुआ।

दूसरे दिन दिशाओं में लालिमा की झाँई पड़ते ही दोनों दलों में नगाड़ों के गड़ गड़ शब्द होने लगे। दोनों सेनाओं के अग्रभाग में फहराते हुए मेघस्पर्शी रंगबिरंगे निशान ऐसे भान होते थे जैसे पावस के बहुरंग बद्दर धरा पर घूम करने के लिये आकाश से अवतीर्ण हो रहे हों। बीच बीच में तुरही की तान लगती और उच्च स्वर से कड़खेत कड़खे गा गा कर जवानों के जी को दूना करते थे। दोनों सेनाएँ अपने अपने शिविर छोड़ कर

१ दानव देव आदि भी लग्गो। सात बैर पुरातन जग्गों॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखादेखी के मेल में आ उपस्थित हुई। उस समय दोनों सेनाओं के सूर लोग तो आनन्द के मारे फूले अंग नहीं समाते थे पर कायरों का हृदय-सरोवर नीरस होने से उनका तो हंसा हिराना जाता था। शहाबुद्दीन की चतुरंगिनी सेना बराबर चार हिस्सों में विभाजित थी। अग्रभाग पर खुरसान खां और चिम्मन खां, बाएँ मारूफ खां; दहिने पीराज़ खां और चिम्मन जमराज ख़ां थे। ये सब फौजें दो दो अनी करके अग्गा पिच्छी दो कतारों में थी। पृथ्वीराज चहुआन ने अपनी सेना को पांच भागों में विभाजित किया। बीच में आप और चारों तरफ चार अनी थीं। प्रत्येक अनी के अग्र भाग में नंगे खांड़े तलवार, पट्टे, बाने, फरसे, कटारी आदि लिए हुए कद्दर जवान थे, बीचोंबीच नेजेबाज घुड़सारों की भरती थी और तिसके पीछे हथनार तोपों की कतारें थीं। कैमास और चामुंडराय आठ हजार सेना के साथ हरावल पर—हरावल में घुड़सवार और हाथियों की भरती अधिक थी—सात सामन्तों के सहित काका कन्ह दाहने बाजू पर, जैतराव प्रमार चार हजार सेना सहित बाएँ पक्ष पर, और पीछे पीठि सेना अर्थात् चँदावल का स्वामी जामसिंह जद्दव था, जिसके साथ में पांच पांच सौ कमनेत और साढ़े तीन हजार अग्नि बान चलाने वाले थे। एक दूसरे के विपक्ष में सन्नद्ध दोनों सेनाएँ ऐसी मालूम होती थीं मानों कुरुक्षेत्र के मैदान में कौरव पांडवों का दल इकट्ठा हो। जिससमय पारथ के पंचजन की भांति दोनों सेनाओं में उच्च स्वर मारू की आवाज हो कर स्वामी आज्ञा की सूचना दी गई उस समय दोनों दलों के योद्धा इधर से अवधूत राजपूत और उधर से मजबूत म्लेच्छ अपने अपने घोड़ों को एड़ें देते और हाथियों को धतकारते मार मार पुकारते एक दूसरे से जुट पड़े। उस अरुणोदय के समय बड़े बड़े दँतारे दुरद पावस के बद्दर से और उन पर से बजते हुए गजनार नगारे और कर्नार घनघोर वन से गर्जते थे। दोनों ओर से बरसते हुए छर्रे और बानों की बौछार वारिधारा सी और रुधिर के फौवारे झरने से जान पड़ते थे। कुछ देर के बाद बारूद वाले अग्न्यास्त्र और बाण बन्द हो गए और बगमेल की मार वाले अनयारे तथा तीक्ष्ण धार वाले करारे शस्त्र चल पड़े। उधर से चिम्मन खां और इधर से चामुँडराय का मुकाबला हुआ। दोनों ने द्वन्द युद्ध करने की इच्छा से अपनी अपनी सवारी छोड़ दी और पैदल होकर परस्पर एक दूसरे को अपना अपना बल और युद्धकौशल दिखाने लगे। वे दोनों बांकुरे वीर वरनी से बराबर तलवार और कटार के वार करते हुए ऐसे मालूम होते थे जैसे लंका के मैदान में मेघनाद और लक्ष्मण युद्ध कर रहे हों। जहां पर नायकों का ऐसा उत्साह हो वहां सहायकों और पायकों का तो कहना ही क्या है। घड़ी भर में वह सुन्दर शोभामयी भूमि रक्त से तराबोर होकर रसातल का सोपान समुद्र सी हो गई। जहां तहां मुंड लुढ़कते और रुंड अंधाधुन्ध मार करते थे। तलवार कटार बरछी आदि के लगने से जो जोरावर जवानों का खून फौवारे की तरह ऊपर को उछलता था वह हेलामेल फगुआ का गुलाल सा नजर आता था। कहीं योगिनी ताल देकर नाचतीं, कहीं बेताल भीषण स्वर कर गाते और मांस मज्जा खा कर और ताजे रुधिर की धार पी पी कर अमित प्रसन्नता प्रगट करते थे। सूर वीरों की इस आमोदस्थली युद्ध भूमि में जिस समय कन्ह, चामुंडराय, जैतसी, पज्जून आदि सामंत बिजुली के समान चमकती हुई तलवारों से तमक तमक कर वार करने लगे उस समय मीर बन्दों के मुरदों के अटंब लग गए। इधर तो ये वीर पुरुष अपने पराक्रम मय कर्तव्य साधन में दत्तचित्त थे उधर विमानों में विराजमान आकाश से अप्सराएँ और सुरसमूह उन पर पुष्पों की वर्षा करते थे।

इस प्रकार युद्ध होते होते चहुआन सेना के चन्देल चौकसी में से बाहर राय और बीरम देव दो वीर विशेष काम आए और शहाबुद्दीन की तरफ से पुत्र सहित पीरोज ख़ां,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सफदर खां, हाजम खां, सहवाज खां, आदि सरदार काम आए। दोनों तरफ के पन्द्रह हजार सिपाही खेत रहे। तब तक सूर्य्य भगवान अस्ताचलगामी हुए और दिशाओं में अंधेरा छा गया। तब पृथ्वीराज की तरफ से पहाड़राय तूँअर हराबल का नायक नियत हुआ। पहाड़राय तूँअर ने सवारों की सेना लेकर साम्हने धावा किया। नेजे और तलवारों की मार करते हुए वह अगनित यवन योद्धाओं को यमपुर पठाने लगा। वीर पहाड़राय तूँअर स्वयं तलवार के वार कर अगनित शत्रुओं को काट काट कर डारने लगा। वह जिस किसी हाथी पर वार करता उस का भसुंड दाँतों के सहित कट कर दो हो जाता, जिस सवार पर तलवार चलाता वह मय घोड़े के चार हो जाता। पहाड़राय के इस पराक्रम से मुसल्मानों के पैर उखड़ पड़े। तब तक आकाश में जो दुतिया के चन्द्रमा की आभा से कुछ उजेला था वह भी अस्तमित होने लगा। इसलिये दोनों सेनाओं में फरहरा फिर गया और उस दिन के युद्ध की इति हुई।

दूसरे दिन तृतिया को भी पहाड़राय की सवार सेना ने अतुल पराक्रम दिखाया और यवनों को खूब छकाया। तीसरे दिन चतुर्थी को फिर भी दोनों सेनाओं में घोर सग्राम होने लगा। अनयारे नेजों की अनी मदान्ध कुंजरों के कलेजे पार होने लगी, युद्धरँगराते मदमाते योद्धा परस्पर एक दूसरे को खराड खराड करने लगे, जिनके श्रोनप्रवाह से रसातल पर रक्त के कुंड भरने लगे। उस रक्त सरोवर में तैरते हुए नव युवक योद्धाओं के सीस कमल कली से और उनपर उड़ते हुए कौवे मधुकर से मालूम होते थे। इसी प्रकार मार करते करते पहाड़राय ने अपना घोड़ा शहाबुद्दीन के हाथी के सम्मुख जा अड़ाया और उसके कुंभ पर तलवार का एक हाथ ऐसा मारा जिससे वह भहरा कर ज़मीन पर लोट गया हाथी के गिरते ही पहाड़राय ने शहाबुद्दीन को पकड़ लिया और मुस्कें बाँध कर उसे घोड़े के कंधे पर डाल लिया। उधर शहाबुद्दीन के बन्दी होते ही तमाम मीर बन्दे जिधर तिधर तीन तेरह होकर चलदिए।

शहाबुद्दीन को बन्दी करके पृथ्वीराज सेना सहित दिल्ली को आया। वहां कुछ दिन रहकर माघ सुदी ५ बृहस्पति वार को ६ हजार घोड़े, ६ हाथी और एक करोड़ का स्वर्ण दण्ड में लेकर उसने शहाबुद्दीन को सुखपाल में बैठा कर गजनी को भेज दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरुण कथा ।

(अड़तीसवां समय ।)

चहुआन वंश में सरनाम राजा सोमेश्वर तलवार की धार और घोड़े की टाप के बल से शत्रुओं को पराजित करके नित नव देशों को दबाता समस्त राजसी सुखों से परिपूर्ण स्वतंत्रता पूर्वक अजमेर का राज्य करता था।

एक समय चन्द्रग्रहण का पर्व्व आया। यह जानकर सोमेश्वर ने अपने साथी सरदारों और माननीय पण्डितों को बुलाकर ग्रहण के समय यमुना स्नान करने की इच्छा प्रगट की। राजा की आज्ञा होते ही विधिवत दान का सामान जुटाया गया। सब सामंत सरदार लोग यथास्थान आ आकर बैठ गए. उस समय राजा के पास में बैठा हुआ गुरू राम प्रोहित इस प्रकार से सुशोभित होता था जैसे रामचन्द्र के समय में वशिष्ठ।

शायंकाल होतेही एक ओर से पूर्णबिम्ब चन्द्रमा का प्रकाश हुआ। ग्रहण की छाया का बेध होते ही प्रफुलित कुमोदिनी मंद दुति होकर संकुचित और चक्रवाक चाकित चित्त होने लगे। विरही जनों के हृदय को विदीर्ण करने वाले चन्द्रमा की कलाएँ कुंठित होने लगीं। उस समय सारे संसार में ऐसा सन्नाटा छा गया मानो प्राणी मात्र गहरी नींद के ग्रास हो गए हों। केवल कामी पुरुष कामना की सिद्धि के लिये होम जाप यज्ञ करने में और भक्त जन भगवान के भजन में लवलीन थे। ठीक आधी रात के समय जब ग्रहण के बेध की संधि का समय आया तब राजा सोमेश्वर स्नान करने के लिये यमुना के किनारे गए। सोमेश्वर सहित सब सर्दारों ने ज्योंही वस्त्र विहीन हो कर और हाथों में तिल, यव, तंदुल, पुष्प, स्वर्ण, कुसा और दूब लेकर स्नान करने के लिये जल मे पैर दिया त्योंही विशाल काय श्यामवरण वरुण के जलरक्षक रणधीर वीर विकट गर्जना करते हुए उनके साम्हने आ उपस्थित हुए। उन विकाल आकृति वीरों की आंखों में अग्नि ज्वाला के समान जाज्वल्यमान ज्योति प्रज्वलित हो रही थी। उनके नख और ओष्ठ लाल थे और उनके सर के बाल बड़े बड़े कड़े और खड़े थे। उनके शरीर पर कोई भी वस्त्र नहीं था। ऐसे विशाल और बलवान वीरों के साम्हने किस की सामर्थ थी जो खड़ा भी हो सके।

सामन्त लोग इन वरुण वीरों को अपने पर आक्रमण करते हुए देख कर शास्त्रहीन होने के कारण जल से निकल कर ग्रावस्थल पर चले गए। निदान वे वीर उस ग्रावस्थल पर उलीच उलीच कर पानी के झला बर्साने लगे। ग्राव की सुलायम बालू पर पड़ते हुए जल के बड़े बड़े छींटों से ऐसा शब्द होता था मानो ग्रीष्म का पतझाड़ होने पर झाड़ों से पके फल भूपातित हो रहे हों। परन्तु जब सामन्त लोग इससे न डरे तब वीर लोग परस्पर द्वन्द युद्ध करके अनेक प्रकार की आसुरी माया करने लगे। वीरों की माया से जमुना के गंभीर जल में कभी धुआँ देख पड़ता, कभी जलती हुई आग की चिनगारी देख पड़ती, कभी बादल उठते और कभी बरसा होती, कभी वे परस्पर मारामार करके हृदय को दहलाने वाले घोरतर भयावन शब्द करते, कभी एक दूसरे को उठा उठा कर मारते, प्रचारते और पछारते थे। परन्तु वीर सामन्त तब भी न डरे। तब वे बोले कि हम लोग स्वभावतः ऐसे बलवान हैं कि बड़े बड़े पर्वतों को कानी(१) उँगली से उठा कर फेंक सकते हैं समुद्र को अँजुली से उचील कर संसार को बहा सकते हैं अथवा अन्यान्य ऐसे अमानुषी काम कर सकते हैं कि जो कभी किसी ने देखे सुने भी न हों! हे मनुष्यो, !तुम घरबार बालबच्चे छोड़ कर क्यों यहां नाहक मरने आए हो। हम लोग जलपति वरुण के दूत हैं, रात्रि के समय गंभीर जल में यथेच्छ विचरना ही हमारा व्यवसाय है। यह हमारा घर है, हमारा स्वराज्य है। तुम यहां से चले जाओ। यह कह कर वे मायावी वीर पुनः उत्पात करने लगे। इसी प्रकार होते होते दिशाओं में लालिमा की झांई

(१) कनिष्ठ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना ।

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं ।

	मूल्य	डांकव्यय
मलिक मुहम्मद की अखरावट	।=)	)॥
कविवर बिहारीलाल-(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	=)	)॥
गद्यकाव्यमीमांसा-(पण्डित अम्बिकादत्त व्यास रचित)	।)	)॥
हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित)	।)	)॥
समालोचना-(पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	)॥
समालोचनादर्श-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित) ...	≡)	)॥
कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र- (पण्डित नारायण पांडे रचित) ...	॥)	-)
विसूचिका चिकित्सा	।)	)॥
हरिश्चन्द्र-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	)॥
भगवद्गीता-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित) ...	।-)	)॥
उथेलो-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	≡)	)॥
नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) ११ भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य-प्रति भाग	१)	-)
हिन्दी लेकचर-(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	-)	)॥
ध्रुवदास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	॥≡)	-)
सल्लमिश्र की चन्द्रावती	।-)	)॥
सूदन कवि का सुजानचरित्र	२)	=)
लाल कवि का छत्रप्रकाश	१।)	-)
नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी	।=)	)॥
प्राचीन-लेख-मणि-माला-१ भाग (बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित) ...	१)	-)
अशोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	।)	)॥
नेपाल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित)	।-)	)॥
पृथ्वीराजरासो-पहिला भाग (समय १-११)	४)	।)
,, दूसरा भाग (समय १२-२८)	४)	।)
कुमारसम्भवसार (पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित) ...	≡)	॥
श्रीधर का जंगनामा	॥।)	-)
धम्मपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	-)
सभा के पुस्तकालय की सूची	=)	)॥
मनोविज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित)	॥)	-)
चन्द्रशेखर का हम्मीर हठ	॥)	)॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)	१)	-)
वैज्ञानिक कोश (बाबू श्यामसुन्दरदास सम्पादित)	३॥)	=)॥
दादूदयाल की बानी	१॥।)	=)
कवि नूरमुहम्मद की इन्द्रावती १ भाग	१॥)	=)
यूरोपीय दर्शन (पण्डित रामावतार पांडेय लिखित)	।॥)	-)
प्रबोधचन्द्रिका	॥।)	-)
विरहलीला-आनन्दघन कृत	=)	)॥
वनिताविनोद	१)	=)
नवीन दृष्टि में प्राचीन भारत	१)	-)
गीतावली	।)	)॥
योगदर्शन	२)	-)
गुरु गीता	।)	)॥
रामचरितमानस	८)	।॥)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की ६ पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं। अन्तिम पुस्तक का मूल्य सभासदों के लिये ६॥) रु० है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-12

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHIYA JU.

CANTOS XLVIII to LIV.

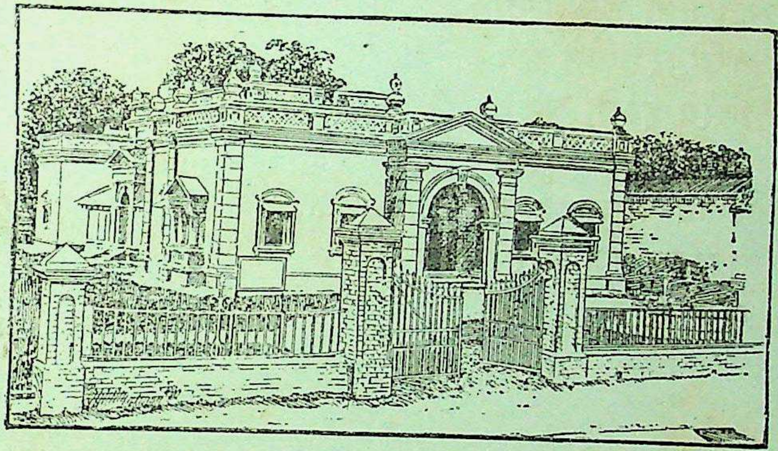

महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता

से

सम्पादित किया।

पर्व्व ४८ से ५४ तक।

AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE
NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1908.

मूल्य १।)] Issued 15th March 1908. [*Price Re. 1/4/.*

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओ३म् *

पुस्तक की संख्या.................

पुस्तकालय-पञ्जिका-संख्या.........

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कोई महाशय १५ दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकता। अधिक देर तक रखने के लिये पुनः आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

(४८) बालुकाराय [illegible] .... पृष्ठ १३२९ से

(४९) पंगजग्य विध्वंस प्रस्ताव .... „ १३३१ „ १३३६

(५०) संजोगता नेम प्रस्ताव .... „ १३३७ „ १३४६ „

(५१) हांसीपुर प्रथम युद्ध .... „ १३४७ „ १३६८ „

(५२) द्वितीय हांसी युद्ध .... „ १३६९ „ १४०० „

(५३) पज्जून महुवा प्रस्ताव .... „ १४०१ „ १४०५ „

(५४) पज्जून पातसाह जुद्ध .... „ १४०७ „ १४१६ „

टाइटिल पेज और बिषय सूची

रासोसार .... „ १३७ „ १६६

———o———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ गय मंदा चष चंचला। गुर जंघा कटि रंच॥
पिय प्रथिराज सु रिपु कियो। विपरित करन विरंच॥छं०॥२७१॥

कवित्त॥ सुभट सतें सइए। घरिनि तिन पुलिय सुरन बल॥
कुसुम कंप घन उअर। भमर भर करय जु अलि तन॥
कंपि करग तारंन। अंब पल्लव कि कीर मति॥
धाह सबद उच्छलीय। कग्ग कलाठ कंठगति॥
सिर चिहर मोर विसहर गिलिय। भनिस चंद कवियन वयन॥
चहुआन राव सोमेस सुअ। प्रथियराज इम तुअ दुअन॥छं०॥२७२॥

पृथ्वीराज का बालुकाराय को मार कर दिल्ली को आना।

हनिग राव बालुका। भंजि षोषंद महापुर॥
लुट्टि रिद्धि नव दिद्धि। कनक पट कूल नंग धुर॥
करत सास उद्दास। छोहि जोरी बर दंपति॥
फिऱ्यौ राज चहुआन। प्रान देषे हरि संपति॥
बाजंत नद्द नीसान बर। धाह प्रकास हिलोर धर॥
भंजेव जग्य जैचंद न्रप। थान बयट्ठौ कंपि पर॥ छं०॥ २७३॥

गत घटना का परिणाम वर्णन।

सुनि विधात अब दुष्य। जायषे मानव दुष्यं॥
चंद दुष्ट अजहूं दहै। विरहिन अप रुष्यं॥
रिपु जानत चहुआन। मंत इह गत्त न कित्तौ॥
चष चंचल गति मंद। गुरन जंघा फिरि धत्तौ॥
पावर सुमत्ति धरतौ तनह। मन अंगम गिरि चढ़न कौं॥
विचारि वत्त भवषित्त मन। तौ बैठति हम गढ़न कौं॥छं०॥२७४॥

बालुकाराय की स्त्री का जयचन्द के यहां जाकर पुकार करना।

॥ रन हारी पुकार पुनि। गई पंग पंधाहि॥
जग्य विध्वंसिय न्रप दुलह। पति जुग्गिनिपुर प्राहि॥ छं०॥ २७५॥

कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके बालुकाराय बधनो नाम अड़तालिसमों प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥ ४८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पंग जग्य विध्वंसनो नाम प्रस्ताव।

(उंचासवां समय ।)

यज्ञा के बीच में बालुकाराय की स्त्री का कन्नौज पहुँचना।

दूहा ॥ जग्य उजाये अट्ठ दिन । अट्ठ रहे दिन अग्ग ॥
तेरसि माघह पुब्ब पष । सुंदर पुकारह जग्य ॥ छं० ॥ १ ॥

यज्ञ के समय कन्नौजपुर की सजावट बनावट का वर्णन और जयचन्द को बालुकाराय के मारे जाने की खबर मिलना।

पद्धरी ॥ तिन समय ताम कनवज नरेस । कृत काम पुन्य सज्जे असेस ॥
सँबर सँजोग सम जग्य काज । विथ्थुरिय रिद्धि गति विविध राज ॥
छं० ॥ २ ॥

शृंगारि सहर विविधं बिनान । आनंद रूप रज्जे उतान ॥
तोरन अनूप राजैं सु भाइ । जगमगत षंभ हिम जरित ताइ ॥
छं० ॥ ३ ॥

वासन विचित्र उत्तान ताम । मंडप्प उंच सज्जे सु धाम ॥
बासनह अन विधि बंधि बान । सोभंत धज्ज बंधे सु थान ॥
छं० ॥ ४ ॥

क्षोनी पवित्र सद्धी सवारि । द्रावै सु मंडि सुर सम अपार ॥
गावंत थानथानह सु गेव । मंगल अनेक साजौ सु भेव ॥
छं० ॥ ५ ॥

जलजात माल तोरन कुसुम्म । बहु रंग विद्धि सोभा सुरम्म ॥
आये सु न्त्रपति अनेक थान । उद्दार मत्ति घिति आसमान ॥
छं० ॥ ६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संमर संजोग लष्षे सु भूप। संपत्त साज हय गय अनूप ॥
देवंत अत्ति उत्तान थान। प्रगटंत अप्प गुन आसमान॥ छं० ॥ ७॥
चिंतै सु चित्त कमधज्ज राइ। केहरि कँठेर बर मुत्ति काय॥
संजोग सज्जि नयरी प्रकार। सम करह साज हय गय सुभार॥
छं० ॥ ८॥
वाजे अनंत बज्जे विवान। बहु न्रत्य करत रंजंत तान॥
कौतिग सु राज राजै अनूप। कृतयंत कंठ सा दिष्ट रूप॥
छं० ॥ ९॥
भूलंत नेन देषत विनान। मझ्झंम चित्त साकृत्य जान॥
आतस चरित्त साजे अनेव। नाटिक्क कोटि नाचंत भेव ॥छं०॥१०॥
देषहि विवान साजहि सु देव। वानिय प्रसाद कछु कहिय गेव॥
इहि विद्धि सत्त अह वित्ति जाम। अस आइ कुक्कि पर दार ताम॥
छं० ॥ ११॥
कर पंग मग्ग आगें सु बीर। सर सुक्कि मुक्कि सुमनं प्रसीर॥
सुनियै न सद्द नीसान भार। दरबार भइय इत्ती पुकार॥
छं० ॥ १२॥
तम पुच्छि ताम जैचंद राज। अवगुन अध्रम्म किन करिय काज॥
उच्चंत ताम धाह्न सउत्त। चहुआन राव सोमेस पुत्त ॥छं०॥१३॥
सब देस भंजि षोषंद थान। बालुकाराय हनि देषि प्रान॥
छं० ॥ १४॥

सात समुद्रों के नाम।

दूहा॥ षीर नीर दधि ईष घृत। वारुनि समुद लवन्न॥
इन सत्तन सम ऊफने। बोलिय कमध वचन्न॥ छं० ॥ १५॥

दसों दिशाओं और दिग्पालों के नाम।

कवित्त॥ पूरब दिसि पतिइंद। अग्नि कूँनह अगिनेयं॥
दच्छिन यम नैरत्ति। कून नैर्रत्ति सुनेयं॥

(१) ए.-माय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पच्छिम अधिपति वरुन । वाय कूँनं वहवानं ॥
उत्तर हेरि कुबेर । कून ईसह ईसानं ॥
जरद्व ब्रह्म पाताल नग । मान षंडि दिगपाल कौ ॥
प्रथिराज काल्हि आनो पकरि । तौ जायौ विजपाल कौ ॥
छं० ॥ १६ ॥

अरिल ॥ द्रोनागिर हनुमंत उपारिय । अहंकार उर अंतर धारिय ॥
कहत चंद हरि गर्व पहारिय । सायक षँ।च भारथ बग मारिय ॥
छं० ॥ १७ ॥

बालुकाराय का वध सुनकर जयचन्द का क्रोध करना ।

पद्धरी ॥ दै अधर दंत कंपौ रिसाइ । बुल्ल्यो सरोस कमधज्ज राइ ॥
धन भरौ लष्य वे सरस वाउ । करि सवालाष नीसान घाउ ॥
छं० ॥ १८ ॥

सज्जौ गयंद सत्तरि हजार । अरु असीलष्य तिष्षे तुषार ॥
पाइक्क कोरि धानुष्य धार । स्वाकोरि सजौ बंके झुझार ॥ छं० ॥ १९ ॥
नव कोरि जोरि आतस्स बाज । इत्तनौ सेन छिनमेक साजि ॥
पकरों दुअन जिन जाइ भाजि । षूनी सु भ्रात को ठोर आज ॥
छं० ॥ २० ॥

गहिलेउ पिसुन पारो बिपत्ति । जैचंद कोपि बोल्यौ न्रपत्ति ॥
॥ छं० ॥ २१ ॥

दूहा ॥ जित्ति जगत जैपत्त लिय । दिसि मुरधर उपदेस ॥
छिति रष्षन छिति परस बर । सुनि पंगुरें नरेस ॥ छं० ॥ २२ ॥

यज्ञ का ध्वंस होना और जयचन्द का पृथ्वीराज के ऊपर चढ़ाई करने की तैय्यारी करना ।

पद्धरी ॥ थकि वेद वेन बिप्रान गान । आनंद सकल सुनियै न कान ॥
करि चंपि राव मुक्यौ निसास । बिग्गऱ्यौ जग्य मंची बिसास ॥
छं० ॥ २३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंधों सु चंपि अब चाहुआन। विग्गऱ्यौ जग्य निहचै प्रमान॥
जोगिनी राज चिचंग जोइ। बंधों समेत प्रथिराज दोइ॥ छं० ॥ २४ ॥
सन्नाह राज बंधौ स बीर। निर्वार करों चहुआन और॥
आहुठराज प्रथिराज साहि। पीलों जु तेल जिम तिल प्रवाहि॥
छं० ॥ २५ ॥
संभरि जुन्हाइ बुल्लाइ राइ। इक बत्त कहा पिय सुनहु आइ॥
सुनियै न पुन्य सभ मध्य राज। जुव जसि जुवत्ति अति करिग साज॥
छं० ॥ २६ ॥
पुच्छीस ताम संजोगि बत्त। कहि धाह कोन मोपित विरत्त॥
उच्चरी ताम सहचरी एक। बंधी सु राज प्रथिराज तेक॥छं०॥२७॥
दिल्ली नरेस सोमेस पुत्त। चहुआन पान देषे सउत्त॥
बालुकाराव सध्यौ सु तेन। षोषंद भंजि पुर लुट्टि रेन॥छं०॥२८॥

यह सब सुन कर संयोगिता का अपने प्रण को और भी दृढ़ करना।

सुनि श्रवन बत्त संजोगि तथ्य। चितां सुचित्त गंधर्व कथ्य॥
संजोगि जोग बर तुम्ह आज। व्रित लयौ बरन प्रथिराज साज॥
छं० ॥ २९ ॥
द्रिढ करिय मंच सम चित्त अत्ति। पितु विरत बुद्धि छंडौ विमत्ति॥
संजोगि ताम जंप्यौ सु एम। मानों सु सुज्झ इह द्रढ नेंम॥
छं० ॥ ३० ॥
चहुआन सुबर मोसत्ति मत्ति। छंडौ सु अवर लालिच्च अत्ति॥
इम जंपि मंच सा निज्ज धाम। छंडेव अव्व विधि व्याह काम॥
छं० ॥ ३१ ॥
दूहा॥ गंठि जुन्हाइ उन्हाइ निजु। राइ बरन निज दान॥
श्रुति अनुराग संजोगि कौ। करहु न प्रभू प्रमान॥ छं० ॥ ३२ ॥

समय उपयुक्त देख कर जयचन्द का संयोगिता के स्वयंवर करने का विचार करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ बालवेस बय चढ़त। ध्रम्म रष्यें न पुचि ग्रह ॥
भूमि भूमि न्रिप मिले। जानि वातूल तूल तहं ॥
बर संजोगि प्रनाइ। राज बंध्यौ चहुआनं ॥
बंधि बीर प्रथिराज। जग्य मंडौ परवानं ॥
सज्जै जु काइ भंजै कवन। का जानै किम होइ फिरि ॥
पुचीय स्वयंबर मंडिकै। फिरि बंधौं दुज्जन असुरि ॥ छं० ॥ ३३ ॥

दूहा ॥ रह सुमंत न्रप चिंति मन। वजी अवाजन साज ॥
सुनि संजोगि कुमारि ने। व्रत लीनौ प्रथिराज ॥ छं० ॥ ३४ ॥

यह सुन कर संयोगिता का चौहान प्रति और भी अनुराग बढ़ना।

कवित्त ॥ जग्य विध्वंसिय पंग। दुअन श्रोतान बढ़ाइय ॥
सुनि सुनि रह संजोगि। चित्त व्रत लीय प्रवाहिय ॥
बरों कि बर चहुआन। वार षोऊं ध्रम्म सारिय ॥
कै छष्णों देंउ प्रान। बरों मनमध्य विचारिय ॥
मन मंझ बत्त इत्ती करी। प्रगट न वल बालह करी ॥
पहुपंग मंत बहु मानि कै। राज राज उच्चित फिरि ॥
छं० ॥ ३५ ॥

दूहा ॥ पंग सुयंबर थप्पि तहं। सुनिय जुन्हाइय बत्त ॥
बर कमोद जिम सुंदरी। रचि वचननि सुनि गत्ति ॥ छं० ॥ ३६ ॥
मा मुरछी धुक्किय धरनि। सुनिय संजोइय बाल ॥
सुहन सुहंदी बत्तरी। भुअन परही झाल ॥ छं० ॥ ३७ ॥
अप्प स्वयंबर की जरहि। सय मुक्किय अरि काज ॥
सबै बीर सथ्थह दए। रहि कनवज्ज सु राज ॥ छं० ॥ ३८ ॥
हालाहल की फौज रत। तुंतर किय चहुआन ॥
अप्प अप्प कों ह्वै गई। धर जंगरी विहान ॥ छं० ॥ ३९ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते समय शत्रु की फौज से घिर जाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त॥ गथ जंगल जगलियं। राज निरवास देस करि॥
राजा रैंबन जुथ्थ। गयौ प्रथिराज मंत करि॥
प्रजा पुलिंद नरिंद। समर रावर धर राषी॥
चीय चीय माविच। थान थानं नृप पाषी॥
सम हथ्थ जुथ्थ कौ कथ्थ गै। सुबर कथ्थ कविचंद कहि॥
प्रथिराज राज अरु वीर गति। विपन मझ्झ आषेट गहि॥
छं०॥ ४०॥

सब सेना का भाग जाना।

काइर मुक्यौ नरिंद। पुहप परजंत मधुप तजि॥
सुक सर तजिहति हंस। दझ्झ बन मृगन पत्ति भजि॥
ज्यों कलहीत सु पंषि। तजै तरवर नन सेवं॥
द्रव्य हीन कौं गनिक। तजत पथ्थर करि देवं॥
जल तजत कुंभ ज्यौं भिष्ट दुज। जग्य पविच न मानइय॥
भजि थान थान अरि भ्रत गयं। बर लालचि सु प्रानइय॥
छं०॥ ४१॥

दूहा॥ मानि प्रान कौ लालसा। तजि साई सौं हेत॥
छंडि गए कायर सबै। रहै सूर बंधि नेत॥ छं०॥ ४२॥

केवल १०६ साथियों सहित पृथ्वीराज का शत्रु पर जै पाना।

कुंडलिया॥ पालिज्जै लहु पुच लौं। मानिज्जै गुरु जेन॥
वर संकट सो भृत्त ने। साई मुक्यो तेन॥
साई मुक्यो तेन। सिंघ मन होइ न भिल्लं॥
सौ समंत छह सूर। समं प्रथिराज इकल्लं॥
धर धूंसे वर पंग। कोस पंची माल्हिज्जै॥
मिल्यौ जग्य कमधज्ज। धज्ज बंधे पालिज्जै छं०॥ ४३॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पंग जग्य विध्वंसनो नाम उनचासमो प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥ ४९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ संजोगता नाम प्रस्ताव लिष्यते ॥

(पचासवां समय ।)

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना और कन्नौज के गुप्त चर का जयचन्द को समाचार देना ।

*दूहा ॥ तिहि तप आषेटक भ्रमें । थिर न रहै चहुआन ॥
जोगिनिपुर जो रष्षनह । दस सामंत प्रधान ॥ छं० ॥ १ ॥
दूत दोइ जुग्गिनि पुरैं । गय कनवज फिरि दिष्षि ॥
ढिल्लीवै ढिल्ली चरित । कहें पंग सों सिष्ष ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलते फिरना और सांझ होते ही साठ हजार शत्रु सेना का उसे आ घेरना ।

कवित्त ॥ इह अप्पानी घत्त । बैर कढ्ढै चहुआनं ॥
मद्धि प्रात अरु संझ । भयति कंपै [1]पंगानं ॥
पंच अग्ग पंचास । सोर ढिल्लिय रचि गढ्ढै ॥
यों कहंत दुत बीय । आय बन बीर सु ठढ्ढै ॥
दुसमन दुरंग दैवान गति । अब कुरंग जम्मी ततरि ॥
गज फुंक जेम पूजौ जु इम । चढ़ि अरि संमुह न्नप्प भिरि ॥ छं० ॥ ३ ॥
सिंघ वचन [2]चर मानि । पान असि लष्ष सु फेरं ॥
सुबर तप्प चहुआन । कोइ संमुह नन हेरं ॥
भेद न्नपति करिपान । कन्ह लिन्नौ उर भानं ॥
मिलि ततार कमधज्ज । तारि कढ्ढै चहुआनं ॥
बर हंस छिपत एकत्त निसि । प्रात अचानक बढ्ढियै ॥
ढिलही वज्ज कर वज्ज बर । सट्ठि सहस भर चढ्ढियै ॥ छं० ॥ ४ ॥

(१) ए. कृ. को.-गंगानं । (२) ए. वर ।

* मो.-प्रति का पाठ यहां से पुनः आरम्भ होता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिलह अगें करि लीन। गाम मझ्झें उत्तारिय॥
सोदागिर ईसब्ब। [1]बीर बढ्ढिउ जस भारिय॥
अंधारी नव भार। अप्प दूनों संपत्ते॥
अठ्ठ पारि बर चढ्यौ। [2]भेस जू जू बर मत्ते॥
संजुरन बेन कारन्न सब। भाग चवध्थै चढ्ढ्यौ॥
बाजीद षान लूंषे मनों। चूक [3]चौंक बर बढ्ढ्यौ॥ छं०॥ ५॥

सब सामंतों का शत्रु सेना को मार कर बिडार देना।

पार पार बाजीद। धाइ अप्पौ नर कोई॥
चूक चूक चिंतयौ। सब्ब सामंत जगोई॥
चूक बीर मानि कै। बीर [4]कैमास जु आइय॥
सूर सूर आहुट्टि। [5]सब्ब हंसीरह धाइय॥
बर दीन एक अदीन जुध। निसि समूह कलहंत बजि॥
बर जम्म दठ्ठ बढ्ढह परे। [6]जहां तहां हिंदू सु भजि॥ छं०॥ ६॥
फिर कहंत बन बीर। चरित ढिल्ली चहुआनं॥
अप्पन न्रप आषेट। सूर सम्हौ सुलतानं॥
बर दाहिम कैमास। सिंघ चौकौ बर घल्ली॥
आय अब्ब सामंत। बंध प्रथिराज सु चल्ली॥
बर साम दान अरु भेद दंड। कंक बंक न्रप किज्जियै॥
सामंत मंत बँधि सु मति गति। सामि सँग्राम न छिज्जियै॥छं०॥७॥

सामंतों की स्वामिभक्ति का वर्णन।

एकदेह पहुपंग। बंधि [7]निझ्झर निसंक भरि॥
दुतिय देह पज्जून। सुरँभ कूरंभदेव बर॥
चतिय देह तूंअर। प्रहार पांवार सलष्षी॥
चतुर देह दाहिम्म। धरन नरसिंह सु रष्षी॥

(१) ए. कृ. को.-वीर वढ़ी ऊस भारिय। (२) ए. कृ. को.-भेद।
(३) मो.-चूक। (४) मो.-कैमासह। (५) ए. कृ. को.-हंसारह।
(६) ए. कृ. को.-"जह नह हिजन सु भंज"। (७) मो.-निडर, निड्डर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंचमी देह कै मास मति। बर रघुवंस कनक्क बिय॥
षट देह गौर गुज्जर अठिल। लोहानौ लंगुरि सविय॥ छं०॥ ८॥

जयचन्द का अपने मन्त्री से संयोगिता का स्वयंबर करने की सलाह करना।

तब सुमंत परधान। पंग सब सेन बुलाइय॥
जु कछु मंत मंतियै। मंत चहुआन सु घाइय॥
प्रथम मूल दिज्जियै। व्याल आवै कै नावै॥
जिनहि नाहि दिज्जियै। लाभ [१]सुंदरि अकरावै॥
मोमंत मंत चिंतै न्रपति। बाल स्वयंबर किज्जियै॥
तापच्छ सिंघ एकट्टई। फिरि दुज्जन भिरि भंजियै॥ छं०॥ ९॥
दूहा॥ इतनी बत जैचंद सों। कही सुमंत प्रधान॥
बत मन्नी जैचंद नें। अंतर मत भए आन॥ छं०॥ १०॥
मानि मंत पहुपंग नें। महल कहल उठि जाइ॥
बर संबर संजोग कौ। पुच्छि जुन्हाई आइ॥ छं०॥ ११॥

जयचन्द का संयोगिता को समझाने के लिये दूती को भेजना।

चौपाई॥ सुनी जंत बर बैर जुन्हाई। सहचरि चरी सुरंग बुलाई॥
कहि बर बर उतकंठ सु बाला। चिंते पुच्छि [२]बिविरि बर माला॥ छं०॥ १२॥
सहचरि चरित [३]वरन मोकल्ली। मनों हरि कामन हरी इकल्ली॥ छं०॥ १३॥
संति करन चित हरन। संतिका नाक तिहि।
*बर सुमंतिका नाम। प्रबोधनि नाम जिहि॥ छं०॥ १४॥
दूहा॥ सुस्थ सु राजन सुस्थ चित। सुस्थ विलंब न धीर॥
पुरुष जु क्रम क्रम संचरै। नेन सुता पन पीर॥ छं०॥ १५॥

(१) ए. कृ. को.-सुन्दर। (२) ए. कृ. को.-विवर। (३) ए. कृ. को.-चरन।

* मालूम होता है कि ऊपर की चौपाई के दो अन्तिम दो प्रथम पद भूल से खंडित हो गए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वार्ता ॥ राजा आयस दीनौ। सहचरी सलाम कीनौ ॥
हमारी सीष धरौ। [1]संजोगिता कौ हठ दूरि करौ ॥

दूतिका के लक्षण और उसका स्वभाव वर्णन।

नाराच ॥ परठ्ठि पंगराय दुत्ति पुत्ति आलि मुक्कने।
तिसाम दाम दंड भेद सारसी विचष्षने ॥
बच्चन्न चित्त चातुरी न ताहि कोइ पुज्जई।
हरंत मान मेनका मनोहरंन सुभ्झई। छं० ॥ १६ ॥
श्रवन्न नेन सेन सेन तार तार मंडई।
अनेक विद्धि सिद्ध साध ईस ग्यान पंडई ॥
अनेक भांति चातुरीनि वित्त चित्त चोरई।
छिनेक में प्रसन्नवे जु जेम मन डोरई ॥ छं० ॥ १७ ॥
कलक्कलं अलाप जाप ताप छत्त संसई ॥
श्रिषंड ज्यों मिठास बास सासता प्रसन्नई ॥
अनेक बुद्धि लुद्धि सब्ब मुच्छि काम जग्गवै।
सु पाठई चतूर बत्त प्रथंममन्न लग्गवै ॥ छं० ॥ १८ ॥
रहंत मोन मोनही हसंतते हसावही।
विषंम जोग भोष तेज जोर सों नसावही ॥
अगोन कंठ पोत रूप उत्तरं दिवावही।
कपट्ट ग्यान बत्त मंडि हठ्ठ सों छुडावही ॥ छं० ॥ १९ ॥
प्रचारिका सु चारि जाइ अंगनै समुझ्झवै।
अनेक चित्त चातुरी सु आप मन्न [2]सुभ्झवै ॥
॥ छं० ॥ २० ॥

गाथा ॥ चंचल चित्त प्रचारौ। चंचल नैंनीय चंचला बेनी ॥
थावर चित संजोई। थावर गति गुह्य गंमाहि ॥ छं० ॥ २१ ॥

दूती का संयोगिता से बचन।

रासा ॥ अलस नयन अलसायत आदुरु प्रप्प किय।
किम बुद्धिय मो तात सकिल्लिय एक हिय ॥

(१) ए. कृ. को.-संजोगि। (२) मो.-परत्ति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब बाले बर तात सयंबर मंडइय।
कहि बर उतकंठाइ माल उर छंडइय ॥ छं० ॥ २२ ॥

चौपाई ॥ मिलि मंडल राजान्न सु बरई। सो उच्छव बंधे संकरई ॥
देषि वाम भोली तजि अंगं। ते ऊभे दरबारह पंगं ॥ छं० ॥ २३ ॥

दूती की बातों पर कुपित हो कर संयोगिता का उत्तर देना।

कवित्त ॥ दै बर सेन संजोग। सषि सहचरि सम बुल्लिय ॥
अबुझ्झ घात वज्रपात। काम वेमो दुष भुल्लिय ॥
[1]परसमाद कै कित्ति। ताहि गंगा गुन गावै ॥
बंझि पूत रस पढ़त। कंन हीनह समझावै ॥
सहचरिय बतनि सुन्निय सुवर। चित चल चित बत्त न बकिय ॥
बर भई समझि संजोगि पैं। फिरि उत्तर तिन तब्ब दिय ॥ छं० ॥ २४ ॥

पृथ्वीराज की प्रशंसा और संयोगिता के विचार।

दूहा ॥ जे बंधे पित संकरह। जे षड्डे पित लोन ॥
ते बट्टी जन बापुरे। बरै संजोगी कोन ॥ छं० ॥ २५ ॥
रे सह सह सहचरिय गुन। का जानौ कुल बत्त ॥
जे मो पित वापह कहै। तेमो बंधव भ्रत्त ॥ छं० ॥ २६ ॥
तिहि पुची सुनि गुन इतौ। तात बचन तजि [2]काज ॥
कै वहि गंगहि संचरौं। पानि ग्रहन प्रथिराज ॥ छं० ॥ २७ ॥
सुनत राज अचरज्जि किय। हियै मन्नि अनराव ॥
हौं बरि अवरहिं देउंबर। दैवैं अवर सुभाव ॥ छं० ॥ २८ ॥
तब पंगुरि मन पंगु करि। धाइ सबुझ्झी बत्त ॥
तुम पुची गुन जानि हौ। करहु दूरि हठ इत्त ॥ छं० ॥ २९ ॥

संयोगिता का बचन।

चंद्रायना ॥ मो मन मंझ गुरू जनं गुझ्झ सु तुम कहों।
जंपत लाजों जीह सु उत्तर लहु लहों ॥

(१) मो.-मुझ्झवै। (२) ए. कृ. को.-परम। (३) मो.-काहु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्त सेन सामंत सूर छह मंडलिय।
बरन इच्छ बर मोहिय हंति अषंडलिय ॥ छं० ॥ ३० ॥

धा का वचन।

दूहा ॥ अन दिषि व्रत लीजै नहीं। तात मात [1]बरजन्त ॥
पच्छि मनोरथ पुज्जि है। मानि सीष धरि [2]मन्त ॥ छं० ॥ ३१ ॥

कवित्त ॥ बचन समुह संजोगि। वाल उत्तर उच्चारिय ॥
अजहूं कनक सभूह। तुच्छ जानै नर नारिय ॥
मलया [3]पाम पुलिंद। करै इंधन बर चंदन ॥
अति परचौ जिहि जानि। काच कीजै अलि बंदन ॥
सो सरै पंच पंचौ भयौ। परचै नहिं चहुआन किय ॥
संयोगि क्रम्म बर पुब्ब गति। तैंत अली अलि व्रत्त लिय ॥छं० ॥३२॥

सहचरी का वचन।

सहचरी वाक्य ॥ गाथा ॥ मुगधे मुगधा रसया। अवरं जे भिन्न रस एवि ॥
लहुआ लुहान पुत्तं। तूं पुत्ती राज ग्रेहायं ॥ छं० ॥ ३३ ॥

पृथ्वीराज के वीरत्व का संकीर्तन।

संजोगिता का वाक्य।

कवित्त ॥ जिहि लुहार सुनि दुत्ति। साहि शंकर गढ़ि बंध्यौ ॥
जिहि लुहार गढ़ि षग्ग। पंग जग्गह घर रुंध्यौ ॥
जिहि लुहार सांडसी। भीम चालुक अहि साहिय ॥
जिहि लुहार आरन्न। बरै बर मानस गाहिय ॥
पावक्क सबर बर नैरि सह। अरनि मंडि जिहिं बारयौ ॥
भव भूत भविष्यत व्रत मनह। कुल चहुआनह तारयौ ॥ छं०॥३४॥

दूहा ॥ अथवा राजन राज ग्रह। अथवा माय लुहानि ॥
विधि बंधिय पट्टल सिरह। इह मुष गंध्रव जानि ॥ छं० ॥ ३५ ॥

(१) ए. कृ. को.-गुरु जन्न। (२) ए. कृ. को.-मन्न।
(३) ए. पर मर कृ. को.-पमर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साटक ॥ आरन्नी अजमेर धुम्मि धमनी, कर मंडि मंडोवरं ॥
मोरीरा मर सुंड दंड दमनो, अग्निं उचिष्टा करी ॥
रनथंभं थिर थंभ सीस [1]अहिनं, ज्वलदिष्ट कालुंजरं ॥
क्रप्पानं चहुआनं जान रहियं, घड़नोपि गोरी घड़ा ॥ छं० ॥ ३६ ॥

सखी का वाक्य ।

सषी वाक्य ॥ तो पुची मरहट्ट थट्ट सबले, नीमंच वैरागरे ।
कर्नाटी कर चीर नीर गहनो, गोरी गिरा गुज्जरी ॥
निमीवे हथलेव मालव धरा, मेवार मंडोधरा ।
जित्ता तातय सेव देव न्रपती, तत्वान्यनं किं वरे ॥ छं० ॥ ३७ ॥

स्लोक ॥ नमे राजन संबादे । नमे गुरु जन आग्रहे ॥
वरमेक स्वयं देहे । नान्यथा प्रथिराजयं ॥ छं० ॥ ३८ ॥

संयोगिता की संकोच दशा का वर्णन ।

कवित्त ॥ श्रवननि सहचरि वचन । चित्त गुरुजन संभारिय ॥
रसन वचन चाहंत । पन सु अप्पनौ विचारिय ॥
समभिलाष गंध्रब्ब । भयौ किल किंचित नारिय ॥
नयन उमड़ि जल बिंद । बदन अंस्रू परि भारिय ॥
उपमान इहै कविचंद कहि । बाल जदिन मुर संभयौ ॥
उफफेन अमी मभ्भ्रह रह्यौ । ससि कलंक उफफनि गयौ ॥छं०॥३९॥

द्रिग रत्त करि बाल । भौंह बंकी करि षिझ्झिय ॥
सो ओपम बरदाइ । चंद राजस मन भज्जिय ॥
सैसव जुबन नरिंद । परसपर लरत बिआनं ॥
मनु सम रष्षत बाल । दुहुन सों षीझत आनं ॥
भोहन्नि तीर जाने छुरी । दुहुन बीच अड्डी करी ॥
सो रूप देषि संजोगि कौ । उठि सहचरि मंतह हरी ॥ छं० ॥ ४० ॥

दूहा ॥ जा जीवन वंतह वयन । बयन गये म्रत होइ ॥
जा थिर रहै सोई कहौ । हौं पूछूं तुम सोइ ॥ छं० ॥ ४१ ॥

(१) मो.-अहितं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सखी का बचन।

थिरु बाले बल्लव मिलनु। जो जुड्डनु दिन होइ॥
*गयौ जुवन कछु बनत नहिं। रति मंझै घट लोइ॥ छं० ॥ ४२॥

संजोगिता का बचन।

रति आग्रह तिन सौं करहु। जो तुम सषी समान॥
ज्वाब ज्वाब लजा करों। मौं तुम तात प्रमान॥ छं० ॥ ४३॥

सखी का बचन।

तोसौं मात न तात तन। गात सुरंगरि याह॥
यों जोवन अथ्थिर रहै। अंब कि अंजुरियाह॥ छं० ॥ ४४॥

साटक॥ जाने मंदिर हार चार चिहुरा वाढ़ंत चित्तानलं॥
जाती फुल्लय [1]पंक जस्य कलया, कंदर्प दीपं प्रभा॥
भंकारे भ्रमरे उडंत बहुला, फुल्लानि फुल्लंतया॥
सोयं तोय संजोय भोग समया, प्राप्तवसंते छबी॥ छं० ॥ ४५॥

संयोगिता वचन (निज पण वर्णन)।

कुंडलिया॥ कहि सजोगि सुनि बत्त इह। मरन सरन मुहि एक॥
किम अनि रावह लभ्भिहै। दुल्लह जनम बिसेष॥
दुल्लह जनम बिसेष। लज्ज सिंगारम थक्की॥
बाहियवत चहुआन। आस सासा जिय रुक्की॥
बर गुरुजन बिसाहनौ। हिंदु हद बद्दह हियौ॥
सुक जाई सवरीस। उभैं पच्छै श्रुति कहियौ॥ छं० ॥ ४६॥

साटक॥ इंद्रो किं अलि अन्यईय अनयो, चक्की भुजंगा सुरं॥
चच्छी चारु विचार चारु भंवरे, चिंचीनि बंका करे॥
तस्थानं कर पाद पल्लव वसा, बल्ली वसंता हरे॥
चतुरे तव चतुराइ आनन रसा, सा जीव महना वरे॥ छं० ॥ ४७॥

दूहा॥ ग्रभ्भ आइ पहुपंग कै। बर चहुआन सु लेषि॥
सुद्धि नहीं किर बोलु तुहि। रन षत्तह करि देषि॥छं०॥४८॥

* यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है।

(१) मो.-चम्पकस्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्लोक ॥ संबादेव विनोद्देव । देव देवान रच्छितं ।
अनुप्राने प्रयाने वा । प्रानेस ढिल्लीश्वरं ॥ छं० ॥ ४९ ॥
दूहा ॥ देहि सही संजोगि दै । निकटति पंग कुमारि ॥
जुग्गिनिवै जीवन मरन । लै अलि अब्ब विचार ॥ छं० ॥ ५० ॥

दूती का निराश होकर जैचन्द से संयोगिता का सब हाल कह सुनाना ।

सुनत सहचरी पुत्ति वच । बिनसच पुत्ति उदास ॥
उत्तर दीन सु उत्तदिय । पंग नरिंदह पास ॥ छं० ॥ ५१ ॥
दुत्तिन उत्तर उत्तरिय । बुद्धि बंध परमान ॥
नृप आगे बढ्ढिय न कछु । उत्तर दियौ न आनि ॥ छं० ॥ ५२ ॥

संयोगिता के हठ पर चिढ़ कर जयचन्द का उसे गंगा किनारे निवास देना ।

सहचरि पंग नरिंद सजि । कहिय आइ अलि जाइ ॥
बर संजोगि न मानई । चित्त करहु समझाइ ॥ छं० ॥ ५३ ॥
तब झुकि पंग नरिंद ने । तट गंगा किय ग्रेह ॥
कै बुड्डवि जल मझि परै । कै नैन निरष्षे देह ॥ छं० ॥ ५४ ॥
षोडस दान समान करि । दीने दुजवर पंग ॥
घनं अनष चहुआन कै । रष्षि सुरी तट गंग ॥ छं० ॥ ५५ ॥

गंगा किनारे निवास करती हुई संयोगिता को पाठिका का योग ज्ञान उपदेश ।

झुकि तकिए गंगा तटह । रचि पचि उंच अवास ॥
चहति गहौ चहुआन कौ । मिटै बाल उर आस ॥ छं० ॥ ५६ ॥
भुजंगी ॥ किए गंग तट्टं अवासं संजोगी । रही सातषन्ने रु छंडी सभोगी ॥
वसंतारिवासं दई सत्त दासी । बीयं बंभनी मद्द नादीय पासी ॥
छं० ॥ ५७ ॥
तियं पान पानी सयं दुद्ध धारै । करै व्रत बाला रहीता अधारै ॥
करै जोग ध्यानं सलेषं अलेषं । सोइ सुप्पनं चित्त चौहान देषं ॥
छं० ॥ ५८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिरै पंषिनी जीव जा ज्यों प्रमानं। इकं घट्ट ध्यानं धरै चाहुआनं॥
दलं पुब्ब सेतं अवं छन्न राजै। जदं ताव द्वारे सिंघारेज साजै॥
छं० ॥ ५९ ॥

दलं रत्त तायं गुनं होइ जब्बं। तवे नीद आलस्य आवै जु सब्बं॥
दलं दष्षिनं रूप हब्बी प्रमानं। तहां क्रोध उप्पन्न सो मूढ़ जानं॥
छं० ॥ ६० ॥

दलं ता बनै रत्ति नीलं बरानं। तहां पत्त उग्गं मनं जंम रानं॥
दलं पच्छिमं स्याम वर्णं विराजै। तहां हास उग्गै विनोदंत साजै॥
छं० ॥ ६१ ॥

दलं वाय कोनं नभं रंग साजी। तहां चिंति चितं उचाटं विचारी॥
दलं उत्तरं पीत छन्नक लज्जी। तहां भोग सिंगार कंचित्त भज्जी॥
छं० ॥ ६२ ॥

दलं गौर छन्नं इसानं जु होई। तहां लज्ज संका सु संगी सजोई॥
संधी संधि छन्नं मनं मद्द होई। तहां रोग चिंता चिदोषं सलोई॥
छं० ॥ ६३ ॥

इसो अंबुजं सास मन्नं बनाई। तहां मर्द अंसो सुअं लोक पाई॥
कहै बंभनी भोग संजोग सिष्षी। तहां गेन बंधं स्वयं जोति लष्षी॥
छं० ॥ ६४ ॥

संयोगिता का अपना हठ न छोड़ना।

चौपाई॥ तब इक दिन इम बंभनि बोलिय। सुत्तिय मन चहुआन संजोंलिय॥
कै चहुआन ग्रहौं कर झल्लिय। ना तरु छत संजोग सु हल्लिय॥
छं० ॥ ६५ ॥

सुनि फुनि राज बचन इम जंपै। थर हर धर दिल्लिय पुर कंपै॥
ज्यों रवि तेज तुच्छ जल मोनह। पंग भयं दुज्जन भय छोनह॥
छं० ॥ ६६ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके संजोगिता नेम आचरनों नाम पचासमो प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥ ५०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ हांसीपुर प्रथम जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(इक्यावनवां समय ।)

दिल्ली राज्य की सरहद्द में कन्नौज की फौज का उपद्रव करना।

दूहा ॥ ढुंढि फौज जैचंद फिरि । बर लभ्यौ चहुआन ॥
चंपिन उप्पर जाहि बर । रहै ठठुकि समान ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ मास एक पहुपंग । फवज आहट्टि सु पुच्छी ॥
ढीली तें पच कोस । रंक लुट्टी गहि लच्छी ॥
फिरि आए न्रप पास । देस दोऊ अरि बस्से ॥
राह रूप प्रथिराज । जग्गि पंगह गहि गच्छे ॥
न्निम्मान भान कूरंभ भुज । हांसीपुर न्रप रष्षियै ॥
सामंत सबै कै मास बिन । दुज्जन मुष्ष सु दिष्षियै ॥ छं० ॥ २ ॥

पृथ्वीराज का हांसी गढ़ की रक्षा के लिये सामंतों को भेजना।

हांसीपुर सामंत । कन्ह रष्यौ परिमानं ॥
रष्यौ भीम पुंडीर । सलष रष्यौ सुत भानं ॥
रष्यौ जैत पँवार । कनक रष्यौ रघुबंसी ॥
रष्यौ देवह क्रन्न । रष्षि उद्दिग क्रन गंसी ॥
वग्गरी राव रष्यौ न्रपति । रा चामंड सु रष्षियै ॥
सामंत स्हर तेरह चिगढ़ । गोरो मुष दह दिष्षियै ॥ छं० ॥ ३ ॥

हांसिपुर का मोरचा पक्का करके पृथ्वीराज का शिकार खेलने को जाना।

दूहा ॥ न्रप आषेटक मंडि कै । ढिल्ली रषि कै मास ॥
पंच पंच सामंत सह । जुग्गिनि पुरह अवास ॥ छं० ॥ ४ ॥
ढिल्ली वै आषेट वर । पहुपंगनौ जु चास ॥
नैर सु रष्षी सेन सह । न्रिप हांसी पुर पास ॥ छं० ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ चढ़ि चहुआन नरेस। भंजि मैवास सबै बर ॥
गुज्जर गोरी पंग। देस दच्छिन सु पत्ति धर ॥
विषम वाप ज्यों तूल। भूल सब अरिन उड़ाइय ॥
बीर भोग बसुमती। बीर रस बीर अघाइय ॥
चामंड राव गोरी दिसा। भोज कुँअर ढिल्ली करी ॥
सामंत सूर असिवर बलह। हांसीपुर अग्रह धरी ॥ छं० ॥ ६ ॥
चहुआना समसूर। सबै सामँत धरिवारं ॥
सगपन सम जुत लाज। समै सामँत पुब धारं ॥
आदर बर चहुआन। हथ्थ अप्पे सुरतारं ॥
हंस किरनि सम राज। राज सोभै हज्जारं ॥
आसनी सीस हांसी पुरह। बर बरषै सुरतान दिसि ॥
सत पच सूर संग्राम रबि। सो नतु दै दैही प्रहसि ॥ छं० ॥ ७ ॥

बलोच पहारी का शहाबुद्दीन के साथ हांसी गढ़ पर चढ़ाई करने का षड्यंत्र रचना।

हांसीपुर सामंत। सुनिय बालोच पहारी ॥
है मारू पतिसाह। तेन वेगम पय धारी ॥
अति बलवंत बलोच। भेद दीनौ पतिसाहं ॥
हांसीपुर हिंदवान। देस अरि मिष्ट सुगाहं ॥
तुम हुकम जुद्ध इन सों करों। अरु वेगम सथ्थे सुभर ॥
मिलि सबै मंत तंतह करै। तौ कढ्ढै हांसी जु धर छं० ॥ ८ ॥
दूहा ॥ हम भुमिया भुमवट करहिं। तुम सहाय हम भीर ॥
सब षंधार बलोच मिलि। षनि कढ्ढे ग्रह तीर ॥ छं० ॥ ९ ॥

पृथ्वीराज का एक वर्ष अजमेर में रहना।

इक बरष प्रथिराज बर। रह्यौ ग्रेह तिप थान ॥
चावद्दिसि धर भुगवै। बर इच्छा धर भान ॥ छं० ॥ १० ॥
घर बीतिय मत्तिय छुरी। घर नागौर निधान ॥
ज़िन भुज्जन ढिल्ली धरा। ते रष्ये परिमान ॥ छं० ॥ ११ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलोच पहार का पत्र पा कर शहाबुद्दीन का प्रसन्न होना ।

कवित्त ॥ यों चाहैं न्टप सूर । चंद चाहै चकोर मुष ॥
बूड़त नाव सु कीर । हथ्थ वोहिथ्थ बीर रुष ॥
सूकत नाजह मेघ । प्रज्ज सारी अभिलाषै ॥
आहृत तत्त अंतरे । बाल संमृत गुन चाषै ॥
देषियै दुनौ चहुआन मुष । लज्ज पत्ति परबत सु गुर ॥
मक्का चलाइ बेगम न्टपति । तत्त कथा आहृत्त सुर ॥ छं० ॥ १२ ॥

शहाबुद्दीन का अपनी बेगमों को मक्के को भेजना ।

भुजंगी ॥ सयं सत्त बेगंम दीनी नरिंदं । तिनं लज्ज पानी मुषं मेछ इंदं ॥
महं बद्धि डड्ढी लजं मुष्ष राची । दियौ षान निसुरत्ति जा मुक्ति जाची ॥
छं० ॥ १३ ॥
मियानेति पन्नी किरं रान भट्टी । जुलाची चिकत्त विराजी सु घट्टी ॥
महं माहु मंती सु सामंत ध्रम्मं । दिये साहि गोरी सकं बीर क्रम्मं ॥
छं० ॥ १४ ॥
घनें हेम छूनं विभूती निनारी । तिनं देषि दुब्बे र ग्रब्बं प्रहारी ॥
मयं मोह मक्का तिनी जात मन्नी । वियं ग्रेह क्रम्मं क्रमं जात छिन्नी ॥
छं० ॥ १५ ॥

हांसीपुर में उपस्थित पृथ्वीराज के सामंतों का वर्णन ।

मोतीदाम ॥ मयं हत मध्य महा रस वान । उयौ जनु चंद कलानि पिछान ॥
हस्यौ नर वाहन नाग नरिंद । सु मोतीयदाम पयं पय छंद ॥
छं० ॥ १६ ॥
रहे बर सूर कलानिधि राज । मनों न्टप तेज उदै गिरि साज ॥
रहै अरि आसिय आसय सूर । मनों पवनंसुत पब्बय मूर ॥
छं० ॥ १७ ॥
रह्यौ बर बीर सु चामँडराइ । मनों सत पुच तिनं ध्रम चाय ॥
रह्यौ बर बीर चंदेलति सूर । अरी घन बाहन ज्यों नद पूर ॥
छं० ॥ १८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रच्यौ रजि सारँग सारँग गौर। सु रष्षन कों छिति पचन मौर ॥
महं गुर जादव जाम प्रमान। रहे ग्रहि आसिय सूर सुजान ॥
छं० ॥ १९ ॥

सु मोरिय सादल वीर विवाह। अरी दल चंपन कौ ससि राह ॥
वरं इत दाहिम देव प्रमान। .... पारथ के उनमान ॥
छं० ॥ २० ॥

धनी धर धार धराहर पान। सु विक्रम भोज तनें उनमान ॥
षिची वट षीचिय राव प्रसंग। ([1]च) मरावली बंधन जोति अभंग॥
छं० ॥ २१ ॥

बलोच पहार का सांक्षिप्त वर्णन।

बली इत वाह स जोवनराज। जिनं गर दिल्लिय की धर लाज ॥
न्रनाहन साह सु मंचिय एक। मनों बल भीम अहत्तय तेक ॥
छं० ॥ २२ ॥

सतं बर सामँत मध्य सु टारि। रहे बर आसिय साहन च्यार ॥
तिनं मधि बंसिय सक्क सहूर। तिनं उठि भारथ कंदल भूर ॥
छं० ॥ २३ ॥

उभै मुर मध्य सु राजन बीर। प्रषें सुन अष्षि न लिंग्रह चीर ॥
तिनें न्रप टारिय तेसम अष्षि। सु रष्षिय राजन आसिय पष्षि ॥
छं० ॥ २४ ॥

साटक ॥ राजं जा न्रप राज राजत समं, दिल्ली पुरं प्रासनं ॥
दुर्जोधन सम मान भीषम जुधं, बुद्धंतयं जोवनं ॥
निर्जेयं च चिकाल वधनं वधं, गोरेनि भा [2]सेसयं ॥
सोमिचं च सषा वचंन गुरयं, चेवा गुरं चे सषं ॥ छं० ॥ २५ ॥

वलोच पहार का आसीपुर में स्थानापन्न होना।

कवित्त ॥ तिन तुरंग गज भंजि। जंग संभरि उद्धारं ॥
तिन प्रथिराज नरिंद। वीर लभ्यो नह पारं ॥
ते रष्षे आसी नरिंद। चिय हार सु चंगे ॥

(१) (च) पाठ अधिक है। (२) कृ.-निभा संसय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विधि विधिना परिमान । दैव देवा दिसि संगे ॥
सुध मध्य विषम धियपत्ति न्रप । परषि रह्यौ ढिल्ली न्रपति ॥
अग्गर सु सकल सुरतान की । दिपति दीप दिव लोक पति ॥ छं० ॥ २६ ॥

बलोच पहार का शाही बेगमों के लिये रस्ता देने को पज्जूनराय से कहना और रघुवंस राम का उससे नाही करना ।

मध्य पंथ संभरिय । चलन वेगक अधिकारिय ॥
मिलि बलोच पाहार । राव चामंड सु धारिय ॥
जु कछु भेद संग्रह्यौ । दियौ तिन भेद प्रमानं ॥
विन अग्या सामंत । जग्गि लग्गिय आपानं ॥
बरजए राम रघुबंस गुर । गामी बल लग्गा विहसि ॥
पज्जूनराव पावस पहर । अमर मोह भूले रहसि ॥ छं० ॥ २७ ॥
दूहा ॥ सो नागौर सु रष्षि न्रप । अप दिल्ली पुर पास ॥
न्रप अग्या बिन सूर भर । करिग अहत्त सु वास ॥ छं० ॥ २८ ॥

बड़े साज बाज के साथ बेगम का आना और चामंडराय का उसे लूटने की तैयारी करना ।

कवित्त ॥ चढ़ि मक्कां बेगंम । साहि जननी अधिकारिय ॥
अति सु भ्रम्म माया न । क्रंम विग्यान विचारिय ॥
अट्ठ लष्ष हाट्टन । षट्ट विय द्रव्य रजंकिय ॥
सो हथ्थी बर बाज । जाइ पंथह सा थक्किय ॥
संभरि सुकान चामंड न्रप । लच्छि लोभ षल मत्त सुनि ॥
बरजयौ बीर रघुबंस नर । तौ पनि चढ्यौ अभ्भ गनि ॥ छं० ॥ २९ ॥

बेगम के पड़ाव का वर्णन ।

साटक ॥ पासं साइर भार मध्य सघनं, पानीय मिट्ठिं गुनं ॥
एकं रूपय रेष साहस विधिं, रम्यं हरम्यं तलं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानिज्जै बन हंस मग्ग चकिती, नीरा वराधिं गुनं ॥
साते तेज फिरस्त अंग समयं, श्रेयं सु वेगम सुभं ॥ छं० ॥ ३० ॥

बलोच पहारी का सामंतों के पास जाकर शाह का वर्णन करना।

कवित्त ॥ पाहारी बल्लोच। पास सामंत सपन्नौ ॥
साष ध्रम्म सुरतान। भेद करि भेद सु दिन्नौ ॥
है आमिष्ट सुवास। तमकि सब बीर सु हल्लिय[१]
भर गोरी सुरतान। संग षुरसान सु चल्लिय ॥
बर उमगि लच्छि गोरी ग्रहै। हों षंधार अगियान बर ॥
सोधीर कोन चहआन कौ। लोइ लंक लुट्टै सधर ॥ छं० ॥ ३१ ॥

सामंतों का रात को धावा करके बेगम को लूटना।

तब सामंत सु तक्कि। चूक चिंतिय सब धाए ॥
अड्ड रयनि परि सोइ। जोंर हिंदू भर आए ॥
ग्रहि वेगम सब सथ्थ। लुट्टि लिय षास षजीना ॥
भजि बलोच केइ झुझ्झि। सु बर रन्नी वह दीना ॥
बुंबार सद्द दस दिसि भइय। अन चिंतत अनवत्त इय ॥
दैवत्त गत्त अैसी हुइय। लहिय 'घत्त रतवाह दिय ॥ छं० ॥ ३२ ॥
दूहा ॥ इह कहंत पुक्कार वर। पाहारिय सौं षेद ॥
वेगम लुट्टि नरिंद भर। लूटि लच्छि भर भेद ॥ छं० ॥ ३३ ॥
कवित्त ॥ पज्जूना कूरंभ। सबै सामंत हटक्किय ॥
सब अभंग सामंत। अग्गि वन जग्गि भटक्किय ॥
बारह षान बलोच। कंध संगह दिषि आइय ॥
बिन अग्या प्रथिराज। मुक्कि हांसीपुर धाइय ॥
उत्तर सुमग्ग वंधौ विषम। अड्ड सेन उप्पर परिग ॥
वेगंम सुट्टि वंधिप सयन। लच्छि अमग्गत सह भिरिगि ॥ छं० ॥ ३४ ॥
दूहा ॥ अचरज सव सामंत कौं। कहि अव गुज्जर राम ॥
जनति सुबर सुलतान की। अरु भर अवधह वाम ॥ छं० ॥ ३५ ॥

(१) ए.- पत्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिन पुच्छै बड़ गुज्जरह । चूक कर्‌यौ सामंत ॥
तिन सों ए बत्ती कही । गुन में दोस दियंत ॥ छं० ॥ ३६ ॥

बेगम के सब साथियों का भाग जाना और बेगम का सामंतों से प्रार्थना करना ।

कवित्त ॥ भग्गा बर सब सथ्थ । रहीं बेगम अधिकारिय ॥
मृतक अंग संग्रह्यौ । सस्त्र किन ग्रहि न हकारिय ॥
बार बार दिषि समुष । चीर द्रुपदि ज्यों षंचत ॥
उहित सद्द गोव्यंद । इहित षुद्दाय सु उच्चत ॥
अल्लह रु राम इक्कै निजरि । विपष बंध बंधे चलहि ॥
साध्‌ंम पंथ जू जू कियो । मुगति पंथ एकैं षुलहि ॥ छं० ॥ ३७ ॥
मुगति पंथ नह भिन्न । एक पंथं अधिकारिय ॥
एक नरक संग्रहै । एक मुक्तिय सु विचारिय ॥
अंत हरुअ है तिरै । क्रम्म भारो सो बुड्डै ॥
हक्क अंस संग्रहै । अहक सा पुरिसह छुड्डै ॥
संसार सकल बुड्‌यौ फिरै । कहै बंध बंध्यो न किहि ॥
बुड्डै सु इक्क सारंग सुक । सु बुधि बुद्ध तत्तह लहहि ॥ छं० ॥ ३८ ॥
चौपाई ॥ असु सारंग पत्तियै बंधि । उड़ै साष है राषै संधि ॥
यों न विचारि सु चामंड राइ । मेछ क्रम्म लग्गे गुन चाइ ॥
छं० ॥ ३९ ॥

धन द्रव्य लूट कर चामंडराय का हांसीपुर को लौटना और बेगमों का शहाबुद्दीन के यहां जा पुकारना ।

कवित्त ॥ लूटि सबर चतुरंग । लइय चामंडराय सधि ॥
मुक्कै कै संग्रहै । के विषंडें के विधि विधि ॥
के अहत किय लच्छि । केन लच्छीति समप्पिय ॥
फिरें सब्ब षुरसान । दिसा गज्जनीं स रष्पिय ॥
माबित्त मत्त कीनी नहीं । हैगै विधि लग्गे विषम ॥
चामंडराइ दाहरतनो । मत मंची कीनों सुषम ॥ छं० ॥ ४० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपाई ॥ तज्जि गाम लुट्टिग बर संगी। हय मिष्टन सब सस्त्र सुरंगी ॥
हांसियपुर फेरिय सुरयानं। पुक्कारी गोरी सुरतानं ॥ छं० ॥ ४१ ॥
दूहा ॥ हीन बदन पत्ती तहां। जहँ गज्जनी सहाब ॥
सुद्धि बुद्धि पुच्छिय सकल। विवरि देत सब ज्वाब ॥ छं० ॥ ४२ ॥

बेगम का शाह के सुखजीवी सेवकों को धिक्कार देना।

साटक ॥ ऐ गोरी सुरतान साहिब बरं। साहाब साहाबनं ॥
जैनं जीवत तस्य सेवक हतं। मानस्य मर्द्दं जगं ॥
बीयं जाचत अर्थ बीय घनयो। धन पोपि जीवी धिगं ॥
धिगता तस्यय सेवकाय वरयं। ना दीन सामानयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
अरिल्ल ॥ राजा षंडन मान प्रमानं। अग्या भंगन तस्य निधानं ॥
सो न्रप मृत्यक मृत्य समानं। आन सुनत सेवक्क न मानं ॥ छं० ॥ ४४ ॥
दूहा ॥ बिप्प सु षंडन वेद बर। नर षंडन निर ग्यान ॥
त्रिय षंडन इह मैं सुन्यौ। धिग जोवन सुरतान ॥ छं० ॥ ४५ ॥

माता के विलाप वाक्य सुन कर शाह का संकुचित और क्रोधित होना।

दूहा ॥ पातिसाह श्रवनन सुनी। जंपी मात निधान ॥
मैं ग्रब्भह झुझ्यौ धऱ्यौ। सुंठिन पट्ठी षान ॥ छं० ॥ ४६ ॥
कवित्त ॥ धरत ग्रब्भ दस मास। उदर भोगवै दुष्ष तन ॥
सीत जाल बर उष्ण। सवर बरिषा सुमत्त मन ॥
ता जननी दुष देइ। पुत्र ग्रब्भं अधिकारिय ॥
ताहि पुत्र कों गत्ति। न साहि निहचै विचारिय ॥
साम्रत्य काल बंधेति न्रक। कहत नयन गद गद बयन ॥
कहतें सु बचन आवै नहीं। दिन विवान देषे सुपन ॥ छं० ॥ ४७ ॥
दूहा ॥ जाचंग्या प्रति दीन सों। करत सु देखी मात ॥
सुनि गोरी सुरतान कौ। भय तामस तन रात ॥ छं० ॥ ४८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहाबुद्दीन का अपने दरबारियों से सब हाल कहना।

गाथा ॥ सुनि गोरी सुरतानं। सुनि साहाब सूर सब्बानं ॥
जा जीवत धरवानं। भुग्गै को तास अप्रमानं ॥ छं० ॥ ४९ ॥
अति आतुर अप्पानं। षानन पान षाइयं पानं ॥
हियै धकि धकि लग्गि कंपानं। दीय षबरि सबै फुरमानं ॥
छं० ॥ ५० ॥

पद्धरी ॥ सुनि श्रवन सूर साहब साहि। धकधकी लग्गि रस बीर छाहि ॥
प्रज्जरे रोस द्रिग रत्त कौन। सीची कि अग्गि घृत होम दीन ॥
छं० ॥ ५१ ॥
तमतमे तेज वर भर करूर। बद्दरन फट्टि किरनें कि सूर ॥
विफुरैं हथ्थ रस बीर पग्ग। लंघने सौंह हयवार तग्ग ॥
छं० ॥ ५२ ॥
फुरमान फट्टि पुरसान षान। बज्जे व सोर सुरवर निसान ॥
रत्तरे रषत उट्ठे प्रमान। भद्दव कि मेघ घन रंग आन ॥
छं० ॥ ५३ ॥
तत्तारषान सुविहानं मीर। इहि रत्ति मंड बैरंम तीर ॥
मंची जु मंच जेमंत रूप। बोलियै सद्दी सुविहान भूप ॥
छं० ॥ ५४ ॥
दरबार भीर गजवाज लोइ। पावै न मग्ग भर सुभर कोइ ॥
षोलिथहि षग्ग हयगय पलान। किरनानि किरन दुरि रह्यौ भान ॥
छं० ॥ ५५ ॥
बंधौं समेत सामंत सूर। सुविहानं साहि बोल्यौ करूर ॥
छं० ॥ ५६ ॥

शहाबुद्दीन का 'माता' की मर्य्यादा कथन करके दिल्ली पर चढ़ाई के लिये तैयारी का हुकम देना।

कवित्त ॥ हिरनंकुस पाताल। जाय षग जग मंडाइय ॥
सोवनपुर सुर लूटि। पकरि चिय काया धाइय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारद आइ छंडाय। भयौ प्रहलाद पुच तस॥
तिहि जननी संग्रहन। सुने उर मद्धि रष्षि गस॥
मघवान सहित दिगपाल दस। मात वयर कज भंजि जिम॥
सुरतान कहत चहुआन भर। हौं पनि गंजहु अब्ब इम॥ छं०॥ ५७॥
थान थान फुरमान। फट्टि बंधन हिंदू दिय॥
विधिना सो निम्मयौ। मेटि सक्कै न दिषौ दिय॥
इला नाम धरि हियै। मेछ षुरसानह जोरिय॥
ज्यौं बराम उच्चरै। सेन वोरन गढ़ तोरिय॥
हक हलाल बोलै न मुष। काफर एधर बर भई॥
दह बड़े सूर हम साहि कर। तो सलाम कर सुब्भई॥ छं०॥ ५८॥

तत्तार खां का शाह की आज्ञा मान कर मदद के लिये फरमान भेजना।

दिष ततार दह करि। सलाम उच्चार वरज्जिय॥
रहि न बोल ज्यौं साहि। दिया उच्चार जु हक्किय॥
षां ततार वरजे निसान। आसन उर पानं॥
जु कछ मत्त मत्तियै। हुकम दीना सुरतानं॥
मक्का मुकाम पीरान की। करिव आन बल बंधियै॥
मादरं पिदर मानें न दर। निमक हलाल न संधियै॥ छं०॥ ५९॥

दूहा॥ थान थान फुरमान फटि। बंधन हिंदु नरिंद॥
दै दुबाह सों न्रिम्मयौ। को कहै कविचंद॥ छं०॥ ६०॥
कोक कढ़ै विधिना लिषी। आज साह बल तेज॥
मानों सात समुंद ने। तज्जि म्रजाद अमेज॥ छं०॥ ६१॥
मरजादा सत्तों समुद। अमित उलंघी आज॥
मानों घन के देव दुति। नाग विरोधन पाज॥ छं०॥ ६२॥

शहाबुद्दीन की दृढ़ता का बखान।

कवित्त॥ नाग भूमि सिर तजै। चंद छंडै सुचंद कल॥
कलिन भान उग्गई। पथ्य मुक्कै सु वान छल॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रघु सुग्यान छंडई । भीम छंडै बल बंधै ॥
रूप छंडि मारह । कंद छंडै हर संधै ॥
मुक्कै जु जोग जोगिंद ऊ । कर फिरस्त छंडै गुनह ॥
इत्तने धीर छंडै जर्दाप । साहि न कस मुक्कै मनह ॥ छं० ॥ ६३ ॥

दूहा ॥ मन मुक्कै सुक्कैं सुब्रत । ब्रत गोरी सुरतान ॥
सकल सेन सज्जे न्रपति । सुनहु तौ कहूं प्रमान ॥ छं० ॥ ६४ ॥

शहाबुद्दीन का राजसी तेज वर्णन ।

सुनिय मीर मीरन चवै । देषि सष्षिरह मीर ॥
जितौ कस्स सुरतान कौ । तितौ न दिष्यौ तीर ॥ छं० ॥ ६५ ॥

पद्धरी ॥ देष्यो न जाइ आलम अदब्ब । थरहरे मेच्छ षुरसान सब्ब ॥
कर जोरि जोरि सब रहे ठट्ट । उच्चरै सेन बोलंत गट्ट ॥
छं० ॥ ६६ ॥

उभ्भै सुमीर ढिग ढिग विसाल । बोलै न मुष्य सनमुष्य काल ॥
सुरतान निजरि बर भई ताम । दह बेर सूर बर करि सलाम ॥
छं० ॥ ६७ ॥

अंगुरी टेकि इल षां ततार । दह करि सलाम बोलयति बार ॥
जिय हुकम जोइ सो मोहि देउ । उच्चरौं मंत सोजीव हेउ ॥
छं० ॥ ६८ ॥

शहाबुद्दीन का अपने योद्धाओं की खातिर करना ।

दूहा ॥ चौसठि बेर सुद्दत्त बर । फेरि फेरि सुरतान ॥
सो पहराए मत्त गुर । दै किताब परिमान ॥ छं० ॥ ६९ ॥
दै किताब पहिराइ चर । नर नरपति मन साहि ॥
आसी पुर जो भंजई । इहै तत्त गुन आहि ॥ छं० ॥ ७० ॥

शहाबुद्दीन का अपने मंत्री से वीर चहुआन पर अवश्य विजय प्राप्त करने की तरकीब पूछना ।

सुन्यौ मंच मंची सुमत । कहत मंच सुरतान ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जौ अंगन प्रति भंजियै। लियें ग्रेह परिमान ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ पति प्रमान हक्करिय। करिय जंगम सु सत गुन ॥
अरि आवत संग्रहै। काल्ल चंपै सु काल मन ॥
अरि निद्दुर साहरी। सबल मंची इथ्थप्पन ॥
इतें होइ जो हथ्थ। अरिन ग्रह संच सकै धन ॥
जम जोति दून दह मंत गुन। सत्ति मस्सूरति बोलि बर ॥
तत्तार षान षुरसान पति। करों मंत जा लेय धर ॥ छं० ॥ ७२ ॥

राज मंत्रियों का उपयुक्त उत्तर देना।

न्रपति न्रपति जो होय। सोइ नह राज राज बर ॥
चपति ग्यान जो होइ। बेद सग्यान तत्त नर ॥
बेरं कोबिद अछरि। काम अचपतिय स सुंदरि ॥
इत्त न्रपति जो होइ। भए न्रप तौर समुंदरि ॥
तिहि कहे षान तत्तार बर। आसीपुर भंजन बलह ॥
ता पच्छ लगे ढिल्ला धरा। बैर वत्त बुझ्झै षलह ॥ छं० ॥ ७३ ॥

दूहा ॥ षां ततार जंपै सुबर। हम बंदे सु विहान ॥
जु कछु साह अग्या दियै। करें बनें हम्मान ॥ छं० ॥ ७४ ॥
सुने श्रवन तत्तार बच। हिंदवान लै जाइ ॥
मात रीस बेगम मिटै। सोइ सु लुट्टै जाइ ॥ छं० ॥ ७५ ॥

शाह का तत्तार खां से प्रश्न करना।

षां ततार वर वेन सुनि। दै आसन अरु पान ॥
जु कुछु मंत तुम उच्चरौ। सोइ करै सुविहान ॥ छं० ॥ ७६ ॥

तत्तार खां का आसीपुर पर चढ़ाई करने को कहना।

जवित्त ॥ करि सलाम तत्तार। मतौ सैमुह उच्चारिय ॥
लच्छि सुभर प्रथिराज। सबै हंसीपुर धारिय ॥
हसम हयग्गय मीर। सज्जि चतुरंग सेन बर ॥
मीर बँदा षुरसान। मुक्कि रहै अप अर धर ॥
सामंत बंध सुनि साहि बर। तब नरिंद अप्पन चढ़ै ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो मंति मंत बंधै न्रपति। क्त्ति बोलि [1]भर तर पढ़ै॥ छं०॥७७॥

हांसीपुर पर चढ़ाई होने का मसौदा पक्का होना।

षां हसेन आहत्त मन। सुमति कियौ परिमान॥
आसी पुर भंजन भरै। इह करि मंत निधान॥ छं० ॥ ७८॥

शहाबुद्दीन की आज्ञा।

कवित्त॥ रे अमंत तत्तार। मतौ जानै न प्रमानं॥
ए हिंदू हम बंधि। सीस लग्गै असमानं॥
हम दल भज्जत देषि। तुम्म गिनियै तिन मानं॥
अब हम बंचि कुरान। फतेनामा धरि पानं॥
पाषंड सस्त्र अग्गें छिपै। मैं भंजों दुज्जन अरी॥
चहुआन सेन हांसीपुरह। लुट्टि गाम उब्भा भरी॥ छं०॥ ७९॥

तत्तार खां की प्रतिज्ञा।

हांसीपुर पुर विपुर। करों सु विहान तेज बर॥
तो गज्जानिय सुद्ध। हांसि मंडौ जु अप्प धर॥
अरि भंजे तन भंजि। मार मारह करि मोरों॥
जौ बंधों सामंत। साहि तसलीम सु जोरों॥
ता दिवस षान तत्तार हों। धार धार चढ़ि उत्तरों॥
सुविहान आन चहुआन सों। जौन जुद्ध इत्तौ करों॥ छं०॥८०॥

शाही दरबार में बलोच पहारी का उपस्थित होना।

दूहा॥ पाहारी बल्लोच तहँ। करि सलाम सुरतान॥
हम बंदे हाजुर निजरि। दै हांसीपुर थान॥ छं०॥ ८१॥
कवित्त॥ सत्त बेर पाहरी। तेग बंधी जु अप्प कर॥
सब बद्धों सामंत। बौंटि षुरसान देउ धर॥
बान साहि साहाब। बीय सन मज्जिय अप्पिय॥
षां षुरसान ततार। षान विय सरद सु धप्पिय॥

(१) ए. को.-भरत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुरंग अनीं हिंद्र दिसा। बर गोरी सज्जिय सुबर॥
जुमा रत्ति ससि बंदि बर। चढ़े सेन सु विहान भर॥ छं० ॥ ८२॥

गजनी के राजदूतों का सिंध पार होना।

दूहा ॥ सिंधु सुक्कि गए दूत बर। तजि गोरी सुरतान॥
कै बिधि पवर्त चंपई। अवनी उनमी भान॥ छं० ॥ ८३॥

यवन सेना का हिंदुस्तान की हद्द में बढ़ना।

कवित्त ॥ कूच कूच उप्परे। षान षुरसान ततारी॥
हसम हयग्गय सूर। दुसह दुज्जन मक्कारी॥
दल बद्दल सु विहान। सूर पच्छिम दिसि उट्ठे॥
लज संकर गल बंधि। सिंघ मद नद्द सु छुट्टे॥
दिसि दुरग अभंग हांसीपुरह। सजिय सेन संमुह धवै॥
धर दहन बीर चहुआन की। हठ ततार संमुष चवै॥ छं० ॥ ८४॥

तत्तार खां और खुरसान खां की अनी सेनाओं का आतंक और शोभा वर्णन।

चोटक॥ चढ़ि षान ततार सुरंग अनी। द्रिगपाल चमक्कि निसान धुनी॥
पुर आसिय फेरि सुरंग ग्रसै। जनु भांवरि भान सुमेर लसै॥
छं० ॥ ८५॥

दिसि रत्त रपत्त उठंत बरं। मनों बद्दर भद्दव के दुसरं॥
गुर गोरिय साहि सु संधि ग्रसी। सुनि राज नरिंद नरिंद रसी॥
छं० ॥ ८६॥

चमके चव रंगनि रंग दिसा। सु मनों जमकें जमजोति जिसा॥
पल की पल संकर अंदनता। सुमनों सुर दादर के जमिता॥
छं० ॥ ८७॥

रत रत्त मयूष इला चमकै। मनु इंदवधू नभ तें दमकै॥
चहुआन सुनी सुरतान दिसं। बढ़ि आज अवाज सुराज रसं॥
छं० ॥ ८८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनके गुन वीर सुमंत चवै। तिनके बल देवन तत्त भ्रमै॥
जमसे दरसे जम ते गरुग्रं। सुरतान तिपास रहे धुरयं॥छं०॥८६॥
षुरसानय षानति अग्ग अनी। तिनके बर पासन राज यनी॥
ढलकें ढल ढाल ढलक्कि लता। तिर साइर काइर तं कलिता॥
छं०॥ ९०॥
अब कै न्वप गोरिय साहि बरं। सुमनों घन भूमि उतार उरं॥
चढ़ि चल्लिय उग्गि कला दुसरी। न्विप राज नरिंद सु जुद्ध हरी॥
छं०॥ ९१॥
सब सेन गरिष्ठ इतौ बलयं। न्टप राजन राजन सो कलयं॥
रन मुच्छ उद्दें वर कंक लसी। दिसि बंक विराजत पच्छ ससी॥
छं०॥ ९२॥
इतने गुन चार चरंत करं। उतरे जमरोज नरिंद घरं॥
जम रोज तजै ग्रह सिंह बरं। चहुआन सुनी रन राज उरं॥
छं०॥ ९३॥

तत्तार खां का पड़ाव दस कोस आगे चलाना।

कवित्त॥ कूंच कूंच उप्परे। राज अग्या नन मानै॥
सुबर जूह सुरतान। सैन चावद्दिसि बानै॥
उगन हार ज्यों प्रात। लेन उग्यौ बर गोरी॥
तिमरलिंग जुलिक्कन्न। राज रजक्कन्न सु जोरी॥
धनि धंनि धंनि गोरी सु बर। बलभग्गा भग्गौ न बल॥
आसीस भंजि ढिल्ली पुरां। नब लग्गों मेवात षल॥ छं०॥ ९४॥
दूहा॥ जानि सकल गोरी सुबर। गरुअ मत्ति तत्तार॥
ते भारथ्थ सु ब्रत्त पति। पत्ति ना लभ्यौ पार॥ छं०॥ ९५॥
षां तत्तार सुरतान बर। नर नाइक सुरतान॥
दस कोसे आसौ हुतें। आय सपत्ते थान॥ छं०॥ ९६॥

शाही सेना का आसीपुर के पास पड़ाव डालना।

कवित्त॥ आय सपत्ते थान। बीर आसी गिरद्द करि॥
सरद काल ससि मित्त। परी पारस सुमंत धर॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुरि चंद बरदाय। साह लग्गा कम धारिय॥
चावद्दिसि रूंधये। मंत पावै न विचारिय॥
गढ़ रुक्कि सज्यौ साहस बली। सेन सजत लग्गी घरी।
चामंडराइ दाहरतनौ। अमर मोह भूली सुरी॥ छं०॥ ९७॥

शाही सेना का हांसीपुर को घेरना।

चढ्यौ षान तत्तार। सोर हल्लें द्रिगपालं॥
घुरि निसान धुनि पूर। नाद अंबर लगि तालं॥
पावस चंद सरद्द। घटा घुंमरि ज्यों घेरै॥
ज्यों अषाढ़ रति भान। धुम्म धुंधरि नन हेरै॥
गोरी सपन्न सज्जिय सुभर। ज्यों छयल्ल कुलटा सबसि॥
अवसान अचानक त्यों पुरह। हांसिय षान ततार ग्रसि॥छं०॥९८॥

मुसलमानी जातियों का वर्णन।

षां षुरसान ततार। बीय तत्तार षंधारी॥
हबसी रोमी षिलचि। इलचि षूरेस बुषारी॥
सैद सैलानी सेष। बीर भट्टी मैदानी॥
चौगत्ता चि मनोर। पीरजादा लोहानी॥
अन्नेक जात जानैति कुल। विरह नेज असि ग्रहि करद॥
तुरकाम बीच बल्लोच बर। चिंत पूर हांसी मरद॥ छं०॥ ९९॥

दूहा॥ सुनि अवाज निसुरत्ति षां। षां ततार षुरसान॥
वे रज गुर सम्हे सजिग। मचिग जुद्ध विरुझान॥ छं०॥ १००॥

यवन सेना की व्यूहरचना वर्णन।

कवित्त॥ षां ततार रुस्तम्म। वाम दष्षिन पष पंषी॥
षां निसुरत्ति पहार। उभै सेना पग लष्षी॥
षान षान षुरसान। चंच चव्हु रचि कसानी॥
कंगुरेस गष्षरह। जंघ मंडे दल भानी॥
षिलची षुरेस भट्टी विहर। पूंछ सु इन पच्छह सुबर॥
महनंग अंग मारुफ षां। छच सीस धारिय सुभर॥ छं०॥ १०१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

युद्ध वर्णन ।

हनूफाल ॥ परिधाय सूर प्रकार । पांवार वज्र सु भार ॥
कढ़ि षोलि षग्ग विहथ्थ । भारथ्थ ज्यों सुनि पथ्थ ॥ छं० ॥ १०२ ॥
षग षगन वाहै पंति । मनों बाज सेन कि पंति ॥
भारथ्थ कथ्थै जोति । असि अंग विद्धि विभोति ॥ छं० ॥ १०३ ॥
बजि गुरज बीर प्रहार । सँग देहि चौसठि तार ॥
दुहुं पास अंत रुरंत । गिध गिधी गिद्ध गहंत ॥ छं० ॥ १०४ ॥
तर बेलि चढ्ढि म्रनाल । मनु गहिय संस सिवाल ॥
तुटि मुंड तुंड सुभट्ट । मनु भग्गरं रचि नट्ट ॥ छं० ॥ १०५ ॥
रुधि छच्छ धर बर रुंड । पावक्क झर उठि कुंड ॥
कहि लेहु लेहु सु सूर । भारथ्थ बित्त करूर ॥ छं० १०६ ॥
षग झूर उठ्ठिक बार । झर गिद्धि सो पति पार ॥
परिरंभ रंभ स आइ । तन तनक तनक न पाइ ॥ छं० ॥ १०७ ॥
मुकि मुक्कि माननि जाइ । फिरि पियन दष्षिन आइ ॥
मिस हारि रंभ स अग्गि । इन सब मनोरथ भग्गि ॥ छं० ॥१०८॥
किं अगनि दझ्झै ताइ । तन धार धार सुलाइ ॥
बर बीर रोस सुगत्ति । तहां सोष इष्षि न मत्ति ॥ छं० ॥ १०९ ॥
दल सुभर अल्हन मझ्झि । जुरिभोम कन्ह अलुझ्झि ॥
उच्छरि अरी अरि भीर । चानूर मुष्टक बीर ॥ छं० ॥ ११० ॥
घरि पंच भिरि भारथ्थ । दिन अस्ति भूप न तथ्थि ॥ छं० ॥ १११ ॥

शाही फौज का बल कर के किले का फाटक तोड़ देना ।

कवित्त ॥ सुबर सूर सामंत । बीर बिरुझ्झाइ सु धाए ॥
नंषि कोट गढ़ ओट । कोट किप्पाट ढहाए ॥
सत छुथ्थौ सामंत । राम बुल्यौ रघुवंसी ॥
रे अभंग सामंत । साहि बंधों बल गंसी ॥
विना नृपति जो बंध । कित्ति चावद्दिसि चष्षै ॥
सार धार तन षंडि । बीर भारथ्थ न डुष्षै ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[1]नन तजौ मंत बल सत्त गहि। गरुअ ग्रब्ब षंडोति षग ॥
उच्चरै लोइ इत्तौ करौ। करौ सूर की रत्ति नग ॥ छं० ॥ ११२ ॥

चामुंडराय के उत्कर्ष वचन।

कवित्त ॥ विहसि राव चामंड। कहै रघुबंसराइ बर ॥
तुच्छ सेन सामंत। साहि गोरी अभंग भर ॥
दंति घात आघात। षग्ग मग्गह कट्टारिय ॥
गुरज बीर गोरीस। सेन भंभरि भर भारिय ॥
महनसी मेर मारू मरद। सरद तेज ससि मुष षुल्यौ ॥
पाहार बीर तूंअर उतंग। सार धार नां धर डुल्यौ ॥छं०॥११३॥

युद्ध होते होते शाम होजाना और युद्ध बंद होना॥

भिरिग सूर सामंत। ल,थ्थि आहुट्टि ल,थ्थि पर ॥
सघन घाइ आवत्त। मेर तत्तार होइ बर ॥
चढ़ि हांसीपुर सूर। षेत दुव्यौं न दीन दुहु ॥
उतरि मेर असि वरन। गहन जंपै न सिद्ध कहु ॥
वहु षग्ग सूर सामंत रन। भोरी षान षुरेस परि ॥
मिलि मेछ मेछ एकोन किहि। रहे सेन ठट्टे विहर॥ छं० ॥ ११४ ॥
समरि संग तत्तार। बज्जि नीसान षेत रहि ॥
हय गय रन [2]विच्छुरहि। रुद्र भूमिअ सु बीर बहि ॥
निसचर वीर [3]उभार। भूत प्रेतह उच्छव सुर ॥
बज्जि घाइ कहि उठत। नचै चौसट्ठि रंभ बर ॥
नारद नद नंदी सु बर। बीरभद्र सुर गान बर ॥
इन भंति निसा बर मुद्दरी। बर हर हर बज्जे ससुर॥ छं० ॥ ११५ ॥

प्रातःकाल होते ही पुनः युद्धारंभ होना।

चौपाई ॥ भयौ प्रात बंछित सामंतह। सुगध महिल ज्यौं बंछै प्रातह ॥
कन्ह नाह लोहान महा भर। रा बड़गुज्जर किल्हन सुभ्भर।॥छं०॥११६॥

(१) ए.-मन। (२) ए.-विछुर नाहिं। (३) ए.-उभारी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़ में उपस्थित सामंतों के नाम।

कवित्त ॥ बर षीची अचलेस। गरुअ गोयंद मह्नसी ॥
उद्दिग बाह पगार। नरा नरसिंघ समरसी ॥
उभै बंध मोरीय। राव रानिंग गिरेसं ॥
देव कन्न साषुलौ। जुद्ध पारथ्थ बिसेसं ॥
सलषान भीम पुंडीर भर। जैत पवार सु वग्गरी ॥
चामंड राइ कनक्क सुभर। रघुबंसी सिर पघ्घरी ॥छं०॥११७॥

दोनों सेनाओं में युद्ध आरंभ होना।

दूहा ॥ प्रात उदित घायन मिले। प्रात घाइ घरियार ॥
रोस लगे हिंदू तुरक। मनुं बज्जत कठतार ॥ छं० ॥ ११८॥

युद्ध का वर्णन और दस चोट में यवन सेना का परास्त होना।

भुजंगप्रयात ॥ असी अस्सि सस्त्रं बधी षान बल्लं।
सु षग्गं षिती पान सो बीर चल्लं ॥
चवै चल्लि चारं सबै रंग बीरं।
तजी गाभ बारं चढ़ी धार धीरं ॥ छं० ॥ ११९ ॥
अए अस्स अस्सं उपंमा प्रमानं ॥
मनो षेत षद्धै किसानं रिसानं ॥
मिलें स्हर धारं दलं मेल सानं ॥
परी जानि बुंदं समुद्रेन पानं ॥ छं० ॥ १२० ॥
तजे कोट षानं सबै स्हर घेरी ॥
मनों भाव रंभान सुम्मेर फेरी ॥
परें षग्ग जद्दों उजत्तौत सारी ॥
मनों देवलं बज्जि कंल पार पारी ॥ छं० ॥ १२१ ॥
घयं भेदि घायं अघायंत रासी ॥
निकस्सी परै अद्ध सा स्हर कासी ॥
कटे बंध काबंध सो बधं पारी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनो बद्धि विब्भाय भग्गी सु कारी ॥ छं० ॥ १२२ ॥
पयं भज्जि सो डाक ही षग्ग धारी ॥
मनों वामना रूप भै भीम भारी ॥
रूधी घट्ट ज्यों फुट्टि सन्नाह सारी ॥
तिनंकी उपम्मा कवीचंद धारी ॥ छं० ॥ १२३ ॥
मनो रंग रेजं ग्रहे रंग रारी ।
जलं जावकं सोभ पन्नार पारी ॥
हयं छिंछ उट्ठी रुधी छिंछ तारी ।
हथं वक्र ऊरड्ड दूअड्ड पारी ॥ छं० ॥ १२४ ॥
तिनंकी उपम्मा कवी तं कहाई ।
जलं जावकं पावकं को बुड़ाई ॥
ग्रही केस उड्डे उतंमंग पष्षी ।
तिनंकी उपम्मा कवीचंद अष्षी ॥ छं० ॥ १२५ ॥
मनों अप्प ग्रेहं अवानंति वारं ।
चली नभ्भ तें चंदनं सुक्कि धारं ॥
भगी घायनं भूमि भा प्रान पारं ।
मनों सिद्धि संमद्धि लग्गी अगारं ॥ छं० ॥ १२६ ॥
बजी घाय अद्घघाइनं ग्रीव पानं ।
फिरें केत रक्की जलं मभ्भिक्ष मानं ॥
उड़ी छिंछ सब्बैं दलं रुद्धि जस्सी ।
मनो दीपतो हिंदुनं हद्द कस्सी ॥ छं० ॥ १२७ ॥
षटं सत्त उभ्भै सुरं लोक बस्सी ।
फिरी फौज तत्तार की घाइ गस्सी ॥ छं० ॥ १२८ ॥

इस युद्ध में खेत रहे जीवों की संख्या ।

कवित्त ॥ अड्ड सेन अध परिग । परिग दंती सत एकं ॥
अयुत अयुत अस परिग । पयह को गनै असेकं ॥
दसत दून बानेत । घाय झोरी करि लिन्नै ॥
पंच पेंड़ पंचास । सेन भग्गा तिन दिन्ने ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पछ्छ पुंछ षान अलील तब। अति आतुर असिवर षरिय ॥
भग्गौ न मीर मो भीर सुनि। अब भंजो हिंदू ररिय ॥ छं० ॥ १२९ ॥

अलील खां का प्रतिज्ञा करके धावा करना।

सुनि सामंत निसान। षान अलील उभं भरि ॥
मनंहु अग्गि घन हत्त। आय डंडूर समंधरि ॥
डुंगोरी धर कोट। राज [1]अड्डो चहुआनी ॥
मो उभ्भै कुन सूर। भोमि विलसै सुरतानी ॥
इह कहिरु सेन अग्गें धरिय। जाय सूर मुष षग्गयौ ॥
तिन सार मार सामंत दल। पंच डोरि पच्छो गल्यौ ॥ छं० ॥ १३० ॥

दोनों ओर से बड़े जोर से लड़ाई होना।

दूहा ॥ तमकि सूर सामंत तब। झुकि लग्गे फिरि षग्ग ॥
लपट झपट ऐसी बहै। ज्यों [2]जज्जर बन अग्गि ॥ छं० ॥ १३ ॥

लड़ाई का वाकचित्र वर्णन।

विराज ॥ छुटे अग्गिबाजं, मनों नभ्भ गाजं। चढ़े सूर सूरं, नमे रंक नूरं ॥
छं० ॥ १३२ ॥
बहै बान भारी, मनों टिड्ढ चारी। दुती सोभ आनं, कबीका बषानं ॥
छं० ॥ १३३ ॥
दिसायं न्टमल्लं, मनो नाग हल्लं। परै वप्प घायं, मनों वज्र लायं ॥
छं० ॥ १३४ ॥
करै कूह कैकं, हुअं एकमेकं। वहै षग्ग धारी, अभूतं सरारी ॥
छं० ॥ १३५ ॥
होवै षंड षंडं, धरं रुंड मुंडं। बकै मार मारं, मनों प्रेत चारं ॥
छं० ॥ १३६ ॥
जुटै सूर हथ्थं, मनों मल्ल बथ्थं। परै भूमि सारं, मनों मत्तवारं ॥
छं० ॥ १३७ ॥

(१) को.-कृ.-अड्डी। (२) ए.-वज्जर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अए कन्ह षेतं, बधे बंध नेतं। छुटी अंषि पट्टी, मनों अग्गी छुट्टी॥
छं० ॥ १३८ ॥

षगे मग्ग चाहं, अरी वन्न दाहं। परे नाग ठानं, कलं कूट जानं॥
छं० ॥ १३९ ॥

रनं नेज ढल्लं, मनों केलि पल्लं। लोहानों अजानं, दुढ़े षान टानं॥
छं० ॥ १४० ॥

वहै संग भारी, निकस्से करारी। तिनं घाव सहं, करै कुंभ नहं॥
छं० ॥ १४१ ॥

जुरै चंद सेनं, कियं षंड जेनं। उठे छिंछ अंगं, मनों अग्गि दंगं॥
छं० ॥ १४२ ॥

दुती ओप जानं, प्रवारी प्रमानं। पऱ्यौ षान अल्ली, धरारं विहल्ली॥
छं० ॥ १४३ ॥

भगे साहि ठट्टं, गए दस्स वट्टं। भद्री षित्ति ताजं, दियं जित्ति बाजं॥
छं० ॥ १४४ ॥

सामंतों की जीत होना और यवन सेना का परास्त होकर भागना।

कवित्त ॥ भइय जित्ति सामंत। सेन भग्गा सुरतानं॥
अप्प सूर सब कुसल। षित्ति रष्पी चहुआनं॥
उभै सहस परि मीर। सहस इक बाज प्रमानं॥
परिय दंति सतएक। करिय अच्छरि बर गानं॥
जै जया सह आयास हुअ। घाव सूर झोरी धरिय॥
वित्तयौ कलह भारथ्थ जिम। कही चंद छंदह करिय॥ छं० ॥ १४५ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके हांसी प्रथम जुद्ध वर्णननं नाम इक्यावनवों प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ५१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ द्वितीय हांसी युद्ध वर्णन ।

(बावनवां समय ।)

तत्तार खां का पराजित होना सुन कर शहाबुद्दीन का क्रोध करके भांति भांति की यवन सेना एकत्रित करना ।

कवित्त ॥ हसम हयग्गय लुट्टि । लुट्टि पष्षर रषतानं ॥
तत्तारी षुरसान । हाम भग्गी सुरतानं ॥
सुनि भग्गा सब सेन । हाय करि पट्टि सु हथ्थं ॥
पुच्छि षबरि बर दूत । कहिय भारथ बत कथ्थं ॥
रगतैत नेन साहाब सजि । पैगंबर महमंद भजि ॥
फिरि सज्यो सेन भसुचित्त करि । हांसीपुर जीतन सु कजि ॥
छं० ॥ १ ॥

विअष्षरी ॥ सज्जिय सत संतं सुरतानं । दस दिसि धर दिन्ने फुरमानं ॥
रुम्म हरेव परेव परारिय । भर भंभर भष्षर भर भारिय ॥ छं० ॥ २ ॥
समरकंद कसकंद समानं । बलक बलोच तकी मकरानं ॥
कंदल वास अधम्म इलासं । रोही सोह उजब्बक रासं ॥ छं० ॥ ३ ॥
षूनकार ऐराक षंधारं । साहबदीन मिले दल सारं ॥
धुम्मर व्रन्न सिरै तुछ रोमं । जाति अनंत गिनै कुन भोमं ॥ छं० ॥ ४ ॥
घोरमुहा केइ सुष्षर क्रंनं । चष्ष करूर मुषं रत ब्रंनं ॥
इन सर कंध विबाह अजानं । दुअ दुअ दुम्मि भषै दिनमानं ॥
छं० ॥ ५ ॥

जानै धार अनी बथ मल्लं । जानि गिरब्बर सिष्षर चल्लं ॥
तानै सिनि गिनि जोर विभारं । गोंन चढ़ै जिन टंक अधारं ॥
छं० ॥ ६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंधे दो दो तोन जुआनं। तिन साइक सत सत्त प्रमानं॥
साबद बेधिय लाघव सारं। पंष हनै षह दिष्ट प्रहारं॥ छं०॥ ७॥

टारैं अनी अनी साइक्कं। मुंठि अभूल रनै चित किक्कं॥
मंद अहार सवै फल आसं। पारसि मझ्झ विवानि प्रहासं॥ छं०॥ ८॥

करै रगब्ब सरब्बर वानं। जानि कि व्रच्छ विहंग बुलानं॥
बंधिय जूसन सारषि गातं। जानि जुरी नव नाथ जमातं॥
छं०॥ ९॥

सजि पष्षर लष्षर है साजं। पंषधरी बर उड्डन काजं॥
गज घुंमर धज नेजर वानं। जानि कि भद्दव मेघ समानं॥ छं०॥ १०॥

करिय टमंक चल्यौ हय नादं। फट्टिय जानि समंद मजादं॥
तर झंगर गिरि पद्धर धारं। उड्डिय रेन डिगे द्रिग सारं॥ छं०॥ ११॥

धर धुंमर लगि अंमर थानं। सुनियै सद्द न दीसै भानं॥
है गै रथ दल अंत न जानं। आसिय दिसि हल्लिय सुविहानं॥
छं०॥ १२॥

वरन वरन की व्यूहबद्ध यवन सेना का हांसीपुर को घेरना।

कवित्त॥ साहब सुनि सुरतान। समुद व्यूहं रचि धाइय॥
अष्ट सेन रचि अष्ट। ईष्ट करि सेन बनाइय॥
एक लष्ष सारद्ध। सुभर असवारति साजं॥
दंती पंति विसाल। अग्ग सज्जे अगिवाजं॥
पावस्स थान मानों प्रगट। दिस दिसान नीसान दिय॥
आसीअ चिंत इक दौर करि। आनि सुभर घन घेरि किय॥
छं०॥ १३॥

शहाबुद्दीन का सामंतो को किला छोड़ देने का संदेसा भेजना।

दूहा॥ घेरि सुभर साहाबदी। कहिय बत्त चर चारु॥
कै झुझ्झहु बुझ्झहु सपरि। कै निकरौ भ्रम्म दुआर॥ छं०॥ १४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शहाबुद्दीन का सँदेसा पाकर सामंतों का परस्पर सलाह और बादविबाद करना।

कवित्त ॥ सुबर सूर सामंत। बीर बिरुझाइ सु धाए ॥
बड़गुज्जर रा राम। राइ रावत्त सहाए ॥
सम दुरंग सो सीस। बीर लोकिग असमानं ॥
कित्ति मुकति भर सुभर। बीर बीरं बिरुझानं ॥
कूरंभ राव पज्जून दे। गयौ हरष सामंत बर ॥
तम पषै मरन दीजै नहीं। मरहु तुंम्ह जिन पर सु धर ॥छं०॥१५॥
सुनिय मंत कूरंभ। मतौ जानहि सु मरन बर ॥
जीवन मत जानंत। सामध्रमजाइ ध्रम्म नर ॥
हम बीरा रस धज्ज। जोग जीतन सिर बंधी ॥
हम अभंज अरि भंज। मंत जानै जस संधी ॥
रुक्कयौ हंस पंजर सु पच। सो पंजर भंजहिति भिर ॥
जानियै जगत तनु तिनुक वर। अरि बंधन बंधेति फिरि ॥छं०॥१६॥
सुबर बीर सामंत। मन्न लग्गे बिरुझानं ॥
रा चामँड जैतसी। राम बड़गुज्जर दानं ॥
उद्दिगबाह पग्गार। कनक कूरंभ पजूनं ॥
षीची रा परसंग। चंद पुंडीर स वन्नं ॥
महनंग मेर मोरी मनह। दोऊ बीर बग्गरि सलष ॥
देवकन कुँअर अल्हन सुबर। लषिय सोभ भुज बर विलष ॥
छं० ॥ १७ ॥

सामंतों का भगवती का ध्यान करना।

दूहा ॥ निसि चिंता सामंत सह। उद्दिग बाह पग्गार ॥
मात बीर अस्तुति करै। सक्त सु मंगन हार ॥ छं० ॥ १८ ॥
फुट्टि सरोवर नीर गय। अंब कि बंधै पालि ॥
तेमन संत पयान किय। इह भावी इह काल ॥ छं० ॥ १९ ॥

हांसी के क़िले में स्थित सामंतों के नाम और उनका वर्णन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ निड्डर बर हरसिंघ । बीर भोंहा भर रूपं ॥
बरसिंहरु हरसिंघ । गरुअ गोयंद अनूपं ॥
राज गुरू रा राम । वलीं बंभन रस बीरं ॥
दाहिम्मौ नरसिंघ । गौर सग्गर रनधीरं ॥
चालुक्क बीर सारंगदे । दई देव दुज्जन दहन ॥
सुलतान सेन संमुह भिलै । गात जु हांसीपुर गहन ॥ छं० ॥ २० ॥

चौपाई ॥ पुर हांसी दिसि दच्छिन कीनो । बीय स्हर सम्हैं अपु लीनो ॥
चक्की चवसठि जोगिनिकारी । दिसि दच्छिन उर सम्हो भारी ॥
छं० ॥ २१ ॥

कुछ सामंतो का किला छोड़ देने का प्रस्ताव करना परन्तु देवराव बग्गरी का उसे न मानना।

कवित्त ॥ उदिग गयौ निक्करै । सुतौ मरनह तें डरयौ ॥
समर स्हर निक्करै । सु फुनि अलँगे उत्तरयौ ॥
चावंड रा निक्करे । सुहड सांवला सहित्तौ ॥
गोयँद रा गहिलौत । सु फुनि निक्करै विगुत्तौ ॥
साषुलौ स्हर भोंहा सुतन । कल्ल कथ्या भारथ करै ॥
इत्तने राव गए निक्करे । देवराव क्यों निक्करै ॥ छं० ॥ २२ ॥

ए सामंत अभंग । मेर धुअ मंडल जामं ॥
सेस सीस रवि चंद । सु भुअ मंडल अभिरामं ॥
एउ टरें कोउ बेर । जोग जुग अंतर आयौ ॥
अटल एक सामंत । जुद्ध जोगा रस पायौ ॥
दैवान देव गति अलंघ है । नन गुमान कोइ कर सकै ॥
एकैक मत्त चूकै सबै । जित्ति कोइ जाइ न सकै ॥ छं० ॥ २३ ॥

कवि का कहना कि समयानुसार सामंत लोग चूक गए तो क्या।

राम चुक्क म्रग हत्यौ । सीय लिय रावन चुक्यौ ॥
हनुअ बत्त नारद । भरथ चुक्कवि सर मुक्क्यौ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक्कम जीव जतन्न । कग्ग आमिष सुष मंडिय ॥
इंद्र अहल्ला काज । सहस भग काया मंडिय ॥
नल राय दमंती कारनें । और नाम जानौ न उन ॥
सामंत दोष लग्यौ इतौ । सतौ एक चुक्क्यौ न कुन ॥ छं० ॥ २४ ॥

देवराय बग्गरी का वचन ।

साहि मलिक साहाब । दीन जिहि द्वारैं बढ़िय ॥
जेन द्वार निक्करौ । जेन निक्करैं न कढ़िय ॥
सिर तुरक्क भ्भर पड़िहु । सहित धर जाइ सरीरह ॥
हुं सभीछ पहुचेंन । तनों निकलंक सरीरह ॥
सांषुलौ स्त्रर सामित्त छल । देवराव कटि बटि मरै ॥
ता भष्यि पुत्त बापह तनौ । ध्रम्म द्वार होइ निक्करै ॥ छं० ॥ २५ ॥

कल्हन और कमधुज्ज का वग्गरीराव के बचनों का अनुमोदन करना ।

सत छुट्टत गोयंद । सत्त सामंतन छुथ्यौ ॥
बर षीची अचलेस । धार धारह तन तुथ्यौ ॥
सत छुथ्यौ उदिग्ग । मरन डर डऱ्यौ अबाहिय ॥
सत छुट्टत नरसिंघ । लंग उत्तरि पति नाहिय ॥
मुक्यो न सत्त कमधज्ज ने । नाम बीर कल्हन न्रपति ॥
बरि कनकराव परसंग भर । दीपंतन रवि तन दिपति ॥ छं० ॥ २६ ॥

सातों भाई तत्तार खां का तलवारें बांधना और हांसी गढ़ पर आक्रमण करना ।

मुक्कत सत तत्तार । तेग बंधी सत बंध्यौ ॥
मिलि आए सुरतान । सेन गोरी ग्रह संध्यौ ॥
आनि साहि साहाब । नैर हांसीपुर चल्यौ ॥
सुन्या स्त्रर सामंत । कोन निक्करि सत डुल्यौ ॥
लच्छौ सुमंति आमत्त बर । बार बार बर बंधियै ॥
असि पच्छ कढ्ढि बंधौ सुबर । पढ़ि कुरान क्रत संधियै ॥ छं० ॥ २७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*चन्द्रायन॥ भषे पङ्गली मंस सस्त्र बल मुक्कई। काजी कत्य कुरान अम्म नन चुक्कई॥
तजि हांसीपुर जीव लभ्भ बंधी सही। हिंदवान गढ़ मुक्कि गहा अप्पा रही॥
छं० ॥ २८ ॥

कवित्त ॥ सजे सीस गयनंग। रह्यौ रुप्पे रन मांही ॥
सबल सेन सुरतान। परिय पारस परछांही ॥
हक्क धक्क किलकार। करै आसुर असमानं॥
गोर नार जंबूर। बान रुक्के रह भानं ॥
पावें न मझ्झ पंषी पसर। विसर नद्द बज्जे सबल ॥
सांषुली सुभर जुथ्यौ समर। उदधि मझ्झ लग्गौ अनल ॥
छं० ॥ २९ ॥

दूहा ॥ भयौ प्रात फट्टं तिमिर। मिलिघ संग तत्तार ।।
करत कूंच तुट्टे सुभर। गढ़ लग्गे चिहुं बार ॥ छं० ॥ ३० ॥

अन्यान्य सामंतों की अकर्मण्यता और देवराय की प्रशंसा वर्णन ।

कवित्त ॥ षां ततार गढ़ घेरि। ढोह बज्जे बज्जानं ॥
दो दस दिन सामंत। झूझ बज्जे परमानं ॥
पन्न पान सोवन्न। दीह तिन सूरन पाइय ॥
गयौ बीर पाहार। नाम किन सूरन साइय ॥
पारथ्थ जीत भारथ्थ सह। गोपिन रषि अपुबल तिया ॥
हथ धनुष आइ बंनर बली। सीय कज्ज अपुसह किया ॥छं०॥३१॥
असपूर तत्तार। झंझ बज्जी मग सुड्डी ॥
ईकल्लो देव क्रंन। बान अर्जुन मग बुड्डी ॥
और सबै सामंत। माहि विस्सह आलुद्धी ॥
मरन झार उद्दिग। विहार बीरा रस बंधी ॥
सांषलौ सूर सारंगदे। तिन बंधी लज्जी जगत ॥
उच्चरै सूर सामंत सौ। जेन भिरत पच्छइ मरत ॥ छं० ॥ ३२ ॥

*मूल प्रतियों में इस छन्द को चौपाई करके लिखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवराव बग्गरी की बीरता।

अनल मद्धि देवराज। परे पारस दघि गोरी॥
लहरि सेन बाजंत। धार झारा झकझोरी॥
बज्जि धार बिब्भार। मार मारह मुष जंपहि॥
सूर मत्त रन रत्त। कलह कायर उर कंपहि॥
लगि सार धार रुधि छंछ घुटि। सहस सूर उठ्ठहि लरन॥
आवट्टि सेन अड्डौं सु अध। अद्ध अद्ध लग्गौ भिरन॥ छं०॥ ३३॥

युद्धारंभ और युद्धस्थल का चित्र वर्णन।

भुजंगी॥ परे अद्ध अद्धं सु अद्धं अधानं। भिरै अद्ध अद्धं रहै साह थानं॥
अगे दंत पंती चले साह सूरं। प्रलै काल मानो हलै दद्धि पूरं॥
छं०॥ ३४॥
उतै पारसी मीर बोलै करारं। इतै सीस हक्कै धरं मार मारं॥
बहै सूर सूरं लगै धार धारं। मनों झल्लरी बज्जि देवं सुधारं॥
छं०॥ ३५॥
गहैं दंत दंती उपारंत सूरं। मनों भील कड्ढै गिरं कंद मूरं॥
परै पीलवानं निसानं सु पीलं। हन्यौ वज्रि सैलं सव्रष्षं कपीलं॥
छं०॥ ३६॥
बहै षग्ग धारं धरंगे निनारं। मनों चक्क पिंडं कुलालं उतारं॥
उठे स्रोन बिंदं रतं धार लग्गौ मनों लगि तिंदू प्रलै काल अग्गी॥
छं०॥ ३७॥
बहै रत्त धारं अपारं सु दीसं। मनों भद्द मभ्भ्झै बहै नहि ईसं॥
बिहूं बाह बाहै लगै सूर सूरं। मनों प्रीति हेतं मिले आय दूरं॥
छं०॥ ३८॥
बहैं जम्मदड्ढं बहै पारवारं। मनों मोष मग्गं किवारं उघारं॥
परै लुथ्थि पथ्थं उलथ्थंति पानं। मनो मीन कुद्दै जलं तुच्छ मानं॥
छं०॥ ३९॥
रजै ईस सीसं करै रुंडमालं। रमै भूत प्रेतं किलक्कंत नारं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रहै अंत गिद्धी चढ़ै गेन मग्गं। मनों डोरि तुट्टी रमै वाय चंगं॥
छं० ॥ ४० ॥

तिनं नद्द सद्दं विहंगं सुनानं। रजै ईस मानं सुरं सत्त पानं॥
भरै षेचरी पच चौसट्ठि चारी। भ्रवै भोमि श्रोनं पलं पल्लहारी॥
छं० ॥ ४१ ॥

भिरें जाम एकं अनेकं प्रकारं। परे सूर सेनं कहै कोन पारं॥
छं० ॥ ४२ ॥

देवकर्ण बग्गरी का वीरता के साथ मारा जाना।

दूहा॥ देवकन्न सुरलोक बसि। हय नर धर गज भानि॥
नाग असुर सुर नर सुरभ। बढ़ि भारथ्थ बषान॥ छं० ॥ ४३ ॥

वीर बग्गरी का मोक्ष पाना।

कवित्त॥ जीति समर देवकन। धार पति चढ्ढिय धारं॥
निगम भ्रम्म अजमेघ। द्रभ्भ थल दुज्ज अचारं॥
रथ रंभन भर थक्कि। रब्बि थक्यौ रथ लोचन॥
बंध इंद्र सर बंध। मंदु बारा रहि सोचत॥
शिव बंध सथ्थ रथ ऊर चढ़ि। भूनिग तन गौ ब्रह्मपुर॥
इह करिन काइ करिहै नहीं। करो सु को रजपूत धर॥छं०॥४४॥

देव कन्न बर बीर। धीर भर भीर अहीरं॥
चौच्यालीस प्रमाण। तुट्टि तन धार सु धीरं॥
थुति सदेव उच्चार। करै अस्तुति दै तारी॥
सिर तुट्टै धर उट्ठि। भिरन कट्टी कट्टारी॥
अरि मुष्ष गयौ चढ़ि चिंत अरि। तनु धारा हर बिंटयौ॥
कायरन जेम तज्यौ न रन। करि कुट्टा जिम कुट्टयौ॥ छं० ॥ ४५ ॥

इस युद्ध में मृत वीर सैनिकों की नामावली।

भुजंगी॥ पऱ्यौ देव कन्नं सु भूनिंग जायं। जिने वास लोकं सयं बंभ पायं॥
पऱ्यौ बीर मारू नवं कोट रायं। जिनें जूह लग्गे भुजं काम पायं॥
छं० ॥ ४६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पऱ्यौ रानि गिरि राव बीरं पताई। जिने षान जद्दों ढहायौ षताई॥
पऱ्यौ बीर मोरी उभै बंध सथ्थं। भजे जूह संषं घली हथ्थ बथ्थं॥
छं० ॥ ४७ ॥
पऱ्यौ पंच भाई सपंचं अभंगं। ढहे जूह बैरी लगै जूह अंगं॥
पऱ्यौ सांषुला सूर नारेन इंदं। जिन जाम षेद्यौ करी दूरि दंदं॥
छं० ॥ ४८ ॥
परे राव कूरंभ पज्जून जायं। जिने लोक में लोक संलोक पायं॥
पऱ्यौ पंच पंचायनं पुंज राजं। जिने चंपि वैरी कुलिंगंति बाजं॥
छं० ॥ ४९ ॥
पऱ्यौ बग्गरी रूप नर रूप नाहं। भगी जानि मोरी तुटी जू सनाहं॥
पऱ्यौ बैर बाराह वैरी पचारं। जिने सार झारं दुझारं हकारं॥
छं० ॥ ५० ॥
पऱ्यौ गुज्जरीराव रघुबंसरायं। हयं अस्ति सस्त्रं किनं कान पायं॥
पऱ्यौ षग्ग षिची सु मंची नरिंदं। मरंतं रुजी पौमरं कित्ति कंदं॥
छं० ॥ ५१ ॥
परे इत्तने सूर भारथ्थ वित्ते। डरे सूर ते वार रिन मुंकि पत्ते॥
छं० ॥ ५२ ॥

एक सहस सिपाहियों के मारे जाने पर भी सामंतों का किला न छोड़ना।

दूहा ॥ रा देवंग रहंत रन। सहस एक बर बीर॥
तामे एक कमंध षिलि। तिन संघारिग मीर॥ छं० ॥ ५३ ॥
बाने विरद बको वहै। बंको षान अलील॥
दस सहस्र सम मीर बर। तिन लीनो गढ़ कील॥ छं० ॥ ५४ ॥
कोट मझि रजपूत सौ। तिन सझी दरबार॥
गिरद बाज चिहुकोद फिरि। मीर पीर सिरदार॥ छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज को स्वप्न में हांसीपुर का दर्शन देना।

हांसीपुर प्रथिराज पै। चंद सुपन बरदाइ॥
धवल वस्त्र उज्जल सु तन। पुक्कारिव न्रप राइ॥ छं० ॥ ५६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज प्रति हांसीपुर का वचन ।

हांसीपुर उच्चार बर। बीट सेन सुलितान ॥
अजहूं हूं भग्गी नहीं। करि उप्पर चहुआन ॥ छं० ॥ ५७ ॥

कवित्त ॥ उभै दीह गढ़ ओट। सस्त्र बज्जै सु बान अग ॥
अग्गबान कम्मान। सार सिंधुर अभंग जग ॥
ता पच्छै सामंत। मंत कीनौ परमानं ॥
नंषि कोट गढ़ ओट। सस्त्र लग्गे असमानं ॥
न्रिप राज अन्यौ आसौ सुन्यौ। सुपनंतर आसौ कहिय ॥
ढिल्ली न्रपत्ति ढीली धरा। ढीली ह्वै अग्गें रहिय ॥ छं० ॥ ५८ ॥

हांसी पुच्छै पहुमि। राय तुं काइन भग्गिय ॥
मो बभीष पम्मारि। तेन भू दंड विलग्गिय ॥
तिन ए रस उच्चरै। चिया छल श्रब्ब गमिज्जै ॥
जै सिर पड़ै तो जाहु। कज्ज साईं छल किज्जै ॥
सहसा परि झुझ्झै मांघुलौ। एह अचिज्ज पिष्षन रहिय ॥
देवराव सूर षंडे परिग। ताम तुरक्के संग्रहिय ॥ छं० ॥ ५९ ॥

हांसीपुर की यह गति जान कर पृथ्वीराज का घबड़ा कर कैमास से सलाह पूछना ।

दूहा ॥ सुनिय बचन प्रथिराज ने। हांसी भारथ वित्त ॥
ध्रम दुवारि निक्करि सुभर। देवराव परि षित्त ॥ छं० ॥ ६० ॥
इह भविष्य चिंतै न्रपति। भयो करुना रस चित्त ॥
रुद्र बीर अरु हास रस। ए अपुब्ब कथ वित्त ॥ छं० ॥ ६१ ॥

कवित्त ॥ सुनत राज प्रथिराज। बोलि कैमास महाभार ॥
तम मंची मंचंग। मंच रष्षन सामंत बर ॥
हयति नट्ठ गज नट्ठ। नट्ठि रधि वासह नट्ठी ॥
सोच सु नट्ठि सनेह। नट्ठ गुन विद्य अनुट्ठी ॥
त्यों सेन नट्ठ हांसीपुरह। मंत उप्पजै सो करौ ॥
कैमास मंत मंती सुमत। मति उच्चारन विचरौ ॥ छं० ॥ ६२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ मंचि मंत कैमास कहि । राजन चित्त विचार ॥
ए सामंत अमंत मत । कोइ देवान प्रकार ॥ छं ॥ ६३ ॥ ॥

कैमास का रावल समरसी जी को बुलाने के लिये कहना।

कवित्त ॥ कहै मंचि कैमास । पास रावल जन मुक्कौ ॥
वह आहुट्ठ नरेस । बाहि बिन मंत सु चुक्कौ ॥
तुम आतुर अति तेज । और मिलिहै चिचंगी ॥
जनु प्रजलंती अग्गि । मद्धि घ्रत संचि तरंगी ॥
इस मंचि संच गिर राज दिसि । दिय पची संमर विगति ॥
दिन दिवस अवधि पंचमि कहिय । दिसि हांसी आवन सु गति ॥ छं० ॥ ६४ ॥

रावल समरसी जी का हांसीपुर की तरफ चलना।

दूहा ॥ सुनि रावर आतुर षऱ्यौ । पवन पवंग प्रमान ॥
इक सगपन साहाइ पन । लषि घर विरद वहान ॥ छं० ॥ ६५ ॥

हांसीपुर को छोड़ कर आए हुए सामंतों का पृथ्वीराज से मिलना।

कवित्त ॥ मुक्कि राज दुज दोइ । बेगि सामंत बुलाए ॥
कछुक लज्ज कछु सहमि । मिलत सिर नीच नवाए ॥
चामंड रा जैतसी । राव बड़गुज्जर कन्हं ॥
षीची राव प्रसंग । चंद पुंडीर महन्हं ॥
पज्जून कनक उद्दग पगर । दोऊ वीर बग्गर सलष ॥
दोउ कन्न कुंअर अल्हन सुबर । मिले आय राजान भर ॥ छं० ॥ ६६ ॥
मिलिग आय गोयंद । नरे नरसिंघ महाभर ॥
रेनराइ उद्दिग्ग । विरदपागार बाह बर ॥
सूर सूर संग्राम । समर सामल अधिकारिय ॥
मिलत राज प्रथिराज । दिये आदर बर भारिय ॥
हम कज्ज लज्ज तुम सीस पर । एह बत्ति मन मत धरहु ॥
देवान गत्ति न्त्रिम्मान मति । भइय बत्त चित्त न धरहु ॥ छं० ॥ ६७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ कहिय सूर राजन सुनहु। तिहि जीवन अप्रमान ॥
पति धर अरियन संग्रहै। तौइ न छंडै प्रान ॥ छं० ॥ ६८ ॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को समझा बुझा कर सांत्वना देना।

कवित्त ॥ इक्क वार सुग्रीव। त्रिया तारा नन रष्षिय ॥
इक्क वार पारथ्थ। चीर पंचत चष दिष्षिय ॥
इक्क वार स्रियपत्ति। जमन अग्गों धर छंडिय ॥
इक्क बार सुत पंड। भोमि छंडिय वन हिंडिय ॥
तुम सूर नूर सामंत बल। कलह कथ्थ भारथ करन ॥
सुरतान पान मोषन ग्रहन। महनरंभ बंछहु मरन ॥ छं० ॥ ६९ ॥
बोलि राज सामंत। कहिय तुम जुद्धनि अज्जर ॥
चंद्रसेन पुंडीर। राइ रामह बड़गुज्जर ॥
बोलि कन्ह नर नाह। बोलि चहुआन अताइय ॥
अचल अटल हरसिंघ। बोलि बरनं बर भाइय ॥
पज्जूनराव बलिभद्र सम। लोहानौ आजांन बर ॥
सजि सेन ताम चल्लहि न्रपति। उदधि जानि हल्लिय गहर ॥
छं० ॥ ७० ॥

पृथ्वीराज का सामंतों के सहित हांसीपुर पर चढ़ाई करना।

कोलाहल कलकलिय। रत्त द्रिग बयन रत्त किय ॥
कहिय सूर सामंत। मंत नीसान सद्द दिय ॥
राजन सो कुल जुद्ध। राव न सुनै अप कन्नह ॥
देस भंग कुलअंत। होंइ नहिं देषत धन्नह ॥
प्रथिराज राज तामंक तपि। करि प्रयान हांसी दिसह ॥
नग नाग देव द्रिगपाल हलि। मनु भारथ पारथ रिसह ॥
छं० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज के हांसीपुर पर चढ़ाई की तिथि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ तिथि पंचमि चहुआन चढ़ि । अति आतुर बर बीर ॥
बर प्रधान षावास बर । इह सह परिगह तीर ॥ छं० ॥ ७२ ॥

सुसज्जित सेना सहित पृथ्वीराज की चढ़ाई का आतंक वर्णन ।

पद्धरी ॥ सजि चल्यौ सेन प्रथिराज राज । मानहुँ कि राम कपि सीय काज ॥
सामंत नाथ कटि तोन धारि । मानो कि पथ्थ गौ ग्रहन बार ॥
छं० ॥ ७३ ॥
रगतैत नैन भ्रकुटी कराल । मानो कि ईस त्रयनेत्र ज्वाल ॥
बंकुरिय मुंछ लगि भौंह आनि । मानो कि चंद बिय किरन बानि ॥
छं० ॥ ७४ ॥
चिहुफेर सूर विच चाहुआन । मानो निषत्र परि परस मान ॥
सजि सिलह सूर अँग अंग थान । मानो कि मुकुर प्रतिब्यंब जानि ॥
छं० ॥ ७५ ॥
करि करी अग्ग रज रजत दंत । मानो कि जलद पँग बग्ग पंति ॥
उभ्भारि सुंड गज लैहि बीर । मानो कि ब्यंब अहि मरुत मौर ॥
छं० ॥ ७६ ॥
मद झरहि पाट बरषंत दान । मानो कि धराहर धार जानि ॥
तिन मत्त कीच हय कलत लार । मानो कि भद्र कद्रव मझार ॥
छं० ॥ ७७ ॥
धर स्याम सेत रत पीतवंत । मानो कि अभ्भ पल्लव सुभंत ॥
चमकंति अनिय दामिनि समान । बाजंत वज्र घनघोर बान ॥
छं० ॥ ७८ ॥
उच्चरहि बृंद कवि मोर सोर । पप्पीह चीह सहनाय रोर ॥
ठनकंत घंट सादुरनि नद्द । मानो कि भद्र दादुर सबद्द ॥
छं० ॥ ७९ ॥
दिसि विदिसि धुंध मुंदियग भानि । तिथ्रंम इंद्र बिय इंद्र जानि ॥
बरषंत धार चढ़ि व्योम मंत । तिन उड़िग रेन विच कीच मंत ॥
छं० ॥ ८० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिन कलहि पंषि पावै न ठौर। उप्पमा कौन जंपौस और॥
कलमलिय नाग परि कमठ भार। हलहलिग दंति द्रिग मंत सार॥
छं०॥ ८१॥
रय षरहि स्हर अप अप्प मान। मानो छयन्न कुलटा मिलान॥
सिर लग्गि व्योम हय षरहि राज। मानो कि कपिय गिरि द्रोन काज॥
छं०॥ ८२॥
पत्तौ जु राज हांसीति थान। सजि सूर सेन दीने निसान॥
छं०॥ ८३॥

रावल का चहुआन के पहिलेही हांसीपुर पहुंच जाना।

दूहा॥ चढ्यौ राज प्रथिराज बर। सुनि चिचंगी भीर॥
बर हांसी सामंत सह। बीटि षान बर बीर॥ छं०॥ ८४॥
कवित्त॥ इन अग्गै बर बीर। समर हांसीपुर पत्तौ॥
रन रत्तौ रन सु। ध्रम्म अध्रम्म विरत्तौ॥
चतुरंगनि बर सज्जि। बीर चतुरंग सपत्तौ॥
कूंच कूंच उप्पार। दीह चौ पंच सु जत्तौ॥
सु बर राव रावल समर। अमर बंध जत अमर जत॥
आवाज बढ़ी तब मीर बर। सेन संझ हांसी बिरत॥छं०॥८५॥

समरसी जी के पहुंचते ही यवन सेना का उनसे भिड़ पड़ना।

दिसि पति पति पत्तीय। मेर लजपत्ति सु धारी॥
सबर सत्त जंपन सु। वीर किति सम बर चारी॥
ब्रह्म रूप जीति न सु। ब्रह्म आहुट्ठ सपन्नौ॥
लघ्यौ रूप तत्तार। रंक लभ्भै वित मन्नौ॥
लगि ऊक सूकरस पियन बर। छुधा क्रोध लगि बीर रस॥
बर भिरन षान षुरसान दल। बल प्रमान षोलीति अस॥
छं०॥ ८६॥
डिट्ठ ढाल ढलकंत। समर चतुरंग रंग रन॥
बंधि फवज्ज सुबीर। बीर उचरंत मंत मन॥
हरवल षान ततार। करै करवलति षुरेसी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुंड समर लगि नहीं। आनि बंधी बल गंसी ॥
मुष रुक्क मेलि मारु महन। नाहर राव नरिंद तन ॥
सावंग समर दिसि दिसि षिनह। सुभर जुद्ध मच्यौ गहन ॥
छं० ॥ ८७ ॥

समर सिंह जी की सिपाहगीरी और फुरतीलोपन का वर्णन।

महन रंभ आरंभ। समर बंधीत समर बर ॥
अमर नाम बर अमर। मुंकि सामंत लल्लैभर
पुर हांसी बर पत्त। पूर दच्छिन दच्छिन बर ॥
मिले सूर कर वर करूर। बंधीति सिरी सर ॥
बंधि सनाह विलगे समर। करि भर घाइ अपुब्ब भर ॥
हक्कारि सूर पच्छिम परिय। वज्र मेर बज्जे सुभ्भर ॥ छं० ॥ ८८ ॥
तमकि वीर चिचंग। बाज उप्पर बर नंषिय ॥
मनहु कंस सिर वज्र। चिल्ह उप्पर धर पंषिय ॥
सथ्थ सूर सामंत। हथ्थ किरवान उभारिय ॥
मनहुं चंद विय व्योम। परिग रारिय चमरारिय ॥
घरि च्यार धार धारह ररिय। भरिय नरेनर चित्तरिय ॥
औसरिय सेन अध कोस क्रम। कलह केलि ऐसी करिय ॥
छं० ॥ ८९ ॥

यवन और रावल सेना का युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ दोऊ (१)रूर वद्दं, उडीरेन जद्दं। निसी जानि भद्दं, वहै वान सद्दं॥
छं० ॥ ९० ॥
सुकै गज्ज मद्दं, वहै षग्ग जद्दं। सुभै रथ्थ हद्दं, नचै वीर बद्दं ॥
छं० ॥ ९१ ॥
बजै षग्ग सद्दं, घटा बज्जि भद्दं। षमंजाल पद्दं, प्रलै अग्गि नद्दं॥
छं० ॥ ९२ ॥

(१) को. सूर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिसूली अनद्दं, बजै घाय रुद्दं । जनौं घट्ट बद्दं, कहं जोग सद्दं ॥
छं० ॥ ९३ ॥
मगी मुक्ति हद्दं, षगं सोर षद्दं । उभ्रं ताप उद्दं, कवीचंद चंदं ॥
छं० ॥ ९४ ॥
सुभै रथ्थ हथ्थं, ... । रसं रोस भानी, भ्रमं सेन दानी ॥
छं० ॥ ९५ ॥
जकी जोग माया, चितं जोग पाया । ...., ... ॥ छं० ॥ ९६ ॥

समरसी जी की वीरता का बखान।

कवित्त ॥ ॥ कै छुट्टा मदमोष । सिंघ छुट्टा पल काजैं ॥
कै तुट्टा बयवाज । बीच कोलिंग बिराजै ॥
कै रस संका छुट्टि । वृषभ दोइ छुट्टि विलुड्डा ॥
लज्ज रतन विषग्गंत । उभै रंकहु आलुड्डा ॥
बर सेन उररि निसुरत्ति षां । दइ दुवाह उप्पर परी ॥
चित्रंगराव रावर समर । सुबर जुद्ध एतौ करी ॥ छं० ॥ ९७ ॥

समरसी जी के भाई अमरसिंह का मरण।

मिलिग घाइ अघघाइ । समर धायौ जु समर बँध ॥
धार धार तन उघरि । गयौ सुर लोक रंभ कँध ॥
षठ सु पंच अरि ढाहि । पंच मिलि पंच प्रपत्ते ॥
दइ दुबाह रन अमर । अमर भौ बोलन जत्ते ॥
हर हार कंठ आनंद मध । सुनि सँग्राम दुभार बन ॥
दुअ हथ्थ दरिद्री द्रव्य ज्यों । रह्यौ पिष्षि तं चिय नयन ॥
छं० ॥ ९८ ॥

युद्ध स्थल का चित्र वर्णन।

*मोतीदाम ॥ जु रुप्यौ रन रावल मंझ अनी। सु मनों ससि मंडल भ्रू अधनी॥

* छन्द मोतीदाम चार जगण का होता है। रासो में भी तथा और जगह चारही जगण का मोतीदाम माना गया है। परन्तु यह छन्द चार सगण का है। भाषा के प्रचलित दो एक पिंगल ग्रन्थों में इस प्रस्तार का छन्द ही नहीं मिला अतएव इसका नाम वैसाही रहने दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजि षग्ग उनंगत षंग बजै। घरियारन के सुर मंझ लजै॥
छं० ॥ ९९ ॥
गज षग्ग उड़ंतह मुत्ति भरै। तिनकी उपमा कविचंद करै॥
मनि मै ग्रह रत्ति प्रनार चली। जल जावक नागिनि पौरि हली॥
छं० ॥ १०० ॥
कढ़ि हथ्थर हथ्थ सु हथ्थ परी। तिनकी उपमा कविचंद धरी॥
मुष से सहँते जल धार धसी। निकसी जुद्द एक प्रबाह गसी॥
छं० ॥ १०१ ॥
छित रावर भारथ राज धनी। कहि भग्गिय षान ततार अनी॥
छं० ॥ १०२ ॥
अरिल्ल* ॥ षां ततार सुनि बैन नैन सोयं। लज्जे करी बर भग्गा जे भानं॥
ओटं जिन कोटह सुद्दर। लै दस्तिक कर चुंमि तुंड डट्ठी बट्ठी कर॥
षां षुरसान ततारं। भंजि भंजे सुर सुब्भर॥ छं० ॥ १०३ ॥

यवन सेना की ओर से तत्तार खां का धावा करना।

कवित्त ॥ बाज नंषि तत्तार। बाजि षुरतार बज्जि षग॥
पंच अग्ग सौ मौर। संग धाए पयान मग॥
जुद्ध कथ्थ कर हिंदु। तूल जिम बाय उड़ाइय॥
मेर लाज पज्जून। सत्त साइर वर धाइय॥
घरि एक झिंझ बज्जी सकल। बर उप्पर पावार करि॥
निट्ठ करि षान तत्तार कढ़ि। हिंदुमेछ लहिये अपरि॥छं०॥१०४॥

घोर युद्ध वर्णन।

पद्धरी ॥ बर लुथ्थ लुथ्थि आलुथि पलथ्थ। नचि प्रेत नाद बीरं ततथ्थि॥
नारद नद निस सुनि सभीर। सारद सिद्ध तिन तत्त बीर॥
छं० ॥ १०५ ॥
चौसट्ठि घाइ सह स्हर संचि। पंच पचीस काबंध नंचि॥

* यह छन्द वास्तव में कोई छन्द नहीं है। इस की प्रथम पंक्ति साटक छन्द की वृत्ति के समान है। दूसरी गाथा की, तीसरी उल्लाला की और चौथी रोला की है। इस से मालूम होता है कि यहां के कई एक छन्द नष्ट हो गए हैं, उनका कुछ शेषांश मात्र रह गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजि घाइ सद्द सद्दीन हद्द। सुनि ईस सद्द नंदी अनद्द॥
छं० ॥ १०६॥

सत पंच मुक्कि तरवार बूब। तत्तार गात अरवार हूब॥
बँधि चाल चाल उचाल पाव। षगवाह विहथ्थन सूर लाव॥
छं० ॥ १०७॥

तन बंधि संग सो लोह कढ्ढि। मानो कि समुद्द जल मीन चढ्ढि॥
उठि छिंछ रकत तीरत्त भाइ। मानो पलास बन फुल्लि नाइ॥
छं० ॥ १०८॥

बर बुभ्भिभ्भ साहि कर वज्र वाय। रुधि पियत [1]भीम साम्मन्न काय॥
उतमंग हक्क धर नच्चि धाव। झम वहै षग्ग की विज्ज लाव॥
छं० ॥ १०९॥

दूहा॥ अनुध जुद्ध हिंदू तुरक। भय अनादि जमनूत॥
इन ततार संमुष अनी। उतै समर अवधूत॥ छं० ॥ ११०॥

रसावला॥ धार धारं चढ़ी, बोलि बीरं बढ़ी। षग्ग [2]झालं जढ़ी, लोह दूनो कढ़ी॥
छं० ॥ १११॥

दून बानं गढ़ी, बीर जै जै पढ़ी। लथ्थि लुथ्थं बढी, हथ्थ दो दो चढ़ी॥
छं० ॥ ११२॥

जोग माया रढ़ी, जुद्ध देषै ठढ़ी। देवि रथ्थं चढ़ी, पुप्फ नंषै गढ़ी॥
छं० ॥ ११३॥

उत्तमंगं बढ़ी, अंत तुट्टी कढ़ी। ईस देषै ननं, [3]पुत्तनं रंजनं॥
छं० ॥ ११४॥

सूर कढ्ढै इसं, बान कढ्ढी जिसं। .... छं० ॥ ११५॥

इसी युद्ध के समय पृथ्वीराज का आ पहुंचना।

दूहा॥ षोड़स इक पंचह सुभर। समर परिग संग्राम॥
नव घट्टी अंतर परिग। सुत सोमेस सु ताम॥ छं० ॥ ११६॥

कवित्त॥ मद्धि पहर विप्पहर। समर सामंत जुद्ध मिल्लि॥

(१) ए.-भूमि। (२) ए.-जालं।
(३) को. कृ.-पुत्ततं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवनि नीच करि नीच। जुद्ध संग्राम सार झिलि॥
विमुष न भौ परि बंध। जुद्ध सामंत सूर मिलि॥
अनी एक करि मेर। धाइ अरि जुट्टि षग्ग षुलि॥
षुरसान षान दल ठेलि बर। चच्चर सी चौरंग बजि॥
थिर भए सूर रथ दिषत पर। कायर चलि जंगम प्रहजि॥
छं० ॥ ११७ ॥

भुजंगी॥ कढ़े लोह सूरं करूरंति तायं। चले सस्त्र हथ्थं न चालंत पायं॥
मिलै हंस हंसं चलै अस्व कैसें। जनों नीधनी नार पिय अग्ग जैसें॥
छं० ॥ ११८ ॥

ननं डोलि चित्तं मरंनंति सूरं। छिया कुंभ चितं चलै हथ्थ जूरं॥
प्रतंग्या प्रमानं समानं न सूरं। बुझै पंच पंचं ननं दीप दूरं॥
छं० ॥ ११९ ॥

तुट्टै सिप्परं टूक सा टूक सथ्थ। कला चंद्र राहे उभै भूप तथ्थैं॥
कलै निक्कऱ्यौ बार सन्नाह फुट्टै। तिनंकी उपम्मा कवीचंद जुट्टैं॥
छं० ॥ १२० ॥

मनो केतकी पल्लवं व्रत्त जुट्टी। रची राह भेदं दुहुं [1]अंग फुट्टी॥
लगे धार धारं दुधारं प्रहारं। बरं काइरं भास चित्तं विचारं॥
छं० ॥ १२१ ॥

करं मीडि दूनों सिरं धुन्नि जत्ती। मनौं मष्षिका जाति पच्छै सुरत्ती॥
सुमिचं कपी आनि लंबालिजायं। उपंमा इनं की ननं भूलि पायं॥
छं० ॥ १२२ ॥

बजी झंझ लग्गे असम्मान सीसं। उठे पंच दह दून धावंत दीसं॥
नही मानवे दानवे नाग लोयं। कह्यौ बाहु भारथ्थ जिम पथ्थ जोयं॥
छं० ॥ १२३ ॥

परे संमरं शूर षट्टंति पंचं। लगे धार धारं भए रंचरंचं॥
सबै धाव सामंत सूरं प्रकारं। पऱ्यौ बग्गरी रा चल्यौ धार धारं॥
छं० ॥ १२४ ॥

(१) ए.-अगग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरं राज प्रथिराज पंचास पंचं। गयौ राव चावंड रंढीरि अंचं ॥
॥ छं० १२५ ॥

अमर की वीर मृत्यु और उसको मोक्ष प्राप्त होना।

कवित्त ॥ पर्यौ अमर षावास। ग्रिद्ध संमुह उड्डावै ॥
बल घट्टै तन घट्टि। कित्ति घट्टी नर जावै ॥
स्वामि विमुष नह भयौ। स्वामि कारज तन भग्गौ ॥
साम दान अरु भेद। दंड तीने पथ लग्गौ ॥
ब्रह्मपुर स्वामि सेवक सु भ्रम। गयौ मोह माया सु पश ॥
जग हथ्थ राइ सुर लोक बसि। सत्ती जुग्ग भारथ्थ कथ ॥
छं० ॥ १२६ ॥

अमर गयौ पुर अमर। देवि घर घरह उछवि करि ॥
रचिय भोग आरंभ। देव भूषन सुरंग बर ॥
बर बरु करि भग्गरी। सौ कि रानी पुक्कारी ॥
धूप दीप साषा सु। पुहप दुष्ष्ह उच्छारी ॥
तन पवित्त भ्रम भ्रन धन्न तन। गौ सुरलोक अचिज्ज नह ॥
अघ रोकि न्रपति जोवन्न वर। पग्ग मग्ग षुरसान लह ॥
छं० ॥ १२७ ॥

पृथ्वीराज के पहुंचते ही शाही सेना का बल ह्रास होना।

कुंडलिया ॥ जै कित्ती रत्ती उभा। मुगत सुरत्ती पान ॥
चाहुआन बल बढ़त बर। बल घट्यौ सुरतान ॥
बल घट्यौ सुरतान। साहि भौ पूरन चंदं ॥
राज न्रपति बियचंद। बीर बीरं रस मंदं ॥
विधि विधान निरमान। षान दिष्षिय तिहि बतहय ॥
इन पंचौ संग्रहै। राज पट्टियत जैतिजय ॥ छं० ॥ १२८ ॥

पृथ्वीराज का यवन सेना को दबाना।

दूहा ॥ जै बट्टी जै जै सकल। पीलँ तन धरि ढाल ॥
बल गोरी बल संग्रहै। ज्यों चंपै बर काल ॥ छं० ॥ १२९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज्यों चंपै बर काल गुन । हर चंपै विष कंद ॥
रबि चंपै किरनावली । ज्यों चंपैत नरिंद ॥ छं० ॥ १३० ॥

रावल और चहुआन की सम्मिलित शोभा वर्णन ।

अरिल्ल ॥ बर संभरि चहुआन निवासं । उत चित्रंग नरिंदह सासं ॥
फिरि गोरी पारस अधिकारी । मनो चंद बद्दर बिच सारी ॥
छं० ॥ १३१ ॥

दूहा ॥ राजत बीर शरीर गति । छिति मिच्छिति बर राज ॥
मनहु भूप भूआल कौ । बर बसंत रितराज ॥ छं० ॥ १३२ ॥

रणस्थल की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन ।

कवित्त ॥ बर बसंत बर साज । स्त्रर लग्गा चावद्दिसि ॥
रत्त रुधिर समरंग । छित्त राजै अट्टत्त बसि ॥
फेरि ग्रह्यौ सुरतान । चंद बध्यौ उड़गन बर ॥
निस नछिच ज्यों प्रात । सेन दिष्यौ जुमंच बर ॥
नर गिरहि भिरहि उट्ठहि लरत । षट षट्टंति न सुभट घट ॥
पाहुनौ सुभट गोरी कियौ । दाहिम्मै चावंड थट ॥ छं० ॥ १३३ ॥

दूहा ॥ सु चिय हार सम परि सुथिर । यों सुबरे संमेत ॥
सार धार बर देषियै । सार प्रहारन प्रेत ॥ छं० ॥ १३४ ॥

मुख्य मुख्य वीरों के मारे जाने से शाह का हतोत्साह होना ।

कवित्त ॥ गुरज उभ्भ तिय तेग । तोन बिय सत्त सुरंगं ॥
छह कमान सर सहस । लोह सौ बीर अभंगं ॥
ए तुट्टै बर अंग । तोन थक्का सुर थानं ॥
अंग अंग निरमलौ । कित्ति सारथी सु आनं ॥
तिहि परत गयौ गोरी न्रिपति । परत षान चौसट्ठि धर ॥
तिन जंपि चंद बरदाइ बर । नाम जु जू ए सब बिबरि ॥छं०॥१३५॥

यवन सेना के मृत योद्धाओं के नाम ।

चिभंगी ॥ वर षांन ततारं, झोरिय डारं, नेह उधारं, परिषानं ॥
.... ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हबसी षट बंधं, जम गुन संधं, रति रन रंधं, आरुद्धं ॥
असि बर बर झारी, षान प्रहारी, कुंत कटारी, बर बंधं ॥
छं॥ १३६ ॥

गोरी धर काले, शस्त्र न झाले, अंग विहाले, परि छीनं ॥
सर बीरति भारे, परि रस सारे, बजि धर धारे, धर ईनं ॥
महनंसिय मेरं, परि धर घेरं, जुग परिसेरं, षुरसानं ॥
षुरसानत षानं, चौसठि थानं, रन पति पानं, चहुआनं ॥छं०॥१३७॥

उन रंग अट्टत्तं, गुन गुर तत्तं, साइय मंतं, पढ़ि देनं ।
.... ॥
उड़ि साइक छूरं, नभ तक रूरं, धरि परि जूरं, धर पूरं ॥
.... ॥ छं० ॥ १३८ ॥

झल्लारे गग्गं, ओड़न तग्गं, मन मत पग्गं, पैं नग्गं ।
जानिय किन कालं, बजि रन तालं, मीर सु हालं, अति अंगं ॥
प्रारथ्य सुगत्ती जस रथ जुत्ती, जल कंद षुत्ती, रन षुत्ती ॥
अभिमान डकारं, बजि रन सारं, जगत उभारं, जम कंत्ती ॥
छं० ॥ १३९ ॥

झोरी परि लीनं, छित रस भीनं, रन दुहु दैनं, करि दैनं ॥
.... ॥
दैवत्त सु रत्तं, मन करि गत्तं, कर हित सतं, रन गत्तं ॥
.... छं० ॥ १४० ॥

धर धर धर तुट्टै, असि रन जुट्टै, तन आहुट्टे, मति षुट्टै ॥
नव जोग समानं, दोवर षानं, पति सन मानं, बर फुट्टै ॥
इन छूर समानं, देवन जानं, रन अभिमानं, भड़ भग्गा ॥
मोहन्नी भग्गा, तन षग लग्गा, जुगति सु जग्गा, प्रति लग्गा ॥
छं० ॥ १४१ ॥

यवन वीरों की प्रशंसा।

कवित्त ॥ षूब षान आकूब । षूब मारू षिति मारू ॥
षूब वेर तत्तार । षूब मंडी षिति तारू ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षूब षान षुरसान। षूब जा भारथ षंडै॥
षूबर गोरिय सेन। जेन भग्गापग मंडै॥
अदिहार साह गोरी सुबर। सुदिन राज प्रथिराज बर॥
तित्तने परे भोरी धरे। सुबर बीर बीरं सु रर॥ छं०॥ १४२॥

हिन्दू पक्ष की प्रशंसा।

बलि भट्टी महनंग। गरूअ गब्बह गज्जिय धर॥
इन लरंत सामंत। साहि चढ्यौ दिल्लिय पर॥
जोगिन पुर जोगिंद। आदि चच्चर चौरंगी॥
इंद्र जोग जुध इंद्र। इंद्र कल इंद्र अभंगी॥
नग नग नरिंद नग बर सजहि। रजहि सेन सामंत सह॥
नंषयौ कोट आसी पुरह। सुबर बीर लग्गे मगह॥ छं०॥ १४३॥

सामंतों का वीरतामय युद्ध करना।

लगे मग्ग सामंत। अंग नंचे चच्चर रन॥
इक्क मंत आमंत। इक्क देषै धावत घन॥
महन मंत आरंभ। रंभ लग्गा चावद्दिसि॥
एक सस्त्र बरषंत। एक बरषंत बीर असि॥
जोगिंदराइ जग हथ्थ तुअ। सुबर बीर उप्पर करन॥
कललंकराव कप्पन विरद। महन रंभ मच्चौ सुरन॥ छं०॥ १४४॥

युद्धस्थल का वाक् चित्र दर्शन।

भुजंगी॥ महं रंभ आरंभ सारं प्रकारं। नचै रंग भैरूं ततथ्थे करारं॥
तहां पत्तयौ तत्त चिचंग राजं। मनों गज्जियं देव देवाधि साजं॥
छं०॥ १४५॥
महा मंत मंतं सु तंतं हकारे। मनों बीर भद्रं सु भद्रं डकारे॥
झनक्कंत षग्गं उपम्मा निनारी। मनो बीज कोटी कलासी पसारी॥
छं०॥ १४६॥
दुहुं बाह बीरं सहस्सं भुजानं। कहै कौन कब्बी बलं जा प्रमानं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसं तार तारं जिते तार वग्गे। मनो मानही देव मा देव भग्गे॥
छं० ॥ १४७॥

बहै बाह बाहं करारेति तथ्थं। परे रंग चंगं अरथ्थी सरथ्थं॥
नचै बीर पायं झनक्कंत षग्गं। मनो तार बज्जे सु देवाल अग्गं॥
छं० ॥ १४८॥

करें कंस कंसी बजे जानि नैनं। इसे सार सों सार बज्जै स घैनं॥
उनंके उनाही गुमानं न भग्गें। करी षान षुरसान षुरसान मग्गें॥
छं० ॥ १४९॥

बहै बान कम्मान आवत्त तेजं। लगे अंग अंगं रहै नाहि सेजं॥
सुरं धीर धीरं धरे पाइ अग्गं। मनो चच्चरी जानि आवत्त नग्गं॥
छं० ॥ १५०॥

ढिलै अंग अंगं परै बथ्थ ढारे। मनों लग्गियं च्यार ज्यों मत्तवारे॥
उभै बीर बाहै सु बोलै प्रचारै। सहै अंग अंगं दुधारे दुधारै॥
छं० ॥ १५१॥

इते च्यार चारं सु देषे प्रकारै। चव्यौ सूर सूर मध्यान मझारे॥
छं० ॥ १५२॥

घोर युद्ध उपस्थित होना।

गाथा॥ मध्यानं बर भानं भानं। तेजाय सूरयो (१)मुष्षं॥
चच्चर सी चवरंगं। उच्चारं मत्तयो बेनं॥ छं० ॥ १५३॥

भुजंगी॥ चरं चारि मतं सजे सूर सूरं। नमो डंबऱ्यौ भान उग्यौ करूरं॥
दुअं बीर धाए सु चौहान मोरी। मनों षेत षड्डै किसानंत फ्तोरी॥
छं० ॥ १५४॥

कहें हक्क बाजी विराजंत लक्खे। सुभें दंग लग्गे जु पावक्क प्रक्खे॥
दुअं सेन हक्कें विहक्कंत न्यारैं। बकै जानि दंदं सु बंदी पुकारैं॥
छं० ॥ १५५॥

(१) ए.-सुष्षं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रनं रंग रत्तं विराजै सु भूमी। मनों मंगलं पुत्त की आनि रूमी॥
उडै हंस हंसं द्रुमं डाल ढालं। मनों नाग मध्यं बरें अग्गि चालं॥
छं० ॥ १५६ ॥

रती रत्त अग्गे मुगत्ती ज रत्ते। मनों मान ईसे नमं देवदत्ते॥
भए नेन ऐसें द्रिगं देव जैसे। .... ॥ छं० ॥ १५७ ॥

परे गज्ज बाजी परे रथ्थ छीनं। महा मंत मत्ती लगे लोह पीनं॥
छं० ॥ १५८ ॥

पृथ्वीराज के वीर वेष और वीरता की प्रशंसा।

कवित्त ॥ प्रथीराज गज सहित। तेग बंकी सिर धारिय॥
घनह कोर बिय चंद। बीर उज्जली सुधारिय॥
सेन चमर सम भिंजि। रही लट एक समिज्जिय॥
स्याम सेत अरु पीत। अंग अंगन हत दग्गिय॥
कज्जलन कूट तें उत्तरहि। चिय नंदी संग्राम तिथ॥
चिचंग राव रावर चवै। सुबर बीर भारथ्थ कथ॥ छं० ॥ १५९ ॥
भारथ्थह चहुआन। समर रावर सम गोरिय॥
विध विधान निरमान। उभै भारथ्थ स जोरिय॥
भारथ्थां पारथ्थ। समर रावर प्रथिराजं॥
मेर मद्धि सायर समद्धि। बड्ड गिरि राजं॥
जित्ति कित्ति पन सांइ सों। भिरन करन बीरत्त गुर॥
चामंडराइ दाहर तनौ। भारथ्थां लीनी सुधर॥ छं० ॥ १६० ॥

पृथ्वीराज के युद्ध करने का वर्णन।

भुजंगी ॥ धरा भ्रम्म भारी सु लीनी नरिंदं। मनों मेनिका देव जुद्धं सुकंदं॥
कमड्डं हँकारे हकें हाक बज्जी। कहै सीर भारी उदै मीर रज्जी॥
छं० ॥ १६१ ॥

सनक्कंत बानं भनक्कंत षग्गं। मनो बीज के बाल अभ्यास जग्गं॥
दुहुं दीन दीनं चहुव्वान गोरी। हड्डूत षेलंत बालक्क जोरी॥
छं० ॥ १६२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नियं भ्रम्म देहं इकं अंग जान्यौ। जिनें मुक्ति कौ रूप अंगं पिछान्यौ॥
गजं दंत कट्टै करै सस्त्र भारी। तिनै पच्छ तारी दियै हथ्थ तारी॥
छं०॥ १६३॥

उदै इंद कट्टै रबी कोर मानं। इसे षग्ग तेगं भमक्कै प्रमानं॥
पटे हथ्थ झारे उतारे निनारे। मनो सारसी हथ्थ कीने चिकारे॥
छं०॥ १६४॥

उड़ै सद्द बानं विवानंत रुक्कै। तिनं मारुतं सद्दगं मद्द सुक्कै॥
छबी छब्बि रत्तं उड़ै छिंछ भारी। मनो मत्त मेघं बरष्षै करारी॥
छं०॥ १६५॥

परं नाग नागं हलै नाग जानं। तहां संगमं मान आवै न पानं॥
छं०॥ १६६॥

युद्ध का आतंक वर्णन।

कवित्त॥ सगन संग आवइ न। नाग भिंजै नागिन रुधि॥
परे नाग हलहलिय। नाग भागै कमठ्ठ सुधि॥
मननि सीस मुक्कयौ। इहै दंपति विचारै॥
तिहिन संग आवै न। संग नागन हक्कारै॥
घरि एक भयौ विभ्रमत मन। बहु रिस हार सिंगार किय॥
नव रस विलास नव रस सुकथ। राज उट्ठि संग्राम लिय॥छं०॥१६७॥

कवि कृत वीर-मत-मुक्ति वर्णन।

सोइ सँग्राम सोइ साम। सोई विश्राम मुगत्ती॥
सोइ सदेव समदेव। ताह अच्छरि रस मत्ती॥
जु कुछ मुकति तिन ग्रसिय। सार बज्जे नह अंगं।
ग्रसिय जनं किय अग्गि। जोग जुट्टे घन जंगं॥
विन जोग विरह भारथ्थ विन। सूर भेइ भेदै न कोइ॥
पारथ्थ पंच पंचौ सुबर। गयौ सूर भेदेव सोइ॥ छं०॥ १६८॥

वीररस प्रभात वर्णन।

भुजंगी॥ चढ़े ज्वान अष्षं नषं काम रंगं। परे पल्लभा राइ मभ्भे सुरंगं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चढ़े कोतरं कोक कोकं पुरानं। रबी तेज भग्गी सची चार पानं॥
१६९॥ छं०॥

मुदे स्रर ससिं सरोजं पुहप्पं। गयं मुद्दितं पच्च आरद्द अप्पं॥
कमोदंत मोदं घरं वै प्रमानं। तहां काइरं सो सदिष्षं तथानं॥
छं०॥ १७०॥

प्रफुल्लंत बीरं चकं चक्क थानं। इकं मुक्ति बंछै इकं सामि पानं॥
चिया कंत बंछै वियोगी सँजोगं। रनं स्रर बंछै अछी अच्छ भोगं॥
छं०॥ १७१॥

भई सिंहरेनी बरं दीह ऐसें। मनो संधि बालं विराजंत जैसें॥
दुहुं सेन बज्जे निसानं दुरत्ते। तहां पंष पंषी रहे थान जत्ते॥
छं०॥ १७२॥

दुवं सेन बेनं निबंती प्रकारं। दोऊ बीर छेड़े तजे बाज सारं॥
बिना नींद पानी बिना अन्न धारं। रहे एक हिंदू सहिंदान सारं॥
छं०॥ १७३॥

भषै मेच्छ बाजी रनं जे करारे। तके बीर कज्जी बिना अग्गि सारे॥
भषैं मंस चोरं धिगं जा प्रकारं। इसी रैंन बित्ती दुहुं दीन भारं॥
छं०॥ १७४॥

उरब्बीति मीरंत वारंति षानं। हसे रंग रंगं रसं बीर पानं॥
इसी रेन दोऊ गई नट्ठि नट्ठी। गई कायरं कट्टु स्ररंत मिट्ठी॥
छं०॥ १७५॥

कवित्त॥ रही रत्ति आरत्ति। तत्त लग्गी परिमानं॥
जुद्ध जूह सुरतान। मंच कीने परिमानं॥
भान पयानन होइ। लोह जित्ते पायानं॥
सार धार निरधार। सार उद्धार समानं॥
षुरसान षान तत्तार रन। दिसि रत्ती रत्तीत अप॥
भारथ्थ कथ्थ भावै भवन। सुबर बीर बीरंत जप॥ छं०॥ १७६॥

प्रातःकाल होते ही दोनों सेनाओं का सन्नद्ध होना।

दूहा॥ बर भग्गी जग्गीति निसि। दोऊ दीन परमान॥
बंचि सिपारे तीसचव। करि निवाज सुरतान॥ छं०॥ १७७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभात वर्णन।

कवित्त ॥ क्रम उघरीय किपाट। चौर भग्गंत रोर तनु ॥
चक चक्की जंमिलहि। उघरि सत पच भत्त जनु ॥
भ्रंग भृंगि सम भ्रमहि। बज्जि मारुत सौरभ चलि ॥
गय उड़गन ससि घटिय। बढ़िय आकास किरनि कर ॥
सेंविधि सुरंग व्यापार घन। रवि रत्तौ मुष दिष्षयौ ॥
भासकर सहसकर क्रंमकर। नवकर कमुद विसष्षयौ ॥
छं० ॥ १७८ ॥

कंठभूषन ॥ कंठय भूषन छंद प्रकासय। बारह अच्छरि पिंगल भासय ॥
अठ्ठय संजुत मत्त प्रमानय। कंठयभूषन छंद वषानय ॥छं०॥ १७९ ॥
उग्गि रतं रत अंमर भासय। भानु सुदेव दिवालय थानय ॥
पाप हरै तन क्रम्म प्रगासय। कौ जम तात जमुन्नय भासय ॥
छं० ॥ १८० ॥
तात करन्नय पूरन पूरय। बंध कर्मोदनि को मत सूरय ॥
बंध जवासुर ग्रीषम थानय। अर्क पलासन काम विरामय ॥
छं० ॥ १८१ ॥
कौ सुनि तात सनी सर सूरय। भास करं करुना मति पूरय ॥
है कर सस्तुति भाष प्रकारय। तारय नाथ दिनं मति तारय ॥
छं० ॥ १८२ ॥
हैवर ओष करं गिर पारय। मानहुं देव दिवालय साजय ॥
भंजन कुंज अस्सुव्रत षंडय। सो धरि ध्यान धरंत विचंरय ॥
छं० ॥ १८३ ॥
एक घरी धरि ध्यान स दिष्षिय। मुक्ति स लच्छिय संपन अष्षिय ॥
छं० ॥ १८४ ॥

सूर्य्य की स्तुति।

कवित्त ॥ सरद इंद प्रतिब्यंब। तिमर तोरन गयंद घर ॥
ब्रह्म विष्णु अंजुल। उदंत आनंद नंद हर ॥
इक्क चक्र चिहुं दिसै। चलत दिगपाल तुंग तन ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमल पानि सारी अरुन। संसार जियन जन॥
उड्ड ंग बीर छच्छव पवन। निरारंभ सम्नह सुमुष॥
कविचंद छंद इम उच्चरै। हरो मित्त दोइ दीन दुष॥ छं० ॥१८५॥

सूरवीर लोगों का युद्ध उत्साह वर्णन।

दूहा॥ सो ऊगत मंगी सु कर। कढ़े लोह करि छोह॥
दै दिवान देवत्त गति। हाइ हाइ रति रोह॥ छं० ॥ १८६॥
कवित्त॥ हाइ हाइ .... । .... अरिष्ट गरिष्टं॥
चाहुआन सुरतान। बीर भारथ्थ वरिष्टं॥
दै दुवाह अति धाह। षग्ग षोलै छिति तोलै॥
सस्त्र बीर बाजंत। देव देवासुर डोलै॥
डक्कनि डहक्कि जोगनि लसय। लसै लोह देवर धसै॥
चामंडराय दाहरतनौ। राज ध्रम्म चित्तं बसै॥ छं० ॥ १८७॥

सामंतो की रणोद्यत श्रेणी का क्रम वर्णन।

उहू दिसा सामंत। अद्ध उभ्भै दुहुं पासं॥
रा चामंड जैतसी। सलष लूरिवा सुवासं॥
लोहानौ आजान। बलिय पाँवार सभारिय॥
दै दिवान देवत्त। वर्ज लैहै अधिकारिय॥
महनसी मेर पच्छै न्रपति। मुगति हथ्थ कट्टी निजरि॥
दैवत्त वाह दैवत्त गति। सुबर बीर ठट्टे उसरि॥ छं० ॥ १८८॥

यवन सैनिकों का उत्साह।

* सौ मीरन संगमति। वज्जि नीसान षेत रहि॥

---

* मालूम होता है कि या तो यहां के कुछ छन्द नष्ट हो गए हैं या क्रम में कुछ गड़बड़ पड़ गया है। छन्द १६८ से छन्द १८९ तक जो क्रम वर्णन है, उसके आगे युद्ध सम्बन्धी वीररस के छन्द होने चाहिएं। तिस के वाद मृतकों की संख्या या युद्ध की प्रशंसा इत्यादि होनी चाहिए। परन्तु छन्दों के खंडित होने के सिवाय हमारे विचार से छन्दों का लौट फेर भी हुआ है। छन्द १४३ से लेकर छन्द १५८ तक का पाठक्रम उधर बेसिलसिले पड़ता है। इसलिये संभव है बज कि प्राचीन समय में खुले पत्रे पर पुस्तकें लिखी जाती थी लेखक की असावधानी से गड़बड़ हो गया हो। परन्तु पाठ क्रम में तीनों प्रतियां समान होने के कारण हमने कुछ लौट फेर करना उचित न समझ कर केवल यह टिप्पणी मात्र दे दी है। पाठक स्वयं विचार कर देखें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हय गय नर विच्छुरै। रुद्र भौ बीर बीर नह॥
निस वर वर उम्भरहि। भूत प्रेतन उच्छव सिर॥
बज्जि घाव हक्के। त्रिघाव चौसट्ठि रंभ बर॥
नारद्द नद्द सद्दह सुभर। बीरभद्र आनंद भर॥
इहि भंति निसा सुर सुंदरी। भर हर हर बज्यौ सुभर॥छं०॥१८९॥

युद्ध का अक्षम आनन्द कथन।

भय विभात लगि गात। रत्त रत्तं रन मत्यौं॥
हिंदवान तुरकान। जुद्ध अंबर अंगत्यौं॥
अगति मग्ग पाइन। सुगत्ति मारग बहु चल्ल्यौ॥
अस्वमेद बहु दान सस्त्र। सम एक न षुल्ल्यौ॥
स्वामित्त धरम कीनौ जु इम। मन उछाह अच्छे रहसि॥
ना करी कोइ करिहै न को। करौ सु कौ रवि चक्र गसि॥छं०॥१९०॥

दूहा॥ चक्र चरित सोमंत ग्रसि। निज निवर्त नग नाम॥
चाहुआन सुरतान सौं। बजि ऐसी असि ठाम॥ छं०॥ १९१॥

युद्ध में मारे गए वीरों के नाम।

कवित्त॥ गयौ षान तत्तार। पऱ्यौ पुर सानति षानं॥
पऱ्यौ हिंदु वर रूप। भीम परि परि रन भानं॥
पऱ्यौ भट्टि बलिभद्र। मान परिमान न मुक्यौ॥
पऱ्यौ जंगलीराव। बीर दहिमा दल रुक्यौ॥
अजमेर जोध जोधा परिग। पर किल्हन बन बीर बँध॥
उप्पारि षान हुस्सेन लिय। चढ़ि अच्छरि मोरै सु कँध॥
छं०॥ १९२॥

तत्तार खां का मनहार होकर भागना।

दूहा॥ इन परंत तत्तार गौ। ग्रब्ब सु नंष्यौ साहि॥
लज्ज ग्रब्ब भै मै दुऱ्यौ। जस सु जोति बल नांहि॥छं०॥१९३॥

खेतझरना होना और लाशों का उठवाया जाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ गौ ततार तजि रन । पहार हुंव्यौति समर बर ॥
बजि निसान आवत्त । जीति षुरसान सूर भर ॥
उप्पारिग सामंत । बीस तिय डोल प्रमानं ॥
डोला तेरह तीस । समर उप्पारि समानं ॥
दल जल जिहाज रावर समर । धजा किति उड्डी फहरि ॥
हय गय सु लुट्टि षुरसान दल । होइ फकीर छुट्टंति फिरि ॥
छं० ॥ १६४ ॥

युद्ध में मृत वीरों के नाम।

परिग षान षावास । गौर हांसीपुर धारी ॥
परि प्रताप सागर । नरिंद रन सूर विभारौ।
पऱ्यौ कद्दै चंदेल । पऱ्यौ राजा नव भानं ॥
परि मोरी महनंग । जंग जीते जुग जानं ॥
पाँवार परिग पूरन्न पहू । पहर एक भारथ्थ करि ॥
केसर नरिंद केसर बलह । तेग चित्ति कीरति लहरि ॥
छं० ॥ १६५ ॥

दूहा ॥ जीति समर भारथ्थ बर । न्रिप सम करि जुध ताम ॥
ढुंढि षेत भारथ्थ परि । कहि कविंद्र तिन नाम ॥छं०॥१६६॥

कवित्त ॥ जंगलवै बर मग्गि । भग्गि तत्तार सपन्नौ ॥
परिग सुभर प्रथिराज । जैत बंधव सलषन्नौ ॥
परिय पुत्त महनंग । सिंघ नाहर नाहर हर ॥
कन्ह पुत्त दुति कन्ह । चंद रघुवंस चंद बर ॥
नरसिंघ पुत्त हरसिंघदे । परिग सु किल्हन राम तन ॥
बीरम्म बीर माल्हन परिग । मल्हन वास विरास मन ॥
छं० ॥ १६७ ॥

हांसी युद्ध सम्बन्धी तिथि वारों का वर्णन।

हांसीपुर दिन सत्त । तीय बासर अग्या बर ॥
घाव बांधि भर सुभर । ठेलि दुज्जन प्रवाह धर ॥
वार सोम सत्तमी । राज प्रथिराज सँपत्तौ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भर रष्षवि अरि भंजि। मिलिय रावल रन रत्तौ ॥
सामंत रष्षि भारथ्थ जिति। गवन रष्षि नन राज अंग ॥
बर मिल्लि समंद सलिता सुबर। जलन देषि एकह सुमग ॥
छं० ॥ १९८ ॥

रावल और पृथ्वीराज का दिल्ली को जाना।

जौति षान तत्तार। पारि हांसीपुर नीरं ॥
जौति समर भिरि समर। रुधिर रत लत्त सरीरं ॥
प्रथु सामत प्रथिराज। सुने सामंत सु कथ्थं ॥
जथ्थ कथ्थ अरि करिय। डोलि नन स्हर सु रथ्थं ॥
छलि कै अमंत मुक्कै न बल। तजि हांसी सम्हौ भिरिय ॥
रुंधयौ चक्र जुग्गिनि सु बर। बीर बीय संमुह फिरिय ॥
छं० ॥ १९९ ॥

दूहा ॥ ढिल्ली सह सामंत सथ। अमर सुक्रत ढिग थान ॥
समरसिंघ रावर सुभर। ग्रह लै गौ चहुआन ॥ छं० ॥ २०० ॥

रावल का दिल्ली में बीस दिन रहना।

भावभगति बहु विद्धि करि। हम लज्जा तुम भीर ॥
इक्क अरी कमधज्ज गिनि। इक सहाबदी मीर ॥ छं० ॥ २०१ ॥
बालुक्का सड्यौ समर। और विध्वंस्यौ जग्ग ॥
उभै बत्त पुब्बै बहुत। फेरि उन्हाई अग्गि ॥ छं० ॥ २०२ ॥
दिवस पंच मनुहारि करि। पहुँचायो चिचंग ॥
बीस अश्व गज पंच सजि। दै पहुँचाए रंग ॥ छं० ॥ २०३ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके द्वितीय हांसीपुर जुद्ध नाम बावनमों प्रस्ताव सम्पूर्णम् ॥ ५२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पज्जून महुवा नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(तिरपनवां समय ।)

कविचन्द की स्त्री का पूछना कि महुवा युद्ध क्यों हुआ।

दूहा ॥ सुक्क सुकी सुक संभरिय । बालुक कुरंभ जुद्ध ॥
कोट महुव्वा साह दल । कहौ आनि किम रुद्ध ॥ छं० ॥ १ ॥

कविचन्द का उत्तर देना।

कवित्त ॥ गयौ साह गज्जनैं । हारि कूरँभ षग झट्टिय ॥
सब लुट्टे गजबाजि । हेम मानिक नग बट्टिय ॥
अति उर लग्गिय दाह । हारि कूरँभ सम लड्डिय ॥
सह बालूक कमंध । उभय पज्जून सकिड्डिय ॥
अष्षैव ताम तत्तार बर । करौ कूंच उत्तं गहर ॥
महुवा दिसान चंपै धरा । बीर पजून सु बंधि बर ॥ छं० ॥ २ ॥

खुरसान खां का महुवा पर आक्रमण करना।

दूहा ॥ पठयौ षान ततार बर । कोट महुवा थान ॥
षा निसुरति रूमों नदी । बर कीनों अगिवान ॥ छं० ॥ ३ ॥
कियो कूंच गोरी गहर । सहर महुव्वा थान ॥
षां षुरसान षुरेस षां । पाइल लष्ष प्रमान ॥ ॥छं० ॥ ४

शाही सेना का वर्णन।

कवित्त ॥ चढ्यौ साह सुरतान । षान षोयौ फिर ढूंढ़न ॥
सम कूरँभ चहुआन । धरा मोह अब मंडि रन ॥
लष्ष एक असवार । सहै बानह सम बारुन ॥
पाइक अयुत चिपंच । संग तत्तार सु धारन ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलिराइ जेम दानव बलिय। तेम प्रकारन मड्डि मढ़॥
उड़गन कि चंद तत्तार दल। इम घेर्यौ मोहब्ब गढ़॥ छं०॥५॥

निड्डुर का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना।

दूहा॥ रष्पन गढ़ थानौ नृपति। बहु दिन बीर पजून॥
पठये दूत्त सु राज पै। निड्डुर मन साऊन॥ छं०॥ ६॥
दूत कहिय दारुन षबर। फौज साह सुरतान॥
पारस राका दल प्रबल। कोट महूवा षान॥ छं०॥ ७॥

राजा का दरबार में कहना कि महूवा की रक्षा के लिये किसे भेजा जावे।

सित्त सु मत्तह सूर बर। सकल लरन सुरतान॥
को अगिवान सु किजियै। जुद्ध महूवा थान॥ छं०॥ ८॥
फौज दिष्षि चहुआन की। सबै सूर रनधीर॥
मड्डि राज प्रथिराज पति। हाहुलिराव हमीर॥ छं०॥ ९॥

सब लोगों का पज्जून राय के लिये राय देना।

नेज बाज नीसान सजि। चढ़ै सकल सामंत॥
कूरँभ बिन को अंग में। अनी लष्य हैमंत॥ छं०॥ १०॥
कवित्त॥ पुच्छि राज प्रथिराज। समर रावर अधिकारिय॥
को ढुंढारह राइ। षग्ग मग्गह संभारिय॥
मोसें बोलि नरिंद। (१)सैन दै नैन मिलाइय॥
ए कूरंभ नरिंद। साह सम राह सु ग्राहिय॥
बोलयो जाम जद्दों सुबर। चिचंगी रावर सुभर॥
इन सम न कोइ कूरंभ बर। बीर न को रबिचक्क तर॥छं०॥११॥

पज्जून राय की प्रशंसा।

इन जित्तौ जंगलू। षेदि कढ्यौ तत्तारिय॥
बद्ध पुच कै वार। जुद्ध अरियन सिर भारिय॥

(१) कृ. को.-'सैन दै नैनानि लाहय'।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन भेहरा पै जाय । षेदि कढ्यौ बालुक्की ॥
इन गिरिनार पजाइ । लियौ छौंगा चालुक्की ॥
इन नंषि षोदि आबू सिषर । अजै बीर अजपाल हित ॥
केवरा बीर केवर हतिग । करै बीर आनंद षिति ॥ छं० ॥ १२ ॥
इन पंगानों बीर । बाद षोषंद पहारिय ॥
इन देवग्गिरि जुरिग । बंधि मोहिल जुध धारिय ॥
इन जालौरय जाय । दई भाटीं महनंसिय ॥
बंधि जोध अजमेर । बैर भंज्यौ मलअंसिय ॥
प्रथिराज राज सनमान दिय । ढिल्लिय धर अविचल धरा ॥
संग्राम सूर कूरंम ढिग । नको बीर बीरंमरा ॥ छं० ॥ १३ ॥

पृथ्वीराज का पज्जून राय को जागीर और सिरोपाव देकर आज्ञा देना ।

दूहा ॥ मानि राज प्रथिराज बर । समर मिलिग पज्जून ॥
बर हांसी हिंसार दिय । गढ़ दीने दह दून ॥ छं० ॥ १४ ॥
कवित्त ॥ दीने छच मुजीक । सत्त नीसान चोर बर ॥
रतन हेम हय गय । सभूह आदर अनंत भर ॥
सुधर बीर अति धीर । कन्ह कल्हन बुल्लायौ ॥
अप्पि मह्लवा लाज । बाजि बर बीर चढ़ायौ ॥
सुरतान साह गोरी चढ़िग । षां ततार अगिवान करि ॥
उतऱ्यौ सिंधु अरु विहथ बिच । मीर सुसान गुमान धरि ॥
छं० ॥ १५ ॥
दूहा ॥ सगुन सरभ्भर सुभ असुभ । जिह्वा जहर मुनिंद ॥
षलं साह कारन करन । नह पुच्छयौ नरिंद ॥ छं० ॥ १६ ॥

पज्जून की प्रतिज्ञा ।

कवित्त ॥ सुनि ततार बर बीर । तोन बंध्यौ गोरीय झुकि ॥
दैवकाल उपज्ज्यौ । छित्ति छचीन रहै लुकि ॥
अति आतुर पतिसाह । हम स हिंदु सामंता ॥
ज्यौ रोजा सों झुकि । वहथ छंडै जुधवंता ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूरंभ सकल बरबंधि कैं। हौं बंधन गोरी करौं॥
महुवा सु दिसा चंपी धरा। सुबर बीर कित्ती धरौं॥ छं०॥ १७॥

पज्जूनराय और शहाबुद्दीन का मुकाबिला होना।

दूहा॥ षरिग सहाब महुव्व धर। दिल्ली दछिन छंडि॥
पहुंच्यौ तहां पजून पै। आनि सु भारथ मंडि॥ छं०॥ १८॥

युद्ध वर्णन।

बिराज॥ सुरत्तान गोरी, कढ़ी तेग जोरी। पजूनं सपुत्तं, मलैसिंह जुत्तं॥
छं०॥ १९॥
भिरै बीर बीरं, बजे सद्द तीरं। भजै कोटि धारी, बयन्नं करारी॥
छं०॥ २०॥
करं कुंत हल्लैं, महाबीर बुल्लै। मलैसिंह हथ्थं, दिषै कोटि सथ्थं॥
छं०॥ २१॥
रुधिं धार धारं, बहैं ज्यों प्रनारं। स्वयं बीर बीरं, महामत्त तीरं॥
छं०॥ २२॥
जिनै मुष्ष पानी, झुलै षग्ग बानी। उठे उट्ठि धावै, मनं मत्त भावै॥
छं०॥ २३॥
छुटै बीर वीरं, रुलंते सरीरं। कहै चंद बानी, उमाते प्रमानी॥
छं०॥ २४॥

पज्जून राय की वीरता।

दूहा॥ भीर सु भंजत बीर बर। चढ्यौ भान मध्यान॥
जे कूरंभ करै सु भर। देव मनुष्ष प्रमान॥ छं०॥ २५॥
धंनि सुकृत पज्जून कौ। मलयसिंह वलिभद्र॥
स्वामि सद्द बंधन हसहि। कट्टन भीर नरिंद॥ छं०॥ २६॥
त्रिभंगी॥ कूरंभा बाले, सिंधुर टाले, असिमर झाले, झुभझाले॥
षानं मुलतानं, से षुरसानं, तन तुरकानं, भय भानं॥
गजदंत सु कट्टैं दै पग चट्टैं, कंद उकट्टैं, भिल्लानं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*नरजे बल कारी, सुर बर सारी, उत्तम चारी, बल धारी ॥
छं० ॥ २७ ॥

यवन सेना का भाग उठना ।

कवित्त ॥ भग्गौ दल षुरसांन । षान पीरोज उपारे ॥
षूब षान आकूब । षूब सिर तेग प्रहारे ॥
मारूराव नरिंद । पारि पष्षर परिहारी ॥
दुवै अंग बलिभद्र । घाव दुअ अंग विचारी ॥
षट वार चढ़ायौ षित्त में । जै बज्जा घन बज्जया ॥
प्रथिराज भाग जं जं जियै । कूरंभराव सु रज्जया ॥ छं० ॥ २८ ॥

पज्जून राय की प्रशंसा ।

प्रथीराज साहन समूह । दल मिलिग मुहल्लै ॥
तिनह दलह रावत्त । डरै डगमगैं न डुल्लै ॥
संभरि राव नरेस । फिरे पिछवाह न दिष्यौ ॥
नलह बंस नल बर । नरेस दस दिसि दल रष्यौ ॥
गहि सेल सकुंजर सिर हयौ । भर भंजन जग डग्ग सुअ ॥
पज्जून महुव्वै जीति रन । जैत पच कूरंभ तुअ ॥ छं० ॥ २९ ॥

पज्जून राय का दिल्ली आना और शाह का गजनी को जाना ।

दूहा ॥ जीति महुव्वा लीय बर । ढिल्ली आनि सु पथ्थ ॥
जं जं कित्ति कला वढ़ी । मलै सिंह जस कथ्थ ॥ छं० ॥ ३० ॥
गयौ साह फिरि गज्जने । बहु दल रिन में कढ्ढि ॥
उभै हारि असि पति लही । उर अति रोस अचढ्ढि ॥
छं० ॥ ३१ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पजून महुवा जुद्ध नाम त्रेपनों प्रस्तावः संपूर्णम् ॥ ५३ ॥

* इस छन्द का बहुत कुछ अंश लोप हो गया मालूम देता है पाठ में भी बहुत भेद पड़ता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ पजून पातसाह जुद्ध प्रस्ताव लिष्यते।

(चौवनवां समय।)

और सामतों को महुवा में छोड़ कर पज्जून का नागौर जाना।

कवित्त ॥ रष्षे कन्ह नरिंद। सलष रष्षे बड़ गुज्जर ॥
उद्दिग बाह पग्गार। साह साईं भुज पंजर ॥
रष्ष निड्डुर बीर। बीर रष्षे सु पवारं ॥
किल्हन दे तूंअर। उतंग किल्लन सिर सारं ॥
पज्जून महौबे जीति बर। पुच रष्षि वलिभद्र बर ॥
तिय बंध मलैसी पल्हसी। सुवर चित्त चिंता सुभर ॥ छं० ॥ १ ॥

दूहा ॥ ए सब रष्षि पजून संग। दै सांई सिर भार ॥
बर नागौर सु रष्षिया। झिल्लन सार प्रहार ॥ छं० ॥ २ ॥

मनहीन शाह का गजनी को जाना और पजून राय को परास्त करने की चिंता करना।

कवित्त ॥ गयौ साह गज्जनै। तज्जि मौहब महत्त सम ॥
उभै हारि सिर धार। छंडि हय गय प्राक्रम भ्रम ॥
बढ़िय दुःष घटि सुष्ष। संझ छायारु प्रात फुनि ॥
गयौ साह पन एम। पाग बंधों कूरंभ हनि ॥
पठ्ठये दूत नागौर दिसि। संभरि आषेटक स पुह ॥
श्रीफल सु आनि आसेर गढ़। दिसि जुग्गिनिपुर गंम तह ॥
छं० ॥ ३ ॥

धम्मायन का गजनी को समाचार देना।

दूहा ॥ चल्यौ राज दिल्ली दिसा। मुर धर सुभर सु रष्षि ॥
धम्माइन काइथ कुटिल। कग्गद गोरी लिष्षि ॥ छं० ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोरी पै गय दूत बर। षान 'साहि सुरतान॥
बर कूरंभ चरिच दिषि। धर नागौर प्रमान॥ छं० ॥ ५॥

शहाबुद्दीन का मंत्री से पज्जून राय के पास दूत भेजने की आज्ञा देना। इधर सेना तय्यार करना।

कवित्त॥ कहै साहि साहाब। अहो तत्तारषान सुनि॥
धर नागौर प्रमान। थान पज्जून रष्षि फुनि॥
संभरिवै जहों दिसान। आसेर सु हिंडिय॥
व्याह विनोद सुरंग। न्रपति देवास समंडिय॥
फुरमान लिषौ कूरंभ तन। गहिय मान फिरि कढ़िहौं॥
कै पाइ आइ पतिसाह गहि। कै बंधिरु वपु षंडिहौं॥ छं० ॥ ६॥

पद्धरी॥ लष तीन मीर अवसान सज्जि। चहुआन धरा कामना किज्जि॥
दस सहस करी मत्त प्रमान। आषाढ़ सु गज्यौ मेघ जानि॥
छं० ॥ ७॥

पाइक्क सहस चौसह चिअच्छ। दह घाव इक्क टारंत स्वछ॥
सावद्द वेध साइक्क मग्ग। दिष्षेव साइ बंधंत षग्ग॥ छं० ॥ ८॥

साइक्क साइ बर हने तीर। असि वरहु पंच कटि बाज बीर॥
सिंगिनिय उभै बर धार दीस। गुन चढ़त तेन बर टंक बीस॥
छं० ॥ ९॥

कूरंभ दीसा फुरमान लष्षि। सिर ताव भाव बहु बैन अष्षि॥
फुरमान लिष्षि सुरतान बीर। मुक्कले दूत नागौर तीर॥छं०॥१०॥
पज्जून तेगबर छंडि हथ्थ। कै मंडि जुद्ध सुरतान सथ्थ॥
छं० ॥ ११॥

यवनदूत का नागौर पहुंचना।

दूहा॥ गयौ दूत नागौर धर। जहं कूरंभ बर बीर॥
सम सहाब संमर करन। आयो जोजन तीर॥ छं० ॥ १२॥

पज्जूनराय का हँसकर निधड़क उत्तर देना।

(१) ए.-सहित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ हँसि पज्जून नरिंद। कहै सुरतान साह बर ॥
जीव डरै लख्खवै। सो न कूरंभ होहि नर ॥
सो न होहि रघुबंस। तेग छंडैं मरनं डर ॥
हम छंडैं जब तेग। सूर उग्गै न दीह पर ॥
चल्लै न पवन गंगा थकै। गवरि तजै बर ईस बर ॥
पज्जून नाम कूरंभ मो। साहि जान चिंता न कर ॥ छं० ॥ १३ ॥
कहैं राज पज्जून। बीर कूरम्भ चेत बर ॥
हम सलाह सुरतान। हम सु रष्षें ढिल्लिय धर ॥
हम रवि मंडल भेदि। जाम लगि सत्त न छंडैं ॥
षंड षंड धर ढारि। सीस हर हार सु मंडै ॥
सुरतान सुनिब चिंता न करि। मंडि जौति नागौर दिसि ॥
कूरंभ अचल लज्जा सुभर। मेर जेम करतार कसि ॥ छं० ॥ १४ ॥

दूत का गजनी जाकर शाह से पज्जून राय का संदेसा कहना।

दूहा ॥ गयौ दूत गज्जन पुरह। दिय दुवाह सुरतान ॥
भग्गि अवर चक्कित सुभर। कूरँभ तजै न मान ॥ १५ ॥

शहाबुद्दीन का कुपित होना।

कवित्त ॥ तमकि साहि सुरतान। षान तत्तार बुलायौ ॥
हम सुषान जंगली। जुद्ध चहुआन चलायौ ॥
षोषंदा बर बाद। मारि गम्मार सु जित्तौ ॥
डूंगोरी साहाबदीन। लोकह परि लित्तौ ॥
पज्जून सुनबि सामंत सम। आय पाय सुरतान परि ॥
कै अप्पि कोट नागौर तजि। कै सु साहि सनमुष्ष लरि ॥
छं० ॥ १६ ।

इधर नागौर में किलेबन्दी होना।

दूहा ॥ पुच्छि कन्ह बलिभद्र बर। मलैसिंह दुअ बंध ॥
चलहिं साह संमुह लरन। लज्जह काँवरि कंध ॥ छं० ॥ १७ ॥
बर पज्जून बरज्जिया। न्रपतिन ढिल्ली ढाइ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को रष्षै ढुंढा रहा। उभै पूत सँग लाइ॥ छं० ॥ १८॥
तात सु अग्या मानि बर। साजि कोट नागौर॥
सकल सूर सामंत मनि। मरन सरन किय और॥ छं० ॥ १९ ॥

पज्जून राय की बीर व्याख्या।

कवित्त ॥ सकल सूर सों कही। बीर कूरंभ उचारिय॥
न रहै तन धन तरुनि। किरनि वेताइन चारिय॥
वापी कूप हषम्म। सरित सर बर गिरि जैहैं॥
मठ मंडप बर कोट। कोटि पाषंड सचै हैं॥
अप कित्ति कित्ति जैहै न जग। रहै मग्ग षिची सुबर॥
पज्जून द्रढ्ढ नागौर गहि। साधन सार समग्ग कर॥ छं० ॥ २० ॥

यवन सेना का नागौर गढ़ घेर कर नोल चलाना।

पद्धरी ॥ सुरतान घेरि नागौर गढ्ढ। मानो कि मड्डि प्रक्कार मढ्ढ॥
भर बाज करिय पावस पमान। मानो नषिच मधि एम जान॥
छं० ॥ २१ ॥
सावाति भांति चिहुं दिसा लग्गि। अंजनी सुतन दै लंक अग्गि॥
गोला अवाज दस दिसा घोरि। बंधनह पाज कपि करिय सोर॥
छं० ॥ २२ ॥
दस दिसा षान गढ़ बंटि दीन। अप अप्प ठौर चौकीस कीन॥
चव लष्ष मीर नाषित प्रमान। घेऱ्यौ सु मड्डि पज्जून भान॥
छं० ॥ २३ ॥

राजपूत सेना का घबड़ाना और पज्जूनराय का उसे धैर्य्य देना।

कवित्त ॥ घेरि साह नागौर। पंति मंडी सु पंति पर॥
दैव काल सामंत। सत्त छूटंत बीर बर॥
पथ गोपी लुट्टई। बहित बारह सत लुच्यौ॥
दुर्जोधन बल बंधि। सिंधु बंधी जल लुच्यौ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानयौ सत्त सुरतान बर। सकल सूर सामंत डर॥
जंपै सु चंद कूरंभ जस। प्रथीराज जित्तौ सु भर॥ छं०॥ २४॥

पज्जून रु बलिभद्र। बोलि कूरंभ करारो॥
सत छुट्यौ नहि साह। सत्त मो सत्तह सारो॥
उदिग बांह पग्गार। सुनहु सामंत सबाहौ॥
सक्क फौज गोरी। नरिंद पंती गज गाहौ॥
पंचीस पंच नह अग्गरौ। फेरि काल फुनि फुनि परौ॥
जं करो सब्ब सामंत मिलि। बोल रहै जुग उब्बरौ॥ छं०॥ २५॥

पज्जून राय का यवन सेना पर रात को धावा मारना।

तेग तमकि पक्करिग। सकल सामंत सूर बर॥
पंच बंध कूरंभ। कोटि रष्षे पहार भर॥
उघ्घारिय गढ़ पौरि। अद्ध निसि बीर सु तत्ते॥
रत्तिवाह करि चाह। कूर करि सूर सपत्ते॥
राजाधिराज सामंत सर। तमकि तमकि तेगं कसी॥
ससिपाल जोति ज्यों लज्ज फिरि। कूरँभ आनन में बसी॥
छं०॥ २६॥

मुसलमान सेना के पहरुओं का शोर मचाना और सेना का सचेत होना।

विराज॥ बसी मुष्ष लज्जी, सिला धूर रज्जी। दिसा उत्तरायं, सु बीरं पठायं॥
छं०॥ २७॥

कियं कूच मंचं, हलालं अनंतं। लगे लोइ चौकी, मनो नारि सौकी॥
छं०॥ २८॥

दुअं इक्क यीयं, भजे पुट्ठि दीयं। चढ़े पान षानं, समंझी गुरानं॥
छं०॥ २९॥

सबै सेन धायौ, धषं जैति नायौ। मजूनं सपूतं, मिलै सिंह जूतं॥
छं०॥ ३०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नषे कोट पाटं, हुऔ जोट थाटं। कटे कोट डेरा, कियं साह घेरा॥
छं० ॥ ३१ ॥
मसंदं हजारं, ग्रहे तेग सारं। सुरत्तान पायौ, सनंमुष्ष धायौ॥
छं० ॥ ३२ ॥
सबै सूर सज्जी, मँडे जानि पज्जी। षुले षग्ग राजी, बलीभद्र साजी॥
छं० ॥ ३३ ॥
भुजं ओट कोटं, पहारंति जोटं। मुषं सुष्ष आई, सहस्सा दिषाई॥
छं० ॥ ३४ ॥
जकी जोग माया, हरी रूप पाया। तुटै अंग अंगं, विभंगं चिभंगं॥
छं० ॥ ३५ ॥
छनंकेति तीरं, परं वज्र श्रीरं। पयं पल्ह धायौ, सुरत्तान आयौ॥
छं० ॥ ३६ ॥
मिलै सिंह साहं, विवंधो विवाहं। उड़ै चाल टोपं, ति कूरंभ कोपं॥
छं० ॥ ३७ ॥

दूहा ॥ इक ओर बीरम्म बर। कियौ गहम्मह सूर॥
परि सुरतानह उप्परै। अति आतुर गति क्रूर॥ छं० ॥ ३८ ॥

हिन्दू और मुसल्मान दोनों सेनाओं का युद्ध।

षा षुरमान ततार तब। सुनिय कूह दल सथ्थ॥
सहस बीस गष्षर लियें। आयो बीर समथ्थ॥ छं० ॥ ३९ ॥
नंषि पाट पज्जून रिन। पत्ते गष्षर कोट॥
सहस बीस गष्षर मसँद। लग्गि करी जम जोट॥ छं० ॥ ४० ॥

दोनों में तलवार का युद्ध होना।

कवित्त ॥ सहस बीस गष्षर गुराय। तत्तार षान रहि॥
नव दूनं कटि बाज। बीर बलिभद्र हथ्थ बहि॥
मुररि सुररि मारूफ। बान कम्मानति (१)नग्गी॥
मुक्कि बान कम्मान। तेग कड्ढी सालग्गी॥

(१) कृ. को.-भग्गी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजि घाइ निघाइ अघाय घट। बर बसंत जिम दिष्षि भर॥
फुल्लै सु जानि केहू सुरंग। यौ दीसै बर बीर नर॥ छं०॥ ४१॥

दूहा॥ लरत पिष्षि बलिभद्र कौं। हरषि पजून सुचित्त॥
को रष्षै कविचंद इह। हम समान तुम मित्त॥ छं०॥ ४२॥
परे दौरि हिंदू सुभर। उसर साह साहाब॥
औसरि लगि आसुर सयन। मच्यति बेर किताब॥ छं०॥ ४३॥

पज्जून राय के पुत्रों का पराक्रम।

भुजंगी॥ पऱ्यो षान जल्लाल सें तीन जामं। भई बारहू फौज सौ एक ठामं॥
लरंतं सु बीरं प्रमानं प्रमानं। बजे बंस नंसं करष्षे कमानं॥
छं०॥ ४४॥
मिलै सिंह धायौ लषें बीर धीरं। गही बग्ग बलिभद्र आनुज्ज बीरं॥
दुअं बीर तेगं हुड़ा होड़ वाहै। मनों चच्चरी चक्क डंकेस गाहैं॥
छं०॥ ४५॥
नियं ध्रम्म रष्षे सदा व्रत्त ग्रेहं। हडूडूह षेलंत बालक्क जेहं॥
मुरी धार धारं मुरै हथ्थ नाहीं। गहीदंत बग्गं कटारी समाहीं॥
छं०॥ ४६॥
झरे षग्ग षग्गं चिनंगीत उड्डै। मनों झिंगनं भद्दवं रेनि चड्ढै॥
इलाहं इलाहं कहैं षान जादे। इसे बीर बीरं महो माह वादे॥
छं०॥ ४७॥
करै मुष्ष पूतं पजूनं दुहाई। प्रलै काल मानों उभै सेस धाई॥
दुअं बाह बीरं बहै बीर भग्गे। इसे सूर कूरंभ के हथ्थ लग्गे॥
छं०॥ ४८॥
कहै मेछ रुष्षं सरुष्षं प्रमानं। किधों मानवं लोह लै देव जानं॥
द्रुमं ढाल ढालं दुवं संकरक्के। लग्यौ अंस बंसं सु बंसं षरक्के॥
छं०॥ ४९॥
बहै बान कम्मान दीसै न भानं। भ्रमै तथ्य गिद्धं सु पावै न जानं॥
मलै सिंह हथ्थं पऱ्यौ बथ्थ गोरी। मनों फूल माला लई हथ्थ जोरी॥
छं०॥ ५०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे लोह अंगं परे जंग षानं। पऱ्यौ षान षुरसान तह षेत पानं॥
॥ छं० ॥ ५१ ॥

दूहा ॥ बाज राज नंध्यौ सु भर। मलै सिंह कूरंभ ॥
दस हथ्थी बढ़ि षग्ग सों। तन तरंग ह्वरंम ॥ छं० ॥ ५२ ॥
इनि जित्तें भग्गौ सु अरि। बर बंध्यौ सुरतान ॥
दुअ सु लष्ष को अंग मैं। धनि कूरंभ प्रमान ॥ छं० ॥ ५३ ॥

पज्जून राय का शहाबुद्दीन को पकड़ लेना और किले में चला जाना।

कवित्त ॥ पूव षान मारुफ। षूव दल मलिय मलैसी ॥
बंध्यौ गोरी साहि। भांति करिकें जु प्रलै सी ॥
सब लज्जै सामंत। सीस संमुह न उठावैं ॥
सुबर भाग प्रथिराज। बीर कूरम्भ सु गावैं ॥
लै गयौ साह चहुआन पैं। जस बज्जाग्रह बज्जया ॥
कूरंभ वंस सुत मलैसी। बंधे साह सुरज्जिया ॥ छं० ॥ ५४ ॥

यवन सेना का भागना।

सुन्यौ षान तत्तार। साहि गहि कोट पयट्ठौ ॥
सुरतानह सब सेन। संकि आतुर वर नट्ठौ ॥
छंडि करी सें सत्त। बुगर आतुर अध हैं बर ॥
हसम हेम डेरा। जरीन बरभर दर कज्जर ॥
हुअ प्रात आइ पज्जून भर। करि हंसम्म हैवर गिरद ॥
कविचंद कित्ति उज्जल उदित। राका निसि चंदह सरद ॥
छं० ॥ ५५ ॥

पृथ्वीराज का दंड लेकर शहाबुद्दीन को पुनः छोड़ देना।

छंडि राज सुरतान। सुजस सिर कूरँभ धारिय ॥
सहस बाज दस पंच। डंड गैवर सुकरारिय ॥
कहै राज सुनि साह। तुम सु नरनाह कहावहु ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[1]वार वार प्रौढा प्रमान। दंड करि घर जावहु॥
कोरान करीम करम्म तजि। हम सु पैज पौरान किय॥
कूरंभ समह मुर षेत षसि। षोय लज्ज षुरसान किय॥छं०॥५६॥

दूहा॥ दंड मंडि सुरतान सिर। छंडि दयौ चहुआन॥
औ सु ध्रम हिंदवान कुल। करिग चंद बष्षान॥ छं०॥ ५७॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके पज्जून कछावाहा पातिसाह ग्रहन नाम चौअनौं प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ५४॥

(१) इस पंक्ति में एक मात्रा अधिक होती है और "दंड" शब्द का प्रयोग खटकता है, परंतु अर्थयुक्त है और किसी भी प्रति में पाठभेद नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Nagari-Pracharini Granthamala Series No. 4.

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI

Vol III.

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHIYA JU.

CANTOS XXIX TO LIV.

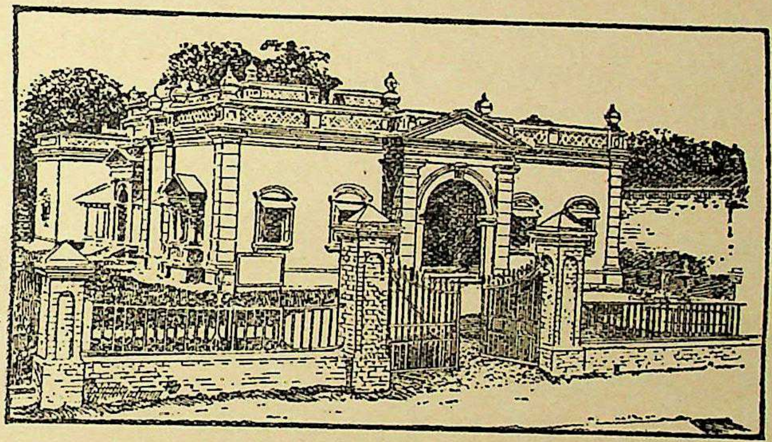

महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

तीसरा भाग

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए.

ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया।

पर्व्व २९ से ५४ तक

PRINTED AT THE TARA PRINTING WORKS, BENARES.

1907.

मूल्य ४) रु०] [Price Rs 4/.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचीपत्र।

(२९) घघर की लड़ाई समय।

(पृष्ठ ९४५ से ९९८ तक)

१ पृथ्वीराज साठ हजार सवार लेकर दिल्ली का प्रबन्ध कैमास को सौंप कर शिकार खेलने गया, यह समाचार ग़ज़नी में पहुंचा। ९४५

२ दूतों ने जाकर ग़ज़नी में शाह को समाचार दिया कि पृथ्वीराज धूम धाम के साथ शिकार खेलने को निकला है। ,,

३ शहाबुद्दीन के भेजे हुए गुप्त चर ने पृथ्वीराज के शिकार खेलने का समाचार लेकर ग़ज़नी में जाहिर किया। ९४६

४ सुल्तान ने प्रतिज्ञा की कि जब मैं पृथ्वीराज को जीत लूंगा तभी हाथ में तसबीह (माला) लूंगा। ,,

५ खुरासान, रूम, हबश और बलख आदि देशों में सुल्तान का सहायता के लिये पत्र भेजना। ,,

६ पांच लाख सेना लिये सुल्तान का पृथ्वीराज की ओर आना और दूत का यह समाचार पृथ्वीराज को देना। ९४७

७ चैत्र शुक्ल ३ रविवार को दोपहर के समय पृथ्वीराज ने कूच किया और वह घघ्घर नदी पर पहुँचा। ,,

८ शहाबुद्दीन की सेना के कूच का वर्णन। ,,

९ सेना का वर्णन। ९४८

१० मुसल्मान सेना का व्यूहबद्ध होकर नदी पार करना। ,,

११ पृथ्वीराज ने भी अपनी सेना को सज्जित कर चामण्ड राव को आगे किया। ९४९

१२ पृथ्वीराज ने अपनी सेना की गरुड़ व्यूहाकार रचना की। ,,

१३ दोनो सेनाओं का साम्हना होना। एक हजार मीरों का कैमास को घेरना। ,,

१४ तत्तार खां का घायल होना। मीरों की वीरता। ,,

१५ कैमास का घायल होना और जैतराव का आगे बढ़ कर उसे बचाना। ९५०

१६ चावंडराय ने ऐसा घोर युद्ध किया कि सुल्तान की सेना में कहर मच गया। ,,

१७ जैतराव के युद्ध का वर्णन। ,,

१८ युद्ध का रंग देख कर सुल्तान सिर धुनने लगा। जैतराव और खुरासान खां का तुमुल युद्ध हुआ। ९५१

१९ घोर युद्ध हुआ, निसुरत्तखां मारा गया, दोपहर के समय पृथ्वीराज की विजय हुई। ,,

२० एक लाख कालंजरों का धावा, कन्ह चौहान के आंख की पट्टी का खुलना और उसका घोर युद्ध करना। ९५२

२१ कालञ्जर के टूटतेही सुल्तान की सेना का भागना। कन्ह चौहान का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमान डाल कर सुल्तान को पकड़ लेना। ६५२

२२ पज्जून राव का मीरों को काट काट कर ढेर कर देना। कन्ह का सुल्तान को पकड़ कर अपने घर ले आना। ६५३

२३ कन्ह का सुल्तान को अजमेर ले जाना और उसे वहां क़िले में रखना। ”

२४ पृथ्वीराज की जीत होने का वर्णन और लूट के माल की संख्या। ”

२५ पृथ्वीराज को सब सामन्तों का सलाह देना कि अब की बार शहाबुद्दीन को प्राण दण्ड दिया जाय। ६५४

२६ कन्ह का कहना कि अब की पंजाब देश लेकर इसे छोड़ दिया जाय। ”

२७ पृथ्वीराज का कन्ह की बात मानकर कुछ फौज के साथ लोहाना को साथ देकर शाह को घर भेज देना। ”

२८ कन्ह का अजमेर से बादशाह को दिल्ली लाना। शाह का कन्ह को एक माणी और राजा को अपनी तलवार नजर देकर घर जाना। ६५५

२९ सुल्तान का कुरान बीच में देकर कसम खाना कि अब कभी आपसे विग्रह न करूंगा। ”

३० सुल्तान के अटक पार पहुँचने पर उधर से तत्तारखां का आकर मिलना। ”

३१ रयसल को दूतों का समाचार देना। उसका सेना लेकर अटक उतर रास्ते में रोकना। ६५६

३२ लोहाना का शहाबुद्दिन को आगे भेज कर आप रयसल का मुकाबला करना। ”

३३ सबेरा होते ही रयसल आ पहुंचा, लोहाना से युद्ध होने लगा। ”

३४ रयसल का मारा जाना, सुल्तान का निर्भय ग़ज़नी पहुंचना। ६५७

३५ तत्तारखां, खुरासानखां आदि मुसाहबों का सेना सहित सुल्तान से आकर मिलना और बहुत कुछ न्यौछावर करना। ”

३६ दस दिन लोहाना वहां रहा, शाह ने सात हाथी और पचास घोड़े लोहाना को दिए और पृथ्वीराज का दण्ड दिया। ”

३७ लोहाना बिदा होकर दिल्ली की ओर चला। पृथ्वीराज ने एक एक घोड़ा और एक एक हाथी एक एक सर्दार को दिया और सब सोना चित्तौर भेज दिया। ”

३८ चंद कवि ने चित्तौर में आकर सब सोना आदि रावल की भेंट किया, रावल ने चंद का बड़ा सम्मान किया। ६५८

---

(३०) करनाटी पत्र समय।

(पृष्ठ ९९९ से ९१६ तक)

१ दूतों का दिल्ली का हाल समझ कर जैचंद से जाकर कहना। ६५९

२ यद्दव की सेना साहित पृथ्वीराज का दक्षिण पर चढ़ाई करना। करनाटक देश के राजा का कर्नाटकी नामक वैश्या को पृथ्वीराज को नजर करके संधि करना।

३ कर्नाटकी को लेकर पृथ्वीराज का दिल्ली लौट आना। ”

४ संवत् ११४१ में दक्षिण विजय करके पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर करनाटकी को संगीत कला में अत्यन्त विद्वान कल्हन नायक को सौंप देना। ”

५ करनाटकी के नृत्य गान की प्रशंसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुन कर पृथ्वीराज का उसके लिये कामातुर होना। ६६०
६ पृथ्वीराज की अंतरग सभा का वर्णन। „
७ पृथ्वीराज के सभा मंडप की प्रशंसा वर्णन। „
८ पृथ्वीराज की उक्त सभा में उपस्थित सभासदों के नाम। ६६१
९ कल्हन नट का करनाटकी सहित सभा में आना और पृथ्वीराज का उससे करनाटकी की शिक्षा के विषय मे पूछना। ६६२
१० कविचंद का कहना कि ऐसा नाटक खेलो जिसमे निड्डुरराय प्रसन्न हों। „
११ नायक का पूछना कि राजा के पास बैठे हुए सुभट ये कौन हैं। „
१२ कविचंद का निड्डुरराय का इतिहास कहना। „
१३ निड्डुर का शिकार खेलने जाना और प्रधान पुत्र सारंग के बगीचे में गोठ रचना। ६६३
१४ यह खबर सुनकर उसी समय सारंग का वहां आकर निड्डुर के रंग में भंग करना। „
१५ निड्डुर का जैचंद से सारंग की बुराई करना और जैचंद का सारंग का पक्ष करना। ६६४
१६ यह कथा सुन नायक का प्रसन्न होकर कहना कि मैं ऐसा ही नाट्य कौशल करूंगा जिससे राजा का चित्त प्रसन्न हो। „
१७ राजाओं के स्वाभाविक गुणों का वर्णन। „
१८ राजा का कनराटकी को आने की आज्ञा देना। ६६५
१९ करनाटकी का सुर अलाप करना और बाजे बजना। ६६५
२० नाटक का क्रम वर्णन। „
२१ करनाटकी के नाच गान पर प्रसन्न होकर राजा का नायक से मूल्य पूछना और नायक का कहना कि आपसे क्या मोल कहूं। ६६६
२२ पृथ्वीराज का नायक को दस मन स्वर्ण दे कर वेश्या को महलों में रखना। „
२३ पृथ्वीराज का करनाटकी के साथ क्रीड़ा करना और रात दिन सैकड़ों दासियों का उसके पहेरे पर रहना। „

---

(३१) पीपा युद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ ९६७ से ९९३ तक।)

१ प्रातःकाल होतेही पृथ्वीराज का और चामुंडराय आदि सामन्तों का अपने अपने स्थानों पर आकर बैठना और कैमास का आकर राजा के पास बैठना। ६६७
२ सभा जम जाने पर राज्य कार्य्य के विषय में वार्तालाप होना और उज्जैन और देवास धार इत्यादि पर चढ़ाई होने का मंतव्य होना। „
३ पृथ्वीराज का क्रुद्ध होकर कहना कि इस तुच्छ जीवन में कीर्ति ही सार है। ६६८
४ राजा का कहना कि कीर्ति के ही लिये राजा दधीचि ने अपनी अस्थि देवताओं को दी। दुर्योधन ने कीर्ति के लिये ही प्राण दिए। „
५ राजा की इस प्रतिज्ञा को सब सामन्तों का सिरोधार्य्य करना। ६६९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ सभा में उपस्थित सब सामन्तों का बल पराक्रम वर्णन। ६६६
७ पृथ्वीराज का चढ़ाई के लिये तय्यारी करने को कहना। ६७२
८ सामन्तों का राजाज्ञा मानना। ,,
९ जैचन्द के ऊपर चढ़ाई की तैयारी होना। ६७३
१० कमधज्ज पर चढ़ाई करने वाली सेना के वीर सेनापति सामंतों के नाम और सेना की तैयारी का वर्णन। ,,
११ उन छः सामंतों के नाम जो सब सामन्तों में सब से अधिक मान्य थे। ६७४
१२ उक्त छः समन्तों का पराक्रम वर्णन। ६७५
१३ सामंतों का जैचंद पर चढ़ाई करने का मुहूर्त शोधन करने के लिये कहना। ,,
१४ प्रत्येक सामन्त पृथ्वीराज की इच्छा का प्रतिबिंब स्वरूप था। ,,
१५ पृथ्वीराज के सब सच्चे सेवकों का एकही मत ठहरा। ६७६
१६ चढ़ाई के लिये बैसाख सुदि ५ का सुदिन पक्का करके सब का अपने अपने घर जाना। ,,
१७ मरने के लिये महूर्त साध कर सब वीरों का आनन्द में मतवाला होना। ,,
१८ प्रातःकाल सामन्तों का बड़े बड़े मतवाले हाथियों पर चढ़ कर जुड़ना। ,,
१९ पृथ्वीराज की सेना के जुटाव की पावस के मेघों से उपमा वर्णन। ,,
२० सामन्तों की सर्प से उपमा वर्णन। ६७७
२१ सामन्तों के क्रोध और तेज की प्रशंसा वर्णन। ,,
२२ शूर वीर सामन्तों का उत्साह वर्णन। ६७८
२३ फौज की शोभा वर्णन। ,,
२४ पृथ्वीराज का सेना को वर्षा प्रति वर्षा श्रेणी वृद्ध करना। ६७९
२५ सामन्तों की वीरता वर्णन। ,,
२६ युद्ध के लिये प्रस्तुत सूरवीर सामन्तों के बीच में स्थित निढ्ढुर का बीर मत वर्णन। ६८०
२७ घुड़ सवार शूरबीरों की चाल वर्णन। ६८१
२८ राजा का सामन्तों को अच्छे अच्छे घोड़े देना। ,,
२९ घोड़े की शोभा वर्णन। ९८२
३० शहाबुद्दीन से निस्स्वार्थ युद्ध करने की पृथ्वीराज की प्रशंसा। ,,
३१ शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज की राह छोड़ कर डट रहना। ,,
३२ राजा की आज्ञा बिना चावंडराय का आगे बढ़ जाना। ६८३
३३ चावंडराय, जैतसी, लोहाना आजान बाहु का पांच कोस आगे बढ़ कर तत्तार खां खुरसान खां पर आक्रमण करना। ,,
३४ उक्त सामंतों के आक्रमण करने पर मुसल्मानों का कमान पर बाण चढ़ा कर अपने शत्रुओं से युद्ध करने को प्रस्तुत होना। ,,
३५ पृथ्वीराज काससैन्य उज्जैन पर आक्रमण करने को यात्रा करना और जैचन्द की सहायता लेकर शहाबुद्दीन का राह छेकना। ६८४
३६ मनुष्य की कल्पनाएं सब व्यर्थ हैं और हरीच्छा बलवती है। ,,
३७ पृथ्वीराज की राजा बली से पटतर देकर कवि का उक्ति वर्णन। ६८५
३८ युद्ध आरंभ होना। ,,
३९ स्वामि धर्म रत शूरवीर मुक्ति के पथ पर पांव देने को उद्यत थे। ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४० दोनों ओर के शूरबीर सामन्तों का पराक्रम और बल वर्णन। ९८६
४१ कन्ह, गोइन्दराय, लंगरीराय, और अत्तताई की वीरता और उनके पराक्रम से मुसल्मानों की फौज का विचलाना। हासब खां खुरसान खां का मारा जाना। ”
४२ शूरवीरों का रणरंग में मत्त होना, शहाबुद्दीन का कुपित होना और पृथ्वीराज का उसे कैद करने की प्रतिज्ञा करना। ९८७
४३ युद्ध की पावस से उपमा वर्णन। ”
४४ घोर युद्ध वर्णन। ”
४५ चालुक्य की प्रशंसा वर्णन। ९८८
४६ जामदेव यादव का आध कोस आगे डटना और उसकी वीरता की प्रशंसा वर्णन। ”
४७ पृथ्वीराज का अपनी सेना की मोर व्यूह रचना। ९८९
४८ न्याजी खां, तत्तार खां, और गोरी का उधर से आक्रमण करना और इधर से पीप (पड़िहार) नरिंद का हरावल सम्हालना। ”
४९ युद्ध होते होते रात हो जाना। ९९०
५० छः हजार दीपक जला कर भारत की भांति युद्ध होना। ”
५१ आधी रात हो जाने पर तोंअर और पड़िहार का शहाबुद्दीन पर आक्रमण करना और मुसल्मान फौज का पैर उखड़ना। ”
५२ पीप (पड़िहार) का शहाबुद्दीन को पकड़ लेने का दृढ़ संकल्प करना। ९९१
५३ प्रसंगराय खीची, पज्जूनराय के पुत्र, वीरभान, जामदेव, अत्ताताई के भाई और शहाबुद्दीन के भाई हुजाब खां का मारा जाना। ”
५४ शहाबुद्दीन का पकड़ा जाना। ९९१
५५ पीपा युद्ध का परिणाम, और पृथ्वीराज की निर्मल कीर्ति का वर्णन। ९९२
५६ सुल्तान का मुक्त होना, पृथ्वीराज का तेज वर्णन। ”

---

(३२) करहे रो जुद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ ९९१ से १०१३ तक)

१ पृथ्वीराज का मालव (देश) में शिकार खेलने को जाना। ९९५
२ पृथ्वीराज का ६४ सामन्तों के साथ उज्जैन की तरफ जाना और वहां के राजा भीम प्रमार को जीत लेना। ”
३ इन्द्रावती और पृथ्वीराज का योग्य दंपति होना। ”
४ इन्द्रावती की छवि वर्णन। ”
५ पंचमी मंगलवार को ब्राह्मण का लग्न चढ़ाना। ९९६
६ पृथ्वीराज का ब्राह्मण से इन्द्रावती के रूप, गुण और वय इत्यादि के विषय में प्रश्न करना। ”
७ ब्राह्मण का इन्द्रावती की प्रशंसा करना। ”
८ ब्राह्मण के बचनों को पृथ्वीराज का चित्त देकर सुनना। ”
९ इन्द्रावती की अवस्था रूप गुण और सुलच्छनों का वर्णन। ”
१० उज्जैन में इन्द्रावती के व्याह की जब तय्यारी हो रही थी उसी समय गुज्जरराय का चित्तौर गढ़ घेर लेना। ९९७
११ पृथ्वीराज का रावल की सहायता के लिये चित्तौर जाना। ९९८
१२ पृथ्वीराज का पज्जूनराय को अपना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड्ग बँधा कर उज्जैन को भेजना और आप चित्तौर की तरफ जाना। ९९८
१३ ससैन्य पृथ्वीराज के पयान का वर्णन। ”
१४ पृथ्वीराज का सैन सज कर चित्तौर की यात्रा करना और उधर से रावल के प्रधान का आना और पृथ्वीराज का रावल की कुशल पूछना। १०००
१५ प्रधान का उत्तर देना। ”
१६ पृथ्वीराज का कहना कि भीमदेव को जुड़ते ही परास्त करूंगा। ”
१७ पृथ्वीराज का आगे बढ़ना। १००१
१८ रणभूमि की पावस ऋतु से उपमा वर्णन। ”
१९ चालुक्य सेना की सर्प से उपमा वर्णन। ”
२० पृथ्वीराज की सेवा की पारधि से उपमा वर्णन। ”
२१ चहुआन और चालुक्य का परस्पर साम्हना होना। १००२
२२ दोनों ओर से युद्ध के बाजे बजते हुए युद्धारम्भ होना। ”
२३ इधर से पृथ्वीराज उधर से रावल समरसी जी का चालुक्य सेना पर आक्रमण करना। १००३
२४ पृथ्वीराज और हुसैन का अपनी सेना की गजव्यूह रचना रचना। ”
२५ युद्ध वर्णन। ”
२६ चालुक्य राय का अकेले रावल और पृथ्वीराज से ५ प्रहर संग्राम करना और उनके १००० वीरों का मारा जाना। १००४
२७ दूसरे दिन तीन घड़ी रात्रि रहते से फिर युद्ध होना। ”
२८ भोरा राय का नदी उतर कर लड़ाई करना। ”
२९ घमासान युद्ध वर्णन। १००४
३० समय पाकर रावल समरसिंह जी का तिरछा रुख देकर धावा करना। १००५
३१ युद्ध लीला कथन। ”
३२ सामन्तों का जोश में आकर प्रचार प्रचार युद्ध करना। १००६
३३ भोलाराय के १० सेनानायक मारे गए, उनका नाम ग्राम कथन। ”
३४ आधी घड़ी दिन रहने पर पृथ्वीराज की तरफ से हुसैनखां का चालुक्य पर आक्रमण करना। ”
३५ एक दिन रात और सात घड़ी युद्ध होने पर पृथ्वीराज की जीत होना। १००७
३६ गुरजर राय भीमदेव का भागना। ”
३७ कविचंद द्वारा पृथ्वीराज की कीर्ति अमर हुई। ”
३८ पृथ्वीराज की कीर्ति का उज्ज्वल वेष धारण कर स्वप्न में पृथ्वीराज के पास आकर दर्शन देना। ”
३९ कीर्ति का कहना कि हे क्षत्री मैं तुझे दर्शन देने आई हूं। ”
४० कीर्ति का निज पराक्रम और प्रशंसा कथन। १००८
४१ प्रातःकाल पृथ्वीराज का उक्त स्वप्न कविचंद और गुरुराम को सुनाना और फल पूछना। ”
४२ गुरुराम का कहना कि वह भोला राय को परास्त करने वाली कीर्ति देवी थी। ”
४३ रात के समय भोलाराय का ५००० सेना सहित पृथ्वीराज के सिविर पर सहसा आक्रमण करना। १००९
४४ रात का युद्ध वर्णन। ”
४५ पृथ्वीराज के प्रधान प्रधान वीर काम आए, उनके नाम। ”
४६ दोनों तरफ के डेढ़ हजार सैनिकों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का मारा जाना। १००६
४७ पृथ्वीराज का खेत को तिरछा देकर चालुक्क पर आक्रमण करना। १०१०
४८ प्रभात होते ही युद्ध आरम्भ होना। ,,
४६ दोनों सेनाओं का जी छोड़ कर लड़ना। ,,
५० दो पहर दिन चढ़ते चढ़ते पांच हजार सैनिकों का मारा जाना। १०११
५१ पृथ्वीराज की जीत होना और चालुक्क का भागना। १०१२
५२ चालुक्क की सब सेना का मारा जाना। ,,
५३ पृथ्वीराज का रण क्षेत्र ढुंढवा कर घायलों को उठवाना और मृतकों की दाह क्रिया करवाना। ,,
५४ पृथ्वीराज का दिल्ली की ओर जाना। ,,
५५ इसके पीछे पृथ्वीराज का इन्द्रावती को व्याहना। १०१३

---*---

(३३) इन्द्रावती व्याह प्रस्ताव।

(पृष्ठ १०१५ से १०२९ तक)

१ उज्जैन के राजा भीम का चंद से कहना कि पृथ्वीराज का हृदय नीरस है मैं उसको अपनी कन्या न विवाहूंगा। १०१५
२ कविचंद का कहना कि समय पाय सगों की सहायता करने गए तो क्या बुरा किया। ,,
३ भीमदेव का प्रत्युत्तर देना। ,,
४ यह समाचार सुनकर इन्द्रावती का शोकातुर होना। १०१६
५ सखियों का इन्द्रावती को समझाना। ,,
६ इन्द्रावती का उत्तर देना कि मैं राजकुमारी हूं मेरा कहा वचन कदापि पलट नहीं सकता। १०१६
७ भीम का कविचंद से कहना कि तुम यहां फौज लेकर क्या पड़े हो, क्या मेरे प्रताप को नहीं जानते। ,,
८ कविचंद का कहना कि समय देख कर कार्य्य करना ही बुद्धिमत्ता है। १०१७
६ भीमदेव का पज्जून से कहना कि तुम्हें बादशाह के पकड़ने का बड़ा अभिमान है इसी से तुम और को शूरवीर ही नहीं जानते। ,,
१० जैतराव का कहना कि भीमदेव तुम बात कह कर क्या पलटते हो। ,,
११ भीम का गुरु राम से कहना कि स्वार्थ के लिये विग्रह करना कौन सा धर्म है। १०१८
१२ गुरु राम का ऐतिहासिक घटनाओं के प्रमाण देकर उत्तर देना। ,,
१३ भीम का गुरुराम को मूर्ख बना कर कविचन्द से कहना कि जैतराव को तुम समझाओ। ,,
१४ कविचन्द का सप्रमाण उत्तर देना। ,,
१५ भीम का अपने प्रधान से मंत्र पूछना। १०१६
१६ मंत्री का कहना कि इन्द्रावती पृथ्वीराज को व्याह दीजिए। पर भीम का इस बात को न मान कर क्रोध करना। ,,
१७ सामन्तों का परस्पर बिचार बाँधना। ,,
१८ रघुवंस राम पँवार का बचन। ,,
१६ चहुआन की फौज के भीमदेव के गौओं को घेर लेने पर पट्टन पुर में खलभली पड़ना। १०२०
२० चहुआन सेना का मालवा राज्य की प्रजा को दुःख देना और भीम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का उसका साम्हना करना। १०२०
२१ भीम का चतुरंगिनी सेना सज कर सन्नद्ध होना। १०२१
२२ रघुवंस का नाका बांधना और पज्जून का भीम की गाएँ घेर कर हांकना। ,,
२३ जैतराव और भीम का युद्ध वर्णन। ,,
२४ युद्ध विषयक उपमा और अलंकारादि। १०२२
२५ सायंकाल के समय युद्ध बन्द होना। १०२३
२६ दूसरे दिवस प्रातःकाल होते ही पुनः सामन्तों का पान व्यूह रच कर युद्ध करना। ,,
२७ युद्ध वर्णन। ,,
२८ युद्ध होते होते उत्तरार्ध के सामन्तों का उज्जैन मंत्री को घेर कर पकड़ लेना और इन्द्रावती का चहुआन के साथ व्याह करना स्वीकार करने पर कविचन्द का उसे छुड़ा देना। १०२४
२६ भीम का सब सामन्तों का आतिथ्य स्वीकार करके उनके घायलों की औषधि करना। ,,
३० इन्द्रावती का विवाह उत्सव वर्णन और सामन्तों का पृथ्वीराज को पत्र लिखना की भीमदेव ने विवाह स्वीकार कर लिया है। १०२५
३१ इन्द्रावती का शृंगार वर्णन। ,,
३२ इन्द्रावती का मंडप में सखियों सहित आना और पृथ्वीराज के साथ गठ-बंधन होना। १०२६
३३ भीम का चहुआन को भांवरी दान वर्णन। ,,
३४ गमन समय इन्द्रावती की माता की इन्द्रावती के प्रति शिक्षा। ,,
३५ पृथ्वीराज का बंदियों को दान देना। १०२७
३६ सामन्तों की प्रशंसा वर्णन। ,,
३७ विवाह के समय उज्जैन की शोभा वर्णन। १०२७
३८ दहेज वर्णन। ,,
३९ शुक्ला अष्टमी को सामन्तों का दिल्ली के निकट पड़ाव डालना। ,,
४० उसी समय लोहाना का पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन का पत्र देना। १०२८
४१ लोहाना का कहना कि सुरतान दंड देने से फिर कर, दिल्ली पर आक्रमण करना चाहता है। ,,
४२ पृथ्वीराज का इन्द्रावती को घर पहुंचा कर युद्ध की तैयारी करना। ,,
४३ इन्द्रावती की रहाइस। ,,
४४ सुहागस्थान की शोभा वर्णन और इन्द्रावती का सखियों सहित पृथ्वीराज के पास आना। ,,
४५ इन्द्रावती की लज्जामय मंद चाल का वर्णन। १०२६
४६ सुहाग रात्रि के सुख समाचार की सूचना। ,,

---

(३४) जैतराव युद्ध समय।

(पृष्ठ १०३१ से १०४३ तक।)

१ पृथ्वीराज का सप्रताप दिल्ली का राज्य करना। १०३१
२ ढाई वर्ष पश्चात् पृथ्वीराज का खट्टू बन में शिकार खेलने को जाना और नीतराव कुटवार का शहाबुद्दीन को भेद देना। ,,
३ पृथ्वीराज के साथ में जाने वाले शिकारी जन्तुओं की गणना और खट्टू बन मे शहाबुद्दीन के दूत का आना। ,,
४ पृथ्वीराज का सामन्तों से सलाह लेना। १०३२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५ शहाबुद्दीन के दूत का बचन। १०३२
६ पृथ्वीराज का कहना की ऐ दीठ वसीठ तू नहीं जानता कि अभी कौन जीता और कौन द्वारा राजसुख के लिये कर्तव्य छोड़ना पड़ें है। ,,
७ कहां गजनी है और कहां दिल्ली और कै बार मैंने उसे बंदी किया। १०३३
८ ऋतु से उपमा वर्णन। ,,
९ शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज और पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना १०३४
१० इधर से चहुआन और उधर से शहाबुद्दीन का युद्ध के लिये उत्सुक होना। ,,
११ शहाबुद्दीन का सिंध नदी तक आना और चहुआन को दूतों द्वारा समाचार मिलना। १०३५
१२ पृथ्वीराज का शहाबुद्दीन की तरफ बढ़ना। ,,
१३ चहुआन सेना में शूर वीरों का उत्साह करना और कायरों का भयभीत होना। ,,
१४ चलते समय सेना का आतंक वर्णन। ,,
१५ शाही सेना की सजावट का वर्णन। १०३६
१६ शहाबुद्दीन का स्वयं सम्हल कर सेना को उत्कर्ष देना कि अब की पृथ्वीराज अवश्य पकड़ लिया जाय। ,,
१७ प्रातःकाल होते ही जमसोज खां और नवरोज खां का युद्ध के लिये सेना तयार करना। १०३८
१८ चहुआन का सेना तयार करना। ,,
१९ दोनों सेनाओं का मुहजोड़ होना। ,,
२० युद्ध समय के नक्षत्र योगादि का वर्णन। ,,
२१ दोनों सेनाओं में रणवाद्य बजना और उससे सूर वीर लोगों तथा घोड़े हाथी इत्यादि का भी प्रसन्न हो कर सिंहनाद करना और क्रुद्ध हो युद्ध करना। १०३९
२२ लड़ाई होते होते तीसरे पहर शहाबुद्दीन का साम्हने से पृथ्वीराज पर आक्रमण करना। १०४०
२३ पृथ्वीराज का अपनी वीरता से शत्रु सेना को बिड़ार देना। ,,
२४ इस युद्ध में दोनों ओर के मृत सर्दारों के नाम। ,,
२५ सूर्योदय के समय की शोभा वर्णन। १०४१
२६ दूसरे दिन प्रहर रात्रि रहने से दोनों सेनाओं की तय्यारी होना। ,,
२७ दोनों सेनाओं का परस्पर घोर युद्ध वर्णन। ,,
२८ शहाबुद्दीन का हाथी पर से गिर पड़ना और चहुआन सेना का जोर पकड़ना। १०४२
२९ शहाबुद्दीन के गिरने पर सलख राज का आक्रमण करना और यवन वीरों का शाह की रक्षा करना।
३० जैतराव (प्रमार) का शहाबुद्दीन को पकड़ कर पृथ्वीराज के सम्मुख प्रस्तुत करना। १०४३

(३५) कांगुरा जुद्ध प्रस्ताव।

(पृष्ठ १०४५ से १०५४ तक।)

१ पृथ्वीराज से जालंधर रानी की माता का कहना कि मैं कांगड़ा दुर्ग को जाना चाहती हूं और आप इसका बचन भी दे चुके हैं। १०४५
२ पृथ्वीराज का कांगड़े के राजा के पास दूत भेजना। ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३ दूत के वचन सुन कर कांगड़े के राजा भान का क्रुद्ध होकर दूत को दपटना । १०४५

४ दूत का पीछे आकर पृथ्वीराज को वहां की बात निवेदन करना । १०४६

५ इधर से पृथ्वीराज का चढ़ाई करना उधर से भान राज का बढ़ना और दोनों में युद्ध छिड़ना । „

६ युद्ध वर्णन और उस समय योगिनियों का प्रसन्न होकर नृत्य करना । „

७ युद्ध से प्रसन्न हो गंधर्वों का गान करना । १०४७

८ पृथ्वीराज का जय पाना । „

९ सायंकाल के समय राजा भान की सेना का भागना । „

१० राजा भान का सोच वश होकर कंगुर देवी का ध्यान करना और देवी का आकर कहना कि मैं होन-हार नहीं मेट सकती । „

११ सबेरा होते ही भोटी राजा का मंत्री को बुला कर स्वप्न का हाल सुनाना । १०४८

१२ प्रधान कन्ह का कहना कि मेरे रहते आप कुछ चिन्ता न करें मैं शत्रु का मान मर्दन करूंगा । „

१३ भोटी राजा भान का अपने स्वप्न का हाल कहना । „

१४ पृथ्वीराज का रघुवंशराय और हाहुलीराय हम्मीर को कंगुर गढ़ पर आक्रमण करने की आज्ञा देना । १०४९

१५ हाहुलीराय का कहना कि इस दुर्गम वन प्रान्त को सहज ही जीतूं गा । „

१६ कंगुर गढ़ के पहाड़ जंगल इत्यादि की सघनता और उसके विकट पन का वर्णन । „

१७ उक्त दोनों वीरों का घुड़चढ़ी सेना को हुसैन खां को सुपुर्द करके आप पैदल सेना सहित किले पर चढ़ाई करना । १०५०

१८ नारेन और नीति राव का घोड़ों पर सवार होकर चढ़ाई करना । „

१९ कंगुरा दुर्ग पर आक्रमण करने वाले वीरों की प्रशंसा वर्णन । „

२० नारेन (पीठ सेना के नायक) के चढ़ाई करते ही शुभ शकुन होना । १०५१

२१ सेना का हल्ला करके क्रोध से धावा करना । „

२२ युद्ध और वीरों की वीरता वर्णन । „

२३ अकेले रघुवंस राम का किले पर अधिकार कर लेना । १०५३

२४ सब सामन्तों का सलाह करके (रामरेन) रामनरिंद को गढ़ रक्षा पर छोड़ना और सबका गढ़ के नीचे पृथ्वीराज के पास जाकर विजय का हाल कहना । „

२५ सब भोटी भूमि पर चहुआन की आन फिर जाना और भान रघुवंश का हार मान कर पृथ्वीराज को अपनी पुत्री व्याहना । „

२६ नियत तिथि पर व्याह होना । „

२७ भोटी राज की कन्या के रूप गुण का वर्णन । १०५४

२८ भोटी राज की तरफ़ से जो दहेज दिया गया उसका वर्णन और पृथ्वीराज का दिल्ली में आकर नव दुलहिन के साथ भोग विलास करना । „

——:o:——

(३६) हंसावती विवाह नाम प्रस्ताव

(पृष्ठ १०५५ से १०९७ तक ।)

१ पृथ्वीराज का शिकार के लिये पट्टू-पुर को जाना । १०५५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२ रणथंभ में राजा भान राज्य करता था उसकी हंसावती नामक एक सुन्दर कन्या थी और चन्देरी में शिशुपाल वंशी पंचाइन नाम राजा राज्य करता था। १०५५
३ हंसावती की शोभा का वर्णन। "
४ चन्देरी के राजा का हंसावती पर मोहित होकर रणथंभ के दूत भेजना। १०५६
३ चन्देरी के दूत का रणथंभ में जाकर पत्र देना। "
५ रणथंभ के राजा भानुराय का क्रुद्ध होकर उत्तर देना भि मैं चन्देरीपति से युद्ध करूंगा, उसके घुड़कने से नहीं डरता। "
६ चन्देरी पति का कुपति होकर रणथंभ पर चढ़ाई करना। १०५७
७ चन्देरीपति का एक दूत राजा भान को समझाने को भेजना और एक शहाबुद्दीन के पास मदद के लिये। "
८ स्त्री के पीछे रावण दुर्योधन इत्यादि का मान प्राण और राज्य गया। "
९ जीव रक्षा के लिये देव दानवादि सब उपाय करते हैं। "
१० भानुराय जद्दव का बसीठ की बात न मानना। १०५८
११ बसीठ का लौट कर चन्देरीपति की फौज में जा पहुंचना। "
१२ पंचाइन की सहायता के लिये गजनी से नूरी खां हुजाब खां आदि सर्दारों का आना। "
१३ दोनों घन घोर सेनाओं सहित चन्देरी के राजा का आगे बढ़ना। "
१४ चन्देरीराज की चढ़ाई का वर्णन। "
१५ रणथंभ पति भान का पृथ्वीराज से सहायता मांगना। १०५६
१६ भानराय को पृथ्वीराज का पत्र लिखना। १०५९
१७ उक्त पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का समरसिंह जी के पास कन्ह को भेजना। "
१८ कन्ह का समर सिंह के पास पहुंच कर समाचार कहना। "
१९ समर सिंह जी का सेना तय्यार करके कन्ह से कहना कि हम अमुक स्थान पर आ मिलेंगे। १०६०
२० तथा यहां से रणथंभ केवल ६५ कोस है इस लिये तुमसे आगे जा पहुंचेंगे। "
२१ कन्ह का कहना कि पृथ्वीराज दिल्ली से १३ को चले हैं और राजा भान पर बड़ी विपत्ति है। "
२२ समरसिंह का कहना कि हमारे कुल की यह रीति नहीं है कि शरणागत को त्यागें और बात कहके पलटें। "
२३ समर सिंह का कन्ह की दी हुई नजर को रखना। १०६१
२४ कन्ह का यह कह कर कूच करना कि तेरस को युद्ध होगा। "
२५ दसमी सोमवार को समरसिंह जी की यात्रा का मुहूर्त वर्णन। "
२६ यात्रा के समय समरसिंह जी की चतुरंगिनी सेना की शोभा वर्णन। "
२७ सुसज्जित सेनाओं सहित रणथंभ गढ़ के बाएं ओर पृथ्वीराज और दाहिने ओर से समरसिंह जी का आना। १०६२
२८ पूर्व में पृथ्वीराज और पश्चिम में समर सिंह जी का पड़ाव था और बीच में रणथंभ का किला और शत्रु की फौज थी। १०६३
२९ किले और आस पास की रणभूमि की पक्षी से उपमा वर्णन। १०६४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३० उस युद्ध भूमि की यज्ञ स्थल और पावस से उपमा वर्णन। १०६४

३१ चन्देरी की सेना और रुस्तम खां के बीच में रावल समरसिंह जी का घिर जाना। १०६५

३२ पृथ्वीराज का रावल की मदद करना। ”

३३ रणथंभ के राजा भान का समरसिंह जी से मिलना और पृथ्वीराज का भी चरन छू कर भेंट करना। ”

३४ समरसिंह, पृथ्वीराज और राजा भान तीनों का मिलकर युद्ध के लिये प्रस्तुत होना। ”

३५ चन्देरी के राजा की फौज से युद्ध के समय दोनों सेना के वीरों का उत्साह और ओजस्विता एवं युद्ध का दृश्य वर्णन। १०६६

३६ युद्ध में मारे गए सैनिक वीरों की गणना। १०६७

३७ पृथ्वीराज का अपनी सेना की पांच अनी करके आक्रमण करना। ”

३८ युद्ध के लिये सन्नद्ध हुए वीरों के विचार और उनका परस्पर वार्तालाप। ”

३९ हंसावती की घरयार से और दोनों सेनाओं की छाया से उपमा वर्णन। १०६८

४० सेना के बीच में समरसिंह की शोभा वर्णन। ”

४१ प्रातःकाल होते ही समरसिंह जी का अपनी सेना को चक्रव्यूहाकार रचना। ”

४२ समरसिंह जी के रचित चक्रव्यूह का आकार और क्रम वर्णन। ”

४३ युद्ध वर्णन। १०६९

४४ समरसिंह की युद्ध चातुरी से राजा भान का उत्साह बढ़ना और तिरछे रुख पर पृथ्वीराज का आक्रमण करना। १०६९

४५ चन्देरी की सेना का तुमुल युद्ध करना। ”

४६ रावल समरसिंह जी और चन्देरी के राजा का द्वन्द युद्ध और चन्देरी के राजा (बीर पचाइन) का मारा जाना। १०७०

४७ युद्ध के अन्त में रणथंभ गढ़का मुक्त होना। हुसेन खां और कन्हराय का घायल होना। ”

४८ पृथ्वीराज का स्वप्न में एक चन्द-वदनी स्त्री के साथ प्रेमालिङ्गन करना और नींद खुलने पर उसे न पाना। १०७१

४९ पृथ्वीराज से कविचन्द का कहना कि वह स्त्री आप की भविष्य स्त्री हंसावती है, कहिए तो मैं उसका स्वरूप रंग कह डालूं। ”

५० हंसावती के स्वरूप गुण और उसकी वयःसन्धि अवस्था की सुखमा और उसके लालित्य का वर्णन। ”

५१ पृथ्वीराज उक्त बातों को सुन ही रहा था कि उसी समय भान के भेजे हुए प्रोहित का लग्न लेकर आना। १०७२

५२ और उक्त रणथंभ के युद्ध की रत्नाकर से उपमा वर्णन। १०७३

५३ लग्न के समय के अन्तरगत पृथ्वीराज का बारु वन को शिकार खेलने के लिये जाना। ”

५४ पृथ्वीराज के बारूवन में शिकार करते समय सारंग राय सौलंकी का पितृवैर लेने का विचार करना। ”

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५५ सारंगदेव का कहना कि पितृवैर का लेना वीरों का मुख्य कर्तव्य है। १०७३
५६ सारंगराय का नागौद के पास मंगलगढ़ के राजा हाड़ा हम्मीर से मिलकर उसे अपने कपट मत में बाँधना। १०७४
५७ सारंगराय का पृथ्वीराज और समर सिंह जी के पास न्योता भेजना। १०७५
५८ यहां एक एक मकान में पांच पांच शस्त्रधारी नियत करके कपट चक्र रचना। "
५९ हाड़ाराव का पृथ्वीराज और समर सिंह से मिलकर शिष्टाचार करना। "
६० कवि का हाड़ा राव पर कटाक्ष। "
६१ पृथ्वीराज को नगर में पैठते ही अशकुन होना। "
६२ ज्योनार होते हुए वार्तालाप होना। १०७६
६३ उसी समय किले क किवार फिर गए और पृथ्वीराज पर चारों ओर से आक्रमण हुआ। "
६४ सारंगदेव के सिपाहियों का सब को घेरना और पृथ्वीराज के सामन्तों का उनका साम्हना करना। "
६५ रावल जी और भीम भट्टी का द्वन्द युद्ध। "
६६ पृथ्वीराज का नागफनी से शत्रुओं को मारना। १०७७
६७ घोर घमासान युद्ध होना और समस्त राज्य महल में खरभर मच जाना। "
६८ रामराय बड़गूजर का हाथी पर से किले के भीतर पैठ कर पारस करना। १०७८
६९ कविचन्द द्वारा युद्ध एवं सारंगदेव के कुकृत्य का परिणाम कथन। "
७० पज्जूनराय के पुत्र कूरंभराय का बड़ी वीरता के साथ मारा जाना। १०७९
७१ इस युद्ध में एक राजा, तीन राव, सोलह रावत, और पन्द्रह भारी योद्धा काम आए। "
७२ रेन पंवार (सामंत) की प्रशंसा। "
७३ रेन पंवार के भाँई का सारंग को पकड़ना और पृथ्वीराज का उसे छुड़ा कर हम्मीर को तलाश करके उससे पुनः मित्रभाव से पेश आना। १०८०
७४ तेरह तोमर, सरदार और अन्य बारह सरदार सारंग की तरफ के काम आए। "
७५ हुसेन खां का अमर सिंह की बहिन को पकड़ लेना और रावल जी का उसे छुड़ा देना। "
७६ रावल समर सिंह जी की प्रशंसा और सारंगदेव का उनको अपनी बहिन व्याह देना। १०८१
७७ आधी रात को समाचार मिलना कि रणथंभ के राजा को चन्देल ने घेर लिया है। "
७८ घुमान और 'प्रसंगराय' खीची का रणथंभ की रक्षा के लिये जाना। "
७९ पृथ्वीराज का रणथंभ व्याहने जाना। १०८२
८० पृथ्वीराज की स्तुति वर्णन। "
८१ पृथ्वीराज का आगमन सुन कर उन्हें देखने की इच्छा से हंसावती का झरोखे से झांकना। "
८२ गौख में से देखती हुई हंसावती की दशा का वर्णन। १०८३
८३ हंसावती के शृंगार की तय्यारी। "
८४ हंसावती की अवस्था की सूक्ष्मता का वर्णन। "
८५ हंसावती का स्वाभाविक सौन्दर्य्य वर्णन। "

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

८६ नेत्रों की शोभा वर्णन । १०८४
८७ हंशावती के स्नान समय की शोभा । „
८८ हंसावती के शरीर में सुगंधादि लेपन होकर सोलहों शृंगार और बारहों आभूषण सहित शृंगार की उपमा उपमेय सहित शोभा वर्णन ।
८९ हंसावती के वस्त्र आभूषणों की शोभा वर्णन । १०८७
९० हंसावती के केशर कलित हाथ पावों की शोभा वर्णन । „
९१ पृथ्वीराज का विवाह मंडप में प्रवेश । „
९२ पृथ्वीराज के रत्न जटित मौर (व्याह मुकुट) की शोभा और दीप्ति वर्णन । १०८८
९३ हंसावती का सखियों सहित मंडप में आना । „
९४ पृथ्वीराज का हंसावती का सौन्दर्य्य देख कर प्रफुल्लित होना । „
९५ पृथ्वीराज का हंसावती के साथ गठ-बन्धन होना । „
९६ हंसावती के अंग प्रत्यंग में काम की अलौकिक लालिमा का वर्णन । „
९७ इसी समय दिल्ली पर मुसल्मान सेना का आक्रमण करना और ५० सामन्तों का उस आक्रमण को रोकना । १०८९
९८ पृथ्वीराज के सामन्तों और मुसल्मान सेना का युद्ध वर्णन । „
९९ दूसरे दिवस प्रातःकाल सुरतान खां का आक्रमण करना । १०९०
१०० हिन्दू मुसल्मान दोनों सेनाओं की चढ़ाई के समय की शोभा वर्णन । „
१०१ तब तक पृथ्वीराज का भी युद्ध के लिये तय्यार होना । १९९१
१०२ थोड़ी ही देर युद्ध होने पीछे मुसल्मान सेना के पैर उखड़ गए । „
१०३ युद्ध के अन्त में लूट में एक लाख का असबाब हाथ लगना और परोज खां का मारा जाना । „
१०४ पृथ्वीराज का सब सामन्तों को हृदय से लगा कर कहना कि मैं आप का बहुत ही अनुगृहीत हूं । १०९२
१०५ पृथ्वीराज का रावल समरसिंह के पुत्र कुंभा जी को संभर की जागीर का पट्टा लिखना । „
१०६ समर सिंह का उस पट्टे को अस्वीकार लौटा देना । „
१०७ समर सिंह का चित्तौर जाना । १०९३
१०८ पृथ्वीराज का हंसावती के प्रेम में मस्त होजाना । „
१०९ हंसावती के प्रथम समागम का वर्णन । „
११० मुग्धा हंसावती की कोक कला में पृथ्वीराज का मुग्ध होकर कामान्ध वृषभ की नांई मस्त हाना । १०९४
१११ हंसावती के मन का पृथ्वीराज के प्रेम में निर्म्मल चन्द्रमा की भांति प्रफुल्लित हो जाना । „
११२ शनैः शनैः हंसावती के डर और लज्जा का ह्रास होना और उसकी कामेच्छा का बढ़ना । „
११३ हंसावती के बढ़ते हुए प्रेम रूपी चन्द्रमा को देख कर पृथ्वीराज के हृदय समुद्र का उमड़ना । „
११४ दिवस के समय रात्रि को पृथ्वीराज से मिलने के लिये हंसावती ऐसी व्याकुल रहती जैसी चकोर चन्द्र के लिये । १०९५
११५ पावस का अन्त होने पर शरद का आगम और शीत का बढ़ना । „

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

११६ शीतकाल की बढ़ती हुई रात्रि के साथ दंपति में प्रेम बढ़ना। १०६५

११७ हंसावती पृथ्वीराज की और पृथ्वीराज हंसावती की चाह में अहिर्निशि मस्त रहते थे। १०६६

११८ इस समय की कथा का अन्तिम परिणाम वर्णन। „

११६ समरसिंह जी और पृथ्वीराज की अवस्था वर्णन। १०६७

---

(३७) पहाड़राय समय।

(पृष्ठ १०९९ से १११८ तक।)

१ कविचन्द की स्त्री का पूछना कि पहाड़ राय तोंअर ने शहाबुद्दीन को किस प्रकार पकड़ा। १०६६

२ शहाबुद्दीन का तत्तार खां से पूछना कि पृथ्वीराज का क्या हाल है। „

३ तत्तार खां का उत्तर देना। „

४ शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करने की सलाह करना। „

५ दूसरे दिन गज़नी राजमहल के दरवाजे पर सहस्रों मुसल्मान सेना का सज कर इकट्ठा होना। ११०१

६ समस्त सेना का दस कोस पूर्व को बढ़ कर पड़ाव डालना। „

७ शहाबुद्दीन की आज्ञानुसार दीवान खास में गोष्ठी के लिये उपस्थित हुए सदस्य योद्धाओं के नाम। „

८ सभा में तत्तार खां का नियमित कार्य्य के लिये प्रस्ताव करना। ११

६ वितंड खां का सगर्व अपना पराक्रम कहना। „

१० खुरसान खां का राजनीति कथन। ११०३

११ बादशाह का (लोरकराय) खत्री को पत्र देकर धर्म्मायन के पास दिल्ली भेजना। „

१२ दूत का दिल्ली को जाना और इधर चढ़ाई के लिये तय्यारी होना। ११०४

१३ दूत का दिल्ली पहुंचना। „

१४ दूत का धर्म्मायन से मिलना। „

१५ धर्म्मायन का पत्र पढ़ कर बादशाह के मत पर शोक करना। „

१६ धर्म्मायन का दर्बार में जाकर वह पत्री कैमास को देना। „

१७ शहाबुद्दीन की पत्री का लेख। ११०५

१८ धर्म्मायन का कैमास के हाथ में पत्र देना। „

१६ कैमास का पत्र पढ़ कर सुनाना। „

२० पत्री सुन कर पृथ्वीराज का सामंतों की सभा करना। „

२१ पृथ्वीराज का उक्त पत्री का मर्म सब सामन्तों को समझाना। „

२२ सामन्तों का उत्तर देना। ११०६

२३ पृथ्वीराज का पच्चीस हजार सेना के साथ आगे बढ़ना। „

२४ कूच के समय सेना की शोभा और उसका आतंक वर्णन। „

२५ पृथ्वीराज का पड़ाव डालना। ११०७

२६ अरुणोदय होते ही पृथ्वीराज का शत्रु पर आक्रमण करना। „

२७ हिंन्दू और मुसल्मान दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना। „

२८ शहाबुद्दीन का अपने सैनिकों को उत्तेजित करना। „

२६ सूर्य्योदय होते होते दोनों सेनाओं में रणवाद्य बजना और कोलाहल होना। „

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३० दोनों सेनाओं का एक दूसरे पर धावा करना। ११०७
३१ दोनों सेनाओं के उत्कर्ष से मिलने की शोभा और यवन सेना का व्यूह वर्णन। ११०८
३२ हिन्दू सेना की शोभा और उपस्थित युद्ध के लिये उसके अनी भाग और व्यूह बद्ध होने का वर्णन। "
३३ दोनों सेनाओं की अनियों का परस्पर यथाक्रम युद्ध होना। ११०९
३४ युद्ध का दृश्य वर्णन। १११०
३५ सायंकाल होने पर दोनों सेनाओं का विश्राम करना। "
३६ प्रातःकाल होते ही इधर से कैमास का और शहाबुद्दीन का अपनी अपनी सेना को सम्हालना। "
३७ सूर्य्योदय होते ही दोनों सेनाओं का आगे बढ़ना और अपने अपने स्वामियों का जै जैकार शब्द करना। ११११
३८ दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे पर बाणों की वर्षा करना। "
३९ दोनों सेनाओं का एक दूसरे में पैठ कर शस्त्रों की मार करना। "
४० युद्ध भूमि में वैताल और योगिनियों के नृत्य की शोभा वर्णन। १११२
४१ योगिनी भूत वैताल और अप्सराओं का प्रसन्न होना और सूर बीरों का वीरता के साथ प्राण देना। "
४२ युद्ध रूपी समुद्र मथन की उक्ति वर्णन। १२१४
४३ इस युद्ध में जो जो बीर सर्दार मारे गए उनके नाम और उनका पराक्रम वर्णन। १११४
४४ युद्ध होते होते रात्रि हो गई। १११५
४५ उपरोक्त वीरों के मारे जाने पर पहाड़ राय तोंमर का हरावल में होकर स्वयं सेनापति होना। १११५
४६ पहाड़ राय तोंमर का बल और पराक्रम वर्णन। "
४७ दुतिया का चन्द्रमा अस्त होने पर युद्ध का अवसान होना। १११६
४८ तृतिया को दोनों सेनाओं में शान्ति रही और चतुर्थी को पुनः युद्धारंभ हुआ। "
४९ चतुर्थी के युद्ध में वीरों का उत्साह क्रोध उत्कर्ष वर्णन और युद्ध का जलमय वीभत्स दृश्य वर्णन। "
५० मौका पाकर पहाड़ राय का शहाबुद्दीन के हाथी के ऊपर तलवार का वार करना और हाथी का भहरा कर गिरना। १११७
५१ मुसल्मान सेना का घब्रा कर भाग उठना। "
५२ अपनी सेना भाग उठने पर शहाबुद्दीन का चकित होकर रह जाना और पहाड़ राय का उसका हाथ जा पकड़ना और लाकर उसे पृथ्वीराज के पास हाजिर करना। १११८
५३ सुल्तान सहित पृथ्वीराज का दिल्ली को लौटना और दण्ड लेकर उसे छोड़ देना। "

(३८) बरुण कथा।

(पृष्ठ १११९ से ११२८ तक।)

१ सोमेश्वर सांसारिक सम्पूर्ण सुखों का आनन्द लेते हुए स्वतंत्र राज्य करते थे। १११९
२ चन्द्रग्रहण पर सोमेश्वर जी का समाज सहित जमुना जी पर ग्रहण स्नान करने जाना। "

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३ सोमेश्वर जी के साथ में जाने वाले योद्धाओं के नाम और पराक्रम वर्णन। ११९९
४ उक्त समय पर पूर्णिमा की शोभा वर्णन। ११२०
५ अर्द्ध रात्रि के समय ग्रहण का लग्न आने पर सब का यमुना के किनारे पर जाना। ११२१
६ वरुण के वीरों का जागृत होना। „
७ इधर सामंत लोग शस्त्र रहित केवल दूब और अच्तत आदि लिए हुए खड़े थे। „
८ वीरों का गहरे जल में शब्द करना। „
९ जलवीरों के सहज भयानक और विकराल स्वरूप का वर्णन। „
१० सामन्तों का ग्राव पर चला जाना। ११२२
११ जल वीरों के उछारने से वेग से जो जल ग्राव पर पड़ता था उसका दृश्य वर्णन। „
१२ जल के बीच में जल वीरों की आसुरी माया का वर्णन। „
१३ जलवीरों के बहुत उपद्रव करने पर भी सोमेश्वर के सामतों का भयभीत न होना। ११२३
१४ वीरों को स्वयं अपना पराक्रम वर्णन करके सामतों का भय दिखाना। „
१५ वीरों का राजा सहित सामंतों पर आसुरी शस्त्र प्रहार करना। „
१६ सामंतों का वीरों से यथाशक्ति युद्ध करना। „
१७ इसी प्रकार अरुणोदय की लालिमा प्रगट होते देख वीरों का बल कम होना और सामंतों का ज़ोर बढ़ना। ११२४
१८ प्रातःकाल के बालसूर्य की प्रतिभा वर्णन। „
१९ सूर्योदय होते ही वीरों का अन्तर्ध्यान होना और सोमेश्वर सहित सब सामन्तों का मूर्छित होना। ११२५
२० सब मूर्छित पड़े हुए थे उसी समय पृथ्वीराज का वहां पर आना। „
२१ निज पिता एवं सामन्तों की ऐसी दशा देखकर पृथ्वीराज के हृदय में दुःख होना। „
२२ यमुना के सम्मुख हाथ बाँध कर खड़े हो पृथ्वीराज का स्तुति करना। „
२३ यमुना जी की स्तुति। „
२४ स्तुति के अन्त में पृथ्वीराज का यमुना जी से वर मांगना। ११२६
२५ सोमेस की मूर्छा भंग होने पर पृथ्वीराज का पुनः ब्रह्म ज्ञान की युक्तिमय स्तुति करना। ११२७
२६ इस प्रकार मूर्छा जागने पर पृथ्वीराज का गंधर्व यंत्र का जप करना जिससे मूर्छित लोगों का शिथिल शरीर चैतन्य होना। „
२७ पृथ्वीराज का सोमेश्वर को सिर नवाना। ११२८
२८ सोमेश्वर को लिवा कर पृथ्वीराज का राजमहल में आना। „

---

[३९] सोमवध समय।

(पृष्ठ ११२९ से पृष्ठ ११५२ तक)

१ भीमदेव की इच्छा ११२९
२ भीमदेव का दिल्ली पर आक्रमण करने की सलाह करना „
३ सब सर्दारों का कहना कि बैर का बदला अवश्य लेना चाहिए। ११३०
४ भीमदेव के सैनिक बल की प्रशंसा। „
५ भीमदेव की सेना का इकट्ठा होना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ भीमदेव की सेना की सजावट और सैनिक ओजस्विता का दृश्य। ११३०

७ भोलाराय भीम का साम दाम दण्ड और भेद स्वरूप अपने चारों मंत्रियों को बुलाकर उचित परामर्श की आज्ञा देना। ११३२

८ मंत्रियों का कहना कि इस कार्य्य में विलंब न करना चाहिए। „

९ राज्य प्राप्त करने की लालसा से गत भीषण घटनाओं का ऐतिहासिक उदाहरण। ११३३

१० पुनः मंत्रियों का आख्यान कहना। „

११ भोलाराय का सेन सजकर तय्यारी करना। „

१२ सेना के जुड़ाव का वर्णन। „

१३ भीमदेव के सिर पर छत्र की छाया होना। ११३४

१४ कवि की उक्ति कि मंत्री सदैव भला मंत्र देते हैं परन्तु वे होनहार को नहीं जानते। „

१५ सेना का श्रेणीबद्ध खड़ा होना। „

१६ सेना समूह का क्रम वर्णन „

१७ उक्त सेना समूह की सजावट के आंतक की पावस ऋतु से उपमा वर्णन। „

१८ इसी अवसर में मुख्य सामन्तों सहित पृथ्वीराज का उत्तर की तरफ जाना और कैमास के संग कुछ सामंतों को पीठि सेना की तरफ आने की आज्ञा देना। ११३५

१९ पृथ्वीराज के चले जाने पर उन सब सामंतों का भी चला जाना जिनके भुज बल के आश्रित दिल्ली नगर था। „

२० उसी समय पूर्व वैर का बदला लेने के लिये भीमदेव का अजमेर पर चढ़ आना, प्रातःकाल की उसकी तय्यारी का वर्णन। ११३६

२१ इधर कन्ह और जैसिंह के साथ सोमेश्वर का भीमदेव के सम्मुख युद्ध करने के लिये तय्यार होना। „

२२ सोमेश्वर की सेना की तय्यारी वर्णन। „

२३ सैनिकों का उत्साह, सोमेश्वर की वीरता और कन्हराय का बल वर्णन। ११३७

२४ युद्ध आरम्भ होना। „

२५ कन्ह का वीरमत और तदनुसार सेनापति का व्याख्यान। „

२६ कन्ह की आंखों की पट्टी खुलना। ११३८

२७ दोनों हिन्दू सेनाओं की परस्पर ओजस्विता का वर्णन। „

२८ कन्हराय के युद्ध का पराक्रम वर्णन। „

२९ कन्हराय का कोप। ११३९

३० अपनी सेना को छितर बितर देखकर भीमदेव का रोश में आकर स्वयं युद्ध करना। ११४०

३१ कन्ह और भीमदेव का परस्पर घोर युद्ध होना। „

३२ कवि की उक्ति। „

३३ युद्ध स्थल की उपमा वर्णन। ११४१

३४ कन्हराय का भीमदेव के हाथी को मार गिराना। „

३५ दोनों सेनाओं में परस्पर घोर युद्ध। „

३६ जामराय यादव और उसके सम्मुख खंगार का युद्ध करना, दोनों की मतवाले हाथियो से उपमा वर्णन। ११४२

३७ उक्त दोनों वीरों की मदान्ध बैलों से उपमा वर्णन। „

३८ इन वीरों का युद्ध देखकर देवताओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का विस्मित होना और पुष्प वृष्टि करना । ११४३
३६ सोमेश्वर जी के बाम सेनाध्यक्ष बलभद्र का पराक्रम वर्णन । „
४० भीमदेव की सेना का भी मावस की रात्रि के समान जुट कर आगे बढ़ना । „
४१ सोमेश्वर जी की तरफ से कछवाहे बीरों का मारा जाना। „
४२ भीमदेव की सेना का चारों ओर से सोमेश्वर को घेर लेना । ११४४
४३ उस समय चहुआन वीरों का जीवन की आशा छोड़ कर युद्ध करना । „
४४ सोमेश्वर और भीमदेव का साम्हना होना । „
४५ भीमदेव और सोमेश्वर दोनों की सेनाओं का परस्पर युद्ध करना । ११४५
४६ अपना मरण निश्चय जानकर सोमेश्वर का अतुलित वीरता से युद्ध करना और उसका मारा जाना । ११४६
४७ सोमेश्वर के साथ मारे गए हाथी घोड़े पदाती एवं रावत सामन्तों की संख्या कथन । ११४७
४८ सोमेश्वर का मरना और भीमदेव का घायल होकर मूर्छित होना । „
४९ सोमेश्वर को मुक्ति सहज ही मिली । „
५० पृथ्वीराज का सोमेश्वर की मृत्यु सुनकर भूमि शय्या धारण करना और षोड़सी आदि मृत्यु कर्म करना।
५१ पृथ्वीराज का भूमि, गो, स्वर्णादि दान करना और पण करना कि जब तक भोराराय को न मार लूंगा न पाग बांधूंगा न घी खाऊंगा । ११४८
५२ पृथ्वीराज का भोराराय पर चढ़ाई करने की इच्छा करना परन्तु मंत्रियों का पृथ्वीराज को अजमेर की गद्दी पर बैठने का मंत्र देना । ११४८
५३ पृथ्वीराज का राज्याभिषेक । „
५४ पृथ्वीराज का दर्बार में बैठना और विप्रों का स्वस्तयन पढ़ कर तिलक करना । ११४९
५५ पृथ्वीराज का ब्राह्मणों को दान देना और दर्बार में नृत्य गान होना । „
५६ दर्बार में सब सामन्तों सहित बैठे हुए पृथ्वीराज की शोभा वर्णन । ११५०
५७ इच्छनी से गठबंधन होकर पृथ्वीराज का कुलाचार सम्बन्धी पूजन विधान करना । ११५१
५८ पृथ्वीराज का राजगद्दी पर बैठना । पहिले कन्ह का और तिस पीछे क्रमानुसार अन्य सब सामन्तों का टीका करना । „
५९ पृथ्वीराज की शोभा का वर्णन । ११५२

---

[४०] पज्जून छौंगा नाम प्रस्ताव ।

(पृष्ठ ११५३ से पृष्ठ ११५६ तक)

१ पृथ्वीराज का पिता की मत्यु पर दिल्ली आना । ११५३
२ पज्जूनराय कछवाहे की पट्टन के संग्राम में बीरता वर्णन । „
३ पृथ्वीराज का पज्जूनराय के सिर पर छौंगा बाँध कर लड़ाई पर जाने की आज्ञा देना । „
४ दूत का पृथ्वीराज को समाचार देना कि भोलाराय इस समय सोर्निगर के क़िले में है और यहां पर पज्जूनराय का चढ़ाई करना । ११५४
५ पज्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन । „

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

६ पज्जूनराय का घेरा डालना। मलयसिंह का मुकाबला करना। ११५५
७ पज्जूनराय का चाबुक भूल जाना और फिर सात कोस से लौट कर चालुक की भरी सेना में से चाबुक ले जाना। „
८ चालुक सेना का पीछा करना और पज्जूनराय का उसे परास्त करना। „
६ छौंगा देकर भीमदेव का पट्टन को जाना और मलयसिंह और पज्जून राय की कीर्ति का स्थापित होना। ११५६
१० पज्जूनराय का पृथ्वीराज को छौंगा नजर करना। „
११ पृथ्वीराज का पज्जूनराय को ही छौंगा दे देना और एक घोड़ा और देना। „
१२ चन्द कवि की उक्ति से पज्जूनराय के वीरशिरोमणि होने की प्रशंसा। „

[४१] पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव।

(पृष्ठ ११५६ से पृष्ठ ११६३ तक)

१ जैचंद के उभाड़ने से बालुकाराय सौलंकी और शहाबुद्दीन की सेना का दिल्ली पर आक्रमण करना। ११५७
२ दूत का पृथ्वीराज को यह खबर देना। „
३ पृथ्वीराज का विचार करना कि पज्जून राय से यह कार्य्य होना संभव है। „
४ पृथ्वीराज का पज्जूनराय को बुलाना ११५८
५ पृथ्वीराज का सभा में बीड़ा रखना और किसी का बीड़ा न उठाना सब का पज्जूनराय की प्रशंसा करना। „
६ पज्जूनराय का भरी सभा में बीड़ा उठा कर दोनों शत्रुओं के ध्वंस करने की प्रतिज्ञा करना। „
७ सुल्तान और कमधुज्ज के दल की सर्प और अफीम से उपमा और पज्जूनराय की गरुड़ और ऊंट से उपमा वर्णन। ११५८
८ पज्जूनराय के बीड़ा उठाने पर सभा में आनन्द ध्वनि होना। ११५६
९ पृथ्वीराज का पज्जूनराय को घोड़ा देना। „
१० चढ़ाई के लिये तय्यार होकर पज्जून राय का अपने कुटुम्ब से मिलना और उसके पांचों भाइयों का साथ होना। „
११ पज्जूनराय की चढ़ाई की शोभा वर्णन। „
१२ पज्जूनराय के कूच की तिथि वर्णन। ११६०
१३ पज्जूनराय की कृत बीरताओं का वर्णन। „
१४ पज्जूनराय की चढ़ाई का आतंक वर्णन। „
१५ पज्जूनराय का यवन सेना के मुकाबिले पर पहुंचना। „
१६ कमधुज्ज और यवन सेना से पज्जून का साम्हना होना। ११६१
१७ दोनों प्रतिपक्षी सेनाओं का आतंक वर्णन। „
१८ पज्जून सेना के व्यूह बध्य होने का स्पष्टीकरण। „
१६ युद्ध की तिथि। „
२० पज्जूनराय की सेना का बड़ी वीरता से युद्ध करना। ११६२
२१ इस युद्ध में पज्जूनराय के भाइयों का मारा जाना। „
२२ पज्जूनराय की जीत होना, और शत्रु सेना का माल मता लूटा जाना। „
२३ पृथ्वीराज के प्रताप की प्रशंसा। ११६३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२४ पज्जूनराय का भाइयों की क्रिया करना और २५ दिन गमी मना कर दान देना। ११६३

[४२] चंद द्वारिका समयौ।

(पृष्ठ ११६५ से पृष्ठ ११७७ तक)

१ कविचंद का द्वारिका को जाना। ११६५
२ कविचंद का यात्रा समय का साज सामान और उसके साथियों का वर्णन। „
३ चन्द का चित्तौर के पास पहुंचना। „
४ चित्तौरगढ़ की स्थापना का वर्णन। ११६६
५ चित्रकोट गढ़ की पूर्व कथा। „
६ उक्त मोरी का गोमुष कुंड बनवाना। „
७ एक सिंहनी का ऋषि के शिष्य को खा लेना। „
८ सिंहनी की पूर्व कथा। „
९ कविचंद का आना सुनकर पृथाकुमारी का कवि के डेरे पर जाना। ११६७
१० कवि का चित्तौर जाना। ११६८
११ कवि का किले में भोजन करने जाना। पृथा का उसे भोजन परोसना। „
१२ कन्ह अमरसिंहादि सामन्तों का पृथा कुमारी को उपहार देना। ११६९
१३ चन्द का चित्तौर से चलना। „
१४ द्वारिकापुरी में पहुंच कर श्रद्धा भक्ति से दर्शन और यथाशक्ति दान करना। „
१५ कविचंद कृत रणछोड़ जी की स्तुति। ११७०
१६ देवी की स्तुति। „
१७ कवि का होम करके ब्राह्मण भोजनादि कराना। ११७१
१८ द्वारिकापुरी में छाप लगवाने का माहात्म्य। „
१९ द्वारिकापुरी से लौटकर चन्द का भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर में आना। ११७२
२० पट्टनपुर के नगर एवं धन धान्य की शोभा वर्णन। „
२१ पट्टनपुर के आनन्द मय नगर और वहां की सुन्दरी स्त्रियों की शोभा वर्णन। ११७३
२२ राज्य उपवन में चन्द का डेरा दिया जाना। „
२३ भीमदेव का कविचन्द के पास अपने भाट जगदेव को भेजना। ११७४
२४ जगदेव का कविचन्द से मिलना। „
२५ जगदेव का अपने स्वामी भीमदेव के बल वैभव की प्रशंसा करना। „
२६ कविचद का पृथ्वीराज की कीर्त्ति का उच्चार करना। ११७५
२७ जगदेव का कहना कि अच्छा तो तुम अपने पृथ्वीराज को लिवा लाओ। „
२८ भोराराय भीमदेव का चन्द के डेरे पर आना। ११७६
२९ कविचन्द का भीमदेव को अगवानी देकर मिलना। „
३० कविचन्द का भोराराय भीमदेव को आशीर्वाद देना। „
३१ कविचन्द और अमरसिंह सेवरा का परस्पर वाद होना और कविचन्द का जीतना। ११७७
३२ भीमदेव का अपने महल को लौट जाना। „
३३ कविचन्द का सुरतान की चढ़ाई की खबर सुनकर दिल्ली को प्रस्थान करना। „

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[४३] कैमास युद्ध ।

(पृष्ठ ११७९ से पृष्ठ ११९८ तक)

१ एक समय शहाबुद्दीन का तत्तारखां से पृथ्वीराज के विषय में चर्चा करना । ११७६

२ तत्तार खां का बचन । „

३ कैमास युद्ध समय की कथा का खुलासा या अनुक्रमणिका और शाह की फौजकशी का वर्णन । „

४ शहाबुद्दीन का सिन्ध पार करके पारसपुर में डेरा डालना । ११८०

५ दिल्ली से गुप्तचर का आना । „

६ पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना । „

७ शाह का समाचार पाकर गुप्त गोष्ठी करना । „

८ शहाबुद्दीन का आगे बढ़ना और पृथ्वीराज के पास समाचार पहुंचना । ११८१

९ पृथ्वीराज का कैमास सहित सामंतों से सलाह करना । „

१० पृथ्वीराज की सेना की चढ़ाई और सामंतों के नाम कथन । ११८२

११ शहाबुद्दीन की सेना की चढ़ाई और यवन योद्धाओं के नाम । „

१२ दोनों सेनाओं का चार कोस के फासले पर डेरा पड़ना । ११८३

१३ पृथ्वीराज की सेना का आतंक वर्णन । „

१४ शहाबुद्दीन की सेना का षट्टूबन की तरफ़ कूच करना । ११८४

१५ शाह के सारुंड में आने पर पृथ्वीराज का पुनः सामंतों से सलाह करना । „

१६ पृथ्वीराज का चावंडराय की प्रशंसा करना और प्रातःकाल होते ही तय्यारी की आज्ञा देना „

१७ शाह का मुकाम, लाडून में सुनकर पृथ्वीराज का पंचासर में डेरा डालना । ११८५

१८ कैमास को शाह के प्रातःकाल पहुचने की खबर मिलना । „

१९ पृथ्वीराज की सेना की तय्यारी होना और कन्ह का हरावल बांधना । „

२० पृथ्वीराज की पंच अनी सेना का वर्णन । „

२१ शहाबुद्दीन का भी अपनी फौज को पांच अनी में सजे जाने की आज्ञा देना । ११८६

२२ रणक्षेत्र में दोनों फौजों का बीच में दो कोस का मैदान देकर डटना और व्यूह रचना । ११८७

२३ युद्ध सम्बन्धी तिथिवार वर्णन । „

२४ अनीपति योद्धाओं की परस्पर करनी वर्णन और अग्न्यास्त्र युद्ध । ११८८

२५ द्वादसी का युद्ध । „

२६ पृथ्वीराज का यवन सेना में अकेले घिर जाना और चामंड राय का पराक्रम । ११८९

२७ चार यवन सर्दारों का मिलकर चामंडराय पर आक्रमण करना । „

२८ कैमास का चामंडराय की सहायता करना । ११९०

२९ चामंडराय का चारों यवन योद्धाओं को पराजित करना । „

३० लाल खां का वर्णन । „

३१ लाल खां का मारा जाना । ११९१

३२ कैमास और चामंडराय का वार्तालाप । „

३३ कैमास का युद्ध वर्णन । ११९२

३४ मध्यान्ह के उपरान्त सूर्य्य की प्रखरता कम होने पर दोनों दलों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घमासान युद्ध होना। ११९२
३५ द्वादसी का युद्ध वर्णन। ११९३
३६ दोनों सेनाओं के मुखिया सर्दारों का परस्पर तुमल युद्ध वर्णन। ११९४
३७ अपनी फौज हारती हुई देख कर शहाबुद्दीन का अपने हाथी को आगे बढ़ाना। ,,
३८ शाह के आगे बढ़ने पर यवन सेना का उत्साह बढ़ना। ११९५
३९ शहाबुद्दीन का बान वर्षा करके सामंतों को घायल करना। ,,
४० कैमास और चामंडराय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सर्दारों का रक्षा करना। ११९६
४१ चक्रसेन का मारा जाना। ,,
४२ चक्रसेन का वंश और उसका यश वर्णन। ,,
४३ त्रयोदशी बुधवार को पृथ्वीराज की जय होनी। ,,
४४ कैमास और चामंडराय का शहाबुद्दीन को दो तरफ से दबाना और उसके हाथी को मार गिराना। ११९७
४५ दोनों भाइयों का शाह को पकड़ कर पृथ्वीराज के पास लेजाना। ,,
४६ कैमास का रणक्षेत्र में से घायल और मृत रावतों को ढुँढवाना। ११९८
४७ रण में मृत्यु होने की प्रशंसा। ,,
४८ पृथ्वीराज का दण्ड लेकर सुल्तान को छोड़ देना और वह दंड सामन्तों को बांट देना। ,,

——:o:——

[४४] भीम बध समय।

(पृष्ठ ११९९ से पृष्ठ १२२७ तक)

१ पृथ्वीराज का पिता की मृत्यु पर शोक करना और सिंह प्रमार का वीर वाक्यों से धैर्य देना। ११९९
२ पृथ्वीराज प्रति सिंह प्रमार के बचन। ,,
३ पृथ्वीराज का पिता के नाम से अर्घ देकर दान करना और पितृ वैर लेने की प्रतिज्ञा करना। १२००
४ प्रातःकाल पृथ्वीराज का सब सामन्त और सैनिकों की सभा करके अपने बैर लेने का पण उनसे कहना। ,,
५ ज्योतिषी का गुजरात पर चढ़ाई के लिये मुहूर्त साधन करना। १२०१
६ ज्योतिषी का ग्रह योग और सुदिन मुहूर्त वर्णन करना। ,,
७ पृथ्वीराज का लग्न साधकर अपनी तय्यारी करना। १२०२
८ पृथ्वीराज का शिकार के मिस पश्चिम दिशा को कूच करना। १२०३
९ राजा के साथ सैन्य सहित निड्डुरराय का आन मिलना। ,,
१० पृथ्वीराज की तय्यारी का वर्णन, भीमदेव को इसकी खबर होना और उसका भी तय्यारी करना। ,,
११ भीमदेव की तय्यारी का समाचार पृथ्वीराज को मिलना। १२०४
१२ पृथ्वीराज की प्रतिज्ञा। १२०५
१३ पृथ्वीराज का शिकार खेलते हुए आगे बढ़ना। ,,
१४ पृथ्वीराज का गहन बन में पड़ाव पड़ना। ,,
१५ कैमासादि सब सामन्तों का रात्रि को राजा के पहरे पर रहना। १२०६
१६ एक प्रहर रात्रि रहने से शिकार किए जाने की सलाह। ,,
१७ कन्ह का रात्रि को स्वप्न देखना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और साथियों से कहना कि सबेरे युद्ध होगा। १२०६

१८ स्वप्न का फल। १२०७

१९ सबेरे कविचन्द का आशीर्वाद देना और राजा का स्वप्न कथन। "

२० राजा के स्वप्न का फल। १२०८

२१ कन्ह के ज्ञानमय वचन। "

२२ पृथ्वीराज का सेना सहित शिकार करना, बन की हकाई होना। "

२३ बन में खर भर होतेही एक भूखे सिंह का निकलना। १२०९

२४ सिंह का वर्णन। "

२५ सिंह का कन्ह के ऊपर झपट कर वार करना। "

२६ कन्ह का सिंह का सिर मसक कर मार डालना। १२१०

२७ कन्ह के बल और उसकी वीरता की प्रशंसा। "

२८ अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर सामन्तों सहित राजा का आगे कूच करना। "

२९ कूच के समय पृथ्वीराज की फौज का आतंक वर्णन। १२११

३० पृथ्वीराज का भीमदेव के पास एक चुल्लू भेजना। १२१२

३१ चन्द का भीमदेव के पास जाकर युक्तिपूर्व्वक कहना कि पृथ्वीराज अपने पिता का बदला लेने को तय्यार है। "

३२ भीमदेव का उत्तर देना कि मैं भी उसे दंड देने को प्रस्तुत हूं जो मेरे संमुख आवे। १२१३

३३ चन्द का भीमदेव के दर्बार से कुपित होकर चला आना। १२१४

३४ भीमदेव का अपने भाट जगदेव को चन्द के पास भेजकर अपनी तय्यारी की सूचना देना। १२१४

३५ जगदेव बचन। "

३६ चन्द बचन। "

३७ जगदेव का चन्द का रूखा उत्तर सुनकर भीमदेव के पास फिर जाना। १२१५

३८ पृथ्वीराज का निढ्ढुर को युद्ध का भार सौंपना। "

३९ निढ्ढुर का पृथ्वीराज को भरोसा देकर स्वामिधर्म की प्रशंसा करना। "

४० निढ्ढुर का कन्हराय की प्रशंसा करना। "

४१ पृथ्वीराज का निढ्ढुर को मोती की माला पहनाना। १२१६

४२ निढ्ढुर का सेना की तय्यारी करके स्वयं युद्ध के लिये तय्यार होना। "

४३ पृथ्वीराज का कन्ह को पवाई पहिनाना। "

४४ कन्ह का युद्ध में अपने रहते हुए सोमेश्वर के मारे जाने पर पछतावा करना। "

४५ निढ्ढुर का कन्ह को संतोष दिला कर उत्साहित करना। "

४६ सेना का सज कर आगे बढ़ना। १२१७

४७ चहुआन और चालुक्य की सेनाओं का परस्पर मुठ भेड़ होना। "

४८ भीमदेव के घोड़े की चंचलता का वर्णन। "

४९ दोनों सेनाओं का परस्पर एक दूसरे से भिड़ना और उनका विषम युद्ध। "

५० कन्हराय की पट्टी छूटना और बीर मकवाना से कन्ह का युद्ध होना। १२१८

५१ मकवाना का मारा जाना। १२१९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५२ सामन्तों का पराक्रम और शूर वीर योद्धाओं की निरपेक्ष वीरता की प्रशंसा। १२१९
५३ रणक्षेत्र की सरित सरिताओं से उपमा वर्णन। १२२०
५४ प्रसंगराय खींची का पराक्रम वर्णन। ,,
५५ भीमदेव की फौज का विचलना। १२२१
५६ शूरवीर पुरुषों के पराक्रम की प्रशंसा। ,,
५७ परस्पर घमासान युद्ध का दृश्य वर्णन १२२२
५८ कवि का कहना कि कायर पुरुषों की अपगति होती है। ,,
५९ पृथ्वीराज और भीमदेव का साम्हना होना और कन्ह का भीमदेव को मार गिराना। १२२३
६० कन्ह की तलवार की प्रशंसा। १२२५
६१ चहुआन के पितृ वैर बदलने पर कवि का बधाई देना। ,,
६२ पृथ्वीराज के सामंतों की प्रशंसा। ,,
६३ सायंकाल के समय युद्ध का बन्द होना। ,,
६४ प्रभात समय की शोभा वर्णन। ,,
६५ रणक्षेत्र की सफाई होकर लाशें ढूंढ़ी गईं। १२२६
६६ युद्ध में मरे हुए शूर वीर और हाथी घोड़ों की संख्या। ,,
६७ संसार की असारता का वर्णन। १२२७
६८ गुजरात पर चढ़ाई करके एक मास में पृथ्वीराज का दिल्ली को वापिस आना। ,,

(४५) संयोगिता पूर्व्व जन्म कथा।

(पृष्ठ १२२९ से पृष्ठ १२५८ तक)

१ पृथ्वीराज का इन्द्र प्रति बचन। १२२९
२ इन्द्र का उत्तर देना। ,,
३ तदनुसार राम रावण युद्ध। १२२९
४ राम रावण युद्ध का आतंक। ,,
५ मेघनाद और कुम्भकर्ण का युद्ध वर्णन। १२३२
६ राम रावण का युद्ध। १२३३
७ रामचन्द्र जी की उदारता। १२३४
८ इन्द्र का बचन। ,,
९ इन्द्र का एक गन्धर्व को आज्ञा देना कि वह पृथ्वीराज और जयचन्द्र में शत्रुता का सूत्र डाले। ,,
१० कन्नौज की शोभा वर्णन। १२३५
११ गन्धर्व की स्त्री का उससे संयोगिता के पूर्व जन्म की कथा पूछना।
१२ गन्धर्व का उत्तर देना कि वह पूर्व्व जन्म की अप्सरा है। ,,
१३ कविचन्द का अपनी स्त्री से संयोगिता के जन्मान्तर में शापित होने की कथा कहना। ,,
१४ शिव स्थान पर ऋषि की तपस्या का वर्णन। ,,
१५ एक सुन्दर स्त्री को देखकर ऋषि का चित्त चंचल होना। १२३६
१६ उक्त स्त्री का सौन्दर्य वर्णन। ,,
१७ परन्तु ऋषि का अपने मन को साध कर बदरिकाश्रम पर्य्यन्त पर्य्यटन करके घोर तप करना। १२३७
१८ ऋषि के तप का तेज वर्णन और इससे इन्द्र का भयभीत होना। ,,
१९ इन्द्र का अप्सराओं को आज्ञा देना कि वे तेजस्वी तापस का तप भ्रष्ट करें। ,,
२० अप्सराओं का सौन्दर्य्य वर्णन। १२३८
२१ मंजुघोषा का सुमन्त ऋषि को छलने के लिये मृत्यु लोक में आना। ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२ मंजुघोषा का लावण्य भाव विलास और श्रृंगार वर्णन। १२३८
२३ अप्सरा के गान से ऋषि की समाधि चर्णोक के लिये डगमगाई। १२३६
२४ अप्सरा का शंकित चित्त होकर अपना कर्तव्य विचारना। ”
२५ तब तक से पुनः ऋषि का अखंड रूप से ध्यानमग्न होना। १२४०
२६ मुनि की ध्यानावस्थित दशा का वर्णन। ”
२७ वाद्य बजना और अप्सरा का गाना। ”
२८ मुनि का समाधि भंग होकर कामातुर हो, अप्सरा के आलिङ्गन करने की इच्छा करना। १२४१
२९ अप्सरा का अन्तर्ध्यान हो जाना। ”
३० मुनि का मूर्छित हो जाना, परन्तु पुनः सम्हल कर ध्यानावस्थित होना। ”
३१ कविचन्द की स्त्री का अप्सरा के सौन्दर्य्य के विषय में जिज्ञासा करना। १२४२
३२ अप्सरा का नख सिख वर्णन। ”
३३ अप्सरा के सर्वाङ्ग सौन्दर्य्य की प्रशंसा। १२४३
३४ कवि की उक्ति कि ऐसी स्त्रियों के ही कारण संसार चक्र का लौट फेर होता है। ”
३५ अप्सरा का योगिनी भेष धारण करके सुमन्त ऋषि के पास आना। १२४४
३६ अप्सरा के योगिनी वेष की शोभा वर्णन। ”
३७ मुनि का छद्म वेष धारिणी योगिनी को सादर आसन देकर बातें करना। १२४५
३८ तपसी लोगों की क्रिया का संक्षेप प्रस्तार वर्णन। १२४५
३९ अप्सरा की सगुन उपासना की प्रशंसा करना। १२४७
४० इसी अवतारों का संक्षिप्त वर्णन। ”
४१ अप्सरा का कहना कि परमेश्वर प्रेम में है अस्तु तुम प्रेम करो। ”
४२ नृसिंहावतार का वर्णन। ”
४३ मुनि का कामातुर होकर अप्सरा को स्पर्श करना। १२४८
४४ अप्सरा का कहना कि ऐसा प्रेम ईश्वर से करो मुझ से नहीं। ”
४५ उसी समय सुमंत के पिता जरज मुनि का आना। ”
४६ मुनि का लज्जित होकर पिता की परिक्रमा पूजनादि करना। ”
४७ जरज मुनि का अप्सरा को शाप देना। १२४९
४८ सुमंत का लज्जित होना और जरज मुनि का उसे धिक्कारना। ”
४९ जरज मुनि के शाप का वर्णन। ”
५० अप्सरा का भयभीत होकर जरज मुनि से क्षमा प्रार्थना करना और मुनि का उसे मोक्ष का उपाय बतलाना। ”
५१ अप्सरा के स्वर्ग से पात होने का प्रकरण। तीनों देवताओं का इन्द्र के दर्बार में जाना और द्वारपालों का उन्हें रोकना। १२५०
५२ विष्णु का सनत्कुमारों के शाप से पतित द्वारपालों की कथा कहना। ”
५३ हिरणाक्ष हिरनाकुश बध। १२५२
५४ रावण और कुम्भकर्ण बध। ”
५५ त्रिदेवताओं के पास इन्द्र का आप आकर स्तुति करना। १२५३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

५६ इन्द्रानी का त्रिदेवताओं का चरण स्पर्श करना । १२५३

५७ अप्सराओं का नृत्य गान करना और शिव का उक्त अप्सरा को शाप देना । „

५८ अप्सरा का शिव से अपने उद्धार के लिये प्रार्थना करना । १२५४

५९ उपरोक्त अप्सरा का स्वर्ग से पतित होकर कन्नौज के राजा के घर जन्म लेना । „

६० कन्नौज के राजा विजयपाल का दक्षिण दिशा पर चढ़ाई करना । १२५५

६१ समुद्र किनारे के राजा मुकुंद देव सोमवंशी का विजयपाल को अपनी पुत्री देना । „

६२ मुकुंद देव की पुत्री का जयचंद के साथ व्याह होना । „

६३ विजयपाल का रामेश्वर लों विजय प्राप्त करके अनेक राजाओं को वश में करना । १२५६

६४ सेतबन्दरामेश्वर के पड़ाव पर गुजरात के राजा के पुत्र का विजयपाल के पास आना और उसे नजर देना । „

६५ दिग्विजय से लौट कर विजयपाल का यज्ञ करना । १२५७

६६ विजयपाल की दिग्विजय में पाई हुई जयचन्द की पत्नी को गर्भ रहना और उससे संयोगिता का जन्म लेना । „

---

[४६] विनय मंगल प्रस्ताव ।

(पृष्ठ १२५९ से पृष्ठ १२७४ तक)

१ अप्सरा के संयोगिता के नाम से जन्म लेकर शाप से उद्धार पाने का वर्णन । १२५९

२ शाप देकर जरज ऋषि का अन्तर्ध्यान हो जाना और सुमंत का तप में दत्तचित्त होना । „

३ संवत् ११३३ में संयोगिता का जन्म वर्णन । „

४ संयोगिता का दिन प्रति दिन बढ़ना और आयु के तेरहवें वर्ष में उस के शरीर में कामोद्दीपन होना । १२६०

५ संयोगिता के हृदय मंदिर में कामदेव का यथापन्न स्थान पाना । „

६ संयोगिता के सौन्दर्य्य की बड़ाई । „

७ संयोगिता का भविष्य होनहार वर्णन । „

८ संयोगिता प्रति जयचन्द का स्नेह । १२६२

९ संयोगिता के विद्यारम्भ करने की तिथि आदि । „

१० संयोगिता का योगिनी वेष धारण कर अपनी पाठिका (मदन वृह्नी) के पास जाना । „

११ योगिनी वेष में संयोगिता के सौन्दर्य्य की छटा वर्णन । १२६३

१२ संयोगिता का लय लगा कर पढ़ना और पाठिका का उसे पढ़ाना । „

१३ एक दिन ब्राह्मणी का अपने पति से संयोगिता के विषय में प्रश्न करना । „

१४ ब्राह्मण का संयोगिता के भविष्य लक्षण कहना । १२६४

१५ संयोगिता का मदन वृद्ध ब्राह्मणी के घर पढ़ने जाना और संयोगिता का यौवन काल जान कर ब्राह्मणी का उसे विनय मंगल पढ़ाना । १२६५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६ अथ विनय मंगल पाठ का प्रारम्भ। १२६६
१७ विनय मंगल की भूमिका। ,,
१८ पति का गौरव कथन। १२६७
१९ स्त्रियों की पति प्रति अनन्य प्रेम भावना। ,,
२० पाठिका का उपरोक्त व्याख्या को दृढ़ करना। ,,
२१ विनय भाव की मर्य्यादा गौरव और प्रशंसा। ,,
२२ सुआ सार विनय का एक आख्यान वर्णन करता है और रति और कामदेव उसे सुनते हैं। १२६८
२३ मान एवं गर्व की अयोग्यता और निन्दा। ,,
२४ विनय का गौरव। १२६९
२५ विनय की प्रशंसा उस के द्वारा स्त्रियोचित साधनों का बर्णन। ,,
२६ उपरोक्त कथनोपकथन के प्रमाण में एक संक्षेप आख्यान। १२७०
२७ स्त्रियों के लिये विनय धारणा की आवश्यकता। ,,
२८ विनय हीन स्त्री समाज में सुशोभित नहीं होती। ,,
२९ एक मात्र विनय की प्रशंसा और उपयोगिता वर्णन। १२७१
३० इति विनय मंगल कांड समाप्त। १२७३
३१ ब्राह्मणी का रात्रि को पुनः अपने पति से संयोगिता के विषय में पूछना और उसका उत्तर देना। ,,
३२ दुजी का दुज से कथा कहने को कहना। ,,
३३ दुज का उत्तर। ,,
३४ पृथ्वीराज का वर्णन। ,,
३५ कथा सुनते सुनते ब्राह्मणी का निद्रा मग्न हो जाना। १२७४

[४६] सुक वर्णन।

(पृष्ठ १२७५ से पृष्ठ १२९१ तक)

१ संयोगिता का यौवन अवस्था में प्रवेश। १२७५
२ शुक और शुकी का दिल्ली की ओर जाना। ,,
३ शुक का ब्राह्मण के वेष में पृथ्वीराज के दरबार में जाना। ,,
४ ब्राह्मणी का संयोगिता के पास जाना। ,,
५ दुज का पृथ्वीराज से संयोगिता के विषय में चर्चा करना। ,,
६ संयोगिता के जन्म पत्र के ग्रह नक्षत्रादि का वर्णन। १२७६
७ छः महीने में विनय मंगल प्रकरण का समाप्त होना। १२७७
८ विनयमंगल समाप्त होने पर ब्राह्मणी का संयोगिता से पृथ्वीराज और दिल्ली के सम्बन्ध की कथा कहना। ,,
९ अनंगपाल के हृदय में वैराग उत्पन्न होने का वर्णन। ,,
१० मंत्रियों का अनंगपाल को राज्य देने के लिये मना करना। ,,
११ अनंगपाल का पृथ्वीराज को राज्य दे देना। १२७८
१२ पृथ्वीराज की कूट नीति से प्रजा का दुखित होकर अनंगपाल के पास जाना। ,,
१३ अनंगपाल का पुनः बदरिकाश्रम को चला जाना। ,,
१४ दसों दिशाओं में सुविस्तृत पृथ्वीराज की उज्वल कीर्ति का आकाश में दर्शन होना। १२७९
१५ संयोगिता का वर्णन। ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६ बारह के बाद और तेरह के भीतर जो स्त्रियों की वयः सन्धि अवस्था होती है उसका वर्णन । १२७६

१७ स्त्रियों के यौवन से वसंत ऋतु की उपमा वर्णन । १२८०

१८ संयोगिता की बड़ी बहिन का व्याह और उसकी सुन्दरता । १२८१

१६ संयोगिता के सर्वाङ्ग शरीर की शोभा का वर्णन "

२० ब्राह्मण के मुख से संयोगिता के सौन्दर्य्य की कथा सुन कर पृथ्वीराज का उस पर मोहित हो जाना । १२८३

२१ पृथ्वीराज की कामवेदना और संयोगिता से मिलने के लिये उसकी उत्सुकता का वर्णन । १२८४

२२ सती का ब्राह्मणी स्वरूप में कन्नौज पहुंचना । "

२३ यहां पर ब्राह्मणी का पृथ्वीराज की प्रशंसा करना । "

२४ पृथ्वीराज के स्वाभाविक गुणों का वर्णन । "

२५ उक्त वर्णन सुन कर संयोगिता के हृदय में पृथ्वीराज प्राति प्रीति का उदय होना । १२८५

२६ पृथ्वीराज की कीर्ति का वर्णन । "

२७ ब्राह्मण का कहना कि चहुआन अद्वितीय पुरुष है । १२८६

२८ संयोगिता का पृथ्वीराज से बिवाह करने की प्रतिज्ञा करना । "

२६ संयोगिता का पृथ्वीराज के प्रेम में चूर होकर अहिर्निशि उसीके ध्यान में मग्न रहना । १२८७

३० वसंत ऋतु का पूर्ण यौवनाभास वर्णन । "

३१ निर्जन बन में यत्तों के एक उपवन का वर्णन । "

३२ पृथ्वीराज का दरवान को जीत कर भीतर बगीचे में जाना । १२८७

३३ यत्त यत्तिनी और पृथ्वीराज का वार्तालाप । १२८८

३४ यत्त का कहना कि अवश्य कोई बड़े राजा हो । "

३५ पृथ्वीराज का वहां पर नाना भांति की सुख सामग्री मंगवा कर प्रस्तुत करना । "

३६ गन्धर्व राज का आना और नाटक आरंभ होना १२६०

३७ अप्सराओं का दिव्य रूप और शृंगार वर्णन । "

३८ पृथ्वीराज के आतिथ्य से प्रसन्न होकर गंधर्व का उन्हें एक सर्व सिद्धि कवच देना । १२९१

——:०:——

[४८] बालुकाराय समय ।

(पृष्ठ १२९३ से पृष्ठ १३२९ तक)

१ राजसूय यज्ञ सम्बन्धी कार्य्यों के सम्पादन करने के लिये राजाओं को निमंत्रण भेजा जाना । १२९३

२ यज्ञ की सामग्री का वर्णन । "

३ यज्ञ के हेतु आह्वान के लिये दसों दिशाओं में जयचन्द का दूत भेजना । १२९४

४ जयचन्द का प्रताप वर्णन । "

५ जयचन्द का पृथ्वीराज को दिल्ली का आधा राज्य देने के लिये संदेसा भेजने की इच्छा करना । "

६ जयचन्द का पृथ्वीराज के लिये संदेसा । १२९५

७ जयचन्द की आज्ञानुसार कवियों का जयचन्द की विरदावली पढ़ना और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्री सुमन्त का जयचन्द को यज्ञ करने से मना करना। ,,

८ जयचन्द का मन्त्री की बात न मान कर यज्ञ के लिये सुदिन शोधन करवाना। १२६७

९ मंत्री का स्वामी की आज्ञा मान कर दिल्ली को जाना। ,,

१० सुमन्त का दिल्ली पहुंचना। १२९८

११ पृथ्वीराज का सुमन्त का यथोचित सत्कार और सम्मान करना। ,,

१२ मंत्री सुमंत का पृथ्वीराज को जयचन्द का पत्र देकर अपने आने का कारण कहना। ,,

१३ सुमन्त की बातें सुनकर पृथ्वीराज का अपने राज्य कर्म्मचारियों से सलाह करना। १२९९

१४ सामन्तों की सत्कीर्ति। ,,

१५ जयचन्द का यज्ञ के लिये पृथ्वीराज को बुलाना। ,,

१६ कन्नौज के दूत का पृथ्वीराज से मिलकर जयचन्द का संदेसा कहना। १३००

१७ पृथ्वीराज के सामन्तों का जयचन्द के यज्ञ में जाने से नाहीं करना और दूत का कन्नौज वापिस आना। ,,

१८ कन्नौज के दूत का अपने स्वामी का प्रताप स्मरण करके पृथ्वीराज की ढीठता को धिक्कारना। १३०१

१९ दिल्ली से आए हुए दूत के वचन सुन कर जयचन्द का कुपित होना और बालुकाराय को उसे समझाकर शान्त करना। यज्ञ का सामान होना। ,,

२० संयोगिता के हृदय में विरह वेदना का संचार होना। १३०३

२१ संयोगिता का सखियों सहित क्रीड़ा करते हुए उसकी मानसिक एवं दैहिक अवस्था का वर्णन। ,,

२२ संयोगिता का वय और उसके स्वाभाविक सौन्दर्य्य का वर्णन। १३०४

२३ संयोगिता के यौवन काल की वसन्त ऋतु से उपमा वर्णन। ,,

२४ पृथ्वीराज का अपमान हुआ जानकर संयोगिता का दुखित होना और पृथ्वीराज से ही विवाह करने का पण करना। १३०५

२५ अपनी मूर्ति का दरवान के स्थान पर स्थापित होना सुन कर पृथ्वीराज का कुपित होकर सामन्तों से सलाह करना १३०६

२६ सब सामन्तों का अपना अपना मत प्रकाशित करना। ,,

२७ जयचन्द के भाई बालुकाराय को मारने के लिये तैय्यारी होना। १३०७

२८ कन्ह चहुआन और गोइन्दराय आदि सामंतों का कहना कि कन्नौज पर ही चढ़ाई की जाय। ,,

२९ कैमास का कहना कि बालुकाराय को मार कर ही यज्ञ विध्वंस किया जा सकता है। १३०८

३० दूसरे दिन सभा में आकर पृथ्वीराज का बालुकाराय पर चढ़ाई करने के लिये महूर्त देखने की आज्ञा देना। ,,

३१ ब्राह्मण का यात्रा के लिये सुदिन बतलाना। १३०९

३२ उक्त नियत तिथि पर तय्यारी करके पृथ्वीराज का अपने सामंतों को अच्छे अच्छे घोड़े देना। ,,

३३ पृथ्वीराज के कूच के समय का ओजस्व और शोभा वर्णन। १३११

३४ तय्यारी के समय सुसज्जित सेना के बीच में पृथ्वीराज की शोभा वर्णन। १३१२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३५ सेना सज कर पृथ्वीराज का चलना और कन्नौज राज्य की सीमा में पैठ कर वहां की प्रजा को दुःख देना। १३१२
३६ बालुकाराय का परदेश की तरफ यात्रा करना। ”
३७ पृथ्वीराज की सेना की संख्या तथा उसके साथ में जानेवाले योद्धाओं का वर्णन। ”
३८ बालुकाराय की प्रजा का पीड़ित होकर हाहाकार मचाना। १३१३
३९ चहुआन की चढ़ाई का आतंक वर्णन। ”
४० पृथ्वीराज का भुज्ज पर अधिकार करना। १३१४
४१ पृथ्वीराज की चढ़ाई की खबर सुन कर बालुकाराय का आश्चर्यान्वित और कुपित होना। ”
४२ पृथ्वीराज का नाम सुनकर बालुकाराय का सेना सजना। १३१५
४३ बालुकाराय का सैन्य सहित पृथ्वीराज के सम्मुख आना। ”
४४ चहुआन से युद्ध करने के लिये बालुकाराय का हार्दिक उत्कर्ष और ओज वर्णन। ”
४५ चहुआन राय की सैनसंख्या। १३१६
४६ दोनों सेनाओं की परस्पर देखा देखी होना। ”
४७ बालुकाराय की सुसज्जित सेना को देख कर चहुआन सेना का सन्नद्ध और व्यूहबद्ध होना। ”
४८ दोनों हिन्दू सेनाओं का परस्पर युद्ध वर्णन। १३१७
४९ बालुकाराय का युद्ध करना। ”
५० बालुकाराय की वीरता और उसका फुर्तीलापन। ”
५१ बालुकाराय का रणकौशल। १३१८
५२ सूरता की प्रशंसा। ”
५३ बालुकाराय का घिरजाना और उसका पराक्रम। १३१९
५४ युद्ध स्थल का चित्र दर्शन। ”
५५ बालुकाराय का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना। पृथ्वीराज का उसके हाथी को मार भगाना। ”
५६ पृथ्वीराज की सेना का पुनः दृढ़ता से व्यूहबद्ध होना। व्यूह का वर्णन। १३२०
५७ बालुकाराय का अपने वीरों को प्रचार कर उत्साहित करना। ”
५८ दोनों सेनाओं में परस्पर घोर संग्राम होना। १३२१
५९ कन्ह और बालुकाराय का युद्ध, बालुकाराय का मारा जाना। १३२२
६० बालुकाराय के मारे जाने पर उसके बीर योद्धाओं का जूझजाना। १३२३
६१ बालुकाराय की राजधानी का लूटा जाना। ”
६२ बालुकाराय के साथ मारे गए बीरों की संख्या वर्णन। १३२४
६३ बालुकाराय के शौर्य्य की प्रशंसा वर्णन। ”
६४ बालुकाराय के पक्षपाती यवन योद्धाओं की वीरता का वर्णन। ”
६५ जयचन्द की सेना और मुसल्मानी सेना का पृथ्वीराज का मुख रोकना। ”
६६ पृथ्वीराज की उक्त सेना पर चढ़ाई और वीरों के मोक्ष पाने के विषय में कवि की उक्ति। १३२५
६७ दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना। ”
६८ चहुआन और मुसल्मान सेना का घोर युद्ध। १३२६
६९ कन्नौज की सेना का भागना और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज की जीत होना। १३२६
७० बालुकाराय की स्त्री का स्वप्न। १३२७
७१ बालुकाराय की स्त्री की विलाप वार्ता। ,,
७२ पृथ्वीराज का बालुकाराय को मार कर दिल्ली को आना। १३२८
७३ गत घटना का परिणाम वर्णन। ,,
७४ बालुकाराय की स्त्री का जयचन्द के यहां जाकर पुकार करना। ,,

(४९) पंग जग्य विध्वंस प्रस्ताव।

(उंचासवां समय।)

१ यज्ञ के बीच में बालुकाराय की स्त्री का कन्नौज पहुंचना। १३३१
२ यज्ञ के समय कन्नौजपुर की सजावट बनावट का वर्णन और जयचन्द को बालुकाराय के मारे जाने की खबर मिलना। ,,
३ सात समुद्रों के नाम। १३३२
४ दसों दिशाओं और दिग्पालों के नाम। ,,
५ बालुकाराय का बध सुनकर जयचन्द का क्रोध करना। १३३३
६ यज्ञ का ध्वंस होना और जयचन्द का पृथ्वीराज के ऊपर चढ़ाई करने की तैयारी करना। ,,
७ यह सब सुनकर संयोगिता का अपने प्रण को और भी दृढ़ करना। १३३४
८ समय उपयुक्त देखकर जयचन्द का संयोगिता के स्वयंबर करने का विचार करना। ,,
९ यह सुन कर संयोगिता का चौहान प्रति और भी अनुराग वढ़ना। १३३५
१० पृथ्वीराज का शिकार खेलते समय शत्रु की फौज से घिर जाना। १३३५
११ सब सेना का भाग जाना। १३३६
१२ केवल १०६ साथियों सहित पृथ्वीराज का शत्रु पर जै पाना। ,,

(५०) संजोगिता नाम प्रस्ताव।

(पचासवां समय।)

१ पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना और कन्नौज के गुप्त चर का जयचन्द को समाचार देना। १३३७
२ पृथ्वीराज का शिकार खेलते फिरना और सांझ होते ही साठ हजार शत्रु सेना को उसे आ घेरना। ,,
३ सब सामन्तों का शत्रु सेना को मार कर विड़ार देना। १३३८
४ सामन्तों की स्वामिभक्ति का वर्णन। ,,
५ जयचन्द का अपने मंत्री से संयोगिता का स्वयंबर करने की सलाह करना। १३३९
६ जयचन्द का संयोगिता को समझाने के लिये दूती को भेजना। ,,
७ दूतिका के लक्षण और उसका स्वभाव वर्णन। १३४०
८ दूती का संयोगिता से बचन। ,,
९ दूती की बातों पर कुपित होकर संयोगिता का उत्तर देना। १३४१
१० पृथ्वीराज की प्रशंसा और संयोगिता के विचार। ,,
११ संयोगिता का बचन। ,,
१२ धा का बचन। १३४२
१३ सहचरी का बचन। ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४ पृथ्वीराज के वीरत्व का संकीर्तन। संयोगिता का वाक्य। ,,
१५ सखी का वाक्य। १३४३
१६ संयोगिता की संकोच दशा का वर्णन। ,,
१७ सखी का बचन। १३४४
१८ संयोगिता का बचन। ,,
१९ सखी का बचन। ,,
२० संयोगिता बचन(निज पक्ष वर्णन)। ,,
२१ दूती का निराश होकर जयचंद से संयोगिता का सब हाल कह सुनाना। १३४५
२२ संयोगिता के हठ पर चिढ़ कर जयचन्द का उसे गंगा किनारे निवास देना। ,,
२३ गंगा किनारे निवास करती हुई संयोगिता को पाठिका का योग ज्ञान उपदेश। ,,
२४ संयोगिता का अपना हठ न छोड़ना। १३४६

(५१) हांसीपुर युद्ध।

(इक्यावनवां समय।)

१ दिल्ली राज्य की सरहद में कन्नौज की फौज का उपद्रव करना। १३४७
२ पृथ्वीराज का हांसीगढ़ की रक्षा के लिये सामन्तों को भेजना। ,,
३ हांसीपुर का मोरचा पक्का कर के पृथ्वीराज का शिकार खेलने को जाना। ,,
४ बलोच पहारी का शहाबुद्दीन के साथ हांसीगढ़ पर चढ़ाई करने का षडयंत्र रचना। १३४८
५ पृथ्वीराज का उक्त वर्ष अजमेर में रहना। ,,
६ बलोच पहार का पत्र पाकर शहाबुद्दीन का प्रसन्न होना। १३४९
७ शहाबुद्दीन का अपनी बेगमों को मक्के भेजना ,,
८ हांसीपुर में उपस्थित पृथ्वीराज के सामन्तों का वर्णन। ,,
९ बलोच पहार का संक्षिप्त वर्णन। १३५०
१० बलोच पहार का हांसीपुर में स्थानापन्न होना।
११ बलोच पहार का शाही बेगमों के लिये रास्ता देने को पज्जूनराय से कहना और रघुवंशराम का उससे नाहीं करना। १३५१
१२ बड़े साज बाज के साथ बेगम का आना और चामंडराय का उसे लूटने की तय्यारी करना। ,,
१३ बेगम के पड़ाव का वर्णन। ,,
१४ बलोच पहारी का सामन्तों के पास जाकर शाह का वर्णन करना। १३५२
१५ सामन्तों का रात को धावा करके बेगम को लूटना। ,,
१६ बेगम के सब साथियों का भाग जाना और बेगम का सामन्तों से प्रार्थना करना। १३५३
१७ धन द्रव्य लूटकर चामंडराय का हांसीपुर को लौटना और बेगमों का शहाबुद्दीन के यहां जा पुकारना। १३५३
१८ बेगम का शाह के सुखजीवी सेवकों को धिक्कार देना। १३५४
१९ माता के विलाप वाक्य सुनकर शाह का संकुचित और क्रोधित होना। ,,
२० शहाबुद्दीन का अपने दर्बारियों से सब हाल कहना। १३५५
२१ शहाबुद्दीन का 'माता' की मर्यादा कथन कर के दिल्ली पर चढ़ाई के लिये तय्यारी का हुक्म देना। ,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२२ तत्तार खां का शाह की आज्ञा मान कर मदद के लिये फरमान भेजना। १३५६
२३ शहाबुद्दीन की दृढ़ता का वर्णन। „
२४ शहाबुद्दीन का राजसी तेज वर्णन। १३५७
२५ शहाबुद्दीन का अपने योद्धाओं की ख़ातिर करना। „
२६ शहाबुद्दीन का अपने मंत्री से वीर चहुआन पर अवश्य विजय प्राप्त करने की तरक़ीब पूछना। „
२७ राजमंत्रियों का उपयुक्त उत्तर देना। १३५८
२८ शाह का तत्तार खां से प्रश्न करना। „
२९ तत्तार खां का हांसीपुर पर चढ़ाई करने को कहना। „
३० हांसीपुर पर चढ़ाई होने का मसौदा पक्का होना। १३५९
३१ शहाबुद्दीन की आशा। „
३२ तत्तार खां की प्रतिज्ञा। „
३३ शाही दरबार में बलोच पहारी का उपस्थित होना। „
३४ गजनी के राजदूतों का सिन्ध पार होना। १३६०
३५ यवन सेना का हिन्दुस्तान की हद्द में बढ़ना। „
३६ तत्तार खां और खुरसान खां की अनी सेनाओं का आतंक और शोभा वर्णन। „
३७ तत्तार खां का पड़ाव दस कोस आगे चलाना। १३६१
३८ शाही सेना का हांसीपुर के पास पड़ाव डालना। „
३९ शाही सेना का हांसीपुर को घेरना। १३६२
४० मुसल्मानी जातियों का वर्णन। „
४१ यवन सेना की व्यूह रचना का वर्णन। „
४२ युद्ध वर्णन। १३६३
४३ शाही फौज का बल कर के किले का फाटक तोड़ देना। १३६३
४४ चामुंडराय के उत्कर्ष वचन। १३६४
४५ युद्ध होते होते शाम होजाना और युद्ध बन्द होना। „
४६ प्रातःकाल होते ही पुनः युद्धारंभ होना। „
४७ गढ़ में उपस्थित सामन्तों के नाम। १३६५
४८ दोनों सेनाओं में युद्ध आरम्भ होना। „
४९ युद्ध का वर्णन और दस चोट में यवन सेना का परास्त होना। „
५० इस युद्ध में खेत रहे जीवों की संख्या। १३६६
५१ अलील खां का प्रतिज्ञा करके धावा करना। १३६७
५२ दोनों ओर से बड़े जोर से लड़ाई होना। „
५३ लड़ाई का वाकचित्र वर्णन। „
५४ सामन्तों की जीत होना और यवन सेना का परास्त होकर भागना। १३६८

---

(५२) द्वितीय हांसी युद्ध।

(बावनवां समय।)

१ तत्तार खां का पराजित होना सुन कर शहाबुद्दीन का क्रोध करके भांति भांति की यवन सेना एकत्रित करना। १३६९
२ वरन वरन की व्यूहबद्ध यवन सेना का हांसीपुर को घेरना। १३७०
३ शहाबुद्दीन का सामन्तों को किला छोड़ देने का संदेसा भेजना। „
४ शहाबुद्दीन का संदेसा पाकर साम-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्तों का परस्पर सलाह और बाद विवाद करना। १३७१
५ सामन्तों का भगवती का ध्यान करना। „
६ हांसी के किले में स्थित सामन्तों के नाम और उनका वर्णन। „
७ कुछ सामन्तों का किला छोड़ देने का प्रस्ताव करना परन्तु देवराव बग्गरी का उसे न मानना। १३७२
८ कवि का कहना कि समयानुसार सामन्त लोग चूक गए तो क्या। „
९ देवराव बग्गरी का वचन। १३७३
१० कल्हन और कमधुज्ज का बग्गरी राय के बचनों का अनुमोदन करना। „
११ सातों भाई तत्तार खां का तलवारें बांधना और हांसीगढ़ पर आक्रमण करना। „
१२ अन्यान्य सामन्तों की अकर्मण्यता और देवराय की प्रशंसा वर्णन। १३७४
१३ देवराय बग्गरी की बीरता। १३७५
१४ युद्धारंभ और युद्धस्थल का चित्र वर्णन। „
१५ देवकर्ण बग्गरी का बीरता के साथ मारा जाना। १३७६
१६ बीर बग्गरी का मोक्ष पाना। „
१७ इस युद्ध में मृत वीर सैनिकों की नामावली।
१८ एक सहस सिपाहियों के मारे जाने पर भी सामन्तों का किला न छोड़ना। १३७७
१९ पृथ्वीराज को स्वप्न में हांसीपुर का दर्शन देना। „
२० पृथ्वीराज प्रति हांसीपुर का वचन। १३७८
२१ हांसीपुर की यह गति जान कर पृथ्वीराज का घबड़ा कर कैमास से सलाह पूछना। „
२२ कैमास का रावल समरसी जी को बुलाने के लिये कहना। १३७९
२३ राव्त समरसी जी का हांसीपुर की तरफ चलना „
२४ हांसीपुर को छोड़कर आए हुए सामन्तों का पृथ्वीराज से मिलना। „
२५ पृथ्वीराज का सब सामन्तों को समझा बुझा कर सांत्वना देना। १३८०
२६ पृथ्वीराज का सामन्तों के सहित हांसीपुर पर चढ़ाई करना। „
२७ पृथ्वीराज के हांसीपुर पर चढ़ाई की तिथि। „
२८ सुसज्जित सेना सहित पृथ्वीराज की चढ़ाई का आतंक वर्णन। १३८१
२९ रावल का चहुआन के पहलेही हांसीपुर पहुंच जाना। १३८२
३० समरसीजी के पहुंचतेही यवन सेना का उनसे भिड़ पड़ना। „
३१ समरसिंह जी की सिपाहगीरी और फुर्तीलेपन का वर्णन। १३८३
३२ यवन और रावल सेना का युद्ध वर्णन। „
३३ समरसीजी की वीरता का बखान। १३८४
३४ समरसीजी के भाई अमरसिंह का मरण। „
३५ युद्धस्थल का चित्र वर्णन। „
३६ यवन सेना की ओर से तत्तार खां का धावा करना। १३८५
३७ घोर युद्ध वर्णन। „
३८ इसी युद्ध के समय पृथ्वीराज का आ पहुंचना। १३८६
३९ अमर की वीर मृत्यु और उसको मोक्ष प्राप्त होना। १३८८
४० पृथ्वीराज के पहुंचतेही शाही सेना का बल ह्रास होना। „
४१ पृथ्वीराज का यवन सेना को दबाना। „

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

४२ रावल और चहुआन की सम्मिलित शोभा वर्णन। १३८६
४३ रणस्थल की बसंत ऋतु से उपमा वर्णन। ”
४४ मुख्य मुख्य वीरों के मारे जाने से शाह का हतोत्साह होना। ”
४५ यवन सेना के मृत योद्धाओं के नाम। ”
४६ यवन वीरों की प्रशंसा। १३९०
४७ हिन्दू पक्ष की प्रशंसा। १३९१
४८ सामन्तों का वीरता मय युद्ध करना। ”
४९ युद्धस्थल का वाकचित्र दर्शन। ”
५० घोर युद्ध उपस्थित होना। १३९२
५१ पृथ्वीराज के वीर वेष और वीरता की प्रशंसा। १३९३
५२ पृथ्वीराज के युद्ध करने का वर्णन। ”
५३ युद्ध का आतंक वर्णन। १३९४
५४ कविकृत वीर–मत–मुक्ति वर्णन। ”
५५ वीर रस प्रभात वर्णन। ”
५६ प्रातःकाल होतेही दोनों सेनाओं का सन्नद्ध होना। १३९५
५७ प्रभात वर्णन। १३९६
५८ सूर्य्य की स्तुति। ”
५९ सूरवीर लोगों का युद्ध उत्साह वर्णन। १३९७
६० सामन्तों की रणोद्यत श्रेणी का क्रम वर्णन। ”
६१ यवन सैनिकों का उत्साह।
६२ युद्ध का अक्षम आनन्द कथन। १३९८
६३ युद्ध में मारे गए वीरों के नाम। ”
६४ तत्तार खां का मनहार होकर भागना। ”
६५ खेत झरना होना और लाशों का उठवाया जाना। ”
६६ युद्ध में मृत वीरों के नाम। १३९९
६७ हांसी युद्ध सम्बन्धी तिथि वारों का वर्णन। ”
६८ रावल और पृथ्वीराज का दिल्ली को जाना। १४००
६९ रावल का दिल्ली में बीस दिन रहना। ”

(५३) पज्जून महुवा प्रस्ताव।

(तिरपनवां समय।)

१ कविचंद की स्त्री का पूछना कि महुवा युद्ध क्यों हुआ। १४०१
२ कविचंद का उत्तर देना। ”
३ खुरसान खां का महुवा पर आक्रमण करना। ”
४ शाही सेना का वर्णन। ”
५ निड्डुर का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना। १४०२
६ राजा का दरबार में कहना कि महुवा की रक्षा के लिये किसे भेजा जाय। ”
७ सब लोगों का पज्जूनराय के लिये राय देना। ”
८ पज्जून राय की प्रशंसा। ”
९ पज्जून राय को जागीर और सिरोपाव देकर आज्ञा देना १४०३
१० पज्जून की प्रतिज्ञा। ”
११ पज्जूनराय और शहाबुद्दीन का मुक़ाबिला होना। १४०४
१२ युद्ध वर्णन। ”
१३ पज्जूनराय की वीरता। ”
१४ यवन सेना का भाग उठना। १४०५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१५ पज्जूनराय की प्रशंसा। १४०५
१६ पज्जूनराय का दिल्ली आना और शाह का गजनी को जाना। "

(५४) पज्जून पातसाह युद्ध प्रस्ताव।

(चौवनवां समय।)

१ और सामन्तों को छोड़कर पज्जून का नागौर जाना। १४०७
२ मनश्चीन शाह का गजनी को जाना और पज्जून राय को परास्त करने की चिंता करना। "
३ धम्मायन का गजनी को समाचार देना। "
४ शहाबुद्दीन का मंत्री से पज्जूनराय के पास दूत भेजने की आज्ञा देना। इधर सेना तय्यार करना। १४०८
५ यवनदूत का नागौर पहुंचना। "
६ पज्जून राय का हँस कर निधड़क उत्तर देना। "
७ दूत का गजनी जाकर शाह से पज्जूनराय का संदेसा कहना। १४०६
८ शहाबुद्दीन का कुपित होना। "
९ इधर नागौर में किलेबन्दी होना। "
१० पज्जून राय की वीर व्याख्या। १४१०
११ यवन सेना का नागौर गढ़ घेर कर नोल चलाना। "
१२ राजपूत सेना का घबड़ाना और पज्जूनराय का उसे धैर्य्य देना। "
१३ पज्जूनराय का यवन सेना पर रात को धावा मारना। १४११
१४ मुसल्मान सेना के पहुरुओं का शोर मचाना और सेना का सचेत होना। "
१५ हिन्दू और मुसल्मान दोनों सेनाओं का युद्ध। १४१२
१६ दोनों में तलवार का युद्ध होना। "
१७ पज्जूनराय के पुत्रों का पराक्रम। १४१३
१८ पज्जूनराय का शहाबुद्दीन को पकड़ना और किले में चला जाना। १४१४
१९ यवन सेना का भागना। "
२० पृथ्वीराज का दंड लेकर शहाबुद्दीन को पुनः छोड़ देना। "

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झलकने लगी तब तो वे निश्चर बलहीन होन लगे और राजपूत वीरों का हियाव बढ़ने लगा निदान उन वीरों न अपना अद्वितीय तेज प्रगट करके कुछ ऐसी माया की कि जिससे सब सामन्त लोग मूर्छित होकर मरे से गिर पड़े और वरुणवीर अन्तर्ध्यान हो गए।

ज्योंही पूर्व दिशा में प्रभाकर का पूर्ण दर्शन हुआ त्योंही पृथ्वीराज वहां पर आ पहुंचा तो देखता क्या है कि राजा सोमेश्वर सकल सामन्तों सहित मृतप्राय मूर्छित पड़े हैं यह देख कर पृथ्वीराज के मन में बड़ी ग्लानि और क्रोध उत्पन्न हुए। पृथ्वीराज ने यमुना जी के सम्मुख हाथ जोड़ कर स्तुति करना आरम्भ किया। उसने कहा–हे सूर्य्य भगवान की पुत्री, यम की बहिन, बलवीर के वीर श्री कृष्ण को सुखकर, त्रैतापहारिणी, मायामोहविदारिणी सब सुखकारिणी अधमउधारिणी कालिन्दी, तेरे तट के सेवन मात्र से सब दुःख दूर होते हैं। इस प्रकार संसार में ब्रह्मा स्वरूप सरस्वती विष्णु रूप गंगा और शिव स्वरूप (यमुना) तू है–शिव संसार के पालनकर्ता हैं–इसलिये हे माता कृपाकर मेरे पिता की मूर्छा भंग कर के उसे सचेत कर दे–पृथ्वीराज के ऐसी स्तुति करने पर सब सामन्तों सहित सोमेश्वर सचेत हो गए–तब पृथ्वीराज पुनः बोला कि हे माते! यह पंच तत्व मय तनपिंजर आप ही मय हैं पूर्व कर्म्म रूपी अग्नि की ज्वाला के जोर से यह स्थूल शरीर बनता है, यम, नियम और योग से वेष्टित जीव रूपी जल ही में चंचल बुद्धि की तरल तरंगें उठा ही करती हैं जहां तहां गंभीर जल के गुरुतर आशा रूपी दौहले भरे पड़े हैं और उनके किनार पर हेतु रूपी पक्षी कल्लोल किया करते हैं। तेरी सुख दुःख रूपी दोनों कगारों के तीर पर जो त्रिगुण रूपी वृक्ष आच्छादित हैं उनमें मोह रूपी पत्ते और तज्जनित विकार उनके फलफूल हैं। उन सबका समय समय पर संतोष रूपी बाढ के आने से नाश भी हुआ करता है, केवल निर्गुण के आश्रय पर दृढ़स्थिति पुरुष बचते हैं। इस संसार में ऐसे जीव बिरले ही हैं जो सौ वर्ष तक जीवित रहते हैं। इसी के बीच में शायं प्रातः होते हुए बालापन यौवन और वृद्धपन आदि अवस्थाओं और शारीरिक और मानसिक नाना प्रकार की आधि व्याधियों से पीड़ित होना पड़ता है सो ऐसे संसार सागर से तारने वाली हे माता तुम्ही हो। इसके बाद सम्पूर्ण मूर्छित मण्डली के लोग अच्छी तरह से चैतन्य और सावधान हो गए। तब पृथ्वीराज ने गंधर्व की आराधना की जिससे उन लोगों के शारीरिक ताप का भी नाश हो गया। निदान सोमेश्वर सहित सब लोग राजमहलों को चले गए।

महलों में पहुँच कर पृथ्वीराज ने पिता से कहा कि आप नहीं जानते कि ऐसे पर्व्व के समय जल थल सब जगह दैवी जीवों का अधिकार हुआ करता है? फिर आप क्यों गए! ऐसी अवस्था में विघ्न होने से अपना कृत्य भी भंग होता है और व्यर्थ का कष्ट उठाना पड़ता है। प्रतापी पुत्र के ऐसे बचन सुनकर सोमेश्वर मन ही मन प्रसन्न होते हुए चुप हो गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमवध।

(उन्तालीसवां समय।)

भीम के समान बलवान राजा भीमदेव सोलंकी गुजरात देश पर राज्य करता था। उसके अतुल पराक्रम और उसकी कीर्ति का आतंक चारों ओर इस प्रकार से फैला हुआ था कि कोई भी उसकी राज्य सीमा को चापने का साहस न कर सकता था। यद्यपि वह अन्य सब प्रकार से सुखी और संतुष्ट था, परन्तु सोमेश्वर और पृथ्वीराज चौहान, ये दोनों पिता पुत्र उसके अंतस में सालते थे। चहुआन वंश पर बदला लेने की चिंता में व्यस्त हो कर भीमदेव इस प्रकार से व्याकुल बेचैन और अधीर हो रहा था जैसे हारा हुआ ज्वारी दाव पर दाव लगाने को और पुंश्चली स्त्री यार के पास जाने को हमेशा बेसब्र रहते हैं।

इसलिये भीमदेव ने एक दिन रानिंगदेव झाला, कन्ह कंठीर, जयसिंह चौरा, वीर धवलंग देव, भानसिंह चौरा, राजा स्यामास्याम विरसिंह चहुआन आदि सरदारों को बुलाकर कहा कि हे भाइयो, कल्लोल करती हुई कालिंदी के कूल पर स्थित दिल्ली नगर में अकंटक क्रीड़ा करता हुआ पृथ्वीराज और उसका पिता सोमेश्वर दिन रात मेरे कलेजे पर काँटे से चुभते हैं। उसी पृथ्वीराज के कारण शहाबुद्दीन के हाथों मेरा सारंगदेव मकवान ऐसा बहादुर सरदार मारा गया। उसीके कारण जूनागढ़ में मुझे तत्तार ख़ां के साम्हने नीचा देखना पड़ा। अधिक क्या कहूं। सोझत्ती की लड़ाई में तो जो कुछ बीतक बीता सो सभी को मालूम है। बस येही सब बातें मेरे मर्म पर खटकती हैं और जबतक उन दोनों पिता पुत्र का धुंआँ न देख लूंगा तब तक मुझे चैन पड़ने का नहीं। इसलिये अजमेर पर चढ़ाई करके पहिले सोमेश्वर को धूलि धूसित किया जाय और तब दिल्ली पर चढ़ाई करके पृथ्वराज को पछाड़ा जाय।

जैसे शायंकाल होते ही अगनित तारे इकबारगी निकल पड़ते हैं, नदी की बाढ़ के साथ साथ अगनित रेत कण आगे को ढाकिलते हैं तैसे ही भीमदेव की आज्ञा होते ही अगनित सेना समूह अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर राजद्वार पर जुटने लगा। उधर भिन्न भिन्न प्रदेशों के प्रतिनिधि शासक और अधीनस्थ उमराओं को भी परवाने भेजे गए, और वे भी नियत समय पर पावस की नदी धाराओं के समान दल बल सहित उमड़ कर आने लगे। भादों के प्रबल दल बद्दल के समान भीमदेव की बलवान सेना के गुजराती जवानों के ओजभरे गुलाबी चेहरे सन्ध्या समय के आसमान से सुशोभित होते थे। कई कतारें विशाल काय कारे कारे सिन्धी जवानों की थी, वे जँघिया पहने बटी हुई पगड़ी सर पर बाँधे और ललाट पर लाल चन्दन की खौरें लगाए हुए थे। उनके सीने पर तलवार की धार और बरछे की अनी चाहे मुड़जाय परन्तु वे मुड़कर पीछे देखने वाले नहीं थे। अच्छे अच्छे चंचल कच्छी घोड़ों को कुदाते हुए सवारों के चेहरे पर सूर्य्य का सा तेज विराजमान था। उन घोड़ों के आयाल आसमान की तरफ उठे हुए और सवारों की टेढ़ी भौंहे और लाल लाल आंखे बड़ी भयावनी मालूम देती थीं। वीर लोग सांसारिक माया मोह के सनेह एवं देह के नेह से निपट निरपेच्छ थे। वे सदैव परब्रह्म के चितवन में दत्तचित्त, स्वामिसेवा में मरना ही श्रेयस्कर समझते थे। वे मरने से न डरकर सदैव स्वामिसेवा में इस प्रकार से रत रहते थे जैसे दुहागिल स्त्री लज्जा से रहित होकर पति से स्पष्ट प्रीति करने लगती है। वे युद्ध के लिये सदैव इस प्रकार से सन्नद्ध रहते थे जैसे कुलटा कामिनी यार से मिलने के लिये आतुर रहती है। वे स्वाभाविक वीर जिस समय समस्त फौजी सामान जिरह बख्तर आदि से सुसज्जित हो कर राजद्वार पर हाजिर हुए उस समय ऐसा मालूम होता था मानो लंका का किला लेने के लिये रीछ और बन्दर बटुरे हों।

राज नीति के साम, दान, दण्ड, भेद ये चार भेद माने गए हैं। अस्तु भीमदेव के दरबार में इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारो शखाओं से सम्बन्ध रखने वाले उक्त क्रम से अमरसिंह सेवरा, भैरों भट, लीला लच्छिन ब्राह्मण और देवक्रम चारण चार मंत्री थे। इन सब में अमरसिंह की बात को भीमदेव अधिक मानता था। भीमदेव ने उक्त मंत्रियों से कहा कि भाइयो, वास्तव में मेरा बल तुम्हीं लोग हो अब तुम्हारी जो इच्छा हो सो कहो। तब वे मंत्री बोले कि हे महाराज! जिस भूमि के लिये पांडवों ने भाइयों को मारा, दधीच मृगया के व्यसन में व्यस्त रह कर मरा, कैकेयी ने दशरथ से बचन लेकर राम को बनवास दिया, उस भूमि को पाने के उपाय में कृतकार्य्य होना सहज नहीं है। जिस जीवन की रक्षा के लिये संसार के सब रस रंग की सामग्री एकत्रित की जाती है, जिसके लिये नाना प्रकार के दुःख सह कर सदा सुख की आशा की जाती है, जिस जीवन की रक्षा के लिये और सुकीर्ति के लिये ही संपूर्ण प्रकार के यज्ञ तप जप होम दान धर्मादि किए जाते हैं उसी जीवन की आशा को त्याग कर जब कार्य्य किया जाता है तब कहीं भूमि पर अधिकार मिलता है।

बस फिर क्या था "करैला, फिर नीम पर" भीमदेव ने उसी समय कूच का डंका बजाए जाने की आज्ञा दी। जैसे भिन्न भिन्न चिनगारियां एक में मिल कर विषम ज्वाला का स्वरूप धारण कर लेती हैं उसी प्रकार भीमदेव की चतुरंगिणी सेना अरुणोदय होते ही एकत्रित हो गई। उधर सोमेश्वर के बैर का बदला लेने का दृढ़विचार बाँधे हुए भीमदेव भी एक भीमकाय हाथी पर सवार आहुआ और खवास ने उसके शीस पर छत्र आच्छादित किया। सच है विचारने वाले सब कुछ विचारते हैं; परन्तु वास्तव में होनहार क्या है सो कोई नहीं जानता। मन, बुद्धि, हृदय, इन्द्रियां और पराक्रम इन पांच करके जो साहसी हो, यज्ञ, जप, तप, यम, नियन, यह पांचों सुकृत जो करता हो "तत्त्व ज्ञान में जो पाराङ्गत हो"—सोई पुरुष समर में विजयी होता है। भीमदेव की इस सेना में सब से आगे मतवाले हाथियों की भीड़ तिनके पीछे अश्वारोही और तिनके पीछे बानैत पैदल चलते थे। ये मदस्रवित गंडस्थल दंतारे दुरद साक्षात् पावस के मेघमाला से सुशोभित होते थे। उनके कुम्भ पर ढुरती हुई ढालें और तिन पर छोटी छोटी जरकसी वैरखें और फुंल्लों ऐसीं सुशोभित होती थी जैसे कामरूपी पर्व्वत के शिखर पर अगनित चौर छत्र आच्छादित होरहे हो और उनके किलायों पर अकड़ कर डटे हुए महावत ऐसे भान होते थे जैसे इन्द्र ने इन मेघों की मस्ती मंद करने को लिये उन पर वज्र बैठाया हों। भीमदेव की इस प्रकार की प्रबल सेना जहां हो कर जाती थी वहां की रय्यत बर्बाद और देश दो कौड़ी का होता जाता था।

निदान जब यह समाचार सोमेश्वर के पास पहुंचा तो वह भी शत्रु का साम्हना करने को सन्नद्ध हुआ। पृथ्वीराज तो दिल्ली में था ही नहीं वह कुछ दिन पहिलेही उत्तर की तरफ़ चला गया था केवल प्रसंगराय खीची, जामराय यद्दव, देवराज बग्गरी, भानराय भोटी, बलभद्र और कैमास और थोड़े से सामन्त लोग गढ़ रक्षा के लिये दिल्ली में छोड़ गया था। जब इन लोगों ने यह समाचार सुना तो वे भी सोमेश्वर के स्वर में स्वर मिलाने के लिये अजमेर जा पहुंचे। जब भोला भीमदेव का काल एवं हलाहलवत् प्रबल दल अजमेर के निपट आपहुंचा तब सोमेश्वर ने भी अपने सामन्तों को शस्त्र धारण करने की आज्ञा दी।

आकाश में सूक्ष्म लालिमा की झलक मरते ही अजमेर का राजद्वार कुसुम सा फूल उठा। बड़े बड़े बानेत क्षत्री वीर वरण वरण के अताने बताने से सजकर आ जुटे, भेरी नफेरी बजनें लगे, कड़खेत उच्च स्वर से कड़खों का अलाप कर स्वाभाविक ही सूरों के ओज को और भी उत्तेजना देने लगें। उस समय ऐसा मालूम होता था मानो

(१) दोहा ॥ पंच सहस पंचों सुकृत पंचों पंच प्रकृत्त ॥
पंच रष्षि पंचो मंहं तो भारथ्थ ध्रुजित्त ॥

(२) छोटी छोटी सजावट की झंडियों को वैरख कहते हैं।
(३) ढाल के ऊपर ये चार फूल से लगे रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साक्षात् ऋतुराज बसंत का सेनासमूह इकट्ठा हुआ हो और तिरपट नृत्य करते हुए तत्ते तुषार साक्षात उसके सहचर चंचरीक से सुशोभित होते थे। जैसिंह का पुत्र जैसिंहदेव और कन्ह सेना नायक नियत हुए। इस सन्नद्ध सेना के बीच में स्थित नरनाह कन्ह बोला— हे भाइयो! जिस दिन जन्म होता है इस जीवन के भविष्य का निबटेरा उसी दिन हो चुकता है, परन्तु मोह रूपी आवरण के कारण मुक्ति का मार्ग "निज कर्तव्य" नहीं सूझता। निश्चय ज्ञानी को कोई कर्म इस प्रकार से नहीं व्यापता जैसे जल में जल का प्रतिबिंब नहीं पड़ता और हे भाइयो क्षत्रियों का धर्म युद्ध में मरना और मारना ही है।

जिस समय दोनों दल अजमेर में उपस्थित हुए, और दोनों सेनाओं के राजपूत एक दूसरे पर झपटने को उद्यत हुए त्योंही इधर से नरनाह कन्ह की आंखों पर से पट्टा हटाया गया। दिखादाव होते ही कन्ह काल की खीस ऐसी तीक्ष्ण तलवार से शत्रु दल को काई सा फाड़ने एवं कड़बी सा काटने लगा। कन्ह की विकट काट कपट के कारण काली कपाली और भूत बैतालों की भूख भाग गई, हजारों हाथी सुंड मसुंड बिन होकर ढोल से ढलकने लगे अश्व असवार बिन होकर पड़े पड़े पैर पटकने लगे, सूर वीरों के कटे हुए सर मार मार बकते और रुंड रण खेत में हथयार करते थे। कट कर पड़े हुए अगनित जीवों के खंडित अवयव और मांस मेदा मज्जा से मांसाहारी पशुओं की क्षुधा शान्त होगई। कन्ह के ऐसे पराक्रम के कारण भीमदेव की सेना छिन्न भिन्न होकर पीछे पछलने लगीं तब तो भीमदेव ने कुपित होकर स्वयं अपना हाथी आगे को बढ़ाया। भीमदेव के साथ साथ उसके सैनिक भी जान हथेली पर रख कर आगे को झुके। वे गुजराती वीर अपनी टेक पर डठे पीछे हटना मानो जानते ही न थे। और इधर कन्ह उन्हे काट काट कर पाटता जाता था। उस समय वह रणभूमि सुन्दर सरोवर सी भासित होती थीं। खून पानी सा, कटे हुए हाथ पैर मगर मच्छ से, बार सिवार से, मांस मज्जा कीचड़ सा, उतराते हुए नव युवकों के मुंड कमल पुष्प से, और उनके अधखुले चक्षु चातक एवं चंचरीक से जान पड़ते थे। जैसे द्वापर युग में नन्द के कन्हैया ने यमलार्जुन को नारद के शाप से मुक्त किया था वैसे ही कलियुग में कन्ह ने कई वीरों को जीवन मोक्ष कर दिया। कवि कहता है कि खेत में खड़े होकर जब दो भिड़ते हैं तब एक गिरता ही है परन्तु सच्चे सूरवीरों का पराक्रम सदा सराहनीय होता है।

उधर भीमदेव की तरफ से जामराय यादव ने जोर किया और उसे इधर से खेते खँगार ने आड़े हाथों लिया। पहिले तो वे दोनों परस्पर के अधीनस्थ सैनिकों को काट काट कर रक्त के कुंड भरते रहे अन्त में दोनों मदान्ध बैल की भाँति भिर कर द्वन्दयुद्ध करने लगे। सोमेश्वरजी की तरफ से बली बलभद्र भी भारी पराक्रम दिखा रहा था। बली बलभद्र स्वेत पोशाक पहने था उसका हाथी भी स्वेत था यहां तक कि घोड़े टट्टू जो कुछ था सब स्वेत स्वेत था। गुजराती सेना ने पहिले बलभद्र को घेरा। बलभद्र ने अपने बशभर खूब मोरचा छेड़ा परन्तु अन्त में अमावस की रात्रि के समान संघटित सिन्धी सेना सीमा पार करने लगी और सोमेश्वर के पास तक जा धमकी। भीमदेव की सेना ने सोमेश्वर को चारों ओर से घेर लिया। यह देख कर चहुआन सैनिक भी डंके की चोट पर रणतूर की आवाज करके बड़े पराक्रम करते हुए आगे झुके। किंचित् काल के उपरान्त चहुआन और चालुक्य का परस्पर चौनजरा होगया। उस समय दोनों के प्रज्वलित अग्नि ज्वाला से नेत्र खासे खून भरे कटोरे से देख पड़ते थे। वे दोनों वीर साक्षात् देवगुरु वृहस्पति और दैत्यगुरु शुक्र से सुशोभित होते थे। दोनों ओर के फौजी जवान हथेली पर प्राण रख कर अपने अपने नमक की बजाने में दत्तचित थे। ज्यों ज्यों घोर गर्जना कर रणवाद्य बजते और भूत बैताल नाचते थे, त्यों त्यों सिपाहियों का चित्त चौगुना चंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सा चढ़ता जाता था। कुछ देर खूब लोह झड़ा, हजारों सिपाही और हाथी घोड़े कट कर लोथों के अटंब लग गए, आखिरकार गुजराती फौज ने सोमेश्वर को बुरी तरह से घेर लिया। निदान जब सोमेश्वर ने जान लिया कि अब यहां से जीते जागते निकलना कठिन है तब वह भी घोड़े को फटकार कर आंख मींचे वार करने लगा। सोमेश्वर केवल पचास अश्वारोहियों के साथ भीमदेव के पांच हजार सवारों में घिर गया था। उनमें से ३०० सिपाही सोमेश्वर ने स्वयं मार गिराए और अन्त में आप भी पंच तत्व को प्राप्त हुआ। परन्तु चलते चलते चालुक्य को भी इस योग्य न छोड़ गया कि फिर वह खेत में खड़ा हो सके। जैसे ही एक तरफ सोमेश्वर गिरा वैसे ही इधर भीमदेव भी नीमजां होकर पृथ्वीतल पर पतित हुआ। बस उसके साथी भी उसे डोली में रख कर खेत से हटे और इसी पर कलह का भी अन्त हुआ।

जब यह समाचार पृथ्वीराज के पास पहुंचा तो वह क्रोध और शोक से विह्वल सा हो गया। परन्तु उसने अपने को सम्हाला और सोमेश्वर का पिंडदान एवं श्राद्ध कर्म करने लगा। पृथ्वीराज ने भूमिशैय्या व्रत धारण करके अन्यान्य ब्रह्मचर्य नियमों को पालन करते हुये १२ दिन बिताए और इतने में अतुलित धन स्वर्ण का दान किया। उसने आठ सौ गौवें दान कीं जिनमें प्रत्येक के सींग और खुरों पर बारह बारह भार सोना मढा हुआ था। इसके सिवाय उसने शास्त्रोक्त और भी षोड़स दान दिए और श्राद्ध कर्म समाप्त करके प्रतिज्ञा की कि जब तक भीमदेव को मार कर पिता का बैर न भँजा लूंगा तब तक न तो घी खाऊंगा और न सिर पर पगड़ी बाँधूगा। ऐसा विषम व्रत करके पृथ्वीराज की तो इच्छा थी कि इसी समय गुजरात पर चढ़ाई की जाय परन्तु मंत्रियों के मत से यह निश्चय हुआ कि पहिले अजमेर का राज्यतिलक हो जाय।

इसलिये तमाम प्रजा में इस बात की सूचना दे दी गई। इधर महल में जहां तहां यज्ञ जप तप दान पुण्यादि होने लगे। उत्तम ज्योतिषियों के संशोधित और निश्चित मुहूर्त के आने पर दर्बार की तय्यारी की गई। सब तरह के राजसी साज समानों से सभा मंडप सजाया गया। उस समय उस स्थान की ऐसी शोभा थी जैसे साक्षात् इन्द्र का अखाड़ा पृथ्वी पर उतर आया हो। जहां तहां जड़े हुए जरकसी वस्त्र और उनमें लगे हुए सब किस्म के जवाहिरात ऐसे जान पड़ते थे जैसे आसमान में नवग्रह प्रकाशित हो रहे हों। कहीं कहीं लटकते हुए अच्छे अच्छे स्वच्छ मोतियों के गुच्छे उड़गन समूह से ज्ञात होते थे। इस प्रकार के सुसज्जित सभामंडप के बीच में स्थापित राजगद्दी पर विराजित राजा पृथ्वीराज साक्षात् सूर्य्य का सा अंश सुशोभित होता था। एक तरफ दधि, दूब, तंदुल, गोरोचन, केसर, कपूर और रोली आदि आवश्यक शुभ सूचक सामग्री और पंडितों की मंडली उपस्थित थीं और दूसरी तरफ सोलहो शृंगार और बारहो आभूषणों से सुसज्जित मंगला मुखी महिलाए ताल स्वर सहित कलकण्ठ से गान कर रही थीं। उनके रंग बिरंगे वस्त्रों पर पड़ी हुई पुष्पों की मालाएँ तो मानो देखने वालों के मन मोल लेती थीं। समय आने पर सखियों सहित रानी इच्छनी भी रनिवास से निकल कर सभा मंडप में आई। उसकी अवाई ऐसी मालूम होती थी मानो अन्यान्य अप्सराओं सहित अखाड़े पर आ रही हों। इच्छनी रानी भी पृथ्वीराज के पास बाएँ आसन पर आबैठी और दोनों की गांठ जोड़ी गई। उस समय सब लोग यथावित्त न्योछावरें करने लगे। लग्न का ठीक बेध होने पर पहिले कन्ह ने उसके पीछे निढुर राठौर और तिसके बाद अन्यान्य सामन्तों ने वारी वारी से पृथ्वीराज का तिलक किया। उस समय पृथ्वीराज के शीश पर ढुरता हुआ स्वेत चँवर ऐसा सुशोभित होता था जैसे चन्द्रमा ने चिढ़ कर रीस सें अपनी किरणों को सूर्य्य मण्डल पर जा डटाया हो और सोने की डांड़ी पर आरोपित रत्नजटित छत्र ऐसा मालूम होता था मानो अन्य पंच ग्रह मंगल के मंडल पर एकत्र आ विराज रहे हों॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पज्जून छौंगा नाम।

(चालीसवां समय।)

जब पृथ्वीराज ने सुना कि भीमदेव ने अजमेर पर चढ़ाई करके सोमेश्वर को मार डाला, तब वह तुरन्त उलटे पैर दिल्ली को चला आया। पृथ्वीराज ने पज्जूनराज कछवाहे को निज में बुला कर उसके सिर पर छौंगा बाँधा और छत्र दिया और कहा कि हे भाइ! भीमदेव ने घर बैठे उपद्रव उठाया है, यह बात मुझे बहुत ही खटकती है, इसलिये तुम और मलयसिंह अपनी सेना लेकर जाओ और भीम को समझाओ।

भीमदेव उस समय पट्टनपुर न जाकर सोनिंगरा के किले में पड़ा हुआ था। अतएव पृथ्वीराज को दूत द्वारा इस बात का भी पता लग चुका था। इसलिये उसने पज्जूनराय को वहीं पर जा जुड़ने की आज्ञा दी। निदान पज्जून राय भी चुने हुए योधाओं की फौज लेकर मलयसिंह के सहित भीमदेव पर चढ़ चला। पज्जूनराय और मलयसिंह दोनों कछवाहे बीर सब हथियारों से सजे बजे तूणीर बाँधे कमान काँध अच्छे अच्छे काच्छियों पर सवार ऐसे सुशोभित होते थे जैसे उत्तरापति अभिमन्यु और अर्जुन कौरव दल का ब्यूह भेदने के लिये प्रस्तुत हों। वे दोनों पिता पुत्र बराबर पड़ाव पर पड़ाव डालते और शत्रु की सीमा में हलचल मचाते जाते थे। जब उन्हों ने भीमदेव की सरहद के नगरों पर घेरा डालना और राजसी चौकियों को लूटाना शुरू किया तब यह सब समाचार भीमदेव के दरबार में सुनाया गया। इस खबर के सुनते ही भीमदेव पूँछ दबे हुए सर्प की भाँति कुपित होकर सेना सहित चढ़ दौड़ा, आते ही रणबाँकुरे मलयसिंह ने उसका मुकाबला किया अभी सिपाहियों की परस्पर चार चोटें भी न होने पाई थीं कि पज्जूनराय ने भीमदेव का सिरमंडन छौंगा ले लिया और चलता हुआ। पज्जूनराय जब सात कोस निकल आया तब उसे मालूम हुआ कि उसकी चाबुक रह गई है, इसलिये वह फिर उलटा फिरा और चौंप से चढ़ी आती हुई चालुक चमू में से चाबुक लेने के लिये पैठ पड़ा। पज्जूनराय के पहुँचते ही चालुक्क सेना ने धर मार करना शुरू किया। पज्जून के योधा भी खूब बार बचाने चले। मलयसिंह के मुकाबले में गुजराती सेना मनहार होकर ठिठक गई और वे दोनों बाप बेटे भीमदेव का सिर छत्र छौंगा लेकर सकुशल दिल्ली आ उपस्थित हुए।

जिस समय पज्जूनराय ने वह छौंगा पृथ्वीराज के साम्हने उपस्थित किया तो पृथ्वीराज बड़ा प्रसन्न हुआ उसने कहा धन्य है कूरंभ! तू बड़ा पराक्रमी है तू भीमदेव से कहीं सहस गुना अधिक बलवान है—यों कह कर वह छौंगा निसानी की तरह उसी को वापस दिया और अपनी तरफ से एक घोड़ा भी दिया।

कवि कहता है कि पृथ्वीराज ने बड़ी बड़ी लड़ाइयाँ की और उसके यहां एक से एक चढ़ बढ़ कर अच्छे अच्छे पराक्रमी सामन्त थे परन्तु पज्जूनराय उन सब का सरताज था क्योंकि उसने जैसा यह पराक्रम किया वैसा और किसी ने नहीं किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पज्जून चालुक।

(इकतालीसवां समय।)

जब जैचन्द ने देखा कि अब मैं सम्मुख चाल करके चहुआँन को नहीं दबा सकता तब उसने सामनीति का आश्रय लिया और अपने भाई बालुका राय को सहायक देकर शहाबुद्दीन की सेना को दिल्ली पर चढ़ाई करने के लिये उसकाया।

निदान बालुका राय और ततारखां दो लाख सेना के साथ दिल्ली पति पृथ्वीराज को दमन करने के लिये चले। जब वे पड़ाव पर पड़ाव आगे बढ़ते हुए दिल्ली की सरहद दबाने लगे तो दिल्ली के राज दूत ने यह समाचार पृथ्वीराज के दबार में निवेदन किया।

उस समय पृथ्वीराज पिता का मृतकर्म करते हुए अशौच में था। इसलिये उसने विचार किया कि इस समय अपने एवज पर किस को भेजूं? अन्त में उसका विचार पज्जूनराय कछवाहे पर स्थिर हुआ क्योंकि पृथ्वीराज भली भांति जानता था कि वह सच्चा स्वामिधर्म्मधारी वीर तन धन त्रिया आदि किसी सांसारिक वस्तु का लालची नहीं है वह केवल मेरे काम पर मरना जानता है, इसलिये उसी को भेजना उचित होगा—परन्तु पृथ्वीराज ने एकदम ऐसा करना उचित न समझा, सामन्तों के मन की थाह लेने तथा अपने पर से पीछे कहने सुनने का छप्पर उतारने के लिये पृथ्वीराज ने सब सामन्त एवं सैनिकों को एकत्र किया और भरे दरबार में पान रख कर उपरोक्त चढ़ाई के समाचार की सूचना देते हुए कहा कि जो पुरुष उक्त आक्रमण को रोकने के लिये सन्नद्ध हो वह इस बीड़े को उठावे और संसार में सुयश पावे। उस समय रामराय बड़गुज्जर, जैत प्रमार, दाहमा चामंड, भाटी, कमधुज्ज, आदि सब वीर उपस्थित थे, परन्तु बीड़ा उठाने का द्याव किसी का भी न पड़ा। तब रणवांकुरे कूरम्भराय पज्जून ने अपने आसन से उठ कर बीरा उठा लिया। पज्जूनराय के बीड़ा उठाते ही सारी सभा में आनन्द ध्वनि और पज्जून वीर की वाह वाह होने लगी। सब लोग कहने लगे धन्य है वही तो पज्जूनराय हैं जिसने भीमदेव की भरी सेना में से उसका छोंगा उतार लिया। पज्जूनराय के पान लेते ही पृथ्वीराज ने अपनी तलवार भी उसे बगस दी। पज्जूनराय दरबार से तलवार बाँध कर वैसा ही अपने घर को चला आया और उसने सब समाचार अपने भाइयों से कह सुनाया। निदान बलिभद्र, कन्ह, वीरसिंह, पल्हन आदि उसके सब भाई और निज की फौज सहित मलयसिंह भी उसका साथ देने को सन्नद्ध हुए।

इस प्रकार पंचमी रविवार को पज्जूनराय दिल्ली राज्य की समस्त सेना और सामन्तों का सरताज बन कर शहाबुद्दीन और चालुक की संगठित सेना का आक्रमण रोकने के लिये चल पड़ा। उस सुसज्जित सेना के बीच में पांचों भाइयों सहित पज्जूनराय ऐसा सुशोभित होता था जैसे भारथ के युद्ध में पांडवों के बीच उनके रक्षक श्री कृष्ण हों। ज्योंही पज्जूनराय की जोरदार सेना समुद्र के ज्वार की तरह दिल्ली के सिवाने से आगे बढ़ी त्योंही भारत के शुभ सूचक शकुन दिखाई दिए। मृग सहित मृगियों का झुण्ड दाहिने तरफ आता हुआ देख पड़ा। बाएँ तरफ सारस का जोड़ा बोलता था, उत्तर की तरफ योगिनी शब्द करती थी, और सम्मुख मुँह खोले मृगराज देख पड़ा जिसे पज्जूनराय ने प्रणाम किया॥

इधर से पज्जूनराय बढ़ता जाता था। उधर से बालुका राय चला आता था। जब हिन्दू मुसल्मान दोनों सेनाओं का आमना सामना हुआ तो तत्तार खां और खुरसानखां ने अपनी सेना को सर्प व्यूहाकार विरचा और पज्जूनराय ने राजपूत सेना को गरुड़ व्यूह बनाया। इस व्यूहाकार के जामराय यादव और मदनसिंह पड़िहार पैर, जैत प्रमार पूछ, भीम भटी पिंड और पांव, चन्द पुराडीर जांघ, चौंच

१ इस समय का आखिरी छन्द ३९—"उभय बीस अरु पषं दिन न्हाय दान दिये बीर"॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुख और जीभ भाइयों सहित पज्जून, गरदन आजान बाहु लोहाना और स की चोटी बली बलभद्रराय थे। तिथि नौमी शुक्रवार को पांच घड़ी दिन चढ़ा था जिस समय पज्जूनराय गिद्ध एवं ऊंट रुप होकर कमधुज्ज और शहाबुद्दीन के सेना रुपी सर्प एवं पोस्ते के पुष्प को भक्षण करने लगा। दोनों तरफ के योद्धा लोग म्यान से तलवारें निकाल कर मार मार करते हुए परस्पर जुट पड़े। झनाझन लोहे की लपेट से आग की चिनगारियां झरने लगी। मय टोप और जिरह बख्तर के कट कट कर ज्वान जमीन पर लोटने लगे। यों ही होते होते बलभद्र ने ऐसा जोर पकड़ा कि शत्रु सेना में खलबली पड़ गई। यवन दल को दलन करता हुआ पज्जूनराय ऐसा सुशोभित होता था जैसे गहरे सरोवर में केल क्रीड़ा करता हुआ मदान्ध कुंजर सघन सरसिज समूह का सत्यानाश कर रहा हो।

अन्त में मुसल्मानी सेना ने पीठ दिखाई और पज्जूनराय के हाथ खेत रहा। इस युद्ध में बालुका राय के चार भाई काम आए और पज्जूनराय के पांचो भाई अत्यंत घायल होकर अचेत हुए। बलभद्र, कन्ह पंचाइन जैतसिंह आदि तो साधारण ही घायल हुए थे परंतु पल्हन के शरीर में साठ घाव आए थे। पज्जूनराय ने पहिले तो दोनों तरफ के सब घायलों को मरहम पट्टी का बन्दोबस्त कर वाया फिर मुसल्मान मुर्दों को मिट्टी दिलवाई और हिन्दुओं की दाह क्रिया करवाई। तदनन्तर शाही सेना के भंगेड़ों का सब सामान सग्गड़ों पर लदवा कर वह दिल्ली को रवाना हुआ।

जिस समय शत्रु दल को विदार कर पज्जूनराय दिल्ली पहुँचा और पृथ्वीराज से मिला उस दिन राजा प्रजा सब ने बड़ी खुशी मनाई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द द्वारिका गमन।

(चालीसवाँ समय।)

एक समय कवि चन्द की द्वारिकापुरी की यात्रा करने की इच्छा हुई। इसलिये उसने पृथ्वीराज से छुट्टी लेकर अपना यात्रा सम्बन्धी सब साज सामान दुरुस्त किया कविचन्द के साथ में जाने के लिये सात हाथी दो हजार घोड़े सात रथ और आठ सौ धनुर्धारी तैयार हुए। साथ ही इसके राजा पृथ्वीराज और सौ सामन्तों ने भी अपनी तरफ से बहुत से घोड़े हाथी और साज सामान कविचन्द को भेट किए। ऐसे सब लावलश्कर के साथ कवि चंद आनन्द की दुन्दुभी बजाता हुआ चित्रकोट अर्थात् चित्तौर के पास पहुंचा। दो योजन की दूरी से जब चित्तौर का अति उतंग दुर्ग दृष्टिगोचर होने लगा तो कविचन्द ने अपने डेरे वहीं पर डाल दिए।

जिस स्थान पर चित्तौर का किला है वह किसी समय उतंग पर्वतों से परिवेष्ठित सुन्दर झरनों के निर्मल नीरमय सरोवरों सहित सघन बन आच्छादित सुरम्य स्थल था। चित्रांगद नामक एक मौरि वंशीय राजा ने उस स्थान की रमणीकता से प्रसन्न होकर चित्तौर के "वर्तमान" किले की नीव डलवाई थी और चित्रांगद नाम का एक तालाब भी खुदवाया था। कुछ दिनों के बाद जब चित्तौर का किला, बुर्ज, कोट, कंगूरा, अटा, अटारी, महल, दुमहला, ओख, गोख, झारि, झरोखा, चित्रसारी, आदि से सुसज्जित हो चुका और जहां तहां हाट, बाट, चौहटे. बाग, बाजार, चावच्चे आदि भी यथा स्थान बनठन कर दुरुस्त होगए तब वहां पर छत्तीसों वंश के क्षत्री, उन के परिकर के लोग और व्यापारी आदि आ आ कर निवास करने लगे। तब मोरी राजा ने वहां पर गोमुख कुण्ड और आनन्द कानन के समान एक आनन्द मय उपबन भी बनवाया। इसी काम के होते समय, एक पहाड़ की कन्दरा के खोदने पर वहां एक तपसी निकला जिसके सम्मुख उसके शिष्य को एक सिंहनी भक्षण कर रही थी। इस घटना की पूर्व कथा इस प्रकार है कि- अयोध्यापुरी में एक कीर्ति धवल नाम का राजा राज्य करता था। वह एक समय शिकार खेलने गया और उसने एक गर्भवती मृगी को बाण मारा। बाण के लगते ही वह मृगी विकल होकर तरफराने लगी। यह देखकर राजा के हृदय में ऐसा वैराग्य उत्पन्न हुआ कि फिर वह लौट कर राजधानी को न गया, अपने पुत्र के साथ वहीं से तीर्थ यात्रा करता हुआ चित्तौर में आकर तप करने लगा। दैवात उसके महल की एक दासी वहां से आ निकली। उसने राजा को पहचान लिया और यह समाचार रानी को जा सुनाया। रानी इस समाचार को सुनकर ऐसी प्रसन्न हुई कि मारे उत्कंठा के जैसी बैठी थी वैसी ही उठ कर चल दी। उसे यह भी ध्यान न रहा कि वह कहां जा रही है। वह ज्योंही गोख की खिड़की से आगे बढ़ी कि सैकड़ों हाथ ऊंचे से ज़मीन पर गिर कर चकनाचूर हो गई—सच है जप, तप, पूजा, पाठ, स्नान, ध्यान, तिलक, छापा, पोथी, पुरान आदि से कुछ भी नहीं होता, ये सब चित्त शुद्धि के साधन मात्र हैं, मरते समय चित्त में जो बासना स्थित हो उसी के अनुसार पुर्नजन्म होता है निदान उस रानी ने सिंहनी का जन्म पाया और भूलते भटकते उसी स्थान पर आ पहुँची जहां राजा कीर्तिपाल मय अपने सुकुमार कुँवर के तपस्या करता था। वह स्वाभाविक भीषणावेष सिंहनी क्षुधा से तो पीड़ित थी ही बस उसने आते ही राजकुमार पर हाथ साफ किया, परन्तु ज्योंही उसका मांस खाया चाहती थी कि उसे पूर्व जन्म की सुधि आ गई, बस वह उसी अवस्था में पाषाण की सी मूर्ति स्थिर रह गई और एक महीने पर्यन्त बिना जल-पान के आंसू मोचन करते करते उसके प्राण पखेरू पंचभूत पंजर से बिदा हुए।

जब कीर्तिपाल ने सिंहनी को कुमार को मारते हुए देखा तो वह साहस करके कुमार के पास दौड़ गया और उसने उसके कान में राम नाम जा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनाया परन्तु राजा को इससे बड़ा दुख हुआ तब उसके गुरु ने समझाया कि तुमने जो गर्भवती हरिनी मारी थी—यह सब उसीका फल है।

'जब किसी स्त्री को नैहर से आए हुए एक साधारण पायक का समाचार मिलता है तो वह उसे पिता के समान प्यार करती है" जब कविचन्द के आने का समाचार पृथाकुमारी के कर्णगोचर हुआ तो वह अगनित दास दासियों को लेकर पालकी में सवार होकर कविचन्द के डेरे पर आई और कविचन्द को भेट देने के लिये एक सहस्र सीतारामी स्वर्ण की थारियों में जरकसी वस्त्र पान अगर और मोतियों की मालाएं लाई। कविचन्द ने पृथाकुमारी के सम्मान को स्वीकार करके उसे आशीर्वाद दिया और किले को विदा किया। पीछे से आप भी नीलकंठ महादेव और भवानी के दर्शन करता हुआ चित्तौर में पहुंच कर रावल जी से मिला। अवाईजवाई हो जाने के बाद रावल समर सिंह जी ने कविचन्द को भोजन करने के लिये बुलाया। सब सर्दारों सहित रावल जी और कविचन्द जेवने को बैठे और भांति भांति के षटरस भोजन परोसे गए। भोजन हो चुकने के बाद टीका और पान सुपारी हुआ। तिसके बाद रावल जी ने कविचन्द को बहुतसा धन रत्न और मोतियों की माला दी। जब चन्द चलने लगा तो सजे हुए घोड़े, एक गजमुक्ता और एक रत्नजटित सुखपाल देकर रावल जी ने उसे विदा किया।

कविचन्द चित्तौर से विदा होकर पट्टनपुर होता हुआ पश्चिम पयोनिधि के किनारे पर जा पहुंचा। ज्यों ही कविचन्द को रणछोड़जी के देवालय की ध्वजा देख पड़ी त्योंही उसने साथियों सहित सवारी से उतर कर पैदल चलना शुरू किया। और मंगनों को दान देता हुआ पहिले गोमती के दर्शन करने गया, वहां से चल कर भगवान रणछोड़ जी के मन्दिर पर पहुंचा। वहां देखता क्या है कि मन्दिर का छत्र सर्वाङ्ग सोने से मढ़ा हुआ है और उसमें लगी हुई जहां तहां मोतियों की लड़ी ऐसी सुशोभित होती है जैसे अनन्त सूर्य्यमंडल के मध्य में चन्द्रमा की किरणें अपनी कलंक कालिमा के काटने को आडटी हों। कविचन्द ने पहिले परिक्रमा करके इस प्रकार स्तुति की। हे गोविन्द तू ही देह है, तू ही मन है, तूही दिगपाल है, तू ही यम है, तू ही द्रौपदी की रक्षा करने वाला है, तू ही त्रिदेव है, तूही ब्रह्माण्ड है, तू ही तीन कूंड है. तू ही ब्रह्माण्ड के खण्ड है, तू ही ज्ञान समूह है, तूही अप्सराओं का जूह है। हे प्रभू तेरी ही दी हुई शक्ति से शेष पृथ्वी को सिर पर रक्खे है और हर अर्थात् शिव संसार की रक्षा करते हैं। इसके बाद कवि ने देवी की स्तुति की। उसने कहाः—हे ऋषि वरों द्वारा पूजित संसार की सार एवं बीज स्वरूप सक्ति तेरा भजन करने से संसार मात्र को सिद्धि प्राप्त हो सकती है-शिशुपाल और कालयमन को नाश करने वाली। हे एक भग्नी और पाँच पतिवाली तुझे नमस्कार है। संसार में ऋद्धि, सिद्धि, काल, कीर्ति, गलि आदि, अन्त, स्वर्ग, नर्क, जीव, जन्तु, चारों युग, भूमि, धूम, जल, वायु, तप, ताप, तुषार, भान, मान, मुक्ति, बाल, वृद्ध, युवा, व्याघ्र, सार, बाग, मुंड, कुंड, छत्र, छत्रधारी, रूप, रंग, राग, भृत्त, वृत्त, बागवानी आदि जो कुछ है सो हे माता चंडिके तुहीं है।

इसके पश्चात् कवि ने शास्त्रोक्त विधिवत् हवन करके तुलादान किया और हाथी, घोड़े, रथ, अन्न, वस्त्र, स्वर्ण, माणिक, मोती आदि दिव्य पदार्थ दान किए,—कवि कहता है कि जो मनुष्य द्वारिकापुरी में जाकर छापे नहीं लगवाते वे दूसरे जन्म में घोड़े होते हैं और उनके बाजू और पीठ दागे जाते हैं * जो भगवान का दर्शन और बन्दना नहीं करते वे जरायुज जन्म पाते हैं और जो प्रदक्षिणा नहीं करते वे कोल्हू के बैल होते हैं अथवा रहँट में जोते जाते हैं। जो मनुष्य गोमती में स्नान

* ते हयवारह चाढ़ि न्याय हय पिट्ठ दगावहि-"यह पद इस बात का एक अच्छा प्रमाण है कि उस समय भी राजाओं के घुड़सार के घोड़े दागे जाते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करके अपने को शुद्ध नहीं करता वह दूसरे जन्म में [1]जैनयोगी होता है, जिनके केश नोंचे जाते हैं जो कभी मुँह नहीं धोते, स्नान नहीं करते, आँख में आंसू आने से अनेक [2]उपवास करते हैं, गंगा, गया प्रयाग आदि किसी को नहीं मानते– 'फिर काहिए ऐसे अनिस्थिर–मत जीव की क्या गति हो गी।"

द्वारिकापुरी से चलकर चन्द ने भोला–भीमदेव के आचार्य्य अमर सिंह सेवरा से मिलना विचार कर पट्टनपुर के उपकंठ में आकर बसेरा लिया। कविचन्द ने देखा कि पट्टनपुर की बस्ती बड़ी ही विस्तीर्ण, सब प्रकार के राजसी और व्यापारी सामानों से परिपूर्ण एक अति उत्तम और रमणीक स्थान है। प्रत्येक नगर निवासी मनुष्य के गले में सोने के गुंज गोफ और मोतियों की मालाएं पड़ी हुई हैं। स्वर्ण का दान कोई देने से भी नहीं लेता। कुत्तों के गले में चाँदी के पट्टे पड़े हैं। हाथियों के दाँतों में जड़ाऊ मुहालें जड़ी हैं। शहर के एक ओर समुद्र की मेघास्पर्श लहरों का शोर होता है दूसरी तरफ छोटी छोटी पहाड़ी और उनके बीचों बीच अच्छे अच्छे बाग बगीचे हैं जिनमें सब प्रकार के फल फूलदार छोटे बड़े बिरवा लहलहा रहे हैं, बीच बीच में कुंड कुएँ और तालाब हैं जिनमें पुरैन खिल रही हैं और हंस, सारस, बतक आदि जलचर पक्षी कल्लोल करते हुए क्रीड़ा कर रहे हैं और उन्हीं के तीर तीर सुन्दर सोरहो शृंगार बारहो आभूषणों से सुसज्जित सुन्दरीं स्वर्ण कलसों एवं झारियों में जल भर भर कर आती जाती हैं। इस प्रकार गुलजार नगरी देखकर कविचंद का चित्त प्रसन्न हो गया।

कविचन्द ने भी एक हरेभरे स्थान पर अपने सुनहले जरकसी तम्बू तनवा दिए–जो शहाबुद्दीन से से छीने गए थे—जहां तहां घोड़े हाथी बँध गए और कवि के डेरों का विस्तार आध कोस में हो गया। जब यह समाचार भीमदेव के पास पहुंचा तो उसने अपने भाट जगदेव को कविचन्द के पास भेजा और एक हाथी सात घोड़े एक ऊंट और बहुत सा धन रत्न भी कवि को भेंट देने के लिये भेजा। जब कविचन्द ने जगदेव की अवाई का समाचार पाया तो वह एक अजब स्वांग बनाकर बैठ रहा–उसके आस पास दिया, जाल, कुदाली, रक्खे थे और हाथ में पैरी और अंकुश था। जगदेव ने आतेही कविचन्द से पूछा—

यह क्या?

चन्द—सोमेश्वर को किसने मारा?

जगदेव—क्या तुम नहीं जानते?

चन्द—आबूगढ़ किस ने लिया?

जगदेव—भीमदेव ने। वह पट्टनपुर का राजा एक असीम सेना का स्वामी और समर में स्वयं असीम पराक्रमशाली है।

चन्द—अच्छा तुम हमारा अभिप्राय तो समझ गए न? यदि नहीं समझे तो दस रोज में आप ही समझ जाओगे।

यह एक स्वाभाविक बात है कि समूह बद्ध होकर भेड़ें रहती हैं सिंह नहीं। उस पृथ्वीराज को धन्य है जिसने जीता हुआ साज सामान फिर से फेर दिया।

कविचन्द बोला कि यदि यह गुर्जरनरेश है तो वह दिल्लीपति है। उस तेजस्वी पृथ्वीराज ने शत्रुओं का संहार करने के लिये ही पृथ्वी पर अवतार लिया है, पृथ्वी माता ने मानों पृथ्वीराज के लिये चार हांड़ी राँध कर चार जगह रक्खी हैं। जिन में से एक शहाबुद्दीन दूसरा प्रमार और तीसरा

---

[१] जैन [जीत लिया है जिसने काम क्रोध लोभ मोहादि अजेय शत्रुओं को उन का नाम है 'जिन' भगवान उस जिन की उपासना करने वालों को जैन कहते हैं] जैनियों के वैसे तो बहुत फिर्के हैं परन्तु स्वेताम्बर, दिगम्बर और सेवरा ये तीन मुख्य हैं। स्वेताम्बर वे हैं जो स्वेत वस्त्र पहिनते हैं और इसी शुद्धाचारों का आचरण करते हैं। दिगम्बर वे हैं जो बिना वस्त्र के रहते हैं और तप को मुख्य मानते हैं। तीसरे सेवरे वे हैं जो मुख पर पट्टी बांधे रहते हैं और हमेशा मोरपच्छ पास में रखते हैं जिससे जमीन झाड़ कर बैठते हैं।

[२] जैन जातियों में शिष्य होने के समय जब गुरू चोटी के बाल उखाड़ता है यदि उस समय आंसू आवें तो तीन दिन अनशन व्रत कर के प्रायश्चित करना पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम्हारा स्वामी है *' सो हे जगदेव दो तो पृथ्वीराज पा चुका, तीसरा भोराराय शेष है। ध्यान रक्खो। तुम्हारे राज्य के दस लाख योधा भी पृथ्वीराज के दस सामन्तों का सामना नहीं कर सकते। तब जगदेव बोला कि अच्छा तो जाओ अब तुम अपने पृथ्वीराज को ही लेकर आओ तभी हम तुमसे मिलेंगे। उस समय सब निबटेरा हो जायगा। यह कह कर जगदेव चलागया।

दूसरे दिन भोरा भीमदेव स्वयं कविचन्द के पास आया। कवि अगवानी देकर भीमदेव से मिला और उसका यश वर्णन करके उसने यथोचित आशीर्वाद दिया। तब भीमदेव ने कविचन्द का और अमरसिंह सेवरा का विद्यावाद देखने की इच्छा प्रगट की। यह जान कर कविचन्द ने ज्योंही अपने इष्टदेव की आराधना की त्योंही अमरसिंह रथ सहित आसमान को उड़ गया और एक वृक्ष के शिखर पर जा बैठा और वहां पत्ते पत्ते पर नाचते हुए चहुआन की जै जै कार बोलने लगा। इधर पट्टनपुर की सारी जमीन हिलेनलगी और अँधाधुंध आँधी आने के लक्षण देख पड़ने लगे। यह देख कर भीमदेव रथ पर चढ़ कर महलों को चलता हुआ।

तब तक इधर कविचन्द के पास पृथ्वीराज का परवाना पहुंचा कि शहाबुद्दीन चढ़ाई करके चला आरहा है सो जहां तक हो सके जल्द आओ। यह समाचार पाते ही कविचन्द वहां से उसी समय कूच दर कूच चलता हुआ दिल्ली आ पहुँचा।

* मूल पुस्तक में पहिले तो चार हांडी लिखी है परन्तु नाम उक्त तीनों दिए हैं। इस से अनुमान होता है कि चौथे से कवि का अभिप्राय जैचन्द से था। परन्तु उसका नाम स्पष्ट नहीं दिया। संभव है कि छन्द का कोई अंश किसी प्रकार छूट गया हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१६ वां युद्ध.

कैमास युद्ध।

(तेतालीसवाँ समय।)

एक दिन शहाबुद्दीन ने अपने मंत्री तत्तार खां और खुरसान खां से पृथ्वीराज पर चढ़ाई करने के विषय में पूछा। तब तत्तार खां बोला कि एक तो पृथ्वीराज स्वयं एक बलवान शत्रु है तिस पर भी उसका वजीर कैमास तो बिलकुल अक़्ल का पुतला है।

अतएव जब कि पृथ्वीराज शिकार खेलने के लिये षट्टू बन में पड़ा हुआ था शहाबुद्दीन ने कैमास के पास एक परवाना लिख भेजा और इधर आप अपनी फौज तैय्यार करके संवत् ११४० चैत्र बदि ११ रविवार पुष्य नक्षत्र में दिल्ली की तरफ चल पड़ा। इस बार शहाबुद्दीन के साथ में तीन लाख सवार चार हजार धनुर्धारी एक लाख पैदल सिपाही और तीन हजार हाथी थे। शहाबुद्दीन ने इतनी सेना के साथ कूच करके गजनी से दस कोस के ऊपर आकर पड़ाव डाला। पारसपुर के घाट पर सिन्धु नदी को पार करके इस पार डेरे डट जाने पर शहाबुद्दीन तत्तार खां, मारूफ खां, खुरसान खां, लाल खां, याकूब खां, तेजम खां और ममरेज खां आदि सरदारों सहित दरबार में बैठा। तब तक केदार भाट ने भी आकर आशीर्वाद दिया। शहाबुद्दीन ने केदार से कहा ही था कि अर्थ और गुणों के विषय में कुछ कहो कि तब तक शाही दो दूत जटा जूट बाँधे विभूत रमाए शृंगीनाद करते हुए आ पहुँचे। उन्होंने अरदास और धर्म्मायन की दी हुई चिट्ठियाँ पेश कीं जिनमें लिखा था कि पृथ्वीराज षट्टू बन के पास शिकार खेल रहा है और वहां उसके साथ इतना लाव लश्कर है कि मालवा और गुजरात तक उसकी धाँक बँध गई है। गांव के भूमियाँ थर थर कांपते और जहां तहां भागते जाते हैं।

ऐसे समाचार सुनते ही शहाबुद्दीन का दिल दहल गया। उसने सब मुसाहबों की एक अंतरंग सभा करके उनसे कहा कि चहुआन की सेना और कैमास के बुद्धिबल के साम्हने इस समय चढ़ाई करने से मेरा जी तो हिचकता है। और चढ़ कर आए हैं यदि योंही लौट जाते हैं तो भी बड़े शरम की बात है अब करें तो क्या करें ? शाह की ऐसी बातें सुन कर याकूब खां बोला कि हम लाल खां, हुसेन खां, मारूफ खां आदि चार भाई हैं. हमारे चार कालिब मगर एक जान हैं। हम चारों भाई इस वक्त क़सम करके कहते हैं कि या तो अब की बार दुश्मन पर फतह पावेंगे या हम चारो योंहि मक्के को चले जावेंगे, हारकर हूजूर को मुँह न दिखावेंगे। हमारी भारी फौज के साम्हने हिन्दुओं के सामन्त आटे का लोन है। याद रखिए, हम अब की बार पृथ्वीराज को जीता ही पकड़ कर हुजूर की कदमबोसी में हाजिर करेंगे। यह सुनते ही शहाबुद्दीन का चोला चंगा हो गया और उसने अपनी सेना सहित उसी समय आगे को कूच किया।

जब यह समाचार पृथ्वीराज के पास पहुँचा तो उसने उसी समय कैमास और चामंडराय को बुलाकर सब हाल कह सुनाया। तब कैमास ने उत्तर दिया कि तो अब देर किस बात की है। यथासम्भव शीघ्र ही सेना तय्यार कर के उस यवन शत्रु का सामना किया जाय और अब की बार कलेजे के कंटक को नष्ट ही करदिया जाय। इस पर पृथ्वीराज ने उसी समय दस हाथी और सात सौ घोड़े कैमास को और तीन सौ घोड़े चामुंडराय को दिए। बात की बात में सारी फौज की तय्यारी हो गई और संभरीनाथ पृथ्वीराज की सेना के कैमास, चामंडराय, लंगरीराय, गोइन्दराय, काका कन्ह, जैत प्रमार, वीर नरसिंह, हरसिंह, रामराय बड़गुज्जर, कनकराय सोलंकी, निड्डुर कमधुज्ज, और वीर बघेला इत्यादि सामन्त शत्रु पर शस्त्र प्रहार करने के लिये सन्नद्ध हुए।

उधर से शहाबुद्दीन अपने मंत्री तत्तार खां को साथ लिए हुए चढ़ा चला आता था। उसके साथ में रुस्तम खां, आखुब खां (याकूब खां), दरयाव खान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(दरिया खां), कन्दहार खां (जिसके साथ के सिपाही सिगिनी चलाने में दक्ष थे), मलिकखां, मम्मार खां, आलू खां, कम्माल खां, गक्खर मारूफ खां, पहलवान खां पठान, हबीब खां हबसी, समसुद्दीन खां रूमी, गयासुद्दीन चिश्ती और चित्रखान गुरबी आदि सरदार थे। उसकी सेना पांच भागों में विभाजित थी। प्रत्येक अनी के आगे चौसठ हाथी लाल ढाल वाले थे, शेष हाथियों पर हथनार तोपें थीं, बीच बीच में कमनैत जवानों की भरती और प्रत्येक अनी में सात सात सरदार थे। पृथ्वीराज सेना सहित आकर गोइन्दपुर में पड़ा था। जब शहाबुद्दीन सारुंडे के पड़ाव से मुड़ कर षट्टूपुर की तरफ चला तब इधर चहुआन सेना भी सचेत हुई। उस समय कैमास ने पृथ्वीराज से कहा कि आप षट्टूपुर में रहकर शिकार खेलिए हम लोग जाकर शत्रु को परास्त करेंगे। इस पर पृथ्वीराज ने उत्तर दिया कि हे कुलीन लज्जाशील वीरो, मैं जानता हूं कि मेरा सर्वस्व तुम्ही हो परन्तु मेरा यहां बैठे रहना उचित नहीं, तुम्हारा साथ देना ही उचित है। इस पर कैमास ने यह प्रत्युत्तर दिया कि तो आप यहां से सायत से कूच कीजिएगा और उसने अपनी सब सेना सहित उसी दम बम् बोलदी।

शहाबुद्दीन का मुकाम लाडून में था, इस लिये कैमास ने अपना पड़ाव पंचोसर के पास डाला। एक प्रहर रात्रि रहते ही एक दूत ने खबर दी कि शहाबुद्दीन सबेरे ही यहां आजावेगा। निदान कैमास ने तो उसी दूत को सीधा राजा पृथ्वीराज के पास भेजा और यहां फौज की तय्यारी बोल दी। कैमास ने सब सेना को पांच भागों में विभाजित किया। सब अनीपत सर्दार और सामन्तों के कार्य्य विभाग एवं मोरचे लिख लिए गए और कन्ह हरावल का स्वामी नियत हुआ। दूसरी अनी का नेता कैमास हुआ जिसमें पांच हजार कमनैत (तीरंदाज) और पांच हाथी थे, तीसरी फौज कन्ह के तहत में थी जिसमें पांच हजार सवार बखतरिया और एक हजार हाथी थे, चौथी अनी का शासक गोइन्दराइ गहलौत था जिसमें पांच हजार नेजबाज और पांच सौ हाथी थे। पांचवीं फौज जैतराव प्रमार के ताब में थी जिसमें पांच हजार सवार पांच हजार पैदल और पांच सौ हाथी थे। उधर यवन सेना का मुख्य नेता स्वयं शहाबुद्दीन था। शहाबुद्दीन की अनी में दो लाख सवार और दो लाख पैदल थे। दूसरे ढाई हजार हाथी और डेढ़ लाख फौज तत्तार खां के साथ थी। तीसरे खुरसान खां के साथ दो लाख सवार और दो लाख में कमनैत पैदल और हथनार तोपें थीं। चौथे खंदार खां के साथ दो लाख सवार ढाई हजार हाथी और एक लाख कमनैत (तीरंदाज) थे। लाल खोल के साथ में ढाई हजार बखतरिए सवार थे। पांचवीं फौज का मालिक कम्माल खां था जिसके साथ में गोर गष्पर तुर्की आदि की सब मिला कर दो लाख फौज की भरती थी और पांच हजार हाथी थे।

(१) कन्ह एक तो सब सेना का स्वामी था इसलिये पहिली और तीसरी दो अनी उसके तहत में थीं।

ज्योंही यह समाचार पृथ्वीराज के पास पहुंचा त्योंही वह हथियार बाँधकर चन्द्रसेन चहुआन को साथ लिए हुए चलपड़ा और शहाबुद्दीन की सेना केवल दो कोस की दूरी पर थी, कि वह उसी समय अपनी सेना में आमिला। कवि कहता है कि अपार यवन सेना के साम्हने पृथ्वीराज के साठ हजार सैनिकों को सजा हुआ देख कर मनुष्य की तो बात ही क्या है योगनी भी हँसती थीं।

संवत् ११४० चैत वदी ११ सोमवार को एक पहर दिन चढ़ने पर दोनों सेनाओं का मुकाबला हुआ। कैमास और तत्तार खां की, कन्ह और खुरसान खां की, गोइन्द और खन्दहार खां की, जैत प्रमार और कम्माल खां की बरनी हुई। दोनों तरफ से हथनार कुहुकबान, बान, तेगा, तलवार, कत्ती, कटारी, गुरज, नेजा, फरसा आदि हथियार चलने लगे और खूब खचाखच मार होते होते शायंकाल हो जाने पर उस दिन का युद्ध खतम हुआ।

द्वादसी के दिन पुनः प्रातःकालही से सार बजने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा, सूर लड़ने लगे, कूर डरने लगे, रुंड तरफरने लगे,मुंड लुढकने लगे,लोथें पटने लगीं,खून भरने लगा। युद्ध का आनन्द देखने के लिये देवता और देवाङ्ग-नाएँ आकाश मार्ग से आने लगीं, और वीर लोग तिनके की तरह तन तज तज स्वर्ग को जाने लगे। इसी प्रकार युद्ध होते होते जब दो पहर हो गया और चहुआन सेना यवन सेना का हृदय विदीर्ण करती हुई शहाबुद्दीन के पास जा पहुंची तब पृथ्वीराज एक जगह अकेला घिर गया। यह देख कर वहां चामंडराय जा पहुंचा। उसने संघटित यवन सेना समूह को बिदार कर अपने स्वामी को तो निकाल दिया परन्तु आप स्वयं फँस गया। यद्यपि चामंड राय बड़े बड़े गयंदों के गरे एक ही बार में गड़ेरी से उतार देता था, उनके खीसे पकड़ कर कंधे से उखाड़ लेता था और मय अश्व के असवार को पछार देता था, उसका तलवार चलाने का दृश्य मात्र कायरों के कलेजे पर चाबुक का काम करता था; परन्तु करै तो क्या करै सौ की सत्ती भी तो बुरी होती है। अन्त में चामंड राय को लाल खां, मारूफ खां, हसन खां, याकूब खां, चार यवन सर्दारों ने घेर लिया और चारों ने एक साथ वार किए। लाल खां ने दो बान मारे जिनमें से एक घोड़े को और दूसरा चामंडराय के सीने पर लगा, मारुफ खां ने शक्ति चलाई जो चामंड की जांघ बेधती हुई घोड़े का पंजर फोर गई। हसन खां ने तलवार के दो वार चेहरे पर किए और याकूब खां ने गरदन पर कटार चलाई। परन्तु वा हरे चामंड! ये उस पर वार क्या हुए मानो उसके क्रोध रूपी हुताशन में आहुति दी गई। उस ने जो तमक कर तलवार का वार किया तो एक एक हाथ में तीन मार गिराए, केवल लाल खां बच निकला। लाल खां अपने ढंग का एकही आदमी था। उसका टोप तलवार बाने बख्तर घोड़ा आदि सब तो लाल लाल था ही तिस पर भी सर के ऊपर एक लाल ध्वजा फहराती थी। लाल खां ने जो पुनः तमक कर तेग का वार किया उसे चामंड राय ने खाली दिया और एक हाथ ऐसा मारा कि उसके घोड़े का सर कट गया जिससे लाल खां जमीन पर लोट गया। इसपर चामंड राय ने उसे प्रचारा, इस प्रचार पर ज्योंही उसने वार करना चाहा कि चामंडराय ने उसकी घेटी पकड़ जमीन पर पछार दिया और आप छाती पर पैर रख कर खड़ा हो गया। यह रहस्य देख कर दोनों दल के वीर दंग हो गए। अन्त में रनधीर वीर चामंड ने तलवार से उसका भी सर धड़ से अलग कर दिया।

तब तक कैमास भी वहां आ पहुंचा। उसने चामंडराय को गले से लगा लिया और कहा आहा भाइ तू मेरा छोटा भाई है! आज तेरे बिना मुझे संसार सूना होता। अहा तू सर से पैर तक रक्त में भींग रहा है। परन्तु धन्य है, तूने अपने शत्रुओं को आप मार लिया। अच्छा अब इस घोड़े पर चढ़ कर यहां खड़ा रह और दो हाथ मेरे देख। यह सुन कर चामंडराय बोला आप मेरे बड़े भाई हैं आप का मुझ पर ऐसा वात्सल्य उचित है परन्तु क्षत्री हो-कर क्या मुझे भी यह उचित है कि आप लड़ें और मैं तमाशा देखूं? आइए हम आप दोनों अपने अपने घोड़े बढा कर शत्रु का मुँह मोड़ते हुए शहाबुद्दीन को पकड़ लें तब देखिए दोनों दलों हम दोनों की कैसी वाह वाह करते हैं।

इतने में खुरसान खां की अनी के ताज खां, वाज सहबाज खां, जाज खां और महबूब खां इन चार सरदारों ने कैमास पर चार तरफ से चार बान चलाए और चारों बान कैमास को लगे भी परन्तु कैमास ने जो बाण चलाए उनसे जाज खां तो घायल होकर गिर पड़ा शेष तीनों वार बचा गए। निदान ताज खां और सहबाज खां तो तलवार लेकर कैमास के साम्हने हुए और महबूब खां का चामंड से मुकाबला हो गया। दुपहर लौटने पर ज्यों ज्यों सूर्य्य का तेज कम होता जाता था त्यों त्यों जवानों का जोर बढ़ता जाता था। दोनों तरफ के योद्धा अपने अपने स्वामियों की आन कर कर एक दूसरे पर शस्त्र चलाते थे। कोई तो पूरा वार खा कर ककड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से कट कर दो हो जाते थे, कोई कोई एक घाव लगने पर भी निरस्त्र हो कर खड़े खड़े मतवारे हाथी से झूमते थे। इधर तो दोनों भाई दाहमा थे उधर चार मीरजादे थे। इन में बराबर के दांव पेच हो रहे थे इतने में जो महबूब खां ने कैमास के सीने पर तलवार चलाई तो तलवार टूट गई और करीब था कि कैमास उसे पकड़ कर पछार दे परन्तु ताज खां ने आड़े कर उसे बचा लिया। उधर सेना के सिपाही सिपाही से, सवार सवार से और पैदल पैदलों से जुटे हुए थे। तमाम रण भूमि में रक्त के कुण्ड और लोथों के अटंब लगे देख पड़ते थे। कहीं सूंड और दांत रहित हाथी पड़े हुए चट्टानों से देख पड़ते थे। कहीं कहीं रक्त में उतराते हुए हाथ पैर मगर मच्छ से जान पड़ते थे। सूर वीरों के कर कमल पुरैन के पत्र से, नेत्र भ्रमर से और सीस चक्रवाक से शोभित होते थे।

इस चैत्र वदी १२ मंगलवार को इसी प्रकार युद्ध होते होते जब दो घड़ी दिन शेष रह गया तब कैमास ने महबूब खां का सर धड़ से अलग किया और ताज खां को भी गरदन पकड़ करके पछाड़ दिया। इतने में सहबाज खां ने चामंडराय पर गहरा वार किया। तब तक जाग पड़िहार और चक्रसेन चहुआन दो सामन्त और भी वहां आ उपस्थित हुए, जिस से कैमास की बाजी मजबूत हो गई और मुसल्मानों के पैर पीछे पड़ने लगे, । यह देख कर शहाबुद्दीन ने स्वयं अपना हाथी आगे बढ़ाया और उसका मंत्री तत्तार खां, और मीरमंगोल भी सिपाहियों को बाढ़ें देते हुए आगे बढ़े और इस अनी को रोकने के लिये इधर से चक्रसेन की चमकदार तलवार आगे हुई। चक्रसेन की चमकदार तलवार के सान्हने मुसल्मान सिपाहियों की आंखें तलमलाते हुए देखकर शहाबुद्दीन ने अपने धनुष पर सर संधानाही था कि तब तक आलू खां ने एक हाथ ऐसा मारा जिस से चक्रसेन की खोपड़ी बीच से चिर गई तब शाह का एक वाण तो चामंड राय के बाजू पर लगा और दूसरे ने चक्रसेन का सर बेध लिया, परन्तु इस से हानि पहुंचने के बदले उसकी चिरी हुई खोपड़ी जुट गई। इसी बीच में चक्रसेन ने फुर्ती से बाण निकाल कर फेंक दिया और साफे कस कर सर बाँध लिया। उसने यही धराबांधी करते करते बिजल खां बगसी पर एक हाथ ऐसा मारा कि वह जहां था वहीं समाप्त हो गया। इतने में आलू खां ने कैमास और चामंड के सिर पर एक घाव कर दिया। यह देख कर चक्रसेन ने एक हाथ ऐसा मारा कि आलूखां का सर तुंबा सा टूट गया। तब उसके बदले उधर से कासिम खां आया परन्तु चक्रसेन ने उसे भी समाप्त किया। आलूखां का सर तो गिर गया परन्तु कबंध मार करने लग सैकड़ों असवार और पैदलों को काटते हुए अन्त में उसने चक्रसेन का भी काम तमाम किया। धन्य है इस तलवार रूपी सरोवर में सच्चे वीर पुरुषों की ही नैया पार लगती है। इधर से चक्रसेन का भी कबंध उठा और यवन सेना को काटते हुए शाह के हाथी के पास जा पहुंचा। पास ही था कि वह शाह के हाथी पर चढ़ जावे परन्तु मीर हिंगोल ने आड़ लिया। चक्रसेन के कबन्ध ने शान्त होते होते जदव मलिक को फिर भी मार ही लिया यह चक्रसेन वाहरराय का पुत्र था। इस समय उसकी अवस्था केवल सत्रह वर्ष की थी। उस दिन के युद्ध का अन्त यहीं हुआ।

तीसरे दिन त्रियोदसी बुधवार को प्रातःकाल होते होते पुनः सार कटने लगा। दोनों तरफ से मारू बाजा बजने लगा, जिसकी ध्वनि सुन कर कायरों के कलेजे कांपते और सूरों के चेहरे पर नूर चढ़ता है। दोनों दलों का मुकाबला होते ही शहाबुद्दीन ने फिर से अपना हाथी बढ़ा कर हिन्दू सेना को एक दम से दबाना चाहा, शाह का ऐसा साहस देख कर इधर से कैमास और चामुंडराय दोनों भाइयों ने घोड़े बढ़ाए दोनों भाई मार काट करते हुए शाह के हाथी तक जा जुमके और चामुंडराय ने तलवार का एक हाथ ऐसा मारा जिससे हाथी की भसुंड से सुंड अलग होगई और वह भहरा कर गिर पड़ा। हाथी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के गिरतेही कैमास ने शहाबुद्दीन का बाजू जा पकड़ा और मुश्कें बाँधकर उसे घोड़े के कन्धे पर डालालिया

जिस समय कैमास शाह को पृथ्वीराज के सम्मुख लाया उस समय मारे भय और लज्जा के शहाबुद्दीन का मुख सूख रहा था, कलेजा कांप रहा था, परन्तु पृथ्वीराज ने सुखपाल (तामजाम) में बिठा कर उसे दिल्ली को भेजे जाने की आज्ञा दी।

इस युद्ध में पृथ्वीराज का भाई चक्रधर रामकृष्ण गहलौत, रावल समरसी का भाई नरसिंह, कैमास का भांजा, सामल और सेखा टांका (चौहान) इतने सामन्त खेत रहे। जो लड़कर मरते हैं वे भी मरते हैं और जो कायर भागते हैं वे भी एक दिन मरते हैं परन्तु करनी करके मरने वालों का संसार में सुयश विस्त्रित होता है और उनकी आत्मा अमरपुर में वास करती है।

दिल्ली पहुंच कर पृथ्वीराज ने शाह से १२ हाथी और एक हजार घोड़े दण्ड लेकर उसे छोड़ दिया। पृथ्वीराज ने उक्त दण्ड में से आधा कैमास को दिया और आधा युद्ध में उपस्थित अन्यान्य सामन्तों को वितरण किया। शहाबुद्दीन छूट कर गजनी पहुंचा, इस लिये वहां बधाई बजने लगी और इधर समान्त लोग जीत की खुशी का आनन्द मनाने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीम बध ।

[चौंवालीसवां समय ।]

जिस दिन से सोमेश्वर की मृत्यु हुई उस दिन से पृथ्वीराज को पल भर भी चैन नहीं पड़ता था। भीमदेव उसके कलेजे में काँटा सा खटकता था। ईर्षा एवं क्रोध रुपी अग्नि से उसका उरअंतर हमेशा जला करता था। पृथ्वीराज रह रह कर हाय की सांस लेता था और हर हर कह कर चुप हो जाता था। उसे इस प्रकार दुखित देख कर जैत प्रमार ने कहा, हे राजन! क्षत्रियों का यह धर्म नहीं है कि पिता की मृत्यु पर शोकग्रस्त हों। क्षत्रियों का यही धर्म है कि शत्रु को मारकर संसार में सुयश कमावें। हे चहुआन चित्त की चिन्ता दूर कर यह निश्चय रखिए कि हम लोग सारे गुजरात देश को उजाड़ कर और पट्टनपुर को जला कर छार कर देंगे। भीमदेव की सामर्थ्य ही क्या है कि वह आपके साम्हने ठहर सके! हमारा विचार है कि कुछ फौज तो शहाबुद्दीन के नाके पर रख दी जाय और हम लोग छरीदा चल कर भीमदेव से समझें।

जब पृथ्वीराज सोमेश्वर की श्राद्ध-क्रिया से निश्चिन्त हो चुका तो वह अपने सामन्तों से बोला कि भाइयो भीमदेव तो उसी दिन मर चुका जिस दिन उसने सोमेश्वर पर सेना सजी थी, अब आप लोगों को केवल योगिनीगण को सन्तुष्ट करना शेष है। पृथ्वीराज को भूमि शैय्या पर सयन करते हुए एक ही रात्रि बीती थी दूसरे दिन अरुणोदय से ही दरबार की तय्यारी हुई। खास पास परिकर के लोग और मुत्सद्दी मुसाहिब लोग यथास्थान बैठे ही थे कि नरनाह कन्ह आ उपस्थित हुआ, सब लोगों ने नरनाह की पूरी ताजीम की। उसके बाद जामराय जद्दव, बलिभद्र, पज्जूनराय, अत्ताताई, लँगरीराय, गोइन्दराय गहलौत, तथा और सब छोटे बड़े सामन्त लोग यथाक्रम आने और यथा स्थान बैठने लगे, अन्त में चन्द बरदाई भी आया।

पृथ्वीराज पर तो सोते जागते अहर्निशि वही धुन सवार थी। बस उसने कहा "हे सामन्तो गुजरात पर चढ़ाई करके भीमदेव को अनभूत करने के लिये सन्नद्ध हो जाओ। यह सुन कर सामन्तों ने उत्तर दिया कि महाराज ज्योतिषी को बुलाकर चढ़ाई के लिये उत्तम मुहूर्त साधन करवाया जाय। राजा का हुक्म होते ही ज्योतिषी बुलाया गया और उसने प्रश्न के समय के ग्रहों का विचार करके कहा कि हे राजन एक तो यह मुहूर्त ही बड़ा अच्छा है जिसमें सम्मुख योगिनी चक्र होने से मानो सोने में सुगन्ध बनगई है। इसलिये आप इसी समय चढ़ाई कीजिए, आपकी अवश्य ही जीत होगी और भीमदेव मारा जायगा। मैं शपथ करके कहता हूं कि यदि ऐसा न हो तो मैं आज से पत्रा हाथ से न छुऊं। (१)

बस फिर क्या था, बात की बात में सारी सेना अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हो कर सन्नद्ध हो गई चारों तरफ चाहुआन की जयध्वनि होने लगी। रानी इच्छनी अचत छोड़ने लगी। तेजोरूप पृथ्वीराज अस्व पर सवार होकर चलने को ही था कि इतने में अपनी सेना सहित निड्डुरराय भी आ उपस्थित हुआ और यथानियम प्रणाम करके साथ में हो गया। फौज में अबतक यह किसी को न मालूम था कि कहां जाना होगा। इसलिये पृथ्वीराज ने शिकार पर चलने की आज्ञा दी। पृथ्वीराज के घोड़े की बाग उठाते ही सब कटक पच्छिम दिशा को इस प्रकार से चल पड़ा जैसे पहाड़ से टिड्डी निकलें अथवा लंका पर आक्रमण करने के लिये कपि सेना समूह जा रहा हो।

जब पृथ्वीराज का सेना समूह समुद्र सा उमड़ता हुआ भीमदेव का मुँड़ा दबाने लगा तब गुजरात के राजदूतों ने भीमदेव के पास जा कर कहा कि महाराज पृथ्वीराज चौसठ हजार सेना लिए हुए

(१) केन्द्रीय सासिसाम। भाम पंचम अधिकारिय ॥
राह बीर अष्टमो। चक्र सत्तम सुद्धारिय ॥
जगम थावर धरिय। हलिय तिन नाम सर भर ॥
कहै विप प्रथिराज। राज पंचम पंचम गुर ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इधर ही आ रहा है। उसने पिता का बैर बदलने की प्रतिज्ञा करके घी खाना और पाग बांधना छोड़ दिया है। इसके सिवाय उसके सामन्तों ने भी देवार्चन कर कर के प्रतिज्ञाएं की हैं। इसलिये आप यथासंभव शीघ्र ही संभाल रखिए। यह सुनते ही भीमदेव के लिलाट में त्रिबली पड़ गई, भोंह चढ़ गई, मुख लाल हो गया और भुजाएं फड़कने लगीं। उसने उसी समय अपनी सब वैतानिक सेना को सजने और शासनाधीन नरेशों को परवाने भेजे जाने की आज्ञा दी। परवाने पाते ही दो हजार पठान जो कि कुहकबान और हथनाले चालने में कुशल थे, तीन हजार कच्छी सवार, डेढ़ हजार सोरठी, कई हजार बान कमान धारी, काकरेची, करूर कोल, झालावार का झाला, कावा नरेश मकुंद, काठियावाड़ का राजा कंठीर और और भी छोटे बड़े सब जागीरदार यथासमय हाजिर हुए।

इधर पृथ्वीराज के दूत भी गुप्त रूप से आगे आगे चला करते थे। वे लोग पट्टनपुर में पहुंच कर, सब हाल चाल देख भाल कर चले आए और पृथ्वीराज से बोले कि भीमदेव एक लाख सेना और एक हजार हाथी सजकर मुकाबला करने को तय्यार है। यह सुन कर पृथ्वीराज बोला कि भीमदेव के सेना समूह रूपी सघन बन को मैं प्रचंड दावाग्नि के समान दहन कर डालूंगा। यदि भीमदेव स्वयं मेरे साम्हने पड़ जाय तो उसे इस प्रकार से पछारूं जैसे भीमसेन ने दुर्योधन को और शक्ति ने महिषासुर को पछाड़ा था और उसका पेट फाड़कर आंतों में से पिता का बैर निकालूं। यह कहकर शिकार करने की आज्ञा दी। और यमुना के कूल कूल जघन्य क्रीड़ा करता हुआ सघन बन में जा पहुंचा। शायंकाल हो जाने के कारण सब फौज के डेरे पड़गए और सरदारों से लेकर सिपाहियों तक सब के डेरे डेरे कलेऊ जल और पान पत्ते पहुंचाए गए। सब सेना तो जमुना के पार उतर गई थी परन्तु पृथ्वीराज कन्ह, कैमास, जैतराव, सलष, चन्द पुण्डीर, चामुंडराय, हम्मीर, सारंगदेव, पज्जूनराय, पहाड़राय तूंअर, लंगरीराय और आजानबाहु लोहाना इन सामन्तों के साथ इसी पार रहा। रात्रि को कन्ह और कैमास पलंग के पहरे पर रहा। सब सेना तो ऐसी गाढ़ निद्रा में निमग्न थी जैसे मोह के बलवान होने से ज्ञान और विज्ञान सब दब जाते हैं, परन्तु पृथ्वीराज जागता था "कन्ह से यह कह कर कि प्रातःकाल प्रहर रात्रि रहने से हँकाई की जाय" वह भी निद्राग्रस्त हुआ। अभी कुछ भी समय न बीतने पाया था कि सहसा तीन शब्द हुए जिन्हें कन्ह ने भली भांति सुना और समझा भी। उसी समय भूकंप भी हुआ। प्रातःकाल होतेही सारे लश्कर में इस बात की खरबरी पड़ गई। जहां तहां लोग ज्योतिषियों से भविष्य पूछने लगे। कोई कोई कहने लगे कि जिस शकुन से भीमदेव अजमेर पर चढ़ा था यह वही सब शकुन हैं। तब तक अरुणोदय हुआ, पृथ्वीराज भी जाग उठा और कविचन्द ने जाकर उसे आशीर्वाद दिया। पृथ्वीराज आंख मीड़ता हुआ अपने सपने का हाल कहने लगा। वह बोला मैंने रात्रि में तलातल भरे हुए तालाबों में कमल के पुष्प खिलते, कुमोदनि के सकुचते और प्रकाशमान सूर्य्य का उदय होते हुए, रसाल वृक्षों पर बेली चढ़ती और उनके टौन पर बैठे हुए पक्षी समूहों को कलोल करते हुए देखा है। इस स्वप्न का फल जानने के लिये सब सामन्त लोग भी उत्सुक हो उठे। तबतक कन्ह बोल उठे भाइ मैंने भी कुछ रात्रि में सुना है और वह यह है "न जाने, सो क्या माने, होनी होगी सो क्यों न होगी"। इस पर कविचन्द बोला कि यह सब शीघ्रही घोर घमासान युद्ध होने और सहस्रों मनुष्यों की प्राणहानि होने के लक्षण हैं पर इतना अवश्य है कि अपने लिये शुभ है।

यह सुनकर नरनाह काका कन्ह बोला "लोग मरना जीना कहते हैं" परन्तु किसी ने किसी को मरत जात आज तक नहीं देखा, केवल कृत-कर्म-बद्ध जीव माता के गर्भ का आवागवन भोग करता है, शरीर नष्ट हुआ और सब झगड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ते हुआ। मरने के बाद का हानि लाभ केवल यश अपयश है। जिस दुर्योधन के लिये लाखों मनुष्य चलबसे आज उसका नाम ही नाम शेष है। भूमि भोगी योद्धाओं में दुर्योधन ही श्रेष्ठ है क्योंकि उस ने भारत के युद्ध में सगे सम्बन्धी भाई बन्धु सब गँवा दिए पर सुई के अग्रभाग पर भूमि न दी। युग युगान्तर व्यतीत होते जाते हैं, बड़े बड़े युद्ध और सन्धि होते जाते हैं पर इस विराट जगत का अन्त किसी ने नहीं पाया। समराग्नि में शत्रु के सम्मुख शरीर को होम करनेवाले शूर पुरुषों का अन्तिम सिद्धान्त तो यह है कि जैसे सूर्य्य की किरणें प्रखर होकर मंद पड़ जाती हैं, यमुना का जलप्रवाह बढ़ कर घट जाता है उसी प्रकार नश्वर शरीर की गति है। यह शरीर चाहे जब नाश हो हम तो इस तन पिंजर से निकल कर स्वर्ग की सीढी पर चढ़ैंहीगे। कन्ह का ऐसा आध्यात्मिक स्वर सुनकर सब प्रसन्न हो गए और पृथ्वीराज ने उसी समय हँकाई होने की आज्ञा दी। तब तूर तुरही तबल आदि बाजों की बाद्यध्वनि, हाथी के घंटे और घोड़ों की ठिंयों से सारा बन गूंज उठा। राजा की अज्ञानुसार पछेला हँकाई शुरू हुई, चारों तरफ बाण वर्छे आदि के वार होने लगे और अगनित पशु मारे जाने लगे। यह विषम कोलाहल सुन कर अपने चुल में सोता हुआ एक सिंह जाग उठा, उसके साथ मे सिंहनी और उसके दो छोटे छोटे बच्चे भी थे। एक तो परमेश्वर ने इस जीव को स्वभावही से शोख बनाया है, दूसरे भूखा, तीसरे यह कर्णकटु कोलाहल, चौथे अपने सबसे स्वादिष्ट भक्ष्य मनुष्यों की वास पाकर वह सिंह पूंछ के गुच्छे को शीश पर छहरा कर गंभीर बद्दर की तरह गर्जना करता हुआ बबकार कर उठ बैठा। उसकी दोनों आँखों से आग की सी ज्वाला निकल रही थी और उसके विकराल नख बूंदी की कटार कैसे थे। दोनों बच्चों समेत सिंहनी को तो अन्य सामन्तों ने घेर लिया। परन्तु सिंह दावाग्नि की ज्वाला के समान कन्ह पर आझपटा। उस समय मय पृथ्वरिाज के सब लोग हक्काबक्का से होकर हाय हाय करने लगे। सिंह ने कंधे पर पड़ी हुई कमान के सहित घोड़े को चाप लिया परन्तु कन्ह दूर जा छटका। सिंह दूसरा बार करने न पाया कि तब तक कन्ह ने उसे पकड़ कर कांख में दबा लिया और कटार से उसका पेट चाक कर, दोनों पैर पकड़ कर उसे पृथ्वी पर पछार दिया, जिससे उस मृगराज की भेजी निकल पड़ी और हड्डी पसली चूर चूर होगई।

कन्ह का सिंह को पछाड़ देना ही सब के मन में शुभ भविष्य सूचक शकुन निश्चय हुआ। इसलिये उसी समय चढ़ी सवारी पट्टनपुर की तरफ कूच किया गया। इस समय पृथ्वीराज के साथ चौसठ हजार सेना थी। पृथ्वीराज ने कन्ह को सब फौज का सेनानायक नियत किया और आप बीच में रहा। निड्डुरराय को चंदावल का सेनानायक बनाया और जैत प्रमार को पीठि सेना का स्वामी नियत किया। चाहुआन सेना इस प्रकार क्रमबद्ध होकर चलने लगी। आगे बढ़ते हुए ज्यों ज्यों पट्टनपुर निकट होता जाता था त्यों त्यों सूरवीरों के हृदय से सांसारिक माया मोह कोसों दूर होता जाता था।

जब पट्टनपुर कुछ थोड़ी दूर पर रह गया तब पृथ्वीराज ने कविचन्द को भीमदेव के पास चिन्नू[१] के चिन्ह स्वरूप एक चोली और एक लाल पगड़ी देकर भेजा और कहला भेजा कि इन दो में से जो तुम्हारी राजी आवे सो अंगीकार करो, अर्थात् या तो चोली पहन कर स्त्री बनो; तो प्राण बचेंगे, नहीं तो लाल पाग बांधकर साम्हने आओ तो हम भी तुम्हारे सहायकों सहित तुम्हारे खून की नदी बहाकर उससे पिता के नाम तर्पण करें। जैसे रामचन्द्र ने रावण को कुल सहित नाश किया, पार्थ ने पाताल में पैठ कर अपनी पति रक्खी उसी प्रकार मैं भी "हे भीमदेव!" तुम्हारे घर आया हूं। अब तुम्हारा बचाने वाला कौन है? कविचन्द ने चलते समय इस पर एक और तुर्रा लगाया। उसने गले में जाली और नसेनी डाली, एक हाथ में कुदाली और दीया

१ चिन्नू, चुल्लू = Challange.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिया और दूसरे में अंकुश और त्रिसूल । जब कवि पट्टनपुर में पहुंचा तो वहां सैकड़ों दर्शक इसके पीछे हो लिए राजद्वारे पर हज़ारों आदमियों का हुजूम जुट गया। भीमदेव ने भी जुड़ते ही पूछा "कवि ये क्या स्वांग रचा है? तब कविचन्द ने पृथ्वीराज का संदेसा पूरा करके कहा, हे राजन् पृथ्वीराज कहता है कि यदि भीमदेव मुझ से भाग कर जल में जावे तो मैं उसे इस जाल से जा जकड़ूं, यदि वह आकाश पर चढ़े तो इस नसेनी से काम लूं, पाताल में पैठे तो कुदाल से खोद निकालूं और अंधेरे में लुके तो दीपक से देख मारूं। इस प्रकार उसे पकड़ कर अंकुश से वश में करूं और तब त्रिसूल से उसका हृदय विदार डालूं,। इस पर भीमदेव बोला। जाल को जला दूंगा, नसेनी तोड़ डालूंगा, कुदाल को घन से कुचल दूंगा, दीये को हाथ से बुझा दूंगा, अंकुश को मोड़ दूंगा, त्रिशूल को सिकोड़ दूंगा, और जो मुझे मारने को कहेगा उलटा उसीको मारूंगा। अब यह गर्व करते लज्जा नहीं आती। पहिली बात भूल गए? रे कवि! आज चूहा बिलार से लड़ना चाहता है, गीध हंस के सिर चढ़ना चाहता है, शृगाल शेर से युद्ध करना चाहता है। भला कहीं मेढक ने भी सर्प पर विजय पाई है? बड़े आश्चर्य की बात है!! तुझे बार बार क्या सिखावन दूं, तूं मुझ गुर्जर नरेश रूपी प्रज्वलित अग्नि ज्वाला के साम्हने अपने पति के प्रताप रूपी दीपशिखा को क्या दिखाने आया है। तुझ से बात वह करे जो भाट पुत्र हो, जा अपने राजा से कह देना कि मैं इन ढोंग ढकोसलों से डरने वाला नहीं हूं, उसे जो भरी हो सो करे। भीमदेव की ऐसी बातें सुनकर कविचन्द वहां से फौरन उठकर चला आया और पृथ्वीराज से सब हाल ज्यों का त्यों उसने कह सुनाया।

कवि चन्द के पीठ फेरतेही भीमदेव ने उधर से अपने कवि जगदेव भाट को रवाना किया और कहला भेजा कि मैंने जो कुछ कहला भेजा है उसका क्या उत्तर है। निदान जगदेव ने कवि चन्द के पास आकर, कहा भाड़ सेते हुए सर्प की पूंछ दबाने से क्या लाभ? तुम दीया जाल कुदाल आदि का आडंमबर कर के गए थे, कैमास चामंड राय कन्ह इन में से कोई अथवा पृथ्वीराज स्वयं जाते तो मजा पाते! यह सुनकर कविचन्द गुस्से होकर बोला। बस तुम्हारे राजा ने बहुत सी कोस (छीमी) खाई हैं, मिर्च चबाने का मजा अब मालूम होगा यह पृथ्वीराज उन राजाओं में नहीं हैं जिन्हें उसने सहजही जीत लिया। बिच्छी का मंत्र न जान कर सांप के बिल में हाथ डालना आसान नहीं होता। ऐसा सुन कर जगदेव भीमदेव के पास आकर बोला कि अब आप अपनी तैय्यारी कीजिए चहुआन को आ पहुंचा समझिए।

इधर पृथ्वीराज ने निड्डर को बुलाकर अपने बराबर बैठाला और उसके कंधे पर हाथ रख कर कहा कि वैसे तो सब सामन्त हैं परन्तु इस समय मुझे विशेष भरोसा तुम्हारा ही है। दैवयोग से आज यह दूसरा भारथ आ उपस्थित हुआ है। बस सब सामन्तों को साथ लेकर ऐसा करो कि बात भी रहे और संसार में सुयश विस्तृत हो। तब निड्डुरराय बोला कि आपके सब सामन्त सच्चे स्वामिसेवी हैं। वे समर के समय तन को तिनके के बराबर समझते हैं। हे राजन् आप किसी प्रकार से चिन्ता न कीजिए। तिस में नरनाह कन्ह का पराक्रम तो अकथनीय है! वे इस समय ऐसे वीर हैं जैसे भारथ के समय भीष्म थे। इतने में पृथ्वीराज ने एक मोतियों की माला जो एक लाख की थी अपने गले से उतार कर निड्डुर को पहना दी। वह द्युतिदार मोतियों की माला तेजस्वी कमधुज्ज के गले में ऐसी सुशोभित होती थी मानो सूर्य्य मण्डल के गिर्द गंगधारा प्रवाहित हो रही हो। पृथ्वीराज ने कन्ह को भी बुला कर उसके पैर में पवाई[1] पन्हाई। उसे अंगीकार करते समय कन्ह ने अत्यन्त लज्जित हो कर कहा। हा! मेरा जीवन वृथा है, मेरे रहते सोमेश्वर को शत्रु ने मार लिया परन्तु मेरे प्राणों ने

१ पवाई पैर के एक गहने का नाम है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शरीर न छोड़ो, तब निड्डुरराय बोला इससे क्या तीरंदाजही निशाना चूकते हैं। शैसवार ही जमीन चूमते हैं। सुग्रीव अपनी स्त्री की रक्षा न कर सका, दुर्योधन के देखतेही कर्ण मारा गया, रामचन्द्र के रहते ही सीता हरण हो गई। पाण्डवों के साम्हने द्रोपदी का चीर खींचा गया इत्यादि। इसी प्रकार सैकड़ों प्रमाण उपस्थित हैं 'अतएव इससे, हे कन्ह! तुम्हारा बल या तुम कलंकित नहीं कहे जा सकते। तुम्हारा तेज रूपी मयूर अब भी शत्रु समूह रूपी सर्पों को भक्षण करने में समर्थ है।

तब तक खबर लगी कि भीमदेव सेना सहित इधर को आ रहा है। इस लिये इधर से निड्डुरराय भी डंके पर चोट देकर आगे बढ़ा। परस्पर देखादेखी होतेही दोनों सेनाओं से पहिले हथनार उटनार और कुहकबान आदि अग्न्यास्त्र चलाए गए। दोनों तरफ हरावल और बाजुओं की व्यूह में आगे घुड़सवारों की भरती थी। अग्न्यास्त्रों की एक बाढ़ चलते ही दोनों तरफ से सवार नंगी तलवारें लेकर एक दूसरे से भिड़ पड़े। तब तक कन्ह के पट्टे भी हटा दिए गए। वह वीर अपनी सेना में से शत्रु समूह पर इस प्रकार से तड़पा जैसे घनघने बादलों के बीच बिजली तड़पती है। कन्ह के मुकाबिले में उधर से सारंग मकवान उतरा। इधर से कन्ह की सहायता पर केदर कंठीर और लोहाना आजानबाहु जा पहुंचे। बहुत कुछ पराक्रम करने के बाद मकवाना कन्ह के हाथ से मारा गया। मकवान के मरते ही चालुक्क सेना कुछ मनहार सी होगई। सामन्तों का जोर बढ़ उठा, परन्तु सच्चे सूर हार जीत का कब विचार करते हैं उन्हें तो मर कर स्वर्ग जाना सूझता है। जीवन के दिन तो वे सपना समझते हैं। सूर वीरों को ऐसे जघन्य कर्तव्य का कुछ दोष भी नहीं लगता क्योंकि जैसे दावाग्नि वायु के वशीभूत होकर जंगल को जला देती है उसी प्रकार वे भी स्वामी सेवा के धर्म को धारण कर शत्रु का विनाश करना विचारते हैं। जब तक चोले में दम है तब तक काम करते हैं और हंस के चल बसने पर सदा आराम करते हैं। दोनों दलों में मार मार होते पहर दिन चढ़ आया और सामन्त सेना के पराक्रम रूपी कगारों के बीच में शत्रु सेना की रुधिर धारा बह निकली। अधमरे घायल हा हा और शक्ति सम्पन्न सूरवीर बंबं बोलते थे। खून के घने घने फव्वारे, अग्नि शिखा से, उज्वल शस्त्र बिजली से, बाणों की बौछार वर्षा सी, और उनसे उत्पन्न सन् सन् शब्द भृंगस्वर सा भासित होता था।

इसी समय उधर से सारंगराय खीची ने इस जोर से धावा किया कि चहुआन सेना के दांत खट्टे होने लगे। अच्छे अच्छे हट्टे कट्टे सिपाही जुद्ध बाँध कर भी आगे बढ़ने से हिचकने लगे। यह देखकर पृथ्वीराज ने स्वयं घोड़े को एड़ लगाई। उस टेढ़ी टेढ़ी मूंछ वाले बलवान जवान चहुआन ने बाणों की वर्षा करके कुंडलाकार चक्र बाँध दिया। एक क्षण मात्र में शत्रु सेना में हाय हाय होने लगी। दशों दिशाएँ और आठो वसु थर्रा उठे और थोड़ी देर में चालुक सेना के भी पैर पीछे पड़ने लगे, लड़ने से हटना और डटना तो हुआ ही करता है पर सच्चे शूरवीर पुरुष सदा प्रशंसा के पात्र होते हैं। शूर पुरुषों से सूर्य्य भी भयातुर रहता है क्योंकि वे सूर्य्यमण्डल को भेदकर ब्रह्म में लीन होते हैं। और क्या कहें, युद्ध में शूर पुरुष उस वामन स्वरूप से भी बड़े हैं; क्योंकि बावन ने तीन पग में तीन लोक नापे थे और शूर पुरुष एक पग में तीन लोक लांघकर चिन्मय ब्रह्म में मिलकर तन्मय होजाते हैं। जिस समय सच्चे स्वामिसेवी सुपूत शूर पुरुष ऊंची बांह करके तलवार की वार करते थे उस समय उसे देखकर देवता भी वाह वाह करते थे। ओजमय बाजों के स्वर के साथ परस्पर तलवारों की झनाझन चाँचर का सा स्वर जान पड़ता था उसी लय में योगिनी ताथेइ ताथेइ के ताल पर नाचती थीं

२ सारंग मकवान से यहां उसी मकवान के पुत्र से अभिप्राय है जो मकवान शहाबुद्दीन के हाथों से मारा गया था सारंग सोलंकी और मकवाना उसका पुत्र जैसे मीरहुसैन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किसी शव को शृगाल घसीटते और किसी को गृद्ध नोचते थे। दाँत और सुंड कटे हुए हाथी बड़े भयावने जान पड़ते थे। हय हींस हींस कर चौकड़ी भरते और सवार सम्हल सम्हल कर वार करते थे। वह सहस्रों विज्जुछटा की छवि देख कर देवता प्रसन्न होते और देवाङ्गनाओं के मन क्षुभित होते थे।

चहुआन सचिव सच्चे वीर कैमास के तीन वार खाली गए। क्योंकि इधर से ये उधर से वे-दोनों दल के वीर अपनी अपनी बाजी पर वज्र से डटे थे। आखिरकार मार होते होते जब सन्ध्या होने को हुई और बहुत कुछ सैनिकोंके मरजाने पर मैदान में कुछ उकास पड़ा तब पृथ्वीराज स्वयं मार काट करता हुआ बढ़ कर भीमदेव के साम्हने जा पहुंचा और बोला हे भीमदेव आ, अब तेरा अन्त आगया। इस पर भीमदेव नागिन सी कृपाण खींचता हुआ बोला, अच्छा देख मैं तुझे भी सोमेश्वर के पास भेजता हूं। इतने में पृथ्वीराज के पीछे से कन्ह ने लपक कर कहा (इधर देख) और एक ऐसा जनेऊ-उतार हाथ मारा कि भीमदेव कटकर दो होगया। वाह, वाह, कन्ह की बांकी तलवार क्या थी मानो दूज का इन्दु, निष्कलंक चन्द किरण, या दिशाओं का सौरभ समूह था।

भीमदेव के मरतेही चाहुआन सेना में जैजैकार होने लगा। तब तक दिशाओं में अंधेरा भी छा गया और स्वामी विहीन परास्त गुरजर सेना भी पट्टनपुर को लौट गई। इधर उक्त मर्मशाली शत्रु के शमन हो जाने से चहुआन का चोला भी चंगा हो उठा। परन्तु थके मांदे होने के कारण सब लोग जहां तहां आराम करने लगे। रणक्षेत्र में रात्रि भर करुणा तथा वीर रस का प्रभाव रहा। अहा धन्य है क्षत्रीवर्ण, जिसे पेट की रोटी और जाति की लज्जा के लिये जान देनी पड़ती है। परन्तु यह कैसी विचित्र खेती है कि मरने के पीछे ही फ़सल हाथ आती है। इधर अपनी मिट्टी को भूत बैताल काली कपाली कौवे गीध खाते हैं और उधर आप स्वर्ग में अप्सराओं से मिलने जाते हैं।

ज्यों त्यों करके वह भयानक करुणा और वीभत्स रसमय रात्रि व्यतीत हुई। तिमिर फट गया, आसमान में उजेला आगया, देव कर्म होने लगे, चकवी ने विलाप करना छोड़ा, उल्लू अन्ध हुआ, देवालयों में शंखध्वनि हुई, और वृक्षों पर पक्षी कलरव करने लगे। ज्यों ज्यों सूर्य की किरणें तेज होने लगीं त्यों त्यों कमल खिलने लगे और यमुना के कंचन से स्वच्छ जल में सूर्य की किरणों की आभा विचित्र ही छवि छाने लगी। इस समय सब सामन्तों ने आन समर विजयी स्वामी को प्रणाम किया। पृथ्वीराज की आज्ञा से उसी समय खेत साफ़ किया गया। इस युद्ध में पृथ्वीराज की तरफ़ के डेढ़ हजार घोड़े पांच सौ हाथी और पांच हजार सिपाही काम आए और जैतराव प्रमार अधिक घायल हुआ। सच है यह संसार स्वप्ने का वस्त्र है। यावत् दृश्यमान पदार्थ एक न एक दिन नाश होते ही हैं। फिर मनुष्य तो काल रूपी खटीक के घर का बकरा है। वह निर्दयी दयावान और अदय किसी को भी नहीं छोड़ता। इस लिये सूर वीर सामन्तों का यह मत यथार्थ तत्वमय सत्य और माननीय है कि समय आ पड़ने पर मारने मरने से न चूकना चाहिए।

इसके बाद पृथ्वीराज ने संजमाराय के दोहित्र कचराराय को राजा बनाकर दस बंदरगाह देकर चौर छत्र भी दिया। शेष ८४ बंदरगाह खालसे में रक्खे और भीमदेव के पुत्र को पट्टन राज्य पर तिलक करके कचराराय को साथ लेकर दिल्ली की तय्यारी की। उस दिन पंचमी रविवार इन्द्र योग को कोई व्रत था इसलिये सूर्य्योदय होते ही पाल-परताल रवाने कर दिए गए और दूसरे दिन पृथ्वीराज ने भी वहां से कूच किया।

(१) खटीक = हिन्दू कसाई

(१) बन्दरगाहों के लेन देने की बात जिन दोहों में हैं वे दोहे मो० प्रति में नहीं हैं। मो०:०प्रति का पाठ अधिक प्रामाणिक है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय मंगल नाम प्रस्ताव।

(पैंतालीसवां समय।)

एक समय चंडी देवी ने इन्द्र से कहा कि हे देवपति धरानि पर रुधिर धारा बहाइए क्योंकि मेरी रामायण और महाभारत आदि युद्धों के समय की तुष्टित्रुटि के आपही के द्वारा पूर्ण होने की आशा है। यह सुन कर इन्द्र ने उत्तर दिया कि हे चण्डिके! सुनो, राम और रावण का ऐसा घोर घमासान युद्ध हो गया है कि जैसा पृथ्वी पर और पहिले कभी भी नहीं हुआ था। इस युद्ध में शूर वीरों ने निज तन को तिनका समान जान मार मार कहते हुए प्रतिपच्चियों पर ऐसे करारे वार किए कि जिनकी करनी संसार में अचल हो गई। मृतकों के मास से थलचर मात्र पूर्ण रूप से सन्तुष्ट हो गए, शूरवीरों के सिरों से शिव की रुंडमाल भर गई परन्तु आश्चर्य्य है कि तू और भूदेवी दोनों की चुधा शान्त न हुई।

जिस समय राम ने लंका पर आक्रमण करके त्रिकूट पर स्थित रावण के किले को घेर लिया उस समय निशिचर समूह आत्मरत्ता के लिये उद्यत हो उनसे लड़ने आया। वे राचस लोग ऐसे दीर्घकाय थे कि जिनका सिर अकाश को स्पर्श करता था। उनके अत्याचार मय आतंक से तीनों लोक कंपित होते थे। जिस समय वे मायावी नाना भांति के अस्त्र शस्त्र धारण कर युद्ध करने में प्रवृत्त हुए तब दसों दिशाओं में हलचल मचगया। परन्तु प्रतापी राम और लक्ष्मण ने प्रचंड बाणों की वर्षा करके उन सब को स्वर्ग मार्ग बतलाया। उन सब राचसों में रावण का पुत्र मेघनाद अत्यन्त बलवान था। उसकी लक्ष्मण जी से बरनी हुई। मेघनाद ने अपनी अद्भुत माया से सुर नर असुर सब को चकितचित कर दिया परन्तु ब्रह्मचर्य व्रतधारी लक्ष्मण ने अन्त में उसे भी मारडाला तब रावण ने अपने भाई कुंभकर्ण को जगाया जो कि छः महीने तक बराबर सोता रहता था। वह लंका की राचस मंडली में सब से अधिक बलवान दीर्घकाय और भयानकमूर्ति था। वह जैसेही सो कर उठा तैसेही सीधा युद्धभूमि में जा उपस्थित हुआ। जब वह राम पर अस्त्र शस्त्र की वर्षा करता और अपनी माया फैलाता था तो आकाश में स्थित सुर समूह में हाहाकार मच जाता था। अन्त में भगवान रामचन्द्र ने अपने तीव्र बाणों से काट कर उसे खंड खंड कर दिया। तब दशशीश रावण स्वयं गर्धों के रथ पर सवार होकर लड़ने आया और उसने भी खूबही पराक्रम दिखाया किन्तु अन्त में बन्दरों ने पत्थर पहाड़ों की वर्षा करके उसके रथ को चकनाचूर कर दिया और रामचन्द्र ने इकतीस बाण संधान कर उसके नाभिकुंड में स्थित अमृतविन्दु को भी सोख लिया जिससे वह भी धराशायी हुआ।

अन्त में उन उदारचरित राजा रामचन्द्र ने इस प्रकार परिश्रम से जीते हुए लंका के राज्य को उसी रावण के भाई विभीषण को दे दिया। पुरुषों में श्रेष्ठ राजा रामचन्द्र के इस प्रकार अतुलित पराक्रम से ऐसा अद्वितीय रक्त प्रवाहित हुआ परन्तु तू तौ भी सन्तुष्ट न हुई। अब तक ढँढ़ी सांस भरमती फिरती है तो अच्छा कन्नौज और दिल्ली के राजाओं में बैर हो जाने के कारण अब जो उन दोनों में परस्पर युद्ध होगा उस में सब की आशाएं पूर्ण होंगी, चडिका की चुधा शान्त होगी, योगिनियों के खप्पर भरें गे, शिव रुंडमाल नवीन करें गे और पृथ्वी पर रक्त के नदी नारे भरें गे।

निदान देवेन्द्र ने मतिप्रधान गन्धर्व को बुलाकर आज्ञा दी कि तुम मृत्युलोक में जाकर पृथ्वीराज चहुआन और कनवज्ज राज जैचन्द में परस्पर विग्रह का बीज बोकर उन दोनों में युद्ध करवाओ जिससे संसार में उनकी कीर्ति का विस्तार हो। यह सुनकर वह गन्धर्व सुवा का स्वरूप धर कर कन्नौ में जा पहुंचा, वह दो दिन पर्य्यन्त दिन ... र्ता

१ शक्ति की उस कला की उपाधि चंडी है जो कपाली प्रेत और योगिनी आदि की स्वामिनी और रुधिर मांसादि पदार्थों की भक्षण करने वाली मानी जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्नौज नगर की शोभा निरीक्षण करता और रात्रि को मैदनिका ब्राह्मणी के घर के आँगन में एक वृक्ष पर बसेरा लेता था।

उस गंधर्व ने वहां से आकर अपनी स्त्री से कहा कि जैसे सतयुग में काशी, त्रेता में अयोध्या और द्वापर में हस्तिनापुर सब भांति से श्रीसम्पन्न थे वैसे ही आजकल कलियुग में कन्नौज है। यह सुनकर उसकी स्त्री बोली कि हे स्वामी कृपा कर मुझे संयोगिता के पूर्व जन्म की कथा और उसके कन्नौज में जन्म लेने का कारण कह सुनाइए। तब गन्धर्व बोला—

एक समय जटाशंकर नाम शिव स्थान पर एक जरज नाम ऋषि तपस्या करता था। उसने ऐसी कठिन तपस्या की कि उसके नेत्र नाक कान जिह्वा हृदय जंघा त्वचा आदि दसों इन्द्रियां पराक्रमहीन हो सूखकर लकड़ी होगईं। उक्त शिवजी के प्रसाद से जिस तपस्वी की आत्मा शिवमय हो रही थी और जो सीधा मुक्तिमार्ग पर चल रहा था वह छिमा नामक एक सुंदरी पर मोहित होकर तप के तारतम्य से पतित हो गया। सुन्दरी स्त्रियों के अंग का लावण्य अनंगरूपी अंगननुमा है, जिसमें रूप के किनारों से सुरक्षित मोहरूपी जल का ताल भरा हुआ है, उसमें कटाक्षों की भौंरें पड़ती हैं और मानसिक योग को भी विध्वंस करने वाली प्रेमविस्तार की लहरें उठा करती हैं, और फिर भी कान्ता की कान्तिरूपी गंभीरता में पुरुषों के चित्त को खींचने की ऐसी विलक्षण शक्ति विद्यमान है कि जिसके कारण अच्छे अच्छे विशुद्धमन योगियों की भी जीवननौका पार नहीं तरने पाती। वे मतवारे हाथी की तरह बह कर मछली की तरह तरफराते हैं। अस्तु वह तपस्वी ऋषि उस विषय रस की मूर्ति लवंगलता सी सुन्दरी के प्रेमपाश में बँधकर बेबस होगया। उसे देखते ही उसका कंठ गद्गद होगया। सारा शरीर काँपने लगा और उसकी नजर से नजर मिला कर वह अपने पूर्व सुकृतों से ऐसा बेसुध होगया जैसे फटा हुआ दूध छांछ को छोड़ देता है; परन्तु जब वह सुन्दरी अन्तर्ध्यान होगई तब तो जरज ऋषि तुषार तोषित वृक्ष की नांई विकल होकर गिर पड़ा। उसे उसी समय से अपना जप जोग तप सब भूल गया और उसका सर्वस्व छिमामय होगया। सोते जागते उठते बैठते खाते पीते सर्वत्र उसे छिमा की मोहनी मूर्ति सूझ पड़ती थी इसलिये वह निरन्तर प्यासे पपीहा की भांति छिमा, छिमा रटा करता था।

कुछ दिन तो जरज ऋषि का चित्त योंही भृंगी का कीट बना रहा; परन्तु फिर वह आपही आप सम्हल गया इसलिये उसने उस कुत्सित बासना को त्याग कर सत्कर्म में मन लगाया। पहिले समस्त तीर्थों में भ्रमण करके सुधा तृषा निद्रा आदि उपाधियों को उसने जीता और सिसिर ग्रीष्म पावस इन तीनों ऋतुओं में तन को तसइया देकर नीरस बनाया और केवल धूम्रपान करके पैर के अंगूठों से उलटे टँगे सच्चिदानन्द ब्रह्म का ध्यान करते हुए सौ वर्ष बिता दिए। उसके इस प्रकार कठिन तप के कारण तीनों लोक कांप उठे और इन्द्र का इन्द्रासन डुल पड़ा।

इसलिये इन्द्र ने रंभा उर्वसी तिलोत्तमा धृताची मेनिका सुकेशी मंजुघोषा आदि प्रधान अप्सराओं

---

(१) मूल पुस्तक में "बंभनिय मदन" पाठ है।

(१) मूल पुस्तक में "जटा वीरशंकर शिवथानं" पाठ है। मुल्क बुन्देलखण्ड रियासत छतरपुर अन्तर्गत खजुराहा एक स्थान है जहां कि किसी समय चन्देल राजाओं की राजधानी थी वहां पर अब भी कुछ समूचे कुछ टूटे फूटे मन्दिर उस स्थान की प्राचीन श्री की सूचना देते हैं। खजुराहे में एक शिवलिंग है जिसे महोबे के राजा परिमाल का स्थापित किया हुआ अनुमान किया जाता है। उस "मतंगेश्वर" के अग्निकोण में दो मील के फासिले पर एक पहाड़ी है जिसके आधो आध में एक शिवलिङ्ग स्थापित है। उस शिवलिङ्ग को आजकल 'जटाशंकर" कह कर पुकारते हैं। उसी पहाड़ी के पास एक गांव भी है जो कि जटकरा कहलाता है। इन शिव जी का शिवालय जीर्ण होकर गिर गया है। यह स्थान बड़ा प्राचीन मालूम होता है। मेरा अनुमान है कि मूल ग्रन्थ में कथित "जटा वीरशंकर शिवथानं वही स्थान है क्योंकि मूलपाठ "जटा वीर शंकर" में से केवल वीर निकाल लेने से उक्त शिव लिङ्ग का प्रचलित नाम 'जटा शंकर' होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को बुलाकर उनसे कहा "हे कमल नयनी, गजगामिनी, पिकवयनी, सिंहलंकी, ताल स्वर ग्राम कला विकलादि सहित संगीत विद्या और नृत्यादि कलाओं में निपुण अप्सराओ! तुम में से एक कोई मृत्यु लोक में जाओ और तेजस्वी तापस सुमन्त ऋषि को छल से तपभ्रष्ट करो क्योंकि उसके तप के तेज से मेरा आसन डोल रहा है! शिव की ताली खुल गई है, शेष संकित है, स्वर्गवासी सुरों को शंका है और उडगन समूह नीरस हो रहे हैं। इन्द्र के ऐसे बचन सुनकर वे आठों पुष्पवत कोमल शरीरवाली स्वर्ग वारांगनाएं विमानों पर बैठ कर भूलोक में आ उपस्थित हुईं। वे दशों दिशाओं की सौदामिनी की दुतिवत् देहधारी देवाङ्गनाएँ दिव्य शृंगार धारण किए हुए साक्षात् तन धारी मोहनी मंत्र सी ज्ञात होती थीं। उनके स्वाभाविक रसमय सहज हास बिलास हाव भाव कटाक्षादि की छाया से जटिल योगीश्वरों का मूर्छित कामदेव जागृत हो उठना संभव है। वे सब अप्सराएं कल कंठ से गान करतीं, दशों दिसाओं की वायु को अपने शरीर की गंध से सुवासित करती हुई उस स्थान पर आई जहां सुमंत ऋषि तपस्या करता था। उनमें से रम्भा चिमा का वेष धारण कर आगे हुई और अन्य अप्सराएं विविध विधि के गान बाद्य करने में प्रवृत्त हुई। इससे सुमन्त की समाधि कुछ खुली और पलक भी उघरे परन्तु अप्सरी इससे स्वयं लज्जित हो संकुचित सी हो रही, वह विचारने लगी कि यदि अब हमलोग आगे साहस करती हैं तो तापस का शाप शिरोधार्य्य करना पड़ेगा और जो यहां से योंही लौट जाती हैं तो सुरराज का कुपित होना संभव है, क्या करें किसी तरह गति नहीं है? अन्त में रम्भा नें साहस किया और वह पुनः उसी वेष में सुमन्त के पास में आई।

तब तक यहां सुमन्त गाढ़ी योगनिद्रा की ताली में निमग्न था। वह उलटा टँगा हुआ आंखें बन्द किए मूल पवन को रोके बंक नालियों से जल चढ़ा कर हृदय कमल को तल कर रहा था और ब्रह्म तेज स्वरूपी अग्नि की ज्वाला से पापों को जड़ से जला रहा था। उसके अन्य सब अंग निश्चेष्ट थे उसे केवल कानों से अनहद शब्द सुनाई देता था। ऐसे ध्यानावस्थित तपस्वी की ताली तोड़ने के लिये झांझ, वीणा, मृदंग, मुरचंग आदि वाद्यों को झनकार करके अप्सराओं ने उच्चस्वर से श्री राग गाना आरंभ किया और तदनुसार वे हाव भाव कटाक्षादि सहित लावण्यमय ललित लीलाएँ कर अदाएँ बताने और अष्टाङ्ग प्रबन्धबद्ध नृत्यों के क्रम से छुटक छुटक कर नाचने लगीं। इन सब स्वरों का शोर सुनकर सुमन्त की समाधि का शमन हुआ, वह चकित चित्त होकर सोचने लगा, क्या मैं स्वप्न देख रहा हूं? तब तक नूपुर की धुन सुनकर तो उसकी ध्यान गति का ही अवरोध होगया बस उसकी ताली टूट गई और पलक खुल गए। निदान वह अप्सरी से कहने लगा, हे बाले तूं कौन है? कोई अप्सरी है? यक्ष कन्या है? या नाग कन्या है! यह कहकर वह कामातुर हो तप छोड़ कर उस स्त्री का करकमल पकड़ने के लिये झपटा परन्तु यह तो न जाने कहां समा गई और सुमन्त मूर्छित होकर गिर पड़ा, परन्तु कुछ देर में वह आपही आप चैतन्य हुआ। सौभाग्य वश उसकी ज्ञान दृष्टि भी सजीव हो उठी और इसलिये वह पुनः पहिले की भांति तन मन से तपस्या करने में रत हुआ। उसने इन्द्रियों के उत्तेजक क्षुधा पिपासा निद्रा आदि को जीत कर इन्द्रियों को वश में किया। नाना प्रकार की योग क्रियाओं के द्वारा उसने ऊर्द्ध पवन को बाँधा और स्वांस को बराबर बाएं स्वर से पीते हुए और दाहिने से छोड़ते हुए उसने कुंभक पूरक नाड़ियां सिद्ध करते हुए पुनः ऊर्द्ध मुख हो ध्यानावस्थित रहना आरम्भ किया।

कविचन्द की स्त्री ने पूछा कि हे पति वह अप्सरा कैसी सुन्दर थी। इसपर कविचन्द बोला कि हे प्रिये। उसके चरण तल की अरुणाई बसन्त ऋतु के कमल पुष्प की लालिमा को मात करती थी। उसके नखों से अमृतमय चन्द्रमा एवं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोतियों की आभा प्रस्फुटित होती थीं, उसके पैरों में नगजटित नूपुरों का स्वर कलहंस के कलरव को मात करता था और उसकी मंद मंद चाल गयंद एवं हंसों के हौसले हराती थी। उसके स्फटिक के समान जंघा, अर्द्ध तुषाकार बड़े बड़े नितंब, मृगराज की सी पतली कमर और उसकी गंभीर नाभी साक्षात् काम की सी बावली थी। कमर में रुरती हुई कटि किंकिड़ियों से होता हुआ शब्द मणिहारे सर्प की फुंकार का काम करता था। उसका एकसा सुढार त्रिवली सहित सुन्दर पेट, वक्षस्थल पर उठते हुए अनियारे उरोज और बीचों बीच सूक्ष्म रोम राजी ऐसी मालूम होती थी मानो पीठ पर लटकती हुई वेणी की छाया की छटा छूट रही हो। उसके कलधौत और श्रीफल को लज्जित करने वाले कमल कली से उन्नत उरोजों पर रुरते हुए पुहुपहार की योजन पर्य्यन्त सुवास फैलती थी। उसका कंठस्वर कोकिला के समान और चिबुक पर रक्खा हुआ काला नुकता कमल कली पर बैठा हुआ भ्रमर सा भासित होता था। उसकी तिल प्रसून एवं कीर की चोंच सी नासिका में मोतियों मय बेसर ऐसी सुशोभित होती थी मानो शुक्र और शशि इस जड़ रूप में परिणित होकर शृंगार रस का आस्वादन कर रहे हों, उसके सित कमल स्वरूप नेत्रों के कारे कारे तारे भ्रमर से, टेढ़ी भौंहें, पंच बाण के धनुष सी ललाट पट अर्द्धचन्द्रमण्डल सा और उसपर केसर का तिलक चन्द्रमा सूर्य्य का सा संगम ज्ञात होता था। उसकी वेणी सर्प सी और अंग सुवास ऐसी सुखद थीं कि उसके आस पास सदैव भ्रमर भन्नाया करते थे। हे प्रिये अधिक क्या कहूं उस चंपक वरनी, सरसिज सुवासिनी, राजीवनेत्री, बिम्बोष्ठी, कलकंठी, कुंद, कली सी दंत पंक्ति वाली मनहरणी अप्सरा के सारे शृंगार आडम्बर स्वरूप थे क्योंकि जिसे देवता और दैत्यों ने गाढ़े परिश्रम से समुद्र का उदर विदार कर निकाला उसके लिये एक स्वेत सारी ही वस्त्र है। हे प्रिये जिन अप्सराओं के लिये संसार में बड़े बड़े समर होते हैं सूर वीर पुरुष सब नाता नेह तोड़ कर तन को धज्जी धज्जी उड़ा देते हैं उसके ऊपर यदि सुमंत मोहित हो गया तो क्या बड़ी बात थी।

अस्तु जब वह इस प्रकार से ऋषि के चित्त को चंचल कर चुकी तब उसने योगिनी वेष धारण किया। कानों में स्फटिक मुद्रा पहने सर्वाङ्ग विभूत रमाए जटा जूट बाँधे कंठ में शृंगी पहिनें हाथ में डमरू लेकर योग साधनाओं का आडम्बर रचकर बंबं करती और डमरू बजाती हुई सुमंत के पास जा पहुंची। ये सुखमय स्वर सुनतें ही सुमंत की तालो टूट गई और वह चकित चित्त होकर सोचने लगा हैं ये कौन है? क्या साक्षात् शिव ने ही मुझपर कृपा की है? तब तक योगिनी साम्हने आ उपस्थित हुई, उसे देखते ही सुमन्त ने अर्घ पाद्य देकर आसन दिया और उसका ग्राम नाम पूछा। तब वह बोली कि वैसे सुर नर सभी मेरी मोहिनी मूर्ति पर मोहित थे परन्तु जब मैंने सांसारिक व्यसनों से विरक्त होकर घोर तप किया तो इन्द्रासन डोल उठा और सब देवता दुखित होकर मेरी शरण आए, अतएव मैंने फिर देवताओं को दुखी न करना विचार कर तप जप तज दिया और अब चिदानन्द ईश्वर के ध्यान में मग्न रहती हूं।

वह पुनः बोली कि हे ऋषीश्वर! इस संसार चक्र के चरखे की चकाचौंध से जो अपना परायां सूझता है यह सब कुछ भी नहीं है। शुद्ध ब्रह्म की उपासना से मरण जीवन का झंझट छूट जाने पर जीव ज्योति उस अनन्त आनन्दमय स्वरूप में इस प्रकार से मिल जाती है जैसे सोने का कोई गहना तोड़ कर सोने के एक बड़े ढेले में मिला देने से फिर उन दोनों में कोई भेद नहीं रह जाता, हे योगिवर उस उपासना की विधि यों है—अर्द्ध मूल को ग्रहण कर ऊर्द्ध स्वांसा का संचार करे और नासा के अग्रभाग में उस ज्योति स्वरूप ईश्वर का ध्यान करे, बंक नालियों से वायु खींचकर मेरु दंड[1] को उत्थान दे। तब अनहद शब्द सुन पड़ता है, ज्ञानी पुरुष उसी

(१) मेरुदंड—अन्य योग ग्रन्थों में कुंडलनी या सर्पणी करके लिखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर की ध्वनि में सोऽहं मंत्र का जाप करे। ऐसा करने से नाभि स्थान का आठ दल वाला कमल विकसित होता है और उससे दस अंगुल पर उलटा लटकता हुआ हृदय कमल है जिसकी कान्ति तप्त स्वर्ण के समान है। यह कमल कमल-कली की बनावट का है और शरीरान्तरगत वायु के संचालन की कुंजी स्वरूप है। वायुमूल ऊर्द्ध योग की सिद्धि से यह भी कमल के पुष्प की तरह खिलने लगता है। इसके अन्तर्गत अंगुष्ट प्रमाण आठ भुजा वाले देवता का निवास है। तीसरा अष्ट दल कमल कंठ स्थान पर स्थित है। इसका देवता रुद्र और इसमें सूर्य्य और अग्नि की तेज शक्ति विद्यमान है। इस अग्नि ज्वाला समान तेजोमय कमल के पिष्ट भाग में नारायण का रत्न जटित सिंहासन है जिसमें वह भृगुलता और कौस्तुभमणी संख चक्र गदा पद्मधारी स्वयं विराजमान हैं। वह ध्यानावस्थित योगियों को दर्शन देता है। अन्त में हजार दल वाला पद्मकोष नाम का कमल मस्तक में है। इसका स्फटिक के समान स्वेत रंग है और इसमें सहस्र सूर्य्य का प्रकाश और सहस्र चन्द्रमा की शीतलता विद्यमान है इसके समस्त दल स्वेत, लाल, पीले, काले इन चारो रंगों में विभाजित हैं और वे क्रम से सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग इन चारों युगों से सम्बन्ध रखते हैं। उस कमल के पिष्ट भाग के मूल पर स्वयं गुरू निराकार देव परमात्मा का वास है। उसी का ध्यान करने से योगी मुक्ति पाते हैं। हे मुनि! योगी लोग इस प्रकार ध्यान धर कर गीता में कृष्ण के कहे अनुसार विराट रूप की उपासना करें और दिन रात बराबर जागें। इसलिये हे मुनि तुम तपस्या का कष्ट तज कर या उक्त निर्गुण ब्रह्म या विराट रूप सगुण प्रभु का ध्यान धरो और यदि सच पूछो तो दस अवतार उसी भक्तवत्सल ब्रह्म के हैं जो कि उसने समय समय पर भक्तों के उद्धार के लिये धारण किए हैं। कच्छ, मच्छ, वाराह, नृसिंह, बावन, परशुराम, राम और बुद्ध ये अवतार तो गत हैं अन्तिम अवतार कृष्णावतार है जिसमें भगवान ने गोपियों के साथ बिहार किया इसलिये उस कृष्ण भगवान को प्रसन्न करने के लिये स्वयं रसमय होना आवश्यक है। हे मुनि, इधर उधर की भ्रमना में न पड़ो, सब छल छोड़ कर हर मय हो जाओ।

यह कपट वेष धारिणी अवधूतनी इस प्रकार छल बल की बातें कर ही रही थी कि तब तक उसके पीछे एक विकराल काय सिंह गर्जन, करता हुआ आता देख पड़ा। उसे देख कर अवधूतनी भय से कंपित होती हुई, सुमंत की गोद में बैठ कर उसके हृदय से लपट गई। बस वह छल रूपी सिंह तो न जाने कहां विलीन हो गया परन्तु काम रूपी सिंह ने सुमंत का कलेजा धर लिया। उस कामिनी के कुच कमलों का स्पर्श होते ही सुमन्त का सब वैराग्य भूल गया। कामान्धता के कारण उसका सर्वांग रोमाञ्चित और शिथिल हो उठा। तब वह अप्सरी पुनः बोली रे ब्राह्मण इस रूखी जोग जुगति में क्या रक्खा हुआ है। सचक्कन सनेह का आनन्द लेकर अपने पूर्व संचित सुकर्मों का फल भोग क्यों नहीं करता। बस फिर क्या था सुमन्त का मन अत्यन्त ही अधीर होकर काम क्रीड़ा मे रत हुआ। इतने में सुमन्त का पिता जरज ऋषि आ गया। जब सुमन्त ने पिता को आया हुआ जाना तो वह भयभीत और लज्जित होता हुआ जरज के पास आया और प्रदक्षिणा करके उसके पैरों पर गिर पड़ा। उधर रंभा इस समय अपने असली स्वरूप में थी। इसलिये जरज ऋषि ने उसे पहचान लिया और उससे कहा। हम ऋषि लोग जंगल में रहते और कंदमूल खा कर गुजारा करते हैं, तुम लोग हम को वृथा सताया करती हो, इसलिये तू हमारा यह शाप ले। यह कह कर जरज ने हाथ में कुशा लेकर इस प्रकार शाप दिया "मेरे शिष्य पर यह तेरा तीसरा वार है। जा तूं मृत्युलोक में जन्म ले. तेरे कारण जिस प्रकार सुमंत का चित्त व्याकुल हुआ उसी प्रकार तू भी आजन्म बेकल रहेगी, तेरे ही कारण तेरे पति और

(१) अंगुष्ट प्रमाण देव सत्रह तत्वों से रचित शरीर वाला जीव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिता दोनों के वंशों का नाश होगा और अन्त में पति से भी तेरा विछोह होगा" इस शाप से रम्भा ने अत्यन्त डर कर जरज से करबद्ध होकर निवेदन किया कि हे सहज ही सरल हृदय कृपालु महात्मा अब कृपा कर मेरे उद्धार की भी युक्ति बतलाइए। तब जरज ने उत्तर दिया कि तू कन्नौज के राजा जैचन्द के घर जन्मेगी और जब वह यज्ञ करेगा तब दिल्ली के चहुआन राजा पृथ्वीराज से घोर संग्राम होगा। इस प्रकार भूमि का भार उतार कर तू पुनः स्वर्गलोक में आ सकेगी। यह सुन कर मलिन मन रूखे बदन रम्भा विमान पर बैठ कर स्वर्ग को प्रस्थानित हुई। इधर तपस्वी फिर तप करने लगे।

इसके कुछ दिनों बाद की बात है कि एक बार इन्द्र ने अपने यहां कोई बड़ा भारी उत्सव किया जिसके देखने के लिये ब्रह्मा विष्णु महेश ये तीनों देवता भी आए। परन्तु द्वारपालों ने उन्हें अन्दर जाने से रोका। ब्रह्मा बोले, रे मदान्ध द्वारपालो। तुम्हें उस जन्म की खबर भूल गई जब कि सनक सनंदन सनत् कुमारों के शाप से तुम लोग तीन जन्म पर्य्यन्त राक्षस योनि भोग करते रहे हो। पहिले जन्म में हिरणाकुश और हिरणाक्ष्य हुए जिन्हें विष्णु ने नरसिंह रूप धर कर मारा। फिर रावण और कुंभकर्ण हुए जिनके लिये रामावतार हुआ और अन्त में कंस शिशुपाल हुए जिन्हें आनन्द कन्द श्रीकृष्णचन्द्र ने पछारा। इस प्रकार बातें हो ही रही थीं कि तब तक सची सहित इन्द्र स्वयं वहां आ उपस्थित हुआ और विनीत भाव से सस्तुति प्रणाम करके तीनों देवताओं को सादर रंगशाला में ले गया।

इनके आसनों पर आसीन होते ही रंभा हा हा हूं हूं आदि बजूधारी गंधर्वों को लेकर अष्ट अप्सराओं के समाज सहित सभा मंडप में आ उपस्थित हुई। गंधर्वों ने साज मिलाकर गत बजाई अप्सरी छुटक छुटक कर नाचने लगीं। इसके बाद रंभा ने प्रारम्भ में स्वर साधते ही इन्द्र के गुणानुवादों का गीत गाना आरम्भ किया। यह सुनते ही सदाशिव अप्रसन्न हो गए। आप यह कह कर कि तू ने श्रेष्ठ तीन देवताओं को छोड़ कर पहिले इन्द्र की बन्दना की इस लिये तू हमारा यह शाप सिरोधार्य्य कर 'जा तेरा पतन हो तू मृत्युलोक में जन्म ले और तेरे कारण भूमि पर भयानक काण्ड उपस्थित हो'। यह शाप सुनते ही रम्भा डर कर कांपने लगी और उसने शिव के चरणों पर गिर कर प्रार्थना की कि हे नाथ अब मेरे उद्धार का उपाय भी बतलाइए। निदान शिव ने भी रम्भा से वही बात कही जो कि उससे सुमन्त के पिता जरज ने कही थी।

शुक बोला कि हे शुकी राजा देव की पुत्री जो कि कन्नौज में व्याही गई थी उसी के गर्भ से रम्भा ने जन्म लिया। वही बालिका इस समय वयःप्राप्त होकर मदन बंभनी के यहां पढ़ने गई और उसने उसे विनय मंगल पढ़ाने के लिये मुहूर्त निश्चय किया।

कवि ने अपनी स्त्री से कहा हे प्रिये "कन्नौज में कमधुज्ज वंशी राजा विजैपाल राज्य करता था एक समय उसने अपनी सब सेना सहित मतिराम और चितविद्या नाम के दोनों बुद्धिमान मंत्रियों को साथ लेकर दक्षिण की तरफ़ कूच किया। विजैपाल ने मरु भूमि को छोड़ कर क्रम से पूर्व्व से दक्षिण को यात्रा की।

उस समय पूर्व्वी समुद्र के किनारे सोमवंशी राजा मुकुंददेव राज्य करता था। उसकी राजधानी कटक थी। उसके यहां तीस लाख सवार एक लाख हाथी और दस लाख पैदलों की वैतनिक सेना थी। उसने विजैपाल को सात कोस की पेशवाई देकर लिया और बड़ी पहुनाई साथ कर बहुत से धन रत्न और दास दासियों सहित अपनी पुत्री विजैपाल के नजर की। विजैपाल ने उस कुमारी का विवाह अपने पुत्र जैचन्द के साथ कर दिया। निदान जैचन्द पूर्व्वी किनारे से होता हुआ स्वेतबन्ध पहुंचा। स्वेतबन्ध से चल कर उसने तैलंग कर्नाट मैथिल, कुकन पुलंग असेर गुर्जर गुंड मगध चन्द कास कालिंग आदि देश के हिन्दू और म्लेच्छ नरेशों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीतकर भोराराय भीमदेव की राजधानी पट्टनपुर की ओर पयान किया। उसने चढ़ी सवारी भीमदेव के मुख्य नगर सोनपुर के प्रकोट[1] को तोड़ कर क़िले पर दख़ल जा जमाया और फिर सेत्रुंजा में डेरा जा डाला। जब यह खबर भीमदेव को लगी तब तो उसने अपने पुत्र को बहुत से धन रत्न के साथ विजैपाल के पास भेज दिया। विजैपाल ने वह गुजरात से आया हुआ सब नजराना स्वीकार किया और भीमदेव के पुत्र को अपनी तरफ़ से सिरोपाव देकर विदा किया।

इस प्रकार विजैपाल जल थल में सर्वत्र अपना आतंक और अधिकार जमाकर कन्नौज को लौट आया। जल में बड़वानल और थल में केवल अजमेर पति चहुआन हीं उससे न जीते जा सके।

विजैपाल के सकुशल कन्नौज में आजाने पर राज्य भर में आनन्द बधाई होने लगी। विजैपाल के पुत्र पतोहू का जुगल जोड़ा सानन्द समय विताने लगा। जब जैचन्द की उक्त स्त्री की सोलह वर्ष की अवस्था हुई तब उसके गर्भ से चन्द्रमा के समान दीप्तवती एक सुकुमारी कुमारी का जन्म हुआ। वह कन्या दिन दूनी दुइज की जुन्हैया सी बढ़ने लगी। यह वही जुन्हैया है जिसके कारण जैचन्द के अस्सी लाख अश्वारोहियों का नाश हुआ और उसके अर्द्धाङ्ग पृथ्वीराज का अन्तिम पतन हुआ।

इस प्रकार संयोगिता की पूर्व्व कथा कह कर अब कवि उसके आगे की कथा कहेगा।

(१) प्रकोट = शहर पनाह। लयौ सुगढ सोवत्र कोट भञ्यौ परिकोटह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना ।

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं ।

	मूल्य	डांकव्यय
...लिक मुहम्मद की अखरावट	।=)	)॥
...विवर बिहारीलाल-(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	=)	)॥
...दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित)	।)	)॥
...ालोचना-(पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	)॥
...ालोचनादर्श-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित) ...	≡)	)॥
...्याकर्तव्यशास्त्र-(पण्डित नारायण पांडे रचित) ...	॥)	-)
...चिका चिकित्सा	।)	)॥
...चन्द्र-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	)॥
...दुगीता-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित) ...	।-)	)॥
...ो-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	≡)	)॥
...रीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) ११ भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य-प्रति भाग	१)	-)
...दी लेकचर-(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	-)	)॥
...दास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	॥≡)	-)
...लमिश्र की चन्द्रावती	।-)	)॥
...न कवि का सुजानचरित्र	२)	=)
...कवि का छत्रप्रकाश	१।)	-)
...दास की रासपञ्चाध्यायी	।=)	)॥
...ीन-लेख-मणि-माला-१ भाग (बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित) ...	१)	-)
...क का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	।)	)॥
...का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित)	।-)	)॥
...राजरासो-पहिला भाग (समय १-११)	४)	।)
दूसरा-तीसरा भाग (समय १२-४८)	१०)	॥)
...म्भिवसार (पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित) ...	≡)	)॥
...का जंगनामा	॥।)	-)
...(ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	-)
...पुस्तकालय की सूची	=)	)॥
...ान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित)	॥)	-)
...र का हम्मीर हठ	॥)	)॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)	१)	-)
दादूदयाल की बानी ...	१।॥)	=)
कवि नूरमुहम्मद की इन्द्रावती १ भाग	१॥)	=)
यूरोपीय दर्शन (पण्डित रामावतार पांडेय लिखित)	।॥)	-)
प्रबोधचन्द्रिका	॥)	-)
विरहलीला-आनन्दघन कृत	=)	)॥
दादूदयाल का सबद-	१।)	=)
हम्मीररासो	२)	≡)
सरल व्यायाम (बाबू कालिदास लिखित)	।=)	-)
वनिताविनोद	१)	=)
नवीन दृष्टि में प्रवीन भारत	१)	-)
गीतावली	।)	)॥
योगदर्शन	२)	-)
गुरु गीता	।)	)॥
रामचरितमानस	८)	।॥)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की ७ पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं । अन्तिम पुस्तक का मूल्य सभासदों के लिये ६॥) रु० है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-13

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHIYA JU.

CANTOS LV to LVIII.

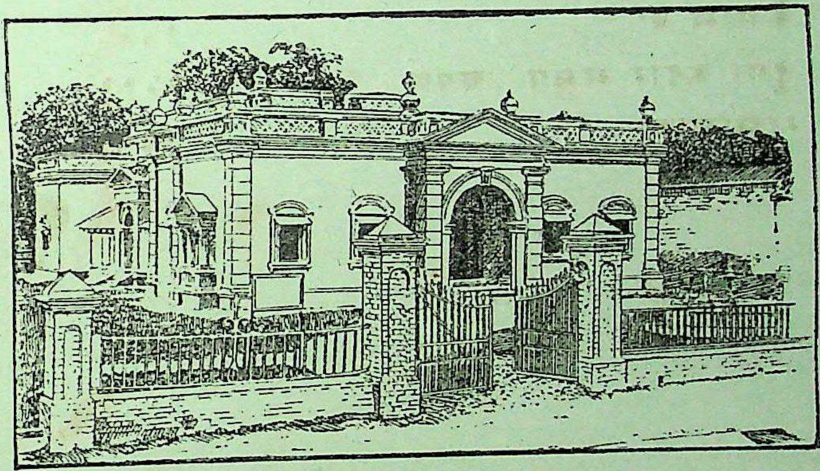

महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता

से

सम्पादित किया ।

पर्व्व ५५ से ५८ तक ।

७९
१४३

AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE
NAGARI-PRACHARINI SABHA, BENARES.

1908.

मूल्य १।)] Issued 25th March 1908. [Price Re. 1/4/.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओ३म् * ७९ / ९४३

पुस्तक की संख्या.................. ७४३१८

पुस्तकालय–पञ्जिका–संख्या..........

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कोई महाशय १५ दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकता। अधिक देर तक रखने के लिये पुनः आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

(५५) सामंत पंग जुद्ध .... पृष्ठ १४१५ से १४४५ तक

(५६) समर पंग जुद्ध .... ,, १४४६ ,, १४६३ ,,

(५७) कैमास बध .... ,, १४६५ ,, १५०९ ,,

(५८) दुर्गा केदार समय (अपूर्ण) .... ,, १५११ ,, १५४४ ,,

रासोसार .... ,, १३७ ,, १२८ ,,

———०———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१४८२६

अथ सामंत पंग जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते ।

(पचपनवां समय ।)

पृथ्वीराज का प्रताप वर्णन ।

कवित्त ॥ राह रूप चहुआन । मान लग्गौ सु भूमि पल ॥
दान मान उग्रहै । बीर सेवा सेवा छल ॥
बीय भंति उग्रहै न । कोइ न मंडै रन अँगन ॥
सबर सेन सुरतान । बान बंधन षल षंडन ॥
सा धम्म राह धर धरन तन । देव सेव गंध्रब्ब बल ॥
सामंत सूर सेवहि दरह । मंडे आस समुद्र दल ॥ छं० ॥ १ ॥

[illegible]ा ॥ इक्क दृष्य महि हरष सुष । दुष भज्जै दल द्रब्ब ॥
अरि सेवें आसा अवनि । कोइ न मंडै ग्रब्ब ॥ छं० ॥ २ ॥

जयचन्द का प्रताप वर्णन ।

कवित्त ॥ कनवज्जह जैचंद । दंद दारुन दल दुत्तर ॥
पच्छिम दष्षिन पुब्ब । कोन मंडै दल उत्तर ॥
ढिल्लिय चित्तय कोट । जोट अड्डै दल पंगं ॥
सेव दंड अन मंड । षग्ग मंडन बल अंगं ॥
बहु भूमि द्रव्य घर उग्रहै । इम तप्पै रट्ठौर पहु ॥
सुष इंद्र व्यंद छत्तीस दर । मुकट बंधि बिन मान सहु ॥
छं० ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति उतंग तन बल। विभंग जग महि सूर जुध ॥
अट्टत वाह जम दाह। काल संकलप काल क्रुध ॥
कोप पंग को सहै। फुट्टि दल जानिक साइर ॥
बल बलिष्ट जुनु इष्ट। दिष्ट कंपहि बल काइर ॥
निम्मले सूर तन सूर जिम। समर सज्जि गज्जे सुबर ॥
आवाज़ कंन पंगह सुनी। हलकि कंपि दिल्ली सहर ॥ छं० ॥ ४ ॥

दूहा ॥ दिष्टि सु नृप दिष्षे सकल। दिक्षावत बनि सेन ॥
मनो सकल अग सुंदरी। जग्गावत पिय मेन ॥ छं० ॥ ५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

कवित्त ॥ इक सबल सित सूर। इक बल सहस प्रमानं ॥
इक लष्य साधंत। दंति भंजै गज पानं ॥
इक विरुध जम करहि। इक जम जोर भयंकर ॥
इक जपहि दिन अंत। करन कलिकाल षयंकर ॥
सुभ सेव ध्रम्म स्वामित्त मन। तन हित्तन मंडै बियौ ॥
तिन रष्षि घरह प्रथिराज नृप। अप्पन आषेटक कियौ ॥
छं० ॥ ६ ॥

राजा जयचन्द की बड़वाग्नि से उपमा वर्णन।

अगस्ति रूप पहु पंग। समुद सोषन धर ढिल्लिय ॥
बयर नयर प्रज्जरहि। धूम डंबर नभ हल्लिय ॥
सजि चतुरंगिय पंग। जानि पावस अधिकारिय ॥
रज्जि रज्ज चष घुम्म। सेन संभरि उच्चारिय ॥
अरि त्रिय नयन्न बरिषा जुजल। मोर सोर डंबर कविय ॥
प्राची प्रमान संमुह अनिय। मुष पंगुर विज्जनु मनिय ॥ छं० ॥ ७ ॥
अढर ढुरहि गढ़ रुरहि। मेर षर भर सुपरहि भर ॥
कसकि कमठ पर पिठ्ठ। सेस सल सलहि छाड़ि धर ॥
जल साइर उच्छरहि। नैर प्रजरहि जरहि घर ॥
जल थल होत समान। बंक छारंत बंक छल ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंदवान राह पहुपंग बर। चंपि लगे अरि भान ग्रह ॥
छुट्टै न दान कर दान बिन। षग्ग पंति मंडी सु रह ॥ छं० ॥ ८ ॥
दूहा ॥ दान सूर छुट्टै न महि। विषम राह कमधज्ज ॥
वह जठरागिन राग बिनु। इह जठरागि न सज्ज ॥ छं० ॥ ९ ॥
अभय भयंकर अरि भवन। भ्रमत भूमि षग धार ॥
को कमधज्जह अंग मैं। सो न बियौ संसार छं ॥ १० ॥

जयचन्द का राजसी आतंक कथन।

कवित्त ॥ को अंगमै सु जम्म। क्रम्म को करै सँघारन ॥
को सुर्वी कर धरै। मूर महि कोन उपारन ॥
को दरिया दुस्तरै। नभ्भ ढंको रवि चाहै ॥
को सुन्यह संग्रहै। कौन उत्तर दिसि गाहै ॥
को करै पंग सो जंग जुरि। दनु देवत्तरु नाग नर ॥
कलिकाल कलन कंकह कहर। उदधि जानि ऊलटि गहर ॥
छं० ॥ ११ ॥
बेखी भुजंगी ॥ चलि पंग सेन अपारयं। अनभंग छचिय धारयं ॥
चहुआन बलनह बंधयं। द्रगपाल क्रम क्रम संधयं ॥ छं० १२ ॥
भव भवन रवनति छंडयं। डर डरपि मुंडति मंडयं ॥
दुअ अट्ठ दिसि बसि बिच्छुरै। जल मीन भंगति उच्छरै ॥
छं० ॥ १३ ॥
भुअ कंप लंक ससंकयं। धर डुलत मानहु चक्कयं ॥
पिय पतिय मुक्कति लुप्पती। कहों दुतिन दिष्षिय दंपती ॥
छं० ॥ १४ ॥
पहुपंग षूनिय ना रहैं। सुरलोक संकति आरुहै ॥ छं० ॥ १५ ॥
दूहा ॥ सुरगन सरनी तल कुदल। षनि कढ्ढैं ह्रं कंद ॥
षूनी पंग नरिंद कौ। को रष्षै कविचंद ॥ छं० ॥ १६ ॥
कवित्त ॥ अग्गें सिंघ सु सिंघ। सिंघ पष्षर्यो भलालह ॥
पंग अम्रत फल चषै। अम्रत लग्गौ जु तमालह ॥
आगेई बर अप्प। नाग नंदन विद्या पढ़ि ॥
आगेई बर करन। भान साहै चिंता चढ़ि ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को करै पंग सो जंग जुरि। सु बिधि काल दिष्षै नही॥
रिनमान काज रजपूत गति। संभरि वै संभरि रही॥ छं०॥ १७॥

जयचन्द के सोमत्तक नाम मंत्री का वर्णन।

पंग पुच्छि मंचीस। मंच पुच्छै जु मंच बर॥
सोमंतक परधान। मंत विग्गऱ्यौ मंड धुर॥
धवल सुमंची मंच। तत्त आरिष्य प्रमानिय॥
तारा क्रत संघरिय। चित्त रावर उनमानिय॥
विधि मंच जंच आरत्ति करि। साम दान भेदह सकल॥
जानो सु बीर सो उच्चरहु। काम क्रोध साधन प्रबल॥
छं०॥ १८॥

सबद बाद से वरें। इष्ट मंची न तत्त गुर॥
बाल वृद्ध जुवती प्रमान। जानहि स भ्रम्म नर॥
स्वामि ध्रम्म उच्चरैं। कित्ति जुग्गीरह संधे॥
उर अधीन सम प्रान। जानि क्रत जानन बंधे
सह नित्त जीव दिष्षै सु पुनि। मुनि मयंक द्रिगपाल हर॥
कालंक बिनै को तत्त वर। क्रम्म बिना लग्गै सु नर॥ छं०॥ १९॥

दिल्ली की दशा।

संभरि वै तजि गयौ। छंडि ढिल्ली ढिल्ली धर॥
जुद्ध करन न्रप पंग। कोइ न दिष्यौ सु रस्स नर॥
ग्राम धाम तजि बीर। बहुरि पत्तौ कनवज्जं॥
तारा क्रत चिचंग। दियो संदेस सु कज्जं॥
करि करिनि कंक च्रिचंग वस। करौ जग्य आरंभ बर॥
मंची सुमंच राजन बली। ते हक्कारे मंत धर॥ छं०॥ २०॥

जयचन्द का यज्ञ के आरम्भ और पृथ्वीराज को अपमानित करने के लिये मंत्री से सलाह करना।

पंग पुच्छि मंची सुमंत। पुच्छै सुमंच बर॥
पहु सुमंत विग्गऱ्यौ। जग्य मंड्यौ जु पुब्ब धर॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोइ मंची स प्रमान। जग्य धुर वधं सु बंधे ॥
स्वामि ध्रम्म संग्रहै। कित्ति भग्गी रह संधे ॥
सह जीव जंत दिष्षै सहज। मुनि मयंक द्रिग पाल बर ॥
कालंक दग्ग लग्गै कुलह। सो मिट्टावहि मंच नर ॥ छं० ॥ २१ ॥

अति उज्जल न्रप भरथ। भरथ जिहि वंस नाम नर ॥
तिन कलंक लग्गयौ। पुच हत्तयौ अप्प कर ॥
चंद दोष लग्गयौ। कियौ गुर वाम सहिल्लौ ॥
बर कलंक लग्गयौ। राज सुत पंड वुहिल्लौ ॥
चिचंग राव रावर समर। विनक बंक छिची निडर ॥
आहुट्ठ राइ आहुट्ठ पति। सबर बीर साधन सवर ॥ छं० ॥ २२ ॥

सुअ सु मंच परमान। पंग उच्चरिय राज बर ॥
चाहुआन उद्धरन। जग्य उद्धरन मंत धर ॥
चित्त अग्गि भय अग्गि। जग्गि जग्यौ छल राजं ॥
तारा क्रत साध्रम्म। पंग कीजै ध्रम्म साजं ॥
जा ध्रम्म जोग रष्यौ नहरि। कीन ध्रम्म ध्रम्मन गरुअ ॥
मुक्कलौ मंच जे मंच उर। सुबर बीर बोलन हरुअ ॥ छं० ॥ २३ ॥

मंत्री का सलाह देना कि रावल समरसी जी से सन्धि करलेने में सब काम ठीक होंगे।

तब सुमंच मंचिय प्रधान। उच्चरिय राज बर ॥
चाहुआन बंधन सुमत्त। मंडनह जग्य धर ॥
नर उत्तिम चिचंग। राज उत्तिम चिचंगी ॥
कर अदग्ग दग्गन। जगत्त रष्षन गज अंगी ॥
कालंक अछिय कट्टन सु छिम्र। पर सु चार तिन तिन करय ॥
चिचंग राव रावर समर। मिलि सु जग्य फिरि दिन धरय ॥
छं० ॥ २४ ॥

कुंडलिया ॥ फुनि न स्यंद पहु पंग बर। उभयति बर बर जोग ॥
समर मिले कमधज्ज कौं। जग्य समप्पैं लोग ॥
जग्य समप्पैं लोग। उब्भ सारंग सुनाई ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकल्ल सारंग। तिमिर अप कहूं न जाई॥
वियौ तिमिर भंजियै। अप्प पुलि जाइ तमं घन॥
अप्प तिमिर भंजिये। प्रलै हाइय सु अप्प फुनि॥ छं०॥ २५॥

सोमंतक का चितौर को जाना।

कवित्त॥ पंग जग्य आरंभ। मंत प्रारंभ समर दिसि॥
सोमंतक परधान। पंग हक्कारि बंधि असि॥
सत तुरंग गति उद्ध। पंग गजराज विशालं॥
मुत्ति अवेध सुरंग। एक दस लालति मालं॥
पंजाब पंच पंचों सु पथ। अद्ध देस अध बंटियै॥
चाहुआन बंधि जग बंधिकर। जग्य अरंभ सु ठट्टियै॥
छं०॥ २६॥

जयचन्द का मंत्री को समझाना।

आहुट्टां मभ्भांम। समर साहस चित्रंगी॥
निविड बंध बंधे। अबंध सा ध्रम्म सु अंगी॥
चिंतानी कलपत्ति। रूक रत मोह अरत्ता॥
सिद्धानी मोगर सुभेस। सम सद्ध सु गत्ता॥
चहुआन चंपि चवदिसि करिय। जग्य बेलि जिमि उद्धरै॥
चित्रंग राव रावर समर। मिलि जीवन जिहि उब्बरै॥
छं०॥ २७॥

पद्धरी॥ मुक्कलै पंग बर मंच बीर। जानै सु गत्ति राजन सरीर॥
मन पंग होइ सो कलें बत्त। बिन बुलत बोल बोलें सुतत्त॥
छं०॥ २८॥

जानै सु चित्त नर नरनि बत्त। अनि रत्त रत्त ते लषहि गत्त॥
कीटी सु भ्रंग ज्यौं मिलहि स्याम। डर ग्रहैं रहैं जामित्त जाम॥
छं०॥ २९॥

तिन मध्य एक सारंग सूर। सह मत्त-बिद्ध जानत सपूर॥
पाषंड दंड रचै न अंग। भारथ्थ कथ्थ भीषम प्रसंग॥
छं०॥ ३०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भ्रगुराज पैंज जिन करिय देव। मंगी सु मृत्यु जिन मृत्य सेव॥
संतन सुमंति स्वामित्त सत्त। रष्षै जु राज राजन सु पत्ति॥
छं०॥ ३१॥

पत्तौ सुजार चित्रंग थान। चित्रंग राज मिलि दीन मान॥
छं०॥ ३२॥

रावल समरसी जी का सोमंत से मिलना और उसका अपना अभिप्राय कहना।

दूहा॥ समर सपति पति समर की। समर समेद सपंग॥
जग्य बेद जौ उद्धरौ। भूमि भेद ग्रह जंग॥ छं०॥ ३३॥

पूब कही चलतहिं न्नपति। सुबर बीर कमधज्ज॥
दीन भये दीनत भगै। सुबर बीर बर कज्ज॥ छं०॥ ३४॥

दीन भयें अरि अंग बर। छल छुट्टियै न छच॥
मय मत्तह सो वृत्त है। वै पुज्जै गुन मत्ति॥ छं०॥ ३५॥

रावल जी का सोमंत को धिक्कार करके उत्तर देना।

नाम सु मंत्री तिन धर्‌यौ। रे अमंत परधान॥
दीनत भयें भयौ न जग। जग्यबेर बलिदान॥ छं०॥ ३६॥

अरिल्ल॥ मिलिग समर उच्चरि चौहानं। जग्य करन पहुपंग निधानं॥
त्रेता द्वापर कर्‌यौ जु देव। कलिजुग पंग जग्य करि सेव॥
छं०॥ ३७॥

कवित्त॥ समर रूप सुनि समर। पंग आरंभ जग्य धुर॥
सत्य पहुर बलिराइ। जग्य पहुरै सु जग्य बर॥
बियौ पहुर रघुबीर। जग्य आरंभन जग्यौ॥
तृतीय पहुर जग्गयौ। ध्रम्म सुत ध्रम्म न लग्यौ॥
कलि पहुर जग्गि जग्यन बलिय। सुबर बीर कमधज्ज धुअ॥
संसार सब्ब निंद्रा छिपिग। जग्गि जग्य विजपाल सुअ॥
छं०॥ ३८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वर्ग इच्छ बलिराइ। जग्य किय गयौ पयातल॥
चंद्र जग्य मिट्टन। कलंक [1]का कुष्ट अंग गल॥
राज इच्छ राजस्ह। राज रा पंड पंड बन॥
नघुअ राजस्ह जग्य। क्रूर कर कुष्ट कूप जन॥
कलिजुग्गराज राजसु करौ। कह्यौ दान षोडस करन॥
सित सित्त कोम बर बीर हर। हरि विचार लग्गौ चरन॥
छं० ॥ ३९ ॥

अश्वमेद राजस्ह। लंब गौषंभ मेद बर॥
अगनि होच बर मेद। मध्य जग मेध अप्प बर॥
कनिष्ट बंध बड़बंध। चीय आचरन ग्रेह बर॥
व्रत संन्यास आचरन। पंच चवकलि न होहि धर॥
कलि दान जग्य षोड़स करन। बाजपेय बर उद्धरै॥
नन होइ कोइ इन जग्य बर। हँसे लोइ बहु बिग्गरै॥छं०॥४०॥

पद्धरी॥ उच्चर्‍यौ मंच चिचंग राव। कलि मध्य जग्य नहिं भ्रम्म चाव॥
बल करौ नन्न भेषह प्रमान। जग्यौ न एक भुअ चाहुआन॥
छं० ॥ ४१ ॥

चहुआन जोग छची अनंभ्रू। अन्यन कोस सित्तए मंझ॥
वय हीन इष्ट नन बल प्रमान। जग्गहि सजोग नह लच्छि थान॥
छं० ॥ ४२ ॥

मंची न कोइ बर पंग ग्रेह। [1]नन होइ जग्य मानुष्य देह॥
चैवार काल चंपै प्रमान। बरजै न तास उर जग्य जान॥
छं० ॥ ४३ ॥

अपजस विसाहि करि कुमत मत्त। पुच्छौ सु बत्त तौ कही बत्त॥
सुद्धरै बात सो करौ वीर। आवै न समर बर जग्य तीर॥छं०॥४४॥

रावल जी का कहना कि होनहार प्रबल है।

कवित्त॥ फुनि चिचंग नरिंद। चतुर विद्या सचित्त मति॥
भव भवस्य न्रिम्मान। व्रह्म भूलै न्रिमान गति॥

(१) ए.-ना कुष्ट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इह अजन्न चिंतयौ । ग्रन्न आहारन सांई ॥
तन मनुच्छ सम देव । बुल्ल बुल्यौ बल्ल तांई ॥
चैलोक अप्पि बलिराइ नें । राम जुद्द चैता सु बर ॥
जदुवीर सहाइक पथ्थ बंध । तव कुबेर बरय्यौ सुधर ॥ छं० ॥ ४५ ॥

पंग सुवर परधान । समर सम्हौ उच्चारिय ॥
बलि सु जग्य विग्गऱ्यौ । ध्रम्म छिची न सम्हारिय ॥
चंद जग्य विग्गऱ्यौ । मंत बिन अटन सु पत्तौ ॥
दुज्ज दोष नघु क्रत्त । क्रित्त अप्पनौ सु हत्यौ ॥
इह ध्रम्म क्रम्म षल षंडि षग । जित्त जगत सब बस कियौ ॥
प्रथिराज समर बिन मंडलह । अवर जग्य नह हर तियौ ॥
छं० ॥ ४६ ॥

रावर समर नरिंद । समर साधन्न समर बर ॥
समर तेज सम जुद्द । समर आकृत्य समर घर ॥
सम समंति सम कंति । समति सम सूर प्रतापं ॥
समर विधान विधान । सिंघ पुज्जै नन दापं ॥
भव भवसि भूत भव भव कहहि । भवतव्य सु चिंता सद्वरिय ॥
चिचंग राव रावर समर । इह प्रधान सम उच्चरिय ॥ छं० ॥ ४७ ॥

रावल जी का अपने को त्रिकालदर्शी कहना ।

हम नरिंद जोगिंद । भूत सुझ्झैत भवसि गति ॥
हम चिकाल दरसी सु । क्रम्म बंधै न मोह भति ॥
जु कछु पच्छ निरमान । अग्ग मुष सोइ उच्चारै ॥
सुनि सुमंत उच्चरों । जग्ग चढ्है नसि रारै ॥
मुनि देव राज दुज विदुष बर । रही जच तचह सु बर ॥
देषियै भलप्पन पच्छि बर । तौ अग्गैई जाइ धर ॥ छं० ॥ ४८ ॥

रावल जी का ऐतहासिक प्रमाण देकर प्रधान को यज्ञ करने से रोकना ।

बंदीजन रिषि ब्रह्म । जग्य पंडव बष्यानिय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकसमात इक प्रगट। निकुल जंपिय इय वानिय ॥
द्वादस वरस दुकाल। पऱ्यौ कुरषेत धरन्नं ॥
विप्र उच्छ व्रति न्हान। न्योति रिषि धोय चरन्नं ॥
तिहि पंक माहि लोटंत हौ। अद्ध देह कंचन भयौ ॥
पूरन करन्न तुम जग्य में। आयौ पन दाग न गयौ ॥ छं० ॥ ४९ ॥

दूहा ॥ कहि मोकलि परधान कर। इह सु कथ्य चित्रंग ॥
तौ तुम अन जग अंज से। कहा करहु पहुपंग ॥ छं० ॥ ५० ॥
अस्वमेद जग छसें करि। विस्वमित्र तप जोर ॥
कहा करै न्रप मंद मति। अहंकार मन ओर ॥ छं० ॥ ५१ ॥

सोमंत का कुपित होकर जयचन्द की प्रशंसा करना।

कुंडलिया ॥ पंग प्रधान प्रमान उठि। बचन श्रवन सुनि राज ॥
रत्त द्रष्टि अरु रुद्र मुष। चंपि लुहट्टी साज ॥
चंपि लुहट्टी साज। बचन बर बीर कहाई ॥
तर उप्पर चित्रंग। करहि जुग्गन पुर नाई ॥
सज्जे पंग नरिंद। तीन पुर कंपि अभंग ॥
असुर ससुर नर नाग। पंग भय भये सु पंग ॥
छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ बचन उच्च दिठ उच्च। समर तप करन उचाइय ॥
पंग लज्ज सिर मंडि। बीर ब्रह्मंड लगाइय ॥
सोइ न्रपत्ति जयचंद। नाम जिन पंग पयानं ॥
इला धरन समरथ्थ। नयन काली जुग जानं ॥
कविचंद देव विजपाल सुअ। सरन जाहि हिंदू तुरक ॥
चित्रंगराव रावर समर। रज नष्षै लग्गै अरक ॥
छं० ॥ ५३ ॥

जयचन्द का राजसी आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ बुल्यौ सुमंच मंची प्रमान। कनवज्जनाथ करि जग्य पान ॥
मिसि सेन सज्जि आषेट रूप। चिंता न चिंत्य बंधेत भूप ॥
छं० ॥ ५४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आरज्ज सेन प्रथिराज राज। बंधेति बलह समरह समाज ॥
बन वहन गहन दुज्जन सभूमि। सर ताल वितल कढ्ढैति तूंमि ॥
छं० ॥ ५५ ॥
बग्गुरि सभेद गोरी उपाइ। बंधि सिंध उभय पच्छिम लगाइ ॥
मंडै सभूल सुरतान तीर। करनाट करन षुरसान मीर ॥ छं० ॥ ५६ ॥
गुज्जर सु कोह दक्षिन लगाइ। लग्गै न गहन कहु अरिन पाइ ॥
उतरत्त बंध पुव्वह प्रमान। चढ़ि देषि पंग पावै न जान ॥
छं० ॥ ५७ ॥
तारक सु षेद बंधे प्रसार। चहुवान चपेटक जुद्ध भार ॥
पाताल पंथ नन व्योम पंथ। बन बहन हरन दुरि सोम अंथ ॥
छं० ॥ ५८ ॥
दल सज्जि करहि न्रप सच भेद। पहुपंगराइ राजह बेद ॥
॥ छं० ॥ ५९ ॥

यज्ञपुरुष का ऋषि के वेष में नारद के पास आना।

दूहा ॥ आयौ रिषि नारद सद्रिस। धरम मूल प्रतिपार ॥
मनों विदिसि उत्तारनह। जग्य रूप सिरदार ॥ छं० ॥ ६० ॥

नारद का पूछना कि आप दूबरे क्यों हैं।

दीन दिष्षि वर वदन तिन। ता पुच्छै रिषि राज ॥
किन दुष्षह तन किस्सता। किन दुष्षह आकाज ॥ छं० ॥ ६१ ॥

ऋषि का उत्तर देना कि मैं मानहीन होने से दुखी हूं।

तब रिषि बोल्यौ रिष्ष प्रति। अस्त्री अस्त्र सरूप ॥
तिन कारन तन जरजर्यौ। अग्गि विभंगन रूप ॥ छं० ॥ ६२ ॥
कवित्त ॥ अंग षंड न्रप राज। मान षंडनति विप्र बर ॥
गुरु षंडन गुरु विदुष। लच्छि षंडन विनक्क घर ॥
निसि षंडन तिय जोग। सु निसि षंडन अभिमानं
क्रत षंडन उरदेव। जग्य षंडन सुरथानं ॥
इत्तने षंड कीने हुते। तदपि दुष्ष जर जर तनह ॥
जानैन देव दैवान गति। सुगति विद्धि न्रम्मय घनह ॥ छं० ॥ ६३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारद ऋषि का कहना कि आपके शुभ के लिये यथा साध्य उपाय किया जायगा।

दूहा॥ सोनंतहु तिन विप्प कहि। नब नव चरित प्रमान॥
तू आज्ञा जो देइ गौ। सो आज्ञा परमान॥ छं०॥ ६४॥

विअष्षरी॥ अग्गि समान जु अग्गि प्रमानं। विप्र और औरै उच्चानं॥
जाहि कुचील कुचील करिज्जै। तौ वह बेद भंग नब लिज्जै॥
छं०॥ ६५॥

जो वह तन अत्यंत प्रकारं। बहुत ध्रम्म आरत उच्चारं॥
पंड मंड लीने कर धारिय। कांति सराप भई सिल नारिय॥
छं०॥ ६६॥

तहां आइ बर बाज बिलग्गे। सुनें पंग आतुर मन मग्गे॥
जौ आग्या इन भंति सु भज्जै। तौ ग्रेह होंहिं ग्रामि गुर सज्जै॥
छं०॥ ६७॥

हंका कार दुह्न न्रप भारी। पंग जाउ जानै न प्रकारी॥
जिन डहाल क्रन्नं गुन षेद्यौ। तीन बाल भारथ्थह भेद्यौ॥
छं०॥ ६८॥

उभै बान करि मान प्रकारं। सुबर बीर संचै सिर सारं॥
छं०॥ ६९॥

सोमंत का राजा को सलाह देना कि चहुआन से पहिले रावल समरसी दोनों को परास्त करना चाहिए।

कवित्त॥ सुमत समंती स्याम। सुमति संग्रही पंग बर॥
बंचि राज चहुआन। बंधि चिचंग सम्म घर॥
सुलप लज्ज पति जीह। बेंन क्रक्कस उच्चारहि॥
* ....
मधि भूप रूप दारुन वचन। पंगराइ अम्मर अरस॥
सज सेन सु वंधौ वंध बल। देव राज देवह परस॥ छं०॥ ७०॥

* छन्द ७० की चतुर्थ पंक्ति चारो प्रतियों में नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोचहि पंग नरिंद। राज जानै इह सत्तिय॥
ता छची कों दोस। भूमि भोगवै न दुत्तिय॥
पंग काल आरुहै। ताहि गारुरू न कोई॥
सस्त्र मंच उद्धरै। सार धर धार समोई॥
मयमंत सेन चतुरंग तजि। बढ़िय दंद हिंदुअ उभय॥
दैवत्त कला दैवत्त तूं। दै दुवाह दुज्जन डरय॥ छं०॥ ७१॥

मंत्री के बचन मान कर जैचन्द का फौज सजना।

दूहा॥ सज्जन सेन सु राज कहि। बज्जिग बज्ज सु लाग॥
इक्कै विधिना अंगमै। बीय मनुच्छ न भाग॥ छं०॥ ७२॥

कवित्त॥ तज्जि कमान जु तीर। छंडि अवाज गोरि चलि॥
ज्यों गुन मुक्कि उठि चंग। सीह बर म्रग्ग अंड हलि॥
त्यों पहुपंग नरिंद। सेन सजि धर पर धाईय॥
असुर ससुर सर नाग। पंग पहुपंग हलाइय॥
अच्छरत रेन अरि उच्छरत। कायर मन पछ अग्ग तन॥
कविचंद सु सोभ विराजई। जानि पताका दंड घन॥ छं०॥ ७३॥

जयचन्द की सुसज्जित सेना का आतंक वर्णन।

कुंडलिया॥ चढ़तें पंग सु सेन मिलि। तुछ तुछ कूंच प्रमान॥
नदी समुद्रह सब मिलै। पंग समुद्रह आनि॥
पंग समुद्रह आनि। सेन न्रप मंडप साचै॥
सिंभ गंग उतमंग। रंग पल ती रंग राचै॥
दइय पंग अनभंग। सक्र सहाय छिति डुल्लै॥
मुदरि भान संचरी। दिसा दुरि धर पर चल्लै॥ छं७॥ ७४॥

चोटक॥ पहुपंग निसान दिसान हुअं। सुनियं धुनि डुल्लि प्रमान धुअं॥
विधि बंध विधिं क्रम काल डरै। जयचंद फवज्ज सु बंधि षरै॥
छं०॥ ७५॥

रथ सज्जि हयं गय पाय दलं। तिन मद्धि विराजति चाहि ललं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नव बत्ति निसान न्निघोष सुरं। सुनियै धुनि धीरज तज्जि भरं॥
छं० ॥ ७६ ॥

गजराज स घंटन घंट बजै। अनहद्द सवद्दनि जानि सजै॥
घन नंकहि घुघ्घर पष्षर के। सु बुलै जलजात किधौं जल के॥
छं० ॥ ७७ ॥

पर टोपनि सीस धजाति हलै। तिनकी कबि देषि उपम्म कलैं॥
* चय नेचय मंडिय नेच उजास। भर मद्धि प्रगट्टि मनों कैलास॥
छं० ॥ ७८ ॥

बँधि पंषि उमा वधि सीस सधी। वढ़ि ससि कला मनों ईस बँधी॥
चवरंग धजा फहरीति हलं। सु मनों ससि चाह बसीठ हलं॥
छं० ॥ ७९ ॥

गुरु भान ति राह रु भूमि सुधं। सब अप्पि परी गह तात बुधं॥
दमकै बनि कंति कती सरसी। निकसै मनु मानिक मंजर सी॥
छं० ॥ ८० ॥

दिसि अठ्ठ दुरी उपमानि जनं। सु मनों तम जीति रह्यौ रविनं॥
ढुरि ढाल ढलं मिल सोभ धरै। चढ़ि देव विमान सु केलि करै॥
छं० ॥ ८१ ॥

सु मनों जनु जुग्गिय जग्गिययं। सु मनों प्रलैकाल प्रथीपुरयं॥
छं० ॥ ८२ ॥

रहस्सहि बीरति सूरति सुष्ष। मनों सतपच विकासिय सुष्ष॥
मुदे मुष काइर झुम्झिझग मोद। मनों भए संझ सु दिष्षि कमोद॥
छं० ॥ ८३ ॥

* यह पंक्ति छन्दोभंग से दूषित है। त्रोटक छन्द चार सगण का होता है किन्तु इस पंक्ति में एक लघु अधिक है। पाठ में कोई ऐसी युक्ति भी नहीं है कि जिस से लिपि दोष माना जाय और न किसी प्रकार शुद्ध करने का अवकाश भी है अस्तु इसे ज्यों का त्यों रहने देकर केवल यह सूचना दे दी है। छन्द ८२ के बाद के दो छन्द न तो त्रोटक हैं और न समरूप से उनकी मात्रा किसी अन्य छन्द से मिलती है इसका मूल कारण लिपि दोषहै। बीच में कुछ छन्द छूटे हुए भी मालूम होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उभै षट फौजति पंम सजै। दिसि अट्ठ उभै दुरि थान लजै ॥
चब्यौ पहुपंग सु हिंदुअ थान। इतें चितरंग उते चहुआन ॥
छं० ॥ ८४ ॥

सेना सजनई का कारण कथन।

दूहा ॥ सधर धार बज्जन बहुल। धर पहार बर गज्जि ॥
पुव्व बैर चहुआन कौ। बजे तीर कर बज्जि ॥ छं० ॥ ८५ ॥
जग्गि जलनि जैचंद दल। बल मंड्यौ छिति राज ॥
बैर बंध्यौ चहुआन सों। पुव्व बैर प्रति काज ॥ छं० ॥ ८६ ॥

जैचन्द का पृथ्वीराज के पास दूत भेजना।

दूत सु मुक्कि प्रधान बर। दिसि राजन प्रथिराज ॥
*मातुल पष जैचंद धर। अर्द्ध सु मंगै काज ॥ छं० ॥ ८७ ॥

गोयंद राय का जैचन्द के दूत को उत्तर देना।

भुजंगी ॥ न जानं न जानं न जानंत राजं।
तुमं मातुलं वंस ते भूमि काजं ॥
दई राज अनगेस प्रथिराज राजं।
लई भारथं वीर भारथ्थ वाजं ॥ छं० ॥ ८८ ॥
जमं ग्रेह पत्तौ किमं पच्छ आवै।
ततं पंग राजं सु भूमिं सु पावै ॥ छं० ॥ ८९ ॥
दूहा ॥ पंगराज सोइ भूमि बर। मतन भूमि सिरताज ॥
कहै गरुअ गोयंद मति। सामंता सिर लाज ॥ छं० ॥ ९० ॥
कवित्त ॥ सुनहु मंत भर पंग। बात जानहु न मंत बर ॥
बीर भोग वसुमती। बीर बंका बंकी धर ॥
बीरा ही अनसंक। रहै बीरा बिन बंकी ॥
है पुर षग्गह धार। सोइ भोगवै जु संकी ॥
पावंड डंड रच्चै नहीं। पाषंडह रच्चै न गुन ॥

* इसके बाद का एक दोहा या और कोई छोटा छंद छूट गया मालूम होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्रम विक्रम चारि चच्चर जिमसि। अट्टत हत्त जावै न पन॥
छं० ॥ ९१ ॥

कवित्त॥ काल ग्रेह को फिरै। मेघ बुट्टै धारा धर॥
षह तुट्टै तारिका। जाइ लग्गै न नाक पर॥
छल छुट्टै (१)मुष सद्द। गरुअ हरुअं सु प्रमानं॥
बुधि छुट्टै आबुद्धि। होइ पछितावति जानं॥
संघरिय चीय बर कंत बर। गरुअ भूमि को भोगवै॥
मातुल कहाय तातुल सु मति। मरन देव गुन जोगवै॥
छं० ॥ ९२ ॥

दूत का गोयन्दराय के बचन जैचन्द से कहना।

कहिय बत्त यो मंचि। राज यों बत्त न मानिय॥
अधम बुद्धि बनि तमक पोत। क्रम अक्रम न ठानिय॥
छल छुट्टै बल बधै। सधै सिद्धंत सु सारं॥
एक एक आवद्ध। देव देवत्त विचारं॥
पहुपंग राय राज सु अवर। जाइ कही तामस विधिय॥
सजि सेंन सबें चतुरंग बर। सुबर बीर बीरह बधिय॥छं०॥ ९३ ॥

जैचन्द का कुपित होकर चढ़ाई करना।

दूहा॥ सुतन सु पंग नरिंद सजि। सब छिची छबि छाइ॥
बर बंसी ससिपाल ज्यों। षग्ग षटक्यौ आइ॥ छं० ॥ ९४ ॥

जयचन्द के पराक्रमों का वर्णन।

कवित्त॥ चंदेरी ससिपाल। करन डाहाल पुच बर॥
तिहि समान संग्राम। बान बेध्यौति बीर उर॥
तिमिरलिंग षेद्यौ। षेदि कढ्यौ तत्तारिय॥
सिंघराव जै सिंघ। सिंघ साध्यौ गुन गारिय॥
जैचंद पयानौ चंद कहि। ग्रह भग्गी निग्गह भगिय॥
भीमंत भयानक भीम बर। पुब्ब तरोवर तब रहिय॥ छं० ॥९५॥

(१) कृ.-सुख।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ सो फुनि जीत्यो पंग पहु । धरनि बीर सों बीर ॥
उदधि उलट्टिय हिंदु न्रप । बढ़ि कायर उर पीर ॥ छं० ॥ ९६ ॥

भुजंगी ॥ प्रकारे सुचारे चवै इक्क पायं । असी एक मंतेय होवंत तायं ॥
सु बंबीस मत्ते न होवंत कंदं । भुजंगी प्रयातं कहै कब्बिचंदं ॥ छं० ॥ ९७ ॥
चल्यौ पंग रायं प्रकारं प्रकारं । पुरी इंद्र ज्यों जानि बलिराय सारं ॥
घनी अंग अंगं जिती सेन सज्जं । मनो देवता देव साधंत गज्जं ॥
छं० ॥ ९८ ॥
रहै कोन अभ्यंत जंबल प्रकारं । जितै पंग सों कोन कलि आस सारं ॥
फनी फूंक भूली डुली भू प्रमानं । कँपे चारि चारं उभै यं प्रमानं ॥
छं० ॥ ९९ ॥

कवित्त ॥ धर तुट्टै षुरतार । पंग असि बर अस सद्धी ॥
हिंदु मेछ दोउ सेन । दोऊ देवत्तन बंधी ॥
दुहूं तोन जम द्रोन । पथ्थ प्रथिराज गनिज्जै ॥
ए न डुले ए डुले । ए न रंजे ए रज्जै ॥
जैचंद सपूरन कर पवित । परिपूरन उग्यौ अरक ॥
नर नाग देव देवत्त गुन । विधि सुमंत बज्जी धरक ॥ छं० ॥ १०० ॥

चोटक ॥ सु सुनी धुनि बैन प्रमान धरं । चढ़ि संमुष पंग नरिंद षरं ॥
सजि सूर सनाह सुरंग अनी । सु कछू जनु जोग जुगिंद्र धनी ॥
छं० ॥ १०१ ॥
बर बंक चिलक्क करच्च इसी । घब्ब सीस उग्यौ जनु बाल ससी ॥
जल होत थलं थल होत जलं । सु कही कविराज उपंम भलं ॥
छं० ॥ १०२ ॥
जल सुक्किय ग्यानिय मोह जतं । जल बढ्ढि जलं जर वीरज तं ॥
सम बंच करूर कुरंग दिसा । पुरहे जनु कायर बीर रसा ॥
छं० ॥ १०३ ॥
स बढ़े बल सूर प्रमान रनं । सु मनो बरसें बर घेरि घनं ॥
अरकादि स धुंधर मंत दुरं । सु मनों बिन दानय मान दुरं ॥
छं० ॥ १०४ ॥
छत भंग निसानति बीर बजै । रथ बाज करी करुनान लजै ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलहंत करे किहि चिंत बरं। दुरि इंद्र रह्यौ पय बंधि नरं॥
छं० ॥ १०५ ॥

कुंडलिया (?) ॥ यों लय लग्गो पंग पय। तो पग सजिग सिंगार॥
*श्रवन बत्त संची सुनै। श्रवन सुनै घरियार॥
श्रवन सुनै घरियार। अंध कारिम तन सोहै॥
मिलें पंग तौ पंग। अंग दुज्जन दल गोहै॥
षट विय षोडस जज्ञ जै। जो रजै राज राजे सुतौ॥
.... ॥
विधि बंधन बुधि हरन। देव द्रजोध जोध सौ॥
.... ॥
तौ पंष समह जुद्दह करन। .... ॥
.... ॥ छं० ॥ १०६ ॥

दूहा ॥ पंग छच छिति छांह बर। उभै दीन भय दीन॥
पंग सूर उग्गै सजल। भयौ बीर प्रति मीन॥ छं० ॥ १०७ ॥

जैचन्द की सेना का प्रताप वर्णन।

कवित्त ॥ बन घन षग लग्गीय। हलिय चतुरंग सेन बर॥
यों हल्लिय धर भार। नाव ज्यौं रीति वाय वर॥
यों हल्ले द्रिगपाल। चंद हल्लै ज्यों धज धर॥
बद्दर पवन प्रकार। ध्यान डुल्लेति अगनि धर॥
इह मंत चिंति चहुआन बर। मातुल घर उर षग्ग षिति॥
मंगे जु पंग पहुमी सपति। सुबर बीर भारथ्थ जिति॥ छं०॥ १०८॥

जैचन्द का चहुआन को पकड़ने की तैयारी करना और उधर शहाबुद्दीन को भी उसकाना।

दूहा ॥ सु विधि कीन सज्जिय सयन। ग्रहन चाइ चहुआन॥
तो सुरपुर भंजै नहीं। इह आधार विरान॥ छं० ॥ १०९ ॥

* यह कुंडलिया नहीं वरन दोहा छन्द है परंतु खण्डित है और इसके बाद के कुछ और छन्द भी लोप हुए ज्ञात होते हैं क्योंकि मजमून का सिलसिला टूटता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहुपंग सु भैभीत गति। बीर डंड महि सूर ॥
ते फिरि सूर समान भय। विधि मति रत्ति करूर ॥ छं० ॥ ११० ॥

नव गति नव मति नव सपति। नव सति नव रति मंद ॥
चाहुआन सुरतान सों। फिरि किय पंग सु दंद ॥ छं० ॥ १११ ॥

सत्त अरुझि संकरह ज्यौं। उठी बीर बर बेलि ॥
बढ़न मतें चहुआन रज। बर भारथ्थ सु केलि ॥ छं० ॥ ११२ ॥

कवित्त ॥ भये अभय भय भवन। रजन स्वामित्त सूर नर ॥
तेजल लगै न पंग। सुरस पाई न पंग धर ॥
अग्ग क्रंम क्रम धरिय। क्रंम पच्छा न उचारै ॥
मय मत्ता तिथि पत्त। गयौ बंचै न सुधारै ॥
बर बन बिहस्सि रह सैन कथ। रथ भंजै भंजम सु अरि ॥
डंमरिय डहकि लग्गिय लहकि। दहकि रिदै कायर उसरि ॥
छं० ॥ ११३ ॥

जैचन्द की सेना का दिल्ली राज्य की सीमा की भूमि दबाना और मुख्य मुख्य स्थानों को घेरना।

दूहा ॥ कूरलती सारस सबद। सुरसरीस परि कान ॥
सूर संधि मन बंधि कें। चले बीर रस पान ॥ छं० ॥ ११४ ॥

पद्धरी ॥ अन बुद्ध जुद्ध आबद्ध सूर। बर भिरत मत्त दीस करूर ॥
बर बुद्धि जान आबुद्ध जुद्ध। सामंत सूर बर भंजि सुद्ध ॥
छं० ॥ ११५ ॥

इक्कंत तमसि तेजं करूर। कढ्ढैति दंत गज मंत सूर ॥
बज्जी सु बाह बाहंत वज्र। झिल्लैति वज्र सुगं सु रज्ज ॥
छं० ॥ ११६ ॥

सामंत सूर पति तीन बाहु। चंप्यौति पंग दल गिलन राहु ॥
डह डहक बदन फुल्लै प्रकार। सामंत सूर सन पच भार ॥
छं० ॥ ११७ ॥

कंमोद ओद काइर कुरंग। उग्यौ सु भान पहुपंग जंग ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छिति मिच छच छची न जान। नर लीइ गत्ति ज्यों अगति वाम॥
छं० ॥ ११८ ॥

नव निजरि निकरि नव विघन सूर। जंपै सु चंद बरदाइ पूर॥
छं० ॥ ११९ ॥

कवित्त ॥ भुज पहार चहुआन। उदधि रुक्कवन पंग बर॥
सु दिसि विदिसि वर बोरि। बीर कमधज्ज षग्ग झर॥
अति अथाह उप्पटिय। सलिल सहमत्त सयन बर॥
ध्रम्म जिहाज तिरंत। मंत बैरष्य बंधि भर॥
धर ढारि पारि गढ़ बंक बहु। दिल्ली वै हल्लिय दिसह॥
धनि सूर न्त्रप्प सोमेस सुअ। तुच्छ अथाह प्रवेस दल ॥छं०॥१२०॥

ऐसेही समय पर पृथ्वीराज का शिकार खेलने को जाना।

गोडंडह षल मिच। राज सेवा चुकि ग्यानं॥
ग्यान दगध जोगिंद। कुलट कैरव भगि पानं॥
वयति मध्य तामध्य। मद्दि मोचन अरि रोचन॥
तहां पंग चहुई। पऱ्यौ पारथ नह पोचन॥
भय काल काल संभरि धनी। सुनि अवाज ढिल्ली तजिय॥
मयमंत मयक्कत मोह गति। सुबर जुड जम क्रत लजिय॥
छं० ॥ १२१ ॥

दूहा ॥ तिन तप आषेटक रमै। थिर न रहै चहुआन॥
बर प्रधान जोगिनि पुरह। धर रष्षन परवान॥ छं० ॥ १२२ ॥

कैमास की स्वामिभक्ति।

कवित्त ॥ गय सु रष्षि परधान। थान कयमास मंच वर॥
अति उतंग मति चंग। नदिय नंदन बंदन बर॥
अति उतंग मंचह। अभंग झिल्लै प्रहार कर॥
स्वामि काज स्वामित्त। करन सनमान करन धर॥
दल दृद्दि सु रिधि राजन बलिय। अभै भयंकर बल गरुअ॥
सामंत सूर तिन मंच बर। सबर बीर लग्गौ हरुअ॥ छं० ॥ १२३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली के गढ़ में उपस्थित सामंतों के नाम।

रष्षि कन्ह चौहान। अत्तताई रूई भर॥
रषि तोअर पाहार। बीर पज्जून जून भर॥
रषि निड्डुर रठ्ठौर। रष्षि लंगा बाबारौ॥
षीची रावप्रसंग। लज्ज सांई सिर भारौ॥
दाहिम्म देव दाहरतनौ। उढ्ढिग बाह पगार बर॥
जज्जोनराइ कैमास सँग। एकादस रष्षेति भर॥ छं०॥ १२४॥

जमुना पार करके दवपुर को दहिने देते हुए कन्नौज की फौज का दिल्ली को घेरना।

गौ जंगल जंगली। देस निरवास वास करि॥
जोगिन पुर पहुपंग। दियौ दष्षिना देव फिरि॥
उतरि जमुन पार बीर। देवपुर सुनि षल षड्डौ॥
अद्ध रयनि कल अद्ध। चंद उग्यौ कल अड्डौ॥
अगिवान कन्ह तोंअर बलिय। हलिय सेन नन पंच करि॥
नद गुफा बंक बंकट बिकट। सुबर बैर बर बीर षरि॥ छं०॥ १२५॥

दूहा॥ बिकट भूमि बंकट सुभर। अंगमि पंग नरिंद॥
सो प्रथिराज सु अंगमै। धनि जैचंद नरिंद॥ छं०॥ १२६॥

सामंतों की प्रशंसा और उनका शत्रु सेना से लड़ाई ठानना।

कवित्त॥ जमुन विहड बर विकट। हक्क बज्जिय चावद्दिसि॥
पंग सेन संमूह। सूर कड्ढै संमुह असि॥
तेंही रत्त नरिंद। मुक्कि भग्गों चहुआनं॥
पुंडीरा नीरत्ति। नेह बंध्यौ परिमानं॥
विन स्वामि सब्ब सामंत भर। एक एक बर सहस हुअ॥
अष्षै नरिंद पहुपंग दिसि। धुअ समान सामंत भुअ॥
छं०॥ १२७॥

दूहा॥ अढर ढरहिं अनमन्न महि। ढरहि अठार प्रकार॥
को जयचंदह अंगमै। दोऊ दीन सिर भार॥ छं०॥ १२८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैचन्द की आज्ञानुसार फौज का किले पर गोला उतारना।

कवित्त ॥ आयस पंग नरिंद । गहन उच्चरि संभरि सुर ॥
सबर सूर सामंत । लोह कट्टे बट्टे बर ॥
बीर डक्क सुनि हक्क । बज्जि चावद्दिस झानं ॥
मुष मुष रुष अवलोकि । बीर मत्ते रस पानं ॥
सद मद्द सिंघ छुट्टे तमकि । झमकि हथ्थ सिप्पर लड्डय ॥
दुरजन दुवाह भंजन भिरन । दइ दुवाह उभ्भै दड्डय ॥छं०॥१२९॥

उधर से सामंतों का भी अग्निवर्षा करना।

नराज॥ इयं उवं उअं इयं दुअंत सेन उत्तरं ।
जमी जु गंज मेत जेत बड्डि सिड्डि सुब्भरं ॥
कुसंम किंसु किंसु कंक कस्ति मस्ति मंडयं ॥
मनो मनं मनी मनं मनी मनंत षंडयं ॥ छं० ॥ १३० ॥
जयं जयं जमंन काल व्याल पग्ग उब्भरं ।
मनो मयंक अंक संक काम काल दुब्भरं ॥
झनं झनं झनं झनं ठनंत घंट बज्जयं ।
मनो कि मद्द सद्द रद्द भद्द गज्ज गज्जयं ॥ छं० ॥ १३१ ॥
मनो कि संक काम जाम लाज ताम बद्दयं ।
न्रपत्ति रूप भूप जूप नूप नद्द हद्दयं ॥ छं० ॥ १३२ ॥

घोर युद्ध का आतंक वर्णन।

कवित्त ॥ धक्काई धक्काइ । मग्ग लीना षग मग्गं ॥
षग्गानी झम अग्ग । बीर नीसानति बग्गं ॥
सार झार दिष्षियै । पंग नन दिष्षि नयंनं ॥
भय भयान पिष्षियै । सद्द सुनियै नन कंनं ॥
सुष दुष्ष मोह माया न तह । क्रोध कलह रस पिष्षियै ॥
पारथ्थ कथ्थ भारथ विषम । लष्ष एक सर लष्षियै ॥छं०॥१३३॥

शस्त्र युद्ध का वाक् दर्शन वर्णन।

चोटक ॥ जु मिले चहुआन सु चाइ अनी। करि देव दुवारभ दुंद घनी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रननंकहि बीर नफेरि सुरं। मनो बीर जगावत बीर उरं॥
छं० ॥ १३४ ॥

दुअ स्वामि दुहाइय मुष्प पढ़ै। झलकावति षग्गति हथ्थ कढ़ै॥
तिन मध्यति जोगिनी कूक करै। सुनि सद्द तिम्रंसिय प्रान डरै॥
छं० ॥ १३५ ॥

नचि कंध कमंधन नंचि शिवा। शिव कै उर लग्गि रही न जिवा॥
दिषि नंदिय चंदति मंद हसी। सिव स्वेद सिवा सुर भंग लसी॥
छं० ॥ १३६ ॥

गज षग्ग सु मग्गन यों रमके। सु बजें जनु झंझन के झमके॥
पय बंधि जला जल दिव्य नचै। .... ॥ छं० ॥ १३७॥

परिरंभ अरंभति रंभ बरै। जिनके भर सीस दुभ्भार भरै॥
गज दंतन कढ्ढि सु सस्त्र करै। तिन उप्पर देवन पुष्फ परै॥
छं० ॥ १३८ ॥

उड़ि हंस सु पंजर भग्गि करी। पजरं तिन हंसन फेरि परी॥
अथयौ रथ हंस सु हंस लियं। भर पचनि पंच सु सथ्थ लियं॥
छं० ॥ १३९ ॥

परि डेढ़ हजार तुरंग करी। नरयं भर और गनी न परी॥
छं० ॥ १४० ॥

दूहा ॥ उभय सु षट भारथ परिग। हय गय नर भर बीय॥
मरन अवस्था लोक के। जुग ए जीवन जीय॥ छं० ॥ १४१ ॥

कन्ह के खड्गयुद्ध की प्रशंसा।

फिरिय कन्ह जनु कन्ह गिरि। भिरन भूप भर पंग॥
जनु दव लग्गो चिन वनह। भरहर पंगिय जंग॥ छं० ॥ १४२॥

घोर घमसान युद्ध का वर्णन।

भुजंगी॥ लरै सूर सामंत पंगं समानं। मनों डक्क बज्जै सु भूतं उभानं॥
सुत्रं एक एकं प्रमानंत वाहै। मनों चच्चरी डिंभरू डंड साहै॥
छं० ॥ १४३ ॥

तुटै अंग अंगं तरफ्फंत न्यारे। तिनं देषि कब्बी उपम्मा बिचारे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जलं मानसं तुच्छ जल में विचारी। मनों षेल होहेलुआ देत तारी॥
छं० ॥ १४४ ॥
तुट्टै कधं बंधं उठैं छिंछ रत्ती। कही चंद कब्बी उपम्मा सु रत्ती॥
तरं बेलिबट्टी सु चट्टीन अग्गी। फिरी जानि पच्छी सु पाताल मग्गी॥
छं० ॥ १४५ ॥
पियै चौसठी रुद्रि गज्जं प्रहारं। घुटै घुंट लोही करै छत्यु न्यारं॥
मनों मोर वंध्यौति मोरंत अष्षै। फरस्सी कपूरं मनों मुष्ष नंषै॥
छं० ॥ १४६ ॥
तुटै बीरमं बीर बंसी निनारै। दलं मध्य सोहै मनों मुक्ति भारै॥
प्रजा पत्ति दच्छं जचै ईस अग्गै। भजै पुब्ब बैरं फिरै सीस मग्गै॥
छं० ॥ १४७ ॥
उड़ै षग्ग मग्गं तुट्टै सीस सज्जै। जंपै भंषि केकी मनों मीन बज्जै॥
तुटी दंत दंतीन के दंत लग्गी। मनों चंच हंसी म्रनालंति षग्गी॥
छं० ॥ १४८ ॥
फुलै भान दिष्षै अरुन्नं समेतं। मनों तारका राह गुर काल हेतं॥
छं० ॥ १४९ ॥

कुंडलिया॥ सार प्रहारति सार झर। वरन विहसि दछिराज॥
सो दिष्यौ भारथ्थ में। कथ्थ कहिग सिरताज॥
कथ्थ कहिग सिरताज। सार सम्हौ सहि बीरं॥
धार षग्ग उभ्भरी। मुष्ष उभ्भरि नह नीरं॥
मवति मत्ति उज्जली। बीर बीरह लगि वारं॥
गजदंती विच्छुरै। सूर 'टुट्टै धर सारं॥ छं० ॥ १५० ॥

दिल्ली की सेना के साथ चित्तौर की कुमक का आ मिलना।

कवित्त॥ सुव्रत पंग आभंग। रंग रवनी रवनंगन॥
मो व्रत अंगम काल। अंग अंगमै देव धन॥
सार धार देवत्त। देव दुज्जन दावानल॥
पंग सहायक सूर। वीर मारुत मारुत कल॥

(२) ए..ढुंढै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चहुआन वैर चित्तंग दोउ। दुअ सज्जन बंधी अनी ॥
पूजै न कोइ भारथ्थ में। नव निसान जुद्धं पनी॥ छं०॥ १५१॥

राजा जैचन्द का जोश में आकर युद्ध करना और उस की फौज का उत्साह।

भुजंगी॥ झुक्यौ पंगराजं प्रकारं प्रकारं। मनो सूर वृष रासि उग्यौति सारं॥
महा तेज मुष रत्त द्रग बीर लक्षै। भयं छंडि भूपाल अलि थान हक्षै॥
छं०॥ १५२॥

मनों जोगमाया जुगं जुद्ध तारं। झुक्यौ पंग पंगं सुलब्भै न पारं॥
न जानं न जानं न जानंत सेनं। तिहूं लोक पंगंति सेनं समेनं॥
छं०॥ १५३॥

तितंची तितंची तितंची प्रकारं। मनों उज्जलं सूर ज्यों पंग धारं॥
दिषै भूमि नाहीं अनी सेन देषै। घनं बद्दलं मद्धि षन्दं विसेषै॥
छं०॥ १५४॥

तजै तारुनी तार अहकार तारं। इसे सार सों सार बज्जै करारं॥
ततथ्थे ततथ्थे तथुंगं चिनेतं। रहै कोन अभिमंन रावत्त हेतं॥
छं०॥ १५५॥

महाबीर बंके भयं ढिग्ग दूरं। तिने उपम्मा चंद ससि सैस सूरं॥
प्रलै ते प्रलैकाल पंकीति मेघे। मनो द्वादसं भान छुट्टै प्रसेघे॥
छं०॥ १५६॥

दुहै तोन बंधे सुरं तीन जोधं। तिनं बालुकी बुद्धि ब्रह्मा विवोधं॥
छं०॥ १५७॥

साटक॥ सासोधं पहुपंग पंगुर गुरं, नागं नरं नर सुरं॥
सब्बं भै विधि भानं मान तजयं, अष्टा दिसा पालयं॥
भूपाले भूपाल पालन अरिं, संसारनं सारियं॥
सोयं सा तिहुकाल अंगमि गुरं, नं काल कालं गुरं॥ छं०॥ १५८॥

जैचन्द का प्रताप वर्णन।

कवित्त॥ हय गय नर थर अरुरि। सरुरि सज्जिय सनाह बर॥
ज्यों द्रप्पन भूडोल। सिंभ विभ्भूत धरा धर॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुकर मध्य प्रतिबिंब। अग्नि मझे सु सांत सधि ॥
....
पहुपंग सेन सजि सुक्रित बर। बजि निसान उन मान रिन ॥
अंगमै कोन पहुपंग कौ। धीर छंडि बीरह तपन ॥ छं० ॥ १५९ ॥

कैमास का राजा पृथ्वीराज के पास समाचार भेजना।

कुंडलिया ॥ सुनि अवाज संभरि सुबर। ग्रह न रहै गुरराज ॥
ज्यौं दैवत्त सु अंगमै। सो पहुपंग विराज ॥
सो पहुपंग विराज। बीर बुल्लै प्रतिभासं ॥
मंत्री बर संभऱ्यौ। राज पुछ्यौ कैमासं ॥
गह वारुअ गुर घरिय। प्रीत प्रत्तह प्रति प्रतिपनि ॥
इय मुलतान सु जान। राज ऐसी अवाज सुनि ॥ छं० ॥ १६० ॥

कन्नौज की सेना का जमुना किनारे मोरचा बांधना और इधर से सामंतों का सन्नद्ध होना।

कवित्त ॥ जमुन बिहड़ गहि विकट। निकट रोकै पहुपंगं ॥
सार धार चहुआन। पान बंधें प्रति जंगं ॥
सुनत सिद्धि विधि समति। लोह कढ्यौ प्रति दैवै ॥
मवन मत्त चहुआन। राज बंध्या ढिल्लीवै ॥
रहि सब्ब सूर सामंत बर। गहिग ठौर बंकट करस ॥
न्रप राज कमंधन सुनि भए। अंमर कै अंमर अरस ॥छं०॥१६१॥

निढ्ढुर और कन्ह का भाईचारा कथन।

दूहा ॥ भैया निढ्डुरराइ बल। तिन बल कन्ह नरिंद ॥
तिन समान जौ देषियै। तौंवर लिषियै कंद ॥ छं० ॥ १६२ ॥

भान के पुत्र का कहना कि राजा भाग गया तो हम क्या प्राण दें? इस पर अन्य सामंतों का कहना कि हम वीर धर्म के लिये लड़ेंगे।

दूहा ॥ हम बंधे बर तेक बर। तूं मुक्के धर राज ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिय अंगमै सु अप्पनौ। भान पुत्त किं काज ॥ छं० ॥ १६३ ॥

कवित्त ॥ कहै सूर सामंत। सुनहि वर पुहमि ईस बर ॥
अप अंगमै सु जीव। पुत्त बंधहति भान बर ॥
जोग जोइ अंगमैं। नेह नारी नह रष्षै ॥
बीर राग आनंद। राज तिन हत्त विसष्षै ॥
लिष्षवै सोइ जीवत्त वर। सुहत्त बत्त लिष्षै न बर ॥
तिन काज सूर सामंत बर। राज बरजि बरजियति गुर ॥
छं० ॥ १६४ ॥

यह समाचार पाकर जैचन्द का अपने में सलाह करना।

दूहा ॥ गुरु अत गुरु ज्ञानी न विधि। रिधि रष्षन कमधज्ज ॥
तिहित बीर पहुपंग सुनि। मतौ मत्ति कमधज्ज ॥ छं० ॥ १६५ ॥

सामंतों का एका करके सलाह करना कि किला न छोड़ा जावे।

कवित्त ॥ व्यंजं वरन कवित्त। जंपि कन्हा चहुआनं ॥
वर रट्ठौर नरिंद। राव निड्डुर उनमानं ॥
गरुअ गब्ब गहिलोत। मतै कैमासह सूरं ॥
मतै डिट्ठ कैमास। चंद डिढ़ कलहति सूरं ॥
तिन मझ्झ रिनह नर सिंह बलि। रेनराम रावत्त गुर ॥
सामंत सूर सामंत गति। कौन बीर बंधैति धुर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

सामंतों की पुरैन पत्र से उपमा वर्णन।

दूहा ॥ तऊ सुमत इन मत्त किय। भयन तजिय भय राज ॥
पंगानी डर सुजल मधि। भए सतपच विराज ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सुबर बीर सतपच छर। पंग नीर प्रति बढ्ढ ॥
सुबर बीर प्रथिराज कौ। अंग अहत न चढ्ढ ॥ छं० ॥ १६८ ॥

गाथा ॥ जंमुक्का पहुपंगं। तेछचीय सूर बीराइं ॥
माहं चवथि प्रमानं। साछिप्पीय लोययं सब्बं ॥ छं० ॥ १६९ ॥

कन्नौज की फौज का किले पर धावा करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जंबंघा चथ्या चहुआनं। षग्गं सेनाय पंगयं दलयं॥
बालं ससी प्रमानं। सा बंदैस दीन उभयाइं॥ छं०॥ १७०॥
कवित्त॥ स्वामि ध्रम्म रत्ते। सुमंत लग्गै असमानं॥
अजुत जुद्ध आरुद्ध। बीर मत्त रस पानं॥
हथ्थ थकत श्रम करहि। मनति श्रम सौं उच्चारहिं॥
.... । .... ॥
धरि धार भार हरि हरुअ घट। कऱ्यौ घट्ट गरुअत्त जुर॥
इन परत सूर सामंत रिन। लऱ्यौ न को फिरि बहुरि भर॥छं०॥१७१॥
दूहा॥ बंदिय बल जिन निय न्रपति। न्रपन मजाद उलंघि॥
कपि साधन रघुवंस दल। ज्यौं दैवत्त प्रसंग॥ छं०॥ १७२॥

दिल्ली घेरे जाने की बात सुन कर पृथ्वीराज का दिल्ली आना।

बाघा॥ संभरि बत्त जु पंग अवन्नं। बीर बिरा रस बढ्ढिय कंनं॥
है गै मै गै मत्त प्रमानं। उग्गिय जान कि बारह भानं॥छं॥१७३॥
लंबिय बाह कषाइत नैनं। गुंज्या सिंह लग्या सिर गैनं॥
है दल पैदल गैदल गढ्ढं। सूर सनाह सनाह सबढ्ढं॥ छं०॥१७४॥
यौं रच्चै पहुपंगति सारं। कच्छे जोग जु गिंद्र विधारं॥
मत्त निरत्त अमत्त निसानं। गज्जे ज्यौं आषाढ़ प्रमानं॥छं०॥१७५॥
को अभिनंतु रहै रन षग्गं। सो दिष्षं चियलोक न मग्गं॥
धारै कंध वराहति रूपं। रहै अग्र नन डढ्ढति भूपं॥छं०॥१७६॥
सयल गयल चिहुं दिसान धावहि। कहै राज ढिल्ली गढ़ ढावहि॥
रत्ते नैन कषाइत अंगं। जानि विरच्चिय बीरति जंगं॥
छं०॥ १७७॥
नंचै भैरव रुद्र प्रकारं। जानि नटी नट रंभ प्रकारं॥
अग्गें होइ गिवान मुनारं। बंघा ज्यौं बर कोटति सारं॥
छं०॥ १७८॥
ढाहै गाहै साहै राजं। मानों सासुद्र बांधे पाजं॥
उठ्ठी मुंछ धरा लगि गैनं। बंक ससी सरि राजत मैनं॥ छं०॥ १७९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भषै दान प्रोहित्त राजं । अप्पै मेर सुमेरति साजं ॥
यों कीनी धर पंगति सावं । जै जै वाय सु वायति नावं ॥
छं० ॥ १८० ॥

धावै दल मलिनं पहुपंगं । बूड़त नाव नीर गुन रंगं ॥
यों धाए पहुपंग सयंनं । मंस काज दीपी उनमंनं ॥
छं० ॥ १८१ ॥

वार धुरा धरयौ भर हल्ली । वाय विषंम पात बहु यल्ली ॥
एहि प्रकार चव्यौ चित राजं । कहि ढिल्ली ढिल्ली उन काजं ॥
छं० ॥ १८२ ॥

पृथ्वीराज के आने से कन्नौज की सेना का घबड़ाना ।

दूहा ॥ जा ढिल्ली ढिल्ली धनीं । दल हल्लिय पहुपंग ॥
मानो उत्तर वाय ते । चावद्दिसा विभंग ॥ छं० ॥ १८३ ॥

बाहरी तरफ से पृथ्वीराज का आक्रमण करना ।

कवित्त ॥ संमुह सेन प्रचंड । पंग सज्जी चतुरंगनि ॥
ज्यौं उग्गै हष सूर । बैर करि तपै कमोदनि ॥
सुबर सोभ कविचंद । हितू चक्रवाक प्रकारं ॥
बरै विरह बिरहनी । हेत उड़गन ससि सारं ॥
सा बैर नैर नारिय निकट । विकट कंत विछुरहि बधुअ ॥
बहुपंग राव राजन बली । सजी सेन सेनह सु भुअ ॥ छं० ॥ १८४ ॥

दो दल के बीच दब कर कन्नौज की फौज का चलचित्त होना ।

कुंडलिया ॥ बंधि कविज्जै बीय बर । दिसि दच्छिन अरु पुब्ब ॥
सुबर बीर सम्हो भिरिग । करि भारथ्थ अपुब्ब ॥
करि भारथ्थ अपुब्ब । कोन अंगम षल षोलै ॥
मार मार उच्चारि । असिर अवसानति डोलै ॥
सो भग्गा घट सेन । माग आकारति संध्यौ ॥
चीय लच्छि तजि मोह । मरन केवल मग बंध्यौ ॥ छं० ॥ १८५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ संभरि जुद्ध अरुद्ध गति। बर बिरुद्ध रति राज ॥
चाहुआन चंपी अनी। सब संती सिरताज ॥ छं० ॥ १८६ ॥

युद्ध वर्णन।

कवित्त ॥ सुबर बीर आरुहिय। बीर हक्कै चावद्दिसि ॥
मत्त सार बरषंत। बीर नचद्दंत मंत कसि ॥
बंको असि के सुद्ध। केय लंबी उब्भारैं ॥
घात षंभ निरघात। जानि झल्लरि झल्लारैं ॥
बुट्टंत रस न संनाह पर। अबुठि बुट्ठि पच्छें परैं ॥
मानों कि सोम पारध्य यों। बर चंनं नन विथ्थुरैं ॥छं०॥१८७॥

इस युद्ध में मारे गए सामंतों के नाम।

परिग सुभर नारेन। रूप नर रष्षि बंधि बिय ॥
परिग सूर पामार। नाम पूरन्न पूर किय ॥
बघ्घसिंघ बिय पुत्त। परे हरसिंघ सु मोरिय ॥
पऱ्यौ सूर सूरिमा। सेन पंगह ढंढोरिय ॥
बग्गरी बीर बारुड़ हरिय। मुकति मग्ग षोली दरिय ॥
दह परिग भिरिग भंजिग अरिय। ब्रह्मलोक घर फिरि करिय ॥
छं० ॥ १८८ ॥

पऱ्यौ भीम भट्टी भुआल। बंधव नाराइन ॥
पऱ्यौ राव जैतसी। भयौ अजमेर पराइन ॥
परि जंघारौ जोध। कन्ह छोकर अधिकारिय ॥
सरग मग्ग जित्तयौ। ब्रह्म पायौ ब्रह्मचारिय ॥
भौ भंग बंक संके दुते। जुद्ध घात घातं सु रन ॥
आवरत सूर पहुपंग दल। सुबर बीर संमर अरन ॥ १८९ ॥

जैचन्द के चौसठ बीर मुखियाओं की मृत्यु।

दूहा ॥ घाव परिग सामंत सह। सुबर सूर सिसु सास ॥
इन जीवत चहुआन निज। फिरि मंडी धर आस ॥ छं० ॥ १९० ॥
चौ अग्गानी सट्ठि परि। डोला पंग नरिंद ॥
हलकि जमुन जल उत्तरिग। कहिग कथ्थ कविचंद ॥ छं० ॥ १९१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केहरि बर कंठेरिया। डोला मध्य नरिंद॥
दंद गमाए जमुन कह। कहि फिरि मंडे दंद॥ छं०॥ १९२॥

जैचन्द का घेरा छोड़ कर चले जाना।

आतुर पंग नरिंद षरि। जमुन विहड़ तजि बंक॥
धर पद्धर ग्रह विकट तजि। जुग्गिनि पुर ग्रह संक॥ छं०॥ १९३॥

स्वामिभक्त वीरों की वीर मृत्यु की प्रशंसा।

भुजंगी॥ क्रमं क्रम्म कट्टे क्रमं तंति सत्त्वं। रनं निर्वसीयं निवासीय तत्त्वं॥
छिती छत्र भेदं अभेदंति सारं। तिनं जोग मग्गीय लभ्भै न पारं॥
छं०॥ १९४॥

कवित्त॥ जोग मग्ग उथ्थापि। थप्पि मुगती धर धारं॥
सहस बरस तप करै। मुगति लभ्भै न सु पारं।
छिनक षग्ग मग अंग। जंग सोई क्रत छंडै॥
धार धार विस्तरै। मुक्ति धामह धर मंडै॥
धर परै बहुरि संगी न [1]को। तिन तिनुका सब नेह मनि॥
रजक्रम्म भासयं देह सब। सुनहु सूर कबिचंद भनि॥ छं०॥ १९५॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके सामंत पंगजुद्ध नाम पचपनवों प्रस्ताव संपूर्णम्॥ ५५॥

(१) "संगी को" पाठ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ समर पंग जुद्ध नाम प्रस्ताव लिष्यते।

(छप्पनवां समय।)

जैचन्द का चित्तौर पर चढ़ाई करना।

दूहा ॥ तरउप्पर धर पंग करि। जुग्गनि पुर सहदेस ॥
चित्रंगी उप्पर तमकि। चढ़ि पंगुरो नरेस ॥ छं० ॥ १ ॥

पद्धरी ॥ चित चिंति चित्त चित्रंग देस। चढ़ि चल्यौ स गुरि पंगुर नरेस ॥
दिसि संकि दिसा दस कंपि थान। कलमलिय सेस गय संकि पान ॥
छं० ॥ २ ॥

धुम्मलिय विदिसि दिसि परि अँधेर। उरझै कुरंग प्रज्जरह नैर ॥
मिटि भान थान तजि रहिय तक्कि। अरि घरनि अटनि रहि लटकि थक्कि॥
छं० ॥ ३ ॥

बज्जै निसान सुर मान सद्द। सुत ब्रह्म रीझ कढ्ढंति हद्द ॥
बिप्फुरहि कित्ति कमधज्ज सूर। नन रहत मान सुनतह करूर ॥
छं० ॥ ४ ॥

जैचन्द की चढ़ाई का समाचार पाकर समरसी जी का सन्नद्ध होना।

कवित्त ॥ श्रवन सुनिग समरेस। पंग आवाज बीर सुर ॥
अति अनंद मति चंद। दंद भंजन सु अरिन धर ॥
बजि निसान घुम्मरिय। चित्त अंकुरिय बीर रस ॥
मोह कोह छिति छांह। मुक्ति मंग्यौ जुअंग जस ॥
श्रुत सील तत्त द्रिग चित अचल। चलं हथ्थ उर बिप्फुरहिं ॥
चित्रंग राव रावर समर। भिरन सुमत मत्तह करहि ॥ छं० ॥ ५ ॥

युद्ध की तय्यारी जान कर दरवारी योद्धाओं का परस्पर वार्तालाप करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरिल्ल ॥ सकल लोग मत जे बर जानिय। समर समय समरह परिमानिय ॥
अप्प बचन सुष तूल [1]प्रकासिय। सकल लोय गुरु जन परिभासिय ॥
छं० ॥ ६ ॥

सकल लोक मन सोच विचारिय। तत्त बचन मत्तह उच्चारिय ॥
एक कहत भारथ्थ अपुब्बं। एक कहत जीवन सुष सब्बं ॥
छं० ॥ ७ ॥

दूहा ॥ एकं कहत सुष मुगति है। एक कहै सुष लाज ॥
एक कहै सुष जियन रस। जस गुर तस मति साज ॥ छं० ॥ ८ ॥

साटक ॥ यस्या जीवन जन्म मुक्ति तरसं। तस्या ननं वै [2]सुषं ॥
नैवं नैव कलानि मुक्ति तरसं। सुष्यंति नरके नरं ॥
धन्यो तस्यय जीव जन्म धनयं। माता पिता सत्गुरं ॥
सो संसार अवृत्त कारन मिदं। सुम्राय सुम्रंतरं ॥ छं० ॥ ९ ॥

अरिल्ल ॥ अंतर त्यागिय अंतर बोधिय। बाहिर संगिय लोग प्रमोधिय ॥
एकय एक अनेक प्रकारं। समर राव भारथ्थ उचारं ॥ छं० ॥ १० ॥

रावल जी का वीर और ज्ञानमय व्याख्यान।

दूहा ॥ समर राव भारथ्थ मति। ग्यान गुझ्झ उच्चार ॥
जहति प्रान पवनह रमे। मुगति लभ्भ संसार ॥ छं० ॥ ११ ॥

योग ज्ञान वर्णन।

त्रिभंगी ॥ तन पंच प्रकारं, कहि समरारं, तत उच्चारं, तिद्धारं ॥
सुति ग्यान प्रसंसं, नसयति संसं, वसयति हंसं, जिद्धारं ॥
मन पंच दुआरं, भमय निनारं, रुक्कि सबारं, अनहद्दं ॥
सुरक्कन्न सबद्दं, चिंतय जद्दं, नासिक तद्दं, तन भद्दं ॥ छं० ॥ १२ ॥
गुरु गम्य सु थानं, चिंतियध्यानं, ब्रह्म गियानं, रमि सोयं ॥
मन सून्य रमंतं, झिलिमिलि मंतं, नन भुलि जंतं, सो जोयं ॥
तजि कामय क्रोधं, गुर वच सोधं, संझित वीधं, सब्बानं ॥

(१) ए.-प्रकारिय। (२) ए.-सुषं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंगुष्ट प्रमानं, भौंह विचानं, निगम न जानं, तिज्जानं॥ छं० ॥ १३ ॥
गुर सुष्यय बत्तं, चिंतिय गत्तं, सिद्ध रमंतं, मुनि मोती ॥
षह महयं थानं, पिंड समानं, मंडि सु ध्यानं, दिठ जोती ॥
जब लष्यिय रूपं, भजि भ्रम कूपं, दीपक नूपं, सो भूपं ॥
तब नंसिय संसं, मुक्ति रमंसं, जोगय जं सं, सो रूपं॥ छं० ॥ १४ ॥

मनुष्य के मन की वृत्ति वर्णन।

दूहा ॥ कलिय काल कालन कलिय । बल भ्रम्मह बल चित्त ॥
समरसिंह रावर समर । ग्यान बुद्धि गुरु हित्त ॥ छं० ॥ १५ ॥
घरी एक घट सुष्य में । घरी एक दुष थान ॥
घरी एक जोगह सलै। घरि इक मोह समान ॥ छं० ॥ १६ ॥
छिन छिन में मन अप्पनौ । मति बिय बीय रमंत ॥
चिचंगी रावर समर । तिन बेरा चितवंत ॥ छं० ॥ १७ ॥

रावल जी का निज मंत्री प्रति शारीरिक ज्ञान कथन और अमर समाधि का क्रम वर्णन।

पंच तत्व तन मांहि बसहि । कोठा सत्तरि दोइ ॥
तत्त असिय रावर समर । मंचनि जंपत होइ ॥ छं० ॥ १८ ॥
उभय सेन संमुह सजे । चिचंगी पंगान ॥
समर समय रावर समर । मंचिन जंपत ग्यान ॥ छं० ॥ १९ ॥

रावल जी की समुद्र से उपमा वर्णन।

सर समुद चिचंगपति । बुद्धि तरंग अपार ॥
तर्क मीन भेदन भमर । ब्रह्म सु मध्य भँडार ॥ छं० ॥ २० ॥
षग षारौ लज्जा सु जल । विद्या रतन बषान ॥
आनि जीव परमातमा । आतम [१]पालन ग्यान ॥ छं० ॥ २१ ॥

जीवन समय की दिवस और रात्रि से उपमा वर्णन।

(१) कृ. को.-पालत ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्धरी ॥ जोगंग जुगति जे अंग जानि। कहि चंद चंद सम [1]भनत भान ॥
सब देह जीव धर लषि विनान। धर टंकि बस्त राषन परान ॥
छं० ॥ २२ ॥
मध्यान प्रात लषि संझ मान। भ्रमि जाइ काल रष्षै छिपान ॥
पूरन्न ग्यान जब प्रगट आइ। ब्रहमंड देह कर धर बताइ ॥
छं० ॥ २३ ॥
आवंत काल सहजह लिषाइ। तब पूर्न तत्व केवल लगाइ ॥
चिंतंत स्याम तन पट्ट पीत। टरि जाइ काल भय अमर मीत ॥
छं० ॥ २४ ॥
तिहु काल काल टारन उपाय। हरि रूप रिदय इन ध्यान ध्याय ॥
जब ग्रसन समय संझया प्रकार। चिंतियै सेत धुंमर अपार ॥
छं० ॥ २५ ॥
उपदेस गुरह लषि प्रात गात। जिन धरत ध्यान भुल्लहि सनात ॥
चिंतियै जोति सुभ कर्म सिद्ध। झर दीप कूल ठहराइ मद्धि ॥
छं० ॥ २६ ॥
अष्टमी बीय पंचमी थान। कै टहितिकाल मुनि जोर वान ॥
पूरन्न पान ताटंक माल। तन धरै धवल दिष्षिय विसाल ॥ छं० ॥ २७ ॥
तन लषै सुद्धि नह बिय प्रकार। जनु भयौ ब्रह्म इच्छा भँडार ॥
रेचक कुंभ ताटंक पूर। जो गंग जुगति इह जतन मूर ॥
छं० ॥ २८ ॥
*षग मंग कहै चिचंग राव। मन सुद्ध समर पूरन्न भाव ॥
छं० ॥ २९ ॥
दूहा ॥ अंग समुद दोऊ समर। षग हिलोर छिति पान ॥
फिरि पुच्छत आहुट्ठ पति। तत्त मत्त निरवान ॥ छं० ॥ ३० ॥

कनकराय रघुवंसी का मानसिक वृत्ति के विषय में प्रश्न करना।

(१) रू. को.-मनत।

* यहां के कुछ (दो या तीन) छन्द नष्ट हो गए जान पड़ते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ फुनि पुच्छै फिरि ग्यान । कनक केवल रघुबंसी ॥
मोहि एक आचिज्ज । तुम सु उत्तर भ्रम नंसी ॥
घरी मध्य आनदं । धरी वैराग प्रमानं ॥
घरिय मध्य मति दान । घरिय सिनगार समानं ॥
वैराग जोग शृंगार कब । दइय दरिद्रय विग्रहत ॥
चित्रंग राव रावर चवै । अंतकाल मति उग्रहत ॥ छं० ॥ ३१ ॥

गाथा ॥ केवल मत्ति सउत्तं । चित्तं चित्रंग मत्ति उनमानं ॥
कहि जोगिंद सुराइं । प्रानं वसि गच्छ कंठामं ॥ छं० ॥ ३२ ॥

रावल समरसी जी का, हृदय कुंडली और उस पर मन के परिभ्रमण करने का वर्णन करना ।

चोटक ॥ सु कहै रघुवंसिय रावरयं । सुनि बत्त सु भ्रंम न लावनयं ॥
पुब दष्षिन उत्तर पच्छिमयं । अगनै वरु वाय विसष्षनयं ॥
छं० ॥ ३३ ॥

नयरत्ति इसानय कन्न धरं । इह अष्ट दिसा दिषि तत्त परं ॥
सु तड़ाग तनं सुष दुष्ष भरं । तहँ पंकज एक रहै उघरं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

दिसि पूरब पंत कमल्ल सुरं । तिन रत्तरि पंषुरि इन्न धरं ॥
तिहि षंम वसै मन आइ नरं । सु कह्यौ तु अचित्त सु चित्त धरं ॥
छं० ॥ ३५ ॥

गुरु बुद्धि कल्यान रु दान मती । वर भोगव बुद्धि सुक्रम्म गती ॥
अगिनेव दिसा दिसि पंषुरियं । तहां नोल बरन्नह उघ्घरियं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

तहां यद्यपि आइ बसै मनयं । तिय दोष बढ़ै मरनं तनयं ॥
दिसि उत्तर पंषुरियं [1]सुररं । तहां पीतह रंग सु इन्न धरं ॥
छं० ॥ ३७ ॥

उघरै प्रति क्रम्मय क्रम्म गती । तजि भोगय जोग गहै सु मती ॥

(१) कृ. को.-सुररं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नयरत्ति निरत्तय धुंमरियं। नभ भ्रम्मि रहै तन घुम्मरियं॥
छं०॥ ३८॥
पच्छिम दिसि नील बरन्न करं। तहां प्रात पुरष्ष सजै समरं॥
दिस बायवयं बनि कृष्ण रँगं। दुरबुद्धि ग्रहै तस अंस अगं॥
छं०॥ ३९॥
दिसि दष्षिन उज्जल हन्न धरं। सजि सातुक मत्ति ततं अमरं॥
ईसायन यं रंग सुक्कसयं। उपजै सु उचाट मनं नभयं॥
छं०॥ ४०॥
ब्रह्म मंडय पंढ कहै गुरयं। घर मद्धि अनेक मनं सुरयं॥
मन हथ्य करै प्रथमं मनुषं। हुअ निर्भरयं तन बद्धि सुषं॥
छं०॥ ४१॥
जिम दीपक बात बसं हलयं। इम क्रम्मय चिंत नरं चलयं॥
मन हथ्य भयें सब हथ्य भयौ। प्रगटै तन जोति रु अंध गयौ॥
छं०॥ ४२॥

रावल जी का मन को वश करने का उपदेश करना।

कवित्त॥ मुगति कठिन मारग्ग। क्रम्म छुट्टै न पंच बर॥
मन लिप्पै मन छिपै मन। सु अवतरै घरघ्घर॥
मन बंधै क्रम राज। मन सु क्रम जमय छुड़ावै॥
मन साषी सुष दुष्ष। मनइ जावै मन आवै॥
मन होइ ग्यान अग्यान तजि। गुर उपदेसह संचरै॥
मन प्रथम अप्प बसि किज्जियै। समर सिंघ इम उच्चरै॥छं०॥४३॥
दूहा॥ समर सिंह भारथ्थ में। जोग इहै गुन जान॥
सो निकस्यौ भर समर तें। को जिन करौ गुमान॥ छं०॥ ४४॥

ढुंढाराय का कहना कि राजा का धर्म राज्य की रक्षा करना है।

कवित्त॥ तब ढुंढारह राइ। मत्त मन बत्त सु कघ्यिय॥
समर सिंघ रावरह। समर साहस गति पघ्यिय॥
तुम बीरन गंजागि। भूप साहस रस पाइय॥
भारथ्था रजपूत। स्वामि आचारा धाइय॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आचार धार भरथ्य मति। तत्त बत्त जानौ जुगति॥
अग्गै सु पंग अनभंग सजि। राज रष्षि कीजै सुमति॥छं०॥४५॥

मंत्री का कहना कि सबल से वैर करना बुरा है।

दूहा॥ कहै मंत्रि भर समर सुनि। सरभर करि संग्राम॥
सबला सूं मंडत कलह। धर भर छिज्जै ताम॥ छं०॥ ४६॥

रावल जी का उत्तर देना।

कह्हि मंत्री रावर समर। सुनि मंत्री बर बेंन॥
तमकि तेग तन तोक बंधि। करि रत्ते बर नेंन॥ छं०॥ ४७॥

चौपाई॥ ससिर रित्त रित राजह संधि। गम आगम सित उष्ण प्रबंधि॥
तपति सूर रत्ते रन रंगं। दुरिग सीत भगि कायर अंगं॥
छं०॥ ४८॥

रावल जी का सुमंत प्रमार से मत पूछना।

दूहा॥ बंधि परिग्गह गुर जनह। मंत्री सजन सु इष्ट॥
भृत्त सु लोइ पुच्छै न्वपति। सुमति सुमंच अदिष्ट॥ छं०॥ ४९॥

सुमंत का उत्तर देना कि तेज बड़ा है न कि आकार प्रकार।

कवित्त॥ सुनि सुमंत पंमार। इक्क गरुडहु रु नगन गन॥
अगस्ति एक सायर सु। इंद्र इक्कै रु कूट घन॥
निसचर घन काली सु। पंच पंडव रु लष्ष अरि॥
तारक चंद अनेक। राह चंपै सु वसन जुरि॥
मद करी जुथ्थ पंचाइनह। मत्त एक धक्कह वहै॥
चिचंग राव रावर कहै। अतत मंत मंत्री कहै॥ छं०॥ ५०॥

सिंह जू का रात्रि को छापा मारने की सलाह देना।

कवित्त॥ स्वामि बचन सुनि सिंह। जूह रतिबाह विचारिय॥
सबला सों संग्राम। भार भारथ्थ उतारिय॥
जं जानैं सब कोइ। जीभ जंपै जस लोइय॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरि भंजै तन भजै। टरै दीहंतन दोइय ॥
आघाय घाय घट निग्घटै। हय गय हय मंचै रव न ॥
भंजै न भ्रम्म जम्मन मरन। तत्त मंत सद्दै रवन ॥ छं० ॥ ५१ ॥

रावल समरसिंह जी का कहना कि दिन को युद्ध कर स्वच्छ कीर्ति संपादन करनी चाहिए।

समरसिंह रावर नरिंद। रति उथपि दीह थपि ॥
दीह धवल दिसि धवल। धवल उट्ठहि सु मंच जपि ॥
धवल दिब्य सुनि कन्न। धवल कढ्ढ़ै धवली असि ॥
धवल वृषभ चढ़ि धवल। धवल बंधै सु ब्रह्म बसि ॥
धवलही लीह जस विस्तरै। धवल सेद संमुष लरै ॥
यों करौं धवल जस उब्बरै। धवल धवल बंधै बरै ॥ छं० ॥ ५२ ॥

सुनिय मंच बर मंच। गुज्झ गामार मंच सुनि ॥
जनम लभ्भ सोइ कित्ति। कित्ति भंजियै तनह फुनि ॥
जु कछु अंत न्रिमयौ। कहै सब माया मेरी ॥
मरत न माया कहै। निमष चलहु न मुष हेरी ॥
पहु जग्ग दान अप्पन सुगति। जुगति मोह भंजै भरै ॥
भोगवौ दुष्ष जीवत बहुत। जु कछु कहौ जिन उब्बरै ॥छं०॥५३॥

चढ़ाई के समय चतुरंगिनी सेना की सजावट वर्णन।

चोटक ॥ जु सुनं धनि बैन प्रमान धरं। चढ़ि संमुष पंग नरिंद घरं ॥
सजि सूर सनाह सुरंग अनी। सु कछै जनु जोग जुगिंद रनी ॥
छं० ॥ ५४ ॥

बर बंक तिलक्क चिलक्क रसी। घन मद्धि उग्यौ जनु बाल ससी ॥
सह बीर बिराजि सनाह इयं। जनु राहह बंधि सु भान दियं ॥
छं० ॥ ५५ ॥

सब सेन सु सिंगियनाद कियं। सुर मोहि सिवापति दंद दियं ॥
जुग वह निबंधि सनाह कसी। उर नह चिषंडिय बद्दर सी ॥
छं० ॥ ५६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजि बीर अनेक प्रकार सुरं। हर चूर चमंकति गंग बरं।
बजि बीरन नद्द सु सद्द रजं। सु उलद्दति मद्दति भद्द गजं॥
छं० ॥ ५७ ॥

सहनाइ नफेरि अनेक सुरं। बर बज्जि छतीस निसान घुरं॥
दुति देव वसिष्ट निसाचरयं। जम तेज सु बंधन निद्ढुरयं॥
छं० ॥ ५८ ॥

चितरंगपती चतुरंग सजी। तिन दिष्षत पंति समुद्द लजी॥
चतुरंग चमू चमकंत दिसं। पहुपंड निसान दिसा कु रसं॥
छं० ॥ ५९ ॥

नल बज्जि हयं बहु सद्द रजे। पटतार मनों कठतार बजे॥
घन घुघ्घर पष्षर बज्जि करी। सुर बंधि सुरप्पति चित्त हरी॥
छं० ॥ ६० ॥

*चान्द्रायन ॥ बिधि विनान चतुरंग ति, सज्जि रुहल्लि हय।
समर समर दिसि रज्जि, बाल अरु वृद्ध वय॥
उद्यौ छच नयजानिय, मानिय पंग न्रिय।
कढ्ढि लोह बढ्ढि कोह, समाहिरु बीर वय॥ छं० ॥ ६१ ॥

युद्ध वर्णन।

रसावला ॥ कटै लोह सारं, विहथ्थंति भारं। तुटै सार भारं, सरोसं प्रहारं॥
छं० ॥ ६२ ॥

करै मार मारं, सद्धरं पचारं। जगी क्रूक वारं, उड़ें छिछ सारं॥
छं० ॥ ६३ ॥

सु नंदी हकारं, कटं कंध पारं। कमद्धं निनारं, रुधिं छिछ सारं॥
छं० ॥ ६४ ॥

* मूल प्रतियों में इसे मुरिल्ल करके लिखा है। किन्तु मुरिल्ल से और इस से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह छन्द वास्तव में चान्द्रायण ही है। अन्त में जो इस छन्द में रगण के स्थान में नगण का प्रयोग है वह लिपि भेद मात्र है। पढ़ते समय ह+य का उच्चारण है और व य का उच्चारण "वै" होगा। इस प्रकार से सगण का उच्चारण होता है। अस्तु इसीसे हमने इस छन्द को चान्द्रायण नाम से सम्बोधन किया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स चुंथै करारं, तुटै गग्ग भ्कारं। अपारंत मारं, वहै दिव्य भारं॥
छं० ॥ ६५ ॥

रसं बीर सारं, पती देव पारं। सुमंती डकारं, चवट्ठी सु भारं॥
छं० ॥ ६६ ॥

रुधी धार पारं, उछारैति वारं। उमापत्ति लीनं, जपै जंग भीनं॥
*गहै मुत्ति तथ्यं, उछारें विहथ्यं। .... ॥ छं० ॥ ६७ ॥

पंग के दल का व्याकुल होना।

दूहा ॥ दल अग्गी अग्गी अनी। हलमलियौ दल पंग॥
यों उभ्भौ सुभ्भै सुभुअ। तिहुंपुर मंडन जंग॥ छं० ॥ ६८ ॥

पंगराज का हाथी छोड़ कर घोड़े पर सवार होना।

कवित्त॥ हक्कि मंगि गजराज। छंडि गज ढाल सु उत्तर॥
रत्तें रेन विसाल। तेग बंधी दल दुत्तर॥
कै हथ्थी जमजाल। काल छुट्टा मय मत्ता॥
कै अप्पानै अप्प। सेन रावत्त विरत्ता॥
उत उतंग बहु पंग दल। समर समह भारथ भिरिग॥
सारथ्य किष्ण सम बान बढ़ि। रोकि भीम कंदल करिग॥छं०॥६९॥

भुजंगी ॥ चढ्यौ पंग जंगं सु मानिक्क बाजी। नियं वर्न सेनं मनं नील साजी॥
फिरै पष्षरं भार कूदै उतंगा। मनों बायपूतं धरै द्रोन अंगा॥
छं० ॥ ७० ॥

जसं पंग जथ्यौ जुलै पंग धारी। घनं सार चोरं न गंगा विचारी॥
चमक्कंत नालं विसालंत मोहै। उभै चंद बीयं घटा जानि सोहै॥
छं० ॥ ७१ ॥

रबी रथ्थ जोरें सु भौंरें भ्रमावै। मनंषी न अंषीन पंषी न पावै॥

* ये युद्ध वर्णन के छन्द या तो छन्द ७४ के बाद होने चाहिए थे या इन्हीं छन्दों के ऊपर का कुछ अंश लोप या खंडित होगया है। क्योंकि कवि ने सर्वत्र इसी प्रकार से वर्णन किया है कि पहिले सेना की तैयारी फिर दोनों सेनाओं का जुड़ाव और तिसके पीछे युद्ध का होना परन्तु यहां का पाठ इस क्रम से बिलकुल विरुद्ध पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनों वाय गंठी गयौ ब्रह्म बंधी। पियै अंजुली नीर उत्तंग संधी॥
छं० ॥ ७२ ॥
डमं सीस डोलं चिभंगीति सोहै। गिरं नंचि केकी कला जानि मोहै॥
छं० ॥ ७३ ॥

रावल जी के वीर योद्धाओं का शत्रु को चारों ओर से दबाना।

कवित्त॥ समर सिंघ रावर समान। हय नंषि समर हर॥
कन्ह जैत बर बीर। भान नारेन सिंघ हर॥
पल्हदेव न्रप सोम। अमर न्रप व्यंटि जानि जम॥
प्रति प्रताप तन समर। ताप भंजन सांई श्रम॥
बंकम्म बीर बलिभद्र बर। झर तरवारनि अधर झर॥
चतुरंग चंपि चावद्दिसा। धार पहार बिभार झर॥ छं० ॥ ७४ ॥

युद्ध की तिथि और स्थल का वर्णन।

दूहा॥ बार सोम राका दिवस। पूरन पूरन मास।
सम्मुष सूर संमुह लरै। मुकति सु लूटन रासि॥ ७५ ॥
नद षारी दुरगा सु पुर। प्रथम जुद्ध बर बीर॥
दुतिय जुद्ध परि समर सों। पत्ति सु पट्टन धीर॥ छं० ॥ ७६ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर घमासान युद्ध वर्णन।

चोटक॥ षग षोलि बिहथ्थ सु बथ्थ परें। दुहु सीस सु रंग सुझार झरें॥
सिरदार सु गाहत पंग अनी॥ सुमनो जल बारधि पंति घनी॥
छं० ॥ ७७ ॥
फुटि षग्ग किरच्च जुझार झरं। मनु झिंगन भद्दव रेनि परं॥
उडि छिंछनि रत्त तरत्त भए। विरुझाइन धाइन सूर नए॥
छं० ॥ ७८ ॥
घन घाइ घटं घट अंग रजै। जनु देव प्रसूनय बंधु पुजै॥
विफरै बहु हथ्थनि पाइ फुरै। बहु सूर उचीरन से उचरें॥
छं० ॥ ७९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित डोलन पिंड को जाइ कहीं। दिषि बीर भरं लपटाइ तहीं॥
दोउ सूर महाबल के बरकें। सु बजें मद मोषन के सुर कें॥
छं०॥ ८०॥
करि भंजि कुंभस्थल षग्ग लसी। कुवलथ्थलकें झर में करसी॥
रुधि बिंद द्रवै कठ सोभ जगै। मनु इंदवधू चढ़ि पुट्ठि लगै॥
छं०॥ ८१॥
उपमा पलयं चलयों न कही। सकुचैं सरसी जु समुद्द मही॥
गज भंजि कुंभस्थल पग्ग दमैं। सु नचै जनु बिज्जुल बद्दल में॥
छं०॥ ८२॥
गजराज धुकै बहु कंपि करी। तिन सथ्थ महावत क्रून परी॥
इन भेषय गज्जय मान छरं। दस कंधय डुल्लि किलास बरं॥
छं०॥ ८३॥
गज राजति षग्गति मध्य गसं। मनों तेरसि को ससि अद्धनिसं॥
गजमुत्ति लगै षग यों दमकै। तिन की उपमा दिषि देव जकै॥
छं०॥ ८४॥
मुठि चंपि द्रढं करपान गसी। निचुरैं मनु नीर सु मोतिग सी॥
छं० ८५॥

रावल समर सिंह जी के सरदारों का पराक्रम वर्णन।

कवित्त॥ समरसिंह सिरदार। सेनगाही जुरि भल्लिय॥
आहुट्टां मभ्भझाम। परिय द्वादस चमरल्लिय॥
पंग समानन तक्कि। भूमि नंषत षग वग्गिय॥
बीरा रस बलवंड। हथ्थ दच्छिन झर लग्गिय॥
जिम परत पतंग जु दीप कन। तूटि तूटि निक्करि परत॥
पुरतार धरें हय पुटि धरनि। षलन षलक षग्गह झरत॥ छं०॥८६॥
पद्धरी॥ झर करत विदुल भर लोह मार। छुट्टंत नाल उड्डत पहार॥
उट्ठंत धूम धर आसमान। बुड्डंत सार रुधि गूद मान॥छं०॥८७॥
रुंडंत व्योम अंती अनंत। छुट्टंत नेह घट जीव जंत॥
गुड्डंत गिद्ध धर वंच बोय। उथ्थलकि थलकि बाराह मोय॥
छं०॥ ८८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमधज्ज सेन आहुट्ठ ऐम। राहु अरु केत रवि सोम जेम॥
सुभ्भै न अंषि नह सब्द कान। भर रैंन दीह रच्छत्त भान॥
छं० ॥ ८९ ॥

चट्टे जु समर मुष समर राव। पत्ते कि पत्त डंडूर वाव॥
रन रच्यौ रोपि वाराह रूप। पेषिय सु भयंकर पंग भूप॥
छं० ॥ ९० ॥

दूहा॥ भयति भीति दुअ जुद्ध हुअ। अवति वंत सत सूर॥
दह अग्गै अस्तुति सुबर। न्रप भारथ्थ करूर॥ छं० ॥ ९१ ॥

कवित्त॥ कढ्ढि समर विच समर। समर रुक्यौ जु समर भर॥
अजुत जु अति बुध सस्त्र। सस्त्र बज्जै सुमंत भर॥
भय अभ्भित मय राम। बीर छुट्टे घन छुट्टै॥
अघट घट्ट घूंटंत। ईस ग्यानह व्रत छुट्टै॥
संक्रांति जेठ आषाढ़ मधि। नीर दान सम दान नहि॥
सामंत सूर साईं भिरत। जोग न पुज्जै मंत लहि॥ छं० ॥ ९२ ॥

सत्त विरत सांई सु। मत्त लग्गे असमानं॥
द्रतत जुद्ध आरुद्ध। बीर मत्ते रस रानं॥
हथ थक्कत श्रम करैं। मन न श्रम सों उच्चरैं॥
गान दगध सों कथ्थ। गुरु न मंचह विस्तारैं॥
घन धार भार हरुअंत घट। कऱ्यौ घट्ट गरुअंत जुरि॥
दिन पंच परें पंचो बिपत लऱ्यौ न को रबि चक्कतर॥
छं० ॥ ९३ ॥

भुजंगी॥ न जानं न जानं न जानं प्रमानं। न रुद्रं न रुद्रं न रुद्रं न जानं॥
न सीलं न सीलं न सीलं न गाहं। गुरं जा गुरं जा गुरं जासु चाहं॥
छं० ॥ ९४ ॥

घनं जा घनं जा घनं जानि लोभी। मुकत्ती मुकत्ती मुकत्तीत सोभी॥
छिमंते छिमंते छिमंते समानं। भ्रमंते भ्रमंते भ्रमंते भ्रमानं॥
छं० ॥ ९५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उरंगं उरंगं उरगंति धारं। ततथ्थे ततथ्थे ततथ्थे सु भारं॥
छं० ॥ ९६ ॥

समर सिंह जी के शत्रु सेना में घिर जाने पर १२ सरदारों का उनको वेदाग बचाना।

दूहा ॥ भयति भरवि श्रम सयन भर। गयनति गुर गुर गाज॥
लरन सूर पहुपंग कों। करि भारथ्थ सु काज॥ छं० ॥ ९७ ॥
सार सार सज्जे सु दूत। सु दूत बचन सुनि काज॥
सो सिर मंडिय लीन बर। जित छिति छित्ती आज॥ छं० ॥ ९८॥
कल सु मित्त मत्तह सु मित। रषि नृप करन उपाय॥
भर भारथ्थति मुंच तह। रहै सु जीव न चाय॥ छं० ॥ ९९ ॥

कवित्त ॥ सबर सूर रजपूत। पत्ति देष्यौ घुमत्त घट॥
समर समर बिच चपत। नीठ [1]कढ्यौ द्वादस्स भट॥
[2]बीच घत्त सो मड्डि। षग्ग षल रुक्कि भंजि थट॥
बीर रंग बिप्पहर। समर संमुह सुभम्यौ नट॥
अनभंग पंग दल भंग किय। अठिल थाट ढिल्लिय सुभट॥
प्राक्रम्म पिष्षि अम्मेव सुर। सीस कज्ज अमि धर जट॥
छं० ॥ १०० ॥

इस युद्ध में दो हजार सैनिकों का मारा जाना।

दूहा ॥ उभय सहस भर लुथ्थि परि। तिन में सत्त सु सूर॥
द्वादस अग रावर परत। न्रिप कढि निठ्ठ करूर॥ छं० ॥ १०१ ॥

रावल जी को निकाल कर वीरों के विकट युद्ध का वर्णन।

पद्धरी ॥ कढि सेन समर अस मज्झि सेन। रुक्कयौ पंग भर भिरि करेन॥
लावार लोह भिरि समर धेन। धावंत तप्पि सब षग्ग देन॥
छं० ॥ १०२ ॥
तन बीर रूप लज्जा प्रहार। कढ़ि असि सूर बर करि दुधार॥

(१) ए.-कढ्यौ। (२) ए. कृ. को.-बीस घटत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झम झमी तेग बर तड़िग रूप। बाहेवि हथ्थ करि आन भूप ॥
छं० ॥ १०३ ॥
ढल मली ढाल गज फिरति ह्वन। नग पंति दंति दीसै सदून ॥
तरफरहि लुथ्थि घट घाय धुक्कि। उच्छरैं मीन जल जानि सुक्कि ॥
छं० ॥ १०४ ॥
आघात घात घट भंग कीन। बर भइग ह्वर तन छीन छीन ॥
परि समर सुभर रषि समर रूप। ढुंढयौ षेत सह पंग भूप ॥
छं० ॥ १०५ ॥

रावल जी के सोलह सरदारों का मराजाना।

दूहा ॥ गरूअत्तन तन हरूअ भय। घाट कुघाट सु कीन ॥
समर ह्वर सोरह परिग। सुगति मग्ग जस लीन ॥ छं० ॥ १०६ ॥

सरदारों के नाम।

कवित्त ॥ कन्ह जैत जैसिंघ। पंच चंपे पंचाइन ॥
सोम ह्वर सामला। नरन नीरह नारायन ॥
रूप राम रन सिंह। देव दुज्जन दावा नल ॥
अमर समर सब जित्ति। समर सध्यौ साई छल ॥
बैकुंठ बट्ट जिन सद्दयौ। रषि सांई जिन सस्त्र बल ॥
माहेस महनसी महन बर। महन रंभि जित्यौ सकल ॥छं०॥१०७॥

रावल जी का विजयी होना और आगे की कथा की सूचना।

दूहा ॥ कन्ह भतीज उठाय लिय। हय नंष्यौ बर अग्ग ॥
पंग ढूंढि भारथ्थ भर। सह मिथ्यौ जुरि हग्ग ॥ छं० ॥ १०८ ॥
समर सु सद्दे समर बर। बाल [1]सुयंबर लोग ॥
जिन बर बर उतकंठ भय। पानि भरै संजोग ॥ छं० ॥ १०९ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्राथिराज रासके जैचंद राव समरसी जुद्ध नाम छप्पनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५६ ॥

(१) ए. कृ. को.-सयंबर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ कैमासबध नाम प्रस्ताव लिष्यते ।

(सत्तावनवां समय ।)

राजकुमार रेनसी और चामंडराय का परस्पर घनिष्ट प्रेम और चंदपुंडीर का पृथ्वीराज के दिल में संदेह उपजाना ।

कवित्त ॥ दिल्लीवै चहुआन । तपै अति तेज षग्ग बर ॥
चंपि देस सब सीम । गंजि अरि मिलय धनुद्धर ॥
रयन कुमर अति तेज । रीहि हय पिट्ठ विसंमं ॥
साथ राव चामंड । करै कलि कित्ति असंमं ॥
मेवास वास गंजै द्रुगम । नेह नेह बड्ढै अनत ॥
मातुलह नेह भानेज पर । भागनेय मातुल सुरत ॥ छं० ॥ १ ॥
सयन इक्क संवसहि । इक्क आसन आरुम्महि ॥
[1]बीरा नद्द विहार । भार जब्ब राह सुरम्महि ॥
भागनेय मातुलह । जानि अति प्रीति सु उब्भर ॥
चिंति चंदपुंडीर । कही प्रति राज हित्त भर ॥
षावंड रयन सिंघह सु [2]घर । अप्प नेह बंध्यौ असम ॥
जानौ सु कृत्य कारनह कलि । कब्बै भ्रम्म धरनिय बिसम ॥
छं० ॥ २ ॥

दूहा ॥ चिंत्ति बत्त पुंडीर चित । अप्प सु गुन गंभीर ॥
समय काज प्रथिराज न्रप । हिय न प्रगट्टिय हीर ॥ छं० ॥ ३ ॥
दल बद्दल भर भीर भरि । चवत सूर सुर छंद ॥
सामंत सूर [3]सम्मूह सजि । क्रीड़त ईस नरिंद ॥ छं० ॥ ४ ॥

पृथ्वीराज का नगर के बाहर सभा रचकर वर्षा की बहार लेना और सायंकाल के समय महलों को आना ।

(१) ए. कृ. को.-वारी । (२) मो.-पर (३) ए. कृ. को.-सनाह, समोह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्धरी ॥ संवत्त एक पंचास पूर। आषाढ़ मास नवमी सनूर ॥
रचि विमल षष्प उद्योत भान। प्राचीय जमल [1]फट्टिय पयान ॥
छं० ॥ ५ ॥

सत सूर पूर सम रूढ़ राज। मंड्यौ सु देव देवन समाज ॥
सत रंज राज बर षेल मंडि। मंचीन अप्प आरंभ थंडि ॥
छं० ॥ ६ ॥

पज्जूनराव बर [2]चंद्रसेन। विचरंत राव कर [3]दष्षि नेत ॥
चामंड जैत कर वाम तेन। मुष अग्ग कन्ह निद्दुर सु देन ॥
छं० ॥ ७ ॥

अरु सलष लषन विंझल नरिंद। दस निकट रंग सोमेस नंद ॥
कविचंद अग्र [4]विचर सु छंद। तिहि प्रत्ति राज उच्चरि प्रबंद ॥
छं० ॥ ८ ॥

इक जाम सूर कीनौ पयान। उघघरिय धुंध धरनीय थान ॥
मिट्टै सु वाय चर चक्र होत। दष्षिनह वाम अनकूल सोत ॥
छं० ॥ ९ ॥

आएस स्वामि किन्नौ सझूर। बहुरे सु सकल सब भर सपूर ॥
फट्टे व [5]घूर थट्टे सु ताप। उघघऱ्यौ गेंन रवि धूप धाप ॥
छं० ॥ १० ॥

उक्से घोर घन गरुअ गुंज। दिस दिसा उमड़ि बद्दरन पुंज ॥
[6]कलपंत किलकि कल हल्ल राज। क्रीडंत रेनि इंछनि समाज ॥
छं० ॥ ११ ॥

झमकिय सु बूंद बढ्ढिय विसाल। बिछुरेय सुभ्भगन प्रातकाल ॥
ठट्ठौ सु आइ दीवान राज। किन्नौ सु हुकम न्रप हदक काज ॥
छं० ॥ १२ ॥

(१) मो.-काट्टिय। (२) ए. कृ. को.-सेव।
(३) ए. कृ. को.-दच्छिनेव। (४) मो.-विद्धरे।
(५) मो.-सूर। (६) ए. कृ. को.-"कालांत किलकि कल महल राज"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ दूत दूत दरबार बहु। सजे सूर भर साज ॥
सजे बीर दुंदुभि बजे। हदफ पेलि प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३ ॥

कवित्त ॥ चल्यौ राज प्रथिराज। सज्जि बर थट्ट बाज गज ॥
मंचि बोलि कयमास। राव पज्जून चंद्र रज ॥
रा चामँड बर जैत। कन्ह निढ्ढुर नर नाहं ॥
सलष लषन बघ्घेल। नरिंद विंझा षग वाहं ॥
कम्मान कठिन हथ हथ्थ करि। बान बिबिध बाहंत बर ॥
बाहुरे सूर रवि [1]अथ्थमित। सोर घोर पावस अतर ॥ छं० ॥ १४ ॥

हाथी के छूटने से घोर शोर और घबराहट होना।

स्वान माल हथ्थान। जोर घेरे षवास रज ॥
बेढ़ि कूट कंठेर। बग्घ बायात कोरि हर ॥
हक्क बत्त कहति वहि। बंधि गजराज डारि कर ॥
.... ॥
बहुरेव सूर सुष अथ्थमित। जूथ जितंतित तुंग बर ॥
छुट्टौ सु पाट गजराज सुनि। घोर सोर पावस अतर ॥ छं० ॥ १५ ॥

हाथी का थान से छूट कर उत्पात करना और चामंडराय का उसे मार गिराना।

पद्धरी ॥ संवत्त एक पंचास अंग। आषाढ़ मास दसमी सुरंग ॥
डंडूर बात जल जात उर्द्ध। घन पूरि सजल थल प्रथम बुट्ठि ॥
छं० ॥ १६ ॥

घहराइ स्याम बद्दल विसाल। विथ्थुरिय सयल सिर मेघ माल ॥
उभ्भरिय चसिय चप्पिय सु अप्प। संदेस मेस केकी सु दप्प ॥
छं० ॥ १७ ॥

क्रीलंत केलि चढ़ि अप्प राज। सामंत सूर सब सजे साज ॥
शृंगारहार गजराज पट्ट। मयमंत मत्त मद झरत [2]पट्ट ॥
छं० ॥ १८ ॥

(१) मो.-अथ्थमन। (२) ए. कृ. को.-उपट्ट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बंध्यौ सु षंभ संकर गुराह। मानै न सद्द उनमत्त थाह॥
गज्जंत मेघ धुनि सुनिय अप्प। धुन्निय सु षंभ संकर सु दप्प॥
छं० ॥ १९॥

उप्पर्यौ अप्प चल्ल्यौ विराह। मानै न अनिय अंकुस दुवाह॥
ढाहंत मट्ट मंडप अनूप। प्राकार द्वार देवाल जूप॥ छं० ॥ २०॥

ढाहंत उंच आवास धक्क। मानै न मार प्राहार हक्क॥
फारंत उंच तरु चौ उरारि। लग्गौ सु लोग सब्बह हँकार॥
छं० ॥ २१॥

पय तेज तुरिय पावै न जानि। मंडै सु [1]दुयस चौपय प्रमान॥
मदगंध अंध सुझ्झै न राह। सनमुष्ष मिल्लिग चामंड ताह॥
छं० ॥ २२॥

दाहिम्म षेलि आवंत ग्रेह। संकरै रोहि मिलि गज सु रेह॥
गजराज देषि चामंडराइ। उप्पारि सुंड सनमुष्ष धाइ॥
छं० ॥ २३॥

चामंड देषि आवंत गज्ज। पच्छै जु पाइ चिंतिय सु लज्ज॥
उप्पारि संग द्वै संष देस। उक्कसिय कंध अद्वह असेस॥
छं० ॥ २४॥

लाघवी दीन वहि षग्ग धार। सम सुंड दंत तुट्टिय सुजार॥
ढहि पर्यौ संत धरनीय सीस। सब लोकदेव दीनी असीस॥
छं० ॥ २५॥

चामंडराव निज ग्रह अपार। भातेज सथ्थ रयनं कुमार॥
संभलिय बत्त पुहमी नरेस। कलमलिय चित्त अप्पह असेस॥
छं० ॥ २६॥

शृंगारहार का मरना सुन कर राजा का क्रोध करना और चामंडराय को कैद करने की आज्ञा देना।

कवित्त॥ सुनिय बत्त प्रथिराज। हन्यौ सिंगारहार गज॥
चिंति बत्त पुंडीर। अवर गंठी सु गुझ्झ रज॥

(१) ए. कृ.को.-दुयय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्प कोप उर धरिय । गल्ह [1]कातिन्न कलारिय ॥
रामदेव गुर राज । मुष्ष अग्गे अभ्भारिय ॥
वेरी सु आनि दीनि न्रपति । जाय पाइ चामँड भरौ ॥
संकोच प्रीति सनमंध सुष । नतरु षंड धरनी करौ ॥ छं० ॥ २७ ॥
षिझ्झयौ बीर प्रथिराज । राज दरबार रुकाइय ॥
हाहुलिराव हमीर । बोल पज्जून लगाइय ॥
आज राज गज मारि । कालि बंधे फिरि तेगा ॥
राजनीति नन होइ । स्वामि अग्या तजि वेगा ॥
तब देन पाइ पच्छे न भय । हांसीपुर दीने तबै ॥
इहि काज कीन अब अग्रमन । स्वामि गज्ज मारन अबै ॥
छं० ॥ २८ ॥

लोहाना का बेड़ी लेकर चामंडराय के पास जाना ।

कहै राज प्रथीराज । मीच चामंड न मारौ ॥
सुनहु सूर सामंत । मरन कहुत अत्तारौ ॥
लोहानौ आजान । हथ्थ वेरी लै चल्लं ॥
साम दान करि भेद । पाइ चामंड सु घल्लं ॥
अनभंग अंग है राम गुर । राज रीति राषन्न तिहि ॥
दाहिम्म राव दाहर तनय । सुनि अवाज चर चित्त रहि ॥छं०॥२९॥

चामंडराय के चित्त का धर्मचिंता से व्यग्र होना ।

दोय सहस दाहिम्म । पहिरि सन्नाह सु रज्जिय ॥
बज्जि साहि बर अग्र । बीर बाहै कर बज्जिय ॥
चिंत राव चामंड । भत्त इह भ्रम्म न होइय ॥
सामि सनंमुष लोह । सामि द्रोही घर जोइय ॥
पूछियै सेव जिन देव करि । दुष्ट भाव किम चिंतियै ॥
करतार घरह घर कित्ति की । दुहु धर मरन न जित्तियै ॥
छं० ॥ ३० ॥

(१) ए. कृ. को.-काढिन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुराम का चामंडराय को बेड़ी पहनाना।

लै बेरी गुर राम। गए चामंड राव ग्रह ॥
कर दीनी दाहिम्म। रीस गजराज घून कह ॥
तब लीना दाहिम्म। ध्रम्म स्वमित्त सुद्ध मन ॥
सो लीनी करझेलि। प्रेम धारी पय अप्पन ॥
धनि धन्नि धन्य सब नयर हुअ। सयल धन्य संचरि सु सद ॥
चामंडराय दाहर तनै। नीति रेह रष्षी सु हद ॥ छं० ॥ ३१ ॥

चामंडराय का बेड़ी पहिनना स्वीकार कर लेना।

दूहा ॥ बंदि लई चामंड ने। बेरी सम्हौ हथ्थ ॥
साम ध्रम्म जुग रष्षयौ। जीरन जग्ग सु कथ्थ ॥ छं० ॥ ३२ ॥
यों घल्ली चामंड पय। ज्यों मद मत्त गयंद ॥
लाज [1]राज अंकुसन मिटि। धनि दाहिम्म नरिंद ॥ छं० ॥ ३३ ॥
यों अग्या प्रथिराज की। मन्नी दाहिम इंद ॥
ज्यों सुनि मंचह गारडी। मानत आन फुनिंद ॥ छं० ॥ ३४ ॥

इस घटना से अन्य सामंतों का मन खिन्न होना।

अरिल्ल ॥ भर बेरी चामंड राज जब। भए अति विमन सु मन सामंत सब ॥
भ्रमत राज आषेट पंग भय। ग्रह रष्षौ कैमास मंच रय ॥
छं० ॥ ३५ ॥

पृथ्वीराज का शिकार खेलने जाना।

दूहा ॥ तिहि तप आषेटक भ्रमै। थिर न रहै चहुआन ॥
जोगीनिपुर बर रष्षि कैं। [2]दस सामंत प्रधान ॥ छं० ॥ ३६ ॥
चौ अग्गानी बीस बर। संग मुक्कि कैमास ॥
आषेटक चहुआन गौ। न्रप दुग्गाबन पास ॥ छं० ॥ ३७ ॥

राजा की अनुपस्थिति में कैमास का राज्य कार्य्य चलाना।

(१) मो.-काज। (२) ए. कृ. को.-गय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ राज काज दाहिम्म । रहै दरबार अप्प बर ॥
आषेटक दिल्लिय । नरेस षेलै कमंध डर ॥
देस भार मंचीस । राव उद्धार सु धारै ॥
न को सीम चंपवै । हद्द तप्पै सु करारै ॥
लोपै न लीह लज्जा सयल । स्वामि ध्रम रष्षै सुरुष ॥
क्रत नीति रीति बट्टै बिसह । [१]बंछै लोक असोक सुष ॥
छं० ॥ ३८ ॥

दिन विशेष की घटना का वर्णन।

सुर गुर वासर सेष । घटिय दसमीय देव दिन ॥
पुब्ब षाट भद्दों सु गाढ़ । घन वट्ट कोक मन ॥
गहकि मोर दद्दुरनि । रोर बद्दर बगपंतिय ॥
बन दिसान गहरान । चाप वासव चित मंतिय ॥
दरबार आय कैमास न्रप । कीय महल सिर रज्ज भर ॥
[२]घन संकुस तुछ सघ्घे सयन । चित्त मित्त दुत्र [३]पंच बर ॥
दाहिम्म मिल्यौ इमि दासि सम। षीर मद्ध जिम नीर मिलि ॥छं०॥३९॥

कैमास का चलचित्त होना।

राज चित्त कैमास । चित्त कैमास [४]दासि गय ॥
नीर चित्त वर कमल । कमल चित्त बर भान गय ॥
भंवर चिंत भमरी सु । भँवर रत्तौ सु कुसुम रस ॥
ब्रह्म लोय रत्तयौ । लोय रत्तौ सु अधम रस ॥
उतमंग ईस धरि गंग कौं । गंग उलटि फिरि उदधि मिलि ॥
छं० ॥ ४० ॥

करनाटी की प्रशंसा और उसकी कैमास प्रति प्रीति।

दूहा ॥ नंदी देस बनिंक सुत्र । बेसब नंजन द्वत्त ॥
बीन जान रस बनसु घर । राजन रष्षिय हित्त ॥ छं० ॥ ४१ ॥

(१) ए. कृ. को. वंधे। (२) ए. को.-छन।
(३) ए. कृ. को.-घन। (४) मो.-दाहिम्म।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिव्य दास रष्यिय दिवस। सुग्रह पवारिय द्वार॥
तिन अवास दासिय सघन। अह निसि रस रषवार॥ छं०॥ ४२॥

कवित्त॥ समुष समुष ग्रह राज। [1]महल साला सु रूव रँग॥
तहं सु रोहि कयमास। [2]सजन आवरिय अप्प अँग॥
ऊँच महल करनाटि। देषि डंबर घन अंमर॥
बैठी गवष ससष्षि। सुमन [3]मंती अरु संमर॥
सम दिठ्ठि उठ्ठि दाहिम्म दुअ। जग्गि मार उभ्भार चित॥
अंकूरि द्रष्ट अंतर उरिय। प्रीति परठ्ठिय [4]कालक्रत॥ छं०॥ ४३॥

दूहा॥ नव जोवन शृंगार करि। निकरि गवष्षह पास॥
देषि उझकि बर सुंदरी। काम द्रष्टि कयमास॥ छं०॥ ४४॥
करनाटी दासी सुबर। चित चंचल तिय वास॥
काम रत्त कैमास तन। दिष्ट उरभ्भिझय तास॥ छं०॥ ४५॥
करनाटी कैमास मन। राजन नष्यि अवास॥
भावी गत को मिट्टई। ज्यों जनमेजय व्यास॥ छं०॥ ४६॥
द्रष्टि द्रष्टि लोकन जरिग। मति राजन ग्रह काज॥
सहिय करत असहिय समर। असहवान तन साज॥ छं०॥ ४७॥

दोनों का चित्त एक दूसरे के लिये व्याकुल होना, और करनाटी का अपनी दासी को कैमास के पास प्रेषित करना।

ग्रह बाहुरि सामंत गय। रहि चौकी कैमास॥
करनाटी सहचरि उभै। मुक्कि दई तिन पास॥ छं०॥ ४८॥

बाघा॥ लग्गी द्रष्टि सु द्रष्टि अपारं। धरकी दुअर धार ना धारं॥
कलमलि चित्त अभित्त दुआनं। लग्गे मीन केत क्रत बानं॥
छं०॥ ४९॥

(१) मो.-"माहिल साली सु सूव रँग"। (२) ए. कृ. को.-सुजन।
(३) मो.-मतिनि। (४) मो.-काजल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किय दाहिम्म केविक्रत काजं । उद्यौ सूर अस्त मनि साजं ॥
अप्प ग्रेह कैमास सपत्तौ । मेन बान गुन ग्यान बियत्तौ ॥ छं० ॥५०॥
छिन अंदर भीतर आवासं । नन धीरज्ज हंस रहै तासं ॥
नठी मत्ति रति गत्ति उहासं । अविगत देव काल निसि नासं ॥
छं० ॥ ५१ ॥
घटिय पंच पल बीस सबें कल । वित्तिव निसा उसास समुक्कल ॥
अति झंषत करनाटिय [1]उरं । काम कटाछ्य सु लग्गि करूरं ॥
छं० ॥ ५२ ॥

कवित्त ॥ कन्नाटिय कैमास । प्रिष्ठ देषत मन लग्गो ॥
कलमलि चित्त सुहित्त । मयन पूरन जुरि जग्गो ॥
गयौ ग्रेह दाहिम्म । तलप अलपं मन किन्नौ ॥
बोलि अप्प सो दासि । काम कारन हित दिन्नौ ॥
[2]लै मंच राज अप्पं सरिस । जौ हम आनें चित्त हर ॥
सम चली दासि कैमास दिसि । जंपिय भेव सनेह बर ॥छं०॥५३॥

करनाटी के प्रेम की सूचना पाकर कैमास का स्त्री भेष धारण कर दासी के साथ होलेना ।

दूहा ॥ सुनि दासी करनाटि बच । निज संचरि सथ मुद्द ॥
मत्ति घटी अरुझी सुरति । काल निसा क्रत निद्द ॥ छं० ॥ ५४ ॥
सहचरि बर मोकल्लि कै । तकै बट्ट कैमास ॥
सम समद्धि सज्जें रह्यौ । करि करि हिये विलास ॥ छं० ॥ ५५ ॥
निसि भद्दव कद्दव कहल । आषेटक प्रथिराज ॥
दाहिम्मौ दहि काम रत । काल रैनि कै काज ॥ छं० ॥ ५६ ॥
दासिय हथ्थ सु हथ्थ दिय । चिय अंबर आछादि ॥
दासिय अंतर अप्प हुअ । [3]दरन स पिष्यौ सादि ॥ छं० ॥ ५७ ॥

(१) मो.-कुंजर ।
(२) ए. कृ. को.-" लै अप्प राज मंत्री सरिस " । (३) मो.-दरसन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साटक ॥ राजं जा प्रतिमा सुचीन प्रतिमा, रामा रमे साभती ॥
*नित्तौ रंकरि काम वाम वसना, सज्जीन संग्या गती ॥
आधारेन जलिन छीन तड़िता, तारा न धारा रती।
सो मंत्री कयमास मास विषया, दैवी विचित्रा गती ॥ छं० ॥ ५८॥

सीढ़ी चढ़ते हुए इंछिनी रानी का कैमास को देख लेना।

कवित्त ॥ मध्य महल कैमास। दासि सम अप्प संपत्तौ ॥
ग्रेह निकट पामारि। काम [1]कामना न मत्तौ ॥
घन सुगंध सुर भास। जानि वित इंछिनि चिंतिय ॥
आषेटक दिल्लेस। कहा सुर वास सु भत्तिय ॥
निसि स्याम चिलजि चीया वसन। चढ्यौ अप्प सिढ्ढिय सुमन ॥
इष्यौ सु द्वार इंछिनि तड़ित। नर सु [2]पित्त कोइ काम रत ॥
छं० ॥ ५९ ॥

सुग्गे का इंछिनी प्रति बचन।

सुक चरित्र दासिय परषि। कहि इंछिनि संजोइ ॥
काग जाइ मुत्तिय चरै। हरति हंस का होइ ॥ छं० ॥ ६० ॥
सुक जंपै इंछनिय। एक्क आचिज्ज परष्षिय ॥
बीर भजन मृगमद्दक। षाय कग्गं तन दिष्षिय ॥
बचन पंषि संभरै। बाल चरचित चित किन्ना ॥
बर आगम गम जानि। भेद सुक कों किन दिन्ना ॥
निसि अद्ध अध्य सुभ्भै नहीं। बार बज्जि निसचर हरिय ॥
कैमास क्रम्म गहि दासि भरि। जेम क्रम्म सम्हा भरिय ॥
छं० ॥ ६१ ॥

इंछिनी का पत्र लिख दासी को दे कर पृथ्वीराज के पास भेजना।

* यह साटक और इसके आगे की एक पंक्ति मो. प्रति में नहीं है।
(१) ए. कृ. को.-कामन मन। (२) ए. कृ. को-पिट्ट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयौ मध्य कैमास। रयनि संपत्त जाम इक॥
तंबुल्लिय सषि साष। पट्ट रागनिय निकट सिक॥
बाय घात दिय पूर। भ्रमिय पिय किय अति अंतह॥
अति सरोस पिक पानि। सु नष लिषि सषि कर कंतह॥
असि असन वारि मग्गह षरिय। अवधि दीन दो घरिय कह॥
पल गयन सु राइह संचरिय। अयन सयन प्रथिराज जहँ॥
छं०॥ ६२॥

रोला॥ *बर चढ्ढिय चतुरंग तुरंगम चारु सु नारिय।
इंछनि हथ संदेस चली बोलह अवधारिय॥
दीनौ संग पवारि उभै तब चढ़ि चतुरंगं।
निसिनि अद्ध बढ़ि तिमर गई बाली अनुरंगं॥ छं०॥ ६३॥

दासी का पृथ्वीराज के पड़ाव पर पहुंचना।

कवित्त॥ विमल बग्ग सुर अग्ग। धाम धारा ग्रह सुब्बर॥
जल सु थान अभिराम। दिल्लि श्रंम्यौति संस[1]तर॥
मंडे वासुर स्रगय। निसा प्रावट्टि मंनि मन॥
उभय सत्त हय तथ्य। ताम विस्राम [2]श्राम तन॥
सिंगनि सु बान पर्यंक दुश्र। अरिय सेज न्रप सयन किय॥
स्तौ सुथान निद्रा सकल। अति उर कंपिय दिष्षि जिय॥
छं०॥ ६४॥

राजा और सामंतों की सुसुप्ति दशा।

सनमुष साला सुभट। सकल विस्राम नींद भर॥
जाम देव बलिभद्र। बरन चहुआन संघहर॥
तोंवर राइ पहार। सिंघ [3]रनभय पावारं॥

* मूल प्रतियों में इसका पाठ चौपाई करके लिखा है। ए. प्रति में प्रथम पंक्ति का पाठ "वर चढ़िय चतुर तुरंगम नारिय" पाठ है।

(१) र. कृ. को.-समंतर। (२) ए. कृ. को.-श्रम।

(३) ए. कृ. को.-नृम्मय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंगी लंगरराव। सूर सा अल्ह कुआरं॥
आजानबाहु गुज्जर [1]कनक। सोलंकी सारंग बर॥
सामलौ सूर आरज कमँध। बाम जु इष्ष विसग्ग भर॥
छं०॥ ६५॥

गाथा॥ यों राजंत कमानं। राजन सयनेव सुभ्भियं एमं॥
ज्यों स्त्री बल भरति अंगं। श्रम थक्के दंपती उभयं॥ छं०॥ ६६॥

दूहा॥ रष्या करौव देव तुहि। सोवत न्रप श्रत सब्ब॥
दासी चौकी चक्कित हुअ। कर धरि छित्तिय जब्ब॥ छं०॥ ६७॥

न्रप सूतौ अंतर महल। जाइ संपतिय दासि॥
जुग्गिनिवै चहुआन कौ। गुन किन्नौ अभिलास॥ छं०॥ ६८॥

दासी का राज शिविर में प्रवेश।

[2]बंध्यो षंभ सु रंभ हय। अप्प चली जहं राज
विसग सथ्थ दिष्यौ सकल। उर मन्यौ अविकाज॥ छं०॥ ६९॥

दासी का नूपुर स्वर से राजा को जगाने की चेष्टा करना।

गाथा॥ भू श्रत सु चित्त निद्रा। सिंगी सार रयन्न जग्गियं॥
विड दीपक अरंत मंदं। नूपुर सद्दानि भान अच्छानि॥छं०॥७०॥

साटक॥ भूपानं जयचंद राय निकटं, न्नेहाय जग्गाइने॥
संसाहस्स बसाह साहि सकलं, इच्छामि जुद्धायने॥
भिद्दं चालुक चाइ मंच गहनो, दूरेस विस्वारने॥
अग्यानं चहुआन जानि रहियं, देवं तु रष्या करे॥ छं०॥ ७१॥

श्लोक॥ पंग जग्यो जितं वैरं। ग्रह मोषं सुरतानयं॥
गुज्जरी ग्रह दाहानि। दैवं तु रष्या करे॥ छं०॥ ७२॥

दूहा॥ सुन्निय सु नूपुर सद्द न्निप। सषी सु चिंतिय चित्त॥
मन्निय कारन सिद्ध मनि। न्रप गति दुक्कित नित्त॥ छं०॥ ७३॥

दासी का राजा को जगाना और इंछिनी का पत्र देना।

(१) मो.-कमल। (२) ए. कृ. को.- बंध्यौ रंभ सुथंभ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* चान्द्रायण ॥ छत्तिय हथ्थ धरतं नयंनन चाहुयौ।
दासिय दष्यिन हथ्थ सु बंचि दिषाययौ॥
जिन बाना बलबान रोस रस दाहयौ।
मानहु नाग पतित्त अप्प जगावयौ॥ छं० ॥ ७४ ॥

साटक ॥ जग्यौ श्री चहुआन भूपति भरं, सिंघं समं पिष्यियं॥
दिल्लीनं पुरलोक चुंकति ग्रहं, तेजंबु कायं मुषं॥
सा संकी वय ग्रास धीरज रनं, वीराधि वीरं अरी॥
करनाटी वर दासि दाहिम वरं, मंची सरो भिष्टयं॥ छं० ॥ ७५ ॥

दूहा ॥ बंचि बीर कग्गद चरह। तरकि तोन कर सज्ज॥
निर तिन [1]कह दीनो न्त्रपति। सब सामंतन लज्ज॥ छं० ॥ ७६ ॥

पृथ्वीराज का इंछिनी के महल में आना।

आयौ न्त्रप इंछिनि महल। राज रीस चित मानि॥
अगनि दभ्भ कैमास कै। बीर बरन्निय पानि॥ छं० ॥ ७७ ॥

राजा प्रति इंछिनी का बचन।

वहनि वच्छ महि अच्छ रस। इहि रस महि रसकंत॥
दनुकि देव गंध्रव्व जछि। [2]दासी निसि विलसंत॥ छं० ॥ ७८ ॥

† चान्द्रायण ॥ संग सयंनन सथ्थ न्त्रपत्ति न जानयौ।
दुहु विचन्नै इक दासिय संग समानयौ॥
इंद नरिंद फुनिंदर अथ्यि समानयौ।
घरह घरी दुअ मझि ततच्छिन आनयौ॥ छं० ॥ ७९ ॥

दूहा ॥ रति पति मुच्छि आलुझ्झि तन। घन घुम्यौ चिहुं पास॥
पानिन अंषन संचरै। महल कहल कैमास॥ छं० ॥ ८० ॥

इंछिनी का राजा को कैमास और करनाटी को दिखाना।

सुंदरि जाइ दिषाइ करि। दासी दुहुं दाहिम्म॥

(१) ए. कृ. को.-किन। (२) ए.-दीसी।

* इस छन्द को चारों प्रतियों में रासा करके लिखा है परन्तु यह छन्द चान्द्रायण है। रास या रासा में २२ मात्रा और तीन जमक होते हैं। † रासा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर मंची प्रथिराज कहि। दइ दुवाह बर क्रम्म ॥ छं० ॥ ८१ ॥
ना दानव ना देवगति। प्रभु मानुष वर चिन्ह ॥
सु रस पवारि गवारि कह। प्रौढ़ मुगध मति किन्ह ॥ छं० ॥ ८२ ॥
रमनि पिष्षि रमनिय विलसि। रजनि भयानक नाह ॥
चिच दिषात सु चिंचनी। मौन विलग्गिय बाह ॥ छं० ॥ ८३ ॥
निमष चिच देष्यौ दुचित। सलष सलष्षिय नेंन ॥
हदै सुयस....सुंदरिय। दुअ यप यंपिय बैन ॥ छं० ॥ ८४ ॥
नीच बान नीचह जनिय। विलसन किित्ति अभग्ग ॥
सुनहु सरूप सु मुत्ति कर। दासि चरावति कग्ग ॥ छं० ॥ ८५ ॥
करकुँवंड लीनौ तमिक। (१)अरूचि दान विधि जोय ॥
चरिय कग्ग तरवर सबै। हंसनि हंसन होइ ॥ छं० ॥ ८६ ॥

विजली के उजेले में राजा का वाण संधान करना।

निसि अड्डी सुझ्झै नहीं। बर कैमासय काज ॥
तड़ित करिग अंगुलि धरम। बान भरिग प्रथिराज ॥ छं० ॥ ८७ ॥

कैमास की शंका।

श्लोक ॥ अर्जुनः सायको नास्ति। दशरथो नैव दृश्यते ॥
स्वामिन् अषेटकं हत्ति। न च वानं न चयो नरः ॥ छं० ॥ ८८ ॥

वाण वेधित-हृदय कैमास का मरण।

दूहा ॥ बान लग्ग कैमास उर। सो ओपम कवि पाइ ॥
मनों हृदय कैमास कै। हथ्थै बुझ्झिझय लाइ ॥ छं० ॥ ८९ ॥

कवित्त ॥ भरिग वान चहुआन। जानि दुरदेव नाग नर ॥
दिट्ठ मुट्ठि रस डुलिग। चुक्कि निकरिग्ग इक्क सर ॥
दुत्ति आनि दिय हथ्थ। पुठि पामार पचाऱ्यौ ॥
वानि हत्त तुटि कंत। सुनत धर धरनि अषाऱ्यौ ॥
इय कब सब सरसै गुनति। पुनित कह्यौ कविचंद तत ॥

(१) ए. कृ. को.- अरुचि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यों पर्‌यौ कैमास आवास तें । जानि [1]निसानन छिचपति ॥
छं० ॥ ९० ॥

गाथा ॥ सुंदरि गहि सारंगो । दुज्जन दुभनोपि पिष्षि सायक्कं ॥
किं किं विलास गहियं । किं किनो दुष्ष दुष्षाई ॥ छं० ॥ ९१ ॥

कविकृत भावी वर्णन ।

श्लोक ॥ भवित्येवं भवित्येवं । लिलाटपटलाक्षरं ॥
दासिकाहेत कैमासं । मरणं हस्त राजभिः ॥ छं० ॥ ९२ ॥

पद्धरी ॥ नदि चलिय पूर गहराइ अत्ति । श्रृंगार तरुन मन मिलन पत्ति॥
मेदनी नील सोभंत रूप । प्रज रचिय सचिय सम दिष्ट भूप ॥
छं० ॥ ९३ ॥

गहकंत हृक्ष बद्दर विरूर । पट्ठु मुष्ष मंच बहु ढुक्कि कूर ॥
कुरलंत पुष्टि कोकिल कलच्छि । मैं मंत संढ जनु तंब पिच्छ ॥
छं० ॥ ९४ ॥

बर गजिय व्योम रजि इंद्रवान । गहि काम चाप जनु दिय निसान ॥
नीलभा [2]गहर तरु रज्जि माल । गुन थकित जानि तुट्टे भुआल ॥
छं० ॥ ९५ ॥

मुकल्यौ अप्प भासंत पव्व । मोहियौ रुक्कि मनि मुनि सु तब्ब ॥
.... ॥ छं० ॥ ९६ ॥

कैमास की प्रशंसा ।

कवित्त ॥ जिन कैमास सुमंचि । षोदि षट्टू धन कढ्यौ ॥
जिन कैमास सुमंचि । राज चहुआन सु चढ्यौ ॥
जिन कैमास सु मंचि । पारि परिहार सुरस्थल ॥
जिन कैमास सु मंचि । मेछ बंध्यौ बल सब्बल ॥
चिहुं ओर जोर चहुआन न्रप । तुरक हिंदु डरपन डरह ॥
बाराह बघ्घ बाराह बिच । सु बसि बास जंगल धरह ॥ छं० ॥९७॥

(१) ए. कृ. को.-" निसान छित्त पति "
(२) मो.-गरह ग्तर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्यान्य सामंतों के सम दूषण।

साटक॥ कन्ह' कायक कांति कंत वहनं, चामंडतिय दावरं ॥
हरसिंघं बिय बाल बालय व्रतं, रामंच सलषं व्रतं ॥
[1]द्वै कंता बड़ गुज्जरं च कनक्क, परदारते विम्मुहा ॥
रामो काम जिता सनास विविधं, कैमास दासी रता ॥ छं० ॥ ९८ ॥

कवित्त॥ जिन मंची कैमास। ग्रेह जुग्गिनि पुर आनी॥
जिन मंची कैमास। बंध बंध्यौ पंगानी॥
जिन मंची कैमास। भीम चालुक्क पहारं॥
जिन मंची कैमास। [2]जिवन बंध्यौ षट वारं॥
सोमत्त घट्ट कैमास की। दासि काज संदोह हुअ॥
दुप्पहर चाह दस दिसि फिरै। कोइ छची ग्रव्वहन तुअ ॥ छं० ॥ ९९ ॥

राजा का कैमास को गाड़ देना।

दूहा॥ षनि गड्यौ कैमास तहं। दासी सम करि भंग॥
पंच तत्त सरसे सुषै। प्रात प्रगट्टै रंग ॥ छं० ॥ १०० ॥
जो तक पंगति उप्पज्यौ। बैनन दिषि कविचंद॥
साम प्रगट बर कंधनह। बर [3]प्रमाद मुष इंद ॥ छं० ॥ १०१ ॥

करनाटी का निकल भागना।

षनि गड्यौ न्रप सम धनह। सो दासी सुर पात॥
दिब धारनै जलद्धि तें। लीला कहिग सु प्रात ॥ छं० ॥ १०२ ॥
षनि गड्यौ तिहि गवषनह। तजि गौषति गई दासि॥
षनि गड्यौ कैमास बर। कित दै दासी भासि ॥ छं० ॥ १०३ ॥
कर्नाटी कैमास दुति। दासि गई तन थान॥
संकर रस संकर न्रपति। बर दंपति चहुआन ॥ छं० ॥ १०४ ॥
क्रित्य कुलच्छिन हीन चित। जीरन जुग जुग हास॥
निसि निद्रा ग्रसि चिंत बर। पुच्छिय इंछिनि भास ॥ छं० ॥ १०५ ॥

(१) मो.-द्वै। (२) मो.-" जिनव वंधी बहु वारं "।
(३) ए. कृ. को.-प्रसाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपाद्घात।

मुरिल्ल ॥ उभै दासि कैमास सपत्तौ। दासी प्रनह अमंत सु रत्तौ ॥
जामनि गई सुक्क आभासी। बिय निसपत्त प्रपत्तय दासी ॥
छं० ॥ १०६ ॥

देवी का कविचंद से स्वप्न में सब हाल जताना।

दूहा ॥ बर चिंता बर राजई। सुपनंतर [1]कविचंद ॥
जुगति मंद मौ मंद दै। भै वीचं भो विंद ॥ छं० ॥ १०७ ॥
गरै माल न्वप कित्ति भय। सोहंती तन माल ॥
सुपनंतर कविचंद सों। विरचि देवि कहि ताल ॥ छं० ॥ १०८ ॥

गाथा ॥ न्वप हति बीर कैमासं। [2]सुर घट्टी रहि निस्सया ॥
बर गौ पुब्बह धनयं। रैनं निंद्रा गई बानं ॥ छं० ॥ १०९ ॥

दूहा ॥ सुष रत्ती पत्तौ न्वपति। दिसि धवली तमछिन्न ॥
चिंति मग्ग गहि सूर मन। पुरष प्रवानी लिन्न ॥ छं० ॥ ११० ॥

कविचन्द के मन में शंकाएं होना।

मुरिल्ल ॥ बाल सु अत द्रिगया मन किन्नी। रवि सुष भरि दिषि वल्लभ भिन्नी ॥
को पुच्छै किन उत्तर दीयौ। तजि आषेट धम्म व्रत लीयौ ॥
छं० ॥ १११ ॥

दूहा ॥ धम परंत दिल्लिय नयर। चित सुद्धि संधि करूर ॥
गौ हरम्म हरि माननी। चित सामंतन सूर ॥ छं० ॥ ११२ ॥
दिन नष्षे हरि पूज बिन। निसि नष्षे बिन काम ॥
प्रात भई गत रोस गम। अरधि अग्गि सित ताम ॥ छं० ॥ ११३ ॥
गयौ न्वप्प बन अद्ध निसि। सुंदरि सौंपि [3]सहाय ॥
सुपनंतर कविचंद सों। सरसे बद्दिय आय ॥ छं० ॥ ११४ ॥

देवी का प्रत्यक्ष दर्शन देना।

(१) ए. कृ. को.-सुनि।
(२) मो. "सुर घटी रहि नीलया"। (३) ए. कृ. को. ।यसाय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुरिल्ल ॥ तब परतष्षि भई ब्रह्मानी। बीना पानि हंस चढ़ि ध्यानी ॥
न्रिमल चीर हीर विन मंडं। तिहि कल किति कही सु प्रचंडं॥ छं० ॥ ११५ ॥
जिहि निसि सो बर वित्तक वित्ती। ज्यों राजन कैमास सु हत्ती ॥
बर ब्रंनत सर अंबर छाइय। तबहि रूप चंदह कवि ध्याइय ॥ छं० ॥ ११६ ॥
दरसन देवि परस्सिय कब्बी। सुपनंतर कविचंद सु दिब्बी ॥
बद्रिय युक्ति उचार तुंब बर। बरन उचार कियौ आसा उर ॥ छं० ॥ ११७ ॥
भइ परतष्षि सु कब्बि मनाई। उगति जुगति कहि कहि समुझाई ॥
बाहन हंस अंस सुष दाई। तब तिहि रूप ध्यान कबि पाई ॥ छं० ॥ ११८ ॥

सरस्वती के दिव्य स्वरूप की शोभा वर्णन।

नराज ॥ मराल बाल आसनं। अलित्त [1]साय सासनं ॥
सुहंत जास तामरं। सुराग राग धामरं ॥ छं० ॥ ११९ ॥
कलिंद केस सुक्करे। उरग्ग बाल विथ्थुरे ॥
लिलाट रेष चंदनं। प्रभात इंद बंदनं ॥ छं० ॥ १२० ॥
कपोल रेष गातयौ। उवंत इंद्र पाथयौ ॥
उछाइ कीर षंजनं। तरुन्न रूप रंजनं ॥ छं० ॥ १२१ ॥
चाटंक झंक झंकई। तिलक्क पान संकई ॥
सुहंत तेज भासई। रुलंत मुत्ति पासई ॥ छं० ॥ १२२ ॥
उपंम चंद जंपयौ। चुनंत कीर सीपयौ ॥
विभूअ जूअ पंचयौ। कलंक राह चंचयौ ॥ छं० ॥ १२३ ॥
त्रिभंग मार आतुरं। चिबुक्क चारु चातुरं ॥
श्रवन्न चाट पिष्षयौ। अनंग रथ्थ चक्कयौ ॥ छं० ॥ १२४ ॥
जु बाल कीर सुब्भयौ। [2]उपम्म तासु लुब्भयौ ॥
दिपंत तुच्छ दिठ्ठयौ। विचै अनार फुट्टयौ ॥ छं० ॥ १२५ ॥

(१) ए. कृ. को.-छाय। (२) ए. कृ,को.-"तंकंत रत्त विंवंयौ"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सु ग्रीव कंठ सुत्तयौ । सुमेर गंग पत्तयौ ॥
सुमंत कुच्च तुंमरं । [1]सुरच्छि लग्गि अंमरं ॥ छं० ॥ १२६ ॥
नषादि ईस अच्छनं । धरंति सुच्छि लच्छिनं ॥
सुरंग हथ्थ मुंदरी । सो पानि सोभ सुंदरी ॥ छं० ॥ १२७ ॥
सुजीव अम्म बालयं । सुगंध तिष्य तालयं ॥
कनक्क बिप्प पब्बया । सुराज सिंभ दिब्बया ॥ छं० ॥ १२८ ॥
विविद्ध रोम रंगयं । पपील सुत्तरंगयं ॥
हरंत छब्बि जामिनी । कटिं सुहीन सामिनि ॥ छं० ॥ १२९ ॥
सदैव ब्रह्मचारिनी । अबुद्ध बुद्धि कारिनी ॥
अभाष दोष बंचही । सुहंत देवि संचही ॥ छं० ॥ १३० ॥
अपुट्ठ रंभ नारिनी । सुजुत्त ओप कारनी ॥
नयन्न नास कोसई । बरट्टि कट्टि भेसई ॥ छं० ॥ १३१ ॥
झलक्क तेज कंबुजं । चरन्न चारु अंबुजं ॥
सुरंग रंग ईडुरी । कलीति चंपि पिंडुरी ॥ छं० ॥ १३२ ॥
सबद्द सद्द नूपुरे । चलंत हंस अंकुरे ॥
सु पाइ पाइ रंगजा । जु अद्ध रत्त अंबुजा ॥ छं० ॥ १३३ ॥
दरस्स देवि पाइयं । सु कव्वि कित्ति गाइयं ॥ छं० ॥ १३४ ॥

सरस्वत्यौवाच ।

दूहा ॥ मात उचारत चंद सौं । भेद दियौ ग्रह काज ॥
दासि काज कै मास कौं । अप्प हन्यौ प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३५ ॥

गाथा ॥ अंबुज विकसि विलासं । देवी दरसाइ भट्ट कवि एहं ॥
अद्धं बचं परष्यं । चरचरितं चंद कवि एयं ॥ छं० ॥ १३६ ॥

पावस वर्णन ।

अरिल्ल ॥ अंबुज विकसि बास अलियायौ । स्वामि बचन सुदरि समझायौ ॥
निसि पल पंच घटी [2]द्व आयौ । आषेटक जंपिरु न्वप आयौ ॥
छं० ॥ १३७ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुरत्ति । (२) ए. कृ. को.-अद्ध ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनूफाल ॥ घन घुम्मियं चिहुपास। आषेट राजन वास ॥
निर्घोष घन घहरंत। आकाल कलि किलकंत ॥ छं० ॥ १३८ ॥
द्रिगपाल पेंडन सुद्ध। [1]दल जलज बद्दल उद्द ॥
धर पूर वारि विसाल। गिरि अंभ पूरित माल ॥ छं० ॥ १३९ ॥
तिन सगय राजन सेन। धर स्याम अम्भनि गेन ॥
निसि अद्ध नवनिति बिज्जि। चिहु ओर घन घन गज्जि ॥
छं० ॥ १४० ॥
थित पंति पंति सु सज्जि। छिन दीप छिन छिन रज्जि ॥
झिमझुम्म झुंम विपष्य। बहु बत्ति जल अति कष्य ॥
छं० ॥ १४१ ॥
दूहा ॥ अच्छौ दिन अच्छै महल। नववति बज्जि बिसाल ॥
चव श्रुत ग्रह कैमास मत। भग्गी पीठ रसाल ॥ छं० ॥ १४२ ॥

कैमास और करनाटी का कामातुर होना।

लघु नराज ॥ जुग सत्त पुर पंचासयं। भव भद्द मास अवासयं ॥
अग मन्न पष्य सु बारयं। दिसि दसमि दिवस उचारयं ॥ छं० ॥ १४३ ॥
तम भूमि तंमि नितं तयं। गत महल गुरु गत मंतयं ॥
परजंकयं परमोदयं। अनु चंद रोहिनि कोदयं ॥ छं० ॥ १४४ ॥
दुल मिलिति मिलि जुग मंतयं। जुग जामि जामिनि पत्तयं ॥
सिष सिष्षयं पट रंगिनी। मन सज्ज सज्जित दंगिनी ॥ छं० ॥ १४५ ॥
[2]दसयं धनं धन अच्छियं। सामानि केलि सु कच्छियं ॥
लिषि भोजयं भरि दासियं। दिय दोर ओर पियासियं ॥ छं० ॥ १४६ ॥
दुति जाम पल दुति अंतयं। सषि स्वामिनी इह भंतियं ॥
असु हंकयं पल विर्त्तयं। रुषि राज सेन सु इत्तयं ॥ छं० ॥ १४७ ॥
भुअ सचित सेन निसुम्भयं। घन प्रबल रस [3]वस उभ्भयं ॥
तन तेज दीपक अलपयं। रुचि राज राजित तलपयं ॥ छं० ॥ १४८ ॥
दम दमकि दामिनि दोसयं। झम झमकि बूंद बरोसयं ॥

(१) ए.-जल। (२) ए. कृ. को.-सदयं। (३) ए. कृ. को. मो-रस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धुनि नूपुरं क्रत मंदयं। गत जहां सयन नरिंदयं ॥ छं० ॥ १४९ ॥
हिय पानि मंडित जागरं। कर मद्धि निरषत कागरं ॥
छिन बंचियं असु हंकियं। क्रम क्रमत राजन वंकियं ॥
छं ॥ १५० ॥
रस तिय निमेष अतीतयं। घनघोर रोर क्रतीतयं ॥
द्रिग द्रिगन दिष्षन अंगयं। कलमह्ल कलह अलंगयं ॥
छं ॥ १५१ ॥
सम परस पर प्रति दासियं। मुष-भिन्न भिन्न प्रकासियं ॥
छं० ॥ १५२ ॥

कैमास का करनाटी के पास जाना।

कवित्त ॥ नाज रूप कैमास। बाल नन चिपति भुष्ष गुर ॥
मदन बढ्यो गुर जोर। लगी तन ताप तलप उर ॥
नाह नारि छंडयौ। चिष्ष लग्गिय ओतानं ॥
लाज बैद गयौ छंडि। रोग रोगी न पिछानं ॥
पीडयौ प्रेम मारुत सु तरु। राम नाम मुष ना कहिय ॥
जंभाति प्रकंपति सिथल [1]तन। बर प्रजंक पलक न रहिय ॥
छं० ॥ १५३ ॥

इंछिनी रानी का पत्र।

दूहा ॥ कग्ग अरोह्यौ हंस ग्रह। महल सु राज दुआर ॥
कहती राज न मानते। लिषि पट्ठयौ पावार ॥ छं० ॥ १५४ ॥
श्लोक ॥ न जानं मानवो नागो। न जानं जष्ष किन्नरं ॥
ऐ अपूरबं देहं। दासी महल मनुष्ययं ॥ छं० ॥ १५५ ॥

पृथ्वीराज का इंछिनी के महल में जाना। इंछिनी का राजा को सब कथा सुना कर कैमास करनाटी को बतलाना।

दूहा ॥ सुनि रु बचन चल्ल्यौ न्रपति! जहां इंछिनिय अवास ॥
कह्यौ क्रत्त कैमास कौ। जो दिष्यौ ग्रह दासि ॥ छं० ॥ १५६ ॥

(१) मो.-नन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनूफाल ॥ जल सजल अच्छित सेनं। धर हरत धुम्मर ऐनं ॥
दम दमकि दामिनि दूरि। जलजात नैषद पूरि ॥ छं० ॥ १५७ ॥
करि इच्छिनिय ग्रह पंति। जनु मैंन रति सम पंति ॥
द्रिग दिष्षि कूलन वाज। तिय तरित अच्छित दाज ॥ छं० ॥ १५८ ॥
इक पंच धुन कर चंपि। तर तरकि दुअ बिच कंपि ॥
कैमास प्रति सम दीस। तहां बैनं कोन प्रकीस ॥ छं० ॥ १५९ ॥
इक चुक्कि राजन जाम। पचारि इंछनि ताम ॥
बिप धऱ्यौ राजन पानि। कर करषि करन सु तानि ॥छं०॥१६०॥
बिय बुद्ध लगि [1]वहि गात। भर हरिय [2]भूमि निपात ॥
तकि तिष्ष धष्षि न सिद्ध। बढि तोमरं तन बिद्ध ॥ छं० ॥ १६१ ॥
कहि कन्न बनिता बैन। अरि पऱ्यौ प्रभु [3]असु ऐन ॥
बानावली बर धाइ। चुकि नांहि जुग्गिनि राइ ॥ छं० ॥ १६२ ॥
गहि सुंदरी सारंग। दह नेव दुव्वनि अंग ॥
दिषि राज भवषित भग्ग। मन सोक सोच विलग्ग ॥ छं० ॥ १६३॥
[4]गड्यौ मुधन न्रप अप्प। बर उट्ठि राजन तप्प ॥
.... ॥ छं० ॥ १६४ ॥

राजा का कैमास को मार कर गाड़ देना और करनाटी का भाग जाना।

कवित्त ॥ रवन कंपि रव रवन। भवन भूषन धरि हरि परि ॥
आइय दंपति इष्षि। दिष्षि दाहिम उर उभ्भरि ॥
चितें राज गति राज। कठिन मन्ने मन अंतरि ॥
षनि गड्यौ कैमास। पाच सम दासि [5]तपं उर ॥
चलि सु दासि बोलन्न जो। सो भग्गी मन मानि भय ॥
समपी सुरिद्धि पांवारि कर। फिऱ्यौ अप्प बन पिथ्थ [6]रय ॥
छं० ॥ १६५ ॥

(१) मो.-चढ़िय। (२) ए. कृ. को.-भूषन। (३) ए. कृ.-वसु।
(४) ए. कृ. को.-गडयो सु। (५) मो.-मयं उर। (६) मो.-रथ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का अपने शिविर में लौट कर आना ।

दूहा ॥ गयौ राज बन जहां सयन । जहं सामंतरु सूर ॥
संभ्रम सर सति चंद सों । सब बद्दे सम्मूर ॥ छं० ॥ १६६ ॥

देवी का अन्तरध्यान होना ।

गई मात कविचंद कहि । भइय प्रात अनुरत्त ॥
दुचित चित्त अनुप्रात भय । चिंति भट्ट प्रापत्त ॥ छं० ॥ १६७ ॥

प्रभात वर्णन ।

कवित्त ॥ बजिग प्रात घरियार । देव दरबार नूर षुलि ॥
ध्रम्म सुक्रत अंकुरिय । पाप संकुरिय कुमुद मिलि ॥
सूर किरन बिसतरन । मिलन उद्दिम सत पची ॥
[1]काम घरी संकुटिय । उड़न पंषी मन मची ॥
मिलि [2]चक्क सु चक्क चकोर धर । चंद किरन बर मंद हुअ ॥
विड्डुरिग बीर बीरं रहन । सूर [3]कंट मन कंद धुअ ॥छं०॥१६८॥

पृथ्वीराज का रोजाना दरबार लगना और कविचन्द का आना ।

*कवित्त ॥ अंतर महल नरिंद । महल मंडिय बुलाय भर ॥
तेज तुंग आछत्य । देषि अबधूत धूत नर ॥
विरद भट्ट विरदैत । नैंन बीरा रस पिष्षिय ॥
सो ओपम कविचंद । रूप हरनार सदिष्षिय ॥
सामंत सूर मंडलि रषिय । कं चित्तें कैमास जिय ॥
भावी विगत्ति जाने न को । कहा विधाता न्रिम्मयिय ॥ छं० ॥ १६९ ॥

वार्त्ता ॥ [4]राजन महल आरंभे । नीकी ठौर बैठक प्रारंभे ॥
सूर सामंत बोले । दरीषानै दुलीचै षोलै ॥
छच चमर कर लीने । मूढ़ा गादी सामंतन को दीने ॥छं०॥१७०॥

(१) ए. कृ. को.-काम घटी संकुरी । (२) मो.-चक्क ।
(३) ए. कृ. को.-सुर कंद मन कंद हुअ । (४) ए. कृ. को.-राज ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*अरिल्ल ॥ मद्धि पहर पुच्छैं प्रभु पंडिय। कहि कवि विजै साहि जिहि मंडिय॥
सकल सूर बेठवि सभ मंडिय। आसिष आनि दीय कवि चंदिय॥
छं० ॥ १७१ ॥

दरबार का वर्णन।

भुजंगी ॥ ढरै कनक दंडं विराजैत रायं। नगं तेज जोत्यं झलक्कंत कायं ॥
ढरें चोंर सोहै लगै छच ढोरै। तहां चंद कब्बी उपम्मानि जोरै ॥
छं० ॥ १७२ ॥

ग्रहं एकठे मंडली अट्ठ षेलैं। लग्यौ राह निद्वंतियं अप्प मेलैं ॥
मिलो मंडली मत्य [1]विच न्त्रप्प भारी। मनों पारसं पावसं साम धारी॥
छं ॥ १७३ ॥

भरं भार कारी करें [2]वित्त सेनं। कसे संकमानं धनुद्धार तेनं ॥
[3]विरद्दाप चंदं बरद्दाय सब्बी। दिषी जोति चौहान संजोति हब्बी ॥
छं० ॥ १७४ ॥

पृथ्वीराज की दीप्ति वर्णन।

दूहा ॥ मूढ़ा धरि गादी धरी। धुर सामंता राज ॥
देषि देव ग्रब्बं गरै। न्त्रप सिंघासन साज ॥ छं० ॥ १७५ ॥

रासा ॥ कनक दंड चामर छच विराजत राज पर ॥
रयन सिंघासन आसन सूर सामंत भर ॥
राजस तामस सत्त चयं गुन भिन्न पर ॥
मनहुं सभा मँडि वंभ बिय छिन अप्प कर ॥ छं० ॥ १७६ ॥

उपस्थित सामंतों की विरदावली।

चोटक ॥ सभ वन्नन भट्ट कविंद कियं। सब राज दिसा रजपूत बियं ॥
भुज [4]दष्षिन लष्षिन कन्ह हुअं। रन भूमि विराजत जानि धुअं ॥
छं० ॥ १७७ ॥

---

* छन्द १६९ और छन्द १७१ मो.-प्रति में नहीं हैं।

(१) मो.-विचित्र भारी। (२) ए. कृ. को.-चित्त, चिंत्त।

(३) मो.-वरदाप्त। (४) ए. कृ. को.-'दच्छिन, लच्छिन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन बीर महंमुद मान हऱ्यौ। अरि[1] अच्छ अछच पवार धऱ्यौ॥
हरसिंघ हसिंह सुवाम [2]भुजं। उन मद्धि विराजत राज [3]दुजं॥
छं० ॥ १७८ ॥

नरनाह सनाह सुस्वामि हुअं। जब चालुक भीम मयंद भुअं॥
बर बिंभ्भ विराजत राज दलं। जब चालुक चार नछिच हलं॥
छं० ॥ १७९ ॥

परमाल चंदेलति संष धरै। न्रप जाहि बकारत रौरि परै॥
बर वीर सु बाहरराय तनं। अचलेसर भट्टिय जासु रनं॥
छं० ॥ १८० ॥

कर बीर सिंघासन जासु चँपै। नर निद्दुर एक निसंक तपै॥
जिहि कुप्पत गज्जत देस कँपै। धर विग्रह जाहि जिहांन जपै॥
छं० ॥ १८१ ॥

* लरि लष्षन देषन दो ललियं। मुँह मारि मुरस्थल स्वस्थ हियं॥
सनमान सबै दिन चन्द लहै। [4]पुठियं जुध वत्त सु आह कहै॥
छं० ॥ १८२ ॥

रिसि पाइ के चावँड लोह जऱ्यौ। मदगंध गयंदन सों सु लऱ्यौ॥
गहिलौत गयंद सु राज [5]बरं। भुज ओट सु जंगल देस धरं॥
छं० ॥ १८३ ॥

तप तोंवर सोभि पहार सही। दल दिष्ष सु [6]साह सिताब ग्रही॥
मुष मुच्छ सु अल्ह नरिंद मुषं। जुध मंडय साह सहाब रुषं॥
छं० ॥ १८४ ॥

बड़गुज्जर राम कनक्क बली। जिहि सज्जत पंगुर देस हली॥
कुवरंभ पजूनति राज बलं। जिन षग्ग सु जुग्गिनि जूह घलं॥
छं० ॥ १८५ ॥

(१) मो.-अनूअ। (२) ए. कृ. को.-भुअं। (३) ए. कृ. को.-दुज।
* यह पंक्ति केवल मो. प्रति में है। (४) ए. कृ. को.-पुच्छियं। "चावंड रिसाइ के लोह जऱ्यौ" (५) मो.-वरी, धरी। (६) ए. कृ. को.-ताह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नञगौर नरेस न्वसिंघ सही। जिन रिद्धि सनंतन माझ लही॥
परमार सलष्पन लष्य गनै। इक पट्टिय कंगुर देस तनै॥छं०॥१८६॥

दस [1]पुत्रति मानिकराइ तनै। कहि को [2]तिनही उतपत्ति [3]बनै॥
जिन वंस जराजित बीर हुअं। सर संभरिजा उतपत्ति भुअं॥छं०॥१८७॥

नवनिक्करि के नव मग्ग गए। नवदेस अपूरब मारि लए॥
तिन पट्ट सु प्रथ्थय राज तपै। कलहौ कलहौ निसि द्यौस जपै॥
छं०॥१८८॥

कर सिंगिनि टंक पचीस गहै। गुन जंग जंजीरनि तीन रहै॥
सर संधि समंतत तेज लहै। सबदं सर हेत अनंत बहै॥छं०॥१८९॥
गुन तेज प्रताप जो हन्न कहै। दिन पंच प्रजंत न अंत लहै॥
सम मंडप मंडित चित्त कियं। कवि अप्प सु अग्ग हकारि लियं॥
छं०॥१९०॥

गाथा॥ *हक्कारिय चन्द कव्वी। देवी वरदाय वीर भट्टायं॥
तिहु॑ पुर परागद वानी। अग्गं [4]आव राव आएसं॥ छं०॥१९१॥

पद्धरी॥ बेमग्गराइ दारिद विभाड़। अचगल्ल राइ जाड़ा उपाड़॥
अनपुट्टराय पुट्ठिय पलानि। मुह कंठराय तालू लगान॥छं०॥१९२॥
असपत्ति राय उथ्थापि हथ्थ। अस कत्ति राय थापन समथ्थ॥
महाराज राज सोमेस [5]पुत्त। दानवह रूप अवतार धुत्त॥छं०॥१९३॥

कविचन्द का राजा के पास आसन पाना।

दूहा॥ †आयस सुनि अग्गे [5]भयौ। दयौ मान कर अप्प॥
[6]सहि न जास कविचंद पै। निकट न्वपत्ति सु तप्प॥ छं०॥१९४॥

कन्ह का कविचन्द से मानिक राय के पुत्रों की पूर्व कथा पूछना।

(१) मो.-पुत्रनि। (२) ए. कृ. को.-तिनकी। (३) ए. कृ. को.-गनै।
* यह गाथा मो.प्रति के सिवाय अन्य प्रतियों में नहीं है।
(४) मो.-पूर। (५) मो.-गयौ। (६) ए. कृ. को.-"सह्यौ न जाइ"
† इस छन्द के बाद का पाठ मो. प्रति में नहीं मिलता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जराजित्त मानिक सुतन । कन्ह पुच्छि कविचंद ॥
तिहि बंधव कारन कवन । काढ़ि दिए करि दंद ॥ छं० ॥ १९५ ॥

कवि का उत्तर कि "मानिक राय की रानी के गर्भ से एक अंडाकार अस्थि का निकलना"।

अरिल्ल ॥ तक्षक पुर चालुक ग्रह पुत्तिय । मानिकराव परिनि गज गत्तिय ॥
तिहि रानी पूरब क्रम गत्तिय । इंडज आकृति हड्ड प्रसूतिय ॥
छं० ॥ १९६ ॥

मानिक राय का उसे जंगल में फिकवा देना।

कवित्त ॥ कह जानै कह होइ । अस्ति गोला रँभ अंदर ॥
हुकुम कियो मानिक्क । जाइ नंषौ गिरि कंदर ॥
नह मन्यौ रागिनी । करे अपमान निकासिय ॥
संभरि कै उपकंठ । रहिय चालुक पुरवासिय ॥
सोवी विगत्ति मन सोचि कै । बहुत भंति घन जतन किय ॥
दिन दिन अधिक्क बधतो निरषि । हरषि आस बढ्ढिय सु हिय ॥
छं० ॥ १९७ ॥

दूहा ॥ सुरधर षंडह काल परि । लैब सही सँग भंड ॥
आय कमधती कर रहिय । चालुक पुर गुढ़ मंड ॥ छं० ॥ १९८ ॥

मानिक राय का कमधुज्ज कुमारी के साथ व्याह करना।

कवित्त ॥ सोलंकिन मन मोच । पठय परधान विचच्छन ॥
दै असंष धन धान । लगन थप्पाइ ततच्छन ॥
पानिग्रहन कर लियौ । कुंअर हड्डा कमधज्जनि ॥
दसहू दिसि उड़ि बत्त । सुने अचरज पति गज्जनि ॥
आरंभ गोल करि फौज को । गोला रँभ उप्पर चलिय ॥
नीसान डंक के बज्जते । नव सुलष्य साहन मिलिय ॥
छं० ॥ १९९ ॥

गजनी पति का मानिक राय पर आक्रमण करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुजंगी ॥ नवं लष्य सेना सजे गज्जनेसं। चल्यौ चढ्ढि मग्गं अछिंदं दिनेसं ॥
पलक्कंत अंद्रू गजं मद्द छक्के। कमठ्ठं दिगंपाल नागं कसक्के ॥
छं० ॥ २०० ॥

प्रजारंत ग्रामानि धामं मिवासं। प्रजा कोक भज्जी उरं लग्गि चासं ॥
दरं कूच कूचं धरा हिंदु लेनं। सुन्यौ संभरीनाथ आवंत सेनं ॥
छं० ॥ २०१ ॥

करेचा परे ताम नीसानं घायं। सतं मुष्य क्रम्यौ सु मानिक्क जायं ॥
पचीसं हजारं चमू चाहुआनं। मिली जाम मध्ये प्रथमं मिलानं ॥
छं० ॥ २०२ ॥

पुरं चालुकं जाय डेरा सु दीनं। भज्यौ रूस नो रागिनी गोठि कीनं ॥
फिरे चढ्ढियं देय नीसान बंबं। गरज्जे मनों सापरं सत्त अंबं ॥
छं० ॥ २०३ ॥

उस अस्थिअंड का फूटना और उसमें से राजकुमार का उत्पन्न होना।

परज्जंद उट्ठे अग्राजं सबद्दं। नचै बीरभद्रं जिसे वीर हद्दं ॥
बज्यौ सिंधु औ राग सारं करारं। तबे हड्ड फट्यौ प्रगट्यौ कुमारं ॥
छं० ॥ २०४ ॥

प्रचंडं भुजा दंड उत्तंग छत्ती। नरं नारसिंघं अवत्तार भत्ती ॥
कवच्चं कसे उत्तमंगं सटोपं। धरा बाहरा अश्व आरूढ़ कोपं ॥
छं० ॥ २०५ ॥

पहुंच्चे पिता अग्ग दौरे पहिल्लं। अरी फौज में जोर पारे दहल्लं ॥
नषं तिष्य धारा गरग्गं सु धारे। हिरंनंकुसं गोल रंभं विदारे ॥
छं० ॥ २०६ ॥

इसे लोह वाहे छछोहे दुदीनं। मनो इंद्र वृत्तासुरं जुद्ध कीनं ॥
वहे रत्त धारान के घाल नालं। परे भूमि झूमे भरं विक्करालं ॥
छं० ॥ २०७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परी पंषिनी जोगिनी बीर ईसं। नचै नारदं आदि पूरी जगीसं॥
कहां लग्गि चंदं बरन्नै सँग्रामं। भगी साह सेना तजे ग्रब्ब मामं॥
छं० ॥ २०८ ॥
गजं बाज लूटे असंषित्त मालं। लियौ संग्रहे अस्सपत्ती भुआलं॥
छं० ॥ २०९ ॥

उक्त राजकुमार का नाम कर्ण और उसका सम्भर का राजा होना।

कवित्त ॥ गोला रंभ रिन गंजि। भंजि नवलष्ष भुजा दंडि॥
सतरि सहस मयमत्त। करे सिर दंड साह छंडि॥
पुनि संभरि पुर आय। पूजि आसा वर माइय॥
उड्ड पाल दिय नाम। विरद हाड़ा बुल्लाइय॥
असुरान मेटि करि हिंदु हद। पिता राज लद्धिय तबै॥
अस्तिपाल हुअ संभरि न्टपति। हड्ड मंड फट्टिय जबै॥
छं० ॥ २१० ॥

संभर की भूमी की पूर्व्व कथा।

पद्धरी ॥ संभरिह मभ्भ संभरादेव। मानिक्क राव तिन करत सेव॥
सुप्रसन्न होइ इन दिन बरज्जि। मति लेय दंड करि सिर परज्जि॥
छं० ॥ २११ ॥
चढ़ि पवँग पहुमि षरि है जितक्क। अनषूट रजत ह्वै है तितक्क॥
करि हुकुम मात संभरि पधारि। चहुआन ताम हय चढ़ि हकारि॥
छं० ॥ २१२ ॥
द्वादसह कोस ऊतर क्रमंत। भवतव्य कोन मेटै निमंत॥
मन आनि भ्रंति फिरि देषि पच्छ। ह्वै गयौ लवन गरि सर प्रतच्छ॥
छं० ॥ २१३ ॥
उपजीय चित्त चिंता निरास। छंडिय सु देह चंदहु प्रकास॥
अनचिंत म्टत्त हुअ कलह बढ्ढि। बड़ पुत्र जराजित बंध कढ्ढि॥
छं० ॥ २१४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परजंन लाज गुरजन्न मुक्कि। गोहड्ड नंषि जल घाट रुक्कि॥
षंधार लार करि सिलह बंधि। उत्तारि आय निज देह रुंधि॥
छं० ॥ २१५ ॥

धर बेध षेध लग्गिय अनादि। रघु भरथ पंड कुरु जुद्ध बादि॥
लिय राज पाट हय गय भँडार। मेटै न चित्त उपिन्न षार॥
छं० ॥ २१६ ॥

हो तौ सु जानि फिरि कदंब गोत। डेरा उपारि बिय रवि उदोत॥
अनि अन्नि साष थप्पित उतन्न। उगरीय जीय मानिक्क तन्न॥
छं० ॥ २१७ ॥

*इह कथा जाम कहि रहिय चंद। फिरि निकट बोलि लिय तब नरिंद॥
छं० ॥ २१८ ॥

अरिल्ल ॥ मध्य प्रहर पुच्छै न्रप पंडिय। कहि कवि विजै साह जिन मंडिय॥
सकल सूर बैठे विस मंडिय। आसिक तहां दीय कवि चंदिय॥
छं० ॥ २१९ ॥

कबिचन्द का आशीर्वाद।

साटक ॥ केके देस नरेस सूर किद्रसं, आचार जोवा न्रपं।
किंकिं देन प्रमान मान सरसा, किंकिं कयं भष्षयं॥
किंकिं भेस कि भूप भूषन गुनं, का सो प्रमानं धरं।
[1]किंनारी नर मान किं नर वरं, जंपे कविंदं तुअं॥
छं० ॥ २२० ॥

कवित्त ॥ नरह नरेस विदेस। भेस जूजू रसया रस॥
कै मंडे जस रस समूह। काल भ्रमया न केन बस॥
सबे षाइ संसार। किनै संसार न षायौ॥
मोहनि चित्त निहार। जगत सब बंध नचायौ॥

*छन्द १९३ से लेकर छन्द २८० तक की कथा क्षेपक मालूम होती।
(१) ए.कृ.को.-नारी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नचै न मोह जग द्रोह जिम । मुगति भुगति करि ना नचै ॥
बसि परै पंच पंचो अर्गन । मोह छांह सब को पचै ॥छं०॥ २२१ ॥
चौपाई ॥ [1]हुंकरि चंद देवि बरदाइय । भट्ट विरह तिह्नपुर ताइय ॥
उमा जिनै जुग जुगति जगाइय । मुगति भुगति अप संगह छाइय ॥
छं० ॥ २२२ ॥

राजोवाच ।

दूहा ॥ सबै सूर सामंत [2]जुरि । बिना एक कैमास ॥
[3]तस जानौ बरदाइ पन । मंचि जोग नन पास ॥ छं० ॥ २२३ ॥
अरिल्ल ॥ प्रथम सूर पुच्छै चहुआनय । है कयमास कहौ कहुं जानय ॥
तरनि छिपंत संझ सिर नायौ । प्रात देव हम महल न पायौ ॥
छं० ॥ २२४ ॥

राजा का कहना कि यदि तुम सच्चे बरदाई हो तो बतलाओ कैमास कहां है ।

दूहा ॥ उदय अस्त तौ नयन दिठि । जल उज्जल ससि कास ॥
मोहि चंद है विजय मन । कहहि कहां कैमास ॥ छं० ॥ २२५ ॥
नन दिट्ठौ कैमास कबि । मो जिय इय [4]संदेह ॥
चामंडा बीरह सुमन । अप्पौ न्रप्प सु छेह ॥ छं० २२६ ॥
नाग पुरह नर सुर पुरह । कथत सुनत सब साज ॥
दाहिम्मौ दुल्लह भयौ । कहि न जाय प्रथिराज ॥ छं० ॥ २२७ ॥
का भुजंग का देव ससि । निकम कवित्त जु षंडि ॥
कै बताउ कैमास मुहि । हर सिद्धी बर छंडि ॥ छं० ॥ २२८ ॥
कवित्त ॥ जौ प्रसन्न बरदाय । देव संचौ बर अप्पौ ॥
कहि अदिष्ट कैमास । देवि बर छंडि न जप्पौ ॥
तीन लोक संचरै । सत्ति तिनकी बरदाई ॥
तूपन अप्पन छंडि । जोग पाषंडह षाई ॥

(१) ए. कृ. को- हक्करि (२) ए. कृ. को- तुरि ।
(३) ए. कृ. को- तम (४) ए. कृ. को- अंदेस ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानहु सु बात अरु बेग बत। कहिग साच कविचंद तत ॥
मन बच क्रम्म कैमास धन। जौ दुरगा सच्ची सुभत ॥
छं० ॥ २२९ ॥

कवि का संकोच करना परंतु राजा का हठ करना।

दूहा ॥ जौ छंडे सेसह धरनि। हर छंडै विष कंद ॥
रवि छंडै तप ताप कर। बर छंडै कविचंद ॥ छं० ॥ २३० ॥
हठ लग्गौ चहुआन नृप। अंगुलि मुष्ष फुनिंद ॥
तिहुंपुर तुअ अति संचरैं। कहै बनै कविचंद ॥ छं० ॥ २३१ ॥
जौ पुच्छै कविचंद सों। तौ ढंकी न उघारि ॥
अब कित्ती उषर चंपौ। सिंचन जानि गमारि ॥ छं० ॥ २३२ ॥

चन्द के स्पष्ट वाक्य।

सेस सिरप्पर खूर तन। जौ पुच्छै नृप एस ॥
दुहुं बोलन मंडन मरन। कहौ तौ कव्वि कहेस। छं० ॥ २३३ ॥
होता नत कविचंद सुनि। तूं साचौ बरदाइ ॥
कहि मंची कैमास सौ। क्यों मार्‍यौ अप धाइ ॥ छं० ॥ २३४ ॥
गाथा ॥ कहना न चंद [1]चित्तं। नर भर सम राज जोइयं नयनं ॥
आचिज्ज मूढ़ [2]वत्तं। प्रगट भवसि अवसि आरिष्टं ॥ छं० ॥ २३५ ॥
कवित्त ॥ एक बान पहुमी। नरेस कैमासह मुक्कौ ॥
उर उप्पर [3]थर हर्‍यौ। बीर कष्षं तर चुक्कौ ॥
बियौ बान संधान। हन्यौ सोमेसर नंदन ॥
गाढ़ौ करि निग्रह्यौ। षनिव गड्यौ संभरि धन ॥
यल छोरि न जाइ अभागरौ। गाड्यौ गुन गहि अग्गरौ ॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। कहा निघट्टै इय [4]प्रलौ ॥ छं० ॥ २३६ ॥

---

(१) मो.- वित्तं। (२) ए. कृ. को.- मंत्तं, मंत।
(३) ए. कृ. को.-थरहर्‍यौ। (४) मो.-प्रलै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा का संकुचित होना ।

दूहा ॥ सुनि न्त्रपत्ति कवि के वयन । अनन बीय अवरेष ॥
कविय [1]वचन सम्हौ भयौ । सूर कमोदनि देष ॥ छं० ॥ २३७ ॥

गाथा ॥ झंझामि झार लग्गी । संझया वंदामि भट्ट बचनानि ॥
बुझझामि हाम को इनं । घम दम उर मझझ रष्षियं राजं ॥
छं० ॥ २३८ ॥

सब सामंतों का चित्त संतप्त और व्याकुल होना ।

कवित्त ॥ भट्ट वचन सुनि श्रवन । कन्ह धुनि सीस ग्रेह गय ॥
बिसम परिग सामंत । सुनिय साचं जु तत्त भय ॥
कोन काज इह षेह । हुऔ मंची इह राजन ॥
निसि अद्धी आषेट । कियौ किं कीरे भाजन ॥
किं भट्ट बीर जान्यौ सु दिन । कह सुझयौ संभरि धनी ॥
अंगुरी दंत दंपी सकल । अप अप ग्रेह उठि भनी ॥ छं० ॥ २३९ ॥

सब सामंतों का खिन्न मन होकर दरबार से उठ जाना ।

वाघा ॥ सुनि सुनि श्रवन चंद चहुआनं । कलिमलि चित्त सुभट सब्बानं ॥
के अवलोइ सु मुष्षं चंदं । निरषे नयन के विभूत दंदं ॥छं०॥२४०॥
के भय मूढ़ जड़ बर अप्पं । के भय चित विरत्त सु दप्पं ॥
समुझि न परे सूर सामंतं । गंठन गुन नन आवै अंतं ॥
छं० ॥ २४१ ॥
निरषे द्रग मुष रत्त करूरं । असही तेज अजेज सनूरं ॥
निरषे अन्यौ अन्य सजरं । भय भय चित्त सुभट्ट सपूरं ॥
छं० ॥ २४२ ॥
गब्बके बद्दर गज्जि गुहीरं । भय न्त्रिघात तरित तन भीरं ॥
भय गंभीर सुहीर समीरं । उड्डे कर सर रेन सनीरं ॥ छं० ॥ २४३ ॥
घट्टी मद्ध पंच पल सेषं । विन भद्रवै भयानक भेषं ॥

(१) मो.-वेचन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिसि नैरत्ति कि गहि गोमायं। दिसि धूमंत सिवा सुर तायं॥
छं० ॥ २४४ ॥

बद्दी दैवि चकोरन भासं। गज्जे छोनि ओनि आयासं॥
मन्ने सह आरिष्ट अपारं। उपज्यौ किन कारन कृत्यारं॥
छं० ॥ २४५ ॥

भुव अवलोकि कन्ह नर नाहं। उट्ठे आसन हुंत अराहं॥
चले अप्प निज मग्ग सु ग्रेहं। फुनि गोयंदराज उठि तेहं॥
छं० ॥ २४६ ॥

[1]उनमन मन्न उठ्ठि सामंतं। कलमलि विकल उकल सा चिंतं॥
कहै चंद बरदाइ सकोहं। [2]हनि कैमास दासि रिस दोहं॥
छं० ॥ २४७ ॥

सुनि सुनि वचन भट्ट न्रप कानं। अप्पअप्प गए ग्रेह परानं॥
जुग्गिनि पुर [3]जग्गत चहुआनं। भइ निसि चार जाम जुग मानं॥
छं० ॥ २४८ ॥

सब के चले जाने पर कविचन्द का भी राजा को धिक्कार कर घर जाना।

कवित्त॥ राजन मझ्झ [4]संपरिय। पट्ट दरबार परट्ठिय॥
बहुरे सब सामंत। मंत भग्गिय सिर लट्ठिय॥
रह्यौ चंद बरदाइ। विमुष पग डगन सरक्क्यौ॥
ग्रभ्भ तेज वर भट्ट। रोस जल षिन षिन सुक्क्यौ॥
रत्तरी कंत जागंत रै। भई घरंघर बत्तरी॥
दाहिम्म दोस लग्ग्यौ षरौ। मिटै न कलि सों उत्तरी॥छं०॥२४९॥

चौपाई॥ इह कहि ग्रेह चंद संपन्नौ। बर कैमास आसु भलपन्नौ॥
मित्तद्रोह भट उर सपन्नौ। दाहिम वरन बरन संपन्नौ॥
छं० ॥ २५० ॥

(१) मो.-"उने मत मन्न उठे सामंत।
(२) ए. कृ. को.-हति।
(३) मो.-जग्गे।
(४) ए. कृ. को.-संभारिय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का शोकग्रस्त होकर शयनागार में चला जाना और नगर में चरचा फैलने पर सब का शोकग्रस्त होना।

पद्धरी॥ निज रहन अंग साला सु एक। आवास रंग रचन विवेक॥
अंदर महल्ल अंतर अवास। अति [1]रचन चित्र आसासि तास॥
छं०॥ २५१॥

पर्यंक उभय आभासि भासि। [2]अति ऊक गंध रसु रस्स वासि॥
आरोहि अप्प सोहै सु राज। बिन तरुनि करुन मुष छादि राज॥
छं०॥ २५२॥

दर रष्षि बोल्ल आएस दीन। रुक्यौ सु अप्प पर वच्च चिन्ह॥
किय सयन पेम न्रप जंपि अप्प। रष्यौ सु थान निज दप्प रप्प॥
छं०॥ २५३॥

बैठो सु पिट्ठ [3]पट सूर घट्ट। रष्षे सु जक्कि सब थान थट्ट॥
भय चकित चित्त अंदर बहाज। भयभीत मंन मन्ने अकाज॥
छं०॥ २५४॥

इह कत्य चित्त नयरी निवास। सब लोक दोष उद्दार रास॥
रूंधे सु हट्ट पट्टन सु बान। बिन रूप दिष्षि दिट्ठिय डरान॥
छं०॥ २५५॥

सब पत्त सूर सामंत ग्रेह। कत्या सु कत्य मन्नेव एह॥
इह कम्यौ दुष्य विते चिजाम। भयभीति निसा मन्नी [4]सहाम॥
छं०॥ २५६॥

भइ [5]षिनद जाम चव जुग समान। सब लोक दुष्य बित्ती डरान॥
कैमास ग्रेह चिंत्यौ सु दोस। गद्यौ सु दासि षूनह सरोस॥छं०॥२५७॥
चंदेन चिंति निज माह सत्त। चढ़ि चलिय ग्रेह बरदाइ जत्त॥
छं०॥ २५८॥

(१) ए. कृ. को-चरन। (२) ए. कृ. को.-"अति ऊक गंध रव सुर सवास"। (३) ए. कृ. को.-पट्ट। (४) ए. कृ. को.-महाभ। (५) ए. कृ. को. षिमद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उग्गियं मान पायान पूर । बज्जियं देव [1]दर संष तूर ॥
*कलच कैमास चढ़ि वरन साल । बरदाइ देवि वर मंगि बाल ॥
छं० ॥ २५६ ॥

कवि का मरने को उद्यत होना ।

चंद्रायन ॥ चलै चीय बर संगन भट्ट सु भट्ट बर ।
अप्पावै कैमास मिले जाइ अंग बर ॥
न्रप छुट्टी कवि हित्त घरी पल बरनि बर ।
तौ जन जन सह चिंत सत्ति तुअ देव बर ॥ छं० ॥ २६० ॥
रोला ॥ चंद बदनि ये चंद सीष कोमंगि उचारी ।
मरन टरे जो भट्ट राज कैमास विचारी ॥
हम तुम दुहुन मिलंत सुनी अंगन तुम धारी ।
दंपति सम्हौ बचन तब्ब बर बरनि उचारी ॥ छं० ॥ २६१ ॥
गाया ॥ बाला न अच्छि लग्गी । हुं बरदाइ कड्डिया अग्गी ॥
तंबाल विरस लग्गी । लच्छिन षुरसान रष्षिया मग्गे ॥छं०॥२६२॥
आदर दीन सु कब्बी । आसन आछादि रोहि तिय तथ्यं ॥
निज प्रारथना राजं । गोमभक्षे ग्रेह साजनं साजः ॥ छं० ॥ २६३ ॥

कविचंद की स्त्री का समझाना ।

चौपाई ॥ तब ग्रेहनि बरदाइ सु आइय । अंचल गंठि विलग्गिय धाइय ॥
को [2]अति जात अप्प जम आनै । अनि सिर सत्य अप्प सिर तानै ॥
छं० ॥ २६४ ॥
जिन कैमास रिद्धि रज रष्षी । जिन कैमास मंच सिर सष्षी ॥
जिन कैमास देस नव आने । सो कैमास हत्यौ निज बाने ॥छं०॥२६५॥

(१) मो-दरवार नूर ।

* इस छन्द को चारों प्रतियों भुजंगी नाम से सम्बोधन किया गया है । मूल पाठ भी "उग्गियं भान पायान पूरं, वज्जियं देव दर संख तूरं । कलुत्र कैमास चढ़ वरन साला । देवी बरदाय वर मंगवाला ।" यह है परन्तु यह भुजंगी नहीं है । भुजंगी छन्द में चार यगण होता है । मालूम होता है लेख की भूल से कुछ हेर फेर होगया है अस्तु हमने इस छन्द को पूर्व्वोक्त पद्धरी में मिला कर पाठान्तर दे दिए हैं ।

(२) ए. कृ. को.-अनि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू भूल्यौ बरदाय विचारं। अच्छिर सुद्धिमुद्ध मन द्वारं॥
जे जमग्रेह न अप्प ढुंढाने। सो जग्गवै काय विनसाने॥
छं० ॥ २६६ ॥

कवित्त ॥ जा जीवन कारनह। ध्रम्म पालहि व्रत टारहि॥
जा जीवन कारनह। अथ्यि[1] दै चित्त उवारहि॥
जा जीवन कारनह। द्रुग्ग हय देसति[2] अप्पहि॥
जा जीवन कारनह। होम करि नव ग्रह जप्पहि॥
जा जीवन सांई सुपन। न्रपति बहुत जाचिय अभौ॥
सुक्के सु सरोवर हंस गौ। कहि बुझ्झै अधियार भौ॥ छं०॥२६७॥

जो मनुच्छ धर ध्रम्म। मरम जानै न मरम जप॥
सास आस बंधयौ। आस आसना करै अप॥
जग्ग जोग तप दान। सास बंधन जग्गो जुअ॥
मोर बीर अनुकार। सास नन असन बंध धुअ॥
छिन देह भंग विज्जल छटा। सजय विजय[3] बंधय सु जिय॥
गुर गल्ह रहै भल पत सुचौ। दुष्ष न करो महंत पिय॥ छं०॥२६८॥

मात गरभ बस करी। जम्म बासुर बस लभ्भय॥
षिनन नग्गि षिरुदाय। मुदय षिन हंस अलुभ्भय॥
बपु विसष्ष बढ्यौ। अंत रुद्दह डर डरयौ॥
कच तुच दंत जरार। धार किम किम उच्चरयौ॥
मन भंग मग्ग मुक्कत सयल। निषत निमेषन चुक्कयौ॥
पर कज्ज अज्ज मंगौ न्रपति। सकै न[4] प्रान षमुक्कयौ॥ छं०॥२६९॥

दूहा ॥ समरि जाय कविचंद बर। बर लद्धौ हुंकार॥
राज दरह सम्हौ चलै। मरन सुमंगल भार॥ छं०॥ २७०॥

स्त्री के समझाने पर कवि का दरबार में जाना और राजा से कैमास की लाश मांगना।

(१) मो.-अथ्थह। (२) मो. सौं।
(३) मो.-वंध्रिय। (४) ए. कृ. को.-"प्रान पमुक्कयौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ रष्षि सरनि सह गवनि। मरन मंगल अपुब्ब किय ॥
दरनि पिष्षि दरबार। रुक्कि सक्यौ न मग्ग दिय ॥
जग्गि जलनि प्रथिराज। नैंन नेनं जब दिष्यौ ॥
अति करना रस बीर। करी संकर रस लिष्यौ ॥
बुल्ल्यौ न बेन तब दीन हुअ। कनक काम कबि अच्छयौ ॥
तुम देव कित्ति कुब्वलिय कमल। धरनि धरनि तन मुक्कयौ ॥
छं० ॥ २७१ ॥

दूहा ॥ रहि सु भट्ट अंतर करन। कविन ध्रम्म धर भूर ॥
इह अध्रम्म लग्गहि उरह। क्रम्म उरक्कहि ऊर ॥ छं० ॥ २७२ ॥

गाथा ॥ बाला न मंगि बरयौ। काउ वासंत भट्ट [1]सियाइं ॥
ना तुअ गति संभरवै। संभरि वै राय राएसं ॥ छं० ॥ २७३ ॥

पृथ्वीराज का नाहीं करना।

दूहा ॥ पढ़िय कित्ति बुल्लिय बयन। दिल्ली पुरह नरिंद ॥
दाहिम्मौ दाहर जहर। को कहै कविचंद ॥ छं० ॥ २७४ ॥

कवि का पुनः राजा को समझाना।

कवित्त ॥ रावन किन गड्डयौ। क्रोध रघुराय बान दिय ॥
बालि सु कित गड्डयौ। चीय सुग्रीव जीय लिय ॥
चंद किन्ने गड्डयौ। कियौ [2]गुरवारस हिल्लह ॥
[3]रविन पंग गड्डयौ। पुच्छि सहदेव पहिल्लह ॥
गड्यौ न इंद्र गोतम रिषह। सिव सराप छंडन जनी ॥
इन दोस रोस प्रथिराज सुनि। मति गड्डय संभरि धनी ॥
छं० ॥ २७५ ॥

ना राजन कुर नंद। [4]नाक वत्ती [5]क्कन कट्टी ॥
अध्रम्म बीर विक्रम्म। सक्क बंधी कल [6]मिट्टी ॥
पंजर सह सु रारि। दिष्षि गंध्रव नृप भंजों ॥

(१) ए. कृ. को.-सिरयाई, सिरपाई। (२) कृ.-गुरवास हिल्लह।
(३) ए.-रवनि।
(४) ए. कृ. को.-नाक वित्ती। (५) मो.-कट्टी। (६) मो.-कट्टी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तमकि तास अगि मारि । क्रित्ति पुत्त मुक्किय अज्जौं ॥
सो सत्ति बात आतम पुरिसि । तामस इह आपुन मिटै ॥
किं ज्ञान लोय किं किं [1]जपह । कित्ति तोय बहु न्रप नटै ॥
छं० ॥ २७६ ॥

कवि का कैमास की कीर्ति वर्णन करना ।

मति कैमास मति मेर । दोस दासी न हनिज्जै ॥
मति कै[2]मास मति मेर । सामि दो हौ न गनिज्जै ॥
मति कैमास मति मेर । दंड कुब्बेर भरिज्जै ॥
मति कैमास मति मेर । दाग बिन धरनि धरिज्जै ॥
बहि गई सरक नगौर की । मंच जोर सेवर कहर ॥
चहुआन राव चिंतारि चित । गद्यौ कढ्ढि दै करि न हर ॥
छं० ॥ २७७

दूहा ॥ दासि संग कैमास कढि । जग दिष्षवै नरिंद ॥
बरै बरनि अंगन षरी । बर मंगै कविचंद ॥ छं० ॥ २७८ ॥

कैमास की लाश उसके परिवार को देना ।

कवित्त ॥ रोस मेल्ही दासी सु । राज लिन्नौ अध लिष्यौ ॥
सो नठ्ठी तिन बेर । कढ्ढि कैमासह दिष्यौ ॥
कविय हथ्थ अप्पयौ । अप्प बरनी बर लिन्नौ ॥
पुत्र बीर दाहिम्म । हथ्थ कविचंद सु दिन्नौ ॥
तिहि तरुनि मिलत तारुनि करिनि । पेम पंसि विधि विधि करै ॥
कविचंद छंद इम उच्चरै । भावी गति को उब्बरै ॥ छं० ॥ २७९ ॥

राजा का कैमास के पुत्र को हाँसीपुर का पट्टा देना ।

कविय पुत्र कैमास । राज हांसीपुर दिन्नौ ॥
पुब्ब धनं पन अप्पि । गोद नरसिंह [3]सु किन्नौ ॥
तिहि सु दिनह प्रथिराज । बीर दुरबार सजोइय ॥
बरनि बज्जि नीसान । रोस छिम सात्वक होइय ॥

(१) ए. कृ को. जयियं ।　(२) मो.-कैवास ।　(३) ए. कृ. को.-सु दिन्नौ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरतान गहन मोषन न्रपति । पंग बीय पातुर दरसि ॥
दिषि चीय सभा मन पंग को । छबि संमुह बरि बरि बिरसि॥
छं० ॥ २८० ॥

दूहा ॥ प्राहारी कैमास न्रप । सो अप्पे विह सत्त ॥
न्रप पुच्छत कविचंद कों । अरु गुर राज सहित्त ॥छं०॥२८१॥

पृथ्वीराज का गुरुराम और कविचन्द से पूछना कि किस पाप का कैसे प्रायश्चित्त होता है।

तुम गुर न्रप अरु गुर कवी । तुम जानौ बहु काम ॥
किहि परि गह लंछन लगै । [1]को मेटै लगि साम ॥ छं० ॥ २८२ ॥

कविचन्द का उत्तर देना। (सामयिक नीति और राज नीति वर्णन)

पद्धरी ॥ उच्चरै चंद गुर राज साज । कल कहै बत्त सो नीत राज ॥
संभरहु सूर सोमेस पुत्त । कल धूत धूत [2]जग धूत धुत्त ॥
छं० ॥ २८३ ॥

सम वर प्रधान सम तेज राज । सम दान मान सामत्ति साज ॥
पलटै कि राज लछन्न लीन । बहु भंति कुलह विग्गरै तीन ॥
छं० ॥ २८४ ॥

विग्गरै छत्र हंकार मभ्भ । बर जाय अप्प रस अम्म रज्ज ॥
विग्गरै राज राजन अन्याइ । विग्गरै ग्रेह चीया अछाय ॥
छं० ॥ २८५ ॥

उद्दिम सु हीन न्रप राज राइ । तिन चंद चंद प्रातह दिषाइ ॥
विग्गरै इष्टपन कट्ठ नेह । विग्गरै सोय निज लोभ ग्रेह ॥
छं० ॥ २८६ ॥

विग्गरै मोह भर समर साज । विग्गरै लच्छि बौहरे लाज ॥
प्रसट्ठै अधम्म विगरै ध्रम्म । संभरि सु राज राजन सु ध्रम्म ॥
छं० ॥ २८७ ॥

(१) मो.-"कै मैंटन लग्गी काम"। (२) ए. कृ. को.-गज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साधुम्म सेव गरुअत्त जीव। चिय राज नीति राजह न सीव॥
बिग्गरै पुन्य धीरह सु हूव। मादक्क ग्रेह बहु दुष्ट हूव॥
छं० ॥ २८८ ॥

विग्गरै राज परदार [1]पान। लोभिष्ट चित्त चंचल प्रमान॥
विग्गरै राज सुय बाल हूर। संचरै बहुत सषि मभ्भक्ष दूर॥
छं० ॥ २८९ ॥

विग्गरै दुज्ज ग्रह अंत दान। विग्गरै तप्प क्रोधह प्रमान॥
विग्गरै राज राजन सु जानि। जो सुनै बत्त दुष्टं सु बानि ॥छं०॥२९०॥

परनारि [2]षित्त आचरन छोइ। बिग्गरै राज निज संच सोइ॥
तन सहै राज चिंतन प्रमान। पुच्छहि सु बोल कनवज्ज जान॥
छं० ॥ २९१ ॥

पुच्छि मंच राय संभरि नरेस। तत ग्रहै राज नीतह सुरेस॥
उच्चऱ्यौ राव जंबू नरेस। संभरिय राज संभरि नरेस ॥ छं०॥२९२॥

[3]तव बंस भाव जरतित्त मान। संभरी हुत ऊपत्ति थान॥
तिहि सेन राजनीतह सु राज। सो नीत राज जित [4]सुरग राज॥
छं० ॥ २९३ ॥

रिसराज जोर तिन तह प्रमान। बंधयौ सकल तिन राज [5]थान॥
कसि असक ओर कसि द्रव्य दंड। दिज्जियै ओर जोगिंद डंड॥
छं० ॥ २९४ ॥

भंजियै बंक कै बंक साल। भजि कठिन कंक कौ कठिन बाल॥
बल पुच [6]माय सम सुमति जाइ। आनयौ पुष सम रहिस धाय॥
छं० ॥ २९५ ॥

[7]पंडिय सु दोस दुज दान प्रीय। न्रप दुरै झूठ कित्ती सु [8]दीय॥
न्रप मीति ध्रम्म समकाल लोय। बंकै कटाछ्य बंकै न कोय॥
छं० ॥ २९६ ॥

(१) ए. कृ. को.-थान। (२) ए. कृ. को.-पित्त। (३) ए. कृ. को.-तम।
(४) ए. कृ. को.-सुग्गि। (५) ए. कृ. को.-थान। (६) ए. कृ. को.-न्याय।
(७) ए. कृ. को-"मंडिय सुदेस हुज दान प्रीति"। (८) ए. कृ. को.-दीत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संसार नीति किय तत्त पंथ। विभ्भूत नीति सुनि नीति ग्रंथ॥
सह ध्रम्म पुच्छ तत्तं प्रमान। नित साम षास ब्रह्मा सु ध्यान॥
छं०॥ २९७॥

रषिये सु भ्रत्य रष्षन सु लच्छि। फिरि होत ताहि हित तत्त अच्छि॥
न्त्रिप भजै नीति उमराव होति। न्त्रिप [1]रहै नीति जो हैत प्रीति॥
छं०॥ २९८॥

न्रप जानि बीर भौ ताहि भेद। दुह भरनि बीर ज्यों पुबह षेद॥
न्रप मेटि करै समता सरीर। बुझ्झवै अगनि जिम बरसि नीर॥
छं०॥ २९९॥

भोग वै राज परिगह संजुत्त। मति प्रान करै सा ध्रम्म पुत्त॥
रिषियै सु भ्रत्य इन भांति मान। ते सामि काम अमरित्त जान॥
छं०॥ ३००॥

सा ध्रम्म सहै सो मित्त सेव। जानै न सामि उत्तर न देव॥
न्रप पास बत्त इह भंति जानि। कवि बहि लज्जि गंभीर बानि॥
छं०॥ ३०१॥

न्रप सुनी बत्त परि कहि न जाइ। ज्यों जल तरंग जल में समाइ॥
हय गय सु मांहि धुअ परी छूअ। सम्माइ जेम जल छांह कूअ॥
छं॥ ३०२॥

समसान अग्गि निधि न्त्रपति जीय। न्त्रप चित्त भ्रंग कीटी [2]सु लीय॥
रष्यो सु अंब जौ न्रपत रूप। वय ससी चित्त लज्जी सकूप॥
छं०॥ ३०३॥

जन हथ्थ आन पंकी सु रंग। तामंस लोह जनि [3]मनित पंग॥
सुरतान चित्त जब होय लोय। उन चित सदा कलपंत होइ॥
छं०॥ ३०४॥

सा ध्रम्म बिना परि गहन काच। रूपं न रत्त दरबार साच॥

---

(१) ए. दहै। (२) मो.-तीय।
(३) ए. कृ. कां.-मन पतंग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुज सफर जम्म [1]नाही सनान । संसार रतन नृप परष दान ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

दूहा ॥ इह मंची नृप काज अरु । सब परिगह इन भीत ॥
राजनीति राजन रहै । जस धन ग्रहन न जीत ॥ छं० ॥ ३०६ ॥

राजा का कहना कि मुझे जैचन्द के दरबार में ले चलो ।

होय कंठ लग्गिय अगनि । नयन जलग्गि ललान ॥
अंब जीव बंछै अधिक । कहि कबि कोन सयान ॥ छं० ॥ ३०७ ॥
तौ अप्पौं कैमास तो । जो मेटै उर अंदेस ॥
दिष्या वहि पहु पंगुरौ । जै जैचंद नरेस ॥ छं० ॥ ३०८ ॥

कवि का कहना कि यह क्यों कर हो सकता है ।

षिनक न मन धीरज धरहि । अरि दिष्षत तिन काल ॥
अति बर बर बुल्लै नहीं । सुकिम [2]चलहि भूपाल ॥ छं० ॥ ३०९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि हम तुम्हारे सेवक बन कर चलेंगे ।

मुरिल्ल ॥ चलौं भट्ट सेवक होइ सथ्थह । जौ बोलूं तो हथ तुम मथ्थह ॥
जबह जानि संमुह हूअ । तब संम्मरु अंग करौं दोउ भूअ ॥
छं० ॥ ३१० ॥

कवि का कहना कि हां तब अवश्य हमारे साथ जाओगे ।

अरिल्ल ॥ अब उपाय समझयौ इह संचौ । सुनि कवि मरन मिटै नह रंचौ ॥
समर तिथ्थ गंगाजल षंचौ । अवसर अवसि पंग ग्रह नंचौ ॥
छं० ॥ ३११ ॥

राजा का प्रण करना ।

दूहा ॥ आनंचौ कवि के वयन । न्रप किय संच विचार ॥

(१) ए. कृ. को.-तीही । (२) मो.-चलहु ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मरन गरुअ सिर हरुअ है। जियन हरूअ सिर भार ॥छं०॥३१२॥

*चान्द्रायन ॥ अप्पौ पहु कैमास सती सत्त संचऱ्यौ।
मरन लगन विधि हथ्थ तत्थ कवि उच्चरयौ ॥
धर भर पंग प्रगट्ट रुठट्ट विहंडिहीं।
इन उपहास विलास न प्रानय षंडिहौं ॥ छं० ॥ ३१३ ॥

कैमास की स्त्री का उसका मृतकर्म करना, राज महलों की शुद्धता होनी, सब सामंतों का दरबार होना।

पद्धरी ॥ अप्पौ सु कविय कैमास राज। बरदाय कित्ति मन्यो सु काज ॥
दीनौ सु हथ्थ सह गमनि तथ्थ। लै चली बाहि 'क्रत न्नि सथ्थ ॥
छं० ॥ ३१४ ॥

बोलयौ सुतन कैमास हंस। दुअ तिय बरष्य अति रूअ रंस ॥
दीनौ जु तथ्थ सिर राज हथ्थ। थप्पौ सु थान परि तुय परथ्थ ॥
छं० ॥ ३१५ ॥

दुअ घटिय पंच पल आदि जाम। किन्नौ सु महल चहुआन ताम ॥
बोले सु सब्ब सामंत सूर। आदर अदब्ब दिय अत्ति जूर ॥
छं० ॥ ३१६ ॥

कयमास घात अपराध दासि। सब कही सुभट सुभ्भा सु भासि ॥
अप्पान क्रत्य मन्यो सु अप्प। जानहु सु रीति राजंग दप्प ॥
छं० ॥ ३१७ ॥

इम कहिय कन्ह नरनाह बोलि। अप्पौ सु तेग हमकों सु षोलि ॥
किय सुमन रूर सामंत सब्ब। दुअ ग्रेह ग्रेह आनंद तब्ब ॥
छं० ॥ ३१८ ॥

सब नैर बासि आनंद मन्नि। षोले किपाट न्रप जुगति गन्नि ॥
उद्यौ सु महल सब सुचित कीन। पारनें काज द्वादसी दीन ॥
छं० ॥ ३१९ ॥

*इस छन्द को चारों प्रतियों में मुरिछ करके लिखा है। (१) मो.-क्रम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैमास के कारण सबका चित्त दुखी होना।

बहुरेब सूर सामंत ग्रेह। कयमास दोस मन्यो सु देह॥
कीने सुभट्ट सब सुचिंत राज। उर मन्यौ अप्प आनंद काज॥
छं० ॥ ३२० ॥

पालहि सु नीति बिधि कित्ति अंग। बिन सच्च रच्च दाहिम्म रंग॥
भंगीर धीर मति बीर अत्ति। [1]सुझ्झै सुमन्न अंतर उरत्ति॥
छं० ॥ ३२१ ॥

राजा का कैमास के पुत्र को कैमास का पद देना।

दूहा ॥ उरसल्लौ कैमास नृप। पुत्र परठ्ठिय पट्ट॥
चित चंचल अब्बल करिय। दिय हय गय बर यट्ट॥
छं० ॥ ३२२ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके चावंडराय बेरी भरन कन्नाटी दासी षून कैमास बधनो नाम सत्तावनवों प्रस्ताव संपूरणम्॥ ५७॥

(१) मो.-मुझ्झै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ दुर्गा केदार सम्यौ लिष्यते ।

(अट्ठावनवां समय ।)

पृथ्वीराज का कैमास की मृत्यु से अत्यंत शोकाकुल होना ।

दूहा ॥ नह सच मुष्य गवष्य थह । नह सच अंदर राज ॥
उर अंतर कैमास दुष । सामंता सिरताज ॥ छं० ॥ १ ॥

कवित्त ॥ न्रप क्रीड़त चौगान । सथ्य सामंत सूर भर ॥
जब रामति रसरंग । तत्र संभरै मंचि बर ॥
जब क्रीड़त जल केलि । चित्त कैमास उहासै ॥
बारावन्नि बिहार । तथ्य दाडिम बर भासै ॥
जब जब सु गान कोतिग कला । पुहप सुगंधह [1]वास रस ॥
जब जबह अवर सुष संभवै । तब उर सल्लै सहिय तस ॥ छं० ॥ २ ॥

दूहा ॥ अति उर सालै मंचि दुष । करै न प्रगट समुझ्झ ॥
मानो कूआ छांह ज्यों । रहत रात दिन मझ्झ ॥ छं० ॥ ३ ॥

सामंतों का गोष्टी करके राजा के शोक निवारण का उपाय विचारना ।

कवित्त ॥ तब सु कन्ह चहुआन । राव जैतह सम बुझ्झिय ॥
षीची राव प्रसंग । जाम जद्दव घन सुझ्झिय ॥
चंद्र सेन पुंडीर । राव गोयंद राज बर ॥
लोहानौ आजान । राम रामह बड़गुज्जर ॥
पुछ्यौ सु मंच सब मंच मिलि । राज दुष्य कैमास मिति ॥
नन कहै [2]कवन सो मन वचन । मिटै सोइ मंडौ सुमति ॥
छं० ॥ ४ ॥

सामंतों का राजा को शिकार खेलने लिवा जाना ।

(१) ए. कृ. को.-वीस । (२) ए. कृ. को.-वचन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कही जाम जद्दो जुवान । सुनि कन्ह नाह नर ॥
चंद्र सेन पुंडीर । राय गोयंद राज बर ॥
आषेटक प्रथिराज । सह अंतर गति आदै ॥
दै समद्धि संक्रमौ । करौ इन बुद्धि सवादै ॥
मन्नी सु सब्ब सामंत मिलि । थपि सामंतन सत्ति करि ॥
बरनौ सु जाम जद्दव न्रपति । तबहि राज म्रगया सुभरि ॥छं०॥५॥

सज्जि सब्ब सामंत । चल्यौ चहुआन पान भर ॥
अटल अवनि आभंग । सज्जि सक कन्ह नाह नर ॥
गरुअ राव गोयंद । अतत्ताईय ईस बर ॥
चढ़िय निडर रट्ठौर । सलष लष्षन बघेल क्रूर ॥
सामंत सूर मिलि इक्क हुअ । चले सथ्थ राजन ररिय ॥
औछंग अंग सन्नाह लै । इम सु राज म्रगया करिय ॥ छं० ॥ ६ ॥

प्रनित सब्ब सामंत । चल्यौ चहुआन अनब्बर ॥
सथ्थ सूर सामंत । विरद अन्नेक बहत सिर ॥
सथ्थ लीन सन्नाह । अवर परकार साथ सजि ॥
बानगीर हथ नारि । धारि दिढ़ मुट्ठि (१)हथ्थ रजि ॥
घन लीन सज्जि सथ्थें (२)सयन । करि टामंक सु कूचकिय ॥
क्रीड़न सु राज म्रगया चल्यौ । सब आषेटक साजलिय ॥छं० ॥७॥

पृथ्वीराज के शिकारी साज सामान का वर्णन ।

पद्धरी ॥ आषेट चल्यौ प्रथिराज राज । सथ लिये सूर सामंत साज ॥
रस अग्ग सून्य सौ तुंग एक । सथ लिये तुंग सो भषन तेक ॥
छं० ॥ ८ ॥

पंच सै मद्धि नाहर पछारि । जीव लैं जाव वच्छंतिवार ॥
इक सहस बधन वादाह तेज । जुटि पटकि भुम्मि कट्ठत करेज ॥
छं० ॥ ९ ॥

(१) मो.-रथ्थ । (२) ए. कृ.- को.-सथन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारङ्ग सहस बल गनै कौन । धावंत भूमि भुल्लाइ पौन ॥
छल छेद भेद जीवन लषंति । जुट्टंति अंत पसु पल भषंति ॥
छं० ॥ १० ॥
पय तरह रत्त मुष अग्र नास । रत्ती सु रसन कोमल सु भास ॥
नष बीह अग्र कै बीय चार । चौरार पुंछ तिष्षे सु तार ॥छं०॥११॥
कर पदह थोर जड्डे सजोर । नष तिष्ष विद्ध गिरि वज्र रोर ॥
कटि क्रसल थूल नित्तंब जानि । उर थूल लंक केहरि समान ॥
छं० ॥ १२ ॥
गररत्त गरुअ विस्साल भाल । तिष्षे सु दसन दंपति कराल ॥
कप्पोल सरल बल प्रथुल रुच्च । सोभंत गात वैताल रुच्च ॥
छं० ॥ १३ ॥
बिन अंग रोम के प्रथुल रोम । अन्नेक जाति दिसि विदिसि भोम ॥
द्रिग अनत तेज जोतिष्ष जास । जघनं सु गत्ति म्रगराज ग्रास ॥
छं० ॥ १४ ॥
अर हेम पट्ट के डोरि पट्ट । सेवक एक प्रति उभय घट्ट ॥
धावंत धरनि आजानवाह । बर बेग पवन मन लच्छि गाह ॥
छं० ॥ १५ ॥
नर जान रोह के अस्व जान । आरूढ़ सकट के वृषभ यान ॥
तुंगह सु पंच तोमर पहार । अन्नेक देस साजोति सार ॥
छं० ॥ १६ ॥
सत तुंग भषन लंगीस राव । तुंगह सु पंच जामानि ताव ॥
पम्मार जैत चव तुंग सथ्थ । द्वै तुंग भषन लोहान तथ्थ ॥
छं० ॥ १७ ॥
चय तुंग चंद पुंडीर धीर । द्वै तुंग राम गुज्जर [1]गहीर ॥
बलिभद्र एक सारद तुंग । परसंग राव द्वै तुंग जंग॥ छं० ॥ १८॥
द्वै तुंग महन परिहार सार । चय तुंग बरुन बंधव सहार ॥
षेलंत सब्ब प्रथिराज संग । गिरवर विहार थल बढ्ढि रंग ॥
छं० ॥ १९ ॥

(१) ए. कृ. को.-सहीरं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारद्ध दून सें चिच साज। बर साज बहल के भास भाज॥
हय रोय केय आरोहि पिट्ठ। स्त्री गोस केस जन्नाव यट्ठ॥
छं० ॥ २०॥
फंदैत कुरँग सें दून सार। जर हेम [1]पट्ट डोरी मषार॥
जुर बाज कुही तुर मतिय जुत्त। को गनै अवर पंषी अभुत्त॥
छं० ॥ २१॥
[2]षेदा सु सहस सारद्ध एक। तरिया सु सहस चौ जूवि मेक॥
सें पंच मूल धारी अभूल। द्रिग दिट्ठ अंत आनै समूल॥ छं० ॥ २२॥
आवै सु मध्य पावै न जानि। क्रीड़ंत राज सम विषम थान॥
.... । .... ॥ छं० ॥ २३॥

शहाबुद्दीन का दिल्ली की ओर दूत भेजना।

कवित्त ॥ मन चिंतै सुरतान। मान संभरिपति भंजिय॥
पानी पन्न प्रवास। सबै सुष तिन दुष तज्जिय॥
तिन सु बैर उर चिंति। प्रात अप्पिय सभ [3]दूतन॥
तुम दिल्लिय पुर जाहु। जहँ चहुआन सु धू तन॥
लिषि पच साह ध्रम्मान सम। सुष वानी इम रट्टियौ॥
कैमास कृत्य सामंत सम। षबरि विवरि सब पट्टियौ॥ छं० ॥ २४॥
दूहा ॥ दूत सपत्ते साहि तव। जहं कायथ ध्रम्मान॥
भेद राज सामंत कौ। लिषि दीजै अब्बान॥ छं० ॥ २५॥

धर्म्मायन कायस्थ को शाह का दिल्ली की सब कैफियत लिखना।

ध्रम्माइन काइयह तब। जो [4]कछु वित्त कवित्त॥
चाहुआन सामंत के। सब लिखि दिये चरित्त॥ छं० ॥ २६॥

दूतों का गजनी पहुंच कर शाह को धर्म्मायन का पत्र देना।

(१) ए. कृ. को.-घट्ट। (२) ए. कृ. को.-दोषा।
(३) ए. कृ, को.-दूतह, धूतह। (४) ए. कृ. को.-चिन्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूत सपत्ते गज्जनै। जहँ गोरी सुरतान॥
तपै साह साहाब बर। मनों भान मध्यान॥ छं० ॥ २७॥
दिन चढ़तें साहाब दर। आनि कगर कर दीन॥
मुदित चित्त भए मीर सब। मन उछाह सब कीन॥ छं०॥ २८॥

दुर्गा भाट का देवी से कविचन्द पर विद्या वाद में विजय पाने का वर मांगना।

कवित्त॥ निसा एक निज ग्रेह। भट्ट साहाब द्रुग्ग बर॥
धरिय देवि उर ध्यान। इष्ट चिंतन सु अप्प करि॥
निसा अद्ध सुत जानि। देवि आई सुहित्त धरि॥
कहै चंडि सुनि चंड। मुझ्झ विग्यान इक्क बर॥
बरदाइ चंद चहुआन कौ। सुनिय अपूरब कथ्य तस॥
सम बाद विद्य मंडौ रसन। जौ पाऊं देवी दरस॥ छं०॥ २९॥

देवी का उत्तर कि तू और सब को परास्त कर सकता है, केवल चन्द को नहीं।

कहै देवि सुनि द्रुग्ग। उभय पुत्तह नह अंतर॥
दीरघ चंद सु चारु। अनुज केदार कलाधर॥
वाद विवाद जु कोइ। जाय चंदह सम मंडै॥
झीन होइ मति हीन। ख्याति तिन वानी षंडै॥
जित्तनह अवर जग मझ्झ तुम। एक चंद अंतर सुचिर॥
अनि वस्त विवह अप्पों अनत। पुच्च सु पुज्जन प्रेम धर॥ छं०॥ ३०॥
हनूफाल॥ उच्चरिय देविय गाजि। सुनि भट्ट तूं कविराज॥
कविचंद दीरघ सेव। तुम अनुज अंतर भेव॥ छं०॥ ३१॥
नन करहु तिन सम वाद। अनि देस जिप्पन स्वाद॥

दुर्गा का कहना कि मैं पृथ्वीराज से मिलना चहता हूं इस पर देवी का उसे वरदान देना।

केदार अष्षय एम। चहुआन देषन प्रेम॥ छं०॥ ३२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो हुकम अप्पै मात। सुविहान पुच्छौं बात॥
बोली सु देवी बेंन। तुम चलौ दिल्लिय चेंन॥ छं०॥ ३३॥
साहाब दैहै सीष। चहुआन पेम परीष॥
हय गय सु वाहन हेम। ग्रामेक पच परेम॥ छं०॥ ३४॥
सत बाज हथ्थिय तीस। समपै सु दिल्लिय ईस॥
अषेट अभ्भय राज। पानीय पंथ समाज॥ छं०॥ ३५॥

प्रातःकाल दुर्गा भाट का दरबार में जाना।

गाथा॥ निसि गत जग्गिय भट्टं। उर आनंद मानि मन अप्पं॥
जहां साहिब सुरतानं। तहां स चलि अप्पयं कब्बी॥ छं०॥ ३६॥
दूहा॥ मुक्कि ग्रहं निय ग्रह दिसा। सयन अप्प तजि बंध॥
ज्यौं कंचन जिय चिंतइय। ज्यौं पंडित गुन अंध॥ छं०॥ ३७॥
गाथ॥ कबि पहुंच्यौ दरबारं। करि सलाम साह बर गोरी॥
दिष्टे वासब सेनं। पेंसत दिठ्ठाइ गोरियं साहिं॥ छं०॥ ३८॥

दुर्गा भट्ट का शहाबुद्दीन से दिल्ली जाने के लिये छुट्टी मांगना।

कोलाहल कवियानं। सनमानं साहिबं होयं॥
[1]वारिज विपनह मझ्झै। ना छूझंत हरुअ गरुआई॥
छं०॥ ३९॥
भुजंगी॥ दिषे साहि गोरी दरब्बार थानं। करै भट्ट केदार [2]ताके बषानं॥
मनो पावसं अंत आभा सु रंगं। दिषे साहि दरबार बहु मेछ रंगं॥
छं०॥ ४०॥
कही बागवानी प्रमानी सु अल्ली। दियौ साह सीषं चलै भट्ट दिल्ली॥
.... । .... ॥ छं०॥ ४१॥

तत्तार खां का कहना कि शत्रु के घर मांगने जाना अच्छा नहीं।

(१) मो.-ज्यो वाज दिन संझने। (२) ए. कृ. को.-ताकि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ सुनिय बचन सुरतान । दिष्षि बोल्यौ ततार बर ॥
भट्ट चलै मंगना । जहां बंध्यौ सु अप्प कर ॥
अरिसों ना हिय मिलन । मगन तिन ठाउन जाइय ॥
मान भंग जहां होइ । पास तिन मग नन पाइय ॥
अप्पिहै दान अप्पन कुटिल । अप्प कित्ति तौ [1]हान मम ॥
बरदाय भट्ट द्रुग्गा सु तुम । इच्छ होइ तौ करहु गम ॥ छं० ॥ ४२ ॥

शाह का कविचन्द की तारीफ करना ।

दूहा ॥ सुनि सहाव हसि उच्चरिय । दिष्षहु चंदह सत्त ॥
सुपनेंऊ धर गज्जनें । मंगन नायौ इत्त ॥ छं० ॥ ४३ ॥

इस पर दुर्गा भट्ट का चकित चित्त होना ।

सुनिय बयन सुरतान मुष । कवि उत्तर नन आइ ॥
मानों उरग [2]छछोंदरी । डारैं बनै न षाय ॥ छं० ॥ ४४ ॥

शहाबुद्दीन का दुर्गा भट्ट को छुट्टी देना और भिक्षावृत्ति की निन्दा करना ।

घरी एक बिसमति भयौ । मुष दिष्षै सुरतान ॥
मोहि भट्ट पुंछहु कहा । जाहु जहां तुम जान ॥ छं० ॥ ४५ ॥
तिन तें तुस तें तूल तें । फेंन फूल तें जानि ॥
हसि जंपै गोरी गरुअ । मंगन है हरुआन ॥ छं० ॥ ४६ ॥

दुर्गा केदार का दरबार से आकर दिल्ली जाने की तैय्यारी करना ।

सुनत बचन सुरतान मुष । भट्ट संपतौ धाम ॥
तजि बिराम चित्तह चल्यौ । जुग्गिनिवै पुर ठाम ॥ छं० ॥ ४७ ॥
पिता पुत्र सों बत्त कहि । मंगन मन चहुआन ॥
स्वामि बैर दातार घन । साहि कही इह बानि ॥ छं० ॥ ४८ ॥

(१) ए. कृ. को.-दान मम । (२) ए. कृ. को. छछुंदरी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ [1]चलिय भट्ट बर ताम। नाम द्रुग्गा केदार बर ॥
संभरेस अवदेस। लष्ष अप्पै विलष्ष गुर ॥
अति उतंग चहुआन। मान मरदन षल पानं ॥
अरब षरब उप्परैं। कोरि अप्पै करि दानं ॥
संभरिय राउ सोमेस सुअ। आसमान अभिलाष षल ॥
भिट्टै न [2]जाहि माया प्रषल। मनों नीर मझ्झै कमल ॥ छं० ॥ ४९ ॥

दुर्गा केदार का ढाई महीने में पानीपत पहुंचना।

दूहा ॥ [3]पष्ष पंच पंथह गवन। आतुर षरि उत्ताव ॥
सुनिय राज संभर धनी। पानी पंथ प्रभाव ॥ छं० ॥ ५० ॥
गिरिवर झुंगर [4]गहर बन। नद विहार जल थान ॥
क्रीड़त देसह आनि किय। पानी पंथ मिलान ॥ छं० ॥ ५१ ॥

शिकार में मृत पशुओं की गणना।

कवित्त ॥ पानी पंथह राइ। आय षेलत आषेटक ॥
सत्त एक एकल बराह। हत्ते सु गात सक ॥
अवर सत्त षट तथ्य। घत्त हत्ते करवानह ॥
सौ कुरंग संग्रहे। [5]दून सौ हनै चितानह ॥
को गनै अवर सावज [6]अनंत। हनें [7]पसू अरु पंषि जहां ॥
उत्तंग छाह जल थान पिषि। चित्त उल्हस अनु सरिय तहां ॥
छं० ॥ ५२ ॥

राजकुमार रेणसी का सिंह को तलवार से मारना।

नीसानी ॥ अहो सिंघ न वल्ल इक आया निघ्घारे।
संभव हक्क गहक्क ही उठ्या [8]भूभारे ॥
उत्तरिया असमान थी किनि कस्या भूफारे।
कंध बिबध्या प्रथु कपोल तिष दंत करारे ॥ छं० ॥ ५३ ॥

(१) ए. कृ. को.-चल्यौ। (२) ए. कृ. को.-नाहि।
(३) ए. कृ. को.-पक्ष। (४) ए. कृ. को.-गहन। (५) मो.-दूत।
(६) ए. कृ. को.-अनंग। (७) ए. कृ. को.-अनंतीति। (८) ए. कृ. को.-मारे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीह झाक झक झकै मनों बीज पथारे।
नैन विसोहै जामिनी गुरु सुक्कह तारे॥
लग्गी भट्ट टगट्टगी मनों [1]मुस्सारे।
संभरिया पंच मुष्ष यापें देष्षा दस बारे॥ छं०॥ ५४॥
आया कुंअर उप्परे षावास निहारे।
आडा आया संकडा परवार पचारे॥
आवत [2]सीस उझ्झकिया सिर सिंगी झारे।
हथ्थल षग्ग पछट्टिया कोय पिंड पलारे॥ छं०॥ ५५॥
रेंनि करष्षे कोपिया झुक्या असि झारे।
बहिया कंध विसंध होय दोय टूक निनारे॥
मनों सारे म्रत पिंड हो धग्गा कुल्लारे।
पड़िया सीस धरट्ट हे परसद्द पहारे॥ छं०॥ ५६॥
जानि परे गिरि शृंग होहारि वज्र प्रहारे।
जानि कि कन्हा कोपिया दोइ मल्ल पछारे॥
कै अप्प कुपे रघुनाथ ने सिर रावन झारे॥
जानि अलुझ्झी गुज्जरी दधि मट्ट फुटारे॥ छं०॥ ५७॥
क्रूर कबारी कुट्टिया तरु उंच कुठारे।
रेनि कहंदे धन्य हो जै सद्द उचारे॥ छं०॥ ५८॥

पानीपत के मैदान में डेरा पड़ना।

कवित्त॥ आषेटक संभरिय। कुंअर म्रगराज प्रहारे॥
जामदेव जहों। पुंडीर का कन्ह विचारे॥
दस दिस अरिय प्रचंड। तुच्छ सिक्कार सथ्थ हम॥
मिलि चिन्तय चहुआन। अप्प षिल्लियै भोमि क्रम॥
सुनि राज अप्प मन फिरन हुअ। मानि मंत सामंत किय॥
सित माह प्रथम बर पंचमी। पानीपंथ मेलान दिय॥ छं०॥ ५९॥

गोठ रचना।

(१) ए. कृ. को.-मुछारे। (२) ए.-सीर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ तहां उतरि प्रथिराज पहु। करिय गोठि तथ्याहु ॥
घन पकवान सुअन अनत। गनै कोन जी हांहु ॥ छं० ॥ ६० ॥

गोठ के समय दुर्गा केदार का आ पहुंचना।

कवित्त ॥ भई गोठि जब राज। सह परिहार सबन किय ॥
आय सूर सामंत। अवर बरदाय बोल लिय ॥
तथ्थ समय इक भट्ट। नाम द्रग्गा केदारह ॥
सपत दीप दिन जरहि। सथ्थनी सर नीसारह ॥
सिर हेम छच उप्पर उरग। अंकुस तस कर दंड सम ॥
आसीस आय दीनी न्रपति। मिलि पहु पुच्छिय मति मरम ॥
छं० ॥ ६१ ॥

चौपाई ॥ आषेटक संभरि न्रप राई बट छाया बैठे [1]तहां आई ॥
दानवंत बलवंत सलज्जौ। सुबर राज राजन प्रथिरज्जौ ॥छं०॥६२॥

कवि के प्रति कटाक्ष वचन।

दूहा ॥ भट डिंभी आडंबरह। अरु पर जानन वित्त ॥
अप्प सु कवि कब्बी कहै। किय न्रप सम्हौ चित्त ॥ छं० ॥ ६३ ॥

कवि की परिभाषा।

गाथा ॥ भट्ट उचरियं बानी ॥ [2]उगतिं लहरि तरंगं रंगं ॥
[3]जुगतिं जल जंभायं। रतनं तर्क वितर्कयं जानं ॥ छं० ॥ ६४ ॥

कवित्त ॥ जानन तर्क वित्तर्क। सरल वानी सुभ अच्छिर ॥
च्यारि बीस अरु च्यार। रूप रूपक गुन तच्छिर ॥
सुंदर अठ गन ग्रेह। लघू दीरघ बल नच्चै ॥
जुगति उगति घन संचि। लेइ गुन औगुन [4]बच्चै ॥
बुधि तोन बान बर भलक करि। वर विधान मा बुद्धि कवि ॥
बिय गुनिय देषि ग्रब्बह गरै। ज्यौं तम भगत देषंत रबि ॥
छं० ॥ ६५ ।

(१) ए. कृ. को.-नृप छाई। (२) मो.-उकंतं लहर तरंगयं रंगं।
(३) मो-जुगत। (४) मो.-वंचै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्गा केदार कृत पृथ्वीराज की स्तुति और "आशीर्वाद"।

पद्धरी ॥ मिलि भट्ट दिट्ठ न्रपती प्रमान । बुलि छंद बंध सम चाहुआन ॥
तुहि इंदप्रथ्य आजानबाह । तुहि अग्गि तूल चालुक्क दाह ॥
छं० ॥ ६६ ॥

तुंहि भंजि जुद्ध परिहार धाइ । तुंहि पंच पथ्थ प्रथिराज राइ ॥
तुंहि भंजि मान जैचंद पंग । तुंहि बीर सुरबि तुंहि काम अंग ॥
छं० ॥ ६७ ॥

तुंहि सूर रूप तुंहि ध्रम्मराइ । तुंहि भेद अभेदन बेद गाइ ॥
तुंहि मौज त्याग दिष्यौ न ईस । नन सर वरीस धन्नाधि तीस ॥
छं० ॥ ६८ ॥

विक्कम्म पच्छ सब बंध तूंहि । तुंहि साल पंग सुरतान तूंहि ॥
मम दिट्ठ वाद स्रोतान लग्ग । सोइ देषि आज प्रथिराज द्रिग्ग ॥
छं० ॥ ६९ ॥

दूहा ॥ दिय असीस प्रथिराज कों । बहुत भाव गुन चाव ॥
साम दाम दंड भेद करि । तब तिन बेध्यौ राव ॥ छं० ॥ ७० ॥

कवित्त ॥ बैनह बेध्यौ राव । चाव बेध्यौ चहुआनं ॥
गगन भान गाहतौ । भोमि गाहै घल पानं ॥
सूर गरूअ (१)गुर बीर । बीर बीराधि सु बीरं ॥
छत्रपती छिति सोभ । सूर सामंत सु धीरं ॥
सुरतान गहन मोषन सुबर । उभय बेद एकत्त कर ॥
हिंदवान लाज सोभै सु उर । कहै भट्ट द्रुग्गा सु बर ॥ छं० ॥ ७१ ॥

पृथ्वीराज का दुर्गा केदार को सादर आसन देना।

करि जुहार चहुआन । भट्ट आदर बहु किन्नौ ॥
मुक्कि न्रपति आषेट । चिंति मुक्काम सु दिन्नौ ॥
संझ महल परमान । भट्ट दोऊ रस बद्दे ॥

(१) मो.-नुर, उर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उन उचार उच्चरत। वाद दोऊ तब बढ्ढे॥
उच्चऱ्यौ द्रुग्ग केदार बर। क्यों बरदा अप्पन ग्रढ्ढे॥
मानो तो साच बरदाय पनु। जो द्रुग्गा सेंमुष कढ्ढे॥ छं०॥७२॥

दुर्गा केदार का निज अभिप्राय कथन।

दूहा॥ कढ्ढे भट्ट न्रप राज सुनि। सुद्दि मति बुद्धि अगाध॥
सुनिय चंद बरदाय है। आयौ बद्दन बाद॥ छं०॥७३॥

उसी समय कविचन्द का आना और राजा का दोनों कवियों मे बाद होने की आज्ञा देना।

कवित्त॥ दिय असीस कविचंद। आय तिन बेर प्रमानं॥
उभय भ्रम्म हिंदवान। आइ बैठे इक थानं॥
उभय बेद रह जानि। उभय बरदाय उभय बर॥
उभय बाद जित वान। उभय वर स्त्रूर सिद्ध नर॥
न्रप राज ताम पुच्छै दुअनि। गुन प्रबंध कवितह रचिय॥
बरनौ दुबीर तुम बाद बद। ध्यान धरे [1]उभया सचिय॥
छं०॥७४॥

दोनों कवियों का गूढ़ युक्ति मय काव्य रचना।

दूहा॥ थल अप्पौ सु दुह्लन कवि। ससि बरनौ इक बाल॥
इक पूरन बरनौ ससी। इक जंपो वै काल॥ छं०॥७५॥
इक्क कहौ रितु राज गुन। जुगतें जुगति प्रमान॥
कहै राज कविराज हौ। तत्तहि तत्त बषान॥ छं०॥७६॥
मिलिय चंद भट तास सम। किय सादर सनमान॥
सु गुन [2]प्रसंसिय अप्प कर। करौ वाद विधान॥ छं०॥७७॥
बाल चंद अरु बाल ससि। द्वै विधि चंद सु मत्ति॥
वर वसंत पूरन्न ससि। विधि द्रुग्गा किय सत्ति॥ छं०॥७८॥

(१) ए. कृ. को.-उभया। (२) मो.-प्रसंसित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविचन्द का वचन।

कवित्त ॥ चंद चंद बिध कही। सुनो प्रथिराज राज बर ॥
मदन बाज नष लख्यौ। मदन बांनी [1]नवक्क सर ॥
समर सार कत्तरी। दिसा सुंदरि नष षित पिय ॥
चक्क काटि मनमथ्थ। उभय किय तोरि ताहि बिय ॥
दसि अधर बधू मानोज ससि। सिंघ काटि नष बड्डियौ ॥
कटाच्छ सुरति बंकै विषम। कै काम दीप हुय सड्डियौ ॥छं०।७९॥

गाथा ॥ जं कहियं कविचंदं। संभरि रायान रावतं कहियं ॥
द्यौपानं सहु राजन। सा जंपी कित्तियं भट्टं ॥ छं० ॥ ८० ॥

दुर्गा केदार का वचन (वैसन्धि)

कवित्त ॥ कहै भट्ट द्रुग्गा प्रमान। वैसंधि उचारिय ॥
पत्र झार अंकुरित। डार नव सुभित कुँमारिय ॥
कोकिल सुर सजि रहिय। भ्रंग सजि पंष उड़ावन ॥
सीतल मंद सुगंध। पवन विममौ [2]भौ भावन ॥
वासंत बिना इन सकल बुधि। सब्ब मनोरथ रह्यौ मन ॥
लहरी समुद्र हंस समुद्र में। उलसि उलसि मध्यें सु तन ॥छं०॥८१॥

कविचन्द का उत्तर देना।

कहै चंद वयसंधि। आय ऐसें गति धारिय ॥
सैसब वपु सिकदार। सु वन पत्तह [3]उत्तारिय ॥
सिसिर थान छुट्टयौ। पट्ट जोवन लै धारित।
काम न्रपति दै आन। कट्टि सैसब तन पारित ॥
जागित्त जुब्ब तब भ्रंग तर। [4]सिसिर कट्टि भए बंधयौ ॥
नव भए सगुन अचिज्ज तन। आन दीप दीय संधयौ ॥ छं० ॥ ८२ ॥

दूहा ॥ के छुट्टा तुट्टाति के। के अति षोट उचार ॥

(१) ए. कृ. को.-निवक्क। (२) मो भै।
(३) ए. कृ. को.-उच्चारिय। (४) ए.-ससिर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अष्षर कुकवि कवित्त ज्यौं। गति जुन तुट्टाहार ॥
विधि विधि [1]बरन सु अर्थ लिय। अति ढंक्यो न उघारि ॥
अष्षर सु कवि कवित्त ज्यौं ज्यौं। चतुर स्त्री हार ॥ छं० ॥ ८४ ॥

दोनों कवियों में परस्पर तन्त्र और मंत्र विद्या सम्बन्धी वाद वर्णन।

सो सरसत्तिय सुष दियन। बाद बरन्न न भट्ट ॥
चित्त मंडि का करन पल। मत कवित्त बढ़ि घट्ट ॥
छं० ॥ ८५ ॥

केदार के कर्त्तव्य से मिट्टी के घट से ज्वाला का उत्पन्न होना और विद्याओं का उच्चार होना।

पद्धरी ॥ केदार कहै सुनि चंद भट्ट। सत अग्र मुष्ष इक मंडि घट्ट ॥
सब मुष्ष होंहि ज्वाला प्रचार। [2]मुष मुष्ष वेद विद्या उचार ॥
छं० ॥ ८६ ॥
कविचंद कहै सुनि भट्ट राज। प्रगटौ जु अष्ष विद्या सु साज ॥
केदार ताम मंड्यौ जु घट्ट। उच्चर्‍यौ मुष्ष प्रति अंग षट्ट ॥
छं० ॥ ८७ ॥
सब मुष्ष प्रगटि पावक्क ज्वाल। किल किला सद्द श्रुति बंचि नाल ॥
मंड्यौ सु घट्ट बरदाय चंद। उच्चर्‍यौ मुष्ष प्रथु प्रथुल छंद ॥
छं० ॥ ८८ ॥
दस च्यार मुष्ष विद्या उचार। ज्वाला सु मद्धि सब वारि धार ॥
हुंकार सद्द किलकार हांक। पूरी सु चंद देवी भिलाष ॥
छं० ॥ ८९ ॥
बंधी जु गत्ति जब चंद भट्ट। केदार ताम करि अवर थट्ट ॥
केदार कहै सुनि कवि विवेक। [3]बुल्लाउं बाल जो मास एक ॥
छं० ॥ ९० ॥

---

(१) मो.-ब्रन्नन।
(२) ए. कृ. को.-सब मुष्ष वेद विद्या विचार।
(३) ए. कृ. को. बुल्लाउ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविचन्द के बल से घोड़े का आशीर्वाद पढ़ना ।

कविचंद कहै सुनि चंडिपाल । जंपै छ भाष दिन एकबाल ॥
ठट्ठौ जु अग्ग जकि वाज राज । दिय अषित सीस केदार साज ॥
छं० ॥ ९१ ॥

है राज राज दीनी असीस । उट्ठे विचंद दिप कुसुम सीस ॥
उच्चऱ्यौ बाज गाथा सु एक । आसीस राज बर विधि [1]विवेक ॥
छं० ॥ ९२ ॥

गाथा ॥ जिन सारथ सजि पथ्थौ । निज रष्षौ सु ग्रभ्भ उत्तरया ॥
जिन रष्षौ प्रहलादौ । सो करौ रष्षा राज प्रथिराजं ॥ छं० ॥ ९३ ॥

दुर्गा केदार का पत्थर की चट्टान को चलाना और उसमें अंगूठी बैठार देना ।

हनूफाल ॥ वै संधि बाल प्रमान । घट घटिय द्रुग्गा पान ॥
पढ़ि छंद मंच विसाल । नर रीझि देवन माल ॥ छं० ॥ ९४ ॥
भय अग्ग जंगम अंग । गति लही थावर जंग ॥
रिंगि चल्यौ पाहन पंग । नय जानि जमुन तरंग ॥ छं० ॥ ९५ ॥
[2]थुति करत सामँत सूर । धनि चंद मंच गरूर ॥
कढ़ि मुद्र कीनिय पानि । नंषीति मध्य प्रमान ॥ छं० ॥ ९६ ॥
गुन पढ़त रहिय सुभट्ट । भय प्रथम उपल सु घट्ट ॥
कर मंगि मुद्रिक चंद । नन दई मुद्रि कविचंद ॥ छं० ॥ ९७ ॥
कीनी सु विद्य प्रमान । फिरि बाद मंडिय जान ॥ छं० ॥ ९८ ॥

कविचंद का शिला को पानी करके अंगूठी निकालना ।

दूहा ॥ प्रथम वाद पाहन कियौ । फिरि मंड्यौ बिय बाद ॥
चंद सिला पानी करी । दुग्गा आनि प्रसाद ॥ छं० ॥ ९९ ॥
साटक ॥ छत्रं सीस विराजमान बरयं राजेंद्र राजं बरं ॥

(१) ए. कृ. को.-विसेक । (२) ए. कृ. को.-छत, छुत, छुति ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्रम्म सास्त्र विरत्त [1]मंचति कबी बरदाय गुर सिद्धयौ ॥
केदाराय सु भट्ट किंन चरितं हिंदवान साषी बरं ॥
जै द्रुग्गा बरदान देवि मुषयौ तर्क बरं भासितं ॥ छं० ॥ १०० ॥

दुर्गा केदार का अन्यान्य कलाएं करना और चन्द का उत्तर देना।

चौपाई ॥ कला बहुरि द्रुग्गा बहु किन्नी। पुच काटि सिर जू जू दिन्नी ॥
धर धावै सिर पढ़ै सु छंदं। इसौ दिष्षि अद्भौ भय चंदं ॥
छं० ॥ १०१ ॥

दूहा ॥ बर प्रसन्न द्रुग्गा कियौ। विविध चरित्र विचार ॥
ए सुजानि [2]नर बीर गति। बहु बंधाना भार ॥ छं० ॥ १०२ ॥

देवी का वचन कि मैं कविचंद के कंठ में सम्पूर्ण कलाओं से विराजती हूं।

अरिल्ल ॥ मात कहै सुनि चंदर भासं। एक दिना ठाढ़ी पित पासं ॥
पाप तात कौ संध्यौ पंठ। हुं तब छंडि, [3]बसी तो कंठ ॥
छं० ॥ १०३ ॥

अनि कवि कंठ बसी परिमानं। कला पाव कै अद्धी जानं॥
तो में बसी सबै गुन लीनी। [4]दुती देह नह जानै भीनी॥छं०॥१०४॥

अन्तरिक्ष में शब्द होना कि कविचंद जीता।

झाई सी बोलिय घट मांही। चंद जीभ बोल्यौ गहराही ॥
षिझ्झयौ सुन द्रुग्ग केदारं। अंतरिष्य बोल्यौ गुन हारं ॥छं०॥१०५॥

दुर्गा केदार का हार मान कर राजा को प्रणाम करना और राजा तथा सब सामंतों का दुर्गा केदार की प्रशंसा करना।

---

(१) ए. कृ. को.-मतृति। (२) ए. कृ. को.-वर।
(३) मो.-नसी। (४) मो..दुनी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ हारि बोलि उर सकल बर । गयौ पास प्रथिराज ॥
सकल सूर आचिज भयौ । विधि विधान विधि साज ॥ छं० ॥१०६॥

कवित्त ॥ विधि विधान विधि साज । हारि अंतरिष बुलिय बर ॥
कहिय अप्प प्रथिराज । कला केदार करिय गुर ॥
थुति जंपै दनु देव । नाग जंपैति असुर नर ॥
सकल सूर सामंत । कित्ति जंपैति कित्ति कर ॥
सिर कट्टि पुच माया विभग । छंद बंध मुष उच्चरै ॥
सामंत सकल सेना सुबर । जै जै जै बानी करै ॥ छं० ॥ १०७ ॥

सरस्वती का ध्यान ।

साटक ॥ सेतं चीर सरीर नीर सुचितं स्वेतं सुभं निर्मलं ॥
स्वेतं संति सुभाव स्वेत ससितं हंसा रसा आसनं ॥
बाला जा गुन हड्डि मौर सु भ्रितं त्रिभे सुभं भासितं ॥
लंबी जा चिहु राय चंद्र वदनी दुर्ग्गं नमो निश्चितं ॥ छं० ॥१०८॥

सरस्वती देवी की स्तुति ।

भुजंगी ॥ सधी सद्धियं बीर बीरं प्रमानं । हँसी देषि मातंग मातंग न्यायं ॥
करै मुक्ति कौ काज सब्बैति देवं । तहां मुक्ति कौ तत्त आवै सु भेवं ॥
छं० ॥ १०९ ॥
करै रिद्धि कौ काज सब्बै बिहंसं । तहां सिद्ध आवै न सेवे वरंसं ॥
करै रिद्ध कौ पास गव्वै सछंडै । तहां रिद्धि आवै न पासै विषंडै ॥
छं० ॥ ११० ॥
इतं बात जानै न तो बाद जीतं । ननं सस्त्र बीरं मनं बीर रीतं ॥
जरी सस्त्र सों जंच जालंधरानी । सबै तेज मातंग तूही समानी ॥
छं० ॥ १११ ॥

कवित्त ॥ तू माया तूं मोह । मोह तत भेदन तूंही ॥
तूं जिह्वा मोथान । तूंब गुन में गुन भोंई ॥
तो बिन एक न होय । एक पच्छै कवि राजं ॥
मंच सुनै सह बद्ध । लष्य लष्यन सिरताजं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तजि मोह बीर बंछै सु कबि। तत्त भेद नन अंग तिहि ॥
मो समरि मं डोलै नहीं। उभय आस छंडै जु कहि ॥छं०॥ ११२ ॥

देवी का वचन।

दूहा ॥ सु कवि सों सरसति कहै। मो तो अंतर नाहि ॥
सूर तेज कोइ हो कहै। ससि अस अमृत छांह ॥ छं० ॥ ११३ ॥
लीलावती ॥ हहं तूं हहं तूं नहं तूं नहं तूं। ननंहुं ननंहुं ननंहुं तुं नांही॥
भयं तो भयं तो महंतो महंतो। कथं तूं कथं तूं ननं हूं ननं हूं ॥
॥ छं ॥ ११४ ॥
गुनं तो गुनं तो हुं जंची हुं जंची। तु जंचं तु जंचं कयंती पढ़ंती ॥
कथंती कथंती न्रतंती न्रतंती। भ्रमंती भ्रमंती नतंती नतंती ॥
छं० ॥ ११५ ॥
भ्रमे जेमवंती जमंती जमंती। .... ॥ छं० ॥ ११६ ॥
कवित्त ॥ पय दष्षन कर उंच। मुष्ष बोले तूं है बर ॥
कहै सु बर प्रथिराज। बत्त जंपै सु क्रंम गुर ॥
ब्रह्म विष्णु उप्पनौ। ब्रह्म देवी जुग जन्ना ॥
सूर बंस न्रप आदि। चंद बंसी नर दुन्ना ॥
रचि बालय ब्रन्नन तेज बन। किय जमुन्न जगि सुमन किय ॥
उच्चऱ्यौ संत सत्ता सु गति। मति प्रमान जंपैति सिय ॥छं०॥११७॥

दुर्गा केदार का कवि को पुनः प्रचारना।

दूहा ॥ पाषंड न जित्या अमर। सिला दिष्ट बँध कीन ॥
अब जानै बरदाय पन। उमया उत्तर दीन ॥ छं० ॥ ११८ ॥
जु कछु कहै कविचंद सो। (१)करै बनै कवि सोय ॥
जु कछु बत्त तुमसों कहों। सो उतर द्यौ मोय ॥ छं० ॥ ११९ ॥
जो पाषान सु पुत्तरी। अस्तुति करै जु आय ॥
जो उमया सेंमुष कहै। तो सांचो बरदाय ॥ छं० ॥ १२० ॥

कविचन्द का वचन।

जासों तू पाषंड कह। सो रचि मोहि दिषाउ ॥
हो नंषों बर मुंदरी। तूं कर कढ्ढि सु ताउ ॥ छं० ॥ १२१ ॥

(१) ए. कृ. को.: फरै बनें सब कोइ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक संधि वै बरनवौं। इक चद छन्नौं भट्ट॥
दो बर साषि उमा कहै। अंतर मझ्झ सु घट्ट॥ छं०॥ १२२॥

घट के भीतर से लाली प्रगट होकर देवी का कविचन्द को आस्वासन देना।

कवित्त॥ सुनि सैसब बिछुरत्त। लाल किय अमर अरुन द्रिग॥
बा न जगावन काज। रह्यौ [1]पिलदार जानि ढिग॥
छीनरु उन्नित बढ़ै। घटै करकादि मकर जिम॥
कामसाल गति पढ़ति। चिंति उतरादि सूर भ्रम॥
इच्छह जु अंछि बंके करन। संका [2]लज्ज बसंकरी॥
ग्रह ग्रहन फिरत बल दिष्षिए। श्रवन कथा रसनन चरी॥
छं०॥ १२३॥

गज निसि अंकुस चंद। कन्न तारक विहीनी॥
कै प्राची दिसि चिया। बिंद कै कंदर हीनी॥
कै कुंचिक शृंगार। काम द्रप्पत बर सोभै॥
गाहनि काननि [3]ग्रनी। सिंघ नष गज मुष सोभै॥
मनमथ्थ भुवन सोभै सुकवि। नष पच्छिम दिसि बधुअ मुष॥
मनमथ्थ धजा मनमथ्थ रथ। चक्क एक एक हति रुष॥
छं०॥ १२४॥

रोला॥ घट मंझै कविचंद। कवित उभया सुनि सुन्नी॥
अति रिझ्झय बरदाय। सुरंग यासों सर धुन्नी॥ छं०॥ १२५॥
*चान्द्रायना॥ विजै है मति राज। उकत्ति जो बहु धर्‌यौ।
मोहि चंद बरदाय। सु अंतर मति कर्‌यो॥ छं०॥ १२६॥
चौपाई॥ सो विन अक्षर एक न होई। घट घट अंतर कब्बिन जोई॥
तुम बहु जुगति द्रुगति कवि आनौ। मो कविचंद न अंतर जानौ॥
छं०॥ १२७॥

(१) मो.-पिलवार। (२) ए. कृ. को.-लंक। (३) ए. कृ. को.-गनी।
* चारों मूल प्रतियों में रोला छन्द को चौपाई करके लिखा है इस चांद्रायन का नाम ही नहीं दिया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्द कृत देवी की स्तुति।

भुजंगी ॥ तुंही ए तुंही ए तुंही तुं जुगंतं। तुंही देव देवा [1]सुरेतं समंतं ॥
मरालंति बालं अलिं सास ओरै। कियं कै सभुक्के उगस्सं विढोरै ॥
छं० ॥ १२८ ॥
लिलाटं न चंदं विराजै कला की। प्रभातं तडंदं बंदै लोय जाकी ॥
धरें रत्त सोभै बरन्ने सु चंदं। धसे गंग हेमं झुले माहि इंदं ॥
छं० ॥ १२९ ॥
पढ़ै तुंमरं ताहि पावै न पारं। दियौ चंद कव्वी इयं जा हुंकारं ॥
छं० ॥ १३० ॥

पुनः दुर्गा केदार का अपनी कलाएँ प्रगट करना और कविचन्द का उन्हें खण्डन करना।

पद्धरी ॥ केदार बत्त तब जंपि एह। दिष्षाउं तोहि बरसाय मेह ॥
प्रथमं सु पवन तब बज्जि जोर। गज्जीय गगन घन गरजि सोर ॥
छं० ॥ १३१ ॥
नभ छाइ स्याम बद्दल विसाल। भइ अंध धुंध जनु हुअ निसाल ॥
तरकंत तड़ित चिहुं ओर जोर। लग्गे सु करन कल मोर सोर ॥
छं० ॥ १३२ ॥
झम झमक बूंद बरसन्न लाग। इह चरित मंडि केदार बाग ॥
आचिज्ज हुअ [2]स[3] सभा एह। दिष्षय बसंत कविचंद तेह ॥
छं० ॥ १३३ ॥
आघात बात चलि फारि मेह। न्त्रिम्मलिय नभ्भ रवि तयन छेह ॥
हुअ अंब मौर फुल्लिगपलास। द्रुम सघन फुलि पंषिन हुलास ॥
छं० ॥ १३४ ॥
भमि भ्रंग जुथ्थ गुंजार भार। कलयंठ कुहुकि द्रुम बैठि डार ॥
[3]सभ सकल मोहि रहि इन सु छंद। किन्नो अभूत बत्तह सु [4]चंद ॥
छं० ॥ १३५ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-अथारं। (२) ए. कृ. को.-सम सकल।
(३) ए. कृ. को.-सम। (४) ए. कृ. को.-छंद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जे जेय विद्य देषी केदार । ते तेय चंद देषिय [1]विथार ॥
बैठक सु राज सिल एक तथ्य । दिष्षिय सु चंद उच्चरिय कथ्य ॥
छं० ॥ १३६ ॥
सुनि बत्त अहो द्रुग्गा केदार । प्रगटौ [2]सु विद्य जौ अग्र सार ॥
गुन पढ़ौ याहि अग्गें सु छंद । हुअ उपल गलित तो विद्यवंत ॥
छं० ॥ १३७ ॥
चिंत्तिय सु चिंत्त बरदाय देव । मन बच्च क्रम्म आचिंति तेव ॥
लगि पढ़न चंद देवी चरित्त । वर बानि ग्यान सच्चौ सु मंत ॥
छं० ॥ १३८ ॥
कुहलाय उपल हलहलिय अंग । झलमल्लगि जानि पारद सुरंग ॥
भिद्यौ सु वज्र गिरि पंक जानि । मुद्रकिय नंषि कवि मध्य थान ॥
छं० ॥ १३९ ॥
डुब्बी स, मध्य मुद्रिक अभिंदु । भयौ बज्र वान [3]सरिवरि कबिंद ॥
कविचंद कहै बर बदों तोहि । अप्पै जौ कादि मुद्रिय सु मोहि ॥
छं० ॥ १४० ॥
लग्यौ जु पढ़न केदार बानि । बर भास छंद अन्नेक आनि ॥
भेदै न उपल कछु अंग ताहि । थक्यौ अनंत करि करि उपाय ॥
छं० ॥ १४१ ॥
फिरि लग्यौ पढ़न कविचंद मंत । किल किलकि मध्य देवी हसंत ॥
अन्नेक वीज संचह उचार । पढ़ै सु बानि कविचंद सार ॥
छं० ॥ १४२ ॥
फिरि भयौ गरित गिरिवर सु अंग । कढ्ढिग सु चंद मुद्रीय नंग ॥
*लग्यौ सु पाय केदार तब्ब । सम तोहि दिषि न त्रिभुवन्न कब्ब ॥
छं० ॥ १४३ ॥
कविचंद प्रसंसिय ताम भट्ट । बर विमल तुंही बानी सु घट्ट ॥ छं० ॥ १४४ ॥
कवित्त ॥ लज्जि बीर केदार । बाद मंड्यौ मरनं चित ॥
सुबर [4]कट्ठ पुत्तरी । देहि उत्तर सजीव हित ॥

(१) ए. कृ. को.-चिथार । (२) ए.-जु । (३) ए. कृ. को.-सवरी ।
* ये अन्तिम दो पंक्तियां मो-प्रति में नहीं हैं । (४) ए. कृ. को.-कष्ठ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब चंद बंदि आराधि। घट्ट जल बंधि उड़ायौ॥
गंग हेत बरदाइ। वरनि नौ रस्स पढ़ायौ॥
द्रुग्गा केदार घट भंजि कै। कर अंतर भ्रमत करि॥
थिरयौ न सुजल अंतर रह्यौ। सो ओपम कविचंद हरि॥छं०॥१४५॥

दूहा॥ नीर भ्रमं तजि पिष्षियै। घट पष्षै कविचंद॥
मानौ [१]किरनि पतंग की। षेलत पारस मंडि॥ छं०॥१४६॥

चौपाई॥ एह चरित्त चंद कवि दिष्षिय। भला भला ऐसा तुम अष्षिय॥
चंद सूर दोऊ करि सष्षिय। बाद विवाद परस पर रष्षिय॥
छं०॥१४७॥

कवित्त॥ पढ़त मंच बरदाय। चल्यौ पाषान सुरंग कल॥
घट बहै रिति कलिय। दिद्व आसीस हय सु बल॥
बर सुंदरि कढ़ि नंषि। और आरंभ सु किन्नौ॥
जंच मंच बहु जुगति। मंगि फिर बोल सु दिन्नौ॥
ठठुक्यौ सु दुर्गा केदार बर। देव विष्ट नंषे सुमन॥
जीत्यौ न कोय हाऱ्यौ न को। सुनिय कथ्थ प्रथिराज उन॥
छं०॥१४८॥

अन्त में दोनों का बाद बराबर होना।

दूहा॥ बाद विबादन बीर [२]कवि। सत्ति सुभाव सुधीर॥
द्रुग्ग मत्ति तौ संचरी। जौ चंद वयट्ठौ नीर॥ छं०॥१४९॥

दोनों कवियों की प्रशंसा।

नीसानी॥ पुब्ब राह पढ़मष्षरां हिंदू तुरकाना।
दोई राज सु दीन दो गोरी चहुआना॥
दोई सास्त्र विचार दो कोरान पुराना।
इल उप्पर त्यों भट्ट दो ज्यों राति विहाना॥ छं०॥१५०॥
इकै पुच विवड्ड कर इक नीर पषानां।
दोई राजन मंनिया सामंत सवानां॥ छं०॥१५१॥

(१) ए. कृ. को.-विराति। (२) मो.-कोइ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का दुर्गा केदार को पांच दिन मेहमान रख कर बहुत सा धन द्रव्य देकर बिदा करना।

कवित्त ॥ बाद बीर संबाद। [1]रहै मन मभ्भ मनोरथ ॥
[2]कोप छाह सिंधु तरँग। लग्गयौ कि बान पथ ॥
संभ परत प्रथिराज। रहै ऐसै मन धारिय ॥
बहुत बाद उच्चार। चंद जीतौ गुन चारिय ॥
न्रप दीन भट्ट दिष्यौ बदन। सो दिन सरसत्तिय बिरस ॥
अप्पयौ दान उचित सु श्रुति। सु कवि दिष्षि तायें सरस ॥
छं० ॥ १५२ ॥

रष्षि पंच दिन राज। चंद आदर बहु दिन्नौ ॥
भोजन भाव भगत्ति। प्रीति महिमान सु किन्नौ ॥
गेंवर सज्जिय तीस। तुंग साकति सिंगारिय ॥
तरल तुरँग सजि बेग। सत्त दिय परिकर सारिय ॥
कोटेक द्रव्य दीनौ न्रपति। अवर गिनै को विविध वरि ॥
सामंत सब्ब दिनौ सु दुत। कवि सु प्रसंसित कित्ति करि ॥
छं० ॥ १५३ ॥

दूहा ॥ हैवर सत गज तीस सुभ। मोती माल सु रंग ॥
लाल माल उभ्भय करुन। दै राजन रस रंग ॥ छं० ॥ १५४ ॥

स्लोक ॥ यावच्चंद्रो दिवानाथ। यावत् गंगा तरंगयोः ॥
तावत् [3]पुच प्रपौचस्य। दुर्गा ग्रामं [4]विलोकयेत् ॥ छं० ॥ १५५ ॥

कवित्त ॥ बर समोधि न्रप भट्ट। रोस छिम्माय प्रमोध्यौ ॥
तापच्छैं कविचंद। भट्ट गुन करि गुन सोध्यौ ॥
प्रसन बीर प्रथिराज। लच्छि चतुरंग सु अप्पी ॥
इंद्रप्रस्थ वै थान। ग्राम दस अघटह अप्पी ॥

(१) ए. कृ. को.-रहेन। (२) ए. कृ. को.-कूप छांह।
(३) ए. कृ. को.-पौत्रस्य। (४) ए. कृ. को.-विलोकयत्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*

आजन्म जन्म दारिद्र कपि। भट्ट भारह सरद करिय॥
आदर अदब्ब पहुंचाय करि। सब प्रसंस परसाद किय॥
छं०॥ १५६॥

दुर्गा केदार कवि का राजा को आशीर्वाद देकर विदा होना।

प्रथीराज चहुआन। दान गुन जान षग्ग धर॥
अवलोकत से दून। पंच से देइ बाच वर॥
जानि समप्पै सहस। सहस वत्तह जौ दिज्जै॥
बर विद्या रंजवै। तास दारिद्र न छिज्जै॥
सोमेस सुअन सब जान गुन। दानह अंकन वालियौ॥
केदार कहै सब कुसल कल। कवि लहु सुत परि पालियौ॥
छं०॥ १५७॥

दूहा॥ चल्यौ भट्ट केदार जब। दिय प्रथिराज असीस॥
करि सुभाव सामंत सब। उठि रुचि नायौ सीस॥ छं०॥ १५८॥

कवि की उक्ति।

पिथ्थ बलिय चहुआन पें। बामान ह्वै कवि आय॥
(१)लिये दान केदार कह। फुनि ब्रह्मंड नमाय॥ छं०॥ १५९॥

कवि का शहाबुद्दीन से रास्ते में मिलना।

चल्यौ भट्ट गज्जन पुरह। मझ्झ रह मिल्यौ सहाव॥
लिये सथ्थ घन सेन बर। हय गय (२)तथ्थ तहाव॥ छं०॥ १६०॥

गजनी के गुप्तचर का धम्मायन के पत्र समेत सब समाचार शाह को देना।

* इस छन्द में "चल्लावानि सामंत सूर सब सेना थप्पी" यह पंक्ति चारों प्रतियों में अधिक है। कहीं कहीं कवि ने इसी कवित्त छन्द को ८ पंक्ति का मान कर "ढोढ़ें के नाम से लिखा है परन्तु यहां पर न तो इसके जोड़ की दूसरी पंक्ति है न इसका पाठक्रम समयोचित है इस लिये हमने इस पंक्ति को मूल छन्द से विलकुल निकाल कर अलग पाठान्तर में लिखा है।

(१) ए. कृ. को.-पाये। (२) मो.-सथ्थ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ सोइ ग्राम सोइ ठाम। मान अप्पौ चहुआनं ॥
आदर सादर समुह। भट्ट गोरी सुरतानं ॥
ताहि सथ्य बर दूत। रहै ऐसें परिमानं ॥
जल महि ज्यों गति जोक। भेद कोई नन जानं ॥
मुक्कयो बाद बहै सु कवि। गए पास सुरतान चर ॥
आघात साहि गोरी सुबर। आषेटक चहुआन धर ॥ छं० ॥ १६१ ॥

अर्द्ध सथ्य चहुआन। राज आषेटक षिल्लै ॥
हय हथ्थी बर साज। सबै जुग्गिनिपुर मिल्लै ॥
अप्पानो अपजोग। पुच्छि तत्तार प्रमानं ॥
कही सु दूतय बत्त। तत्त जंगली निधानं ॥
निय भट्ट बाद हाऱ्यौ सु (१)निय। कछु कछु तत जंपे सगुर ॥
छम्मान बीर कग्गद लिष। करो साहि सो सत्ति धुर ॥ छं० ॥ १६२ ॥

शहाबुद्दीन का पृथ्वीराज पर चढ़ाई करना।

सुनिय बत्त साहाव। बंचि कग्गर ततार बर ॥
अति आनंदिय चित्त। करिय अति धंष राज धर ॥
कियौ निसानन घाव। धाक दस दिसि धर फट्टिय ॥
मिले षान अगिवान। चढ्न साहाब सु रट्टिय ॥
दस कोस साहि बर उत्तरिय। सरित तट्ट मुक्काम किय ॥
रंग रत्त पीत डेरा बनें। हय गय मीर गँभीर जिय ॥ छं० ॥ १६३ ॥

तत्तार खां का फौज में हुक्म सुनाना।

दूहा ॥ बोलि परिग्गह सूर सब। पुच्छे सकल जिहान ॥
षां षुरसान सु बोलि बर। बर बंध्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ १६४ ॥

कवित्त ॥ कहै षान षुरसान। साहि गोरी परिमानं ॥
बर संभरि चहुआन। दूत भेज्यौ बनि दानं ॥
लहुति लोह लोहार। पग्ग षुरसान षटक्कै ॥
सुनत दूत बर बेन। साह सज्यौति सटक्कै ॥

(१) ए.-नित्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चहुआन सेन सायर मथन। गहन मान पुब्बा कढ्यौ ॥
चतुरंग सज्जि बाजिच सुर। करि गोरी आतुर चल्यौ ॥छं०॥१६५॥

यवन सरदारों का शाह के सम्मुख प्रतिज्ञा करना।

षा षुरसान ततार। साहि सम्हें कर जोरिय ॥
आन दीन सु विहान। एन चहुआन विछोरिय ॥
हसहि मीर कहि धीर। मीर रोजा रंजानहि ॥
पंच निवाज विकाज। (१)जाइ गोरी गुम्मानहि ॥
इन बेर साहि सुरतान बर। करै दीन बत्ता सु गुर ॥
भर सूर सधै बंधै नृपति। कै जीवत गड्डै सुधर ॥ छं० ॥ १६६ ॥
दूहा ॥ छय मुसाफ सुरतान अग। उंच उंच बंधि तेग ॥
सुबर साहि साहाब सुनि। करै दीन उच वेग ॥ छं० ॥ १६७ ॥
सौगँध मानि साहाब षरि। ढिल्लीवै चहुआन ॥
राति दीह सल्लै सुबर। पुब्ब बैर सुरतान ॥ छं० ॥ १६८ ॥

शहाबुद्दीन की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ साहि आलम असंभ। उप्पन्यौ जानि सायरन अंभ ॥
जल थल थलं न (२)जल होत दीस। उन्नयौ मेछ बर बैर रीस॥
छं० ॥ १६९ ॥
बज्जहि निसान धुंनित विसाल। हालंत नेज सुरतान हाल ॥
बारुनि बहंत मदगंध बुंद। मानो कि कूट चलि सत रविंद
छं० ॥ १७० ॥
सज्यौति सेन सुरतान बीर। बढ़ि तेज तुंग जानै गंभीर ॥
सम्हौ सु भट्ट मिलि आय राज। अति क्रूर तेज आहत्त साज॥
छं० ॥ १७१ ॥
सुरतान कहै हो दिल्लि राज। आयौ सु दौरि निय सुनि अवाज ॥
तब दूत कहै साहाब बाचि। आपौ सु भट्ट चहुआन जाचि॥
छं० ॥ १७२ ॥

(१) ए. जोइ। (२) ए. कृ.-को.-मिल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चहुआन सत्त हय दीय उच्च। सामंत अवर समदिय सरुच ॥
गज तीस अप्पि ग्रामह दुसष्य। अप्पिय सु हेम राजन विलष्य ॥
छं० ॥ १७३ ॥

[1]अनि द्रव्य कोट दीनौ सु भाइ। सामंत सब्ब रुचि सीस नाइ ॥
संभरिय बत्त सुरतान बीर। धारेव उअर मझ्झे गँभीर ॥
छं० ॥ १७४ ॥

अग्गें सु बंधि निसुरत्ति षान। दस पंच हथ्थ उत सुव्हिान ॥
पारस्स साहि लक्करिय लाल। मानो कि सुभ्भि परवाल माल ॥
छं० ॥ १७५ ॥

दूहा ॥ सुबर साहि बंचिय निजरि। बर चल्लिय अगिवान ॥
यों पहुंच्यौ असपत्ति गनि। देस दिसा चहुआन ॥ छं० ॥ १७६ ॥

शहाबुद्दीन का सोनिंगपुर में डेरा डालना और वहां पर दुर्गा केदार का उससे मिलना और दूतों का भी आकर समाचार देना।

उतरि साह सोनंग पुर। दिसि दष्षिन बर थान ॥
किय डेरा केदार तब। मीर महुब्बति षान ॥ छं० ॥ १७७ ॥

अरिल्ल ॥ निमां [2]साम बज्जिय नौबत्तिय। किय निमाज उमरावन तत्तिय ॥
सज्जि महल साहाब बयट्ठौ। आयौ महल [3]उम्भरां जिट्ठौ ॥
छं० ॥ १७८ ॥

आय महल दुग्गा केदारह। दीन असीस बिविधि विद्यारह ॥
मिलि सहाब सादर सम्मानिय। पुच्छिय कुसल विविध कल बानिय ॥
छं० ॥ १७९ ॥

दूहा ॥ पुच्छि कुसल आसन्न दिय। सम द्रुग्गा केदार ॥
तन बिभूत जट सिंग म्रग। आए दूत सुच्चार ॥ छं० ॥ १८० ॥
दिय दुवाह तिन चरच वस। काइम साहि सहाब ॥

(१) ए. कृ. को.-"अति द्रव्य कोर दीनौ सु भाइ"।
(२) मो.-साव। (३) मो.-उमरावं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ˈअग्र बोलि गोरी गरुअ। तब अति दिष्यौ ˈआव ॥ छं० ॥ १८१ ॥

शहाबुद्दीन का कवि से पृथ्वीराज का समाचार पूछना और कवि का यथा विधि सब हाल कह सुनाना।

गाथा ॥ आयस दिय लिय अग्गं। पुच्छिय षवरि विवरि चहुआनं ॥
अरु सामंत सु धीरं। पुछियं प्रीति रीति साहाबं॥ छं० ॥ १८२ ॥

अरिल्ल ॥ बषत बड़े सुरतान मानि मन। बंधी गास पंग प्रथि मंतन ॥
हनिय अप्प कैमास मंच बर। भए चलचित सामंत सूर भर ॥
छं० ॥ १८३ ॥

भरि बेरी चामंड सु बीरं। चमकि चित्त सामंत सधीरं ॥
भयौ षीन चहुआन मांच दुष। गय पिपास निद्रारु षुधा सुष ॥
छं० ॥ १८४ ॥

चढ़ि आषेटक तुच्छ सेन सजि। सथ्थ सूर सामंत चिंति रजि ॥
कीड़त देस मद्धि पंथानह। कंपै असि अरि मत्त पयानह ॥
छं० ॥ १८५ ॥

भरि भंगान पुंडि मीना धर। गोरा भरा भज्जियं तज्जिर ॥
सहस तीस सब सेन समथ्थह। आए भए रोज दस तथ्थह ॥
छं० ॥ १८६ ॥

रोज तीस मुकाम थथ्यौ थह। उतर्‍यौ आनि मद्धि जलपंथह ॥
बषत समय साहि साहाब सुनि। चढ़ि अरि गंजि मंजि महरनि रन॥
छं० ॥ १८७ ॥

सुलतान का मुसाहिबों से सलाह करके सेना सहित आगे कूच करना।

दूहा ॥ सुनिय बत्त साहाब चर। दिय निरिघाव निसान ॥
अप्प षान मौरं वरा। कही सजन सब्बान ॥ छं० ॥ १८८ ॥
कही षान षुरसान सम। षा तत्तार निसुरत्ति ॥
कही सचर सुनियै सबै। जुरन याह घर घत्ति ॥ छं० ॥ १८९ ॥

(१) ए. कृ. को.-अग वोले। (२) ए.-आव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरिल्ल ॥ कीय बत्त षुरसान ततारह । आयस आन दीन सेला रह ॥
गय अंदर सयनह सुरतानह । कूच कूच भय सेन सबानह ॥
छं० ॥ १९० ॥

दुर्गा केदार के पिता का दुर्गा केदार को समझाना और धिक्कारना ।

दूहा ॥ अप्प अप्पथह उम्मरा । आए सज्जित सब्ब ॥
चमकि चंड कैदार मन । आयौ तात [1]सु तब्ब ॥ छं० ॥ १९१ ॥
सुनिय बत्त कबि बिबिध बर । पति आषेटक साज ॥
सोमेसर सुअ जुड थिर । सलिल [2]लज्ज सिंधु पाज ॥ छं० ॥ १९२ ॥
द्रुग्ग मत्ति सुत सों कहिय । तुम जानहु चहुआन ॥
पहिली भट अपराध बहु । माधव कियौ विनान ॥ छं० ॥ १९३ ॥
कवित्त ॥ बल मोगर मेवात । राज सुत्तौ परिमानं ॥
माधौ पच्छैं भट्ट । राज बैसास न आनं ॥
करौ बत्त न्रप हित्त । कपट दिष्यौ सुरतानं ॥
जाहु पास प्रथिराज । षबरि अप्पौ सु निदानं ॥
धनि ध्रम्म बंध संभरि न्रपति । निगम मोह संम्हौ मिलिय ॥
उज्जेन राज श्रीफल उदित । दै कग्गद संम्हौ चलिय ॥
छं० ॥ १९४ ॥

दुर्गा केदार के भाई का पृथ्वीराज के पास रवाना होना ।

दूहा ॥ लघु बंधव कविदास तिन । दरक चढ़ाइय सु बेग ॥
जाहु सु पानी पंथ तुम । करहि नरह उद्वेग ॥ छं० ॥ १९५ ॥

कवि का पृथ्वीराज प्रति संदेसा ।

कुंडलिया ॥ दिष्षि फौज सुरतान की । बंधव मोकलि भट्ट ॥
तुम उप्पर गोरी सुबर । है गै सज्जे थट्ट ॥
है गै सज्जे थट्ट । सज्जि आयौ सुरतानं ॥
तिरि भर जल गंभीर । भीर सज्जे बहु षानं ॥

(१) मो.-सुन । (२) मो.-लाज ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीस लष्य में साहि। [1]थट्ट तारे दस दष्ये॥
तिन में पंच सु लष्य। लष्य में लष्य सु दिष्ये॥ छं०॥ १९६॥

कवित्त॥ सीर फिरस्ते टारि। दब्ब मार्‍यौ सिंधु तट्टें॥
सिंधु विहथ्थैं वीच। साह पुल बंधन घट्टें॥
छुय मुसाफ तत्तार। मरन केवल विचारे॥
सज्जि साथ चहुआन। काल्हि उतरिहैं पारे॥
उप्परे डेर मुक्काम तजि। सेन काज [2]पुंटिय बजे॥
नीसान हवाई सुंदरी। गज घंटानन डर सजे॥ छं०॥ १९७॥

दूहा॥ जाय राज प्रथिराज पहि। विवरि षबरि सुरतान॥
कहियो [3]बेगो सेन सजि। आयौ पंथ चंपान॥ छं०॥ १९८॥

कविदास की होशयारी और फुर्ती का वर्णन।

कवित्त॥ चल्यौ चंड कविदास। दमकि उठ्यौ दा सेरक॥
मनुं वामन किय वृद्ध। क्रम्म चयलोक मने सक॥
[4]कुसा तिष्य कर कढ्ढि। अग्र द्रिय वक्र निरष्यै॥
मनों कुलटानि कटाच्छ। मध्य गुर जन सम लष्यै॥
संचर्‍यौ एम संमीर बर। प्रोथ बात रोह्यौ प्रबल॥
अध धर्‍यौ चक्र कर जेम हरि। मनुं जंबूर स छुट्टि कल॥
छं०॥ १९९॥

दास कवि का पानीपत पहुंचना और पृथ्वीराज से निज अभिप्राय सूचक शब्द कहना।

दूहा॥ चल्यौ चंड कविदास तब। पहर एक निसि जंत॥
अनल बेग हक्क्यौ दरक। आयौ पानी पंथ॥ छं०॥ २००॥

कवित्त॥ उत्तम न्रिम्मल सु द्रह। पुलिन बर पंसु झीन सम॥
करत राज जल केलि। सुमन कसमीर अगर जम॥

(१) मो.-हथ्थ। (२) ए. कृ. को.-पुंटिय।
(३) ए. कृ. को.-बेगी। (४) ए.-कसा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सथ्थ सूर सामंत। मत्त षेलत हड्डूअ ॥
.... । .... ॥
दिन सेष धरी सत्तरु दुअह। [1]हहकि दरक मन वेग तहां ॥
कविदास आय तब जंपि न्रप। करौ सिलह सामंत सह ॥
छं० ॥ २०१ ॥

*दूहा ॥ मो दिष्षै न्रप दिष्षियौ। गोरी साहि नरिंद ॥
हसम हयग्गह सज्जि कै। दल वद्दल वर इंद ॥ छं० ॥ २०२ ॥
साहबदी सुरतान अब। तुम पर साज्यौ सेन ॥
[2]मों देष्षै देषौ न्रपति। घरी एक अप नेन ॥ छं० ॥ २०३ ॥

कवि के बचन सुनकर राजा का सामंतों को सचेत करना और कन्ह का उसी समय युद्ध के लिये प्रबन्ध करना।

वृद्धभ्रमरावली ॥ सुनियं तब राजन चंड तनं [3]बयनं।
तब जग्गिय बीरह धीर तनं नयनं ॥
तब सद्दिय सब्बह एक किए अयनं।
सब सामँत सूरह सीस सजे गयनं ॥ छं० ॥ २०४ ॥
पहु आवरि वीरह अप्प तनं तयनं।
मुष रत्तह व्यंबह श्रोन समं नयनं ॥
भिरि मुच्छह भौंहह भोंह समं षयनं।
सब आवध सज्जिय भत्तह जे हयनं ॥ छं० ॥ २०५ ॥

कवित्त ॥ तब सज्जि सेन प्रथिराज। मंत सब सामँत पुच्छिय ॥
हय अरोहि धुज जुरहि। काय [4]पथ होइ सुमत्तिय ॥
कहिय कन्ह चौंहान। सु यल या अग्गें बेहर ॥
पुट्ठि सुने दिसि बाम। पूर जल किन्न सु केहरि ॥
मंडियै जुद्ध हय छंडि सब। इक भाग रष्यौ चक्कौ ॥
मंनी सु बत्त सामंत न्रप। भल भल सब सेना पक्कौ ॥छं०॥२०६॥

(१) ए. कृ. को.-हक्कि। *यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है।
(२) ए. कृ. को.-मैं। (३) ए. कृ. को.-वनयं। (४) ए. कृ. को.-पय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चहुआन सेना की सजाई और व्यूह रचना।

भुजंगी ॥ सथं सज्जियं व्यूह प्रथिराज राजं। सुरं बीर रस उंच वाजिच बाजं॥
भरं मंडलं मंडियं मंडि अन्नी। [1]रसं सूर सामंत सा सूर मन्नी॥
छं० ॥ २०७॥

भरं सहस बा बीस हय छंडि बीरं। तिनं रच्चियं व्यूह जल जात धीरं॥
नरं कन्ह चौहान गोयंद राजं। भरं जैत पर सिंघ बलिभद्र साजं॥
छं० ॥ २०८॥

बडं गुज्जरं दून हड्डा हमीरं। रचे अट्ठ सामंत वा पच भीरं॥
बरं बग्गरी देव पज्जून राजं। सुतं नाहरं सिंह परिहार साजं॥
छं० ॥ २०९॥

भए च्यार सामंत सो कण्णि कारं। बियं सब्ब धीरं परागं सु ढारं॥
भयो नारि पम्मारि जैतं समथ्थं। भयौ मध्य मेही प्रथीराज तथ्थं॥
छं० ॥ २१०॥

भरं मध्य उद्दिग्ग बाहं पगारं। तिनं मद्धि जद्दौं सु जामानि सारं॥
सजे मध्य चंदेल भोंहा सु धीरं। तिनं मद्ध लोहान सा विंझ बीरं॥
छं० ॥ २११॥

चढ़े रष्षिनं दष्षिनं रा पहारं। सहस्संच अठ्ठं चढ़े सूर सारं॥
छं० ॥ २१२॥

शहाबुद्दीन का आ पहुंचना।

दूहा ॥ सज्जि सेन साहाब सुर। आयौ आतुर हंकि॥
दिष्षि रेन डंबर डहसि। भर चहुआन असंषि॥ छं० ॥ २१३॥
गंभीरां सुरतान दल। अति उतंग [2]वरजोर॥
मिले पुब्ब पच्छिमहु तें। चाहुआन चित घोर॥ छं० ॥ २१४॥

यवन सेना की व्यूह रचना।

कवित्त ॥ अनिय बंधि पतिसाह। जुद्ध जीपन चहुआनं॥
षां मुस्तफा दलेल। पुठ्ठि रष्षे गिरवानं॥

(१) मो.-रसे। (२) ए. कृ. को.-अति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजे सेन चतुरंग। दंद दंती बनि घट्टा॥
सुबर बीर सुरतान। बान [1]उब्बरि जल छुट्टा॥
चहुआन सुन्यौ आचंभ चर। सिंधु उतरि संम्हौ मिल्यौ॥
दोउ दीन आय आवरि सुभर। षग्ग कढ्ढि षग्गह पुल्यौ॥
छं० ॥ २१५ ॥

यवन सेना का युद्धोत्साह और आतंक वर्णन।

हनूफाल॥ आयो सु सज्जि सहाब। [2]उल्लथ्यौ सायर आब॥
है लष्ष सारध एक। प्रति रची फौज विमेक॥ छं०॥ २१६॥
जति अनंत बज्जै बज्ज। गिरधरनि अंबर गज्जि॥
भर सिलह बंधिय बीर। तजि आस जीवन धीर॥ छं०॥ २१७॥
सजि कसे आवध सब्ब। बर लज्ज देषिय [3]ग्रब्ब॥
मद गज्ज अट्ठो अट्ठ। बर बेग राह सु घट्ठ॥ छं०॥ २१८॥
करि दौरि आयौ साहि। पंचास कोस [4]पहाहि॥
विच राज जोजन एक। विश्राम सज्जिय सेक॥ छं०॥ २१९॥
तहां सिलह है गै भार। परसंसि पीर झुझार॥
उन्नमिय नेज उतंग। गनि जाइ रुवन रंग॥ छं०॥ २२०॥
षुर षेह उड्डिय रेन। आकास मुंदिय तेन॥
गहगही सद्द सु गाह। रन गहर पष्षर पाह॥ छं०॥ २२१॥
बानैति बानैं साज। रस बीर धरिय सु गाज॥
भय निजरि दूनिय सेन। भर भीर चिंतिय तेन॥ छं०। २२२॥
बज्जंत रन रनतूर। निज ध्रम्म संभरि सूर॥
जब देषि हिंदु उतारि। उच्चर्‍यौ षान ततार॥ छं०॥ २२३।

तत्तार का खां आधी फौज के साथ पसर करना, बादशाह का पुष्टि में रहना।

दूहा॥ कहि ततार साहाब सों। किय दल हिंदु उतार॥
हम उत्तरियै मीर सब। तुंम रहौ पुट्ठि साधार॥ छं०॥ २२४॥

(१) मो.-उच्चरि। (२) ए. कृ. को.-उद्धर्‍यो।
(३) ए. कृ. को.-पब्ब। (४) ए. कृ. को.-पहाड़।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ लष्य एक है छंडि । कियौ तत्तार उतारह ॥
अद्ध लष्य दल चढ्यौ । रह्यौ सुरतान सुभारह ॥
मीर मसंद मसंद । अग्ग सज्जे भर सुब्भर ॥
कुल अरेह अस्तील । बोलि पित पिच नाम नर ॥
अग्गै सु भार हयनारि धरि । बानग्गीर बानैत तँह ॥
सजि सेन गरट चलि मंद गति । लग्गे बज्जन बीर रह ॥
छं० ॥ २२५ ॥

दोनों सेनाओं का परस्पर साम्हना होना ।

दूहा ॥ बज्जे बज्जन लाग दल । उभै हंकि जगि बीर ॥
विकसे सूर सपूर बढ़ि । कंपि कलच अधीर ॥ छं० ॥ २२६ ॥

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं का घोर घमासान युद्ध वर्णन ।

गीतामालची ॥ छुट्टियं हयनारि दुअ दल गोम व्योमह गज्जियं ॥
उड्डियं आतस झार झारह धोम धुंधर सज्जियं ॥
छुट्टियं बान कमान पानह छाह आयस रज्जियं ॥
निरषंत अच्छरि सूर सुब्बर सज्जि पारथ मज्जियं ॥ छं० ॥ २२७ ॥
सज्जे वि सुब्भर देवि ईसर आय गंध्रव किन्नरं ॥
नारद नद्दह मंडि मद्दह दृष्षि नंचि अचंभरं ॥
हिंदू स जंपिय राम रामह सांइ अग्गा सद्दयं ॥
असुरेव जंपिय दीन दीनय [1]पीर मीर महम्मयं ॥ छं० ॥ २२८ ॥
मिलि फौज दूनह एक मेकह झार धारह बज्जियं ॥
हक्के दुसाइय अप्प अप्पह वाहि आवध गज्जियं ॥
तन तेग [2]तुट्टय सीस लुट्टय कमध नच्चय केभरं ॥
बहि श्रोन पूरह कल करूरह किलकि जोगिनि जे सुरं ॥ छं० ॥ २२९ ॥
नच्चंत बीर बिताल तालिय घरहरंत सु सद्दयं ॥
नच्चंत ईसुर रज्जि भीसुर डमकि डोंरुअ नद्दयं ॥
रस रूक बाहै धाक धाहै झाक आवध ओझरं ॥

(१) नो.-पादि नीर । (२) ए. कृ. को.-तुट्टहि, लुट्टहि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनयमंगल

(छियालिसवां समय।)

जरज ऋषि तो चमत्कारूपधारिणी रंभा को शाप देकर हरद्वार को चला गया। इधर उसका शिष्य सुमन्तु शान्ति रस रत्त होकर पुनः तपस्या में प्रवृत्त हुआ।

आनंन्द संवत् ११४४ में जब कि राजा जैचन्द ने राजसूययज्ञ करने का विचार किया तब संयोगिता की अवस्था १३ वर्ष की थी अर्थात् उसका जन्म संवत् ११३३ में हुआ था। वह पूर्ण चन्द्रमा के समान निर्मल दीप्तमान मुखारविन्दवाली कुलच्छनों से हीन सुन्दर सुलच्छनों से लच्छित लक्ष्मी समान शीलवती बाला दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी। उसका राजसी के बत्तीसो लच्छण युत स्वाभाविक सौन्दर्य मानो मकरकेतु की रंगशाला थी और उसके नित नव उन्नत उरोज उस रंग शाला के छतरी गोख कलसा कमानी आदि के समान थे, उसका सुन्दर स्वरूप उस रंगशाला की चित्रसारी और छवि का लावण्य साक्षात दीपक की दुति के समान था। वह अपनी समवयस्का सहेलियों में तारा गणों के बीच चन्द्रमा सी सुशोभित होती थी।

सुवा सारो से बोला कि छत्रधारियों के समस्त सुलक्षणों संयुत कुमारी संयोगिता सुलतान शहाबुद्दीन को बन्दी करने वाले चहुआन पृथ्वीराज के साथ व्याही जावेगी। जैचन्द उसी के लिये यज्ञ करेगा, उसी के लिये द्वापर में रुक्मिणी विवाह के समान इस समय सहस्त्रों छत्रधारियों का क्षय होगा और अन्त में इसके पति और पिता दोनों का वैभव भी भ्रष्ट होगा।

संयोगिता शैशव काल से ही पिता की बड़ी लाड़िली थी आठ प्रहर चौसठ घड़ी सदैव पिता के पास रहती और तोतरी बातें कह कह कर उसका चित्त प्रसन्न किया करती थी। संयोगिता ऐसे दुलार के कारण हठी स्वभाव की हो गई जिस का अन्त में अत्यन्त घोरतर परिणाम हुआ निदान शुक्ल पक्ष पंचमी रविवार को संयोगिता के विद्याध्ययन के आरम्भ का सुदिन विचारा गया। उसकी छोटी बहिन तारा भी उसी के साथ पढ़ने बैठी और उसी के साथ साथ छाया के समान विद्याध्ययन में उसकी अनुगामिनी बनी।

जिस समय संयोगिता साधुवस्त्र पहिना कर पाठिका के पास लाई गई उस समय यद्यपि वह लज्जित सी होती थी परन्तु बास्तव में उन वस्त्रों से वह योगिनी नहीं मालूम होती थी वरन वे योगी आवरण उसकी सुशोभा में और भी अच्छे लगते थे। पाठिका के पास आकर उसने जब सोलहों शृंगार बारहों आभूषणों से सुसज्जित होकर अध्यन आरम्भ किया उस समय उसकी ऐसी शोभा होती थी जैसे सहस्रों कामदेव इस स्त्री के स्वरूप में प्रकाशित हो रहे हों। पाठिका मदन ब्राह्मणी का पति राजकुमारी के हाव भाव लक्षणों को देख कर ताड़ गया कि इसका भविष्य होनहार ऐसा होगा। संयोगवश एक दिन ब्राह्मणी ने अपने पति से पूछा कि आप ने इस राजकुमारी के विषय में क्या गणित विचारा

(१) आनन्द संवत् का विवरण पहिले समय के १३६ पृष्ट में देखो।

(२) 'ग्यारह से च्यालीस चत्र पंग राज सुमंडि। वर पंचमि ससि तीय मह जनम संजोग विखंड"। छंः ४ 'आगे" पूरन बाल षटविंश वरख नेव मास दिन पंच बर। इसमें संयोगिता के जन्म संवत् का संकेत किया गया है। पृथ्वीराज को शहाबुद्दीन ने संवत् ११५८ में पकड़ा उसी समय संयोगिता का शरीरान्त हुआ। इस हिसाब से ४४ और बारह छप्पन होते हैं। यदि चौवालीस के इस तरफ देखिये तो ३२ और बारह ४४ होते हैं परन्तु इधर नव मास अधिक हैं इस लिये इधर ३३ का हिसाब रक्खा है। साथ ही इसके यह भी बात है कि मेरे चचा कुँवर रघुनाथसिंह जी जो कि एतिहासिकविषयों का अच्छाज्ञान रखते थे मुझे बाल्यावस्था में इसी रासो के सम्बन्ध की कथा कहनी सुनाया करते थे जो बातें जैसी उन्होने मुझे आज से १६ या १७ वर्ष पहिले बतलाई थी आज रासो में मैं उनको यथाक्रम वैसा ही पाता हूं अत एव उन्होंनें मुझे संयोगिता का १८ वर्ष की उमर में व्याह होना और २४ वर्ष की अवस्था में उसका देहान्त होना बतलाया था। सो यह हिसाब भी ठीक पड़ता है— तीसरी बात यह है कि कवि ने इस कथा के संबंध में यथा समय सब संवत दिए हैं परन्तु कन्नौज समय पर्यंत संयोगिता के जन्म का और कहीं भी पता नहीं पड़ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है सो कहिए। तब ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि यह राजकुमारी अगनित छत्रधारियों की छत्र भंग कारिणी उनके रुधिर की प्यासी साक्षात् कंकाली स्वरुप कलंहतर नाम से प्रसिद्ध होगी। यह कन्या स्वर्ग की अप्सरी का अवतार है और मैं एक यक्ष हूं जो कि इसके भविष्य होनहार का अंकुर सपच्च करने के लिये अवत्तीर्ण हुआ हूं। राजा पंग के यज्ञ के समय से ही ऐसे सब सामान एकत्रित होंगे और उनका परिणाम भी शीघ्रही देख पड़ेगा।

जिस समय संयोगिता मदन ब्राह्मणी के यहां पढ़ने गई उस समय वह अपनी आयु के तेरहवें साल में थी। पाठिका के भवन में एक सुन्दर हिंडोला घला हुआ था। जिस समय संयोगिता उस पर बैठ कर झूलती और पृथ्वी पर पदाघात करके मिचकी मारती उस समय उसके सुकोमल लंबे बालों से गुंथी वेनी उसके पीन नितंब स्थलों को स्पर्श करती हुई ऐसी सुशोभित होती थी मानो उसका यौवन काल जान कर उसके जिवन की बागडोर कामदेव अपने करों से साध रहा हो। संयोगिता की एक बड़ी बहिन और थी जिसे जैचन्द ने दक्षिण के राजा देवग्रह को व्याहा था। पाठिका ने उसे विनय मंगल पाठ पढ़ाया था इसलिये वह सुशील कुमारी अपने पति और पिता दोनों की प्यारी बन कर जीवन बिताती थी। निदान पाठिका ने संयोगिता का भी यौवन काल जान कर उसे विनय मंगल पाठ पढ़ाना उचित समझा। पाठिका जिस विनय मंगल पाठ को संयोगिता को पढ़ाती थी उस का यह तात्पर्य्य है कि उसे पढ़ कर स्त्री सुलक्षणा बने और मुग्धा और प्रौढ़ा इन अवस्थाओं में भी नवोढ़ा की भांति पति की प्यारी बनी रहे।

पाठिका ने संयोगिता से कहा कि हे सुकुमारी कुमारी. स्त्री को चाहिए कि प्रातःकालही शैय्या से उठ कर अपने पति के मुख का दर्शन करे और फिर प्रीति पूर्व्वक उसके पैर छूकर अपनी तुच्छता प्रगट करती हुई विनय पूर्व्वक उसकी स्तुति करे और दर्पण हाथ में लेकर अपना मुँह देखे। पुनः शौचादि से निश्चिन्त हो अपना नखशिख सँवारकर नाना प्रकार के स्वादिष्ट भोजन परिपाक करके पति के सम्मुख परोसे और उसे ही अपना इष्टदेव एवं सर्वस्व जानकर प्रीतिपूर्व्वक जिमावे तिसके पश्चात् रुचिर वस्त्र और आभूषणों को धारण करके अधीनता पूर्व्वक सदा पति की आज्ञा पालन करने को प्रस्तुत रहे। हे कुमारी! कोई स्त्री कैसीही स्वरूपवती क्यों न हो परन्तु जो हठ कर पति के प्रति मान ठानती है उसे उसका पति तुरन्त ही त्याग देता है। इस लिये दूतियों के प्रपंच में पड़कर पति से कलह और मान न करे और आत्मेच्छा की सिद्धि के लिये धैर्य्यपूर्व्वक तन मन से सदा पति की अनुगामिनी बनी रहे। स्त्री को चाहिए कि अपने तन, मन, धन, हृदय, प्राण, गेह, नेह, देह, सुख, दुख, कीर्ति, धैर्य्य, जप, तप, आदि सब का स्वामी अपने स्वामी ही को समझे। हे कुमारी! जो कुछ मैं तुझ से कहती हूं सो निपट ही सत्य जानो। बात केवल इतनी ही है कि विषय कोई हो उसका गुण ग्राहक होना चाहिए-जैसे पवन हिम को स्पर्श करने से शीतल और चन्दन को स्पर्श करने से सुगंधित होती है वैसे ही शास्त्र का भी बुद्धिमान पर अच्छा और मूर्ख पर बुरा प्रभाव पड़ता है। हे कुमारी जैसे युक्ति के बिना शुभ, शिव की भक्ति के बिना सांसारिक सुख और हरि की भक्ति के बिना मोक्ष नहीं मिलती, वैसेही स्नेहहीन स्त्री का जन्म वृथा है। जल बिना उज्वलता नहीं होती, ज्ञान के बिना निर्वाण पद नहीं मिलता, सुकर्म के बिना कीर्ति नहीं होती, हथियार के जोर बिना भूमि भोग करने को नहीं मिलती और माता के बिना सच्चे वात्सल्य प्यार की प्राप्ति नहीं होती, उसी प्रकार विनय बुद्धि के बिना जीवन का सुख नहीं मिलता। हे राजकुमारी, मान (अभिमान) बुरा है। मान से परस्पर का स्नेह भंग होता है, सज्जन भी दुर्जन से देख पड़ने लगते हैं, और जुड़ा हुआ नाता टूट जाता है। मान से आत्मिक गुणों का ह्रास होता है इस लिये मान इस जीवन में मदिरा के समान मंद माना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गया है। मान ही जीवन के दुखों का मूल है सो हे कुमारी तू मान को सर्वथा त्याग कर शील सम्पन्न स्वभाव वाली सुशीला बन। हे कुमारी! जिस प्रकार चणमात्र पाला पड़ने से बड़े बड़े गह्वर बन एक दम मुरझा जाते हैं उसी प्रकार विनय के आग्रह से मान जनित अमंगलमूलक विषय नष्ट हो जाते हैं।

हे सुन्दरी संयोगिता, विनय सब भांति सब के लिये कल्याणकारी है। विनय में कदापि कोई दोष नहीं है। विनय द्वारा ही योगीश्वर ईश्वर से मुक्ति पाते हैं—यद्यपि मानमय विनयहीन पच्ची जाति विनयशील वृक्षों के फल फूल खाते और उनके कोमल पल्लवों को कुतर डालते हैं, परन्तु विनयशील वृच पच्चियों के इस अपकार पर जरा भी ध्यान न देकर उनका पालन ही किया करते हैं। विनय से देवता वर देता है। विनय से गुरू विद्या पढ़ाता है। विनय से स्वामी सेवक पर प्रसन्न रहता है। विनय से कंजूस भी दाता बनजाता है और इसी विनय के कारण कंत कामिनी के हृदय का हार होता है, इस लिये हे कुमारी करतार स्वरूप विनय ही संसार का सार है। इसलिये वयः वृद्धि के साथ साथ विनय के भार से अपने को नित नव नम्र बनानाही उचित है। चतुरता से विनय वाक्य उच्चारण करने पर सार हीन हृदय का भी द्रवकर कामनामय होना संभव है। कामाग्नि-संतप्त—हृदय कंत को कामिनी यदि कुछ कटु बचन कह भी डाले तो वह उसकी उस समय कुछ भी परवाह नहीं करता, उसे वे बचन दूध शक्कर से मधुर मालूम होते हैं। परन्तु भूलकर ऐसे समय पर भी विनय की बान न त्यागनी चाहिए। क्या जाने कामाग्नि शान्ति होने पर कभी वह मधुरता उसके क्रोध को उत्तेजना देने वाली हो—देखो! किसी समय दो बहिनें थीं उनमें से एक बड़ी विनयशील और दूसरी मानिनी थी। सो हे कुमारी विनयशील सुन्दरी का तो सारा जन्म आनन्द से बीता और मानिनी ने न तो जीवित सुख पाया न मरने पर भी। क्यों कि अन्तिम समय में जैसी मति होती है मरने के बाद वही भोग भोगना पड़ता है, इस लिये उसको अनेकों जन्म पशु पच्चियों की योनि भोगनी पड़ी थी। हे बेटी जीवन में विनय घर में दीपक के समान है। जिस प्रकार दीपक बिना घर, प्राण बिना देह, प्रतिमा बिना देवालय, कंत बिना कामिनी और लज्जा बिना राजपूत जाति का जीवन सूना है एवं जैसे बुद्धि बिना उपभोग का यथार्थ आनन्द नहीं मिलता, बेद की विद्वत्ता बिना ब्राह्मण ब्राह्मण ही नहीं है, बहरे के लिये सत्कीर्ति का होना न होना बराबर है उसी प्रकार विनय के बिना स्त्री का जन्म वृथा है क्यों कि विनयहीन स्त्री का स्वामी उससे सदा अप्रसन्न होकर उसे दुःख दिया करता है। इस लिये तू इस विनय मंगल के मर्म को समझकर इसके अनुसार आचरण करने की चेष्टा कर।

जैसे बेद और वैदिक ग्रन्थों में कथित अनुपम गुणमय औषधियां चन्द्रमा से पोषित हुए बिना सब बेकाम हैं वैसे ही हे सर्वांग सुन्दरी विनय हीन होने से समाज में तू भी शोभा नहीं पा सकती। स्त्रियों की शोभा शृंगार नहीं है वरन सच्ची शोभा लज्जाशीलता है।

हे कुमारी, विनय ही संसार का सार है, क्यों कि यह सब जगत विनय के सूत्र से बँधा हुआ है। विनय ही काल का काल है और संसार में सच्ची शूरता है, विनय के बिना संसार में सुख की आशा न करे क्योंकि विनयविहीन पुरुष के सब शत्रु होते हैं। राजनीति की चारों शाखाओं का स्थंभ विनय ही है। हे सुन्दरी विनय के बिना सब सुख सपने की संपत्ति होते हैं। विनयशील पुरुष से आबाल वृद्ध सब प्रसन्न रहते हैं, इसलिये जिसमें जितना जितना विनय का अंश बढ़ता जाता है वह उतना ही सर्वप्रिय होता जाता है। विनय संसार सागर से पार उतरने के लिये नौका और साचात् मोच का मार्ग स्वरूप है। विनय बिना वैराग्य या भक्ति किसी की भी साधना नहीं हो सकती। विनय से निर्गुण गुणवान और औगुणी सद्गुणसम्पन्न होता है। विनयहीन मनुष्य का जीवन ऐसा है जैसे प्रत्यंचा बिना धनुष और सुमेर या गुम्बद बिना देवालय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसलिये यदि तू जीवन का सुख चाहती है तो विनय को धारण कर। विनयशील पुरुष तीनों पन में एक सा सुखी रहता है। विनय इस प्रकार सार है जैसे जीव का सार आत्मा है। जैसे जीवहीन शरीर बेकाम होता है वैसे ही विनय बिना स्नेह का निर्वाह होना असंभव है। विनय द्वारा जिसे तू अपने को आप अपना देगी वह फिर आपही तेरा हो रहेगा। इस प्रकार हे संयोगिता, विनय द्वारा दो तन एक प्राण किए जा सकते हैं।

हे संयोगिता, विनय का यही लक्षण है कि जिससे पति वस हो। स्त्री पति से नजर न मिलावे। विषय सुख का त्याग करे और जिससे देव तक वशीभूत हो वही विनय है। इस विनय के कारण तेरा प्रताप दूज के चन्द्रमा की भाँति दिन प्रति बढ़ेगा।

संयोगिता ने प्रश्न किया कि कंत किस प्रकार बश किया जा सकता है तब पाठिका बोली, हे बाले! "विनय से"। ज्यों ज्यों विनय का अभ्यास बढ़ता जायगा! त्यों त्यों दाम्पत्य सुख बढ़ता जायगा। जो विनय रूपी जल से सींच कर स्नेह की बेल बढ़ाता है उससे अमृत रूपी फल उत्पन्न होता है इस लिये उसका सदा आदर बढ़ता जायगा। हे सुन्दरी! विनय के बिना एक स्त्री जाति क्या संसार में किसी भी योनि में सुख प्राप्त नहीं हो सकता। हे सुन्दरी, यदि मंत्र भी न मालूम हो तो अच्छा सर्प विनय से वश हो जाता है। विनय से सुयश मिलता है। विनय से सुख और भोग रस मिलते हैं। विनय ही रस खानि और विनयशील आचरण अमृत के समान हैं यदि पति मानमय हो और स्त्री आधी रात के समय विनय पूर्व्वक विनती करे तो अवश्य है कि वह मानी पति मान को त्याग कर स्त्री के हिये का हार बन जावे। हे सहज सुन्दरी संयोगिता, इस विनय मंगल को गांठ बाँध रख, इससे तुझे जीवन के सब सुख सहज ही प्राप्त होंगे। हे सुन्दरी इस सिखावन के मर्म विनयविहीन पुरुष नहीं जान सकते क्योंकि कहावत प्रसिद्ध है कि प्रसव की पीड़ा को बांझ क्या जाने।

मदन ब्राह्मणी के आंगन में जो एक सुन्दर वृक्ष था उसी पर वे उक्त सुवा सारो (गंधर्व गंधर्वी) बैठे संयोगिता का सब चरित्र देखते रहे। एक दिन सायं-काल के समय ब्राह्मण ने ब्राह्मणी से कहा कि कोई ऐसी वार्ता करो जिसमें रात्रि कटे और कुछ काम भी सरे। तब ब्राह्मण बोला कि इस संयोगिता के योग्य नर संभरीनाथ चहुआन राजा पृथ्वीराज ही है। यों कह कर वह पृथ्वीराज के यश गुण और बल पराक्रम का वर्णन करने लगा। इसी प्रकार होते होते प्रातःकाल हो गया और तब सुवा सारो वहां से उड़ कर दिल्ली की तरफ चल दिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुक वर्णन।

(सैंतालीसवां समय।)

पाठिका के सुविस्तृत आँगन में सखी सहेलियों सहित पढ़ती हुई कुमारी संयोगिता इस प्रकार सुशोभित होती थी जैसे तारागणों के समूह में जुन्हैया की छवि छटा छाती है। लड़कपन में तो अपनी ही स्वाभाविक स्वछन्दता का आनन्द होता है परन्तु "जवानी में काम क्रीड़ा का आनन्द विशेष माना गया है"। संयोगिता के कानों को स्पर्श करते हुए बड़े बड़े नेत्र ऐसे सुशोभित होते थे मानों वे कानों के पास जाकर उक्त वाक्य के मर्म को पूछ रहे हों कि क्यों क्या यह बात सच है?।

इधर जैचन्द के यहां यज्ञ के लिये सामग्री जुटाई जाने लगी और जहां तहां होम जप जाप पूजन आदि आरम्भ हुआ। निदान तब वे दोनों सुवा सारो वेषधारी गन्धर्व उस वृत्त से उड़ कर दिल्ली की तरफ चले। कुछ दूर जाकर सुवा ने तो ब्राह्मण का वेप धारण कर दिल्ली का मार्ग लिया और सारो ब्राह्मणी का स्वरूप धारण कर संयोगिता के पास पहुंची।

ब्राह्मण ने पृथ्वाराज से कहा कि हे संभरीनाथ हम तीनों लोक में आ जा सकते हैं; परन्तु मदन ब्राह्मणी के घर में पढ़ती हुई राजा जैचन्द की पुत्री का जैसा सौन्दर्य्य मैंने देखा वैसा और कहीं नहीं देखने में आया। उसके साथ में बारह कन्याएँ और भी पढ़ती हैं परन्तु वह सब के बीच में इस प्रकार सुशोभित होती है जैसे तारागणों में चन्द्रमा की शोभा होती है। वह रम्भा अप्सरी का अवतार है। रंभा ने परम तेजस्वी सुमंत ऋषि का तप भ्रष्ट करने की चेष्टा की इसलिये सुमन्त के पिता न उसे शाप दिया जिससे उसे मानव शरीर धारण करना पड़ा। इस समय उसका महल गंगा के किनारे सुशोभित है। यह सुन कर पृथ्वीराज ने गुरुराम से कहा कि उसका जन्म समय शोध कर एक जन्मपत्री लिखो। गुरुराम ने छः महीने के बाद जन्म कुंडली रच कर तय्यार की, उसमें उन्होंने दिखलाया कि मंगल, बुध, गुरू शुक्र शनि और चन्द्रमा ये ग्रह चौथे स्थान में गोचर पड़े हैं। गुरू और केतु केन्द्री और राहु अष्टम हैं। इसका फल यह बतलाया कि वह अत्यन्त सुन्दरी है, उसके कारण भारी संग्राम होगा और वह आप (संभरीनाथ) को व्याही जायगी। जन्म से पांचवें राहु और केतु का होना यह बतलाता है कि उसका जन्म विशेषतः रक्तपात के लिये ही हुआ है।

उधर ब्राह्मणी पाठिका विनय मंगल समाप्त करके संयोगिता को पृथ्वीराज का इतिहास पढ़ाने लगी। उसने कहा—"दिल्ली में अनंगपाल नामक तोमर वंशी राजा राज्य करता था। जब उसकी अवस्था ७७ वर्ष की हुई तो उसने, वैराग्य उत्पन्न होने के कारण, अपना राजपाट अपने दौहित्र अजमेर के राजा सोमेश्वर के पुत्र पृथ्वीराज को दे दिया और आप तपस्या करने के लिये बदरिकाश्रम को चला गया। यद्यपि पृथ्वीराज को गोद लेते समय अनंगपाल को उसके मंत्रियों ने अपना सा समझाया बुझाया और मना किया परन्तु उसने एक न माना। अन्त में परिणाम यह हुआ कि पृथ्वीराज दिल्ली राज्य के सिंहासन पर बैठ कर अपना-पराया करके शासन करने लगा जिससे दिल्ली की प्रजा का दिल दुख गया और सब प्रतिष्ठित प्रजा ने अनंगपाल के पास जा पुकारा। यह सुनकर अनंगपाल स्वयं दिल्ली को आया। इससे पृथ्वीराज बड़े शिष्टाचार से मिला। अनंगपाल ने दिल्ली में कुछ दिन मिहमान की भांति रह कर पुनः बदरिकाश्रम का रास्ता लिया और यहां पृथ्वीराज राज्य करने लगा। वह बलवान पृथ्वीराज इस समय पृथ्वीतल के राजाओं में अद्वितीय बलशाली और सुकीर्तिमान पुरुष है। इस समय पृथ्वी पर उसका यश शरद ऋतु का सा चटक चांदना फैल रहा है।

इधर ब्राह्मण बोला कि उस चन्दबदनी, मृगलोचनी बाला के उज्वल ललाट पर श्याम भ्रू भाग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसा भासित होतो है मानो गंगधारा में भुजंग तैर रहे हों। उसकी कीर ऐसी नासिका, अनार के दाने से दाँत, पतली सी कमर, श्रीफल से उरोज और चंपा के समान सुन्दर अगं रंग अजब ही छटा छाते हैं। सो ऐसी सुन्दरी संयोगिता हे पृथ्वीराज आपको पति पाने की इच्छा से दिन रात शिव जी की आराधना किया करती है। हे पृथ्वीनाथ उस कुमारी के शरीर से शैशव के ह्रास और यौवन के प्रकाश की इस प्रकार शोभा हो रही है जैसे बसंत ऋतु में पुराने पत्ते झरने और नवीन कांपों के कोंपने से बन की शोभा होती है। उसकी अंग आभा इस समय ऐसी सुन्दर मालूम देती है जैसे गोधूली वेला का राकापति। जैसे मकर की संक्रांति से दिन बढ़ कर रात्रि को दबाने लगता है, पावस ऋतु में बढ़ी हुई नदियों का जल समुद्र के हृदय में हलचल मचाने लगता है तैसे ही संयोगिता का यौवन उसके बालपन को परास्त कर रहा है। इस समय संयोगिता की शरीर छवि शीतकाल की दुपहरी हो रही है जिसमें कवि घाम और छाँह दोनों का आनन्द पाने की इच्छा करते हैं। सच तो यों है कि उसके स्वभाव में अब लड़कपन की झलक केवल परिवा के चन्द्रमा के समान बिलकुल सूक्ष्म शेष रह गई है। हे राजन् वह सर्वाङ्ग सुन्दरी संयोगिता इस समय वसंत ऋतु की फुलवारी बन रही है। जैसे वसन्त के आगम में दिन में कुछ पक्कापन आने लगता है वैसेही संयोगिता कुछ संकोच सहित प्रति दिन निडर होती जाती है। उसका मधुर अलाप मधुकर सा सोहता है वसन्त ऋतु में जैसे शीतल सुगंध वायु मंद मंद बहती है वैसे ही उस के चित्त में लज्जा की मात्रा बढ़ती जाती है। जैसे वसन्त में पत्र रहित तरुवृन्द नव पुष्प और फल के भार से नीचे होने लगते हैं वैसेही यौवन के जोर से उसकी सब बातों में भारीपन का आभास आता जाता है। उसके सुढार उदर पर रोमराजि काम किसान की बोई हुई जई सी जम रही है। हे राजन्! इसी समय जैचन्द ने यज्ञ करने के लिये आकाश और पाताल को मंत्र बल से और शेष आठों दिशाओं को मुसल्मान सिपाहियों के बल से जीतने की इच्छा की है। जैचन्द की एक पुत्री और भी थी जिसे उसने देवगढ़ के राजा को व्याहा है वह भी अद्वितीय सुन्दरी है।

परन्तु संयोगिता संयोगिता ही है। उसका अंग रंग श्रीखंड पंकज एवं कुमकुम के समान सलौना है। उसकी पिंडुरी स्वर्ण की बुराद सी झलकती हैं। और जंघा तो कदली खंभ एवं हाथी के भसुंड की सुढारता को मात करते हैं, उसकी अँगुरियों का अग्रभाग कनैर की सी कली जान पड़ता है। उसके अर्द्ध तुंबाकार पीन नितंब, मुट्ठीभर चीते की सी कमर, उस पर सरती हुई सर्पिणी सी वेणी, राजीव लोचन, पपीलका की पलटन सी रोमराजि, हंस शिशु एवं मदान्ध गज की सी चाल, नारंगी से युगुल यौवन, त्रिवलीयुत कलकंठ, बिंब फल से अरुण ओंठ, वायु विहित दीप शिखा सी नासिका, खंजन मद गंजन श्वेत कमल से पैने नैन, स्वर्ण के खम्भ पर चढ़ते हुए सर्प ऐसी वेणी आदि उसके सब अवयव देखने ही योग्य हैं। यह सुनते ही पृथ्वीराज का चित्त रागमय होकर संयोगिता के सच्चे अनुराग में रंग गया। संयोगिता के सौन्दर्य्य का खाका पृथ्वीराज के चित्त में इस प्रकार गाढ़ होकर खचित हुआ कि उसे अपने सब व्यवसाय भूल गए। उसे सोते जागते चारों तरफ सयोगिता की प्रतिमूर्ति देख पड़ने लगी। उसने अत्यंत विकल होकर ब्राह्मण से कहा कि यदि तुम कृपा करके संयोगिता को मेरी ओर से प्रबोध करो तो मैं तुम्हे असंख्य धन, द्रव्य पुरुष्कार दूं।

पृथ्वीराज के ऐसे बचन सुन कर वह ब्राह्मण (गंधर्व) दिल्ली से चलता हुआ और कन्नौज पहुंच कर मदन पाठिका के घर जा उपस्थित हुआ। वह वहां सुवा बनकर आपही आप पृथ्वीराज का गुण गान करने लगा। "पृथ्वीराज" शब्द कान में पड़ते ही संयोगिता ने ऊपर आंख उठाकर देखा और कहा "तुम कौन हो और यहां किस लिये आए?"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सुन कर सुग्रा बोला एक राजा पृथ्वीराज है। इस समय वह अद्वितीय वीर्य्यमान और बलवान पुरुष है। उसने कई बार यवन बादशाह को बन्दी किया। वह अर्जुन के समान अचूक धनुर्धर है। चन्द्रमा के समान तेजवान और एक बाण से सात तवे फोड़ता है। वह राजा बलि के समान स्वरूपवान गुणवान और लज्जाशील है। धर्म्मराज की तरह सद्वक्ता, अर्जुन के समान धनुर्धर, दुर्योधन की तरह मानी, सूर्य्य के समान तेजवान, चन्द्रमा के समान सुखद, सत्य और विक्रम में विक्रमादित्य के समान, दान, सम्मान में इन्द्र एवं कल्पतरु के समान और काम क्रीड़ा में रमावल्लभ लक्ष्मीनारायण के समान शक्तिमान है। सुग्रा सारो की ऐसा वार्तालाप सुन कर संयोगिता के चित्त का चाव चौगुना हो गया। उसे चारों तरफ पृथ्वीराज की प्रतिमूर्ति भासित होने लगी और वह उस चमत्कृत चिन्ता में स्वयं चित्र की पूतरी सी बन गई।

सुग्गा फिर बोला। क्या कहूं पृथ्वीराज पृथ्वीराज ही है। उसके एक एक गुण में सादृश्य पाने योग्य बहुत से राजा हो गए हैं परन्तु सर्वथा उसकी समानता का न तो कोई आजलों हुआ है और न होगा। वह शाकाब्द राजाओं में विक्रम के समान, सत्त में राम के समान, बाहुबल में सहस्राबाहु के समान, चन्द्रमा के समाम शीतल, हरिश्चन्द के समान सत्यव्रत धारी और युद्ध कौशल में भीष्म के समान वह दैत्यवंशी वीर इस भूतल पर इन्द्र के समान उपमान पाने योग्य है, इत्यादि मैं उसकी किससे उपमा दूं? यह कह कर दोनों ओर परस्पर अनुराग का बीज बोकर सुग्रा सारो दोनो देव लोक को चल दिए।

जैसे सीता ने राम के लिये, दमयन्ती ने नल के लिये, पार्वती ने शिव के लिये, रुक्मिणी ने कृष्ण के लिये एवं जिस प्रकार काली ने वीर वाहन के लिये व्रत धारण किया था उसी प्रकार संयोगिता ने पृथ्वीराज के लिये ध्रुव व्रत धारण किया। उसने अपने मन में निश्चय कर लिया कि एक इस जन्म में क्या यदि दूसरा अवतार भी धारण करूं तो भी पृथ्वीराज के सिवाय अन्य पुरुष को पति न स्वीकार करूंगी। इसी प्रकार अहर्निशि पृथ्वीराज के गुणों का चिंतवन करती हुई संयोगिता दिनप्रति प्रीति के रंग में रँगने लगी।

इधर बसन्त ऋतु के प्रथम चरण माधव मास के प्रारम्भ होते ही पृथ्वीराज का चित चाव चौगुना हो गया। ज्यों ज्यों वृक्ष प्राचीन पत्रों से रहित होकर नई नई कोंड़े फोड़ते, नई नई बेलों में फूल फूलते और उनके पराग से दिशाएँ सुगंधित होतीं, पुष्प गुच्छों पर भ्रमर पुंज छत्राकार आच्छादित होते, कोयल कूकतीं एवं अन्य पक्षी गण कलरव करते, सुहागिनी सुख सेज पर मौज मारती और विरहिनी बेहाल होती, त्यों त्यों पृथ्वीराज के हृदय में संयोगिता के प्रेम रूपी सर्प की विष ज्वाला अधिक अधिक प्राप्त होने लगी। निदान एक दिन पृथ्वीराज एक प्रहर रात्रि गए महलों से निकल कर अकेले जमुना के किनारे बिचरने लगा। कुछ दूर जाकर देखता क्या है कि एक अति उत्तम बाग बना हुआ है जगह जगह सुन्दर वृक्षों के कुंज फूल और फलों के भार से नेकर जमीन को छू रहे हैं, उनके आस पास भूमते हुए रसलोभी भैंरे उनके गुण गान कर कर अपने उदर को पोषण करने की च्येष्टा करते हैं। चवच्चों में निर्मल जल भरा हुआ है और उनपर धानी रंग का छत्र तना हुआ है जिस पर नाना प्रकार के बेल बूटे गोख भाकी भरोखे बनाती हुई बेलें आच्छादित हैं। यह देख कर पृथ्वीराज ने घोड़े को एड़ लगाई और घोड़ा एक टपकार में कोट लाँघ कर बगीचे में जा दाखिल हुआ। इनके घोड़े की टाप सुनकर बगीचे का रक्षक प्रहरी इनके साम्हने आया। इधर पृथ्वीराज ने भी अपनी पच्चीस-टंकी कमान पर बाण चढ़ाया। तबतक एक यक्ष और यक्षनी टहलते हुए वहीं से आ निकले। यक्ष ने पृथ्वीराज से कहा "तुम किसी वृक्ष के नीचे छिपे छिपे तमाशा देखो। मालूम होता है तुम कोई प्रतापी राजा हो।"

(१) वे राजा जिनका संवत् प्रचालित हुआ हो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह कह कर यक्ष यक्षिनी तो आगे चले। इधर पृथ्वीराज ने अपने सेवकों को आज्ञा देकर उस बाग में समस्त सुख सामग्री प्रस्तुत करवाई। हुक्म होते ही केसर कस्तूरी चूना पान पानी शरबत केतकी कमल केवड़ा कुसुम मालती जाती चंपक पांडरी आदि के पुष्प और अतर दाड़िम दाख केला अखरोट नासपाती अनार नरियर पिंडखजूर बिजौर आदि फल और घी दूध शक्कर युक्त अनेक प्रकार के स्वादिष्ट पकवान बात की बात में लाकर तय्यार किए गए। थोड़ी देर में एक गंधर्व अपनी नाटक मंडली सहित उसी बाग में आ उपस्थित हुआ। पहिले तो सब गंधर्व मंडली ने कुंकुम युक्त सुगंध मय शीतल जल से मुख प्रक्षालन कर पान बीड़े चबाए बाद इसके अपने अपने साज सम्हाल कर गान नृत्य सहित नाटक आरम्भ किया। नाटक समाप्त होने पर सब मंडली ने प्रस्तुत भोज्य पदार्थ का भोग लगाया। खा पी कर दुरुस्त होने पर उस गंधर्व राज ने कहा "अहा आज यह सत्कार किसने किया है" तब वह यक्ष बोला कि यह सब सोमेश्वर के पुत्र राजा पृथ्वीराज की तरफ़ से है। निदान उस गंधर्व ने पृथ्वीराज को सम्मुख आने की आज्ञा दी और जब पृथ्वीराज उसके सम्मुख गए तो उसने उन्हें एक सर्वसिद्धि मंत्र दिया और शीस स्पर्श कर प्रीति पूर्वक आशीर्वाद देकर बिदा किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालुकाराय प्रस्ताव।

[अड़तालीसवां समय ।]

राजसूय यज्ञ में छोटे से लेकर बड़े तक सब काम राजा लोग करते हैं। इस लिये देश देश के राजाओं को एकत्रित करने के लिये जगह जगह को बुलावे के परवाने और सेनाएं भेजी गईं। इधर कन्नौज के राज्यमहल में आगन्तुकों के सत्कार और दान पूजन आदि के लिये नाना भांति की सामग्री जुटाई जाने लगी। एक लाख भार स्वर्ण; साठ भार मोती, एक करोड़ भार चांदी, असंख्य भार अन्य धातुएं; अगनित हाथी घोड़े; कपूर केशर कस्तूरी अगर अम्बर आदि सुगंधियां, जरकसी और पाटाम्बर के अमूल्य वस्त्र और और भी कई प्रकार की अगनित आडम्बर की वस्तुएं संग्रहीत की गईं और राज्यग्रह के प्रशस्त आंगन में विविध भांति से यज्ञमंडप की रचना की जाने लगी।

तबतक चारों तरफ से दूत भी लौट लौट कर समाचार देने लगे कि हे राजन् भारतवर्ष के क्या हिन्दू क्या मुसलमान सब राजाओं ने आपका आदेश शिरोधार्य्य किया है। यह सुन कर जैचन्द की चगें चढ़ गईं। वह मंत्री से बोला कि अब ऐसा प्रबन्ध करो जिसमें मेरी कीर्ति किसी प्रकार से कलंकित न हो सके। मैंने मंत्र बल से आकाश और पाताल के देवताओं को जीता है और शस्त्र बल से दशों दिशाओं के दिग्पालों को। इस समय पृथ्वी पर के सब शासक मेरा महत्व स्वीकार करते हैं इस लिये यह यज्ञ करना मेरा कर्तव्य है क्योंकि संसार में काल बली है दृष्ट अदृष्ट सब पदार्थ एक न एक दिन काल कवलित होते हैं केवल कीर्ति पर काल का पंजा नहीं पड़ता। जो मनुष्य काल को छल कर कर्तव्य पालन कर लेते हैं उन्हीं का नाम संसार में अमर होता है।

जैचंद बोला कि हे मंत्री सुमंत्र मेरे पिता ने समस्त देश पर विजय प्राप्त करके दिग्विजयी पद प्राप्त किया था। इसलिये आज समस्त हिन्दू राजाओं में समर्थ मेरे मौसेरे भाई पृथ्वीराज के पास दूत भेज कर कहला भेजो कि वह दिल्ली से लगा कर सोरों तक की आधी भूमि मुझे दे दे। हे सुमन्त पृथ्वीराज से कहना कि यद्यपि मातृ पक्ष के विचार से हम तुम दोनों भाई बराबर हैं परन्तु कमधुज्ज वंश का राज्य अनादि है। चौहानों की आदि राजधानी संभर है इसलिये तुम अजमेर में राज्य करते रहो परन्तु हमारी सार्वभौम राज्यसत्ता के विचार से और भाई चारे के हिसाब से दिल्ली की आधी भूमि हमको दे दो।"

इधर तो राजग्रह में राजसी आडम्बर और राजनैतिक मार पेंच की कार्रवाई हो रही थी। उधर प्रजा में भी घर घर आनन्द का समुद्र उमड़ रहा था। जहां तहां देव स्थानों पर विप्र वृंद वेद पाठ करते थे। द्वार द्वार पर बंदनवार बंधे और मंगल सूचक स्वर्ण कलश रक्खे थे। बड़ी बड़ी हवेलियों के गोखें और झरोखे सब भांति सुन्दरता से सजाए गए थे, रत्नजटित आभूषण और जरतारी वस्त्रों से विभूषित अपने अपने महलों में बैठी हुई मनोहर महिलाएं मंद मंद स्वर से मंगल गीत गा रही थीं। उस समय कन्नौज नगर साक्षात् कैलास के समान मनोहर मालूम होता था।

मैंत्री सुमन्त ने स्वामी की सिखावन शान्त भाव से सुन कर सभ्यता पूर्व्वक उत्तर दिया कि

(१) भार = अष्टसहस्रतोलकात्मक (शब्द कल्पद्रुमः) अर्थात् एक भार सौ सेर अर्थात् ढाई मन के बराबर हुआ।

(२) मूल पुस्तक में छन्द २२ से पाठ खंडित है। उसमें राजा के उपरोक्त वचनों पर मंत्री का उत्तर देना इन छन्दों में स्पष्ट नहीं है परन्तु छन्द २४ की पहिली तुक "पुच्छयो सु वंश कमधुज्ज मव्व" से स्पष्ट होता है कि राजा से शायद यह कहा जा चुका है कि वही राजसूय अथवा अन्य कोई यज्ञ कर सकता है जिसके वंश परम्परा से होता आया हो—और ये छन्द नष्ट हो गए हों—यदि ऐसा न होता तो गर्व करके प्रश्न करने का क्या प्रयोजन था? ऐसे समय पर कवियों का बिरदावली पढ़ना उचित है परन्तु गर्व करके प्रश्न करना कारणविशेष की सूचना देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाराज यज्ञ करना उचित नहीं। मंत्री के ऐसे बचन सुन कर जैचंद ने चारणों को हकार कर निज बंश की बिरदावली पाठ करने को कहा। वे बोले महाराज जिस राज्यवंश ने यज्ञ न किया उन राजाओं का राज्यभोग पूरा नहीं कहा जा सकता, हे राजन्! कमधुज्ज वंश के आदि पुरुष कमधुज्ज सूर ने बड़ा भारी राजसूययज्ञ करके सूर पद पाया था। उनके बाद बाहन नरिंद हुए जिनका अंतरिक्ष में रथ चल कर स्वर्ग पर्य्यन्त पहुंचा। उनके बाद पुरूर सूर हुए जो कि एक प्रकार से चक्रवर्ती राजा हो गए हैं। उनके बाद सतसिन्धु सूर नील राज आदि नामी राजा होगए हैं। राजा नल भी आपही के पूर्व्व पुरुष हैं जिनकी नैषध चरित चरचा चतुर्दिक चल रही है। हे राजन् छओ जगत प्रसिद्ध चक्रवर्ती इसी कमधुज्ज वंश में होगए हैं, उनमें से एक राजा जीमूत बाहन हैं जिन्होंने शीश पर चक्र धारण कर संसार में अमर यश पाया। महाराज! ऐसा आपसे कौन कह सकता है कि आप यज्ञ न करें। राजसूय यज्ञ में अगनित हाथी घोड़े वस्त्र मणि मोती आदि का दान देने से अनंत पुण्य मिलता है। दानियों में राजा बलि प्रसिद्ध है जिसने शरीर भी दे डाला। अस्तु हे महाराज छिति पर के छत्रधारियों को जीत कर आप अवश्य यज्ञ कीजिए।

यह सुनकर राजा ने पुनः प्रधान को आज्ञा दी कि अब शीघ्रही यज्ञ की सामग्री प्रस्तुत कर नाना प्रकार के धार्मिक कार्य्यों के होने और षोडस दान का, उत्तम प्रबन्ध करो। इसपर सुमन्त ने पुनः उत्तर दिया कि महाराज मेरी बिनती पर ध्यान दीजिए। न अब वह समय है न अब वह अर्जुन भीम के समान बलवान और प्रतापी पुरुष हैं। कलियुग में यज्ञ नहीं हो सकता। सुमन्त का ऐसा प्रत्युत्तर सुनकर जैचन्द खिसिया कर बोला "क्या व्यर्थ बेसमझी की बातें करता है।"

मंत्री सुमंत की बातों ने जैचन्द की बुद्धि पर ऐसे असर नहीं किया जैसे भारी टोर या चट्टान पर तीर असर नहीं कर सकता। उधर तो जहां तहां यज्ञ के साज सामान दिन दूने होने लगे ब्राह्मण ने यज्ञ तिथि का सुदिन शोधा, इधर स्वामिधर्मधारी सुमन्त स्वामी की आज्ञा पालन करने के लिये मन में तरह तरह के सोच विचार और संकल्प विकल्प करता हुआ संभरीनाथ पृथ्वीराज के पास चला। बुद्धिमान सुमन्त पृथ्वीराज के बल वैभव और उसकी सामन्त मंडली के ऐक्य एवं उनकी अखण्ड बीरतामय रीति नीति से भली भांति परिचित था। इस लिये उसे बड़ा भारी विचार इस बात का था कि दोनों व्रत कैसे पलें? "सांप मरे ना लाठी टूटे।"

मंत्री सुमन्त अपने स्वामी का सच्चा शुभचिन्तक था। जैचंद और सुमन्त दोनों दो तन एक मन थे। जब सुमन्त दिल्ली पहुंचा तो पृथ्वीराज ने राज्योचित शिष्टाचार से उसका उचित आदर किया। खान, पान, वसन, सुगंध घनसारादि सब सामान सुमन्त के डेरों पर पहुंचाए गए। दिल्ली पहुंचने के छः दिन पश्चात् सुमन्त ने पृथ्वीराज के दर्बार में जाकर जैचन्द का दिया हुआ पत्र पेश किया और कहा "हे राजन् जैसे हिरण्याक्ष और दक्ष प्रजापति के यज्ञ में कुबेर पर्य्यन्त सब यक्ष, किन्नर, आदि प्रस्तुत थे वैसे ही इस समय मनुष्य मात्र जैचन्द की सेवा में अपना सौभाग्य मानते हैं, अस्तु इस समय मेरी प्रार्थना है कि जिस इन्द्रप्रस्थ के लिये पहिले बड़े बड़े गन्धर्व जूझ मरे, जिसके लिये दुर्य्योधन का निधन हुआ उस इन्द्रप्रस्थ के ममेरे का आधा हिस्सा कन्नौजराज को दे दीजिए। सुमन्त के ऐसे बचन सुनकर पृथ्वीराज ने अपने

(१) मूल प्रति में पुरूर रूर पाठ है परंतु टिप्पणी में "सूर" दिया हुआ है। कमधुज्ज वंश के आदि पुरुष का नाम कवि ने कमधुज्ज सूर लिखा है इसके पश्चात् भी अन्य राजाओं के नाम के साथ "सूर" पद है इससे मालूम होता है कि "सूर" शब्द कमधुज्ज वंश का स्वयं निर्धारित पद था. प्रायः और और इतिहासों में भी यह बात पाई जाती है कि जिस किसी प्रतापी पुरुष से वंश की ख्याति हुई उससे नामान्तक पद भी बदल गया जैसे गुप्त. पाल, चन्द, वीर सिंह. इत्यादि।

(२) तुम वंश भयौ नल राइ मंद।
नैषद्ध हार हां धन्या वधं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिन्नतन एकमन सामन्तों को बुलाकर उपरोक्त विषय पर उचित सलाह देने को कहा। पृथ्वीराज की इच्छानुसार यह गुप्त गोष्ठी देने के लिये गोइन्दराय गहलौत, सलष प्रमार, काका कन्ह, निढुर राय, गुरु राम प्रोहित, और कवि ये सात सामन्त प्रस्तुत हुए।

उक्त विषय पर विचार हो ही रहा था कि तबतक यज्ञ का निमंत्रण देने वाले दूत भी कन्नौज से आ पहुंचे। उनकी जाहिरी होते ही पृथ्वीराज ने उन्हें बुलाकर पूछा कि कहो किस अभिप्राय से आए हो? इसपर दूतों ने उत्तर दिया कि राजन् हमारे महाराज कन्नौजराज ने राजसूय यज्ञ आरम्भ किया है उनका निमंत्रण पाकर देश देश के नरेश कन्नौज नगर में आ उपस्थित हुए हैं। हम लोग आपको निमंत्रित करने आए हैं सो यह आज्ञा पत्र देखिए और कन्नौज को चलकर कन्नौजराज द्वारा नियत किए हुए अपने दरवान पद पर छड़ी लेकर काम कीजिए। यह सुनकर पृथ्वीराज तो ऐसा सन्न रहगया जैसे सांकर में फंसकर सिंह और गुरुजनों के सम्मुख सुशीला लज्जाशील स्त्री रह जाती है। परन्तु गोइन्दराय बोला "भला ऐसा कौन है जो कलियुग में यज्ञ करने का साहस करे। सतयुग में बलि ने यज्ञ किया था। त्रेता में राजा रघु ने यज्ञ किया जिसमें कुबेर उनके सहायक थे। द्वापर में युधिष्ठिर ने यज्ञ किया परन्तु श्रीकृष्ण भगवान और अर्जुन की सहायता से। ज्ञात होता है तुम्हें गर्व का अजीर्ण होगया है। तुम समझते हो संसार में क्षत्री ही शेष नहीं हैं। ऐसा न विचारो। यह बसुमती निर्बीज नहीं होती। क्या जैचन्द इस कालिन्दी कूल पर आसन्न दिल्लीपति पृथ्वीराज को नहीं जानते, जिसके रुंड पर मुंड रहते यज्ञ करने की इच्छा करना केवल कल्पना मात्र कहा जा सकता है।" इन्द्रप्रस्थपति की सभा में स्वस्वामी प्रति अपमान सूचक बचन सुनकर वे दूत वहां से उठकर ऐसे चुप चाप चल दिए जैसे पंडितों की मंडली में से मूर्ख उठ जाता है। वे लोग परस्पर इस प्रकार वार्तालाप करते हुए कन्नौज को चले "आहा! जब स्यार की मृत्यु आती है तो उसे सिंह से उलझने की सूझती है। निर्बल की मौत आती है तब वह बलवान से बैर ठानता है न जाने इन्हें क्या सूझी है जो इतने बड़े पंगराज के बल वैभव की ओर ध्यान भी नहीं देते। जहां तक अनुमान है इसका यही परिणाम होगा कि पंगराय आक्रमण कर के इनके गर्व रूपी समुद्र को अगस्त की तरह सोख लेगा और इस दिल्ली के दुर्ग पर कन्नौज राज्य का अधिकार होगा?।"

ऐसा विचारते हुए वे मलिनमन हतोत्साह कन्नौज जा पहुँचे और उन्होंने यावत् सब बीतक जैचन्द के सम्मुख वर्णन किया। दूतों के बचन सुनकर कन्नौजराज जल गया। उसने सुमन्त प्रधान को बुलाकर सब हाल कहा तब वह पुनः बोला कि श्रीमान् कलियुग में यज्ञ कार्य्य का पार होना कठिन देख पड़ता है; परन्तु जो आज्ञा हो सो शिरोधार्य्य है। सुमन्त की सलाह के अनुसार जैचन्द ने युद्ध-विद्या-विशारद बालुकाराय और मुसलमान सेना के स्वामी खुरासान खां को बुलाया और उनसे कहा कि तुम एक मात्र राज्य की रक्षा का प्रबन्ध करो। यदि मैं इसी समय चहुआन को चूर्ण करने की चेष्टा में चलता हूं तो इधर यज्ञ का समय निकल जायगा; इसलिये मुझे यह उचित जँचता है कि पृथ्वीराज की स्वर्ण प्रतिमा द्वारपाल के स्थान पर स्थापित करवा कर कार्य्य आरम्भ किया जाय। उसने अन्य कर्मचारियों को भी यथा योग्य कार्य्यों पर नियत करके मंत्री को आज्ञा दी कि पंडित बुलाए जांय और यज्ञ की तिथि और संयोगिता के स्वयम्बर का उत्तम सुदिन शोधन कराया जाय। सुमन्त ने स्वामी की इच्छानुसार सब कार्य्य सम्पादन होने का उचित प्रबन्ध कर दिया

(१) जमीन से लेकर कान पर्य्यन्त ऊंची एक लकड़ी होती है जो कि चांदी या सोने से मढ़ी होती है-यह छड़ी राजाओं के द्वारपालों का चिन्ह अथवा राजाओं का दंड स्वरूप समझी जाती है-इस समय इस छड़ी को धारण करने वाले "नकीब" कहे जाते हैं यही लोग दर्बार के समय सब दर्बारियों को यथा स्थान बैठालने और सरदारों के अलकाब आदि अलापने का कार्य्य संपादन करते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और सारे नगर में भी इस बात का शोर होगया।

ये सब समाचार संयोगिता पर भी प्रगठ हुए। एक दिन संयोगिता ने अपनी सखियों से मुस्करा कर कहा "मुझे बड़ा आश्चर्य्य है कि मेरे मानसिक भाव और मेरी बुद्धि न जाने क्यों सहसा पलट गई है। यह मलयमारुत पुष्पों का पराग और कोकिलाओं का कलाप कंटक मय प्रपंच सा सूझता है। रह रह कर मन में कभी उत्कंठा और कभी शंका का आविर्भाव होता है, गुड़ियों के खेल में पाणिग्रहण के समय दिल में डाह होती है और उनके सौनारे के समय लज्जा विनय और चाह की अभिलाषा होती है—कन्नौजराज के कंचनमय महलों में मोतियों के बंदनवार ऐसे सुशोभित होते थे जैसे सुमेर के आश्रय में गंगा आ रही हो, अथवा हिमाञ्चल कण कण हो कर सूर्य्य की शरण में जा पहुंचा हो—ऐसे स्थान में विचरती हुई संयोगिता यदि कामेच्छा से रहित न होती तो हम उसे रतिरानी कहते परन्तु इस भोलेपन की सहज लुनाई पर तो स्वयं कोटि रतिरानी आरती उतारती हैं। वह जो छोटे छोटे पालित पशु शावकों को चुगाती और इठलाती हुई सखियों से बताती थी उससे यह भी भासित होता था कि उसके शरीर पर मनसिज की छाया कुछ न कुछ अवश्य पड़ गई है क्योंकि रसीली बातों को सुनकर सकुचना और दिनों दिन नजर का नीचा होना कामदेव के ही कला विस्तार की निशानी है।

संयोगिता की समवयस्का अन्यान्य राजकुमारियां कल्लोलें कर कर कलकंठ से गान करती हुई उसके मानसिक हृदयोच्छ्वास को और भी उद्दीपन करती थीं। वे अठखेलियां करती हुई संयोगिता के चिबुक को स्पर्श कर कर के कहतीं कि अब तो शीघ्रही सात आठ दिन में तेरा पाणिग्रहण होने वाला है। वे किशोर वयस्का सुन्दरी जब परस्पर हँस हँस कर ऐसी बातें करतीं तब संयोगिता कुछ अनख सी मानकर लज्जा से पलाच्छादित चक्षु करलेती थी। कोई कोई कहती, कहो तो कौन इसका बर होगा, तब दूसरी उत्तर देती कि इसके योग्य तो वही जोगिनपुरपति पृथ्वीराज ही है।

उस समय संयोगिता सिसिर और बसन्त की संधि के समान ऐन वयःसंधि अवस्था में थी उसके अंग प्रत्यगों में मधुर मधुमय माधुर्य्य छवि की आभा झलकने लगी थी उसके हृदय सरोवर में कमल कली से युग योवनाङ्कुर अङ्कुरित होने लगे और उन पर अधिक स्यामले सलोने भ्रमर विन्दु छितर छितर कर और ही छवि छटा छाने लगे थे उसपर घूंघरू स्वर तो ऐसा मालूम होता था मानों भँवरी अपने पति से कह रही हो कि हे प्राणपति उठो ऋतुराज की अवाई हुए विलंब हो चुका।

संयोगिता की अवस्था की बसंत ऋतु से पूर्णोपमा वर्णन करता हुआ कवि कहता है "उसके अरुणारे अधरही कुसुमित रसाल पल्लव थे, खंजरीकच साक्षात् मौर की मंजरी और उनपर लटकती हुई काली काली बालों की लटें अलिश्रेणी सी जान पड़ती थीं। कंठ स्वर कोकिला को मात करने वाला तो था ही। हिमन्त को हराकर बसन्त जोर पकड़ रहा था। प्रातः वायु भांति भांति के सुगंधित पुष्पों की सुवास को लूट कर संसार को सुखमय कर रही थी। बन बाग उपवन हार पहार सर्वत्र मौरे हुए आमों के मौर प्रकृति पर ढरते हुए काम के से चर ज्ञात होते थे। जहां तहां कोयल कलापती और लाल हरे पीरे पत्र अद्भुत छवि छटा छाते थे। भांति भांति के फूले हुए फूलों की कतारें साक्षात् पंचबाण के बाण सी विरही जनों के हृदय बेधने को सन्नद्ध थीं। इस सुखमय दृश्य जनित परिरंभन भाव की कृपाण तथा और भी नाना भांति के प्राकृतिक शस्त्रों से बसंत ऋतु ने शिशिर को जीत कर लाल लाल पलास पुष्पों के निशान रोपकर संसार पर अपना अधिपत्य जमा लिया। इसी समय इधर तो संयोगिता के हृदय मंदिर में कामाग्नि उदीपित हुई। उसी के स्वयंबर एवं यज्ञ के लिये सुदिन रक्खा गया और उधर पृथ्वीराज ने यज्ञ विध्वंस करने के लिये सेना सजी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब पृथ्वीराज के दरबार में समाचार पहुंचा कि जैचन्द ने यज्ञ आरम्भ कर दिया और पृथ्वीराज की स्वर्ण प्रतिमा द्वारपाल के स्थान पर स्थापित की गई है तो सब सामन्त लोग क्रोध के मारे क्रुद्ध उठे और पृथ्वीराज से बोले कि "हे राजन्! अब जीवन की मोह छोड़ कर मरने पर कमर बाँधिए।" पृथ्वीराज बोला "मेरे रहते जैचन्द ने यज्ञ करने का साहस किया है। यदि मैं इस समय यज्ञ विध्वंस करता हूं तो देवताओं का द्वेषी होना पड़ेगा और जो प्रजा पर चढ़ाई करता हूं तो भी अभिप्राय सिद्ध होता नहीं देख पड़ता।" ऐसा विचार कर उसने कैमास सहित अन्य मुख्य सामन्तों से पूछा कि अब क्या करें तब गोइन्द राय बोला कि जैचन्द जानता है कि पृथ्वी पर पृथ्वीराज है ही नहीं, यह नहीं जानता कि यह बसुमती वसुंधरा कभी निर्बीज नहीं होती!

उस समय गुरुराम प्रोहित, जैतप्रमार, निढ़ुर राय, जामराय यादव, भौंहा चंदेल, कैमास, चंद पुंडीर और काका कन्ह ये सब हाजिर थे। कन्ह बोला "बस अब विलंब केहि काज" तुरंत सेना तय्यार करके कन्नौज को लुट पाट कर यज्ञ विध्वंस किया जाय। और भी जो जिसके जी में आया सो सब ने कह सुनाया परन्तु चन्द पुंडीर ने कहा कि कैमास से तो पूछिए क्या कहते हैं! । इस बात को सबने स्वीकार किया और सब के सब कैमास का मुँह ताकने लगे। निदान कैमास ने कहा कि कन्नौज पर चढ़ चलने से नहीं बनेगा। जैचन्द का बल बड़ा है इसलिये खोखंदपुर पर चढ़ाई करके बालुकाराय को मार लिया जाय बस फिर यज्ञ आप ही विध्वंस हो जायगा।*

इस प्रकार सलाह पक्की हो जाने पर उस समय दरबार बरखास्त हुआ। तीसरे पहर फिर से पृथ्वीराज ने कैमास को बुला कर चला चली के बारे में कुछ बातें कीं। पंडित से यात्रा के लिये सुदिन पूछा। पंडित ने कहा कि पुष्य नक्षत्र रविवार की साइत अच्छी है। निदान पंचमी रविवार के दिन दिल्ली राज्य की समस्त चतुरंगिनी सेना राजद्वार पर आ उपस्थित हुई। पृथ्वीराज ने अच्छे बलिष्ट और अच्छे अच्छे खेत के जात वाले ताजी एक एक सब सामन्तों को दिए। वे सब सामन्त उन घोड़ों पर सवार होकर सन्नद्ध हुए और पृथ्वीराज आप खुरासानी खेत के श्रृंगारपाट नाम के एक भीमकाय अश्व पर सवार हुआ। उस श्रृंगारपाट की पूछ का गुच्छा अच्छा चौर सा छहराता और चलते समय उसकी खुरी से धरती धमकती और बिजली कैसी चमचमाहट पैदा होती थी।

ज्योंही बालुकाराय का विनाश करने के लिये पृथ्वीराज ने अपने घोड़े की बाग उठाई त्यों ही बंदीजनों ने बिरदावली अलापी, जिसे सुनकर सूरों का चित्त चौगुना हो गया और कायरों का कलेजा कँप गया। पृथ्वीराज के साथी सिपाही ऐसे बलवान जवान थे कि यदि एक, हजार को पछारने की हिम्मत रखता तो दूसरा इसको दम की दम में दमन कर देता। यदि एक सौ को साफ करता तो दूसरा लाखों का मुँह मारता था। ऐसे ऐसे बीरों के बीच में स्थित पृथ्वीराज के शीश पर आच्छादित सोने का छत्र समुद्र में बड़वा नल की सी ज्वाला जान पड़ता था।

पृथ्वीराज ने प्रमुख अनी में तो निढ़ुरराय को प्रेषित किया और समस्त सेना सहित पीछे से आप चला। पृथ्वीराज के चलते समय जंगी बाजों की विषम ध्वनि से चारों ओर हलचल मच गया। इस सेना का सेनामुख कन्ह हुआ। उसके पीछे बलिभद्रराय और उसके पीछे पृथ्वीराज था। ज्यों ही इस सेना ने कन्नौजराज्य की सरहद में पैर दिया कि चारों ओर हाहाकार मच गया, जहां तहां गांव के गांव उजाड़े जाने लगे और भूमिया (जमींदार) लोग पकड़ पकड़ कर बांधे और मारे जाने लगे। चहुआन सेना के इस जघन्य आतंक और उत्पात से दुखित होकर प्रजावर्ग ने बालुकाराय के द्वारे जा

* पहिले लिखा जा चुका है कि बालुकाराय जैचन्द का भाई था अस्तु भाई के मरने पर हिन्दू शास्त्रानुसार एक साल पर्य्यन्त अशौच के कारण कोई शुभ कार्य्य नहीं हो सकता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुकार मारी । प्रजावर्ग ने बालुकाराय की पौरि पर पहुंच गुहार और दुहाई दे, ढार मार रो रो कर कहा कि हे प्रभू ! पृथ्वीराज चहुआन ने चढ़ाई करके सारे देश को उजाड़ कर रक्खा है । बड़े बड़े लखपती साहूकार लूटे जाकर लंगोटी लगाए डोलते हैं । जहां तहां गांव के गांव खड़े जला दिए जाते हैं, सो इस पृथ्वीराज के दल बल रूपी समुद्र को आप अगस्त होकर सोखिए नहीं तो हम सब लोग ढह बह जांयगे ।

यह समाचार सुनकर जैचन्द का भाई बालुकाराय ललकार कर बोला "हैं क्या हल्ला हो रहा है ऐसा कौन पुरुष है जो जैचन्द के बल वैभव को न जान कर प्रजा को सताने आया है, अच्छा मैं उसकी धृष्टता को नष्ट भ्रष्ट करता हूं।" यों कह कर बालुकाराय ने भी अपनी सेना सम्हाल कर चहुआन की चमू का मोरचा मारने के लिये कूच होने की आज्ञा दी। एक तो भाई का स्नेह, दूसरे राजाज्ञा, तीसरे अपने बान की आन मान कर प्रजा की पुकार पर बालुकाराय चहुआन पर ऐसे चढ़ चला जैसे सुन्दर सुन्दरी का मधुर कंठ स्वर सुनकर कामी के मन में कामाग्नि दमक उठती है, घोड़े के गिरते हो जैसे बन्दूक से गोलियां चलती हैं या बद्दर की गरज के साथ बिजली चमक उठती है ।

परन्तु विचार करने पर अन्त में यह निश्चय हुआ कि यहां से कूच करना उचित नहीं, शत्रु के यहां आ पहुंचने पर ही वार बचाया जाय । उधर से चहुआन सेना भी किसान की तरह स्यारी सी निराती भारी उत्पात मचाती चोप से चली आती थी। अस्तु जब चहुआन सेना चलती हुई बिलकुल बगमेल में आगई तो इधर से बालुकाराय के भी निशान उठे। यह देखकर पृथ्वीराज ने अपनी सेना को व्यूहबद्ध होने की आज्ञा दी।

"धन्य है, वीर पुरुषों के दोनों हाथ लड्डू हैं। यदि वे युद्ध में कट मरते हैं तो परलोक में उत्तम गति पाते हैं और जो जीते जागते विजयी होते हैं तो जगत में उनका यश जाहिर होता है।" दिखादाव होतेही दोनों दल एक दूसरे से भिड़ पड़े और एक दूसरे अपने अपने प्रतिद्वंदियों को पकड़ पकड़ मारने पछारने और उनका उदर बिदारने लगे। इस प्रकार की भयानक रंगभूमि में अटल रूप से डटा हुआ बालुकाराय स्वयं करारे वार करता और अपने सिपाहियों से कहता था कि पंगराज की रत्नमयी भूमि को जो लुटेरे लूटने आए हैं उन्हें बड़वाग्नि बन कर भस्म करो, शरीर में चेतना शक्ति के रहते पर्य्यन्त बार बार शस्त्र प्रहार करते हुए चत्री धर्म को निबाहो। हे वीरो जैसे नवोढ़ा नारि रात्रि से और कुल कामिनी कुल विहित परिपाटी से डरती है वैसे ही चत्रियों को छल से डरना चाहिए । मंत्र और चर का चलायमान होना भला है परन्तु पर्व्वत और वीर पुरुषों को सदा अचल होना चाहिए। इस शरीर की शक्ति अंतरात्मा एवं जीव चंचल कुलटा कामिनी के समान चपल है, न जाने कब चंचला सी चमक कर चट से चल बसे; इसलिये लोह की झार में झिलकर झूठे झगड़े से मुक्ति पाना ही भला है। इस समय मुक्ति मार्ग का द्वार खुला हुआ है पंचतत्व रचित प्रपंचमय कच्चे पिंड को खंडन कर सच्चा आनन्द लेना ही सार है ।

बालुकाराय के ऐसे बचन सुनकर सैनिकों ने विचित्र कौशल दिखाया । सारी सेना ने चंद मंडल एवं नाचते हुए मोर के परों की नाईं चक्राकार हो कर चहुआन सेना को चारों ओर से घेर लिया । जोशीले जवान बढ़ बढ़ कर हाथ देते और शत्रु के सिर को भुट्टे सा काट लेते थे । जहां तहां छहराते हुए रक्त के छींटे ऐसे जान पड़ते थे मानो तेंदू(१) के कुंजों में दवार लगी हो । जिस किसी हाथी के कुंभस्थल पर हाथ बैठता तो पहाड़ी झरने की तरह रुधिर की धारा बह निकलती थी । इसी प्रकार मारामार होते हुए बालुकाराय ने पृथ्वीराज को आ दबाया परन्तु पृथ्वीराज ने बालुकाराय के हाथी को एक हाथ ऐसा मारा कि जिससे वह भहराकर गिर पड़ा बस उसी दम से बालुकाराय की सेना के

(१) तेंदू एक लकड़ी होती है जिसका ऊपर का बकला काला होता है आग लगने पर वह चिट चिटाता है और चिनगारियां उड़ती हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदम पीछे पड़ने लगे और चहुआन सेना का बल बढ़ उठा। चहुआन सेना के हरावल में कन्ह और कैमास, दहिने गोयंदराय और बाएँ निढ्दुराय थे। उधर से बालुकाराय स्वयं अपने सिपाहियों को बाढ़ें देता हुआ बराबर आगे बढ़ने की चेष्टा करता था।

दोनों ओर के योद्धा अपने अपने ईस (स्वामी एवं महादेव) की दुहाई दे दे कर मार करते और मार मार पुकारते थे। रण वाद्यों की भीषण ध्वनि से धरती धसकती और वसु कसमस होते थे। मुंड बिन रुंड भसुंडहीन हाथी दौड़ते हुए बड़े भयानक देख पड़ते थे। कटार से पेट या पंजर आरपार होने पर कलेजा तिल्ली और फेफड़े सहित आंते निकल पड़ती थीं। छुरी बिछुआ कटार बांक वगुरदा आदि वख्तरों पर खड़ खड़ होते तो खोपड़ी पर गुरज का कड़ाका होने से टोप टूट जाता और भेजी निकल पड़ती थी, कँधे पर खड्ग का हाथ पड़ता तो हाड़ कट कर कमर तक वारापार हो जाता था। कटे हुए सिर जमीन पर पड़े पड़े फुदकते हुए विहार करते जान पड़ते थे। एक बबकारता, तो दूसरा हुंकारता था, एक ललकारता, तो दूसरा प्रचारता था, एक हाहाकार करता तो दूसरा पानी पानी पुकार भरता था। यह सब होते हुए भी बानैत वीर अपनी अपनी वान पर डटे कट कट कर पटते जाते पर हठ से हठ कर हटना हराम जानते थे। इसी बीच में कन्ह चहुआन और बालुकाराय का चौनजरा होगया और कन्ह ने बालुका का सिर काट गिराया। परन्तु उसका कमंध तलवार खींच कर कन्ह पर झपटा जिसे कन्ह ने सेल से ठेल कर अस्त्र पर से ढकेल दिया।

बालुकाराय के भूमि पर पड़तेही उधर तो उसके शीश को शिव ने रुंड माल में सादर स्थान दिया और इधर चहुआन सेना की चढ़ लगी। इस युद्ध में चहुआन सेना के सात सौ सिपाही और बहुत से रावत खेत रहे और बालुकाराय के पांच हजार योद्धा काम आए।

बालुकाराय के मारे जाने पर चहुआन सेना ने व्यूहबद्ध होकर आगे बढ़ना चाहा मगर खंधार बच्चा यानी खंधार खां ने मोरचा बाँध लिया और अब चहुआन सेना की मुसल्मानों से छिड़गई। दिन का कुछ थोड़ा सा अंश शेष था इसलिये उस दिन तो दोनों सेनाएं शान्त होगईं दूसरे दिन आधी घड़ी दिन चढ़े से फिर लोहा बजने लगा। जिस समय बहादुर योद्धा युद्ध के लिये सन्नद्ध होते हैं तब और सब देवता तो प्रसन्न होते हैं परन्तु ब्रह्मा चिंता ग्रस्त होता है हताहत होकर मरने वाले बीर उसकी सृष्टि से एक दम उठ जाते हैं और चिन्मय ब्रह्म में लवलीन होकर संसार के आवागमन से सदा के लिये मुक्त हो जाते हैं—यवनसेना के साथ कनौज राज्य की सीमान्तर्गत कुछ और भी सेना आ मिली परन्तु इन सामन्तों के साम्हने कौन ठहर सकता था। शायंकाल तक खूब मारा मार हुई। सैंकड़ों सूर वीर मारे गए। रक्त की नदी बह निकली। लोथों के अटंब लग गए और मांसाहारी जीव मांस खाकर और खून पी कर खूब अघागए। दिन भर युद्ध होते होते अंत में पंग सेना परास्त हुई और पृथ्वीराज विजयी हुआ।

सम्मुख संग्राम में शत्रु सेना को परास्त कर के पृथ्वीराज ने खोखंदपुर को लूटने के लिये बाग उठाई। उसी रात्रि को बालुकाराय की स्त्री ने स्वप्न में देखा कि उसकी सुढार मोटी जाँघें पतली और पतली सी कमर मोटी होगई हैं। नेत्र साक्षात कमल के पुष्प और केश सजीव सर्प से हो गए हैं। आगे आगे बालुकाराय और उसके पीछे आप पृथ्वीराज के भय से भाग कर पहाड़ पर चढ़ती जाती है। इतने में चारों तरफ कूह मच गई कि बीर वर बालुकाराय को मारकर पृथ्वीराज नगर लूटने के लिये चला आ रहा है। यह भयानक समाचार सुन कर नगर निवासियों के तो देवता कूच कर गए। नगर निवासिनी एवं महलों की महिलाओं का कलेजा कांप उठा और नीवी के बन्धन ढीले हो गए। बालुकाराय की स्त्री की तो यह दशा थी कि उसकी सखी सहचरी उसे हाथ पकड़ पकड़ आंसू पोंछ पोंछ बहुतेरा समझाती थीं परन्तु वह विलख विलख कर विलाप करती हुई बार बार यही कहती थी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाय प्यारे ने विधाता को बाम करने के लिये पृथ्वीराज से शत्रुता क्यों ठानीं थी। जिस भूमि की रक्षा के लिये सहस्रों सिपाही सन्नद्ध थे जो भूमि इन्द्र की उपबन बन रही थी, जहां अनेकों प्रकार के रांग रंग मय पुष्प प्रस्फुटित होते और आनन्द के मकरन्द आच्छादित रहते थे, जहां नित नव सुख सारे के नवीन रसाल पल्लव देख पड़ते थे उस भूमि को पृथ्वीराज रूपी सुग्गों ने लूट पाट कांठ छाँट एवं कतर कर कौड़ियों का कर दिया।" इस प्रकार बालुकाराय को मार कर, खोखंदपुर को उजाड़ कर, कन्नौज राज्य की प्रजा में हाहाकार डाल कर, जैचन्द का यज्ञ बिगाड़ कर, पृथ्वीराज दिल्ली को लौट आया।

इधर बालुकाराय की स्त्री नाना प्रकार के विलाप वाक्य उच्चारण करती हुई कन्नौज जा पहुंची और जैचंद के साम्हने सब दुःख रोकर कहने लगी "हा चहुआन से वैर विसाहने में सर्वनाश हुआ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंगयज्ञ विध्वंस समय।

[उनचासवां समय।]

माघवदि ५ से यज्ञ आरम्भ होकर त्रयोदशी तक एक सप्ताह हो चुका था। एक तो राजसूययज्ञ दूसरे संयोगिता का स्वयंवर दोनों आनन्दमय कार्य्यों के कारण समस्त कनौज नगर कुसुम सा फूल रहा था। राजमहल का तो कहना ही क्या था। प्रत्येक द्वार द्वारी महराब गोख और झरोखों पर जड़ाऊ बन्दनवार झलमला रहे थे। महल के आँगन में यज्ञ मंडप स्थापित था; जिसके खम्भे सोने से मढ़े हुए थे। ललित ललाम तरुलता आच्छादित उत्तंग मंडप पर रंग बिरंगे ध्वजा केतु और पताके फहरा रहे थे और कमलपुष्पों के लटकन और कुसुम के तोरण लटक रहे थे। ऐसे मंडप के बीच में बैठा हुआ जैचन्द अपने भाग्य को धन्य मनाता हुआ फूला अंग नहीं समाता था। कहीं कोकिल कंठी नायिकाएं मंगल गीत अलापती थीं, कहीं गवैये लोग राग रागनियों को गा रहे थे, कहीं मधुर स्वर वाले सुरीले बाजे बजते थे और कहीं धानुक मंडली भीम-स्वर बाजे बजाती थी। उस मंडप में नाना भाँति की बेल बूटेदार रोशनी हो रही थी*। और एक तरफ नाना प्रकार के नाच रंग नाटक रास इत्यादि के तमाशे भी हो रहे थे। आगन्तुक पाहुने तथा अन्य कर्मचारी गण भी यथास्थान आसीन थे। इसी समय बालुकाराय की स्त्री और उसके साथ वालों ने हाथ बाँध कर जा पुकारा।

"गंगा की गैल में मदारों के गीत" सुनकर जैचन्द ने अकुला कर पूछा, क्या है? उन्हों ने उत्तर दिया महाराज पृथ्वीराज ने सर्वनाश कर दिया!! बालुकाराय को मार दिया और खोखंदपुर को उजाड़ दिया। यह सुनते ही जैचन्द के हृदय समुद्र में क्रोध रूपी बड़वाग्नि का उफान सा आगया। वह लाल लाल आँखें कर चबड़ी बांधकर बोला "पूर्व दिशा का देवता इन्द्र है, अग्नि कोण का अग्नि, दक्षिण दिशा का यम और नैऋत का राक्षस है। पश्चिम दिशा का अधिपति वरुण और वायव्य कोण का वायु है उत्तर का कुबेर और ईशान के ईशान अर्थात् देवता हैं। आकाश में ब्रह्मा और पाताल में शेष हैं। अस्तु यदि पृथ्वीराज इनमें से किसी की भी शरण जाय पर वह जीता बचेगा नहीं। उसे अधिक गर्व हो गया है, परन्तु ईश्वर गर्व प्रहारी है। हनुमान जी को जब द्रोणागिरि के उपारने पर गर्व हुआ तो भरत जी ने बाण मार कर उनके गर्व को गिरा दिया। यदि आज अपना दल बल सज कर पृथ्वीराज को मय उसके सहायक समरसिंह सहित बांध कर न लाऊं तो मैं अपने पिता विजपाल का जाया न कहाऊं। उसने मंत्री सुमंत को आज्ञा दी कि इसी समय सेना सजी जाय और कहा, मैं इसी समय जाकर पृथ्वीराज और समर सिंह दोनों को बाँध लाकर तिल की तरह पेरूंगा, तब मेरे जी में जी आयगा।

इस समाचार के सुनते ही सर्वत्र सन्नाटा छा गया, जैचन्द की रानी जुन्हाई ने सब हाल सुना तो उसने राजा को बुलाकर कहा कि पहिले संयोगिता का स्वयम्बर कर लो फिर पृथ्वीराज को पकड़ना। इस समय स्वयम्बर के लिये सब तरह से सुपास हैं। देश देश के नरेश उपस्थित हैं। अस्तु बेटी का पाणिग्रहण कराके तब पृथ्वीराज को पकड़िए और फिर निश्चिन्तता पूर्व्वक यज्ञ कीजिए।

जैचन्द का क्रोध करना और रानी का समझाना बुझाना संयोगिता ने भी सुना इसलिये उसने अपनी धा से पूछा कि पिता जी आज किस पर कुपित हो रहे हैं? तब धा ने उत्तर दिया कि पृथ्वीराज पर, जिसने रंग में भंग कर सारा सुख सत्यानाश कर दिया। यह सुनकर संयोगिता ने

(१) बाजा बजाने वाले एक नीच जाति के लोग।

* मूल पाठ "भातस्स खेल बहु स्वेतरथ" से आतिशबाजी का भी ख्याल हो सकता है।

(१) दांतों के बीच निचले ओंठ को दबाकर कुपित होने को चबड़ा बाँधना कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गन्धर्व के बचन स्मरण करके अपने मन में निश्चय कर लिया कि इस तन पिंजर में प्राण पखेरू के रहते संभरी नाथ के सिवाय और बर को बरना स्वीकार तो न करूंगी चाहे इधर की धरती उधर हो जाय। ये सब बातें जैचन्द के कान में भी पड़ गईं, परन्तु उसकी रानी ने कहा कि लड़कों की बातों पर कान नहीं देना होता।

निदान जैचन्द की आज्ञानुसार उधर तो मंत्री सुमन्त ने सेना सज कर तय्यार की और वह सेना फुटकर होकर दिल्ली की तरफ रवाना की गई, इधर संयोगिता के स्वयम्बर का साज बाज सजा जाने लगा—उधर स्वयम्बर का समाचार पाकर संयोगिता तो बेसुध होकर धराशायी हुई और इधर पंग सेना ने दिल्ली राज्य की सीमा में पैर दिया।

इस समय के ४० से लेकर ४३ तक चार छन्दों का सिलसिला आगे के प्रस्ताव से मिलता हुआ है अस्तु हम उस शेषांश को अग्रिम प्रस्ताव के साथ संघटित करके लिखते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोगिता नाम प्रस्ताव ।

[पचासवां समय ।]

खोखंदपुर को उजार कर और बालुकाराय को संहार कर आने पर पृथ्वीराज ने सब सामन्तों से सलाह कर निश्चय किया कि अब यहां ठहरना उचित नहीं है। इस लिये दस सामंत तो दिल्ली की गढ़ रक्षा पर और तीन तीन प्रत्येक नाके पर छोड़ कर पृथ्वीराज शिकार के बहाने जंगल में जा पड़ा।

बालुकाराय के बध का समाचार पा कर जैचन्द ने दो गुप्तचर उसी समय दिल्ली को भेज दिए थे। उन्होंने सब भेद लेकर जैचन्द से आकर कहा कि महाराज दिल्ली में केवल दस सामन्त छोड़ कर पृथ्वीराज जंगल में शिकार खेल रहा है। असल बात तो यों है कि वह आपके डर से डर कर भागता फिरता है। इस समय फौज भेज कर उसे जंगल ही में घेर लिया जाय तो बहुतही अच्छा हो। दूतों के ये बचन जैचन्द ने प्रसन्नता पूर्व्वक स्वीकार किए और कन्ह कमधुज्ज को बुलाकर आज्ञा दी कि वह तत्तार खां की कुमक सेना लेकर पृथ्वीराज को पकड़ लावे। राजा की ऐसी आज्ञा पाकर कन्ह साठ हज़ार सेना सहित पृथ्वीराज पर चढ़ चला।

इस कन्ह की सेना के सिपाहियों ने सब हथियार छिपा कर सौदागरों का भेष धारण किया और जिस जंगल में पृथ्वीराज पड़ा हुआ था उसीके आस पास किसी गांव में वे जा टिके। शायंकाल होतेही समस्त सेना की चार तुंगें हो गईं और रात्रि भींजते ही चहुआन सेना को चारों तुंगों ने चार तरफ से घर दबाया। सबसे पहिले धावा करने वाला वाजिद खां था। उस तरफ कैमास उस दिन पहरे पर था। वाजिद ने किनारे किनारे चुपके से आकर पृथ्वीराज की सुसुप्त सेना की मार करना शुरू कर दिया। इस अनायास आपात्ति से घबड़ा कर सब हिन्दू सैनिक जिधर तिधर तीन तेरह होगए परन्तु सामन्त मंडली ने राजा को न छोड़ा। निढ़ दुरराय, पज्जूनराय, पहाड़राय तूंअर, नरसिंह दाहमा, कैमास, रामराय बड़गुज्जर आदि सामन्तों ने अतुलित पराक्रम करके राजा पृथ्वीराज को बेदाग बचा लिया और पंग सेना को हराकर हटा दिया।

यह समाचार सुनकर जैचन्द ने सुमन्त को सब फौज जुटाने की आज्ञा दी और कहा कि सब से पहिले विषम विष के मूल का ही नाश करना उचित है—कहा है—"न रहे बांस न बाजे बाँसुरी" इसपर सुमन्त विनीत भाव से बोला कि महाराज इस समय दूर दूर के सब राजा लोग उपस्थित हैं इस लिये ऐसा सु अवसर न चूककर स्वयंबर कर देना ही उचित है फिर शत्रुओं का संहार करना तो अपने वश की बात है। यह बात जैचंद को भी भा गई और उसने उसी समय रानी जुन्हाई के पास जाकर अपना अभिप्राय कह सुनाया और इस विषय में उसका भी उचित मत लिया।

जैचन्द ने रानी जुन्हाई की जबानी संयोगिता का सब हाल सुन तो लिया; परन्तु विमाता भाव के विचार से उसपर विश्वास न किया। इधर दूतियों को बुलाकर उसने आज्ञा दी कि वें संयोगिता के पास जाकर उसका मत लें और उसकी जिद छुड़ावें। जैचन्द ने जिस दूती को संयोगिता के पास प्रेषित किया था वह साम, दाम, दंड, भेद, नीति के सब अंगों में दक्ष समयानुसार बिचारमय चतुरता पूर्व्वक उचित वचन उच्चार करने वाली मनहरण मूर्ति साक्षात मेनिका के समान सुन्दर थी। हाव भाव कटाक्ष कला चातुरी और तरह वजह में तो मुनि जनों के मन को मोह लेने वाली थी। उसकी स्वाभाविक चंचलता और चातुरी मय चाल ढाल तो चतुरों के चित्त में चुभने के लिये मानो मनसिज की बंसी थी। (१) कलकंठ से मधुरस्वर उच्चारण कर अच्छे अच्छे धीरपुरुषों का धैर्य्य हरती और श्रीखंड समान मीठी मुख स्वांसा से वायु मंडल को प्रसन्नतामय कर देने

(१) मछली पकड़ने का कांटा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाली थी। और भी नाना प्रकार के फरफंद दंद फंद एवं छरछंद करके मूर्छित काम को जगाने वाली थी। मौनधारी मुनियों को हँसाना, विरम व्रतधारी जटिल योगियों का तप नसाना तो उस दूती के बाएं हाथ का खेल था। ऐसी चतुरा चरी संयोगिता के चित्त से अचल व्रत को चलायमान करने के लिये चुप चाप चलती हुई रनिवास में पहुंची।

दूती को देख कर संयोगिता ने उससे सहज स्वभाव परन्तु सादर पूछा कि मेरे पिताजी की क्या इच्छा है और तुम लोग मेरे पास क्या जुटी हो। संयोगिता के ऐसे वचन सुनकर दूती ने कहा कि आपके पिताजी ने आपके स्वयम्बर की सामग्री रची है इस समय पंगराज के दरबार में देश देश के राजा लोग हाजिर हैं उनमें से हे कुमारी! आप किस भाग्यवान के गले में जैमाल मेलेंगी?

यह सुन, संयोगिता की सेन पाकर, उसकी सखी उस सहचरी दूतिका से बोली "अरी बहन, कैसी बेसमझ बूझ की बातें करती है। मद के मतवारे को स्पर्श कर गंगा का गुण गान करना, बांझ के साम्हने पुत्र सुख को सुनाना और बहिरे के आगे ज्ञान बखान करना न जाने कौनसी बुद्धिमानी है। देखो! संयोगिता वयःप्राप्त है उससे ऐसी छिछोरी बातें न कर।" संयोगिता भी बोल उठी "जो राजा मेरे पिता का लोह खाकर उसके बँधुआ बन चुके वे मेरे बर बनने योग्य क्योंकर कहे जा सकते हैं। री सहचरी तू दासी होकर कुलीनों की लीक को क्या जाने? सुन! वे लोग जो मेरे पिता को माता पिता समान मानते हैं क्या धर्म्म के नाते मेरे भाई न हुए! या तो मेरा पाणि ग्रहण पृथ्वीराज से होगा या मैं गंगा में निमग्न हो मरूंगी।"

संयोगिता का ऐसा हाल जानकर जैचन्द का जिगर जल उठा। वह स्वतः सोचने लगा कि मैं जब बरबस अन्य बर से ब्याह दूंगा, तब क्या? परन्तु फिर कुछ सोचकर उसने संयोगिता की धा को बुला कर कहा कि तू जाकर बेटी को समझा और उसका हठ दूर कर।

जब धा संयोगिता के पास पहुंची तो संयोगिता उससे बोली, मैं तुम बड़े बूढ़ों के साम्हने कहती सकुचती हूं परन्तु कुसमय पाकर कहना पड़ता है। मैंने पृथ्वीराज से पाणिग्रहण कराना विचारा है। इसपर दाई बोली "बेटा! कैसी बौरी हुई है!! जिसके लिये माता पिता बरजते हैं, जिसके खरे खोटे की परख नहीं उससे सहसा सम्बन्ध स्वीकार करना कैसा? मेरी सीख मानो और मन में समझ लो।" यह सुनकर संयोगिता ने प्रत्युत्तर दिया "क्या कहती हो" चामीकर की चमक और चन्दन की सुगन्ध ही परख है। जिस चहुआन की चरचा चतुर्दिक चरचराटे सी चल रही है उसका परिचय क्या? यह सुन कर सहचरी बोली तू राजकुमारी है और वह लुहार कुल में उत्पन्न है सो भी तो सोच? यह सुन कर संयोगिता बोली सुन "वह वह लुहार है? जिसने होकर गढ़ खड़ा जला दिया, जिसकी तलवार ने सारा यज्ञ बिगार दिया, जिसने सांड़सी के युद्ध में भोला भीम का बध किया और और भी जहां जहां काम पड़ा तहां उसने आरनी की आग होकर शत्रु समूह को भसमही कर दिया, जिससे अजमेर में धुआं हुआ और मंडोवर में लौ लपटी, मोरारी आदि जिसकी लपट में लिपटे और रनथंभ और कालिंजर जिसकी ज्वाला से जल गए। अब उसी की चहुआन कृपान रूपी अग्नि गोरी रूपी घड़े को पका रही है*" उसकी सखी बोली कि समस्त मरहट्टे नीमच वैरागर कर्नाट कोकन आधा मालवा देश जिसने निज बाहु बल

(१) चौड़े गट्ठे सार बरगद की लकड़ी का एक टुकड़ा होता है जिसपर एक खड़ी लकड़ी मथने से आग निकलती है। पहिले समय में ऋषि लोग इसी अरनी की आग से काम लेते थे अब भी यज्ञादि के लिये अरनी से अग्नि उठाई जाती है॥

* यहां यह बात विचार करने की है कि कुंआँ या नदी से घड़े में जल भर कर आग बुझाई जाती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से दबालिया और शाह शहाबुद्दीन को जिसने बिन प्रयास पकड़ पकड़ कर छोड़ दिया है वही पृथ्वीराज संयोगिता का वर होने योग्य है न कि पंगराज के अनुचर अन्य राजा लोग।

संयोगिता पुनः बोली कि किसी की सिखावन या आग्रह से मैं पृथ्वीराज को कैसे भूल जाऊं ! यह कहते हुए उसकी आंखो से आंसू निकल पड़े। अपना प्रण, जैचन्द का हठ और सखी सहचरियों के समझाने बुझाने पर विचार करने से संयोगिता की जो दशा थी वह बड़ी ही बिलचण और विचारनीय थी। क्रोध के कारण उसके आरक्त नेत्रों से जो दो चार जल कण गिरे वे ऐसे भले मालूम होते थे मानों चन्द्रमा को अमृत कुंड में पखाने से उसकी कलंक कालिमा निकल पड़ी हो। संयोगिता का यह हाल देख कर सहचरी तो चुप हो गई पर संयोगिता सखियों से बोली कि मनुष्य जीवन में बात की बात ही सब कुछ है। यदि बात गई तो जीना किस काम का इस लिये तूं मुझे ऐसा उपाय बतला कि जिसमें मेरी बात न बिगड़े। यह सुन कर सखी बोली कि चढ़ती जवानी में जवान प्रीतम से मिलना ही सलाह है। जोबन की मजेज ढर जाने पर फिर संसार का सुख कहां !! यह सुन कर संयोगिता बोली चलो चुप रहो। ऐसी बातें उससे करो जो तुम्हारी बराबरी की हों, मैं तो तुम्हें तात मात समान समझ कर तुम्हारी लज्जा करती हूं और तुम ऐसी बातें करती हो। इसपर सहचरी ने उत्तर दिया कि यहां तात मात की बात नहीं है, मैं सच कहती हूं यह जवानी आम की सी मंजरी है। चित्त की चोप रूपी कोप एवं चतुरता की लहलही ललामी के बीच से उत्पन्न चढ़ती हुई जवानी पंकज के पुष्प के समान है जिस पर कंदर्प की कोमल प्रभा पड़ती और रस लोभी प्रेमियों की भौंर भीर उड़ती फिरती है। सो हे सुन्दरी बसन्त ऋतु के समान तेरी जवानी के आलम का यही समय संसार सुख के उपभोग करने का है। इस पर संयोगिता बोली यह सब कुछ है परन्तु इस शरीर में स्वांसा रहते मैं प्यारे पृथ्वीराज के सिवाय दूसरे को न बरूंगी ! न बरूंगी !! मैंने तो अपना मरना निश्चय विचार लिया है ! अब तक केवल संभरीनाथ की आशा पर स्वांसा चलती है। हिन्दू एवं हिन्दुअत्व की हद पृथ्वीराज को भूलना भला कैसे हो सकता है ? गुरुजनों के प्रत्यक्ष या परोक्ष में जो कुछ है मेरा यही प्रण है। यह सुन कर पुनः सखी बोली अरी राजकुमारी तेरे अंग अंग में अनंग की अवाई से अरविंद की सी अरुनाई आ गई है। चकवाक से योवन उठ रहे हैं और भुजंग सी वेणी लटक रही है तेरे सचक्कन सटकारे कारे कारे कच चंचरीकों की कतार को मात करते हैं, तेरे पैर के तलवों से रसालपल्लवों की सी लाली झलक मारती है। इस प्रकार तूं बसन्त की नवेली वेली बन रही है। तेरा स्वाभाविक चातुरता से मधुर वचन उच्चारण करना तो मधुर मधु से कदापि कम नहीं है। हे सुकुमारी तूं पंगराज जैचंद के घर जन्म पाकर पृथ्वीराज के घर जाना चाहती है, भला विचार तो इसमें कितनी आपत्ति और कितना खून खराबा होगा। इस पर संयोगिता ने पुनः वही बचन कहे "अरी चाहे जो हो। मुझे तो अहिर्निशि सोते जागते उठते बैठते एक मात्र प्राणेश्वर पृथ्वीराज ही प्राणाधार हैं तुम सब सखी मेरी बात गांठ बांध रक्खो कि जीती जाऊं गी तो जोगनीपति पृथ्वीराज के घर नहीं तो इस घर से मरी निकलूंगी।

संयोगिता ने जो कुछ अन्तिम उत्तर दिया वही दूती ने जैचन्द को जा सुनाया, जिसे सुन कर वह गुस्से के मारे लाल हो गया। उसने उसी समय आज्ञा दी कि उसे गंगा किनारे के महलों में रख दिया जाय वहीं से पानी में अपनी परछाईं देख देख कर रहेगी या वहीं डूब मरेगी। यह कह कर उसने उधर तो संयोगिता को सौ दासियों सहित गंगा किनारे के महलों में भेज दिया और इधर पृथ्वीराज को निर्मूल करने का उपाय रचने लगा।

गंगा किनारे के सतखंडे महलों में निवास करती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हुई संयोगिता के पास सौ दासियों के सिवाय उस की पाठिका मदनिका ब्राह्मणी भी रहती थी। संयोगिता ने नए महलों में जाकर अन्न खाना छोड़ केवल पय और पानी के आधार पर रहकर योग साधना से पृथ्वीराज का ध्यान करना आरम्भ किया। ब्राह्मणी ने संयोगिता को सिखावन दी कि सुन— यह प्राण पंखी की तरह अनिश्थिर है अस्तु इसे ब्रह्मांड के कमल—चक्र के बीच में स्थिर कर पृथ्वी-राज का ध्यान कर। उस कमल चक्र के आठ दल हैं। उसका पूर्व्व दिशावाला दल स्वेत है और उस पर प्राण जाने से शान्त रस की भावना उत्पन्न होती है। आग्नेय का दल लाल और उसका गुण आ-लस्य और नींद को उपजाना है। दक्षिण दिशा का दल अग्नि शिखा के समान है और वह क्रोध का बीज है। नैऋत का दल नीला और उस पर चित्त जाने से भय का आभास होता है। पश्चिम दिशा का दल श्याम है और उससे हास्य एवं अन्य आ-नन्द प्रमोद की उपज जानो। वायव्य कोण के दल का रंग आकाश के समान है और उस पर चित्त जाने से उच्चाट चित्त एवं चिन्ता उत्पन्न होती है। उत्तर दिशा का दल पीला है और उसमें नाना भांति के भोग विलास और शृंगार बनाव की बासना बसती है। ईशान दिशा का दल गौर वर्ण है और वहां पर लज्जा और शंका की समाधि समझनी चाहिए। अस्तु इन सबको छोड़ कर इनके गोचर स्थान अर्थात् एक मध्य में ध्यान रख कर उपासना करने से सर्वसिद्धि होती है और कुत्सित प्रपंचों का सर्वनाश होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हांसीपुर प्रथम युद्ध।

(एक्यावनवां समय।)

जैचन्द की आज्ञानुसार कन्नौज राज्य की फौज दिल्लीपति को दमन करने के लिये बराबर घात में फिरा करती थी। पृथ्वीराज के यज्ञ विध्वंस करने पश्चात् कन्नौज की फौज ने दिल्ली की राज्य सीमा में उपद्रव मचाते हुए बहुत सी भूमि दबा ली और दिल्ली से केवल पांच कोस के अन्तर पर कई गांव लूट लिए। इस पर पृथ्वीराज ने सब सामन्तों से सलाह कर निश्चय किया कि दस सामन्त तो हांसीपुर में शाही सरहद की नाकेबंदी पर रक्खे जांय और दस सामन्तों सहित कैमास दिल्ली की गढ़ रक्षा पर रहे। शेष सामन्तों सहित पृथ्वीराज को शिकार के मिस जंगल पकड़ना उचित है। तदनुसार कन्ह, भीम, पुंडीर, सलखसुत, भान, जैत प्रमार, राम राय रघुवंसी, कनकराय बड़गुज्जर, देवकर्ण मोरी, बग्गरी राय, चामंड राय इन दस सामन्तों सहित कैमास को दिल्ली में छोड़ कर पृथ्वीराज मालवे की तरफ चल दिया और कन्नौज राज्य की प्रजा को लूटता मारता हुआ शिकार करने लगा।

हांसीपुर से कुछ थोड़ी दूर पर आसीपुर से शाही सरहद का सिलसिला चलता था। हांसीपुर के पहाड़ों में एक बलोच सरदार रहता था। उसने जब दश सामन्तों के सीमा पर आने का समाचार सुना तो शाह शहाबुद्दीन को लिख भेजा कि यहां हांसीपुर में हिन्दुओं का जोर बढ़ता जाता है यदि आज्ञा हो तो यहां के हम सब पहाड़ी भूमिया भूमियावट ठान दें और हांसीपुर की भूमि हाथ कर लें। बेगमों के साथ जो फौज आती है उससे तो बहुत कुछ मदत मिलेगी फिर भी यदि थोड़ी बहुत ज़रूरत पड़े तो समय पर सहायता दी जाय। जब यह पत्र शहाबुद्दीन के पास पहुंचा तो उसने इस पर अपनी सम्मति प्रकाश की परन्तु उसके मंत्री ने कहा कि इस समय जो लोग हांसीपुर में हैं उन्हें साक्षात् चहुआन का बाहुबल समझिए। इस समय पृथ्वीराज और सामन्तों की ऐसी पटती है कि कुछ कहने की नहीं। राजा प्रजा में भी बड़ा बन है इसके सिवाय हिन्दुस्तान भर में सर्वत्र इस समय चहुआन की दुहाई फिर रही है। इस लिये बेगमों को सीधे मक्के जाने दीजिए, किसी के कहे में आकर नाहक की छेड़ छाड़ न कीजिए। निदान शहाबुद्दीन की माता सात सौ बेगमों के साथ मक्के शरीफ़ को प्रस्थानित हुई, साथ में बहुत से मुसल्मान सर्दारों और सिपाहियों के साथ नुसरत्त खां प्रेषित किया गया।

इस समय हांसीपुर में नरबाहन नामक एक नागवंसी सरदार सूबेदार था। बीर नरवाहन बड़ा-ही बलवान रणकुशल और युद्ध विशारद पुरुष था। परंतु इसे पृथ्वीराज ने बड़े मान पान से दिल्ली में अपने साथ रख लिया था और हांसीपुर में पाच सामन्तों सहित चामंडराय रहता था। समय पाकर शाह के एक सेनानायक ने आसीपुर को दबा लिया था। परन्तु नरबाहन ने अपने ही बल से शाही सेना को हटा कर पुनः वहां पर अपना अधिकार जमा लिया। तब से पृथ्वीराज ने हांसीपुर की सुबेदारी का पक्का पट्टा उसी नरबाहन के नाम कर दिया था।

गजनी से शहाबुद्दीन की माता बड़े लाव लशकर की रक्षा में बहुत सा धन द्रव्य और दास दासी लेकर मक्के को रवाना हुई। जब उसकी सवारी दिल्ली राज्य की हद के पास पहुंची तो बलोच पहारी स्वयं सामन्तों के पास हांसीपुर को गया और उनसे उसने कहा कि शाही बेगमें मक्के को जा रही हैं उनके साथ में खुरसानखां स्वयं है पर जितना रास्ता आपकी सरहद में पड़ता है उसमें उनकी रक्षा का जिम्मा

(१) "हांसी पुर सामन्त सुनिय बालोच पहारी" यहां पर 'पहारी" शब्द से नाम से अभिप्राय नहीं है वरन पहारी से पहाड़ का रहने वाला बोध होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आप लोगों पर है। इस पर सब सामन्तों ने बिचारा कि बेगमों का डेरा लूट लिया जाय परन्तु रामराय रघुवंसी ने कहा कि इस समय बली पज्जूनराय तो नागौर में हैं और सब सामन्त राजा के साथ हैं इस समय ठाले बैठे, फिर भी राजा की आज्ञा बिना, वृथा उपद्रव उठाना अच्छा नहीं। इस पर और तो सब चुप रहे पर चामंडराय कब मानने वाला था उसने उलटा रामराय को मूर्ख बना दिया और सब को अपनी बातों में गांस लिया। पज्जून राय को भी इस बात की खबर लगी और उसने भी मना कर भेजा, परन्तु हांसीपुर की सामन्त मण्डली ने किसी की एक न सुनी और किले के मालिक बड़गुज्जर से पूछे बिनाही चुपचाप कूच करके बेगमों के डेरे पर डांका जा डाला।

शाही बेगमों का डेरा नदी के किनारे एक उत्तम उपबन में पड़ा हुआ था। आधी रात के ऊपर जब सामन्तों ने छाप मारा तो बेगमों के साथी सिपाही क्या पीनस लेने वाले कहार तक भाग गए बेगमों को अकेला पाकर सामन्तों ने उनकी बुरी दुर्दशा की। यहां तक कि उनके वस्त्र तक खींच लिए। उस समय वे बेगमें बोलीं अरे सामन्तो! अधर्म न करो। यद्यपि हमारे तुम्हारे भिन्न भिन्न दो दीन हैं पर दोनों का मालिक एकही खुदा है। दुनिया में खुदा से जुदा है क्या? परन्तु प्रमादी पुरुषों को भेद देख पड़ता है। ऐसा नहीं है कि तुम हमको दुःख देने से स्वर्ग पा जाओ। सुकर्म का अच्छा और कुकर्म का बुरा हिन्दू मुसल्मान दोनों दीनों को एक सा फल मिलता है। इस दुनियां में जो ओछी बुद्धि के होते हैं जिनकी रीति नीति ओछी होती है वेही लोग ओछे कहाते हैं वे जरा जरा सी बातों पर जमाने भर में टकराते हैं धक्के खाते फिरते हैं और अन्त में (संसार सागर में) तिनके की तरह उतराते हुए वह कर मरजाते हैं; परन्तु जो लोग वीर गंभीर होते हैं वे ही बड़े कहाते हैं और संसार में कमाल ऐशो अशरत और यश पाते हैं। सो हे चामण्डराय! ऐसा नीच विचार न कर कि दूसरे दीन को दुःख देने से तू सुख पा जायगा। परन्तु चामण्डराय ने एक न सुनी बेगमों के डेरे डौरे डौरे करके लूट लिए और तब वह सब सामन्तों सहित हांसीपुर को लौट आया। उधर अधमरी होकर बेगमों ने शाह के साम्हने सब दुःख रो रो कर पुकार मारी।

बेगमों ने शहाबुद्दीन से कहा "ऐ सुलतान आपको परवरदिगार ने शहंशाह का रुतबा अता फरमाया है। तुझे और तेरे ताबेदारों को माकूल मर्दुमी और कुव्वत हासिल है, मगर लानत है तेरे ताबेदारों को जो खाने के अपने और अचैने के पराए हैं, जिनको न तो नमक का ख्याल है न दीनदारी की मलाल है। हुक्मउदूल नमकहराम नौकरों का न होनाही भला है!! अफसोस जिस मालिक की आन पर नौकर जान न दे वह मालिक भी हुआ न हुआ सा है। आपके जीते जी हमारी (तुम्हारी स्त्रियों की) ऐसी बेइज्जती होना कितनी शरम की बात है।" उसकी मा भी बोली ऐ नूरचश्म लख्तेजिगर बर्खुर्दार बच्चे मैंने तुझे नौ महीने हमल में रखकर जिस तरह से परवरिश की है वो मैं ही जानती हूं—हमल के वक्त औरत को क्या तकलीफ होती है सो कोई क्या जाने, जाड़े में जाड़ों गरमी में गरमी और मौसिम वारिश में सैकड़ों फितूर बर्दाश्त करने के बाद बच्चा जना जाता है। ऐसी अजब अज़ीज़ मा सी चीज से जो औलाद नफरत करती है उसे जमीन पर क्या दोजख़ में भी जगह नहीं दी जाती। ऐसे अहसान—फरामोश मर्द का मुँह देखना भी मुनासिब नहीं है। यह कहते हुए उस वृद्धा की आंखों में आंसू भर आए। माता की ऐसी दीन हीन दशा देख कर शहाबुद्दीन से न रहा गया। उसके क्रोध से दोनों नेत्र अंगारे से लाल हो गए, होंठ फड़कने लगे और धुक धुकू धक धक धड़कने लगी। उसने उसी समय अपने सब सलाहकार मुसाहिब और मन्त्रियों को बुलाकर सैनिक साज सामान सजने की आज्ञा दी और मंत्री तत्तारखां को सहायकों के नाम परवाना भेजकर उनकी कुमक जुटाने को कहा। शाह की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऐसी आज्ञा होतेही बात की बात में सब सेना इकट्ठी होगई। तब तत्तार खां ने तख्त के सामने जाकर दाहने पैर के अंगूठे के बल खड़े होकर कौरनिस करके अर्ज किया कि इर्शाद बजा लाया गया। फौज हाजिर है।

शहाबुद्दीन ने अपने मुसल्मान सर्दारों को खिताब दे और सिरोपाव पहिना कर कहा कि जो हांसीपुर को लूट कर अपने कब्जे में करे वही मेरी ऐन मेहरबानी का हक़दार होगा। इस पर सब सर्दारों की एक गुप्त गोष्ठी होना निर्धारित हुआ। निदान उस मजलिस में शाह ने कहा कि दुश्मन को ज़ेर कर अम्माजान के दिल को राहत देने के लिये जो कुछ मुनासिब हो करना चाहिए। तब खुरासान खां बोला कि बुद्धिमान तत्तार खां जो कहे सो सलाह पक्की। यह सुन कर तत्तार खां बोला कि पहिले यहां से कुछ फौज भेजी जाय जो चढ़ीसवारी हांसीपुर को फतह करे और फिर बढ़ कर दिल्ली पर धावा करे। दिल्ली पर धावा होने के समय शाह का भी शामिल होना शोभा देगा। यह सुन कर शाह बोला "रे बेवकूफ तत्तार तूं क्या बकता है। मैं कई बार पकड़ा गया और तुम लोग भाग भाग आए इसी से ऐसा कहते हो। मैं अब की बार कुरान की कसम खा कर कहता हूं कि दुश्मनों को नेस्तनाबूद किए बिना न लौटूंगा। यह सुन कर तत्तारखां ने उत्तर दिया कि यह कैसा हुक्म होता है हांसी की सत्यानाशी करदूं और सामन्तों को पकड़ कर शाह सलामत के साम्हने सात सलामें कराऊं तो मेरा नाम तत्तार खां, नहीं तो नहीं!!! युद्ध में जुटने पर अपना उनका जी एक कर दूंगा। तब तक बलोच पहारी भी आ पहुंचा और उसने अर्ज किया कि हांसी की मुहिम के लिये मुझे हुक्म मिले। उसके प्रस्ताव को शाह ने प्रसन्नता पूर्व्वक स्वीकार कर लिया और उसे अपने हाथ से तलवार बँधा कर सब सेना का सिरे सरदार स्थापित किया और तत्तार खां और निसुरत्तखां को उसकी सहायता के लिये दिया। इस प्रकार शाही सेना चार तुंगों में हो कर जुमैरात (बृहस्पतिवार) को हांसीपुर पर रवाना हुई।

जब शाही फौज सिन्धु नदी को पार करके पहाड़ों की तराई में जा पहुंची, तब वहां से गुप्त चर रवाना हुए। गजनी से जो चार फौजें चली थीं वे इस प्रकार थीं। पहिली सेना का नायक बलोची पहारी था। दो सेनाएं जो कि बराबर चलती थीं उन में से एक तत्तार खां के और दूसरी खुरासान खां के ताबे थी। चौथी अनी का स्वामी शहाबुद्दीन आप था। इस समय शाही सेना के सब सिपाही और सर्दार बड़े जोश में थे। हर एक का हौसिला चढ़ा बढ़ा हुआ था। जब शाह मीर जमरोज की सरहद में आया तो वह भी आगे बढ़ कर शाह से आमिला और सेना सहित शाही लश्कर में शामिल होगया। यहां पर पहाड़ी रास्तों से रसद आदि का प्रबन्ध करके सब फौज आगे चली और शहाबुद्दीन स्वयं सब सेना का सेनानायक हुआ। यह लश्कर दिन दूने रात चौगुने पड़ाव करता हुआ हांसीपुर से दस कोस के ऊपर आगया। तब सामन्तों को खबर हुई। परन्तु समाचार पातेही चामुण्डराय ने चट से किले की मोरचे बन्दी करली। मुसल्मानी सेना का बल इस समय बढ़ा हुआ था। यवन सेना की चारों तुंगों ने किले को बीच मे देकर सब नाके बांध लिए थे किले में रसद वरदास पहुंचने के सब मौके अच्छी तरह बंद थे। यहां तक कि किले वाला कोई बाहर के किसी आदमी को सन्देसा तक न पहुँचा सकता था। मुसल्मानी सेना में इस समय हब्सी रूमी खिलची (खिलजी) इलच, खुरेस, बुखारी, सय्यद, सैलानी, सेख, चगत्ताई, पीर, तुरक, बलोच आदि भांति भांति के मुसल्मान जमा थे। एक दिन निस्तब्ध पड़े रहने पर जब सामन्तों की तरफ से कोई सीधा संदेसा न पाया तब उन्होंने व्यूह बद्ध होकर किले पर चारों ओर से आग बर्साना आरम्भ किया। किले से भी उसका जबाब दिया गया। दोनों ओर से खूब आग बरसी, पर किसी ने चिक्कस न खाई। अन्त में कुछ थोड़ासा दिन शेष रह गया और जब सामन्तों ने जान लिया कि किले में रहकर जान दे

(१) जमीन चूमकर तीन बार सलाम करने को कोरनिस कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देने के सिवाय और कोई यत्न नहीं हो सकता, तब सब ने किले से निकलकर भागना चाहा, परन्तु रामराय ने कहा कि ऐसा करना ठीक नहीं, यद्यपि हमारा जोर कमजोर है परन्तु तारीफ इसी में है कि अब की बार फिर भी बादशाह को बांध लिया जाय। वक्त पड़ने पर हिम्मत न हारना चाहिए। लोहाना भी बोला "हां ऐसाही करो जिसमें सुकीर्ति विस्तृत हो; अपकीर्ति का काम न करना चाहिए" चामंडराय बोला माना कि शाही सेना का बल बढ़ा चढ़ा है और हमारा जोर कम है परन्तु कहा है कि 'सड़ी शिकार दाल को पड़ेगी ही'। हम लोग मार तलवारों सारी मुसल्मान सेना छिन्न भिन्न कर देंगे। इस लिये सवेरे मैदान में बढ़ कर हाथ किए जांय। उस दिन दिन के शेषांश भर युद्ध होता रहा. सायंकाल के समय दोनों सेनाएं विश्राम करती रहीं।

प्रातःकाल होतेही अचलेस खीची, गोयंदराय, महनसिंह, नरवाहन, नरसिंह समरसी, दोनों भाई महनंग मोरी, देवकर्न साँखुलासूर, भीमपुंडीर, जैतप्रमार, बग्गरी, राय, चामंड राय और सब का सर्दार रामराय रघुबंसी आदि सामंत कील कांटे से सन्नद्ध हो युद्ध में प्रवृत्त हुए। इधर से राजपूत उधर से मुसल्मान सिपाही दोनों में परस्पर मार मच उठी। दोनों दलों में खूब घमासान युद्ध हुआ, रक्त की नदी बह निकली और लोथों के ढेर लग गए। कोई कोई सूरमा पैर कट जाने पर केवल धड़ से तलवार लिए लुढ़कता फिरता ऐसा मालूम होता था मानो कोई बौना भीमकाय होकर कहर कर रहा हो। जिन के शरीर में सनाह भेद कर घाव लगे थे वे तो ऐसे मालूम होते थे मानो सफेद चद्दर पर रंगरेज ने महावर के ढारे ढरे हों इसी प्रकार मार होते होते तत्तार खां की अनी पिछल पड़ी और सामन्तों की जीत रही। इस युद्ध में शाही सेना का करीब आधा हिस्सा खेत रहा और १०० हाथी मारे गए और सामन्तों की तरफ के केवल २० सिपाही मारे गए, परन्तु शाही सेना मोरचे पर से करीब २५० कदम पीछे हट गई।

दूसरे दिन यवन सेना की ओर से आलीलखां ने अग्रसर होकर आक्रमण किया। उसने कहा कि मैं शाही सरहद का प्रकोट हूं, मेरे रहते कौन ऐसा है जो शाही जमीन पर दखल कर सके। चहुआन सेना के सामन्त तो विचारे हैं क्या चीज़! एक बार जम के भी छक्के छुड़ा दूं तो मेरा नाम।" फिर भी लोहा बजा, पहिली ही उचौनी में सामन्तों ने आलील खां को पांच डोरी पीछे हटा दिया, परन्तु उसने फिर से जोर बांध कर धावा किया और डँट कर हाथ फटकारे परन्तु अन्त को सामन्त मण्डली ने समस्त शाही सेना बिड़ार दी और हांसी का किला बेदाग बचा लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वितीय हांसी युद्ध।

[बावनवां समय।]

निदान दूत ने सुल्तान शहाबुद्दीन के सम्मुख जाकर अर्ज किया कि हुजूर हिन्दुओं ने हमारी सब फौज हरा दी और सब रखत बखत लूट लिया है। यह सुनतेही शहाबुद्दीन के नेत्र आरक्त होगए। उसने दीन इसलाम के आदि पैगम्बर महम्मद साहब की दुहाई देकर जंगी तैय्यारी होने की आज्ञा दी। हुक्म होतेही रूमी, हेरवी, परेवी, भष्वर, गष्वर समरकन्दी, कासकंदी, बलोच, तकी तुर्कीं, मकराव, उजबक आदि नाना भांति के मुसल्मान सिपाही सज कर दुरुस्त होगए। इनकेसिवाय अराकान के पहाड़ी लोग भी शाही लश्कर में आजुटे। इन लोगों का रंग धूमला और सिर पर बहुत कम बाल थे। बाज बाज लोगों के तो घोड़े के से मुँह और सूप से कान थे वे प्रायः रोज दो दो दुंबे खाते थे। वे लोग मल्ल-युद्ध में तो पहाड़ के समान अटल थे ही साथ ही इसके बाण चलाने में भी विलक्षण दक्ष थे। उनके धनुष पर कई टंक की प्रत्यंचा चढ़ती और प्रत्येक सौ सौ तीर वाले दो दो तरकस कसे हुए थे। वे लोग बाण की अनी पर बाण मार कर उसे मोड़ देनेवाले थे, फिर भला उनसे आसमान में उड़ता हुआ पक्षी तो बचताही क्यों। ऐसे सिपाहियों का बड़ा भारी लश्कर जोड़कर शाह ने हांसीपुर पर आक्रमण किया। उसने उसी पहिले पड़ाव से सब सेना को आठ हिस्सों में बाँट कर आठों दिशाओं को रवाना कर दिया और केवल पचास हजार सवार और कुछ हाथियों के साथ आप स्वयं साम्हने से हांसीपुर पहुंचा।

शहाबुद्दीन ने दूत द्वारा किले में कहला भेजा कि या तो इस वक्त लोहा लो, या खिड़की के रास्ते से निकल जाओ। शाह का ऐसा सन्देसा पाकर सामन्तों ने परस्पर सलाह की, कि अब क्या करना चाहिए? इस पर किसी किसी ने कहा कि निकल चलना सलाह है। दूसरे की भूमि पर मरने में कौन सी भलाई है, सो नहीं समझ में आता। इस पर पज्जून राय कूरंभ बोला, भाइ हम अपना पराया कुछ नहीं जानते हमारा काम तो मरना मारना है! 'कल्ह नहीं तो आज ही सही,' एक न एक दिन मरना अवश्य है फिर क्यों अपकीर्ति लेकर नाम को कलंकित करें। निदान चामण्डराय, जैतसी, रामराय पज्जून, प्रसंगराय, चन्दपुराडीर, महनंग मोरी, देवराव बग्गरी आदि सामन्त लड़ने पर मुस्तैद होगए परन्तु रात्रि होते शाही सेना किले के चारों तरफ अधिक उमड़ पड़ी। यह देखकर सब सामन्तों का मत पलट गया, परन्तु एक मात्र देवराव बग्गरी ने हिम्मत न हारी। और तो सब लोग रात्रि को निकल भागे केवल बग्गरी बीर ने सारी रात भगवती के भजन में बिताई। नागौर से जो सामन्त लोग इस समय सहायतार्थ आए थे वे भी भागने में सहमत हो गए; परन्तु वे लोग बाहर थे इसलिये उन्होंने दक्षिण की तरफ से शाही सिपाहियों को काट छांट कर रास्ता साफ कर दिया जिससे किले के सामन्तों को भागने में और भी सुबीता पड़ा।

सच है, जिसके मुँह पर पानी नहीं रहता और जो मरने से डरता है वही ऐसे मौके से निकलता है। चामण्डराय, सांवलासूर, गोयन्दराय, भोंहा चन्देल आदि सब सामन्त निकल भागे परन्तु देवराव बग्गरी न निकला। इस समय जो लोग किले से निकल भागे वे वास्तव में निकलने वाले नहीं थे, परन्तु होनहार ऐसी होती है कि उस वक्त सब अक्क बक्क भूल जाती है। इसलिये किसी को कायर कहना वृथा है, क्योंकि होनहार प्रबल होती है। रामचन्द्र का स्वर्णमृग के पीछे जाना, भरत का हनुमान जी पर बाण चलाना, विक्रम का जीव रक्षा के लिये कौवे का मांस खाना, इन्द्र का अहिल्या के कारण कुरूप होना, नल का दमयन्ती को त्यागना, आदि सब घटनाओं का

(१) इस समय यह स्पष्ट नहीं किया गया है कि शहाबुद्दीन कहां पर था। परन्तु अनुमान है कि वह सिन्ध पार करके वहीं पर पड़ा हुआ था क्योंकि सिन्ध नदी तक सेना आने के बाद फिर बादशाह का जिक्र नहीं किया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूल होनी ही है। फिर किसी को क्या दोष दें!

प्रातः काल होतेही शाही सेना का आक्रमण हुआ। किले में देवराव बग्गरी के साथ कल्हन, कमधुज्ज, सांखुला सूर और अचलेस खीची ये सामन्त और भी थे। प्रातः काल होतेही तत्तार खां ने शपथ कर के कहा कि अब दम की दम में किला खाली कराकर छोड़ता हूं। यह कहकर उसने किले पर चारों तरफ से एक बारगी हल्ला बोलने की आज्ञा दी। हुक्म पातेही, मुसल्मान सिपाही चारों ओर से अल्लाह अल्लाह कहते हुए झुक पड़े और किले के ऊपर अग्नि वर्षा करने लगे। इधर से सामन्त भी वार बचाने के लिये उद्यत हुए बारह दिन पर्य्यन्त बराबर लड़ाई होती रही और देवराव बग्गरी अकेला वार बचाता रहा। जब शाह ने देखा कि इस तरह से पेश नहीं पा सकते, तब उसने समस्त सेना के दो दल कर दिए। एक दल लड़ता तो दूसरा विश्राम करता और जब वह श्रम से श्रान्त होता तो दूसरा लोह लेता। इस प्रकार से अब रात्रि दिन बराबर युद्ध जारी रहने लगा। शाही सेना के व्यूह में सब से आगे हाथी लगाए गए और तिन के पीछे पैदल दल चला। होते होते किले के एक हजार सिपाही सांखुला सूर और अल्हन कुमार इन सामन्तों के मारे जाने पर शाही सेना किले में घुस पड़ी, तब शेष सिपाहियों सहित बग्गरी राव तलवार से युद्ध करने लगा। तलवार के युद्ध में तो राजपूत वीर एकही थे। उन्होंने मुसल्मान सिपाहियों को काट काट कर ग्रंटव लगा दिए। इधर से ये उधर से वे, जब दोनों एक साथ एक दूसरे पर वार करते तो दोनों गले मिले से रह जाते थे, मानो दोनों ने एक दूसरे की वीरता का पूरा परिचय पाकर भुज-भर भेंट की हो। गीध और चील्ह बड़े बड़े मांस के लोथड़ों को उठा करके आसमान में ले जाते और वहां परस्पर लड़े मरते थे। जवानों के सहजोर वज्र से सीने पर कटार क्या लगती थी मानों प्राण पखेरू के लिये माया मोह मय पिंजर से निकल जाने के लिये स्वर्ग का रास्ता बनाया जाता था। इसी मारा मार में जब देवराव बग्गरी मारा गया तो अप्सराएं स्थंभित होगईं और सूर्य्य के रथ का चक्का अचल होगया। देवांगनाएँ सोचती ही रहगईं और शिवजी ने उसका मुंड रुण्डमाल में पोह लिया। देवराव बग्गरी के शरीर में जब तलवार के चँव्वा-लीस गहरे घाव लग चुके और शरीर से शीस भी अलग जा छटका तब रुण्ड ने कटार से वार किए और तिल तिल होकर मरते तक शत्रु सेना के सहस्रों सिपाही मार दिए। इस प्रकार से भूनिंगराय का पुत्र बग्गरी राय स्वर्गबासी हुआ और उसके साथी भी रानिंग राव दोनों भाई, मोरी सर्दार, सांखला सूर, नाराइन, पज्जूनराय का पुत्र पंचाइन, रघुबंसराय, आदि सब लोग मारे गए। धन्य है वीर बग्गरी को! जैसी करनी उसने की वैसी न तो पहिले किसी ने की थी न अब कोई करेगा। यदि कोई वैसा हो तो कर दिखावे। आलीलखां ने किले पर शाही निशान रोप दिया। केवल सौ राजपूत सिपाही बचे थे सो वे दिल्ली को चल दिए।

चन्द बरदाई कहता है इधर तो यह हाल हो रहा था, उधर एक दिन राजा पृथ्वीराज ने स्वप्न में देखा कि हांसीपुर की भूमि धवल वस्त्र धारण किए हुए उसके पास आई और बोली कि आज दो दिन से मेरे किले पर बराबर गोला गोली चल रहे हैं। आक्रमण कर्ताओं के आतंक में आकर सामन्तों ने भी किला छोड़ दिया, परन्तु मैं न भागी। इस पर पृथ्वीराज ने पूछा कि तूं तब भी क्यों न भागी। उसने उत्तर दिया कि वह सामंत जिसकी मैं बांह बसी थी स्त्री की तरह भाग निकला; परन्तु सांखुला सूर और देव-राव बग्गरी ने यही कहा कि जिसे जाना हो जाओ, हम तो जीते जी राजपूत बाने की लाज न जाने देंगे। बस मैं उन्हीं दोनों की आंखें देख रही थी। परन्तु जब वे भी समाप्त होगए तब म्लेच्छों ने मुझे अपना लिया। इस बीतक की बात विचार कर चहुआन के चित्त की विचित्र दशा होगई। स्वामिधर्मी सामन्तों की मृत्यु पर तो वह पश्चाताप करता और

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुक्त भूमि का जाना जानकर क्रोध की ज्वाला में जल जाता था ; परन्तु भागतों के हावभाव का आभास होतेही उसे हँसी आता थी । उसने उसी समय सामन्त-शिरोमणि कैमास को बुलाकर कहा "इस समय हांसीपुर की भूमि शत्रुओं से ऐसी नठी हुई है जैसे बावली * के वक्त हाथी, सोच के सबब से स्नेह, और अच्छे गुणी के संमुख अनूठी विद्याएं नठ जाती हैं इसलिये कुछ ऐसी सलाह विचारो जिसमें हांसी का उद्धार हो। तब कैमास ने उत्तर दिया कि इससे तो ऐसा मालूम होता है कि यह कोई दैवगति है, क्योंकि ये सामन्त सहजही भागने वाले नहीं हैं ! कैमास ने कहा कि महाराज इस समय रावल समरसीजी के पास सहायतार्थ सन्देसा भेजना उचित है, उनके आजुड़ने से सहजही काम बन जायगा । तदनुसार एक दूत चित्तौर को भेजा गया । उस दूत के मुख से ऐसे समाचार सुनते ही समरसीजी हांसीपुर को चलदिए।

तबतक हांसीपुर से भागे हुए सामन्त लोग भी दिल्ली आ पहुंचे । उन्हे पृथ्वीराज ने अपने पास बुलाया और सब से सादर गले मिल कर कहा "भाइ ! हमारा तो बल भरोसा सब आपही लोग हो । बीती बात का विचार न करो, ईश्वरेच्छा से जो होनी थी सो हुई ।" तब वे सामंत बोले अन्नदाता बात तो यों है कि जिस राजपूत के जीते जी जबर्दस्ती जमीन जीत ली जाय उसका जीवित रहना भी मरे के समान है । इस पर पृथ्वीराज बोला इस से क्या ? 'समय करे सो कोई न करे,' एक समय सुग्रीव स्त्री की रचा न कर सका, अर्जुन के साम्हने द्रोपदी का चीर खींचा गया, श्रीकृष्ण कालयवन के साम्हने से भाग निकले, और पांडवों को बनवास भोगना पड़ा । सुनो हे सामन्तो तुम लोग अजेय और सहजोर हो, इस लिये ऐसा करो जिसमें बात रहे । यह सुनते ही सामन्त लोग लाल लाल आंखें करके बोले तो बस "अब विलंब केहि काज" कूच कीजिए और चढ़ी सवारी धर लीजिए । निदान पेशखेमा लेकर प्रधान और खवास तो उसी दम रवाना किए गए और पंचमी को सामन्त मंडली सहित पृथ्वीराज ने कूचकिया।पृथ्वीराज धनुष बाण बांधे हुए भारथ के दल में पारथ सा सोहता था।उसके रतनारे नेत्रों में त्रिनेत्र का सा तेज देख पड़ता था और उसकी भौंहों को स्पर्श करती हुई बड़ी बड़ी मूंछें इन्दु की सी कलाएँ जान पड़ती थीं । सेना समूह के बीच स्थित संभरी नाथ तरैयों के बीच पूनों कैसा चंदा देदीप्यमान होता था । उसके साथी सूर वीर सिपाही अंग अंग अस्त्र शस्त्रों से मुसज्जित थे, उसके लश्कर के हाथी साक्षात् कज्जल गिरि से और उनके गंडस्थलों से झर हुए मद पनार पावस के झरने से जान पड़ते थे । रणवाद्यों का बाजा बद्दर की गरज से कम न था । कहीं जांगड़ा कालिगड़ा अलापते, कहीं नकीब पदवी कलापते, कहीं बंदी विरद गाते और कहीं कवि कवित्त सुनाते हुए ऐसे मालूम होते थे जैसे पावस में मोर और पपीहादि पक्षी बोल रहे हों । घुड़ सवारों के नेजों की अनी इतनी घनी थी कि बीच से परेवा पर भी नहीं मार सकता था । कोई कहां तक कहे उस चहुआन सेना के आतंक से दसों दिग्पाल सशंकित हो उठे और कमठ की पीठ सटपटा उठी ।

खबर पाते ही रावल जी तो पृथ्वीराज से ही पाहिले चल चुके थे अस्तु वे दिन दूने रात चौगुने पड़ाव ते करते हुए चार पांच नौ दिन में हांसीपुर जा पहुंचे। साथ में उनके भाई अमर सिंह जी भी थे। जब ततार खां ने रावलजी के आने का समाचार सुना तब मारे खुशी के फूल उठा । रावल समरसिंह जी तत्तार खां को बहुत खटकते थे अतः उन्हें अकेला पाकर तत्तार की छाती फूल उठी । उसने खुरासान खां की अनी को हरावल में करके तुरन्त ही रावल जी पर हल्ला

---

(१) यह शब्द कवि ने नहीं लिखा है ।

* मतवारा हाथी मैदान में छोड़ दिया जाता है चारों ओर से सवार और सांटमार लोग उसे घेरते हैं वे लोग उसे चारों तरफ से मारते हैं और वह उनपर झपटें करता है इसी खेल का नाम बावली है कहीं कहीं रमना भी बोलते हैं रियासतों में यह खेल अब भी देखने में आता है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बोल दिया। इधर से नाहरराय और अमरसिंह जी ने हरावल का मोरचा लिया। उधर से मुसल्मान सेना ने बिसमिल्ला बोला और इधर से अमरसिंह जी ने जै एक लिंगजी कह कर गँटा[1] उठाया। बाग बतलाते ही घोड़ा क्या कंस के सिर का वज्र, आसमान का चील्ह या चिड़िया के सिर पर का बाज हो गया। साथही इसके अमरसिंह की चपला सी चंचल तलवार भी मीर बन्दों को मार मार गिराने लगी। सिपाही सिपाही और सर्दार सर्दार की भी परस्पर ऐसी ठनी कि घना घनी की मार में परस्पर लोहे की झार से झरती हुई अग्नि बुन्द बर्षा की बहार बतलाती थी। राजपूत सेना ने यवन अनी को आध कोस पछेल दिया। इसी तरह ठेलमेठल रेलापेल युद्ध होते होते अमरसिंह जी की खुरासान खां से ठन गई। बड़ी देर तक दोनों की बराबरी होती रही अन्त में खुरासान खां के एक हाथ में अमरसिंह जी दो होगए। अमरसिंहजी तो इस असार संसार से चलकर अमरपुरी में जा बसे और यहां कसामसे की रमा मच उठी।

भाई का पतन होते देख रावलजी के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने ऐसी मार की कि सारी यवन सेना चणमात्र में जिधर तिधर तीन तेरह हो उठी। संघटित शत्रु सेना को काटते छाँटते हुए रावलजी ने अपने भाई के मारिया खुरासान खां को भी मारलिया। खुरासान खां को खपता हुआ देख, तत्तार खां ने तैश में आकर अपने घोड़े को एड़ लगाई और सिपाहियों को ललकारता, तलवार फटकारता हुआ वह आगे बढ़ा। उसके साथ में पांच सौ तातारी जवान भी तेगा चलाते हुए अग्रसर हुए। इस अवसर पर राजपूत सेना में से पचीस कबन्ध खड़े हुए। समरसिंह इस समय अपनी सेना के बीच में थे। मुसल्मान सेना का ऐसा जोर बढ़ा कि जिसे देख कर समरसिंह जी भी मैदान में आ खड़े हुए। उस समय हिन्दू मुसल्मान दोनों दलों में ऐसी मार मची कि आकाश से देखती हुई अप्सराएँ पुष्प वृष्टि करतीं और भूत बेताल ताली दे दे कर नाचते गाते नहीं सिहाते थे। समरसिंह जी की सेना के सुबह से दो पहर तक केवल १७ सर्दार खेत रहे थे कि तब तक पृथ्वीराज भी आपहुंचा। पृथ्वीराज के पहुंचतेही हिन्दू सेना का बल बढ़गया। इधर से राजपूत सिपाही लम्बे हाथ देते शत्रु सेना में पिलते जाते थे उधर से मुसल्मान भी पीछे को पैर देना हराम समझते थे। इस ठसाठसी में घोड़ों की ऐंठदार गरदन नवोढ़ा के घूंघट को मात करती थी। बानैत बीर अपनी अपनी पैंज पर ऐसे अटल थे जैसे पनिहारी सदा अपने सिर पर के घड़े पर सुरत रखती है। ऐसे बीर पुरुषों के कट मरने पर उनकी आत्मा चिन्मय ज्योति में इस प्रकार से तन्मय हो जाती है जैसे दिये के बुझने पर उसकी ज्योति का पता नहीं पड़ता। जब कभी टोप फट जाने पर खोपड़ी निकल पड़ती तो ऐसा मालूम पड़ता मानो चन्द्रमा का पेट फाड़ कर राहु निकल पड़ा हो। बख्तर पर खाली हाथ पड़ जाने से धार झरे हुए दुधारे केतकी के पुष्प की पखुरी से नजर आते थे। परन्तु इस समय कायरों की बुरी दशा थी। वे बिचारे दूसरों को मरता देख आप हाथ मोड़ते हाय हाय करते और झमा खाकर गिर गिर पड़ते थे।

रावल समरसिंह जी के भाई अमर सिंह जी और उनके खवास दोनों को गहरा घाव लगा था। अमरसिंहजी अब तक जीते थे परन्तु सायंकाल होते होते वे चल बसे। और स्वामि सेवी खवास जो अब तक उन्हें कौवे गीधों से बचाए हुए था सो भी निपटा। रावल समरसिंह जी की सेना तो पहलेही से लड़ रही थी इसी पर सामन्त सेना के आजाने पर हिन्दू दल की पट लगी। पाहिले तो दोनों दलों ने एक में मिलकर मुसल्मान सेना का मुंह मोड़ दिया परन्तु मौका पाकर फिर दोनों दल अलग अलग हो गए और उन्होंने यवन सेना को बीच में दे लिया। इतने में सन्ध्या हो गई और दोनों अमित

[१] "गटा" घोड़े की बाग के उस हिस्से को कहते हैं जहां पर सवार पकड़ता है। उसी के इशारे से घोड़ा चलता, खड़ा होता और लौट फेर करता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेनाएं विश्राम करने में तत्पर हुईं। इस युद्ध में तत्तार खां घायल हुआ. खुरासान खेत रहा, छओं भाई हब्सी,बलोच पहारी, महनंसिय मेर आदि साठ सर्दार मारे पड़े। याकूब खां, मारूफ खां, खूब खां, और तत्तार खां आदि सरदारों ने बड़ी बीरता से युद्ध किया। राजपूत सेना में से महनंगराय भट्टी ने विलक्षण बीरता दिखाई।

प्रातः काल प्रभाकर की प्रभा का आभास होंतेही प्रत्येक कर्म्म का मानो पुनः संस्कार होता है। चोर चुपके से चल देते हैं, चकवा चकवी से मिलते हैं, तरुलता पल्लव प्रफुलित हो उठते हैं, जहां तहां भ्रमर भन्नाते हुए भ्रमण करने लग जाते हैं, सौरभित समीर सञ्चालित होती है, और उड़गन अदृष्ट हो जाते हैं। इसी प्रकार और भी जानो। भास्कर भगवान की किरणों की प्रभा पाकर कमलकली तो मानो सहस्र मुख से मुस्करा उठती है। पूर्व्व दिशा में लालिमा की झलक पड़तेही संसार के कालिमामय कर्म तड़ाक से कुंठित हो जाते हैं। देवालयों में आनन्द ध्वनि होने लगती है और पण्डित सुन्दर सीतल जल से स्नान कर पाठ पूजन करने लग जाते हैं इस प्रकार जगत के जाल रूपी तिमिर को तोड़कर एक चक्के के रथ पर सारी पृथ्वी की परिक्रमा करनेवाले जगत के जीवधारी मात्र के प्राणाधार सूर्य्य देव सब का शुभ करते हैं।

ऐसे सूर्य्य भगावन का उदय होते ही दोनों दल पुनः युद्ध के लिये सन्नद्ध होकर रणक्षेत्र में आ उपस्थित हुए। उस समय सेना के बीच में स्थित पृथ्वीराज के मुख पर मध्यान्ह के सूर्य्य की सी प्रभा भासित होती थी। उसके साथी राजपूत वीर भी आतंक में आकर नाना प्रकार के हुंकार धुंकार के शब्द करते हुए कोलाहल मचा रहे थे और क्रोध के मारे उनके नेत्र अंगारे से आरक्त हो रहे थे। इशारा होते ही दोनों दल के असवार पैदल सब लोह की लपट से लपटने के लिये लपक पड़े। सब से पहिले पृथ्वीराज ने ही यवन हरावल के एक हाथी के कुंभस्थल को कृपाण से काट दिया। उस समय ऐसा भाव भासित होता था मानो मेघों के बीच बिजली समा गई हो और रक्त के साथ घाव से निकलती हुई तलवार तो कज्जल गिरि से गिरती हुई त्रिवेणी की सी धारा भान होती थी। इस समय पृथ्वीराज भारथ में पारथ सा सुशोभित होता था, और उसका सखा भीमकाय चामंडराय भी भीम से कम न था। उधर से मुसल्मान लोग भी रात्रि भर मंत्र सलाह करके और प्रातः काल से कुरान और सीपारे पढ़ कर आए थे। अस्तु दोनों दलों में ऐसी घली कि जैसी कभी किसी ने देखी क्या सुनी भी न होगी। फिर किसी कवि की क्या मजाल है जो उसका यावत् वर्णन कर सके। बानों की सरसराहट गोलियों की झरझराहट और तलवारों की झनझनाहट एवं खटखटाहट के कारण अपना स्वर आप को सुनाई नहीं देता था। जहां तहां चमचमाती हुई उज्वल तलवारें ऐसी मालूम होती थीं मानों बिजली ने हजार कला होकर दर्शन दिया हो। यदि एक एक हाथ हाथी का किलाया काट देता, तो दूसरा दूसरों से दांत उखाड़ लेता था। मुसल्मान लोग जुदे पटैती के हाथ फेरते हुए शत्रुओं के शीस कलमों से उतार लेते थे। इस युद्ध में इतना रक्त प्रवाह हुआ कि शेष नाग का सिर भीग गया। कमठ सटपटा उठा और दसों दिशाओं के दिगपाल दहल उठे। देवता लोग दांतों उँगली देकर रह गए। इस प्रकार से समस्त दिन संग्राम होते होते अन्त में राजपूतों की जीत रही और यवन अनी परास्त होकर पीछे हट गई। मुसल्मानी सेना के खुरासान खां, रूपराय हिन्दू और भीमसिंह ये तीन भारी सर्दार मारे गए—चाहुआन सेना में से बलिभद्र भट्टी, जंगली राव, किल्हन राय और बनबीर ये योद्धा खेत रहे और हुसैन खां का पुत्र बहुत घायल हुआ। इसीपर मुसल्मानी सेना धर भागी और तत्तारखां तो ऐसा तीन तेरह हुआ कि फिर उसका पता भी न पड़ा। खेत साफ कराए जाने पर सब तेरह सामन्त अशक्त घायल पाए गए। हांसीपुर का पहिला पतिकदार नबराहन गौर मृतप्राय पाया गया। प्रताप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंह, सागर सिंह, मानसिंह चन्देल, महनंगमोरी, पूरनराय प्रमार, केसरी सिंह, नाहरराय कन्ह का पुत्र, रघुवंसचंद चंदेल, नरसिंह का पुत्र हरसिंह और मल्हनराय, इस युद्ध में सब इतने राजपूत मारे गए। किले पर राजपूती निशान रोप दिया गया। घायलों को लाकर उनकी मल्हम पट्टी का प्रबंध किया गया और पृथ्वीराज और समरसिंह सब सेना सहित हांसीपुर में रहे।

इस प्रकार से हांसीपुर के युद्ध में शत्रुओं को संहार कर तत्तार के मुंह का पानी उतार और गई भूमि को अपनाकर पृथ्वीराज समरसी जी सहित दिल्ली को वापिस आए। वहां पांच दिन पर्य्यन्त रावलजी की सब भांति से उचित महिमानदारी कर के उन्हें सादर चित्तौर को बिदा किया गया और पृथ्वीराज आप अपनी राजसी का स्वच्छन्द आनन्द उपभोग करने लगे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना ।

—o—

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं ।

	मूल्य	डांकव्यय
मलिक मुहम्मद की अखरावट	।=)	)॥
कविवर बिहारीलाल-(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	=)	)॥
हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित)	।)	)॥
समालोचना (पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	)॥
समालोचनादर्श-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित) ...	≡)	)॥
कर्तव्याकर्तव्यशास्त्र-(पण्डित नारायण पांडे रचित) ...	॥)	-)
विसूचिका चिकित्सा	।)	)॥
हरिश्चन्द्र-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	)॥
भगवद्गीता-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित) ...	।-)	)॥
उथेलो-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	≡)	)॥
नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) ११ भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य-प्रति भाग	१)	-)
हिन्दी लेकचर-(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	-)	)॥
ध्रुवदास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	॥≡)	-)
सदलमिश्र की चन्द्रावती	।-)	)॥
सूदन कवि का सुजानचरित्र	२)	=)
लाल कवि का छत्रप्रकाश	१।)	-)
नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी	।=)	)॥
प्राचीन-लेख-मणि-माला-१ भाग (बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित) ...	१)	-)
अशोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	।)	)॥
नेपाल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित)	।-)	)॥
पृथ्वीराजरासो-पहिला भाग (समय १-११)	४)	।)
,, दूसरा-तीसरा भाग (समय १२-५४)	१०)	॥)
कुमारसम्भवसार (पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित) ...	≡)	)॥
श्रीधर का जंगनामा	।॥)	-)
धम्मपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	-)
सभा के पुस्तकालय की सूची	=)	)॥
मनोविज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित)	॥)	-)
चन्द्रशेखर का हम्मीर हठ	॥)	)॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)	१)	-)
दादूदयाल की बानी ...	१।।।)	=)
कवि नूरमुहम्मद की इन्द्रावती १ भाग	१।।)	=)
यूरोपीय दर्शन (पण्डित रामावतार पांडेय लिखित)	।।।)	-)
प्रबोधचन्द्रिका	।।)	-)
विरहलीला—आनन्दघन कृत	=)	)॥
दादूदयाल का सबद	१।)	=)
जोधराज का हम्मीररासो	२)	≡)
सरल व्यायाम (बाबू कालिदास लिखित)	।=)	-)
वनिताविनोद	१)	=)
नवीन दृष्टि में प्रवीन भारत	१)	-)
गीतावली	।)	)॥
योगदर्शन	२)	-)
गुरु गीता	।)	)॥
रामचरितमानस	८)	।।।)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की ७ पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें आधे मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं । अन्तिम पुस्तक का मूल्य सभासदों के लिये ६॥) रु० है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-14

THE PRITHVÍṚÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A

WITH THE ASSISTANCE OF KUNWAR KANHIYA JU.

CANTOS LVIII to LXI.

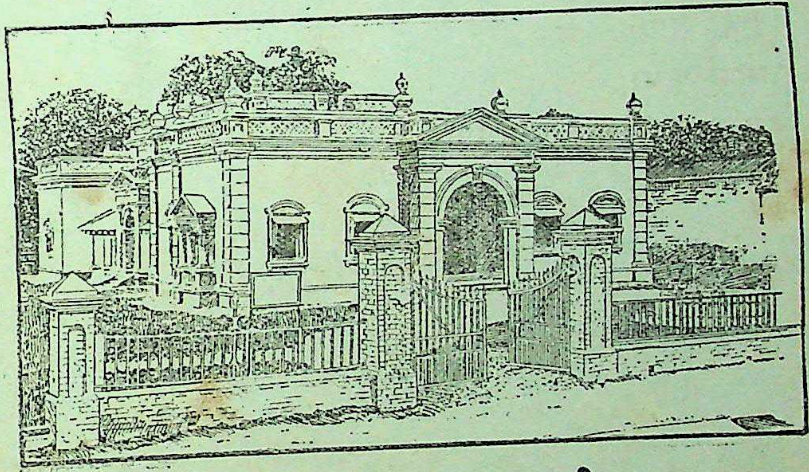

महाकवि चंद बरदाई

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता

से

सम्पादित किया।

पर्व्व ५८ से ६१ तक।

PRINTED BY THAKUR DAS, MANAGER AT THE TARA PRINTING WORKS, AND PUBLISHED BY THE NAGARI PRACHARINI SABHA, BENARES.

1908.

मूल्य १।) Issued 15th July 1908. [Price Re. 1/4.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* ओ३म् *

प[illegible]क की संख्या.................. २२/९४२

[illegible]तकालय-पञ्जिका-संख्या........ १४३९८

पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कोई महाशय १५ दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकता। अधिक देर तक रखने के लिये पुनः आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

—:o:—

(५८)	दुर्गा केदार समय	पृष्ठ	१५५४	से	१५५१ तक
(५९)	दिल्ली वर्णन	,,	१५५३	,,	१५६४ ,,
(६०)	जंगम कथा	,,	१५६६	,,	१५७५ ,,
(६१)	कनवज्ज समय (अपूर्ण)	,,	१५७७	,,	१६७२ ,,
	रासोसार	,,	१९९	,,	२३० ,,

———o———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सि पटापेलय सेल [1]मेलय सूर तुट्टहि सुभ्भरं । छं० ॥ २३० ॥
परि सीस हक्कहि धर हहक्कहि अंत पाइ अलुभ्भरं ।
उठि उट्ठि क्कसि केम उक्कसि सांइ सुष्यल [2]जुभ्भरं ॥
एकेक चंपहि पीठ नंषहि धरनि धर परिपूरयं ॥
हक्कियं सु वेगं अलिय महमद करिय द्रग्ग करूरयं ॥ छं० ॥ २३१ ॥
सम चले गज्जह देषि रज्जह जीह हनि हनि जंपियं ॥
आवंत दून मसंद राजह देषि चच्चर-चंपियं ॥
हनि संग जरह प्रान पूरह दो कलेवर गोद्दयं ॥
बिद्धवि राजह परे गाजह संगि एक परोइयं ॥ छं० ॥ २३२ ॥
रस रुद्र बीर भयान मच्चिय काल नच्चिय नोदयं ॥
हक्कीय राउ दुअप्प सुभ्भर बीर बीरह मोदयं ॥
हँकि सूर नंत गयन्न लग्गिय बाह चंपिय आवधं ॥
ढिलि असु सयंन पिंड पंचह चंपि जंपिय सावधं ॥ छं० ॥ २३३ ॥
जामेक जुद्धअरुद्ध लग्गिय बीर जंपिय बीरयं ॥
सिद्धीय सिद्ध संत रासह ग्रध स्रोनह सीरयं ॥
.... ॥
.... ॥ छं० ॥ २३४ ॥

बरनी युद्ध वर्णन ।

कवित्त ॥ हय गय हय हय अरय । रथ्थ नर नर सों लग्गा ॥
हय सों हय रायल सु । पाय करि सों करि भग्गा ॥
ईस आन बरबवै । सूर सूरन हक्कारिय ॥
सार धार भिंरै । प्रहार बीरा रस धारिय ॥
घरि एक भयाक रुद्र हुअ । सीस माल गंठी सु कर ॥
कविचंद दंद अ दल भयौ । मुगति मग्ग षुल्ले बिदर ॥ छं० ॥ २३५ ॥

वहाना का फुर्तीलापन ।

टक ॥ सीतं [3]गोप रत भीतय बरं नर जोति दिष्षी गुरं ॥
रंभं रंभ सुरथ्थ च अमृतं आलंब वाहं बरं ॥

(१) ए. कृ. को.-सेल । (२) ए. कृ. को.-जुध्धरं । (३) ए. कृ. को.-तोप ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिष्टी दिष्टि विभारथोवि सरसा भारथ्य बिय बुद्दयं ॥
गोरी सा सुरतान रुक्कति तयं आजानबाहं बरं ॥ छं० ॥ २३६ ॥

लोहाना और पहाड़राय का शाह पर आक्रमण करना और यवन सेना का उन्हें रोकना।

दूहा ॥ लोहानो आजान वर। लोहा लंगरि राव ॥
कढ्ढि लंबी तेग वर। साह सनंमुष धाव ॥ छं० ॥ २३७ ॥
सज्जि [1]सेन तूंअर सुभर। [2]वढ्ढिय हय चढ़ि षेत ॥
समुह साहि दिष्यौ सु द्रग। बंध्यौ बंधन नेत ॥ छं० ॥ २३८ ॥

नराच ॥ सु दिट्ठि दिष्षि फौजयं, पहार साहि सम्मयं।
चव्यो सु राव स्रूर मंत, दिष्षि सम्म रम्मयं ॥
बचे सु राम बीर बीचि, साजि गाज उट्टए।
कढ़े सु सस्त्र सारि झारि, मीर सीस तुट्टए ॥ छं० ॥ २३९ ॥
मिली दु फौज हक्कि धक्कि, अन्य अन्य आवधं।
जयं सु अप्प बंछि बंधि, वीर संधि सावधं ॥
तुटे सु षग्ग भग्ग भार, दंत उड्डि दामिनी।
बरंत स्रूर मीर धीर, काम [3]बंछि कामिनी ॥ छं० ॥ २४० ॥
बरंति स्रूर अच्छरी, सु देह रोहि रथ्थयं।
ग्रहंत अग्नि एक पंति, उर्द्ध जात तथ्थयं ॥
मच्यो करार धार मार, सार सार धारयं।
परंत एक तुट्टि तेग, उट्टि झार मारयं ॥ छं० ॥ २४१ ॥
करें किलक्क बीर हक्क, सद्दि कंठ पूरयं।
रमंत रासि भीर भासि, नंदि नंचि नूरयं ॥
तुटंत सीस रोम रीस हक्कयं धरप्परं।
.... ॥ छं० २४२ ॥
नचै कमंध तुट्टि रंध [4]भभ्भि रंत संभरं।
अलुझ्झि कंठ कंठ एक तुट्टि तेग दुभ्भरं ॥

(१) ए.-फौज। (२) ए. कृ. को.ठ्ठिय।
(३) ए. कृ. को.-वंधि, वंदि। (४) ए. कृ. को.-।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहंत सार बार पार ता रुरंत अंतरं।
ग्रहंत दंत दंत एक कंठ कंठ संतरं ॥ छं० ॥ २४३ ॥
झटा सु हाक झाक धाक साल सेल संमुहं।
करंत घाव जंम (१)डाव घाव घाव रंमहं ॥
हुअंत षंड षंड घाउ सुन्नरं बगत्तरं ॥
परंत बाजि षंड भाजि सुंडरं सु पष्षरं ॥ छं० ॥ २४४ ॥
झरंत मत्त सुंड दंत षंड षंड चिक्करं।
ठिले सु मीर एक धीर नट्ठि षेत निक्करं ॥
चली सु फौज लष्षि साहि रोहि गज्ज सज्जियं ॥
हकारि मीर बब्बकारि षग्ग धारि गज्जयं ॥ छं० ॥ २४५ ॥

क्षत्रिय वीरों का तेज और शाह के वीरों का धैर्य्य से युद्ध करना।

कवित्त ॥ बीर बीर घुट्टए। बीर बीरह आहट्टे ॥
सार धार बज्जे प्रहार। मद ज्यों दुअ जुट्टे ॥
रन हक्कारें राव। सिंघ पर एन सु छुट्टे ॥
वर उतंग भर सुभर। अप्प पर अनत न छुट्टे ॥
बर बीर साहि दिष्षौ निजरि। सां घुल्लै कुल चाढ़ि सहु ॥
जाने कि काल जीहा उक्कसि। उद्दिग बाह (२)पगार बहु ॥
छं० ॥ २४६ ॥

दूहा ॥ हय गय रथ्थ अरथ्थ हुअ। नर सों नर नर लग्ग ॥
सघन घाइ उर बज्जते। भय भौंभर द्रग भग्ग ॥ छं० ॥ २४७ ॥
हुअ हकार गज्जिय सु भर। जुटे साहि तसील ॥
मानों मत्त गयंद दो। जुटि अंकस बिन पील ॥ छं० ॥ २४८ ॥

उक्त दोनों वीरों का युद्ध और अन्य सामंतों का उनकी सहायता करना।

(१) ए. कृ. को.-दाव। (२) मो. पसार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुजंगी ॥ जुटे जोध जोधं अभंगं करालं। उठे मुष्ष नासा नयन्नं बरालं॥
मिले छोह कोहं असम्मान लग्गे। परे लोह लत्तं निघत्तं करग्गे ॥
छं० ॥ २४९ ॥

दुअं दीन दीदेर ते लोह [1]छक्के । फिरैं गैन देवी हकारंत हक्के ॥
भए चाल बंधं [2]मसंदं मसंदं । करें हूक हक्कं सु आवृत सद्दं ॥
छं० ॥ २५० ॥

ढरें संध बंधं बहैं पग्ग धारें । मनों चक्क पंकं कुलालं उतारें ॥
लगे [3]सैंग अंगं कढ़ें बार पारं । बहै जानि जावक्क श्रोनं प्रनारं ॥
छं० ॥ २५१ ॥

लगै गुर्ज सीसं दुअं हथ्थ जोरं। दधी भाजनं जानि हरि ग्वाल फोरं॥
मिले हथ्थ बथ्थं गहै सीस केसं। जरे जस्स दड्डं महा मल्ल भेसं ॥
छं० ॥ २५२ ॥

करें छुल्लिका जुद्ध [4]कित्तेति बीरं। दिषें भेज अंगं मनों मुंड चीरं॥
रुपे बीर सामंत डिग्गे न पग्गं। तुटै सीस धक्कै धरं हक्क अग्गं॥
छं० ॥ २५३ ॥

चले श्रोन धारं मची कीच भूमी। अभूतं सु कंकं महाबीर भूमी॥
जहा षान तत्तार रुपि राह रूपं। तहां चक्क रुपी प्रथीराज भूपं॥
छं० ॥ २५४ ॥

मिले मुष्ष गोयंद चहुआन कन्नं। जुरे जैत बलिभद्र परसंग नन्नं॥
परे मेच्छ व्यूहं सु पाथै न जानं। करी पारसं कोपि चहुआन आनं॥
छं० ॥ २५५ ॥

गहौं साहि गोरी हरों स्वामि चासं। बहै सथ्थ लोहान ज्यों काल ग्रासं॥
मुर्यौ षान तत्तार अप्पार मारं। परे षेत अंगं अभंगं अपारं॥
छं० ॥ २५६ ॥

लिये जीति वाजिच हस्ती तुरंगं। तक्यौ तोमरं साहि सज्यौ कुरंगं॥

(१) ए. कृ. को.-छक्कं, हक्कं।
(२) ए. कृ. को.-मसंदे।
(३) ए. कृ. को.-संग।
(४) मो.-किते सु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

* .... । .... ॥ छं० ॥ २५७ ॥

यवन सेना का पराजित होकर भागना।

कवित्त ॥ [1]लुथ्यि लुथ्यि आहुट्टि। लुथ्यि पर लुथ्यि अहुट्टिय ॥
षां षुरसान ततार। षान रुस्तम बे जुट्टिय ॥
अबर सेन अध लष्य। तेह घाइल भर भग्गिय ॥
सहस [2]सत्त परि षित्त। मुष्य सामंत विलग्गिय ॥
मत्तंति लोह छक्के गरुअ। हरुअत्तन करि गरुअ किय ॥
भग्गौ सु तूल सुरतान दल। क्रम्म क्रम्म उड्डं बरिय ॥छं० ॥ २५८ ॥

छः सामंतो का शाह को घेर लेना।

चढ़त गज्ज साहाब। दिट्ठ पाहार सु दिष्षिय ॥
रा जद्दव जामानि। राव भोंहा भर लष्षिय ॥
लोहानों आजान। बाह उद्दिग पग्गारह ॥
बिंझराज चालुक्क। देषि षट सामँत सारह ॥
दौरे सु सज्जि असिवर सुमुष। गहो गहो जंपेव सुर ॥
आए मसंद अड्डे दुदस। मुझ्झ अलुझ्झिय साह पर ॥
छं० ॥ २५९ ॥

उत्तह बीस मसंद। इत्त सामंत सत्त षट ॥
बज्जौ सार करार। झार उड्डंत रूक झट ॥
[3]पसरन श्रोन प्रवाह। गाहि रन बीर समथ्थं ॥
परे मसंद मसंद। धरनि सामंत सु हथ्थं ॥
चंप्यौ सु गज्ज गोरी गरुअ। रा भोंहा हय सीस गय ॥
घऱ्यौ सु सब्ब सामंत मिलि। लोहानों गज रोह हय ॥छं०॥२६०॥

लोहाना का शाह के हाथी को मार गिराना।

दूहा ॥ हक्कि तुरी लोहान तब। हन्यौ कंध गज षग्ग ॥
ढरिग सीस पुंलार सम। धरिनि दंत दोय लग्ग ॥ छं० ॥ २६१ ॥

*मालूम होता है यहां के कुछ छन्द खण्डित हो गए हैं।

(१) मो.-लोथि। (२) ए. कृ. को. सित्त। (३) ए. कृ. को.-पसरत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाह का पकड़ा जाना।

कवित्त ॥ ढरत कंध गज साहि। गह्यौ पाहार पंचि कर ॥
कसिय बाह तूंवर सतेन। हय डारि कंध पर ॥
गह्यौ देषि सुरतान। सेन भग्गो सब आसुर ॥
परी लूटि हय गय समूह। बर भरे दरक [1]जर ॥
परे मीर सत्तह सहस। सहस अट्ठ हय [2]पंचि गय ॥
दिन अस्त माहि साहाब गहि। दियौ हथ्थ अप्पन सु रय ॥
छं० ॥ २६२ ॥

मृत वीरों की गणना।

दूहा ॥ सय चत्तिय परि हिंदु रन। सत्त एक हय थान ॥
सामंता सब तन कुसल। जय लद्धी चहुआन ॥ छं० ॥ २६३ ॥

लोहाना की प्रशंसा, शाही साज सामान की लूट होना।

कवित्त ॥ लोह हद्द मंडीय। मोहि विसमै द्रिग लिन्निय ॥
अहत कंट मंडयौ। होम पासंग सु किन्निय ॥
सकति अग्ग दुभ्भरी। किन्न पूजा कज बढ्ढिय ॥
सुजस पवन छुट्टयौ। कित्ति चाव दिसि फुट्टिय ॥
आवद्ध रतन लोहान बर। लोहा लंगर धाइयां ॥
आजान बाह बहु भूप बल। गहन तेग उच्चाइयां ॥ छं० ॥ २६४ ॥
गह्यौ साहि सुरतान। जोध हय गय तहं भग्गे ॥
जमदट्ठां जम दट्ठ। असम असिवर नर लग्गे ॥
षामर छत्र रषत्त। तषत्त लुट्टे सुरतानी ॥
बंधि साह सु विहान। सुकर दीनौ चहुआनी ॥
बर वंध गए ढिल्ली तषत। जै बज्जा बज्जे सघन ॥
सोमेस सुअन संभरि धनी। रबि समान तप मान [3]धन ॥
छं० ॥ २६५ ॥

(२) ए.-जारन। (३) ए. कृ. को.-पंचि। (३) ए. कृ. को.-सम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का सकुशल दिल्ली जाना और शाह से दंड लेकर उसे छोड़ देना।

गहिय साहि आलम्म। गए प्रथिराज अप्प ग्रह ॥
पोस मास पंचमिय। सेत गुरवार क्रत्ति कह ॥
जोग सकल गहि साह। सज्जि दिल्ली संपत्तौ ॥
अति मंगल तोरन। उछाह नीसान घुरत्तौ ॥
दिन तीस रष्षि गोरी गरुत्र। अति आदर आसन्न बर ॥
करि दंड सहस अट्ठह सु हय। गय सु सत्त लिय मुक्कि कर ॥
छं० ॥ २६६ ॥

दंड वितरण।

दूहा ॥ अद्ध दंड [1]प्रथिराज पहु। दीनौ राव पहार ॥
अवर पंच सामंत अध। दीनौ प्रयुक पथार ॥ छं० ॥ २६७ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराज रासके दुग्गा केदार संवादे पातिसाह ग्रहनं नाम अट्ठावनवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५८ ॥

(१) मो.-पतिसाह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ दिल्ली वर्णनं लिष्यते ।

(उनसठवां समय ।)

पृथ्वीराज की राजसी ।

दूहा ॥ साष साष भट भाष षट । । दर सम वर पुर इंद ॥
तपै सूर सामंत इछ । दिल्लिय चंद कविंद ॥ छं० ॥ १ ॥

दिल्ली के राज्य दरबार की शोभा ।

अति अति रूप अनंत बर । जरि जराब बहु भंति ॥
सभा सिंगारिय सकल भर । मनु सुरपति ओपंति ॥ छं० ॥ २ ॥
मधुरिति छच विराज महि । सिंघासन बहु साज ॥
जनु [1]कि मेर उतकंठ महि । सामंत रिद्धि सकाज ॥ छं० ॥ ३ ॥
कवित्त ॥ षट सुभाष षट ह्वंन । बहुत बज्जन तहं बज्जत ॥
रंग राषि षट भंति । करिय सें अट्टह गज्जत ॥
वपु सुमेर गति सर्प । छके षट रिति मद मत्तह ॥
मनहु काम प्रतिबिंब । । लयौ अवतार [2]दिल्लि थह ॥
चल चलत राइ चिहुं चक्क के । आयस रन डंडक गहन ॥
चहुआन भान सम भान तप । रहन वास उड़पति धरन ॥
छं० ॥ ४ ॥

निगमबोध के बाग की शोभा वर्णन ।

नराच ॥ सुधं निगंम बोधयं, जमंन तट्ट सोधयं ।
तहां सु बाग अच्छयं, बने सु गुल्ल अच्छयं ॥ छं० ॥ ५ ॥
समीर तासु बासयं, फलं सु फूल रासयं ।
बिरष्य वेलि डंबरं, सुरंग पान अंमरं ॥ छं० ॥ ६ ॥
जु केसरं कुमंकुमं, मधुप्प वास तं भ्रमं ।

(१) मो. जनु किरन्न । (२) ए. तिनह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनार दाष पल्लवं, सु छच पत्ति ढिल्लवं ॥ छं० ॥ ७ ॥
श्री खंड थंड [1]वासयं, गुलाब फूल रासयं ।
जु चंपकं कदंबयं, षजूरि भूरि अंबयं ॥ छं० ॥ ८ ॥
सु अंननास जीरयं, सतूतयं जंभीरयं ।
अषोट सेव दामयं, अवाल वेलि स्यामयं ॥ छं० ॥ ९ ॥
जु श्रीफलं नरंगयं, सबद्द स्वाद हीतयं ।
चवंत मोर वायकं मनो सँगीत गायकं ॥ छं० ॥ १० ॥
उपम्म बग्ग राजयं, मनों कि इंद्र साजयं ।
...., ... ॥ छं० ॥ ११ ॥
दूहा ॥ उड़ि सु वास गुल्लाल अति । उड़ि अबीर असमान ॥
मनहु भान अंबर सुरत । बजी तंति सुरगान ॥ छं० ॥ १२ ॥

दरवार की शोभा और मुख्य दरवारियों के नाम ।

* वेलीविद्रुम ॥ बजि तंति तंचिय बज्जनं । सुरगान [2]सज्जिय सुरगनं ॥
गुल्लाल लज्जिय अंगनं । आरक्त रंगि परंगनं ॥ छं० ॥ १३ ॥
चहुआन ओपिय छचयं । वंधान बंधिय सचुत्रं ॥
सामंत दरगह [3]सज्जयं । करतार कोन सु कज्जयं ॥ छं० ॥ १४ ॥
ढरि चमर दुअ भुज ढिल्लयं । मधु उपम मधुवन मिल्लयं ॥
गोयंद निढ्ढुर सलष्षयं । धुर धरन गहिय नष्षयं ॥ छं० ॥ १५ ॥
बनि इंद देव सु वन्नयं । सोमेस बंधव कन्हयं ॥
चष पटिय चष्षन यट्टयं । दस लष्ष मीर दवट्टयं ॥ छं० ॥ १६ ॥
रिषि श्राप आप विधुत्तयं । थिर रहै रिद्धि न युत्तयं ॥
गुरराम पिट्ठ विराजयं । जनु वेद ब्रह्म सु साजयं ॥ छं० ॥ १७ ॥

(१) ए.-वीसयं ।

* इस छन्द को मो. प्रति में दण्डमालची करके लिखा है । वास्तव में कौन छन्द ठीक है इसके लिये हमने प्रचलित हिन्दी पिंगलों की छानबीन की परन्तु कुछ भी पता न चला अस्तु हमने ए. कृ. को. तीनों प्रतियों के पाठ को मान कर मो. प्रति के पाठ को पाठान्तर में दिया है।

(२) ए. कृ. को.-सज्जि कि सरगनं । (३) ए. सज्जियं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुष अग्ग चंद [1]सु भष्यनं। रज रीति हद्द सु रष्यनं॥
पुंडीर चंद सु पाहरं। नर नाथ दानव नाहरं॥ छं० ॥ १८॥

बनि अन्यो अन्य सु ठौरयं। सुनि तंति सुरगन सोरयं॥
पिट्ठै स दिट्ठय पासनं। रचि अंब सेत हुतासनं॥ छं० ॥ १९॥

चामंड लष्य सु लष्यनं। रजि हिंदु राज सु रष्यनं॥
रनधीर सामँत सुब्भयं। भिरि भंजि मीर सु द्रब्भयं॥ छं० ॥२०॥

मुष अग्ग बाजन ठट्टयं। पहु दीप मझझल कट्टयं॥
दोसत्त जुर रा दुष्यनं। चिहु चक्क चारु सु [2]पिष्यनं॥ छं० ॥ २१॥

घुरि चंब सुर तहं बज्जनं। गहि छंड गोरिय गज्जनं॥
रचि महुल मधुरिति मधुरयं। श्रम छंडि मंडि सु पिष्ययं॥
छं० ॥ २२॥

दिल्ली नगर की शोभा वर्णन।

चोटक॥ घुरि घुम्मिय चंब निसान घुरं। पुर है प्रथिराज कि इंद्रपुरं॥
प्रथमं दिलियं किलयं कहनं। ग्रह पोरि प्रसाद एना सतनं॥
छं० ॥ २३॥

धन भूप अनेक अनेक भती। जिन बंधिय बंधन छत्रपती॥
जिन अश्व चढ़ै [3]घरि अस्सि लषं। बल श्री प्रथु मत्त अनेक भषं॥
छं० ॥ २४॥

दह पोरि सु सोभत पिष्य वरं। नरनाह निसंकित दाम नरं॥
भर हट्ट सु [4]लष्षनयं भरयं। धरि वस्त अमोल नयं नरयं॥
छं० ॥ २५॥

तिहि बीच महल्ल सतष्षनयं। लष कोटि धजी सु कवी गनयं॥
नर सागर तारँग [5]सुद्ध परें। परि राति सुराथन बादुघरें॥
छं० ॥ २६॥

(१) मो. सु भूषनं। (२) ए. कृ. को.-चष्षनं। (३) ए. कृ. को.-घटि।
(४) ए. कृ. को.-सुष्पनयं। (५) ए.-सद्ध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मचि कीच ओगालन हट्ट मझें। दिषि देव कैलासन दाव दझें॥
[1]रजितार वितारन भंति नवी। परिजानि हुतासन लत्त छवी॥
छं० ॥ २७॥

मनु सावक पावक मद्द, किय। विन तार अतारन मारि लियं॥
इन रूप टगं मग चाहनयं। मनों सूर सबै ग्रह राहनयं॥
छं० ॥ २८॥

तिन तट्ट कलिंदय तट्ट सजं। धर मभ्भन तार अनेक सजं॥
तिन अग्ग सुभंत सु बग्गनयं। लषि लष्षि चौरासिय उड्डनयं॥
छं० ॥ २९॥

पचि लल्लिय नीलिय मानकयं। रतनं जतनं मनि तेज कयं॥
सुभ दिल्लिय हट्ट सु नैर मझें। करि दंत मिलंत गिरंत सझें॥
छं० ॥ ३०॥

इय सामँत दामित रूप कला। बर बीर उठै घरि सत्त कला॥
जिन सामँत सामँत सुड्डरयं। घटि बढ्ढि मँहे गिर दुभ्भरयं॥
छं० ॥ ३१॥

कवित्त॥ परिहारह बन बीर। आय हय जोरि सु उभ्भिय॥
भोजन सद्द प्रमान। तहां [2]प्रथु सामँत सुभ्भिय॥
सभा विसरजिय सूर। आय बैठक बैठारिय॥
बहुत मंस पकवान। जबुकि प्रथमी आधारिय॥
षट ब्रन्न दरग्गह सोम सुत्र। केसर अगर कपूर उर॥
सामंत नाथ चरचिय सबन। सिव दव्वी ढुंढा सहर॥
छं० ॥ ३२॥

राजसी परिकर और सजावट का वर्णन।

तोटक॥ इह इंद्र पुरं किधौं दिल्ल पुरं। इम उप्पिय मंदिर सोम [3]सुरं॥
इह मेर किधौं इंद्र चापनयं। बहु भंति जरे मनि पट्टिनयं॥
छं० ॥ ३३॥

(१) ए. क. को.-रचिता विरलारन। (२) ए.-प्रिथा, ए. क. को.-प्रिथ।
(३) मो.-सुअ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुर मध्य विराजत सूर समं। सु मनों सुर उप्पर भान भ्रमं ॥
घन सद्दि तड़ित्त कला विकलं। पुर धाम सुभट्ट सषा प्रबलं ॥
छं० ॥ ३४ ॥

सुभ रूप तहां गनिका गनयं। भ्रमि मानव सिद्ध सुरं भ्रमयं ॥
गहि तंचिय जंचिय डक्क बजै। जनु मार किधौं कुरु कोक सझै ॥
छं० ॥ ३५ ॥

उड़ि बीर अबीर न भ्भारनयं। जनु मेर सुधा गिर धारनयं ॥
लष एक लियै रजनी सजनं। ग्रह रूप अनूपम काम मनं ॥
छं० ॥ ३६ ॥

भरि द्रव्य रमै सब हीर मनं। रमि जूप बदै रमनी गमनं ॥
सब हारि निहारि कोपीन सझै। जब लिद्धिय नारि अपारि दझै ॥
छं० ॥ ३७ ॥

इन मान अमान सु रूप रमै। मनु सिद्धि करामति क्रम्म क्रमै ॥
बनि पंति सुकंत निसान लयं। मुष दिट्ठिय ढिल्लिय मालनयं ॥
छं० ॥ ३८ ॥

मनु रूप अनूप सितं विकनं। भर भीर बढ़ी नह दिट्ठ नयं ॥
[1]घन घोरत सोर अमोघ नयं। मनु वाल सजोवन प्रौढ बनं ॥
छं० ॥ ३९ ॥

सु जहां चहुआन सु भोन सजै। सु मनों ससि कोरन कोर मझै ॥
ग्रह दिष्षिय दासि अवासनयं। तिन सोभ सुकाम करी [2]तनयं ॥
छं० ॥ ४० ॥

बहु रूप रवंन रवंन भती। मुष अमृत सम्रत प्रान पती ॥
मुर अट्ठ सषी अँग रष्षि कला। मनु सेस बधू प्रभु की अवला ॥
छं० ॥ ४१ ॥

तिन धाम कलस्सन कोर बनी। जनु अंबर डंबर भान घनी ॥

(१) ए. कृ. को.-घन सोर अमोर। (२) ए. कृ. को.-नटयं, नठयं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सित सत्त कलस्स सु [1]मुंदरयं। तिन मभ्भ सषी बहु सुंदरयं॥
छं० ॥ ४२ ॥

गज राजत राज सु छत्रपती। प्रथिराज कैमास हन्यौ सु मती॥
चहुआन बधू दसयं भनयं। भिरि लिद्धि मंडोवर दंपतियं॥
छं० ॥ ४३ ॥

सुभ इंछिनियं कनयं [2]सुनयं। रिति छच कला सुर संपतयं॥
तिय पिथ्थह व्याह पुंडीर कियं। मनु अंबर मद्धि तड़ित्त बियं॥
छं० ॥ ४४ ॥

भनि नाम चंद्रावति चंद सुती। सुष भाग सुहागन चंद सुती॥
घर दाहुर दाहिम पुत्ति दयं। तिन पेट रयन्न कुमार भयं॥
छं० ॥ ४५ ॥

ससि वृत्त सु भंतिय क्षण्ण करी। मनु आनिय पीय सु कंध धरी॥
तिन रूप [3]रूपं मनि लिद्ध रजं। चहुआन सु आनिय देव सजं॥
छं० ॥ ४६ ॥

बरि लिन्निय षग्ग इंद्रावतियं। जनु मुष्ष सरस्वति गावतियं॥
कुल भान सती सुत हाहुलियं। जनु किस्न रुकंमनयं मिलयं॥
छं० ॥ ४७ ॥

ग्रह पान सुती सु पजून घरं। मनु चित्त कि पुत्तरि आनि धरं॥
रिनथंभ हंसावति काम कला। तिन दीपति छिप्पत चंद कला॥
छं० ॥ ४८ ॥

सुर अच्छर मच्छर मान वती। किय अप्प [4]जँजोग संजोग सती॥
वह रूप अनूप सरूप मती। नह दिष्षिय नागिनि इंद्र सुती॥
छं० ॥ ४९ ॥

मनु काम [5]धनुंक करी चढ़यं। किधौं षंभ द्रुमं सु हिमं [6]चढ़यं॥
मुर कोटि चिषंड नयन्न सुजं। तट तास सुबास जमुंन [7]सजं॥
छं० ॥ ५० ॥

(१) मो.-सन्दरयं। (२) ए.कृ.को.-सुभयं। (३) ए.कृ.को.-रषंमनि। (४) ए.कृ.को..संजोग।
(५) ए. कृ. को.-धनंक। (६) ए.-त्रढ़यं। (७) ए. कृ.-सझं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिन तट्ट अनेक [1]गयंद सढं। पग नट्ट गिरं पवनंति बढं॥
बहु रूप अनूप सरूप भती। दिषि जानि कला सुर देव पती॥
छं० ॥ ५१॥
गज षंभ छुटंत उमद्द मदं। मनुं गाजत गज्ज अषाढ़ भदं॥
कि मनों षह उट्ठिय कंठ लयं कि बढ़े मनु उप्पर बद्दरयं॥
छं० ॥ ५२॥
बहु रंग सुरंग सु वस्त्र दिपै। तिन भेर [2]सिषंन सुभान छिपै॥
तिन मध्य रयंन कुमार नयं। सुत सूर गयंन विदारनयं॥
छं० ॥ ५३॥
दिनप्रत्ति रमैं तट कूलनयं। सुर पेषि सुराथह भूलनयं॥
तट रेष रिषी सर पालनयं। कित नाम सुधारन कालनयं॥
छं० ॥ ५४॥

राजकुमार रेनसी का ढुंढा की गुफा पर जाकर उसका दर्शन करना, ढुंढा की संक्षेप में पूर्व कथा।

[3]सत तीन बरष्य असी अगलं। जब ढूंढ़ ढँढोरिय भू सगरं॥
तिन सिद्ध गुफा अवतार लियं। मुनि जानि ब्रह्मा समयं दिषयं॥
छं० ॥ ५५॥
तिन ढिग्ग रयंन कुमार गयं। मुनि जानि कृपाल कृपाल भयं॥
बजि तारिय भारिय सद्द बधं। प्रति जीव सु जोति गयंन सिधं॥
छं० ॥ ५६॥
जट जूट विकट्ट भ्रकुट्ट भरं। मधि क्रन्न सुकी सुक मंडि घरं॥
सुत चंद सु पानि जुगं जुरयं। सिधद्रिग्ग उघारि दिषं नरयं॥
छं० ॥ ५७॥
तिन पुच्छिय बत्त मही रिषयं। तुम बीसल पुच नरं [4]भषयं॥
अब किल्लिय दुल्लिय बास कियं। प्रथमं अजमेर कुबेर दियं॥
छं० ॥ ५८॥

(१) ए.-मयंद। (२) ए. कृ. को.-सषंन।
(३) मो.-सित दोय वरण्ष असीं अलगं। (४) मो.-भषनं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ जब उतपंन सु कुंड मझि। दिय रिषि नें बर ताम ॥
जाहु सु पहिलै [1]अजय बन। जुग्गिनि वास सु ठाम ॥ छं० ॥ ५९ ॥

कवित्त ॥ पुर जोगिनि सुर थान। [2]जुग्गहने ताथें तारिय ॥
सतजुग संकर सधर। [5]परत प्रथिराज सु पालिय ॥
द्वापर पंडव राव। सत्त कौरव संघारिय ॥
कलिजुग पति चहुआन। जिन सु गोरी घर ढारिय ॥
घर जारि पंग [3]पारन रवरि। फिरि दिल्ली चिहुं चक्क धर ॥
मेवात पत्ति इक छच महि। [4]निव ध्रमेव आवट्टि नर ॥ छं० ॥ ६० ॥

रेनु कुमार की सवारी और उसके साथी सामंत कुमारों का वर्णन।

दूहा ॥ सुभट सीष दिय भर सबन। रिषि प्रमान करि भीर ॥
बिन तारी करतार बर। तट बहि जमना तीर ॥ छं० ॥ ६१ ॥
घुरि निसान सद्दह धमकि। चढ़ि गज रेन कुमार ॥
मनों इंद्र ऐराप धरि। करिय असुर संघार ॥ छं० ॥ ६२ ॥

पद्धरी ॥ अरोहि गज्ज रेनं कुमार। चढ़ि चले सुतन सामंत सार ॥
सुत कन्ह मन्नि ईसरह दास। दिय देस रहन षट्टू सु वास ॥ छं० ॥ ६३ ॥
सुत निडर बीर चंद्रह जु सेन। पल मारि झारि कर बध्घ ऐन ॥
सम जैत सुअन करनह सु जाव। जिन लिये सच सिर सिद्ध दाव ॥ छं० ॥ ६४ ॥
गोयंद सुतन सामंत सीह। जिन स्वामि काम नहि लोपि लीह ॥
कैमास सुअन परताप आप। जिन रष्षि ध्रम्म घर वट्ट बाप ॥ छं० ॥ ६५ ॥
पुंडीर धीर सुत चंद्रसेन। जिन चलै सहस द्वै उड्डि रेन ॥

(१) ए. कृ. को.-अज्ज। (२) ए. कृ. को.-जुगह तेता ते तारिय।
(३) ए. कृ. को पारी। (४) ए. कृ. को.-निहच मेव आवट्टि नर।
(५) ए. सु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिहार पीय सुत्र तेज पुंज । मनु दाष पक्क कै केलि कुंज ॥
छं० ॥ ६६ ॥

गुरराम सुत्रन हरिदेव रूप । मुष मिठ्ठ दिट्ठ कलि परन भूप ॥
हम्मीर सुतन नाहर पहार । दस पंच बरष महि बजिय सार ॥
छं० ॥ ६७ ॥

जग जेठ कुँत्र्अर चामंड जाव । जिन लिये कोट दस भंजि राव ॥
सुत महनसिंह जैसिंघ बीर । जिन रष्षि वंस षिचवढ नीर ॥
छं० ॥ ६८ ॥

पंमार सिंघ सुत्र राजसिंघ । जुरि जुद्ध रुद्ध उड़ि बाह जंघ ॥
रिनधीर सुतन गुज्जरह राम । दस देस लिद्ध ग्रह अप्प धाम ॥
छं० ॥ ६९ ॥

बरदाइ सुतन जल्हन कुमार । मुष वसै देवि अंबिका सार ॥
हरिसिंघ सुतन पातल नरिंद । गज दंत कढ़े जनु भील कंद ॥
छं० ॥ ७० ॥

विंझा नरिंद सुत देवराज । सो जंग मंझ गज करत पाज ॥
अचलेस सुतन देवराज पट्ट । तन तरुन तेज गंगा सु घट्ट ॥
छं० ॥ ७१ ॥

तोंअर सुतन्न किरमाल कन्ह । जिन करी रिद्ध दुज दे अमंत ॥
पज्जून सुत्रन पाहारराइ । चहुआन इला कलि करन न्याइ ॥
छं० ॥ ७२ ॥

नरसिंघ सुतन [1]हरदास हड्ड । गुर ग्रब्ब मान हम्मीर गड्ड ॥
षीची प्रसंग सुत्र मल्हनास । वचि देव छम्म बंकट्ट बास ॥
छं० ॥ ७३ ॥

सुत तेज डोड अचला सुमेर । दीपंत देह मानों कि मेर ॥
जंघार भीम [2]सुत्र सिवहदास । कठियाराइ सुत कब्बिलास ॥
छं० ॥ ७४ ॥

अतताइ सुतन आरेन रूप । भिरि भीम बद्ध मारंत भूप ॥
चंदेल माल प्रथिराज सूत्र । भिरि जंग मझ्झ गज गहन भूत्र ॥
छं० ॥ ७५ ॥

(१) मो.-सिवदास । (२) ए.-सुह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग्राम सुअन सहसो समथ्थ। जुरि जुद्ध भान रोकै सुरथ्थ ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ स्वामि दरग्गह चलि सुवन। मनहु प्रथीपुर इंद ॥
[1]कलि सोभन मोहन कवी। मनो सरद्दह चंद ॥छं०॥ ७७ ॥

बसंत उत्सव के दरबार की शोभा, राग रंग और उपस्थित दरबारियों का वर्णन।

पद्धरी ॥ रितराज राज आगंम जानि। पंचमि बसंत उच्छव सुठानि ॥
किय हुकुम सचिय सम बोलि तब्ब। प्रभु सेव साज मंगाय सब्ब ॥
छं० ॥ ७८ ॥

परजनन जुक्त तह मभ्भ आइ। षिल्लहि बसंत गोपालराइ ॥
परधान हुकुम सिर पर चढ़ाइ। सब बस्त रष्षि कन पहि कढ़ाइ ॥
छं० ॥ ७९ ॥

घनसार अगर सत कासमीर। म्रगमद जवाद बहु मोल चीर ॥
बहु बर्न पुप्फ को लहै पार। मन हरत मुनिन सुरगंध तार ॥
छं० ॥ ८० ॥

बदंन अबीर रोरी गुलाल। अति चोल रंग जनु भूड लाल ॥
मिष्टान पान सेवा असंष। मन चिपति होत निरषंत अंषि ॥
छं० ॥ ८१ ॥

सुभ साल विसद अंगन अवास। बिच्छाय सु पट जाजिम नवास ॥
अंमोल मोल दुल्लीच भारि। षंचाइ पुंट सलितानि धारि ॥
छं० ॥ ८२ ॥

छिरकाव छिरकि गुल्लाब पूरि। दिषियंत उड़ति अब्बीर धूरि ॥
रहि उमड़ि घुमड़ि तहं धूप वास। तन बढ़त जोति सुब्बास रास ॥
छं० ॥ ८३ ॥

तहं धरिय सिंघासन मध्य आनि। नग जरित हेम बिसकर्म जानि ॥
बैठाय पाट गोपालराइ। घन घंट संष झल्लरि बजाइ ॥
छं० ॥ ८४ ॥

(१) ए.-कवल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिरदंग ताल जहं पौंन धार। बीनादि जंच झिनकार सार॥
नफफेरि भेरि सहनाइ चंग। दुर बरी ढोल [1]आवझ उपंग॥
छं० ॥ ८५॥

दम्माम सबद बज्जत विनोद। बंसी सरल्ल सुर उपजि मोद॥
[2]अनि अनि चरिच नर नारि आनि। सक्के न होइ तिन जाति जानि॥
छं० ॥ ८६॥

धरि कनक दंड सिर चमर सेत। रष्षंत पवन विद्य बिप्र हेत॥
[3]विद्वान चतुर दस विद्य अच्छ। सम अग्ग सिंघासन बैठि पच्छ॥
छं० ॥ ८७॥

बैठिय सु कन्ह चहुआन आनि। झलहलत क्रोध उर अगनि जानि॥
गहिलोत राव गोयंद आय। जिन सुनत नाम अरिदल पुलाइ॥
छं० ॥ ८८॥

निढ्ढुर नरिंद कमधज पधारि। आदर [4]अनंत न्त्रप करि उचारि॥
कूरंभ कहर बलिभद्र आय। जिहि सुनत नाम अरिनह दहाय॥
छं० ॥ ८९॥

फुनि आय अप्प अब्बू नरेस। भय भीम रूप जमनेस भेस॥
अततार आइ तहं सिव सरूप। बैठिय सु उठ्ठि [5]भहराय भूप॥
छं० ॥ ९०॥

चावंड बिना भट सब्ब आय। अरि धरनि धरनि जे देत दाय॥
पुंडीर आय तहं धीर चंद। अरि तिमिर तेज जिन फटति दंद॥
छं० ॥ ९१॥

कूरंभ कहर पाल्हन्न देव। जिहि वियन काम बिन स्वामि सेव॥
बय वृद्ध बाल सामंत सब्ब। अवधारि राज प्रथिराज तब्ब॥
छं० ॥ ९२॥

फुनि आइ चंद [6]बरदाइ माइ। जिहि प्रसन जीह दुरगा सदाइ॥
आये सु न्टत्य नाटक अधीन। गंधरब राग विद्या प्रवीन॥
छं० ॥ ९३॥

(१) मो.-आवझ। (२) मो.-अनेक चरित। (३) मो.-पंडित।
(४) ए. कृ. को. अनंत। (५) ए.-भरराय। (६) ए. कृ. को.-वरदास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छह ग्राम मुरछना गुनं वास। सुर सपत ताल विद्या बिलास ॥
संगीति रीति अभ्यास बाल। उच्चारि राग रिझ्झिय भुवाल ॥
छं० ॥ ९४ ॥

अन्नेक चरित श्रीकृष्ण कीन। ते सब्ब प्रगट कीने प्रवीन ॥
तिम सुनत तवत तन पाप छीन। न्रप राइ रिझ्झि बहु दान दीन॥
छं० ॥ ९५ ॥

रस रह्यो रंग सभ उट्ठि राज। सामंत सब्ब निज ग्रह समाज ॥
अनसंक कंक बंकन पधोर। यों तपै पिथ्थ दिल्ली सजोर ॥
छं० ॥ ९६ ॥

इति श्रीकविचंद विरचिते प्रथिराज रासके दिल्ली वर्णनं
नाम उनसठवों प्रस्ताव संपूर्णम् ॥ ५९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ जंगम कथा लिष्यते ।

(साठवां समय ।)

सुसज्जित सभा में पृथ्वीराज का विराजमान होना ।

चौपाई ॥ बैठौ राजन सभा विराजं । सामँत सूर समूहति साजं ॥
विस्तरि राग कला क्रत भेदं । हरषित [1]ऋदय असम सर षेदं ॥
छं० ॥ १ ॥

सज्जिय थान न्रपति कै पातुर । गुन रुपक विचरति श्रुत चातुर ॥
नाटिक कला संगीत आन रचि । अति [2]न्रत्यत करि विगति सुगति सचि॥
छं० ॥ २ ॥

चंद चारु माठा रूपक धरि । गीत प्रवीन प्रबंध कीन थरि ॥
उघट चिघट [3]अंग प्रमुष्य यह । निंदत चित्ररेष अच्छरि गह ॥
छं० ॥ ३ ॥

राजा को एक जंगम के आने की सूचना का मिलना ।

दूहा ॥ तत्त समै राजिंद बर । अपि सु षबरि अच्छत्त ॥
जंगम [4]एक सु आय कहि । कमधज पुर पति बत्त ॥ छं० ॥ ४ ॥

दिष्षि रहसि न्रप निरति रस । गुन अनेक कल भेद ॥
निरषि परषि प्रति अंग अलि । पातुर कला अषेद ॥ छं० ॥ ५ ॥

राजा का नृत्यकी को विदा करना ।

सत्त हेम है राज इक । दिय पातुर प्रति दान ॥
न्रत्ति विगति अवलोकि गुन । दई सीष यह मानि ॥ छं० ॥ ६ ॥

(१) ए. कृ. को.-हृदय, रिदय ।
(२) ए. कृ. को.-सु नृत्य ।
(३) ए. कृ. को.-अंङ ।
(४) ए. कृ. को.-इक्कें ।
(९) ए.-वत्ति ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का जंगम से प्रश्न करना और जंगम का उत्तर देना।

पुनि जंगम प्रति उच्चरिय। कमधज्जन की कथ्य ॥
बहुरि भिन्न करि उच्चरिय। सुनि सामंत सु नथ्य ॥ छं० ॥ ७ ॥
चौपाई ॥ राज जग्य सज्ज्यौ कमधज्जं। देस देस हुंकारत सज्जं ॥
मिलि इक कोटि सूर भर हासं। नृप अदेस देस रचि तासं ॥ छं० ॥ ८ ॥
थपि दर द्वारपाल चहुआनं। लकुटिय कनक हथ्थ परिमानं ॥
आय पंग तट इष्ष समाजं। आनि अप्प चहुआन सु लाजं ॥ छं० ॥ ९ ॥
इह सु कथा पहिली सुनि राजन। आय कही सो फीफुनि साजन॥
लग्यौ राग श्रोतान रजानं। बुझ्झी बहुरि सु जंगम जानं ॥ छं० ॥ १० ॥

संयोगिता का स्वर्ण मूर्ति को जयमाल पहिराना।

कवित्त ॥ [1]आवलि पंग नरेस। देस मंड सुबेस बर ॥
बरन कज्ज चौसर। विचार संजोग दीन कर ॥
देवनाथ कवि अग्ग। बरनि नृप देस जाति गुन ॥
फुनि अप्पै संजोग। कनक विग्रह सु द्वार उन ॥
चहुआन राव सोमेस सुअ। प्रथीराज सुनि नाम बर ॥
गंध्रव्व [2]वचन विचारि उर। धरि चौसर प्रथिराज गर ॥ छं० ॥ ११ ॥

संयोगिता का दूसरी वार फिर से स्वर्ण मूर्ति को माला पहिराना।

दूहा ॥ देषि फेरि कहि नाथ पति। फुनि मुक्कलि कविराज ॥
बहुरि जाहु पंगानि अग। विचरै नृपति समाज ॥ छं० ॥ १२ ॥
कवित्त ॥ बहुरि नाम गुन जाति। देस पित प्रपित बिरद बर ॥
लै लै नाम पराम। देवजानी स देव कर ॥

(१) मो.-आचलि। (२) मो. वयन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुनि चहुआन सु पास। जाय ठड्ढे भए जामं ॥
कछु कवि रद्दिय राज। कछुक जंपे गुन तामं ॥
न्रप लज्ज पंग ग्रह भट्ट बर। तुच्छ संषेप सु उच्चर्‍यौ ॥
संजोग समझ्झि उर ग्रह। कंठ प्रथ्यु, चौसर धर्‍यौ ॥
छं० ॥ १३ ॥

पुनः तीसरी वार भी संयोगिता का पृथ्वीराज की प्रतिमा पर जयमाल डालना।

दूहा ॥ दुसर राज इह देषि सुनि। तिय सु नाथ उर जाम ॥
सपत हथ्थ सुर जा धरिय। प्रचरि नरेसनि ताम ॥ छं० ॥ १४ ॥

कवित्त ॥ फुनि नरेस अदेस। नाथ फिरि आय मझ्झ दर ॥
आदि वंस रचि नाम। चवत विक्रम्म क्रम्म बर ॥
दई पानि कवि जानि। होत काह्न कर मंडं ॥
भूत भविष्यत बत्त। भव्वि जानी उर चंडं ॥
उतकंठ लोकि प्रतिमा प्रतषि। दिष्षि देव देवाधि सचि ॥
बरनी संजोग चहुआन बर। पहुप दाम ग्रीवा सु रचि ॥
छं० ॥ १५ ॥

जयचन्द का कुपित होकर सभा से उठ जाना।

दूहा ॥ कोप कलंमल पंग पहु। समय विरंचि विचारि ॥
रोस सोस उर धारि तब। क्रम भति भई न चारि ॥ छं० ॥ १६ ॥
उट्ठि राज अंदरह दर। कियौ प्रवेस अपान ॥
विमुष निमुष दिष्यौ न्रपति। देव कृत्य परमान ॥ छं० ॥ १७ ॥

पंगराज का दैवी घटना पर संतोष करना।

कवित्त ॥ दइय काल सुनि पंग। जग्गय विग्गर्‍यौ दच्छ पति ॥
द्रुपद राय पंचाल। जग्गय विग्गर्‍यौ इष्ट रति ॥
दइय काल दुजराज। जग्य विग्गर्‍यौ सु जानं ॥
[1]न्रघुष राइ [2]राज स्रू। गत्त जानी परमानं ॥

(१) ए. कृ. को.-नघुष। (२) ए.-राजरु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्रुति बर पुरान स्रोतास वल। विधि विचार मंडिय सकल ॥
त्रय काल काल सामंत कहि। दइय काल मानै अकल ॥
छं० ॥ १८ ॥

राजा जयचन्द का संयोगिता को गंगा किनारे निवास देना।

दूहा ॥ आदि कथा संजोग की। पहिलें सुनी नरेस ॥
अब इह जंगम आय कहि। विधि मिलवन संदेस ॥ छं० ॥ १९ ॥

कवित्त ॥ रचि अवास रा पंग। गंग दंगह उतंग तट ॥
दासि सहस सुंदरिय। प्रसँग कल ग्यान भाव पट ॥
व्रत उचार चहुआन। धरत कर करत अप्प पर ॥
पंच धेन पूजंत। बचन मन क्रम्म गवरि हर ॥
सुनि पुनि नरेस संदेस दिढ़। सोफी फुनि जंगल कहिय ॥
आरत्ति चरित चहुआन मन। दइय भेद चित्तह गहिय ॥
छं० ॥ २० ॥

दूहा ॥ पहिल ग्यान जंगम कहिय। दुतिय सो सोफी आनि ॥
तब प्रथिराज नरिंद ने। दैव काल पहिचान ॥ छं० ॥ २१ ॥

पृथ्वीराज का अपने सामंतों से सब हाल कहना।

उठि राजन तब हुकम किय। बहुरि सूर सामंत ॥
परिहार केहरि कमल। काम नाम भर संत ॥ छं० ॥ २२ ॥
बुलिय स भूपति साधनह। दुतिय स ईसर दास ॥
बरन नेह विस्तार तन। आन रंग इतिहास ॥ छं० ॥ २३ ॥
गंग जमन जल उभय करि। करि अस्नान नरिंद ॥
क्रत हरि हर उर ध्यान प्रभु। उठ्यौ थान सुरिंद ॥ छं० ॥ २४ ॥
असन मार आराम सुष। सुष सयन्न क्रत राज ॥
उर सल्लै संजोग व्रत। संभरि नाथ समाज ॥ छं० ॥ २५ ॥
*तब परिहार मु हुकम दिय। गए सु भोजन साल ॥
व्यंजन रस रस सेष परि। सुनि सुनि कथा रसाल ॥ छं० ॥ २६ ॥

* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज की संयोगिता प्रति चाह और कन्नौज को चलने का विचार ।

पद्धरी ॥ लग्यौ सु राज श्रोतान राग । संजोग वृत्त संभरि समाग ॥
अति असम बान बेधे सरीर । नह धीर हसं [1]नह भाव धीर ॥
छं० ॥ २७ ॥
[2]रिति राज आनि रंगे सदंग । फुल्लेस विकढ नव कुसुम [3]चंग ॥
कलयंठ कंठ उपकंठ अंब । पाठंत विरहनी पति सितंब ॥छं०॥२८॥
कुंजत उतंग गिरि तुंग सार । तालीस धार [4]उद्दार धार ॥
सति मान जानि सिंदन सु तात । संजोग सुषद विरहिन निपात ॥
छं० ॥ २९ ॥
उन श्रवन सान गाजंत जोर । मधु वृत्त समागध पठत घोर ॥
[5]साहीत सिषी चढ़ि सिषर टेरि । विज्जोग भगनि तिय उप्प वेर ॥
छं० ॥ ३० ॥
सासन सुरंम धरि चिविध पोन । वारह मत्त लघुमात गोंन ॥
लगि दहन गहन मदनह सु भाम । रति नाथ नाथ विन सज्जि ताम ॥
छं० ॥ ३१ ॥
संवत्त संभ पंचास मेक । पष स्याम असित [6]उच्चार नेक ॥
पित नछिच जोग सुभ नवमि दीह । नृप मन विचार उर चलन कीय॥
छं० ॥ ३२ ॥
दूहा ॥ लग्गि बान अनुराग उर । मनमथ प्रेरि वसंत ॥
सद्दै नृपति अष्षै न कहुं । षेदे रिदय असंत ॥ छं० ॥ ३३ ॥
कवित्त ॥ दंग सुरंग पलास । जंग जीते बसंत तपु ॥
मदन मानि मन मोद । लीन छेदे [7]प्रछेद वपु ॥
देस नरेस अहेस । देस आदेस काम कर ॥
नीर तीर नाराच । पंग बेधे अबेध पर ॥

(१) ए. कृ. को.-चित । (२) ए. कृ. को.-राति ।
(३) ए. कृ. को.-जंग । (४) ए.-उद्दास । (५) ए. कृ. को.-साहात ।
(६) ए. कृ. को.-उज्जार। (७) ए. कृ.को.-अछेद ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलमलत चित्त चहुआन तब। उर उपजै संजोग हत ॥
बरदाय बोलि तिहि काल कवि। मन अनंत मति पर उद्धति ॥
छं० ॥ ३४ ॥

कविचन्द का दरबार में आना और राजा का अपने मन की बात कहना।

दूहा ॥ आय चंद बरदाय बर। दिय आदर न्रप ताम ॥
आनि बहुरि दीने सु तब। रष्षे तथ्य सु काम ॥ छं० ॥ ३५ ॥
द्वारपाल कमधज्ज थपि। हम रष्षे दरबार ॥
अब जीवन बंछै कहा। कह्यौ सु कब्बि विचार ॥ छं० ॥ ३६ ॥
अरु दिढ़ हत्त पँगानि लिय। तुम जानो सब तंत ॥
चलन नयर कमधज्ज कै। सु बर विचारहु मंत ॥ छं० ॥ ३७ ॥

कवि का कहना कि कन्नौज को जाने में कुशल नहीं है।

तब कवि [1]एम सु उच्चरिय। सुनि संभरी नरेस ॥
चलत न्रपति बरजिय न कहुं। विधि न्रम्मान सुदेस ॥ छं० ॥ ३८ ॥
पंग सु जानहु तुम न्रपति। चलि कीनी तुम देस ॥
गाम ठाम बाहर विचल। पारि जारि किय रेस ॥ छं० ॥ ३९ ॥
कवित्त ॥ [2]कोरि जोर कमधज्ज। सयन आयौ पर ढिल्ली ॥
जारि पारि बेहाल। षलक कीनौ धर मिल्ली ॥
[3]गोपर मार उत्तंग। तोरि उच्छारि झारि भर ॥
दंग जंग परजारि। [4]ठाम कीनौ अठाम नर ॥
कर सांप काल मुष को धरै। को जम पानि पसारि लय ॥
सोमेस नंद विचारि चलि। भवसि सोय [5]देवाधि भय ॥ छं० ॥ ४० ॥
कवन भुजा [6]बलवंत। गयन प्रस्थानन लीनौ ॥
पारावार अपार। कवम पलवन तन कीनौ ॥

(१) ए. कृ. को.-राम। (२) मो.-कारि।
(३) ए. कृ. को.-गोपरि गिर। (४) ए. कृ. को.-ताम, छाम।
(५) ए. कृ. को.-देवास। (६) ए. कृ.-बलवेड।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेम सैल करताल। धऱ्यौ सिष नष्य सुन्यौ न्नप॥
कवन धनंजय पानि। करै संभरि नरेस दष॥
जम जोर हथ्थ को जोर रहि। जवन अरुन रन जित्तियै॥
चल्लहु नरेस परदेस मन। दै विधान मन चिंतियै॥ छं० ॥ ४१॥

पृथ्वीराज का फिर भी कन्नौज चलने के लिये आग्रह करना।

दूहा॥ चलन नरिंद कविंद पिथ। पुर कनवज मत मंडि॥
दइय सीष कविचंद कहु। बहुते आसन छंडि॥ छं० ॥ ४२॥

रात्रि को दरबार वरखास्त होना, सब सामंतों का अपने अपने घर जाना, राजा का सयन।

जाम एक रजनी रहिय। तथ्थ सुबर कविचंद॥
ताम काम परिहार कों। दई सीष उनमंद॥ छं० ॥ ४३॥
तब सु चंद ग्रह अप्प गय। उठिय सु पिथ्थ नरिंद॥
आभूषन वस वास धरि। ससि दुति तेज दु मंद॥ छं० ॥ ४४॥

राजसी प्रभात वर्णन।

कवित्त॥ आय राज दीवान। जानि नाकेस अमर गन॥
उट्ठि [1]सुभर न्नप करि। जुहार आरोहि सोह थन॥
आय तब्ब बर बुद्धि। [2]बीन धर नमित क्रत्त पहु॥
सुधरि तंत सुर सपत। कंठ कलरव कलंठ सहु॥
जुग घटिय सु घट अनुराग मन। राग स्रोत स्रोता धरत॥
पांवार तार उम्भय [3]अभय। जर सभीत तारन परत॥ छं० ॥ ४५॥
ताम समय बंदियन। आय बरदाय बीर बर॥
दिष्षि सभा राजिंद। इंद निदंत नाक पर॥
नथ्थि सुहर वाहनह। नथ्थि कालिंद्र वार भर॥
नथ्थि बरुन वलिराइ। नथ्थि दनुनाथ लंकधर॥
अनजीत निगमबोधह नयर। बयर साल [4]कट्टन [5]सहन॥

(१) मो.-सुभये। (२) मो.-"बीन धरन मिल ब्रत्त पहुं।
(३) ए. कृ. को.-उभय। (४) ए. कट्टन। (५) ए. मनह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोमेस नंद अनलह कुलह। जंच कित्ति भंजन दहन ॥छं०॥४६॥
गाथा ॥ दिष्षि सुभट्टह दिवानं। राजत बीर धीर अरोहं ॥
निरषि ताम प्रतिसारं। आगम निगम जान सह कब्बी ॥छं०॥४७॥

कविचन्द का विचार।

कबि जानी करतारं। रचना [1]सचन सब्ब भर सुभरं ॥
कवन सु मेटन हारं। विधि लिषयं भाल अंकेन ॥ छं० ॥ ४८ ॥
दूहा ॥ गत सभांन भर थान उठि। आयति समय पुलिंद ॥
गहन मझि वाराह वर। निंदत कोहर किंद ॥ छं० ॥ ४९ ॥
तत कोहर इक भाल बर। षात अराम भिराम ॥
विहुरि नृपत्ति नरेस किय। व्याधि स रष्षहु ताम ॥ छं० ॥ ५० ॥

पृथ्वीराज का कतिपय सामंतों सहित शिकार को जाना।

कवित्त ॥ उठि प्रातह चहुआन। [2]चढ़ि सु क्रम्मत नरेस पिथ ॥
सथ्थ सूर सामंत। मंत जान्यो अषेट पथ ॥
सुभट जाम जद्दों जुवान। बलिभद्र बीझ बर ॥
महनसीह सम पीप। बंधि लंगिय अभंग भर ॥
गुज्जरहराम आजानभुज। जैतराव भट्टी अचल ॥
हाहुलियराव मंडन्न हर। मिले सुभट तहं क्रमत भल ॥छं०॥५१॥

बाराह का शिकार।

दूहा ॥ जाय संपते भर गहन। जोजन इक इक [3]कोह ॥
तहं सूकर सूतौ न्निमय। कोहर तथ्थ सु [4]षोह ॥ छं० ॥ ५२ ॥
धरि छत्तिय दिढ़ तुपक नृप। हक्किय व्याधि वराह ॥
उट्ठि भयंकर षात तजि। तिच्छन संचरि ताह ॥ छं० ॥ ५३ ॥

वाराह का वर्णन और राजा का उसे मारना।

कवित्त ॥ कविय व्याधि वाराह। उट्ठि धायौ चंचल सम ॥
बदन भयंकर भूत। दंत दीरघ ससि बीय सम ॥

(१) मो.-सचनं। (२) मो.-"चढ़ि संक्रम्भ नरेस पिथ"।
(३) मो.-ग्रेह। (४) मो.-बेह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सनमुष क्रमत नरेस। दिष्षि छत्तिय धरि जंतिय ॥
सबद रोस संचार। सूर जोवंत [1]सु पंतिय ॥
संचष्षि उभय भ्रकुटिय सहथ। लग्गिय गोरिय [2]परचरिय ॥
उच्छरत योत धुक्किय धरनि। भल जंपिय भर सारथिय ॥
छं० ॥ ५४ ॥

दूहा ॥ किय सिकार बर सूर पति। ग्रेह संपतौ जाय ॥
चल्यौ प्रात प्रथिराज पहु। सिव सेवन सद भाय ॥ छं० ॥ ५५ ॥

शिकार करके राजा का शिवालय को जाना। शिव जी के श्रृंगार का वर्णन।

पद्धरी ॥ आभ्रत्त ईस ईसान घान। पुर अलक असुर सुर वृंद मान ॥
जट विकट चुकुट झलकंत गंग। तिन दरसि भरत पातिग पतंग ॥
छं० ॥ ५६ ॥

तट भाल चंद दुति दुतिय दीह। हरि सुजस रेष राजन अतीह ॥
तिन निकट नयन झलकंत अंग। सिर पंच [3]सोह रजिकय उदंग ॥
छं० ॥ ५७ ॥

आभा अनूप विभ्भूति वार। प्रगटे सुषीर दधि करि विहार ॥
झलकंत तरल तिच्छन सुरंग। [4]तम रहै मेर उपकंठ संग ॥
छं० ॥ ५८ ॥

रजि उरग हार उद्दार धार। रुचि सेत स्याम तन तिन प्रकार ॥
आरोपि उअर वर रुंडमाल। उड़पंति कंति हिम गिरिय [5]भाल ॥
छं० ॥ ५९ ॥

कटि तटि लपेटि लंकाल षाल। आवरिग अंग गज [6]तुज विसाल ॥
कर तरल तुंग तिरसूल सोह। चयलोक सोक संकत समोह ॥
छं० ॥ ६० ॥

डहडहत डमरू कर दच्छि पानि। क्रत उंच उंच भय भगति [7]भानि ॥

(१) ए. कृ. को.-सयत्तिय। (२) ए. कृ. को.-परचारिय।
(३) ए. कृ. को.-सीह। (४) ए. कृ. को.-तन।
(५) ए. कृ.-पषाल। (६) मो.-गज तुव। (७) ए. कृ. को.-सांनि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरधंग उमय सरवंग देव। नाटिक्क कोटि को लहत भेव ॥
छं० ॥ ६१ ॥
चवरंग विसाल [1]माली प्रमथ्य। अरोहि वृषभ मन [2]सुमन रथ्य॥
षट बदन बदन गज मदन अग्ग। गन जंत गज्ज अनेक बग्ग॥
छं० ॥ ६२ ॥
कैलास वास सिवरंग रोध। बर बसत आय थिर निगमबोध॥
आहुत्ति परसि क्रित प्रथियराज। उपवास व्याधि कारन सुभाज॥
छं० ॥ ६३ ॥
निसि जगत ईस तिय रथ परिथ्य। हरिहरि समेत कलि कलन कथ्य॥
अनेक विधी रिष गन प्रसंग। उर हरन करन क्रमि आय तंग॥
छं० ॥ ६४ ॥
दूहा ॥ राज दरसि हर सरस बर। उर उद्दित आनंद॥
कर कलंक तिरसूल कर। जै जै समर निकंद॥ छं० ॥ ६५ ॥
नमित दान शिव प्रमित सुष। वारह वार नरेस॥
हर हर हर उर ध्यान गुर। दिष्यन दरसन तेस॥ छं० ॥ ६६ ॥
श्रुति उचार संचय सु रिषि। उज्जल अरचि अचार॥
मन सु ब्रह्म तन माम सी। ते देषे हरदार॥ छं० ॥ ६७ ॥

पृथ्वीराज का स्नान करके शिवार्चन करना, पूजा की सामग्री और विधान वर्णन।

करि सनान संभरि स पहु। स च सुवास तन धार॥
अंदर शिव मंदिर परसि। आरोहन क्रत कार॥ छं० ॥ ६८ ॥
पद्धरी ॥ करि नमसकार संभरि नरेस। अवलोकि अंग उमया वरेस॥
रिषि रुष षटंग उचरंत चार। ओरहि राज दुज सम सुसार॥
छं० ॥ ६९ ॥
धरि ध्यान [3]उरध नाटेस राय। मधु दूब षीर दधि तंदुलाय॥
घट उभय सहस [4]सुर सुरिय अंब। चव सहस कलस जमना प्रसंब॥
छं० ॥ ७० ॥

(१) ए. कृ. को.-मानी। (२) ए. समन।
(३) ए. कृ. को.-अरध। (४) मो. रसुरीय अंव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दधि सहस एक घट सहस षीर। मधु पंच सत्त सुच्छव सहीर॥
घट सहस [1]रष्षि अड्डह प्रवान। घट कासमीर सय पंच थान॥
छं० ॥ ७१ ॥
रस उभय दून घट विसल बानि। अस्तूति चंद जंपै विधान॥
वरकुंभ सत्त गुल्लाब पंच। घट उभय नाग संभव सुरंच॥
छं० ॥ ७२ ॥
घठ उभय जष्षि क्द्दम सु सत्त। घट उभय सात बहु विधि प्रब्रत्त॥
सिव सिर श्रवंत न्टप अप्प हाथ। सद भाय अर्चि अलकेस नाथ॥
छं० ॥ ७३ ॥
तंदुल सु दूब मधु षीर नीर। दधि सार पंच तुछ मंडि सीर॥
सिव संषि सुघट पुञ्जै चिअंब। सु प्रसन्न ईस [2]कारन तिअंब॥
छं० ॥ ७४ ॥
सतपच कमुद ससि सूर वंस। मंदार पहुप केतकि सुअंस॥
मालती पंच जाती अनेव। फल पहुप पच पल्लव सु भेव॥
छं० ॥ ७५ ॥
मालूर पंग श्रीषंड धूप। नैवेद ईस आराधि जप॥
आरोह नंत आगम प्रदोष। रचि सयन अयन राजन सु कोष॥
छं० ॥ ७६ ॥
प्रस यारि कथा ग्रहि संभरेस। अन्नेक दांन रिषि दिय नरेस॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७७ ॥

पूजन के पश्चात कविचन्द का राजा से दिल्ली चलने को कहना।

दूहा॥ पूजा [3]हर घन हित करी। धूप दीप सब साज॥
चंद भट्ट बोल्यौ तबै। चल्यौ सु ग्रह फिरि राज॥ छं० ॥ ७८ ॥

इति श्री कविचंद विरचिते प्रथिराजरासके जंगम सोफी कथा, सिव पूजा नाम साठवों प्रस्ताव सम्पूर्णम्॥६०॥

(१) ए. कृ. को.-सरपि। (२) ए. कृ. को.-कारनीन। (३) ए. कृ. को.-घन हर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ कनवज्ज समयो लिष्यते ।

(एकसठवां समय ।)

[अथ षट् ऋतु वर्णन लिष्यते ।]

पृथ्वीराज का कविचन्द से कन्नौज जाने की इच्छा प्रगट करना ।

दूहा ॥ सुक वरनन संजोग [1]गुन । उर लग्गे छुटि बान ॥
षिन षिन सल्लै वार पर । न लहै बेद विनान ॥ छं० ॥ १ ॥
भय श्रोतान नरिंद मन । पुच्छै फिरि कविरज्ज ॥
दिष्षावै दलपंगुरौ । धर ग्रीषम कनवज्ज ॥ छं० ॥ २ ॥

कवि का कहना कि छद्म वेष में जाना उचित होगा ।

कवित्त ॥ दीसै वह विध चरिय । सुभ्रन नर दुभ्रन भनिज्जै ॥
बल कलियै अप्पान । कित्ति अप्पनी सुनिज्जै ॥
हीं डिज्जै तिहि काज । दुष्ष सुष्षह भोगिज्जै ॥
तुच्छ आव संसार । चित मनोरथ पोषिज्जै ॥
दिष्षियै देस कनवज्ज वर । कही राज [2]कवि चंद कहि ॥
[3]मुक्कही सूर छल संग्रहै । तौ पंग दरसन तत्त लहि ॥ छं० ॥ ३ ॥

यह सुनकर राजा का चुप हो जाना और सामंतों का कहना कि जाना उचित नहीं ।

दूहा ॥ सुनिय सुकवि इह चंद वच । ना बुल्ल्यौ सम राज ॥
अंबुज को दोऊ कठिन । उदय अस्त रविराज ॥ छं० ॥ ४ ॥
स्लोक ॥ गमनं न क्रियते राजन् । सूर सामंतमेवच ॥
[4]प्रस्थानं च प्रयाणं च । राजा [5]मध्ये गतं तदा ॥ छं० ॥ ५ ॥

(१) मो.-सुन (२) ए. कृ. को.-काहि । (३) मो.-मुक्काहि सूर रछ संग्रहै ।
(४) ए. कृ. मो.- प्रच्छानं । (५) ए. कृ. को.- मध्य ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा का इंछिनी के पास जाकर कन्नौज जाने को पूछना।

दूहा॥ पुच्छि गयौ कविचंद को। इंछिनि महल नरिंद॥
सुंदरि दिसि कनवज्ज कौ। चलै कहै धर इंद॥ छं०॥ ६॥

रानी इच्छनी का कहना कि वसंत ऋतु में न जाइए।

इन रिति सुन चहुवान वर। चलन कहै जिन जीय॥
हौं जानूं पहिलै चलै। प्रान प्रथान कि [1]पीय॥ छं०॥ ७॥
प्रान ज्वाव दूनों चलै। आन अटक्कै घंट॥
निकसन कों झगरौ पऱ्यौ। रुक्यौ गदग्गद कंठ॥ छं०॥ ८॥

बसंत ऋतु का वर्णन।

साटक॥ स्यामंगं कलधूत नूत सिषरं, मधुरे मधू वेष्टिता।
[2]वाते सीत सुगंध मंद सरसा, आलोल संचेष्टिता॥
कंठी कंठ कुलाहले मुकलया, कामस्य उद्दीपने।
रत्ते रत्तवसंत मत्त सरसा, संजोग भोगायते॥ छं०॥ ९॥

कवित्त॥ मवरि अंब फुल्लिग। कदंब रयनी दिघ दीसं॥
भवर भाव भुल्लै। भ्रमंत मकरंदव सीसं॥
वहत [3]बात उज्जलति। मौर अति विरह अगनि किय॥
कुहकुहंत कल कंठ। पच राषस रति अग्गिय॥
पय लग्गि प्रान पति वीनवौं। नाह नेह मुझ चित धरहु॥
दिन दिन अवड्डि जुब्बन घटय। कंत वसंत न [4]गम करहु॥छं०॥१०॥
धुम्र चलिय बन पवन। भ्रमत मकरंद कंवल कलि॥
भय सुगंध तहँ जाइ। करत गुंजार अलिय मिलि॥
बल हीना [5]डगमगहि। भाग आवै भोगी जन॥
उर धर लगै समूह। कंपि भौ सीत भयत नन॥
लत परी ललित सब पहुप रति। तन सनेह जल पवित किय॥
निकरै भ्रंग अंवुज हरुअ। सीत सुगंध सुमंद लिय॥ छं०॥ ११॥

(१) को. कृ-पीउ। (२) ए. कृ. को.- वातो।
(३) ए. कृ. को.- वात। (४) ए. कृ. को.- गमन। (५) मो.-डत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साटक ॥ लैवंधं सुर षट्ट डंक्कित मधू, उन्मत्त भ्रंगी धुनी ।
कंद्रप्पे सु मनो वसंत रमनं, प्राप्तो धनं पावनं ॥
कामं तेग मनं धनुष्ष सजनं, भीतं वियोगी मुनी ।
विरहिन्या तन ताप पत्त सरसा, संजोगिनी सोभनं ॥ छं० ॥ १२ ॥

कुंडलिया ॥ इहि रिति सुक्कि न बाल प्रिय । सुष [1]भारी मन लुट्टि ॥
कामिनि कंत समीप बिन । हुई षंड उर फुट्टि ॥
हुई षंड उर फुट्टि । रसन कुह कुह आरोहै ॥
चलन कहै जो पीय । गात वर [2]भग्गो सोहै ॥
नयन उमगि कन बीय । सोभ ओपम पाईं जिहि ॥
मनों षंजन बिय बाल । गहिय नंषत सुत्तिय [3]इहि ॥ छं० ॥ १३ ॥

ग्रीष्म ऋतु आने पर पृथ्वीराज का रानी पुंडीरनी के पास जाकर पूछना ।

दूहा ॥ इहि रिति रष्षिय इंछिनिय । भय ग्रीषम रितु चारु ॥
कांम रूप करि गय न्रपति । पुंडीरनी दुआर ॥ छं० ॥ १४ ॥
सुनि सुंदरि पहु पंग की । दिसि चालन कौ सज्ज ॥
बर उत्तम धर दिष्षियै । पिष्षन भर कनवज्ज ॥ छं० ॥ १५ ॥

रानी पुंडीरनी का मना करना ।

न्रप ग्रीषम ग्रिह सुष्षनर । ग्रेह सुक्कि नन राज ॥
गोमगांम छादिय अमर । पंथ न सुझ्झै आज ॥ छं० ॥ १६ ॥

कवित्त ॥ दीरघ [4]दिन निस हीन । छीन जल धरवैसंनर ॥
चक्कवाक चित मुदित । उदित रवि थक्कित [5]पंथ नर ॥
चलत पवन पावक । समान परसत स ताप मन ॥
सुकत सरोवर मचत । कीच तलफंत मीन तन ॥
दौसंत दिगम्बर सम सुरत । तरु लतान गय पत्त झरि ॥
अकुलंदीह संपति विपति । कंत गमन ग्रीषम न करि ॥ छं० ॥१७॥

(१) ए.- भासे । (२) ए. भग्गे-ए.-भगौ ।
(३) ए. क्र को.-जिहि । (४) ए. कृ. को.-दिस ।
(५) ए. कृ. को.-पसपत ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साटक ॥ दीहा दिग्घ सदंग कोप अनिला, आवर्त मित्ता करं।
देनं सेन दिसान थान मिलनं, गोमग्ग आडंबरं ॥
नीरे नीर अपीन छीन छपया, तपया तरुन्या तनं।
मलया चंदन चंद मंद किरनं, ग्रीष्म च आषेवनं ॥ छं० ॥ १८ ॥

कवित्त ॥ पवन त्रिविध गति मुक्कि। सेन भुत्र पत्ति जूथ चलि ॥
विरह [1]जाम बर कदन। मदन मैं मंत पील हलि ॥
पथिक बधू भरै। आस आवन चंदाननि ॥
जो चालै चहुआन तौ। मरै फुटि उर व्रंननि ॥
मन भुअन आन दैतो फिरै। प्रिय आगम गज्जै मयन ॥
कंता न मुक्कि वर कित्ति गर। कहूं सुनो सोनिय बयन ॥छं०॥१९॥
षिन तरुनी तन तपै। बहै नित बाव रयन दिन ॥
दिसि च्यारों परजलै। नहिं कहों सीत अरध षिन ॥
जल जलंत पीवंत। रुहिर निसि वास निघट्टै ॥
कठिन पंथ काया। कलेस दिन रयनि सघट्टै ॥
त्रिय लहै तत्त अष्पर कहै। गुनिय न ग्रब्ब न मंडियै ॥
सुनि कंत सुमति संपति विपति। ग्रीषम ग्रेह न छंडियै ॥छं०॥२०॥

*गीतामालची ॥ त्रिय ताप अंगति दंग दवरित दवरि छव रित भूषनं।
कुरु मेह षेहति ग्रेह लंपिति स्वेद संवित अंगनं ॥
नर रहित अनहित पंथ पंगति पंगयौ जित गोधनं।
रवि रत्त मत्तह अभ्भ उद्दिक कोप कर्कस मोषनं ॥ छं० ॥ २१ ॥
जल बुद्धि उट्ठि समूह बल्लिय मनों सावन आवनं।
हिंडोल लोलंति बाल सुष सुर ग्राम सुर सुर गावनं ॥
कुसमंग चीर गंभीर गंधित मंद बुंद सुहावनं।
छलकंत बेलिय तट्ठ ऐनिय चंद्र सेंनिय आननं ॥ छं० ॥ २२ ॥
ताटंक चंचल लजित अंचल मधुर मेषल रावनं।
रव रंग नूपुर हंस दो सुर कंज ज्यौं पुर पावनं ॥
नष द्रप्प द्रप्पन देषि अप्पन कोपि कंपि सु नावनं।
दमकंद दामिनि दसन कामिनि जूथ जामिनि जाननं ॥छं०॥२३॥

(१) ए.कृ.को.-जातु। * आधुनिक हिन्दी पिंगलों में इस छन्द को प्रायः हरिगीतिका करके लिखा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तंवोल रत घनसार भारह बेलि विद्रुम छावनं।
अलि गुंज मालहि. देषि लालहि रंभ राज रिझावनं॥
.... ॥ छं० ॥ २४ ॥

वर्षा के आने पर राजा का इन्द्रावती के पास जा कर पूछना।

दूहा ॥ मानि रूप मानिनि वचन। रहि ग्रीषम वर नेह॥
पावस आगम धर अगम। गय इंद्रावति ग्रेह॥ छं० ॥ २५ ॥

इन्द्रावती का दुखी होकर उत्तर देना।

पीय वदन सो प्रिय परषि। हरष न भय सुनि गोंन॥
आन्ह मिसि असु उप्पटै। उत्तर [1]देय सलोन॥ छं० ॥ २६ ॥

वर्षा ऋतु वर्णन।

साटक ॥ अब्दे वद्दल मत्त मत्त विसया, दामिन्य दामायते।
दादूरं दर मोर सोर सरिसा, पप्पीह चौहायते॥
[2]शृंगारीय वसुंधरा मलिलता, लीला समुद्रायते।
जामिन्या सम वासुरो विसरता, पावस्स पंथानते॥ छं० ॥ २७ ॥

कवित्त ॥ मग सज्जल सुझ्झैन। दिसा धुंधरी सघन करि॥
रति पहुवी कि चरित। लता तरु वींटि सुमन भरि॥
आलिंगत धर अभ्भ। मान मानिन ललचावत॥
बर भद्रव कद्रव मचंत। कद्रव विरुझावत॥
चतुरंग सेन वै गढ दहन। घन सज्जिय न्रप चढ़िन तिन॥
भरतार संग बंछै चिया। बिन क्रतार [3]अत्तार बिन॥ छं० ॥२८॥
घन गरजै घरहरै। पलक निस रेनि निघट्टै॥
सजल सरोवर पिष्षि। हियौ तत छिन धन फट्टै॥
जल वद्दल बरषंत। पेम पल्हरै निरंतर॥
कोकिल सुर उच्चरै। अंग पहरंत पंच सर॥

(१) ए. कृ. को. देति। (२) ए. कृ. को.-श्रगाराय।
(३) ए. कृ. को.-भरतार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दादुरह मोर दामिनि दसय । अरि चवथ्थ [1]चातक रटय ॥
पावस प्रवेस वालम न चलि । विरह अगनि तनतप घटय ॥छं०॥२९॥
घुमड़ि घोर घन गरजि । करत आडंबर [2]अंमर ॥
पूरत जलधर धसत । धार पथ थकित दिगंबर ॥
झझकित द्रिग सिसु म्रग । समान दमकत दामिनि द्रसि ॥
विहरत चाचग चुवत । पीय दुषंत समं निसि ॥
ग्रीषंम विरह द्रुम लता तन । परिरंभन क्रत सेन हरि ॥
सज्जंत काम निसि पंचसर । पावस [3]पिय न प्रवास करि ॥
छं० ॥ ३० ॥

चंद्रायना ॥ विजय विहसि द्रिगपाल पाग्ननि पंच किय ॥
विरहनि [4]विस गढ़ दहन मघव धनु अग्र लिय ॥
गरजि गहर जल भरित हरित छिति छच किय ।
मनहु दिसान निसानति आनि अनंग दिय ॥ छं० ॥ ३१ ॥

गीतामालची ॥ द्रिग भरित [5]धूमिल जुरति भूमिल कुमुद न्रिम्मल सोभिलं ॥
द्रुम अंग वल्लिय सीस हल्लिय कुरलि कंठह कोकिलं ॥
कुसुमंज कुंज सरोर सुब्भर सलित दुब्भर सद्दयं ।
नद रोर दद्दुर मोर नद्दुर बनसि बद्दर बद्दयं ॥ छं० ॥ ३२ ॥
झम झमकि विज्जल काम किज्जल श्रवति सज्जल कद्दयं ।
पप्पीह चीहति जीह जंजरि मोर मंजरि मद्दयं ॥
जगमगति झिंगन निसि सुरंभन भय अभय निसि हद्दयं ।
मिलि हंस हंसि सुवास सुंदरि उरसि आनन निद्दयं ॥छं०॥३३॥
[6]उट सास आस सुवास वासुर [7]छलित कलि वपु सद्दयं ।
* करत आडंबर अमर प्रस्त जलधर धार पयथ्थयं ॥
संयोग भोग संयोग [8]गामिनि विलसिराजन भद्दयं॥छं०॥३४॥

(१) मो.-चत्रिक, चातिक ।
(२) ए. कृ. को.-डंमर ।
(३) मो.-प्रिय ।
(४) ए. कृ. को. नप ।
(५) ए. कृ. को.-भूमिल ।
(६) ए. कृ. को. उत्र ।
(७) ए. कृ. को.-कलिल ।
(८) मो. मानंनि ।
* यह पंक्ति मो० प्राति के सिवाय अन्य प्रतियों में नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साटक ॥ जे [1]बिज्जु,भभ्भल फुट्टि तुट्टि तिमिरं, [2]पुन अंधनं दुस्सहं ।
बुंदं घोर तरं सहंत असहं, वरषा रसं संभरं ॥
बिरहीनं दिन दुष्ट दारुन भरं, भोगी सरं सोभनं ।
मा मुक्के पिय गोरियं च अबलं, प्रीतं तया तुच्छया ॥छं०॥३५॥

शरद ऋतु के आरंभ में तैयारी करके राजा का हंसावती के पास जाकर पूछना ।

दूहा ॥ सुनि [3]स्रावन वरिषा सघन । सुष निवास न्रिप कीय ॥
बर पूरन पावस कियौ । राज पयान सु दीय ॥ छं० ॥ ३६ ॥
हंसावति सुंदरि सुग्रह । गयौ प्रीय प्रथिराज ॥
धर उत्तिम कनवज्ज दिसि । चलन कहत न्रप आज ॥छं०॥३७॥

हंसावती के वचन ।

दिष्षि वदन पिय योमिनी । फुनि जंपै फिरि बाल ॥
सरद रवन्नौ चंद निसि । कित लभ्भै छुटि काल ॥ छं० ॥ ३८ ॥

शरद् वर्णन ।

साटक ॥ पित्त पुत्त सनेह गेह [4]गुपता, जुगता न दिव्या दने ।
[5]राजा छचनि साज राज छितिया, निंदायि नीवासने ॥
कुसुमेषं तन चंद न्रिमल कला, दीपाय वरदायने ।
मा मुक्के प्रिय बाल नाल समया, सरदाय दर दायने ॥छं०॥३९॥
दूहा ॥ आयौ सरद स इंद्र रिति । चित पिय पिया सँजोग ॥
दिन दिन मन केली चढ़े । रस जु लाज [6]अलि भोग ॥छं०॥४०॥
कवित्त ॥ पिष्षि रयनि न्रिमलिय । फूल फूलंत अमर धर ॥
स्रवन सबद नहिं सुझ्झै । हंस कुरलंत मान सर ॥
कवल कद्रव विगसंत । तिनह हिमकर परजारै ॥
तुमहि चलत परदेस । नहीं कोइ सरन उबारै ॥

(१) मो.-बिज्जुल । (२) मो.-पुनंधन ।
(३) को.-सावन । (४) ए. कृ. को.- भुगता ।
(५) ए. कृ. को.- राजा छत्र निसान (६) ए. कृ. को.-अति ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निग्रहन रत्त भरपंच सर। अरि अनंग अंगै वहै ॥
जौ कंत गवन सरदै कहै। तौ विरहिनि सिष ह्वै दहै ॥छं०॥४१॥
द्रप्पन सम आकास। श्रवत जल अमृत हिमकर ॥
उज्जल जल सलिता सु। सिद्धि सुंदर सरोज सर ॥
प्रफुल्लित ललित लतानि। करत गुंजारव [1]भंमर ॥
उदति सित्त निसि नूर। अंगि अति उमगि अंग बर ॥
तलफंत प्रान निसि भवन तन। द्रेषत दुति रिति सुष जरद ॥
नन करहु गवन नन भवन तजि। कंत दुसह दारुन सरद ॥छं०॥४२॥
माधुर्य ॥ लहु वरन षट विय सत्त, चामर बीय तीय पयो हरे।
माधुर्य छंदय चंद जंपय, नाग वाग समोहरे ॥
अति सरद सुभगति राज राजति सुमति काम उमद्दयं।
ग्रह दीप दीपति जूप जूपति भूप भूपति सद्दयं ॥ छं० ॥ ४३ ॥
नव नलिनि अलि मिल अलिन अलि मिल्लि अलिनि अलिव्रतमंडियं॥
चक चकी चक्रित चकोर चष्षित चच्छ छंडित चंदयं।
दुज अलस अलसनि कुसुम अच्छित कुसुम मुद्दित मुद्दयं ॥
भव भवन उच्छव तरु असोकहि देव दिव्य नि नद्दयं ॥छं०॥४४॥
नौरता मंचहि न्रपति राजत बीर झंझरि बग्गयं।
महि महिल लच्छिर सुभ्भित अच्छिर सकति पाठ सु दुग्गयं ॥
अट्ठार भारह पुषित अच्छित अधर अमृत भामिनी।
रस तीय राजन लहय सोजन सरद दीपक जामिनी ॥छं०॥४५॥
कवित्त ॥ नव नलिनी अलि मिलहि। अलिन अलिमिलि व्रत मंडै ॥
तनु न्रम्मल [2]षह चंद। चष्ष [3]चकोरति छंडै ॥
दुज अलसित बर निगम। कुसुम अच्छित मुद्रावलि ॥
[4]पिच नेह ग्रेहरचें। बाल छुट्टे अलकावलि ॥
करि स्नान धूत बसतर रचें। कंज वदन चिचंग चरि ॥
आनूप जूप अंजन रचै। बिना कंत तिय गुन सुगरि ॥
छं० ॥ ४६ ॥

(१) मो.-संभर। (२) ए. कृ. को.- वह।
(३) ए. कृ.-चकोरन। (४) ए.कृ. मो.-पित्र ग्रेह नेह रचें।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद रयनि न्रिम्मली। सरिस आकास अभ्यासित ॥
पिया बदन सो चंद। दोइ कुच चिकुर प्रगासित ॥
षंजन नयन अलोल। कीर नासा [१]न्रम्मल मुति ॥
उज्जल वस्त्र अनूप। पुहप भाजन रजता भति ॥
नव गात न्रिमल सुंदरि सरल। नवल नेह नित नित भलौ ॥
चित चतुर रीति बुझ्झै न्रपति। सरद दरद करि मति चलौ ॥
छं० ॥ ४७ ॥

हेमंत ऋतु आने पर राजा का रानी कूरंभा के पास जाकर पूछना और उसका मना करना।

दूहा ॥ हिम आगम वित्तें सरद। गवन चित्त न्रप इंद ॥
पुछन कुरंभी महल गय। सरद ग्रेह वर चंद ॥ छं० ॥ ४८ ॥

रानी का वचन और हेमंत ऋतु का वर्णन।

साटक ॥ छिन्नं बासुर सीत दिघ्घ निसया, सीतं जनेतं बने।
सेजं सज्जर बानया बनितया, आनंग आलिंगने ॥
यों बाला तरुनी वियोग पतनं, नलिनी दहन्ते हिमं।
मा मुक्के हिमवंत मन्त गमने, प्रमदा निरालम्बनं ॥ छं० ॥ ४९ ॥

रोला ॥ कुच वर जंघ नितंव निसा बढ्ढत धन बढ्ढी।
लंक छीन उर छीन छीन दिन सीत सुचढ्ढी ॥
गिरकंदर तप जुगति जागि जोगीसर मंनं।
ते लभ्भे कविचंद वाम कामी सर धंनं ॥ छं० ॥ ५० ॥

कवित्त ॥ देह धरें दोगत्ति। भोग जोगह तिन सेवा ॥
कै वन कै वनिता। अगनि तप कै कुच लेवा ॥
गिरि कंदर जल पीन। पियन अधरारस भारी ॥
जोगिनोद मद उमद। कै छगन दसन [२]सवारी ॥
अनुराग बीत कै राग मन। बचन तीय गिर भरन रति ॥
संसार विकट इन विधि तिरय। इही विधी सुर असुर अति ॥ छं० ॥ ५१ ॥

(१) ए. कृ. को.-भूंमल। (२) ए. कृ. को. सचारी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोमावलि वन जुथ्थ । बीच कुच कूट मार गज ॥
हिरदै[1] उजल विसाल । चित्त आराधि मंडि सज ॥
विरह करन क्रीलई । सिद्ध कामिनी डरप्पै ॥
तो चलंत चहुआन । दीन छंडै पै रुप्पै[2] ॥
हिमवंत कंत मुक्कैन चिय । पिया पन्न पोमिनि परषि ॥
ग्रहि कंठ कंठ ऊठन[3] अवनि । चलत तोहि[4] लगिवाय रूष ॥ छं० ॥ ५२ ॥

न चलि कंत सुभचिंत । धनी बहु[5] वित प्रगासौ ॥
गह गहि ऐसौ प्रेम । सौज आनंद उहासौ ॥
दीरघ निसि दिन तुच्छ । सीत संतावै अंगा ॥
अधर दसन घरहरै । प्रात परजरै अनंगा ॥
[6]जा ऐलि रैनि हर हर जपत । चक्क सद्द चक्की कियौ ॥
हिमवंत कंत सुग्रह ग्रहति । हहकरंत फुट्टै हियौ ॥ छं० ॥ ५३ ॥

चोटक ॥ गुरु पंच सुभै दस मत्तपयो । श्रिय नाग हन्यौ हरबाहनयो ॥
इति छंद विछंद विलास लहै । तत चोटक छंद सुचदं कहै ॥ छं० ॥ ५४ ॥
दिव दुर्ग लिसा दिन तुच्छ रवै । जरि सीत बनं बनवारि जवै ॥
चक चक्कि चकी जिम चित्त भवै । नितवांम प्रिया मुष [7]मोरि ठवै ॥
छं० ॥ ५५ ॥

बिरही जन रंजन हारि भियं । घनसार[8]मृगमद पुंज कियं ॥
पहुपंकति पुंजति कन्त जियं । परिरंभन रंभन रे रतियं ॥
करि विभ्रम निभ्रम लग्ग तियं । .... ॥
छिन भाजत लाजत लोचनयं । तन कम्पत जम्पत मोचनयं ॥
छं० ॥ ५६ ॥

नव कुंडल मंडल क्रन्न रमै । कच अम्रपटी जनु वीज भ्रमै ॥
कुसमावलि तुट्टि लवंग लगं । बरनं रचि छुट्टति पंति बगं ॥ छं० ॥ ५७ ॥

(१) मो.-हिरदे उज्जल जल विसाल चित्त आवित्ति मंडि गज । (२) मो.-रुक्कै
(३) ए. कृ. को.-अवत । (४) ए. कृ. को.-चलन तोहि लगीय रुष ।
(५) मो.-वत्त । (६) ए. कृ. को.-जय नह रैनि ।
(७) ए. कृ. को.-कोलिं जवैं । (८) ए. कृ. को.-मृदंमद ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रम बुंदति मुत्ति झरं उरनं । झलती जनु गिम्ह सिवं सरनं ॥
कटि मंडल घंटि रमन्नि रवै । सुरमंजु[1] मंजीर अमीय श्रवै ॥
छं० ॥ ५८ ॥
रति ओज मनोज तरंग भरी । हिमवंत महा रितराज करी ॥
॥ छं० ॥ ५९ ॥

शिशिर ऋतु का आगम ।

दूहा ॥ संगम सुष सुत्तौ नृपति । ग्रिह विन एक न होइ ॥
सुनि चहुआन नरिंद बर । सीत न मुक्कै तोह ॥ छं० ॥ ६० ॥
हिम वित्यौ आगम शिशिर । चलन चाइ चहुआन ॥
सुनि पिय आगम शिशिर कौ । क्यों मुक्कै ग्रिह थान ॥ छं० ॥ ६१ ॥
साटक ॥ [3]रोमाली वन नीर निझ[4] चरयौ[5] गिरिदंग [6]नारायने ॥
पव्वय पीन कुचानि जानि मलया, फुंकार झुंकारए ॥
सिसिरे सर्वरि वारूनी च विरहा माहइ मुव्वारए ॥
मांकंते त्रिगबद्ध मध्य गमने, किं दैव उच्चारए ॥ छं० ॥ ६२ ॥
*दूहा ॥ अरिय सघन जीतन दिसा । चलन कहत चहुआन ॥
रतिपति चल होइ पिथ्थ गय । ग्रह हमीर ग्रिह जानि ॥
छं० ॥ ६३ ॥
कवित्त ॥ आगम फाग अवंत । कंत सुनि मित्त सनेही ॥
सीत अंत तप तुच्छ । होइ आनंद सब ग्रेही ॥
नर नारी दिन रैनि । मैंन मदमाते डुल्लैं ॥
सकुच न हिय छिन एक । बचन मनमानै बुल्लैं ॥
सुनौ कंत सुभ चिंत करि । रयनि गवन किम कीजइय ॥
कहि नारि पीय बिन कामिनी । रिति ससिहर किम जीजइय ॥
॥ छं० ॥ ६४ ॥

(१) ए. कृ. को.-पुंज । (२) ए. कृ. को.-गति
(३) ए. कृ. को. रोमावालि । (४) ए. कृ. को. निचयो ।
(५) ए. कृ. को.-गिरिदंत । (६) ए. कृ. को. नारायते ।
* यह दोहा मो. प्रति में नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनुफाल ॥ गुर गरुअ चामर नंद । लहु वरन विच विच इंद ॥
विवहार पय पय बंद । इति हनूमानय छंद ॥ छं० ॥ ६५ ॥
रिति ससिर सरवरि सोर । परि पवन पत्त झकोर ॥
वन चिगुन तुल्ल तमोर । घन अगर गंध निचोर ॥ छं० ॥ ६६ ॥
भुअ भोज व्यंजन भोर । लव अमर तिष्य कटोर ॥
रस मधुर मिष्ठित थोर । रति रसन रमनति जोर ॥ छं० ॥ ६७ ॥
कल कलस न्त्रित्ति किसोर । वय स्याम गुन अति गोर ॥
परि पेम पेम सजोर । अवलोक लोचन ओर ॥ छं० ॥ ६८ ॥
सुष अंत मुकति सकोर । .... ॥
रस रमति पिथ्थ न्रपत्ति । मनों भुवन वनि सुरपत्ति ॥छं०॥६९॥
इति ससिर सुष विलसंत । रिति राइ आय वसंत ॥
षटु रित्त, षट रमनीय । रषि चंद वरनन कीय ॥ छं० ॥ ७० ॥
तरु लता गह्वरि फेरि । प्रति कुंज कुंजन हेरि ॥
... . । .... ॥ छं० ॥ ७१ ॥

कवित्त ॥ कुंज कुंज प्रति मधुप । पुंज गुंजत वैरनि धुनि ॥
ललित कंठ कोकिल । कलाप कोलाहल सुनि सुनि ॥
राजत वन मंडित । पराग सौरंभ सुगंधिन ॥
विकसे किंसुक विहि । कदंब आनंद विविध धुनि ॥
परिरंभ लता तरवरह सम । भए समह वर अनग तिथि ॥
विच्छुरन छिनक संपत्ति पति । कंत असंत बसंत रिति ॥छं०॥७२॥

पृथ्वीराज का कबिचन्द से पूछना कि वह कौनसी ऋतु है जिसमें स्त्री को पति नहीं भाता।

दूहा ॥ षट रिति वारह मास गय । फिरि आयौ रु वसंत ॥
सो रिति चंद बताउ मुहि । तिया न भावै कंत ॥ छं० ॥ ७३ ॥

(१) ए. कृ. को. सस ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबिचन्द का कहना कि वह ऋतु स्त्री का ऋतु समय (मासिक धर्म्म) है।

जो नलिनी नीरहि तजै। सेस तजै सुरतंत ॥
जो सुबास मधुकर तजै। तौ तिय तजै सु कंत ॥ छं० ॥ ७४ ॥
रोस भरै उर कामिनी। होइ मलिन सिर अंग ॥
उहि रिति प्रिया न भावई। सुनि चुहान चतुरंग ॥ छं० ॥ ७५ ॥

रानियों के रोकने पर एक साल सुख सहबास कर पृथ्वीराज का पुनः बसंत के आरंभ में कन्नौज को जाने की तैयारी करना।

चौपाई ॥ षट्ट सु [1]वरनौं त्रिय षट मासं। रष्षे बर चहुआन विलासं ॥
ज्यों भवरी भवरं कुसुमंगा। त्यों प्रथिराज कियौ सुष अंगा ॥
छं० ॥ ७६ ॥

दूहा ॥ बर वसंत अग्गें जिपति। सेन सजी बहु भार ॥
दिसि कनवज वर चढ़न कों। चितवति संभरिवार ॥ छं० ॥ ७७ ॥
कै जानै कविचंदई। कै प्रयान प्रथिराज ॥
सित सामंत सु संमुहै। पंगराय ग्रह काज ॥ छं० ॥ ७८ ॥

गुरुराम का कूच के लिये सुदिन सोधना।

मतौ मंडि संभरि [1]न्रपति। चलन चिंत [2]पहु अज्ज ॥
दिन अप्पौ गुरराज मिलि। चिंत चलन कनवज्ज ॥ छं० ॥ ७९ ॥

राजा का रविवार को अरिष्ट महूर्त में चलने का निश्चय करना।

कवित्त ॥ चैत तीज रविवार। सुद्ध संपज्यौ सूर जब ॥
एकादस ससि होइ। छंडि दस थान मान तब ॥
बर मंगल न्रप राशि। पंच अक्रूर मेछ वर ॥
दुष्ट भाव चहुआन। राशि अष्टम ढिल्ली धर ॥

(१) ए. कृ. को.-वरुनी। (१) मो.-सुपहु। (२) मो.-वर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भर रासि गह षोटौ न्टपति। देषि पुच्छि चहुआन चलि॥
भावी विगत्ति मति उरह उर। जु कछु कह्यो कविचंद षुलि॥
छं० ॥ ८० ॥

पृथ्वीराज का कैमास के स्थान पर जैतराव को राजमंत्री नियत करना।

दूहा॥ नन मानी चहुआन न्टप। भावी चिंति प्रमान॥
सलष वोलि मंतह न्टपति। मत कैमासह थान॥ छं० ॥ ८१ ॥

कवित्त॥ मंचिय थपि पामार। मंति कैमास थान वर॥
ता मंची पन अप्पि। सूर सामंत मंझ भर॥
मंच दिट्ठ दिढ़ वाच। काछ दिठ्ठौ दिढ़ लोभै॥
लोह दिट्ठ जुध काल। सामध्रम्मह दिढ़ सोभै॥
पुरुषह सु दिट्ठ काया प्रचंड। दिढ़ दुरग्ग भंजन सुहर॥
गुरराज राम इम उच्चरै। सो मंची न्टप करन धर॥ छं० ॥ ८२ ॥

राज्य मंत्री के लक्षण।

सो मंची न्टप करिय। पुव्व वंसह सु वीय सुधि॥
दूत भेद अनुसार। मोह रस बसिन ईछ सुधि॥
न्याय ध्रंम अनुसार। न्याय नंदन परगासै॥
रोगजीत नन होइ। तान चिय लछि अभ्यासै॥
परधान ध्यान जानै सकल। अध्रम द्रव्य नन संग्रहै॥
पम्मार सलष मंची न्टपति। बल गोरी सुष संग्रहै॥ छं० ॥ ८३ ॥

राजा का जैतराव से पूछना कि भेष बदल कर चलें या योंही।

सो मंची पुच्छौ न्टपति। चलन चाइ चहुआन॥
दिसि कनवज धर दिष्षियै। पंग जोग परमान॥ छं० ॥ ८४ ॥
छग्गल पान नरिंद बर। अदभुत चरित विराज॥
चंद भेष चहुआन कौ। थेट सुपत्तौ साज॥ छं० ॥ ८५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैतराव का कहना कि छद्मवेष में तेजस्वी कहीं नहीं छिपता इससे समयोचित आडंवर करना उचित है।

चौपाई ॥ राजन चंद वदन ढंकि किन्नं। छिपै न छिप कर सूर सघन्नं ॥
छिप्पत कवहुँ न मोमभ्भर तिन। रंकति न छिपै वित परघन घिन॥
छं० ॥ ८६ ॥
सुभग मन मधि विदुष सु कव्वी। देषि सुजान न छिपै गुनव्वी ॥
गैपति मैपति समद न छिप्पै। न [1]छिप्पै न रज रजपूत सुदिप्पै ॥
छं० ॥ ८७ ॥

कवित्त ॥ जो आडंवर तजिय। राज सोभै न राज गति ॥
आडंबर बिन भट्ट। कव्वि पुनगार मेट यति ॥
आडंबर बिन नट्ट। गोरि गावै नह रुक्कहि ॥
आडंबर विन वेस। रूप रत्ती न सोय कहि ॥
जन एक सुभर वंदन विदुष। हरुअत आडंवरह विन ॥
पर धर नरिंद बंदन मतौ। करि आडंबर बीर तन ॥ छं० ॥ ८८ ॥

पुनः जैतराव का कहना कि मुझसे पूछिए तो मैं यही कहूंगा कि सब सेना समेत चल कर यज्ञ उथल पथल कर दिया जावै।

दूहा ॥ मत पुछ्छै चहुआन मुहि। सज्जि सवै चतुरंग ॥
अजै विजै जानै नहीं। जग्य विनट्टै पंग॥ छं० ॥ ८९ ॥
तुच्छह सथ्थ नरिंद सुनि। जो जानै पहुपंग ॥
वंधि देए करतार अरि। चोर लग्ग निय संग ॥ छं० ॥ ९० ॥
अरि भंजै भंजौ सु पुनि। सम वरि समर सु पंग ॥
जौ पुच्छै चहुआन बर। [2]तौ सज्जौ चतुरंग ॥ छं० ॥ ९१ ॥

गोयन्द राय का कहना कि ऐसा करना उचित नहीं क्योंकि शहाबुद्दीन भी घात में रहता है।

मतौ गरुअ गोयंद कहि। वर ढिल्ली सुर पान ॥

(१) ए. कृ. को.-नन छिपै रजपूत मरकाति वह दिप्पै। (२) ए. कृ. को.-बर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इथ्थ वीर विरुझाइ चलि। धर लग्गो सुरतान ॥ छं० ॥ ९२ ॥
जिम लग्गो आखंट अगि। ढिल्ली वै सुरतान ॥
विन वुझाय वुझि अग्गिया। जिम 'घट्ट' जम पानि ॥ छं० ॥ ९३ ॥
चित्त चलन चहुआंन कौ। जिन अप्पी मति नन्द ॥
सब भृत मझ्झनटारि लष। नृप ढुंढिय धन लिन्द ॥ छं० ॥ ९४ ॥

अन्त में सब सेना सहित रघुबंश राय को दिल्ली की गढ़ रक्षा पर छोड़कर शेष सौ सामंतो सहित चलना निश्चय हुआ।

सौ समंत छ सूर भय। ते इक एकह देह ॥
जोगिनपुर रघुवंश सौ। सो रष्षी तल लेह ॥ छं० ॥ ९५ ॥
तत मत्त चालन कियौ। महल विसरजन कीन ॥
सत्त घरी घरियार वजि। वर प्रस्थान सुदीन ॥ छं० ॥ ९६ ॥
एक वरष प्रस्थान ते। विय प्रस्थान सुपत्त ॥
ग्यारह से कनवज्ज कौ। चैत तीज रविरत्त ॥ छं० ॥ ९७ ॥

रात्रि को राजा का शयनागार में जाकर सोना और एक अद्भुत स्वप्न देखना।

कवित्त ॥ बिपन महल चहुआन। राज प्रस्थान सुपत्तौ ॥
निसा निद्र उत्तरिय। सघन उन्नयों सु रत्तौ ॥
बीज तेज झूझंत। तमत उठ्यौ व्रत भारी ॥
निसा पत्ति सुर आय। बोल बर बर उच्चारी ॥
चरि चित्त चित्त चहुआन करि। वान विषम गुन बंधयौ ॥
वल अवल दिष्ट संभरि धनी। सुर चिंतह लष संधयौ ॥
छं० ॥ ९८ ॥
प्रथमं स्वर चहुआन। बान संध्यौ गुन संगह ॥
विय अलुक सुर बोलि। चित्त मुक्यौ तिन संगह ॥

(१) मो.-हद्दे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीय वचन अपि जीह। जीव सथ्यह लुक छुट्टिय॥
कर चारहु मन राज। कह्यौ छंदे अंग जुट्टिय॥
निस पतन भई जोगय विपन। हंकाऱ्यौ दुजराज बर॥
घरियार प्रात बज्जै सुघर। रत्त मार बर उग्गि धर॥
छं० ॥ ९९ ॥

कविचन्द का उस स्वप्न का फल बतलाना

सु गुन विद्व कविचंद। अग्र भय छंद विचारिय॥
[1]सामि हथ्थ जस चढ़न। सुकृत आतुर रन पारिय॥
कलह केलि आगंम। सामि परिगह आहुट्टिय॥
बल सगपन किय दान। हीन हीनह अप छुट्टिय॥
कढ्ढई चंद कवि मुष्य तत। आरुध राज न मानइय॥
सो भूत्त गति न्रिमान सति। नन मिट्टै जुग जानइय॥
छं० ॥ १०० ॥

दूहा॥ नहिं वरज्यो कविचंद न्रप। कहि सुनाय सब सथ्थ॥
ज्यों विधिना वर न्रिंमयौ। [2]जम कग्गद चढ़ि हथ्थ॥छं०॥१०१॥

११५१ चैतमास की ३ को पृथ्वीराज का कन्नौज को कूच करना

ग्यारह से एकानवै। चैत तीज रविवार॥
कनवज देषन कारनें। चल्यौ सु संभरिवार॥ छं० ॥ १०२॥

पृथ्वीराज का सौ सामंत और ग्यारह सौ चुनिंदा सवारों को साथ में लेकर चलना।

कवित्त। ग्यारह से असवार। लष्य लीने मधि लेषैं।
इसे सूर सामंत। एक अरि दल बल भष्षैं॥
[3]तनु तुरंग बर वज्र। वज्र ठेलै बज्रानन॥
वर भारथ सम सूर। देव दानव मानव नन॥
नर जीव नाम भंजन अरिय। रूद्र भेस दरसन न्रपति॥
भेटयौ सु ग्रह भर सब्भई। दिपति दीप दिवलोक पति॥छं०॥१०३॥

(१) ए. कृ. को.-स्वामि। (२) मो०.-सो. (३) ए० कृ० को०-तनु तन गब्बर बज्रू।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल्यौ सु संभरिवार। सथ्थ सामंत सूर भर॥
हनिग राज कयमास। अवनि आकंप राज बर॥
सर बर संभरिवार। साहि बंध्यौ गज्जनवै॥
हय गय नर भर बीय। सिद्धि छंड्यौ पुनि है वै॥
सामंत सूर सथ्थह न्रपति। दैव वत्त कारन सुगति॥
कनवज्ज राज जग्गह[1] कलन। चल्यौ राज संभरि सुभति॥
छं० ॥ १०४ ॥

कनवज्जह जयचंद। चल्यौ दिल्लीपति पिष्षन॥
चंद बरद्दिय तथ्थ। सथ्थ सामंत सूर घन॥
चाहुआन कूरंभ। गौर गाजी बड़गुज्जर॥
जादव रा रघुवंस। पार पुंडीरति पष्षर॥
इत्तने सहित भूपति छव्यौ। उड़ी रेन छीनौ नभौ॥
[2]इक लष्ष लष्ष बर लेषिए। चले सथ्थ रजपूत सौ॥ छं०॥ १०५॥

दूहा॥ करि सुनंद संभरि सु पहु। चढ़िक्रम्यौ [3]लय मग्ग॥
हर हर सुर उच्चार मुष। उर आराधन लग्ग॥ छं० ॥ १०६॥

साथी सामंतों का ओज वर्णन।

कवित्त॥ एक सत्त वल सूर। एक वल सहस पानि बर॥
एक अयुत साधंत। [4]दुरद रद दहन तत्त कर॥
एक लष्ष आरुद्ध। जुद्ध जम जेम भयंकर॥
एक कोटि अंगवन। धरत हर उर सु ध्यान बर॥
रवि तन समान तन उज्जले। सत षट अग्ग सु बीर तन॥
तिन सथ्थ सज्जि संभरि स पहु। तिथ्थ क्रम न विच्चारअन॥
छं० ॥ १०७॥

सामंतों की इष्ट आराधना॥

एक ईस आराधि। एक उमया आरोहन॥
[5]एक दुमनि चित जपत। एक गजवदन प्रमोहन॥

(१) मो०-करन (२) ए. कृ. को.-एकेक लष्ष वर लिषीए।
(३) ए. कृ. को.-मय। (४) ए. कृ. को.-डर। (५) मो.-एकदिन मन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक सट्ठि चव रचित। एक पंचास उभय रत॥
एक हनू हिय ध्यान। एक भैरव घोरत' मत॥
इक जप्त अंत अंतक मनह। एक पुरंदर रत्त उर॥
इक उर विदार विद्दर मिरग। धरत ध्यान लंकाल मुर॥
छं० ॥ १०८ ॥

राजा के साथ जानेवाले सामंतों के नाम और पद वर्णन।

भुजंगी॥ गुरुं अंत मत्तं 'पयं पाय पायं। अतौ मत्त सब्बै गयंनं सठायं॥
लह्ह षोडसं 'गोचवं अट्ठ सायं। चवै चंद छंद भुजंगंप्रियायं॥
छं० ॥ १०९ ॥

चल्यौ जंगलीराव कनवज्ज पथ्यं। चले सूर सामंत सथ्यं 'समथ्यं॥
चल्यौ सथ्य सामंत कन्ह समथ्थं॥ जिनै बंदियं सूर संग्राम हथ्थं॥
छं० ॥ ११० ॥

विरद्दं नरंनाह उग्गाह सोहं। कुलं चाहुआनं चषं पट्ट रोहं॥
गुरू राव गोयंद बंदै सु इंदं। सुतं मंडलीकं सबै सेनचंदं॥
छं० ॥ १११ ॥

धरै धूंम सामित्त सा रायलंगा। सुतं राव संयम्म रन में अभंगा॥
सदा सेवसौं चित्त हनमंत बीरं। रमै रोस रंगं तवै आय भीरं॥
छं० ॥ ११२ ॥

चल्यौ स्वामि सन्नाह सा देवराजं। सुतं बग्गरीराव सामंत 'जाजं॥
सदा इष्ट आभिष्ट स्वांमित्त चित्तं। वियं बीर चित्तं सु आनै न हित्तं॥
छं० ॥ ११३ ॥

रनंधीर पावार सथ्यं सलष्यं। चल्यौ जैत सिंघं सु कंकं अलष्यं॥
भरं जामजद्दों सु षीची प्रसंगं। करं कच्छवाहं सु पज्जून संगं॥
छं० ॥ ११४ ॥

बलीभद्र कूरंभ पाल्हंन सथ्यं। करंबाह कथ्यं सु कंकं अकथ्यं॥
नरं निढ्ढुरं धज्ज कमधज्जराजं। वडंगुज्जरं राम सो सामि काजं॥
छं० ॥ ११५ ॥

(१) मो.- मन। (२) ए. कृ. को-पाद्य। (३) ए.-गोचर।
(४) कृ. को.-सनथ्थं। (५) मो.-राजं। (६) मो.-संगं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सदा ईस सेवं सुरं अत्तताई। चले हड्ड हम्मीर गंभीर भाई॥
वरंसिंघ दाहिम्म जंघार भीमं। बरं तास चंपै न को जोर सीमं॥
छं० ॥ ११६ ॥

सज्यौ वाह पग्गार उद्दिग्ग सथ्थं। चल्यौ चंद पुंडीर संग्राम सथ्थं॥
वर चाहुआनं बरस्सिंघ बीरं। हरस्सिंघ संगं सु संग्राम धीरं॥
छं० ॥ ११७ ॥

सज्यौ राव चालुक्क सारंग संगं। समं विझ्झराजं सु बंधं अभंगं॥
सथं जागरं सूर सागौर गोरं। बरं बाररंसिंह सा सूर[1] घोरं॥
छं० ॥ ११८ ॥

बली वाररं रेन रावत्त रामं। दलं दाहिमा रूव संग्राम धामं॥
निरब्बान बीरं सु नारेन नीरं। समं सूर चंदेल भोंहा सधीरं॥
छं० ॥ ११९ ॥

बड़गुज्जरं कंक राजं कनक्कं। सहं सूर सामंत बंधैति अंकं॥
चल्यो माल चंदेल भट्टी सु भानं। समं सामलं सूर कमधज्जरानं॥
छं० ॥ १२० ॥

बरं सिंघ बीरं सु मोहिल्ल बंधं। न्रपं राय बंधं बरंनं सुसिद्धं॥
दलं देवरा देवराजं सु सोहं। महा मंडलीराव सीहं अरोहं॥
छं० ॥ १२१ ॥

धनू धावरं धीर पांवार सथ्थं। चल्यौ तोमरं पाहरा [2]वारि वथ्थं॥
सज्यौ जावलौ जल्ह चालुक्क भारो। षलं वग्गरी वाय षेता षंगारौ॥
छं० ॥ १२२ ॥

बली राय वीरं सु सारंग गाजी। परीहार राना दलं रूव राजी॥
बरं बीर जादौं भरं भोजराजं। समं सांषुला सीह सामल्ल साजं॥
छं० ॥ १२३ ॥

कमंधज्ज बीकंम सादल्ल मोरी। जरी ठंठरी टाक सारंन[3]जोरी॥
जयंसिंघ चंदेल वारू कंठेरो। भरं भीम जादौं अरी गो उजेरौ॥
छं० ॥ १२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-घोरं। (१) ए. कृ. को.-वसि।
(२) मो.-सथ्थं। (३) ए. कृ. को.-मोरी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुतं नाहरं परिहारं महन्नं । समं पीप संग्राम साहं गहन्नं ॥
बरं बारडं मंडनं देवराजं । रनं अचलं पाय अचलेस साजं ॥
छं० ॥ १२५ ॥

चल्यौ कच्चराराव चालुक्क वंभं । सुतं भीम संगं सदा देव संभं ॥
कमधज्ज आरज्ज आहं कुमारं । भरं भीम चालुक्क बीरंबरारं ॥
छं० ॥ १२६ ॥

गनै लष्षनं लष्ष बघ्घेल एकं । सुतं पूरनं[1]सूर बंदै सुतेकं ॥
परीहार तारन्न तेजल्ल डोडं । अचल्लेस भट्टी अरीसाल सोढं ॥
छं० ॥ १२७ ॥

बड़गुज्जरं चंद्रसेनं सुधीरं । सुतं कठ्ठियं सिंघ संग्राम बीरं ॥
विजैराज बघ्घेल गोहिल्ल चाचं । लषंनं पवारं नही कूर राचं ॥
छं० ॥ १२८ ॥

भरं रंघरी ध्रम्म सामंत पुडीरं । भिरै सूर भग्गै नहीं सारभीरं ॥
कमध्धज्ज जैसिंघ पुंज पहारं । भरं भारथंराय भारथ्थ भारं ॥
छं० ॥ १२९ ॥

सुतं जागरं केहरी मल्हनासं । बँधंनौरवं कट्ट संग्राम बासं ॥
चल्यौ टांक चाटा सु रावत्त राजं । हरी देवतीराइ जादों सु जाजं ॥
छं० ॥ १३० ॥

बली राइ कच्छं [2]ओहट्टी गँभीरं । हुअं हाहुलीराव सथ्थं हमीरं ॥
पहू पुहकरंराव कन्हं सुराजं । दलं दाहिमा जंगली राय साजं
छं० ॥ १३१ ॥

मुषं पंच पंचाइनं चाहुआनं । सुअं पारिहारं रनंबीर रानं ॥
रसं सूर सामंत सथ्थं ससष्षं । बरं लष्षियै एक एकं मुलष्षं ॥
छं० ॥ १३२ ॥

हनूफाल ॥ इक सेवक छिंगन कंन्ह तनौ । निरष्षे कविचंद पुरष्ष घनौ ॥
छह अग्गर सुभ्भट सत्त जुतं । कनवज्ज चल्यौ न्टप सोमसुतं ॥
छं० ॥ १३३ ॥

(१) ए. कृ. को.-पूर (२) के. एहट्टी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का जमुना किनारे पड़ाव डालना।

कवित्त ॥ तट कालिंदी तीर। कियौ मुक्काम दिलेसुर ॥
अवर सूर सामंत। सब्ब उत्तरे आय तुर ॥
समै निसा निज सिवरि। बोल सामंत सूर सब ॥
मधूसाह परधान। राज उच्चैर सूर तब ॥
तीरथ बन अंतर धरिय। अंतर बेध सुगंग धर ॥
आवासि मंत कारन सुनहु। चलौ सुभट्ट समंग भर ॥छं०॥१३४॥

दूहा ॥ तट कालिंद्री तहँ विमल। करि मुकाम न्टप राज ॥
सथ्थ सयन सामंत भर। सूर जु आये साज॥ छं० ॥ १३५ ॥

कवित्त ॥ अप्प जाति विन सब्ब। चले सामंत सथ्थ तब ॥
पहु निकट्ट कनवज्ज। ताहि प्रछन्न गवन कब ॥
मधूसाह गुरराम। रहे दिल्ली रह कज्जं ॥
गुर वीठल समदेव। अनुज रामह सथ सज्जं ॥
अह अट्ट राज आवागमन। सजौ सेन सथ्थें सुविधि ॥
कज दान द्रव्य गंगह सजौ। जिम सिभ्भै तीरथ्थ सिधि ॥
छं० ॥ १३६ ॥

जमुना के किनारे एक दिन रात विश्राम करके सब सामंतों को घोड़े आदि बांटकर और गढ़रक्षा का उचित प्रबन्ध करके दूसरे दिन पृथ्वीराज का कूच करना।

दूहा ॥ [1]किय आयस संभरि स पहु। सुनौ सगुर बर साह ॥
सत क्रम्मेलक सथ्थ घन। सजौ सक्क मन राह ॥ छं० ॥ १३७ ॥
एकादस सर एक न्टप। सौ सामंत छ सूर ॥
दिसि कनवज दिल्ली न्टपति। चैतह वज्जि [2]स तूर ॥ छं०॥ १३८ ॥

कवित्त ॥ पारिहार रनबीर। राज अग्गें आभासिय ॥
प्रछन्नह कनवज्ज। तिथ्थ संक्रमन सु भासिय ॥

(१) मो.-कार (२) मो..सनूर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साज सव्व बर [1]तास। भरौ वासन द्रव रज्जिय॥
अवर सब्ब परिहार। काज भोजन सथ सज्जिय॥
साहनी सद्दि जगमाल तहँ। देहु सबन सामंत हय॥
सारह्र सित्त तेजक हय। सजे सब्ब परकार तय॥ छं०॥ १३९॥

दूहा॥ बोलि साहनी सोच मन। दल लष्षन अस लज्ज॥
सामंतन कारन विल्हन। समपि समर जस कज्ज॥ छं०॥ १४०॥

प्रथम संबोधे सथ्थ सह। सुत दुज रष्षे साह॥
जाम सेष रजनी चल्यौ। सिलह सु सज्जी ताह॥ छं०॥ १४१॥

पृथ्वीराज का नाओं पर यमुना पार करना।

इन प्रपंच भुअपति चल्यौ। अरु कविचंद अनूप॥
जमुना [2]नावनि उत्तरिय। निकट महल अनुरूप॥ छं०॥ १४२॥

पृथ्वीराज के नांव पर पैर देते ही अशुभ दर्शन होना।

कवित्त॥ चढ़त राज प्रथिराज। सगुन भय भीत उपन्नौ॥
स्याम अंग तन छिद्र। कलस संमुह संपन्नौ॥
एक अंग तिय सकल। एक आभेस भेस बर॥
एक अंग शृंगार। एक अंगह सुंदर [1]नर॥
दिष्षी सु नयन राजन रमनि। पुच्छि वत्त धारह धनिय॥
शृंगार बीर दुअ संचरहि। अब्बूवै अप्पन भनिय॥ छं०॥ १४३॥

नांव से उतरने पर एक स्त्री का मिलना।

दूहा॥ तीन बंधि भुअपति उभय। अरु कविचंद अनूप॥
जमुन उत्तरि नावह निकट। मिलिय महिल इन रूप॥छं०॥१४४॥

उक्त स्त्री के स्वरूप का वर्णन।

कवित्त॥ पानि नाल दालिमी। हास मुष नैन रोस निज॥
उरसि माल जा फूल। कमल कनयर सिरसी रज॥

(१) ए. कृ. को.-ताह। (२) मो.-नावसु।
(१) ए. कृ. को.-बर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाम हेम आधंन। लोह दच्छिन दिसि मंडिय॥
अद्ध केस सलवंध। अद्ध [1]मुकलित तिहि छंडिय॥
विपरीत पीत अंबर पहरि। पिष्षि राज अचरिज्ज करि॥
किन महिली किन घर न सुवर। किन सु राज अरधंग धरि॥
छं० ॥ १४५ ॥

हनूफाल ॥ मिलि महिल सगुन सरूप। द्रग अप्प निरषत भूप॥
दछि दोर नालि सु लीन। कर वाम समकर भीन॥ छं० ॥ १४६ ॥
अधकेस मुकुलित संधि। [2]अध कुंत लंकल बंधि॥
अवतंस इक श्रव स्रोन। दिसि कंक आसिय वोन॥ छं० ॥ १४७ ॥
द्रिग वाम अंजन दीन। दछि नेंन नागवि कीन॥
सल वाल भाल सुपत्ति। परसात कंकि [3]षत्ति॥ छं० ॥ १४८ ॥
मुष हास नेन विरोस। [4]नासाग्र उग्रन जोस॥
कर रतन दच्छिन राज। पहु पानि वल्लिय बाजि॥ छं०॥ १४९ ॥
मुकतावली अध सेत। अध साल माल मवेत॥
दुति बरन भूषन रूप। जालंक कलसा नूप॥ छं० ॥ १५० ॥
अधसेत आसुरि स्याम। रत पीत अंबर काम॥
मुर गुनिय जा तिल तंत। सिर कमल कल हय यंत॥ छं० ॥ १५१ ॥
तंडीव तरल तरंग। जालंक तंड सुरंग॥
अध मत्त गवन अनूप। अध चंचलं मद ऊप॥ छं० ॥ १५२ ॥
पद जेहरी धरि हेम। क्रम क्रम्यौ उरजत नेम॥
सच साष वाम सु पुल्लि। पद दच्छिनी क्रत गुल्लि॥ छं० ॥ १५३ ॥
को महिल को वर गेह। पुछि राज अचरिज एह॥
.... । .... ॥ छं० ॥ १५४ ॥

राजा का कवि से उक्त महिला के विषय में पूछना।

दूहा ॥इहि बिधि नारि पयान मिलि। मुष कल रत्त फुनिंद॥
उद्दिम आदर चलिय नृप। तव नह वुभ्भिय चंद॥ छं० ॥ १५५ ॥

(१) मो.-मुक्कित बर। (१) ए. कृ. को.-धर।
(२) ए. कृ. को.-पत्ति। (३) ए. कृ. को.-नासाग्र उग्र उग्गन जे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

*कहै चंद न्टप ईस सुनि। दरस देवि दिय तोहि ॥
जगि भंजि अरि गंजिकै। दुलह संजोगिय होइ ॥ छं० ॥ १५६ ॥

राजा का कविचंद से सब प्रकार के सगुन असगुनों का फल वर्णन करने को कहना।

बहुरि सगुन राजन्न हुअ। फल जंपै कविचंद ॥
उत्तिम मद्धिम विवह परि। कहि समझावत [1]छंद ॥ छं० ॥१५७॥
पद्धरी ॥ चहुआन चवै सुनि चंद भट्ट। संक्रमन [2]मग्ग उछ्छंग थट्ट ॥
तुम लहौ अर्थ विद्या सु सार। जंपौ सु सगुन सब्बै प्रचार ॥
छं० ॥ १५८ ॥

कविचंद का नाना प्रकार के सगुन असगुनों का वर्णन करना

कविचंद कहै सुन दिल्लिराज। विधि कहौं सगुन सब्बें सु साज ॥
दष्षिनहि वादि वामंग वादि। सम थान देवि उत्तिम उमादि ॥
छं० ॥ १५९ ॥
अति बृद्धि रिद्धि [3]अष्षै सु लोय। जस कुसल सुफल पंथी सजोइ ॥
सुर दून तीन दाहिनी देय। वर्ज्जंत गमन पथिकं परेय ॥
छं० ॥ १६० ॥
मंडलह स्हर तरि संझ सद्दि। मुक्कंत सीम पंथिक परद्धि ॥
बायंब हुंत दष्षिन प्रवेस। ताराय ताम जंपे सु तेस ॥
छं० ॥ १६१ ॥
एकीक कुसल दुअ कुसल काज। [4]तीसरी होत फल रिद्धि राज ॥
दाहिनी हुंत दिसि वाम आय। पंथी गवंन वरजंत ताइ ॥
छं० ॥ १६२ ॥
दूसरी घात बंधनह व्रत्त। तीसरी गवन [5]सूचंत म्रत्त ॥
ताराय उंच फल उंच [6]देस। मद्धिम्म अधम अद्धी सु [7]तेस ॥
छं० ॥ १६३ ॥

*यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है। (१) ए. कृ. को.-चंद।
(२) ए. कृ. को.-लग्ग। (३) ए. कृ. को.-अप्पै। (४) ए. कृ.-नीसरी।
(५) मो.-सयूंत। (६) ए. कृ को.- देह। (७) ए. तेयं। को. मो. नेस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दष्षिनी सगुन सुर दष्षि चारि। बांईय वाय प्रसरंत रारि॥
कारज्ज सिद्धि सूचंत ताम। विपरीत सुफल विपरीत काम॥
छं०॥ १६४॥

सुर एक एक कंटक अरोहि। अंगार तूर भसमं वरोहि॥
सूकें सु कठ्ठ गोवर सु हंडि। आहुट्ठि सद्दि गुनयंग छंडि॥
छं०॥ १६५॥

उत्तरै तार सद्दै सु सद्द। पूरन्न चित्त कारिज्ज मंद॥
आवंत होय जो ग्रेह नाम। वांईय सद्दि सिद्धंत काम॥
छं०॥ १६६॥

केदार कूप नै तट्टवाय। परहरै सिद्ध वंछै सु जाय॥
तीतरह षरह नाहर जंबूक। सारस्स चिल्ह चाचिग अलूक
छं०॥ १६७॥

कपि कंठनील सुक सद्धि नाम। दिस संति सुष्ष पूरंतवाम॥
पंचाइन दिस दाहिन प्रचार। साद्दंत अर्थ दष्षित सचार॥
छं०॥ १६८॥

सूचंत सुभय दारुन्न सथ्थ। पति सथ्थ निद्धि निंदं अतिथ्थ॥
चै पंच सत्त एकं उभार। पहु काल म्रग्ग दाहिन सुचार॥
छं०॥ १६९॥

भोजनं पच्छ वाईय माल। पूरंत अर्थ अर्थीव ढाल॥
एकलौ असित म्रग जम्म रूप। बूडंत किरनि अंतकह जूप॥
छं०॥ १७०॥

निक्काम सगुन जो होइ सिद्धि। प्रावेस सोय विपरीत रिद्धि॥
सद्दै जो सिवा सद्दह कराल। वाईंय दिसा सुभ भेव ढाल॥
छं०॥ १७१॥

चाचिग्ग निकुल अज भारद्वाज। चामर सु छत्र वीणा सवाज॥
भृंगार बार विरही कनक्क। दुर्वारु[1] दद्धि सुरसुर[2] धनंक॥
॥छं०॥१७२॥

(१) ए. कृ. को.-दुर्वास। (२) मो.-सुरि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रुप्पन कलाल वेसार गज्ज । [1]सारन्न सिद्धि अष्षै सुरज्ज ॥
मूषक करम्भ गोधह भुअंग । .... छं० ॥ १७३ ॥
अंगार कच्च भसमंग पास । गुड़ लवण तक्र गोबर दुरास ॥
[2]प्रवरज्ज अंध मूकंत केस । गरदम्भ रूढ़ तजि अंदेस ॥
॥ छं० ॥ १७४ ॥
प्रनयाम पंच छह करहि जाम । या दुष्ट सगुन छंडै सु राम ॥
सागुन्न पुरिष सह वाम नाम । त्रिय नांम सुम्भ दच्छिनह ताम ॥
॥ छं० ॥ १७५ ॥

दूहा ॥ बनबिलाव घूघू घरह । परत परेव पंडूक ॥
एक थान दष्षिन दिसह । कहिय न श्रवन समूक ॥ छं० १७६ ॥
रासभ उभय कुलाल करि । सिर वंधन निस भारि ॥
वाम दिसा संमुह मिलिय । अवसि होइ प्रभु रारि ॥ छं० ॥ १७७ ॥
अतिलक बंभन स्याम असु । जोगी हीन विभूति ॥
संमुह राज परष्षियै । गमन वरज्जै नित्त ॥ छं० १७८ ॥
सिर पंछी दच्छिन रवै । वामी उवहि सियाल ॥
मृतक रथी समुंह मुषह । कीजै गवन न्रिपाल ॥ छं० ॥ १७९ ॥
कलस केलि उज्जल वसन दीपक पावक मच्छ ॥
सुनिय राज बरदाय भनि । एह सगुन अति अच्छ ॥ छं० ॥ १८० ॥
राज सगुन संमूह हुअ । धुअ तन [3]सिंघ दहारि ॥
मृग [4]दच्छिन छिन छिन षुरहि । चलहित संभरिवार
॥ छं० ॥ १८१ ॥
सुनत सीस [5]सारस सबद । उदय सुबद्दल भान ॥
परनि भाजि प्रतिहारसौ । करहित काज प्रमान ॥ छं० ॥ १८२ ॥
कल कलार सद्यो समुह । हसि न्रप बुझ्झयौ चंद ॥
इक रवि मंडल भेदि है । इक करिहै आनंद ॥ छं० ॥ १८३ ॥

(१) ए. कृ. को.-साहसन । (२) ए. घवरज्ज ।
(३) मो. "सिंघह" । (४) मो. दष्षिन षिन षिन ।
(५) ए. कृ. को.- सारद ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि का कहना कि आप सफल मनोरथ होंगे परंतु साथही हानि भी भारी होगी।

एक करहि ग्रह नंद वह। इक छिन [1]भिन्न सरीर ॥
इक भारथ्थ सु जीतिहै। जे वज्रंग सु बीर ॥ छं० ॥ १८४ ॥

यह सुन कर पृथ्वीराज का कैमास की मृत्यु पर पश्चाताप करके दुचित्त होना।

सुबर बीर सोमेस सुअ। गुन अवगुन मन धारि ॥
दुष अति दाहिम्मा दहन। मरन सु मंगल रारि ॥ छं० ॥ १८५ ॥

सामंतों का कहना कि चाहे जो हो गंगा तीर पर मरना हमारे लिये शुभ है।

सम सामंतन राज कहि। पहु परमारथ मत्ति ॥
समर तिथ्थ गंगा उदक। उभय अनूपम गत्ति ॥ छं० ॥ १८६ ॥

वसंत ऋतु के कुसमित वन का आनंद लेते हुए सामंतों सहित राजा का आगे बढ़ना।

रति माधव मोरै सु तरु। पुहप पच बन बेलि ॥
राज कबी करतह चले। सम सामंतन केलि ॥ छं० ॥ १८७ ॥

राजा के चलने पर सम्मुख सजे बजे दूलह का दर्शन होना।

कवित्त ॥ चलत मग्ग चहुआंन। जांम पिगीय पहु निकरि ॥
सजि दुल्लह सनमुष्ष। सुमन सेहरौ सीस धरि ॥
सजे पिठ्ठ वामंग। रंग निज नेह प्रकम्मे ॥
पिष्षि राज प्रथिराज। मन्नि सा सगुन सु [2]म्रम्मे ॥
उदयंत दिवाकर चीय मिलि। सुभट अंत किय जुद्ध जुरि ॥
जय जंपि सध्य साहा गवन। बज्जे बज्जनि [3]सिंधु सुर ॥छं०॥१८८॥

(१) ए. कृ. को.-भीन। (२) को.-भ्रंमे। (३) मो.-सिधुसुरन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगे चलकर और भी शकुन होना और राजा का मृग को वाण से मारना ।

बाग षंचि दिल्लीस । जाम उभया षिन उत्तरि ॥
दिसि दाहिनि सजि द्रुग्ग । बास वित्ती तर [1]उप्परि ॥
दिसि बाईं बर सद्दि । भसम उप्पर आरुन्नी ॥
ताम तंमि उत्तरी । इष्षि राजन सरसम्मी ॥
एकल्ल मृग्ग सन्हौ मिल्यौ । हयौ राज रुंधेव सर ॥
उत्तरी ताम देवी दुहर । देषि सर्व दुम्मन्न भर ॥ छं० ॥ १८६ ॥

और भी आगे चलने पर देवी के दर्शन होना ।

चल्यौराज प्रथिराज । उभय षिन तथ्थ विलंबे ॥
मिलि संमुह जुग्गिनिय । दरस दीये न्रप अंबे ॥
कर षप्पर तिरसूल । सवद उच्चरि जय जंपे ॥
मधि षप्पर [2]धरि हेम । प्रनमि राजंग पयंपे ॥
साकत्ति सज्जि हय हंकि सब । अवर वारि आरोहि चिय ॥
ग्रह जाइ अप्प अपगुन किये । मिलिय राज सा संमुहिय ॥
छं० ॥ १९० ॥

इसी प्रकार शुभ सूचक सगुनों से राजा का बत्तीस कोस पर्य्यंत निकल जाना ।

दूहा ॥ इन सग्गुन दिल्लिय न्रपति । संपत्तौ भूसाम ॥
कोस तीस दुअ अग्गरौ । कियौ मुकाम सु ताम ॥ छं० ॥ १९१ ॥

एक रात्रि विश्राम करके पृथ्वीराज का आगे चलना ।

सद्दि राज रनबीर तहँ । किय भोजन सु उताम ॥
सब आहारे अन्न रस । चल्या जाम निसि जाम ॥ छं० ॥ १९२ ॥
अरिल्ल ॥ किय भोजन सबसथ्थ व्रहासन ग्रास दिय ।
तिथ्थि चवथ्थिय सोम जाम इक नींद लिय ॥

(१) ए. कृ. को.- उत्तरि । (२) मो.-पर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुनि चढ़ि चल्यौ राज न बुझ्झयौ कोइ ब्रत्त।
नट्ट सु वुझ्झै राज समज्जि न अष्षि व्रत्त ॥ छं० ॥ १९३ ॥

उक्त पड़ाव से राजा का चलना और भांति भांति के भयानक अपशगुन होना।

भुजंगी ॥ चल्यौ राज प्रथिराज कनवज्ज राजं। लिए सहस एकं सतं एक साजं॥
रवीवार वारं तिथी ताइ रूपं। सवं इन्द्र जोगं छठं राह रूपं॥
छं० ॥ १९४ ॥
दुरं वार आकास वाअंक लज्जी। दुहूं पष्प नीचं सवं दाव नज्जी॥
मिली नारि पंचं सिरं कुंभ धारी। मुरी मध्य विद्दी उभै रूपकारी॥
छं० ॥ १९५ ॥
न्वपं जोग तीरं जु जै जै करंती। दई दच्छिनं वाम पंषी फिरंती॥
मिल्यौ रूपराअं करै सद्द वामं। गरज्जंत मेघं अकालं सु तामं॥
छं० ॥ १९६ ॥
सुवं अग्गि झालं मृतं कास उट्ठी। वन्नैजा करीरं मुषं मंस छुट्टी॥
लियं मंस गिद्धी उषं हंनि मग्गी। बुलै सारसं वाम कुरलंत डग्गी॥
छं० ॥ १९७ ॥

एक ग्राम में नट का भगल (अंग छिन्न दृश्य) खेल करते हुए मिलना।

कवित्त ॥ चलत मग्ग चहुआन। निकट इक गाम समंतर॥
नट षेलत नाटक्क। भगल मंड्यौ भ्रम तंतर॥
सत्त संगु उप्परै। नट्ट सुत्तौ जय जंपत॥
कहुंत सीस कहुं पानि। धरनि धर पर्यौ सु कंपत॥
इह चरित्त पिष्षि सामंत सब। अप्प चित्त विभ्रम लहै॥
पिष्षंत परसपर मुष [1]सकल। नको बुझ्झ राजन कहै॥छं०॥१९८॥

(१) ए. कृ. को.- सपल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैतराव का कन्ह से कहना कि राजा को रोको यह अशगुन भयानक है। कन्ह का कहना कि मैं पहिले कह चुका हूं।

इक कहै कोइ तिथ्य। कवन थानक को देवह ॥
जिहि असगुन चल्लियै। कोइ न जानै यह भेवह ॥
कहिय जैत सम कन्ह। तुमहिं रष्षौ कहि राजन ॥
कहै कन्ह नन लही। प्रथम बरज्यौ बहु जाजन ॥
पज्जून कहै बुझझहु [1]सकल। इह अवस्य कनवज क्रमै ॥
जानै सुभट्ट कारज सयल। मति सु कोइ चिंता भ्रमै ॥छं०॥१९९॥

कन्ह का कहना कि कहने सुनने से होनी नहीं टरती।

कहै कन्ह नरनाह। सुनहु कूरंभराव धुअ ॥
जो भविस्य [2]न्निमान। सोइ मिट्टै न मूर [3]धुअ ॥
धरम सुअन [4]क्रत दूत। सोई बरज्यौ नहिं मानिय ॥
जनमेजै कहि जग्य। सु हित निष्षेध न जानिय ॥
सौमित्र बरज्जित राज रघु। कनक मृग्ग संधेव सर ॥
दसकंध [5]निषेधिय मंत्रियन। सीय न अप्पिय काल वर ॥छं०॥२००॥
किय जद्दव त्रिय रूप। श्राप दुर्वास सुधारिय ॥
काल विनस निर्घोष। विप्र वाहै नन हारिय ॥
इहि राजा प्रथिराज। हन्यौ कैमास अप्प कर ॥
भरि वेरी चामंड। किये दुम्मन सब्ब भर ॥
इह गमन भट्ट बुझझै न्रपति। करै कहा सुझझै न मन ॥
उप्पजी कोइ क्रत्या अतुल। सोइ प्रहचिय राज म तन ॥ छं० ॥२०१॥
*वार सोम पंचमी। जाम एकह निसि बित्ती ॥
कें दुर्वल वर पट्ट। तहां उतरी न्रप रत्ती ॥

* यह २०२ और २०३ दोनों छन्द मो.-और ए. प्रतियों में तो हैं ही नहीं। कृ. प्रति में लिख कर काट दिए गए हैं।

(१) ए. कृ. को- सयल (२) मो.-निरमान। (३) मो. कृ. ए.-भुअ।
(४) ए. कृ. को.-अम। (५) ए. कृ. को. निषेघन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करि स्तुति सब सथ्थ। अस्व तजि नींदह ग्रासं॥
घटी पंच निसि ग्रेष। सु पहु चल्यौ चढ़ि तासं॥
पत्तौ सु जाय संकरपुरह। दिवस अंत बरथान नय॥
आहारि अन्न आसन्न सय। सब बुल्ले सामन्त तय॥ छं०॥ २०२॥

पृथ्वीराज का सब सामंतों को समझाना।

इह जंपी प्रथिराज। करिव अस्तुति सामंतं॥
धरि छग्गर कविचंद। महल दिष्षन मन संतं॥
जब जानौ युध समय। तुम्है सब काम सुधारौ॥
मो चिंता मन मांहि। होय तुमतैं निसतारौ॥
संभलिव सकल सामन्त मत। भयौ वीर आभास तन॥
चिंतिय सु इष्ट अप्पान अप। आश्रम्मे सब्बा सुमन॥ छं०॥ २०३॥

पंचमी सोमवार को पहर रात्रि गए पड़ाव पड़ना।

दूहा। जानि सगुन चहुआन नें। मन भावी सो गत्ति॥
मो न मिटै पर ब्रह्म सौं। ब्रह्म चीत भैभित्त॥ छं०॥ २०४॥

सामंतों का कहना कि सब ने हटका पर आप न माने।

[1]सह समद्धि नारंजुलै। सो इच्छिनि मोकल्लि॥
गुरू सज्जन सैसव[2] सु बंध। बरजंतै न्रप चल्लि॥ छं०॥ २०५॥

सामंतों का कहना कि हमें तो सदा मंगल है परंतु आप हमारे स्वामी हो इस लिये आपका शुभ विचार कर कहते हैं।

रवि मंडल भेदै स [3]फुटि। प्रथम चित्त [4]फुनि होइ॥
[5]तन जंपै भट जीह करि। न्रपहि अमंगल [6]जोइ॥ छं०॥ २०६॥

(१) ए. कृ. को.- सम। (२) ए. कृ. को.- सैसव्व।
(३) मो.- फुनि। (४) मो.- पुनि।
(५) मो.- नन। (६) ए. कृ. को.- होइ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रातःकाल पुनः चाहुआन का कूच करना। स्वामी की नित्य सेवा और उनका साहस वर्णन।

पद्धरी ॥ चढ़ि चल्यौ राज चहुआन सूर। त्रिमलिय कित्ति रवि प्रात नूर॥
इक एक वीर दह दहति सूर[1]। देवत्त वाह दुज्जन करूर॥
छं० ॥ २०७ ॥

तिन सथ्थ पंच भर पंच जित्त। सज्जोति सेन सिरदार इत्त॥
इक इक्क संग हुअ दुअन दाह। जनु दार पच्छ बाराह राह॥
छं० ॥ २०८ ॥

सजि चली संग देविय प्रचंड। उनमत्त[2] रूप कर सजे दंड॥
सजि चल्यौ संग भैरू उभंत। सेवक सहाय अरि करत अंत॥
छं० ॥ २०९ ॥

सजि चले दय पंचास बीर। कौतक्क कहल मन हरषि धीर॥
जुग्गिनिय सट्ठि चव चल्लि संग। किलिकिलत काल सम रमन जंग॥
छं० ॥ २१० ॥

भहराति भीत भूतन जमांति। घहराति घोरि सुर प्रेत पांति॥
अनि अन्नि इष्ट सबदेव साधि। चल्ले सुमंच जंचनि अराधि॥
॥ छं० ॥ २११ ॥

अकलंक कंक अनसंक चित्त। रच्चे सु स्वामि सब सेव हित॥
माया न मग्ग जिन चित्त जाइ। पोइनिय पत्त जल ज्यौं जनाइ॥
॥ छं० ॥ २१२ ॥

ऐसे जु सित्त सामंत सूर। उनमत्त अंग जनु नदिय पूर॥
ढलहलिय ढाल मालह सजूर। वस्संत जानि हल्लत षजूर॥
॥ छं० ॥ २१३ ॥

निरषंत नयन तिय तेज ताप। चढ़ि चल्यौ राज चहुआन आप॥
सामंत सूर[3] सूरहि नरंभ। दिष्षियै लाज तिन मुष्ष अंभ॥
॥ छं० ॥ २१४ ॥

(१) ए.- रूर। (२) ए. कृ. को.- उनमत्ते। (३) ए. कृ. को.- सूरद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामंत किरनि प्रथिराज सूर। अरि तिमिर तेज कट्टन करूर ॥
पूहवी न बीर इन समह कोइ। कवि कहै बरनि जौ आन होइ॥
॥ छं० ॥ २१५ ॥

रहि पंड समय भूभार पथ्थ। तिहि काज भयौ अवतार [1]तथ्य॥
भय अभय चिंति हृद सुषहि जोति। उग्गंत हंस छवि जानि होत ॥
॥ छं० ॥ २१६ ॥

इस पड़ाव से पांच योजन चलने पर पृथ्वीराज का कन्नौज की हद मे पहुंचना।

जोजनह पंच गय चाहुआन। पर पुरह जानि उग्गयौ सुभान ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ २१७ ॥

दूहा ॥ पर पुहमी पत्तो सु पहु। उग्ग भान पयान ॥
दल वद्दल सद्दल दिसह। पूरन [2]छयत गयान। छं० ॥ २१८ ॥

एक दिन का पड़ाव करके दूसरे दिन पुनः प्रातः काल से पृथ्वीराज का कूच करना।

उदय हंस सज्जे सगुन। बज्जे अनहद सद्द ॥
दिष्षत दरसन परस तप। पुल्ले दस दिस जद्द ॥ छं० ॥ २१९ ॥

प्रभात समय वर्णन।

कवित्त ॥ [3]चढ़ि चतुँरग चहुआन। राइ संभरिय सुयंभर ॥
सकल सूर सामंत। मंत भंजन समथ्थ वर ॥
पर अहंल सम समय। होत सक्कुन कुल सोरं ॥
वज्जि पंचजन देव। सेव अंबर [4]मग ओरं ॥
जल पात जात मिलि विच्छुरत। रोर अलिन सल्लिन सुषद ॥
[5]लंपट कपाट विट चिय तजत। तम चर चर कीनी मुषद ॥
छं० ॥ २२० ॥

(१) मो.- पिथ्थ। (२) ए. कृ. को.-सयत। (३) ए. कृ. को.-चढ़ि चतुरंग चतुरंग।
(४) ए. कृ. को.- मन। (५) मो.-लंपट किपाट विट चिय तजन। चम चर चर कीनी मुखद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

पद्धरी ॥ तव सज्जि सुदल विद्दल विसाल। पूरंन [1]गेन मूरंन [2]भाल ॥
[3]डंबरिय धरनि आरोह गेंन। दिसि विदिसि पवनपरसंत[4] ऐन ॥
॥ छं०॥ २२१ ॥

सामंत सूर हैवर अरोहि। आक्रत्त [5]क्रत्त मलि अगम सोह ॥
ढलवोय पीय ढलकंत ढाल। दधि झाल पलव वैरष विसाल ॥
॥ छं० ॥ २२२ ॥

हय हींसधरा षुर विहर बाह। तारच्छ सु तन अंतर उलाह ॥
ऐसे सुबीर दिन[6] विषम धार। अरि अंब[7] अचन अग्गथि करार ॥
॥ छं० ॥ २२३ ॥

चहुआंनभान अरि तिमिर तार। मानंत सूरकरिकर प्रचार ॥
दरसंत परसपर सुभट नैन। सौभंत भंति तन धरिग्ग मैन ॥
छं० ॥ २२४ ॥

विहँसत विहाय सथ्थान थान। सतपच फुल्लि मिलि भ्रमर मान॥
छूटंत गंधि [8]मिलि मंद वात। मिलि चले भ्रमर परसन्न सुधात ॥
॥ छं० ॥ २२५ ॥

परजंक प्रीय नह तजत प्रौढ़। नव पंज रंज [9]तल मलत मौढ़॥
सद्दंत चक्र साहीत बैन। अनुभान मत्त क्रम छंडि सेन॥
॥ छं० ॥२२६ ॥

दिसि विदिसि नयन परसान करंत। रसना रसान हरि वर धरंत॥
संफटि तमाघ [10]तिमरनि तरार। अंजनह नगर उठि पवन धार॥
छं०॥ २२७ ॥

संभरिय राय संभरि सु [11]माम। अवलोक देव बंदन सु राम ॥
.... । .... छं० ॥ २२८ ॥

(१) ए. कृ. को.-गौंन। (२) । ए.-भूरंत। (३) मो.- डम्मरि।
(४) मो. पसरंत। (५) ए. कृ. को.-क्रम्म। (६) मो.-निरमले।
(७) ए. कृ. को.-मो. अचपन। परंतु अक्षर बढ़ता है। (८) ए. कृ. को.-जागि।
(९) मो.-नल। (१०) ए. कृ. को.-नमूनि। (११) मो.-राम, को. कृ.-समान।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ है सजि संभरि राय। चढ़िव चौहान प्रनं मन ॥
क्रमत मग्ग पिंगलह। मान उद्यान विषंनन ॥
नैंन दरसि दिसि विदिसि। निंद सभगिय पल्ल अंगन ॥
अवलाकित दिन लोक। लोकनर वर है दंगन ॥
दिष्षियै बदन दूलह हगनि। सदन रंग [1]दुलही क्रमत ॥
बंदेवि पाय निंदे अगुन। फल सुभाव अंबर प्रमत ॥
छं० ॥ २२९ ॥

वन प्रान्त में एक देवी का दर्शन करके राजा का चक्रितचित होना।

दूहा ॥ बन सु थान इक देवि मिलि। संग स्वान गन माल ॥
जट विभूति कर कंबयनि। लषि अचिज्ज भूपाल ॥ छं० ॥ २३० ॥

देव का स्वरूप वर्णन।

हनूफाल ॥ जट विकट सिर जट जूट। श्रव सचिय मुद्र विनूट ॥
चरचर्य्य चरचित अंग। द्रग दिपै लोल सुरंग ॥ छं० ॥ २३१ ॥
गर गुंज गुंथित बंध। बनि सेत नेत सुकंध ॥
सजि पानि तानि कराल। सँग रंग स्वानह माल॥ छं० ॥ २३२ ॥
रव हक्क गज्जत गन। लघु दिग्घ चुट्टत बैंन ॥
हिय रत्त स्याम सु थान। कटि नील पीत उरान ॥ छं० ॥ २३३ ॥
भुज गेंन [2]रंग रसाल। कंबु ग्रीव [3]पीत सु आल ॥
श्रव सेत भ्रूव स भूर। लिल्लाट केसरि नूर ॥ छं० ॥ २३४ ॥
तन रंग नान प्रकार। चर चरन रंग सु चार ॥
नष नील घन परवान। मुष मुदित दिष्षि न्रपान ॥ छं० ॥ २३५ ॥
कविचंद दीन असीम। हसि जंपि नंमिय सीस ॥
दिषि दंत नील सुरंग। रसना सुरंग दुरंग ॥ छं० ॥ २३६ ॥
सित असित तन के भाव। सुद देव भूतनि राव ॥

(१) मो.-हुल्ली। (२) ए. कृ. को.-रैंन। (३) ए. कृ. को.-पीतल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा का पूछना कि तू कौन है और कहां जाती है।

किन थान सों गम कीन। किन ठौर पर मनदीन ॥ छं० ॥ २३७ ॥

उसका उत्तर देना कि कन्नोजका युद्ध देखने जाती हूं।

सतिजुग्ग मो पित जुद्ध। रन चिपुर षंड विरुद्ध ॥
त्रता सु रघुकुल राम। हनि लंक रावन ताम ॥ छं० ॥ २३८ ॥
द्वापुर सु अर्जुनराय। [1]घटवंश घल्यौ घाय ॥
कलिजुग्ग कनवज राज। चहुआन कुल [2]प्रथिराज ॥ छं० ॥ २३९ ॥
अच्छौ सु क्रमधज बंस। जुन्हाइ उदर प्रसंस ॥
दिय सुमति ताहि दुसीस। कलिप्रिया नाम सरीस ॥
छं० ॥ २४० ॥
पित पत्ति कुल संघार। सम पानग्रहन सु बार ॥
सो चरित दिष्षन काज। सिव हार कंठ समाज ॥ छं० ॥ २४१ ॥
यह जंपि गवन सु कौन। न्रिप चंद हसि रसभीन ॥
.... । .... छं० ॥ २४२ ॥

पृथ्वीराज का चंद से अपने सपने का हाल कहना

तिघट तीय माया सरिय। द्रिग लग्गिय तिहि काल ॥
सजि संवेग सु सुंदरिय। रचि शृंगार रसाल ॥ छं० ॥ २४३ ॥

पूर्व की ओर उजेला होना, एक सुंदरी स्त्री का दर्शन होना।

हनूफाल ॥ पहु ओर प्रगटि [3]प्रहास। छिन प्राचि ओर उजास ॥
तिहि समय न्रप द्रग लग्गि। तिन मध्य सुपन सुषग्गि ॥
छं० ॥ २४४ ॥

उक्त सुन्दरी का स्वरूप वर्णन।

हिय नेन सेन बिहास। नवरंग नारि इहास ॥
तिहि समय सुभ्रम चंद। मुष अग्ग न्रप बर संद ॥ छं० ॥ २४५ ॥

(१) ए. कृ. को.- वंन। (२) ए. कृ. को.-युगराज।
(३) ए. कृ. को.-प्रकास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कच कुसुमकवरि सुरंग। जनु ग्रसिय [1]इंद उरंग॥
नग मुक्ति सुमन सुभाल। हर रूढ़ कालि कपाल॥ छं०॥२४६॥
मधि भाग केसरि [2]आट। हर इंद तिलक लिलाट॥
श्रुत मंडि कुंडल लोल। रथ भान भंग अलोल॥ छं०॥ २४७॥
[3]भुअ बंक धनु सुरराइ। कर अंचि [4]चाय सुचाइ॥
द्रिग दिपत चंचल चार। अलि जुगल कुसुद विहार॥छं०॥२४८॥
नव नासिका सुकनंद। रति बिंब बढ़िय अनंद॥
तिन अग्र मुकति सु नंद। रस सुक्र ससि नष कंद॥ छं०॥ २४९॥
कल काम आल कपोल। तहँ अलक झलकत लोल॥
[5]दुरि रदन दारिम बीज। रव काल कोकिल सी ज॥छं०॥२५०॥
बनि चिबुक स्याम सु व्यंद। बसि कुमुदनी अलिइंद॥
कलग्रीव रेष सुभेष। हरि कंज अंगुल [6]तेष॥ छं०॥ २५१॥
करकुमुद अमुद अनूप। जटि रतन रूप सनूप॥
कुच मड़ि हार विराज। हरहार गंग जु राज॥ छं०॥ २५२॥
कटि छीन छवि म्रगराज। पचि भ्रंग पीत समाज॥
रचि और कंचन थंभ। लजि दुरिग बुल कल रंभ॥छं०॥ २५३॥
बनि पिंड नारँगि रंग। जनु कनक दंड सुरंग॥
नष चरन बरन अनूप। रवि चंद अंबुज जूप॥ छं०॥ २५४॥
कलहंस गमन विसाल। बरनी सु चंदति काल॥

राजा का उससे पूछना कि तू कौन है और कहां जाती है।

[7]को नाम को तुम मात। को बंध को पित जात॥ छं०॥ २५५॥
जाती सु कोपति थान। किहि आत कून पयान॥
मो देवि पुर जुगिनाथ। मो प्रकृति भिन्न अकाथ॥ छं०॥ २५६॥

(१) ए. कृ.-इन्द्र। (२) ए. कृ. को.-आड़।
(३) मो.- भ्रव वंक धनुष सु राह। (४) कृ. ए. वाय।
(५) ए. कृ. को. रद कनक। (६) ए. कृ.- भेष, को. नेक।
(७) मो. को.-को नाम तम तात को बंध को पित मात॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस सुन्दरी का उत्तर देना।

गाथा ॥ पयं पीयं गत नयं। घट्ट कट्टंति स्हरयं ॥
भरता पित कुल बद्धं। स्रापं सुमंतयो मुनी ॥ छं० ॥ २५७ ॥
कलह प्रिया सो नामं। मंजु घोषापि रंभया सोरं ॥
समरस्य जग्य समये। प्रछन्नं कथितं मया ॥ छं० ॥ २५८ ॥

कवि का कहना कि यह भविष्य होनहार का आदर्श दर्शन है।

दूहा॥ पल प्रगट्टि कवि चंद सों। कह्यौ कौन इह भाव ॥
कह्यौ जु इह ह्वै है अवसि। सुन डंकिनिपुर राव ॥ छं० ॥ २५९ ॥

भविष्य वर्णन।

कवित्त ॥ कहर कंक कल कलिय। भार फनिमन कर भज्जिय ॥
सजिय सेन चहुआन। किन्न कारन अरि कज्जिय ॥
अप्प अप्प सजि इष्ट। चलै जैचंद सभानन ॥
बर अप्पन चौसट्ठि। करह सो कर दैवानन ॥
रुधि गहन पच दारुन दिवहि। चंद भट्ट आसिष्य दिय ॥
सुर करिय कित्ति भय भीत भर। करन छत्त आगम कहिय ॥
छं० ॥ २६० ॥
चिहुर बंध बंधियहि। काल षड्डियहि कुलाहल ॥
.... । ... . ॥
अधर पाइ धर धरनि। कंठ रुधि पियै सु नड्डिय ॥
मनो पुज्ज प्रति पाउ। पच पचन उरि लड्डिय ॥
संजोग व्याह [१]विध जोग सुनि। चलत राह उद्यान मग ॥
रन राग रंग पचन भरन। दुरति रूप दानव सु द्रग ॥छं०॥२६१॥

देवी का पृथ्वीराज को एक बाण देकर आप अलोप होजाना।

एन बान असुरान। भिरन महिषासुर भग्गिय ॥
एन बान राषिसन। राम रावन्न उछग्गिय ॥

(१) ए. कृ. को. जुध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एन बान कौरव ममथ्थ। पथ्थ भर करन पछारिय ॥
एन बान संकर सुभग्ग। त्रिपुरारि सु पारिय ॥
इन बान पराक्रम बहु करिय। सजिय हथ्थ चहुआन वर ॥
इन बान मारि पंगुर पिसुन। करन कंक चल्लै कहर ॥छं०॥२६२॥

पृथ्वीराज को शिवजी के दर्शन होना और शिवजी का राजा की पीठ पर हाथ देकर आशीर्वाद देना।

चलत मग्ग चहुआन। भान सम देखि भयंकर ॥
गिर तरु लग्गिय गेन। षलन षंडन तरु षंषर ॥
वैल गैल जट जूट। पिट्ठ तठ काम विराजै ॥
गंग उदक उच्छरै। सार चंमर सिर राजै ॥
जब चष्ष पिष्ष चौहान भट। तब उत्तरि सब भरनि भर ॥
पेषंत पाइ दुज्जन दुसह। धर्‍यौ पिट्ठ सवि अप्प कर ॥छं०॥२६३॥
उदक गंग विभ्भूत। अंग सारंग सुरंगह ॥
बरन अनंत मन हरत। निरषि गिरजा मन रंजह ॥
करी चर्म गरलह विक्रंम। रच्छिस उर दाहन ॥
द्रिग्ग चयन ज्वाला बयन्न। क्रंद्रप्प न मानह ॥
तरु तरुन तार त्रिय बर चसहु। रिसहु सबु चहुआन रषि ॥
भरि भूत धूत दिद्धिय पियह। लिय अग्या सिर नाइ सिष ॥
छं० ॥ २६४ ॥

पुनः पृथ्वीराज का पयान वर्णन।

दूहा ॥ चले राहु पहु फट्टतें। सत सामंत सुराह ॥
मनों पथ्थ भारथ करन। दल कौरव धरि दाह ॥ छं० ॥ २६५ ॥

कन्ह को एक ब्राह्मण के दर्शन होना। उसका कंन्ह को असीस देकर अन्तर्ध्यान होना।

कवित्त ॥ दुज 'उड्डो दल नाह। प्रवल तन जोति प्रगासिय ॥
मुष विड्डी भर कन्ह। मानि अप्पन मन भासिय ॥

(१) ए. कृ. को.-उभ्भौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्रग पट्टिय छुटि पट्ट । लग्यौ उद्योत उरानह ॥
भान रूप भज नाह । दिद्व नाराजी [1]दानह ॥
लगि पाय धाय कर पिट्ठ दियं । मम संके जुद्दह निपुन ॥
फिरि तथ्य विप्र नह [2]पिष्षयौ । तुम हम मंडल रवि मिलन ॥
छं० ॥ २६६ ॥

हनुमान जी के दर्शन होना ।

चलिय अग्ग चहुआन । एक जोजन ता अग्गिय ॥
घटा रूप घन सज्जि । निजरि ता ताहि न लग्गिय ॥
जीह वीज विकराल । धजा घन वद्दल रंगिय ॥
हथ्थ गदा सोभंत । भूत प्रेतह ता संगिय ॥
सामंत राज पिष्षिय सलष । हनूमान चंदह कहिय ॥
बाजंत नद्द विधि विधि वसुह । चह सुबज्जि चंबक दहिय ॥
छं० ॥ २६७ ॥

कविचन्द का हनुमान जी से प्रार्थना करना ।

दूहा ॥ चंद गयौ अग्गें सुवर । तीतन रूप अथाह ॥
हम मानुष्षी मति अधम । करहु रूप कल नाह ॥ छं० ॥ २६८ ॥

लंगरीराव का सहस्रबाहु का दर्शन और आशीर्वाद देना ।

कवित्त ॥ सहस हथ्थ सोहन्न । धूम्र ब्रन्नह मुष मग्गह ॥
आंषि तेज अगि जानि । पानि पलचर [3]ता संगह ॥
धनुष धजा फररंत । हथ्थ डंकिनि फिक्कारै ॥
जै जै मुष उचरंत । सिंह बह वर बक्कारै ॥
लंगोट वंध काया प्रचंड । लोहालंगर समुष करि ॥
धारंत हथ्थ मध्यें धरिय । सासु पंष मध्यें सुहरि ॥ छं० ॥ २६९ ॥

गोयन्दराय को इन्द्र के दर्शन होना ।

जोजन तीन जलद्दि । राय गोयंद सु भारिय ॥
आप इष्ट तन सिद्धि । इन्द्र इंद्रासन धारिय ॥

(१) ए. कृ. को.-दोनह । (२) ए. कृ. को. दिष्षई । (३) ए. कृ. को.-ता रंगह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक कोस आकंप। भद्र जाती उज्जल तन॥
सहस दंत सित हथ्थ। मनो राका जोतिंबन॥
विंमान देव बहु जटित मय। चमर छत्र अच्छरि चलिग॥
गोयंदराव सिर हथ्थ दिय। कहिय तुझ्झ हम ग्रह मिलिग॥
॥ छं० २७०॥

एक बावली के पास सब का विश्राम लेना। कवि को देवी का दर्शन देना।

विबर एक वट मंझ। तास मझ्झह कंदल ग्रह॥
भान तेज [1]भलकंत। आय सेना उत्तरि [2]सह॥
चंद गयो चलि अग्ग। देवि पूजा घन विद्धिय॥
वघ्घ रूप आरोहि। आय उभ्भी हर सिद्धिय॥
मम करहि चंद अंदेस मन। लेय राज संजोगि ग्रहि॥
चौसट्टि सुभर भेटें सुहरि। जय जय करि अपछरि वरहि॥
छं०॥ २७१॥

दूहा॥ चयत दिवस चय जामिनिय। चयत जाम फल उन्न॥
जाजन इक्कत संचरिग। प्रथीराज संपन्न॥ छं०॥ २७२॥

समस्त सैनिकों का निद्रागस्त होना और पांच घड़ी रात से चल कर शंकरपुर पहुंचना।

कवित्त॥ बार सोम पंचमी। जाम एकह निसि वित्तिय॥
के दुब्बल वर पट्ट। तहां उत्तरि पहु रत्तिय॥
करि अस्तुति सब सथ्थ। अश्व तजि नींद सु ग्रासं॥
घटी पंच निसि सेष। सु पहु चढ़ि चल्यौ तासं॥
पत्तौ सु जाइ संकरपुरह। दिवस अंन वर थान नयं॥
आहारि अन्न आसन्न मय। सब बोले सामंत तय॥ छं०॥ २७३॥

(१) को.- झलंत। (२) ए. कृ. को.-तहां।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा का सामंतों से कहना कि मैं कन्नौज को जाता हूं बाजी तुम्हारे हाथ है।

इह जंपिय प्रथिराज। करिव अस्तुति सामंतं ॥
धरि छग्गर कविचंद। महल [1]पिष्षन मन संतं ॥
जब जानौ सुध समै। तुमै सब काम सुधारौ ॥
मो चिंता मन मांहि। होइ[2] तुमतें निसतारौ ॥
संभलत सब्ब सामंत मत। भयौ बीर आभासि तन ॥
चिंतिय सु इष्ट अप्पान अप। आश्रम्मे सव्वां सुमन ॥
छं० ॥ २७४ ॥

दूहा ॥ चयनि जांम वासुर विसरि। घटिग हंस तन रात ॥
जु कछु चष्प इच्छा हुती। सोइ दिष्षौ परभात ॥ छं० ॥ २७५ ॥

कवित्त ॥ कहै राज प्रथिराज। [3]श्रमित सामंत सुरेसं ॥
मो चिंत्यौ तुम कंध। सुनौ कारन क्रत एसं ॥
चितिया दिन वाईम। कोस चौवीस चवघ्घौ ॥
षट चौसह पंचमौ। तीस अठ षष्टि सपघ्घौ ॥
जोजन्न उभय कनवज्ज कहि। इन थानक कमधज्ज अगि ॥
देषनह पंग अभिलास अति। क्रत्य सब्ब तुम कंध लगि ॥ छं० ॥ २७६ ॥

पृथ्वीराज प्रति जैतराव के बचन कि छद्मवेष में आप छिप नहीं सकते।

कवित्त ॥ बद्दल चंद किरन्न। छिपै नन सूर छांह घन ॥
भूपति छिपै न भोग। रंक नन छिपत बसन तन ॥
नाह नेह नह छिपत। छिपै नन पुहप बास तर ॥
कुलट * कुटंब न छिपै। छिपै नन दान अधर धर ॥
छिप्पै न सुभर जुद्धह समै। चतुर पुरष कवितह कह्या ॥
पंमार कहै प्रथिराज सुनि। तू न छिपै छग्गर गह्या ॥ छं० ॥ २७७ ॥

(१) ए. कृ. को.-दिष्षन। (२) ए.-लम।
(३) ए. कृ. को.-सव्व। * कुढ़ंग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामंतों का कन्नौज आकर जयचन्द का दरबार देखने की अभिलाषा में उत्सुक होना।

दूहा ॥ करि अस्तुति सामंत न्रप। जंपि विगति रति बत्त ॥
उतकंठा दिष्षन नयन। कमधज राज दरत्त ॥ छं० ॥ २७८ ॥

मुख्य सामंतों के नाम और उनका राजासे कहना कि कुछ परवाह नहीं आप निर्भय होकर चलिए।

पद्धरी ॥ सुनि तहां सभा र राज बेंन। उब्भरे [1]रोम लग्गे सु गेंन ॥
अप्पानि अप्प [2]दैवत्त चिंत। संमान सुचित चिंते सुचिंत ॥
छं० ॥ २७९ ॥

मंड्यौ सुराज दीवान राज। जानै कि देव देवन समाज ॥
बैठे सु कन्ह गोयंदराज। पज्जून सलष निड्डर समाज ॥
छं० ॥ २८० ॥

पुंडीर चंद तूंवर पहार। जामानिजद्द आजान बार ॥
पंमार सिंह लष्षन वघेल। चहुआन अत्तताई अभेल ॥
छं० ॥ २८१ ॥

वलिभद्रराइ षीची प्रसंग। गुज्जरह कनकरामह अभंग ॥
अनि अन्नि सूर सामंतरेस। बैठ स राज आवरि अस्रेस ॥
छं० ॥ २८२ ॥

हक्कारि चंद बरदाइ ताम। उच्चान मान वर जच्छ ठाम ॥
इह जंपि राज भर सुमत संम। दिष्यौ सपंग [3]दीवान तंम ॥
छं० ॥ २८३ ॥

क्रत काल कव्य लय पान वीर। अवलोकि पंग भर सुभर तीर ॥
सब महिल वरित अन अन्नि रंच। कंधव तंम सोभालि संच ॥
छं० ॥ २८४ ॥

दूहा ॥ [4]विहसि सुभर विकसे सुमन। न्रप न करहु अंदेस ॥
धनि धनि मुष जंपिरू विनय। दिष्षहु महल नरेस ॥ छं० ॥ २८५ ॥

(१) मो.-रोस। (२) मो.-देवान।
(३) ए. कृ.-वंग। (४) ए. विहरि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुच्छ निद्रा लेकर आधीरात्रि से पृथ्वीराज का पुनः कूच करना

मानि मंत सामंत । राज सुष सेन विचारिय ॥
भूम सेज सुष सयन। गंग मंडल वर धारिय ॥
घटिय पंच जुग अग्ग। तलप अलपह आनंदति ॥
फुनि चढ़ि चल्यौ राज। पुरह संकर सानंदति ॥
सुनियै निसान ईसान घन। जनु दरिया पाहार गुरि ॥
निस अद्ध घरिय ऊपर चतुर। पंग सु उत्तरि गंजि धर ॥
छं० ॥ २८६ ॥

दूहा ॥ चढ़त राज चहुआन निस। घोर सपंग निसान ॥
जान कि मेघ असाढ़ सम। उठिय घोर दरसान ॥छं०॥२८७॥
चलत मग्ग संभरि सपहु। सुर बज्जे सहनाइ ॥
रसं दारुन भय संचरिग। घोर गंभीर विभाइ ॥ छं० ॥ २८८ ॥

कवित्त ॥ [1]घटिय च्यार उप्परह। अद्ध जामनिय जरत तम ॥
चढ़िग राज संभरि नरेस। सामंत सकल सम ॥
देवगुरू सप्तमी। अश्वनि अभि जोग प्रमानह ॥
चलत मग्ग अहुआन। [2]गंग मंडल वर थानह ॥
अग्गह सुभट्ट मारग सुमग। कहत कथा जाह्नविय ॥
कलमल बिछोह तन होत जल। जाल बाल चूरन [3]कविय ॥
छं० ॥ २८९ ॥

पृथ्वीराज का कहना कि कन्नौज निकट आया अब तुम भी वेष बदल डालो।

बचनिका ॥ राजा सामंतन सों बोल्यौ। हूं पंगुरे कौ दिवान देषन चल्यौ॥
प्रगट रूए सरूप [4]दुराओ ॥ और सरूप करि साथ आओ ॥
ऐसो कहत सामंतन मानी। सो निसा जुग एक बराबरि जानी ॥

(१) मो.-घरिय। (२) मो.-गगन मंडल वर भानह।
(३) ए. कृ. को. करिय। (४) ए. कृ. को.-दुरावौ आवौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामंतों की तैयारियां और वह प्रभात वर्णन।

पद्धरी ॥ चंपौ सुभोमि कनवज्ज जाइ। दसगुनौ सूर बर चढ़त भाइ ॥
उच्चन्यौ भट्ट कविचंद सथ्थ। दीसई राज रवि सम समथ्थ ॥
छं० ॥ २६० ॥

जिम जिम सु निकट कनवज्ज आय। डरपहि न सूर तिम तिम हढ़ाय ॥
ओपंम चंद जंपी सुराय। बल बंधि पीय संगम दिढ़ाय ॥
छं० ॥ २६१ ॥

उत्तरिय चित्त चिंता नरेस। वेतरहि सूर सुरलोक देस ॥
इक कहत लेंहि बल इंद्र राज। जस जियन मरन प्रथिराज काज॥
छं० ॥ २६२ ॥

कर करहिं सूर अस्नान दान। बर भरत सूरसुनि क्रन निसान ॥
सरबरिय साल बंछहित भांन। मुध बाल जेम इच्छत बिहान ॥
छं० ॥ २६३ ॥

गुरु दयत उदित ञित मुदित इत्त। झलमलिग तार तरु हलिग पत्त॥
देषियत इंद किरनीन मंद। उद्दिमह हीन जिम न्त्रपति चंद ॥
छं० ॥ २६४ ॥

धरहरिग [1]चित्ति सुर [2]सुद्द मुंद। उप्पज्यौ जुद्ध आवद्ध दुंद ॥
पहु फटिग घटिग सर्वरि सरीर। झलकंत कलस दिषि गमन नीर॥
छं० ॥ २६५ ॥

बिरहीन रैंनि छुट्टि [3]मित मान। नष्यंत तोरि भूषन प्रमान ॥
असुवंत अंसु उस्सास आइ। बिरहीन कंत चंदहु बुलाइ ॥
छं० ॥ २६६ ॥

पह फट्टि घट्टि भूषननि बाल। दिसि रत्त दरसि दरसी कसाल ॥
[4]न्त्रिप भ्रंमि गंग सब पुब्ब देस। आरन्न अरिन उत्तरि नरेस ॥
छं० ॥ २६७ ॥

---

* ए. कृ. को.-बल बंधि पिय संग दिन दिढ़ाय। ओपम चंद जांनी समाय।

(१) ए. कृ. को.-वित्त। (२) ए. कृ. को. सद्द।

(३) ए कृ. को.-नमति। (४) को.-नृप भ्रमिग जानि यह पुव्व देस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न्रप भ्रमिग जानि इह पुब्ब देस। अरि नयर [१]नीर उत्तर कहेस ॥
हर सिद्ध दिद्ध कनवज्ज राव। तिन बध्यौ अंग धर ध्रंम चाव ॥
छं० ॥ २९८ ॥

दूहा ॥ यह फट्टिय घट्टिय तिमिर। तमचूरिय कर भान ॥
पहमिय पाय [२]प्रहारनह। उदोहोत असमान ॥ छं० ॥ २९९ ॥
रत्तंबर दीसै सुरबि। किरन परष्यिय लेत ॥
कलस पंग नहिं होय यह। बिय रबि बंध्यौ नेत ॥छं०॥३००॥

सब का राह भूलना परंतु फिर उचित दिशा बांध कर चलना।

रबि तंमुह संमुह [३]उद्यौ। इह है मग्ग समुझ्झि ॥
भूलि भट्ट पुब्बह [४]चलि.य। कहिं उत्तर कनवज्ज ॥ छं० ॥ ३०१ ॥
क[ं]चन फूलिय अर्क बन। रतनह किरनि [५]प्रसार ॥
सु [न] कलस जयचंद घर। संभरि संभरिवार ॥ छं० ॥ ३०२ ॥

पास पहुचने पर पंगराज के महलों का देख पड़ना।

कवित्त ॥ एह कलस कवि चंद। दंद मंद्यौ मुष रव्विय ॥
जग उप्पर जगमगत। [६]भूलि कैलासह छव्विय ॥
जगत पत्ति जग धज्ज। षग्ग कमधज्ज बांहबर ॥
दान षग्ग अनभंग। धजा बिय दान बंधि पर ॥
अभंग अवंग कनवज्ज पति। सुष नरिंद [७]दुनि इंद बर ॥
पाइये बंस छत्तीस तहाँ। नवै रस्स षट भाष गुर ॥छं०॥३०३॥

कन्नौज पुरी की सजावट और सुखमा का वर्णन।

दूहा ॥ गंगा तट साधन सकल। करहि जु भंति अनेक ॥
नट [८]नाटिक संभरि धनौ। बर विष्यात छबि केक ॥छं०॥३०४॥

(१) मो.-जानि। (२) ए. कृ. को.-प्रेहारनल, पहार नर।
(३) ए. कृ. को.-उचौ। (४) ए. कृ. को. चल्यौ।
(५) ए. कृ. को.-प्रचार। (६) ए. कृ. को.-ईस कैलास भुल्लि छवि।
(७) ए. कृ. को.-दुति। (८) ए. कृ. को.-सागर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुजंगी ॥ कहूं संभरे नाथ थट्टे गयंदा । मनुं पिष्षियै रूप ऐराप इंदा ॥
कहूं फेरिहिंत भूप अच्छे तुरंगा । मनों प्रब्बतं बाय बद्धे कुरंगा ॥
छं० ॥ ३०५ ॥

कहूं मल्ल भूदंड ते [1]रोस साधैं । तिकै मुष्टिकं जोर चानूर बाधैं ॥
कहूं पिष्षि पाइक्क बानैत बाधैं । नचैं इंद्र [2]आहेस कै बज्र साधैं ॥
छं० ॥ ३०६ ॥

कहों विप्र उट्ठंत ते प्रात चल्ले । कहूं देवता सेवते स्वर्ग भुल्ले ॥
कहूं जग्य जापन्न ते राज काजैं । कहूं देवात देव न्नित्यान साजैं ॥
छं० ॥ ३०७ ॥

कहूं तापसी तप्प ते ध्यान लागै । तिनं दिष्षियै रूप संसार भागै ॥
कहूं षोड़सा राय अप्पंत दानं । कहूं हेम सम्मान प्रथ्वी समानं ॥
छं० ॥ ३०८ ॥

कहूं बोलही भट्ट छंदं प्रमानं । कहूं [3]औघटं बीर संगीत गानं ॥
कहूं दिष्षि सिद्धं लगी तारि भारी । मनों नैर प्रातं कपाटं उघारी ॥
छं० ॥ ३०९ ॥

कहूं बाल गावैं विचित्रं सुग्यानं । रहै चित्त मोहन्न डुल्लै न [4]पानं ॥
इत चरित पेषंत ते गंग तीरे । स्वयं देषतें पाप नट्ठे सरीरे ॥
छं० ॥ ३१० ॥

पृथ्वीराज का कवि से गंगा जी का माहात्म पूछना ।

दूहा ॥ कह महंत दरसंन तिन । कह महत तिन न्हान ॥
कह महंत सुमिरंत तिन । कहि कविचंद गियान ॥छं०॥३११॥

कवि का गंगा जी का महत्व वर्णन करना ।

गाथा ॥ जो फल नीरह नयनं । जो फल गुनी गाइयं गेयं ॥
सोइ फल न्हात सरीरं । सोइ फल पीयंत अंजुलं नीरं ॥
छं० ॥ ३१२ ॥

(१) सरों । (२ ए. कृ. को.-आसेह ।
(३) ए. कृ. को.-देवान । (४) मो.-औपटं ।
(५) ए. कृ. को.-प्रानं । *छन्द ३१२ मा.-प्रीते में नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जं जय भाव सु बुद्धं । तं तं कहियंपि सुंदरी कथ्थं ॥
मह्लिान बाल अच्छं । सामं घनं सोभियं सारं ॥ छं० ॥ ३१३ ॥

पुनः कवि का कहना कि गंगास्नान कीजिए।

अरिल्ल ॥ जं तं न्हान महातम जानौं । दरसन तंत महंत बषानौं ॥
सुमिरन पाप हरै हर गंगे । सो प्रभु आज परस्सहु अंगे ॥छं०॥३१४॥

सब सामंतों सहित राजा का गंगा तीर पर उतरना।

कवित्त ॥ अंबुज सुत उमया विलोकि । वेद पढ़त षलि बीरज ॥
सहस बहत्तरि कुँअर । उपजि भोजंत गंगा रज ॥
आभूषण अंबर सुगंध । कवच आयुध रथ संतर ॥
रविमंडल के पास । रहत चौकी सु निरंतर ॥
चहुवांन चमूं तिन समर जत । सु कविचंद ओपम कथिय ॥
सामंत सूर परिगह सकल । उतरि तट्ट भागीरथिय ॥छं०॥३१५॥

कवि का गंगा के माहात्म्य के संबंध मे एक पौराणिक कथा का प्रमाण देना।

साटक ॥ सोरंभं कमलं तज्यौं न मधुपं, मध्ये रह्यौ संपुटं ॥
सो लैजाय सरोज संकर सिरं, चढ़ाइयं अच्छरी ॥
सिंघं तंत स उप्परं घट भरे, गंगा जलं धारयं ॥
बारं लग्गि न चंद कव्वि कहियं, संभू भयौ छप्पयं ॥ छं०॥३१६॥
इक्कं मृग्ग पियंत नीर डसियं, कालौ समं पंनगं ॥
सोई व्यालय मृग्गछालय बही, शृंगौ बहौ सुरसुरी ॥
धारे रूप पसूपती पसु तहां, भागीरथौ संगती ॥
* आनंदी दुज बैल लेन क्रमियं, कैलास ईसं दिसं ॥छं०॥३१७॥

राजा का गंगा को नमस्कार करना, गंगा की उत्पत्ति और माहात्म्य वर्णन।

दूहा ॥ दो सामंत सुमंत कहु । सु हरि चिंति तजि बाज ॥

* "३१६ से ३१७ तक ये छंद मो.-प्रति में नहीं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिपथ लोक प्रथिराज मुनि। नमसकार करि राज ॥छं०॥३१८॥

कवित्त ॥ पाप मनंमथ हरन। गंग नव बंध अनै पर ॥
हरि चरनन करि जनम। काम छंडै सु दुष्ष बर ॥
तीन लोक भर भवन। तहां प्राक्रंम सु थानन ॥
निगम न हरि उर धरी। ब्रम्म तट काय प्रमानन ॥
वंछहि सु चतुर नर नाग सुर। दुति दरसन परसन [1]विहर ॥
[2]ढिल्लीवनाथ सो गंग दिषि। जस सम उज्जल बसु अपर ॥छं०॥३१९॥

साटक ॥ ब्रह्मा कष्य कमंडले कलिकले, कांताहरे कंकवी ॥
तं तुष्टा चयलोक संपद पदं, तंवाय सहसंनवी ॥
अघ काष्ठं ज्वलने हुतासन हवी, अध विष्णु आगामिनी ॥
जंजाल जग तार पार करनी, दरसाय जाह्नवी ॥ छं० ॥ ३२० ॥

अरिल्ल ॥ ब्रह्म कमंडल तें चल गंगा। दरसन राज भयौ दिवि संगा ॥
तामस राजस धरि उर पारह। [3]सातुक उदक गंग मझझारह ॥
छं० ॥ ३२१ ॥

दूहा ॥ अस्तुति कहि बरदाय बर। पढ़िय कवींद्र विचार ॥
सो गंगा उर जंपई। क्रम उत्तारन पार ॥ छं० ॥ ३२२ ॥

जैचन्द की दासी का जल भरने को आना।

वचनिका ॥ राजा दल पंगुरे की दासी गंगोदक भरन आनि ठाढ़ी भई ॥
चंद कह्यो राजा इह काम तीरथ मुगति तीरथ हथलेवा मिलत है॥

कवि का दासी पर कटाक्ष करना।

दूहा ॥ जरित रयन घट सुंदरी। पट क्रूरन तट सेव ॥
मुगति तिथ्थ अरु काम तिय। मिलहि हथह हथ लेव ॥छं०॥३२३॥

काव्य॥ उभय कनक सिंभं भृंग कंठीव लीला। पुहप पुनर पूजा विप्रवे कामराजं॥
चिवलिय गंग धारा मद्धि घंटीव सबदा। मुगति सुमति भौरे नंग रंगं चिवेनी॥
छं० ॥ ३२४ ॥

(१) ए. कृ. को.-विव्रर। (२) ए.-ढिल्लीच।
(३) ए.-सादुक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ रहसि केलि गंगह उदक। सम नरिंद किय केलि॥
चिरन त्रिभंगी छंद पढ़ि। चंद सु पिंगल मेलि॥ छं० ॥ ३२५॥

गंगाजी की स्तुति।

त्रिभंगी ॥ हरि हरि गंगे तरल तरंगे अघ छित भंगे छित चंगे।
हर सिर परसंगे जटनि विलंगे विहरति दंगे अल जंगे॥
गुन गंध्रव छंदे जै जै बंदे छित अघ कंदे मुष चंदे।
मति उच गति मंदे दरसत नंदे पढ़ि वर छंदे गत दंदे॥
छं० ॥ ३२६॥
वपु अपु विलसंदे जम भृत जंदे सुर धुनि नंदे कह गंदे।
.... । .... ॥
षिति मति उर मालं सुगति विसालं विर धुत कालं सद कालं।
हिम रिति प्रतिपालं सुर तट तालं हर हर नालं विधिवालं॥
छं० ॥ ३२७॥
दरसन रस राजं सुमरित साजं जय जुग काजं भय भाजं॥
अंमर छर करिजं चामर वरिजं वर बहु पाजं सुर साजं॥
(१)अंमर तरु मंजरि निय तन जंजरि बर बर रंजरि चष पंजरि॥
करुना रस मंजरि जनम पुनंगिरि हसि हसि संकरि सासंकरि॥
छं० ॥ ३२८॥
कलिमल हरि मंजन भव भत भंजन जन हित संजन अरि गंजन॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ३२९॥

दूहा ॥ हरि जस जिम उज्जल सजल। तरल तरंगति अंग।
पाप विडारन अंग तें। भ्रंम तरुनि विहंग॥ छं० ॥ ३३०॥

राजा का गंगा स्नान करना।

बचनिका ॥ राजा षीरोदक पहिर स्नान कर्‍यौ।
तब चंद बहुरि और अस्तुति करत है॥

कवि का पुनः गंगा जी की स्तुति करना।

(१) ए.-अमरत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुजंगी ॥ तिके दिष्षियै गंग चिहु पास बालं । तहां उप्पमा चंद जंपै विसालं
जरै कामनार्थं दया गंग आई । मनों हार धारी रती तत्त छाई ॥
छं० ॥ ३३१ ॥

भरै घट्ट भारं घटं नीरझाई । तहा चंद बंदी सु ओपम्म पाई ॥
ग्रसे चंद कुंभं करं इंद दंद । मनों विच पारीर मेंटै फुनिंदं ॥
छं० ॥ ३३२ ॥

करै बाल अस्नान सोभै प्रकारं । तहां चिंतियं चंद ओपंमभारं ॥
चमक्कंत लक्कं सु कप्पोल सोहै । मंनों उट्टितम चंद कै पास रोहै ॥
छं० ॥ ३३३ ॥

झलक्कं कनक्कं कलस्संत नीरं । मनों सज्ज सथ्थै सुपंतीज सीरं ॥
दिष्षै गंग तट्टं कहै कव्वि कथ्थं। किधों (१)मुगति तिथ्थं किधों काम तिथ्थं॥
छं० ॥ ३३४ ॥

कविचन्द का उस दासी का रूपलावण्य वर्णन करना ।

चंद्रायन ॥ दिष्यौ नगर सुहावो कवियन इह कहै ।
चष चंचल तन सुद्ध जु सिद्धति मन रहै ॥
कंचन कलस झकोरति गंगह जल भरै ।
सु कविचंद वरदाय सु ओपम तहँ करै ॥ छं० ॥ ३३५ ॥
चषतिष्षी वरबाल बाल सति सहस वर ।
आप मनोरथ करै कवींद्रति मंडिनर ॥
सहज तमारि स फुल्लि अलिन ग्रीवाति मन ।
मधुसहज्ज वरषंत विहंगन सूर नन ॥ छं० ॥ ३३६ ॥

संक्षेप नख सिख वर्णन ।

कवित्त ॥ राह चंद इकलास । पास कोवंड कुरंगा ॥
कीर बिंबफल जुगल । उभय भूतेस अनंगा ॥
मग्गराज गजराज । राज पिष्षिय एकंतं ॥
पुच्छि तांम कविराज । कहा इह अचरिज्ज बत्तं ॥

(१) ए. कृ. को.-सुगति ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरदाइ ज्वाब दीनों बहुरि। निरषि तट गंग दासि तन॥
थांनक प्रताप जयचंद के। बैरभाव छंडिय[1] सु इन॥ छं०॥ ३३७॥

दासी के जल भरने का भाव वर्णन।

दूहा॥ द्रिग चंचल चंचल तरुनि। चितवत चित्त हरंति॥
कंचन कलस झकोरि कैं। सुंदरि नीर भरंति॥ छं०॥ ३३८॥

जल भरती हुई दासी का नख सिख वर्णन।

लघुनराज॥ भरंति नीर सुंदरी। सु पांनि पत्त अंगुरी॥
कनक बंक जे जुरी। तिलग्गि कट्टि जेहरी॥ छं०॥ ३३९॥
सुभाव सोभ पिंडुरी। जु मेन चिचही भरी॥
सकोल लोल जंघया। सुनील कच्छ रंभया॥ छं०॥ ३४०॥
कटिंत सोभ संसुरी। बनी जु बांन केसरी॥
अनंग छब्वि छत्तियां। कहतं चंद बत्तियां[2]॥ छं०॥ ३४१॥
दुराइ कुच उभ्भरे। मनो अनंग ही भरे॥
हलंत हार सोहए। विचित्र चित्त मोहए॥ छं०॥ ३४२॥
उठंत हथ्थ अंचले। हलंत मुत्ति सजले॥
कपोल लोल उज्जले। लहंत मोल सिंघले॥ छं०॥ ३४३॥
अरद्ध अद्ध रत्तए। सुकील कीर वत्तए॥
सुहंत दंत आलिमी। कहंत बीय दालिमी॥ छं०॥ ३४४॥
गहंग कंठ नासिका। बिनाग राग सासिका॥
जुभाय मुत्ति सोभए। दुभाय गंज लोभए॥ छं०॥ ३४५॥
दुराय कोय लोचने। प्रतष्य काम मोचने॥
अवद्ध ओट भोंह ए। चलंत सोंह सोहए॥ छं०॥ ३४६॥
लिलाट राज आड़ ए। सरद चंद लाजए॥
.... ॥ छं०॥ ३४७॥

(१) ए. कृ. को.-मंडिय। (२) ए. कृ. को.-रत्तियां।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का कहना कि क्या इस दासी को केश हैं ही नहीं।

दूहा ॥ हसि प्रथिराज नरिंद कहि। कवि चुक्कौ अंदेस ॥
पंग दास आचिज्ज इह। बाल बरनि बिन केस ॥ छं० ॥ ३४८ ॥

कवि का दासी के केशों की उपमा वर्णन करना।

ढिल्ली सुह अलि की लता। श्रवन सुनहु चहुआन ॥
जनु भुजंग संमुष चढ़ै। कंच न षंभ प्रमान ॥ छं० ॥ ३४९ ॥

कवि का कहना कि यह सुंदरी नागरी नहीं वरन पनिहारिन है।

[१] रहि रहि चंद म गव्व करि। करहित कवित विचारि ॥
जे तुम नयर सुंदरि कही। सह दिष्षिय पनिहारि ॥ छं० ॥ ३५० ॥
गाथा ॥ जे जंपी कविराजं। साजं सुष्षाय कित्तियं बलयं ॥
तिरए छित्ति समस्तं। जानिज्जे भूलयो कव्वी ॥ छं० ३५१ ॥

कन्नौज नगर की गृह महिलाओं की सुकोमलता और मर्य्यादा का वर्णन।

दूहा ॥ जाह्नवी तट दिषि दरस। रूपरासि ते दासि ॥
नगर सु नागर नर घरनि। रहहिं अवास अवास ॥ छं० ॥ ३५२ ॥
ते दरसन दिनयर दुलह। निय मंडन भरतार ॥
सुह कारन विह निरमई। दुह कत्तरि करतार ॥ छं० ॥ ३५३ ॥
पाव न धरनि परट्टियै। उंच थांन जे बाल ॥
कै रवि देषत सतषननि। कै मुष कंत विसाल ॥ छं० ॥ ३५४ ॥
कुवलय रवि लज्जा रहसि[२]। रहि भगि अंग सरन्न ॥
सरस वुड्डि हंनन कियौ। दुल्लह तरुन तरुन्न ॥ छं० ॥ ३५५ ॥

उनके पतियों की प्रशंसा।

गाथा ॥ दुल्लह तरुनिति मुष्षं। घन दीहंति ईस सेवायं॥

(१) ए. कृ. को.-रहहि चन्द मम गर्व करि। (२) ए. कृ. को.-विहसि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानिज्जै मन[1] अप्पं । [2]प्रीतमयं तप्प अधिकायं ॥ छं० ॥ ३५६ ॥

कन्नौज नगर की महिलाओं का सिख नख श्रृंगार वर्णन ।

दूहा ॥ पुनर मंडि जनमेज जगि । पित अरि कुल दह अग्गि ॥
भग्गि शेषकुल शेष रहि । रहि त्रिय पीठनि लग्गि ॥छं०॥३५७॥

भुजंगी ॥ पुनर्जन्म जेते रहे जांनि जग्गे । सु ये सेस सेसा तिके पिट्ट लग्गे॥
मनुं मग्ग[3] मोहन्न मोती न बानी। मनों धार आहार के दूध तांनी॥
छं० ॥ ३५८ ॥

तिलक्कं नगं देषि जगजोति जग्गी। मनों रोहिनी रूप उर इंद लग्गी॥
रुप्पं अब्बरेषं भुअं देषि जग्यौ । मनों कांम चापं करं उड्डि लग्यौ॥
छं० ॥ ३५९ ॥

[4]प्रगट्टे नयंनं विचिं ऐन दीसं । मनों जोति सारंग निर्वात रीसं ॥
सेज ताटंक ते श्रोन डोलं। मनों अर्क राका उदै अस्त लोलं ॥
छं० ॥ ३६० ॥

कही चंद कव्वी उपम्मा प्रमानं। मनों चंद रथभंग द्वै भान जानं ॥
उरज्जं जंभीरं भई मंझ झोलं[5]। उवं दिव्यदर्शी अरूढील बोलं ॥
छं० ॥ ३६१ ॥

अधर आरत्त तारत्त सांईं । मनों चंद बिय विंब अरुने बनाई ॥
कहों ओपमा दंत मोतीन कंती। मनों बीज माला जुगं सोभ पंती॥
छं० ॥ ३६२ ॥

कपोलं कलागी कली दीव सोहं । अलक्कं अरोहं प्रवाहंत मोहं ॥
सितं स्वाति बुंदं जिते[6] हार भारं। उभै ईस सीसं मनो गंग धारं॥
छं० ॥ ३६३ ॥

करं कोक नहंति कंचू समुभ्भं। मनो तिथ्थराया त्रिबल्ली अलुझ्झं॥
तिनं ओपमा पांनि आनंन[7] लभ्भं। लाजि कुलकेलि दुरिमझ्झ गभ्भं॥
छं० ॥ ३६४ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-नन । (२) ए. कृ. को.-प्रीतम पंत अप्प अधिकाय ।
* यह दोहा मो.-प्रति में नहीं है । (३) ए. कृ. को.-मगं । (४) मो.-प्रगुर ।
(५) मो. जोलं । (६) ए. कृ. को.-जिसे । (७) ए.-आनंत ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नितंवं उतंगं जुरे वे गयंदं । तिनं मभ्भ रिपुछीन रष्यौ मयंदं ॥
कटी कांम मापी सुकामी करालं । मनों काम की जौति बट्ठी सरालं॥
छं० ॥ ३६५ ॥

जघं व्रन्न सोवन्न भोहन्न[1] थंभं । मनों सीत उस्नेव रितु दोषरंभं ॥
नरंगी निरंगी सुपिंडी छछोटी । मनों कनक कुंदीरु कुंकु अलोटी॥
छं० ॥ ३६६ ॥

किधौं केसरं रंग हेमं भकोरं । किधौं बट्ठियं बांम मनमथ्थ जोरं ॥
सदं रोह आरोह मंजीर वादे । मदं छिद्द तेजं परंकार वादे ॥
छं० ॥ ३६७ ॥

पगं एड़िअं डंबरं ओन बानी । मनो कच्च चीनीन में रत्त पांनी ॥
नषं न्त्रिमलं द्रप्पनं भाव दीसं । समीपं सुपीयं कियं मांन रीसं ॥
छं० ॥ ३६८ ॥

रगं अम्मरं[2] रत्त नीलंत पीतं । मनों पावसं धनुक सुरपत्ति कीतं॥
सुकीवं सुजीवं जियं स्वामि जानं । रवी पंग दरसं अरब्यंद मानं ॥
छं० ॥ ३६९ ॥

दासी का घूंघट उघर जाना और उसका लज्जित होकर भागना ।

कुंडलिया ॥ दरस चियन ढिल्ली न्रपति । सोवन घट वर हथ्थ ॥
वर घुंघट छुटि पट्ट गौ । सटपट परि मनमथ्थ ॥
सटपट परि मनमथ्थ । [3]भेद वच कुच तट छेदं ॥
उघ्ट कंप जल द्रगन । लग्गि जंभायत भेदं ॥
सिथल सु गति लजि भगति । गलत पुंडरि तन सरसी ॥
निकट [4]निजल घट तजै । मुहर मुहरं पति दरसी ॥छं०॥३७०॥

दासी के मुखारविंद की शोभा वर्णन ।

गाथा ॥ कमोदं वर विगासं । सरसीरुह सरसियं[5] तेजं ॥
चक्रति चक्र एकं । अरकं रकइ पृथ्थ संजोगं ॥ छं० ॥ ३७१ ॥

(१) ए. कृ. को. सोहन्न । (२) मो.-अंतर । (३) ए. कृ. को.-भेद तट कुच वच्छेदं ।
(४) मो.-निज्जल । (५) ए. कृ. को.-ससीयं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोरंत कच किलास। चंद मुखी दरसि सरसिय प्रतियं ॥
मवसं प्रांन वेसासी। दोहं मेकं सयं एक ॥ छं० ॥ ३७२ ॥

कुमुदं कुच्च प्रगासी। हार वीचं तनं तयं अंबं ॥
अभिवर तरंग अीपं। रोमं राजीव सेवालं ॥ छं० ॥ ३७३ ॥

पावस धनुक सुकंती। अंबर नीलाइ पीतमं बाले ॥
जानिज्जै परमासं। स्यांम घन मद्धि तड़ितायं ॥ छं० ॥ ३७४ ॥

गंगा स्नान और पूजनादि करके राजा का चार कोस पश्चिम को चल कर डेरा डालना।

दूहा ॥ प्रथम स्नान गंगा निरषि। पुर रट्ठौर निवास ॥
फिरि पच्छिम दिसि उत्तरै। जोजन एक सुपास ॥ छं० ॥ ३७५ ॥

चौपाई ॥ जोजन एक गयौ चहुआनं। सोम सूत्र तिथि षष्टी जानं[1] ॥
अंतरि पट्ट सुनंत नरिंदं। भर विंटे जनु पारस चंदं ॥
छं० ॥ ३७६ ॥

कवित्त ॥ सो पट्टन तजि न्रपति। चल्यौ कनवज्ज राज बल ॥
जाय [2]संपनौ राव। गंग सुरसर सुरंग जल ॥
करि मिल्लान परमान। थान आश्रम्म सु उज्जलं ॥
दीप जाप मन करै। भ्रंम भंजै सु अभ्रम्म दल ॥
चहुआन दान षोड़स करिय। तिहि जय जय सुरलोक हुअ ॥
दिन पतत निसा बंधय सयन। रस षिल्लिय प्रथिराज जिय ॥
छं० ॥ ३७७ ॥

दूसरे दिन एक पहर रात्रि से तैय्यारी होना।

दूहा ॥ निसि नंषी चिंतान भर। भयग प्रात तम भग्गि ॥
तरुन अरुन प्रगटिय किरनि। वर प्रयान न्रप जग्गि ॥ छं० ॥ ३७८ ॥

निसि चियाम बित्तिय सु जब। उच्छ सुषिन दो प्रान ॥
प्रात तेज उद्दित भयौ। चढ़ि चल्ल्यौ चहुआन ॥ छं० ॥ ३७९ ॥

(१) ए. कृ. को. थानं। (२) ए. कृ. को.-सपन्नौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा पृथ्वीराज का सुख से जागना और मंत्री का उपस्थित होकर प्रार्थना करना।

कवित्त ॥ जग्गि सु न्रप चहुआन। थान सामंत सूर फिरि ॥
चहूं राज कर जोरि। मंत कीनो सुमंत करि ॥
इहइ दिष्षि कनवज्ज। जहां बसि थान सुरत्तं ॥
दई विधिना न्रिम्मयौ। काल ग्रह आनि सु पत्तं ॥
मुष कालव्याल उंदर परै। ग्रास मुष्ष मंषी जियन ॥
तुम सत्त ग्रहौ बंधौति षग। मंत अप्प देषौ बयन ॥ छं० ॥ ३८० ॥

व्यूह बद्ध होकर पृथ्वीराज का कूच करना।

राज अग्ग गोयंद। बीर आहुट्ठ नरेसर ॥
दाहिम्मौ नरसिंघ। चंदपुंडीर सूर सर ॥
सोलंकी सारंग। राव कूरंभ पजूनं ॥
लोहा लंगरिराव। षग्ग मग्गह दह गूनं ॥
लष्षन बघेल गुज्जर कनक। बारहसिंघ सु अग्ग चलि ॥
बिय सेन सब्ब साईं सु पुछि। षग्ग मग्ग जिन बल अकल ॥ छं० ॥ ३८१ ॥
दूहा ॥ इह समग्ग सब सेन चलि। दिसि कनवज्ज नरिंद ॥
प्रथीराज ढिग राजई। मधि कविता [1]वरचंद ॥ छं० ॥ ३८२ ॥

सबका मिलकर कन्ह से पट्टी खोलने को कहना और कन्ह का आखों पर से पट्टी उतारना।

एक दिसा उत्तरि न्रपति। [2]आरन छिनक सपन्न ॥
मतौ करन सांई सु भृत। पुच्छहिं आय सु कन्ह ॥ छं० ॥ ३८३ ॥
कवित्त ॥ सुनि कन्हा चहुआन। ग्रेह कैमास न मंची ॥
तंतसार बिन तुंब। जंच वाजै हिन [3]जंची ॥
चंद दंद उप्पाय। गंज विष [4]अग्गि लगाई ॥
सुभर ध्रम्म रजपूत। पत्ति रष्षे पति पाई ॥

---

(१) ए. कृ. को. कविचन्द। (२) ए. कृ. को.-अरनि।
(३) मो. मंत्री। (४) ए. कृ. को.-अंगि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरबार पंग दैवान भर। कल जलद सौ उल्ललै॥
पुच्छौ सु इच्छ बल मंत बर। दल भंजै पुज्जै दलै॥ छं०॥ ३८४॥

सुनि कन्हा चहुआन। कन्ह विथ्यौ जु कन्ह जुगि॥
कन्ह अनी कुव्वर। मेछ मोरन्न मुट्ठि षगि॥
सामध्रम्म अगि प्रान। नीति राषन राजंनिय॥
तिहि कारन तुअ अंषि। निद्धि पाटी जुग जानिय॥
आचिज्ज लोइ कनवज्ज वर। पूछि न दिषि तन तन नयन॥
प्रथिराज काज तौ सुद्धरौ। छोरि पट्ट सज्जौ सयन॥छं०॥३८५॥

तत्पश्चात् आगे चलना और प्रभात समय कन्नौज में जा पहुंचना।

दूहा॥ कूच करिग भावीं श्रवन। बर बर चलि सहरत्त॥
प्रात भयौ कनवज्ज फिरि। सुनि निसान धुनि पत्त॥छं०॥३८६॥

कन्ह मंत मित्तंज बर। बर पुच्छन हग सब्ब॥
बर भावी गति चिंतकिय। नयन सु बरजी तब्ब॥ छं०॥ ३८७॥

देवी के मंदिर की शोभा और देवी की स्तुति।

भुजंगी॥ '(१)जहां दिष्षियै जासु संदेह सेहं। उअं अर्क सा कोटि संपन्न देहं॥
बने मंडपं जासु सोब्रन्न गेहं। तिनं मुत्तियं छच दीसै न छेहं॥
छं०॥ ३८८॥

रुधिं सित्त माहीष बहु मध्य रत्तीं। तिनं प्रात पूजंत न्रनेम अत्ती॥
भुजं डंड दुंदेस देसं प्रकारं। भ्रमै देवता इंद्र लभ्भै न पारं॥
छं०॥ ३८९॥

बजै दुंदभी देव देवाल निंत्तं। बरं उट्ठि संगीत गानं पवित्तं॥
बजै मद्द झंझै समं जोग भिद्दं। निरत्तं न पायं तिनं कब्बिचंदं॥
छं०॥ ३९०॥

(१) ए. कृ. को.-तहां।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुष पंड भारथ्थ विय बैर साजी। मुषं देषि चहुआन किलकारि गाजी॥
प्रभा भान तेजं विराजै चकारी। मनों अग्नि ज्वाला जलं में उजारी॥
छं० ॥ ३६१ ॥

[1]नमो तूअ तातं नमो मात माई। तुअं सक्ति रूपं जगत्तं बताई॥
तुअं थावरं जंगमं थान थानं। तुअं सत्त पाताल सरतं सतानं॥
छं० ॥ ३६२ ।

तुअं मारुतं पानियं अग्गि मट्टी। तुअं पंचभूतं स्वयं देह यट्टी॥
सुअं स्वस्ति चंदं अनंदं अनंदी। भई मोह माया जपै जाप बंदी॥
छं० ॥ ३६३ ॥

तबै वैन आकास महि भयौ ताजं। तुमं होइ जैपत्त प्रथिराज राजं॥
तबं दच्छिनं अंग करि नमसकारं। धुअं मध्यता नैर कीजै विचारं॥
छं० ॥ ३६४ ॥

सरस्वती रूप की स्तुति।

साटक ॥ वीना धारन अग्र अग्रति दिवं, देवं तमं भूतलं ॥
तूं वाले जल जी जगंत कलया, जोगिंद माया दुतिं ॥
त्वं सारं संसार पार करनी, तोयं तुअं सारसं ॥
दंदीनं दारिद्र दैत्य दलनी, मातं त्वया दुग्गया ॥ छं० ॥ ३६५ ॥

कवि का देवी से प्रार्थना करना कि पृथ्वीराज की सहायता करना।

दूहा ॥ [2]कै मातुल कै प्रकृति तू। कै पुरिषत्व प्रमान ॥
तुं सब छचिन मंझ है। तू रष्षै चहुआन ॥ छं० ॥ ३६६ ॥

गाथा ॥ लज्जा रूप सुदेवी। हवी हवीतेज [3]मुगति का गनया ॥
किय कमलं सु जेयं। बंधि पानि उच्चरै बलयं ॥ छं० ॥ ३६७ ॥
तूं धारन संसारं। चंदं चंद कित्तियौ सुनियं ॥
ज्यौं पंडव मंझ प्रगट्टी। अब हुज्जे राज मझझाइं ॥ छं० ॥ ३६८ ॥

(१) ए. कृ. को.-नमो तू अतानं।
(२) ए. कृ. को. "कै मातुल परकृति गति"। (३) ए. कृ. को. मंगति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपाई ॥ इच्छा नाम छचि जौ लेई। सार धार डुल्लिन बल कोई ॥
चौ अग्गा छल दाषें वीर। औ गुन होइ [1]जु मध्यसरीर ॥
छं० ॥ ३९९ ॥

कवि का कहना कि नगर को दहनी प्रादक्षिणा देकर चलना चाहिए।

दूहा ॥ किय विचार नृप नगर कौ। सह सामंत सभेव ॥
चंद बुझिझ तब मन कियौ। चल्यौ सु [2]दष्षन देव ॥छं०॥४००॥
देत प्रदिष्षन नगर कों। होत तहां बहु बार ॥
राज देष पच्छै करै। एह सकल विचार ॥ छं० ॥ ४०१ ॥
हर सिद्धी परनाम करि। राषि समंत सु साज ॥
कनवज दिष्षन राज ग्रह। चल्यौ चंद बर राज ॥ छं० ॥ ४०२ ॥

पृथ्वीराज के नगर द्वार पर पहुंचते ही भांति भांति के अशकुन होना।

भुजंगी ॥ वजै पंग नीसान प्रातं प्रमानं। धरी अंक भोमं चली थान थानं ॥
कहै चंद कब्बी उपम्मा सु पत्तं। गजै मेघ मानो नछचं सहित्तं॥
छं० ॥ ४०३ ॥
धुनं संभरी कन्न साधंत भीतं। ग्रहै साध धम्मं सहै साधु नीतं॥
सधें मग्ग हेतं ग्रहं धम्म जीयं। [3]निहं दोस मंदेह छचं [4]पतीयं॥
छं० ॥ ४०४ ॥
सोई धंम कन्हं चितंतं प्रमानं। दिषी लज्जि मन्नं कन्नं जोति मानं॥
धरै सामध्रमं जिनं धूम्र लीनं। जिनं जित्तियं जस्स देहं न कीनं ॥
छं० ॥ ४०५ ॥
सगुन्नं प्रथीराज दीसै नरिंदं। धुरं पैसते भोम पहु पंग इंदं ॥
बुलै देवि वामं घटं वाल मध्यै। बुलै बायसं वाम चढ़ि अस्ति रथ्यै॥
छं० ॥ ४०६ ॥

(१) मो.-सु। (२) ए. कृ. को. दिष्षन।
(३) ए. कृ. को.-तिहं। (४) ए. कृ. को.-पयाहिं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिषी राज दिष्टं गलंती ज ईसं। लरै वाम नंदी अनंतं सुरीसं॥
दिसा दच्छिनी लोह भट्ठी सुजागी। तहां चक्रितं चित्त कविचंद लागी॥
छं० ॥ ४०७ ॥

कवित्त॥ असुभ सगुन मंगल न। चित्त चहुआन विचारी॥
मग्ग अग्ग मंजार। वाम दष्षिन निक्कारी॥
बर उच्चिष्ट पावक्क। विह्न तिन मझ्झ चमंकै॥
मेघ दृष्टि आकाल। मध्य धुमंरिय गहक्कै॥
आरिष्ट भाव कबिचंद कहि। तव चिंत्यौ न्त्रिमान बसि॥
भावी विजत्ति भंजन गढ़न। सुनि चहुआन नरिंद हसि॥
छं० ॥ ४०८ ॥

दूहा॥ सिंगिनि बंदि विरंम करि। बाग पंग न्त्रप जाइ॥
दिषि अराम सिष ग्रह परसि। रहि सुगंध बरछाइ॥छं०॥४०९॥

कन्नौज नगर का विस्तार और उसके चारों तरफ के बागानों का वर्णन।

भवर टोल झंकार वर। सुमन राइ फल लिद्ध॥
क्रूर दिष्ट मन रह वढी। ससि तारक भ्रित रिद्ध॥छं०॥ ४१०॥

पद्धरी॥ बर मग्ग बग्ग चिहु कोद दिष्षि। विस्तार पंच जोजन्न लष्षि॥
कछ मग्ग भोमि चिहुं मग्ग दिस्सि। नारिंग सुमन दारिम विगस्सि
छं० ॥ ४११ ॥

प्रतिव्यंब अंभ झलकत सरूप। उप्पम तास बरनत अनूप॥
नव विद्ध गत्ति सह जल प्रवेस। मुसकंत झुंड दिष्षी सुदेस॥
छं० ॥ ४१२ ॥

प्रतिव्यंब झलकि चंपक प्रसून। उप्पंम देषि कविचंद दून॥
दीपक्क माल मनमध्य कीन। हरभयति दिष्षि इह लोक दीन॥
छं० ॥ ४१३ ॥

हलहलत लता दमकंत वाय। मनु बध्धौ सपतसुर भंग पाइ॥
चल्लै सुगंध बर सीत बत्त। जानियै सब्ब हथ्थीन जित्त॥
छं० ॥ ४१४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुजंगी ॥ तहां प्रात प्रातं बिंबं अंब मौरे। सुरं कंठ कलियंठ रस प्रस्स भोरें ॥
फली फूल बेली तरु चढ़ि सोहै। तिनं ओपमा दैन कविचंद मोहै॥
छं० ॥ ४१५ ॥
रवी तेज देषी ससी बाल भागी। मनों तारिका उड्डि तर सब्ब लागी॥
कहीं जूहि जंभीर गंभीर वासी। तमी तप्पनी सेव सीसंम सासी ॥
छं० ॥ ४१६ ॥
ग्रसै मोर मकरंद उडि बाग मेंही। मनों विरहनी [1]दिघघ उस्सास लेही॥
किते एक बीजोर फल [2]भार लुट्टै। [3]मनों जीवनं पीउ पीयूष फुट्टै॥
छं० ॥ ४१७ ॥
कहूं सेवसत्ती फुलै ते प्रकारं। किधौं दिष्षियं प्रगट मकरंद तारं ॥
कहूं सोभही थट्ट गुल्लाल फूलं। चषं भोर मकरंद सहफूल भूलं ॥
छं० ॥ ४१८ ॥
वरं बोरसरि फूल फूली सुरंगी। छके भोर भौरं मनं होइ पंगी ॥
कहूं कद्दली सेसुरंगं जु पंती। किधौं [4]मंत मथ्यं कि बीचैं धमंती ॥
छं० ॥ ४१९ ॥
घरी एक चहुआन तिन थान राही। असंसार संसार संसार काही॥
तरं पिंड आकास फुल्लै निनारै। वरन्न वरन्नं अनेकं सवारे ॥
छं० ॥ ४२० ॥
सबैं कब्बिराजं उपम्मा न पग्गी। मनों नौ ग्रहं वार रस आय मग्गी॥
कवी जे जुवानं मनं ओप जानै। कवी जेम वत्तं रसं सो बषानै॥
छं० ॥ ४२१ ॥
न लालं न [5]पिंगी षजूरं अमग्गी। नरं उंच त्रिषंत सो सीस पग्गी॥
छं० ॥ ४२२ ॥

पृथ्वीराज का नगर में पैठना।

दूहा ॥ बिलम सगुन चल्यौ नृपति। नेन दरसि सो सथ्थ ॥
वर दीसी हट नैर कौ। मिलन पसारत हथ्थ ॥ छं० ॥ ४२३ ॥

(१) ए. कृ. को.-दीरघ, दीर्घ। (२) ए. कृ. को.-प्रात।
(३) ए. कृ. को.-"मनों जीवनं पीय पी पीउ फुट्टै"। (४) मो.-मनमथ्थ।
(५) ए. कृ. को.-पीगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगर प्रवेसनि देषि न्रप। जूप साल जेठाइ॥
ता ष्टन्नन रस उप्पज्यौ। कहते चंद वरदाइ॥ छं०॥ ४२४॥

नगर के वाह्यप्रान्त के वासियों का रूपक तदनन्तर नगर का दृश्य वर्णन।

भुजंगी॥ जिते लंगरी रूप दिन के प्रसंगा। तिते दिष्षियै कोटि कोपीन नंगा
जिते जूपकों चोप चोपें जु आरी। तिते उचरें सो आनंन पारी॥
छं०॥ ४२५॥
जिते साधु संमारि षेलंत लष्षे। तिते दिष्षियै भूप दामंत पष्षे॥
जिते छैल संघाट वेस्यानि रत्ते। तिते द्रव्य के हीन हीनंत गत्ते॥
छं०॥ ४२६॥
जिते दासि कै चास लग्गे सु रूपा। मनों मीन चाहंत बग मध्य कूपा॥
किते नाइका दिष्षि नर नैन डुल्लै। रहैं सुरह लोकं सुरं दिष्षि भुल्लै॥
छं०॥ ४२७॥
बचं उच्चरै बेंन निसि की उज्जग्गी। मनो कोकिला भाष संगीत लग्गी॥
उड़ै उंच अब्बीर सेज्या समारै। मनों होइ वासंत भूपाल द्वारै॥
छं०॥ ४२८॥
कुसम्मं समं चीर संकीर सोभा। मनो मध्यता काम कदली सु ग्रभा॥
रसं राग छत्तीस कंठं करंती। बरं बीन बाजिंत्र हथ्थें धरंती॥
छं०॥ ४२९॥
तिनें देषि असमान ऋग्गी ठठुक्की। मनो मेनिका न्रत्य तें ताल चुक्की॥
बरन्नंत भावं लगें जुग्ग सारे। इसे पट्टनं ग्रेह दिष्षे सवारे॥
छं०॥ ४३०॥

दूहा॥ सो पट्टन रठ्ठौर पुर। उज्जल पुण्य विपष्ष॥
कोट नगर नायक सघन। धज बंधी तिन लष्ष॥ छं०॥ ४३१॥

नाराच॥ सु लाष लाष द्रव्य जासु नित्य एक उट्ठवै।
अनेक राइ जासु भाइ आय आय विट्ठवै॥
सुगंध तार काल मानसा म्रदंग सुब्भवै।
सु दछिनं समस्त रूप स्याम काम लुब्भवै॥ छं०॥ ४३२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सु छंद चारु धुक्क देस सेस कंठ गावहीं।
उपंग बीन तासु पानि वालते बजावहीं॥
गमन्नि ते अनंग रंग संग ए परच्छए।
सु बीर सा अरद्ध अंग पट्ठि पाच नच्चए॥ छं०॥ ४३३॥

सवद्द सुभ्भ उच्चरें सु कित्ति का वषानिए॥
नरिंद इंद इत्त ने सु कोटि इंद जानिए॥ छं०॥ ४३४॥

कन्नौज नगर के पुरजनों का वर्णन।

दूहा॥ अमग हट्ट पट्टन नयर। रत्न मुत्ति मनिहार॥
हाटक पट धन धात सह। तुछ तुछ दिष्षि सवार॥ छं०॥ ४३५॥

मोतीदाम॥ अमग्गति हट्टति पट्टन मंझ। मनों द्रग देवल फूलिय संझ॥
जु नष्षहि मोरि तमोरि सु ठार। उलिंचत कीच कि पीक उगार॥
छं०॥ ४३६॥

मिलै पट पट्ट सु वेदल चंप। सु सीत समीर मनो हिम कंप॥
जु वेलि सेवंतिय गुंथहि जाइ। दियै द्रव दासि सु लेहि ढहाइ॥
छं०॥ ४३७॥

सुबुद्धि बजावत बीन अलाप। अनेक कथा कथ ग्रंथ कलाप॥
बिवेक बजाज सु बेचहि सार। छुअंत नवासर सूझहि तार॥
छं०॥ ४३८॥

ति देषहि नारि सकुंज पटीर। मनो दुज दष्षन लागहि थीर॥
सु मोति जराइ मढ़े बहु भाइ। जु कट्टहि कोरि कहै सुनि गाइ॥
छं०॥ ४३९॥

सु लेतन सुष्य रहै अपनाइ। जु सेज सुगंध रहे पलटाइ॥
लहंलह तानक तानति वाम। बनी चिय दीसहि कामभिराम॥
छं०॥ ४४०॥

जराव कनक्क जरंज कसंत। मनो भयौ बासुर जामिन अंत॥
कसिक्कसि हेम सु काढ़त तार। उगंत कि हंसह क्रम्म प्रकार॥
छं०॥ ४४१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करकर कंकन अंकह जोव। मनों दुजहीन सरद्दहि सोव ॥
जरे जिव प्रान प्रकारति लाल। मनों ससि सझझह तार विसाल ॥
छं० ॥ ४४२ ॥

हलंत जुषंतत राजनु जोप। मनों घन मद्धि तदित्तह ओप ॥
जरेजिव नंग सुरंग सुघाटि। ति सुंदरि सोभ [1]उवावति पाट ॥
छं० ॥ ४४३ ॥

दु अंगुलि जोरि निरष्षहि हीर। मनों फल बिंबहि [2]च पहि कीरि॥
नषं नष चाहति मुत्तिय अंस। मनों भष छंडि रह्यौ गहि हंस ॥
॥ छं० ॥ ४४४ ॥

दसों दिसि पूरि हयग्गय भार। सु पुच्छत चंद गयौ दरवार ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ४४५ ॥

कविचन्द का राजा सहित राजद्वार पर पहुंचना ॥

दूहा ॥ हय गय दल सुंदरि सहर। जौ बरनों बहुबार ॥
इह चरिच कहँ लगि [3]कहूं। चलि पहुपंग दुआर ॥
॥छं० ॥ ४४६ ॥

चलत अग्ग दिष्यौ नृपति। हरि सिद्धी सु प्रसाद ॥
चंद नम्मि अस्तुति करिय। हरिय अघ्घ अपराध ॥ छं० ॥ ४४७ ॥

कौतूहल दिष्षै सकल। अकल अपूरब बट्ट ॥
पानधार [4]छर छग्गरह। राजग्रही बर भट्ट ॥ छं० ॥ ४४८ ॥

राजद्वार और दरबार का वर्णन।

कवित्त ॥ गज घंटन हय [5]षेह। विविध पसुजन समाज [6]इव ॥
घन निसान घुम्मरत। प्रबल परिजन समथ्थ नव ॥
विविध बज्ज बज्जत सु। चंद भर भीर उमत्तिय।
इक्क लत्त आवत सु। इक्क नरपत्ति समथ्थिय ॥

(१) ए. कृ. को.-पुंपावहि। (२) ए. कृ. को. जंपहि। (३) ए. कृ. को-गनों।
(४) ए. कृ. को.-छग्गल छलह। (५) मो.-हेष। (६) ए. कृ. को.-रच।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

षुंभीय अवनि सुम्भय महल । जनु डुल्लित उब्भिय करन ॥
दरबार राज कमधज्ज कौ । जग मंडन मभ्भ्भह धरनि ॥
छं० ॥ ४४९ ॥

कौतूहल आलम अलाप । दिष्षिय दर चंदह ॥
पंगराइ दरबार । बार जागत जै विंदह ॥
सत जुग्गह बलिराइ । नगर पुर ध्रंम प्रमानं ॥
त्रितिय जुग्ग रघुनाथ । अवधि पट्टन वर थानं ॥
द्वापरह नाग नागर नगर । जुरा जोध तप्पे सुतप ॥
जै चंद दंद दाह दलन । कलि कमधज कनवज्ज नृप ॥
॥ छं० ॥ ४५० ॥

दिष्षि चंद दरबार । छच धरि फिरिहि विनहमद ॥
भ्रमर गुंज पुंजरत ।[1]कत्त क्रमंत दुरद रद ॥
अनुचर अनुसंकरह । मत्त गम्मित कंठीरव ॥
वासुर संझ विहारि । वारि अचवत अभंग भव ॥
दिष्षियै द्रुगम सुग्गम सुघन । सुगम द्रुगम जयचंद ग्रह ॥
सब जंत तंत जिम मर कटकि । समन दमन बस भूरि बह ।
छं० ॥ ४५१ ॥

कन्नौज राज्य की सेना और यहां की गढ़रक्षा का सैनिक प्रबंध वर्णन ।

लष्ष सुभर आवंत । लष्ष दरबार हरज्जै ।
लष्षह गोलंदाज । लष्ष इक नालि भरिज्जै ॥
लष्ष तालि सिलहान । गिरद रष्षैं दरबारह ॥
पाइक लष्ष प्रचंड । संक मानैं नह सारह ॥
लष असिय सकल सेवा करैं । द्वादस सूरज जोंति कल ॥
लष तीन तुरय पष्षर सहित । पवन पाइ ऐराक भल ॥
छं० ॥ ४५२ ॥

(१) ए. कृ. को. मुकता क्रमत दुरहु रद ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागाओं की फौज का वर्णन।

गज्जत जलधि प्रमान। संष धुनि बज्जत भारिय॥
मनक्रम चिय बच रहित। सहित सन्नाह सुधारिय॥
रिष सरूप जयचंद। सहस संषह धुनि रष्षन॥
आवध साल प्रलंब। षंभ रुप्पौ अति तिब्बन॥
मन सित्त एक हथ्थिय फटक। इक्क हथ्थ ठेलत्त बल॥
भुज दंड प्रचंड उथाय कर। धरत जानि मदगल कि मल॥
छं०॥ ४५३॥

नागा लोगों के बल और उनकी बहादुरी का वर्णन।

हथ सित ऊरध षंभ। थान नंषत सत भारिय॥
फोरत लोह प्रचंड। मुट्ठि चौसट्ठि प्रचारिय॥
किनकि संगि नंषंत। धरनि षुंभत तिष्यारिय॥
कितक बथ्थ भरि षभ। कट्ठि नंषत उछारिय॥
इम रमत सहस संषह धुनिय। रिषि सरूप प्राक्रम अतुल॥
उच्चऱ्यौ राज भट्टह सरस। इह कौतूहल पिषिष भल॥
॥ छं०॥ ४५४॥

संखुधुनी लोगों का स्वरूप और बल वर्णन।

मोरपंष तन वस्त्र। मोर सिर मुकुट विराजत॥
मोर पंष बल्लभ अनंत। पंषे कर साजत॥
तप सु तेज षिचीय। चष्ष बघ्घह भुज सुंडह॥
पग नेवर झनकार। समर मेरं गिरि मंडह॥
अवतार रूप दरसंत भल। संष बजावत माधरिय॥
लष असी मभ्भ पौरुष अतुल। धर कंपत पग्गह धरिय॥
॥ छं०॥ ४५५॥

(१) मो.-इक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का उन्हें देख कर शंकित होना और कवि का कहना कि इन्हें अत्तताई मारेगा।

दूहा ॥ पिष्षि पराक्रम राज इह। विरत भयौ मन मंझ ॥
चंद वरद्दिय उकति करि। सामंत सूर समंझ ॥
॥ छं० ॥ ४५६ ॥
कहिय चंद राजन्न प्रति। कहा सोचि मन मंडि ॥
अत्तताइय जुध जुरै। जब इन सस्चन षंडि ॥
॥ छं० ॥ ४५७ ॥
भाषनि भाष सु मिलिय दिस। दई सिसिर वनि इंद ॥
नव नव रस अरु सघन सष। जोध सुपंग नरिंद ॥ छं० ॥ ४५८ ॥

पद्धरी ॥ संचरिय देस भाषा न भाष। रायान राय साषान साष ॥
नौवत्ति वज्जि भर तीन लाष।[1] चक्रित सुनाथ हुअ निच विसाष ॥
छं० ॥ ४५९ ॥

सामंतो का कहना कि चलो खुल कर देखें कौन कैसा बली है।

दूहा ॥ निसि नौवत्ति मिलि प्रात मिलि। हय गय देषिय साज ॥
विचरि सुभर करिवर [2]गहिय। किनहि कहिय प्रथिराज ॥
॥ छं० ॥ ४६० ॥

कवि चंद का मना करना।

कहहि चंद दंद न करहु। रे सामंत कुमार ॥
तीन लष्य निसि दिन रहै। इह जैचंद दुआर ॥
॥ छं० ॥ ४६१ ॥

उसका कहना कि समयोचित कार्य करना बुद्धिमानी है देखो पहिले सब ने ऐसा ही किया है।

(१) ए. कृ. को.-"चक्रित सुनाथ दुज निरषि साष"　　(२) मो.-गहिउं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ एक ठौर[1] पृथिराज ॥ रास मंगै हल काजै ॥
समौ ताकि गोविंदि । अग जरासिंध सुभाजै ॥
समौ जानि श्रीराम । बैर पति कासिय मुक्किय ॥
समौ ताकि पंडवन । देह जस बल अप लुक्किय ॥
मतिसिष्ट पुरष तक्कै समौ । मनह मनोरथ चिंति मति ॥
कवि कहल केलि लागी विषम । टारी टरै न पुब्बगति ॥
छं० ॥ ४६२ ॥

राजा का कवि की बात स्वीकार करना ।

दूहा ॥ मांनि राज रिस रीस मन । चिंति उदै प्रथुदुत्ति ॥
सो जागी श्रो तान जल । मन भौ कंद उपत्ति ॥ छं० ॥ ४६३ ॥

कवि का पूछते पूछते द्वारपालों के अफसर हेजम कुमार रघुवंशी के पास जाना ।

मुरिल्ल ॥ पुच्छत चंद गयौ दरवारह । जहां हेजम रघुवंस कुमारह ॥
जिहि हरि सिद्धि पास बर पायौ । सु कविचंद दिल्लिय तैं आयौ
छं० ॥ ४६४ ॥

द्वारपालों का वर्णन ।

कवित्त ॥ करनि कनक मय दंड । परम उद्दंड चंड बल ॥
दिग्घ देह सुंदर समथ्थ । अति सुमति सु न्रिमल ॥
प्रति नर प्रीति प्रसन्न । परस सपन्न सब्ब जग ॥
अवर भूप पिष्षत नयन्न । परसाद लग्गि [1]नग ॥
सुकलम्भ कलपतरु वग्ग जिम । पुन्य पुंज पुज्जिय सुभुअ ॥
प्रति हार राज दरवार महि । दिषि वरदाय नमित्त हुअ ॥
छं० ॥ ४६५ ॥

प्रतिहार का पूछना कि कौन हो? कहां से आए? कहां जाओगे?

(१) ए. कृ. को.-पग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुरिल्ल॥रुकि कविंद हेजम बुझ्झिय हसि।कौंन थान बर चलिय कौंन दिस॥
को न्रप सेव देव को नाम। किहि दिसि चिंत कस्यौ परिनाम॥
छं० ॥ ४६६ ॥

कवि का अपना नाम ग्राम बतलाना ।

हो हेजम रघुवंस कुमार। न्रिप चहुआन प्रथीअवतार॥
फिरि ढिल्ली कवियान नरिंद। मो बर नाम कहै कविचंद॥
छं० ॥ ४६७ ॥

हेजम कुमार का कवि पर कटाक्ष करना ।

द्वारपालवाक्य ।

श्लोक ॥ मंगिवांन विवारता कविन, संधिवान् कि विग्रहात् ॥
जुद्धवान पंग राएन्। ना भूतो न भविष्यति॥ छं० ॥ ४६८॥
दूहा ॥ बैरी काटन राज बच। डंड भरन परधान॥
सेवा मानन भेदियन। हिंदू [1]मुसलमांन॥ छं० ॥ ४६९ ॥

कवि का उत्तर देना

[2]असतिनि बोलहु हेजमन। ग्रब्ब करहु जिम आलि॥
जु कछु समर बित्तें रनहं। इह देषहु तुम कालिह॥ छं० ॥ ४७० ॥

हेजम कुमार का कवि को सादर आसन देना ।

आदर करि आसन दियौ। पालक पंग नंरिद॥
छिनक विलंबहु सुहित करि। जब लगि कहों कविंद॥
॥ छं० ॥ ४७१ ॥

हेजम कुमार का वचन ।

पंग दरस जच्चन मिसह। कै मोकलिग बसीठ॥
कै मिलि षह मंडल न्रपति। राज राज सू दीठ॥ छं० ॥ ४७२ ॥

(१) ए. मुसलमान । (२) मो.-असत बोलहु हजमने ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि का कहना कि कवि लोग वसीठ पन नहीं करते ।

कुंडलिया ॥ सुनि हेजम रघुवंस वर । भट्ट बसीठ न हुंति ॥
पति घट्टत्त छिनकह मरै । जस मंगन नन षंति ॥
जस मंगन नन षंति । कौन प्रथिराज दान बरि ॥
का दिष्षन राज सू । कहा नलराइ जुधिष्टिर ॥
मंडली मोहि जाचन नियम । दरिद करिय चहुआन चुनि ॥
पंगुरौ न्रपति देषन मनह । रघुबंसी हेजम्म सुनि ॥ छं० ॥ ४७३ ॥

कवित्त ॥ तू मंगन कविचंद । सध्य मंगन नन होइय ॥
तौ देषत तिय यान । इंद्र भुल्लियं [1]द्रग जोइय ॥
एह कपट कवि हस्यौ । नयन दिष्षियै निनारै ॥
न्रपन होइ दरबार । भूत भय छंद विचारै ॥
दरबार कव्वि बिरम्यौ न्रपति । [2]भर संमुह रष्यौ न दर ॥
तुम राज नीत जानहु सकल । हुकम बिना रष्यौ न बर ॥
॥ छं० ॥ ४७४ ॥

दूहा ॥ तहां बिरम कीनौं सु कबि । सष सामंत बहोरि ॥
चंद फेरि दष्षिन दिसा । भर उभ्भै बरजोर ॥ छं० ॥ ४७५ ॥

हेजम कुमार का उसे बिठा कर जैचन्द के पास जाकर उसकी इत्तला करना ।

न्रप कवि हेजम मड्डि दर । रष्षि गयौ न्रप पास ॥
भट्ट संपतौ राज पै । वंने चंद विलास ॥ छं० ॥ ४७६ ॥

आदर करि हेजम [3]कविहि । गयौ जहां न्रपति नंरिद ॥
दिल्लियपति चहुआन कौ । कह असीस कविचंद ॥
॥ छं० ॥ ४७७ ॥

सुनत हेत हेजम उठिग । दिषत चंद बरदाइ ॥
न्रप आगे गुदरन गयौ । जहां पंग न्रप आहि ॥ छं० ॥ ४७८ ॥

(१) ए. कृ. को.-जुगं । (२) ए. कृ. को.-तर । (३) ए. कृ. को.-सुकवि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेजम गय पहु पंग पैं। स्वामि आय कविचंद ॥
मत जंपी बुल्ल्यौ सुभट। सुनि सुनि सोभ नरिंद ॥
॥ छं० ॥ ४७९ ॥

जो करिजै चिंतक सुतौ। जानत होइ अजान ॥
हरुअत्तन गरुअत करै। सोई न्रपति सयान ॥ छं० ॥ ४८० ॥

हेजम कुमार का जैचन्द को बाकायदे प्रणाम करके कवि के आने का समाचार कहना।

वस्तबंध रूपक ॥ तब सु हेजम तब सुहेजम। जुगम कर जोरि ॥
.... । .... ॥
सीस नयौ [१]दसवार तिहि। सेत छत्र पति मद[२]सुदिट्ठौ ॥
सकल बंध सथ्थह नयन। चकित चित बुलै गरिट्ठौ ॥
तब सु कियौ परनाम तिहि। बर करी राय [३]प्रतिहार ॥
जिहि प्रसन्न सरसति कहै। सुकविचंद दरबार ॥ छं० ॥ ४८१ ॥

दूहा ॥ सीस नायि बुल्लौ वयन। औसर पंग रजेस ॥
कवि जौ जुग्गिनि पुर कहै। संपत्तौ द्वारेस ॥ छं० ॥ ४८२ ॥

कवि की तारिफ।

कवि सरस बानी सरस। कित्ती रूप प्रमान ॥
चंद [४]बत्त हर बिदुष जन। गोपंथिती समान ॥ छं० ॥ ४८३ ॥
गुन आगंम समंद जौ। उक्त तिल हरि तरंग ॥
जुषति कवित मज्जाद ज्यौं। रतन बद्ध प्रषरंग ॥ छं० ॥ ४८४ ॥
संमिय अगुनि प्रगास ज्यौं। गत्ति जुगत्ति बिचार ॥
सुष्य नरेस निधान धन। [५]जनु अर्जुन भटवार ॥ छं० ॥ ४८५ ॥
गुन बिध्यौ नष्यै धनी। तीन प्रकारय कित्ति ॥
सरसेसर उतकंठ कर। ग्रब्बह तत कवि दित्त ॥ छं० ॥ ४८६ ॥

(१) क्रु. को.-दरवार, दसार (२) ए. क्रु. को नद। (३) मो.-प्रहार।
(४) मो.-बलहरै। (५) ए. क्रु. को.-अनु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आडंबर वरभट्ट बहु। भर बर सध्य कंविद॥
तब रुक्यौ दरबार में। संग रष्षि कबिचंद॥ छं०॥ ४८७॥

राजा जैचन्द का दसोंधी को कवि की परीक्षा करने की आज्ञा देना।

वयन सुन्यौ रघुवंस कौ। भय सुम सुभहि नरिंद॥
तिन दसोंधिय सों कह्यौ। बोलि परष्षहु चंद॥ छं०॥ ४८८॥

कवियन तन चाह्यौ न्रपति। जो मुष तकौ न जान॥
जौ लाइक लष्यौ लषन। तौ लाओ इन थान॥ छं०॥ ४८९॥

* दसोंधी का कवि से मिलकर प्रसन्न होना।

चौपाई॥ आयस भौगु तियन तन चाह्यौ। तिन परनाम कियौ सिर नायौ॥
कंधौं डिंभ कवी परवानी। सरसें वर उच्चारहु बानी॥
छं०॥ ४९०॥

ते चवि आइ चंद पहि ठट्ठै। मिलतें हेत प्रीति रस बट्ठै॥
हुअ आनंद चंद पहि आए। ज्यौं सक्कर पय भूषें पाए॥
॥ छं०॥ ४९१॥

कवि और डिंबियों का भेद।

भुजंगी॥कितं दंडिया डंबरी भेषधारी। सु कब्बी कुकब्बी प्रकारं विचारी॥
सुने भट्ट मेंजे हे च्यार प्रकारी। किधों ब्रह्म मुनि ब्रत वर ब्रह्म विचारी॥
किधों ठग्ग कै ठोठ कै हेनगारी। .... ॥ छं०॥ ४९२॥
कहै राइ पंगुं सुनौ कव्वि सव्वी। परष्यौ सु पतं कुपतं गुनव्वी॥
छं०॥ ४९३॥
किते भट्ट जाने दुरे ते कविंदं। तिनं पास आडंबरं नघ्य इंदं।
कला ग्यान अग न्यान विग्यान जानं। अरध्यं सुरध्यं कुरध्यं प्रमानं॥
छं०॥ ४९४॥

* दसोंधी एक जाति होती है जो कि आज कल जसोंधी भी कहलाती है, दरबार के नाजि या कड़खे कहने वाले जेगबर अबतक इस वंश में होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठोरं कुबोलं पंढते तिरष्षं[1]। अदिष्टं अदानं प्रमानी निरष्षं ॥
जिते बाल बानी[2] कवीचंद जानं। तिते पंग दिष्टं अदानं प्रमानं ॥
छं० ॥ ४९५ ॥

अहित्तं सुहित्तं सु वित्तं विचारी। रसं नौ छ भाषा स साषा उधारी॥
परंमान ग्यानी विग्यनी विरूरं। लघौ वुद्धि विद्या तौ आनौ हजूरं॥
छं० ॥ ४९६ ॥

दसोंधियों का कवि के पास आना और कविचन्द का कवित्त पढ़ना।

चौपाई ॥ ति कवि आय[1] कवि पहि संपत्ते। गुरु व्याकंन कहै मन मत्ते ॥
थकि प्रवाह गंगा सरसत्ती। सुर नर श्रवन मंडि रहै बत्ती ॥
छं० ॥ ४९७ ॥

मुष [1]परसंत परसपर रत्ते। मुन उच्चार कर्‍यौ सरसत्ते ॥
गुन उच्चार चार तन कीनौ। जनु भुष्षै पय सक्कर दीनौ ॥
छं० ॥ ४९८ ॥

सब रूपक कहि कहि[1] कवि जित्ते। नव रस भास सु पुच्छहि तत्ते॥
गजपति गरूअ ग्रेह गुन गंजहु। श्रीधर बरनि पंग मन रंजहु॥
छं० ॥ ४९९ ॥

श्रीवर श्रीकर श्रीपति सुंदर। सुमिरन कियौ तथ्य कविचंदर ॥
बीठल विमल बयन[2] बसुधा बन। द्रुपद पुत्ति चिरु चीर बढ़ावन ॥
छं० ॥ ५०० ॥

ग्राह गहत गंधर्व गयंदह। रष्षहु मान सुभान नरिंदह ॥
तुअ चिंत्तत सचु सब मित्तिय। विष दातव्य विषा लछी चिय ॥
छं० ॥ ५०१ ॥

जब अर्जन कोवंड धरिय कर। तब [2]संघरिय सकल षोहिन भर
जब अर्जुन मन मोह उपायौ। तब भारथ मुष मभ्भ दिषायौ॥
छं० ॥ ५०२ ॥

(१) ए. कृ. को.-परसंन। (२) ए. संधिय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है हरता करता अविनासी। प्रकृति पुरुष भारय श्री दासी॥
सा भारति मुष मझ्झ प्रसन्नी। तव न वरस साटक भाष छ भन्नी॥
छं०॥ ५०३॥

साटक॥ अंबोरुह मानंद लोइ लरिसौ, दारिम्म लो बीयलो॥
[1]लोयन्ने चल चालु, चालुय वरं, बिंबाइ कीयौ गहौ॥
के सीरी कै साइ बैनिय रसौ, चीकीमि की नागवी॥
इंदो मध्य सु इंद मानवि [2]हितो, ए रस्स भासा छठौ॥
छं०॥ ५०४॥

दसोंधी का प्रसन्न होकर कवि को स्वर्ण आसन देना।

चौपाई॥ कवि पिष्यत कवि को मन रत्तौ। न्याय नयर कवंज संपत्तौ॥
कवि एकह अंगी क्रित कीनौ। हेम सिंघासन आसन दीनौ॥
छं०॥ ५०५॥

दसोंधी का कवि की कुशल और उसके दिल्ली से आने का कारण पूछना।

दूहा॥ क्यौ मुक्यौ प्रथिराज बर। क्यौं ढिल्ली पुर छेह॥
जंपि कहौ कविचंद तत। तुम कुसलत्तन ग्रेह॥छं०॥५०६॥

कवि का उत्तर देना कि भिन्न भिन्न राज्य दरबारों में विचरना कवियों का काम ही है।

गाथा॥ दीसै विविह चरियं। जानिज्जै सज्जन दुज्जनं॥
[3]अप्पानं चक लिज्जै। हिंडिज्जै तेन पुहवीए॥छं०॥५०७॥

दूहा॥ जिन मानो चहुआन भौ। सुलाइ जालई भट्ट॥
देषि ग्रब्ब सुरपति गरै। पंग दरसि सो यट्ट॥छं०॥५०८॥
जगत समुद्दयकार जल। षग्ग सीस चहुआन॥
इह अचिज्ज बर भट्ट सुनि। तुछ निड्डर संमान॥छं०॥५०९॥

(१) ए.-को-लोदन्ने, लोहने। (२) मो. हनौ। (३) ए.-अप्पाजं तनक लिज्जै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दसोंधी का कहना कि यदि तुम बरदाई हो तो यहीं से राजा के दरबार का हाल कहो।

चौपाई ॥ गजपति गरूअ ग्रेह मन रंजह,। किन गुन पंग राय मन गंजह,॥
जो सरसै बर है तुम रंचौ। [1]तौ अदिष्ट बरनौ कवि संचौ ॥
छं० ॥ ५१० ॥

मुरिल्ल ॥ तब सो देषै जान [2]प्रवीनं। भट्ट नयन सोहै रसलीनं ॥
दान षग्ग सरबंगै सूरौ। अनीवानि [3]अब्बंगै पूरौ ॥ छं० ॥ ५११ ॥

दूहा ॥ दीन वचन लहु करि कहौ। कविन करौ मन मंद ॥
जै सरसै बर कछु हुए। तौ बरनौ जयचंद ॥ छं० ॥ ५१२ ॥

अरिल्ल ॥ अहौ चंद बरदाइ कहावह,। कनवज्जह न्नप देषन आवह, ॥
जौ सरसति [4]जानौ बर चाव। तौ अदिष्ट वरनौ नृप भाव ॥
छं० ॥ ५१३ ॥

कवि का कहना कि अच्छा सुनों मैं सब हाल आशु छन्द प्रवंध में कहता हूं।

दूहा ॥ जौ वरनों जैचंद को। तौ सरसें बर मोहि ॥
छंद प्रवंध कवित्त जति। कहि समझाउं तोहि ॥ छं० ॥ ५१४ ॥

दसोंधी का कहना कि यदि आप अदिष्ट प्रबन्ध कहते हैं तो यह कठिन बात है।

कहहि पंग बुधिजन कवित। सुनह चंद बरदाइ ॥
दिठि दिष्षौ बरनै सकल। अदिठ न बरन्यौ जाइ ॥ छं० ॥ ५१५ ॥

कविचन्द का जैचन्द के दरबार का वर्णन करना।

पद्धरी ॥ सभ साज पंग बैठौ नरिंद। गुनगहर सकल साजै सु इंद ॥
सिंघासन आसन सुभ्र साज। मानिक्क जटित बहु मोल भ्राज ॥
छं० ॥ ५१६ ॥

---

(१) मो.-तौ अदिष्ट वरनहु नृप संचौ। (२) ए. प्रचीनं।
(३) मो.-सरवंगैं। (४) ए. कृ. को.-जानू।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वासन्न सेत मधि पीति सोहि। ब्रन्नंत ताम कविराज मोहि॥
मंद्यौ किरीट बररूव सीस। उत्तंग मेर हर सिषर दीस॥
छं०॥ ५१७॥

बैठो सुभूप मुष दिसि कुबेर। रजि रुद्र थान रचि जानि मेर॥
दाहिनै वांम भर भर बयट्ठ। स्हरत्त दत्त गुन सकल दिट्ठ॥
छं०॥ ५१८॥

सिर सेत छत्र मंद्यौ सु भूप। बहु देस रिद्धि बहु तास रूप॥
सनमुष्ष बैठि बर विप्र भट्ट। इह चव सु विद्य कलताम घट्टि॥
छं०॥ ५१९॥

तिन पच्छ बैठि गायन सु गेव। किन्नरह कंठ रस सकल भेव॥
हिमदंड छत्र किय सेत पान। ठट्ठौ सु पिट्ठ विस भूप जानि॥
छं०॥ ५२०॥

दुहु पिट्ठ साजि वर चँवर ढार। रजि रूप जानि अस्वनि कुमार॥
ठट्ठौ सु पन्नधर दच्छि थान। प्रतिबिंब रूप दुअ इंद जानि॥
छं०॥ ५२१॥

बैठे सु पिट्ठवर पासवान। बनि रूप रेह जित राज जान॥
रत्तौ सु कीर मुष अग्र जान। भुज्जंत पक्क फल करक पान॥
छं०॥ ५२२॥

थरि करह बाज ठट्ठौ समुष्ष। देयंत ताम तामो सुरुष्ष॥
इहि विद्धि बयट्ठौ पंगराज। आसनह जीति जोगिंद साज॥
छं०॥ ५२३॥

जैचन्द का वर्णन।

साटक॥ जा सीसं चमरायते सित छतं, षं षिन्न इंदोलिता॥
बाला अर्क समान तेज तपनं, कीटी तयं मौलिता॥
सस्चे सस्च समस्त षिचि दहियं, सिंधुं प्रयाते षलं॥
कंठे हार रुलंति आनक समं, प्रथिराज हालाहलं॥
छं०॥ ५२४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरबार में प्रस्तुत एक सुग्गे का वर्णन।

दूहा॥ नील चंच अरु रत्त तन। कर करकटी भषंत॥
जोइ जोइ अष्षै राज मुष। सोइ सोइ कीर कहंत॥छं०॥ ५२५॥

कवित्त॥ नीम चंच तन अरुन। पानि आरोहि राज सुक॥
रुचि संपार परंम। चरन पिंगल सुभंत जुक॥
कंठ मुकत गुन रतन। जटित ओपत आभूषन॥
[1]रूर वारु कर नषनि। दष्षि भष्षित तन पूषन॥
जिम जिम उचार अष्षत न्रपति। तिम तिम कीर करंत सुर॥
भूलंत सुनत क्रत बेद बर। रस रसाल बानी सु फुर॥
छं०॥ ५२६॥

दूहा॥ सहस छच बज्जन बहल। बहुल बंस विधि नंद॥
एक सहस संषहधुनी। महल जानि जयचंद॥ छं०॥ ५२७॥

दसोंधी का कहना कि सब सरदारों के नाम गाम कहो।

दूहा॥ तब तिन कवियन उच्चरिय। अहो चंद बरदाइ॥
[2]पृथुक पृथुक नर नाम सभ। बरनिरु हमहि सुनाइ॥
छं०॥ ५२८॥

कवि चन्द का सब दरबारियों का नाम गाम और उनकी बैठक वर्णन करना।

पद्धरी॥ राजिय सुसभा राजै सपंग। बिहु बांह पंति रंगह सुरंग॥
सोभत सुरेस सुर समय सार। हनि वृतअसुर दरबार भार॥
छं०॥ ५२९॥
दष्षिनिय अंग रयसल्ल कमंध। तिन अंग बीरचंदह सुबंध॥
जद्दवह भांन जुगरान बीर। कासह नरिंद रविबंस धीर॥
छं०॥ ५३०॥

(१) ए.-रूर चारु कर नषनि, कृ.-रूचिरु रनि षनि, मो. उरट वारु कर नषनि।
(२) ए. कृ. को.-"पृथुक नाम नर नाम सब"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरसिंघ राव बघेघल सूर। [1]कठिया राय केहरि करूर ॥
परताप बीर तेजंप नाथ। रा राम रेन राहप्प पाथ ॥
छं० ॥ ५३१ ॥

केलिया बंध कठी सु आस। करनाट भर काहप्प तास ॥
सारंग भट्ट सुग्रीव भाव। मोरी मुवंद परमार राव ॥
छं० ॥ ५३२ ॥

बीरंमराव नर पाल बीर। नरसिंघ कन्ह सम भुज गंभीर ॥
महदेव समह हरंसिंघ बंक। मेहान छुंद सद सार कंक ॥
छं० ॥ ५३३ ॥

पूरन्नराव चालुक्क देव। गोयंदराव परमार भेव ॥
हम्मीर धीर परताप तत्त। परबत पहार पाहार सत्त ॥
छं० ॥ ५३४ ॥

सत्रसाल अवधि पाटन नंरिंद। साषुला हीर भुज फर कंविंद ॥
हन्नू लंगूर रनबीर बाह। जसवंत उठ्ठ द्रुग सबर नाह ॥
छं० ॥ ५३५ ॥

बर बीरभद्र बघघेल मेर। नृप कृष्णराय सद्दन अरेर ॥
श्री मकुँदराइ बीराधिधार। जै सिंघ सूर [2]आकार भार ॥
छं० ॥ ५३६ ॥

भुज बाम बंक सेनी सधीर। आघात पात वज्रंग बीर ॥
रठवरह सूर रावत्त राज। रनवीर धीर आवद्ध भ्राज ॥
छं० ॥ ५३७ ॥

न्नप चंद्रसेन पांवार राव। न्नप भीमदेव आजान दाव ॥
नरसिंघ सूर चालुक्क वीर। वर रुद्रसिंघ कंठी सधीर ॥
छं० ॥ ५३८ ॥

श्री रामसेन राजेस राज। सांषुला देव दासह समाज ॥
रा रामचंद्र रानिंग राव। हम्मीर सेन चतुरंग चाव ॥
छं० ॥ ५३९ ॥

(१) ए. कृ. को.-कठिसा। (२) कृ. को.-आकार, ए.-स्राकार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जट्टह सुदेव सारंग सूर । बीरंभ सवन घाती समूर ॥
जैसिंघ कमध आजानि पानि । पंमार भीम रण सिंघ थान ॥
छं० ॥ ५४० ॥

अरजुन्नदेव निमकुल नरेस । आसोक राइ साहन सुरेस ॥
चंदेल वीरभद्रह सवीर । सहदेव बंक भुज धज गंभीर ॥
छं० ॥ ५४१ ॥

केहरी ब्रह्म चालुक बीर । हरिचंद तेज चहुआन नीर ॥
हरसिंघ राइ रजि पास वान । निसुरत्ति बीर ममरेजषान ॥
छं० ॥ ५४२ ॥

इतमीस[1]मीर बहबल मसंद । [1]आरासषान पीरोज बंद ॥
कंमोदषान जहान भार । जुग बलिय अमिय अलिय करार ॥
छं० ॥ ५४३ ॥

महमुंद षान केलिय गंभीर । अबदुल्ल रोम राहिम्म मीर ॥
सल्लेम साहि [2]इसमित्त षान । [3]आरोज साहि असवह पान ॥
छं० ॥ ५४४ ॥

ढारंत चँवर जुग पच्छ भूप । हरि बीर रास सम वय सरूप ॥
ठट्ठौ सु दषिन कर मंचि राव । थट्टे मुकुंद पहु वाम थाव ॥
छं० ॥ ५४५ ॥

शिव राग होत हरि गुन [4]मिलंत । उर सुनत सत्त पत्तह [5]षिलंत ॥
श्रीकंठ सु गुर कवि कमल भट्ट । जुग जोर समुष कमधज्ज पट्ट ॥
छं० ॥ ५४६ ॥

जुग पुरुष आय बिनतिय समान । पठ्ठए नाथ तिरहुत्त थाम ॥

दसौंधी का दरबार में जाकर कवि की शिफारिस करना ।

कवि गमत बहुर फिरि पंग तीर । सुनि गुन गंभीर कमधज्ज बीर ॥
छं० ॥ ५४७ ॥

(१) ए.-आरात । (२) ए. कृ. को.-इसभीर । (३) मो.-आरज्ज ।
(४) कृ. ए.-सिलंत । (५) मो.-लिषंत ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि कमल विमल गुन अद्दरेस। अप्पियै अंषि निज वर नरेस ॥
छं० ॥ ५४८ ॥

दूहा ॥ * मंगल बुध गुरु सुक्र सवि। सकल सूर उड़दिट्ठ ॥
आत पच धुम्र जिम तपै। सुभि जयचंद बयट्ठ ॥छं० ॥ ५४९॥

नव रस सुनि हिठ अदिठरस। भाषा जंपि न्रपाल ॥
सद्दह पत्त कुपत्त लिषि। गुन दरसी चयकाल ॥ छं० ॥ ५५० ॥

कवि का एक कलश लिए हुई स्त्री को देख कर उसकी छवि वर्णन करना।

जान्यौ बर बरदाइयन। बर संचौ कविचंद ॥
कंद्रप कितो कि और बर। लेत पीठ जैचंद ॥ छं० ॥ ५५१ ॥

चौपाई ॥ दस दिस कवि संमुहौ उहाई। घट धरि बाल [1]कुरित्तन आई॥
धरत सुधरि छाईं मुष [2]छाइया तिहि कविराज सु ओपम [2]पाइय॥
छं० ॥५५२॥

दूहा ॥ बर उपजै विपरीति गति। रहत सहायक द्वंद ॥
तत्त विरम्मि निवेस किय। [3]चित्तहि तत्तहि चंद ॥छं०॥५५३॥

कवित्त ॥ तहां सुदिष्षि कविचंद। चंद दह दह संजुत परि ॥
पूरानन आनंद। शुद्ध मकरंद सुद्ध जुरि ॥
म्रगा मीन गुन गनै। गुनह लज्जीत छिपाकर ॥
तहां अपुव उप्पनौ। हीर चक्रवाक प्रभाकर ॥
सज्जीव मदन वेलीं विहसि। बरकमोद सामोद घटि॥
संजोग भोग सम जोग गति। रति प्रमान मनमथ अनटि ॥
छं० ॥ ५५४ ॥

*यह दोहा मो. प्रति में इस छन्द पद्धरी के पहिले और दोहा छन्द ९१७ के बाद है।
(१) ए. कृ. को.-कुरित्तिन। (२) ए. कृ. को.-छाई पाई।
(३) ए. कृ. चित्तरि ततरि चंद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि की विद्वत्ता का वर्णन।

दूहा ॥ भाषा षट नव रस पढ़त। बर पुच्छै कविराज ॥
संप्रति पंग नरिंद कै। बर दरबार बिराज ॥ छं० ॥ ५५५ ॥

भाष परिछा भाष छह। दस रस दुम्भर भाग ॥
वित्त कवित्त जु छंद लौं। षग सम पिंगल नाग ॥ छं० ५५६ ॥

कवित्त ॥ भेद भाव गुन कला। [1]सुनत आचिज कविंद घन ॥
नृपति बरन अनदिट्ठ। सभा सद विवह बचन घन ॥
छंद कवित पारस प्रचार। सुरधार नंदि सुर ॥
रस रसाल बानी [5]पुनंत। गय भज्जि उरह जुर ॥
दीरघ दरस्स कविचंद बर। सुनि नरिंद कनवज्ज पति ॥
[2]अनि गुनिय कला गुन सष्षवै। सरसें वर धरि सरस मति ॥
छं० ॥ ५५७ ॥

कविचन्द का दरबार में बुलाया जाना।

दूहा ॥ प्रभु बोलिय कवि मझ्झ ग्रह। दरसि पंग असथान ॥
मनु भान चरन नव ग्रस परसि। नक बैठो सुरथान ॥
छं० ॥ ५५८ ॥

राजा जैचन्द का ओज साज वर्णन।

कवित्त ॥ जिम सरद ससि व्यंब। तिम सु [3]मछि छच विरज्जिय ॥
जिम सु ध्रम्म पव्वय। पविच [4]छीरनिधि जिम छज्जिय ॥
जग मंडिन जिम मुत्ति। कित्ति तानिय वितान तिम ॥
जिन सु सत्त मय पुंज। सेत सुरतरु फुल्लिय तिम ॥
सित सहस पच विगसिय जिमसु। दुरद मत्त अलि सुम्मयौ ॥
अति तुंग सुधा रस राजग्रह। पिषत कव्वि द्रग भुल्लयौ ॥
छं० ॥ ५५९ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुनत। (२) ए. कृ.-अति।
(३) ए. कृ. को.-माछि। (४) ए. कृ. को.-छीर निधि। (५) मो.-गय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हेजम का अलकाव बोलना और कविचन्द का आशीर्बाद देना

दूहा ॥ हक्कार्यो हेजम्म कवि । निकट बोलि नृप ईस ॥
सरसें बर संभारि करि । कवि दीनी आसीस ॥ छं० ॥ ५६० ॥

कवि का आशीर्वाद देना ।

कवित्त ॥ जिम ग्रह पिति ग्रहपंति । जिम सु उड़पति तारायन ॥
मधि नाइक जिम लाल । जिम सु सुरपत नाराइन ॥
जिम विषयन संग मथन । सकल गुण संग सील जिम ॥
वरन मध्य जिम उगति । चित्त इन्द्रिय जालह तिम ॥
अनि अनि नरेस भर भीर सर । दारिम न्टप मंदिर मरिय ॥
दिख पंग पानि उन्नित करिय । सुकविचन्द आसिष्ष दिय ॥
छं० ॥५६१॥

वचनिका ॥ साहि झार साहि विभ्भार । बलिय साहि कंध कुद्दार ॥
सबर साहि मान मरदान । निबर साहि मान भूमि वरदान ॥
अदतार राइ अंकुस्स सीस । दातार राइ सरसोभ दीस ॥
सुक्रति राइ बाहन बरीस । विजैपाल सूय कनवज्ज ईस ॥

जैचंद की दराबरी बैठक वर्णन ।

कवित्त ॥ मंगल बुध गुरू सोम । सुक्र सनि सोभ पास तप ॥
हत तप [1]धुतम नरिंद । पंग सोहीज मंडि जप ॥
सकल सूर बर सुमट । सुबर मंडिली विराजै ॥
द्रुग्ग देषि कविचंद । [2]सुभत सुरराज सुभाजै ॥
क्रम वेन सम उच्चर्यो । विरह तुंग द्रिगपाल तप ॥
क्रम अट्ठ अट्ठ षिटें सु बर । मध्य बीर मंडलिय अप ॥ छं० ॥५६२॥

जैचन्द की सभा की सजावट का वर्णन ।

भुजंगी॥ सभा सोभियं बीर विजपाल नंदं । मनों मंडियं थान बिय इंद दंदं ॥
बरं थान थानं दुलीचै विराजै । तिनं देषि रंगं धनंपंति लाजै ॥
छं० ॥ ५६३ ॥

(१) ए. कृ. को.-पुतम । (२) ए. कृ. को.-सुदित सुरनाथ सु भाजै ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुंथे रत्त पट्टं सुई डोरि हेमं। मनो भूमि रविक्रंन मिल्ल चलहि तेमं॥
जरे रत्त नीलं नगं पट्ट साही। मनो आवरे बंधु धर नील माही॥
छं० ॥५६४॥
ढरैं चोर सेतं झपै मोज ताही। तिनंकी उपम्मा कवीचंद भाही॥
मनु आरुही भान लगि लग्गि आजं। डरं जान उग्गै रमै रथ्थ साजं॥
छं० ५६५॥
उठै छत्र पंगं उपम्मा समग्गं। मनो नौग्रहं मान तजि सीस लग्गं॥
कवीचंद राइं बरद्दाय बीरं। कला काम कल कोटि दिष्षी सरीरं॥
छं० ५६६॥

राजा जैचन्द को प्रसन्न देख कर सब दरबारियों का कवि की तारीफ करना।

दूहा॥ पंग पयंप्यौ कवि कमल। अमर सु आदर कीन॥
पुब नरेस परसंन दिट्ठि। सब जंपयौ प्रवीन॥ छं०॥५६७॥
चंद अग्ग प्रथिराज बर। हन्नौ फुनि फुनि एष॥
जिम जिम न्रप पुच्छै बिरद। तिम तिम बढ़ै विसेष॥छं०॥५६८॥

पुनः जैचन्द का बल प्रताप और पराक्रम वर्णन

कवित्त॥ कोरि जोर दल प्रबल। अचल चल सुथिर थरथ्थर॥
नाग सु फनि फन सकुचि। कच्छ पुप्परिय घरष्षर॥
चढ़त भान छावंत रेन। [1]गयनेव दसं दिस॥
दीपक ज्यौ बसि बात। आत पचं [2]आधारिस॥
कमधज्जराइ विजपाल सुअ। तो बर भूपति हय किसौ॥
बरदाइ चंद दैदेवि बर। जिसौ होइ अष्षै तिसौ॥ छं०॥५६९॥

इस समय की पूर्व कथा का संक्षेप उपसंहार।

प्रथम परसि संदेह। भयौ आनंद सबै जन॥
अरू गंगा जल न्हाय। पाप परहर्‌यौ ततच्छन॥

(१) ए. कृ. को. गयनेंन दसंज्जिय। (२) ए. कृ. को.-आधारिय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयौ चदं दीवान। अनी बानी सु फुरंतौ॥
सुफल हथ्थ सुष विरद। राय भिंव्यौ सु तुरंतौ॥
श्रुत सुनिय विरद पुच्छिय तुरत। संच पयंपहु भट्ट सुनि॥
जिम जिम अचार ढिल्लिय न्रपति। तिम तिम जंपहि पुनह पुन॥
छं० ॥ ५७० ॥

भुजंगी॥ जहां आसनैं सूर ठट्टै सनाहं। जिनै जीति छितिराइ किय एक राहं॥
धरा भ्रम्म दिगपाल धर धरनि षंडं। धरै छत्र सिर सोभ दुति कनक [1]डंडं॥
छं० ॥ ५७१ ॥

जिनै साजतें सिंधु गाहें सु पंगा। उनै तिमिर तजि तेज भाजै कुरंगा॥
जिनें हेम परवत्त सें सव्व ढाहे। [2]जिनें एक दिन अट्ठ सुरतान साहे॥
छं० ॥ ५७२ ॥

असं जंपियं [3]सष्ष सो चंद चंडं। जिनै थप्पियं जाय तिरहूत पिंडं॥
जिनै [4]दष्षिनी देस अप्पै विचारै। जिनैं उतर्‍यौ सेतबंधं पहारै॥
छं० ॥ ५७३ ॥

जिनैं करन डाहाल दुअ बान बेध्यौ। जिनैं सिद्ध चालुक्क कय बार षेध्यौ॥
तिनं दिन्न जुद्धं भिरै भूमि रुंडं। बरं तोरि तिल्लंग गोआल कंडं॥
छं० ॥ ५७४ ॥

जिनै छिंडियौ बंधि इक गुंड जीरा। ग्रहे लिद्ध वैरागरें सब हीरा॥
जिने गज्जने सूर साहाब साही। तिने मोकल्यौ सेव निसूरत्ति भाहीं॥
छं० ॥ ५७५ ॥

बरं भुल्लि भष्षी षनं जोव रोरै। तहां रोस कै सोस दरिया हिलोरै॥
जिनैं वंधि षुरसान किय मीर बंदा। इसौ [5]रट्ठवर राय विजपाल नंदा
छं० ॥ ५७६ ॥

जहां बंस छत्तीस आवैं हकारे। परं एक चहुआन षुमान टारै॥
छं० ॥ ५७७ ॥

(१) ए. कृ. को.-दंड। [२] मो.-जिते। [३] ए. कृ. को.-सच्च।
[४] ए. कृ. को.-दछिन। [५] मो.-रिटवर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का नाम सुनतेही जैचन्द का जल उठना।

दूहा ॥ सुनत न्रपति रिपु कौ बयन । तन मन नयन सु रत्त ॥
दिय दरिद्र मंगन घरहु । को मेटै विधिपत्त ॥ छं० ॥ ५७८ ॥

रतन बुंद बरषै न्रपति । हय गय हेम सु हद्द ॥
लग्गि न बुंद सु मग्ग तन । सिर पर छच दरिद्द ॥ छं० ॥ ५७९ ॥

पुनः जैचन्द की उक्ति कि हे*बरद्द दुबला क्यों है ?।

मुह दरिद्र अरु तुच्छ तन । जंगलराव सु हद्द ॥
बन उजार पसु तन चरन । क्यौं दूबरौ बरद्द ॥ छं० ॥ ५८० ॥

कवि का उत्तर देना कि पृथ्वीराज के शत्रुओं ने सब घास उजार दी इसी से ऐसा हूं।

कवित्त ॥ चढ़ि तुरंग चहुआन । आन फेरीत परद्धर ॥
तास जुद्ध मंडयौ । जास जानयौ सबर बर ॥
केइक तकि गहि पात । केइ गहि डार मूर तरु ॥
केइत दंत तुछ चिन्न । गए दस दिसनि भाजि (१)डर ॥
भुअ लोकत दिन अचिरिज भयौ । मान सबर बर मरदिया ॥
प्रथिराज षलन षद्धौ जु षर । सु यों दुब्बरौ बरद्दिया ॥
छं० ॥ ५८१ ॥

पुनः जैचन्द का कहना कि और सब पशु तो और और कारणों से दुबले होते हैं पर बैल को केवल जुतने का दुःख होता है। फिर तूं क्यों दुबला है।

हंस न्याय दुब्बरौ । मुत्ति लब्भै न चुनंतह ॥
सिंघ न्याय दुब्बरौ । करी चंपे न कंठ कह ॥

(१) ए. कृ. को. कर ।

* "वरद्द" शब्द के दो अर्थ होते हैं एक वरदाई दूसरा बैल ।अब भी बंसावड़े में बैल को बरधा, वरध या बधिया इत्यादि कहते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म्रग्ग न्याय दुब्बरौ। नाद बंधियै सु बंधन ॥
छैल छक्क दुब्बरौ। चिया दुब्बरी मीत मन ॥
आसाढ़ गाढ़ बंधन धुरा। एकहि गहि ह हरदिया ॥
जंगर जुरारि उज्जर घर न। क्यों दुब्बरौ बरद्दिया ॥ छं० ॥ ५८२ ॥
पुरै न लग्गी आरि। भारि लग्यौ न पिट्ठ पर ॥
गज्जवार गंमार। गही गट्ठी न नथ्थ कर ॥
भ्रम्यौ न कूप भावरी। कबंहुक सब सेन हत्तौ ॥
पंच धार ललकारि। रथ्थ सथ्था नह जुत्तौ ॥
आसाढ़ मास बरषा समै। कंध न कहों हरद्दिया ॥
कमधज्ज राव इम उच्चरै। सु क्यौं दुब्बरौ बरद्दिया ॥ छं० ॥५८३॥

पुनः कवि का उपरोक्त युक्ति पर प्रत्युत्तर देना।

फुनि जंपै कविचंद। सुनौ जैचंद राज बर ॥
पुरै आर किम सहै। भार किम सहै पिट्ठपर ॥
नथ्थ हथ्थ किम सहै। कूप भाँवरि किम मंडै ॥
है गै सुर बर सुधर। स्वामि रथ भारथ तंडै ॥
बरषा समान चहुआन कै। अरि उर बरह हरद्दिया ॥
प्रथिराज षलनि षद्धौ सु षर। सुइम दुब्बरौ बरद्दिया ॥ छं० ॥५८४
प्रथम नगर नागौर। बंधि साहाब चरिग तिन ॥
सोभंत्त भर भीम। सीम सोधीत सकल बन ॥
मेवाती मुगल महीप। सब्ब पचजु षद्धा ॥
ठट्ठा कर ढिल्लिया। सरस संमूर न लद्धा ॥
सामंत नाथ हथ्थां सु कहि। लरिकैं मान मरद्दिया ॥
प्रथिराज षलन षद्धौ सु षर। यौं दुब्बरौ बरद्दिया ॥ छं०॥५८५॥

कवि के वचन सुन कर जैचंद का अत्यंत कुपित होना।

सुनत पंग कबि बयन। नयन श्रुत बदन रत्त वर ॥
भुवन बंक रद अधर। चंपि उर उससि सास झर ॥
कोप कलंमलि तेज। सुनत विक्रम अरि क्रम्मह ॥
सगुन विचार कमंध। दिष्षि दिस चंद सु पिम्मह ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदर सुभट्ट राजिंद किय। अंग एँडाइ बिसतारि कर ॥
नन मिलत मोहि संभरि धनिय। कहौ बत्त मुष विरद बर ॥
छं० ॥ ५८६ ॥

कवि का कहना कि धन्य है महाराज आप को! आपने मुझे वरद पद दिया। वरद की महिमा संसार में जाहिर है।

जिहि बरद्द चढ़ि कै। गंग सिर धरिय गवरि हर ॥
सहस मुष्प संपेषि। हार किन्नौ भुजंग गर ॥
तिहि भुजंग फन जोर। झोलि रष्यौ वसुमत्तिय ॥
वसुमत्ती उप्परै। मेरगिरि सिंधु सपत्तिय ॥
ब्रहमंड मंड मंडिय सकल। धवल कंध करता पुरस ॥
गरुअत्त बिरद पहुपंग दिय। क्रपा करिय भट्टह सरिस ॥
छं० ॥ ५८७ ॥

जैचन्द का कहना कि मुझे पृथ्वीराज किस तरह मिले सो बतलाओ।

दूहा ॥ आदर किय न्रप तास कौं। कह्यौ चदं कवि आउ ॥
[1]मिले मोहि ढिल्लिय धनी। सु वत कहिग स मझाउ ॥ छं० ॥५८८॥

राजा जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज और हम सगे हैं और तुम जानते हो कि सब राजा मेरी सेवा करते हैं।

उनि मातुल मुहि तात कहि। नित नित प्रेम वढंत ॥
जिम जिम सेव स अद्दरिय। तिम तिम दान चढंत ॥ छं० ॥ ५८९॥
सोमेसं पानिग्रहन। जब ढिल्ली पुर कीन ॥
हम गुरजन सब बत्त करि। बहु धन मंग सु लीन ॥ छं० ॥ ५९० ॥
कै कमान सज्यौ सु द्रह। सुन्यौ न विजय नरिंद ॥
सब सेवहि पहु हमहि न्रप। सो तुम सुनि कविचंद ॥छं०॥५९१॥

[१] मो.-मिले न मुहि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविचन्द का कहना कि हां जानता हूं जब आप दक्षिण देश को दिग्विजय करने गए थे तब पृथ्वीराज ने आपके राज्य की रक्षा की थी।

पद्धरी ॥ अवसर पसाउ सुनि पंगराव। तुअ तात मात द्रिगविजय चाव ॥
तुम दिवस लग्गि दच्छिनह देस। तव लग्ग मेछ [1]इथ्थह प्रवेस ॥
छं० ॥ ५९२ ॥

सामंत नाथ तपि तोन बांधि। संहऱ्यौ साहि सब सेन संधि ॥
दामित्त रूप छत्ती कुलाह। सामंत सूर दुहु विधि दुबाह ॥
छं० ॥ ५९३ ॥

अन पुच्छि करै ग्रिह राज काज। कुल छच पंड चहुआन लाज ॥
[2]सिंगिनि समथ्थ सर सबद बेध। जिन करहु राव उन मिलन षेध ॥
छं० ॥ ५९४ ॥

हिंदवान जेन लग्गीय धाय। उहि छिच कौंन द्रिग विजै राइ ॥
मानिक्कराव दुअ बंस सुद्ध। रघुवंसराव जिमनि विन दुद्ध ॥
छं० ॥ ५९५ ॥

मुक्कल्यौ तोहि दिष्षनि बरीति। राज सु जेम मंड्यौ प्रवीति ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ५९६ ॥

जैचन्द का कहना कि यह कबकी बात है आह यह उलहना तो आज मुझे बहुत खटका।

कवित्त ॥ कहै पंग सुनि चंद। येह वितक किम वित्तौ ॥
किम गोरी सुरतान। भार भर थंभर जित्तौ ॥
कौंन समै इह बत्त। घत्त षेली किम गोरी ॥
यादिन हौ मुहि परम। परी बत्ता सब भोरी ॥
कहि कहि सु चंद मम ढील करि। राज पयंपत पुनह पुन ॥
[3]तव कही चंद वचनह विवर। एह कथ्थ संमूल सुनि ॥ छं० ॥५९७॥

(१) ए. कृ. को.-हथ्थह। (२) मो.-संगानि। (३) ए. कृ. को.-तव कही चंद वरदाइ ने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि का उक्त घटना का सविस्तर वर्णन करना।

संवत तीस चिआर। विजय मंड्यौ सुपंग पहु॥
जीति देस सब अवनि। लीन करमध्य हिंदुसहु॥
दिसि दच्छिन संपत्त। कोपि गोरी सहाब तब॥
रचिय बुद्धि बर अप्प। बोलि उमराव मीर सब॥
तत्तार षान षुरसान षां। षां रुस्तम [1]कालन गनिय॥
जेहान मीर मारूफ षां। बोलि मंत मंचइ मनिय॥ छं०॥ ५९८॥

शहाबुद्दीन का कन्नौज पर चढ़ाई करने का मंत्र करना।

गुझ्झ महल साहाब। दीन सुरतान सपत्तौ॥
मंडि मंत एकंत। बोलि उमरावन तत्तौ॥
इह काफर बरजोर। जीति अवनीय अप्प किय॥
तेज अनंत मति अनँत। सेन सज्जैं भर बंकिय॥
आए सु साज कंगुर करषि। करन सेव को देन कर॥
बर जोर हिंदु सा दीन पहु। घटै न रंचि सु बुद्ध [2]नर॥
छं०॥ ५९९॥

मंत्रियों का कहना कि दल पंगुरा बड़ा जबरदस्त है।

कहिय षान तत्तार। साहि साहाब दीन सुनि॥
विषम जोर बर हिंद। जीति पहुपंग अप्प फुनि॥
मिले सेन सुरतान। [3]मलिक अनेक द्रव्य भर॥
द्रव्य पानि पथ्थार। संकरि सब वस्य अप्प पर॥
गहि कोट सज्जि गज्जन सुबर। आतस चरित [4]अनेक करि॥
आवंत पंग साधर सयन। [5]लरि मनमध्य पियान अरि॥
छं०॥ ६००॥

(१) ए. कृ. को.-तालन यह नाम महोबे के चंदेल राजा परिमाल के दरबारी एक मुसल्मान सरदार का भी है।

(२) ए. कृ.को.-बर। (३) ए. कृ. को.-मिलक।

(४) ए. कृ. को.-अनंत। (५) ए. कृ. को.-नीर मनमथ पिय थान लरि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाह का कहना कि दिल छोटा न करो दीन की दुहाई बड़ी होती है।

कहै साहि साहाब। अहो तत्तारषान सुनि॥
षुरासान रुस्तमां। जमन मारुफ षान गुनि॥
काल जमन जेहान। सुनौ बर बत्त चित्त तुम॥
मंत सत्त सुद्धरौ। दीन नन हीन करौ क्रम॥
सजि सेन चढ़ौ कनवज्ज धर। भंजि देस सम पुर सयल॥
हरि रिद्धि बंधि नर नारि धर। आतस जालिय अप्प बल॥
छं०॥ ६०१॥

दूहा॥ सज्जि सेन [1]साहन[2]समुद। गज्जनवै सुरतान॥
बोलि मीर गंभीर भर। भंजि देस थन थान॥ छं०॥ ६०२॥

शहाबुद्दीन का हिंदुस्तान पर चढ़ाई करना और कुंदनपुर के पास रयसिंह बघेले का उसे रोकना।

पद्धरी॥ मिलि सेन साहि आलम असंष। गंभीर मीर दिढ़ तीर नंषि॥
मेमंति दंति घन बज्जि सार। आगाढ़ स्याम बद्दर सु ढारि॥
छं०॥ ६०३॥
बर तुरिय तेज अग्गल उभ्भाव। उत्तंग अंग [3]जिम वेग वाव॥
सजि लष्ष चढ़े गोरीस सेन। रज्जै सु बाज बज्जे सु गेन॥ छं० ६०४॥
धज नेज भंड हल्ले अनंत। बहुरंग अंग लभ्भै न अंत॥
षह पूरि धूरि धुंधुरिग भान। दिसि विदिसि पूरि मंनिय नमान॥
छं०॥ ६०५॥
गहरह सुमंत सुनियै न कान। संचार बत्त संचरहि थान॥
संपत्त सेन कनवज्ज देस। भंजिए नयर पुर ग्रभनेस॥ छं० ६०६॥
बंधियहि बांधि गोचीय बाल। धर जारि पारि किज्जै विहाल॥
.... । .... ॥ छं०॥ ६०७॥

(१) ए. कृ. को.-साहिन। (२) ए.-समुह। (३) ए. कृ. को.-ताजि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ कुंदन पुर वघघेल। राय रयसिंघ सिंघ रन ॥
आगम साहि सहाब। सेन सज्जिय [1]बीरह तिन ॥
सहस उभै साहन। समुंद दस सहस पयभ्भर ॥
बंधि नारि नग ढारि। रह्यौ निज सेन सज्जि बर ॥
आवंत सेन रुक्यौ सकल। भयौ जुद्ध हरि उग्ग मनि ॥
परसै न सुदल रोक्यौ सकल। भयौ जुद्ध अदभुत्त तिन ॥ छं० ६०८।

हिन्दू मुसलमान दोनों सेनाओं का युद्ध वर्णन।

भुजंगी ॥ चली अग्र चौकी सु साहाब सायं। अगें गज्ज चालीस मत्त महायं।
अगें हथ्थनारी उभारी उतंगा। सयं सत्त सासद्द वादी सु चंगो ॥
छं० ॥ ६०९ ॥

सहस्संच पंचं गजं बाज पूरं। महाबीर बाजिच बज्जे करूरं ॥
मिली फौज हिंदू तुरक्कीस तेजं। कहै सूर रैसिंघ अप्पं अजेजं ॥
छं० ॥ ६१० ॥

सरं दून छुट्टै सुभारं उभारं। सरा पंजरं पंथज्यों पंड चारं ॥
हकै हक्क वज्जी भरं दून दूनं। चपे सिंघ न्रसिंघ हक्कं सऊनं ॥
छं० ॥ ६११ ॥

भगी साहि चौकी चंपे सिंघ रायं। परे मीर भीरं सयं तीन घायं ॥
महा आय गज्जे सु मैदान सिंघं। भगे मीर मारूफ करि जेम जंगं॥
छं० ॥ ६१२ ॥

हके कट्टि तत्तार कत्तार तिष्षं। भली मुच्छ भोहैं भई रत्ति अंषं ॥
करै फौज अग्गै चल्यौ गज्जि गोरी। चवै दीन दीनं लषै भल्लि षोरी।
छं० ॥ ६१३ ॥

मिलै आवधं मीर हिंदू करारे। धुरं भ्रुव्व तुट्टै उभै सार धारै ॥
भरं आवधं आवधं भाक बज्जै। बजै बीर वाजिच गोगेंन गज्जै ॥
छं० ॥ ६१४ ॥

धरा कार [2]लोहं रसं रुद्र मत्तं। उभै हार मन्नै नहीं आय अंतं॥

(१) ए.-बारह। (२) ए.-मोहं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिली दिट्ठ तत्तार रैसिंघ दूनं। मिले घाय सायं षुलै षग्ग ऊनं॥
छं० ॥ ६१५ ॥

करै दिट्ठ तत्तार कम्मान मुट्ठी। कसे बान गोरी महा दट्ठ दिट्ठी॥
लगे ऊर सौंसंग फुट्टे परारं। हँसे झार संगी हयौ षान सारं॥
छं० ॥ ६१६ ॥

लगे बाहु ग्रीवा समं घाय सालं। पऱ्यो षान तत्तार बाजी बिहालं॥
हयो सिंघ कालन्न मीरं सनेजं। पऱ्यो राय रनसिंघ रन अंत सेजं॥
छं० ॥ ६१७ ॥

भगी फौज हिंदू जुधं जीति मीरं। धऱ्यौ षान तत्तार झोरी सु तीरं॥
छं० ॥ ६१८ ॥

मुसलमानी सेना का हिन्दू सेना को परास्त कर देश में लूट मार मचाते हुए आगे बढ़ना।

दूहा॥ परे हिंदु सय तीन धर। सत्त पंच पर मीर॥
गुर गुस्ताना नंचिया। बजि बाजिच गुहीर॥ छं० ॥ ६१९ ॥

मंझ ढाल तत्तार षां। धरि आयौ साहाब॥
साज सज्जि चढ्यौ सु फुनि। जनु उलो [1]दरियाव॥ छं० ॥ ६२० ॥

भंजि रयन पुर लूटि निधि। बजि बाजिच निहाय॥
अलहन सागर उत्तरिय। बंधि तत्तार सु घाय॥ छं० ॥ ६२१ ॥

नागौर नगर में स्थित पृथ्वीराज का यह समाचार पाकर उसका स्वयं सन्नद्ध होना।

दिसि दिसि धाह जु संचरिय। भगिय प्रजा तजि देस॥
सुनिय बत्त नागौर पहु। चढ़ि प्रथिराज नरेस॥ छं० ॥ ६२२ ॥

(१) मो.-दधि आव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज का सब सेना में समाचार देकर जंगी तैयारी होने की आज्ञा देना ।

कवित्त ॥ सुनिय बत्त प्रथिराज । चढ़्यौ चहुआन महाभर ॥
बोलि कन्ह चहुआन । राय बरसिंघ सिंघ बर ॥
बोलि चंदपुंडीर । बोलि बघघेल्ल सु लष्षन ॥
लोहानौ आजानबाह । मिलयो सु ततच्छिन ॥
गुज्जरह राम जिन बंध सम । चालुक बीझ सु भीम भर ॥
हाहुल्लिराव हम्मीर हर । मिलिय सेन दस सहस सर ॥छं०६२३॥

दूहा ॥ अवर सेन सामंत मिलि । चढ्यौ राज प्रथिराज ॥
गाजि गुहिर बाजित्र बजि । सज्जि सयन (१)जुध साज ॥ छं०॥६२४ ॥

कुमक सेना का प्रबंध।

कवित्त ॥ बोलि चंद चंडौस । दीनं आयस प्रथिराजहु ॥
तुम षट्टूपुर जाहु । (२)जहां तिथि मंचिय काजह ॥
लै आवहु कैमास । राइ चामंड महाभर ॥
हैवर पष्षर ह्हर । सज्जि आतुर सु जुझ्झ हर ॥
कहियौ सु बत्त साहाब सब । भंजि देस कनवज्ज इन ॥
षिन पंग हिंदु मिरजाद मिटि । आवहु आतुर षेत रिन ॥
छं० ॥ ६२५ ॥

पृथ्वीराज का सारुंडे के मुकाम पर डेरा डालना जहां से शाही सेना केवल २८ कोस की दूरी पर थी ।

दूहा ॥ पठय चंद षट्टूपुरह । चढ्यौ राज चहुआन ॥
आतुर बढ़िय अवधि न्रप । सारुंडै सुसथान ॥ छं० ॥ ६२६ ॥
जाइ चंद षट्टूपुरह । कहिय षबर कैमास ॥
चढ्यौ सु अप्पन सुनत हीं । आनि संपतौ पास ॥ छं० ॥ ६२७ ॥

(१) ए.-सुध । (२) ए. कृ. को.-जहां थिति मांची कैमासह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सारुंड[1] चहुआन पह। संपत्तौ बरवीर ॥
सुनिय बत्त सुरतान की। जोजन सित्तह तीर[2]॥ छं० ॥ ६२८ ॥

पृथ्वीराज की सेना का ओज वर्णन।

भुजंगी ॥ स्वयं चढ्ढियं सेन प्रथिराज राजं। बजे बीर बाजित्र [3]आयास गाजं॥
धुत्रं सीस सामंत सूरं सुधारे। भरं बंधियं राग रज्जे करारे ॥
छं० ॥ ६२९ ॥
तुरी सद्द उत्तंग पुंदै धरन्नी। मनो छुट्टियं मेघ सेना सुरन्नी ॥
पुरं जाइ संपत्त सो संकराई। सबें उत्तरे वाग मध्धे सु भाई ॥
छं० ॥ ६३० ॥

चंद पुंडीर का कहना कि रात को छापा मारा जाय।

दूहा ॥ चवै चंड पुंडीर तब। अहो राज चहुआन ॥
निसा जुद्ध सज्जिय समय। भंजिय सेन परान ॥ छं० ॥ ६३१ ॥

पृथ्वीराज का सात घड़ी दिन रहते से धावा करकें आधी रात के समय शाही पड़ाव पर छापा जा मारना।

कवित्त ॥ मानि मंत चहुआन। मंत पुंडीर चंद कहि ॥
घटिय सत्त दिन सेष। राज सज्जिय सु सेन सह ॥
चल्यौ राज प्रथिराज। नद्द नौसान बीर सुर ॥
कीन दान तं न्हान। सूर सामंत सब्ब भर ॥
सन्नाह सब्ब सेना धरिय। निसा अद्ध पत्ते सु पुर ॥
हल्लाल हल्लि सय सत्ति दुति। चढ़ि चौकी गोरी गहर ॥छं०॥६३२॥
दूहा ॥ चौकी चढ़ि षुरसान षां। सहस सत्ति हय रज्जि ॥
उभय सत्त गज मद गहर। गुरु सनाह हय रज्जि ॥ छं० ॥ ६३३ ॥
चोटक ॥ चढ़ि सज्जि सबैं प्रथिराज भरं। पर चौकिय [4]चंपिय हक्कि हरं ॥
भर बज्जिय आवध रीठ सुरारि। मनों बन कूटहि कढ्ढि कवारि ॥
छं० ॥ ६३४ ॥

(१) ए. कृ. को.- चहुआन। (२) मो.-नीर।
(३) ए. कृ.-अकास। (४) मो.-चंपय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पज्जून महुवा प्रस्ताव।

[तिरपनवां समय।]

कविचन्द की स्त्री बोली कि प्यारे जब बालुकाराय सहित शहाबुद्दीन पज्जून राय से परास्त हो चुका तब उसने महुवा नगर पर कैसे आक्रमण किया और फिर पज्जूनराय ने उसे फिर भी किस प्रकार से हराया सो कहिए ? * ।

यह सुनकर कविचन्द बोला ! अच्छा प्रिये सुनो ! शहाबुद्दीन पज्जूनराय से परास्त होकर सब रखत-बखत खोकर मनहार होता हुआ गजनी जा पहुंचा। परन्तु इस बात की उसे विशेष ग्लानि हुई कि मुझे और बालुकाराय दोनों को शत्रु के एक साधारण सामन्त ने हरा दिया। अस्तु उसने अपने मन्त्री तत्तार खां से कहा कि अब की बार महुवागढ़ पर आक्रमण किया जाय ! शहाबुद्दीन की ऐसी आज्ञा पाकर तत्तारखां निसुरत्त खां के सहित एक लाख सवार, कई हजार पैदल और एक हजार हाथी लेकर महुवागढ़ पर चढ़ दौड़ा। उस समय महुवागढ़ का थानापति निड्डुराय था। उसने शाही लश्कर की अवाई का समाचार पाकर पृथ्वीराज को पत्र लिख भेजा। पृथ्वीराज ने वह पत्र दर्बार में सब सामन्तों के साम्हने पढ़ सुनाया और पूछा कि महुवागढ़ की रक्षा के लिये किसे भेजा जाय ? तब हाहुलीराय हम्मीर बोला कि एक लाख नेजे की अनी पज्जूनराय के सिवाय और कौन आड़ सकता है। इस पर पृथ्वीराज ने रावल समरसिंह जी की तरफ देखा। रावल जी ने कहा तो कुछ नहीं परन्तु सेन के इशारे से उक्त प्रस्ताव स्वीकृत कर लिया। जामराय जद्दों बोला कि चित्तौरपति रावल जी भली भांति जानते हैं कि पज्जूनराय एक अद्वितीय पराक्रमशाली सूरमा हैं। उसने जंगलू राव को जीता, तत्तार खां को कई वार धता बताया, बालुकाराय को हराया, गिरनार पर जाकर भोरा भीम का छोंगा छीना और अजैपाल के लिये आबू सिखर को खोद बहाया। इन्होंने खोखंदपुर को खराब किया; देवगिरि पर जै प्राप्त की, जालौर को जीत कर महनसिंह भट्टी को दिया और अजमेर का राज्य तो इन्हीं महाशय के बाहुबल पर निर्भर है।

निदान पृथ्वीराज ने भी यह प्रस्ताव स्वीकार किया और तदनुसार पज्जूनराय को हांसीपुर के अंतरगत बारह गढ़ों का पट्टा देकर उसे महुवा की रक्षा करने का बीड़ा दिया गया। उस समय पृथ्वीराज ने उसके सहकारी योद्धा कन्ह और किल्हन को भी बहुत कुछ धन रत्न मोती-माला और सिरोपाव देकर संतुष्ट किया और कहा कि शाह के अगवान तत्तार खां और नुसरत खां सिंधु पार कर चुके हैं अब इधर की लाज आप लोगों के हाथ है। यह सुन कर पज्जून राय ने कूच का सुदिन तक न पूछा और स्वामि-आज्ञा को ही सब शुभ-मूलक जान कर उसी समय बंम बोलदी।

पज्जून राय ने अपने पुत्र मलयसिंह एवं और सब भाई बेटों से कहा कि भाइयो इस समय शाह अपने बड़े भारी दलबल सहित महुवा पर चढ़ आया है, अस्तु ऐसा करना चाहिए जिसमें अपने मुँह पर पानी रहे और कूरंभकुल की सुकीर्ति विस्तृत हो। पज्जून के ऐसे बचन सुनकर सब कूरंभ राजपूत बात की बात में अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित हो कर सन्नद्ध हो गए। दोपहर होते होते पज्जून राय ने चल दिया और महुवागढ़ पर पड़ी हुई शाही सेना को आड़ेहाथों जालिया। कूरंभराय के इस सहसा आक्रमण से कुल मुसल्मानी लश्कर अकुला उठा और उसने किले का घेरा छोड़ दिया। पज्जूनराय ने इस प्रकार से महुवे का मौका मारकर अमर यश प्राप्त किया। इस युद्ध में पज्जून के पुत्र मलय

---

* पज्जून चालुक नाम प्रस्ताव 'इकतालीसवें समय की कथा से अभिप्राय है यथा—

बालुक्का हिन्दू कमध और सु गोरी साहि।
साम्भेर जैचन्द किय पात दीली सम ताहि॥

(छं० १ समय ४१)

सुक्क सुकी सम सम्भरिय, बालुक कूरम्म युद्ध।
कोट महुव्वा शाह दल, कहौं आनि किय रुद्ध।

(छं० १ समय ५३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंह ने विलक्षण पराक्रम किया और याकूबखां के हाथ से पज्जून के भाई बलिभद्र को दो गहरे घाव आए। जब पज्जूनराय महुवा के युद्ध को जीतकर दिल्ली आया और वहां मलयसिंह की बीरता का बखान किया गया तो पृथ्वीराज सहित सब लोग उस किशोर-वयस्क बांके बीर की बहादुरी पर जी जान से मोहित हो गए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पज्जून पातिसाह युद्ध प्रस्ताव ।

(चौवनवां समय ।)

———०———

महुवा का युद्ध जीत आने पर, पृथ्वीराज ने पज्जून राय को नागौर के नाके पर रक्खा और कन्ह, सलख, रामराय बड़गुज्जर, निड्डुर पुंडीर, किल्हनदेव तूंअर, बलिभद्र मलयसिंह और पल्हसिंह इन सामन्तों को उसकी सहायता के लिये दिया। इस प्रकार से नागौर के नाके का सब भार पज्जून राय के सिर सौंप कर पृथ्वीराज स्वयं कुछ सामन्तों समेत मालवे की तरफ चला गया।

शहाबुद्दीन पज्जून का एक वार तो स्वयं बरदास्त कर चुका था; परन्तु महुवा से तत्तार खां का पीछे हटना उसके दिल पर और भी खटक गया। उसने भरी सभा में प्रतिज्ञा करके कहा कि अब तो जब पज्जून का खून पी लूंगा तब पाग बांधूंगा। सौभाग्यवश उसी समय धर्मायन द्वारा समाचार मिला कि पज्जूनराय को नागौर गढ़ का थानापति स्थापित करके पृथ्वीराज सेना सहित मालवे के जंगलों में पड़े हैं एवं देवास के यादवों के यहां व्याह के सुखसोर मना रहे हैं। यह सुनतेही शाह की बंबरें(१) फूलगईं। उसने उसी समय तीन लाख सवार एक लाख बीस हजार पैदल और अगनित हाथी और ऊंटों का लश्कर सजे जाने की आज्ञा दी। गजनी की पैदल सेना में ऐसे ऐसे जबर्दस्त सहजोर ज्वान थे कि जिनके धनुष पर २० टके भर की प्रत्यंचा चढ़ती थी और जो तलवार के एक हाथ में मय सवार घोड़े को चीरकर चार कर देने वाले थे। ऐसी सेना को साथ लेकर शहाबुद्दीन नागौर नगर पर चढ़ आया और वहां से एक योजन के फासले पर पड़ाव डालकर उसने पज्जून राय के पास एक परवाना लिख भेजा कि मैं आया हूं। अब या तो किला छोड़कर बखैर खुदा चले जाओ या मैदान में आकर जंग लो। यह परवाना पाते ही पज्जूनराय ने हँस कर उत्तर दिया "मैं पज्जून जीवन की लालसा से लड़ाई से डरने वाला नहीं हूं। मैं रघुवंस राम(१) नहीं हूं! मैं वह पज्जून हूं कि चाहे धरती लौटपलट होजाय, सूर्य्य पश्चिम में उगने लगे, गंगा का प्रवाह स्थिर होजाय, शिव पार्वती को त्याग दें, पर मैं अपनी बान से हटनेवाला नहीं हूं। शाह तुम चिन्ता न करो प्रसन्नता पूर्व्वक आओ! पृथ्वीराज ने हमको अपना जानकर राज्य की रक्षा का भार हमारे ऊपर दिया है; अस्तु, हम क्षत्रियत्व के सत्य व्रत को तिलांजुली नहीं दे सकते। आओ हम अटल होकर डटे हैं। या तो तुम्हारे कटक को काट कर पाट देंगे या हमी तिल तिल होकर कट मरेंगे, पर हटेंगे नहीं। आओ तुम खुशी से आक्रमण करो यहां हम भी अचल होकर डटे हैं!!! दूतों ने ज्यों का त्यों सब समाचार शाह को जा सुनाया जिसे सुनतेही शहाबुद्दीन जल उठा। उसने तत्तार खां को बुलाकर कहा कि देखो यह वही पज्जून है कि जिसके सबब से मुझे दो दफे नीचा देखना पड़ा है। देखना अब का वार खाली न जाने पावे।

इधर कन्ह बलिभद्र मलयसिंह और पल्हसिंह ने परस्पर गोष्ठी करके विचार किया कि किले से निकल कर आक्रमण किया जाय। परन्तु पज्जून राय ने ऐसा करने की सम्मति न दी और कहा कि शाही सेना सबल है, ऐसा करने से सब कट मरेंगे और कोई काम भी न सरेगा; अस्तु किले के ही मोरचे पक्के करना उचित है। पज्जून राय ने कहा "भाइ सुनो, संसार के सब पदार्थ नाशमान हैं, राजपाट, वापी, कूप, तड़ाग, महल, मकान, गढ़, कोट आदि जो कुछ हैं सब नष्ट होजाते हैं परन्तु मनुष्य की करनी कथनी नहीं मिटती। गए गुजारे की नेकनामी बदनामी की कहानी मात्र संसार में शेष रहजाती है, इसलिये ऐसा करो जिसमें अपने लोगों की सुकीर्ति और यश की कथाएं चलें" इधर

(१) रीढ़ की सीध में गरदन पर के बालों को बम्बर कहते हैं। परन्तु यह असल शब्द "बब्बर है। जब शेर बब्बर या और कोई नखी जानवर अचांचक खुश होता या गुस्से होता है तो उसके बंबर के बाल खड़े होजाते हैं "बुन्देलखंड में" 'बम्बे फुलाई" ऐसा भी बोलते हैं।

(१) रघुवंसराय हांसी के किले से निकल भागा था। (५२ समय देखो)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो ये बातें हो ही रही थीं उधर शाही सेना ने किले को चारों ओर से घेरकर गोले बरसाना शुरू किया। जिस समय कूरम्भ कुल सूर्य्य तीन लाख नेजे की अनी रूपी राहु के बीच में गस गया उस समय सारे नागौर नगर में सन्नाटा छा गया। शाही सेना के आक्रमण के आतंक से सब सामन्त भी सशंक और चलचित्त हो उठे– "क्या करें सैौ की सत्ती बुरी होती है"। भीलों ने जब गोपियों को लूट लिया तब अर्जुन की अकबक भूल गई थी–परन्तु पज्जून राय ने हिम्मत न हारी। उसने सब को ढाढ़स देकर कहा। भाइ घबड़ाने का समय नहीं है राजा पृथ्वीराज का प्रताप बड़ा है मरना जीना तो लगा ही रहता है इससे डरकर कर्तव्य पालन करने से चूकना उचित नहीं।

वह दिन तो जिस किसी तरह से व्यतीत हुआ। रात होतेही सामन्तों ने किले से निकल कर सुप्त शाही सेना पर छापा जा मारा। कुछ सैनिकों के साथ केवल बलिभद्र राय किले में रहा। इस छापा मारनेवाली मंडली का अगुआ पज्जूनराय का पुत्र मलयसिंह था। उसने एक मात्र शहाबुद्दीन के खेमे पर आक्रमण कर दिया। उस खेमे के इर्दगिर्द जो एक हजार मुसल्मान सिपाही पहरे पर मुस्तैद थे वे राजपूत सेना का मुकाबिला करने लगे। दोनों में परस्पर खूब हथयार चलने लगा। गुल गपाड़ा सुनकर इधर उधर सोते जागते जो जहां थे सब मुसल्मान सिपाही शाह की रक्षा के लिये जुटने लगे। उधर तत्तार खां ने सुअवसर जान कर बीस हज्जार गष्बरों के साथ किले पर धावा धर किया। किवाड़ तो खुलेही थे, मुसल्मान सेना दर्रा मारे किले में पैठ पड़ी, परन्तु किले में पज्जून का भाई बलिभद्र-राय गाफिल नहीं था वह इस होनहार से मानो पहिले ही से सचेत था। उसने गष्बर सेना के भीतर घुस आने पर फाटक बंद कर दिया और इस तरह की मार की कि बीस हजार में से बीस को भी जीताजागता न जाने दिया।

गष्बर सेना का यह हाल करके शेष राजपूत सेना भी किले से निकल कर मैदान में आगई। बीर बलिभद्र राय हुडुरुआ सा खेलता हुआ बड़े बड़े अमीर मीरों को मार मार कर पाटने लगा। यह देख कर पज्जून ने कहा वाह भाइ खूब किया। तेरे बिना कौन ऐसा करे! इतने में मलयसिंह ने बढ़कर शहाबुद्दीन के खेमे को अपने कब्जे में कर लिया और शाह को अपना बन्दी बना लिया। फिर क्या था! और सब सेना भी जिधर तिधर नौ दो ग्यारह होगई। इस लड़ाई में शाही सेना का जलाल खां नामक एक नामी सर्दार मारा गया। प्रातः-काल होतेही मुसल्मानी सेना में से चिड़िया भी पड़ाव पर न रही। पज्जूनराय ने सब माल मत्ता अपनाकर दिल्ली को रवाना किया और फिर आप भी शाह को लिए हुए जा पहुंचा। पृथ्वीराज ने लूट का सब माल तो पज्जून राय को दे दिया और एक हजार घोड़े और पन्द्रह हाथी दंड में लेकर शाह को छोड़ दिया। शहाबुद्दीन को बिदा करते वक्त पृथ्वीराज ने उससे केवल इतना कहा कि "तुम नरनाह शाह कहलाते हो ऐसा निर्लज्जता और ढीठता तुम्हें शोभा नहीं देती"।

शत्रु को पकड़ पकड़ कर फिर फिर छोड़ देना ये राजपूत जाति का ही कलेजा है। राजा पृथ्वीराज ने जो किया सो कविचन्द द्वारा बखान किए हुए उसके सुयश की चर्चा संसार में अचल रूप से चल रही है।

(१ मूल पाठ हूडूडूड है. बुन्देलखंड में हुडुरुआ कहते हैं। लड़कों की बड़ी भारी जमात मिलकर खूब हल्ला मचाते मन माना बकते नाचते कूदते, एक दूसरे से लड़ते और और भी जो मौज में आया सो करते हैं। इसी का नाम हूडूडूड या हुडुरुआ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामंत पंग युद्ध नाम प्रस्ताव।

[पचपनवां समय।]

—*—

उस समय, पृथ्वीराज पृथ्वीतल पर के सब राजाओं को राहु स्वरूप होकर लगा था। जो राजा उसे सम्मानपूर्व्वक दंड देते एवं उसकी सेवा स्वीकार करते वे तो स्वच्छन्द रहते थे, परन्तु जो उससे ऐंडकीं करते वे मारे पड़ते थे। सब से सबल शत्रु शहाबुद्दीन को बार बार बांधकर छोड़ देने वाला पृथ्वीराज देव संज्ञक गंधर्व के समान बलवान और प्रतापी था। ऐसेही उसके शूर शिरोमणि सामन्त सच्चे स्वामिसेवी थे। तात्पर्य्य यह है कि उस समय सबल से सबल शत्रुओं का दर्प चूर्ण करनेवाला पृथ्वीराज अपना सानी न रखता था।

कन्नौज में राजा जैचन्द राज्य करता था। उसके तेज एवं प्रताप का आतंक चारों दिशाओं में छाया हुआ था। केवल दिल्लीपति पृथ्वीराज और चित्तौरपति समरसिंह जी का युक्त–युग उससे अजेय था। शेष सब छत्तीस कुरी के राजपूत उसके सम्मुख सिर नवाते थे। जैचन्द एक तो स्वयं भीमकाय बलवान और बड़ा वीर था; तिसपर उसका दलबल तो साक्षात् समुद्र के समान अगम था। जिस ओर को पंग–दल की लहर उठती उस ओर के बलवान पुरुष तो उसे आराध्य इष्ट मान कर उसी में मिल जाते थे और कायर कंकर कहीं के मारे कहीं जाते थे। पंगराज का कोप क्या कराल काल का गाल था। राजा जैचन्द के ऐसे विषम दल बल की अवाई का समाचार पाकर पृथ्वीराज ने कुछ चुने हुए सामन्तों को दिल्ली में छोड़कर आप एक बलवान सेना सहित शिकार खेलने के बहाने मैदान पकड़ा। दिल्ली के राजरूपी समुद्र को शोषण करने के लिये जैचन्द अगस्त स्वरूप था। जहां कहीं उसकी सेना रूपी रश्मि का प्रकाश पड़ जाता वहां गांव के गांव जल * जाने से आकाश में मेघों के समान धुंआ छा जाता था। इस प्रकार चतुर्मासिवत् चतुरंगिनी सेना के आतंक से उसके शत्रु की स्त्रियों की अश्रुधारा की झड़ी लगजाती थी। सैनिकों के अस्त्र शस्त्र बिजली से चमकते, रणवाद्य बद्दल से गरजते और कड़खेत एवं बन्दी जनों की बोली टोली पावस के पर्चा सी प्रतीत होती थी। जब जैचन्द की सेना चलती तब दशों दिशाओं के दिग्पाल दहल जाते थे, बन उजड़ जाते, पहाड़ दब जाते, नदी नद सूख जाते और पृथ्वी उथल पथल होने से शेष का शीस नम्र होने लगता एवं कमठ सटपटाने लगता था। राहु रूपी पंग सेना जिसे ग्रसती उससे दाम एवं सम्मान का दान लिए बिना उसे कदापि न छोड़ती थी। बात तो यों है कि जैचन्द के समान दूसरा संसार में था ही नहीं. जैसे कोई पूर्व्व संचित कर्म्मों को अतिक्रम करके जन्म–संस्कार से जै नहीं पा सकता, धरा को हाथ पर नहीं धर सकता न उसे जड़ से उखाड़ सकता है, सूर्य्य पर चादर चढ़ा कर उसे कोई छिपा नहीं सकता, नदी के प्रवाह को रोक नहीं सकता और न उत्तर दिशा को जा सकता है वैसेही उस समय जैचन्द से जंग लेने वाला भी कोई राजा राजपूत नहीं था। ऐसे प्रतापी राजा पंग का दल बल दिल्ली को दमन कर पृथ्वीराज को पकड़ने के लिये चला। पृथ्वी पर ऐसा कौन था जो जैचन्द के विद्रोही को बचा सके, परन्तु बाह रे पृथ्वीराज! जिस का जैचन्द एक बाल भी बांका न कर सका।

---

* अगस्ति रूप पहु पंग समुद्र सोषन धर ढिल्लिय।
नयर नयर प्रज्जरहि धून डंमर नभ हल्लिय॥

वैज्ञानिकों का सिद्धान्त है कि जो बरसात में जल बरसाता है वह आठ महीने बराबर इसी पृथ्वी पर का वायु में मिल कर उड़ता रहता है अथवा भाफ बनकर उड़ता है। "तुलसीदास जी ने भी कहा है" 'उदित अगस्त पंथ जल सोखा।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैचन्द का दल प्रजा को उजाड़ता हुआ दिल्ली तक गया। परन्तु जब वहां उसने पृथ्वीराज को न पाया तो चुपचाप उलटा कन्नौज को लौट आया। तब राजा जैचन्द ने रावल समरसिंह जी को बलपूर्व्वक दबाने की इच्छा करके राज्य मन्त्री सुमन्त को बुलाया और उससे कहा कि अब ऐसा करो जिसमें बिगड़ी हुई बात बने अर्थात् फिर से यज्ञ की सामग्री जुटाओ। यह सुनकर सुमन्त बोला महाराज क्या किसी ने आकाश में स्थित तारागण की भी गणना की है? जप पूजन और मन्त्र आदि की सिद्धि के लिये सब से पहिली बात जितेन्द्रियता है। इसपर जैचन्द कुछ कुरुख होकर बोला "प्रधान का यह धर्म नहीं है कि स्वामी से मुंह जोड़े। सेवक को एक मात्र स्वामी की सुकीर्ति और कार्य्य सिद्धि के लिये ही तन मन से यत्न करना उचित है, इसलिये हे सुमन्त फिर से यज्ञ का प्रबन्ध करके ऐसा उपाय रचो जिसमें निर्विघ्न यज्ञ समाप्त हो और यह कलंक का टीका सिर से टले। कुकर्म करने पर कलंक कालिमा तो लगीही चाहे परन्तु यह तो नाहक में काला मुँह हुआ। तब सुमंत बोला कि महाराज यदि यज्ञ करना ही है तो पहिले पृथ्वीराज को पकड़ लीजिए और समरसिंह से सन्धि कर लीजिए। नहीं तो जब लों इन दोनों से काम नहीं हो लेंगे तब लों यज्ञ का पूर्ण होना मुहाल ही समझिए। राजन्! जो दो कर सकते हैं सो अकेला कभी नहीं कर सकता। दो दिये आमने सामने रखने से दोनों के तले का अंधेरा दूर होजाता है, अतः आपके और समरसिंहजी के मिल जाने से फिर कोई ऐसा नहीं है जो सिर उठा सके

सुमन्त के इस प्रस्ताव पर जैचन्द राजी हो गया। उसने सौ घोड़े, एक हाथी, एक अनबेधा मोती, दस माणिक और मोती की मालाएँ समरसिंह जी के लिये सौगात की तरह देकर सुमंत को उसी समय चित्तौर की तरफ रवाना किया। उसने समरसिंह जी को यह संदेसा भी कहा कि पृथ्वीराज को जीतकर हम तुम दोनों मिल कर यज्ञ करें तो अच्छा हो और इसके पुरस्कार में हम आप को पंजाब प्रान्त की आधी भूमि देना स्वीकार करते हैं। जैचंद का कथनोपकथन तो केवल हेतु मात्र था। मंत्री सुमन्त स्वयं बड़ा बुद्धिमान पुरुष था। वह समय की परख और बातचीत की बनावट में अच्छा निपुण था। उसे मनुष्य की पहिचान का ज्ञान भी अच्छा था। अच्छे अच्छे चतुर पुरुषों की मंडली में भृंगी का कीट होकर पैठ जाना और अपना मतलब निकाल लेना सुमन्त ही का काम था। इस प्रकार से राजनीति के सब मार पेंचों में चतुर होकर भी वह छली कपटी और झूठा नहीं था।

कन्नौज राज्य के मंत्री सुमन्त के आने का समाचार पाकर समरसिंह जी ने उसे सादर दरबार में बुलाया और कुशल प्रश्न के पश्चात्, उससे उसके आने का कारण पूछा। तब सुमंत बोला कि महा-राज कन्नौज-राज जैचन्द आपको यज्ञ में और विजित भूमि में भाग देकर आपसे संधि करना चाहते हैं। हे राजन्! ऐक्य में बड़ा बल है। जैसे तनिक तनिक से तिनकों का युक्त बल मदोन्मत्त हाथी को बिबस कर देता है, वैसे ही आप दोनों का प्रभाव अन्य सब राजाओं को आपका आश्रित बनाएगा। यह सुन कर समरसिंह जी बोले "रे सुमन्त तेरा किसने सुमन्त नाम रक्खा है! तू तो नितान्त कुमत मत वाला कुमंत नाम के योग्य है। जैचन्द ने आजलों हमें रहते न जाना? आज यज्ञ के लिये सन्धि करने की सूझी है! फिर भी चौहान से विग्रह करके!! त्रेता और द्वापर में जो यज्ञ देवताओं ने किए थे। उन्हें ही करने की आज जैचन्द को समाई है!!! तब सुमन्त ने प्रत्युत्तर दिया कि सतयुग में राजाबलि ने यज्ञ किया था, त्रेता में राजा रामचन्द्र ने और द्वापर में पांडुपुत्र युधिष्ठिर ने यज्ञ किया था, अब कलियुग में और तो कोई इस योग्य है नहीं इसी से बिजयपाल के पुत्र राजा जैचन्द ने यज्ञ आरम्भ किया है। इस पर समरसिंह ने कहा "बलि ने स्वर्ग की इच्छा से यज्ञ किया था सो पाताल में गए। चन्द्रमा यज्ञ करके कलंकित हुआ। पांडुपुत्र यज्ञ के कारण बनबासी हुए और राजा नघु को नर्क

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूप में पड़ना पड़ा। अब कलियुग में जैचन्द यज्ञ करना चाहते हैं। कहो तो इनके पास यज्ञ की सामग्री भी है? अश्वमेध, गोमेध, अजमेध, राजसूय, अग्निहोत्र और विधिवत् षोड़स दान सहित वाजपेय-ये यज्ञ, ग्रहस्थाश्रम का यावत निर्वाह और सन्यास की धारणा कनिष्टबंध और बड़बंध ये नौ काम कलियुग में हो ही नहीं सकते। मुझ से यदि सच पूछो तो यही कहूंगा कि अपना बित्त देखकर काम करना चाहिए। अभीतक अकेले चहुआन के मारे यह हाल हुआ है आगे न जाने क्या हो। इस लिये ऐसा साहस करना वृथा है। तुम मंत्री हो, जैचन्द को ऐसा समझाओ जिसमें पीछे फटों फटों न होती फिरे। आगे तुम जानो तुम्हारा काम जाने! हम तो तुम्हारे यज्ञ में संमिलित न होंगे। और भी, सुनो! जब जैसी कुछ होनहार होती है तब आदमी की तैसी गत मत भी हो जाती है। ईश्वर गर्वप्रहारी है। इस तुच्छ मनुष्य जीवन में देवताओं की समसरी करने की इच्छा करना अच्छा नहीं। यज्ञ में बालि ने तीनों लोक दान किए, रामचन्द्र को युद्ध में पराजित होना पड़ा और पांडवों के यज्ञ में यदुवीर कृष्ण और कुबेर सहायक थे, परन्तु तब भी पूरा न पड़ा। यह सुनकर सुमन्त बोला श्रीमान् सुनिए। बलि ने यज्ञ तो किया परन्तु क्षत्रीधर्म का विचार न किया। रामचन्द्र जी दिग्विजय के समय राजनैतिक चाल चूक गए और नघु ने क्रोध में आकर ब्रह्महत्या की, इसी से कुछ का कुछ हुआ। समझ रखिए कि इस समय तक पृथ्वीराज के सिवाय अन्य सब राजा जैचन्द की आन मानते हैं!

तब समर बिद्या में निपुण सुरशिरोमणि समरसिंह जी बोले, सुमन्त हम योगबल से भूत भविष्य बर्तमान तीनों काल की जानते हैं। हमारी मति तुम्हारी तरह मोहग्रस्त नहीं है। होगया और हो रहा है सो तो सभी जानते हैं परन्तु हम यह भी कह सकते हैं कि आगे क्या होगा। हम कहते हैं कि यह यज्ञ पूरा नहीं होगा। मुनि देव पितृ ब्राह्मण बंदीजन इन सबको सन्तुष्ट करना सहज नहीं है। तुम्हारे पेटे इतनी पूंजी कहां से आई है—जब पांडवों के यज्ञ पूर्ण होने पर बंदीजन उसका बखान करने लगे तो वहीं से एक नकुल ने सहसा प्रगट होकर कहा कि आगे जब इसी भूमि पर भारी अकाल पड़ा था तब यहां के राजा ने ब्रत पूर्व्वक ब्राह्मणों को भोज करवाया था। उस समय ब्राह्मणों के पैर धोने से जो जल बहा उसमें लोटने से मेरा आधा अंग सोने का हो गया था आधे के लिये तुम्हारे यज्ञ में आया था सो एक बाल भी पीला न हुआ! जाओ अपने राजा से ऐसाही कहदेना। यज्ञकर्म तपोबल से होता है। जैसे विश्वामित्र ने छ सैं यज्ञ किएथें। तुम किस गुमान में भूले हो "हो किस खेत की मूली"?

सुमन्त अपने स्वामी प्रति ऐसे अपमानित वचन सह न सका। उसने कुपित होकर कहा "आह! क्या आप जैचन्द के बल प्रताप को नहीं जानते, जिसका दल चलने से धरनी धसकती है और धूलि उड़कर सूर्य्य को आच्छादित कर लेती है, जिसकी सेना के भय से पृथ्वीराज घरबार छोड़कर बनवासी बना बन बन भटकता फिरता है (इस देश की) चार खूट पृथ्वी पर जैचन्द का प्रताप रूपी ताप तप रहा है। यदि वह चाहे तो पृथ्वीराज सहित शहाबुद्दीन को भी क्षण मात्र में नाश करदे और देखिए ऐसाही होगा! आपभी सम्हले रहिए! अब बाधकों का विनाश करके ही यज्ञ किया जायगा।

एक समय महान तेजोरूप यज्ञ पुरुष नारद ऋषि के पास आया। नारद ने उससे पूछा कुशल तो है? दुर्बल क्यों हो? तब वह बोला क्या करूं मेरा सम्पूर्ण अंग तो राजसी में गया, सम्मान पंडितों ने लिया, गौरव और बिद्या बिद्वानों ने ली, लक्ष्मी बणिकों ने ली, रात्रि का सुख स्त्री संभोगियों ने लिया, निन्दा और नीचता अभिमानियों ने ली, सब कर्म आराध्य इष्ट ने लिए और सब कुछ देवताओं ने लिया तब कहो कैसे सुखी रहूं। यह सुन कर नारद ने उत्तर दिया कि तो जो कुछ तू कहेगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो किया जायगा जिसमें तेरा दुःख दूर हो *

मंत्री सुमन्त ने चित्तौर से आकर जैचन्द से सब हाल ज्यों का त्यों कह सुनाया और कहा कि इस चढ़ी चोट पर चहुआन को चाहे बचाकर चित्तौर को ही चपाना उचित है। हे राजन्, विचारिए तो सही! वह क्षत्री कैसा जो पराई भूमि को न अपनावे संसार में ऐसा कौन सा गुणी है जो तेरे काल व्याल रूपी क्रोध की फुंकार से बचकर जीता रह सके। मन्त्री के ऐसे बचन सुनकर जैचन्द ने उसी समय सेना सजीजाने की आज्ञा दी। आज्ञा होतेही जैचन्द का समुद्र के समान अचल दल बल इस तरह से चढ़ चला जैसे प्रत्यंचा से छूट कर तीर एवं मोंचिंग के तार पर से स्वर दिशाओं में गूजने लगते हैं। वह दल ज्यों ज्यों आगे चला जाता था त्यों त्यों उसके सहायक सरित सारिताओं की भांति आ आ कर आप उसमें मिलते जाते थे। जैचन्द की चमू के कूच के समय के धौसों की धुंकार सुनकर धीरज छूटता था। हाथियों के भैलों का घना ठनठन शब्द अनहद बाद्य की याद दिलाता था। अम्मारियों पर लाल लाल बैरखें शिव के क्रोध के कारण कैलाश शिखर पर अग्नि कण से छिटके नजर आती थीं। न्यारे न्यारे बिविध रंगवारे बड़े बड़े ध्वजा पताका धरातल पर उतरे हुए सूर्य्य चन्द्रमा एवं अष्ट ग्रहों के बसीठ से जान पड़ते थे। लाल लाल बैरखों पर सोने की कलसियां माणिक मणि कैसी मंजरी भान होती थीं और धूलि उड़ कर जो आकाश में छा रही थी उससे तो ऐसा मालूम होता था मानों आज अंधकार ने उजेले को निगल जाने का विचार किया हो हाथियों पर बैठे हुए बांके बीर बिमान में बिराजित देवता से ज्ञात होते थे। उस समय सूरबीर पुरुषों के मुख कमल-कली से प्रफुल्लित हो रहे थे और कपूत कायर कुकमोदिनी की तरह मुरझा रहे थे। निदान जैचन्द का ऐसा दल बल दो दलों में होकर एक चहुआन पर और दूसरा चित्तौर पर एक ही साथ चला।

सेना से आगे एक दूत ने दिल्ली को जाकर जैचंद का अभिप्राय जाहिर किया। परन्तु उधर से सामन्तों ने उत्तर दिया कि यह वही भूमि है जिसके लिये महाभारत का युद्ध हुआ था और इसे अनंगपाल ने पृथ्वीराज को दिया है। यदि मरा हुआ मुर्दा जी सकता है तो जैचंद भी इस भूमि को पा सकता है। गोयंद राय ने कहा रे दूत! यह बसुमती बीरभोग्या है यह उसीके पास निशंक रहती है जो सच्चा वीर है। जिसे वीर बाने की लाज है और जिसकी भुजाओं में बल है वही इस भूमि का भोग कर सकता है। छलबल से तिलभर भूमि हाथ नहीं आती। कोई मर कर जीता नहीं, टूटा हुआ तारा फिर आकाश में नहीं जाता, मुँह से निकली हुई बात फिर नहीं पलटती, केवल पछतावा रह जाता है, तब भला बीरों की बरी हुई स्त्री और भोगी हुई भूमि कौन पा सकता है। जैचंद को यदि मातुल बनने की हबस है तो भाइचारे का व्यवहार करें, मरने मारने की बातें क्यों कर रहे हैं।

दूत ने जैचन्द के साम्हने ऐसी ही जा कही। तब सुमन्त बोला बस वे दुर्बुद्धि न मानेंगे। अब उन्हें बल करके ही मनाना उचित है। यह सुन कर दिल्ली की तरफ सेना भेजने की आज्ञा दी गई। चन्देरी के राजा शिशुपाल के पुत्र डाहलकर्ण के कुल में उत्पन्न

---

* छन्द ६३ का सारांश स्पष्ट नहीं है इसी से मूल छन्द उद्धृत कर दिया जाता है

कवित्त—अंग षंड नृपराज मान षडनाति बिप्र वर।
गुरु षंडन गुरु विदुष लच्छि षंडन बनिक्क घर॥
निसि षडन तिय याग सुनिसि खंडन अभिमानं।
क्रत षंडन उर देव जग्य षंडन सुर पान॥
इतने षंड कीने हुते तदपि दुःख जर जर तनह।
जाने न देव देवत्त गाति सुगाति विद्ध बिम्गय घनह॥

† छन्द ६४ से लेकर ६८ तक का भी अभिप्राय स्पष्ट नहीं हैं।

(१) जब योगी जन आधी रात्रि के समय समाधि साधकर एकाग्र चित्त करके चिन्मय स्वरूप का ध्यान करते हैं तो उन्हें आकाश में एक ऐसा शब्द सुनाई देता है जैसे बहुत से नगारे और घंटे बज रहे हो। उसी शब्द का नाम अनहदनाद है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिहराव का पुत्र जैसिंह सेनापति स्थापित किया गया। वाह! पंग का दल क्या चला मानो इन्द्र से लड़ने के लिये दैत्यों का दल चला। इस सेना के भार से भौंचक होकर फनीस का फूसना भूल गया। घोड़ों की टापों से जमीन खुदकर गड़ढे हो गए। इस प्रबल दल के बीच जैसिंह द्रोणाचार्य्य सा मालूम होता था। उधर दिल्लीपति पृथ्वीराज तो पांडु पुत्र पार्थ की उपमा पाने योग्य था ही।

जिस जगह होकर यह फौज निकल जाती थी वहां की भूमि उथलपथल होकर जल की जगह थल और थल की जगह जल होजाता था। यह उसी जैचन्द की सेना थी जिसका हिन्दू मुसल्मान दोनों दीन पर समान प्रभाव था। उसके आतंक से पृथ्वी तूफान में पड़ी हुई तरनी की तरह डोलती थी। दिगपाल धजधर की नाई डगमगाते और शत्रु का प्रताप वायु से विदारे हुए बदलों की तरह लुप्त होजाता था। जो वीर पुरुष जैचन्द से जीते जाकर अब तक चुप चाप थे इस अवसर पर पुनः आतंक में आकर नए से हो गए। नए ज्वानों के चेहरों पर एक नई तरह की अनोखी दीप्ति दिपने लगी। निदान आधी रात पर सारस की बोली सुनते ही सेना ने कूच किया और जंगल पहाड़ उजाड़ती हुई पड़ाव दर पड़ाव इस प्रकार से आगे बढ़ने लगी जैसे पूर्व्व संचित कर्म्मों का परस्पर का संयोग नितनव कर्म्मों का विकाश करता है। परन्तु सामन्त सेना में भी ऐसे ऐसे सिपाही और सरदार थे कि हाथों से हाथी के दांत उखाड़ लेनी उनके लिये कुछ बात न थी। वे बज्रवत् शस्त्र प्रहार करके बज्र से बज्रहृदय को भी बिदार सकते थे; निदान वे इस सूर्य्यवंशी जैचंद रूपी सूर्य्य की चढ़ाई से ऐसे प्रसन्न चित्त थे जैसे सूर्य्य की प्रतिभा पाकर कमल कलियां कुसुमित होने लगती हैं। इस पंग दल रूपी समुद्र की बाढ़ रोकने के लिये सामंत सेना अचलाचल पर्व्वत से कदापि कम न थी। क्यों कि अनेकों किले कोटों को ढहाती हुई पंग सेना दिल्ली तक तो पहुंची परन्तु उस से आगे कदापि न बढ़ सकी।

जैसे राज्य सेवा के कारण आपसी का सलूक और आंख का शील टूट जाता है, विद्या और ज्ञान से सारे कुटिल कर्मों का नाश हो जाता है; वैसे ही पंगदल के दबाव से पृथ्वीराज निज राजधानी से हट कर बन में विचरने लगा। दिल्ली के गढ़ और रय्यत की रक्षा का भार मंत्री कैमास के सिर था। सामन्त मंडली में शिरोमणि कैमास जैसा बुद्धिविशारद और चतुर था वैसा ही वह बलवान निर्भय और समय पर महान भयानक भी था। कन्ह चौहान; अत्ताताई, पहारराय तोंअर; पज्जूनराय; निड्डुरराय राठौर; बग्गरी राय बावरी; प्रसंगराय खीची, दाहमा चामंड, जज्जौनराय और रामराय ये दस सामन्त कैमास के सहायक थे। जैचंद की सेना जमुना उस पार आन पड़ी थी; निदान आधी रात होतेही रातोरात जमुना पार करके; बीहड़ बन के किनारे किनारे देवपुर को दाहिने देती हुई पंग सेना दिल्ली का दुर्ग नियराने लगी। जमुना किनारे के बीहड़ भूभाग में बनचोर बाजों का रव सुनकर पृथ्वीराज तो एक ओर को चल दिया और यहां सामन्तों ने पंग सेना का मुंह मारने के लिये जंगी तय्यारियां कीं। धन्य रे सूर सामन्तो!! यह उस पंग सेना से जंग लेना था जिसकी हांक से उस समय जहान कांपता था।

इन्द्रप्रस्थ अर्थात् दिल्ली के किले को पंगदल रूपी राहु ने चारों ओर से ग्रस लिया। सेनापति की आज्ञा से किले पर बाण वर्षा की जाने लगी। किले से भी उसके उत्तर में नाना प्रकार के अस्त्र शस्त्र चलने लगे। एक दूसरे को प्रचार प्रचार एवं ललकार कर ये उनपर और वे इनपर जब

(१) धजे यानी निशान लेनेवाला। वायु की झोंक में जैसे जैसे निशान डोलता है वैसेही इधर निशान लेनेवाले आदमी को झुकना पड़ता है।

(१) स्मरण रहे कि यह मूल ग्रन्थ प्राचीन प्रणाली के अनुसार नाटक प्रबन्ध में है। कथा प्रसंगों का भाग इसी हिसाब से है यद्यपि पृथ्वीराज के किले से निकल जाने की बात लिखी जा चुकी है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाण बर्साते थे तो पावस की झड़ी का मजा आता था। आपस में हथियार खड़खड़ाते, वायु में सन सन बान सनसनाते, ठन ठन हाथियों के घंटा ठनठनाते और गड़ गड़ नगाड़े गड़गड़ाते इत्यादि इस मिश्रित कोलाहल के मारे कान नहीं दिया जाता था। पंग सेना के नेजों की अनी इतनी घनी थी कि भू पर राई डारी नहीं जा सकती थी और यदि ऊपर से रकाबी फेंकें तो इस पार से उस पार तक निकल जाय। दोनों दलों के योद्धा अपने अपने मालिकों की दुहाई दे देकर करारे वार कर रहे थे। यदि सिर कट जाता तो कबंध खड़ा नाचने लगता और जो तीर से पंजर वारपार हो जाता तो पिंजर से उड़े हुए हंस की तरह हँसता हुआ हंसा स्वर्ग में जाबसत और इतर मिट्टी मिट्टी में जा मिलती था। इस समय भी कन्ह की तलवार अजब करामात कर रही थी। उसकी तलवार से कट कर गिरे हुए शव तरफराते हुए ऐसे नजर आते थे जैसे जलमानस हेलुवा खेल रहे हों। कबन्ध टूट जाने पर खून की सेंट जोर से उछलकर जमीन पर गिरती ऐसी नजर आती थी, जैसे बढ़ती हुई बेली निराश्रित होकर लटक पड़ी हो। कुंभस्थल फूटने पर रक्त की धारा के साथ छोटे छोटे मुक्ताकण अजबही छटा छाते थे। हाथी के दाँतो पर पड़ता हुआ तलवार का वार ऐसा मालूम होता था मानो हंसनी मृणालों को तोड़रही हो। ऐसे वीर सामन्तों के वार सहना पंग सेना का ही काम था जिसमें पृथ्वीराज और समरसिंह दोनों को एकदम दबाने का दम था। प्रातःकाल से युद्ध होते होते मध्यान्ह होगया। उस समय जैचन्द रूपी सूर्य्य के किरण रूपी सिपाही क्रोध से आरक्त मुख हो उठे। उस समय ऐसा मालूम होता था मानों प्रलय करने के लिये साक्षात् योगमाया ने पंग सेना का स्वरूप धारण करलिया हो। ज्यों ज्यों परस्पर अस्त्र शस्त्रों के खटखटाने का स्वर होता था त्यों त्यों भूत बैताल और योगिनी ताथेई ताथेई के ताल पर नाच करती थीं। शेषनाग का शीस डुल उठा, पृथ्वी डगमगा उठी और निडर सामन्तों का भी छाव छूटने लगा।

दिन भर युद्ध होने के पश्चात् सायंकाल को पंग सेना ने जमुना किनारे के बीहड़ बन के निकास का पक्का नाका बांध कर, युद्ध बन्द किया। इधर कैमास ने पृथ्वीराज को एक पत्र लिख भेजा कि आप तो निकल कर चले गए यहां मामला बड़ा बेढब है। सब रास्ते नठे हुए हैं और लेने के देने पड़ रहे हैं। गढ़रक्षा की क्या कहें सब को अपने अपने जी के लाले पड़े हैं। अबलों जो कुछ बाजी बनी है सो केवल काका कन्ह और निड्डुरराय की करतूत के यत्न से समझिए। यहां तो कोई कोई यहां तक कह उठे हैं कि आप तो अपनी गद्दी छोड़कर जंगल में जा पड़े और हमको यहां फँसा दिया। हमारा क्या अटका पड़ा है जो भेड़ बकरे की मौत मरें। उधर तो साँझ होतेही उक्त पत्र भेजा गया इधर किले में कैमास, कन्ह, गोयंदराय, रामरेन प्रमार और गुरुराम प्रोहित आदि ने मिलकर सलाह की कि यारों किला नहीं छोड़ना है चाहे बोटी बोटी कट जाय। जैचन्द भी क्या कहेगा कि किसी से काम पड़ा था। इस समय पूनो नहीं दूज के चन्द्रमा बन जाओ जिसे हिन्दू मुसलमान दोनों दीन सिर झुकाते हैं।

उक्त पत्र पाकर पृथ्वीराज के नेत्र आरक्त होगए, भुजा फड़कने लगी और मूछें सिंह की पूँछ के समान कानों को स्पर्श करती हुई थर्रा उठीं। उसने उसी समय अपनी सब सेना को सज कर दिल्ली की तरफ कूच कर दिया और जंगल ही जंगल आकर चढ़ीसवारी पंग सेना पर धावा कर दिया। पंग सेना को देख कर पृथ्वीराज

---

(१) किले की लड़ाई में तलवार की तारीफ बेजा है परन्तु इसका विचार न करके हम वही लिखते हैं जो कुछ मूल पुस्तक में है। किले पर तलवार की लड़ाई तब हो सकती है जब या तो किला तोड़ लिया जाय या किले वाले मैदान में आकर हथियार करें; परन्तु यहां दो में से एक का भी मौका नहीं था।

(२) समवर्ग सखाओं के साथ जल क्रीड़ा करना। 'राधे हेलुवा खेलैं हो जमुना के बीच' (एक बुन्देलखण्डी गीत)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के सिपाही उसपर ऐसे झपटे जैसे तीतर पर बाज, एवं मछली की बोटी पर चील्ह झपटती है। पंग सेना भी इस आपत्ति से अकुला कर अस्त्र शस्त्र सम्हाल कर युद्ध करने में तत्पर हुई। जैसे उच्च के सूर्य्य के प्रकाश में कुमोदिनी जर से जर जाती है वैसे ही यहां कायरों का तो पता न पड़ा केवल कुल कमल सपूत शत्रु सेना रूपी बिरहिनी का हृदय विदारने को उद्यत थे। एक तरफ से पृथ्वीराज मार कर ही रहा था दूसरी तरफ किले से निकल कर सामन्त मंडली ने भी हथियार चलाए। बांकी मूछों वाले बांके बांके जवान जब बांके तेगों के बांके बांके हाथ करते थे तो मय टोप बख्तर कटने में बधिया बाकी न रहती थी। कुछ देर तो जैचन्द के सिपाहियों ने खूब पराक्रम किया, पर दो की दाब बुरी होती है अन्त में सब तीन तेरह होकर भाग उठे। इस प्रकार से पंग सेना परास्त हुई और दिल्ली के किले का बाल बांका न हुआ। इस युद्ध में, पूरनराय प्रमार, नारेनराय के दोनों भाई, दो पुत्र बाघसिंह के, हरसिंह मोरी, हरिया राय बग्गरी ये योद्धा खेत रहे और भीम भट्टी नाराइन राव, जैतसिंह, जोगी जंवारा, कन्ह छोंकर, आदि बीरों के शरीर में घने घाव आए। जैचन्द के जो सिपाही मारे गए उनकी तो गिनतीही नहीं पर ६४ रावत् अत्यन्त घायल हुए और केहरि कंठेर और कन्ह भी कन्नौज को अधमरे वापिस गए।

धन्य है! सूर सामन्त समर में प्राण तजकर सहज ही जो गति पाते हैं वह बड़े बड़े योगियों को भी दुर्लभ है। हजारों वर्ष उलटे टँग कर हर हर करने पर जिस बूंद से भेंट नहीं होती उसे शूर बीर एक झपाटे में पा लेते हैं। कवि कहता है कि भाइयों क्षत्री तन धर कर इस तन को तिनूका की तरह तजने से तनिक न हिचकना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से केवल आगा ही नहीं बनता बरन पीछे के भी सब कर्म-पाश नाश हो जाते हैं!!!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर पंग युद्ध नाम प्रस्ताव।

[छप्पनवां समय।]

———०———

समस्त दिल्ली प्रदेश में हलचल मचाने के पश्चात् जैचन्द की चतुरंगिनी चमू ने चित्तौर की तरफ़ कूच किया। अनहद नाद की नाईं भेरी नफेरी, और धौंसा धमकाती हुई पंग सेना के कूच मुकाम के आतंक से दिशाओं में कुहरा सा छा गया मानो जैचन्द की सुकीर्ति ने इसी स्वरूप से संसार की सैर करने का अनुष्ठान किया हो। बड़े बड़े गरबीले लोगों का गर्व गिरानेवाली इस पंग सेना की चढ़ाई का समाचार चित्तौरपति रावल समरसिंहजी ने भी सुना।

शाबास! शूर शिरोमणि समरसिंहजी ने शत्रु के सम्मुख आने का समाचार पाकर प्रसन्न मन होते हुए हुक्म दिया कि जंगी तय्यारियां की जांय और इधर प्रजा के दस प्रतिनिधि राज्यकर्मचारी और सगे सम्बन्धियों को बुलाकर वे प्रस्तुत प्रबन्ध के लिये सलाह करने बैठे। रावल समरसिंहजी ने सब से कहा "आप लोग हम से वय बुद्धि सब बातों में बड़े हैं। इसलिये सोच विचार कर ऐसी सलाह दीजिए जो इस अवसर पर काम आवे"। रावलजी के इस कथन पर जिसकी जैसी बुद्धि थी सो बोल उठे। कोई बोले लड़ाई लेनी चाहिए और कोई बोले महाराज यह जीतव है तो सब कुछ है। किसी ने कहा मुक्ति से सब परे हैं। किसी ने कहा इस संसार सागर में जिसकी लाज का जहाज न डूबा सोई सुखी है। किसी किसी ने फिर भी यही कहा "आप मरे जग डूबा" जौलों जीते हैं तौलों सब कुछ हैं, आंख मिची फिर कौन देखता है कि किसका भला किस का बुरा। अन्त में सबने यही कहा कि हम सब लोग बिनती कर चुके आगे जो आपको रुचै सो हमारे भी माथे पर है। "इस जीवन से जन्ममुक्त होने की साधना ही सार है जिसमें दोनों हाथ लड्डू हैं। माना कि यदि (कर्त्तव्यपरायण पुरुष) जीवन मुक्त न भी हो तो वह नर्क में भी सुखी रह सकता है। यदि वह पुनः जन्म भी पावे तो धन्य है उस पुरुष को जिसके घर वह जन्मे। क्योंकि सद्गुरु की कृपा से फिर तो उसे यह संसार स्वप्नवत होता ही है। लोगों के देखने दिखाने को चाहे जैसा हो पर अन्तःकरण में बोध होजाने से अन्त में आपही त्याग उत्पन्न हो जाता है।" अतः रावल जी बोले। कि शत्रु को शस्त्र प्रहार से ही परास्त करना उचित है।

रावल समरसिंह जी बोले 'सुनो इस प्राण वायु के वायु मंडल में लीन हो जाने का ही नाम मुक्ति है। यह पंचतत्व मय तन पिंजर जिसमें यह पंच(१)—प्राण—रूपी—पक्षी जीव निवास करता है, पाँच(२) दरवाजे का है। ज्ञान द्वारा संशय का नाश होने से तो जीव जीवनमुक्त हो जाता है और इसके बिना अज्ञान के कारण चंचल मन के चरखे पर चढ़ा हुआ पांचों दरवाजों में चक्कर लगाया करता है, परन्तु अनहद शब्द रूपी किवाड़ों के कारण निकल नहीं सकता। इस लिये गुरु की बतलाई हुई शास्त्रोक्त योग युक्ति से चित्त को एकाग्र कर के अनहद शब्द के सुनने का अभ्यास करे और काम क्रोध लोभ मोह आदि विकारों से रहित होकर ब्रह्मरंध्र में स्थित उज्ज्वल वर्ण प्रकाशमान ब्रह्म का ध्यान धरे अर्थात् योगासन मारकर मन को एकाग्र कर अपनी दोनों भौंहों के बीच नजर थमा कर अंगुष्ठ प्रमाण लिंग शरीर का ध्यान करे। पहिले पहिल गुरु की बतलाई हुई युक्ति से एक मोती बराबर बिन्दु पर ध्यान जमाया जाता है, किंचित् काल में यह मोती अंडाकार देख पड़ने लगता है फिर उसी से अखंड प्रकाश का दर्शन होने लगता है। इस प्रकार से उस अनन्त प्रकाश का दर्शन

---

(१) पंच प्राण – प्राण, अपान, समान, व्यान उदान।

(२) कान, नाक मुख, लिंग, गुदा ये पांच छिद्र पांच दरवाजे माने गए हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने पर संकल्प विकल्प एवं संशयों का नाश हो-जाता है और अन्त में मोक्ष पद प्राप्त होता है।

तब रावल जी का मंत्री विनीत भाव से बोला कि अन्नदाता इस कलिकाल की माया बड़ी प्रबल है। एक छिन भी मनुष्य का मन ठिकाने नहीं रहता। घरी में इधर तो घरी में उधर। कभी खुशी से फूल-कर कुप्पा होजाता है तो कभी शोक से सूखकर कांटा होजाता है। कभी ऐसा त्याग वैराग उपजता है कि संसार का कुछ भी नहीं सुहाता और कभी मोह की प्रबलता के कारण दुनिया भर की बला अपने सिर लेने की सूझती है।

रावल जी बोले सुनो! इस पंचतत्व रचित शरीर के बहत्तर कोठे[1] हैं, जिनमें अस्सी प्रकार की वायु वास करती है। हे मंत्रिवर! यह शरीर समुद्र के समान है जिसमें हमेशा बुद्धि रूपी तरंगें उठा करती हैं। इसमें नाना प्रकार के तर्कवितर्क रूपी मत्स निवास करते हैं और भांति भांति के भेदाभेद ही मानो भौंरें पड़ा करती हैं। शीलरूपी नीले जल में क्रोध का खारापन भी विद्यमान है और विद्याही इस में रत्न है। ऐसे शरीर के अन्दर जीव नाम से आत्म स्वरूप परमात्मा का बास है। उस चिदानंद परमात्मा की त्रिकाल बन्दना करने से मनुष्य शीघ्रही त्रिकालज्ञ हो सकता है। उसे इसका भी ज्ञान हो जाता है कि मेरी कब मृत्यु होगी और वह मृत्यु के समय समाधि स्थित होकर पीतपटधारी घनश्याम का स्मरण करते हुए मौत को बर सकता है। संध्या के समय गोधूली बेला में धवल एवं धूम्रवर्ण का ध्यान धरना चाहिए और प्रातः काल के समय दिये की ज्योति के मध्य भाग की प्रभा पर ध्यान जमाना चाहिए। उससे प्रथम दूज फिर पंचमी और फिर अष्टमी के चन्द्रमा का सा आकार क्रमशः भासित होने लगता है। तब काल पाकर उसी में से ताटंक और बनमालधारी धवल स्वरूप के दर्शन होने लगते हैं। परन्तु इस सब का मूल रेचक कुंभक पूरक इन तीनों नाड़ियों की साधना से होता है। यही योग का जतन है। इस लिये इस समर रूपी समुद्र में तलवार की धार रूपी लहरें उठा कर सुकीर्ति रूपी कलानिधि को प्राप्त करना उचित है।

कनकराय रघुवंशी ने कहा "मुझे एक बात का बड़ा संदेह है कि कभी तो चित्त में अतुलित आनंद की उमंगें उठा करती हैं और कभी सहसा शोक उत्पन्न हो जाता है। कभी योग की इच्छा होती है। तो कभी शृंगार रस की वासना श्रेष्ठ हो जाती है। कभी दीनता और दरिद्रता का भाव प्रधान हो जाता है। और कभी हितू से भी अनिच्छा और विग्रह उत्पादक विचार उत्पन्न होने लगते हैं। इसपर रावल समरसिंह जी बोले "वास्तव में इस बासना भेद में विलक्षण भेद भरा हुआ है—कंठगत-प्राण होने के समय जो वासना चित्त में बसी रहती है उसी के अनुसार गति माति होती है अर्थात् दूसरे जन्म में उसी के अनुसार भोग भोगना पड़ता है। सुनो जो कुछ मैं कहता हूं उस पर ध्यान दो और विश्वास करो! पूर्व्व, दक्षिण, उत्तर, पश्चिम अग्नेय, वायव्य, नैऋत, ईशान, ये आठ दिशाएं हैं। इस सुख दुःख रूपी शरीर सरोवर में एक अष्टदल कमल प्रफुल्लित है। उस कमल का पूर्व्व दिशा वाला दल लाल वर्ण का है, मन मकरंद के उस पर जा बसने से गौरव वृद्धि कल्याण और दान इत्यादि शुभ कर्म्मों की इच्छा उत्पन्न होती है। अग्नेय दिशा की पखुरी नीलवर्ण है, उस पर मन रमने से त्रिदोष की वृद्धि होकर मरण पर्य्यन्त परिणाम होता है। उत्तर दिशा का दल पीत वर्ण है उसमें भोग का त्याग होकर जोग में अनुराग कराने की शक्ति है। नैऋत दिशावाला दल धूमले रंग का है और उसकी वा-सना से शोक की उत्पत्ति जानो। पश्चिम दिशावाला दल पीला है और उसमें स्नेह की वासना का वास है। दक्षिण दिशावाला दल उज्ज्वल है और उस से

(१) ७२ कोठे से यहां ७२ नाड़ियों से अभिप्राय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शान्ति रस की उत्पत्ति होती है। ईशान दिशावाला दल विलचण मिश्रित रंग का है उस पर मन जाते ही भ्रमण में पड़ जाता है और उच्चाट चित्त होने से कहीं भी दिल नहीं लगता। उसी कमल का प्रकोष्ट यानी मध्य भाग ब्रह्ममय है। यह चंचल चित कृत-कर्मों के वशीभूत होकर वायु वाधित दीप शिखा की तरह डुलता फिरता हुआ उसी कमल के प्रत्येक दलों पर दौड़ा करता है। अस्तु एक अकेले इस मन को हाथ में करने से सब साधनाएं सहज हो जाती हैं। भाइ इस मन को ही सब प्रपंचों का मूल समझो। यह मनही लिप्त होता है और यही घर घर अवतार धारण करता है। यही कर्म बंधन में फंसाता है और यही कर्मों से उबारता है। यही इधर उधर भ्रमता है और यही सुखी दुखी होता है। अन्तरात्मा का तो इतर प्रपंचों से रंच भी लगाव नहीं है; अतः सद्गुरु की कृपा से जो यह मन अज्ञान से रहित होकर ज्ञान में रंग जाय तो सब दुःख दूर हो जांय और मुक्ति मार्ग भी सहजही मिलजाय। इसलिये मन को रोककर युद्ध के लिये सन्नद्ध होजाओ। एकाग्र चित्त होकर युद्ध में मरने से मुक्ति मिलती है परन्तु वासना लिप्त होने से फिर भी कर्म बंधन में पड़ना पड़ता है।

ढुंढरह राय ने कहा महाराज आप तेजपुंज सुर्य्य वंश में उत्पन्न हैं। आप वीर हैं और अपने कुल की लीक के अनुसार आचार विचार और साहस भी आप में विद्यमान हैं। तदनुसार आप युद्ध के लिये सन्नद्ध होनाही सलाह समझते हैं, परन्तु राज्य की रचा करना भी तो राजा का परम धर्म है। सबल से वैर बिसाहने में घर और भर दोनों की हानि है। इस पर रावल जी ने उत्तर दिया कि भाइयो शीत रूपी भीतिता को भगा कर गरबीले ग्रीष्म का वेष धारण करो और शत्रु दल के दाह करने में प्रवृत्त हो जाओ। यह कहकर रावल जी ने अपने अंतरंग मित्र सुमंत प्रमार की ओर देखा। तब सुमंत बोला कि भाइयो डौल डील कुछ नहीं तेज ही माननीय है। एक गरुड़ सहस्रों सर्पों के समूह का विनाश कर सकता है। एक अगस्त इतना बड़ा उदधि अचै गया। एक राहू उड़गन समूह के होते हुए भी चन्द्रमा का ग्रास करता है और सिंह हाथी का शिकार करता है। इसी प्रकार रावल जी भी पंग ऐसे प्रबल शत्रु को परास्त करने में सहज समर्थ हैं। अवसर पाकर सिंह प्रमार बोला कि शत्रु प्रबल है इससे रात्रि को धावा करना उचित होगा, बात की बात रहेगी और सब प्रकार की हानि से भी बचेंगें। परन्तु यह प्रस्ताव समरसिंह जी ने स्वीकार न किया। उन्होंने कहा। उज्ज्वल अंशुमाली भगवान के उजेले में उज्ज्वल मन से उज्ज्वल इष्ट देवों की आराधना करते हुए उज्ज्वल अस्त्र शस्त्र सम्हालो और उज्ज्वल कर्तव्य-धर्म पालन करके उज्ज्वल दिशाओं में अपनी उज्ज्वल सुकीर्ति का उजेला प्रकाशित करो। उज्ज्वल हृदय से उजेले में युद्ध करने से ही वीरों का मुख उज्ज्वल होता है। और भी सुनो! यह मनुष्य शरीर सुकीर्ति विस्तृत करने के ही लिये दिया जाता है इस लिये सुकीर्ति के लिये तन तजना जरूरी है। जो होनहार है सो अमिट है। लोग कहते हैं, ये मेरा ये तेरा, पर अन्त समय पर कोई भी काम नहीं आता। इस लिये इन दुखद प्रपंचों का विचार छोड़ कर समर में तन तज कर संसार की सार वस्तु मुक्ति से मुख मोड़ना शुभ नहीं है। इस दुःख मय जीवन में सुख की आशा करना बड़ी भारी भूल है।

रावल समरसिंह जी के ऐसे वचन सुनकर सूर वीर सिपाही सन्नाह चढ़ा कर और अस्त्र शस्त्रों से सुसज्जित होकर पंग सेना से जंग लेने के लिये सन्नद्ध हो बैठे। उनके कान्ति मय उज्वल शरीर पर झूमले बख्तर ऐसे मालूम होते थे मानों राहु ने सूर्य्य को सर्वाङ्ग ग्रास करलिया हो। शृंगीनाद के भीषण स्वरसे अथवा अन्यान्य जंगी बाजों के बजने दिशाओं में दुहचाल सा मचगया। और शूरवीरों के चेहरे सूर्य्य से दिप उठे। छत्तीसों प्रकार के राजपूती बानों से सुसज्जित होकर चित्तौरपति की चतुरंगिनी चमू जैचन्द का मोरचा मारने के लिये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चली। इस सेना को साम्हने आते देखकर जैचन्द ने अपनी तलवार सम्हारी और हाथी से उतर कर वह अपने माणिक नाम घोड़े पर सवार हुआ। वह भीमकाय घोड़ा क्या आग का पुतला था। जैचन्द को पीठ पर लिये चौकड़ी भरकर चलता हुआ द्रोनागिर को लिए हनुमान जी सा जाता जान पड़ता था। उसकी पूंछ का और चन्दन कीसी चौंर छहरा रहा था और उसके नाल दूज की सी जुन्हैया चमचमाते थे। वह पंखी की भांति फरफराता हुआ घोड़ा उच्चैश्रवा का सा जोड़ा जान पड़ता था। उस की कलँगी से तो मयूर का धोखा होता था।

उस दिन चैत्र सुदि * पूर्णिमा सोमवार था। समरसिंह और पंग सेना का प्रथम युद्ध खारीनद के पास दुरगापुर के मैदान में हुआ। दोनों दलों का दिखादाव होते ही इधर से रावल समरसिंह जी और उधर से जैचन्द ने अपने अपने घोड़ों की बागें उठाईं। रावल जी के साथ में उनके सरदार कन्ह, जैत, नरेन, मानसिंह, मल्हनदेव, अमरसिंह, प्रतापसिंह बलिभद्र आदि ने भी अपनी अपनी अनी कनी सेना सहित शत्रु सेना पर धावा किया। तीर तुवक की तो किसी ने बात ही न पूछी दोनों ओर के राजपूत योद्धा चपला सी चमचमाती हुई तलवारें निकाल कर वार करने लगे। रण वाद्यों के रव और हाथियों के घंटों की ठनठनाहट के मारे कान नहीं दिया जाता था। दोनों दलों का जुटाव पावस के युगल बद्दलों के जुटाव से कम न था। पल भर में लोहे के झलाझल छींटे वर्षा कर वर्षा की बहार दिखाने लगे। हाथी के कुंभस्थल में पैठती हुई तलवार बादल में बिजली सी समाती जान पड़ती थी। और हाथियों के किलाए पर बैठे महावत सिंह से देख पड़ते थे। रावल जी के सिपाहियों ने पंग दल को खूब दबाया परन्तु एक जगह रावल जी बुरी तरह से गस गए। उस समय पंग सेना चारों ओर से दब गई और रावल जी ने बाग उठाई। पंग दल के सिपाहियों ने बड़े बेग से मार मचाते हुए समर सिंह जी को पकड़ लेना चाहा, परन्तु उस समय समरसिंह ने विकट बाराह रूप होकर समस्त दल बल को बिदार दिया और हाथ उठा कर अपने सिपाहियों से कहा "देखो भाइयो ऐसा सुअवसर फिर न मिलेगा, जैसे ग्रीष्म की दुपहरी में जल पिलाने से ज्यादा और कोई पुण्य नहीं है वैसेही युद्ध में प्राण देने के अतिरिक्त मुक्ति सुद्वार का भी अन्य कोई सरल मार्ग न जानो। इतना सुनतेही वे सूर वीर सिपाही जिनके हाथ तो थक गए थे परन्तु मन न थके थे, बड़े बेग से बढ़े और शत्रु सेना को काट काट कर पाटने लगे। सायंकाल होजाने के कारण उस दिन का युद्ध बन्द हुआ।

दूसरे दिन पुनः प्रातः काल से छिड़ी। पहिले दिन के युद्ध में पंगसेना बहुत पीछे हटगई थी। दूसरे दिन का युद्ध उसी जगह पर हुआ जहां से गुजरात का राजा भीमदेव हार कर भागा था। एक तरफ से पंग दल दूसरी तरफ से समरसिंह जी की सेना ने फिर से युद्ध के लिये कमरें कसीं। अपने अपने स्वामियों की जै की अभिलाषा करने वाले वीर तमक तमक कर तलवारों के बार करने लगे। दो पहर होते होते दोनों ओर के दो हजार सिपाही और उन्नीस सर्दार खेत रहे। परन्तु अन्त में अवसर पाकर समरसिंह जी ने पंग सेना को चारों ओर से घेर लिया और नाके बाँध कर मार मचाई। उस समय एक के ऊपर एक पड़ी तरफराती हुई लाशें ऐसी जान पड़ती थीं जैसे थोड़े पानी में मछली तरफ रही हो। कन्ह, जैत, जैसिंह, सामला सूर, रूप राम, नारायण, मोहनसिंह, आदि बीर खेत रहे पर जीत समरसिंह जी की हुई और पंग सेना भाग उठी। जैचन्द का भतीजा कान्ह भी

---

(१) सूर्य्य के रथ का सात मुखवाला घोड़ा जो समुद्र से उत्पन्न हुआ माना जाता है।

* "बार सोम राका दिवस पूरन पूरन मास।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधिक घायल हुआ था इसलिये उसे डोली में लिवा कर जैचन्द कन्नौज को उलटा गया और चित्तौर में जीत के नगारे बजने लगे।

धन्य भगवन्‌ ! जिस संयोगिता के लिये यह सब खून खराबा हुआ वह समय पाकर पृथ्वीराज के हाथ लगी पर लगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कैमास बध समय।

(सत्तावनवां समय।)

—o—

दिल्लीपति पृथ्वीराज शस्त्र बल से शत्रु समूह को शमन कर स्वच्छन्दता पूर्वक राज्य श्री का सुख भोग कर रहा था। उसका पुत्र राजकुमार रेणुसिंह भी अश्व पर सवार हो अहिर्निशि अहेर के फेर में फिरा करता था। राजकुमार रेणुसिंह और चामंडराय का परस्पर घनिष्ट स्नेह था। वे दोनों मामा भांजे एक दूसरे के बिना क्षण भर भी नहीं रहते थे। खाते पीते सोते जागते दोनों एक दूसरे से घरी भर के लिये भी बिलग नहीं होते थे। उन दोनों का ऐसा स्नेह चंदपुंडीर से न देखा गया। उसने एक दिन अवसर पाकर राजा पृथ्वीराज से कहा कि चामंड राय ने राजकुमार पर अपना विशेष प्रभाव जमा रक्खा है। मुझे तो कुछ 'दाल में काला' मालूम होता है क्या जाने क्यों! यह कलिकाल का समय है और राज्य का प्रलोभन बुरा होता है!! चंदपुंडीर के ये वचन चहुआन के चित्त में चुभ गए। उसने उस समय तो कुछ न कहा पर उस के दिल में गांठ पड़ गई।

संवत् ११५१ आषाढ़ सुदी ९ वीं की बात है। पूर्व दिशा में कुछ धूमले वर्ण का चन्द्रमा दिखाई दे रहा था। राजा पृथ्वीराज ने शतरंज खेलने की इच्छा की। शतरंज बिछाई गई। एक बाजी पर राजा स्वयं था और दूसरी पर राज्यमंत्री कैमास। राजा के दहिने पार्श्व में पज्जूनराय और चंद सेन, बाएं पार्श्व में जैतराव और साम्हने निड्डुर और कन्ह बैठे हुए थे। इनके सिवाय सलख लक्खन विंझराज आदि और भी दस पांच सामंत इधर उधर बैठे थे और कविचंद कवित्त पढ़ रहा था; बदली दबने का कुछ रुख देख कर राजा ने प्रातःकाल बन बिहार के लिये जंगल को जाने की इच्छा की। आज्ञानुसार दूसरे दिन दसमी को सबेरे से सब लोग जुटे भी परन्तु बद्दल फट गए और घटाके की घाम निकल पड़ी इसलिये उस समय तार मुल्तवी हो गया। सबेरे से दोपहर पर्य्यन्त तो घाम रही, परन्तु दोपहर के बाद चारों ओर से कारे कारे बद्दल झुक आए। अस्तु राजा पृथ्वीराज, कैमास, कन्ह, पज्जून राय, चन्द्रसेन, चामंड राय, निड्डुराय, सलख, लष्खन बघेला, विंझराज आदि सामन्तों सहित हदफ खेलने के लिये जंगल की तरफ निकल गया। संध्या होते ही रिमझिम मेह भी बरसने लगा। इसलिये राजा ने समाज सहित घर की ओर प्रस्थान किया। राजा महलों को आए और सब सामन्त लोग अपनी अपनी हवेलियों को चले।

राजा पृथ्वीराज का खास हाथी शृंगारहार मदे लगा हुआ था। यद्यपि वह किले के भीतर बड़े बन्दोबस्त के साथ बँधा हुआ था परन्तु जिस समय आषाढ़ का बद्दर गरजा और टिपकारी बड़ी बड़ी बूँदें पड़ने लगीं तो हाथी सांकल तोड़ कर चल दिया। भालेवर्दारों और महावतों के हजार हजार उपाय करने पर भी हाथी थिर न रहा और शहर के बड़े बड़े मकान ढहाता हुआ मनमाना डोलने लगा। एक सकरी गल्ली में चामंडराय और शृँगारहार का आमने सामने मुकाबला होगया। चामंडराय को देखते ही हाथी ने बींड[1] भरी। परन्तु चामंडराय क्या हाथी के सामने पीछे पैर दे! यदि दे भी तो हाथी की सीध से बचकर जाय कहां? उसने भी म्यान से तलवार निकाल ली और ज्योंही हाथी मेर में आया कि उसने एक ऐसा हाथ मारा जिससे मय दांतों के भसुंड से सुंड अलग हो गई और शृंगारहार एक चिक्कार मारकर वहीं मर गया।

जब यह बात पृथ्वीराज ने सुनी कि चामंडराय ने हाथी मार डाला तो वह मारे क्रोध के कांप उठा। उसी समय उसे चंदसेन पुंडीर की बात भी स्मरण आई। बस फिर क्या था उसने पंडित रैमदेव को

(१) हाथी के सुंड उठाकर झपट करने को बींड भरना कहते हैं।

(२) यह वही हाथी था जिसे पृथ्वीराज ने शहाबुद्दीन से दण्ड में लिया था।

(३) गुरुराम का असली नाम रामदेव है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुला कर कहा कि जाओ चामंडराय के पैरों में बेड़ी भरो, यदि इस समय तुमने मेरे सम्बन्ध के बड़प्पन का विचार करके जरा भी आनाकानी की तो तुम अपनी भी कुशल न जानो। इतने में हाहुलीराय हम्मीर और पज्जूनराय भी आगए। उन्होंने कहा कि ठीक तो है। आज हाथी मारा कल्ह और कुछ कर बैठें, क्या ठिकाना! स्वामी की इच्छा के विरुद्ध कार्य्य करना सर्वथा नीतिविहित है। हांसीपुर के मैड़े से पूँछ दबा कर भागे थे, यहां हाथी पर सूरवीरी सूझी। परन्तु पृथ्वीराज ने कहा कि चामंड राय मारा न जाय ऐसा करने में बड़ा अपयश होगा। गुरुराम के साथ में लोहाना आजानबाहु को देकर कहा कि तुम दोनों जने जाओ और समझा बुझाकर चामंड के पैरों में बेड़ी भर आओ।

जब यह चर्चा चामंडराय के कान पड़ी तो वहां उसके दो हजार भाई बेटे (दाहिमवंशी राजपूत) बात की बात में बताने बताने से सजकर दुरुस्त हो बैठे। परन्तु चामंडराय ने सब को समझा कर शान्त किया और कहा भाई सेवक का यह धर्म नहीं है कि स्वामी के सम्मुख हथियार पकड़े। जिसका अन्न खाया, जिसे देवता करके माना, भला उससे लड़ना कैसे बनता है। ऐसा करने में न तो लोक में यश है न परलोक में सुख है। गुरुराम ने चामंडराय के सम्मुख जाकर राजा की आज्ञा कह सुनाई और बेड़ी साम्हने रख दी। स्वामिभक्त चामंडराय ने चुपके से अपने ही हाथों अपने पैरों में बेड़ी चढ़ा ली। जैसे मतवाला हाथी अंकुश की अनी को और भारी भारी सर्प गरुड़ की आन को मानते हैं वैसेही नीतिवान चामंडराय ने बिना आनाकानी किए स्वामी की आज्ञा को प्रसन्नता पूर्वक सिरोधार्य्य कर लिया। धन्य हैं! वह समय तो गया परन्तु चामंडराय के शील की चरचा अबलों चल रही है और चलेगी। होनी थी सो तो हो गई परन्तु यह बात खटकी सबको!

सच है! बड़े से बैर बिसाहना बुरा होता है *

जैचंद के डर से पृथ्वीराज दो दिन भी दिल्ली में नहीं रहता था। समस्त राज्यकार्य्य कैमास के हाथ में छोड़ कर आप जंगल में शिकार खेलता फिरता था। निदान चामंडराय को बेड़ी पहना कर पृथ्वीराज फिर भी दुरगा-बन को शिकार खेलने चला गया और कुछ सामन्तों सहित कैमास दिल्ली में रह कर सावधानी के साथ राज्यकार्य्य करने लगा।

भादों बदी १० गुरुवार की बात है। कोई एक घड़ी दिन चढ़ा होगा। आकाश में अंधाधुन्ध बद्दल छाए हुए थे। मोर शोर मचा रहे थे, मेढ़क टर्रा रहे थे और बगुले श्रेणीबद्ध होकर बदरों के नीचे नीचे उड़ रहे थे। दसों दिशाओं में अन्धेरा सा छा रहा था और बदरों की गर्जना से तो ऐसा भान हो रहा था मानों प्रकृति पर विजय पाकर पावस स्वयं अपने निसान बजा रहा हो। उसी समय कैमास कतिपय सामन्तों और सिपाहियों सहित घर से राजमहल को आया। इधर जोबन की मजेज में भरी हुई कर्नाटकी दस पांच दासियों सहित सजीबजी बैठी प्रकृति का आनन्द ले रही थी। दैवयोग से कैमास की और उसकी नजरें चार हो गईं। नजरें चार होते ही दोनों के हृदय पर मार की मार सी पड़ उठी और दोनों एक दूसरे के हिये का हार होने के लिये बेहाल हो गए। स्त्रियाँ तो स्वाभाविक ही चंचलचित्त होती हैं तिस पर दासी और फिर भी राजा का महलों में न होना, इन सब कारणों से कर्नाटकी का चलचित्त होना एक प्रकार से उचित भी हो सकता है, परन्तु होनहार बश बुद्धिमान कैमास भी इस समय रसवश होगया। क्या कहें! इस संसार की रीति, भांति कुछ विलक्षण ही है, जैसे भौंरी का चित्त तो भ्रमर में बसता है परन्तु भ्रमर कुसुम रस की आशा में व्यस्त रहता है अथवा जैसे परब्रह्म प्रत्येक पुरुष में रमकर उसे शक्तिमान बनाए हैं परन्तु पुरुष अधर्म में रत रहता है। तैसे ही पृथ्वीराज तो सब तरह से कैमास के बलभरोसे था परन्तु कैमास कर्नाटकी के रस में फँस गया। कैमास या कर्नाटकी को क्या दोष दें, होतव्य प्रबल होती है।

* भूमन्त राज आखेट पंग भय। पह रष्षौ कैमास मंत्र राय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समस्त दिन राज्य कार्य्य करके शायंकाल होते ही कैमास घर को गया। ज्यों ज्यों रात्रि भीजती जाती थी त्यों त्यों कैमास का हाल बेहाल होता जाता था। इधर कर्नाटकी का भी यही हाल था। जब से उसकी कैमास से नजर मिली तब से उसे पलभर भी कल नहीं पड़ती थी। प्रहर रात्रि जाते जाते कर्नाटकी अधीर हो उठी और उसने उसी समय एक दासी को कैमास के पास भेजा। कैमास तो आप पड़ा तड़फ रहा था, कर्नाटकी की दासी को देखकर दंग हो गया। उसने उसी समय दासी के कथनानुसार स्त्री-वेष धारण किया और दासी के साथ हो लिया " जो कैमास अपनी बुद्धिमत्ता के लिये जहान में जाहिर था, जो कैमास साक्षात् दिल्ली राज्य की ढाल था, हा! उसका ऐसा लंपटपन! उसकी ऐसी नीच करतूत, धन्य है! दैव बलवान है" कैमास दासी के हाथ में हाथ दिए महल के अन्दर हो गया। यद्यपि चारों ओर से खूब घनघोर बद्दर चढ़ा हुआ था, हाथों हाथ नहीं सूझता था परन्तु चन्दन की महक और पैर के भारीपन की आहट से पटरानी इंछिनी के मन में सन्देह हो गया, इस लिये वह खिड़की से झाँक कर देखने लगी। तब तक बिजली भी चमचमा उठी तो इंछिनी देखती क्या है कि कोई स्त्री वस्त्रधारी पुरुष कर्नाटकी की अटारी की सीढ़ियाँ चढ़रहा है। यह देख कर रानी सन्न होगई। तब तक उसका सुगा बोला, देखा आज कौआ कस्तूरी खा रहा है। जानती है! कर्नाटकी के घर में कौन है! ! नहीं जानती तो जान ले। वह कैमास है ! ! !

कैमास तो कर्नाटकी के पास पहुँचते ही मानों संसार को क्या अपने को भूल भी गया। इधर रानी इंछिनी ने एक सखी के हाथ पर कज्जल से संदेसा लिख कर उसे पृथ्वीराज के पास प्रेषित किया। दासी घोड़े पर सवार होकर दो घड़ी में राजा के पड़ाव पर जा पहुँची। उसने घोड़े को तो एक पेड़ से बाँध दिया और आप राजा के शिविर में गई तो देखती क्या है राजा पृथ्वीराज अपनी तीर कमान बगल में रक्खे पड़ा हुआ बेसुध सो रहा है और उसके सखा सामन्त लोग भी उसी तरह घोर निद्रा में निमग्न हैं। यह देखकर दासी ने मन में कहा, जिसने जैचन्द का यज्ञ भंग करके उससे वैर बिसाहा, जो बादशाह को पकड़ कर बार बार छोड़ देता है, जिसके चारों ओर शत्रु चील्ह से मड़रा रहे हैं वह पृथ्वीराज इसतरह पड़ा हुआ बेसुध सो रहा है। ईश्वर इसकी रक्षा करे। ऐसा बिचारती हुई दासी आगे बढ़ी। यद्यपि उसके नूपुर की ध्वनि से राजा कुछ सचेत सा हो गया परन्तु उसे अपना भ्रम समझ कर उसने आँख न खोली, किन्तु जब दासी ने पास जाकर छाती पर हाथ रख दिया तब तो वह चटपटाकर उठ बैठा और दासी की गदेली पर का लिखा हुआ सँदेसा पढ़ कर पूछ दबाए हुए सर्प की तरह गुस्से में भर गया। लिखा हुआ यह था "आप तो वातूल से बाधित तिनके की तरह इधर उधर मारे मारे फिरते हैं यहां की भी खबर है क्या हो रहा है ?" कच्ची नींद से जगे और गुस्से से भरे पृथ्वीराज का मुखमंडल मंगल ग्रह की भाँति जाज्वल्यमान होरहा था। दासी तो देखकर मारे डर के थरथर काँपने लगी, परन्तु जब राजा ने कहा कि डर मत कह बात क्या है? तब दासी बोली, क्या कहूं इस समय आपका मंत्री कैमास दासी कर्नाटकी के साथ रम रहा है।

दासी की बात सुनते ही पृथ्वीराज बिना किसी से कहे सुने तरकस कस, कमान हाथ में लेकर अश्व पर सवार हो चट से रफूचक्कर हुआ और रानी इंछिनी के महल में आ पहुँचा।

पृथ्वीराज ने आते ही पूछा "क्या है?" रानी इंछिनी बोली दासी कर्नाटकी के महल में कोई पुरुष है। मैं नहीं कह सकती कि वह कौन है, कोई देवता है या गन्धर्व है या यक्ष है? अब तक यह हाल दासी, रानी इंछिनी और पृथ्वीराज के सिवाय और किसी को भी मालूम न था—रानी इंछिनी ने राजा के साथ होकर कर्नाटकी और कैमास को दिखा दिया। देखते ही पृथ्वीराज पहिचान गया कि यह तो कैमास है।

(१) वाय घान दिय पर अमिन पिय किन भांति भतरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है। रानी इंछिनी तो उँगली से बताकर दूर हो गई और राजा का हृदय क्रोध से काँपने लगा। उसने कुछ सावधान होकर सोचा "दासी तो नीच है उसे क्या कहें, पर कैमास का ऐसा कर्म ? योंही सोचते विचारते राजा ने बाण संधाना, परन्तु अंधेरा अधिक होने के कारण निशाना लक्ष करना तनिक कठिन था, दैव योग से उसी समय चपला ने चमक कर मानों कैमास के बध में स्वयं सहायता दी। चपला के चमकते ही पृथ्वीराज ने बाण छोड़ा परन्तु क्रोध के अधिक आवेग के कारण मूठ डुल जाने से निशाना चूक गया। पीछे खड़ी हुई इंछिनी से दूसरा बाण लेकर राजा ने ज्यों छोड़ा त्यों ही कैमास डाल से चूके हुए बन्दर की तरह गिर पड़ा "हा ! अर्जुन और राजा दशरथ तो इस लोक में हैं ही नहीं, स्वामी पृथ्वीराज तो आखेट में रम रहे हैं इस बाण का चलाने वाला तीसरा और कौन है।" यही सोचते सोचते कैमास इस असार संसार से सदा के लिये बिदा हो गया।

कैमास के कलेजे में बाण लगते ही रुधिर की धार निकल पड़ी और चित्रसारी की सारी भूमि लाल हो गई। बद्दल बड़े जोर से तड़तड़ाता और कहीं गाज भी गिरी। ललाट पट में लिखे हुए अक्षर अमिट हैं, एक दासी के कारण पृथ्वीराज के हाथ से कैमास का मारा जाना ! जिस कैमास ने खट्टू बन का असंख्य धन खोद निकाला जिस कैमास ने पड़िहारों को हराकर साम्हर पर कब्जा किया, जिस कैमास ने शाह शहाबुद्दीन को कई बार बाँधा, जिस राज्य मंत्री कैमास की नीति चातुरी के कारण चातुर्दिक चील्ह से मड़राता हुआ प्रबल शत्रु दल दिल्ली राज्य को आज लों कोई हानि न पहुँचा सका और जो कैमास सदा पृथ्वीराज के चित्त में बसा रहता था आज उसी कैमास की यह दशा ? राजा रामचन्द्र के सिवाय और कौन पुरुष जितेन्द्रिय हुआ है ? नरनाह काका कन्ह, चामंडराय, हरसिंह, रामराय, सलख, कनकरायबड़-गूजर, इस सबके घर दो दो स्त्रियां थीं और सब प्रायः परस्त्रीगामी थे, कैमास यदि दासीरत हुआ तो क्या ? जिस कैमास ने तोमरों से दिल्ली का राज्य लिया, जिस कैमास ने बालुकाराय को मार कर जैचंद का यज्ञ विध्वंस किया, जिस कैमास ने गुजरात के राजा भीमदेव को जीता और जिस कैमास ने छः बार शहाबुद्दीन को कैद किया, वही कैमास होनहार के वश होकर कर्नाटकी के कारण कालकवलित हुआ। हा ! इश्वरेच्छा बलीयसी। कोई किसी बात का गर्व करे तो वृथा है। पृथ्वीराज ने कैमास की लाश को तो उसी समय जमीन में गाड़ दिया और कर्नाटकी को एक गोख में चुन दिया। इतना करके पृथ्वीराज दो घड़ी पाँच पल रात्रि रहे महलों से शिकारगाह को लौट गया, परन्तु प्रातःकाल मालूम हुआ कि नटखट कर्नाटकी गोख से निकल भागी।

इधर तो यह हाल हुआ उधर कविचन्द ने स्वप्न में देखा कि मानों उससे कोई कान में कह रहा है कि सोता क्या है राजा ने कैमास को मार डाला। यह सुनते ही कविचन्द अकबका कर उठ बैठा और चकित चित्त होकर सोचने लगा "हैं ! मैंने क्या सुना, अपने बाल सखा और सच्चे सेवक कैमास को राजा क्यों मारेगा। हैं ! हो ही क्योंकर सकता है कैमास तो दिल्ली में है और राजा शिकारगाह में पड़ा है। हैं ! मुझे यह हृदय विदारक संवाद किसने सुनाया कृपा कर मेरे साम्हने प्रगट होकर कहो वास्तव में बात क्या है"। कविचन्द इस प्रकार से सोच समुद्र में गोते लगा रहा था कि देखता क्या है कि उज्ज्वल स्वेत वस्त्र धारण किए मोतियों की माला पहिने बीणा बजाती हुई हंस पर सवार विद्या बरदायिनी सरस्वती उसके सम्मुख आकर प्रगट हो गई। उस जगद्विमोहिनी मूर्ति के कारे कारे घुँघरारे केश थे और स्वर्णपट्टिकावत ललाट पटल पर चन्दन की रेख बाल चन्द्रमा सी सुशोभित थी। उसके कपोलों की प्रभा उगते हुए पूनों के चन्द्रमा की भाँति थी और बुलाक का मोती तो ऐसा ही मालूम होता था मानो सुआ सीप चुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहा हो दोनों भौंहें राहु कैसी किरचें और चिबुक बिन्दु घन श्याम कीसी आभा भासित करता था।मन्द स्मिति से दिखाती हुई दन्त पंक्ति देखकर ऐसा मालूम होता मानों पके अनार का दाना खिल रहा हो। कंबुवत कण्ठ में मोतियों की माला सुमेर गिरि की परिक्रमा करती हुई गंगा सी जान पड़ती थी। उन्नत वक्षस्थल, किसुं के पुष्प से अरुण नख, सूक्ष्म कटि, सुढार जंघा, सचक्कन पिंडुरी और कुसुम सी आरक्त एंड़ी अजब ही छटा छाते थे। ऐसी सब भाँति से सेवकों का मनोरथ सफल करने वाली वाणी ने कविचन्द से कहा। आज मदन की मंजेज में निर्लज्ज होकर कर्नाटकी ने कैमास को बुलाया। कैमास भी काम कटाक्ष में बिंधकर कर्नाटकी की दासी के साथ महल में जा पहुँचा। जिस समय कैमास कर्नाटकी की चित्रसारी की सिढ़ियां चढ़ रहा था कि उस पर पटरानी इंछिनी की नज़र पड़ गई। उसने अपनी दासी के हाथ राजा को पत्र लिख भेजा कि आप तो वहां पड़े हैं यहां कागा कस्तूरी चुनता है। दासी उसी दम घोड़े पर सवार होकर शिकारगाह में पहुँची—राजा पड़ा हुआ सो रहा था। दासी ने सीधे जाकर उसकी छाती पर हाथ रख दिया, जिससे राजा चौंक कर उठ बैठा और उसने उसके इस अकस्मात् आने का कारण पूछा? तब दासी ने सब हाल कह सुनाया, जिसे सुनते ही पृथ्वीराज किसी को बिना जताए केवल धनुष बाण लेकर वहां से अकेला चलपड़ा और रानी इंछिनी के पास आया। रानी ने राजा को लिवा जाकर कैमास को दासी के साथ रमते हुए दिखा दिया, जिसे देखते ही पृथ्वीराज जल उठा, परन्तु फिर उस ने सम्हल कर बाण सन्धाना और बिजली के उजेले में लक्ष करके बाण छोड़ा। परन्तु वह वार चूक गया इस लिये उसने फिर दूसरा बाण मार कर कैमास का काम तमाम किया। कैमास को मारकर उसने पृथ्वी में गाड़ दिया और दासी को एक गोख की ओख में चुन कर, दोनों को रानी इंछिनी के सुपुर्द कर दिया और आप फिर से डेरों पर चला गया। नटखट दासी कर्नाटकी तो किसी प्रकार से निकल भागी परन्तु राज मंत्री का शव अब भी धरातल में गड़ा पड़ा हुआ है।

इतना कह कर सरस्वती तो अन्तर्ध्यान हो गई और चिन्तित चित्त कविचन्द चकाचौंध होकर चट से उठ बैठा। तो देखता क्या है कि प्रातःकाल हो गया है जहां तहां देवालयों में शंखझालर की झंकार से दिशाएं गूंज रही हैं आकाश में उज्ज्वलता का प्रसार हो रहा है, धर्म और मुक्त मानो कमलकली के स्वरूप में हँस रहे हैं। और पाप पुंज मानों कमोदनी बन कर म्लान मुख हो रहे हैं। भास्कर भगवान की किरणों का आभास होते ही उद्यमी जीव जहां तहां अपने व्यवसाय में तत्पर हुए हैं और मलिन मन हो जँभाई लेने लगे हैं। चकवा चकवी का मिलाप हुआ, चन्द मन्द द्युति हुआ और और भी प्रकृति में अनेक प्रकार के हेर फेर हो गए।

राजा पृथ्वीराज ने लौटकर महल में सभा का साज सामान होने की आज्ञा दी। आज्ञानुसार बात की बात में सब सामान दुरुस्त हो गया। उचित उच्च स्थान पर राजा की राजगद्दी और उसके अगल बगल सामन्त सरदारों की बैठक के मूढ़ा गादी आद सजे गए। सामन्त मण्डला के बीच में बैठा हुआ पृथ्वीराज अष्ट ग्रहों के बीच सूर्य्य सा देदीप्यमान हो रहा था। उस तेजस्वी महाराज पृथ्वीराज के शिर पर रत्न जटित स्वर्ण की डाँणी वाले चौंर और छत्र छहरा रहे थे और गद्दी के पीछे परिकर के लोग हाथ बाँधे चुपचाप खड़े हुए थे। एक कैमास के सिवाय अन्य सब सामन्त उपस्थित थे और यह किसी को खबर भी न थी कि बिचारे कैमास की क्या गति हुई है। पृथ्वीराज ने सगर्व प्रश्न किया कि कहो तो (मेरे सिवाय) और भी किसी ने शाह को परास्त किया है? तब तक कविचन्द भी आन पहुँचा और राजा को आशीर्वाद दे कर यथास्थान अपने आसन पर आसीन हुआ। उसने राजा को आशीर्वाद देते हुए कहा" हे नृसिंह के समान तेजस्वी! हे अद्वितीय धनुर्धारी हवि के समान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेजवान रयनकुमार के पिता, सूर सामन्तों के स्वामी सत, रज, तम, तीनो गुणों संयुक्त इस सभा मण्डप में विराजमान चाहुआन तेरी जय हो !" इसके पश्चात् वह उपस्थित सामन्तों की विरद पढ़ने लगा। उसने कहा "राजा के दक्षिण पार्श्व में विराजमान लक्खन और कन्ह आप रण आंगन में ध्रुव के समान अटल हैं। बामपार्श्व में विराजमान हरिसिंह और वीरसिंह प्रमार तो महाराज के साक्षात बाम बाहुही हैं। नरनाह काका कन्ह तो पृथ्वीराज के सर्वाङ्ग रक्षक सनाह के समान हैं। इनके सिवाय उसने विंझराज परमाल, चंदेल वाहरराय, अचलेस भट्टी, निठुरराय, लक्खनराय, चामंडराय, गोइन्दराय गहलौत, पहारराय, तोंअर, रामराय बड़गुजर, कूरम्भपति, पज्जूनराय, अनगोरपाति नरसिंह आदि सब सामन्तों की कीर्ति पढ़कर कहा कि चहुआन बंश में राजा माणिक राय के दस पुत्र थे। उनमें से जराजित नाम का राजकुमार सम्हर की गद्दी पर बैठा। शेष नौ राजधानी छोड़ कर अन्यान्य देशों को चले गए। उसी राजा जराजित की गद्दी पर राजा पृथ्वीराज है जिसकी पच्चीस टंकी कमान पर तीन जंजीर की प्रत्यंचा चढ़ती है और जिस के प्रकोप मात्र से सारा जहान थरथर कांपता है। ऐसे राजा पृथ्वीराज की कीर्ति का यदि पांच दिन पर्य्यन्त लगातार बखान किया जाय तो भी अन्त न आवे। इसपर राजा का रुख पाकर नकीब ने कवि को पुकार कर कहा। सदैव आनन्द स्वरूप दरिद्र दुःख दमन असहायों के सहायक उन्नतों के नत मस्तक करने वाले सुकीर्तिवान के सुत महाराज संभरीराव कविचंद को समक्ष होने की इच्छा करते हैं। यह आज्ञा सुनकर कविचंद राजा के पास गया और आज्ञा पाकर संमुख बैठ गया।

कन्ह ने कविचन्द से कहा कि मानिकराय के शेष नौ पुत्र किस कारण राज्य से निकाल दिए गए और जराजित राज्य का स्वामी क्यों हुआ सो कथा कहो। तब कविचन्द बोला कि चाहुआन वंश में प्रसिद्ध राजा माणिकराय ने तक्षकपुर के सोलंकी राजा की (१)
बेटी से विवाह किया। दैव योग से उस सोलंकिनी रानी के गर्भ से बालक के स्थान में एक हाड़ का टुकड़ा प्रसव हुआ। इस अद्भुत घटना से चकित चित माणिकराव जी ने आज्ञा दी कि यह प्रसूत अस्थिखण्ड जंगल में फेंक दिया जाय, परन्तु सुतवत्सला प्रसूता रानी ने राजा की यह आज्ञा अस्वीकार की तब राजा ने रानी को भी निकाल बाहर किया। महलों से निकाली जाकर रानी साम्हर झील के उपकण्ठ में कहीं रहने लगी। शनैः शनैः वह अस्थिखण्ड बढ़ने लगा रानी ने अपने कुछ प्रधान भेज कर किसी राठौर वंश के राजा की बेटी से उस अस्थिखण्ड का व्याह भी कर लिया। जब यह भेद खुला तो सब लोग जहां तहां आश्चर्य्य में पड़ गए।

उसी समय गज़नी के बादशाह ने माणिक राव जी पर चढ़ाई की। वह म्लेच्छ दल का मालिक गजनीपति शाह नौलाख बलवान सेना के साथ प्रजा को उजाड़ता और गावों को जलाता हुआ करेचा तक आगया। इधर से पच्चीस हजार सेना के साथ माणिक राव जी ने भी सबल शत्रु का वार बचाने के लिये किले से कूच किया। माणिकरावजी का पहिला पड़ाव चालुकपुर पर पड़ा। उस त्याज्य रानी ने स सैन्य राजा का आतिथ्य सत्कार किया। निदान दूसरे दिन ज्योंही चाहुआन सेना सजकर आगे कूच करने को हुई और रणवाद्य बजाए गए कि त्योंही वह अस्थिखण्ड फट पड़ा और उसमें से एक षोड़स वर्षीय सुन्दर राजकुमार निकल पड़ा। वह राजकुमार प्रचण्ड भुज दण्डवान महाबलवान साक्षात् नृसिंहजी के समान जाज्वल्य-

(१) चाहुआन कुल के आदि पुरुष चतुर्बाहु म न जी से मानिक राय १३३ वीं पीढ़ी में हुआ (बूँदी राज्यवंशावली)

* 'जराजितकी गद्दी पर" इससे यह मतलब नहीं है कि उसी संतान में आग यह बतलाया गया है कि जराजित या अस्थिपाल अपने सब भाइयों में छोटा होने के कारण गद्दी का हक्कदार नहीं था। कारण विशेष वश उसे पाट बिठाया गया था। सम्भव है कि समय पाकर ज्येष्ठ वंश ने अपना राज्य लेलिया हो क्योंकि पृथ्वीराज मूलशाखा में माना गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्थान तेजोमय देख पड़ता था। वह सर्वाङ्ग सनाह कुंडल और छत्तीसो वीर बानों से सुसज्जित था। उस राजकुमार ने अपने पिता (माणिक रावजी) के सम्मुख जाकर उनके चरणों पर सिर रख दिया और फिर अश्व पर सवार होकर शत्रु सेना पर चढ़ाई करने चला। उस राजकुमार ने ऐसा पराक्रम किया कि नौ लाख शाही सेना चण भर में छिन्न भिन्न होकर भाग उठी और खेत माणिकराव जी के हाथ रहा। बादशाह पकड़ लिया गया और सत्तर हजार हाथी दण्ड में लेकर तब उसे घर जाने दिया गया।

माणिकराव जी ने उस राजकुमार को निज राजधानी संभर में लाकर बड़ा उत्सव मनाया, बड़े समारोह के साथ निजकुल देवी आशापुराजी का पूजन किया और उक्त राजकुमार का नाम कर्ण किया। उसका नाम ऊर्ध्वपाल और विरद हाड़ा हुआ

माणिक राव जी संभरा देव के बड़े भक्त थे। एक दिन उसने प्रसन्न होकर रावजी को वर दिया कि आज तू घोड़े पर सवार होकर जितनी भूमि की परिक्रमा कर आवेगा वह सब चाँदी की हो जायगी। तदनुसार राजा ने घोड़े पर सवार होकर बारह कोस की परिक्रमा लगाई परन्तु होतव्य वश उसे पीछे की तरफ देख आया। जिससे वह सब भूमि चाँदी के स्थान में ऊसर या नमक की खान होगई * इस घटना का राजा के चित्त पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह उसी दिन से मन मलीन रहने लगा। अन्त में इसी सोच में संसार से चल बसा। उसके पश्चात् अपने भाइयों को निकाल कर जराजित पाट पर बैठा। जराजित के पाट बैठने पर राज्य से निकाले गए जराजित के भाई लोग कंदहारी लोगों की कुमक लेकर चढ़ आए। अस्तु इधर से जराजित ने भी भूमि के लिये लड़ना मरना चत्री धर्म जानकर कमर कसी और घोर युद्ध करके उन्हें विवश कर दिया। परन्तु अन्त में अपने ही गोत्र की चय की आशंका जानकर उसने सबको जाने दिया।

* कविचन्द के यह कथा कह चुकने पर पृथ्वीराज बोला हे कवि किस किस देश के नरेश कैसे कैसे शूरवीर हो गए हैं उनकी रीति नीति और आचार विचार का वर्णन करो! कौन कौन राजा कैसे कैसे मानी और अभिमानी हुए और उन में से किस ने किसका दर्प चूर्ण किया? कौन कौन राजा कैसे कैसे गुणग्राही और यशस्वी हो गए हैं और उनके इस समय क्या क्या चिन्ह वर्त्तमान हैं? हे कवि माई के लाल सच्चे शूर वीर ऐसे वीर पुरुष—श्रेष्ठ राजाओं का वर्णन करो। इस पर कवि ने प्रत्युत्तर दिया। इस वसुमती एवं रसा का रस आस्वादन करने की लालसा में लिप्त सहस्रों नरेश रसातल को गए और बहुतेरे यश की ही आशा में काल कवलित हुए। इस संसार चक्र में भ्रमते हुए सभी जब तब नाश को

---

(१) छन्द १६६ से लेकर छन्द २१० तक हाड़ा (चाहुआन) बंश की उत्पति बर्णन की गई है। इस ग्रंथ के अनुसार तो वह स्वयं सिद्ध है परन्तु बूँदी राज्य वंशावली के विरुद्ध पड़ती है जिसे किसी चारण ने वंश भास्कर के आधार पर रचा है। उसमें माणिकराव जी के दश कुमार होना लिखा है उनमें से ज्येष्ठ कुमार मुहकर्म जी का सम्भर राज्य का स्वामी और शेष नौ से सिंध के धुँधेरिए या धँधेरे टाँका भदौडिए आदि शाखाओं की उत्पत्ति लिखी है उसी के अनुसार चाहुआन जी से १७० वीं पीढ़ी में पृथ्वीराज का होना और इसके कई पीढ़ी पश्चात् हाड़ावंश की उत्पत्ति बतलाई गई है। बूँदी राज चरितावली के रचयिता चौहान हरिचरण सिंह जी ने इसी बात को माना है।

* इसी खान का नमक साम्भरी नमक कहलाता है यह खाने में बड़ा स्वादिष्ट और पुष्टि कर होता है। लाहौरी छुटिया आदि कई प्रकार के नमक होते हैं परन्तु यह सब से उत्तम होता है पहिचान इसकी यह है कि डलों में नीलापन झलकता है। उपवास के दिन इस नमक का खाना निषिद्ध माना गया है। इसका कारण यह है कि जो कुछ इस खान में डाल दिया जाता है वह सब नमक हो जाता है और आस पास के गांव वाले मरे हुए जानवर या अन्य कूड़ा करकट इसी जगह डाल देते थे या डाल देते हैं।

* छन्द १७१ से छन्द २१८ तक पृथ्वीराज के दर्बार का वर्णन और हाड़ा बंश की उत्पत्ति की कथा क्षेपक मालूम होती है। क्योंकि छन्द १७१ और २१८ तक में जरा भी पाठ भेद नहीं है और छन्द १७१ के पहिले कवि दर्बार का संक्षेप वर्णन कर चुका है बाद इसके जो २१८ के बाद साटक आरम्भ होता है उसकी काव्य शैली यथाविधि छन्द १७१ से ठीक आती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राप्त होते हैं पर इस का आदि अन्त कोई नहीं जानता। मोह के फन्दे में बँधा हुआ चित्त नित नए धंधों के प्रबन्ध में विधा रहता है और अन्त में यह पंचतत्वरचित शरीर इसी मोहजनित ज्वाला से जल कर भस्मीभूत हो जाता है। हे राजन्! हम कवि हैं। हमारा कर्म ही यशस्वियों का यश गान करना है परन्तु सच पूछिए तो सच्चे सुखी वेही कहे जा सकते हैं जो शिव की कृपा से योग युक्ति जान कर जहान से किनारा कर गए हैं। तब पुनः पृथ्वीराज बोला यह तो हुआ, परन्तु यह बतलाओ कि कैमास कहाँ है। आज सन्ध्या होने को आई परन्तु उसका कहीं पता भी नहीं है। मुझे कैमास के बिना सब सूना सूझता है। कविचंद बोला कैमास किसी नाग लोक या सुरलोक में होगा, यहां कहां अब! उस बूँद से भेंट होने की नहीं। इस पर पृथ्वीराज कुछ चिढ़ कर बोला, नाग लोक या देव लोक की बातें छोड़ो या तो कैमास का पता बतलाओ या आज से बरदाईपन छोड़ो। जो तुमको दुर्गा ने वर दिया है और तुम सच्चे वरदाई हो तो कैमास का ठीक ठीक पता बतलाओ नहीं तो वरदाई न कहाओ। यह सुन कर कवि बोला अन्नदाता! ये कैसे बचन!! जो शेषनाग पृथ्वी को त्याग दे, शिव विष को त्याग दे, और सूर्य्य ताप को त्याग दे तो मैं भी देवी के वर को त्याग दूं, आप वृथा साँप के सम्मुख उँगली न उठाइए। परन्तु राजा ने फिर कहा "तुम तीनों लोक की जानते हो इस समय तुम्हे तो बतलाना होगा कि कैमास कहाँ है। इस पर कवि बोला राजन्! मुझसे पूछकर अपनी ढँकी बात न उघारिए; ऊसर की खेती सींचना बुद्धिमानी नहीं है। शेष के सिरपर धरी हुई धरा पर कैमास कहीं भी क्यों न हो मैं सहज में बता सकता हूं। परन्तु कहने न कहने दोनों में आपत्ति है कहिए तो कहने लगूँ। कवि को नम्र होता देख कर राजा ने हठ पूर्व्वक कहा, कहो कवि कैमास कहां है तब कविचंद बोला आपने कैमास को मारा क्यों पाहिले यह बतलाइए। कविचन्द की बता सुन कर राजा पृथ्वीराज सन्न रहगया उस की आंखें नीची हो गईं और उसके दिल में यह बात खटक गई कि किया हुआ कुकर्म छिपता नहीं। कविचन्द ने कहा देखिए जब कैमास पर आपने पहिला बाण चलाया और वह चूक कर काँख के नीचे से निकल गया तब आपने दूसरा बाण सन्धान कर कैमास का कलेजा बेध दिया और कहीं भाग न जाय इस भय से उसके सिसकते हुए रक्त प्लावित शव को गड्ढे में गाड़ दिया; कहिए इससे आपको क्या मिला? कवि का कथन सुन कर पृथ्वीराज तो सूर्य्य से उत्तापित कमोदिनी एवं आग की झार से झुरसे हुए तमालपत्र की तरह मुरझा कर मन ही मन गुस्सा मार कर रह गया और सब सामन्त मण्डली पर तो मानो वज्रपात हुआ। कन्ह तो करम पर हाथ मार कर चट वहां से उठ कर घर को चल दिया और सब लोग चुप चाप दाँतों उँगली दाबकर रह गए। सब अपने अपने मन में सोचने लगे आज आधी रात को राजा शिकारगाह में था यहाँ कब आया। किस कारण वश कैमास को मारा और यह सारा हाल कवि ने कैसे जान लिया। कोई कोई राजा के मुख की तरफ देखते थे कोई कविचन्द की चेष्टा अवरेखते थे, कोई कोई आपस में ही परस्पर आँख के इशारों से बातें करते हुए मन ही मन अपनी अपनी समझ लड़ा रहे थे, पृथ्वीराज अत्यन्त कुपित होकर बोला "कविचन्द मैंने कैमास को कर्नाटकी के कारण मारा है" यह सुनकर सब सामन्त लोग उठ कर अपने अपने घर को चले गए परन्तु राजा पृथ्वीराज उसी विकल अवस्था में बैठा रहा और कविचन्द भी अपने आसन से न हटा। सब के चले जाने पर उसने कहा राजन् अब लक्षण अच्छे नहीं देख पड़ते। आपके इस अपकीर्ति के मारे कान न दिया जायगा। मित्रद्रोह का कलङ्क सिर लेकर किसे मुंह दिखलाओगे। यह कहकर कविचन्द भी चलता हुआ।

पृथ्वीराज गद्दी पर से उठ कर अपनी एकान्त अंगशाला[1] में सुसज्जित एक पलंग पर जा लेटा।

(१) अंगशाला = एकान्त रहने का स्थान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उसने ड्योढ़ीवालों को आज्ञा दी कि बिना मेरी परवानगी के परिन्दा भी पर न मारने पावे। इधर सारे शहर में भी समाचार फैल गया और घर घर शोक समूह की बौछारें छुटने लगीं। समस्त राग-रंग मय आनन्द बन्द हो गए और सर्वत्र सन्नाटा छागया। इसी प्रकार तीन दिन व्यतीत हो गए,

चौथे दिन प्रातः काल ही कैमास की स्त्री कविचन्द के घर पहुंची। उसने कविचन्द से कहा कि हे वरदाई इतना कीजिए कि मुझे अपने पति की लाश दिला दीजिए, जिसमें मैं उसके साथ सती होकर संसार से पार हो जाऊं। यह सुन कर कवि बोला 'यह बात है तो कठिन, पर क्या कैमास के लिये यदि राजा मुझे मार भी डाले तो भी मुझे मंजूर है। यह कह कर कवि कैमास की स्त्री के साथ राजमहल को जाने के लिये तय्यार हुआ। जब कविचन्द की स्त्री ने यह हाल जाना तो वह तुरन्त दौड़ कर पति के पास आई और उसका अंचल * पकड़ कर बोली 'क्यों पराई मौत अपने सर लेते फिरते हो, जिसने अपने परम हितैषी बालसखा कैमास का शील नहीं रक्खा वह आपको क्या समझे? हे पति जिस जीवन की रक्षा के लिये समस्त धर्म कर्म किए जाते हैं, जिस जीवन के लिये यावत वित्त स्वाहा कर दिए जाते हैं; जिस जीवन के लिये ज़र, जमीन, घोड़े, हाथी सब दे डाले जाते हैं और जिस जीवन के लिये लोग ग्रहों का जप दान और पूजन करके घड़ी घड़ी की कुशल मनाते हैं उसी को आप हथेली पर धरे फिरते हैं। भला विचारिए तो कौन किसका साथ देता है? कहावत् है कि "आप मरे जग डूबा" हे प्यारे! यह स्वासा-मय प्राण-पखेरू आशा के वश में पड़ा हुआ अवधि के दिन पूरे करता है। पूर्व्व अर्हित वासना के अनुसार योग, जप, दान, पूजन, असन, व्यसन आहार, व्यवहार इत्यादि नाना प्रकार के कर्म किया करता है पर अवधि पूजने पर चंचला सा चल बसता है। मरण के पश्चात् केवल यश और अपयश की कहानी मात्र शेष रह जाती है, इस लिये किसी की मौत पर दुखित होना वृथा है। यह जीव मर कर भी माता के गर्भ में पड़ता है और तब जन्म लेकर नितान्त अबोध और असहाय अवस्था में पड़ा पड़ा रोया और हँसा करता है। समय पाकर जवानी की मजेज में जमीन आसमान एक करने का हौसला करता है परन्तु जरा अवस्था आने पर जब सब अंग शिथिल और पुरुषार्थहीन हो जाते हैं तब चित्तभंग और तृष्णा के ताप से उत्तापित होकर फिर चल बसता है। हे कन्त पराए के लिये कुछ माँग कर क्यों अपने प्राणों पर आपत्ति लेते हो।

परन्तु कविचन्द उसकी ओर कुछ भी ध्यान न देकर देवी की आराधना करने लगा। उसके उत्तर में उसे हुंकार शब्द सुनाई पड़ा जिससे कवि ने अपने कार्य्य की सिद्धि निश्चय जान ली और शरणागत कैमास-पत्नी के सहित राज्य महल को चला। कवि-चंद बिना किसी रोकटोक के राजा के पास जा पहुंचा तो देखता क्या है कि ग्लानि, क्रोध और लज्जा में निमग्न राजा पृथ्वीराज एक विलक्षण ही अवस्था में बैठा हुआ है। कवि को देखते ही उसके नेत्र नीचे होगए। कविचन्द ने नजर जुड़ते ही आशीर्वाद दिया। उसने कहा हे क्षत्री-कुल-कमल सावधान! परन्तु पृथ्वीराज ने कुछ उत्तर न दिया। तब कवि बोला हम कवियों का यह धर्म नहीं है कि मुँह देखी कहें इसी से कहता हूं कि आप के इस कार्य्य से आपकी विमल कीर्ति में बड़ा बट्टा लगा। भला जो हुआ सो तो मिटने का नहीं, अब कृपा करके कैमास की लाश उसकी स्त्री को दे दीजिए। इस पर राजा ने कहा "रे कवि कैमास का कर्म मेरे कलेजे पर खटकता है" तब कविचन्द ने प्रत्युत्तर दिया कि "हे राजन् राम ने स्त्री के ही कारण रावण को मारा पर क्या गाड़ दिया क्या सुग्रीव ने बालि को गाड़ा था! क्या गौत्तम ऋषि ने महान पापी इन्द्र और चन्द्रमा को गाड़ दिया था! फिर आपने एक दासी के पीछे जो कैमास की लाश को गाड़ कर

* अंचल-दामन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्या सुयश पाया। इस समय न तो वैशाग्नि कुरुपति दुर्योधन है, न शकाब्द वीर विक्रमादित्य है केवल उनके यश अपयश की वार्त्ताएं वर्त्तमान हैं। हे राजन् इस कलंक कालिमा के कारण लोग आपको क्या कहेंगे, सो भी तो विचारिए। एक दासी के लिये क्या स्वामि द्रोह के लिये भी कैमास ऐसे बुद्धिमान मंत्री के साथ ऐसा क्रूर व्यवहार करना उचित न था। उसीने असंख्य द्रव्य से आपका खजाना भरा, उसीने भोलाराय भीमदेव के हाथ से नागौर की भूमि बचाई, सो उसकी इन बातों पर बिचार करके उसकी लाश निकाल दीजिए। आप के बाल सखा मंत्री कैमास की स्त्री केवल उसकी लाश के लिये हाथ जोड़ प्रार्थना कर रही है। यह सुनकर राजा ने कैमास की लाश निकलवाए जाने की आज्ञा दी और कविचन्द ने कैमास के पुत्र का हाथ राजा को पकड़ाया। राजा ने कैमासपुत्र नरसिंह के शीश पर हाथ रख कर कहा कि कविचन्द मैंने हांसीपुर का परगना और कैमास का सब धन मान इसे दिया।

उसी दिन शुभ सुदिन जानकर राजा ने दर्बार होने की आज्ञा दी। राजा की आज्ञानुसार जब तक इधर दर्बारी साज सजने लगा तबतक पहरे वाले ने कैमास की लाश भी लाकर राजा के सम्मुख प्रस्तुत की। गुरुराम के वास्ते भी बुलावा गया था सो वह भी हाजिर आगए। तब पृथ्वीराज बोला कि आप दोनों अच्छे अच्छे प्रवीणपण्डित और कवि हैं मुझे कुछ ऐसी युक्ति बतलाओ कि मैं जैचन्द का दर्बार देख सकूं और यह भी कहो किन किन बातों से हानि और अपमान होते हैं और किन बातों से मूल हानि या अपमान का बदला पूरा हो सकता है? इस पर कविचन्द और गुरुराम बोले कि आपके प्रश्नों के उत्तर में हम कलियुग की रीतिनीति वर्णन करते हैं सो ध्यान देकर सुनिए—राजा का सब राजकाज प्रधान एवं मंत्री के बल चलता है; इस लिये राज्यमंत्री को बल, बुद्धि, तेज, और पराक्रम में राजा के समान होना चाहिए। जैसे अहंकार के कारण यज्ञादि उत्तम कर्म नष्ट भ्रष्ट हो जाते हैं, और दुःशीला स्त्री के कारण ग्रहस्थी सत्यानाश हो जाती है, उसी तरह अन्याय के कारण राज्य निर्मूल हो जाता है। उद्यम हीन राजा प्रातः काल के चन्द्रमा के समान मन्ददुति हो जाती है। कपट से स्नेह का, और लोभ से घर भर का सर्वनाश होता है। युद्ध के समय मोह और व्यवहार में लज्जा करना महा मूर्खता है। अधर्म को त्याग कर धर्म का आचरण करना, साधु पुरुषों की सेवा करना और स्त्री को राजनीति में भाग न देना येही नीति के तीन मुख्य गुर हैं। मादक द्रव्य के सेवन और चंचल चित्त होकर पराई स्त्री पर निश्चल डुलाने से तो देह ग्रेह नेह, और समस्त पुण्य पुंज स्वाहा हो जाते हैं। अन्त दान लेने से जैसे ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व नाश हो जाता है वैसे ही परस्त्री पर चित्त जाने से क्षत्री का क्षत्रियत्व नाश होजाता है। हे राजन् फिर आप कन्नौज को जाने की बात क्या पूछते हैं?। जम्बू नरेश हाहुलीराय*हम्मीरराव बोला आपके पूर्वज जराजीत और माणिक राव ऐसे प्रतापी पुरुष हो गए हैं जिन्होंने शाह से दण्ड लेकर छोड़ा आप भी उन्हीं का अनुकरण कीजिए और फिर भी शाह से दण्ड लीजिए। भिन्न भिन्न देशों के दुर्गम दुर्गों को जीत कर शत्रुओं को नीचा दिखाइए और उनके पुत्र पौत्रों को अपने की भाँति पालिए। देशकाल के अनुसार नीति का आचरण करना और स्त्रियों के बाँके कटाक्षों के वशीभूत न होना चाहिए। देख परख कर ऐसा भृत्य रखना उचित है जिससे नित नव बिभूति बढ़े और प्रजा का हित हो—सेवक को ऐसा चाहिए कि यदि वह स्वामी का चित्त जरा भी दुचिता देखे तो तुरन्त उसकी शान्ति का उपाय करे। ऐसा सेवक स्वामी के लिये सदा हितकर होता है जो अपना धर्म विचार कर

---

* मूल पाठ में नाम नहीं दिया है केवल "उच्चरयौ राव जम्बू नरेश" पाठ है। परन्तु आगे कन्नौज समय में स्पष्ट किया गया है कि जम्बू का राजा हाहुली हम्मीर था और कांगड़ा होशियारपुर के जिले की सारी भूमि उसी के अधिकार में थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कार्य्य करे परन्तु मुँह जोड़ कर उत्तर न दे। राजा की इच्छा या अन्य राज्य कार्य्य सम्बन्धी प्रबन्ध किसी पर भी प्रगट न होने दे। सब प्रकार के राजसी परिकर की पूरी जाँच परताल रक्खे और अपने मन का मर्म मन ही में रक्खे। राज्य सम्बन्धी सब लोगों के दान मान और सम्मान का उचित विचार रख कर सब को सदा प्रसन्न रक्खे और स्वामी (राजा) के साथ सदा भृंगी का कीट बना रहे। सो हे राजन् ऐसे सेवकों के साथ सावधानता पूर्व्वक राज्य कीजिए; जान बूझ कर जलती आग में हाथ डालने का साहस न कीजिए एवं उत्तम रत्न रूपी कर्तव्य कर्म को त्याग कर काँच के टुकड़े पर चित्त न चलाइए।

यह सुन सुना कर पृथ्वीराज बोला कि हे कवि मैं कैमास की लास तभी दूंगा जब कि तुम मुझे जैचन्द के दर्बार में ले चलने की प्रतिज्ञा करो। राजा के ऐसे वचन सुनकर कविचन्द बोला, भला यह क्योंकर हो सकता है? तब पृथ्वीराज बोला कि हम तुम्हारे साथ सेवक बनकर चलेंगे। यह सुनते ही कविचन्द बोला, तब तो ऐन बनेगी गंगा के किनारे मरने से लोक परलोक दोनो सुधरेंगे। कविचन्द के ऐसे बचन सुन कर पृथ्वीराज बोला हे कवि मरना जीनातो हुआ ही करता है मुझे तो अपनी बात की बान पड़ी है। विचारो तो सही दुनिया में हलके होकर जिए भी तो किस काम के। कैमास की लाश उसकी स्त्री को सौंपो सो वह सती हो और इधर कन्नौज को चलने की तैय्यारी करो। मुझे जैचन्द का दर्प चूर्ण करते हुए मरना सोहता है परन्तु यह उपहास मय जीना स्वीकार नहीं। यह कहकर पृथ्वीराज ने कैमास की लाश उसकी स्त्री को दिलाई और उसके पुत्र के सिर पर हाथ फेर कर उसे अपने पास बैठाला जोकि उस समय केवल पांच वर्ष का था।

दूसरे दिन दो घड़ी पांच पल दिन चढ़े नियम पूर्वक दर्बार लगा। सब सूर सामन्त मुसाहब मुतसद्दी आदि दरबारी लोग हाजिर हुए। राजा ने कैमास की मृत्यु की कथा स्वयं आद्योपान्त कह सुनाई और सब सामन्तों से क्षमा प्रार्थना की। पृथ्वीराज ने काका कन्ह से कहा कि अब मुझे आप तलवार बँधाइए। अस्तु कन्ह ने वैसाही किया। उसी समय सारे नगर में भी समाचार फैल गया। घर घर की हरतालें खुल गईं और पूर्व्ववत् आनन्द प्रमोद होने लगा। सब लोग जहां तहां अपने अपने धन्धे में लग कर समय बिताने लगे परंतु कैमास की सुधि किसी को क्षण भर न भूलती थी। पृथ्वीराज का तो यह हाल था कि उसे उठते बैठते सोते जागते चारों ओर कैमास ही कैमास नजर आता था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर्गाकेदार समय।

[अट्ठावनवाँ प्रस्ताव।]

—o—

अपने पाँव पर आप कुल्हाड़ी मार कर पृथ्वीराज बहुत पछताया। न तो उसे गोख के झरोखे में चैन पड़ता था और न अन्तर महल के अन्दर। उसे सोते जागते अहर्निशि कैमास की ही प्रतिमूर्ति आखों देख पड़ती थी। सामन्त मण्डली के साथ चौगान खेलते समय, राजसी रसरंग का आनन्द लेते समय, जल क्रीड़ा के समय अथवा अन्य प्रकार के राजसी आहार विहार के समय जब पृथ्वीराज को सामन्त शिरोमणि सच्चे सखा कैमास की सुधि आजाती तो उसके कलेजे पर लकीर हो जाती थी तिस पर भी विशेष बात यह थी कि थी अपनीही करतूत कहै तो किससे कहै "अपनी जाँघ उघार कर आपही लजमरना था" इस लिये हाय साँस लेकर मनही मन मसूस कर रह जाता था।

परन्तु राजा की इस अवस्था से उसके सामन्त लोग कदापि अनभिज्ञ न थे। अतः एक दिन कन्ह ने जैतराव प्रमार, प्रसंगराय खीची, चन्द्रसेन पुंडीर, गोयन्द राव गहलौत, लोहाना आजानबाह, रामराय बड़गुजर इन सब लोगों से कहा कि भाइ कुछ ऐसी तदवीर विचारनी चाहिए जिसमें राजा का मन बहले। निदान सब की यही सलाह पक्की हुई कि राजा को शिकार खिलाने के लिये ले चलना उचित होगा। तदनुसार कन्ह ने तो पृथ्वीराज को साधा और इधर शिकारी सामान दुरुस्त किए जाने लगे। नियमित तिथि को अपने सब बीर बाँकुरे सामन्तों और कतिपय सनाँह-सेना के साथ पृथ्वीराज शिकार खेलने चला। उसके साथ में कुछ हथनार, उटनार, और बानगीर अर्थात् अग्निबाण चलाने वाले भी थे। उसके साथ में नौ सौ बड़े तेज और शिक्षित घोड़े और ताजी घोंटा झब्बा बदाही, पहाड़ी और शेरदहां आदि अनेकानेक जाति के नौ सौ कुत्ते थे जिनमें से पाँच सौ कुत्ते तो ऐसे थे जिनके आगे से शेर भी नहीं जा सकता था और दौड़ में वे पवन से बाजी लगाने को तय्यार थे। उनके पैरों के तलुए, मुख और नाक के अग्रभाग इँगुर से लाल और बड़े मुलायम थे। वे सब बीस बीस या सोलह नख वाले थे और झब्बे कुत्ते गुच्छेदार पूँछ के लच्छे को उठाकर मचलते भालू से चलते हुए बड़े भले मालूम देते थे। उनके दाँत और नख बड़े ही तीक्ष्ण थे, बाजू, सीना और नितंब भारी थे, कपोल मुलायम, माथा चौड़ा और कमर पतली थी और उनकी आँखों से साक्षात् सिंह का सा तेज जाज्वल्यमान होता था। उनकी आँखों पर जरतारी पट्टे चढ़े थे और प्रत्येक कुत्ते को दो दो मजबूत जवान साधे हुए थे। इसी प्रकार सामन्तों के भी निज के दो दो चार चार कुत्ते थे। इसके सिवाय ढाई सौ चीते थे जो कि

---

(१) घुड़ सवारी का पोलो (Polo) का खेल चौगान का ही रूपान्तर है।

(२) सनाहसेना—अंग रक्षक सिपाही (Body guard

(३) एक तीन हाथ लम्बे बाँस के टुकड़े में पेंद की तरफ एक चमड़े का थैला तांत से कसा जाता है। इस थैले की लम्बाई एक फुट से लेकर डेढ़ फुट तक और गोलाकार मुंह की चोड़ाई दो से तीन इञ्च तक होती है। इसमें करीब एक सेर बारूद धाँस धाँस कर भरी जाती है और ऊपर से ताँबे, लोहे, सीसे और काँच के छोटे छोटे टुकड़े भर कर मुँह बन्द कर दिया जाता है और बाँस की नली के भीतर से एक बारूद का भींगा धागा आर पार लगा रहता है। बाँस के दूसरे सिरे पर एक झण्डी रहती है। बारूद के धागे में आग देने से थैली की बारूद अनार दाने की तरह शब्द करके लौ छोड़ने लगती है। जब जोर पर आता है तो चलाने वाला बाण को हाथ से छोड़ देता है उस समय यह हाथी को भी बेध डालता है और जहाँ तक उक्त थैला पट नहीं पड़ता तहांतक सीधा जाता है फिर आपही आप बड़े जोर से चक्कर खाने लगता है। थैले के छर्रे मील भर पर्य्यन्त बिथर कर सैकड़ों आदमियों को बेकाम कर देते हैं। आग यह किले और मैदान दोनों की लड़ाई के काम में आता था। इसी को कुहक बान भी कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहेल[१] पर चलते थे। घोड़ों की पीठ पर चलने वाले तीन सौ श्रीगोप, दो सौ फन्दैत हिरन और जुर्रा, बाज, कुही, खेदा, तरिया आदि अनेक प्रकार के शिकारी पशु पक्षियों को साथ में लिए हुए राजा पृथ्वीराज एक गहन और विषम बन में शिकार खेलने लगा।

शहाबुद्दीन के कलेजे पर पृथ्वीराज तो अहिर्निशि काँटा सा खटकता था। उसके चित पर निरन्तर यही चिन्ता सवार थी कि कब अवसर पाऊँ और पृथ्वीराज को धर दबाऊँ। इसी चिन्ता में उसका असन बसन सब भूला हुआ था। एक दिन उसने अपने एक चतुर चर को आज्ञा दी कि तू दिल्ली जाकर समाचार ला कि इस समय पृथ्वीराज का क्या हाल है। उसी के हाथों एक पत्र धर्म्मायन को भी भेजा कि वह वहां का सब बिबिवार हाल लिख भेजे। दूत ने दिल्ली जाकर वह पत्र धर्म्मायन को दे दिया और धर्म्मायन ने ततक्षण ही यहां का सारा हाल लिख कर उत्तर का पत्र उसी दूत के हवाले किया। दूत ने जब ग़जनी पहुँच कर वह पत्र शाह के सम्मुख पेश किया और पेशकार ने उसे पढ़कर सुनाया तो सारे अमीर उमरावों के चेहरे खिल पड़े और शाह के भी सूखे हुए होठों पर लाली झलक आई।

एक दिन रात्रि के समय केदार[२] कवि ने अपनी इष्ट देवी चण्डी का ध्यान धर कर सम्मुख दर्शन पाने की प्रार्थना की। आधी रात्रि के समय भगवती ने अन्तरिक्ष में प्रगट होकर पूछा तुझे क्या चाहिए? तब केदार बोला कि माता! मैं कविचन्द से विद्याबाद में विजय पाना चाहता हूं। इसपर भगवती ने उत्तर दिया कि कविचन्द और तुम दोनों मुझे एक से प्रिय हो; अंतर केवल इतना है कि वह तुम्हारा बड़ा भाई है और तू उससे छोटा है। इस लिये कविचन्द के सिवाय और तू जिसे चाहे परास्त कर सकता है। तब पुनः कवि ने विनीत भाव से कहा कि वास्तव में मेरी पृथ्वीराज के दर्शन करने की इच्छा है, यदि आप की आज्ञा हो तो बादशाह से सीख माँगूं। तब देवी ने कहा "एवमस्तु" शाह तुम्हे रुखसत देगा; तुम प्रसन्नता पूर्वक पृथ्वीराज से मिलो वह तुम से सब भाँति प्रसन्न रहेगा और सौ घोड़े तीस हाथी और बहुत सा धन रत्न विदाई में देगा। इस समय पृथ्वीराज पानीपत के जंगल में शिकार खेल रहा है।

दूसरे दिन प्रातःकाल ही केदार कवि सानन्द शैय्या से उठा और नित्यक्रिया से निश्चिन्त होकर दरबार को चला। शाह के सम्मुख पहुँच कर उसने सादर सलाम किया; और अपने आसन पर बैठ गया। शाह के दर्बार में बड़े बड़े डील डौल वाले रंग विरंगे तेजस्वी मीर मुसाहब यथास्थान डटे बैठे थे। अवकाश पाकर केदार कवि ने कहा "यदि सीख मिले और आज्ञा हो तो मैं दिल्ली जाना चाहता हूं यह सुनते ही राज्यमंत्री तत्तार खां अत्यन्त कुपित होकर बोला 'रे भाट तू हमारा नमक खाकर एक ऐसी जगह माँगने को जाना चाहता है जहाँ हम बार बार बंधन में पड़े। एक जानी दुश्मन से मिलना और माँगना तो दूर रहा जहाँ ज़रा भी हकतलफ़ी हो जाय उस तरफ़ आँख उठा कर भी देखना मुनासिब नहीं। मुमकिन है कि वह तुझे बहुत इनाम दे लेकिन इसमें उसकी तारीफ और हमारी तौहीन है। अगर अब भी इरादा मुस्तकिल हो तो जाओ। शहाबुद्दीन भी हँसकर बोला "शाबस कविचन्द को कि जिसने ख्वाब में भी इस तरफ़ आने का इरादा न किया बादशाह के बचन सुनते ही केदार कवि की तो साँप छछुन्दरी की सी गति हो गई चुपचाप शाह के मुख की ओर देखता रह गया। इसी तरह जब एक घड़ी भर बीत गया तब शहाबुद्दीन ने कहा मुझ से क्या पूछते हो जहाँ तुम्हारा जी चाहे जाओ।—

दोहा।

तिन तें तुस तें तूल सें, फेन फूल तें जानि।
हँसि जंपै गौरी बरुअ, मंगन है हरुआन॥

(१) सवारी के योग्य खुली हुई हलकी बैल गाड़ी।
(२) मूल पुस्तक में दुर्गा कदार पाठ है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शाह के ऐसे बचन सुन कर केदार कवि दर्बार से चल कर घर पहुँचा और उसने उसी समय दिल्ली को प्रस्थान करने की तय्यारी की। चलते समय केदार कवि के पिता ने कहा "बेटा यह बात स्मरण रखना कि जिसके पास जाता है वह दाता तो बड़ा है परन्तु अपने स्वामी का शत्रु भी है जैसा कि शाह स्वयं कह चुका है। निदान उच्च अभिलाषाओं से परिपूर्ण अत्यन्त मग्न मन होता हुआ केदार कवि प्रख्यात उदार सोमेससुत राजा पृथ्वीराज का दर्बार देखने को चला। पड़ाव दर पड़ाव चलता हुआ केदार कवि ढाई महीने में पानीपत आन पहुँचा।

यहाँ पृथ्वीराज एक अति उतंग पर्व्वतों से परिवेष्टित, सुन्दर तरुलताओं से आच्छादित झरनों के झिलमिले जल से परिपूर्ण एक घने जंगल में आखेट करता था। वहां उस दिन के शिकार में एक सौ अकेला * वराह, छै सौ साधारण सूअर, दो सौ मृग और और भी नाना प्रकार के अगनित पशु पक्षी मारे गए थे, अतः एक सुन्दर वृक्ष की छाया में बैठा हुआ पृथ्वीराज अपने सेवकों और सखाओं के जवन्य कौशल के प्रतिफल का निरीक्षण परीक्षण कर रहा था। दैवयोग से एक घनी झाड़ी में से अकस्मात् एक सिंह निकल पड़ा। उस समय ऐसा मालूम हुआ मानो आकाश या पृथ्वी को फाड़ कर नृसिंह स्वरूप का आविर्भाव हुआ हो। उसके बड़े बड़े गाल और नोंकदार दाँतों के बीच लपलपाती हुई लाल लाल जीभ चंचला सी चमचमाती थी, उस के दोनों नेत्र वृहस्पति और शुक्र के से तारे दमदमा रहे थे वह विकराल सिंह एक बारगी राजकुमार पर झपटा; यह देख कर कुमार के पास में खड़े हुए खवास ने सिंह के शीस पर सिंगी का वार किया परन्तु वार खाली गया और सिंह ने उसे धर लिया लेकिन उसी क्षण में रेणु कुमार ने तलवार का एक ऐसा हाथ मारा कि सिंह बीच से कटकर दो हो गया। पृथ्वी पर पड़े हुए मृत सिंह के खंड ऐसे मालूम होते थे मानों कृष्ण भगवान ने कंस की मल्लशाला में दो मल्लों को पछाड़ा हो, अथवा रामचन्द्र ने रावण के शीस छाँट कर डाल दिए हों। इस भयानक घटना के संघटित होने पर नरनाह काका कन्ह, जामराय यादव और चन्द पुंडीर ने पृथ्वीराज से कहा कि हम लोग बहुत थोड़े जने हैं और यह पहाड़ी स्थान महा भयानक है इस लिये यहां से चल कर पानीपत के मैदान में डेरे डाले जावें और वहीं मैदानी शिकार खेला जावे। यह बात राजा ने भी स्वीकार करली और वहाँ से उसी समय कूच होकर पानीपत के मैदान में डेरे आन पड़े।

पानीपत के मैदान में पड़ाव पड़ जाने पर पृथ्वीराज ने गोठ की सामग्री रची जाने की आज्ञा दी, तदनुसार नाना प्रकार के पकवान और भोज्य भक्ष चर्वण आदि अनेक व्यजन बनाए गए। राजा पृथ्वीराज अपने सखा सामन्तों सहित एक बट की छाया में बैठा हुआ था, जहाँ तहाँ थाले सजाए जा रहे थे कि तब तक उक्त कवि केदार भी वहीं आ उपस्थित हुआ उस दिन दिन के समय भी कवि के साथ में सात प्रज्ज्वलित दिये एक हाथ में नसैनी और एक हाथ में अंकुश थी। उसके शीस पर सोने का छत्र भी था जिस पर एक सर्प का चिन्ह खचित था। भांड़ भाट बहुरूपिए इन लोगों की रहन सहन और पोशिश का क्या ठिकाना ये लोग हवा के माफिक आडंबर प्रिय हुआ करते हैं

परन्तु इससे क्या एक सच्चे कवि की पहिचान तो यह है कि जिस समुद्र रूपी अगाध बाणी

---

* मूल पाठ "एकल" जो सूअर बचपन से ही अपने झुण्ड से अलग रहने लगता है उसे एकला या अकेला कहते हैं। ऐसे ही कोई कोई भारी सुअर जो पूछ से कान पर्य्यन्त बारह बिलस्त लम्बा होता है उसे वराह या बाराह कहते हैं।

(१) आजकल इसे मारू भी कहते हैं यह हिरण के सींगों की दोनों कांअनी बाहरी और मूल इकट्ठे जोड़ कर बनाया जाता है। पकड़ की जगह एक छोटी सी पीतल की ढाल भी लगा दी जाती है। मारू आड़ और मार दोनों काम देता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में नित नव उक्तियों की तरंगे उठा करती हों उक्ति रूपी जल सदा तलातल ठिला रहता हो और तली में तर्क वितर्क रूपी नर रहते हों। ऐसे रत्नों की परख केवल वेही सच्चे जौहरी कर सकते हैं जो काव्य रूपी कला विकला शुभाशुभ अक्षर और चौरासी प्रकार के रूपकों का ज्ञान रखते हों। अर्थात् वे पुरुष जो काव्य रचना में स्वयं प्रवीण हों। गण अगण लघु दीर्घ उक्ति युक्ति सब भाँति के शुभाशुभ का विचार कर सरल और सरस वाणी का उच्चारण करने वाला पुरुष ही कवि की उपाधि पाने योग्य है।

केदार कवि ने पृथ्वीराज के संमुख आकर आशीर्वाद दिया। उसने कहा "हे इन्द्रप्रस्थ पति आजानबाहु चालुक्य रूपी तूल के लिए प्रज्ज्वलित ज्वाला, परिहारों को परास्त करने और जैचन्द के प्रबल प्रताप रूपी चन्द को मन्द दुति करने वाले, बेद कथित राजसी आचार विचारों में चतुर और समस्त धर्म्मों में धुरंधर। हे शत्रुओं के शाल और शाह को सदा बेहाल रखने वाले चाहुआन कुल शिरोमणि अद्वितीय तेजस्वी राजा पृथ्वीराज तेरी जै हो! राजा विक्रमादित्य के पश्चात् तू ही एक शकेवाला हुआ है, मैं तेरे दान, मान और सम्मान का बखान सुन कर तेरे दर्शनों को आया हूं। हे पृथ्वीतल के उग्रवीरों को राहु के समान ग्रास करने वाले वीराधि वीर शूर सामन्तों के शिरोमणि सुलतान शहाबुद्दीन को बार बार बाँध कर छोड़ देने वाले, हिन्दुआन की हद्द रखने वाले, छत्रपति महाराज पृथ्वीराज तेरी सदा जै हो॥

केदार कवि की ऐसी वाणी सुनकर सब लोग प्रसन्न हो गए। पृथ्वीराज का मक्खन सा मुलायम चित्त तो पिघल कर घी हो गया, राजा की आज्ञानुसार प्रतिहारी यानी नकीब ने कवि को उचित आसन दिया। भोजन प्रसाद होते रहे, दोनों कवि परस्पर सरस वाणी उच्चारण करते रहे और सब सभासद प्रसन्न चित्त से सुनते रहे। दूसरे दिन फिर से दर्बार जमा। केदार कवि भी आ उपस्थित हुआ उसने आते ही पृथ्वीराज से कहा कि मैं श्री दर्बार के कवि कविचन्द से विद्यावाद करना चाहता हूं। तब तक कविचन्द भी आ पहुँचा और राजा को आशीर्वाद देकर यथास्थान स्थानापन्न हुआ। पृथ्वीराज ने कहा इस समय तुम दोनों बरदाई कवि उपस्थित हो, मेरी इच्छा है कि तुम लोग अपने अपने इष्ट का स्मरण कर परस्पर विद्यावाद की और अपने अपने काव्य चातुर्य्य की चासनी चखाओ। निदान कविचन्द बोला हे राजन् जिसे लोग इन्दु चन्द या विधु कहते हैं वह मेरे जान तो मनसिज स्वरूपी बाज का नाल या नागफनी नावक के तीर की गांसी है। कभी कभी शृंगार समर की तलवार या दिशारूपी सुन्दरी के नख की उपमा भी जँचती है कभी मालूम होता है कि मनमथ के चक्र का टुकड़ा, नवोढ़ा वधू के अधर का बिम्ब, विरह रूपी सिंघ का नख अथवा कामिनी के बांके कटाक्ष का काँटा है। इस पर केदार कबि ने कहा पुराने पत्र झरते हैं नई कोपें अकुराती हैं डहडही डाली लह लहाती है केकी कीर कोयल कलापते हैं जहाँ तहाँ भ्रमर भी अलापते हैं और त्रिविध बयार बहती है इस प्रकार से कभी कभी बिना बसन्त ऋतु के भी बसन्ती आनन्द आस्वादन करने में आता है। इसके उत्तर में कविचन्द ने एक छन्द पढ़ा जिसका आशय यों है "सत्य है जब ऐन वयःसन्धि अवस्था प्राप्त होती है तो सैसव रूपी सिकंदार का अधिकार स्वयं घटने लगता है। उसकी शिशिर स्वरूपी शासन प्रणाली में एक दम लौट फेर हो जाता है और यौवन काल रूपी राज्य में सर्वत्र (अंग प्रत्यंग में) महाराज मकरकेतु की दुहाई फिर जाती है। कमल कली से कुचों पर भ्रमर सी श्याम आभा उभड़ आती है और दीप शिखा सी छवि पर रसिक जन पतिंगे से प्राण पवारने लगते हैं (दोनों कवियों की मूल कविता का जो मर्म है वह मूल छन्दो से मालूम हो सकता है) कुकवि लोगों की कविता टूटे हुए हार के मोतियों की भाँति है जिस का न ओर है न छोर परन्तु सुकवियों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काव्य सुघड़ता से पोहे हुए सुढार मोतियों के हार की भाँति है उसे जिस ओर से देखिए सुन्दर मालूम होता है।

इस प्रकार से किंचित काव्य चातुर्य्य की परीक्षा हो चुकने पर दोनों कवि अपनी अपनी तांत्रिक कलाएँ प्रगट करने को उद्यत हुए। केदार कवि ने कविचन्द से कहा सावधान हो कर मेरी कला देखिए। यों कह कर उसने एक सौ छिद्र वाला मिट्टी का घड़ा दरबार के बीच में रख दिया और ज्यों ही मंत्र पढ़ उसके मुँह पर वस्त्र डाला कि उस के प्रत्येक छिद्र में से जाज्वल्यमान ज्वालाएँ प्रज्ज्वलित होने लगीं और प्रत्येक ज्वाला में से अनेक प्रकार के छन्द प्रबन्धों की ध्वनि प्रगट होने लगी। घड़े के मुँह से तो छओ भाषाओं में छओ शास्त्रों और वेद की ऋचाओं का उच्चारण स्पष्ट होने लगा। परन्तु ज्योंही कविचन्द ने मंत्र पढ़ा कि उस घड़े मे से एक हुंकार शब्द उत्पन्न हुआ और अग्नि शिखा के स्थान में जलधारा द्रवी भूत होने लगी। केदार कवि ने कहा 'हे चन्द मैं एक मास के बालक को मुँह बुला सकता हूं, इस पर कविचन्द ने उत्तर दिया कि मैं हाल के जन्मे बच्चे से छओं भाषाओं का उच्चारण करा सकता हूं। यह सुनेत ही केदार कवि ने सम्मुख खड़े हुए राजा के घोड़े पर अक्षत पढ़ कर मारे जिस से उसने शिर झुका कर राजा को आशीर्बाद दिया परन्तु जब चन्द कवि ने उसी घोड़े के सिर पर एक पुष्प रख दिया तो उसने एक आशीर्बादात्मक गाथा पढ़ी जिसका अर्थ यह है—जो महाभारत में पारथ के सारथी हुए जिन्होंने गर्भ में परीक्षित की रक्षा की और जिन्होंने प्रल्हाद भक्त को भी बचाया वेही भगवान कृष्णचन्द्र, हे पृथ्वीराज, आप की रक्षा करें *। इस पर केदार कवि ने एक ऐसा मंत्र पढ़ा जिससे एक बड़ी भारी चट्टान जंगम की नाईं द्रुत वेग से चलने लगी। तब कविचन्द ने मंत्र द्वारा अपनी अंगूठी मारकर चट्टान की गति बन्द कर दी, कविचन्द ने अपनी अंगूठी वहां से वापिस भी लेनी चाही परन्तु यह नहीं हो सका केदार कवि ने कविचन्द के मंत्र बल को काट दिया। तब कविचन्द ने एक मंत्र पढ़ कर जो फूंक मारी कि सारी चट्टान पानी होकर बह गई और उसकी अंगूठी हाथ में वापिस आगई। कविचन्द की इस कला पर केदार कवि ने एक विलक्ष[illegible] की। वह यह कि उसने एक लड़के [illegible] सर जुदा कर दिया। सो मुण्ड तो नाना प्रकार के छन्द प्रबन्ध पढ़ने लगा और धड़ इधर उधर कल्लोल करता हुआ फिरने लगा। यह अद्वितीय अभिनय देख कर समस्त दर्शक मंडली भौचक सी रह गई और कविचन्द स्वयं सहम गया। उसी समय अंतरिक्ष में एक वाणी सुनाई दी कि हे कविचन्द तू मुझे विशेष प्रिय है तेरी जिव्हा से जो कुछ उच्चारण होता है उसे साक्षात् मेरी ही वाणी समझना चाहिए। मैं और कवियों के कंठ में तो कला विकलाओं से बास करती हूं पर तेरे में सम्पूर्ण कलाओं से रहती हूं, तू सदैव विजयी है। यह सुनते ही कविचन्द का चेहरा तो चमक उठा, परन्तु केदार कवि कुछ मन मलीन हुआ। तब समस्त दर्बारियों सहित पृथ्वीराज ने कहा "केदार कवि हम तुम्हारे काव्य चातुर्य्य और तांत्रिक प्रयोग दोनों से खूब प्रसन्न हुए आपकी समस्त विद्याएं सराहनीय हैं और आप एक सुकीर्तिवान कवि हो।

कविचन्द ने सरस्वती का ध्यान धर कर स्तुति की कि हे भगवती इस संसार की उत्पादिनी और लयकारिणी तू ही है। मुक्ति की आशा से यद्यपि अनान्य सब देवी देवताओं की सेवा पूजा की जाती है परन्तु सब देवों का सार स्वरूप एक तेरी ही ज्योति है। संसार सुख की सामग्री के द्रव्य पदार्थों की देने वाली अष्टसिद्ध नवनिद्धि तेरी ही कलाएं हैं. संसार के समस्त प्रपंच माया मोहादिक तू ही है और तत्वों की भेद सूचक सीमा भी तू ही है।

* गाथा। जिन सारथ साज पथौ. जिन रष्षौ गभ्भ उत्तरया। जिन रष्षा प्रहलादो सो करौ रष्षा राज प्रथिराजं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना ।

नेम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं।

	मूल्य	डांकव्यय
मुहम्मद की अखरावट	।=)	)॥
कबिहारीलाल-(बाबू राधाकृष्णदास रचित)	=)	)॥
...ग के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित)	।)	)॥
...ण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	)॥
सचनादर्श-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित) ...	।=)	)॥
कर्तव्यशास्त्र-(पण्डित नारायण पांडे रचित) ...	॥)	-)
...िका चिकित्सा	।)	)॥
...द्र-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	)॥
...गीता-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित) ...	।-)	)॥
...-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	≡)	)॥
...प्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) ११ भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य-प्रति भाग	१)	-)
... लेकचर-(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	-)	)॥
...स की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	॥≡)	-)
...मिश्र की चन्द्रावती	।-)	)॥
...कवि का सुजानचरित्र	२)	=)
...कवि का छत्रप्रकाश	१।)	-)
...ास की रासपञ्चाध्यायी	।=)	)॥
...न-लेख-मणि-माला-१ भाग (बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित) ...	१)	-)
...क का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	।)	)॥
...ल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित)	।-)	)॥
...राजरासो-पहिला भाग (समय १-११)	४)	।)
" दूसरा-तीसरा भाग (समय १२-५४)	१०)	॥)
...रसम्भार (पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित) ...	≡)	)॥
...धर क...नामा	।॥)	-)
धम्मपद ...कुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	-)
सभा के ...तकालय की सूची	=)	)॥
मनो...(पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित)	॥)	-)
चन्द्रशेख...का हम्मीर हठ	॥)	)॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)	१)	-)
दादूदयाल की बानी	१॥।)	=)
कवि नूरमुहम्मद की इन्द्रावती १ भाग.	१॥)	=)
यूरोपीय दर्शन (पण्डित रामावतार पांडेय लिखित)	॥।)	-)
प्रबोधचन्द्रिका	॥।)	-)
विरहलीला—आनन्दघन कृत	=)	)॥
दादूदयाल का सबद	१।)	[illegible]
जोधराज का हम्मीररासो	२)	[illegible]
सरल व्यायाम (बाबू कालिदास लिखित)	।=)	-)
सुघड़ दर्जिन (बाबू ठाकुर प्रसाद लिखित)	॥।)	-)
पद्माकर कृत हिमतबहादुर विरदावली	॥=)	)॥
वनिताविनोद	१)	=)
नवीन दृष्टि में प्रवीन भारत	१)	-)
गीतावली	।)	)॥
योगदर्शन	२)	-)
गुरु गीता	।)	)॥
रामचरितमानस	८)	॥।)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की ७ पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें अ[illegible] मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं । अन्तिम पुस्तक[illegible] मूल्य सभासदों के लिये ६॥) रु० है ।

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Nagari-Pracharini Granthmala Series No. 4-15

THE PRITHVÍRÁJ RÂSO

OF

CHAND BARDÂI,

EDITED

BY

Mohanlal Vishnulal Pandia, & Syam Sundar Das, B. A.
With the assistance of Kunwar Kanhaiya Ju.

CANTO LXI. *(Contd.)*

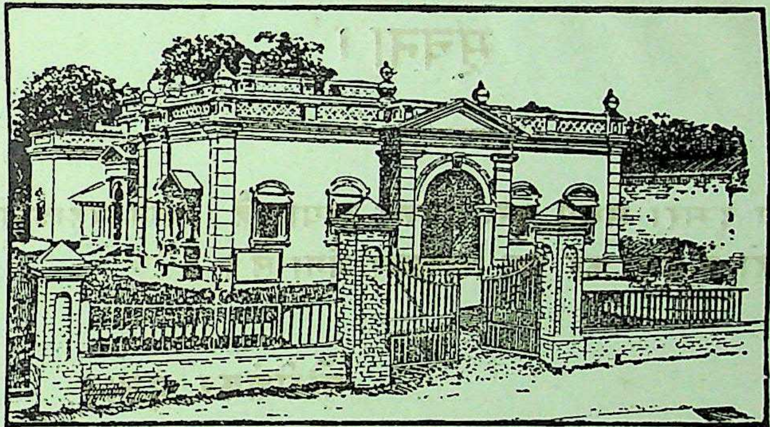

महाकविचंद बरदाइ

कृत

पृथ्वीराजरासो

जिसको

मोहनलाल विष्णुलाल पंड्या और श्यामसुन्दरदास बी. ए. ने

कुँअर कन्हैया जू की सहायता से

सम्पादित किया ।

पर्व्व ६१ ।

७६
१४२

D BY THAKUR DAS, MANAGER, AT THE TARA PRINTING
S, AND PUBLISHED BY THE NAGARI-PRACHARINI SABHA,
BENARES.

1908.

मूल्य १।)] Issued 26th December 1908. [Price Re. 1/4/.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचीपत्र।

(... १८०० तक
... " २६२ "

* ओ३म् *
पुस्तक की संख्या ७२२/९४३
पुस्तकालय-पञ्जिका-संख्या २६३५८
पुस्तक पर सर्व प्रकार की निशानियां लगाना वर्जित है। कोई महाशय १५ दिन से अधिक देर तक पुस्तक अपने पास नहीं रख सकता। अधिक देर तक रखने के लिये पुनः आज्ञा प्राप्त करनी चाहिये।

सूचना।

———:o:———

रासो का दूसरा समय पुनः छपकर तय्यार है। जिन महाशयों के पास वह न गया हो वे कृपा कर पत्र लिखकर मँगा लें।

गौरीशंकर प्रसाद,
स्थानापन्न मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा,
काशी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोनों सेनाओं का घमासान युद्ध होना और मुसल्मानी सेना का परास्त होना ।

हहक्किय चंपिय सूर सुधीर । महा भर सामँत विभ्रम बीर ॥
महा बर चंपिय चौकिय काल । ठिलै भर भग्गिय मिच्छ विहाल ॥
छं० ॥ ६३५ ॥

कहंकह सद्द सु मच्चि करार । सुन्यौ सुरतान भजे दल भार ॥
बजे मुष मारि चँपे चहुआन । लरे मझि अप्पह मेछ अपान ॥
छं० ॥ ६३६ ॥

हवक्कहि धक्कहि सेलहि संग ।पटा झर झार विडारिय अंग ॥
बहै किरमाल सुचाल सुभेद । मनों सुभ सार करव्वत छेदि ॥
छं० ॥ ६३७ ॥

परे सिर नंचत उट्ठक मंध । करे रिनषंड सु धार विसंद ॥
षलक्कत श्रोन नदी जिम षाल । परे गज बाल भरे रन ताल ॥
छं० ॥ ६३८ ॥

करष्षत केस सु एकहि एक । परे रन रिंघहि तुट्टि सुतेक ॥
तरफफत उट्ठन लग्गत कंठ । सुछुट्टिय घाव करै दिठ मुंठि ॥
छं० ॥ ६३९ ॥

लरक्कर लग्गहि कंठ करीति । मनों मतवार लरै रस मीत ॥
किनक्कहि बाजिय बीर सुभार । [1]फिरें गज भीर करंत चिकार ॥
छं० ॥ ६४० ॥

लष्यौ पतिसाह सु चंद पुँडीर । हयौ हिय सेल भगी भर भीर ॥
भग्यौ रन सेन सहाब सचस्सि । निकस्सिय सक्कि दिसा [2]अवदस्सि ॥
छं० ॥ ६४१ ।

रह्यौ पतिसाह इकल्लो बीर । भयो जिम मीन गयै सर तीर ॥
धरी गर सिंगनि चंद पुंडीर । सयो पतिसाह सु बंधिय बीर ॥
छं० ॥ ६४२ ॥

(१) ए. कृ. को.-परैं । (२) ए. कृ. को.-अवदिस ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद पुंडीर का शाह को पकड़ लेना।

दूहा॥ भाग्यौ सेन साहाब गिरि। इक्कल्लौ गहि सार॥
गह्यौ चंद पुंडीर परि। हय कंधहि दिय डारि॥ छं०॥ ६४३॥
भगे सेन साहाब रन। उग्गि स्वर सुविहान॥
अठ सहस धर मीर परि। पंच कोस रन थान॥ छं०॥ ६४४॥

पृथ्वीराज का खेत झरवाना और लौट कर दर पुर में मुकाम करना।

सोधि सु रन प्रथिराज पहु। [1]दरपुर कीन मुकाम॥
लुट्टि रिद्धि चिय गोस धन। जुरि जस लद्धौ ठाम॥ छं०॥ ६४५॥

पृथ्वीराज का शाह से आठ हजार घोड़े नजर लेना।

दंड कियौ सुरतान सिर। अट्ठ सहस हय सब्ब॥
घत्ति सुषासन पट्ट घर। गज्जिय पिथ्थ सु गब्ब॥ छं०॥ ६४६॥

कविचंद का कहना कि पृथ्वीराज ने इस प्रकार शाह को परास्त कर आप का राज्य बचाया।

इम गज्जनवै गंजि पिथ। जस लिन्नौ बल मारि॥
सरबर सक संभरि धनी। कोइ न मंडौ रारि॥ छं०॥ ६४७॥

जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज के पास कितना औसाफ है।

कितक स्वर संभरि धनी। कितक देस [2]दल बंधि॥
कितक हथ्थ रन अग्गरौ। हसि न्रप बूझयौ चंद॥ छं०॥ ६४८॥

कवि का उत्तर देना कि उनकी क्या बात पूछते हैं पृथ्वीराज के औसाफ कम परंतु कार्य्य बड़े हैं।

(१) दरपुर (या) हरपुर। (२) ए. कृ. को.-बल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ कितक सूर संभरि नरेस। अंदेस कहत करि ॥
कितक देस बल बंधि। [1]राव रावत्त छत्रधर ॥
कितक को स मेंगल मदंध। तोषार भार भर ॥
कितइक गहि करिवार। कलह विहारि बीर भर ॥
कित इक्क मौज विद्रन वहत। अति पर आगम जानियै ॥
उग्गौ न अरक तित्तह लगै। तिमिर तितें बल मानियै ॥
छं० ॥ ६४९ ॥

पृथ्वीराज का पराक्रम वर्णन।

दूहा ॥ सूर जिसौ गयनह उवै। दल बल मारन आस ॥
जब लग अरि कर उट्ठवै। तब लग देय पचास ॥ छं० ॥ ६५० ॥

कवित्त ॥ सूर तेज चहुआन। हनत गज कुंभ झार षग ॥
विय विहंड होइ षंड। परत धर रत्त धार जग ॥
दल बल धरै न आस। तेज आजानबाह बर ॥
सपत नाग सर पार। तार [2]कोवंड तजै कर ॥
मत्त दुरद रद सद्द वर। पारि भारि मथ्थै धरनि ॥
विसगो विकार उष्पारि पटु। मालकार नंषे करनि ॥छं०॥६५१॥

जैचन्द का पृथ्वीराज की उनिहार पूछना।

दूहा ॥ विहसत कवि बुल्ल्यौ बयन। इह लच्छन छिति है न्र॥
सूत्र सु मूरति लच्छिनह। को दिषवों पहु नेंन ॥ छं० ॥ ६५२ ॥
मुकट बंध सब भूप हैं। सब लच्छिन संजुत्त ॥
कौन बरन उनहार किहि। कहि चहुआन सु उत्त ॥छं०॥६५३॥

कवि चन्द का पृथ्वीराज की आयु बल बुद्धि और शकल सूरत का वर्णन करके सच्चे पृथ्वीराज को उनिहारना।

कवित्त ॥ बत्तीसह लच्छिनह। बरस छत्तीस मास छह ॥
इस दुज्जन संग्रहत। राह जिस चंद सूर ग्रह ॥

(१) ए. कृ. को. राह। (२) ए. कृ. को.-कोदंड।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक छुटहि महिदान। एक छुट्टहिति दंड भर॥
एक गहहि गिर कंद। एक अनुसरहि चरन परि॥
चहुआन चतुर चावद्दिसहि। हिंदवान सब हथ्थ जिहि॥
इम जंपै चंद वरद्दिया। प्रथीराज उनहारि इहि॥ छं०॥ ६५४॥

इसौ राज प्रथिराज। जिसौ गोकुल महि कन्हह॥
इसौ राज प्रथिराज। जिसौ पथ्थर अहि वन्नह॥
इसौ राज प्रथिराज। जिसौ अहँकारिय रावन॥
इसौ राज प्रथिराज। राम रावन संतावन॥
बरस तीस छह अग्गरौ। लच्छिन सब संजुत्त गनि॥
इम जंपै चंद बरद्दिया। प्रथीराज उनहारि (१)इनि॥ छं०॥ ६५५॥

जैचन्द का कुपित होकर कहना कि कवि वृथा बक बक करके क्यों अपनी मृत्यु बुलाता है।

दिष्षि नयन कमधज्ज। नरेस अंदेस वड्ढ वर॥
दंग दहन जीरन जरंत। परचंत अंत पर॥
स्रुत्ति अरुन मुष अरुन। नेन आरत्त पत्त सम॥
पानि मींडि दवि अधर। दंत दब्बंत तेज तम॥
कविचंद बहुत बुल्लहु बयन। छित्ति अछिति षची कवन॥
चल दल समान रसना चपल। विफल बाद मंडौ मवन॥ छं०॥ ६५६॥

पृथ्वीराज और जैचंद का दूर से मिलना और दोनों का एक दूसरे को घूरना।

दूहा॥ देषि थवाइत थिर नयन। करि कनवज्ज नरिंद॥
नयन नयन अंकुरि परिय इक यह दोइ मयंद॥ छं०॥ ६५७॥

कवित्त॥ दिष्षि नयन रा पंग। दंग चहुआन महा भर॥
अंकुरि नयन विसाल। झाल झारंत रंच उर॥

(१) ए. कृ. को.-इहि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इक्क थार कंठीर। [1]पल न आकज्ज करत तमि ॥
बर बारुनी समग्ग। मत्त मातंग रोस [2]जमि ॥
कमधज्जराज फिरि चंद कहु। कहत बत्त संभरधनिय ॥
बर बर कवित्त कवि उच्चरिय। अब सुकित्ति कथ्थी घनिय ॥
छं० ॥ ६५८ ॥

जैचन्द का चकित चित्त होकर चिन्ताग्रस्त होना और कविचंद से कहना कि पृथ्वीराज मुझ से मिलते क्यों नहीं।

अति गँभीर पहु पंग। मन सु दब्बै द्रिग [3]लज्जइ ॥
कवन काज छग्गरह। पानि ग्राही भट कज्जइ ॥
कित्त काज करि बेंन। बानि बंदन बरदाइय ॥
श्रवन राग हम तुमै। दिष्ट गोचर तत लाइय ॥
संभरै जंम देषै सुभट। अंत निमत पुज्जै भिलत ॥
सोमेस पुत्त तुम हित्त करि। क्यौं मुझ्झहि नाही [4]मिलत ॥
छं० ॥ ६५९ ॥

कवि का कहना कि बात पर बात बढ़ती है।

दूहा ॥ मत मंतौ लहु मंत कहि। नीतें नीति बढंत ॥
जिम जिम सैसव सो दुरै। तिम तिम मदन चढ़ंत ॥ छं० ॥ ६६० ॥

कवि का कहना कि जब अनंगपाल पृथ्वीराज को दिल्ली दान करने लगे तब आपने क्यों दावा न किया।

कवित ॥ चहुआना कुल रीति। ध्रम्म जानन सोमी वर ॥
बर सोमेसर सीस। तिलक कढ्ढ्च अनंग करि ॥
अप्प जानि दोहित्त। राज ढिल्ली दे हथ्था ॥
प्रजा [5]लोक परधान। राय सह तूंअर कथ्था ॥

(१) मो.-पलन। (२) ए. कृ. को.-जिमि। (३) ए. कृ. को.-कज्जह, लज्जह।
(४) ए. कृ. को.- भिलत। (५) ए. कृ. को.-लोइ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिन्नेंति बीर तिथ्थह गयौ। रहसि फेरि विष षत्त दिय ॥
जे मुरिय नृपति कविचंद [1]कहि। तब जोगिनि पुर छल न लिय ॥
छं० ॥ ६६१ ॥

जैचन्द का कहना कि अनंगपाल जब शाह की सहायता ले कर आए थे तब शाही सेना को मैं नें ही रोका था।

अनंग पाल चक्कवै। साहि। गोरी पुक्कारै ॥
हय गय दल चतुरंग। मीर मीरह सब्बारै ॥
में बल रुकि साहिब्ब। सेन ख्ग्गा षुरसानी ॥
बर अगस्ति कमधज्ज। समुद सोपै तुरकानी ॥
मी सरन रहन हिंदू तुरक। जग्गि जानि तिहि मंडयौ ॥
विग्गारि जग्ग चहुआन गय। हिंदु जानि मैं छंडयौ ॥छं०॥६६२॥

कवि का कहना कि यदि आपने ऐसा किया तो राजनीति के विरुद्ध किया।

कोन लोइ जग्गंते। बसत अप्पनी गमावै ॥
कोन जोर रस जोइ। दई जन कोन छलावै ॥
को तात बैर दुज्जनै। दया मानव को मुक्कै ॥
को विषहर बर डसै। दाव को घावह चुक्कै ॥
पहपंग जानि चहुआन अरि। बसि परि सकै न मुक्कियै ॥
पुज्जै न सुबल कर चढ़त नहिं। घात अप्प अप चुक्कियै ॥
छं० ॥ ६६३ ॥

जैचन्द का पूछना कि इस समय सर्वाङ्ग राजनीति का आचरण करने वाला कौन राजा है।

दूहा ॥ हँसि पुच्छी पहुपंगने । तुम जानौ बहु मित्त ॥
को राजन तकि काल रत। को रत कोन विरत ॥ छं० ॥ ६६४ ॥

(१) मो-सुनि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि का कहना कि ऐसा नीति निपुण राजा पृथ्वीराज है जिसने अपनी ही रीति नीति से अपना बल प्रताप ऐश्वर्य्य आदि सब बढ़ाया।

पद्धरी ॥ संभरिय पंग आयस प्रमान। बोलै सु छंद पाधरी मान ॥
संभरि सु बीर सुनि तत्त राज। नोतें सु बंध सब चलन साज ॥
छं० ॥ ६६५ ॥
नीतिय सु लहिय लद्धौ सु राज। धन ध्रम्म कित्ति तिहिं तेज साज॥
जीवन सु नीति न्रप जमिन पीन। वड़ मरन बीर कुल ध्रंमहीन॥
छं० ॥ ६६६ ॥

पुनः कवि का कहना कि आपका कलियुग में यज्ञ करना नीति संगत कार्य्य नहीं है।

उच्चरै चंद बरदाइ तब्ब। राज ह्व जग्य को करै अब्ब ॥
बलिराय प्रथम जुग जग्गि मंडि। वर बीर बंधि पाताल छंडि ॥
छं० ॥ ६६७ ॥
कट्टन कलंक ससि मंडि जग्ग। गज्जरे कुष्ट वर बीर अंग ॥
रघुराइ जग्य मंडे प्रमान। काकुष्ट धरिग तन कोपि ध्यान ॥
छं० ॥ ६६८ ॥
इच्छियै इच्छ गुर मंडि बीर। नव सीय दोष जज्जर सरीर ॥
श्री राम जग्य मंड्यौ विचारि। कुब्बेर बरषि सोब्रन्न धार ॥
छं० ॥ ६६९ ॥
मह दान कलहि षोडस्स होइ। राजस्सु जग्य मंडै न कोइ ॥
सुन्नै सरूप पँगु लभ्भ कीय। देवरह ध्रम्म बड़ बंध चीय ॥
छं० ॥ ६७० ॥
राजस्सु जग्य को करन भाय। नन होय पंच कलिजुग्ग राइ ॥
*सतजुग्ग जग्य सुत कवल कीन। हाटक सुमेर दच्छिना दीन ॥
छं० ॥ ६७१ ॥

*यहां से मो.-प्रति में पाठ नहीं है आवातर कथा की कल्पना होने से कुछ भाग के क्षेपक होने का भी संदेह है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संकलित नग्ग तिहि संग च्यार। लूटंत विप्र हरि हथ्थ हारि ॥
ता पच्छ जग्य रचि मरुत रज्ज। दानह सु दीन बेपार दुज्ज ॥
छं० ॥ ६७२ ॥

नंषिय सु मग्ग लगि हेम भार। परि साठि सहस पंकति पहार ॥
गो दान दीन फुनि तिहि अलेह। तारक्क गंग रज बुंद मेह ॥
छं० ॥ ६७३ ॥

आरंभ जग्य फुनि राज ऐल। तसु दान वेद कहि सकि न सैल ॥
नवषंड पूरि बेदी रवंन। डाभाग्र रहि न षाली अवंनि ॥
छं० ॥ ६७४ ॥

करि जग्य सेत कीरत्ति भूप। दस सहस नदी चल्लाय नूप ॥
सक्कि सक्किय न झेल्ल आहुत्ति बन्हि। तजि कुंड गइय ब्रह्मा सरन्नि॥
छं० ॥ ६७५ ॥

पथ्थहि चराइ षंडीव जब्ब। मिट्टिय अजीर्न घन दिनौ तब्ब ॥
बलिराइ जग्य रच्चिय जिवार। उतपन्न ध्रंम वामनति वार ॥
छं० ॥ ६७६ ॥

थपि जग्य जुधिष्टिर राज पंड। पनवार अप्प श्री कृष्ण मंडि ॥
गुदरिय तब्ब इह चंद भट्ट। जैचंद राइ सों विविध थट्ट ॥
छं० ॥ ६७७ ॥

राजा जैचन्द का कवि को उत्तर देना।

सुनि श्रवन जंपि पहुपंग ताम। पर होड़ करन कहु कौंन काम ॥
उनमान अप्प अप्पनि अवन्नि। रष्षहि जु नाम सोइ भूप धन्नि ॥
छं० ॥ ६७८ ॥

*साध्रम्म होइ जोगिन पुरेस। आमंत निरषि संची नरेस ॥
नीतह सु भ्रंग किट्टी सुरज्ज। भनतंत जोति विच्चरै सज्ज ॥
छं० ॥ ६७९ ॥

तजि नीत सोय अप इष्ट जान। कट्टै जु अद्ध दिन घरि प्रमान ॥
जुध सथ्थ साइ मुक्कियै अंग। रष्षियै ध्रंम साईं सुरंग ॥
छं० ॥ ६८० ॥

* यहां से मो.-प्रति का पाठ पुनः आरंभ होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिन राजनीति ग्रह जी अरज्ज। घट घटहि नीर छिन गलति सज्ज॥
बिन राजनीति दुति तजिय जोन्ह। सोव्रन्न प्रतिम मंडियै बैंन॥
छं०॥ ६८१॥

इह सुनिय बैन पहुपंग बीर। मुष तत्त मुष्प कलहं सरीर॥
न्रिप कलह साउ जेही जनाय। कालंत कहिय कल किति गाय॥
छं०॥ ६८२॥

घाटंक निमुष घटि कला जाइ। जानौ सुकाल छल हीन ताय॥
रत गुन अरत्त रत्ते न मोह। उप्पंम चंद जंपै सद्रोह॥छं०॥६८३॥
रँग रंग गत्त मज्जीठ मन्न। कस्सूँभ रंग रँग मोह पन्न॥
बर बिरत श्रोन लच्छिन प्रमत्त। नव नवी वाम इच्छा रमत्त॥
छं०॥ ६८४॥

(१)सातुक्क सक्कहूं हित बढंत। आतंम मोह माया चढ़ंत॥
दिष्षौ ज स्रग्ग चिन्ना सरंत। संसार कूप रस में परंत॥
छं०॥ ६८५॥

राजा जैचन्द का कहना कि कवि अब तुम मेरे मन की बात बतलाओ।

दूहा॥ सत सुवत्त कबिचंद मुष। तब पुच्छिय इह बत्त॥
हों पुच्छो चाहूं सुमति। सो जंपौ कवि तत्त॥ छं०॥ ६८६॥

कवि का कहना कि आप मुझे पान दिया चाहते हैं और वे पान रनिवास से अबिवाहिता लौंडियां ला रही हैं।

जे त्रिय पुरिष रस परस बिन। उठिगराइ सु निसान॥
धवलग्रह संपन्न कहि। भट्टहिं अप्पन पान॥ छं०॥ ६८७॥

राजा का पूछना कि तुमने यह कैसे जाना।

महल अदिट्ठ त्रिय दिट्ठ सुत्र। क्यों व्रन्नै बर कब्बि॥
सरसें बुधि व्रन्नन कर्‍यौ। मुष दिष्षे नन रब्बि॥ छं०॥ ६८८॥

(१) ए. कृ. को. सक्क हितहि बढंत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवि का कहना कि अपनी विद्या से।

काछुक सयन नयनह करिय। कछु किय बयन बषान ॥
कछु इक छछिन विचार किय। अति गंभीर सु जानि ॥छं०॥६८९॥

कवि का उन पान लाने वाली लौंडियों का रूप रंग आदि वर्णन करना।

तिन कह अथ्थि सु हथ्थ किय। जे राजन ग्रह अच्छि ॥
ते सुंदरि सब एक सम। चली सुगंधनि कच्छि ॥ छं० ॥ ६९० ॥

षोड़स बरस समुच ग्रिह। ले सब दासि सु जानि ॥
मनों सभा सुरलोक की। चलि अच्छिरिय समान ॥ छं० ॥६९१॥

उक्त लौंडियों की शिख नख शोभा वर्णन।

अर्धनराज ॥ विहिंग भंग जो पुरं। चलंत सोभ नूपुरं ॥
अनेक भंति सादुरं। अषाढ़ सोर दादुरं ॥ छं० ॥ ६९२ ॥

सुधा समान सथ्यही। सुगंध हथ्थ हथ्थही ॥
चरन रत्त सोभई। उपम्म कब्बि लोभई ॥ छं० ॥ ३९३ ॥

बरन्न रत्त और जे। कसीस कासमीर जे ॥
चरन्न एड़ि रत्त ए। उपम्म कब्बि पत्त ए ॥ छं० ॥ ६९४ ॥

सु वंक चंद अंकनं। सु राइ तेज संकनं ॥
सुसंक जीवनं टरै। सुनें सरूप में करै ॥ छं० ॥ ६९५ ॥

नषादि आदि उप्पनं। सु काम केलि द्रप्पनं ॥
चरन्न हंस सद्दही। उपम्म कब्बि बद्दही ॥ छं० ॥ ३९६ ॥

सुनंत होड़ छंडयौ। चरन्न सेव मंडयौ ॥
सु पिंडि बाल सोभई। सु रंग रंग लोभई ॥ छं० ॥ ६९७ ॥

सुरंग कुंकुमं भरी। षराद काम उत्तरी ॥
सुरंग जंघ ताल से। कि काम षंभ आलसे ॥ छं० ॥ ६९८ ॥

नितंब तंब स्याम के। मनो सयन्न काम के ॥
लवन्न भ्रंग गुंजही। सुगंध गंध पुंजही ॥ छं० ॥ ६९९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिषंत डोर कंकनं । कटिं प्रमान रंकनं ॥
टिकै न दिठ्ठ लंकयौ । विलोकि अष्षि अंकयौ ॥ छं० ॥ ७०० ॥

उतंग तुंग तामयौ । कि भ्रम्म लोभ कामयौ ॥
सु रोमराजि दिठ्ठयौ । हलंत बेनि पिठ्ठयौ ॥ छं० ॥ ७०१ ॥

सु चंपि चंद गाढयौ । विपास काम चाढ़यौ ॥
जुअन्न हीय सोभई । सु सिद्ध मैंन लोभई ॥ छं० ॥ ७०२ ॥

ग्रहन्न रंग चालई । सु लज्जि लंक हालई ॥
उठंत कुच्च कंचुअं । कि तंबु काम रच्चयं ॥ छं० ॥ ७०३ ॥

बजै प्रमान सज्जनं । सुमेर अब्ब भंजनं ॥
जु पोत पुंज सोभयौ । सु चित्त काम लोभयौ ॥ छं० ॥ ७०४ ॥

सु जित्ति राह थानयौ । सु चंद बैठि मानयौ ॥
जराइ चौकि कंठयौ । उपम्म कब्बि तंठयौ ॥ छं० ॥ ७०५ ॥

ग्रहं जु इंद आइयं । चरन्न चंद साहियं ॥
बनित्त सब्ब जंपयौ । सुराह थान अप्पयौ ॥ छं० ॥ ७०६ ॥

चिबुक्क चारु सोभयौ । उपम्म कब्बि मोहयौ ॥
सु बाल भ्रंग पत्तयौ । सु कंज मुक्कि जत्तयौ ॥ छं० ॥ ७०७ ॥

सुरत्त अद्व [1]रत्तयौ । लहै न ओप अंतयौ ॥
ओसाफ, कव्वि सोहयौ । प्रबाल रत्त मोहयौ ॥ छं० ॥ ७०८ ॥

सुधा समान मुष्षही । दसन्न दुत्ति रुष्षही ॥
सु सद्द बद्द पंचमं । कलिन्न कंठतं कमं ॥ छं० ॥ ७०९ ॥

सुनी सु कव्वि राजई । उपम्म कब्बि साजई ॥
ससंक सारगं हरी । प्रगट्ट काम मंजरी ॥ छं० ॥ ७१० ॥

धनुक्क भौंह अंकुरे । मनों नयन्न बंकुरे ॥
श्रवन्न मुक्ति ताल जे । अलक्क बंक आलुजे ॥ छं० ॥ ७११ ॥

सबद्द सोभ जो षुलै । रहंत लज्जि कोकिलै ॥
अनेक हन्न जो कहै । तौ जम्म अंत ना लहै ॥ छं० ॥ ७१२ ॥

(१) ए.कृ. को.-जत्तयौ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दासी का पानों को लेकर दरबार में आना और पृथ्वीराज को देख कर लज्जा से घूंघट घालना।

कवित्त ॥ आय निकट रापंग। अंग आरथन बेद बर ॥
अति सुगंध तंमोर। रंग जुत धरय जुथ्य पर ॥
दिष्षि न्रिपति प्रथिराज। दासि आरोहि सीस पट ॥
मनहु काम रति निरषि। सकुचि गुर पंच मझि घटु ॥
कमधज्ज राज संकुल सभा। अकुल सुभर दरसंत दिस ॥
उस्ससे अंग उभ्भरि अरषि। परस्पर सु अवलोकि [1]सिस ॥
छं० ॥ ७१३ ॥

कवि का इशारा कि यह दासी वही करनाटकी थी।

चौपाई ॥ चहुआनह दासी सिर कंपिय। पुर रठौर रही दिसि नंषिय ॥
बिगरत केस पुरुष नहिं अंकिय। प्रथीराज देषत सिर ढंकिय ॥
छं० ॥ ७१४ ॥

दासी के शीश ढांकने से सभासदों का संदेह करना कि कबि के साथ में पृथ्वीराज अवश्य है।

अरिल्ल ॥ ढंकित केस लषी भय [2]भूपह। दिन दिन दिस्सि कहां राई मह॥
कविवर सथ्य प्रथीन्द्रप आयौ। सो लच्छिन बर दासि बतायौ ॥
छं० ॥ ७१५ ॥

उच्च सरदारों और पंगराज में परस्पर सुगबुग होना।

कवित्त ॥ अप्प अप्प भट अटकि। षटकि पट दासि मंडि सिर ॥
इक्क चवै क्रत बद्दन। एक षल नथ्थ जानि थिर ॥
इक्क कहै प्रथिराज। इक्क जंपय पवास बर ॥

(१) मो.-रिस।   (२) ए. कृ. को.-भूमह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिष्षि दरस [1]रयसिंघ। कहत दीवान अज्ज भर ॥
कट्ठिया [2]विकट केहरि कहर। जहर भार अंगय मनह ॥
संग्रहौ आय रिपु दुष्ट ग्रह। समय सद्व रा पंग कह ॥छं०॥७१६॥

दूहा ॥ भै चकि भूप अनूप सह। पुरष जु कहि प्रथिराज ॥
सुमति भट्ट [3]सथ्थह अछै। जिहि करंत तिय लाज ॥ छं० ॥ ७१७ ॥

कविचन्द का दासी को इशारे से समझाना।

अरिल्ल ॥ करि बल कलह स मंची मार्‍यौ। नहि चहुआन सरंन बिचार्‍यौ ॥
सेंन सुबर कहि कवि समुझाई। अब तूं कलह करन इहां आई ॥
छं० ॥ ७१८ ॥

दासी का पट पटक देना और पंगराज सहित सब सभा का चकित चित्त होना।

समझि दासि सिर बर तिन ढंक्यौ। कर पल्लव तिन द्रग बर अंक्यौ॥
कव रस सबै सभा कमधज्जी। भैचकि भूप [4]सिंगिनी सज्जी ॥
छं० ॥ ७१९ ॥

उक्त घटना के संघटन काल में समस्त रसों का आभास वर्णन।

कवित्त ॥ बर अदभुत कमधज्ज। हास चहुआन उपन्नौ ॥
करुना दिसि संभरी। चंद बर रुद्र दिपन्नौ ॥
वीभछ वीर कुमार। बीर बर सुभट विराजै ॥
गोष बाल झंषतह। द्रिगन सिंगार सु राजै ॥
संभयौ सन्त रस दिष्षि बर। लोहालंगरि बीर कौ ॥
मंगाइ पान पहुपंग बर। भय नव रस नव सीर कौ ॥
छं० ॥ ७२० ॥

दूहा ॥ सिर ढंकति सकुचिय तरुनि। सु विधि चिंति स्वामित्त ॥
बहुरि सु जिम तिम ही कियौ। [1]लवन विचारिय हित्त ॥छं०॥७२१॥

(१) मो.-रासिंघ। (२) मो.-निकट। (३) ए.कृ. को.-अथ्थह।
(४) ए. कृ को.-सिंगिनि गुन। (१) ए. कृ. को.-नवन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक कहै बैठै सुभट। इनह सथ्थ प्रथिराज ॥
ए नृप जीवन एक है। तिनहि करत चिय लाज ॥ छं० ॥ ७२२ ॥

जैचन्द का कवि को पान देकर बिदा करना।

अप्पि पान सनमान करि। नहि रष्यौ कवि गोय ॥
जु कछु इच्छ करि मंगिहौ। प्रात समप्पों सोय ॥ छं० ॥ ७२३ ॥

राजा का कोतवाल रावण को आज्ञा देना कि नगर के पश्चिम प्रान्त में कवि का डेरा दिया जाय।

हक्कारयौ रावन न्रपति। के के मुक्कि सुवास ॥
पच्छि दिस्सि जैचंद पुर। तिहि रष्यौति अवास ॥ छं० ॥ ७२४ ॥

रावण का कवि को डेरों पर लिवाजाना।

आयस रावन सथ्थ चलि। अयुत एक भट सथ्थ ॥
अग्ग राह सो संचरै। मेर उचावहि बथ्थ ॥ छं० ॥ ७२५ ॥

कवित्त ॥ पच्छिम दिसि पुर चंद। सु कवि सौ न्रपति सपत्तौ ॥
रावन सथ्थ समथ्थ। वचन सो कवि रस रत्तौ ॥
धवल मझ्झ सपन्न। कलस कुंदनह वज्र दुति ॥
जठित षंभ जगमगहि। कनक वासन विचिच भति ॥
प्रज्जंक कनक मनि मुत्ति भति। मानिक मध्य विविद्ध भति ॥
आसनह पट्ट बहु मोल विधि। मनु मनि भूमि कि संझ क्रति ॥
छं० ॥ ७२६ ॥

दूहा ॥ डेरा सु कवि विरंम तुम। करि कवि लषौ चरित्त ॥
राजनीति रज गति चरित। चित गनि कहौ [1]सुचित ॥
छं० ॥ ७२७ ॥

रावण का कवि के डेरों पर भोजन पान रसद आदि का इन्तजाम करके पंगराज के पास आना।

(१) ए. कृ को. चरित्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डेरा कराइ रावन चल्यौ। षान पान तिन ठाहि॥
सुष्प सुषासन आरुहै। तहां पंग न्रप आहि॥ छं० ७२८॥

डेरों पर पहुंच कर पृथ्वीराज का राजसी ठाठ से आसीन होना और सामंतों का उसकी मुसाहबी में प्रस्तुत होना।

कवित्त॥ बोलि लियौ सब सथ्थ। तथ्थ प्रथिराज 'सुअत्त'॥
सलिता जेम समुद्द। मुद्द पति मिलन सपत्तं॥
चामर छच रषत्त। लियै सामंत सपत्ते॥
रति सुभ्यौ राजान। मझि ग्रह पति रवि रत्ते॥
आए सु सुहर सब चंदपुर। देषि अनूपम षंति तथ॥
सामंत नाथ बरदाइ बर। आय सपत्त सब्ब सथ॥ छं०॥ ७२९॥

सब सामंतों का यथास्थान अपने अपने डेरों पर जमना।

दूहा॥ सथ्थ सपत्तौ तथ्थ सब। श्रित सामंत रु सूर॥
हय हयसाला बंधि गै। सुभि राजन दर नूर॥ छं०॥ ७३०॥

अरिल्ल॥ मंदिर बंटि दिए सब भूपन। आप रहै निज ग्रेह अनूपन॥
हीर हिरंनन की दुति पंडिय। तापर लाल षरग्गहि मंडिय॥
छं०॥ ७३१॥

पृथ्वीराज के डेरों पर निज के पहरुवे बैठना।

दिय डेरा सामंत समानह। फिरि आवास सुवास सबानह॥
दर रष्ये दरबार सुजानह। बिन आयस न्रिप रुक्कि परानह॥
छं०॥ ७३२॥

पंगराज का सभा विसर्जन करके मंत्रियों को बुलाना और कवि के डेरे पर मिजवानी भेजवाना।

दूहा॥ सभा विसरजी पंग पहु। गय मधि साल विचिच॥
तहां सुषासन इंद्र सम। तिष्ठ सुमंचिय मंच॥ छं०॥ ७३३॥

(२) ए. कृ. को.-सुअप्पं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ तव राजन जैचंद। बोलि सोमिच प्रधानह ॥
अरु प्रोहित श्रीकंठ। मुकंद परिहार सुजानह ॥
दियौ राइ आएस। जाहु सो कवियन थानह ॥
विविध अन्न व्यंजनह। सरस रसरंग रसानह ॥
तंमोर कुसुम केसरि अगर। कट्ट कपूर सुगंध रुह ॥
आदर अनंत उपचार बर। करि सु प्रसन्नह कविय कह ॥छं०॥७३४॥

सुमंत का कवि के डेरे पर जाना, कवि का सादर मिजवानी स्वीकार करके सबको विदा करना।

तब आयस जैचंद। मंनि सो मिच प्रधानह ॥
अरु प्रोहित श्रीकंठ। मुकंद परिहार प्रमानह ॥
बचन बंदि जय जंपि। लिए उपचार सार सब ॥
गये कव्वि सुस्थान। रुके दर मध्य सब्ब जब ॥
दर रष्षि कह्यौ दरबार नृप। भय षवास संबोलि सह ॥
धरि वस्त विबह अग्गै सु कवि। विविध विवरि बर लष्प लहु ॥
छं० ॥ ७३५ ॥

सुमंत का जैचंद के पास आकर कहना कि कवि का सेवक विलक्षण तेजधारी पुरुष है।

चोटक ॥ कवि आदर किन्न सु पंग दियं। किय विद्य सु विद्यह जीति जियं॥
फिरि मंगिय सीष सु पंग रजं। लषि नीति सु कित्ति अनंत सजं॥
छं० ॥ ७३६ ॥
रज मित्ति सु गत्ति अनंत भती। महनूर अदब्ब न जाइ मती ॥
कवि भ्रत्त सरूप सु भूप वरं। तिन तेज अजेज असेस भरं ॥
छं० ॥ ७३७ ॥
चित चक्रित मंचि मुकंद गुरं। भए देषि बिमन्न ग्रहन्न नरं ॥
गय पंग दरं सुधि पंग लही। चिचसाल सुधूपह बोलि तही ॥
छं० ॥ ७३८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब पुच्छिय कव्वि चरित्त कला। कहि मंचिय [1]मोसहु बार न ला॥
कहे मंचिय विप्र सु राज सुनै। कवि मंनिय गत्ति न चित्त गुनै॥
छं० ॥ ७३९ ॥

रज रीति अनूप अदब्ब लही। ब्रित देषि अनूप न जाय कहीं॥
ब्रित रूपहि इंद्र समान लजं। बल तेज अजेज सु राज सजं॥
छं० ॥ ७४० ॥

कवि सथ्थ जु ब्रितह तेज नवं। भर पंग निरष्षिय नैन सबं॥
... . । .... ॥ छं० ॥ ७४१ ॥

जैचंद के चित्त में चिन्ता का उत्पन्न होना।

दूहा॥ सुनि चित्तह चिंत्यौ न्रपति। कवि यह कह कथ चित्त॥
गुन गंभीर सु गंठि हिय। गौ दिय सिष्ष सु भ्रत्त॥ छं० ॥ ७४२ ॥

रानी पंगानी के पास कविचन्द के आने का समाचार पहुंचना।

चौपाई॥ सुनिय बत्त न्रप पंग सु राजह। आयौ कवि चहुआन सु लाजह॥
सुनि जुन्हाइय चित्त सु चिंतिय। बोलि सहचरि मंत सुमंतिय॥
छं० ॥ ७४३ ॥

रानी पंगानी का कवि के पास भोजन भेजना।

गाथा॥ इह कवि दिल्लियनाथो। मैं सुन्यौ बीर बरदाई॥
तिहि नव रस भाष छ भनियं। पठ्ठाइयं अस्सनं[2] तथ्यं॥छं०।७४४॥
तिहि सषि बोलि सुथानं। चित्तनि चित्त केसरी समुषं॥
लीला विमल सु बुद्धी। सा बुद्धी लग्गि चरनायं॥ छं० ॥ ७४५ ॥

दूहा॥ पंगराइ वर बीर बर। सेंन अप्पि सहलीन॥
दिसि जुन्हाइ असीस कवि। हुकम कहन न्रप दीन॥छं०॥७४६॥

पद्धरी॥ चौबार स्याम बर पंग ग्रेह। ग्रिह मद्धि रतन कै मद्धि केह॥
षोड़स बरष्ष अप्रपत्त बाल। [3]दिष्षियै पंग भामिनि विसाल॥
छं० ॥ ७४७ ॥

(१) मो.-सो मति। (२) मो.-तये। (३) ए. कृ को.-दिष्षी सु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिषि हरन कत्ति करवत्त काम। मनों मीन मीन विश्राम ताम ॥
पदमिनिय हंस चिचनिय बाल। सोभै सुपंग ग्रिह मुरु विसाल ॥
छं० ॥ ७४८ ॥

पदमिनी कुटिल केसह सुदेस। अस्तनह चक्र वक्रह सुनेस ॥
बरगंध पदम सुर हंस चाल। जन जीभ रत्त म्रिग अंकि साल ॥
छं० ॥ ७४९ ॥

कुलवंत सील अंमृत वचन्न। पदमिनी [1]हरै पहुपंग मन्न ॥
आसीस भट्ट बोल्यौ प्रकार। चित हरै चंद मुषचंद मार ॥
छं० ॥ ७५० ॥

पंगानी रानी "जुन्हाई" की पूर्व कथा।

कवित्त*॥ सूर किरनि तें प्रगटि। रुचिर कन्यका तपत्या ॥
तरवर तुंग कैलास। साष संग्रहि कर सत्या ॥
झूलंती संपेषि। भयौ भुअपत्ति सु आसिक ॥
एक पाइ तय मंडि। धारि द्रग अग्ग सु नासिक ॥
वाचिष्ट रिष्षि सु प्रसन्न होइ। रवि प्रारथ्यि विवाह किय ॥
जैचंद राय बरदाइ कहि। तिहि सम जुन्हाइ लहिय ॥ छं० ॥ ७५१ ॥

अरिल्ल ॥ पंग हुकम अरुदान जुन्हाई। भट्ट न्रपति चहुआन सुनाई ॥
रहि सि चीय चित दै बहु बढ्ढै। [2]जनों किरन कल पचम चढ्ढै ॥
छं० ॥ ७५२ ॥

दासियों की शोभा वर्णन।

मुरिल्ल ॥ सब अंग सु रंगिय दासि घनं। घन हथ्थय पीत पटंबरनं ॥
घनसार सुगंध जु हथ्थ धरै। तिन उप्परि भोरन भोर परै ॥
छं० ॥ ७५३ ॥

रानी जुन्हाई के यहां से आई हुई सामग्री का वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-रहै। *यह कवित्त मो.-प्रति में नहीं है और क्षेपक जान पड़ता है।
(२) ए. कृ.-जनों कि हथ्थ कल पत्रम चढ्ढै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ सहस एक हेमंग । सहस दोइ पीत पटंबर ॥
सहस अड नव नालि । केलि [1]कप्पूर सु ठुंमर ॥
म्रिग जु नाभि निक रासि । देस गवरी सा षंगी ॥
मुक्कि गंध काकीन । सेत बंधह भारंगी ॥
दारिम्म बिजोरी इष्य वर । विमल मद्द मोदक भरन ॥
अरु गंध पंग संभारि करि । जाति जुन्हाई संधि रन ॥ छं० ॥ ७५४ ॥

हनूफाल ॥ मिलि मंजरी गुन बेलि । मदनावली गुनकेलि ॥
मालती अविज सरूप । लीलया कमला अनूप ॥ छं० ॥ ७५५ ॥

मक्ष हिय सुलष्य सुबुद्धि । लषि नेंन लषन सु बुद्धि ॥
[2]क्रंमारि माला मुष्य । सम हंसगोरिय रुष्य ॥ छं० ॥ ७५६ ॥

वर बीर सषि सम लाज । पुच्छिय सु स्वामिनि काज ॥
कर जोरि आयस मंगि । बहु सषिय बोलिय संग ॥ छं० ॥ ७५७ ॥

जुन्हाइ जंपिय तब्ब । पति दिलिय आयौ कब्ब ॥
मिष्टाइ लै [3]तहां तथ्य । [4]सम जाहु सषिसम सथ्य ॥ छं० ॥ ७५८ ॥

मिष्टाइ विवह विचित्र । मिष्टाइ रूप पवित्र ॥
सें तीन बानय पूरि । आच्छादि अवर सनूर ॥ छं० ॥ ७५९ ॥

रस अगर पंच सुअट्ठ । करपूर पूरित जट्ठ ॥
केसरि सद्रोन सदून । म्रगमद्द थालन रून ॥ छं० ॥ ७६० ॥

तंमोलि चौसट्ठि पान । द्वै सहस हेम जुतान ॥
हिम हंस एक अनूप । जस जपै चातुर भूप ॥ छं० ॥ ७६१ ॥

मानिक्क जटित अमूल । मनि विचित्र जानि अतूल ॥
मरकंति मनि विन रेह । वर दृब्ब मुत्ति जलेह ॥ छं० ॥ ७६२ ॥

मनि जटित विवह विराज । बर बसन धारित भाज ॥
सुभ सुजल मुत्तिय माल । वासंसि सुभ धरि थाल ॥ छं० ॥ ७६३ ॥

वर विचित्र अन्न अनंस । सुभ गत्ति स्वाद सुमंस ॥
मिष्टाइ जाति न संष । बहु रूप राजित अंष ॥ छं० ॥ ७६४ ॥

(१) ए.-ढुंमर । (२) ए. कृ. को. -क्रम्यारि ।
(३) ए. कृ. को.- थह । (४) ए. कृ को.-लै ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनि वस्त विवह विभंति। गनि जाति कौंन गिनंत॥
.... । .... ॥ छं०॥ ७६५॥

दूहा॥ सु बन सिंगारिय सह सषिय। विवह वस्त लिय सब्ब॥
सो निज स्वामिनि अंग सुनि। क्रमिय सु अथ्यह कब्ब॥छं०॥७६६॥

कवि के डेरे पर मिठाई लेजाने वाली दासियों का सिखनख श्रृंगार वर्णन।

लघुनराज॥ रजंत बान सा सषी। द्रगंत बानता तिषी॥
सिंगारि साज सब्बयौ। दिषै छरीब गब्बयौ॥ छं०॥ ७६७॥
सु गोंप वास रासयं। तमोर भष्षि आसयं॥
बदन्न रूव रज्जयौ। सरद्द [1]बिंब लज्जयौ॥ छं०॥ ७६८॥
ढुरंत मुत्ति बेनियं। विराजि काम नेनियं॥
सुभाल कोर वासनं। उही सुमुच्छ भासनं॥ छं०॥ ७६९॥
चाटंक सोभि अमरं। तड़ित्त दुत्ति संमरं॥
[2]खंत कट्टि मेषरं। चकोर साव से सुरं॥ छं०॥ ७७०॥
सुरंस हंस हंस यौ। समूह साव रंसयौ॥
सुरं समथ्य कामिनं। समोहि मुट्ट वामिनं॥ छं०॥ ७७१॥
वरष्ष अट्ठ अट्ठयं। सवंक कंपि तट्ठयं॥
रुलंत हीय हारयं। समुट्ठि काम कारयं॥ छं०॥ ७७२॥
विचिच हंस कामिनी। मयंद मत्त गामिनी॥
सषी सुबीय सष्षयं। क्रमंत अंग पष्षयं॥ छं०॥ ७७३॥
प्रवीन बीन बद्दनं। सुरन्न षद्द अद्दनं॥ ॥
विचिच काम जंकला। कटाषि चाल अष्षिला॥ छं०॥७७४॥
विसाल बैन चातुरी। मनो सु मोहिनीं जुरी॥
सु सामं दान भेदयौ। कुसल्ल दंड षेदयौ॥ छं०॥ ७७५॥
कला सु अट्ठ अट्ठयौ। सुभेव भाव गट्ठयौ॥
सभाव चन्न सोभिलं। बदंत काम कोकिलं॥ छं०॥ ७७६॥

(१) मो.-रूप। (२) मो.-रचांति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलों सु सब्ब संजुरी । मनो सुइंद अच्छरी ॥
चढ़ी कि डोलियं बरं । सरोहि कै हयं बरं ॥ छं० ॥ ७७७ ॥
सषी सु पंचयं सयं । गमंत सथ्थ सेनयं ॥
लियं सु सब्ब साजयं । सु अथ्थि रिद्धि राजयं ॥ छं० ॥ ७७८ ॥
सपन्न कव्वि थानयं । दरं सु रष्षि मानयं ॥
.... । .... ॥ छं० ॥ ७७९ ॥

कवित्त ॥ पंकज सुत[१] सोवंत । फेरि करवट्ट प्रजंकह ॥
असुर उपजि अनपार । धरनि कज मंडिय कंकह ॥
संझ समय तव व्रह्म । देह तजि रंभ उपाइय ॥
रूप अचंभम देषि । रहे दानव ललचाइय ॥
नष सिष मानहु तिहि सम । रचे संप्रतीक सहचरि सकल ॥
कविचंद थान कमधज पठय । कलन सु छल पिथ्थह अकल ॥
छं० ॥ ७८० ॥

उक्त दासी का कवि के डेरे पर आना ।

अरिल्ल ॥ सतु दासी न्नप थान सपत्ती । नूपर सद कवियान प्रपत्ती ॥
चंद चिंत उप्पय बर भारे । जूथ वजे मनमथ्थ नगारे ॥
छं० ॥ ७८१ ॥

दरवान का दासी को कवि के दरबार में लिवा जाना ।

गाथा ॥ सषि दरबार सपन्नी । आदर दीन तथ्थ दरवानं ॥
दर गय अंदर राजं । नइवेदयं तथ्थ सव्वायं ॥ छं० ॥ ८७२ ॥
चौपाई ॥ बोलिय मझ्झ सु कव्विय बालह । तब सिंघासन छंडि भुआलह ॥
आय सषी सब मझ्झ स बुझ्झिय । आदर विवह वानि कवि किझ्झिय ॥
छं० ॥ ७८३ ॥

दासी का रानी जुन्हाई की तरफ से कबि को पालागी कहना और कबि का आशीर्वाद देना ।

(१) को.-सोवत्त ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विवह विचित्र धरी मुष अंबह। कही असीस जुन्हाइय कब्बह॥
तुम त्रिकाल दरसौ बुधि पाइय। बहु आदर दिन्नौ जु जुन्हाइय॥
छं०॥ ७८४॥

तुम चहुआन सु भट्ट समत्तिय। अगम सुमग गत लहौ सु गत्तिय॥
मंगिय विदा सु कव्वि प्रसन्निय। देषि चरित रजगत्ति सु[1] मन्निय॥
छं०॥ ७८५॥

दासी का रावर में वापस जाकर रानी से कवि का आशीर्वाद कहना।

गति मति अंतर भेद सु जन्निय। देषि चरित अचिज्ज सु मुन्निय॥
फिरि आई जु जुन्हाइय थानह। पयलग्गी विधि कही विनानह॥
छं०॥ ७८६॥

गाथा॥ कहि आसीस सु कव्वी। सुप्रसन्नों दिष्टतो भासं॥
[2]तो तन चिंता भंगो। कथ्थिय आसीस केलि कव्वीसं॥ छं०॥ ७८७॥
रामा रज गति [3]लद्धी। आदर अदब नीति अनभूतं॥
कवि यह अथ्थह राजं। संपिष्षेय कह कहं नाई॥ छं०॥ ७८८॥
सुनि सा बत्त जुन्हाई। दिय निज कम्म सब्ब सषिएनं॥
निज हिय चिंता ठानी। संपन्नी धवल मझझ्झेनं॥ छं०॥ ७८९॥

यहां डेरों पर यथानियम पृथ्वीराज की सभा का सुशोभित होना और राजा का कवि से गंगाजी के विषय में प्रश्न करना।

दूहा॥ तहां सु सूर सामंत मिलि। मधि [4]नायक कवि चंद॥
प्रथीराज सिंघासनह। [5]जनु परिपूरन इंद॥ छं०॥ ७९०॥
अहो चंद इह दंद भलि। हंज दरसन किय गंग॥
मन उछाह पुनि मुझ्झ भयो। कछु बरनन करि रंग॥
छं०॥ ७९१॥

(१) ए. कृ. को. गत्तिय, मत्तिय।
(२) ए. कृ को-"तो तन चिंतिय भंगो कही असीस केलि कव्वीस"।
(३) मो.-रिद्धी।
(४) ए. कृ. को.-ताकिप। (५) मो. मनों प्रथीपुर इंद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविचन्द का गंगाजी को स्तुति पढ़ना।

कहै कव्वि नृप राज सुनि। मो मुष रसना एक॥
इह सु गंग सुर मुनि जिते। [1]लहहि न पार अनेक। छं० ॥ ७९२॥

भुजंगी ॥ मुनी साधु जोगी जती आय जेते। गुनी ग्यान ध्यानं प्रमानं न तेते॥
धरा रोम ते व्योम तुम्मे तरंगे। बसी ईस सीसं जटा जूट गंगे॥
छं० ॥ ७९३॥

चतूरान पानं व्रह्मंडं कमंडं। चयीकाल संझ्या रिषी दोष षंडं॥
समाधिं धरै कूल साधून साधं। तुही एक तें चंद चक्कोर राधं॥
छं० ॥ ७९४॥

तुमं सेव भागीरथं जानि कीनी। सवें मेलि जाचानि तू संग दीनी॥
हुती स्वर्गवै लोक धारा अपारं। धसी प्रब्बतं पेलि नाना प्रकारं॥
छं० ॥ ७९५॥

प्रवाहं अमानं प्रमानं न जानं। मनो एक मुष्षं मती मूढ़ ग्यानं॥
कँपै पाप जो भीर पत्तं सु सत्तं। रहै दिष्ष संसिष्य तन्नार भत्तं॥
छं० ॥ ७९६॥

तुही सग्गुनं निग्गुनं सुड़ि कासं। तुही सब्ब जीवं सजीवं स सासं॥
तुही राजसं तामसं सातुवंती। तुही आहितं हित्त चितं चरंती॥
छं० ॥ ७९७॥

तुही ज्वाल माला कुलाला कुरष्टी। तुही बारिधारा अधारं अरिष्टी॥
तुही वर्न भेदे विसंताहि साधै। तुही नाद रूपी सजोगी अराधै॥
छं० ॥ ७९८॥

तुंही ते हरी तूं हरी तेन औरै। जिसौ भेद जो कंचनं टूक कोरै॥
लषै को गती तो मती देव गंगे। रटै कोटि तेतीस तो नाम अंगे॥
छं० ॥ ७९९॥

जिसौ वारि गंगा तरंगे प्रकारे। तिसौ तोसने अप्प अप्पं अपारै॥
करै पाप भारं फना व्याल कंपै। रसन्नाजि कै देवि तो नाम जंपै॥
छं० ॥ ८००॥

(१) मो.-लहत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिभारं करै पाप भारंत दूरं। रची पुन्य कै क्थारवै ध्रम्म स्हरं॥
सते साध गहि लोक तें सीस रष्यौ। तबै बेद भय वेद सब छेद नंष्यौ॥
छं०॥ ८०१॥

अमी आइ अंगाइ त्रिमया न किन्नौ। हुंतौ दीष आदिष्ट गारिष्ट भिन्नौ॥
तुंही देषि करि तेज कप्यौ समुद्दं। छल्यौ सब्ब करि देवि छंड्यौ सु चंदं॥
छं०॥ ८०२॥

धरे सहस सत रूप आनूप भारी। कला नेक नेकं अनेकं प्रकारी॥
रमी रंग रंगं तरंगं सरीरं। जिसौ भेद पय पान जान्यौ न नीरं॥
छं०॥ ८०३॥

जिसौ सिंह अरु सगति भयभीत भारी। जिसी मुत्तिहर मूर तें झाकझारी॥
जिसौ अप्प अप्पै अपारें अनंतं। तिसौ मोष नर भेद पावै तुरंतं॥
छं०॥ ८०४॥

सिया रूप हुय भूप रावन सहार्‍यौ। भये देवकी अंस चानूर मार्‍यौ॥
इसौ कौन सहगत्ति सों कहै ग्यानी। इहै द्रोपदी होइ भारथ्य ठानी॥
छं०॥ ८०५॥

(१)समी सीस तें देवि देवी मुरारें। रमी सीस तें माहिषं पाइ ठारे॥
(२)इहै कालिका काल जिम दुष्ट मारै। इहै संभनिस्संभ धायौ प्रहारै॥
छं०॥ ८०६॥

तूंही ग्रंथ गेनं सिवं संग धंगे। तुही मोचनी पाप कल अलष गंगे॥
दयालं दया जानि चवि चंद बानी। जयं जान्हवी जोति तू पापहानी॥
छं०॥ ८०७॥

श्री गंगा जी का माहात्म्य वर्णन।

चन्द्रायण॥ मनसा एक जनम्म महा अघ नासही।
दरसन तीन प्रकारति पाप प्रनासही॥
न्हायै दुष्ष समूह मिटै भव सात के।
अंव हरै लगि बूंद सहस्रति गात के॥ छं०॥ ८०८॥

(१) मो-रमी। (२) ए. कृ. को.-रहै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंगाजी के जलपान का माहात्म्य और कन्ह का कहना कि धन्य हैं वे लोग जो नित्य गंगाजल पान करते हैं।

गाथा ॥ सो फल निरषित नयनं। सो फल गुन गाइयं बैनं ॥
सोइ फल न्हात सरीरं। सोइ फल पिअत अंब अंजुलयं ॥
छं० ॥ ८०९ ॥

भुजंगी* ॥ जलं गंग न्हावै कितीकं कलत्तं। अलंकार चीरं सरीरं सहित्तं ॥
सरं केस पासं नितंबं बिलंबे। तिलं तेल फुल्लेल सीचें प्रलंबे ॥
छं० ॥ ८१० ॥

द्रगं कज्जलं म्रग्गयं कस्तूरी। करी कच्छपं भोजियं हथ्थ चूरी ॥
मुकत्ताफलं सीपयं क्रीट पट्टं। विलेपन्न कीनें सुगंधं सुघट्टं ॥
छं० ॥ ८११ ॥

मुषं नाग वल्ली विरष्षं बरंगं। महंदी नषं जावकं रंग पग्गं ॥
इतें जीव पायं तुरन्तं मुकत्ती। कवीचंद जंपी न झूटी उकत्ती ॥
छं० ॥ ८१२ ॥

धरे ध्यान चौहान किन्नौ सनानं। अचिज्जं कहा पावनं मोषथानं ॥
सुने क्रन्न तामं कहै कन्ह काकौ। पियें अंब निसि दीह वड़भाग ताकौ ॥
छं० ॥ ८१३ ॥

दूहा ॥ इय गंगा राजं न थुति। सुनी रत्ति धरि ध्यान ॥
जनम मरन दोऊ सधै। जो उपजै इह थान ॥ छं० ॥ ८१४ ॥

सामंत मंडली में परस्पर ठट्ठा होना और बातों ही बात में पृथ्वीराज का चिढ़ जाना।

तब सामंतन चंद कहु। सब पुच्छिय न्रप बत्त ॥
जु कछु सत्य सँबोध भौ। निट्ठ,ररायह तत्त ॥ छं० ॥ ८१५ ॥

* यह छन्द मो. प्रति में नहीं हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरिल्ल ॥ तत्त करे न्त्रिप निट्ठुर बुभ्झिय। राजा चंद प्रहास समुभ्भिय ॥
आदि दियै कमधज्ज सु रायह्हि। दासि समेत कह्यौ सब भायह्हि ॥
छं० ॥ ८१६ ॥

आचिज एक भयौ चहुआनह। मान सबै मुक्किय न्त्रप पानह ॥
भट्ट निवेस करै कर जोरहि। छच धऱ्यौ कहि कोन निहोरिहि ॥
छं० ॥ ८१७ ॥

फेरि कही कविचंद सु बत्तिय। पंग प्रताप गयौ तप छत्तिय ॥
पान सु पात तुम्हें गर थल्लिय। भट्ट कहै कर छुग्गर [1]झल्लिय ॥
छं० ॥ ८१८ ॥

संभरि राव तमंकि रिसानों। मैं श्रम काज धऱ्यौ कर पान्यों ॥
काल्हि सु भेस करों भुअपत्तिय। कंप न तोहि धरड्डर छत्तिय ॥
छं० ॥ ८१९ ॥

कन्ह का कविचन्द से बिगड़ पड़ना।

भट्ट सों कन्ह निपट्ट रिसानौ। तूं सामंत न तोर घरानौ ॥
तूं कवि देत असीसन छुट्टहि। सूर सीस दे सस्त्रन [2]जुट्टहि ॥
छं० ॥ ८२० ॥

कविचन्द का राजा को समझाना और सब सामंतों का कन्ह को मनाकर भोजन प्रसाद करना।

कवित्त ॥ [3]कपह जग्ग मंडयौ। न्योंति जम इंद्र बुलाइय ॥
दिग्गविजय तँह करत। फौज लै रावन आइय ॥
मरन अचिंत्यौ जानि। चिंत कायरपन आदर ॥
वायस करकोटिया। रूप धरि उग्गरि दादुर ॥
दिय श्राद्ध पिंड जम कग्ग कौं। रंग क्रकेटक सुरपती ॥
मंडिक मदध्ध गऱ्यौ वरुन। चंद कहत सुनि नरपती ॥
छं० ॥ ८२१ ॥

(१) ए. कृ. को.-वल्लिय। (२) मो. छुट्टहि। (३) कृ.-कगह, को.-कवह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरिल्ल ॥ तब परिहार वीर वीरन वर । भोजन सह सबै कीनौ नर ॥
राव गोयंद इंद वर उट्ठे । धरिय कन्ह निज बाह स रुट्ठे ॥ छं० ॥ ८२२ ॥

सब का शयन करने जाना ।

तो लगु भोजन भष्य संपज्जे । हसि करि मंन सुचेतन लज्जे ॥
हो सब साथ सनाथ सयानौ । सूर कहै कब होइ बिहानौ ॥
छं० ॥ ८२३ ॥

वार्त्ता ॥ जब लगि मिष्टान पान सरसे । तब लगि अंबर (१)दिनयर दरसे ॥

पृथ्वीराज का निज शिविर में निःशंक होकर सोना ।

दूहा ॥ भइत निसा दिन मुदित बिनु । उड़पति तेज विराज ॥
कथक साथ कथ्थहि कथा । सुष्य सयन प्रथिराज ॥ छं० ॥ ८२४ ॥
अदरस दिनयर देषि करि । तलप प्रजंक असंक ॥
मनहु राज जोगिनिपुरह । सोभै सेंन निसंक ॥ छं० ॥ ८२५ ॥
कोतर रत रत चित्त तह । मानों थान विहंग ॥
जुवती जन मन कुमुद बसि । मनु मनि सष्य भुअंग ॥ छं० ॥ ८२६ ॥

जैचंद का कवि को नाटक देखने के लिये बुलवाना ।

ओसर पंग सुरत्त किय । चंद सुजानह भट्ट ॥
कहै जाय जुग्गिनि पुरह । नव रस भास सुघट्ट ॥ छं० ॥ ८२७ ॥
और प्रपंच विरंच कौ । निजरि पंग लगि क्रूर ॥
साच दिषावन राग रँग । चंद बुलाय हजूर ॥ छं० ॥ ८२८ ॥
जाम एक निसि बीति बर । बोले भट्ट नरिंद ॥
ओसर पंग नरिंद कौ । देषहु आय कविंद ॥ छं० ॥ ८२९ ॥
एकाकी बोल्यौ सु कवि । ओसर देषन राय ॥
राज नींद मुक्यौ करत । पौरि संपतौ जाइ ॥ छं० ॥ ८३० ॥

---

(१) ए. कृ. को.-दिनरय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैचंद की सभा की रात्रि के समय की सजावट और शोभा वर्णन।

सुरिल्ल ॥ सुनि न्रप भट्ट महल तजि आइय। देषत पंग सु ओपम पाइय॥
नहि रावन्न सजै सु प्रमानं। क्रम लद्धी [1]गिर अंध गजानं॥
छं० ॥ ८३१ ॥

दूहा ॥ मृदु मृदंग धुनि संचरिय। अलि अलाप सुध व्यंद॥
ताल चिग्गम उपंग सुर। औसर पंग नरिंद॥ छं० ॥ ८३२ ॥

कवित्त ॥ दस हजार मन तेल। सित्त मन अगर फ,लेलह॥
सत्त सहस सोब्रन्न। जरित दीवी सित जेलह॥
सहस पाल असुहेज। षेल षाना सु जनावर॥
सीह स्रग्ग सोहन्नं। कपिल हस्ती बह, नाहर॥
पंषी अनेक जलचर प्रबल। जल थल प्रब्बत इक हुए॥
जैचंद राइ तप तेज थी। कु निजरि कोई नह जुए॥ छं० ॥ ८३३॥

दूहा ॥ ज्वलन दीप दिय अगर रस। फिरि घनसार तमोर॥
जमनि कपट उच महल मुष। जनु सरद अभ्भ ससि कोर॥
छं० ॥ ८३४ ॥

राजा जैचन्द की सभा में उपस्थित नृत्तकी (वेश्याओं) का वर्णन।

तात धरम्मह मंत इह। रत्तह कांम सु चित्त॥
काम बिरुद्ध निविद्ध किय। न्रत्य नितंबिनि नित्त॥ छं० ॥ ८३५ ॥

भुजंगी ॥ सजी पातुरं नट्ट दीसै सु पंगं। चिहुं पास पासं अतंकी अभंगं॥
उड़ी धाम अग्गार ने धाम छाई। तिनं देषतें चंद ओपंम पाई॥
॥ छं० ॥ ८३६ ॥

सुरं नूपुरं सद्द बद्दं विहंगं। बरं तारि ता रूप पाचं सुरंगं॥
करै जमनिकं पट्ट दीसै सुरंगी। गतं चंदलं चंद उप्पम्म मंगी॥
छं० ॥ ८३७ ॥

(१) मो.-गिरधंगज।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरं बार पुब्बं मनंमध्य सज्जं । बंध्यौ काम जारं मनो सीम [1]मज्जं॥
बजै नूपुरं सद्द पर सद्द धंमै । बजै दुंदभी समर सम राज क्रम्मै ॥
छं० ॥ ८३८ ॥

नगं हेम बर जटित तन घन विराजै । तिनं ओपमा चंद बरदाइ साजै॥
लगै नौग्रहं उग्रहं काम लग्यौ । मनों आतमा आतमा भाव जग्यौ
छं० ॥ ८३९ ॥

तिनं भट्ट संकै कहै बाल संचै । तिनं कारनं पातुरं साथ नंचै ॥
कटिं छुद्रघंटी रुलंती विराजै । तिनं उप्पमा सुबर कविचंद साजै ॥
छं० ॥ ८४० ॥

दिषै धनुष कामं षिजै सिंभ चासी । लगै पंचग्रह चंचलं तं धरासी॥
रुरै हार भारं सु मुत्ती अनूपं । दमं मुष्य कंती प्रतीब्यंब रूपं॥
छं० ॥ ८४१ ॥

कथी चंद बंदी उपम्मा अनूपं । करै चंद आहन्न जल सेत क्रूपं॥
रुरै बाल कंठं समं [2]मुट्ठि पुंजं । कहै चंद कव्वी उपम्मा [3]अनुज्जं ॥
छं० ॥ ८४२ ॥

तिनं भेष सोहै फिरै बंध नंगं । धरै चंद तत्तं हरं मध्य गंगं ॥
बरं भूषनं दूषटं बाल साजै । बरं अट्ठ दूनं सिंगारं विराजै ॥
छं० ॥ ८४३ ॥

वेश्याओं का सरस्वती की वंदना करके नाटक आरंभ करना।

साटक ॥ दीपांगी चंद्रनेत्रा नलिन अलि मिली, नैन रंगी कुरंगी ॥
कोकाषी दीर्घनासा सुसर कलिरवा, नारिंगी सारदंगी ॥
इंद्रानी लोल डोला चपल मति धरा, एक बोली अमोली ॥
पूहपा बानी बिसाला सुभग गिरवरा, जैत रंभा सु बोली ॥
छं० ॥ ८४४ ॥

(१) मो.-वज्जं। (२) ए. कृ. को.-कुच्च। (३) ए. कृ. को.-लघुजं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नृत्यारंभ की मुद्रा वर्णन।

दूहा॥ पुहपंजलि दिसि वाम कर। फिरि लग्गी गुरपाइ॥
तरुनि तार सुर धरिय चित। धरनि निरष्षय चाइ॥
छं०॥ ८४५॥

मुरिल्ल॥ सजि नग पातुर चातुर चल्ली। कैवर चंद चंद बर बुल्ली॥
देषि सुबर ओपम [1]वर भल्ली। मदन दीप मालासजि चल्ली॥
छं०॥ ८४६

मंगल आलाप।

दूहा॥ मंग प्रथम जंपं जपै। जै गजमुष अग्रजाइ॥
सेत दंत पाठक उदै। सोभै पंगुर राइ॥ छं०॥ ८४७॥

वेश्याओं का नृत्य करना; उनके राग, वाज, ताल, सुर,ग्राम, हाव भाव आदि का और उनके नाट्य कौशल का वर्णन।

नराज॥ उच्चं अलाप मड्डिता सुरं सु ग्रामपंचमं।
षडंग तप्प मूरछंमनुंत मान संचमं॥
निसंग थारंत अलप्य जापते प्रसंसई।
दरस्स भाव नूपुरं इतन्न तान नेतई॥ छं०। ८४८॥
सुरंसपत्त तंच कंठ[2]बोधि राग साभरं।
हहा हुहू निरष्षि तार रंभ चित्त ताहरं॥
ततंग थेइ तत्तथेइ तत्तथे सुमंडियं।
थथुंगं थुंग थुंगथे विराम काम मंडयं॥ छं०॥ ८४९॥
सरग्गमप्प धुन्निधा धुनं धुनं निरष्षियं।
भवंति जोति अंग मानु अंग अंग लष्षियं॥

(१) ए. कृ. को. सुर। (२) ए. कृ. को.-बोलि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलं कलं सु [1]सथ्थनं सुभेदनं मनंमनं ।
रनक्कि झंकि नूपुरं बुलंत झंझनं झनं ॥ छं० ॥ ८५० ॥

थमंडि थारु घंटिका भमंति भेष रेषयौ ।
[2]जुटंति षुट वेस पास पीत स्याह रेषयौ ॥
लजंति गत्ति तारया कटिं प्रमान कंटरी ।
कुसम्मसार आउधं कुसुम्म ओड नंटरी ॥ छं० ॥ ८५१ ॥

उरंप रंभ भेष रेष सेषरं करं कसं ।
तिरप्पि तिष्य सिष्ययौ सु देस दच्छिनं दिसं ॥
सुरंति संगि गातनी धरंति सासने धुने ।
जमाइ जोग कट्टरी चिविड्ड नंच संपने ॥ छं० ॥ ८५२ ॥

तिरप्पि लेत [3]पातुरं सु चातुरं दिषावहीं ।
कै अट्ठ ग्रेह बीय चंद भोर कै अमावहीं ॥
छतीस राग बंधि तार बाल ता बजावहीं ॥
.... छं० ॥ ८५३

सु क्रम्म तार धी मृदंगचित्त बंध संचरं ॥
विरम्म काम धूव बंधि चंद्र धूव उच्चरं ॥
समीप रथ्थ भेदयौ जु चित्त चित्त चोरई ॥
अनेक भंति चातुरी जुमन्न मेर डोरई ॥ छं० ॥ ८५४ ॥

सिँगार ते कलेवरं परस्सि उब्भ रावके ॥
सिँगार सोभ पातुरं कि [4]चातुरं सिँगार के ॥
उलट्टि पट्टि नाचनौ फिरद्दि चक्कि चाहनौ ॥
निरक्ति नेंन राषि जानि बंभ पुत्ति बाहनौ ॥ छं० ॥ ८५५ ॥

बिसेष देस द्रुप्पदं बदन्न देंन राजयौ ॥
सु चक्र भेष चक्र दृत्ति वाल ता विसाजयौ ॥
उरड्ड मुड्ड मंडली अरोह रोह चालिनं ॥
ग्रहंति मुक्ति दुत्तिमा मनों मराल मालिनं ॥ छं० ॥ ८५६ ॥

(१) ए. कृ. को.-मथ्थनं ।　　(२) ए. कृ. को.-जटंति ।
(३) ए. कृ. को. षातुरं ।　　(४) ए. कृ. को.-पातुरं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रवीन वान उड्डरी मुनींद्र मुद्र कुंडली ॥
प्रतष्पि भेष उड्ड्यौ सु भुम्मि लोइ षंडली ॥
तलं तलं सुताल ता मृदंग धुंकने घने ॥
अपा अपा भनंत भे जपंत जान ज्यौं जने ॥ छं० ॥ ८५७ ॥

अलाष लाष लाष नेनयं न बेंन भुंषने ॥
नरे नरिंद मास मेस मेस काम सुष्पने ॥
.... । ....छं० ॥ ८५८ ॥

सप्तमी शनिवार के बीतक की इति।

दूहा ॥ जाम एक छिन [1]दान घट सत्तमि सत्तनिवार ॥
कहु कामिनि सुष रति समर। [2]त्रिपनिय नीद निवार ॥छं०॥८५९॥

घटि चियाम घरियार बजि। ससि मिटि तेज अपार।
अकस अच्छ दिन सो तजौ। चिय रुठि निसि भरतार ॥छं०॥८६०॥

नृत्यकी (वेश्या) की प्रशंसा।

साटक ॥ सुष्यं सुष्य मृदंग तन्न जघनं, रागं कला कोकनं ॥
कंठी कंठ सुभासने समजितं, कामं कला पोषनं ॥
उरभी रंभ कि ता गुनं हरहरी, सुरभीय पवनं पता ॥
एवं सुष्यह काम कुंभ गहिता, जय राज राचं गता ॥ छं०॥८६१॥

कांती भार पुरान यौविंगलिता, साषा न गल्हस्थलं।
तुच्छं तुच्छ तुरास लग्गि कमनं, कलि कुंभ निंदा दलं॥
मधुरे माधुरयासि आलि अलिनं, अलि भार गुजारियं ॥
तरुनं [3]प्रात लुटीय पंगज जिया, राचं गता साम्प्रतं ॥
छं० ॥ ८६२ ॥

(१) ए. कृ. को.-दक्षिन (२) ए. कृ. छो.-त्रिय तिय निंदनिवार।
(३) ए. कृ. को.-प्रान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिपहरा बजने पर नाच बंद होना, जयचंद का निज शयनागार को जाना और कवि का डेरे पर आना।

अरिल्ल ॥ भई ग्रम बेर अथवंत निसं। गछि चोर परद्दर कपट बसं ॥
झलि झालरि देवर सुष्ष नदं। भइ विप्र उचारिय बेद बदं ॥
छं० ॥ ८६३ ॥

दूहा ॥ गयौ चंद थानह न्रपति। मतौ पंग चितवार ॥
भट्ट सथ्थ चहुआन सत। बंधि दियौ करतार ॥ छं० ॥ ८६४ ॥
प्रातराव संप्रापतिग। जहं दर देव अनूप ॥
सयन करहि दरबार तहं। सत्त सहस अस भूप ॥ छं० ॥ ८६५ ॥
गत चिजाम राजन उठ्यौ। सीष दई कविचंद ॥
निसा जाम इक नींद किय। प्रात उठ्यौ जैचंद ॥ छं० ॥ ८६६ ॥
प्रापत चंद कविंद तहं। जहं ढिल्ली चहुआन ॥
जगि बरदाइ बर बुलै। बरबंधन सुरतान ॥ छं० ॥ ८६७ ॥

इधर पृथ्वीराज का सामंत मंडली सहित सभा में बैठना, प्रस्तुत सामंतों के नाम और गुप्तचर का सब चरित्र चरच कर जैचन्द से जा कहना।

भुजंगी ॥ सभा सोभियं राज चहुआन पासं। बिठे सूर सामंत रस बीर लासं।
सभा सोभियं सूर सूरं प्रमानं। तहां बैठियं सूर चौहान ध्यानं ॥
छं० ॥ ८६८ ॥

तहां बैठियं राइ गोयंद जूपं। जिनै मुग्गली बंध दिय हथ्थ भूपं ॥
भरं दाहिमौ सोभि नरसिंघ बीरं। जिनै पत्ति बंध्यौ षुरासान मीरं॥
छं० ॥ ८६९ ॥
सभा सोभियं सूर कूरंभरायं। जिनै आस हांसीपुरं जीति पायं॥
सभा मझ्झ सारंग चालुक्क मंड्यौ। मनों लाल मोतीन में मेर छंड्यौ॥
छं० ॥ ८७० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सभा सोभियं सूर बघ्घेलरायं। जिनै सेहरो स्वामि कित्ती चढ़ायं॥
रजं राज पामार लष्षं सलष्षं। जिनै बंधि गोरी सबै सेन भष्षं॥
छं० ॥ ८७१ ॥

सभा सोभियं राइ आल्हन्न रायं। जिनै ठेलि ठट्टा समुद्दं बहायं॥
सभा बीरचंदं सुचंदं पुंडीरं। जिनें प्रांन रुक्कं सरद्दं गँभीरं॥
छं० ॥ ८७२ ॥

सभा सोभियं बीर भोहां प्रकारं। जिनैं देवगिरि सीस झिल्लै दुधारं॥
सभा धावरं सोभि नारेन बीरं। जिनै भंजियं मीर सुरतान तीरं॥
छं० ॥ ८७३ ॥

सभा सोभियं जावलो जल्ह कातं। जिनै पेदि सब्बं ससी पल्ह जंतं॥
सबै सूर सामंत सभ में बिराजैं। जिनै देषि ससि सरद की भांति लाजैं॥
छं० ॥ ८७४ ॥

चरं संभरी कथ्य जंपै ननिंदं। इदं बैठियं भासि प्रथमीपुरंदं॥
ढुरै कनक सीसं सु चोरं जु दीसं। मनों उग्गयौ भान प्राची प्रदीसं॥
छं० ॥ ८७५ ॥

[1]सुनी पंग बीरं अबी रंति मिंटी। करे जोर जम्मं रह्यौ भान ब्यंटी॥
बरं बोलहीं दिष्ष विहु जन्न एकं। जनों आरजं बार बर इंद मेकं॥
छं० ॥ ८७६ ॥

अरिल्ल ॥ गयौ दूत सब देषि चरित्तं। पंग अग्गि जंपी बर तत्तं॥
भट्ट जानि जिन भुल्लो चंदं। बैठो जेम प्रथीपुर इंदं॥छं०॥८७७॥

दूत के बचन सुनकर जैचन्द का प्रसन्न होना और शिकारी तैयारी होने की आज्ञा देना।

कवित्त ॥ श्रवन सुनिग कमधज्ज। पंग फुल्ल्यौ बर भासं॥
प्रात फुल्लि सतपत्त। संझ कामोद प्रकासं॥
[2]बार रूप भौ बीर। भीम दुस्सासन बारं॥
द्रोन कज्ज हनुमान। कन्ह गोधन्न उपारं॥

(१) ए. कृ. को.-सुनी पंग वीरं अपं रीति मिट्टी"। (२) मो.-वीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड्डरं चंद चंदहति सम। दंद पुब्ब भंजन सु दह ॥
आषेट हुकम दै पुब्ब दिसि। चंद समप्पन दान बह ॥ छं० ॥ ८७८ ॥

जैचन्द की शिकारी सजनई की शोभा वर्णन।

आषेटक पहुपंग। बाजि नीसान प्रथम बर ॥
हिंदवान अरु असुर। गयरु सज्जीय [1]धरद्धर ॥
दुतिय बज्जि नीसान। सबै भूत हैबर सब्बर ॥
मग्ग अट्ठ पय वांम। राज कमंधज्जह समभर ॥
बज्जै निसांन न्रपतिय चढ़ौ। पंच सबद बाजिच बजि ॥
सामंत सूर बर भरि भरिय। करह न दंद नरिंद कजि ॥ छं० ॥ ८७९ ॥

दूहा ॥ आषेटक पहु पंग क्रत। चढ़िग लष्ष बजि तूर ॥
आज बीर कमधज्ज सौ। इंद फुनिंद न सूर ॥ छं० ॥ ८८० ॥

क्रम्यौ राज जैचंद बर। जहां चंद प्रथिराज ॥
सुभि ग्रहगन मध्ये सवित। अदभुत चरित विराज ॥ छं० ॥ ८८१ ॥

कवित्त ॥ नग सु तुल्य चलि नाग। मान सेना कितीस तर ॥
मनहु काम कर सज्जि। रंग चवरंग [2]चंग चर ॥
अदभुत चरित विराज। नग्ग जर बंग विराजत ॥
अंतरष्षि हय [3]हथ्थि। मनहुँ पातुर तिय साजत ॥
दरबार उतरि भयभीर भर। सकल सोक बर इंद कौं ॥
जैचंद राज विजपाल [4]सुअ। विदा करन कविचंद कौं ॥
छं० ॥ ८८२ ॥

वृद्ध नाराच ॥ चल्यौ नरिंद पंग राइ बाजि बीर सद्दयं।
अनेक राइ राज सज्जि द्दि [5]जान नद्दयं ॥
कनंक हथ्थ पच सुलक्कीन कंब्बियं।
मनों समंद उड्डि सोर बीर बोम्फ क्रम्मियं ॥ छं० ॥ ८८३ ॥

(१) मो. भर पर। (२) मो.-चंक, चक्क।
(३) मो.-हाच्छि। (४) ए. कृ. को.-तन।
(५) को.-जाम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुपंग अंग बंधि बीर बार कंद्रपं कयं।
रजंत अग्ग एक सौ ज दंति पंति चोरयं ॥
तिमद्द रद्द हेम पट्ट घट्ट थट्ट फेरयं।
सुभंत छत्र राज सीस हेम दंड मेरयं ॥ छं० ॥ ८८४ ॥

धनुष्षधार मीर बंद दुट्ट (1)अप्प दिष्षयं।
रमंत तत्त बेध साम बान ते विसष्षयं ॥
सुदुंद सज्ज हथ्थ रथ्थ पट्ट पोत चल्लयं।
मनों करीय नाग अग्ग पट्ट कांम षुल्लयं ॥ छं० ॥ ८८५ ॥

दसं दिसान कंपवै निसान राज संभरैं।
सुन्यौ जू सूर लोक वाम पुंज तेज विफ्फुरैं ॥
.... छं० ॥ ८८६ ॥

जैचंद का सुखासन (तामजाम) पर सवार होना।

दूहा ॥ मिसि बज्जहिं गंगा बरन। दान कवी पति सेव ॥
चढ़त सुषासन संमुहौ। जहं सामंत न्टपेव ॥छं० ॥ ८८७ ॥

पंगराज का मंत्री को बुलाकर शिकार की तैयारी बंद करके कबि की विदाई के विषय में सलाह करना।

कवित्त ॥ बोलि सु मंचिय पंग। मुक्कि आषेट राइ बल ॥
भट्ट कित्ति चल चित्त। भट्ट निस चलरु कित्ति चल ॥
भेद मंच दिय दान। दंद दालिद कवि भग्गिय ॥
सवें मनोरथ भग्गि। सुष्ष आसुष्ष विलग्गिय ॥
जाचै न दून हिंदून दुह। कै कवि भग्गौ कंक बल ॥
संभारै बाल संभरि धनी। जम्म चंद भग्गौ जलल ॥ छं० ॥ ८८८ ॥
*चिंति चित्त कमधज्ज। दान बेताल सु विक्रम ॥
अद्ध लष्ष मन कनक। अंक मेटन बिधि अक्रम ॥

(१) ए. अप्प।

* यह छन्द मो. प्रति में नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुत्तिय मन इकतीस । दुरद मदगंध प्रकासं ॥
वारंगन इकतीस । रूप लावन्य निवासं ॥
मंत्री सुमंच इह कुमति किय । बरजि राइ जैचंद कौं ॥
पन कितौ कहरि क्रप्पन्न होइ । इतिक विदा सजि चंद कौं ॥
छं० ॥ ८८९ ॥

मंत्री सुमंत का अपनी अनुमति देना ।

हनूफाल ॥ सो मंच मंचिय तब्ब । करि अरज फेरि सु कब्ब ॥
दहतीय सजि गजराज । सुनि गगन मंद अवाज ॥ छं० ॥ ८९० ॥
सम इंद्र आसन जूप । चलि नाग नाग सरूप ॥
घन चुअत मद परि अंत । गिरि राज झरनि झरंत ॥ छं० ॥ ८९१ ॥
जटि कनक [1]काज सुरंग । सम बसति सोभ दुरंग ॥
सत उभय तुरिय सु तेज । दुअ अंस वंस विरेज ॥ छं० ॥ ८९२ ॥
फरकंत चातुर जेम । असमान सज्जत तेम ॥
नग जीन करित अमोल । उत साज सज्जित तोल ॥ छं० ॥ ८९३ ॥
लगि लाग लेत ललित्त । गति अंतरिच्छ कलित्त ॥
रस उभै बानी हेम । सतमन्न तुल्लिय तेम ॥ छं० ॥ ८९४ ॥
द्वै लाष पूरि प्रमान । गिरिराज उदर समान ॥
मनि रतन मोल अनंत । गनि होइ गनिकन अंत ॥
छं० ॥ ८९५ ॥
फिरि पुरष कीनीं कोस । सकलाति फिरगरु तोस ॥
जरबाफ कसब जराव । उद्दोत करन प्रभाव ॥ छं० ॥ ८९६ ॥
बहु जात चामर रूप । सिर ढुरै जानि सुभूप ॥
जिन चरचि बहुत सुवास । कलि कसब सवित उहास ॥
छं० ॥ ८९७ ॥
जै चंद इंद विराज । है गै सुघन घन साज ॥
कविचंद कारन इंद । सम दैन चलि जैचंद ॥ छं० ॥ ८९८ ॥

(१) ए. कृ. को.-साज ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविचन्द की विदाई के सामान का वर्णन।

कवित्त ॥ तीस सज्जि गजराज। गगन गर जार मंद करि ॥
दै सैं चपल तुरंग। चरन लग्गै धरनि पर ॥
हाटक षोडस बानि। मनह सत केवल तोलिय ॥
रतन अमोलक मुत्ति। परषि ते गंठहि बंधिय ॥
सकलाति फिरँग चामर चरचि। कसब सबे विधि जर जरिय ॥
जैचंद इंद वित विविध लै। विदा करन चलि चंद किय ॥
छं० ॥ ८९९ ॥

दूहा ॥ तीस करिय मुत्तिय सघन। दै सैं तुरंग बनाय ॥
द्रव्य बदर बहु संग लिय। भट्ट समंषन जाय ॥ छं० ॥ ९०० ॥

पंगराज के चलते समय असकुन होना।

कवित्त ॥ भट्ट समंषन जात। राज नट बिंद प्रबंधी ॥
सीस बैंन नहि चित्त। मझ्झ हक्कत सालष्षी ॥
सिभू (२)भेस अनंत। रुंड माला रचि गुंथी ॥
षंड षंड अंगार। मच जूरी तत रुंथी ॥
उष्षई कंभ षग मग्ग करि। गिद्धि पष फुनि फुनि करै ॥
जंनय चोट धाराहरह। रस प्रसिद्ध बीरह भिरै ॥ छं० ॥ ९०१ ॥

दूहा ॥ कुरलंती त्रिहिय गयन। चंच विलग्गौ सप्प ॥
वाम अंग मंजार भय। चक्रित चिंत नृप अप्प ॥ छं० ॥ ९०२ ॥

पंगराज का चिंता करके कहना कि जिस प्रकार से शत्रु हाथ आवे सो करो।

बोलि सवन्नी सुनि श्रवन। सुर अन भग अकथ्थ ॥
धन्नि ध्रंम भरि कित्ति जन। ज्यों अरि आवै हथ्थ ॥ छं० ॥ ९०३॥

(१) मो.-चित। (२) मो.-सिभ सेस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्रियों की सलाह से पंगराज का कवि के डेरे पर जाना।

भुजंगी॥ ननं मांनियं जानियं देव भंती। गयं [1]चंद न्त्रप ग्रेह देषै बिरंती॥
गतं सायरं साम गंभीर दालं। सदं जा प्रवालं पवनं [2]प्रचालं॥
छं० ॥ ९०४ ॥

बलं तेज केली ननं जाहि कालं। सुरज्जं समं पाइ संचार आलं॥
बरं लावनं हंदियं दिग्ग पालं। बलीनं बलीनं भरं विभ्र बालं॥
छं० ॥ ९०५ ॥

ब्रह्मंडं विजै थंभ करि हथ्थ बज्जं। पगं जानि पारथ्थ भारथ्थ सज्जं॥
दिट्ठी असु दिट्ठी सबैं सथ्थ रारी। धरी सथ्थ नंदी संसारी सुभारी॥
छं० ॥ ९०६ ॥

दिषी पंग जैचंद इंदं परष्षी। तहांईय आसीस बरदाय भष्षी॥
छं० ॥ ९०७ ॥

जैचन्द का शहर कोतवाल रावण को सेना सहित साथ में लेना।

कवित्त॥ जीत मत्त पहुपंग। बोलि राठौर सुबीरं॥
सास दान करि भेद। डंड बंध्यौ अरि मीरं॥
छल बल कल संग्रहै। दई दुरजन दावानल॥
भट्ट थान आहुट्टि। पंग बुट्टै सारह जल॥
चतुरंग लच्छि लीजै सघन। दै दुबाह घायन चढ़हि॥
सब सथ्थ सथ्थ प्रथिराज बल। सुनौ सुभर सो बुड्डि इहि॥
छं० ॥ ९०८ ॥

रावण के साथ में जाने वाले योद्धाओं का वर्णन।

(१) ए. कृ. को.-गयंदंच। (२) ए. कृ. को.-प्रवालं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ अगि मोकलि रावन न्टपति । हक्कार्यौ कबिराज ॥
भट्ट हट्ट मोकलि सु बर । कंक बिसाहन काज ॥ छं० ॥ ९०९ ॥

कवित्त ॥ मेर उच्चवहि वथ्थ । देय तन वज्र पात कर ॥
भषै च्यार अज इक्क । नेर सम क्रंति देह धर ॥
हठिय अग्ग रिन परहि । स्वामि स्वामित्तन चुक्कहि ॥
पर नायि पर मुष्ष धर । धरा धीर सु रष्षहि ॥
कर चलहि अप्प पय अचल बर । रावन सथ्थ सु मंडि लिय ॥
दिष्षिय सु भंति इह कव्वि करि । मनु सरद अभ्भ ससि कुंडलिय ॥
छं० ॥ ९१० ॥

रावण का कवि को जैचन्द की अवाई की सूचना देकर नाका जा बांधना ।

दूहा ॥ सवैं क्रूर ग्रह पंग बर । एकादस न्टप राह ॥
दुष्ट मंच दानह करिग । भट्ट सुनंदन राहु ॥ छं० ॥ ९११ ॥
गयौ रावन मैलान बर । कपट चित्त मुह मिट्ठ ॥
दान समप्पन भट्ट कौं । चित बंधन बर दिट्ठ ॥ छं० ॥ ९१२ ॥

पंगराज के पहुंचने पर कवि का उसे सादर आसन देना और उसका सुयश पढ़ना ।

कवित्त गयौ रावन मेल्हान । चंद बरदिया (१)समष्पन
देषि सिंघासन सथ्यो । पास पारस्स इंद्र जनु ॥
कवि आदर बहु कियौ । देषि कनवज्ज मुकट मनि ॥
इह ढिल्लिय सुर दत्त । बियौ नहि गनै तुभ्भ गिनि ॥
थिरु रहै थवा इत वज्र कर । छंडि सिकारहि छिन कुरहि ॥
(२)जिहि असिय लष्ष पलानि यहि । पान देहि दिढ हथ्थ गहि ॥
छं० ॥ ९१३ ॥

(१) मो.-समप्पन । (२) मो. निसि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[illegible]

पान देह दिढ़ हथ्थ । परिस पावास पंग बर ॥
जा अग्गै अस तेज । तेज कंपहि जु नाग नर ॥
देषि प्रथीपुर उदै । सूर सरनै गौ तंतक ॥
बर कंपै द्रिगपाल । चित्त चंचल गत्तौ धक ॥
अघ हरन किरन किरनौ प्रचंड । देखि दून गति देषियै ॥
अप्पि बर पान पारस सुगत । दुती परस सो लिष्पियै
छं० ॥ ९१४ ॥

पान धार दै पान । भट्ट त्रिप जानि मंडि कर ॥
नर नरिंद जैचंद । जग्गि सम मंडि देव बर ॥
इंद्र मौज जच्चन [1]विसा । सह होय जचाइयं ॥
। .... । .... ॥
[2]चय हथ्थ लंक उप्पर न्रपति । तरन हथ्थ कमधज्ज कहि ॥
आदि करि देव दानव सुरह । बलि जांच्यो बावन जुजहि ॥
छं० ॥ ९१५ ॥

खवास वेष धारी पृथ्वीराज का जैचन्द को बाएं हाथ से पान देना और पंगराज का उसे अंगीकार न करना।

दूहा ॥ पान देइ दिढ हथ्थ गहि । बंर करि हथ्थ दिवंक ॥
मनु रोहिनि सो मिलिग ज्यों । बीय उदित्त मयंक ॥ छं० ॥ ९१६ ॥
लिय सु पान भुअ राज रुष । मुखप्रसन्न [3]मन रोस ॥
दिषत न्रपति चल चिंत किय । पुब्ब प्रसन्नौ दोस ॥ छं० ॥ ९१७ ॥
करै न कर प्रथिराज तर । धरै न कर जैचंद ॥
उभय नयन अंकुरि परिग । ज्यों जुग मत्त गयंद ॥ छं० ॥ ९१८ ॥
[4]सुनि तमोर पट्टिय सुकर । मुष उतं करि दिठ बंक ॥

(१) मो. विसाल । (२) मो.-त्रय लोक हथ्थं लंक उद्धर नृपति ।
(३) ए.कृ. को.-मुन मुत । (४) ए. कृ. को.-मुनि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनु छैलनि कुलटा मिलै। बहुत दिवस [1]रस षंक ॥ छं० ॥ ९१९॥
राज पान जब अप्पही। पंग न मंडै हथ्थ ॥
रोस न्रपति जब चिंति मन। कही चंद तब गथ्थ॥ छं० ॥९२०॥

कवि का श्लोक पढ़ कर जैचन्द को शान्त करना।

श्लोक॥ तुलसीयं बिप्र हस्तेषु। विभूति श्रिय जोगिनां॥
तांबूलं चंडि हस्तेषु। चयो दानेव आदरं॥ छं० ॥ ९२१॥

जैचन्द का पान अंगीकार करना परंतु पृथ्वीराज का ठेल कर पान देना।

चौपाई॥ भट्ट जानि करि मंग्यौ राय। उहि तंमोर दियौ न्रप चाइ॥
ठट्ठ पानि दियौ नित ठेलि। मनों वज्रपति वज्रह मेलि॥छं०॥९२२॥

पृथ्वीराज का जैचंद के हाथ में नख गड़ा देना।

दूहा॥ पानि पान करिकें दियौ। कमधज्जह प्रथिराज॥
चल्यौ रकत कर पल्लवनि। ग्रह्यौ कुलिंगन बाज॥ छं० ॥ ९२३॥
कर चंपे न्रप तास कर सारंग दिड्ड सुचंग॥
पानि प्रथीपति दब्बियौ। श्रोन चल्यौ नष संग॥ छं० ॥ ९२४॥

इस घटना से जैचंद का चित्त चंचल हो उठना।

कवित्त॥ पान धार दै पान। दिट्ठ आरुहिय बंक बर॥
एक थान दै सूर। तेज दिष्यौ कि सूर बर॥
[2]बिहुन हथ्थ बिभ्भरै। लाज संकर गर बंधिय॥
अंष वह दिषि भट्ट। बीर भंजन सु बीर पिय॥
मिश्चल सु चित्त चहुआन कौ। चित निश्चल नन पंग बर॥
लग्गौ सु पान न्रप वज्र सर। पान धरे बर बज्र [3]सर॥
छं० ॥ ९२५॥
दूहा॥ प्रथमहि सभा परष्ययौ। पानधार नहि भट्ट॥
न्रप कवियान सपत्तयौ। तब परषयौ निपट्ट॥ छं० ॥ ९२६।

(१) मो.-रिस। (२) ए. कृ. को. बहुन। (३) ए. कृ. को.-कर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुअ बंकी किय पंग नृप। अप्पि हथ्थ तंमोर ॥
मनहु बज्रपति बज्र धर। सब अप्पौ तिहि जोर छं० ॥ ९२७ ॥

जैचन्द का महलों में आकर मंत्री से कहना कि कवि के साथ का खवास पृथ्वीराज है उसको जैसे बने पकड़ो।

कवित्त ॥ गहि कर पान सु राज। फिर्यौ निज पंग ग्रेह वर ॥
सोमंचिक परधान। बोल उच्चरिय क्रोध भर ॥
गहौ राज संभरि नरेस। सामंत अंत रिन ॥
मिटै बाल उर आस। आस जीवन सु मिटै तिन ॥
बोलिय सुमिच कमधज्ज बर। छग्गर भट्ट न पृथु गहन ॥
भृत भ्रात तात सामंत सुत। छलन काज पट्टिय पहन।
छं० ॥ ९२८ ॥

मंत्री का कहना कि पृथ्वीराज खवास कभी न बनेगा यह सब आपके चिढ़ाने को किया गया है।

दूहा ॥ छलन काज पट्टिय पह न। मिलिन छ्म्म दरबार ॥
पान भट्ट पृथु किम ग्रहै। नृप बर सोचि विचार छं० ॥ ९२९ ॥
कवित्त ॥ नृप बर सोचि विचारि। संग सुझ्झै बरदाइय ॥
अवधि बसीठ रु भट्ट। बंस नृप लगै बुराइय ॥
इह कलि कित्ति नरिंद। रज्ज अपजस हुअ ढंकन ॥
दिष्टमान बिनसिहै। लग्गि अंमर कुल अंकन ॥
जुग्गिनि समथ्थ जौ इन हुए। तौ सब भ्रत गिनि मारियै ॥
रिधि मंच राइ राजन सुनौं। विप्र भट्ट नन टारियै ॥ छं० ॥ ९३० ॥

जैचन्द का कवि को बुला कर पूछना कि सच कहो तुम्हारे साथ पृथ्वीराज है या नहीं।

चौपाई ॥ टरिय राज उर क्रोध विचारिय। बरदाई मिथ्या न उचारिय ॥
फिरि जैचंद पिथ्थ यह आयौ। निज कर [1]रावन भट्ट बुलायौ ॥
छं० ॥ ९३१ ॥

(१) मो.-राव सुभट्ट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ अप्पि पान करि मान । नाथ कनवज्ज अप्प कर ॥
दिल्लीवै चहुआन । तास बर भट्ट सिद्धि हर ॥
अमर नाग नर लोक । जास गुन ग्यान ध्यान बर ॥
आदि बंध मुनिवर । प्रबंध षट भाष भाव भर ॥
नव रस पुरान नव दून जुत । चतुर देह चातुर सु तप ॥
रष्यौ न राज अप्रछन्न कवि । कहत तत्त कनवज्ज न्रप ॥
छं० ॥ ९३२ ॥

चौपाई ॥ बोलो भट्ट सु मत्ति विचार । किन सिर आतपत्र आधार ॥
जौ प्रथु ह्वै तौ हनों ततच्छिन । नहिं तुम्है गै देउ अप्पि घन ॥
छं० ॥ ९३३ ॥

कवि चंद का स्वीकार करना कि पृथ्वीराज हैं और साथ वाले सब सामंतों का नाम ग्राम वर्णन करना।

दूहा ॥ पद्धरि छंद सु चंद कहि । सिंघासन प्रथिराज ॥
कन्ह सु दिष्षिन जन्ह गिरि । निड्डर वाम विराज छं० ॥ ९३४ ॥

पद्धरी ॥ बैठो [1]सुभट्ट आरोहि पिट्ठ । तिन ढिगह सोभ इंद्रह बयट्ठ ॥
छत्रह उतंग चामर बइंभ । कष्णह सरूप फुल्लीत संभ ॥ छं० ॥ ९३५ ॥
डोलीय पंच आरोहि तिथ्थ । तिन मझ्झ बयठ निड्डुर समथ्थ ॥
बल कन्ह देषि पट्टी अरोहि । कौरवह घत्ति कन्नह समोहि ॥
छं० ॥ ९३६ ॥

पुच्छै सु बत्त कनवज्ज राइ । देषेव रूप प्रज्जलित लाइ ॥
दामित्त रूप सामंत देषि । लिन्नौ सु ध्रंम जम्मह स लेष ॥
छं० ॥ ९३७ ॥

कन्हा नरिंद चहुआन बंक । पट्टनह राव मार्‍यौ जु कंक ॥
गोयंद राव गहिलौत नेस । जिन दोय फेर गज्जन गहेस ॥ छं० ॥ ९३८ ॥
जैतह पमार अब्बू नरेस । छत्रह धरंत सथ्थै असेस ॥
पंडियौ राय बंध्योति साष । बलबंधि साह दस सहस लाष ॥
छं० ॥ ९३९ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-दिया। (२) ए. कृ. को.-जु।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरसिंघ नाम बर सिंघ बीर । तिन हथ्थ जुट्टि षचवट्ट नीर ॥
वालुका राव सथ्थौ सु पंग । संभलिय राय झाला प्रसंग ॥
छं० ॥ ९४० ॥

बिंझ राज देषि चहुआन रूप । जिन भरिय लष्ष द्रब्यान कूप ॥
परमाल देषि चंदेल राज । बंधिया राय द्रब्यान काज ॥
छं० ॥ ९४१ ॥

बारड़ सु राव अधिपत्ति सेन । तिन चढ़त लग्गि वह उड्डि रेन ॥
अचलेस नाम भट्टी सु संध । मुरधरह राइ पडिहार बंध ॥
छं० ॥ ९४२ ॥

परिहार पीप सामंत सुद्द । पतिसाह बंधि लीयौ अरुद्द ॥
निढुरह राय अवनी अकंप । गजनेस राइ ज्वाला तलंप ॥ छं० ॥ ९४३ ॥

तोंवर पहार अवनी सु जोर । बंधयौ राइ कन्ना समोरि ॥
कूरंभ राव पज्जून बीर । सड्डये जेन इक लष्ष मीर ॥ छं० ॥ ९४४ ॥

नरसिंघ एक नागौर पत्ति । रिनधीर राज लीयें जुगत्ति ॥
परमार सलष जालौर राह । जिन बंधि लिद्ध गजनेस साहि ॥
छं० ॥ ९४५ ॥

कंगुरौ देस दल लीन ढाहि । कीनी सु एक षिच वट्ट राह ॥
परमार धीर रिनधीर सथ्थ । मेवात बंधि मुग्गल अकथ्थ ॥
छं० ॥ ९४६ ॥

जद्दव सु जाम षीची प्रसंग । लीनें सु देस अवनी पुलिंग ॥
हाहुलिराय कंगुर नरेस । लीन्ह सु सत्त पतिसाह देस ॥
छं० ॥ ९४७ ॥

जंघार भीम उड्गन सु सोह । रिन जुद्ध बीर संकर अरोह ॥
सारन राइ मोरी भुआल । कट्ठिया राइ जिन किद्ध काल ॥
छं० ॥ ९४८ ॥

तेजलह डोड परिहार रान । भिड़ एक तेक बंदै सु भान ॥
गुजरात धनी सागौत गौर । आरनि सु माहि बंधंत मौर ॥
छं० ॥ ९४९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिहार एक तारन सुरष्प । कर सलय लोय सेना समष्प ॥
वारड़ सुधीर सहसौ करन्न । वरियाति वीस हुअ छिन्न भिन्न ॥
छं० ॥ ९५० ॥

चहुआन एक अततोइ रूप । कालिंज राइ बंध्यौ अनूप ॥
बलिराइ एक भारथ्थ भीम । कूरंभ राव चंपेव सीम ॥ छं० ॥ ९५१ ॥
भौंहां चंदेल जिन बंध राज । पानीय पंथ प्रथिराज काज ॥
गुज्जरह राम धूवत समान । मारयौ जेन आलील षान ॥
छं० ॥ ९५२ ॥

चंदेल माल यट्टा अरोह । साधियौ बीर जनचंद मोह ॥
रस सूर रोह मेरह समान । जिन हेम प्रबत लिय जोर पान ॥
छं० ॥ ९५३ ॥

मंडलीक राव वघघह अरोह । आवद्ध एक चिस्सूल सोह ॥
पूरन्न माल षल हंड षेत । जिन सूर दीन सत अस्वमेत ॥ छं० ॥ ९५४ ॥
धावरह धीर सामंत राज । जिन जीव एक प्रथिराज काज ॥
हाडौ हमीर सथ्थें कुलाह । बंधयौ जेन भिरि पातिसाहि ॥ छं० ॥ ९५५ ॥
रावत्त राम सामंत सूर । जिन द्रिग्ग देषि नट्टे करूर ॥
जावलौ जल्ह रिनतूर बज्जि । लिय बंधि जेन इकतीस रज्जि ॥
छं० ॥ ९५६ ॥

चालुक एक भारो जु सोह । लीयें जु फिरै इक सहस लोह ॥
बग्गरी बघघ षेता षँगार । रिनथंभ तेन करि मार मार ॥ ९५७ ॥
दाहिम सुभट्ट संग्राम धाम । मारयौ वरुन करुना सु काम ॥
मंडलीक (१)कंकवे सेन चंद । बंधयौ जेन भीमह नरिंद ॥ छं० ॥ ९५८ ॥
परमार सूर सामल नरेस । रिन संभ्रू अटल दल अस्सहेस ॥
परमार कनक पछ्वान लीन । प्रथिराज ग्राम दस सहस दीन ॥
छं० ॥ ९५९ ॥

संजम हराय वर जुद्ध नेस । षोडस्स दान दिय वाल वेस ॥
चाटौ जु टांक बैठौ नरिंदं । देषंत जानि धुअ रूप इंद ॥ छं० ॥ ९६० ॥

(१) ए. कृ. को.-कंसवे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विरसन्न इसौ चाटंत सेन। रिन भुवत सेन उड्डंत रेन॥
साषुलौ सहस मलनेत बंध। दस सहस ग्राम पट्टंति बंध॥
छं०॥ ९६१॥

विक्रमादित्य कमधज्ज राइ। जिन देस भोग लीयात नाय॥
भुज राज सुभट दो सहस सेन। बंधिया राइ अवधूत तेन॥
छं०॥ ९६२॥

मोरीति सुभट सादल नरिंद। कंठिया राव वासीति हिंद॥
बघेल सूर सोहंत सेन। लिन्नीय षग्ग बल दष्षि नेन॥
छं०॥ ९६३॥

लंगरिय राव सथ्थह भुआल। अध देस दिढ व्याघात काल॥
पुंडीर चंद सोहंत सथ्थ। किरनाल नेच कीनी अकथ्थ॥
छं०॥ ९६४॥

परिहार सुअन तारन सु सोह। देषंत अछर करि मोह सोह॥
केहरिय मल्हनासह विधूस। बधनौर वास सत जाइ भूस॥
छं०॥ ९६५॥

हरिदेव सहस सामंत रूप। जद्दव सु जाज अवनी अकूप॥
उहठी गंभीर सोहंत एह। रज रीति रूप रष्षीति रेह॥
छं०॥ ९६६॥

सामंत राइ पुहकर समथ्थ। जिन लीन दिल्लि जोधान कथ्थ॥
दाहिमौ कन्ह समियान गट्ठ। बंधि लिय राय सोक तल बट्ठ॥
छं०॥ ९६७॥

चहुआन पंचाइन सहस सेन। चलंत सथ्थ उड्डंत रेन॥
परिहार इसौ रिनधीर सोह। रिन चढ़ै जन्म जालिंम लोह॥
छं०॥ ९६८॥

सामंत सित्त पंगुर नरेस। तिन पिठ्ठ सूर सत्तह कहेस॥
तिन पिठ्ठ सूर सुभटह हजार। रिन जुड़ करंतह मार मार॥
छं०॥ ९६९॥

सामंत एक बुंदह सु जत्त। उठ्ठंत बीर घरि एक सत्त॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुध करहि सूर धड़ मचहिं सार। मस्तकहिं पिठ्ठ करै मार मार॥
छं० ॥ ९७० ॥

पंगुरै देषि चित चक्रित नाथ। असमान सीस लगि ढिल्ल नाथ॥
डेरौ सुदीन चयक्कोस माहिं। जे लिए रखत उत्तंग साह॥
छं० ॥ ९७१ ॥

अनेक कमल अनेक रूप। रह वास थान तल उंच सूप॥
कनवज्जराय तब उठ्ठि चल्लि। रायान राय साषा न हल्ल॥छं०॥९७२॥

दस लष्ष रष्षि चौकी भुआल। इंद्र रूप दरस सेवंत काल॥
प्रथिराज प्रात कीनौ पयान। दस लाष वींटि परि परस (१)भान॥
छं० ॥ ९७३ ॥

जैचन्द का हुक्म देना कि पड़ाव घेर लिया जाय, पृथ्वीराज जाने न पावे।

कवित्त॥ कहि सब कनवज राइ। भज्जि प्रथिराज जाइ जिन॥
असिय लष्ष हय दलहं। षबरि किज्जै सु षिन्नषिन॥
हसिय सव्व सामंत। रोस प्रथिराज उहासै॥
मिलिय सेन रघुबंस। चंद तब भट्ट प्रगासै॥
इह दैत्य रूप जुध मंगिहै। भाज नीक परतह बहै॥
कनवज्ज नाथ मन चिंत इह। जुध अनेक बल संग्रहै॥छं०॥९७४॥

पहचान्यौ जयचंद। इहत दिल्लेसुर लिष्यौ॥
नहिय चंड उनिहार। दुसह दारुन तन दिष्यौ॥
कर संझौ करिवार। कहै कनवज्ज मुकुटमनि॥
हय गय दल पष्षरहु। भाजि प्रथिराज जाइ जिन॥
इत्तनौ सोच भुअपति उठ्यौ। सुनि नरिंद किन्नौ न भौ॥
सामंत सूर हसि राज सों। कहै भलौ रजपूत भौ॥ छं० ॥ ९७५॥

इधर सामंतों सहित पृथ्वीराज का कमरें कस कर तैयार होना।

(१) ए. कृ. को.-पासिमांन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनि धनि धनि सामंत। सूर कहि राज इंद बर ॥
निरषि हरषि कर करषि। परषि कनवज्ज नाथ तर ॥
निरभै सोम सिंगार। करन कलहंत मंत मन ॥
नरनि नाह कन्हह कमंध। उच्चऱ्यौ बीर तन ॥
आभासि अवर आनन सुभट। थट्ट मंति चट्ट चलन ॥
करि साथ तुरंगम सथ्थ भर। कसि ठट्ट अप अप बलन ॥
छं० ॥ ९७६ ॥

दोनों ओर के बीरों की तैयारियां करना।

रसावला ॥ उठ्यौ पंग राजी, रवी तेज साजी। उठे बीर सूरं, छछोह सभीरं ॥
छं० ॥ ९७७ ॥
भृंगीराज राजी, सुराजी विराजी। चिह्नं पास साजी, अरीदीस गाजी॥
छं० ॥ ९७८ ॥
दोऊ रोस जग्गी, प्रलै जानि अग्गी। .... ॥छं०॥९७९॥

पृथ्वीराज के सामंतों की तैयारियां और उनका उत्तेज।

कवित्त॥ कंठ सूर दाहिम्म। अंग लज्जी सुवास तन ॥
लष्य मद्धि दुह प्रगटि। अग्गि उठ्ठी सूरं घन ॥
चंद वीय ज्यों बट्ट। अग्गि लग्गी दरसानी ॥
हय [1]हय हय उच्चार। गहग्गह सुनिये बानी ॥
लंगरीराव [2]लोहा लंहारी। चावौगौ चहुआन दल ॥
बर भरी बीर जित्तन अरिय। [3]मुगति पंथ षुल्लिय सु बिल ॥
छं० ॥ ९८० ॥

कवित्त ॥ पञ्चैसर प्रथिराज। राज सोमेसर संभरि ॥
लंगी लंगरराइ। राय संजम सुअ जंबरि ॥
वारा झायह भुल्लि। बघ्घ उठ्यौ लोहानह ॥
पारड्डौ भुलि धार। मूल चंप्यौ चहुआनह ॥
बर बीर बराहां उप्परैं। केहरि बढ्ढारी बढन ॥
इक चष्प क्रन्न कर पग्ग इक। सावकं मुष लग्गा रहन ॥छं०॥९८१॥

(१) मो. गय। (२) ए. कृ. को.-लोहों। (३) ए. कृ. को.-मुकति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अद्धा आसन अद्ध। राज अद्धा तंमूलं ॥
अद्धा देस सुवेस। एक आदर संमूलं ॥
पंगानै दीवान। रहै न रष्यौ चलि सथ्थह ॥
काया तुंग सु कन्ह। देव साह्यौ भुज वथ्थह ॥
गुरवार रत्ति गोचर कियौ। प्रात प्रगट्टत छुट्टयौ ॥
दरबार राव पहुपंग दल। चौकी चौरंग जुट्टयौ ॥ छं० ॥ ९८२ ॥

पंग दल की तैय्यारी और लंगरीराय का पंगदल को परास्त करके राजमहल में पैठ पड़ना।

पद्धरी ॥ जुध जुटन लंग उट्ठयौ भीम। मानों कि पथ्थ गो ग्रहन सीम ॥
संभरिय राज सों करि जुहार। चय सहस सुभट सजि लोह सार ॥
छं० ॥ ९८३ ॥

मद गंध करी च्यालीस सोह। गज फूल कनक रूप्पह अरोह ॥
मानेज सहसमल सथ्थ व्योम। धुंधरिग [1]भान इह दिग्ग धोम ॥
छं० ॥ ९८४ ॥

हम्मीर कनक राठौर बंस। चाल्यौ कि कृष्ण मारनह कंस ॥
हरि सिद्ध जाइ कीनौं प्रनाम। दुअ सहस महुर दुज दिन्न दाम ॥
छं० ॥ ९८५ ॥

दरबार जाइ दरबान रुक्कि। सत सहस पौरि दरवान मुक्कि ॥
लष तीन महल चौकीन हल्लि। परधान सुमिच तब तेग झल्लि ॥
छं० ॥ ९८६ ॥

हहकारि सीस दर गयौ लंग। हल हलिय सुभट देषंत पंग ॥
उंचे अवास जाली सु भंति। दस पंच महल मंडी जु पंत ॥
छं० ॥ ९८७ ॥

तिन मद्धि पंग देषै सु भट्ट। अन्नेक अवर मिलि एक थट्ट ॥
घम घम निसान चय लष्य बज्जि। सिंधूर राग करनाल सज्जि ॥
छं० ॥ ९८८ ॥

गुजरत्त सद्द जंगी तबल्ल। मानो कि भृम्म करिहै जु मल्ल ॥

(१) मो.-वांम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनेक गिद्धि परि ठौर ठौर । जंबुक कुलाह जिय नद्द सोर ॥
छं० ॥ ९८९ ॥

चौसठ्ठि रुद्द तुंवर [1]अनेय । रंजि रंभ रही टगटगी लेय ॥
संजोगि मात पुच्छै सु जोइ । आचिज्ज एह यह कवन लोइ ॥
छं० ॥ ९९० ॥

अद्धा सु अंग इह कहां दिठ्ठ । तरवारि झपट पारंत रिठ्ठ ॥
मुह मुह चमक्कि दामिनि झपट्टि । त्रय लष्ष घटा लीनी लपट्टि ॥
छं० ॥ ९९१ ॥

लंगरीराय के आधे धड़ का पराक्रम वर्णन और उसका शान्त होना ।

अनेक छिछ आकास उट्ठि । जैचंद यट्ट रहे निट्ठ निट्ठ ॥
विहयंत तेग [2]वाहत अछेग । उड्डंत सीस धर परत वेग ॥ छं० ॥ ९९२ ॥
निरषंत सीस धर मड्डि पंग । दुअ लष्ष सेन करि मान भंग ॥
हल हले सहर दुनियां अकंप । वाडलिय लग्गि [3]उड्डंत लंप ॥
छं० ॥ ९९३ ॥

जयचंद घरनि सब निरषि व्योम । धुंधरिग धराधर उड्डि धोम ॥
उड्डंत बीर झपटंत सेन । लरषरहि परहि उड्डंत तेन ॥
छं० ॥ ९९४ ॥

निकल्यौ महौदधि जन्न बीर । मुहु लेय चिन्न उतर्‍यौ नीर ॥
लेयंत सीस हर हार कीन । बर्‍यौ सु मिच अपछरन लीन ॥
छं० ॥ ९९५ ॥

किलकंत सठ्ठि रुधि पीय पूर । सम्हौ जु जुद्ध जे किये सूर ॥
अंतह अलुभझ पग बेरि बाहि । धर क्षार धार भर पारि याहि ॥
छं० ॥ ९९६ ॥

षहचर उड़ंत पल धापि लेय । आवंत रथ्थ अनेक केय ॥
चालंत रुधिर सलिता प्रवेन । तिन मध्य चली अनेक सेन ॥
छं० ॥ ९९७ ॥

(१) ए. कृ. को.-अनेक । (२) ए. कृ. को.-चाहत । (३) को.-उड्डंत ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पट्टनह हट्ट बिच चलिय नद्द। मारीय सु करि वहता सु मद्द॥
चौसट्ठि पत्त बुदबुदा चल्लि। अंगुली भिंग सल सलत सल्लि॥
छं०॥ ९९८॥

भस्सुंड करी मग रहबि बुड्डि। कमलनि सुभंत सर मड्डि रुड्डि॥
उप्परह भौंह सो भंवर तुंड। अपछर अनेक तट जानि झुंड॥
छं०॥ ९९९॥

घुप्परिय कछ सेवाल केस। लंगरिय किड्ड क्रीड़ा नरेस॥
ऐसौ सु जुद्ध करिहै न कोउ। चय लष्य मान आवट्ट सोउ॥
छं०॥ १०००॥

घर मड्डि रुधिर पलचर अमेय। घर छोड़ि सरन हर सिद्धि लेय॥
तुट्टौ अकास धरनिय पलट्टि। गिद्धनी सलित उप्पर झपट्टि॥
छं०॥ १००१॥

संभले राज प्रथिराज सेन। करि है न जुद्ध करुना सु केन॥
संजम्मराय सुत सकल संभ। गम्मयौ दरिद्र रुद्र तनौ रंभ॥
छं०॥ १००२॥

किलकिका नाल छुट्टी अग्राज। लै चली लंग पर महल साज॥
दस कोस परे गोला रनक्कि। परि महल कोट गज्जी धमक्कि॥
छं०॥ १००३॥

संजमह सुअन लै चली रंभ। सब लोक मड्डि हूओ अचंभ॥
.... । ....॥ छं०॥ १००४॥

जैचन्द के तीन हजार मुख्य योद्धा, मंत्री पुत्र भानेज और भाई आदि का मारा जाना।

कवित्त॥ परे तुरिय सत सहस। परे मदगंध सहस्सह॥
परे षेत षंगार। पऱ्यौ मंची सु धरंनह॥
परे सुभट चय लष्य। परे लंगा चहुआनह॥
परि सहसो भानेज। परे चय सहस सबानह॥
परि धनी सेन किय उद्ध गति। रुधिर कन्ति कनवज बही॥
घर मड्डि परी गिद्धनि अछरि। सु कविचंद ऐसी कही॥ छं०॥ १००५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंगरीराय का पराक्रम वर्णन।

एह जुड्ड लंगरिय। आय चौकी सम जुथ्यौ॥
एक अंग लंगरिय। तीन लष्यह हय पुथ्यौ॥
सार सार उछरंत। परी गिद्धा रव भष्षन॥
गज वाजिच निहाय। वज्जि उत्तराधि दष्षिन॥
इम भिऱ्यौ लंग पंगह अनी। हाय हाय मुष फुट्टयौ॥
हल हलत सेन असि लष्य दल। चौकी चौरँग जुट्टयौ॥
छं० ॥ १००६ ॥

मंची राव सुमंत। हथ्थ विंटचौ सचलंतौ॥
दुज्जाई दिल्लीप कोप। ओप कुंजरनि बढ़ंतौ॥
हालो हल्ल कनवज्ज। मंझ केहरि कूकंदा॥
संजमराव कुमार। लोह लग्गा लूसंदा॥
चहुआन महोवै जुड हुअ। ग्रेहा गिद्ध उड़ाइयां॥
रन भंग रावनै वर विरद। लंगै लोह उचाइयां॥
छं० ॥ १००७॥

एक कहै अप्पान। एक कहि बंधि दिवाना॥
बंधौ बंधन हार। मार लद्धी सिर कन्हा॥
बाबारौ बर तुंग। षग्ग [1]साहै बिरुझाना॥
लंगी लंगरराव। अद्ध राजी चहुआना॥
उरतान ढंकि कमधज्ज दल। संजम राव समुद्द हुअ॥
प्रारंभ जुद्ध जुद्धे सबल। चलि चलि बीर भुजंग [2]भुअ॥
छं० ॥ १००८ ॥

पृथ्वीराज का धैर्य्य।

जौ पच्छिम दिसि उयै। पुब्ब अंथवै दिनंकर॥
धर भर फनि फन मुरहि। गवरि परहरै जु संकर॥
ब्रह्म वेद नह चवै। अन्नित जुधिष्टिर जौ बुल्लय॥
जौ सायर जल छिलै। मेर [3]मरयादह डुल्लय॥

(१) ए. कृ. को.-सोहै। (२) ए. कृ. को.-हुअ। (३) मो.-मरयादा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतनौय होय कविचंद कहि। इह इत्तौ षिन में करहि ॥
तुम हीन दीन सब चक्कवै। प्रथीराज उर नहिं डरहि॥
छं० ॥ १००९ ॥

लै संजोगि न्टप षेत। जाइ ठठ्ठौ एकत बर ॥
तब लगि पंग कनवज्ज। वीर चढ्ढै संमुह धर॥
रावन रन [1]उत्तर्‌यौ। सामि फौजह अधिकारिय ॥
मीर कटक मोकलहु। ताम रुक्यौ झुकि भारिय ॥
बनवीर रान सिंहा सुभर। मुक्कल्यौ वेगि चतुरंग दल ॥
सज्जे सुबंध चहुआन भर। .... ॥ छं० ॥ १०१० ॥

अपनी सब सेना के सहित रावण का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना ।

तब झुकि पंग नरिंद। दिष्टि कीनी झुकि अग्गी ॥
जिम सुकिया दुति बचन। दूत टारिय अँषि अग्गी ॥
ज्यों जोगिंद सुष इंद। रंभ टारै तप भग्गै ॥
झुकिय कित्त [2]कुटवार। पंग रावै द्रव मग्गै ॥
भयभीत न्टपति रावन्न तजि। तजै धनज जोगिंद तजि ॥
यों बढ्यौ राज चहुआन पर। अप्प सेन नलवारि रजि॥
छं० ॥ १०११ ॥

रावण की फौज का चौतरफा नाकेबंदी करना ।

अप सेन सम नरिंद। लरन धायौ रावन बर ॥
काल जाल जम जाल। हथ्थ कीने जु अग्गि गिरि ॥
[3]सजि सनाह जमदाह। कूह मंची जु अत्ति बर ॥
सुनि सु कान रव पाल। वीर संभरि निसान घुरि ॥
फिरि पर्‌यौ सेन इन उप्परहि। सो ओपम कविचंद कहि ॥
फट्टी फवज्ज चावद्दिसह। गंग कूल बक्कारियहि ॥ छं० ॥ १०१२ ॥

---

(१) ए. कृ. को.-उच्चर्‌यौ। (२) ए. कृ. को.-कोटवार।
(३) मो.-सजि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रावण का पराक्रम और उसकी वीरता का वर्णन।

फिऱ्यौ हथ्थ जमजाल। ग्रहन अति चार पच्छ फिरि॥
नीर थंभ थह फिऱ्यौ। तुट्टि जल फिरै मीन हरि॥
पवन फेर पित फिरै। बीर ज्यों फिरै हकाऱ्यौ॥
फिरै हथ्थ बर रोस। पेम ज्यों फिरै संभाऱ्यौ॥
भज्जई हथ्थ हथ्थीअ बल। करिस नेंन रत्त रुधिर॥
जानै कि दट्ठ जम की विसल। चुबै जानि मंगलति झर॥
छं० ॥ १०१३॥

मोरि हथ्थ बिट्ठारि। काल बिट्ठारि भवन कौं॥
तिरस जानि रस मुट्ठि। चल्यौ मोरन्न पवन कौं॥
काम अंध दिष्षै न कोइ। सोच सुद्धित मदपानिय॥
राज मद्द राजनिय। ग्यान सुद्दिन सुर पानिय॥
करि दैषि मंत रावन बलिय। उप्पर हरि धावै लरन॥
ओपम्म चंद जंपै विसल। तत्त मंत कबहूं करन॥ छं० ॥ १०१४॥

ज्यों कलंक पर हरै। न्हान गंगा तिथ्थह बग॥
अध्रम ध्रम्म परहरै। अजस पर हरै सुजस मग॥
माह चवथ ससि तजै। देवध्रम तजै सूद्र नर॥
चंप भवर गुन तजै। भोग जिम तजै रिष्य गुर॥
इम मुक्कि करिय रावन बलिय। राज सेन उप्पर पऱ्यौ॥
जमजाल काल हथ्थी सु बर। ता पच्छै क्रम क्रम घऱ्यौ॥
छं० ॥ १०१५॥

रावण के पीछे जैचन्द का सहायक सेना भेजना और स्वयं अपनी तैयारी करना।

लरत राज रावन्न। पंग पच्छै फवज्ज फटि॥
सूर किरन फट्टंत। बान छुट्टंत पथ्थ फटि॥

(१) ए. कृ. को.-वचै। (२) ए. कृ. को.-सोरन्न।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है गै मत्त मतंग। [1]दंद दंतिन धर छाइय॥
ज्यौं बद्दल इल उपरि। छांह चल्लै सो धाइय॥
ता पछै पंग अप्पन चढ़न। सुनि रावन आहत जुध॥
जाने कि राज चहुआन को। इसौ दरसि भग्गौ जु बँध॥
छं०॥ १०१६॥

चांद्रायन॥ इह ओपम कविचंद। पिष्षि [2]तन रन्नियं॥
सोज राज संमेत। जपेषय तन्नियं॥ छं०॥ १०१७॥

अरिल्ल॥ सूर करी मधि डार कहंकह। कहै प्रथिराजन लेउ गहंगह॥
.... । .... ॥ छं०॥ १०१८॥

पंगराज की ओर से मतवाले हाथियों का झुकाया जाना।

दूहा॥ छूटत दंतिन संकरनि। सो मत मंत उतंग॥
गात गिरव्वर नाग गति। [3]चालत सोभ सुअंग॥ छं०॥ १०१९॥
सत्त सूर सोभत सजत। अभंग सेन भर राज॥
गहन राज प्रथिराज कौं। सेन सुरंगह साज॥ छं०॥ १०२०॥

पंगराज और पंगनी सेना का क्रोध।

विअष्परी॥ देषियहि राजं रस सूर भल्लै। सूर रज बीर सारोस हल्लै॥
वेंन आकास सर लल्ल कल्लै। देषियहिं पंगुरें नेंन लल्लै॥
छं०॥ १०२१॥

दोनों सेनाओं का परस्पर मिलना।

कवित्त॥ मिले सूर बज्जे अघात। [4]सस्त्र बज्जे अस्त्रन सों॥
ज्यौं ताल ताल बज्जए। जीभ चिय मग उलाल सों॥
गजर बज्जि घरियार। लोह भय अंति अघानं॥
बजि त्रिघात उतंग। सस्त्र घल्लै सुर पानं॥

(१) ए. कृ. को.- दंत। (२) ए. कृ. को.-रन, को.-तर।
(३) ए. कृ. को.-चालति। (४) ए. कृ. को.-संस्त्र वज्जे जु सस्त्र सों।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चहुआन आन कमधज्ज करि। पाइ मंडि आघाट दुज ॥
हक्कै पहक्क कायर परै। देव रूप आहत्त सुज ॥ छं० ॥ १०२२ ॥
तेग बहत मंडली। रोष जनु करी तुंग बर ॥
पूर जूह आवंत। रुधिर रन लोह लग्गि पर ॥
स्वामिध्रंम सों लच्छि। मेर हथ लच्छि न ग्राहै ॥
रगत पील मक्षि गिरत। तिनह में मोती बाहै ॥
भेदै न कमल जल सुबर बर। कमल पत्र छिंटन्न लग ॥
हवि गात तेग आतुर बहै। रुधिर छिंट छुट्टै न जुग ॥छं०॥१०२३॥

पंगराज का सेना को प्रगट आदेश देना।

दूहा ॥ तब हंकारौ कीय न्रप। चढ़ि मच्छर बर जीव ॥
जनु प्रजरंती अग्गि महि। लै करि ढारिय घीव ॥छं०॥१०२४॥
मंचिय जुद्ध अनुद्ध सुनि। अरियन ग्रहन न सार ॥
रे चहुआन न जाइ घर। पंग पिटारै मार ॥ छं० ॥ १०२५ ॥
इह कहंत पंगह चल्यौ। आइस ले सब सेन ॥
लेहु लेहु इम उच्चरिय। जन जन मुष मुष बेंन ॥ छं० ॥ १०२६ ॥

पृथ्वीराज का कविचंद से पूछना कि जैचन्द को पंगु क्यों कहते हैं।

*पुच्छि नरिंद सु चंद सौं। तुम बरदाय कविंद ॥
सब पंगुर किहि विधि कहत। यह जयचंद सु इंद ॥
छं० ॥ १०२७ ॥

कवि का कहना कि इस का पूरा उपनाम दलपंगुरा है क्यों कि उसका दलबल अचल है।

कवित्त ॥ जैसे नर पंगुरो। विनु सु (१)भ्रंगुरी न हल्लहि ॥
आधारित भ्रंगरी। हरू वह वत्त न चल्लहि ॥
तैषे रा जयचंद। असंष दल पार न पायौ ॥

*छन्द १०२७ और १०२८ मो. प्राति में नहीं है। (१) को -डंगुरी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाल,क इक सर सरित । दलन हरबल्ल अघायौ ॥
दिसि उभय गंग जमुना सु नदि । अद्ध कोस दल तब बह्यौ ॥
कविचंद कहै जैचंद न्रप । तातें दल पंगुर कह्यौ ॥ छं० ॥ १०२८ ॥

जैचन्द की सेना का मिलना और पृथ्वीराज का पड़ाव पर घेरा जाना।

चंद अग्गित झरि बीर । विषय झाला सु प्रजलि चलि ॥
नेंन दंत आरुहिज । मत्त दंती सु दंत घुलि ॥
तम तामस उक्करै । बीर नीसान धुनंके ॥
बीर सद्द सुनि क्रन्न । मद्द गजराज झुनंके ॥
विंटये सूर सामंत न्रप । रावन सब न्रप मग्ग गसि ॥
असि लष्य न्रपति पहुपंग दल । सूर [1]चिंत नन मंत बसि ॥ छं० ॥ १०२९ ॥

दूहा ॥ ग्रसि रावन चिहु मग्ग रहि । सर प्राहार प्रमान ॥
ग्रहन राज चहुआन कौं । पंग वज्जि नीसान ॥ छं० ॥ १०३० ॥
साम सनाह कनंक वर । सलष सु लष्य प्रमान ॥
मग रष्यन रजपूत बट । अरि मुक्यौ न सु थान ॥ छं० ॥ १०३१ ॥

कवित्त ॥ रावन दल दलमलत । हलत भग्गेव सुभर अरि ॥
भग्गें दल बोहिथ्थ । बीर भाटी पहार फिरि ॥
घरी एक आवत्त । झंझ बज्जी जुध जग्गी ॥
जनु कि महिष मेंमंत । अत्त विभ्रम बल लग्गी ॥
भर सिंघ पंच पचाइनह । तजन राज रज राज भिय ॥
पांवार धन्नि धावर धनी । मग्ग षग्ग मग भीर लिय ॥ छं० ॥ १०३२ ॥

जैचन्द का मुसलमानी सेना को आज्ञा देना कि पृथ्वीराज को पकड़ो।

चौपाई ॥ वज्जे सुनवि पंग सुर रूपं । चक्रित चित्त भूपाल सु भूपं ॥
[2]पुकारे बर उन न्रिप अंगं । अरि गौ भंजि षान सुर मंगं ॥
छं० ॥ १०३३ ॥

(१) मो.-चित्त । (२) ए. कृ. को.-पुक्कारी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्धरी ॥ अग्गें सुपंग बज्जौर बीर। फुरमान अप्पि अरि गहन मीर ॥
बंधि सिलह कन्ह उभ्भौ करूर। मनु धाइ छुट्टि [1]भद्दव तिसूर ॥
छं० ॥ १०३४ ॥

सन्नाह सज्जि गोरी पहार। जानियै सूर सायर अपार ॥
हज्जार सित्त सजि सुभर मीर। मिलि पंग हेत बर वीर तीर ॥
छं० ॥ १०३५ ॥

जानियै बीर बीरन्न जूर। कंद्रप्प कित्ति जानीय सूर ॥
मनु हक्क सज्जि सजि सिलह थान। बहकरै बीर दस कंध मान ॥
छं० ॥ १०३६ ॥

हज्जार साठि सजि षरे मीर। कलहंस मान कसि अंग बीर ॥
हय गय पलान पहुपंग षुल्लि। देषंत किरनि बर किरनि डुल्लि ॥
छं० ॥ १०३७ ॥

हलहलत होत गजराज छुट्टि। आयस्स आनि धन पंग लुट्टि ॥
सन्नाह सज्जि सोभैं सु भूप। द्रप्पन झलक्कि प्रतिब्यंब रूप ॥
छं० ॥ १०३८ ॥

सोभैं अनेक आकार बीर। मानो मड्डि ह्रद्ध सोभैं सरीर ॥
पष्षरै भीर हय भीर जंपि। गति डुलै प्रबत प्रव्वत्त सु कंपि ॥
छं० ॥ १०३९ ॥

बर हुकम पंग न्रिप इहय दीन। टिड्डीस अन्न सम गवन कीन ॥
बिहुरे सेन कमधज्ज षान। ग्रहन भौ ग्रहन प्रथिराज भान ॥
छं० ॥ १०४० ॥

उग्रहन बत्त करतार हथ्थ। रुक्कवन धाइ चहुआन सथ्थ ॥
छं० ॥ १०४१ ॥

युद्ध-रँग राते सेना समूह में कवि का नव रस की सूचना देना।

कलाकल ॥ नचि नौरस थान अदभ्भुत बीर। भयौ रस रुद्र कवै कवि भौर ॥

(१) मो.-भद्दव कि.।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भैभंति भयानक कायर कंपि। करुना रस केलि कलामुष जंपि॥
छं० ॥ १०४२ ॥
तहां रस संकर द्वै अरि संच। उच्यौ अदबुद्द महारस नंचि॥
लियौ रस निड्डर बीभछ अंग। दिष्यौ चहुआन सु सेनह पंग॥
छं० ॥ १०४३ ॥
हस्यौ रस हास सलष्य पवार। बरं बरझालि सु बीर दुधार॥
भयौ रस सत्त मुगत्ति य मग्ग। सुधारहि काम चलै जस अग्ग॥
छं० ॥ १०४४ ॥
रचैइ सिंगार बरब्बर रंभ। झुल्यौ रस बीर षगं षग अंभ॥
.... । .... छं० ॥ १०४५ ॥

दूहा ॥ कल किंचित किंचित करहि। सुरग सुधारहि मग्ग॥
भंजौ लज्ज मुकत्ति बर। ग्रहि भग्गीह न दग्ग॥ छं० ॥ १०४६ ॥

पृथ्वीराज का सामंतों से कहना कि तुम लाेग जरा भीर सम्हालो तो तब तक मैं कन्नौज नगर की शोभा भी देख लूं।

सकल सूर सामंत सम। बर बुल्यौ प्रथिराज॥
जौ रुक्कौ षिन षेत में। देषौं नगर विराज॥ छं० ॥ १०४७ ॥

सामंतों का कहना कि हम तो यहां सब कुछ करें परंतु आपको अकेले कैसे छोड़ें।

कवित्त ॥ हम रुक्कैं अरि जूह। स्वामि कौ तजै इकल्लै॥
कै रषि दुज्जन पढन। स्वामि मुक्कियै न ढिल्लै॥
नारिंघनि करि देव। ताप तप जांहि देव बर॥
सुनहि राज प्रथिराज। दिठ्ठ बंधीय अप्प कर॥
सो चलै संग छाया रुक्किय। कै छांह स्वामि मुक्कौ भिरन॥
चहुआन नयर दिष्पन करै। दुरन देव सोभै किरन॥
छं० ॥ १०४८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कन्ह का रिस होकर कहना कि यदि तुम्हें ऐसाही कहना था तो हम को साथ ही क्यों लाए।

दूहा ॥ कहै सब्ब सामंत सौं। एकल्लौ बिन बग्ग ॥
दइ विधिना फिरि मैं लई। जाय परस्सो गंग ॥ छं० ॥ १०४९ ॥
बोल्यौ कन्ह अयान न्रप। रे मत मंड समथ्थ ॥
जो मुक्कै सत सथ्थियन। तौ कित लायौ सथ्थ ॥ छं० ॥ १०५० ॥
जौ मुक्कौं सत सथ्थियन। तौ संभरि कुल लज्ज ॥
दिष्षन करि कनवज्ज कौं। फिर संमुह मरनज्ज ॥ छं० ॥ १०५१ ॥

परन्तु पृथ्वीराज का किसी की बात न मान कर चला जाना।

चल्यौ नयर दिष्षन करन। तजि सामंत सुलच्छि ॥
गौ दिष्षन दिष्षन करन। चित्त मनोरथ बंछि ॥ छं० ॥ १०५२ ॥
कुंभ चित्त चहुआन कौ। चीकट बुंद न अभ्भ ॥
जल भय पंगह ना भिदै। ज्यौं जल चीकट कुंभ ॥ छं० ॥ १०५३ ॥

युद्ध के बाजों की आवाज सुनकर कन्नौज नगर की स्त्रियों का वीर कौतूहल देखने के लिये अटारियों पर आ बैठना।

गाथा ॥ दस सुंदरि गहि बालं। विसालं सुष्ष अलनि मिलि अलियं ॥
सुनि बज्जे पहुपंग। चरितं सो भुल्लियं बाला ॥ छं० ॥ १०५४ ॥
चढ़ि गवष्षन बाला। सु विसालं जोइ राजियं राजं ॥
थक्के विमान स्हरं। सुभंतिय वाय कंसजियं ॥ छं० ॥ १०५५ ॥

दूहा ॥ देषन लच्छिन न्रपति बर। गो दच्छिन क्रत बेर ॥
अवन राज चहुआन बढि। पंग घरंघर वेर ॥ छं० ॥ १०५६ ॥

जैचन्द का स्वयं चढ़ाई करना।

जो पत्ती पत मरन की। बोलि सहेट प्रमत्त ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम सीलत बंचे सु बट। न्त्रिप तिह मिलहि न मत्त ॥छं०॥१०५७॥
इह कहंत पंगह चल्यौ। बजि निसान सरभेर ॥
सकल सूर सामंत सम। लेहि नरिंदह घेरि ॥ छं० ॥ १०५८ ॥
कवित्त ॥ पञ्चान्यौ जयचंद। गिरद सुरपति आ कंप्यौ ॥
असिय लष्य तोषार। भार फनपति फन तंप्यौ ॥
सोरह सहस निसान। भयौ कुहराव भूअ भर ॥
घरी मद्धि तिहुलोक। नाग सुर देव नाम नर ॥
पाइक्क धनुद्धर को गिनै। असी सहस गेंवर गुरहि ॥
पंगुरौ कहै सामंत सम। लेहु राज जीवत घरहि ॥ छं० ॥ १०५९ ॥
हय गय दल धसमसहि। सेस सलसलहि सलक्कहि ॥
सहस नयन झलझलहि। रैंन पल पूरि पलक्कहि ॥
तरनि किरन मूंदयौ। मान द्रगपाल स छुट्टिहि ॥
वसंत पवन जिम पत्त। अरिय इम होइ सु यट्टहि ॥
पायान राय जैचंद कौ। विगरि पिष्य कुन अंगमै ॥
हय लार बहति भाजंत थल। पंक चहुट्टै चक्कवै ॥ छं० ॥ १०६० ॥

जैचन्द की चढ़ाई का ओज वर्णन।

विजय नरिंदह तनौ। रोस करि इम धरि चल्ल्यौ ॥
इम हम षुर षुंदत। एम पायालह (१)डुल्ल्यौ ॥
एम नाद उछऱ्यौ। एम सुर इंद गयंदहि ॥
एम कुलाहल भयौ। एम मुद्दित रवि इंदहि ॥
दल असिय लष्य पष्षर परहि। इम भुअन आकंप भय ॥
पंगुरौ चल्यौ कविचंद कहि। बिन प्रथिराजह को सहय ॥
छं० ॥ १०६१ ॥
एक एक अनुसरिग। अंग दह लष्षि कोटि नर ॥
धानुक धर को गिनै। लष्य पचासक हैंवर ॥
सहस हस्ति चवसट्ठि। गरुअ गाजंत महाभर ॥
समुद सयन उलटंत। डरहिं पन्नग सुर आसुर ॥

(१) को. झुल्यौ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैचंद राइ चालंत दल। चक्क सूर पुज्जन चलिग॥
गढ़ गिरिग्ग जलथल मिलिग। इत्ते सब दिष्षिय जुरिग॥
छं०॥ १०६२॥

पंगराज की सेना के हाथियों का वर्णन।

मत्त गत्त सन भिरिग। हट्ट पट्टन सह तुट्टिग॥
कच्छि कच्छि जुरि भीर। घंट घंटा हरि फुट्टिग॥
बाल बाल आलुझ्झि। करन सम करन लागि पग॥
मेंगल मद्गल चलंत। यार हस्ती सन चंपिग॥
जैचंद राय चालंत दल। गिरिवर कंपहि चंद कहि॥
देषंत राइ भंभरि रहहि। दंति पंति दस कोस लहि॥
छं०॥ १०६३॥

दूहा॥ जल थल मिलि दुअ कंप हुअ। टुटि सरवर जल मूल॥
देषि सपन सामंत बल। छलन कि वामन फूल॥ छं०॥ १०६४॥

दल पंगुरे के दल बद्दल की चढ़ाई का आतंक वर्णन।

बाघा॥ दह दिसा थर थिथरंत। दिगपाल दसन करंत॥
उरवी न धारत सेस। ससि होत फेर दिनेस॥ छं०॥ १०६५॥
धरधुंध रज छदि व्योम। सद नास थिर गहि गोम॥
कठ कमठ पीठ कमंठ। थल विथल फिरत न कंठ॥ छं०॥ १०६६॥
धुरि मेर मुरि मुरि जात। सर झुकि सबित उपात॥
मम चढ़हु पंग नरिंद। हरहरत गगन गुरिंद॥ छं०॥ १०६७॥
हरि सीस रज बरषंत। द्रिग उरग मझ्झि परंत॥
हुंकार प्रगटित अग्गि। चिय नयन प्रजलि विलग्गि॥ छं०॥ १०६८॥
ससि तवैं अमिय पतंत। [1]अबि बुंद सिंह जगंत॥
बबकारि [2]गज्जत सद्द। विड्डुरत धवल दुरद्द॥ छं०॥ १०६९॥
सिव फिरत तिन सँग जूर। नन चढ़हु पंगह सूर॥
ब्रह्मंड नष अरु एक। इल मिलत होत समेक॥ छं०॥ १०७०॥

(१) ए. कृ. को.-आप।　　(२) ए. कृ. को.-सज्जत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गन सेंन विथुरित भूमि। घन मिटत नासा घूम ॥
जल प्रलय लोपत लीह। धर बिथरि होत अगीह ॥ छं० ॥ १०७१ ॥
भुअ परत अच्छरि व्योम। नीसान गज्जत गोम ॥
तुम चढ़त जैचंद राज। तिहुलोक ढरति अवाज ॥ छं० ॥ १०७२ ॥

कवित्त ॥ डर द्रुग्गम षरहरहि। अढर ढरि परहि गरुअ गिरि ॥
चिन बन घन टूटंत। धरनि धसमसहि हयनि भर ॥
सर समुंद षरभरहि। डिढह डिढ डाह करक्कहि ॥
कमठ पिट्ठ कलमलहि। पहुमि महि प्रलय पलट्टहि ॥
जयचंद पयानौ संभरत। फुनि ब्रहमंड विछुट्टि हय ॥
मम चलहि मचलि मम चलि मचलि। चलहित प्रलय पलट्टि हय ॥
छं० ॥ १०७३ ॥

दूहा ॥ साजत पंग नरिंद कहुं। विनय स छोनिय बाग ॥
मुगता ग्रह सुक कवित कह। [1]जलथल थग्ग अमाग ॥छं०॥१०७४॥

कवित्त ॥ दल राजन मिलि विभजि। अट्ठ दिग्गं [2]करवर कर ॥
कर धरंत द्रिग अट्ठ। [3]डट्ठ वाराह मुरहि हरि ॥
हरि वराह दिढ दट्ठ। करतु फनवै फन टारहि ॥
फनिवै फनह टरंत। कमठ षोपरि जल भारहि ॥
भारहि सुजल्ल पुप्फरि उछरि। उच्छरि है पायाल जल ॥
जल होत होय जगतै प्रलौ। समु चढ़ि चढ़ि जैचंद दल ॥
छं० ॥ १०७५ ॥

समस्त सेना में पृथ्वीराज को पकड़ लेने के लिये हल्ला होना।

दूहा ॥ मढरि मढरि छोनी सु चिय। सत करि छिनक सबल्ल ॥
छत्रपति करि जीरन भषिग। तूं नित नितह नवल्ल ॥छं०॥१०७६॥
धम धमंकि धुकि निष्ष महि। रमहि न गंग सु तट्ट ॥
गहहि चंपि चहुआन कों। भव भरि मुहित सु वट्ट ॥छं०॥१०७७॥

(१) ए. कृ. को.-"जल थल मग्ग अमग्ग"।
(२) ए. कृ. को.-करु। (३) मो.-मट्ठ, को.-झट्ट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौ टामंक दिसि विदिस कहु । बहु पष्पर वहु राव ॥
मनु अकाल टिड्डिय सघन । पव्वय छुट्टि पहाव ॥छं०॥ १०७८ ॥

कन्नौज सेना के अश्वारोहियों का तेज और ओज वर्णन ।

भुजंगी ॥ प्रवाहंत ताजी न [1]लज्जीय हारे। मनों रब्बि रथ्थं सु आने प्रहारे॥
जिके स्वामि संग्राम झल्लै दुधारं। तिनं ओपमा क्यों बदी जै छिकारे॥
छं० ॥ १०७९ ॥

तिनं साहियं बग्ग गट्टे न लारा। मनों आवधं हथ्थ वज्जंत तारा॥
हयं छट्टियं तेज ठट्टे जिकारा। सयं सज्जियं सूर सव्वे [2]करारा ॥
छं० ॥ १०८० ॥

सरे पाषरे प्रान जे मार वारा। तिके कंध नामै नहीं लोह भारा॥
तहां घाट औघट्ट फंदै निनारा। तिनं कंठ झूमंत गज गाह भारा॥
छं० ॥ १०८१ ॥

दिसा राह लाहौर बज्जै तुरक्की। तिनं धावतें धूर दीसै षुरक्की ॥
दिसं पच्छिमं भूमि जानै न थक्की। तिनं साथ [3]सिंधी चलै नाव जक्की॥
छं० ॥ १०८२ ॥

पवंनं न पंषी न अंषी मनक्की। तिके सास कट्टै न चंपै न नक्की॥
तिनं राग चंपै न सुद्धी डरक्की। मनों ओपमा उंच आए धरक्की ॥
छं० ॥ १०८३ ॥

अरब्बी विदेसी लरै लोह लच्छी। गनै कोनं कंठील कंठील कच्छी॥
धरं षेत षुंदंत रुंदंत बाजी। [4]हरंवी हए एक तत्तार ताजी ॥
छं० ॥ १०८४ ॥

तिके पंडु ए पंगुरे राइ साजे। मनों दुअन दल तुच्छ देषंत लाजे॥
इसौ एह आपुब्ब कविचंद पिष्यौ। तिनं रब्बि दुजराज सम तेज दिष्यौ॥
छं० ॥ १०८५ ॥

डरं डंबरी रेन अप्पै न पारं। [5]अषीनं पषीनं सषीनं निहारं ॥

(१) ए. कृ. को.-लाजी अहारे।
(२) ए. कृ. को.-तुषारा। (३) ए. कृ. को.-सिंधं।
(४) ए. कृ.-हेरंवी हए एक ताजी तत्तारी। (५) ए. कृ. को.-अषीनं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तहां कौन सामंत राजं न ¹ठट्ठै। मनों मेर उत्तंग हस्ती न चट्ठै॥
छं० ॥ १०८६ ॥

मुषं जोव जोवं भरं भूप भारे। ²तिनं काम कनवज्ज मझ्झं पधारे॥
छं० ॥ १०८७ ॥

दूहा ॥ भर हय गय नीसान बहु। इह दिष्षिय सह थान॥
जौ चढ़िजै हर ³दिष्षियै। चिहु दिसि समुद प्रमान॥
छं० ॥ १०८८ ॥

वृद्धनाराज। जहां तहां हयग्गयं निसान घान घुंमरे।
मनों कि मेघ भद्दवा दिसा दिसान धुंमरे॥
चमक्कती सनाह संग वीज तेज विप्फुरै।
मनो कि गंग न्हाय कै किरन्न भान निक्करै॥ छं० ॥ १०८९ ॥
सपष्षरं प्रमान राज बाज राज सोभई।
मनो कि पंष प्रब्बतं सुफेरि इंद लोभई॥
गहग्गहं जु वाजि नाद तेज हथ्थ बिथ्थुरे॥
सुने सबद्द तेज सूर कायरं स विद्दुरे॥ छं० ॥ १०९० ॥

इतने बड़े भारी दलबल का साम्हना करने के लिये पृथ्वीराज की ओर से लंगरी राय का आगे होना।

दूहा ॥ सुनिय सबर दल गंग छिन। लंगा लोह उचाय॥
पंग सेन सम्हौ ⁴फिरिय। बोलि वज्ज विरुझाइ॥ छं० ॥ १०९१ ॥

लंगरी राय का साथ देने वाले अन्य सामंतों के नाम।

कवित्त ॥ लंगा लोह उचाइ। जूह झल्लिय संमुह भिरि॥
दुज्जन सलष पुंडीर। धरै बंधव उप्पर करि॥
तूंअर तमकि ततार। तेग लीनी गढ़ तत्ती॥
बर पुत्र मित्र अचान। भान कूरंभ सुभत्ती॥
सांषुला सूर बंकट भिरं। मोरी केहरि सूर भर॥

(१) ए.-डट्ठै। (२) ए. कृ. को.-फिनं।
(३) मो. दिष्षिकै। (४) ए मो. परिय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहु पंग सेन सम्हौ भिरिग। सु बजि बीर बर विप्पहर ॥
छं० ॥ १०६२ ॥

दोनों सेनाओं का एक दूसरे को प्रचार कर परस्पर मार मचाना।

रसावला ॥ पंग सेनं भिरं। षग्ग षोलं झरं ॥ बीर हक्कं बियं। लोह लग्गी लियं॥
छं० ॥ १०६३ ॥

षग्ग लग्गो झलं। भिन्न रत्तं पलं ॥ बीर हक्के अरी। घाय बज्जं घरी॥
छं० ॥ १०६४ ॥

तुंग बाहं बरं। नंषि वड्डप्फरं ॥ बीर लग्गे भरं। कालते संघरं ॥
छं० ॥ १०६५ ॥

द्रोन नंचं धरी। मार हक्कं परी ॥ कूक बीरं करी। गिद्ध उड्डे डरी॥
छं० ॥ १०६६ ॥

टूक पावं बटं। षग्ग टेकें ठटं ॥ घाइ घुम्मे घनं । मत्तवारे मनं ॥
छं० ॥ १०६७ ॥

कंधनं बंधरं। जंमुषं विड्डुरं ॥ रंभ तारी चसी। सूर पानं हसी॥
छं० ॥ १०६८ ॥

घाव वज्जे घटं। पाइ कै सुब्बटं ॥ अंत तुट्टै बरं। पाइ आलुझ्झरं ॥
छं० ॥ १०६९ ॥

भट्ट ऐसे रजं। तंति बंधे गज्जं। मुगति मग्गे अरी। षग्ग षोली दरी॥
छं० ॥ ११०० ॥

कवित्त ॥ घरी एक आवरत। पंग संघार अरिय पर ॥
लुथ्थि लुथ्थ आहुट्टि। रुद्र रस भयत बीर बर ॥
हय गय नर भर भरिय। पर्‌यौ रन रुद्धि प्रतापं ॥
षग्ग मग्ग अरि हलिय। चलिय धारनि धर आपं ॥
दुअ जन्न भट्ट हक्कारि करि। कमल सेन ज़िन चिंत परि ॥
उच्चरे ब्रह्म ब्रहमंड सों। गोटन कोट गड्डन फिरि ॥ छं० ॥ ११०१ ॥

चौपाई ॥ धाए न्त्रिपत न लोह अघानं। छुट्टक सिद्ध किद्ध विरझ्झानं ॥
संझ्झ किधों घरियारन घाई। चच्चर सी चतुरंग बजाई ॥
छं० ॥ ११०२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सायंकाल होना और सामंतों के स्वामिधर्म की प्रशंसा ।

दूहा ॥ भंजन भीरन जो न्रपति । करिभन भौंर चरंच ॥
सांई बिन जीवन्न कौं । षोहनि करन छ पंच ॥ छं० ११०३ ॥
भान न भग्गौ भान चलि । भान भिरंतह भान ॥
अत्ति समंपिय भान कौं । दै सिर संकर दान ॥ छं० ॥ ११०४ ॥

युद्ध भूमि की वसंत ऋतु से उपमा वर्णन ।

कवित्त ॥ पंग बसंत सो सिग सु । गंध गज मद झरि दानं ॥
सो कायर पत पीप । पत्त झर झर कर पानं ॥
प्रसव चंद सिर आन । मान भिरि भिरि अग्गह हर ॥
लज्जा छोह सुरंग । रंग रंग्यौ सु सुरंग बर ॥
बोलंत घाव भवरिय भवर । कूक कूह कोकिल कलह ॥
फूलिग्ग सुभर अंजह सुरन । पवन त्रिविध सेना सुलह ॥
छं० ॥ ११०५ ॥

अट्ठ अट्ठ अरु अट्ट । एक आगरे पंच बर ॥
षग्ग मग्ग पित षत्त । भरें भर धज्जि जित्त भर ॥
धर पलचर हर रंभ । नंद नरिंदह आघाई ॥
सुगति चिपंग मन मज्जि । अंब पीवन जिहि आई ॥
गोरष्प कित्ति जित्ती सपन । मात पित्त गुर बंध [1]रन ॥
दई साम सुधारन सकल कौं । इन समान कीरति मयन ॥
छं० ॥ ११०६ ॥

अरिल्ल ॥ ठट्ठ के सुसेन पहुपंग अग्गं । छिले लोह सूरं मनं जंग भग्गं ॥
सबै धाय वीरं रहै वीर पासं । न को कंध कट्टै ठढे पास वासं ॥
छं० ॥ ११०७ ॥

पंगराज का पुत्र के तरफ देखना ।

दूहा ॥ पंग प्रपत्तौ पुत्र दिषि । झुकि किय [2]मुष दिसि वाम ॥
बीर मत्त रत्त नयन । उत्तर सु किय प्रनाम ॥ छं० ॥ ११०८ ॥

(१) मो.-रत । (२) ए. कृ. को.-सुख ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंग पुत्र के वचन ।

कवित्त ॥ जोरि हथ्थ फिरि तथ्थ । राज संमुह उच्चारिय ॥
अप्सुर ससुर नर नाग । जुद्ध दिष्यौ न संभारिय ॥
अप्प सथ्थ [1]सुनि सामि । अरिन सम्हौ हक्कारिय ॥
भय भारथ्थ सु जुद्ध । जीह आवै न प्रकारिय ॥
धनि हथ्थ सूर सामंत के । धनि सु हथ्थ पहुपंग भर ॥
घरि तीन मोहि सुझ्झयौ न कछु । सार अगनि अग्गैं सु नर ॥
छं० ॥ ११०९ ॥

नन जित्यौ दल अप्प । दल न भग्गौ चहुआनं ॥
द्वादस हथ्थिन बीच । लुथ्थि पर लुथ्थि समानं ॥
पच्छै दल सुनि स्वामि । लोह छीनं अनलोपं ॥
राज कहन मुकलीय । सामि अवगुन सुनि कोपं ॥
अरि अरिय हथ्थ दह छंडि रन । रन में ढुंढिय पंग बर ॥
हज्जार उभै अप सेन परि । तुच्छ सु परि चहुआन भर ॥ छं० ॥ १११० ॥

पंगराज का क्रोध करके मुसल्मानों को युद्ध करने की आज्ञा देना ।

दूहा ॥ तुच्छ तुच्छ अरि पंग भर । चित्त सपच्छ हस हथ्थ ॥
यों चल्ले चहुआन दल । लच्छि गमाई हथ्थ ॥ छं० ॥ ११११ ॥
[2]झुक्कि पंग दिय हुकम सह । गहन मीर चहुआन ॥
प्रात सु डंबर मझ्झतं । किरन सु छुट्टिय भान ॥ छं० ॥ १११२ ॥

पंगसेना का क्रोध करके पसर करना, उधर पृथ्वीराज का मीन चरित्र में लवलीन होना ।

पद्धरी ॥ बर हुक्कम पंग दुअ दीन दीन । मंची सुमंचि सजि सिलह लीन ॥
अप्पं तुरंग पहुपंग फेरि । भर सुभर लेत घन मझ्झ हेरि ॥
छं० ॥ १११३ ॥

(१) ए. कृ. को.-सुनि । (२) ए. सुक्कि, कृ. को.-झुक्कि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गजराज पंच आकास अन्न ॥ सोभैं सु पंग रत्तैं नयन्न ॥
चिहु मग्ग फट्टि फौजैं सु लीन। चहुआन भूलि बर चरित मीन ॥
छं० ॥ १११४ ॥

दूहा ॥ पिथ्थ चरित्त जु भुल्लि बहु। नट नाटक बहु भूप ॥
दूहा दासि संयोग कौ। हरि चित रत्ती रूप ॥ छं० १११५ ॥
भर भुल्लिय सह चित भुलि। अरि रहि अनि तजि क्रोध ॥
बढि ढिल्ली पहुपंग कौं। छुट्टि सु मंची सोध ॥ १११६ ॥

घोर घमसान युद्ध होना।

रसावला ॥ सुधं मंच बानं। कलं भूर गानं। रसं वट्ट जानं। लहू क्रूर मानं ॥
छं० ॥ १११७ ॥
लषै चट्टि चन्नं। बरं रत्त रन्नं ॥ हयं उट्टि तिन्नं। तुलं बज्र छिन्नं ॥
छं० ॥ १११८ ॥
सुरं सोभ धन्नं। दिवं आस मंनं ॥ हयं बीब तानं। बनं नष्षि धानं ॥
छं० ॥ १११९ ॥
रतं कंध तीनं। षची विब्भरीनं ॥ [1]रठं रंक धन्नं। सुबी सुद्ध मन्नं ॥
छं० ॥ ११२० ॥
उभं झेलि फिन्नं। दतं कट्टि लिन्नं ॥ [2]जवं जानि तीनं। जुधं जीत बीनं ॥
छं० ॥ ११२१ ॥
लजं मेर जंनं। सदाट्टन पंनं ॥ धरं दुद्ध रानं। ससी झल्लि फानं ॥
छं० ॥ ११२२ ॥
सुधं मंच सूरं। भुअं नंषि पूरं ॥ जहं जं पियारी। रुकै पार सारी ॥
छं० ॥ ११२३ ॥

लंगरीराय के तलवार चलाने की प्रशंसा।

दूहा ॥ पारस फिरि पहुपंग दल। दई समानति रुक्कि ॥
जंघारो जोगी बली। बाबारो पग धुक्कि ॥ छं० ॥ ११२४ ॥
पग धुक्किय मुक्किय न मग। लंगा लोह उचाय ॥

(१) मो.-टरं। (२) ए. कृ. को.-बजं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंग समुह संमुह षऱ्यौ। हर बडवा नल धाइ ॥ छं० ॥ ११२५ ॥

जैचंद के मंत्री के हाथ से लंगरी राय का मारा जाना।

भुजंगी ॥ [1]परे धाइ सोमंच मद्देक वारं। बहै षग्ग [2]सोरं गुरज्जं निनारं ॥
इयं नारि सोवान कीह्रक फुट्टै। करै हथ्य छत्तीस आवद्ध छुट्टै ॥
छं० ॥ ११२६ ॥

बरं बीर बीरं तथा बिद्ध पारं। [3]पगं बाजि सो षग्ग झामं किसारं ॥
सहंनाइ में सिंधुश्री राग बज्यौ। लगी लोह [4]में जुद्ध आजुद्ध गज्यौ ॥
छं० ॥ ११२७ ॥

गयं मुष्य हाकी हहक्की करारी। [5]बरं बीर सोमचियं जुद्ध भारी ॥
बढ़ी बाजि सो मुक्कि प्राधान बीरं। लगी धायसो लंगरी बद्ध पीरं ॥
छं० ॥ ११२८ ॥

पलं पंचकं लोकलं किंत्ति भुल्लौ। बरं भारथं लग्गि सो तुंग हल्लौ ॥
बरं लंगरी राइ प्राधान बीरं। भगी सार मा भग्गियं सूर नीरं ॥
छं० ॥ ११२९ ॥

तुटी रंच कीरच्च कीरच भयन्नं। तुटी षग्ग सोवं गिनं उड्डि गेनं ॥
इकं पंच तें पंचकं विद्ध नच्चं। हके तिन्न के सीस सारं सु नच्चं ॥
छं० ॥ ११३० ॥

वरी लंगरी बीर प्राधान बारे। भयौ भार उत्तारनं बंग धारे ॥
छं० ॥ ११३१ ॥

दूहा ॥ पऱ्यौ बीर लंगरि सु बर। जंघारो घन घाइ ॥
सु बर बीर सामंत मिलि। मंचौ सोम उपाइ ॥ छं० ॥ ११३२ ॥

कन्ह का गुरुराम को पृथ्वीराज की खोज में भेजना।

कवित्त ॥ राज गुरू दुज कन्ह। कन्ह मोकलि सु लेन न्टप ॥
स्वामि मल्हि सह सथ्थ। मंच कारज्ज मंच अप ॥

(१) ए. कृ. को.-"परे धाइ सोमंध मत्रीक वारं"।
(२) ए. कृ. को.-गोरं। (३) ए. कृ. को.-षगं।
(४) ए. कृ.-सैं। (५) ए. कृ. को.-ककारी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लै आवौ प्रथिराज । पंग है विहुर सेनं ॥
पष्षवै न पथ आज । भयौ भर अंतर केनं ॥
यों करिग देव दच्छिन सु दुज । दिषि सामंत षटंग बर ॥
संजोग दासि द्वंदह न्रपति । ठठुकि रह्यौ [1]तणि थान नर ॥
छं० ॥ ११३३ ॥

पृथ्वीराज का कन्नौज नगर का निरीक्षण करते हुए गंगा तट पर आना।

दूहा ॥ फिरि राजन कनवज्ज महँ । जानि संजोगिह बत्त ॥
चढ़ि विमान जै जै करहि । देव सु रंगन कित्ति ॥ छं० ॥ ११३४ ॥

कवित्त ॥ नगर सकल गुन मय । निहार लड्डीय सुष न्रपति ॥
मंडप सिषर गवष्य । जालि दिट्ठी सु विचित्र अति ॥
द्वार उंच पागार । बिपुल अंगन आगारह ॥
जह तहं निझ्झर झरँत । निरमल जल धारह ॥
नर बाज दुरद बन गेह पसु । भरिय भीर पट्टन परम ॥
सुर असुर चमँकत सबद सुनि । सु फिरि समुद मथ्थन भरम ॥
छं० ॥ ११३५ ॥

दूहा ॥ करिग देव दच्छिन नयर । गंग तरंगह कूल ॥
जल छुटै तब इच्छ करि । मीन चरित्तन भूल ॥ ११३६ ॥

पृथ्वीराज का गंगा किनारे संयोगिता के महल के नीचे आना।

भुजंगी ॥ रची चित्र सारी त्रिषंडी अटारी । नकस लाज वर्दं सुवंनं सु ढारी॥
जरे तथ्थ जारी नही राजु वन्ने । रही फैलि रवि इंद मानों किरन्नं॥
छं० ॥ ११३७ ॥

हसै ष्याल षेलै तहां म्रग्ग नैनी । भरें माग मुत्ती गुहै बैठि बैंनी ॥
सजे छत्र आचार आनंद भीनै । तिनं सीस भोरानि आहुत कीनैं॥
छं० ॥ ११३८ ॥

(१) ए. कृ. को.-तेहि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुभं रूप सोभा तिनं अंग वेसं । तनं चीर सारी पटं कूल नेसं ॥
चमक्कंत चौकी कनै फूल झब्बी । गरै पीति पुंजं रिदै हार फब्बी ॥
छं० ॥ ११३९ ॥

कटिं छुद्रघंटा वली जे बनीयं । पयं झंझनं सद्द श्रवने सुनीयं ॥
इदं रूप हंसाय गंमाय तेनं । लजै कोकिला कान सुनतें सुरेनं ॥
छं० ॥ ११४० ॥

बनी निकट नारी सुगंधाय बासै । सबै चंद बदनी तहां चंद भासै ॥
तहां संभरी नाथ लागे तमासै । लरै मीन हय फीन, तिन देषि हासै ॥
छं० ॥ ११४१ ॥

कुंडलिया ॥ मीन चरित्र जु भुल्लि नृप । पंग न भुल्लिय युद्ध ॥
तीन लष्य अग्गें नृपति । जो भारथ्थ विरुद्ध ॥
जो भारथ्थ विरुद्ध । दई अंगमै सु सब्बल ॥
दई बन लाई कलिय । जुपिय रुक्कियै सवद्दल ॥
वल अभंग अरिभंग । पंग सिर पान सु लिन्नौ ॥
कहर कन्ह साहस्स । सिंघ सो दिल्ल समिन्नौ ॥ छं० ॥ ११४२ ॥

दूहा ॥ इतें सेन चढ़ि पंग बर । है गै दिसा दिसान ॥
दछिन नैर नरिंद करि । गंग सु पत्तौ ध्यान ॥ छं० ॥ ११४३ ॥

पृथ्वीराज का गले की माला के मोतियों को मछलियों को चुनाना।

चन्द्रायना ॥ भूलौ नृप इह रंगहि जुद्ध विरुद्ध सह ।
नंषहि मीननि मुत्ति लहै जुअ लष्य दह ॥
होइ तुछ तुच्छ सु मुत्ति मरं तन कंठ लह ॥
पंक प्रवेस हसंत झरंत न कंठ मह ॥ छं० ॥ ११४४ ॥

संयोगिता और उसकी सखी का पृथ्वीराज को गौख में से देखना।

कवित्त ॥ सुनि वज्जन संजोग । सुनिय आवन्न नृपति बर ॥
भयौ चित्त चर चित्त । मित्त संभरि सु रंग नर ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल बींटिय राज नह। लाज रष्षी मत किन्नौ ॥
गोष कुंअरि सिर रही। उट्ठि सुंदरि बर चिन्हौ ॥
दिसि पुव्व देखि चहुआन न्टप। बर लोचन मन षग्ग मग ॥
उपम्म बाल चिंतै सु चल। पुव्व दिसा दौ रवि सु डग ॥
छं० ॥ ११४५ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को देखना।

कुंजर उप्पर सिंघ। सिंह उप्पर दोय पब्बय ॥
पब्बय उप्पर भ्रंग। भ्रंग उप्पर ससि सुब्भय ॥
ससि उप्पर इक कीर। कीर उप्पर म्टग दिट्ठौ ॥
म्टग उप्पर कोवंड। संध कंद्रप्प बयट्ठौ ॥
अहि मयूर महि उप्परह। हीर सरस हेम न जच्यौ ॥
सुर भुअन छंडि कविचंद कहि। तिहि धोषै राजन पच्यौ ॥
छं० ॥ ११४६ ॥

दूहा ॥ भूल्यौ न्टप इन रंग महि। पंग चब्यो हय पुट्ठि ॥
सुनि सुंदर बर बज्जने। अई अपुब्ब कोइ [1]दिट्ठ ॥ छं० ॥ ११४७ ॥
देषत सुंदरि दल मिलनि। चमकि [2]चढ़ौ मन आस ॥
नर कि देव किधों नाग हर। गंगह संत निवास ॥ छं० ॥ ११४८ ॥

अरिल्ल ॥ बजि बीर निसान दिसान बजी। सु किधों फिरि भद्दव मास गजी ॥
सह नाइन फेरि अनेक [3]सजी। सुनि सोर संजोग सु गोष रजी ॥
छं० ॥ ११४९ ॥

चौपाई ॥ सुनि सुंदरि बर बज्जन चल्ली। षिन अलपह तलयह मुष झल्ली ॥
देषि रंजि संजोगि सु भल्ली। फूलि वाह मुष कुमुदह कल्ली ॥
छं० ॥ ११५० ॥

पृथ्वीराज और संयोगिता दोनों की देखा देखी होने पर दोनों का अचल चित्त हो जाना ॥

श्लोक ॥ दिष्टा सा चहुआनं। संमरं कामं संमायते ॥

(१) ए. कृ. को.- हुट्ठि। (२) ए. कृ. को.-बढ़ी। (३) ए. कृ. को.-बजी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कमधुज्ज वर वीरं। विगलति नीवीवनं वसति ॥ छं० ॥ ११५१ ॥

मुरिल्ल ॥ उर संजोइ साल घन मंडं। श्रवन श्रोतान जु लागि चिकंडं ॥
फरन फराक भये षग भग्गे। जनु चंमक लोहान सु लग्गे॥ छं० ॥ ११५२॥

संयोगिता का चित्रसारी में जा कर पृथ्वीराज के चित्र को जांचना और मिलान करना।

मोतीदाम ॥ प्रति बिंब निरष्षि हरष्षिय बाल। लई सषि सध्थ चढ़ी चित्रसाल॥
साइक समान न प्रौढन मूढ़। समान सु केलि सिंगार सु षोढ़ ॥
छं० ॥ ११५३ ॥

स बुद्धि स बुद्ध अबुद्धि न बुद्ध। चलं चल नैंन सु मैंन निबद्ध ॥
षिनं षिन रूप सरूप प्रसन्न। पुजै किम कोकिल जास रसन्न ॥
छं० ॥ ११५४ ॥

लगी वर जालि न गौषन नाय। लिषी दषि पुत्तलि चित्र समाइ ॥
रही वर देषि टगं टग चाहि। मनौं चित्र पास न कै दिन जाहि ॥
छं० ॥ ११५५ ॥

कहै इक नारि संयोगि दिषाई। धरै अंग अंग अनंग जु साई ॥
किधौं दिसि प्राचिय भान प्रकार। किधौं मन मध्य कै काम अकार॥
छं० ॥ ११५६ ॥

कि इंद फुनिंद नरिंदह कोइ। किधौं इत लीन संयोगिय सोइ ॥
छं० ॥ ११५७ ॥

संयोगिता की सहेलियों का परस्पर वार्त्तालाप।

दूहा ॥ इक कहै दनु देव इह। इक कहै इंद फुनिंद ॥
इक कहै अस कोटि नर। इक प्रथिराज नरिंद ॥ छं ॥ ११५८ ॥
सुनि वर सुंदरि उभै तन। उभै रोम तन अंग ॥
स्वेद कंप सुर भंग भौ। नैंन पिषत प्रथुरंग ॥ छं० ॥ ११५९ ॥

संयोगिता के चिबुक बिंदु की शोभा।

चोटक ॥ हिय कंप विकंप विपथ्य पथं। मनु मंत विराजत काम रथं ॥
कल कंपित कंप कपोल सुभं। अलकावलि पानि उचंत उभं ॥
छं० ॥ ११६० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निज निंदति मंथुर पंथनियं। धव धक्क धकं धक्क अस्ति हियं ॥
सुर भंग विभंग उमंग पियं। रद मंडल षंडल चंपि लियं ॥
छं० ॥ ११६१ ॥

निज नूपुर झारि नितंब छियं। रिजु नेंह दुनेह त्रिमंग त्रियं ॥
चिबुकं चिकु उद्दिम विंदु धुअं। कटि मंडल हार बिहार सुअं ॥
छं० ॥ ११६२ ॥

अध दिष्ट उनष्टि कतं तिलकं। बरुनी बर भंगत पौ पलकं ॥
सत भाव सतं [1]तिल की कथयं। निज सोजि विलोकि तयं पथयं
छं० ॥ ११६३ ॥

हँसि हँस्सिह रम्य करी करयं। सषि साषि परष्षि हँसी हरयं ॥
छं० ॥ ११६४ ॥

संयोगिता का पृथ्वीराज को पहिचान कर लज्जित होना।

गाथा ॥ पिय नेहं विलवंती, अबली अलि [2]गुज नेन दिट्ठाया।
परसान सद्द हीनं, भिन्नं की माधुरी माध ॥ छं० ॥ ११६५ ॥

चन्द्रायन ॥ दुलह जानि अनराइ सु हाइ सुषं अली।
लज्जा गरुअ समुंद अबुड्डन यह कली ॥
मरन सरन संजोगि विहत बरनं सचिय।
सहि चहुआन सु बुझ्झिय पेम सु मंझ चिय ॥ छं० ॥ ११६६ ॥

संयोगिता का संकुचित होते हुए ईश्वर को धन्यवाद देना और पृथ्वीराज की परीक्षा के लिये एक दासी को थाल में मोती देकर भेजना।

अरिल्ल ॥ सारति संकुल सांवर वीरं। सषि संकुचि भो लोचन नीरं ॥
[1]परसपर संपर भीरन भीरं। कामातुर निट्ठर लगि तीरं ॥
छं० ॥ ११६७ ॥

गुरु जन गुर निंदरियं सुंदरि। राज पुत्ति पुच्छियै न दुरि दुरि ॥
अमहि पुच्छि तौ दुत्ति पठावहि। कुन अच्छै पुरुछ बिकार आवहि ॥
छं० ॥ ११६८ ॥

(१) ए. कृ. को. तिक। (२) ए. कृ. को. गुंजनेव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चोटक ॥ मन षंचिय सौजुग यौ जबिषं। सुमरी मन लज्जिय मात षषं ॥
अध दिष्ट करौं चितयौ सु हितं। गुरनी गुर बंधिव गंठि चितं ॥
छं० ॥ ११६९ ॥

चन्द्रायण ॥ जनो गोचर कथ कलंनि कथं कथ अष्षियै।
रस संकहि अंकुरि मान मनं मथ भष्षियै ॥
जान इहै परमान बिधानन लष्षियै।
को मिट्टै संजोग संजोगिन अष्षियै ॥ छं० ॥ ११७० ॥
तब पंगुर राय सु पुत्तिय मुत्तिय थाल भरि।
जौ हिय इह प्रथिराजह पुच्छहि तोहि फिरि ॥
जौ इन लच्छिन सब तब्ब विचारि करि।
है व्रत मोहि न्रप जीव तौ लेउं सजीव वरि ॥ छं० ॥ ११७१ ॥

कवित्त ॥ दिष्ट फंद संजोग। दासि षिल वारि हथ्थ दिय ॥
म्रग बंधन चहुआन। पुब्ब श्रोतान षेद किय ॥
पुब्ब रूप गिद्धीव। मद्द मन मथ्थ संभारिय ॥
भय म्रग पंग नरिंद। चंद वंधन वन डारिय ॥
हक्कैति हक्क हाका सषिय। मूर गौष अपबंध सिष ॥
वेधंत आनि बानह [1]अभुल। म्रगुक सीस कोमंग इष ॥छं०॥११७२॥

दासी का चुप चाप पीछे जाकर खड़े हो जाना।

दूहा ॥ सुंदरि धरि श्रवननि सुन्यौ। गुन कह्यौ गुनं विद्ध ॥
ठग मग प्रत्ति [2]प्रतच्छि पिय। प्रसनह प्रत्ति प्रसिद्ध ॥छं०॥११७३॥

चन्द्रायन ॥ सुंदरि आइस धाइ विचारन बुल्लइय।
ज्यौं जल गंग हिलोर प्रथीति प्रसंग तिय ॥
कमलति कोमल पानि केलि कुल अंजुलिय।
मनहु अंध दुज दान सु अप्पत अंजुलिय ॥ छं० ॥ ११७४ ॥

पृथ्वीराज का पीछे देखे बिना थाल में से मोती ले ले कर मछलियों को चुनाना।

(१) ए.-अभुज। (२) ए. कृ. को.-परष्षि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ अंजुलि जल मंडत नृपति । अव वित्ते गलमुत्ति ॥
जलहल भै भ्रंमन कियौ । षमीति बाल निषत्ति ॥ छं० ॥ ११७५ ॥
गौष निरष्यहि सुब्भ चिय । हियै हरष्यहि बाल ॥
उभै पानि एकत करिग । देषि गुरज्जन हाल ॥ छं० ॥ ११७६ ॥

थाल के मोती चुक जाने पर दासी का गले की पोत पृथ्वीराज के हाथ में देना। यह देखकर पृथ्वीराज का पीछे फिर कर दासी से पूछना कि तू कौन है और दासी का उत्तर देना कि मैं रनवास की दासी हूं।

वृद्ध नराज ॥ नराज माल छंद ए कहंत कब्बि [३]चंद ए ॥
अपंत अंजुलीय दान जान सोभ लग्ग ए ॥
मनों अनंग रत्त सेय रंभ इंद पुज्जए ।
सु पानि बार थक्कि थाल मुत्ति वित्तए ॥ छं० ॥ ११७७ ॥
पुनेपि हथ्थ कंठ तोरि पोति पुंज अप्पए ।
... . ॥
सुटेरि नैन फेरि रेन तानि पत्ति चाहियं ।
तरप्पि दासि पास कंपि संकियं न वाहियं ॥ छं० ॥ ११७८ ॥
भयं चक्यौ भयान राज गात अम्म दिष्षयौ ।
कै स्वर्ग इंद गंग में तरंग नित्त पिष्षयौ ॥
अनेक संग रूप रंग जूप जानि सुंदरी ।
उछंग गंग मद्धि धुक्कि स्वर्ग पत्त अच्छरी ॥ छं० ॥ ११७९ ॥
हों अच्छरी नरिंद नाहि दासि ग्रेह पंगुरे ।
जु तास पुत्ति जम्म छंडि ढिल्लि नाथ अद्दरे ॥
सपन्न सूर चाहुआन मन्न एम जानये ।
करी न केहरी न दीप इंद एन थान ए ॥ छं० ॥ ११८० ॥
प्रतष्प हीर जुद्ध धीर जौ सुबीर संचही ।

(३) मो.-बन्दए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरंत प्रान मानि नीच लौ सु देन गंठही ॥
सुनंत सूर अश्व फेरि तेज ताम हंकयं ।
मनों दरिद्र रिद्ध पाइ जाय कंठ लग्गयं ॥ छं० ॥ ११८१ ॥
कनक कोटि अंग धात रास बास मालची ।
रहंत भोंर झोर स्याम छच तच कामची ॥
सुधा सरोज मौजयं अलक्क अक्षि हल्लियं ।
मनों मयन्न रत्ति रन्न काम पास घल्लियं ॥ छं० ॥ ११८२ ॥
करस्सि काम कंकनं जु पानि फंद माजए ।
जु भावरी सषी सु लाज झुंड सो बिराज ए ॥
अनेक संग डोर रंब रत्त मत्त सस्सियं ।
जु संगही सरोज सोभ होत कंत तस्सियं ॥ छं० ॥ ११८३ ॥
अचार चारु देव सब्ब दोउ पष्प जंपियं ॥
सु गंट्ठि दिट्ठ एक चित्त लोक लीक चंपियं ॥
सु इंद्रनी जु इंद्र जानि गंध्रवी विवाहयं ।
मुसक्कि मंद हासयं समुष्प दिष्पि नाहयं ॥ छं० ॥ ११८४ ॥
सु अंगुली उचक्कि एक देवतानि सुंदरी ।
मिलंत होय कथ्थ मोहि स्वर्ग वास [1]मंदरी ॥
अनेक सुष्प मुष्प सास जुद्ध साध लग्गियं ।
सुकंत कंति अष्पिता तमोरि मोरि अप्पियं ॥ छं० ॥ ११८५ ॥
दूहा ॥ इहि विध [2]धिरताईं कहत । विड्डिय विड्डि निषड्ड ॥
सुष्प सु विड्डय जान सें । मुष्पह विड्डि निषिड्डि ॥ छं० ॥ ११८६ ॥
दिषन सासु सहस वलिय । अरि चम्म सिंघनि डार ॥
कानिन गन अनभंग है । मत्ति तेन दह च्यार ॥ छं० ॥ ११८७ ॥
चक्रित चित्त चहुआन हुअ । दरसि दासि तन चंद ॥
तन कलंक कट्टन मिसह । जहां रन्न विष वद्द ॥ छं० ॥ ११८८ ॥

दासी का हाथ से ऊपर को इशारा करना और पृथ्वीराज का संयोगिता को देख कर वेदिल होजाना ।

(१) ए. कृ. को.-संगरी । (२) ए. धिरसाई कृ. को.-धिरताई कहै ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुरिल्ल ॥ दरसि दासि तन न्नप बर ठट्ठी। भेद बांच पंडुर तन चट्ठी ॥
उष्ट कंप जल नेंन जंभाई। प्रात सेज ससि रोहिनी आई ॥
छं० ॥ ११८९ ॥

दासि दिष्ट चहुआन सु जोरी। रूप निहारि उभै दिसि मोरी ॥
इंद्र इंद्र रस भरि ढरि चीनो। मनो मुष रोष वारुनी पीनो ॥
छं० ॥ ११९० ॥

करिवर दासि संजोगि दिषाई। दिष्षत न्रिप दुरि तन भय गाई ॥
झंकत तुछ तन सब्ब न सारन। सुकल ससि रवि हस्सै पारन ॥
छं० ॥ ११९१ ॥

दूहा॥ चंद चमक झंषिम गवष। चंद्र पत्ति दुति मार ॥
मनों बदन चहुआन को। बंधति बंदर वार ॥ छं० ॥ ११९२ ॥

संयोगिता का इच्छा करना कि इस समय गठ वंधन हो जाय तो अच्छा हो।

मुरिल्ल ॥ कुसल जोग[1] राजन चित हट किय। जनम पुब्ब प्रथिराज षट्ट किय ॥
बर बिचार बर बाल बुलाइय। गंठ जोरि ग्रह बर चल्लाइय ॥
छं० ॥ ११९३ ॥

संयोगिता का संकुचित चित्त होना।

दूहा ॥ जौ जंपौ तौ [2]जित्त हर। अनजंपै विहरंत ॥
अहि डट्टै छच्छुंदरी। हियै बिलग्गी बंति ॥ छं० ॥ ११९४ ॥

ऊपर से दस दासियों का आकर पृथ्वीराज को घेर लेना।

चन्द्रायन ॥ उतर देन संजोगिय धाइय दासि दस।
चावद्दिसि चहुआन सु बिट्टिय कीय बस ॥
नही कोट दै ओट सु गट्टिय काम कस।
मनुं दह रुद्र न बिंटि करै मन मध्य बस ॥ छं० ॥ ११९५ ॥

दासियों का पृथ्वीराज पर अपनी इच्छा प्रगट करना।

(१) मो.-रोज। (२) ए. कृ. को-चित्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा ॥ मुक्ति सुबर चहुआन को। अली सु कहिय जु बत्त ॥
पुब्ब अंक विधि बर लियौ। को मेटे विधि पत्त ॥ छं० ॥ ११९६ ॥
पानि ग्रहन संजोगि कौ। जोइ सु देवनि ग्रेह ॥
यों नथि भाविति भाव गति। मनु पुच पंग सु एह ॥ छं० ॥ ११९७ ॥

संयोगिता की भावपूर्ण छवि देख कर पृथ्वीराज का भी बेबस होना ।

कवित्त ॥ देषि तथ्य संजोगि। नेह जल काम करारे ॥
हाय भाय विभ्रम। कटाच्छ दुज बहु भंति निनारे ॥
रचित रंग झंकोर। [1]वयन अंदोल कसय सब ॥
हरन दुष्ष द्रुम रुम मिवाल। कुच चक्र वाक सोदि सब ॥
द्रिग भवर मकर बिंबर परत। [2]भरत मनोरथ सकल सुनि ॥
[3]बर बिदुर न्रपति म्रनाल नैं। नन जानो किहि घटिय गुनि ॥
छं० ॥ ११९८ ॥

सखियों की परस्पर शंका कि व्याह कैसे होगा ।

दूहा ॥ मंगल कढि पानि ग्यहन। सुष्य संजोग सु बंक ॥
दिषि विवाह सुभ्यौ वदन। ज्यौं सुंदरि ससि पंक ॥ छं० ॥ ११९९ ॥

अन्य सखी का उत्तर कि जिनका पूर्व संयोग जाग्रत है उनके लिये नवीन संबंध विधि की क्या आवश्यकता ।

कवित्त ॥ सुनि सषि सषि उच्चरिय। कोन बंध्यौ अकास मझ ॥
अमर न देषे देव। बेद गंध्रब्ब रिषिय सुझ ॥
रुषमनि अरु गोविंद। वेद गंध्रब सुष किन्नौ ॥
दमयंती नल व्रत्त। पन्न अग्गं तिन लिन्नौ ॥

(१) ए. कृ. को.-वैन अंदोल कसय सत्र ।
(२) ए. कृ. को.- भरत मनों मुनि सकल अंग ।
(३) ए. कृ. को.-वर विदुर नृपति मृनालते तत जानो केहि दाहि लागि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यों वृत्त लीन संदरति पन। धावि अगें सो सुन्नही॥
संजोगि अंग जो विहि लिष्यौ। सो मिटे न सिर नन धुन्नही॥
छं०॥१२००॥

दूती का पृथ्वीराज और संयोगिता को मिलाना।

दूहा॥ कहि करि न्रप संजोगि फुनि। दिसि सुहथ्थ बहु लाइ॥
मिलि कमोद सत यच रवि। दूती दूह,न माइ॥ छं०॥१२०१॥

पृथ्वीराज का संयोगिता के साथ गंधर्व विवाह होना।

हनूफाल॥ संजोगि गहि न्रप हथ्थ। मनों सरज जोरित नथ्थ॥
संजोगि न्रप बर राज। उप्पंम कवि बर साज॥ छं०॥१२०२॥
पद्‌मिनिय पन्न प्रमान। हरु अंषिआन अधान॥
सषि बिंट दंपति सोभ। कविराज ओपम लोभ॥ छं०॥१२०३॥
दिषि चंद रोहिनि लास। गइ लास कुमुदनी पास॥
फिरि रंभ आरंभ कीय। न्रप वाम वाम सुलीय॥ छं०॥१२०४॥
तन बंध मन दै दान। न्रप छोरि गंठ [1]प्रवान॥
.... । .... ॥ छं०॥१२०५॥

दूहा॥ वरि चल्ल्यौ ढीली न्रपति। सुत जयचंद कुमारि॥
गंठ छोर दच्छिन फिरिग। प्रान कंरिग मनुहार॥ छं०॥१२०६॥

पृथ्वीराज का संयोगिता से दिल्ली चलने को कहना।

कहि चल्ल्यौ चहुआन चित। उरझे चित्त सु [2]पथ्थ॥
[3]बद चल्ले प्रथिराज न्रप। हठ संजोगि सु तथ्थ॥ छं०॥१२०७॥

श्लोक॥ प्रयाने पंगपुत्री च। जैतिकं जोगिनीपुरं॥
विधि सर्व निषेधाय। तांबूलं ददतं न्रपं॥ छं०॥१२०८॥

संयोगिता का क्षण मात्र के लिये विकल होकर स्त्रीजीवन पर पश्चाताप करना।

गाथा॥ सुनि इंदो अनुराओ। दिट्ठी रिझाइ सब्ब सो अप्पं॥

(१) ए. कृ. को.-प्रमांन। (२) मो.-तथ्थ। (३) ए. कृ. को.-बदलि चले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दै हथ्थं हवि छुट्टा । हाहं जे बज्जनो हियये ॥ छं० ॥ १२०९ ॥
इंजेह आह नंषी । कंपी तनपाहं काम संजोइ ॥
निरधा अधार विनसं । या [1]बाला जौंवनं कुच ॥ छं० ॥ १२१० ॥
दूहा ॥ नर आसुर सु रंम मन । [2]सबल बंध अबलेह ॥
यान लाज चहुआन कौं । टुट्टिय संकर नेह ॥ छं० ॥ १२११ ॥

दंपतिसंयोग वर्णन ।

चौपाई ॥ रति संजोगि जगि उप्पम नेनं । रह्यौ विचारि कब्बि वर मेनं ॥
जोग ग्यान द्रिग पुच्छि उचारै । तौ दंपति रति ओपम मारै ॥
छं० ॥ १२१२ ॥
मेर जेम मो मन सा जानं । जो हत लीय जिही चहुआनं ॥
सुष भरि बेंन नेंन अवलोकं । गंठि बंधि पुब्बह परलोकं ॥
छं० ॥ १२१३ ॥
कहूं कंति धर मुछि बल बुल्ली । षीन देहु दुति छुट्टी लल्ली ॥
कल अधकी अध छिप्पत मन्नं । रुकि चतुर्थ्थि सुकल ससि जन्नं ॥
छं० ॥ १२१४ ॥
मुच्छि परंत प्रजंक प्रसंसी । [3]माइस अद्ध घरी घट चंसी ॥
षोडस आदि कलंकल कंपी । रष्षि सषी सषि सौं सांष जंपी ॥
छं० ॥ १२१५ ॥

पृथ्वीराज का संयोगिता प्रति दक्षिण से अनुकूल होजाना ।

दूहा ॥ [4]सुनि अंदोअन राव दिठ । रिझ्झाए सब सोइ ॥
फंदह मांहि विछुट्टही । देह जे बज्ज न होइ ॥ छं० ॥ १२१६ ॥
बर दच्छिन पुब्बह न्रपनि । भौ अनकूल प्रमान ॥
कंक कन्ह अष्षन वावन । पन्न सु धन परिमान ॥ छं० ॥ १२१७ ॥
सुरिल्ल ॥ मन रूपी तन पिंजर पीरे । दंपति दुष जंपति तन तीरे ॥
हरुअ दुष्ष सुष सषी प्रगासी । परमहंस गुर वैन सन्यासी ॥ छं० ॥ १२१८ ॥

(१) ए. कृ. को.-वाले ।　(२) ए.-सषल ।
(३) ए. कृ. को.-माहस अद्ध घरी घर संसी ।
(४) ए. कृ. को.-सुनि इन्द्रोनव रावदित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संयोगिता का दिल खोल कर अपने मन की बातें करना, प्रातः काल दोनों का बिलग होना।

कवित्त ॥ दच्छिन बर चहुआन। कीय अनुकूल पिम्म तन ॥
बिरह बाल द्रग उमगि। अंषि कनक रूप नंधन ॥
नृप मन धन दच्छिय सनेह। देह दुष काम वाम अगि ॥
ज्यों कुलाल घट अग्गि। पचषयौं उमझि उद्वि लगि ॥
दंपत्ति नेह दुष दुहुन कहि। बिछुरि साथ चक्रवाक जिम ॥
ज्यों सहै दुहन जिहि कुल बधू। कहत साष पंजर सु तिम ॥
छं० ॥ १२१९ ॥

गुरुराम का गंगा तीर पर आ पहुंचना।

दूहा ॥ पहुंचायौ दस दासि नृप। गंग सपत्तौ ताम ॥
वह दिष्यौ गुरु राज ने। ज्यौं रति बिछुरति काम ॥ छं० ॥ १२२० ॥
चौपाई ॥ दिसि गुर राज राज तन चाहं। मनो गजिय उर उज्जल गाहं ॥
दिष्षि सु छबि ढिल्ली चहुआनं। जानै कन्ह सु लछियं जानं ॥
छं० ॥ १२२१ ॥

पृथ्वीराज का गुरुराम को पास बुलाना।

दूहा ॥ बर दंपति दस दासि ढिग। दंद जुदो जनु ब्याह ॥
दुहु दिसि मंगल बज्जिहै। बिच मंगल बरधाह ॥ छं० ॥ १२२२ ॥
तब देषिय गुर राज नृप। चलि आइय तिहिं पास ॥
मन देषत सीतल भयौ। बढिय राज उर आस ॥ छं० ॥ १२२३ ॥

गुरुराम का आशीर्वाद देकर सब बीतक सुनाना।

दै असीस उच्चारि अज। संभरि संभरि वार ॥
सुभर सूर सामंत सों। पंग सु जुद्ध प्रहार ॥ छं० ॥ १२२४ ॥
कवित्त ॥ बीर हेम झुझ्झयौ। वाम जग्गयौ जु कंक अगि ॥
बर दंपति हय लेव। बधि बंदी उपंम मनगि ॥
बरसै सब उतरंत। चढ़त सम राज पाज बंधि ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कै भगि मगि भग्गि पाल । मंगि बाला जोवन संधि ॥
आचार चार दुहु पष्ष बर । देव देव मिलि जंपइय ॥
भाँवरिय लाज सषि ज्यों जुरिय । धीर बीर [1]मिलि वज्जइय ॥
छं० ॥ १२२५ ॥

पऱ्यौ राव लंगरी । पंग भंजै परधानं ॥
इर्द दमन कूरंभ । परे दुरजन [2]सलषानं ॥
सिंघ मिले संमरह । सिंह न्विब्बान सभानं ॥
बर प्रताप तूँवर ततार । सकति सुनि न्रिप कानं ॥
रघुवंस भीम जै सिंघ दिनि । भान भष्ष गौ झुल्लयौ ॥
इन परत पंग ढिल्ली बहुच्च । न्रिप ढिल्लीस न ढिल्लयौ ॥
छं० ॥ १२२६ ॥

गुरुराम का कहना कि सामंतों के पास शीघ्र चलिए।

दूहा ॥ ढिल्ली वै संभरि न्रपति । बत्त कहंतह बेर ॥
फिरि सामंतन सूर मिलि । करहि न न्रपति अबेर ॥छं० ॥ १२२७
दुज दासी संयोग पै । कहन सोभ कलिरीय ॥
दे सुराज चहुआन चित । ओडन मुक्किय जीय ॥ छं० ॥१२२८॥
कवित्त ॥ इह सर सुनि सजोगि । जोग पायौ न देव मुनि ॥
तिहि सर सुष्ष न दुष्ष । जीत भौटरै जम्म फुनि ॥
रंभा भर जुग्गिनी । गिद्ध बेताल सु कंषी ॥
हंस हंस उड़ि चलै । रुद्धि जल कमल नियंषी ॥
रस बीर विचें सेवाल कच । कित्ति भवर तिहि गंजइय ॥
[3]रत्तय म्रनाल कित्तिय अथय । सूर सुतन मन रंजइय ॥
छं० ॥ १२२९ ॥
दूहा ॥ सुनिय बयन संजोगि कहि । लिषि दिय पट्ट प्रमान ॥
दई करै सो न्रिम्मयौ । मिलन तेहु चहुआन ॥ छं० ॥ १२३० ॥

कन्ह का पत्र पढ़ कर पृथ्वीराज का चलना और संयोगिता का दुखी होना ।

(१) ए. कृ. को.-मिसि ।　(२) ए. कृ. को.सलयानं ।　(३) ए. को.-इत्तह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपाई ॥ लै पटि बंचि कन्ह गिरि संगं। चल्यौ न्रपति [1]जुद्ध रस अंगं॥
जिम जिम बर चल्लै चहुआनं। तिम तिम बाल प्रमुक्कै प्रानं ॥
छं० ॥ १२३१ ॥

कवित्त ॥ चल्यौ राज प्रथिराज। पास गुर कन्ह मन ॥
चिंति स सूर सँजोग। चल्यौ चहुआन राह पन ॥
सौ क्रंम दस ता अग्ग। पंग दल रुद्धि जुद्ध बल ॥
इक्क कहै [2]प्रिथु पथ्थ। इक्क तप जुत्त जुधिष्टल ॥
रुक्कयौ रतन सा निद्धि पत। रतन सौंह चिहु मग्गि गसि ॥
हंकारि सूर सम्हौ फिरिय। संभरि वै कढ्ढीति असि ॥छं॥१२३२॥

पृथ्वीराज का घोड़ा फटकार कर अपनी फौज में जा मिलना।

नंषिहै मान नरिंद। बज्जि षुरतार कंपि भुअ।
बज्रघात न्रिघघात। बज्र संपत्त कंपि ध्रुअ॥
अष्ट सु चल दह विचल। उड्डि बंबर धर धुम्मर॥
बजी सद्द पर सद्द। मद्दतजि रहिग मद्द करि॥
भै चक्क सुभर न्रप बीर बर। लष्षि वीर चहुआन बर ॥
[3]बर नचे बीर सुनि कन हँसे। जियत बत्त प्रथिराज नर ॥
छं० ॥ १२३३ ॥

मुसलमान सेना का पृथ्वीराज को घेरना पर कन्ह का आड़ करना।

रसावला ॥ राजरुक्के अरी, सिंघ रोहं परी। षंजरं षोलियं, बीर सा बोलियं॥
छं० ॥ १२३४ ॥
षग्ग बंकी कढ़ी, तेज बीयं बढी। बान नष्षं भरं, मोह [4]मंत्तं झरं ॥
छं० ॥ १२३५ ॥
राज बिच सारयं, पंच हज्जारयं। बंक धंकं डनी. बीर नंषे धुनी ॥
छं० ॥ १२३६ ॥

(१) ए. कृ. को.-दुद्ध। (२) मो.-प्रथिराज।
(३) ए. कृ. को.-वरनवे। (४) ए. कृ. को.-मत्तं जंर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राषि सज्जं धनं, बोलि पत्तं मनं। फौज फट्टी फिरी, कन्ह रुक्के अरी॥
छं० ॥ १२३७ ॥
सामि कट्ठे बलं, काज रुड्ढं षलं। ...., ... ॥
छं० ॥ १२३८ ॥

सात मीरों का पृथ्वीराज पर आक्रमण करना और पृथ्वीराज का सब को मार गिराना।

कवित्त ॥ सत्त मीर जम सम सरीर। जइ रुक्यौ न्रप अग्गा ॥
राज कन्ह दुज गुरू। सार छल सूरह लग्गा ॥
नग सम सत्त पुरष्ष। पूर मंचह असि बर पढ़ि ॥
होम जाप जुथ्यौ सु। बीर सरसं प्रहार चढ़ि ॥
सम सेवग सेव सु स्वामि ध्रत। कित्ति देव संतोष बलि ॥
षंड अग्ग भाग प्रथिराज कौ। देव धम्म उग्गारि बल ॥
छं० ॥ १२३९ ॥
फिरि पच्छो चहुआन। बान आरोह प्रथम करि ॥
षां वहिरम बरजही। फुटि टट्टर टरिग्ग धर ॥
बीय बान संधान। षान पीरोज सु भग्गा ॥
पष्षर अस्व पलान। मीर सहितं धर लग्गा ॥
चय बान कमान सु संधि करि। मुगति मग्ग गुन चंद कहि ॥
जल्लाल मीर सम बल प्रचंड। बालि प्रान संमह सढहि ॥
छं० ॥ १२४० ॥
बान चवथ्थै राज। तूटि कंमान षनक्की ॥
उडि गासी छुटि तीर। पंच बहु सद्द भनक्की ॥
इति उत्तरि चहुआन। षग्ग कढि बज्र कि पायौ ॥
दुति उप्पम कविचंद। तीय विक्रम असहायौ ॥
नषि राज बाज उप्पर वसिस। सक्क मीर अवसान चुकि ॥
षग मीर ताप तप्पौ नही। मुक्कि अस हिसि वाम धुकि ॥
छं० ॥ १२४१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूहा॥ हय गय बर गंभीर चढ़ि। नर भर दिसन दिसान॥
पंग राव कोपिय सुबर। गहन मेछ चहुआन॥ छं०॥ १२४२॥
रैन परै सिर उप्परै। हय गय ¹गतर उछार॥
मनहु ठग्ग ठग मूरि लै। रहिग सबैं मुंछार॥ छं॥ १२४३॥

पृथ्वीराज को सकुशल देख कर सब सामंतों का प्रसन्न होना।

मनहु बंध अनभूति धर। है तिन जानत थट्ट॥
बचन स्वामि भंग न करहि। सह देषहि न्रप बट्ट॥छं०॥१२४४॥
अवलोकति तन स्वामि मन। भौ सामंतनि सुष्ष॥
हँसहि सूर सामंत मुष। कायर मानहि दुष्ष॥ छं०॥ १२४५॥
धीरत धरि ढिल्लेस बर। बहु दंती उभ ²रोभ॥
न्रपति नयन तन अंकुरे। मनहु मद्द गज सोभ॥ छं०॥ १२४६॥

सामंतों की प्रतिज्ञाएं।

कुंडलिया॥ देषि सुभर न्रप नेन। आनि भौ आनंद चंद॥
अरि गंजे रुप त्रिप्प। बीर हक्के ग्रह दंद॥
बीर हक्के ग्रह दंद। मुकति लुट्टे कर रस्सी॥
आज सामि रन देहि। बरै अच्छरि कुल लस्सी॥
काम तेज संभरी। देव कंदल जुध पिष्षे॥
गुरू गल्ह उद्धरै। टुट्टि धारा रवि दिष्षै॥ छं०॥ १२४७॥

कन्ह का पृथ्वीराज के हाथ में कंकन देख कर कहना यह क्या है।

दूहा॥ हरषवंत न्रप अत्त हुअ। मन मझ्झह जुध चाव॥
मिलत हथ्थ कंकन लष्यौ। कह्यौ कन्ह इह काव॥छं०॥१२४८॥
गगन रेन रवि मुंदि लिय। धर भर छंडि फनिंद॥
इह अपुब्ब धौरत्त तुहि। कंकन हथ्थ नरिंद॥ छं०॥ १२४९॥

(१) ए. कृ. को.-गज। (२) मो.-रोस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हथ्थह कंकन सिर तिलक। अच्छित लगे लिलार ॥
कंठ माल तुअ कंठ नहि। कहि न्वप कवन विचार ॥छं०॥१२५०॥

पृथ्वीराज का लज्जित होकर कहना कि मैं अपना पण पूरा कर चुका।

चौपाई॥ सुनि सुनि बचन भुमि सिर नायौ। कृपन दान ज्यौं बंजि दुरायौ॥
पंच पंच अब लीन क चिंतर। छंडित बद्दि दियौ तब उत्तर॥
छं० ॥ १२५१ ॥
बरिय बाल सुत पंगह राय। वह व्रत भंग मोहि इत जाइ॥
तिहि मुंधहि अब जुड सुहाई। अथ्थि अवासह देउं बताई॥
छं० ॥ १२५२ ॥

कन्ह का कहना कि संयोगिता को कहां छोड़ा।

तिहि तजि चित्त कियौ तुम पासं। छंडिय कन्ह रुदंत अवासं॥
सौ सुभट्ट महि एक भट होइ। तौ नृप धनहि न मुक्कै कोइ॥
छं० ॥१२५३॥
जौ अरि थाट कोरि दल साज। तौ दिल्लिय तषत दैहि प्रथिराज॥
इतनौ नृपति पुच्छियै तोहि। परनि मुक्कि सुंदरि इह होइ॥
छं० ॥१२५४॥

पृथ्वीराज का उत्तर देना कि युद्ध में स्त्री का क्या काम।

स्लोक॥ जज्ञकालेषु धर्मेषु। कामकालेषु शोभिता॥
सर्वच वल्लभा बाला। संग्रामे नन गेहिनी॥ छं० ॥१२५५॥

कन्ह का कहना कि धिक्कार है हमारे तलवार बांधने को यदि संयोगिता सकुशल दिल्ली न पहुंचे।

चौपाई॥ हम सौ रजपूत रु सुंदरि एक। मुक्कि जांहि ग्रह बंधहि तेक॥
जौ अरियन थट कोरि दल साजहि। तौ दिल्लिय तषत दैहि प्रथिराजहि॥
छं० ॥१२५६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ महि मंडन महिलान । जोग मंडन सुष मंडन ॥
दुष बंटन जम चसन । नेए पूषनि मन षंडन ॥
काम वंत सोभाय । पूर चित समर विमत्तन ॥
भय सुष दिष्षत मोह । लीन भौ अनुरत रत्तन ॥
संसार सुबरनी सरम रूष । करहि सरन अनमुष्ष रुष ॥
अरि धरनि मुक्कि धारन न्रपत । चलहि कित्त जुग एक मुष ॥
छं० ॥१२५७॥

पुनः कन्ह के वचन कि उसे यहां छोड़ चलना उचित नहीं है।

दूहा ॥ जग्गि काल धूम काल कौ । सब्ब काल सोभित्त ॥
पूरन सब सारथ्थ सग । सोकिल ना मोहित्त ॥ छं० ॥ १२५८ ॥
भर बंकै अच्छरि बरन । रस बंके दिसि बाल ॥
दुहु बंके पारथ करन । चढ्ढि सुरत्तन साल ॥ छं० ॥ १२५९ ॥

पृथ्वीराज के चले आने पर संयोगिता का अचेत होजाना।

चलि चलि सुरति सथ्थ हुअ । [१]रन निसंक मन भोंन ॥
सह अचार मुष मंगलह । मनहुं करहि फिरि गोंन ॥
छं० ॥ १२६० ॥
पति अंतर बिछुरन बिपति । न्रपति सनेह संजोग ॥
सुनत भयौ सुष कोंन विधि । दैव जिवावन जोग ॥ छं० ॥ १२६१॥
सुरिल्ल ॥ पानि परस अरु दिट्ठ विलग्गिय । सा सुंदरि कामागिन जग्गिय ॥
[२]षिन तलपह अलपह मन कीनों । ज्यों बर वारि गये तन मीनो ॥
छं० ॥ १२६२ ॥
अंगन अंग सु चंदन लावहि । अरु राजन लाजन समुझावहि ॥
दै अंचल चंचल द्रिग मूंदहि । विरहायन दाहन रवि उद्दहि ॥
छं० ॥ १२६३ ॥
फिरि फिरि बाल गवष्षनि अष्पिय । तासिष देंन बेंन बर सष्पिय॥
विन उत्तर सु मोंन मन रष्षिय । मन बच क्रम प्रीतम रस कष्पिय॥
छं० ॥ १२६४ ॥

(१) ए. कृ.-को.-नर (२) मो.-पिन तप्पन तलयह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सखियों की उसे सचेत करने की चेष्टा करना।

कवित्त ॥ बाली विजन फिरन। चंद चारी क्रितम रस ॥
के घन सार सुधारि। चंद चंदन सो भति लस.॥
बहु उपाय बल करत। बाल चेतै न चिच मय ॥
है उच्चार उचार। सरवी बुल्लयति हयति हय ॥
श्रवनें सु नाइ जंपै सु अलि। नाम मंच प्रथिराज बर ॥
आवस निवत्त अगाद भय। तं निबलह द्रिग छिलक कर ॥
छं० ॥ १२६५ ॥

संयोगिता का मरने को तैयार होना, सखियों का उसे समझा कर संतोष देना।

दूहा ॥ तन तज्जै संजोगि पिय। गहि रष्षी फिरि बाल ॥
जानि नछचिन परि गिरी। चंद सरद्दति काल ॥ छं० ॥ १२६६ ॥

अरिल्ल ॥ बहुत जतन संजोगि समाए। सोम कमल दिनयर दरसाए ॥
उझकि झंकि दिष्यो प्रन पत्तिय। पति दिष्यत मन महि अलि [1]रत्तिय॥
छं० ॥ १२६७ ॥

ब्याह नाथ संजोगि सु लच्छन। जिहि तुम कर साह्यौ बर दच्छिन॥
सा तुअ तात भए दल तत्तो। सरन तोहि सुंदरि संपत्तौ ॥
छं० ॥ १२६८ ॥

संयोगिता का वचन।

दूहा ॥ ता मुष मुंदिन मोद किय। अलियन जंपहु आलि ॥
दाधेऊ पर लवन रस। म्रतक न दिज्जै गारि ॥ छं० ॥ १२६९ ॥
अंध न द्रप्पन दिष्षिहै। गुंग न जंपहि गल्ह ॥
अस्रुत नर गान न लहै। अवल न [2]करै सबल्ल ॥ छं० ॥ १२७० ॥
में निषेद किन्नौ जु कथ। दुज अरु दुजिय प्रमान ॥
टरै न गंध्रव गंध्रविय। विधि कीनौव प्रमान ॥ छं० ॥ १२७१ ॥

(१) ए. कृ. को.-रज्जिय। (२) ए. कृ. को.-जैरं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्लोक ॥ गुरजनं मनो नास्ति । तात आज्ञा [1]विवर्जितं ॥
तस्य कार्यं विनश्यंति । यावत् चंद्रदिवाकरौ ॥ छं० ॥ १२७२ ॥

दूहा ॥ इह कहि सिर धुनि सषिनि सौं । दिषि संजोगिय राज ॥
जिहि प्रिय जन अंगुलि करै । तिहि प्रिय जन किहि काज ॥
छं० ॥ १२७३ ॥

इह चिंतित बत्ती सु सुनि । क्रोध ज्वाल सरि अंब ॥
रही जु लिषिये चित्र मैं । ज्यों सरद्द प्रतिब्यंब ॥ छं० ॥ १२७४ ॥

संयोगिता का झरोखे में झांकना और पृथ्वीराज का दर्शन होना ।

कुंडलिया ॥ धुनत गवष्षन सिर लष्यौ । अंबुज मुष ससि अंब ॥
अनिल तेज झलहल कँपै । सरद इंद्र प्रतिब्यंब ॥
सरद इंद्र प्रतिब्यंब । चिंति चतुरानन आनन ॥
निरषि राज प्रथिराज । साज सुंदरि अपकानन ॥
हय सत भट्ट सु भूप । मग्ग भोहैं न गनंतन ॥
मानि विसव्वा वीस । सीस धुनि धुनि न धुनंतह ॥छं०॥१२७५॥

पृथ्वीराज का संयोगिता को मूर्छा से जगाकर कहना कि मेरे साथ चलो ।

चौपाई ॥ झंकत न्त्रप दष्षी बर बुल्लै । गंग निकट प्रतिब्यंब सो हल्लै ॥
चिहलै पऱ्यौ चंद तरषीनौ । कै म्रग तिस्न देषि मन मीनौ ॥
छं० ॥ १२७६ ॥

मुच्छि बाल संजोगि उठाई । देवर तर दिसि दिसि पट्टाई ॥
कै श्रोतान स्तूर सुनि झूठे । कै कातर अबहीं न्त्रिप दीठे ॥
छं० ॥ १२७७ ॥

दूहा ॥ ए सामंत जु सत्त कहि । पंग पुति घटि मंत ॥
एक लष्य भर लष्यियै । जै कट्टै गज दंत ॥ छं० ॥ १२७८ ॥

(१) मो.-नर्जितं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाथा ॥ मदनं सरा लति विविहा। जिव्हा रटयोति प्रान [1]प्रानेसं ॥
नयन प्रवाहति विवहा। अह वांमा कंत कथ्थायं ॥छं०॥१२७९॥
आर्या ॥ कहु लीभा सो चंद लासौ। मन मथ्थं पहु पांजलि ॥
बरन मान निसा दिवसे। धुनयं सीस जो मम ॥ छं० ॥ १२८० ॥

संयोगिता का कहना कि मैं कैसे चलूं यदि लड़ाई में मैं छूट गई तो कहीं की न रही।

दूहा ॥ किम हय [2]पुट्ठहि आरुहौं। घटि दल संगह राज ॥
भीर परत [3]जो तजि [4]चल्यौ। तब मो आवै लाज ॥छं०॥१२८१॥

पृथ्वीराज का कहना कि मेरे सामंत समस्त पंग दल का संहार कर सकते हैं।

तब हँसि जंप्यौ न्रप बयन। गहर न करियै अब्ब ॥
सब्ब पंग दल संहरों। सुंदरि लाज न तब्ब ॥ छं० ॥ १२८२ ॥

संयोगिता का कहना कि जैसा आप जाने पर मैं तो आपको नहीं छोड़ सकती।

कवित्त ॥ सुंदर जंपै बैंन। ढीठ दिल्लिय नरेस सुनि ॥
कहहि सूर सामंत। पवन हलहि पहार फुनि ॥
अजहौं अलियों चवै। गंठि दैहै [5]सु जंम कहु ॥
जो सद्दै सुरलोक। लहहि अच्छरि नन संकहु ॥
इह चित्त कंत इच्छहि बहुल। बहु समूह भुज बल्ल कहहि ॥
संदेह सास संभरि धनी। पलन प्रान पच्छै लहहि ॥
छं० ॥ १२८३ ॥

(१) मो.-प्रानेव।
(२) ए. कृ. कौ.-पुट्ठौ। (३) ए. कृ. को.-मुहि। (४) मो.-चलौं।
(५) ए.-दास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाथा ॥ अवलोकित न्रप नयनं। वचनं जिव्हा सु कातरा सामी ॥
निंदा सह स्तुत माने। घोरं संसार पातकी ॥ छं० ॥ १२८४ ॥

संयोगिता का जैचन्द का बल प्रताप वर्णन करना।

कवित्त ॥ सिंगारिय सुंदरिय। हास उपजत बर सद्दह ॥
करुना वुलि इहि बीत। रुद्र कामिनि कथ बद्दह ॥
बीर कहत गंध्रब्ब। भयो भामिनी भयानक ॥
वीभच्छिय संग्राम। मनहि आचिज्ज सयानक ॥
छिन संत मंत इय कंत तुअ। पिय विलास दिन करि करिय ॥
इम कहै चंद बरदाय बर। कलहकंत तुअ तौ डरिय ॥छं०॥१२८५॥
जे पड्डुरी बिमान। तेह पड्डुरी बिमानह ॥
जे सारंग करार। तेह सारंग करारह ॥
जिहि कित्तिय गय कोस। तेह कित्ती गय कोसह ॥
जिहि गय सघन सरोस। तेह गय सघन सरोसह ॥
विल्लोर पयोहर गै मलन। मलन विलोर पयोहरह ॥
जयचंद पयानौ परठयौ। भा भुअ हुअरु बसंत रह ॥छं०॥१२८६॥
करत पंग पायान। षेह उड्डत रवि लुक्कै ॥
महुरैजल पुट्टै सु। पंक सरिता सर सुक्कै ॥
पानी ठाहर षेह। एह उड्डती विराजै ॥
बर पयान छावंत। भान [1]सिर पट्ट कविज्जै ॥
दिगपाल कंपि हल्लि दसो दिस। सेसपयानौ नहि सहै ॥
बर न्रपति सीस ईसं सु सुनि। भौ पंगुर तातें कहै ॥छं०॥१२८७॥

संयोगिता प्रति गोइन्दराय का वचन।

हे कमधज्ज कुमारि। कहै गोयंद राज बर ॥
जे भर पंग नरिंद। सबें भंजों अभंग [2]षर ॥
सम सामंत सहित्त। जंग जैचंदह मंझौं ॥
जब कोपै चहुआन। षग्ग मैमत्त विहंडौं ॥

(१) चारों प्रतियों में "कूट" पाठ अधिक है। (२) ए. कृ. को.-षल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जदपि बहुत्त गोमाय गन। तदपि म्रग्गपति नह डरै॥
ममसंकि चित्त चिंता न करि। पहुचाऊं दिल्ली घरै॥छं०॥१२८८॥
चढ़त पंग बर बीर। नाग बर बीर दढिय अहि॥
जिहि कर करिवर धरिय। घरिय ते भार विदुष महि॥
चित्त करिग कुंडली। अप्प पोषंन बाय बर॥
कर कढ्ढिरु कलिवान। नाहि धारंत इक्क कर॥
जिनि पहुमि मनी मनि सहस फन। सो फनि फुनि फुनि फनि धरिय॥
जानें कि इथ्य तत्त कि चिय। सुबर भाजि कर कर करिय॥
छं०॥१२८९॥

हाहुलिराय हम्मीर का बचन।

दूहा॥ हाहुलि राव हमीर कहि। सुनि पंगानी बत्त॥
एक भिरै असि लष्य सों। सो भर किमि भाजंत॥छं०॥१२९०॥

संयोगिता का बचन।

कवित्त॥ कोरि एक चंचल। चलंत हबर बर पष्षर॥
ता उप्पर दस सहस। वालि जिसे असि होइ जलच्चर॥
सोलह सहस निसान। सहस सत्तरि गैवर घन॥
तीस लष्ष गेंवर प्रचंड। षग्ग फारक्क न्त्रभै तन॥
चालंत सेन विजपाल सुअ। पहुमि भार फनयति सुरिय॥
कह होइ स्हर सामंत हो। पंग सु दल बल उप्परिय॥छं०॥१२९१॥

चंदपुंडीर का कहना कि सब कथा जाने दो यज्ञ विध्वंस करने वाले हमी लोग हैं या कोई और।

चवै चंद पुंडीर इम। कह बल कथ्थह पुब्ब॥
पंग पंग पग नरिंद कौ। जग्य बिधवंस्यौ सब्ब॥ छं०॥१२९२॥

यह सुनते ही संयोगिता का हठ छोड़ना।

सुनत बाल छंड्यौ सु हठ। बर [1]चढ्ढी द्रिग बंक॥

(१) ए. कृ. को.-उटूठरी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किधौं बाल मन मोहिनी। कै बिय उदित मयंक ॥ छं० ॥ १२९३॥

कन्ह वचन कि स्वामी की निंदा सुनना पाप है, हे पंग पुत्री सुन।

कवित्त ॥ सुनिय बचन बर कन्ह। सौस धुनि धुनि फुनि जंपिय ॥
ध्रग्ग जियन म्रत सब्ब। पिंड बेचिय उर थप्पिय ॥
मन्न वचन तन रत्त। ध्रम्म छुट्टै सुष भग्गा ॥
गरुअ पान जो जिअन। जूह जीयन तुछ लग्गा ॥
सो ध्रम्म छचि रष्षन [1]सु तन। जो सांमि निंद कानन सुनैं ॥
कातर वचन संजोग सुनि। जौ परन आन रष्षै [2]ननैं ॥छं०॥१२९४॥

कन्ह का बचन कि मैं अपने भुजबल से ही तुझे दिल्ली तक सकुशल भेज सकता हूं।

हे प्रथिराज वामंग। संग जौ कन्ह नन्ह दल ॥
हौ चहुआन समथ्थ। हरू[3] रिपु राय भुजन बल ॥
मोहि विरद नर नाह। दंद को करै[4] भुअन बर ॥
मो कंपहि सुरलोक। पंति पन गरू भूमि नर ॥
मम कंपि चंपि सुंदरि सु पहु। चढ़िग कोटि कायर रषत ॥
इन भुजन ठेलि कनवज्ज कों। तों अप्पों ढिल्ली तषत ॥छं०॥१२९५॥
तेग छोरि जद्दवन। सोंह सिर धरि करि कथ्थिय ॥
इहै सत्त सामंत। भूमि श्रृंगार भरथ्थिय ॥
अतुलित बल अतुलित प्रमान। अतुलित बलदेवह ॥
अतुलित छिति छचि न गियान। स्वामित्त सु सेवह ॥
देषहि न राज बंसहि विलगि। कलह केलि कलहंत पिय ॥
अबलत्त छंडि मन सबल करि। बिघर राग सिंधूव किय॥छं०॥१२९६॥
सुनि उच्चरि गोयंद। गरुअ गहिलौत राज बर ॥

(१) मो.-सुथन। (२) ए. कृ. को.-तनै। (३) ए. कृ. को.-हरो।
(४) मो.-भुजन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीर पंग लगि धीर। लग्गि को छरन छिन्न कर ॥
जुद्ध जूह पहु पंग। करिग गौ पैज सूर सर ॥
सबर सेन भर अग्ग। धाय दुअ लग्गि सेन धर ॥
जद्दप्पि सु रहि रष्षै अलष। अरकु तदपि रहि हन सरै ॥
जद्दपि अगनि सम्हौ बलै। जीरन अग उंछी परै ॥छं०।१२९७

चंदपुंडीर का कहना जिस पृथ्वीराज के साथ में निढ्ढुरराय सा सामंत है उसके साथ तुझे चिंता कैसी।

कहै चंद पुंडीर। सूर नहि सूर घरघर ॥
घास लगै नन सस्त्र। भजै आभंग मंच बर ॥
पंग पान बुट्टंत। तन्न भज्जै न ज्वाल पर ॥
प्रथी जेम वल अवृन। संग चतुरंगो निढ्ढुर ॥
निमषेक निकष बर ब्रह्म कौ। दौरि जुगी बहुतें जुषल ॥
असि प्रान मान सामंत कौ। न्त्रिप सुंदरि नन चिंति बल ॥
छं० ॥ १२९८ ॥

राम राय बड़गुज्जर का बचन।

प्रति सुंदरि न्त्रप काज। कनक बोल्यौ बड़ गुज्जर ॥
हरि चक्रह सहज वत्। जाल नन रहै बुद्धिबल ॥
कोट क्रम्म संजवत। अंति भज्जै हरि नामं ॥
नीर परस संजवत। मैल नन रहै बिरामं ॥
नन रहै गुनी अग्गैं अवधि। सिध अग्गै सिद्धि न रहै ॥
संजोग जोग भंजन क्रम। राह सूर चंपिरु ग्रहै ॥ छं० ॥ १२९९ ॥

आल्हन कुमार का बचन।

तव बोलै अल्हन कुमार। सब्ब ब्रहमंड बीर बर।
जिहि मिलंत भर सुभर। होहि तन मत्त बीर सर ॥
मिलै सरित सब गंग। होइ गंगा सब अंगा॥

(१) मो.-आंछी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भग्गै सब परपंच। मिलै ब्रह्म ब्रह्मह मग्गा ॥
ऐसे सुबीर सामंत सौ। ढील बोल बोलै बदन ॥
जानै न बत्त बर बंध की। पहुंचावै ढिल्ली सुधन ॥छं०॥१३००॥

सलष पँवार का बचन।

बोलि सलष पांवार। पार लभ्भ्यौ न सस्त्रबल ॥
ब्रह्म पार पायौ न। रूप अवरेष रूप कल ॥
मेघ सोय आग्राज। पार वायन में धारिय ॥
सो कहि असति चरित्र। ब्रत पाषँड अधिकारिय ॥
सौ जुभ्भ पार धारह धनी। जुद्ध पार लभ्भ्यौ न दोउ ॥
तिहि सत संजोगि सुहै प्रलै। प्रलै राज ढिल्लीव सोउ ॥छं०॥१३०१॥

देवराज बग्गरी और रामरघुवंस के बचन।

देवराज बग्गरी। बीर बाल्यौ विहसे बर ॥
* .... ॥छं०॥१३०२ ॥
कहै राम रघुवंस। सुनहि संजोगि बाल बर ॥
पंग प्रलै संमूह। जगत बुभ्भन न्रप कग्गर ॥
बरष सात सामंत। सोभ पत्तिन पररुष्षं ॥
बर दंपती (१)निसंक। सस्त्र भग्गा न विसुष्षं ॥
नल कमल मांहि कंद्रप रहै। पति रष्षै चहुआन इम ॥
दिषि वत्त सति संयोग इह। तब सु प्रलै सासहित क्रम ॥
छं० ॥ १३०३ ॥

पुनः आल्हन कुमार का बचन।

फुनि जंप्यौ अल्हन कुमार। सुनि सुंदरी सूर बल ॥
बर अगनित अंजुली। पंग सो सै समुंद दल ॥
सार मेघ बुठ्ठतैं। वीर टट्टी बिच्छोरै ॥
बर दंपति सँयोगि। बंधि दल गौत न जोरै ॥

* छं: १३०२ की चारों प्रतियों में केवल एक ही पंक्ति है शेष पंक्तियां हैं ही नहीं।
(१) ए. कृ. कों.-न सकं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उप्पारि ससच गो ब्रह्मनह । न्रिप रषि वज्ज्री जेम कल ॥
कमधज्ज इंद बुड्ढै प्र पुनि । सुमन संच जानैं अकल ॥छं०॥१३०४

पल्हन देव कच्छावत का बचन।

पल्हनदे कूरंभ । लाज बड पन बड बीरं ॥
न्रिप लग्गै नन अंच । पंच जौ पंच सरीरं ॥
सोम नंद संभरी । सूर सो भ्रम्म न होई ॥
सौ मे एकज होइ । तेज मुक्कै ग्रह जोई ॥
इक अग्ग पंच जौ सत्त है। सत्त मेर सत जीन तजि ॥
नन डरहि चलहि प्रथिराज सँग । रषत कोटि कायरह सजि ॥
छं० ॥ १३०५ ॥

संयोगिता का बचन कि यह सब है पर दैव गति कौन जानता है।

तब कहंत संजोगि । इक बन मझ्झ सरोवर ॥
तहं पंकज्ज प्रफुल्लि । सरस मकरंद समोभर ॥
आय इक मधु करह। तथ्थ विश्रामि गुंजा रत ॥
रैंनि प्रपत्तिय ताम । रह्यौ मधि (१)भंवर विचारत ॥
ह्वै है बित्तित जामनि सबै । तबै गमन इह बुद्ध किय ॥
बिन प्रात होत बिधि इह करिय । से कलिका गजराज लिय ॥
छं० ॥ १३०६ ॥

दाहिमा नरसिंह के बचन कि सुन्दरी वृथा हमलोगों का क्रोध क्यों बढ़ाती है। कहते हैं कि सकुशल दिल्ली पहुचावेंगे।

तब दाहिम नरसिंघ । सिंघ बुल्ल्यौ बंचाइन ॥
सुनिय बचन सुंदरी । ज्वाल उट्ठी लगि पाइन ॥
इन दष्षित संजोगि । जोग जिन मग्ग प्रहारै ॥
इन पच्छै बलदेव । जम्म गति दिष्षि (२)निहारै ॥

(१) ए. कृ. को.-गुंजारं। (२) ए. कृ. को.-करै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उद्धरौं बीर दंपति दुहुनि। सरस मदहम मथ्यिलै ॥
चलि सथ्थ राज प्रथिराज कै। मुकति भुगति हम हथ्थलै ॥
छं० ॥ १३०७ ॥

पुनः सलष का वचन।

सु बर बीर पामार। सलष बुल्ल्यौ प्रति धारं ॥
जग्गि जलनि कमधज। जोग जीवन जुग तारं ॥
ए अमंत सामंत। भज्जि जानै न अभंग अपु ॥
वज्र सार झल्लै प्रहार। निश्चलित सार वपु ॥
जं करै गहर संजोगि सुनि। मुगति गहर बित्तिय घरिय ॥
(१)जग्गाय पंग दिष्षै दलं। रषित कुंअर केअरि फिरिय ॥
छं० ॥ १३०८ ॥

सारंगदेव का वचन।

सारंग सारंग बीर। बीर चालुक्क उचारिय ॥
षग्ग मग्ग बो हिथ्थ। मरन जिहि तत्त बिचारिय ॥
बीच राज प्रथिराज। सूर चावद्दिसि चल्लै ॥
ज्यों सिर मग धुअ झाल। भूअ सामंत न डुल्लै ॥
संजोगि करिन कायरह तौ। पहुंचावै ढिल्ली घरह ॥
प्रथिराज ग्रहै जो पंग बर। तौ पंग सूर एकत धरह ॥छं०॥१३०९॥

रामराय रघुवंसी का वचन।

तब रायां रघुवंस। जनक उच्चै उच्चारिय ॥
हम निकलंक छत्रीय। जुद्ध बर जुद्ध विचारिय ॥
जे मेरें कुल भए। हुए ते षंड तन झुझ्झर ॥
मत्ति सस्त्र हसुमंत। बीर जंपिहि बड़ गुज्जर ॥
संजोगि बचन कातर कहिग। सहिग प्रान मझ्झह रहिग ॥
हम अग्ग पंग कच्छून बर। जम कंपत षग्गह गहिग॥छं०॥१३१०॥

(१) ए. कृ. को.-जग्गवै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौंहाराव चंदेल का बचन ।

भौंहा राव नरिंद । बीर उच्चरि बीरत्तं ॥
पै लच्छिन बतीस । पंग पुची घटि मत्तं ॥
तिहि इक लछिन हीन । वही लछिन नन सष्षै ॥
एक एक सुरइंद्र । आइ दुज्जन दल भष्षै ॥
सत कोस पंच घटि धांन न्रप । हमह सत्त छह अग सुभर ॥
इक इक्क कोस इक इक्क भर । पहुंचावै संयोगि बर॥छं० ॥१३११॥

चंदपुंडीर का बचन ।

तब कहि चंद पुंडीर । मतौ सुनि सस्च सूर बल ॥
लष्ष एक लष्षियै । एक भंजैति लष्ष दल ॥
बल अगनित अति जुद्ध । पंग जीरन तिन सेनं ॥
दावा नल सामंत । सस्त्र मारुत बल देनं ॥
ढंढोरि ढाल गजदंत कढि । कवल पीर कन्हहति वर ॥
नष्षै सु बाजि गम भीम दुति । पंग सेन प्रथिराज भर ॥
छं० ॥ १३१२ ॥

निढ्ढुरराय का बचन कि जो करना हो जल्दी करो बातों में समय न बिताओ ।

तब निढ्ढुर उच्चरिय । सब्ब सामंत राज प्रति ॥
पंग सेंन ¹निरदरहु । अब्ब बोल्यौ सुदेवभित ॥
मन मथी गोंविद चंद । होइ न कहि कालं ॥
मन पुच्छिरु कहौ जीह । काल घत्ते जिहि जालं ॥
जौ करै ढील ढिल्ली धनी । तौ जुग्गिनिपुर जल हथ्थ दै ॥
सत षंड जीह जंपत करौ । पै चल्लि राज इह लज्ज दै ।॥छं०॥१३१३॥
मानि मत्तौ सब सेन । गरुअ गोयंद कन्ह कहि ॥
सुजै अप्प जौ चलै । चलै हम हथ्थ रंभ ग्रहि ॥
जो अप्पन आभंज । सबल बंधी अब बंधी ॥

(१) ए. कृ. को.-निरदरे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढील न करि सुंदरी। लीह अलध कल संधी ॥
ढंढोरि ढाल पहुपंग दल। तन अरत्त जिम तोरियै ॥
पहुंचाय सांमि ढिल्ली धरा। जम्म जजर तन जोरियै ॥छं०॥१३१४॥

संयोगिता के मन में बिश्वास हो जाना।

दूहा ॥ बाले बल सामंत कलि। देखि सूर सम चित ॥
इन जु हीन बल [1]जंपियै। [2]अधिकत बुद्धि इन वृत्त ॥ छं०॥१३१५॥

संयोगिता का मन में आगा पीछा बिचारना।

चंद्रायना ॥ बचन सुनिय कनि बाल बिचारत सोचि मन।
माया गुरजन चित्त विगोवत बेर तिन ॥
* .... ॥ छं० ॥ १३१६ ॥

अरिल्ल ॥ सुबर चंद औपम लिय कथ्यं। ज्यों कुछ वधु वर इंद्री अपहथ्यं॥
† .... ॥छं० ॥१३१७॥

संयोगिता का पश्चाताप करके राजा से कहना कि हा मेरे लिये क्या जघन्य घटना हो रही है।

कबित्त ॥ बाल कहिग संजोगि। पुब बंधी सु गंठि बर ॥
रिष सराप अरु देव। काज भौ भरन मरन भर ॥
स्वरग मग्ग रुक्कयौ। मरन संभरि चहुआनं ॥
केवल कित्ति सु कंत। रंभ बर बरनन पानं ॥
बंधई गंठि संभरि धनी। अब इत्तिव अंतर रहिय ॥
सामंत सूर संभरि सु कथ। न्रिपति सु दंपति इम कहिय ॥
छं० ॥ १३१८ ॥

राजा का कहना कि इस का विचार न करो यह तो संसार में हुआ ही करता है।

चंद्रायना ॥ राज सेन दे नैन समभिझय चंद कबि।

(१) ए. कृ. को.-चंपियै। (२) मो.-अधिग बुद्धि दय वृत।
* यह छंद चारों प्रतियों में आधा है। † चारों प्रतियों में ऐसा ही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनि संजोग इह जोग बुझ्झि मन दुष्य हवि ॥
आंसू भरि छह [1]सात [2]अगनि भेज पवर पंग।
रहै गल्ह जुगजाइ सब्ब संमूह नर ॥ छं० ॥ १३१९ ॥

संयोगिता का कहना कि होनी तो हुई सो हुई परंतु चहुआन को चित्त से नहीं भुला सकती।

कवित्त ॥ सुंदरि सोचि सु चित। प्रथम व्रत लियौ राज बर ॥
बरजि मंत पित बंध। बरजि गुर जन छोनी धर ॥
तात जग्य बिग्गरि। ध्रम्म लोपे सु लीह कुल ॥
सहस मुष्य अपहास। हीन भय दीन पलति पल ॥
कर तारह जे लिषिय कर। स्वांमि द्रोह बर बिछुरन ॥
मै लीन भाव मावी विगति। नन मुक्कौं चहुआन मन॥छं०॥१३२०॥

पृथ्वीराज का संयोगिता का हाथ पकड़ कर घोड़े पर सवार कराना।

दूहा ॥ परनि राव ढिल्लीं मुषहि। ग्रहि लीनी कर वांम ॥
सम संजोगि न्रप सोभियत। मनहु बने रति कांम ॥छं०॥१३२१॥
चंद्रायना ॥ सुंदरि सोचि समुझ्झित गह गह कंठ भरि।
तबहि पानि प्रथिराज सुषंचिय बाह करि ॥
दिय हय पुट्ठहि भोर सु सब्ब सु लच्छनिय।
करत तुरंग सुरंग सु [3]पुच्छनि वच्छनिय ॥ छं० ॥ १३२२ ॥

अश्वारोही दंपति की छवि का वर्णन।

कवित्त ॥ हय संजोगि आरुहिय। पुट्ठि लग्गी सु वांम नृप ॥
पति राका पूरन प्रमांन। अरक बैठे सुद्धर बिप ॥
काम रित्तु रहि चढी। काम रति दंपति राजं ॥
कै विद्रुम हिम संग। वियन ओपम [4]छपि साजं ॥

(१) ए. कृ. को.-वार। (२) मो.-अगनि भंजे जु पंगवर।
(३) ए. कृ. को.-पुछनिय। (४) ए. कृ. को. छिति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सामंत सूर पारस नृपति। मधि सु राज राजंत बर ॥
ग्रह सत्त भान ससि बिंटिकै। दिपत तेज प्रथमी सु पुर ॥छं०॥१३२३॥

संयोगिता सहित पृथ्वीराज का व्यूह बद्ध होकर चलना।

पंग पुत्ति आरुहिय। सूर चावद्दिसि रष्षे ॥
दिसि ईसान सु कन्ह। पंग षंधार विलष्षे ॥
केहरि बर कंठेरि। पंग पहुरै सो मुक्यौ ॥
पुब्ब सेन निड्डुर नरिंद। धाराहर रुक्यौ ॥
अगि नेव बीर पहु पंग कौ। धार कोट ओटह, सुभर ॥
पांवार धार धारह धनी। सुजस लष्ष लष्षन सुबर ॥छं०॥१३२४॥
दिसि दच्छिन लषन कुआर। सार पाहार पंग छल ॥
भौंहा राव नरिंद। सांमि रष्षे रुकि कंदल ॥
नयन रत्त दल सिंघ। रिंघ रष्षन कमधज्जी ॥
बर लच्छन बघघेल। सार सारह भुअ छज्जी ॥
दिसि मरुत बीर बर सिंघ दे। लष्ष सेन आरुहिय रन ॥
बर बंध बरुन साई सु पथ। जम विसाल कंपन डरन ॥छं०॥१३२५॥
दिसि उत्तर गषर गुरेस। रनह रुड्डे रावत बर ॥
उभै स्वामि षल और। छंडि मदमुष्ष भेष बर ॥
दिसि पच्छिम बलिभद्र। [1]जांम जद्दव अवरोही ॥
दई दुवाह दो बीर। रंभ रंभन मन मोही ॥
सुरपत्ति समासै नग डुलै। दुहूं दिसा जै उच्चरिय ॥
सामंत सूर रष्षे नृपति। पंग राय पारस फिरिय ॥ छं० ॥ १३२६ ॥
कोट पंग आरुहिय। नीम कित्तिय यह मंडिय ॥
थंभ सूर सामंत। अटल जुग ससि सिष छंडिय ॥
बर चिनेत अरु प्रेत। ताल तुंमर नारद पढ़ि ॥
देव रूप प्रथिराज। लच्छि संजोगि वाम गढ़ि ॥
कामना मुकति अप्पै तही। जो बीर रूप संचै धयौ ॥
सेवै जु सूर औ सूर मिलि। पार बरी तारन भयौ॥छं०॥१३२७॥

(१) मो.-भान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंग दल में घिरे हुए पृथ्वीराज की कमल-संपुट भौंरे की सी गति होना।

आर्या ॥ एकथ्योय संजोई । एकथ्थौ होइ समर नियोसौ ॥
अनि लेय यथा पदमं । अंदोलए राज रिदएवं ॥ छं० ॥ १३२८ ॥
दूहा ॥ मन अंदोलित चंद मुष । दिषि सामंत सरुष्य ॥
अंदोलित प्रथिराज हुअ । सिर कट्टिय सुष दुष्ष ॥ छं० ॥ १३२९ ॥

पृथ्वीराज के हृदय में यौवन और कुल लज्जा का झगड़ा होना।

वय सु लग्गि एकत करह । कक्कर लग्गिय लाज ॥
वय जुग्गिनि पुर चलि कहै । लाज कहै भिरि राज ॥छं०॥ १३३० ॥
चौपाई ॥ वै सुष सब्ब सँजोगि बतावै । राज मरन दिसि पंथ चलावै ॥
दोई चित्त चढी बर राजं । वै विलास मरनं कहि [1]लाजं ॥
छं० ॥ १३३१ ॥

वय भाव।

दूहा ॥ मिष्टानं बर पान भय । नव भामिनि रस कोक ॥
अमर राइ [2]इच्छति सबै । लाज सुष्ष पर लोक ॥ छं० ॥ १३३२ ॥

लज्जा भाव।

चौपाई॥मो तजि मति चोहान सुजाई । ज्यों जलबिंदु सब किित्ति समाई ॥
तौ तिय पन वय तज्जि दिषाई । तिन जिय जाहु ये लज्जन जाई॥
छं० ॥ १३३३ ॥

वय विलासिता भाव।

दूहा ॥ सुनत वचन लज्जिय वयह । उत्तर दीय न लज्ज ॥
वै विलास उत्तर दियौ । अज्जु लज्ज हम कज्ज ॥ छं० ॥ १३३४ ॥

पृथ्वीराज के हृदय में लज्जा का स्थान पाना।

वै मुष कौपि प्रमान से । मुक्किय जुगति जुगत्ति ॥

(१) ए. कृ. को.- काजं। (२) ए. कृ. को.-इच्छैति कै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ए [1]हलका दंतीन के । धार उज्जल कंति ॥ छं० ॥ १३३५ ॥
बैतन कुरषि निरष्यौ । लाज सु आदर दीन ॥
कलि नारद नीरद कवि । प्रगट करहु हम कीन ॥ छं० ॥ १३३६ ॥

कवि का कहना कि पंग दल अति विषम है ।

कहत भट्ट दल विषम है। तुहि दल तुच्छ नरिंद ॥
परनि पुत्ति जैचंद की । करहि जाइ ग्रह नंद ॥ छं० ॥ १३३७ ॥

पृथ्वीराज का वचन कि कुछ परवाह नहीं मैं सब को बिदा करूंगा।

भुकित राज उत्तर दियौ ।-सो सथ सत्त सुभट्ट ॥
हूं चहुआन जु संभरी । भुज ठिल्लौ गज थट्ट ॥ छं० ॥ १३३८ ॥

कविचंद का पंग दल में जाकर कहना कि यह पृथ्वीराज नव दुलहिन के सहित हैं।

चल्यौ भट्ट संमुह तहां । जहं दल पंग अरेस ॥
जो इंछै नृप तुभ्झ मन । टट्टौ षेत नरेस ॥ छं० ॥ १३३९ ॥
परनि राइ ढिल्लिय सु मुष । रुष किन्नौ मन आस ॥
कहौ चंद न्रप पंग दल । जुड जुरै जम दास ॥ छं० ॥ १३४० ॥
चढिग सूर सामंत सह । न्रिप भ्रम्मह कुल लाज ॥
सुहर समुह दिष्षहि नयन । चिय जु बरिग प्रथिराज ॥ छं० ॥ १३४१ ॥
गयौ चंद न्रप बयन सुनि । जहं दल पंग नरिंद ॥
अरि आतुर अरिग्रहन कौ । मनों राहु अरु चंद ॥ छं० ॥ १३४२ ॥

अंतरिक्ष शब्द (नेपत्थ में) प्रश्न।

स्लोक ॥ कस्य भूपस्य सेनायां । कस्य बाजिच बाजनं ॥
कस्य राज रिपू अरितं । कस्य संन्नाह पष्षरं ॥ छं० १३४३ ॥

उत्तर ।

दूहा ॥ छलि आयौ चहुआन न्रप । भट्ट सथ्थ प्रथिराज ॥
तिहि पर गय हय पष्षरहि । तिहि पर बज्जत बाज ॥ छं० ॥ १३४४ ॥
गाथा ॥ सा याहि दिल्लि नाथो । सा यंतु जग्य विध्वंसनौ ॥
परनेवा पंगपुची । जुड मांगंत भूषनं ॥ छं० ॥ १३४५ ॥

(१) ए. कृ. को.-ए हेला देतीर के ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चहुआन पर पंग सेना का चारों ओर से आक्रमण करना।

दूहा ॥ सुनि श्रवननि चहुआन को। भयो निसानन घाव ॥
जनु भद्दव रवि अस्त मनि। चंपिय बद्दल बांव ॥ छं० ॥ १३४६ ॥

प्रकोपित पंगदल का विषम आतंक और सामंतों की सजनई।

भुजंगी ॥ भरं साजतें धोम धुम्मै सुनंतं। तहां कंपियं केलि तिय पुर कँपंतं ॥
तहां डमरु कर डहकियं गवरि कंतं। तिनं जानियं जोज जोगादि अंतं ॥
छं० ॥ १३४७ ॥

तबं कमक मिरु सेस सिर भार सहियं। तहां किम सु उच्चास रवि रथ्थ सहियं॥
तहां कमठ सुत कमल नहिं अंबु लहियं। तबैं संकि ब्रह्मान ब्रह्मंड गहियं॥
छं० ॥ १३४८ ॥

[1]उनं राम रावन्न कबि किन्न कहता। उनं सकति सुर महिष बल्ल धन्न लहिता
मनों कंस ससिपाल जुर जमन प्रभुता। तिनं भ्रम्मियं एम भय लच्छि सुरता ॥
छं० ॥ १३४९ ॥

भरं चढ्ढियं सूर आजान बाहं। तिनं तुट्टि बन सिंघ दीसंत लाहं ॥
तिनं गंग जल मोंन धर हलिय ओजैं। भरं पंगुरे राव राठौर भोजैं ॥
छं० ॥ १३५० ॥

तबै उप्परें फौज प्रथिराज राजं। मनों बांदरा लेन ते लंक गाजं ॥
तबं जग्गियं देव देवं उनिंदं। तिनं चंपियं पाय भारं फुनिंदं ॥
छं० ॥ १३५१ ॥

तबै चापियं भार पायाल दुंदं। घनं उड्डियं रेन आया समुंदं ॥
गिनै कौन अगनित्त रावत्त रत्ता। तिनं छच छिति भार दीसै नपत्ता॥
छं० ॥ १३५२ ॥

जु आरंभ चक्की रहै कौन संता। सु बाराह रूपी न कंधै धरंता ॥
जु सेनं सनाहं नवं रूप रंगा। [2]तिनं भिल्ल वैतेग तेचैंच गंगा ॥
छं० ॥ १३५३ ॥

तिनं टोप टंकार दीसै उतंगा। मनों बद्दलं थंति बंधी विहंगा ॥

(१) ए. कृ. को.-उचं। (२) ए. कृ. को.-तिनं झिल्ल चैंचे मते वैच गंगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिरह जंगीन बनि अंग लाई। मनो कट्ठ कंती सुगोरष बनाई ॥
छं० ॥ १३५४ ॥

तिनं हथ्थरं हथ्थ लग्गै सुहाई। तिनं धाइ गंजै न थक्कै थकाई ॥
तिनं राग जरजीव बनि बान अच्छै। भरं दिष्षियै जानु जोगिंद कच्छै॥
छं० ॥ १३५५ ॥

मनं सस्त्र छत्तीस करि लोह साजै। इसे सूर सामंत सौ राज राजै ॥
छं० ॥ १३५६ ॥

लज्जा भाव कि लज्जा के रहने से संसार में कीर्ति अमर होगी।

कुंडलिया ॥ बाद बत्तवै कढ्ढि न्रिप। बहु उपाइ तो साज ॥
मैं वपु लज्जै सौंपि कर। कै चल्लै प्रथिराज ॥
कै चल्लै प्रथिराज। कित्ति भग्गौं भगि जित्तौ ॥
मरन एक जम हथ्थ। दुरै भज्जिन जम वित्तौ ॥
तें अप्पन तिय राज। लाज इक राग सदेवति।
गति के प्रान तिन काज। राज हन्नहि सु बद्द ब्रत ॥छं०॥१३५७॥

मुरिल्ल ॥ जब लाज सबै बे कर रस बद्दे। तब लगि पंग बीर रस सद्दे ॥
दिसि दिसि दल धाए कविचंद। ज्यों गाज्यौ बर ससि पाल [1]गुविंद॥
छं० ॥ १३५८ ॥

पृथ्वीराज के मन का लज्जा का अनुयायी होना।

दूहा ॥ दुह [2]एनौ तनं चढ्ढियै। लज्ज प्रसंसत राइ ॥
सत्त सुसत्त प्रनंब चढ़ि। चढ़िय सु उत्तर राई ॥ छं० ॥ १३५९ ॥

पृथ्वीराज का वचन।

तूं लज्जौ तनं चढ्ढयौ। लज्ज प्रान संग [3]गथ्थ ॥
अब कित्ती वत्तीय लगि। [4]अब सन चूक न तथ्थ ॥छं०॥१३६०॥

(१) ए. कृ. को.-गुंव्यंदं। (२) ए. कृ. को.-एतौ। (३) मो.-सथ्थ।
(४) ए. कृ. को. अवसन सूकै न नथ्थं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंग सेना के रण वाद्यों का भीषण रव।

मुरिल्ल ॥ बाजि न्त्रपत्र विचित्र सु बाजिग। मेघ कला दल बद्दल साजिग॥
बंबरि चौर दिसान दिसानं। दस दिसि [1]रत्त घोर निसानं ॥
छं० ॥ १३६१ ॥

भुजंगी ॥ निसानं दिसानंति बाजे सुचंगा। दिसा दच्छिनं देस लीनौ उपंगा॥
तबल्लं तिदूरं भुजंगी म्रदंगा। मनौं न्त्रत्य नारद्द कट्टै प्रसंगा॥
छं० ॥ १३६२ ॥

बजै बंस विसतार बहु रंग रंगा। तिनं मोहियं सथ्थ लग्गे कुरंगा॥
बरं बीर गुंडीर संसे ससंगा। तिनं नच्चई ईस ते सीस गंगा॥
छं० ॥ १३६३ ॥

सुनै अच्छरी अच्छ मंजै सु अंगा। सिरं सिंधु सद्दनाद्द श्रवनै उतंगा॥
रसे सूर सामंत सुनि जंग रंगा। .... ⋮ ॥ छं० ॥ १३६४ ॥
नफेरो नवं रंग सारंग भेरी। मनौं न्त्रत्यनी इंद्र आरंभ केरी॥
सुनै सिंगि सावद्द नंगी न नेरी। मनौं झिंझ आवद्ध हथ्थैं करेरी॥
छं० ॥ १३६५ ॥
करी उच्छरी घाव घन घंट टेरी। चितं चिंति तन हीन बाढी कुबेरी॥
अन्यं ओपमा षंड नैने निभग्गी। मनो राम रावन्न हथ्थें विलग्गी॥
छं० ॥ १३६६ ॥

पंगराज की ओर से एक हजार संख धुनियों का शब्द करना।

दूहा ॥ सुनि बज्जन रज्जन चढ़िग। सहस संष धुनि चाइ॥
मनौं लंक विग्रह करन। चढ्यौ रघुप्पति राइ॥ छं० ॥ १३६७ ॥
राम दलह बंदर बिषम। रष्षस रावन वृंद॥
असी लष्ष सौं सो जुरिग। धनि प्रथिराज नरिंद ॥छं०॥१३६८॥

सेना के अग्रभाग में हाथियों की वीड़ बढ़ना।

दल संमुह दंतिय सघन। गनत न बनि अगनित्त॥

(१) ए. कृ को.-जोरत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनों[1] पव्वय बिधि चरन किय। सह दिष्षिय मय मत्त ॥छं०॥१३६९॥

मतवारे हाथियों की ओजमय शोभा वर्णन।

मद मंता दँत उज्जला। मय कपोल मकरंद॥
दुहुं दिसि भवर गुंजार करि। [2]छुटि अंदून गयंद॥ छं०॥ १३७०॥

भुजंगी॥ देषियहि मंत मैमत्त मंता। छच छहरंग चौरं दुरंता॥
छके जेह अंदून छुट्टै जुरंता। बाय वहु वेग भ्फटकंत दंता॥
छं०॥ १३७१॥

जिते सिंघली सिंघ सुंडी प्रहारे। तिते सौर संमूह धावै हकारे॥
उज्जर बान आवै [3]वकारे। अंकुसं कोस तेनं चिकारे॥
छं०॥ १३७२॥

मीठ मंगोल चिहु कोद बंके। इसे भूप बाजून बाजून हंके॥
दंति मनु मुत्ति जरये सुलष्षी। मनों बीज भ्फमकंत जलमेघ पष्षी॥
छं०॥ १३७३॥

घटें घेन घोरं न सोरं समानं। हलं हाल ए मंत लागे विमानं॥
बिरद बरदाइ आगे वृदंगा। स्वर्ग संगीत [4]करि रंभ संगा॥
छं०॥ १३७४॥

तेह तर जोर पट्टेब झिल्लैं। चंपियं पान ते मेर ढिल्लैं॥
रेसमी रेसना रीति भल्ली। सिरी सीस सिंदूर सोभा सु मिल्ली॥
छं०॥ १३७५॥

रेष वैरष्य पति पात वल्ली। मनहु बन राइ द्रुम डाल हल्ली॥
सीस सिंदूर गज जंप भ्फंपे। देषि सुरलोक सहदेव कंपे॥
छं० १३७६॥

इत्तनिय आस धरि मध्य रहियं। कहहि प्रथिराज गहियं सु गहियं॥
.... । .... छं०॥ १३७७॥

दूहा॥ गहि गहि कहि सेना सकल। हय गय बन उठि गब्ब॥
जनु पावस पुब्बहु अनिल। हलि गति बद्दल सब्ब॥छं०॥१३७८॥

(१) मो.-पव्वन। (२) ए. कृ. को.-छुट्टिय अंदन।
(३) ए. कृ. को.-हकारे। (४) ए. कृ. को. डरि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुसज्जित सेना संग्रह की रात्रि से उपमा वर्णन ॥

लघुनराज ॥ हयं गयं नरं भरं। [1]उनम्मियं जलद्धरं ॥
दिसा दिसानं बज्जये। समुद्द सद्द लज्जए ॥ छं० ॥ १३७९ ॥
रजोद मोद उष्षली। सव्योम पंक संकुली ॥
तटाक बाल रींगनीं। सु चक्कयो वियौगिनी ॥ छं० ॥ १३८० ॥
पयाल पाल पल्लए। द्रगंत मंत हल्लए ॥
प्रहति छबि छज्जए। सरोज मौज लज्जए ॥ छं० ॥ १३८१ ॥
अनंदिते निसाचरे। कु कंपि तुंड साचरे ॥
भगंत [2]गंग कूल ए। समुद्र स्हून फूल ए ॥ छं० ॥ १३८२ ॥
अषंड रेन मंडयौ। डरप्पि इंद्र छंडयौ ॥
कमट्ठ पिट्ठ निठ्ठुरं। प्रसाल भाल विष्थुरं ॥ छं० ॥ १३८३ ॥
छिपान हंस मग्ग ए। समाधि आधि जग्ग ए ॥
अपूर पूर बड्डए। जटाल काल लुड्ड ए ॥ छं० ॥ १३८४ ॥
नरिंद पंग पायसं। सु छबि मंगि आयसं ॥
गहन्न जोगिनी तुरे। सु अप्प अप्प विप्फुरे ॥ छं० ॥ १३८५ ॥

पंग सेना का अनी बद्ध होना और जैचन्द का मीर जमाम को पृथ्वीराज को पकड़ने की आज्ञा देना।

दूहा ॥ अप्पं अप्प दल विप्फुरे। दिल्ली गहन नरिंद ॥
* मीर जमांम हमांम कौ। दिय आयस जैचंद ॥ छं० ॥ १३८६ ॥
दिसि दिसि अग्गै सज्जि बर। चतुरंगिनि पँग राइ ॥
चक्की चक्क वियोगइन। अनँद कमोद कँदाइ ॥ छं० ॥ १३८७ ॥

जंगी हाथियों की तैयारी वर्णन।

भुजंगी॥चढी पंग फौजं चवं कोद लोकं। दिठी जानि कालं चली जोध होकं ॥
बंधे बैरषं रत्न [3]हल्लै प्रकारं। मनों [4]नौकरी नौत सोभै सहारं ॥
छं० ॥ १३८८ ॥

(१) ए. कृ. को.-उनव्वियं। (२) ए. कृ. को.-नंग। * यह दोहा मो. प्रति में नहीं है।
(३) मो.-सोभै। (४) ए. कृ. को.-निक्करी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजे तब्बलं सद्द बंदी निनारे। मनों भृत्त बीरंद हथ्थं सँवारे॥
सिरी पष्षरं लोह गज्जं बनाई। नगं रत्त मझ्झ झमकंत झाई॥
छं०॥ १३८९॥

सुती बैठियं लाल माला प्रकारं। मनों षेलही [1]पारसं कन्ह भारं॥
गजं सज्जयं हेम ओपं विराजे। तिनं अग्र सोहै सितं चौर साजे॥
छं०॥ १३९०॥

तिनं की उपम्मा कबी का विचारं। मनों हेम कूटं बहै गंग धारं॥
सिरी उज्जलं लोह है सीस राजं। तहां चौरं ठट्टं सु सीसं बिराजं॥
छं०॥ १३९१॥

तहां चंद कब्बी उपम्मा विचारी। मनों राह कूटं टटं भान मारी॥
सजी पंग सेनं रसं [2]लोह बीरं। तिनं मोकले गहन प्रथिराज मीरं॥
छं०॥ १३९२॥

रावण कोतवाल का सब सेना में पंगराज का हुक्म सुनाकर कहना कि पृथ्वीराज संयोगिता को हर लाया है।

दूहा॥ सजत सेन पहुपंग घन। आय स पत्ते तीर॥
बर रावन कुटवार तब। पुक्कारे बर बीर॥ छं०॥ १३९३॥

पद्धरी॥ धर पथ्थराइ बरनी सुबीर। विश्राम राइ मन मथ सरीर॥
रइबान सिंघ न्नप भेद दीन। चहुआन हरन संजोगि कीन॥
छं०॥ १३९४॥

दरबार जैत मिल्लाइ आइ। संजोगि हरन न्नप सथ्थ जाइ॥
घरि एक एक घरियार बज्जि। पुक्कार लग्गि मारूफ सज्जि॥
छं०॥ १३९५॥

जैचन्द का रावण और सुमंत से सलाह पूछना।

दूहा॥ परी भीर बर द्रिग्ग बर। द्रिष्ट संजोइय कंत॥
तब तराल रावन कहै। पंग राइ सोमंत॥ छं०॥ १३९६॥

(१) ए. कृ.-को.-पीर सं। (२) ए. कृ. को.-रोस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुमंत का कहना कि बनसिंह और केहर कंठीर को आज्ञा दी जाय ।

कवित्त ॥ मोहि मत पुछै नरिंद । तौ चहुआन गहन गुन ॥
दल बल अरि अरि दट्टि । ठट्ट ठेलै दुज्जन दुव ॥
प्रथम राव बन सिंघ । राव बन बीर अग्गि करि ॥
[1]हेत सुमन जग्गौत । उनै पहुपंग पूरि परि ॥
केहरि कंठीर पठौ सु न्रप । इन समान छिचौ न छिति ॥
अड्डौ सु धरो बिब्भार घन । रावन रिन सिष ईय पति ॥
छं० ॥ १३९७ ॥

जैचन्द का कहना कि पृथ्वीराज मय सामंतों के जीता पकड़ा जावे ।

तब नरिंद रा पंग । सु मुष बोल्यौ रावन प्रति ॥
आज गिद्ध ननि जौग । हनै घन स्याम भूप प्रति ॥
अति अयान अनबुझ्झ । जग्गि आगम्म प्रगट्टिय ॥
अप्प अप्प जस हीन । दीन दुनिया दल छुट्टिय ॥
अवरन्न सेन लष्षा चढी । कढौ तेग बंधे दिवन ॥
बहु लाभ होइ जो षेम बिन । जु कछु काम कीजै सु चन ॥
छं० ॥ १३९८ ॥

बघघेलो बर सिंघ । राव केहरि कंठेरिय ॥
कालिंजर कोलिया । राय बंधिय बरजोरिय ॥
[2]रन रावन तलियार । बघघ कट्ठी मुष जंपौ ॥
रवि जैपाल नरिंद । काम कारन हूं अप्पौ ॥
बर गहन चंपि चहुआन कौ । [3]सत्त घत्त सामंत सह ॥
सम समय सथ्थ भारथ भिरहि । सहस दिये कमधज्ज दह ॥
छं० ॥ १३९९ ॥

(१) ए. कृ. को. हेत सुमत जग्गौज ।　　(२) ए. कृ. को.-नर ।
(३) मो.-सन्त ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रावण का कहना कि यह असंभव है। इस समय मोह करने से आपकी बात नहीं रह सकती।

तब रावन उच्चरै। न्रिपति इह मत्ति सु भुट्टौ॥
दोन होइ रापंग। सरित डंडी गुर मिट्टौ॥
इह जोगिनि पुर इंद। गंजि गोरी गज बंधन॥
इन सु सथ्थ सामंत। सूर अति रन मद मद्दन॥
इह गहन दहन इच्छै न्रपति। भर समूह मोंहन करै॥
नव अश्व बाज नव नव न्रपति। नव सु जोरि जग्गह धरै॥
छं०॥ १४००॥

रावण के कथनानुसार जैचन्द का मीर जमाम को भी पसर करने का हुकम देना।

दूहा॥ सहस मान सह छत्रपति। सह सम जुद्ध स जुद्ध॥
गहन मीर बंदन कहै। तिहि लग्गै लहु वद्ध॥ छं०॥ १४०१॥
मीर बंद बारुन बलिय। सक सामंत नरिंद॥
मंच घात सक सूरिमा। विष मुत्तरै फुनिंद॥ छं०॥ १४०२॥
अप्प अप्प दल विप्फुर्‌यौ। दिल्ली गहन नरिंद॥
मीर जमाम हमाम कों। दिय आयस जैचंद॥ छं०॥ १४०३॥
तुम बिन जग्य न न्रिब्बहै। तुम बिन राज न धाम॥
सुक कट्ठ कट्ठन समुद्द। जरि जरि अंब बुझान॥ छं०॥ १४०४॥

रावण का कहना कि आप स्वयं चढ़ाई कीजिए तब ठीक हो।

फिरि रावन न्रप सौं कह्यौ। तात पर्‌यौ तुह्मि काम॥
जब लगि अप्प न नांचियै। काम न होइ सु ताम॥ छं०॥१४०५॥

पंगराज का कहना कि चोरों को पकड़ने मैं क्यो जाऊं।

कवित्त॥ तब भुकि पंग नरिंद। ढीठ कुटवार हट्ट पर॥
बाट घाट तस करन। चास बसि करन प्रज्ज धर॥
रस अदभुत संग्राम। मह्नि रष्षत धरि छंडी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

न कछु मझ्झ माजनौ। बाद राजन सौं मंडी॥
अति ग्रब्ब जरब बर्ज्जं सिरह। नरनि नीर उत्तरि रह्यौ॥
जानहि न जुद्ध अविरुद्ध गति। किम सु बचन राजन कह्यौ॥
छं०॥ १४०६॥

दूहा॥ अरे ढीठ रावन्न सुनि। जितहि न डट्टो अप्प॥
जो अलभ्भ लोकनि कह्यौ। जिहि मरि मारिय अप्प॥
छं०॥ १४०७॥

पुनः रावण का प्रत्युत्तर की आपने अपनें हठ से सब काम किए।

कवित्त॥ फिरि रावन उच्चर्यौ। जग्य मंडि रुकुमत्ति किय॥
जैन जग्य आरंभ। प्रथम चहुआन बंध लिय॥
बहुत मत्त चुक्कए। अबहि तुम मंत सुमंत्ते॥
संदेसै व्यौहार। कहौ किन होतै भंत्ते॥
बंचहु बबंच मंचिय मरन। चाहुआन गहियन गहिय॥
संबरे जाय कन्या (१)रवन। जुगति जग्य पसरिय रहिय॥छं०॥१४०८

कुतवाल का बचन कि जिसका पालन करना हो उसे प्राण समान माने परंतु संग्राम में सबको कष्ट जाने।

स्लोक॥ अप्प प्रानं समानस्य। लालना पालनादपि॥
प्रापते तु युद्धकालस्य। शुष्ककाष्टं हुताशनं॥ १४०९॥
दूहा॥ कै प्रारंभन प्रिय भरन। मरन सु अग्गर राइ॥
जग्य विगारन जूह चढ़ि। लियें सु कन्या जाइ॥ छं०॥१४१०॥
मुष म्रजाद बुल्ल्यौ बयन। नयर कंध कुटवार॥
सु विधि मीर संग्राम भर। तुम रष्षहु हटवार॥ छं०॥१४११॥
हट्ट नाम कुटवार सुनि। परि सामंतन जंग॥
सवन निरष्षत पंग दल। पर पति दीप पतंग॥ छं०॥१४१२॥

(१) ए कृ को. बरन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुसल्मानी सेना नायक का सेना सहित हरावल में होकर आगे बढ़ना।

भुजंगी ॥ तबें पट्ठियं पंग रायं सु हीसं। मषै दोइ द्रुम्मीन हीनेन दीसं॥
किय नीच कंधं तुछं रोम सीसं। परी उप्परें फौज प्रथिराज ईसं॥
छं०॥१४१३॥

रसावला ॥ [1]कोल पल्लं लषी। मंस स्रबं भषी॥
रोम राहं नषी। बेयजे बिद्दुषी॥ छं०॥१४१४॥
बीर बाह्न पषी। सुम्मरे नां लषी॥
बिद्दि सा बहषी। टंक अट्टरषी॥ छं०॥१४१५॥
षंचि बिब्भारषी। लोह नारंजषी॥
कोल चाहै [2]चषी। बाज बाहै लषी॥ छं०॥१४१६॥
दुम्म साहै मुषी। बोल तें ना लषी॥
पारसी पारषी। बान वाहं पषी॥ छं०॥१४१७॥
प्रान तिन्नं तषी। पंग पारट्ठषी॥
स्वांमिता चित्तषी। ढिल्लि ढाहंझषी॥ छं०॥१४१८॥
बीच रत्तं सुषी। सट्ठि हज्जारषी॥
पवंगे पारषी। .... छं०॥१४१९॥

पंगदल को आते देख कर पृथ्वीराज का फिर कर खड़ा होना।

भुजंगी। हयं सेन पय सेन अग्गै सुंडारै। न्रिपत्ती नछची न लब्भै नपारै॥
तिनं सूर सामंत मध्यं हजारे। मनों विटियं कोट मंझे मुनारे॥
छं०॥१४२०॥
तबै मोरियं राज प्रथिराज बग्गं। बरं उट्ठियं रोस आयास लग्गं॥
मनों पथ्थ पारथ्थ हरि होम जग्गं। मनों षोलियं षग्ग षंडून लग्गं॥
छं०॥१४२१॥
बरं उट्ठियं सूर सामंत तज्जै। तबें षोलियं षग्ग साहथ्थ रज्जै॥
सुरं बाजनै पंग रा वीर वज्जै। मनों आगमं मेघ आषाढ़ गज्जै॥
छं०॥१४२२॥

(१) ए. कृ. को.-"कोल पल अभष्षी." (२) ए.-षषी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

. Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज की ओर से बाघ राज बघेले का तलवार खींच कर साम्हने होना ।

कवित्त ॥ बग्घराव बग्घेल । हेल मुग्गल निहल्ल किय ॥
मेघ [1]सिघ विज्जुलिय । जांनि झंमूर झलक्किय ॥
वे गयंद बारुन बहंत । बारत्तन बारिय ॥
मीर पुट्ठि आरुट्ठि । सेन गहि गहि अप्फारिय ॥
आवृत्त बत्त सामंत रन । जमर मेछ संमुह मिलिय ॥
अष्टमी चष्प इक्कह सु ग्रह । प्रथम रोस दुअ दल मिलिय॥छं०१४२३॥

सौ सामंत और असंख्य पंग दल में संग्राम शुरू होना ।

दूहा ॥ जोध जोध आयरु मिले । एक इक्क सौं लष्ष ॥
नारद तुंबर सिव सकति । सौ सामंतां पष्ष ॥ छं० ॥ १४२४ ॥

पुनः रावण का वचन कि पृथ्वीराज को पकड़ने में सब सेना का नाश होगा ।

कवित्त ॥ फिरि रावन उच्चरिय । सुनौ कमधज्ज [1]इला बर ॥
अरि बंधन इंछियै । सु तन बंछियै मरन भर ॥
प्रथम मूल दिज्जियै । व्याज आवै धुर जन्नी ॥
इन कज्जैं इल भार । देव [2]करयौ छिति लिन्नी ॥
छिति ग्रीषम बुठ पावसह । बैंन पहु जु पंगह सुनिय ॥
[3]कायर सु भीर भंजै न भर । भर भंजै संभरि धनिय॥छं०॥१४२५॥

केहर कंठेर का कहना कि रावण का कथन यथार्थ है ।

केहरि बर कंठेर । पंग सम्हौ उच्चारिय ॥
मत्त सु मत उच्चरिय । बीर रावन अधिकारिय ॥
जंच जोर जो बजै । सार तंची मिलि जंची ॥
जंचि जोर जो [4]चलै । सार बंधी अनु तंची ॥

(१) मो.-इलावर । (२) मो.-लरयौ
(३) ए. कृ. को.-कायरन भीर भंजै सुभर । (४) मो.-वजै ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भंजौ जु बीर चहुआन दल । दइ दुबाह सम्हौ भिरै ॥
भारथ्थ बीर मंडन सहै । अरी जीत कायर मुरै ॥ छं० ॥ १४२६ ॥

पंग का उत्तर देना कि सेवक का धर्म स्वामी की आज्ञापालन करना है।

सुनि केहरि बर बेंन । कौंन उच्चरै जुद्ध यथ ॥
धर संग्रह गो ग्रहन । सामि संकट जु बीर तथ ॥
साम दान अरु भेद । सोइ चुक्कै बर साई ॥
नरक निवास प्रमान । सुख्खित कित्ती निधि पाई ॥
जंकरै मंत्त उत्तरि परै । सामि अग्गि मंगै सुभर ॥
यौं हँसन केलि घर घर करै । इकत पच्छ बढ्ढै सुभर ॥
छं० ॥ १४२७ ॥

पंग को प्रणाम करके केहर कंठेर और रावण का बढ़ना।

दूहा ॥ केहरि कन्ह सु गत्तमी । करि जुहार न्रप भार ॥
हस्ति काल जम जाल लै । चलि अग्गैं कुटवार ॥ छं० ॥ १४२८ ॥

उनके पीछे जैचन्द का चलना।

कवित्त ॥ केहरि बर कंठीर । कन्ह कमधज्ज सु रावन ॥
हस्ति काल जम जाल । [1]अग्गि नग चासति धावन ॥
ता पच्छै कमधज्ज । सेन चतुरंगी चल्लिय ॥
हसम हयग्गय सुभर । भूमि चावद्दिसि हल्लिय ॥
कंद्रप्प केत पहुपंग सँग । बजि निसान अप्पन चढ़िय ॥
घन अँगम्यौ सेन चहुआन बर । पवन सेन टिड्डी बढ़िय ॥
छं० ॥ १४२९ ॥

जैचन्द के सहायक राजा रावतों के नाम।

भुजंगी ॥ तिकें चढ्ढियं पंग अज्जान बाहं । बचं उच्चरें सेनं चौहान साहं ॥
सुतं चढ्ढियं [2]सेर कंद्रप्प केतं । मनों बंधियं काम वे बीर नेतं ॥
छं० ॥ १४३० ॥

(१) ए. कृ. को.-अगिन, अगिनिग। (२) ए. कृ. को. वीर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चढै प्रब्बतं बीर बीरं प्रमानं । कहै पंग अप्पै बंधे चाहुआनं ॥
चढे चंचलं चंपि चंदेर राई । जिनैं पुब्ब बैरं रनथंभ पाई ॥
छं० ॥ १४३१ ॥

चढ़े किल्हनं कन्ह क्रनाट राजी । उठौ बंक मुंछं ससी बीय लाजी॥
चढ्यौ दच्छ भानं सुभानं प्रमानं । चढे कन्ह चंदेल भौधू समानं ॥
छं० ॥ १४३२ ॥

चढ्यौ बग्गरी बीर तत्तौ [१]तुरीसं । लरैं सामि कामं असम्मानं सीसं॥
चढ्यौ इंद्र राजं असप्पति बीरं । महा तेज जाजुल्य बीरं सरीरं ॥
छं० ॥ १४३३ ॥

चढ्यौ मालवी बीर वर सिंह तद्दं । भजै तेज जाजुल्य देष्यौ [२]फुनिंदं॥
चढ्यो पंच पंचाइनं बीर मोरी । चढै बारु रंजैत पावंग जोरी ॥
चढ्यौ दाहिमौ देव देवत्त गत्ती । चढ़े मीर वीरं षुरासान तत्ती ॥
छं० ॥ १४३४ ॥

असी लष्य सेना चिह्नं मग्ग धाई । मनौं भूमि बाराह कंधै उठाई॥
कमट्ठंति पिट्ठंति ठौसौ समालं । कंपौ सेन मुक्कै कुवे हथ्य [३]झालं॥
छं० ॥ १४३५ ॥

पंग की चढ़ाई का आतंक वर्णन ।

कवित्त ॥ [४]वजत धरब्बर सीस । धार धरनीय सेस कहि ।
कुंडलेस कुंडलिय । कहय पन्न गति अरुल रहि ॥
[५]अहि अहि कहि अहि नाम । संकभौ सीस सेस वर ॥
गहिन परै तिहि नाग । चित्त विभ्रम चिचक पर ॥
कंपेस नाम कंपत भयौ । बहुत नाम तहिन लहिय ॥
जिन जिन उपाय रष्षिय इला । [६]पंग पयानह तिहि कहिय ॥
छं० ॥ १४३६ ॥

दूहा ॥ फन फन पर मुक्कत जु इल । तत्त बसत दझि हथ्थ ॥

(१) ए. कृ. को.-तिरीसं ।　(२) ए. कृ. को.-दुनिंदं ।
(३) ए. कृ. को.-जालं ।　(४) ए. कृ. को.-जवत ।
(५) ए. कृ. को.-अहि अहि अहि कहि नाम । (६) ए. कृ. को.-पंग पयानन होत वहि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अट्ठ कंपि दो अट्ठ डरि। रवि सुझ्झै नह पथ्थ ॥छं०॥१४३७॥

क्षत्री धर्म की प्रभुता।

कवित्त ॥ मिलि गरूर सामंत। विपथ अरु सुपथ उचारं ॥
विपथ जु बंध्यौ मोह। सुपथ पति रषि पति वारं ॥
रहैं विपथ रजपूत। मझ्झि अनि रपि चित भारथ ॥
इह सु पथ्थ रजतीय। सामि प्रेमह होइ सारथ ॥
सह कित्ति कलं कल कथ्थयौ। काल सु पंग कलंतरै ॥
कस ध्रम्म ध्रम्म छत्री तनौ। मवन मत्त [1]चुक्कहि नरै ॥छं०॥१४३८॥

दूहा ॥ निसि भै भै काइर भजिग। [2]तमस भज्ज गनि सूर ॥
भय भयान रन उदित बर। अद्ध निसा अध पूर ॥ छं० ॥ १४३९ ॥

प्रफुल्ल मन वीरों के मुखारबिंद की शोभा वर्णन।

भुजंगी ॥ परी अद्ध निस्सा जमं छिद्र कारी। ठठुक्के सुरं देखि बरसे न पारी॥
फिरी पंति चावद्दिसं पंग सूरं। महा तेज जाजुल्य दिट्ठी करूरं ॥
छं० ॥ १४४० ॥

सपत्तेज सूरं तहां युद्ध तूरं। दिषे सूर प्रतिबिंब तो सुझ्झ नूरं ॥
महा तेज सूरं समुद्दं जु प्रीतं। बड़े कव्वि रावन्न उप्पम दीतं ॥
छं० ॥ १४४१ ॥

करे सिद्धि जेमन सकारंन नाई। थपे सिद्धि मानं वियं सिद्धि पाई॥
[3]सतं पचयं मुद्दि फुल्लै कमोदं। मनौ बालवै संधि दो संधि ऊदं॥
छं० ॥ १४४२ ॥

तरें को तरं उड्डि पंखं प्रमानं। वसे भौर भ्झोरं सतं पच थानं ॥
[4]मिलं दंपती भौर जोगं सरंगी। ललं बेस सीसी जु मुकरंद पंगी ॥
छं० ॥ १४४३ ॥

चले लोइ जानं मनं मध्य बीरं। सजै कुट्टि लै रथ्थ भुअनं सरीरं॥
डगे उड्डि गेंनं इकं दुत्ति मानं। रगं रत्त सुझ्झै अँभै आसमानं॥
छं० ॥ १४४४ ॥

(१) ए. कृ. को.-चक्कहि। (२) ए. कृ. को—तम सभजग्गनि सूर।
(३) ए. कृ. को. संत पत्र जा (४) मो.-मिले दंपती भौंरे ज्यौं गंस रंत्ती।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज को पकड़ने के लिये पांच लाख सेना के साथ रूमीखां और बहराम खां दो यवन योद्धाओं का बीड़ा उठाना ॥

दूहा ॥ षां मारुफ नव रत्ति षां । रुषमीं षां बहराम ॥
पान मंडि लीनौ सुकर । सामि सपत्ते काम ॥ छं० ॥ १४४५ ॥
पंच लष्ष तिन सथ्थ किय । अनी बंधि न्रप राज ॥
गुन गोरी नन जानई । सामि ध्रम्म सौं काज ॥ छं० ॥ १४४६ ॥

मोतीदाम ॥ बजे बर चंग निसाननि नद्द । सिरं सहनाय नफेरिन सद्द ॥
बजंत निसान सुरंभ रिझंत । सुने सद ईस [1]पलक्क षुलंत ॥
छं० ॥ १४४७ ॥
बजै घट घुघघर घोरनि भार । कै इंद्र अरंभ करै बिबिचार ॥
बजै रंग जोज जलज्ज जल घंट । हरै ग्रब संभरि नारद कंठ ॥
छं० ॥ १४४८ ॥
बजै सद बंस महिष्षत सिंघ । मनों कम नंकन आरंभ रंग ॥
तवल्ल टँकार निसानन हल्ल । किधौं गज मेघ अषाढ़ सु कल्ल ॥
छं० ॥ १४४९ ॥

आगे रावण तिस पीछे जैचन्द का अग्रसर होना और इस आतंक से सब को भाषित होना कि चौहान अवश्य पकड़ा जायगा ॥

दूहा ॥ रावन न्रप बहत सुबर । षिजि बंधव बर बीर ॥
आदि बैर चहुआन सौं । चढ़ि फवज्ज भर भीर ॥ छं० ॥ १४५० ॥
फटिय फौज पहुपंग बर । मत मंचौ न्रिप चिंति ॥
अप्प चढ़न बहन अरी । नीर फौज छबि किंत्ति ॥ छं० ॥ १४५१ ॥

कवित्त ॥ करि रावन न्रप अग्ग । पंग चढ्ढे बर नागर ॥
[2]धरनि धाय सननंति । रंग दुस्सह जुग सागर ॥

(१) मो.-सु पल्ल सजंत । (२) मो.-धरति ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुगति दान अप्पनह। जंम जीवन उध्धप्पन ॥
फल कित्ती भोगवन। क्रंम भंजन अघ कप्पन ॥
जाजुल्य देव दैवान भर। दिषि नरिंद तोमर तरसि ॥
डगमगे भग्गि द्रगपाल बर। बीर भुगति तुंमर परसि ॥
छं० ॥ १४५२ ॥

दूहा ॥ तरसि तुंग बद्दलति दल। षल भल बिजय निसान ॥
बाल वृद्ध इभ उच्चरै। गहै पंग चहुआन ॥ छं० ॥ १४५३ ॥

हरावल के हाथियों की प्रभूति।

बर सोहै बद्दलति दल। बर उतंग गज रत्त ॥
काज न सज्जल रष्षई। कीन गंग उर गत्त ॥ १४५४ ॥
हलि गज दंतिन सघन घन। गति को कहै गनित्त ॥
मनों प्रब्बत बिधि चरन कै। फौज अगैं मैंमत्त ॥ छं० ॥ १४५५ ॥

पंग दल को बढ़ता देख कर संयोगिता सहित पृथ्वीराज का सन्नद्ध होना और चारों ओर पकड़ा पकड़ो का शोर मचना।

पद्धरी ॥ पूरन्न राव चालुक्क बंभ। हम्मीर राव पामार थंभ ॥
गोयंद राव बघेल सूर। अंगमी सेन घन ज्यों लँगूर ॥
छं० ॥ १४५६ ॥

पहुपंग गोपि प्रकिकास राज। दिष्षै कमंध दल करिय साज ॥
बाजिच ताम बज्जे गुहीर। हय गय सु ताम सज्जेति बीर ॥
छं० ॥ १४५७ ॥

न्रिप नाइ सीस मिलि राज सब्ब। दिष्षेव पंग गुर तेज ग्रब्ब ॥
दल सजे साजि सब देषि पंग। उच्चर्यौ गरुअ चहुआन जंग ॥
छं० ॥ १४५८ ॥

सिर धारि बोलि [1]जसराज सामि। बंधें अवन्नि गुरु तेज ताम ॥
सजि सेन गरट चलि मंद गत्ति। निज स्वामि काम [2]गुभझे गुरत्ति ॥
छं० ॥ १५५९ ॥

(१) मो.-सज। (२) मो. गुंजे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आवंत सेन प्रथिराज जानि। उट्ठे व सूर सामंत तानि॥
सामंत सूर सजि चढ़े जाम। हय मंगि चढ़न चहुआन ताम॥
छं०॥ १४६०॥

संजोगि पुट्ठि (१) आरोहि बंधि। अट्टौ सु राज सन्नाह संधि॥
छं०॥ १४६१॥

दूहा॥ गहि गहि गहि मुष बेंन कहि। भग्गि न पावै जान॥
स्रवन सवद न संचरिय। मनों गुंग करि सान॥ छं०॥ १४६२॥

लोहाना आजान बाहु का मुकाबला करना और वीरता के साथ मारा जाना।

कवित्त॥ दल समंद पहुपंग। गज्जि लग्गौ चावद्दिसि॥
लोहानौ बर बीर। पारि मंडी अड्डिय असि॥
लोह लहरि ढिल्लई। फिरिव बज्जे दल घग्गह॥
हं हं हं आरुहिय। गजति गज्जन नर लग्गह॥
पारथ्थ बीर बर बार हर। बड्ढ कूर कट्ठी विहर॥
रघुबीर तरंग तुरंग जल। कमल जानि नंचैत सिर॥छं०॥१४६३॥
मित्त रथ्थ रजि व्योम। मद्दि अट्टई असुर गुर॥
रसह रौद्र विथ्थुर्यौ। षिति षिजि लग्गे अमर पुर॥
संकर भरि लगि लोह। धूरि धुंधरि तिनि सा छबि॥
हाजुर मीर हमाम। मीर गिरदान सामि नमि॥
चवद्दिट्ठ उट्ठि राजन सबद। पारसि गहन गहन्न किय॥
है छांड मंडि असिबर दुकर। जंपत आतुर जीह लिय॥
छं०॥ १४६४॥

लोहाना के मरने पर गोयंदराय गहलौत का अग्रसर होना और कई एक मीर वीरों को मार कर उसका भी काम आना।

भुजंगी॥ तबै हक्कि गहिलौत गोयंद राजं। हयं छंडि हरि जेम करि चक्र साजं॥

(१) ए. आरांध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगे 'सुद्ध धारं सु बाहं सु झारं। मनौं क्रक्कसं तार तुट्टै करारं ॥
छं० ॥ १४६५ ॥

वहै षग्ग झट्टं स क्रन्नति सट्टं। बिसीसं बिघट्टं मनौं नाचनट्टं ॥
तुटै पग्ग उड्डंत व्योमं विहारं। मनौं संझ संक्रंति हव्वाइ झारं ॥
छं० ॥ १४६६ ॥

हहक्कार हक्कार हक्कै सुमीरं। षवं राहि बीरं बजे जुद्ध धीरं ॥
समुष्षं हमामं सु मीरं मिलंदे। मनौं राह ग्राहं कुटं बेस इंदे ॥
छं० ॥ १४६७ ॥

हए तोमरं हीय फेरे फरक्के। मनो नट्ट बेसं सु भूमं तरक्के ॥
तवै चंपि गिरियं सु गोयंद राजं। हये संगिनी छुट्टि सीसं सु गाजं ॥
छं० ॥ १४६८ ॥

फटे तोमरं पुट्ठि उट्टंति रंगे। धमक्के धरा नाग नागं सिरंगे।
चवै दीन दीनं गिरंदी गुमानं। कियं आय पाहार नाविक्क बानं ॥
छं० ॥ १४६९ ॥

चँपै चंप बर बेग गोयंद राजं। मृगी जेम मृगराज धपि पंषि बाजं ॥
हए ताम नेजानि छूटंति धायं। कियं कंत प्राहार गोयंद रायं ॥
छं० ॥ १४७० ॥

हए षग्ग सीसं परे रंभ थंभं। मनौं कोपिनं षत्ति घेटंति ईभं ॥
बियं लग्गि बथ्थं बलं बाहु बाहं। जमं दड्ढ चंपे डरं मेछ गाहं ॥
छं० ॥ १४७१ ॥

उठे हक्कि करि झारि कोपेज डालं। हए च्यार मीरं दुबाहंड ढालं ॥
उरं लग्गि जंबूर आरास षानं। पऱ्यो राव गोयंद दिल्ली भुजानं ॥
छं० ॥ १४७२ ॥

गोयंदराय की वीरता और उसके मरने पर पज्जूनराय का हथियार करना।

दूहा ॥ पहर एक असिवर सुभर। आरिसि बुट्ठौ सार ॥
गिनै कौन गोयंद सिर। जे षग तुट्टिय धार ॥ छं० १४७३ ॥

(१) ए. कृ. को.-जुद्ध।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥ तब गरज्यौ गहिलौत। पत्ति पाहार धार चढ़ि ॥
बड़वा नल असि तेज। पंग पारस संमुह चढ़ि ॥
अरि अबुझ्झ सिष्षवै। मस्त बज्री तन झिल्लै ॥
अंकै मरन समूह। सस्त्र बर [1]सस्त्रन छिल्लै ॥
आवत्त घाय तन झंझरिय। मन अच्छरि तिन तन बरिय ॥
गोयंदराय आहुट्ठ पति। सुगति मग्ग षुल्लिय दरिय ॥
छं० ॥ १४७४ ॥

परत धरनि गहिलौत। सेन नच्चिय असुरायन ॥
चितिय जांम अह सुक्क। रस्स मत्तौ रुद्रायन ॥
गयत प्रान गोयंद। मीर इति मित्ति सुपिल्लिय ॥
घिझ्झे राज पज्जून। सुधर कम्मार सु ढिल्लिय ॥
छहकारि सीस साजे गयन। किहय कंध असि झारि कर ॥
धर पर्‍यौ दंत शत मित्त परि। उद्यौ हक्कि हरि जेम अरि ॥
छं० ॥ १४७५ ॥

पज्जूनराय पर पांच सौ मीरों का पैदल होकर धावा करना और इधर से पांच सौ सामंतों का उसकी मदद करना॥

इत मित्तह उपारह। [2]मीर सौ पंच छंडि हय ॥
है है हैं जंपै जुवान। उथ्थान थान भय ॥
तिन रोहिग पज्जून। राय केहरि करि जुथ्थह ॥
देषि सिंघ पामार। पीप परिहार सु पथ्थह ॥
चंदेल भूप भोंहा सुभर। दाहिम्मौ नरसिंघ बर ॥
कचरा राइ चालुक्क पहु। मिल्लिय पंच उप्पर समर ॥
छं० ॥ १४७६ ॥

नरसिंहराय का वीरता के साथ मारा जाना।

मोतीदाम॥मिलि हक्किय हक्क सु भीर गंभीर। गुमान दुमान सु चंपिय पीर॥
महाभर सूरसामंत सु धीर। सु न्रिम्मल नेम रजे रज नीर ॥
छं० ॥ १४७७ ॥

(१) ए. कृ. कां.-सत्रुन। (२) ए. कृ. को. मीर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हबक्कि सु धक्कि अनो अनि अंग। लगे जम दड्ढ सु सेलह संग॥
छुरिक्कइ घाइ सु तुट्टहि सीस। षिलंत कमंध उठै भर रीस॥
छं० ॥ १४७८॥

चलै घर पूर रुहीर प्रवाह। सबै मिलि घुंटि सकैति सु राह॥
न्त्रिपति करूर [1]निझारत पन्न। मनों नटिनी मुष ऊक अगन्नि॥
छं० १४७९॥

मिले इत मित्त पजून सु याइ। हयौ हिय नेज कुरंमह राइ॥
चले सम नेज हयौ असि झार। पर्‍यौ इत मित्त मनों तरतार॥
छं० १४८०॥

पर्‍यौ धर राइ पजून समुच्छि। हयौ असि सेर न सीसं उच्छि॥
चंप्यौ नरसिंघ मनों करि सिंघ। महातन मंडिग सेन कुलिंग॥
छं० १४८१॥

लग्यौ दल सिंघ करष्षि सु तीर। चंपे चत्र सिंघ सु भग्गिय मीर॥
पर्‍यौ नरसिंघ नरव्वर सूर। तुटे सिर आवध जाम करूर॥
छं० १४८२॥

नरसिंह राय की वीरता और उसका मोक्ष पद पाना।

कवित्त। दाहिम्मै नर सिंघ। रिंघ रष्यौ रावत पन॥
सिर तुट्टै कर कट्टि। चट्टि धायौ धर हर घन॥
मार मार उचरंत। राव बज्जे धारा हर॥
देव स्तुति करि चार। रंभ झग्गरी कहिरु बर॥
संकरह सीस लीन्यो जु कर। दई दरिद्री ज्यौं गहिय॥
कविचंद निरषि सुभ्भै सिरह। जुगति उगति कवियन कहिय॥
छं० ॥ १४८३॥

मुसलमान सेना का जोर पकड़ना और पज्जूनराय का तीसरे प्रहर पर्यंत लड़ना।

पंग हुकम परमान। अग्र चौकी षुरसानिय॥
प्रथम जुद्ध किय [2]मीर। हारि किनही नह मानिय॥

(१) ए. कृ. को. झारत। (२) ए. कृ. को.-मार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परे मीर पथ्थार । धार असिवर सिर झारं ॥
सामंतनि लंगरिय । घाइ उट्ठी ग्रह सारं ॥
सम सथ्थ बाघ बघ्घेल न्त्रिप । जंग जोट कोटह अकल ॥
टारै न मुष्ष सांईय छल । लोह लहरि बाजंत झल ॥
छं० ॥ १४८४ ॥

मुसलमान सेना के क्षित विक्षित होने पर उधर से बाघराज बघेले का वसर करना और इधर से चंदपुंडीर का मौका रोकना ।

परत राइ पज्जून । वित्तचय जाम सु बासुर ॥
विषम रुद्द बिध्थर्यौ । भार लग्गै भर सुब्भर ॥
बघ्घराव बघ्घेल । मार कामोद सेन सम ॥
मिलि चंपिय चहुआन । सूर सुझ्झै न अगम गम ॥
षह धूरि उड्डि धुंधरि धरनि । किलक हक्क बज्जिय विषम ॥
पुंडीर राइ राजह तनौ । समर बार सज्यौ असम ॥ छं० ॥ १४८५ ॥
बीर मंच उच्चार । धार धाराहर बज्जिय ॥
तिमर तेग निब्बरिय । गुडिल गयनं लफि गज्जिय ॥
उड़पति कमल अलोइ । तेज मंजिय तारा अरि ॥
[1]अनौ भोर अर अकल । सयर लोग उप्पर परि ॥
धर धार धार धुक्किय धरनि । करिय अरिय किननंत धर ॥
पुंडीर राइ चंदह सुचित । [2]अरिन नट्ट नच्चै सु नर ॥ छं० ॥ १४८६ ॥

मीर कमोद और पुंडीर का युद्ध और पुंडीर का माराजाना ।

बीर मौर कामोद । आय जब पुंडिर उप्पर ॥
बिहथ नेज उभ्भारि । बाहि निझ्झाहि चंद उर ॥
सेलं सैल संमुहिय । हड्ड भंजिय हिय चंपिय ॥
सुधर ढार निझ्झार । बाहि असुराइन कंपिय ॥
पुंडीर राइ आसर सयन । मृत जिम नंचिय समर ॥
दलभंति पंग पुंडीर परि । जय जय सुर सद्दे अमर ॥ छं० ॥ १४८७ ॥

(१) ए. कृ. को. अनी मोरं अरि कमल ।　　(२) ए. कृ. को.-अरिय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंद पुंडीर की वीरता।

दूहा ॥ परत राइ पुंडीर धर। तरनि सरन गय सिंधु ॥
गनै जु को पुंडीर सिर। जे धर तुट्टि अनिंधु ॥ छं० ॥ १४८८ ॥

चंदपुंडीर के मरने पर कूरंभराय का धावा करना और बाघराज और कूरंभराय दोनों का मारा जाना।

कवित्त ॥ परत राइ पुंडीर। गहिव कूरम षग धायौ ॥
बाघ राइ बघ्घेल। उहित [1]असिवर करि साह्यौ ॥
त्रिभै त्रिम्मै त्रिम्मरिग। तेग झारिय टट्टर पर ॥
मनहु बेद दुजहीन। पिट्टि झल्लरि अग्गै हर ॥
गल बांह लगि गट्ठौ पिसुन। मीत भेट महा बिच्छुरिय ॥
उर चंपि दोइ कट्टारि कर। मुगति मग्ग लभ्भी घरिय॥ छं०॥ १४८९॥

कूरंभ के मरने पर उसके भाई पल्हनराय का मोरचे पर आना॥

कूरंभह उप्परह। [2]बंधु पाल्हनह आयौ ॥
सिंघ छुट्टि संकलकि। देषि कुंजर घट धायौ ॥
कुंतन तरनि सु मंजि। दट्ठ जम दड्ढ विकस्से ॥
भाला षग्गन छुट्टि। पंग सेना परिनस्से ॥
गजबाज जुद्ध घन नर परिग। पहु कारन दिय प्रान जुअ ॥
सुरनरह नाग अस्तुति करैं। बलि बलि बीर भुअंग भुअ ॥
छं० ॥ १४९० ॥

पाल्हन की वीरता और दोपहर के समय उसका खेत रहना॥

मध्य टरत विप्पहर। सार बज्यौ प्रहार झर ॥
मेघ पंग उन्नयौ। मार मंडीय अपार सर ॥
भय कूरंभ टट्टीव। छार भीजै तहां दिज्जै ॥
बर ओडन प्रथिराज। बीर बीरां रस लिज्जै ॥
तन तमकि तमकि असि बर कढ्यौ। असि प्रहार धारह चढ्यौ ॥
पज्जून बंध अरु पुच बर। करन जेम हथ्थह बढ्यौ ॥ छं०॥१४९१॥

(१) ए. कृ. को-असिमर। । (२) मो.-पाल्हनराय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यावत् अगाध गुणों की सार-स्वरूप मेरी जिव्हा पर बसनेवाली भवानी मैं तुझे बार बार प्रणाम करता हूं; क्योंकि तेरी भक्ति के बिना कोई काव्यशक्ति कदापि पाही नहीं सकता। अस्तु मैं एक मात्र तेरे ही चरण-कमलों का आश्रय करके आशा करता हूं कि इस समय विद्यावाद में विजयी होऊं। इस पर सरस्वती ने अंतरिक्ष में उत्तर दिया कि हे पुत्र! तू किसी बात की चिन्ता न कर। तेरे सर पर सदैव मेरा हाथ रहता है। जहां तू है वहां मैं हूं, जहां तू नहीं वहां मैं नहीं अथवा जहां मैं हूं तहां तू है और जहां पर मैं नहीं वहां तू भी नहीं। तू अभय हो, मैं तेरी सहायता करूंगी अत: जो कुछ तू कहेगा वही होगा। जो जो गुण तू चाहेगा वे मैं तुझे दूंगी। तू मेरा प्रतिनिधि एवं यंत्र स्वरूप होकर कार्य्य कर।

केदार कवि बोला हे! कविचन्द अब तक तुमने पाखण्ड से काम लिया है। इस प्रकार के दृष्टबंध प्रयोगों से इष्टसाधना का परिचय नहीं पाया जाता। अच्छा अब जो मैं कहता हूं उसका उत्तर दो। यदि एक पाषाण की पूतरी आपही आप भगवती के सम्मुख खड़ी होकर स्तुति करे तो समझूं कि आप पक्के बर्दाई हैं। इस पर कविचन्द ने कहा। हां जिसको आप पाखंड कहते हैं वह आप भी कर दिखाइए। मैं एक अंगूठी फेंक देता हूं उसे आप मँगा दीजिए। इसके बाद केदार कवि ने एक वय: सन्धि नायिका पर और एक बाल चन्द्रमा पर दो कवित्त और पढ़े और कहा देखिए पावस की बहार दिखलाता हूं। केदार कवि के इतना कहते ही ज़ोर से पवन चल उठी और बद्दल गड़ गड़ाने लगा, देखते ही देखते अन्धाधुंध कारी कारी घटाएँ उठ आईं, बिजली चमकने लगी और रिम-झिम मेह भी बरसने लगा। उसी समय सहसा एक उद्यान प्रगट हो गया जो कि नाना प्रकार के तरु-लता पल्लव और पुष्पों से परिपूर्ण था और जहां तहां मोर शोर करते और झिल्ली झनकारती थीं। यह देख कर सब चकितचित्त हो रहे परन्तु कवि-चन्द ने जो चुटकी चलाई कि पावस की ऋतु की समस्त सामग्री जहां की तहां समाप्त हो गई और वसन्त का समा बँध गया। बद्दल छिन्न भिन्न होकर प्रकृति निर्मल हो गई। जहाँ तहाँ आम के बौर और पतझाड़ पलासों पर लाल लाल पुष्पों के लहलहे झौंर देख पड़ने लगे। झिल्ली के स्थान में थान थान पर भौंरों की गुंजार होने लगी और मोरों के घोर शोर कोयल के बोलों में बदल गए। इसी प्रकार केदार कवि ने जो जो कलाएँ कीं उन सब को कविचन्द ने काट दिया। अन्त में केदार कवि ने कविचन्द से कहा कि यदि तू इस साम्हने पड़ी हुई शिला को गला दे तो मैं तुझे सच्चा बर्दाई जानूं। यह सुनतेही कविचन्द ने दुर्गा का ध्यान धर कर जो एक मंत्र पढ़ा तो वह शिला पिघल कर पानी सी हो गई और गले हुए हीरे की तरह दमदमाने लगी। तब कवि ने उसमें अपनी अंगूठी गाड़ कर केदार कवि से कहा कि अब तू इसमें से मेरी अंगूठी निकाल दे तो मैं तुझे सच्चा इष्ट वाला कवि जानूं और तुझसे हार मानूं। केदार कवि ने नाना प्रकार के जंत्र मंत्र पढ़ कर अपना सा उपाय किया परन्तु वह उस अंगूठी को न निकाल सका। तब तो वह कविचंद के गोड़ों लग गया और कहने लगा कि आप जीते मैं हारा। इस प्रकार पराजित होने पर भी केदार कवि ने एक कला और कर दिखाई। उसने एक सौ छिद्र वाले घड़े को मंत्र बल से जमुना की ओर प्रेषित किया और उसमें जल भर मँगाया। यह देख कर सब दर्बारी बड़े प्रसन्न हुए और पृथ्वीराज ने कहा कि तुम दोनों कवि बराबर हो तुम कोई भी एक दूसरे से कम नहीं हो। यों कहकर पृथ्वीराज ने केदार कवि का बड़ा सत्कार किया और उसे पांच दिन पर्य्यन्त अपना महमान रक्खा। पांच दिन पर्य्यन्त केदार कवि का बिधिवत उचित आदर सत्कार किया गया और चलते समय तीस हाथी सौ कोतल घोड़े, सौ परतल के घोड़े बहुत सा धन रत्न और एक करोड़ नकद मुद्रा बिदाई में दिए गए। बिदा होते समय केदार कवि ने पृथ्वीराज को आशीर्वाद दिया।

(१) सजा हुआ बिना सवार का घोड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्लोक

यावच्चन्द्रो दिवानाथ यावत् गंगातरंगयो ।
तावत् पुत्र प्रपौत्रस्य दुर्ग ग्रामं विलोकयेत् ॥

पृथ्वीराज ने कहा हे कवि यदि कुछ अपराध हुआ हो तो क्षमा करना। तत्पश्चात् कविचन्द ने भी केदार कवि की बड़ी प्रशंसा की और सब तरह से उसे प्रबोधा। आशीर्वाद स्वीकार कर के पृथ्वीराज ने दस गांव का पट्टा भी केदार कवि को दिया जिसे पाकर उसने एक कवित्त पढ़ा जिसका आशय यों है—"हे पृथ्वीराज तू सब प्रकार की जानकारी और दान देने में एक ही है। तेरे कृपा कोर के देखने से ही दो सौ का दान प्राप्त होता है। यदि तू केवल बचन से बोल दे तो पांच सौ की प्राप्ति होती है। जानपहचान होने पर हजार और परस्पर बार्तालाप होने पर लाख की प्राप्ति होती है। यदि सौभाग्य वश किसी गुणी को अपना गुण दिखाने का अवसर प्राप्त हो तो उसके पुत्र प्रपौत्र तक का दरिद्र दूर हो जाता है। सो हे सोमेस सुत पृथ्वीराज मैं हृदय से आशीर्वाद देकर अपने छोटे पुत्र को भी आपकी सेवा में समर्पण करता हूं उसे अपनाइए।

इस प्रकार दान मान सम्मान सब भाँति से संतुष्ट हो मन ही मन प्रसन्न होता हुआ केदार कवि गजनी को रवाना हुआ। उसके साथ में गजनी से आए हुए गुप्त दूत भी लौट चले जो कि सदा उसके साथ में जोंक की तरह रह कर पृथ्वीराज का भेद लेते रहते थे। इन गुप्तचरों ने यथासम्भव शीघ्र ही गजनी पहुंच कर शहाबुद्दीन से सब समाचार जा कहा और धर्म्मायन का लिखा हुआ कूट-पत्र भी पेश किया। तत्तारखां ने जब वह पत्र पढ़ा तो समस्त मीर मुसाहब मारे खुशी के फूल कर कुप्पा हो गए। शहाबुद्दीन ने आज्ञा दी कि इसी समय जंगी तय्यारी की जाय और सहायक सेनाओं को जुटाने के लिये जहां तहां परवाने भेजे जांय। शाह की आज्ञा होतेही बात की बात में सब सामान दुरुस्त हो गए। नियत तिथि को सब सेना सहित शहाबुद्दीन गजनी से कूच कर दस कोस पर आन पड़ा। यहां पर उसने एक अन्तरंग सभा की जिसमें सब मीर मुसाहब उपस्थित थे। शहाबुद्दीन ने सब को सुना कर कहा। अय मेरे अजीजो! इस वक्त मुझे अपने जासूसों के जरिये से जो खबर मिली है उससे तो फतह की पूरी उम्मेद है मगर फिर भी आप लोगों को निहायत मुस्तैद रहना मुनासिब है क्योंकि राजपूत बच्चों से लड़ना लोहे का चना चबाना है। यह सुनकर खुरासान खां और तत्तारखां बोले "हुजूर हर्गिज फिक्र न करें ये रोजे रमजान के दिन हैं और नमाज का वक्त है, हमारे दिलों में पूरी उम्मेद है कि हम लोग फतह-याब होंगे और दुश्मन जेर होकर लाचार होगा"। इसके सिवाय और और सर्दारों ने भी अपने अपने हथियार छूकर और बाहें उठाकर कहा कि हम लोग कुरान शरीफ की रू से कहते हैं कि अब की बार हम जरूर ही पिथौरा को कैद करके छोड़ेंगे और साथही ये शर्तें भी करते हैं कि अगर ऐसा न करें और शिकस्त खा कर मैदान जंग से भाग आवें तो आपको इख्तियार है कि आप हम लोगों को जिन्दा दफन करा दें। इस तरह कौल करार हो चुकने पर आगे को तय्यारी हुई और बराबर कूच दर कूच चलता हुआ शाही लश्कर सौनपुर के पड़ाव पर आगया। सौनपुर के घाट नदी पार कर के नगर के दक्षिण पार्श्व में खेमें जमे। एक दिन रह चुकने पर दूसरे दिन फिर से अंतरंग सभा की तय्यारी हुई। सब मीर मुसाहब यथास्थान आ बैठे। शहा-बुद्दीन अपने आसन पर आसीन हुआ ही था कि केदार कवि के आ पहुँचने की इत्तला हुई। शहाबुद्दीन ने तुरन्त ही केदार कवि को अपने पास बुलाया और कुशल प्रश्न पूछकर उसे उचित आसन पर बैठने की आज्ञा दी। अभी शहाबुद्दीन केदार कवि से ही बात कर रहा था कि तब तक चार छद्म-वेषधारी योगी अर्थात् गुप्तचरों के आने का समाचार मिला। शाह ने उन्हें भी सम्मुख आने की आज्ञा दी और केदार कवि से बातें करना छोड़ कर उनकी सुनने लगा। उन अंग विभूति जटा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मृगछाला सिंगी सेली मालाधारी दूतों ने शाह के संमुख आकर अदब से सलाम किया और प्रसन्न मन होते हुए वे बड़े चाव से बोले। हुजूर का इक़बाल बड़ा है। जो दुश्मन आप के मन में खटक रहा था उसने अपनी बर्बादी का सामान आप तय्यार कर रक्खा है। उसने अपने वजीर कैमास को खुद मार डाला है इसी से उसके सब बहादुर सरदार उससे बेदिल हो रहे हैं। उसने अपने नामी सिपहसालार चामंडराय को बेड़ियों में डाल रक्खा है और वजीर की मौत की वजह से आप खुद ऐसा गमगीन रहता है कि उसे दिन को आबदाना और रात को नींद आना हराम हो रहा है। इस वक्त वह कुल तीस हजार सिपाहियों के साथ इधर उधर शिकार खेलता हुआ पानीपत के मैदान में आ पड़ा है। वहाँ पर पड़े हुए उसे दस दिन हो चुके हैं और करीब दस दिन अभी और भी वहीं रहेगा। यह समाचार सुनते ही शहाबुद्दीन की कली खिल गई। वह अपने सिपहसालार सर्दारों को सबेरे ही वर्मे तय्यार करने की आज्ञा देकर आप शयनागार को चला गया।

यह हाल चाल देख कर केदार कवि का पिता दुर्गा कवि बोला "रे केदार जिस दानी राजा पृथ्वीराज से इतना दान सम्मान पाकर आया है उसी पर यह सेना सजी जा रही है। होनहार तो सब विधाता के हाथ में है पर देख इस समय अपने कुल को कलंक लगता है। एक तो पहिले माधव भाट ने ऐसी करतूत की कि जिससे राजाओं का चित्त भाटों की ओर से फिर जाना सम्भव है फिर अब यह घटना अनायास आ उपस्थित हुई है। इस लिये इस समय राजा पृथ्वीराज को सचेत कर देना उचित है। पिता के ऐसे वचन सुन कर केदार कवि ने अपने छोटे भाई दास कवि से कहा कि तू इसी समय पानीपत जाकर पृथ्वीराज को सूचित कर दे कि आप पर शाही सेना चढ़ी आती है। सोनपुर के पास पुल बाँध कर शाही सेना सिन्धु पार हो चुकी है और सब मुसल्मान सर्दारों ने कौल कर कर के प्रतिज्ञाएँ की हैं कि चाहे जो हो अब की बार पृथ्वीराज को बिना पकड़े न छोड़ेंगे। बड़े भाई की आज्ञा मान कर दास कवि वहाँ से उसी समय विदा हुआ और तेजी से चलता हुआ वहां का छूटा पानीपत में जा पहुँचा।

एक प्रहर रात्रि जाते जाते, दास कवि पानीपत के मैदान में पृथ्वीराज के शिविर के सम्मुख जा उपस्थित हुआ। इत्तला पाते ही पृथ्वीराज ने उसे अपने पास बुलाया और पूछा क्या है? तब वह बोला अन्नदाता गज़नीपत शहाबुद्दीन आप पर चढ़ा चला आता है, सो मैं अपने भाई का भेजा हुआ आपको यही सूचना देने आया हूं। शाह के आ पहुंचने में देर नहीं है, संझा सबेरे उसे आया ही समझिए। यह सुनतेही पृथ्वीराज ने लाल लाल आंखे करके एक नजर से अपने सामन्तों की ओर देखा। वहां क्या! वे रणोन्मत्त सूर सामन्त सदा युद्ध के लिये उत्सुक रहते थे। उक्त समाचार पाते ही सामन्तों के सीने फूल उठे, मोछे फड़क उठे, मूछें थर्रा उठीं और उनके ऐन जोशीले चेहरों पर अग्नि ज्वाला का सा तेज जाज्वल्यमान हो उठा पृथ्वीराज ने सामन्तों से पूछा कि इस समय पैदल युद्ध किया जायगा या घोड़ों पर से? इसके उत्तर में कन्ह चौहान बोला कि यह स्थान घुड़चढ़ी लड़ाई के योग्य नहीं है। साम्हने तो घने जंगल से परिपूर्ण बड़ी बीहड़ भूमि पड़ती है; पीछे और बाईं तरफ गम्भीर जलाशय है इस लिये आधी सेना तो घोड़ों पर रह कर दाहनी ओर उचित समय पर सहायता करने के लिये सन्नद्ध रहे और आधी सेना पाय पैदल होकर आगत यवन दल बल को दलन करने के लिये प्रस्तुत रहे।

२१वां युद्ध

रात्रि व्यतीत होने पर प्रातःकाल ही पृथ्वीराज की सेना में जंगी नगाड़े बजने लगे और सूर सामन्त एवं सपूत राजपूत बीर सजने लगे। बीस हजार योद्धाओं ने अपने घोड़े छोड़ कर कमल व्यूह की रचना की और शेष सैनिक घोड़ों पर सवार होकर सहायता के लिये सन्नद्ध रहे। नरनाह कन्ह चौहान,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गोवंदराय गहलौत, जैतसिंह, बलिभद्र, रामराय बड़-गुज्जर दोनों भाई और बाप बेटे दोनों हाड़ा हम्मीर उक्त कमल व्यूह की पाँखुरी हुए ! बग्गरी राय, पज्जूनराय, नाहरसिंह और पीप पड़िहार उसके पराग हुए। राज्यमंत्री जैतराव प्रमार उक्त पुष्प की नलिका एवं मृणाल हुआ और पृथ्वीराज सबके बीच में सजा। इसके सिवाय जामराय यादव भोंहा चन्देल और विंझराज आदि सामन्त घुड़चढ़ी सेना के सहित दक्षिण अवकाश पर सन्नद्ध रहे।

जहां से शहाबुद्दीन सिन्धु पार हुआ था वहां से और पानीपत से पचास कोस का अन्तर बैठता है। परन्तु मुस्लमानी सेना वहां से रात दिन कूच करती हुई इस वेग से आई कि सचमुच सबको आश्चर्य्य सा होगया। इधर राजपूत सेना में जहां तहां प्रबन्ध होही रहा था कि शाही सेना की अवाई की धूलि उड़ती हुई देख पड़ने लगी। शाही सेना में मुस्तफा ख़ां और दलेल ख़ां दो नामी सरदार पीठ सेना और प्रकोट सेना के स्वामी थे, शाह स्वयं सब सेना का सेनापति था। बेला टलजाने के कारण राजपूत सेना से एक योजन के अन्तर पर शाही लश्कर के भी डेरे पड़ गए। रात्रि को तत्तार ख़ां ने शहाबुद्दीन से कहा कि हिन्दू लोग मैदान जंग का मौका देख कर पैदल लड़ाई करने के लिये तैय्यार हैं। इस लिये इस वक्त हम लोगों को भी पैदल लड़ाई करनी मुनासिब है, लिहाजा पचास हजार पैदल सिपाहियों को साथ लेकर मैं तो दुश्मन से जंग लेता हूं और बाकी पचास हजार घुड़चढ़ी फौज के साथ आप मदत के वास्ते मुस्तैद रहिए। शहाबुद्दीन ने तत्तार ख़ां का यह प्रस्ताव प्रसन्नता पूर्वक स्वीकार कर लिया और उसी के अनुसार मुस्लमान सेना को हुक्म भी सुना दिया गया।

दूसरे दिन आकाश में उजेले की आभा पड़ते ही दोनों दलों में जोर जोर से घनघोर ध्वनि हुई सुरीले रणवाद्यों का स्वर सुन कर सूरवीरों के तो सीने दूने होने लगे परन्तु कायर पुरुषों के कलेजे कांपने लगे। दोनों सेनाओं के अग्रभाग में हथनार कुहकबान और जंबूर आदि अग्न्यास्त्रों की भरती थी इस लिये दिखादाव होते ही दोनों ओर से अग्नि वर्षा होने लगी जिससे उस सघन बन मय पहाड़ी स्थान में इस प्रकार धुआं भरगया कि दोनों दल के लोग कुछ देर के लिये अन्धे हो गए। परन्तु धुआं धक्कड़ की सफाई होतेही दोनों ओर के वीर वांकुरे योद्धा एक दूसरे पर अनयारे बान बरसाते हुए ऐसे टूटे जैसे कामातुर करी किसी करिनी पर टूटता है। इधर के राजपूत वीर राम राम रटते और उधर के मीर पीर अली अली पुकारतेएक दूसरे पर पिलते हुए दोनों दल परस्पर ऐसे हिलमिल गए जैसे खिचड़ी में घी। यदि एक दूसरे के कंधे पर तलवार का वार करता तो तीसरा उसके खोपड़े को खांड से फार देता था, कोई किसी के कोख में खंजर खोसता तो कोई किसी के सीने में सेल धसा देता था, किसी का धड़ से सर अलग जा छटकता तो किसी की आँते निकल कर उसी के पैरों में लिपट जाती थीं, किसी का सर नहीं तो किसी के हाथ पैर नहीं-इसी प्रकार से सहस्रों सूरवीर मरते कटते हुए पटते जाते थे परन्तु अपनी अपनी बाजी पर से हटते नहीं थे, उनका ऐसा विकट रणकौशल देखकर आकाश मार्ग में स्थित देवाङ्गनाएँ पुष्पों की वर्षा करतीं और रण क्षेत्र में रक्त पीती हुई योगिनी वीर योद्धाओं के गुणगान करती हुई,फूली अंग नहीं समाती थीं। इसी बीच में दो यवन सर्दार राजपूत सेना को काटते पाटते पृथ्वीराज के पास तक आ पहुंचे और पासही था कि वे राजा पर बेकसर वार करें;परन्तु वीर वांकुरे पृथ्वीराज ने उन्हें इसका अवसर न देकर ऐसी सेल फटकारी जो उन दोनों मीर बन्दों के कलेजे पार गई और वे दोनों घोड़ों पर से गिर कर आसमान देखने लगे। अपने स्वामी का यह शौर्य्यकौशल देख कर राजपूत सिपाही प्रसन्न हो गए और और भी जी खोल कर हाथ करने लगे। मौका बेढब देख कर उधर से पीठ सेना भी खेत में आगई जिससे मुसल्मानी बाजी मजबूत हो गई इस समय इस जोर शोर से लोहा झरने लगा कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर वीर लोग अपना पराया भूल गए।

लोहे की झार की झपेट बुरी होती है। उसे देख कर साधारण सुकुमार लोगों को तो जूड़ी का बुखार चढ़ आता है; परन्तु सच्चे सूरवीर उसी के उजेले में आत्म ज्योति का दर्शन करते हैं या आकाश में स्थित अप्सराओं का हाथ जा पकड़ते हैं। उधर से मुसल्मानी दल का बल बढ़ा देख कर इधर से आजान बाहु लोहाना और लंगरीराव खेत में उतर पड़े और आगे बढ़ कर उन्होंने शाही सेना को आड़े हाथों ले लिया। इन दोनों बीरों के रण कौशल से समस्त शाही सेना मनहार होने लगी और राजपूतों का जी बढ़ उठा। खाँडे, तलवार तव्वल, बाने, पट्टे; दाब. बिछुआ. बांक, बगुरदा, छूरी, कटार, पेशकब्ज आदि हथियारों के ऐसे करारे वार हुए कि घड़ी भर के लिये देवता लोग भी क्षुभित हो गए। दम की दम में सैकड़ों बिना सवार के घोड़े इधर उधर अनाथ से दाँत काढ़तेहुए हींसते फिरने लगे। भसुंड से मुंड विहीन हाथी प्रचंड स्वर से चिक्कार मारते हुए इधर उधर लुढ़कते फिरने लगे और उनके शरीर से बहता हुआ रक्त पहाड़ी झरने सा झरने लगा। इसी तहर युद्ध होते होते मुसल्मानी सेना के पैर पीछे पड़ने लगे यह देख कर शहाबुद्दीन ने अपने सिपाहियों को कसम देकर पुकारा और आप स्वंय जान हथेली पर रख कर राजपूत सेना में पैठने को अग्रसर हुआ। इस पर मनहार मुसल्मान सिपाहियों का फिर से दिल हरा भरा हो उठा। वे लोग अल्ला अल्ला का हल्ला करके दीन की दुहाई देते हुए बड़े बेग से तेग चलाते हुए झपटे परन्तु अटल राजपूत बच्चे एक पैर भी पीछे न हटे। ज्यों ज्यों उधर से मुसल्मान बढ़ते आते थे त्यों त्यों राजपूत उन के सिर कुलाल के से चक्र उतारते जाते थे। वाह उन युद्ध करते हुए बांकुरे बीरों के शरीरों में घने घने घावों से बहता हुआ रक्त कुसुम सा फूला जान पड़ता था। जब किसी के सिर पर किसी सहजोर की जोर भर गुरज बैठ जाती तो उस का सर दहेंड़ी सा फूट जाता था। ढाल तलवार आदि सब हथियारों से हीन होने के कारण कोई कोई आपस में छूरी कटारी के ही मार पेंच के वार कर कर अपना रणकौशल दिखाते थे परन्तु जिनके पास यह भी नहीं वे बिचारे परस्पर मल्ल युद्ध करके ही अपने मन का हौसला पूरा करते थे।

दोनों दल के रण बाँकुरे वीरों की मारा मार के कारण समस्त रणभूमि लोथों से पट गई। तत्तार खां खुरसान खां रुस्तम खां आदि यवन वीरों ने अपना सा पराक्रम किया परन्तु राजपूत योद्धाओं से पार न पा सके। एक लाख मुसल्मान सेना बीस हजार राजपूतों का बेग न सह सकी और दो पहर बीतते ही सब मुसल्मान सिपाही तीन तेरह होकर भाग उठे। यह आपत्ति देख कर शहाबुद्दीन स्वयं भागने को विवश हुआ और घोड़े पर से उतर कर हाथी पर सवार हुआ ही था कि उसपर पहाड़ राय तुंअर की आँख पड़ गई। अस्तु वह रामराय जादव, भोंहा चंदेल, लोहाना आजान बाहु, पज्जून राय और विंझ राय इन पांच सामन्तों सहित शाह को घेरने के लिये चढ़ दौड़ा। मालिक पर आफत आते देख कर उधर से बीस मुसल्मान सर्दार शाह की रक्षा के लिये उतरे और इन छः सामन्तों से जुट पड़े। बड़ी देरतक दाव पेंच होते रहे परन्तु अन्त में वे बीसो सर्दार काम आए और भोंहा राय चन्देल ने हाथी के मथार पर भाला जा मारा। जब तक हाथी उसपर झपट करे कि लोहाना आजानबाहु ने एक ऐसा तलवार का हाथ दिया कि हाथी का मुंड रुंड से अलगही हो गया। तब तक पहाड़ राय तुंअर ने घोड़े को एड़ देकर हौदे के बराबर जा लगाया और शहाबुद्दीन का हाथ पकड़ कर उसे अनाथ की तरह खींच लिया। बादशाह का यह हाल होते देख कर और भी मुसल्मान सिपाही जो जहां थे सो सब तीन तेरह हो कर भाग गए। शाही रखत सब राजपूतों के हाथ लगा। इस युद्ध में सात हजार मुसल्मान सिपाही और पांच सौ घोड़े शहाबुद्दीन की तरफ के काम आए और तीन सौ राजपूत खेत रहे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस प्रकार से मुसल्मान सेना को परास्त करके और शाह शहाबुद्दीन को बंदी कर राजा पृथ्वीराज आनन्द के नगाड़े बजाता हुआ सानन्द दिल्ली को लौट आया। वहां पर उसने एक मास पर्य्यन्त शाह को बड़े आदर भाव से महमान की तरह रक्खा और फिर आठ सौ घोड़े और बहुत कुछ धन रत्न दंड में लेकर उसे सादर गज़नी को विदा किया। बादशाह से दंड में पाए हुए द्रव्य का आधा भाग पहाड़ राय तूंअर को दिया गया और आधा अन्यान्य सब सामन्तों को।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिल्ली वर्णन।

उनसठवां समय।

इस देश के अन्तिम हिन्दू सम्राट महाराज पृथ्वीराज के समय में दिल्ली नगर की छवि छटा कुछ विलक्षण ही थी। राजा पृथ्वीराज के दरबार का एक निज मुसाहब एवं उसका बाल सखा छओ भाषाओं में परम पारंगत विद्वान अद्वितीय कवि चन्द बरदाई कहता है कि उस समय दिल्ली नगर साक्षात इन्द्र की पुरी के समान शोभायमान था। राजद्वार पर निरन्तर नाना प्रकार के मन हरण स्वर मय सुन्दर बाजे बजा करते थे और साक्षात् काम देव की कलाओं के से अवतार आठ सौ मतवारे हाथी सदा ड्योढ़ी पर घूमा करते थे नगर के बाहरी प्रान्त में जमुना के किनारे पर स्थित निगमबोध स्थान की बहार तो कथनशक्ति से बाहर थी! वहां पर बारहो महीने बसन्त ऋतु का वास रहता था। वहां पर जहां तहां भिन्न भिन्न प्रकार की क्यारियों में भांति भांति के तरु लता और गुल्म लहलहाते थे। सीतल मन्द सुगन्ध त्रिविध बयार बहती थी, केसर कुंकुम जाती मालती गुलाब चंपा चमेली कुंद कदंब आदि के मधु की सौंधी सुगन्धि से समस्त वायु मंडल सुवासित रहता और अनार दाख बदाम श्रीखंड पिंडखजूर आम अनन्नास जिमूरी बिजौरे शहतूत अखरोट लीची नारियल आदि नाना प्रकार के फल मय वृक्ष भी संपत्ति के भार से नम्र होकर सदा मतवालों की तरह झोका लिया करते थे।

बसन्त ऋतु के दिनों में प्रातःकाल के समय महाराज पृथ्वीराज का दरबार खास प्रायः इसी स्थान पर हुआ करता था, जिसमें नाना प्रकार के मधुर स्वर वाले बाजे बजते थे और गायक गण समयोचित स्वर से उत्तमोत्तम राग रागनियों की अलापचारी करते थे। अबीर और गुलाल के झोंकों से सर्वत्र लाली छा जाती थी। बीचोबीच महाराज पृथ्वीराज का राज्य सिंहासन लगता और आस पास उसके सखा सामन्त लोग बैठते थे। राजा के सिर पर आच्छादित रत्न जटित छत्र और अगल बगल ढुरते हुए मोरछर ऐसे भले मालूम देते थे जैसे साक्षात् मधुमास ही राजा पर छाया किए हो। पृथ्वीराज के वाम पार्श्व में गोइन्दराय, निड्डुर और सलख प्रमार बैठते और दाहने में सोमेश्वर का सगा भाई कन्ह चौहान बैठता था जिस की आखों पर सदा पट्टी चढ़ी रहती थी। गादी के पीछे साक्षात ब्रह्मा के समान विद्वान गुरुराम प्रोहित का आसन रहता और सम्मुख कविचन्द बैठता था। इसके सिवाय चन्दपुण्डीर, चामंडराय, लक्खन बघेला आदि सामन्त लोग यथास्थान अपने अपने आसन पर अदब से आसीन रहते थे।

जिस स्थान पर किल्ली ढिल्ली होने के कारण इस नगर का नाम ढिल्ली या दिल्ली पड़ा उसी स्थान पर राजा पृथ्वीराज का राजमहल था। दिल्ली नगर इन्द्र की पुरी था तो राजा पृथ्वीराज के सत खने महल इन्द्र के ही महल थे; जहां पर निरन्तर अनेक प्रकार के आमोद प्रमोद से एक अनुपम चहल पहल रहा करती थी। राजा पृथ्वीराज के पराक्रम से विजित राजा लोग सदा महलों की पौरि पर हाजिर रहा करते थे। महलों के पार्श्व ही में नरनाह काका कन्ह का निवास स्थान था। जिस प्रतापी पृथ्वीराज के कारण अस्सी लाख सवारों का स्वामी कनौजराज जैचन्द हलहल कांपता था और गजनीपति शहाबुद्दीन को जिसके सामन्त लोग बार बार बांध लाते थे उसकी विभूति और राजश्री का कहां तक बखान करें। पृथ्वीराज के दरबार के फर्श पर अच्छे अच्छे मुलायम गिलम गलीचे और गाव तकियों की भर मार रहती थी। चांदनी चँदेवा सब जरदोजी के थे और दीवारों में कबी सजावट की जगह सच्चे माणिक मोती हीरा पन्ना पुखराज और

---

(१) जमुना के किनारे निगम बोध करके देवी का एक मंदिर था उसी के सम्बन्ध में सुसज्जित स्थान का वर्णन है। उस समय यह एक प्रख्यात तीर्थ स्थान था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीलम आदि अनेक रत्न जड़े हुए थे ।

मध्यान्ह काल में भोजन का समय होने पर भटाले का मालिक बनवीर परिहार सभा में आकर सादर हाथ जोड़ कर निवेदन करता । घणीक्षमा रसोई तय्यार है । तब दरबार बरखास्त होता और अपने सब सामन्तों सहित राजा पृथ्वीराज भोजन करने बैठता, जहां नाना प्रकार के सौंधे और स्वादिष्ट भोजन परोसे जाते थे । अन्नादि षटरस व्यंजनों के सिवाय नाना प्रकार के पकवान और तरह तरह का मांस(गोश्त) भी नित्त थाले में लगाया जाता था । भोज्य पदार्थों में पड़े हुए केसर अगर कपूर आदि की सुगंधि से सारा महल महक उठता था । सब सखा सहेलरों के साथ भोजन करके किंचित विश्राम करने पश्चात् राजा पृथ्वीराज पुनःसभा भवन (दरबारे आम) में आ विराजता था । जरदोजी, जरीबाफ्ता कीमखाब वग़ैरह से मढ़े हुए और अन्यान्य राजसी आडंबरों से सुसज्जित सभा भवन के बीच में बैठा हुआ राजा पृथ्वीराज देवताओं के समूह में इन्द्र एवं ग्रहों के बीच में सूर्य्य सा सुशोभित होता था और आश्र्व पार्श्व में डटे हुए सामन्त उस भानुवत् हिन्दू सम्राट की रश्मि से देदीप्यमान होते थे । सभा मंडल के मध्य में गद्दी के संमुख बैठे हुए दसौंधी और गंधर्व लोग मधुर स्वर से बाजे बजाते और भ्रू निक्षेप कर कर भाव बताती हुई नृत्यकी गण कलकंठ से गान करतीं और नाना प्रकार के नृत्य करती हुई चपला सी चमकती थीं । जिस समय वे रतिरानी की सी कलाएं एवं कोक की सी कारिकाएं नृत्यकी अनेकों कलांए करके नाचतीं और कलकंठ से गान करतीं उस समय ऐसा प्रतीत होता कि इन्हे देखकर तो वल्कलधारी वैरागियों का भी चित्त क्षोभित हो जाना सम्भव है।

राजा पृथ्वीराज इस प्रकार से दिन भर तो अपनी मित्र मंडली के साथ बिताता और रात्रि को अन्तरमहल में जाकर पटरानियों के सहवास में जीवन की मौज उड़ाता था । राजा पथ्वीराज की नव रानियां थीं ।

न.	रानी का नाम	पिता का नाम	नैहर	विशेष
१	रानी इंछिनी	सलख प्रमार	आबू	जेष्ट पटरानी
२	....	परिहार राजा	मंडोवर	
३	चन्द्रावती	पुंडीर कुल		चन्दपुंडीर की बहिन
४	....	दाहरराय	"	चामंडराय की बहन रैनकुमार की जननी ।
५	शशिवृता		देवगिरि	२६ वां समय देखो
६	इन्द्रावती			३३ वां समय देखो
७	भानमती	....	....	....
८	पज्जूनराय	....	....	....
९	हंसावती	....	....	३६ वां समय देखो

सूर्य्य रश्मियों को आच्छादित करने वाले सत-खन्ने महलों के बीच में बिचरता हुआ राजकुमार रेणसी नाना प्रकार की बाल क्रीड़ाएं करता था। कुछ बड़ा होने पर अपने समवयस्क सखा सामन्तपुत्रों के साथ यमुना के किनारे भी खेलने जाया करता था । अच्छे अच्छे रंग विरंग रेशमी वस्त्र और रत्न जटित आभूषण पाहिने हुए रेणकुमार बड़ाही प्यारा और भला मालूम देता था। एक दिन जमुना किनारे खेलता खेलता राजकुमार रेणसी एक गुफा में घुस गया तो अन्दर जाकर देखता क्या है कि साक्षात् शान्ति रस का अवतार स्वरूप एक तेजस्वी तपस्वी ध्यानमग्न बैठा हुआ है। उसके शरीर पर बमीठे लग गए थे और कर्ण कुहरों में कपोत एवं सुग्गों ने घर बना लिए थे । लड़कों के ताली पीट पीट कर कोलाहल करने से ध्यानावस्थित मुनि की समाधि भंग होगई। तब कविचन्द के पुत्र ने जटा-जूट धारी अग्नि के समान जाज्वल्यमान तेजधारी मुनि के साम्हने साष्टांग प्रणाम करके पहिले राज-कुमार का और फिर अपने सब साथियों का परिचय दिया । इस पर मुनि महाशय ने सबको आशीर्वाद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देकर कहा हां मैं समझा तुम ढुंढा के कुल में हो जो कि अजवन में स्थापित अजमेर नगर का राज्य करता था। उसी ढुंढा के अंश से उत्पन्न पृथ्वीराज इस समय दिल्ली नगर का शासक है। यह दिल्ली की भूमि बड़ी विलक्षण है। यह किसी मुनि करके शापित है इसलिये इस पर कोई एक छत्र राज्य नहीं कर सकता। पहिले तो इस भूमि के लिये पांडवों ने कौरवों को मार कर अपना राज्य जमाया; पर वह भी न रहे तो तोमर राजा हुए और वे भी किल्ली ढिल्ली करके चल बसे तब अब चहुआन हैं। परन्तु इनके पश्चात् अब शीघ्रही मेवाती लोगों का राज्य होगा।

राजकुमार रेणसी गुफा से चल कर अपने सब बाल सखाओं सहित राज महल को रवाना हुआ। सब सामन्त बच्चे घोड़ो पर और उनके बीच में हाथी पर सवार राजकुमार रेणसी ऐसा सुशोभित होता था मानों देवताओं की मंडली में एरावत पर सवारी किए हुए इन्द्र चला जा रहा हो। राजकुमार रेणसी के साथ में जो अन्यान्य सामन्तों के कुमार थे उनकी नामावली नीचे लिखी जाती है।

सामन्त कुमारों की नामावली।

०	कुमारों का नाम	पिता का नाम	विशेष
१	ईसरदास	कन्ह चौहान	खट्टपुर का जागीरदार
२	चन्द्रसेन	निड्डुर राय राठौर	
३	करनसिंह	जैतराव प्रमार	
४	सामन्तसिंह	गोयन्दराय गहलौत	
५	प्रतापसिंह	दाहिमा कैमास (राज्यमंत्री)	
६	धीर सिंह(धीरपुंडीर)	चन्दपुंडीर	
७	तेजपुंज	पीपा परिहार	
८	पंडित हरिदेव	गुरुराम प्रोहित	
९	नाहर सिंह	हाहुलीराय हम्मीर	
१०	पहाड़ सिंह	हाहुलीराय हम्मीर	
११	....	चामंडराय	
१२	जैसिंह	महनसिंह परिहार	
१३	राजसिंह	सिंघ प्रमार	
१४	रनधीर सिंह	रामराय बड़गुज्जर	
१५	जल्हन कुमार	चन्दबर्दाई	
१६	पातल सिंह	हरसिंह	
१७	देवराज	भिमराज सौलंकी	
१८	अचलेस कुमार	देवराज बग्गरी	
१९	पहार राय	पज्जूनराय	
२०	हरदार	नरसिंह हाड़ा	
२१	अमर सिंह	प्रसंग राय खीची	
२२	तेज डोड	सुमेर सिंह	
२३	सिवदास	जंघारा भीम	
२४	कविदास कुमार	केहर कंठेर	
२५	अरिन कुमार	अत्ताताई	
२६	....	परिमाल चन्देल	

बसन्त पंचमी का उत्सव आया हुआ जानकर महाराज पृथ्वीराज ने आज्ञा दी कि बसन्त के दरबार का सामान सजा जाय। आज्ञा पाते ही सेवकों ने उस ओर परिश्रम करना आरम्भ किया। बसन्त पंचमी के दरबार के लिये नियत स्थान सजा जाने लगा। इधर प्रधान को आज्ञा दी गई और बसन्त के उत्सव पर आवश्यक समस्त सामग्री जुटाई जाने लगी। बात की बात में मनों अबीर गुलाल लाकर हाजिर किया गया। केसर कस्तूरी अगर चन्दन कपूर आदि सोंधीं सुगंधिएं हरे हरे तरु लता पल्लव और वंदनवारों आदि और नाना प्रकार के पुष्पों से यथाविधि सभा मंडप सजाया गया। सूती रेशमी जरतारी और तरह तरह के बसन्ती वस्त्रों की भी यथा स्थान उचित सजावट की गई। ऐसे सुसज्जित सभामंडप के बीच में श्री गोपाल लाल जी का सिंहासन स्थापित किया गया। बसन्त पूजा का समय होते ही ढोल, डफ, नगाड़े, शंख, वीणा, सहनाई, मोरचंग, झालर, घंटा, विजैघंट, आदि नाना प्रकार के आनन्द वाद्य बजने लगे। पूजन हो चुकने पर कुछ देर रोशन चौकी की बजौटी होती रही, इसके बाद उत्तमोत्तम गायक गण और नाट्य विद्या में निपुण नट लोग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बुलाए गए। कन्ह, निड्डुर, गोयंद राय, पज्जूनराय, अत्तताई, और सब सामन्तों सहित पृथ्वीराज भी श्री गोपाललाल के सिंहासन के पास आ बैठे। गायकों ने गाना आरंभ किया नर्तकों ने नाचना आरम्भ किया और नट लोगों ने श्री भगवान कृष्णचन्द्र जी की नाना प्रकार की लाला विहार के नाटक खेल कर दर्शक मंडली को मुग्ध कर दिया। आधी रात के उपरान्त दरबार बर्खास्त करके राजा पृथ्वीराज ने सब लोगों को इनाम देकर बिदा किया और वह आप भी अन्तर महल में विश्राम करने चला गया।

इसी प्रकार नाना भांति के रासरंग और आमोद में समय विताता हुआ राजा पृथ्वीराज दिल्ली राज्य की राज्यश्री का सम्पूर्ण रूप से सुख भोग कर रहा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जंगम कथा।

(साठवां समय।)

एक समय की बात है कि राजा पृथ्वीराज समस्त सूर सामन्तों सहित सभा में बैठा हुआ राजसी रसरंग का आनन्द आस्वादन कर रहा था। संगति विद्या और नृत्य कला में अत्यन्त निपुण, हाव भाव कटाक्ष और अन्यान्य स्त्रियोचित कला चातुर्य्यों में चित्र रेखा को भी चुटकियों चलाने वाली, एक अनुपम स्वरूपवती वेश्या ताल के तारतम्य से बँधी हुई लै में, ऊंची नीची चल फिर और आड़ी सीधी लौट फेर करती हुई, समयोचित स्वर से अच्छे अच्छे राग रागनियों में मनोहर गीत गाती और बात बात पर भाव बताती हुई राजा पृथ्वीराज के सहित समस्त उपस्थित सभासदों का चित्त चुरा रही थी।

उसी समय कन्नौज से आया हुआ एक जंगम आ पंहुचा। उसके आतेही पृथ्वीराज ने सौ स्वर्ण मुद्रा और एक घोड़ा इनाम में देकर वेश्या को तो बिदा किया और दरबार बर्खास्त करके आप उस जंगम से वार्तालाप करने लगा। पृथ्वीराज ने उक्त जंगम से पूछा। कहो क्या समाचार लाए? तब वह बोला महाराज सुनिए। कन्नौजराज जैचन्द के यज्ञ में निमंत्रित हजारों राजा उपस्थित थे। अतः उसी समय सुअवसर देखकर जैचंद ने संयोगिता का स्वयंबर भी रच दिया। आपकी स्वर्ण प्रतिमा छड़ी लिए हुए द्वारपाल के स्थान पर स्थापित तो थी ही बस उसी यज्ञ मंडप में निमंत्रित राजा लोग आ आ कर बैठने लगे। मुहुर्त आने पर संयोगिता भी चौसर हाथ में लिए हुई सभा में लाई गई। कन्नौज का राजकवि आगे होकर एक एक राजा के नाम ग्राम और उनकी करनी करतूत बखान करने लगा। इसी तरह होते होते जब उस कवि ने आपकी प्रतिमा के पास आकर आपका नाम लिया और यश बखान किया तो संयोगिता उसी के गले में चौसर पहिना दी। यह समाचार पाकर जैचन्द ने कहा! नहीं, बेटी चूक गई फिर से फेरी की जाय। निदान ऐसा ही किया गया पर फिर भी संयोगिता ने अन्य किसी राजा की ओर आंख उठा कर देखा भी नहीं और स्वर्ण प्रतिमा पर जैमाल[1] मेली, परन्तु फिर भी पंग ने न माना और तीसरी फेरी फेरी जाने की आज्ञा दी, इस बार कवि लोगों ने भी अपनी सी चतुराई करने में फेर न लगाया उन्होंने अन्यान्य सब राजाओं के बढ़ बढ़ कर बखान किए और आपका केवल नाम कह दिया पर फिर भी संयोगिता ने उसी स्वर्ण प्रतिमा को बरा।

यह हाल देख कर राजा जैचन्द मोह क्रोध ग्लानि और ईर्षा से अत्यन्त व्यथित होकर बेहोश सा हो गया। वह उसी समय सभा से उठकर अन्तर महल में चला गया और होनहार को प्रबल जान छाती पर घूसा मार कर चुप रह गया। उसे ऐसा बेहाल देख कर उसके मंत्री ने कहा "हे राजन् होनी अमिट होती है उस पर किसी का चारा नहीं चलता। होनहार के ही कारण दक्ष प्रजापति का यज्ञ भंग हुआ। होनी के कारण राजा पांचाल का यज्ञ बिगड़ा और इसी होनहार के कारण राजा नघु को नर्क में पड़ना पड़ा। कहते हैं कहत बावरा और सुनता सावधान, सो हे राजन् यद्यपि चतुर लोग विद्याओं के बल से भूत भविष्यत वर्तमान तीनों काल की बात विचार करके कार्य्य करते हैं परन्तु सचमुच भविष्यत होनहार क्या है सो कोई नहीं जानता, इस लिये, बीती ताहि विसार कर आगे की सुधि ले इस पर जैचन्द ने कुछ सचेत होकर संयोगिता को गंगा के किनारे के महलों में रहने की आज्ञा दी। जब से संयोगिता को गंगा के किनारे के महलों में रहने की आज्ञा दी गई तब से वह बराबर वहीं रहती है और नाना प्रकार के जप पूजन व्रत और देवार्चन करके आपका ध्यान

(१) जैमाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करती और अहर्निशि आपही का स्मरण किया करती है। राजा पृथ्वीराज बड़ी सावधानी से ये सब बातें सुन रहा था। तब तक एक सूफी फकीर भी आ पहुंचा और कुछ ऊपर से नमक मिर्च मिला कर उसने भी यही कथा कह सुनाई।

उक्त जंगम और सूफी फकीर ने कन्नौज की कथा कही मानो पृथ्वीराज के जले हुए कलेजे पर नमक मल दिया। पृथ्वीराज एक क्षण भर के लिये छटपटा गया परन्तु कुछ सोच विचार करके शान्त हो गया और अपने चचेरे भाई ईसरदास और भूपतसाह को बुला कर इधर उधर की बातें करने लगा। तबतक मध्यान्ह काल का समय होने को हुआ। इस लिये पृथ्वीराज ने निर्मल गंगाजल से स्नान करके मध्यान्ह काल की संध्या की और वह भोजन करने के लिये अटाले में चला गया, परन्तु लगीं के मारे योंही लिए दिए भोजन करके अपनी एकान्त रङ्गशाला में जा लेटा। लगी बुरी होती है। वह लगीं काहे की जिसमें आंख लगे। फिर भी ऊपर से बसन्त की बहार जो कि विरहाग्नि की ज्वाला को जर्जरीभूत करने के लिये आहुति से कम नहीं है। बन बाग उपबन सर्वत्र फूले हुए नाना प्रकार के पुष्पों की पराग मिश्रित त्रिविध बयार और जहां तहां वृक्षों पर उच्चस्वर से कोकिलों की पुकार पृथ्वीराज को अत्यन्त असह्य होने लगी।

उस दिन संवत ११५१ फाल्गुण कृष्ण नवमी थी। दो पहर से संध्या हो गई कुछ अन्धेरा भी हो गया परन्तु न तो पृथ्वीराज को निद्रा आई न उसने अपनी ध्यानमुद्रा खोली। इसी प्रकार आगा पीछा सोचते सोचते जब प्रहर रात्रि होने को हुई तब उसने कविचन्द को बुलाया। थोड़ी देर में कविचन्द भी आ पहुंचा। पृथ्वीराज ने सादर आसन देकर उससे कहा "हे कवि तुम जानते हो कि जैचन्द ने मेरी कितनी अप्रतिष्ठा की है। मुझे ऐसा तिरस्कृत जीवन तो भार मालूम होता है। तिस पर भी तुर्रा यह है कि संयोगिता ने मुझे बरने का प्रण लिया है। सो भी तुम जानते हो। इस लिये अब जैसे कुछ बन पड़े सो कन्नौज के चलने का विचार करो। यह सुन कर कविचन्द बोला "महाराज शास्त्र की आज्ञा है कि किसी को कहीं जाते समय रोक टोक न करनी चाहिए परन्तु आपने पूछा है इसीसे कहता हूं। आप जैचन्द के बल को जानते हैं अभी हाल की बात है उसकी किंचित् सेना ने आपके सारे राज्य में हलचल मचा रक्खी थी। हजारों गांव खड़े जला दिए गए और सारा देश लूट पाट कर उजाड़ दिया था। मैं नहीं समझता कि जान बूझ कर किसी सहजोर के साम्हने जा जुड़ना कौन सी बुद्धिमानी है। भला विचारिए तो सही! कोई ताल ठोक कर जमराज की जिह्वा पर जाता है? कोई मतवारे हाथी से हाथ मिलाता है? कोई समुद्र को पैर कर पार करना चाहता है? अथवा कोई सुमेर शिखर को भी हथेली पर रखने की हिम्मत कर सकता है? यही सब सोच समझ कर कन्नौज जाने की इच्छा कीजिए। होता तो वही है जो होनहार होती है परन्तु अपना आगा पीछा विचार कर काम करना बुद्धिमान का कर्तव्य है। इसी प्रकार और भी कविचन्द ने बहुत कुछ कहा सुना परन्तु पृथ्वीराज ने सब अनसुना कर दिया और कहा कविचन्द कन्नौज को कब चलोगे? कविचन्द ने अपने बसभर सब तरह से समझाया परन्तु पृथ्वीराज ने एक आंख न मानी दोनों को बैठे बैठे जब रात्रि का तीसरा प्रहर हो गया तब कविचन्द को विवश होकर हां करनी पड़ी। हां कहा कर तब राजा ने कबि को छुट्टी दी और तभी आप सोया।

किंचित्मात्र रात्रि शेष रहते गुणीजनगायक लोग राजपौरी पर हाजिर हुए और अपने नित्त नियमानुसार वीणा बजा कर कलकंठ से गान

(१) मूल पुस्तक में महीनों का नाम नहीं लिखा है परन्तु आगे शिवरात्रि के शिवार्चन से मालूम होता है कि फाल्गुण मास था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करने लगे। आकाश में तारागणों के फीके पड़ते ही वे लोग चुप हो गए और उनके स्थान में बन्दी और कवि लोग विरद पढ़ने लगे। बांदियों ने कहा पृथ्वीतल पर अद्वितीय तेजस्वी राजा पृथ्वीराज को धन्य है। जब वह अपनी सभा में विराजमान होता है तो इन्द्र एवं कुबेर सा सुशोभित होता है। इस पृथ्वीतल पर जो जो प्रतापी पुरुष हो गए हैं उनमें से अब एक भी नहीं हैं। न हयहय वंशी सहस्राबाहु है न कालिया का नथैया कन्हैया है, न राजा बलि है न लंकापति रावण है। बस इस समय यदि कोई प्रतापी पुरुष है तो अनलकुल में उत्पन्न सोमेश्वर का सुत महाराज पृथ्वीराज हैं। तब तक भास्कर भगवान का प्रकाश हो आया। राजा पृथ्वीराज शय्या से उठा और नित्य क्रिया से निश्चित होकर शिकार खेलने को जाने के लिये तैय्यार हुआ। जामराय यादव, बलिभद्र राय, विंभराज, महनसिंह, पीपा पाड़िहार, लंगरी राय का भाई, रामराय बड़ गुज्जर, लोहाना आजानबाह, अचलेस भट्टी और हाहुलीराय हम्मीर ऐसे दस पांच सामन्त भी राजा के साथ हो लिए। सब लोग चलते चलते दिल्ली से पांच कोस के अन्तर पर एक सघन बन में जा पहुंचे। वहीं पर एक बनरखे ने खबर दी की एक खोह में एक बड़ा भारी बाराह पड़ा हुआ सो रहा है। यह सुनते ही पृथ्वीराज मौका बाँध कर जा खड़ा हुआ। उसने आप तो तुवक छाती चढ़ाई और बनरखे को हुक्म दिया कि सुअरों को हांके। बनरखे की आहट पाकर वह सुसुप्त सूअर बिजली सा तड़प कर भाग चला। उस दीर्घकाय भयानक बाराह की खीसें जादू की दो जुन्हैया सी देख पड़ती थीं। सूअर का हांक कर के पास से निकालना और राजा का फैर करना साथही हुए। गोली सूअर के ठीक टीके पर लगी जिससे वह एक उछाल मार कर तत्काल ही समाप्त हो गया। सब लोग राजा के निशाने की वाह वाह करने लगे और उस दिन का शिकार यहीं पर समाप्त हुआ।

इस प्रकार शिकार खेल कर राजा पृथ्वीराज महलों को चला गया। दूसरे दिन प्रातःकाल शिवजी का पूजन करने गया। धन्य है उस सर्वव्यापी आशुतोष सदाशिव को जिसे नर नाग असुर सुर गन्धर्व इत्यादि सब पूजते हैं। उस देवताओं के देवता महादेव के शीश पर सुशोभित जटा जूट और उज्वल गंगधारा के दर्शन मात्र से पुरातन पाप पतिंगे भस्म हो जाते हैं। उसके ललाट पट में चन्द्रमा और उसी के पास जाज्वल्यमान तीसरा नेत्र सुशोभित है। पंचमुखी शिवजी के शीश पर लसत पंच स्वर्ण मुकुट ऐसे सुशोभित होते हैं जैसे गंगा के उपकंठ में सुमेर शिखर स्थित हो। ऐसे भोलानाथ के गले मे कालिया सर्प लिपटे और हृदय पर रुंडमाला रुरती है व्याघ्रचर्म का कोपीन और गज चर्म का आसन जिनका। यावत तीनो लोकों के त्रिविध ताप नाश करने वाली त्रिशूल जिनके बाएं हाथ में है और डिम डिम शब्द करने वाली डमरू दहिने हाथ में। संसार की शक्ति स्वरूप अर्धाङ्गिनी पार्वती जिनके बाम पार्श्व में विराजमान रहती है और स्यामकार्तिक और गणेश संमुख। एक मात्र एक डूंडा बैल है वाहन जिनका ऐसे उस कैलाशवासी शिव के स्मरण मात्र से समस्त सांसारिक पाप पलायमान हो जाते हैं। ऐसे शिवजी के शिवालय के दर्शन करतेही पृथ्वीराज का चित्त प्रसन्न हो गया। उसने दूरही से माथा नवाया और विनीत भाव से मनही मन प्रार्थना की कि हे शिव मेरी रक्षा कर।

इस प्रकार मन ही मन बंदना करते हुए पृथ्वीराज ने पुनः गंगाजल से स्नान किया और दिव्य वस्त्र धारण कर शिवार्चन के लिये सन्नद्ध हुआ उस समय वह ऐसा भला मालूम होता था मानो हरिद्वार में तप करनेवाला कोई दिव्य तपसी हो। षडंग का पाठ करते हुए ब्राह्मण मंडली के साथ पृथ्वीराज शिवालय में पहुँचा और शिवजी को मस्तक नवा कर पूजन करने बैठा, मनही मन नमस्कार करके शिवजी का ध्यान करते हुए उसने दो हजार घड़े गंगाजल चार हजार घड़े जमुनाजल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक हजार घड़े दूध एक हजार घड़े दही, पांच सौ घड़े शहत और पांच सौ घड़े काश्मीर, इस तरह नौ हजार घड़े से शिव जी के प्रथम स्नान करवाए। फिर केसर कस्तूरी कुंकुम आदि सुगंधिमिश्रित सौ घट गुलाबजल से स्नान कराए, तत्पश्चात् चन्दन चावल और बेलपत्र चढ़ा कर मन्दार मालती पंचजाती इत्यादि अनेक प्रकार के पुष्प माला चढ़ाए। पान सुपारी, धूप, दीप, नैवेद्य आदि सब तरह से विधिवत शिवार्चन करके उसने विनीति भाव से अस्तुति की, प्रदोष की कथा सुनी और नाना प्रकार के दान देकर ब्राह्मणों को सन्तुष्ट किया। पूजन हो चुकने पर कविचन्द ने कहा कि अब महलों को चलिए और तदनुसार पृथ्वीराज शिवस्थान से घर को आए।

———:o:———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कनवज कथा ।

[इकसठवां समय ।]

षट ऋतु वर्णन ।

उस मायावी सुग्गे की कही हुई संयोगिता के रूप गुण की गाथा पृथ्वीराज के अंतस में बस गई। तिसपर भी जैचन्द का बैरभाव तो उसे और भी बे चैन किए हुए था। उसने एक दिन कविचन्द से कहा क्या तुम आगामी ग्रीष्म में मुझे कन्नौज दिखलाओगे ? देखो वहां चलने से एक तो दूसरा दरबार देखने को मिलेगा, दूसरे अपना अद्वितीय बल पौरुष प्रगट करने का अवसर हाथ आवेगा, जिस से लोग अपनी सुकीर्ति बखानेंगे और उसे सुन कर अपने को सुख होगा। तीसरे यह बात है कि जो अपने को हींडता * हो उसकी बात रखना भी क्षत्रियों का परम धर्म है। यार ! है क्या जिंदगानी में पानी भरी खाल है। इस लिये दिल की भरी निकाल डालना ही अच्छा है। यह सुन कर कविचन्द ने कहा "परन्तु यह तभी हो सकता है जबकि आप शूरवीरी ताक में रख कर छद्म वेष धारण करें। कविचन्द की यह बात राजा को गुड़ भरा हंसिया होगई "न लीले बनें न उगले" पृथ्वीराज चुप रह गया।

वसंत ।

इस प्रकार कविचन्द का रुख लेकर पृथ्वीराज रानी इंछिनी के महलों में गया और उससे बोला प्रिये ! मैं कन्नौज को जाना चाहता हूं। तुम्हारी क्या इच्छा है ? यह सुनते ही रानी इंछिनी का गला भर आया और हिचकी बँध गई; परन्तु उसने कुछ सँभल कर गद्गद कंठ से उत्तर दिया। उसने कहा हे प्राणनाथ काले काले तमालों में लाले लाले पत्ते निकल रहे हैं, 'डहडही कोंपों के बीच से रसभरी लहलही कालियां मुकुलित हो रही हैं और सीतल मंद सुगंधित त्रिविध बयार सहज ही दिल को बेहाल कर रही है। कामाग्नि की उद्दीपक कलकंठी कोयलें कूकू कलाप करती हुई मानो कह रही हैं कि हे संयोगी जनो बसन्त की रातों में मजे से सेज पर मौज मारो। देखिए तो ये आम बौर रहे हैं, कदम्ब फूल रहे हैं और उन पर लदे हुए वृंद के वृंद मकरन्द लोभी मलिन्द मदान्धों की तरह आनन्द से मन्द मन्द झूल रहे हैं। रात्रि सम है, वायु निर्दोषहै, और वृक्षों में लगे हुए लाल लाल पत्ते दमारि से देख पड़ते हैं। इस लिये हे नाथ नेक मेरी ओर निहारिए और विचारिए कि बहते पानी की तरह जवानी के दिन जो गए सो गए। प्यारे ! मार्तण्ड का ताप अधिक हो जाने पर जब जंगलों में धुँवाधार अँधौवा चलने लगता है तब भौंरा अपनी सदा संघातिनी कालियों को छोड़ कर कमल कली पर कल्लोल करने जाता है। रस का लोभ उसे कमल कली में धसने को कहता है पर फँसने के भय से झिझकता हुआ अपनी भौंरी के सहित ऊपर ही ऊपर मनाया करता है। बलहीन भैंरे तो योंही भटक कर चले जाते हैं भोगी अपनी भौंरी का साथ नहीं छोड़ते परन्तु असल रसिया कली में धस जाते हैं और फंस जाते हैं। बस फिर उसकी स्नेह रूपा भौंरी उसी कमलकली पर भ्रमती हुई जलप तलप कर रात्रि बिताती है। प्रातःकाल जब कली खिलती है और भँवरा निकलता है तो भौंरी उसके साथ होकर आनन्द के गीत गाती हुई फूली अंग नहीं समाती है।

इस बसन्त ऋतु में जब कीट पतंगों की यह दशा होती है तब मनुष्य की क्या कहना है। यह बनवासी तपस्वियों को ताड़ना देने वाला, विरही जनों के हृदय को विदग्ध करने वाला, मनसिज का सच्चा

---

* हींडिज्जे तिहि काज दुष्ष सुष्षह भोगिज्जे = विछोह के कारण उत्पन्न हुई व्याधि को 'हींडना' कहते हैं। जैसे अमुक बालक अपनी माता को हींडता है अथवा अमुक मनुष्यों को रात दिन अपनी प्रेयसी की 'हींडना' रहती है।

(२ घाटियों, पहाड़ों या जंगलों में जो आग लगती है उसे दमारि कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सखा वसन्त एक मात्र संयोगिता को सुख देता है। अस्तु हे कंत इस वसन्त में अनत कहां जाते हो मेरे साथ एकान्त में सुरतान्त का सुख लुटिए। यों कहते कहते रानी इंछिनी के चातक से सलोने नेत्रों में नीर भर आया, जिसे देख कर पृथ्वीराज का भी दिल अधीर होगया और वह वसन्त ऋतु भर इंछिनी के साथ रहा।

ग्रीष्म।

वसन्तऋतु रानी इंछिनी के साथ बिताकर ग्रीष्म का आरम्भ होते ही सदैव कामातुर राजा पृथ्वीराज रानी पुंडीरनी * के पास गया और उस से भी वही बात कही कि संयोगिता का प्रण पालने और जैचन्द का दर्बार देखने के लिये मैं कन्नौज को जाना चाहता हूं। यह सुन कर रानी पुंडीरनी बोली इस गरबीली ग्रीष्म की गर्मी में भी कोई घर से बाहर होता है? चारों और धुवांधार धूलि उड़ रही है ऐसे में कैसे रास्ता सूझ पड़ेगा? आज कल दिन तो इतने बड़े होते हैं कि काटे नहीं कटते और रात जाते नहीं जानी जाती। प्रखर वैस्वानर द्वारा समस्त जल कर्षित हो जाने के कारण रस नीरस हो रहा है। चकवा चकवी प्रसन्न चित्त हैं। तनिक सा दिन चढ़ते ही आग की सी झार लू चलने लगती है जिसके स्पर्श से मनुष्य के शरीर का उत्तापित होना तो बातही क्या है बड़े बड़े ताल तलैयों का कीच निकल आता है और उनमें पड़ी हुई मछलियां तलफ तलफ कर तन तोड़ती हैं। पतझाड़ हुए भए बड़े बड़े वृक्ष दिगम्बर से खड़े देख पड़ते हैं। ऐसे विपत्ति सूचक समय में कहां फिरिएगा। आह! दिन में दिवाकर के दर्शन क्या होते हैं साक्षात् अग्नि देव का प्रकोप देख पड़ता है। आकाश में अच्छादित सघन धूलि के कारण दिशाओं का भी ज्ञान नहीं रहता। आतप के अत्यन्त ताप से बन तो इस तरह तपता है कि सर्वाङ्ग, चन्दन चुपरने से भी चैन नहीं पड़ता। वसन्त की शीतल मंद सुगन्धित पवन का अब पता भी नहीं है। उसके स्थान में जहां तहां बगरूड़े और अँधौवा चलते हैं। कामाग्नि जनित विरह व्यथा के कारण हाथी वेहाल होकर बन बन डोल रहे हैं। और फौजों के यूथ के यूथ जो जहां थे सो तहीं रह गए हैं। पाथिक वधूटियां पिया का मुखचन्द देखने की चाह में देहरी द्वारा ताकती रहती हैं। भला देखिए तो जब लोग बाहर से आ आ कर घर में रहते हैं तभी आप अपनी प्रिया को विरह के मुह में डाल कर बाहर जाना चाहते हैं! एक तो इस गरमी में आप खून सूखता है ऊपर से वियोग की झार! विचारिए तो मेरी क्या दशा होगी! उधर ताल तलैयां नदी नालों में जल नहीं, सर पर कड़ाचूर धूप पड़ना ऐसे समय आधी बाव में मजल करना आप को भी अत्यन्त कष्टसाध्य होगा; बस मेरी यही विनती है कि इस समय घर न छोड़िए देखिए तो कैसी गरमी पड़ रही है और तो क्या शरीर के पहने हुए गहने भी हाथ से नहीं छुए जाते। रह रह कर चित्त ऊब उठता है और शरीर से पसीने के पनारे चल रहे हैं ऐसे में पंग का दरबार देखकर क्या कीजिए गा।

रानी पुंडीरनी के ऐसे बचन सुन कर पृथ्वीराज क्षण भर के लिये अपने को भी भूल गया। रानी भी पावस के आरम्भ की सी वेलि पृथ्वीराज के गले से लिपट गई। बात की बात में सावन का सामान सज गया *। रानी सोलहो शृंगार और

* चामंडराय की बहिन राजकुमार रेणसी की जननी।

(१) छीन जलधर "वैसंनर" वैसंनर शब्द प्राकृत है इसी का संस्कृत पाठ बैस्वानर है। चलती भाषा में वैसुन्नर या सुन्नर भी कहते हैं वैस्वानर शब्द का मूल अर्थ शोषक अग्निहै। वैस्वानर सूर्य्य का एक नाम भी है।

* यहां अन्योक्ति अत्योक्ति या विरोधाभाव आदि अलंकार न समझिए। एक वास्तविक बात का कथन किया गया है। पहिले समय मे राजमहलों में खासखास कमरे बनाए जाते और ऐसे जरूरी सामानों से सजाए जाते थे कि उनमें जाते ही वर्त्तमान ऋतु का विरोधभाव भासित होने लगे। पावस वाला कमरा प्रायः जमीन के अन्दर तहखाने में होता है। उसमें मौके से नाना भांति के वेली वितान फुलवारी आदि सजाए जाते हैं फुहारे से पानी बरसाया जाता है और उसकी छत पर बड़े बड़े पत्थर के ढोंके लुडका कर बहल गर्जाया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारहो आभूषणों से सजकर सखियों सहित मलार गाने लगी। सुगंधित कुसंबी रंग के मंद मंद बुंद भी बरसने लगे। रानी के कानों के जड़ाऊ ताटंक बिजली का काम देने लगे और कटि की मेखला और पैर की पाजेब का शब्द पावस के पक्षिओं का सा रव भासने लगा। तात्पर्य यह कि चतुर्दिक लहलहे वेलिवितान और घनसार अगर केसर पान आदि की रचना से रानी पुंडीरनी की चित्रसारी साक्षात् पावस की पिटारी बन गई। इस प्रकार पृथ्वीराज ग्रीष्म भर रानी पुंडीरनी के साथ रहा।

पावस।

ग्रीष्म का अवसान और पावस का प्रारंभ होते ही पृथ्वीराज रानी इन्द्रावती के पास बिदा मांगने गया। पिया प्यारे का मुखारविंद देख कर इन्द्रावती का दिल दंग हो गया परन्तु चलाचली का समाचार सुनते ही तो वह सन्न रह गई। उस सुन्दरी के सलोने नैनों के कोयों में अश्रुकण झलक पड़े। अश्रुकण क्या झलके मानो उसके आंतरिक क्रोध का ऊफान ऊपर आगया। वह पृथ्वीराज से बोली। प्यारे! देखिए तो सही ये आठों दिशाओं से कारे कारे धुआंधार बद्दल झुके आते हैं। दादुर दम नहीं लेते, मोर शोर करते हैं और पपीहा पीऊ पीऊ पुकार रहे हैं, वसुन्धरा की शृंगार स्वरूप स्वच्छ सलिलमय सरिताएं समुद्र से मिल कर कल्लोलें करती हैं, रात और दिन दोनों इस समय बराबर हैं। भला ऐसे पावस में भी कोई पथिक घर से बाहर होता है? कीच और कूड़े के कारण रास्ता सूझ नहीं पड़ता। दशों दिशाएँ धूंधली हो रही हैं। रात दिन बद्दल छाए रहते हैं और नाना भांति की नवीन तरुलताओं एवं नवेली वेलियों से भूमि भरी हुई है। प्रस्फुटित पुष्पयुत वेलियां बड़े बड़े वृक्षों से लपटी हुई और बसुंधरा आकाश को आलिंगन करती हुई मानो माननियों को शिक्षा देती हैं कि भर भादों में प्यारे के गले से लग कर गहरा रंग छानो। घन की घनघोर घरघराहट के कारण पलभर सुचित्त होकर नींद नहीं आती। तलातल भरे हुए ताल तलैयों को देख कर सहजही हृदय बेहाल होता है और रात दिन पानी की झड़ी लगी रहती है, ऐसे में कोकिल भी कू कू करती हुई मानो पांच बाण के बाण छोड़ती है। आह! आकाश में अम्बर के आडम्बर और यह लगातार मूसलधार वर्षा देख कर दिगम्बर भी देहरी के बाहर कदम नहीं देते। जिस समय जोर से बादल तड़कता है और उसके बीच में मृग सावक के नेत्रों की तरह चपला चमचमा जाती है, पपीहा पीउ पीउ की पुकार करते हैं, वेलियां आलिंगन का स्मरण कराती हैं उस समय विरहनी के हृदय पर कैसी बीतती है सो वही जानती है। इस समय कुसुमसरधारी मकरकेतु ने मानों दसो दिग्गजों को दबा कर प्रकृति पर अपनी पताका रोप दी है और विषय रस राते इन्द्र ने भी उसकी सहायता के लिये अंतरिक्ष में धनुष[१] चढ़ा रक्खा है।

नाना प्रकार के नवीन पेड़ पौधों को फूल पत्तियों और जड़ी बूटियों से परिपूर्ण और हरी भरी भूमि को देखकर दिल दंग हो जाता है। वृक्षों की शाख प्रतिशाख में लिपटी हुई वेलियां हवा के झोंकों से मन्द मन्द झूलती हैं और उन पर बैठी हुई कलकंठी कोयलें रात दिन कूकें दिया करती हैं, जहां तहां ताल तलैया तन कर भरे हुए हैं और उनमें सुन्दर कुमोदिनी खिल रही है। नदियां आरपार चढ़ी घोर शोर करती हुई बहती हैं और किनारे पर मेढ़क टर्राते हुए मानों बद्दरों की नकल करते हैं। कभी रिमझिम मेह बरसता है और मजे की विजली लपकती है। कभी मेंह की कड़ी झड़ी लग जाती है, जोर से बद्दल कड़कड़ाता तड़तड़ाता और गड़गड़ाता है। जहां तहां पहाड़ों से झरने झरते हैं और तृण पात पूरित भूमि पर नाना प्रकार के उद्भिज्ज क्रीड़ा करते हैं। झिल्ली झंकारती हैं और जुगनू जगमगाते हैं, सुन्दर सरोवरों के किनारे हंस सावक प्रसन्न मन

(१) इन्द्र धनुष।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होकर कल्लोलें करते हैं और मौज से पर झाड़ झाड़ कर बोला करते हैं, ऐसे पावस की बहार में प्रवासी बन, बन बन भटकना अच्छा नहीं। सुख से संयोग का रस लीजिए, श्रावण भादव गुजर जाने दीजिए, फिर आपकी मौज आवे सो कीजिए। देखिए जो बिजली अँधेरी रात में दमक कर और के लिये उँजेला करती है वही बिजली बिरहनी की आंखों पर सलाई(१) का काम करती है। वे मेह बुन्द जो मन्द मन्द बर्स कर त्रिलोक का ताप हरते हैं सो विरहनी के हृदय पर अंगारों का काम करते हैं, इस तरह से इन दिनों विरही वियोगी का पल पल कल्प सा व्यतीत होता है परन्तु संयोगिता तो मानो साक्षात् रस के सरोवर में गोते लगाती है। बस मेरी बिनती यही है कि मुझे अकेले छोड़ कर पावस में प्रवास न कीजिए नहीं तो मैं समझूं गी कि प्रीति प्रतीत सब तुच्छ है।

शरद।

पावस भर इन्द्रावती के साथ रह कर शरद ऋतु का आरंभ होते ही पृथ्वीराज ने पुनः प्रस्थान करने की इच्छा की। इस बार हंसावती से मिलने गए और उससे कहा, हे प्रिये मैं कन्नौज को जाने की इच्छा करता हूं। राजा के ऐसे वचन सुन कर वह बोली, हे प्राण नाथ! मैं आपकी इच्छा में विघ्न नहीं करती परन्तु केवल इतनी अर्ज करती हूं कि शरद ऋतु की चटक चाँदनी चार दिन की है गई सो फिर आने की नहीं। इस समय या तो वे सुखी हैं जो अविवाहिता हैं और पिता के घर रह कर बालक्रीड़ा में समय बिताती है, या वे जो अपने प्रीतम चन्द्रमुख को चूम चूम संयोग रस रूपी सुधा का स्वाद लेती हैं। राजा महाराजा एवं छत्रधारी लोग अपने अपने छत्र सज कर दसों दिशाओं में दौरा करने के लिये राजधानियों से चल पड़े हैं। सोंधी सुगंध वाले स्वेत स्वेत पुष्प खिल रहे हैं और उज्ज्वल जुन्हैया सब रात जगमगाती है। बस और क्या कहूं मेरी इतनी बिनती मानिए कि मुझे इस शरद के दुःख दरद से बचाइए।

प्यारे! इस शरद की चटक चांदनी रात्रि में उन्हीं की मौज है जिनके मन से लज्जा निकल गई और जिन्हें दांपत्य सुख का नित नव चाव रहता है। देखिए तो पृथ्वी आकाश दोनों पर कैसे फूल फूल रहे हैं। मान सरोवर में हंसों के कलरव के कारण कान नहीं दिया जाता। हां ये निर्मल जल में खिले हुए कमलपुष्प शीत काल के लगते ही जल कर जल ही में विलीन हो जायंगे। इससे भी बढ़ कर दशा उन वियोगिनी स्त्रियों की है जिनके पिया परदेश में हैं। अहा कैसा उज्ज्वल आकाश है दर्पण की तरह दमदमा रहा है। चन्द भी सुधा की धारें वर्षा रहा है। समुद्र सर सरिता आदि सब का जल ऐन उज्ज्वल है उन में जहां तहां कमल और कुमोदिनी पुष्प प्रफुल्लित हो रहे हैं और बागों में फूले फूले लता पत्रों पर आच्छादित भ्रमर अजब ही छटा छाते हैं। इन दृश्यों से मानो सहसा कामज्वाला प्रज्ज्वलित होकर नस नस में बस जाती है और अपने स्नेह भाजन को गले लगाए बिना वह तन की तपन कदापि नहीं बुझती। यह सुठि सुन्दर सोहावनी शरद ऋतु सत् रज तम तीनों गुणों की समान उद्दीपक है। घर घर अच्छे दिए जगमगा रहे हैं और जैजैकार शब्द हो रहे हैं। स्त्रियों के परस्पर झुंड के झुंड मिलकर नाना प्रकार के व्रत और पूजन विधान करते हैं और सन्ध्या सबेरे कलकंठ से सुन्दर गीत भी गान करते हैं। चकवी चकित चित्त है, चकोर चन्दा से चित्त लगाए रात्रि भर उसी की ओर आँखें लगाए रहता है। ब्राह्मण वृन्द के बृन्द चन्दन पुष्प धूपादि सहित षोड़स सामग्री से जहां तहां देवार्चन करते हैं और घर घर दिव्य कार्य्य आरम्भ हो जाते हैं। क्वारी कन्याएं * नौरता नहाती हैं और प्रज्ज्वलित

(१) सलाई फेर कर अन्धा किया जाता है।

*नौरता—क्वार के शुक्ल पक्ष में नवरात्रि का आरम्भ होते ही क्वारी कन्याएं नौरात्रि भर बराबर प्रातः काल स्नान करके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपयुक्त झंझरी सिर पर रखकर गाती हुई गैल गैल परिक्रमा लगाती हैं। देवी के मंदिरों में पंडित और ओझा लोग दुर्गा पाठ करते हैं और क्षत्री लोग महिष और अज आदि का बलि प्रदान करते हैं। इस समय चन्द्रमा अपनी सम्पूर्ण कलाओं से अट्ठारहों प्रकार की बनस्पति एवं जड़ी बूटियों को अमृत से पोषण कर रहा है इस लिये इन शरद काल की कामोद्दीपक निर्मल रात्रियों में स्त्री के साथ सो करही समय बिताना शुभ है।

इस तरह से अविवाहिता स्त्रियाँ तो नौरता उँजै लेने की ध्वनि में नित नव आमोद कर कर शरद के दिन बिताती हैं; परन्तु वे बड़भागिनी जो पिया का मुखचन्द देख चुकी हैं स्वयं शरद की प्रतिमा स्वरूप होकर समय बिताती हैं। सुहागिनों के पिया का मुखचन्द चन्द तो है ही उनके युग यौवन कमल एवं कुमोदनी से, दोनों मनरंजन अंनमय नेत्र खंजन से हैं और चन्द्रमा से श्रवित स्वाति बुन्द के कारण जो मोती उतपन्न होता है सो उनके सीप से उज्ज्वल स्वेत आचरण में उनके अमोदमय मन मोती नित नए रंग दिखाते हैं। अस्तु यदि आप मेरी बात को कुछ भी समझें अथवा आपको यदि चतुर चित्त की कुछ भी रीझ बूझ है तो कृपा करके इस शरद में मेरे दिल को दरद देकर देहरी बाहर होने की इच्छा न कीजिए।

हेमन्त।

शरदऋतु का अवसान होतेंही पृथ्वीराज ने पुनः कन्नौज को कूच करने की इच्छा की और इस बेर रानी कूरम्भी के महल में जाकर उसकी आज्ञा चाही। चला चली की चरचा सुन कर रानी कूरंभी बोली "आर्य्य पुत्र! इस हेमन्त में दिनदिन दिनछीन हो रहे हैं। दिवाकर का दर्प मन्द पड़ रहा है और असह्य शीत के साथ साथ रातें बढ रही हैं। इन दिनों तो अर्द्धाङ्गिनी को आलिङ्गन कर गुदगुदी शैय्यां पर सोने में जो मौज है सो किसी में नहीं है। यदि ऐसा न हुआ तो सहज सुकुमार स्वभाव की स्त्री वियोग की आँच में ऐसे जरती हैं जैसे शीत से सरसिज समूह एवं कुमोदिनी जल कर जलमय हो जाती हैं। मेरी विनती मानिए इस समय मुझे निरावलम्ब छोड़ कर कहीं न जाइए। विलक्षण समय है ज्यों ज्यों रात्रि बढ़ती जाती है त्यों त्यों स्त्रियों के कुच जंघा और नितम्ब भी पीत होते जाते हैं और शीत की सहजोरी से ज्यों ज्यों सूर्य्य की गरमी एवं दिन दबते जाते हैं त्यों त्यों कमर पतली होती जाती है। गहन बन में स्थित पहाड़ों की गुप्त कंदराओं में समाधि साधे हुए साधु जन जो मौज लेते हैं वही इन दिनों स्त्री प्रसंग में मिलती है। इस संसार सागर में मनुष्य के लिये केवल दो बातें सार हैं। या तो वे किसी पर्व्वत की कन्दरा में धूनी रमाकर ध्यानावस्थित हो योग का आनन्द लेना या किसी कोमलाङ्गी को कलेजे से लगा कर सुख शैय्या पर आनन्द लेना। या तो वन में रहे या वनिता के साथ !! या तो सर्वाङ्ग भस्म रमावे या बहुमूल्य बस्त्र धारण करे। इस प्रकार से या तो स्नेह एवं इश्क द्वारा दो दिल एक करके अनुराग में रँग जावे या संसार भर का सुखकर सामग्रियों को तिलांजुली देकर वैराग में पग जावे। तभी यह दुस्तर संसार सागर पार हो सकता है

नौरता (नौरते के कुछ बँधे हुए गीत हैं) गाती और मिट्टी का नौरता और घरघोला बना कर उन में पूजा करती हैं। अष्टमी के दिन उनका पूजन खतम होता है उस दिन रात्रि को वे एक बहुत छेदवाली मिट्टी की टिलिया में दिया रख कर गाती हुई मुहल्ले में फिरती हैं। गृहस्थ उनके दिये में कुछ तेल डाल देते हैं और उनके दिया का तेल प्रायः आप ले लेते हैं। यह तेल कई एक चर्म रोगों का नाश करता है। इस नौरते का चलन अब भी है। इलाहाबाद से लेकर देहली तक तथा राजपूताना में और बुन्देलखण्ड में अब तक नौरते का पूजन होता है। बुंदेलखंड में तो अब भी इसे नौरता कहते हैं परन्तु अन्यत्र क्या कहते हैं सो ज्ञात नहीं।

(१) कई साल स्नान पूजन करलेने के उपरान्त उसका हवन और ब्रह्मभोज कराकर समाप्त करने को उजैना कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं "दोनों दीन से गए पांड़े न हलुआ मिला न माड़ा"।

हे प्राणनाथ!यह स्त्री शरीर उत्तम तपोभूमि से किसी तरह कम नहीं है। यह रोमावली बन पुष्प के समान है, दोनों कुच करि कुंभ एवं पर्व्वत शिखर से विराजमान हैं जिनके बीचों बीच उज्ज्वल और परम पवित्र सरस शृंगार रस का श्रोता बहता रहता है। एक ओर विरह विथा की धूनी भी धधकती रहती है। बस पुरातन पुण्याई का उपभोग करते हुए यहीं पर तपस्या कीजिए यदि ऐसा न किया तो क्या आश्चर्य्य है कि धधकती हुई धूनी हेमन्त की हवा में सारी तपोभूमि को भस्म कर दे। इतने पर पृथ्वीराज का कुछ ढीला रुख देखकर रानी कूरंभी उसके गले से लपट गई और मुस्कराती हुई कहने लगी। हे नाथ! कहती हूं, न जाइए मैं बार बार बिनती करती हूं। ऐसी मौज छोड़ कर बाहर जाते हैं न जाइए मौज का आनन्द लीजिए। रात बढ़गई, दिन घट गया, शीत की अधिकता के कारण शरीर थर थर कांपता है और दंत्ती बजती है। भोर के पहर कामदेव कलेजे पर चोट करता है उस समय अकेला रहना बड़ा दुःखदाई होता है। रात दिन हाय हाय करते हुए हृदय विदीर्ण होता है।

हेमन्त की अवाई होते ही चकवा चकवियों का चित्त दुखी हो गया। विरही जनों के जी में ज्वाला सी जलने लगी। संयोगियों ने जुही मालती आदि के पुष्पों का शृंगार उतार दिया और कस्तूरी और अगर आदि का सेवन आरम्भ कर दिया। धन्य है संयोगियों के यहां अब भी पावस का आभास रहता है। शीत के भीत और प्रीति की उमंग के कारण तिया पिया से मिलना चाहती है परन्तु स्वाभाविक लज्जा के कारण झझकती और आंख चपा कर भांजती है और पति लपट झपट कर उसे हिये से चिपटाने की चेष्टा करता है। उस समय स्त्री के कानों के कुंडल चपला से चमकते हैं। उस लिपट झपट में जो हिए के पुष्पहार टूट कर बिखर जाते हैं तो बगपाँति से जान पड़ते हैं। कटि किंकणी और नूपुर आदि गहनों का झंकार स्वर झींगुर सा जान पड़ता है। उस समय भोग विलास की कसरत के कारण जो सीने से पसीने के बूंद टपकते हैं सो साक्षात् स्वांतिबुन्द से जानिए। इस प्रकार मदन की मजेज से निकली हुई रस की नदी में नहाता हुआ हेमन्त रूपी हाथी तभी प्रसन्न होता है जब कि कन्त और कामिनी एकान्त में एक दूसरे के साथ रहें! इस लिये मैं इस समय आपको कदापि न जाने दूंगी, चाहे हजार हो जाय।

शिशिर।

हेमन्त का अन्त होतेही पृथ्वीराज ने पुनःचलाचली का बिचार किया परन्तु अब की बार उसे रानी हम्मीरनी ने रोक रक्खा। उसने पृथ्वीराज को देखतेही कहा हृदयेश्वर यह रोम राजि नहीं जवानी की जलमय नदी की धारा है और ये युग योवन पर्व्वत शिखर हैं। अनेक भांति के शृंगार और आभूषण मानो इस योवन बन के लता पत्र हैं। यदि हे शूर शिरोमणि मृगराज आप चले जांयगे तो इस तनबन में बिहार करता हुआ काम करि बड़ाही उत्पात करेगा। शिशिर की रातों में यह सारी फुलवारी उजार डालेगा।

देखिए शीत कमने लगा और प्रकृति का प्रभाव सम होने लगा।इसी से अमीर ग़रीब सब के घर विशेष आमोद प्रमोद देख पड़ता है। फागुन का महीना लगतेही सब के यार दोस्त हितो व्यवहारी और रिश्तेदार आदि एक दूसरे के घर जा जा कर परस्पर मिलते जुलते हैं। स्त्री, पुरुष सब मदन की मजेज में मस्त हैं। एक दूसरे के संमुख मनमानी बातें कहने में तनिक भी नहीं सकुचते। इस समय यदि आप चले जांयगे तो मेरे कैसे दिन कटेंगे सो तो सोचिए। शिशिर ऋतु का आरम्भ होतेही वायु वेग से बहने लगी जिससे वृक्षों के पुराने पत्ते झड़ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरने लगे, चन्दन अगर और मृगमद मिश्रित तमोर का सेवन शुरू हो गया । नमकीन, अम्ल, तीखा कटु मधुर और मीठा इन षट्रस व्यंजनों में विशेष स्वाद आगया है । इस समय काम क्रीड़ा से मुख मोड़ना उचित नहीं । उस नव वयस्का गौराङ्गी सुन्दरी रानी हम्मीरनी की ऐसी बातें सुन कर और उसकी भोली सूरत देखकर पृथ्वीराज को मुस्कुराहट सी आई और उसे गले लगा कर शिशिर भर वह उसी के साथ रहा ।

तब तक पुनः बसन्त ऋतु आगई । कुंज कुंज प्रति अलि पुंज गुंजार करते हुए डोलने लगे। कलकंठी कोयलें उच्च स्वर से कू कू शब्द कलापने लगीं बनबाग उपवनों में जहां तहां अन्यान्य जीवधारी भी आनन्द की बधाई बजाते हुए अनेक प्रकार सुहावने कोलाहल करने लगे सौरभ सनी सौंधी सुगंधमय वायु बहती हुई तन के ताप हरने और मन को प्रसन्न करने लगी और जंगलों में पलास और बागों में कदम्ब फूलने लगे, नाना प्रकार के लता पत्र और बेलिवितान सब आनन्दमय हो गए और संसार भर में ऐसी नवीनता छाई कि जड़ चैतन्य सब फिर से नए नए होगए ।

इस प्रकार एक एक ऋतु में एक एक रानी के आग्रह से पृथ्वीराज एक वर्ष भर कनौज को कूच न कर सके । होते करते जब दूसरा बसन्त आगया तब उसने एक दिन कविचन्द से कहा "हे कवि क्या तुम कह सकते हो कि ऐसी भी कोई ऋतु है जिसमें स्त्री को पति की परवाह न होती हो ? यह सुनकर कविचन्द बोला पृथ्वीनाथ, यदि कमल जल को त्याग दे, शेषनाग पृथ्वी को त्याग दे और मधुप सुगंधि को त्याग दे तो संभव है कि कभी स्त्री भी पति की परवाह एवं चाह छोड़ दे । पर हां क्यों नहीं. ऐसा होता भी है अर्थात् जब स्त्री ऋतु-वती होती है तब अवश्य वह पति के पास नहीं रहना चाहती । *

भीतर भीतर सब तय्यारियां हो चुकी थीं । फौज. हाथी, घोड़े सब दुरुस्त थे, परन्तु अब तक पृथ्वीराज और कविचन्द के सिवाय और किसी को भी कानो कान खबर न थी कि कहां जाना है क्या होना है । कविचन्द से बात पक्की हो जाने पर सब सामन्त सलाह के लिये और गुरुराम प्रोहित प्रस्थान का सुदिन शोधने के लिये बुलाए गए । गुरुराम के बहुत कुछ विचार करने पर भी कोई अच्छी साइत न मिली केवल चैत बदी त्रितिया रविवार की एक साइत निकली जिस में पृथ्वीराज को १२ वें सूर्य्य ग्यारहवें चन्द्रमा पांचवें केतु और दिल्ली के आठवें स्थान पर संमुख मंगल पड़ता था । गुरुराम ने सब ग्रह योग का फल कह सुनाया और कुछ दिन और गम खाने को कहा परन्तु पृथ्वीराज ने एक न मानी और भविष्य को निश्चय मान कर उसने उसी समय कूच की तैय्यारी होने की आज्ञा दी ।

कैमास की मृत्यु के पश्चात् राज्य मंत्री के पद पर सलख प्रमार (जैतराव) था क्यों कि सौ सामन्तों में कैमास के बाद दूसरा नम्बर उसी का था । वह वादे का पूरा, बचन का सच्चा, और खूब आगा पीछा सोच कर बात बोलने वाल था । यह लँगोट का सच्चा और निर्लोभी भी था । युद्ध के समय काल के साम्हने से भी पीछे पैर न देने वाला सुहृद, स्वामि सेवा, बल पौरुष पराक्रम में दृढ़, अच्छा डील डौल दार, बड़े बड़े दुर्गम दुर्गों को बिन प्रयास ढहा देने वाला सलख ही इस पद के योग्य था । नीति में कहा भी है कि राजा ऐसा मंत्री करे जो सनातन से कुलीन, सब विद्याओं में दक्ष और चर कार्य्य में भी अत्यन्त चतुर हो। मोह लोभ और विषयवासना से रहित हो, धर्माधर्म को जानता हो और न्याय करने में निपुण हो ! वह रोगी भी न हो, किसी विषय में आसक्त हो कर उसमें फँसने वाला न हो, राजसी मार पेच के

* दोहा ॥ षट रित बारह मास गय फिर आयो रू बसन्त । सो रित चन्द बताव मुहि, तिया न भावे कन्त ॥ रोस भरे उस कामिनी, होय मलिन सिर अग । वह रित त्रिया न भावई. सुन चुहान चतुरंग ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाव घातों को अच्छी तरह समझना हो और सबसे बड़ी भारी शर्त यह है कि अधर्म का धन न लेता हो यानी रिस्वत खोर न हो।

गुरुराम ने कहा अच्छा जो इच्छा सो कीजिए परन्तु जरा राज्य मंत्री से भी तो पूछ लीजिए। तब तक सब सामन्तों सहित जैत प्रमार भी आ पहुंचा। पृथ्वीराज ने उसे ओर छोर से सब हाल कह सुनाया और कहा कि मैं भेष बदल कर कविचन्द के साथ कन्नौज को जाना चाहता हूं। राजा के ऐसे वचन सुन कर सलख प्रमार बोला "महाराज कहीं बदली से सूर्य्य और वस्त्र के आवरण से अग्नि कण छिपते हैं। अथवा कोई दरिद्री यदि रुपयों की ढेरी कर परख करने बैठ जाय तो उसकी भी असल अवस्था कहीं छिप सकती है। कवि पंडित गुणी विद्वान घोड़े का सवार राजपूत और राजा ये लोग लाखों में नहीं छिप सकते चाहे किसी भी अवस्था में क्यों न हों उन की स्वाभाविक दीप्ति उन्हें आप बतला देती है। यदि यों भी बात मान ली जाय तो छरीदा चलना उचित नहीं है पूरी तय्यारी के साथ चलना चाहिए। कवि लोगों के साथ में सजी हुई सेना और राजसी रखत बखत होते नहीं। ऐसे समय पर आडंबर ही काम देता है। यदि आप न मानें तो हमारी भी कुछ हानि नहीं। हार जीत की राम जाने हम जैचन्द का यज्ञ धूल में मिला देंगे। पर जो कहीं जैचन्द ने जान लिया तो हम तो सब वहीं कट मरेंगे परन्तु आपको वह मारे या छोड़े सो आप जानें! इस लिये मेरी सलाह तो यही है कि साज सामान के साथ चलना चाहिए।" तब गोयंदराय गहलौत बोला-आप का ऐसा कहना उचित है परन्तु यहां शहाबुद्दीन भी तो हमेशा घात में रहता है इस लिये दिल्ली को सूना छोड़ जाना भी बड़ी भारी भूल है। निदान अन्त में यह तै हुआ कि समस्त सेना के सहित रामराय रघुवंशी दिल्ली की रक्षा पर रहें और भिन्न तन एक मन अन्य सौ सामान्तों सहित पृथ्वीराज कन्नौज को कूच करें।

इस प्रकार सलाह हो चुकने पर सभा विसर्जित हुई। सब सूर सामन्त अपने अपने घर गए। और पृथ्वीराज भी शयनागार में जाकर सुख में हुआ। सारी रात गहरी नींद सोता रहा। भोर के पहर देखता क्या है कि सहसा सहस्रों बिजली सा तेज देदीप्यमान हो गया और एक राक्षस उसके साम्हने आकर उसे कुवाच्य कहने लगा। उसके पहिले बचन पर राजा ने धनुष बाण हाथ में उठा लिया। दूसरे पर बाण सन्धाना। तीसरे पर गोसा ताना और चौथे बोल पर बाण छोड़ दिया जिससे वह राक्षस मर कर गिर गया, इतने में चार की घड़ी बजी और राजा की आंख खुल गई, देखता क्या है कि कहीं कुछ भी नहीं। तबतक नित्त नियमायुसार कविचन्द भी आ पहुंचा और पृथ्वीराज ने उससे अपने सपने का हाल कहा उसने उत्तर दिया कि सब शुभ है आप शीघ्र ही अपने शत्रु को परास्त कर सब तरह से सफल मनोरथ होंगे और चारों ओर आपकी सुकीर्ति फैलेगी परन्तु कुछ और भी है जोकि मैं स्पष्ट कह नहीं सकता। इसपर पृथ्वीराज ने कुछ भी ध्यान न दिया और हुक्म किया कि साथ में चलने वाले सब लोगों को कूच की तय्यारी का हुक्म सुनाया जाय।

निदान संवत् ११९१ * चैतबदी ३ रविवार के दिन ग्यारह सौ सवार साथ में लेकर पृथ्वीराज ने कन्नौज को कूच किया। उसके साथ के वे ग्यारह सौ सवार एक लाख सिपाहियों का मुँह मोड़ने के लिये बहुत थे। वे अच्छे अच्छे डील डौलदार जोरावर राजपूत सिपाही ऐसे हट्टे कट्टे और मजबूत

(१) अधम द्रव्य नन संग्रहै।

* मूल पाठ 'ग्यारहसैं एकानव चैत तीज रविवार" है इससे पक्ष स्पष्ट नहीं होता परन्तु हमने अनुमान से कृष्ण पक्ष लिखा है क्योंकि सम्भव है कि नव रात्रि की त्रितिया को पृथ्वीराज कदापि प्रस्थान न करता और आगे वर्णन से कृष्ण पक्ष ही सिद्ध होता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जवान थे कि उनके वज्र से सीने पर वजूही चाहे विथर जाय पर बात क्या कि उनके सीने में सांस हो जाय। युद्ध के समय पर वे रुद्रवेष योद्धा तृण रूपी शत्रु समूह को भस्म करने के लिये साक्षात् अग्नि शिखा से थे। महाभारत के समय से लेकर आज लों न तो कोई ऐसा वीर हुआ न होने की आशा है। संभरीनाथ पृथ्वीराज भी उस समय एकही था। प्रथम तो उसकी वीरता की बातें ही देश भर में कानो कान हो रही थीं तिस पर उसके गजनीपति शहाबुद्दीन को बाँध बाँध कर छोड़ देने और कैमास के मारडालने न तो उसके आतंक को और भी चढ़ा बढ़ा दिया था, ऐसा अद्वितीय तेजस्वी दिल्लीपति राजा पृथ्वीराज चहुवान ग्यारह सौ सवार सौ सामन्त छः निज सूरमा और कविचन्द को साथ में लेकर राज्य महल से चल पड़ा और नगर से बाहर यमुना के किनारे जा ठहरा।

चलते समय जब पृथ्वीराज ने हर हर शब्द उच्चारण करते हुए पाइरे पर पैर दिया तो उसके साथी सामन्त लोग भी शिव सरस्वती काली गणेश भैरव हनुमान इन्द्र नृसिंह सहस्रबाहु बटुक कृष्ण और भगवान रामचन्द्र आदि अपने अपने इष्ट देवों का स्मरण करते हुए उसके पीछे हो लिए। सिपाही सवारों का तो हाल आप सुनही चुके पर ये सामन्त वैसे सौ सौ सिपाहियों के बराबर एक एक थे। सहस्त्रों शत्रुओं को मार कर पार देना और मतवारे हाथियों के खांसे मूली से उखार लेना उन्हीं सामन्तों का काम था। उनके संमुख मनुष्य क्या एक बार जीभ निकाले हुए यमराज भी क्यों न आजाय पर वे पीठ दिखाने वाले नहीं थे। उन राजपूत योद्धाओं के जैसे अस्त्र शस्त्र उज्ज्वल थे वैसे ही उनके हृदय भी कपट कालिमा से रहित सूर्य्य की किरण जैसे उज्ज्वल थे। उन सूर और सामन्तों का पता एक छन्द में कविचन्द इस प्रकार लिखता है—

नम्बर	नाम	विरद	विशेष
१	कन्ह	नरनाह	पृथ्वीराज का चाचा सोमेश्वर का सगा भाई ।
२	गोइन्दराय	गहलौत	
३	सेनचन्द		मंडलीक का पुत्र जो कि शहाबुद्दीन की पहली लड़ाई में मारा गया था।
४	लंगरी राव		संयमाराय का पुत्र जो कि महोबे की लड़ाइ में बड़ी वीरता से काम आया था
५	देवराज	बग्गरी राय	
६	जाजराय		बग्गरी राय का पुत्र।
७	रणधीर प्रमार		जैतप्रमार का कोई भाई बेटा।
८	जैत प्रमार	सलखराय	आबू का राजा रानी इच्छिनी का भाई इस समय मंत्री था।
९	जामराय	जामजद्दो नांदोराय	
१०	प्रसंगराय खीची		
११	पज्जूनराय		कछवाहा 'जिस वंश में वर्तमान जैपूर राज्य है।
१२	वलिभद्र राय		पज्जूनराय के पुत्र।
१३	पाल्हन राय		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नं०	नाम	विरद	विशेष
१४	निड्डुर राय	कमधज्जराय	कन्नौज के राजा जैचन्द का भतीजा ।
१५	रामराय	बड़ गुज्जर	
१६	अत्ताताई		यह महादेव जी के वरदान से स्त्री से पुरुष हुआ था यह कथा आगे इसी समय में है ।
१७	गम्भीर सिंह		हाहुली हम्मीर का भाई ।
१८	नरसिंह		दाहिमा वंशी कैमास के भाई बेटों में से त्रिशूल चलाने में बड़ा निपुण था ।
१९	जंघारभीम	जोगी जंघारा	उदंड ब्रह्मचारी और शिव भक्त।
२०	उद्दिगपगार		
२१	चन्द्रसेन	चंदपुंडीर	पृथ्वीराज का साला रानी पुंडीरनी का भाई चहुवान ।
२२	वीर सिंह	नृसिंहवीर	
२३	हरसिंह		
२४	सारंग राय	चालुकराय	एक सोलंकी सरदार ।
२५	विंझराज		सारंग राय का भाई ।
२६	नागर राय	गौर राय	गोर या गौड़ चत्री ।
२७	दाहर राय		
२८	रामेरन		प्रमार
२९	रूपराय या रुवराय		दाहिमा
३०	भोंहा राय	धीर भोंहा	चन्देल
३१	कनकराय		राम राय के घराने का कोई सरदार ।
३२	कनकराय		दूसरा ।
३३	मालचन्देल		
३४	भानराय	भान भट्टी	
३५	सामलासूर	कमधुज्जराज	
३६	नृसिंह राय		मोहिल्ल राय का भाई ।
३७	देवराज	देवरा राय	पृथ्वीराज का भाई ।
३८	मंडली राव	महामंडली	
३९	धनूराव		पुंडीर वंश का कोई वीर ।
४०	पहार राय	तूअर राय	इसने शाह को पकड़ा यह डील डौल में सब सामंतों से सबल था-देखो पहाड़राय समय ।
४१	जुल्ह राय	जावलौ जल्ह	सौलंकी सरदार ।
४२	खेता खगार	बगरी बाघ	महोबा फतह होने पर यही बुन्देलखंड का सूबेदार नियत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नम्बर	नाम	विरद	विशेष
			हुआ था इसी से वहां खंगारों के राज्य की जड़ जमी जिसे बुंदेलों ने उखाड़ा। खेता के वंश के अब भी हजारों आदमी बुदेलखंड में हैं पर वे बुन्देलें राजों के साम्हनें छड़ी लेकर चलते हैं अर्थात् नकीब हैं।
४३	वीरम राय		दूसरा परिहार।
४४	रूपराय		
४५	सारंग राय	सारंग गानी	यह दूसरा सारंगराय है।
४६	भोजराज	वीरजादों	यादव वंशी।
४७	सांखुला सिंह	साँखुलासूर	
४८	सांमले सिंह	सामलासूर	
४९	विक्रम राय		कमधुज्ज।
५०	सादल्ल राय	सादल्लमोरी	मोरी चत्री या मौर्य्या वंशी
५१	ठंठरी राय		टांका चाहुवान (चहुवानों की चौबीस शाखाओं में से एक टांका है)
५२	सारन राय	सारन मोरी	
५३	जयसिंह	सिंघ चन्देल	
५४	बारू राय	बारू कंठीर	केहर कंठीर का भाई बेटा कोई।
५५	भीम राय	भीमजादो	
५६	पीपा राय	पीपपड़िहार	इसने एकबार शाह को पकड़ा था।
५७	देवराज		दूसरा।
५८	अचलेस राय	अचलेस	खीची।
५९	कचरा राय		पट्टनपुर के भोला भीम का पुत्र।
६०	नाहर राय		}परिहार।
६१	महन सिंह		
६२	भीम सिंह		मोरी
६३	लक्खन राय		आरजराय सौलंकी का पुत्र।
६४	पूरब राय		बघेला।
६५	तेलज्ज राय	डोडियाराय	पुरनराय प्रमार का पुत्र जिसका नाम इक्कीसवें समय में आया है।
६६	अचलेस भट्टी		
६७	चन्द्रसेन		परिहार।
६८	संग्राम सिंह		(दूसरा) बड़गुज्जर।
६९	विजेराय बघेला।		
७०	गोहिल्ल		कंठिया राय का पुत्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नम्बर	नाम	बिरद	विशेष
७१	लक्खन राय	चाच राय	
७२	रंघरी राय		(दूसरा) प्रमार।
७३	जैसिंह कमधुज्ज	पुंडरि वंशी।	
७४	पुंजपहार		
७५	भारथ राय		
७६	जागर राय		मल्हनास केहरी का पुत्र यह पहाड़ी किले की लड़ाई में बड़ा होशियार था।
७७	टाक चाटा		
७८	रावत राय		
७९	हरी देव		
८०	जाज राय		
८१	अहट्टी राय		दूसरा (यादव वंशी)
८२	हाहुली राय	हम्मीर	गम्भीर हम्मीर का पुत्र। स्मरण रहे कि जंबू में सूर्यवंशी राजा राज्य करते हैं संभव है कि हम्मीर भी सूर्य वंशी हों वे हाडा चौहान नहीं हो सकते क्योंकि उनकी बेटी को भी पृथ्वीराज का व्याहना भी लिखा है। जम्बू और काँगड़े परगने (कश्मीर) का राजा था।
८३	पुहकर राय		
८४	कन्हराज		दूसरा
८५	जंगली राव		दाहिमावंशी।
८६	पंचाइन राय		चाहुवान।
८७	रणवीर राय	रण राय	पहार राय का पुत्र।
८८	छग्गन		नरनाह कन्ह का एक सेवक।
८९	देवती राय		

इस सूचीके अनुसार १७ सामन्तों का फर्क पड़ता है क्यों कि कुल संख्या १०६ होनी चाहिए यहां केवल ८९ होते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज ने यमुना के किनारे पर एक मुकाम करके गुरुराम प्रोहित और प्रधान कर्मचारी मधुसाह को बुला कर आज्ञा दी कि सेना सहित वे दोनों दिल्लीगढ़ की रक्षा करें। निदान गुरुराम तो दिल्ली में रहा और उसका भाई वीठल देव राजा के साथ चला। सब सूर सामन्त तो राजा के साथ में थे ही तब तक सबके दस दस पांच पांच भाई बेटे भी सज बज कर पड़ाव पर आ गए। वहीं पर कविचन्द सबका अगुवा बना और राजा सहित सब सामन्त और सिपाहियों ने बेष बदल कर उसका अनुयायी होना स्वीकार किया। उसी समय अटाले के मालिक रनवीर परिहार को आज्ञा दी गई कि वह पेशखेमा लेकर आगे आगे चले और दूसरे पड़ाव के लिये अमुक स्थान पर भोजन पान का उचित प्रबन्ध कर रक्खे। राजा ने हयशाला के अफसर यानी रिसालदार जगमाल को हुकुम दिया कि वह सब सामन्तों की सवारी के लिये अच्छे अच्छे घोड़े हाजिर करे। निदान जगमाल ने भी मौका समझ कर सब सामन्तों को विल्हान खेत के घोड़े दिए। इस प्रकार राज्य-रक्षा का उचित प्रबन्ध करके दूसरे दिन एक प्रहर रात्रि रहते तय्यारी का डंका बजा और कविचन्द और सब सूर सामन्तों सहित पृथ्वीराज नांव पर से यमुना पार हुआ।

पृथ्वीराज के नांव पर सवार होते ही एक तो बड़ा भारी अशकुन यह हुआ कि संमुख छिद्रमय काला कलश देख पड़ा और जब वह जमुना पार होकर नांव पर से उतरने लगा तो उसे दूसरा एक अद्भुत और भयानक चरित्र और भी नजर आया। वह यह था कि एक अर्द्धंगी प्रतिमा सहसा संमुख आ खड़ी हुई। उसके मुख में तो मुस्कराहट थी, परन्तु क्रोध के कारण उसके नेत्र अंगारे से लाल हो रहे थे, और उसके हृदय पर कमल कनेर और सिरस के फूलों की माला लटक रही थी। उसके बाएँ अंग के सब आभरण सोने के थे परन्तु दाहिने अंग के सब आभरण लोहे के थे। उसके आधे सिर के बालों का जूड़ा बँधा हुआ था पर आधे बाल खुले हुए थे। जूड़े वाले भाग पर मोतियों की माला रूल रही थी और खुले केशों पर लोह की सांकर लटक रही थी। उसकी दाहिनी आंख में कज्जल लगा हुआ था पर बाईं में कुछ भी नहीं और उसके नयनों से सर्प की सी फुंकार निकल रही थी। उसके बाएं अंग का आवरण तो पीत पट था परन्तु दहिने अंग का वस्त्र कौवे से भी काला था। उसके बाएँ पैर में जेहर और पायजेब पहिना हुआ था और उस पैर से वह मत्त गयंद की चाल चलती थी परन्तु दाहिने पैर में लोह की सांकल थी और उसका वह पैर कदापि थिर नहीं रहता था। इस प्रकार कभी हँसती कभी रोती, तांडव नृत्य करती उस भयानक भेष अर्द्धाङ्गी प्रतिमा को देख कर अत्यन्त आश्चर्यान्वित होकर पृथ्वीराज ने कविचन्द से पूछा कि कहो तो इसका क्या तात्पर्य्य है। तब कविचन्द बोला कि सम्भरीनाथ यह आपको देवी के दर्शन हुए हैं और इस अर्द्धाङ्ग स्वरूप से यह अभिप्राय है कि आप शीघ्रही शत्रु का दर्प चूर्ण करके अपनी प्रिया संयोगिता के पति होइएगा।

पृथ्वीराज ने कहा कविचन्द तुम चौदहो विद्याओं में दक्ष देवी से वरदान पाए हुए वर्दाई कवि हो। इस समय तुम मुझे यात्रा के सब शुभ अशुभ तो कह सुनाओ। इस पर कविचन्द बोला महाराज सुनिए दाहिने हो अथवा बाएँ परन्तु समतल पर बैठी हुई (१)देवी सदैव शुभ है। उसके दर्शन से यात्री सहज ही सफल मनोरथ होता है। यदि वह दाहने बाजू के किसी वृक्ष पर बैठ कर दो या तीन आवाजें दें तो मानो वह पथिक की यात्रा में स्वयं बांधा देकर उसे जाने से रोकती है। यदि वह मंडल बांध कर उड़ती हो और रास्ता काट कर बाएँ से दहिने जाय तो शुभ है और

(१) "देवी" एक चिड़िया का नाम है। आज कल इस चिड़िया को शामा या स्यामा कहते हैं। यह सर पैर से बिलकुल काली होती है उसकी पूँछ लम्बी और चोंच बारीक होती है। शिकारी और डांकू लोग अब भी इस चिड़िया की बोली से बड़े मतलब निकालते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसी समय एक से तीन तक जितने शब्द करे उतनी ही अधिक कार्य्यसिद्धि समझनी चाहिए। परन्तु यदि कहीं दहिने से बाएँ जाय तो महान अशकुन जानिए। उस अवस्था में उसका बांई ओर बोलना घात सूचक है। यदि कहीं तीन बोली लगातार बोले तो समझनी चाहिए कि यात्री की अवश्य मृत्यु होगी। परन्तु यदि ऊंचे स्थान पर बैठी हो तो उतनी ही अधिक कार्य्य-सिद्धि समझनी चाहिए। उसका बांई ओर होना अरिष्ट या द्वेष सूचक है पर दहिनी ओर सिद्धि सूचक है। यदि वह थूहड़ सेंहुसं पाफनी आदि कांटेदार वृक्ष या कोयले के ढेर अथवा किसी सूखे हुए वृक्ष के ठूठे पर बैठ कर शब्द करे या उससे उतर कर बोले तो समझना चाहिए कि कोई खेद की बात तो नहीं पर कार्य्य सिद्धि की भी कोई आशा न रखनी चाहिए। यदि हो भी तो ऐसी वैसी।

यदि तीतर, खर, नाहर, जबुंक, सारस, चील्ह, चातिग, उलूक, बन्दर, मोर, सुआ, बांएं मिलें तो शुभ हैं, परन्तु यदि दहाड़ता हुआ सिंह दहिने हो तो अत्यन्त शुभ सूचक समझना चाहिए। परन्तु कार्य्य में भय की संभावना अवश्य होती है। यदि तीन पांच या सात मृगी मृग के साथ चरती हुई दहिनी ओर मिलें तो परम शुभ है परन्तु यदि सूर्य्यास्त के समय काला मृग अकेला मिले तो उसे साक्षात् यम का स्वरूप समझना चाहिए। यदि काम सफल भी होगया हो तो भी सब चौपट हो जाय और यात्री की जान पर आबने। इसी प्रकार बांई ओर गर्जना करते हुए सिंह का भी फल जानना चाहिए। यदि कहीं चात्रक, बगुला, बाज, भारद्वाज, चौर, छत्र, बजती, हुई वीणा, दूर्वा, दही, गंगाजल, धनुष, कलार, वेश्या, हाथी, सारस, चूहा, करभ, गोधह, सर्प, अंगारे वा भस्म, गुड़, लवण, मठा, प्रवरज्ज, अंधा, खुले केश, वाला या गधे पर चढ़ा हुआ पुरुष आदि दहिनी ओर मिलें तो उन्हें पांच प्रणामें कर ले बस फिर सब सिद्ध है। वनविलाव, घूघू, पटत परेवा, पंडूक, या पिंडुकी ये चिड़ियां दहिने मिलें तो अशुभ हैं और यदि दोनों हाथ में घड़े लिए गधे पर चढ़ा हुआ कुम्हार बिलकुल नंगे सिर या सिर पर बोझ लिए हुए मिले तो समझना चाहिए कि अवश्य कुछ न कुछ फिसाद खड़ा होगा। यदि चलते समय श्याम वर्ण बिना तिलक का ब्राह्मण, विभूत हीन योगी साम्हने आजाय तो तुरन्तही यात्रा बन्द करदे। सिर पर दहिनी तरफ कोई पक्षी बोले और बाएँ स्यार बोले अथवा साम्हने शव की रथी आती मिले तो सर्व सिद्धि समझनी चाहिए। भरे हुए कलस, उज्ज्वल वस्त्र वाला, दिया, अग्नि, मछली, यात्रा के समय नजर पड़ जांय तो इस से भला और शुभ क्या होगा। और भी सजी हुई राजा की फौज, दहाड़ता हुआ सिंह, खुरी करता हुआ मृग दाहिने देख पड़े तो भी अत्यन्त शुभ समझिए। सिर पर शब्द करते हुए बद्दलों को फाड़कर सूर्य्य निकल रहा हो तो उस समय अवश्यही यात्रा या अन्य कोई कार्य्य आरंभ करे उसके सिद्ध होने में कदापि संदेह नहीं इत्यादि।

कविचन्द योंही कह रहा था तबतक राजा ने हँसकर पूछा क्यों और यदि मद सहित साम्हने आता हुआ कलार मिले तब? कविचन्द बोला कि तब क्या रक्तपात हो, सैकड़ों मारे पड़ें और सैकड़ों विजय का डंका बजाते हुए घर बैठ कर आनंद उड़ावें। इसी बीच में राजा को सहसा कैमास का स्मरण आगया जिससे उसका चित्त विह्वल सा हो गया। वह एक हाय मारकर चुप रह गया। उसके मुँह से केवल इतने शब्द निकले "हा" इस जीतब में क्या है? मरनाही सार है। क्षण एक में उसने कुछ सम्हल कर कहा मेरे सामन्तों इस में तो कोई सन्देह नहीं कि तुम सच्चे परोपकारी हो मेरे काम पर प्राण न्योछावर करने को उद्यत हो तिस पर भी गंगा के किनारे धारा क्षेत्र में प्राण देना परम कल्याण कारी है। राजा का ऐसा कुछ दुचित्ता चित्त देख कर कविचंद ने उसे बातों में लगा लिया। चैत्र मास के कुसुमित बन की शोभा का आनन्द लेते हुए सब लोग रास्ता ते करने लगे। पृथ्वीराज थोड़ी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही दूर चला होगा कि साम्हने मौर बांधे हुए दुल्हा मिला इसके साथ में उसकी नव दुलहिन भी थी। सूर्योदय होतेही यह शकुन देख कर सब का दिल दंग हो गया। यहां पृथ्वीराज घोड़े पर से उतर पड़ा और एक दो घड़ी के लिये सब लोग एक जगह बैठ गए। साथ के जांगड़े लोग सिन्दूरिया राग की अलापचारी करने लगे। इसके बाद ज्योंही राजा ने चलने की इच्छा करके रकाब पर पैर दिया कि बाईं तरफ श्यामा ने शब्द किया और वृक्ष पर से उतर कर पृथ्वी पर आन बैठी। यह देखकर सबके मन में एक प्रकार का संशय सा हो गया। तब तक साम्हने एक काला मृग भी देख पड़ा, जिसे राजा ने बाण से मार गिराया। इस पर राजा दो घड़ी के लिये और ठहर गया। परन्तु ज्योंही फिर से चलने को तय्यार हुआ कि साम्हने एक योगिनी के दर्शन हुए। उस योगिनी के एक हाथ में त्रिशूल और एक में खप्पर था। पृथ्वीराज ने उसे देखतेही कुछ स्वर्ण उसके खप्पर में डाला और उसे विनीत भाव से प्रणाम करके आगे को यात्रा की। तदनुसार उसके सामन्तों ने भी घोड़ों की बाग उठाई। निदान प्रहर दिन चढ़ते चढ़ते पृथ्वीराज ने दिल्ली से ३२ कोस पर झसाम नामक स्थान पर दूसरा मुकाम जा किया।

कहने को दूसरा पड़ाव था परन्तु दिल्ली से बाहर होने पर यह पहिला ही पड़ाव था। ज्यों ही पृथ्वीराज पड़ाव के पास पहुंचा कि सिर पर पांच घड़ा रक्खे हुए एक स्त्री मिली। पृथ्वीराज को देख कर वह स्त्री जैजैकार करती हुई दाहिने से बांए को चली गई। दस कदम आगे चलने पर बाईं ओर गर्जता हुआ सिंह मिला। मास का लोथड़ा लिए हुए चील्ह और बांई ओर बोलता हुआ सारस का जोड़ा भी नजर पड़ा। रास्ते के पासही एक छोटा सा गांव था। उसी गांव में एक नट नजरबन्द तमासा कर रहा था। वह नट सब के देखते देखते बांस पर चढ़ गया वहां से उसके अंग प्रत्यंग कट कट कर गिरने लगे थोड़ी देर में उसका धड़ भी पृथ्वी पर गिर कर थर थर कांपने लगा। यह चरित्र देख कर सब सामन्तों के मन में शंका और भय ने स्थान पा लिया।

खास खास लोगों के सिवाय और सिपाहियों को यह अबतक मालूम न था कि कहां जा रहे हैं। एक कहता किसी तीर्थ को जा रहे हैं। दूसरा कहता भाई कहां है वह तीर्थ, वहां किस देवता के दर्शन होंगे? तब तक नरनाह कन्ह ने जैत राव से कहा "तुम राजा को रोको" जैतराव बोला "मैं क्या करूं, मैं पहिलेही अपना सा सिर पीट चुका हूं।" पज्जूनराव बोला "भाई साहब यह सब भटवा की करतूत है कन्नौज पहुंच कर देखना यही दृश्य सच्चा होकर आगे आवेगा। तब कन्ह ने कहा "सुनो कूरंभ राव! सोच विचार करने से क्या होता है जो कुछ होनहार होगी सो तो अवश्य ही होगा। सब ने हजार समझाया पर युधिष्ठिर ने एक न माना और दुर्योधन के साथ जुआ खेला पर खेला। लक्ष्मण के रोकते हुए भी रामचन्द्र स्वर्ण मृग के पीछे दौड़ गए; मंत्रियों के मना करने पर भी रावण ने सीता को रामचन्द्र जी को वापिस न दिया। यदुवंशियों ने जान बूझकर दुर्वासा ऋषि का शाप लिया इसी प्रकार इस पृथ्वीराज ने कैमास ऐसे मन्त्री को मार कर और चामंडराय के पैरों में बेड़ी भरकर सब सामन्तों का जी खट्टा कर दिया। इससे स्पष्ट होता है कि कोई विशेष होनहार की घड़ी आ पहुंची है और वही होनहार राजा के चित्त में बस कर उससे यह सब अनर्थ करवा रही है। इन सगुन असगुनों को राजा क्या स्वयं नहीं जानता। जानता है। पर होनहार के वश होकर उसके विरुद्ध कुछ कर नहीं सकता। चलते समय ही इसे सबने अपना सा कहा सुना पर किसी की न मानी और चल पड़ा। हम लोगों को क्या। इस नश्वर शरीर को सदा नहीं रहना है यदि इस तरह से काम आवेंगे तो उधर हमारी आत्मा परमात्मा में मिलेगी इधर कवि लोग सुयश बखान करेंगे। बस फिर क्या आप मरे जग डूबा। राजा की राजा जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर इतना हम फिर भी कहेंगे कि इसकी होनहार कुछ बुरी है।"

पड़ाव पर बनवीर पड़िहार ने रसोंई की सामग्री तथा अन्य सब आवश्यक सरंजाम प्रस्तुत कर रक्खा था। सब साथियों सहित पड़ाव पर पहुंच कर राजा ने स्नान ध्यान किया और भोजन प्रसाद करके वह फिर से चल पड़ा। यहां से सेना की चाल नियम बद्ध की गई और सब सूर सामन्तों को अपनी अपनी हुकूमत और काम का हिस्सा बांट दिया गया। प्रत्येक सामंत के तावे में सौ सौ सवार किए गए, दस सामन्तों प्रति एक एक वीर और दो दो वीर पर एक एक जितेन्द्रिय शूर नियत किए गए। पृथ्वीराज स्वयं सब सेना का अगुआ हुआ। आगे आगे पृथ्वीराज वाराह सा और उसके पीछे सब सैनिक * दार से चले जाते थे। प्रचण्ड चण्डी, उन्मत्त स्वरूप दंडधारी भैरव और उसके साथी कविचन्द के सिद्ध किए हुए ५२ वीर चौसठों योगिनी और और भी अनेकों भूत प्रेत वेतालादि नाना प्रकार के भयावन और वीभत्स शब्द करते हुए गाते बजाते नाचते और ताल ठोंकते हुए पृथ्वीराज की सेना में चले जाते थे। उसके सिपाही और सामन्त लोग भी तो एक प्रकार के निर्भय भूत ही थे। उन्हे सांसारिक माया मोह से मानो कुछ प्रयोजन ही न था। एक दम मरना मारनाही उनका व्यवसाय था। अस्तु सूर्य्य के समान तेजस्वी राजा पृथ्वीराज के पीछे वे लोग किरणों की तरह चले जाते थे। शत्रु रूपी अंधकार को विदार देने के लिये पृथ्वीराज साक्षात् सूर्य्य के समान था, तब उसके सामन्त सिपाही सूर्य्य किरण हुआ ही चाहें। निदान रात्रिभर में उन्होंने बीस कोस की मंजिल तै की और सूर्य्योदय के समय वे अपने मेंडे से अड़र कर कन्नौज राज्य की सरहद में जा पहुंचे।

रात्रि का शेषांश वहीं पर बिताया गया। प्रातः ज्यों ही अरुणोदय हुआ कमलों की कली खुली, देवालयों में शंख झालरें बजीं कि इधर फिर से सामन्तों के घोड़े सजे गए। पूर्व्व दिशा में भाष्कर भगवान के दर्शन होतेही पृथ्वी और आकाश पर सर्वत्र एक विलक्षण आनंदमय आभा छा जाती है। जलाशयों में पुरैन के पत्ते जल से विलग होने लगते हैं, कमल कली से निकल कर भ्रमर अपनी भौंरियों से मिलते है, लंपट पुरुष मन मलिन होते हुए शैय्या से उठते हैं और तमचर समूह व्यवसाय से रहित हो कर निद्रा में प्रवृत्त होते हैं। हालही में छिटके हुए कमल पुष्पों के पराग मय क्लान्त चित्त पुरुषों को भी आनंद देने वाली मन्द मन्द वायु बहती है और संयोग सुख में मग्न मन चक्रवाक् कल्लोलें करते हुए कल कल शब्द करते हैं। इसी समय सामन्तों सहित राजा पृथ्वीराज ने घोड़े की बाग उठाई। उस राजपूत सेना के अश्वों की खुर खेह से उड़ती हुई धूलि आकाश में आच्छादित होकर बदली सी उनै आई और प्रातःकाल की त्रिविध पवन वेग मय होकर सरसराटे भरने लगी।

पृथ्वीराज पड़ाव पर से अभी दस कदम भी न गया होगा कि सम्मुख एक देव के दर्शन हुए। वह देव सर्वाङ्ग विभूति रमाए और जटा लटकाए हुए था। उसके साथ में इधर उधर चलते हुए बहुत से कुत्ते भी थे। उसके दोनों नेत्र आग के से अंगारे दबदमा रहे थे और हृदय पर गुंजा की माला लटक रही थी। उसका हृदय लाल काला नीला और पीले रंग का था। उसके बांहु कुछ सिन्दुरिये और शर्वती थे। उसकी कंबुवत ग्रीवा ऐन पीली थी उसके कान श्वेत थे, भौंहे भूरी थीं और उसके ललाट पट से केसरिया रंग की आभा झलकती थी। इसी प्रकार उसके पैर भी चार रंग के थे और उसके नखों से श्याम घन की सी नीलमा दमदमा रही थी

---

* जंगली सुअरों के ऐसे झुंड को जिसमें नर मादा बच्चे वगैरह सब हों "दार" कहते हैं। प्रत्येक दार का मुखिया एक बड़ा जंगी सुअर होता है जिसे बाराह कहते हैं। जिस तरफ को बाराह जाता है उसी के पीछे पीछे दार के सब सुअर चले जाते हैं। मजा यह है कि अगर वाराह कूएं में गिर पड़े तो दार के सब सुअर उसी कूएं में गिरते जांयगे। जब तक कि कुआं भर कर पट न जाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देव का यह चित्र विचित्र स्वरूप देख कर सब
त और पृथ्वीराज तो चुप रह गए । परन्तु
चन्द ने आगे बढ़ कर उसके सम्मुख शीश
या और उसने कवि को आशीर्वाद दिया।
करा कर आशीर्वाद देते समय सबने देखा कि
की जिन्हा भी दो रंग की थी। कविचन्द ने उस
से बड़े नम्र भाव से पूछा हे समस्त भूत प्रेत और
दलों के स्वामी आज कहां की यात्रा हुई है ।
पर उसने उत्तर दिया कि सतयुग में मेरे पिता ने
त होकर त्रिपुरा सुर से युद्ध किया था, त्रेता में
राम ने लंका पर आक्रमण किया था, द्वापर
रशुराम और सहस्राबाहु से युद्ध हुआ था ।
लियुग में चहुआन और कमधुज्ज कुल का
होनेवाला है। रानी जुन्हाई के गर्भ से जन्मी
की कन्या संयोगिता साचात् कलहप्रिया
ख्यात होगी। उसके हेतु उसके पति और
नों का बंश नाश होगा। इस समय उसी
ग ग्रहण होनेवाला है सो मैं वही देखने जा
हूं। वहां से सच्चे शूर वीर राजपूत योद्धाओं
र लाकर शिव जी को दूंगा और मैं वहां के
नय का प्रत्यक्ष आनन्द लूंगा । देव के ऐसे
न सुन कर कविचन्द और पृथ्वीराज दोनों
दूसरे की तरफ देख कर मुस्कराए।

पृथ्वीराज ने कहा आज भोर के पहर की बात
मैं खूब गहरी नीद में था कि पूर्व्व दिशा में मुझे
प्रकाश देख पड़ा। चणेक में वह प्रकाश पश्चिम
में जाकर सहसा लोप होगया। बस मेरी नींद
गई परन्तु सर्वथा नहीं कुछ उनींदी अवस्था में
ो देखता क्या हूं कि एक कुसम सरीखे लाल
ली कामिनी मेरे सम्मुख आ उपस्थित हुई ।
से सँवारी पटियों पर पड़ी हुई दुलरी
की दावनी ऐसी मालूम होती थी मानो
सर्प का ग्रास किए हो और उसके ललाट
केशर का तिलक और रोली की आड़
त थी। उसके कानों के कुंडल सूर्य्य की सी
झलझला रहे थे और उसकी वक्र भौंहें
साचात् मीनकेतु की सी कमानें थी। उसके बड़े
बड़े चंचल नेत्र ऐसे देदीप्यमान थे जैसे स्वेत
कमल की कली में मकरन्द कल्लोलें कर रहा हो।
उसकी सुग्गे की सी नासिका में रूलता हुआ
बुलाक का मोती शुक्र एवं सोम का सा रस भासित
होता था। उसके काम के केलि-आलय से कपोलों पर
लटकती हुई लट सर्पिणी सी और मृदुमुसक्यान
से उसके उज्ज्वल अनार के दाने से दांत साचात्
दामिनी से दमकते थे उसकी चिबुक पर का तिल
गदूले के फूल पर अलिशावक सा बैठा
हुआ जान पड़ता था। उसकी कंबुवत् ग्रीवा चंप-
कली सी अंगुलियां गुलाब से नख अद्भुत छवि छटा
छाते थे। उसके कमल कली से नवीन उरोजो
वाले वक्षस्थल पर हिलता हुआ मोतियों का हार
हरद्वार में गंगा जी की सी बहार देता था। उसकी
शेर की सी पतली कमर स्वर्ण खम्भ से जंघा सुढार
पिंडुली और नारंगी सी एडी इत्यादि उसके अंग
प्रत्यंग की शोभा सहजही देखने वाले का दिल
लुभा लेने वाली थीं । मैंने देखतेही उससे पूछा ?
तुम कौन हो ? किसकी लड़की हो ? और किसकी
स्त्री हो। इस पर उसने उत्तर दिया कि मैं कन्नौज के
राजा जैचन्द की जाई हूं और तुम्हारे पास आई हूं।
मैं पूर्व्व जन्म की मंजुघोषा अप्सरा हूं, सुमंत ऋषि के
शाप बस मुझे मनुष्य शरीर धारण करना पड़ा है।
मेरा नाम कलहप्रिया है क्योंकि मैं पिता पति
दोनों का वंश नाश करके तब स्वर्ग को जाऊंगी।
इसमें जरा भी असत्य न समझिए। मैंने आपसे
यह अतीव गुप्त भेद कह दिया है । इसपर
कविचन्द ने उत्तर दिया सत्य तो है जो कुछ उसने
कहा वह सब विश्वसनीय है।

कलह केलि के लिये सदैव सन्नद्ध अपने भार से
शेष नाग को शंकित करने वाली कन्नौज को जाती
हुई चहुआन सेना में एक से एक बानेत राजपूत
थे। वे सब लोग अपने अपने इष्ट देवताओं का स्मरण
करते हुए अपने शीश योगिनियों के हाथ में देने
के लिये और अपने रुधिर से उनके खप्पर भरने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के लिये तन मन से तैय्यार थे। उपरोक्त देव के मुख से भविष्य की होनहार जानकर उनका जराभी मन मैला न हुआ । वरन वे इससे और भी प्रसन्न थे कि एक तो स्वामि सेवा में गंगा के किनारे मरना दूसरे संसार में अमर यश स्थापित होना एक पंथ दो काज बस फिर हमें चाहिए क्या । एक राजपूत बच्चे के लिये इससे अधिक आनन्द प्रद और क्या बात होगी । पृथ्वीराज की सेना के साथ चलते हुए भूत वैतालों के राजा उस देव ने कविचन्द को आशीर्वाद दे कर एक वाण भी दिया और कहा कि इसे पृथ्वीराज को दे दो । वह इस बाण के बल से शत्रु समूह का नाश करके सकुशल संयोगिता से व्याह कर सकेगा । यह वही बाण है जिससे भगवती ने महिषासुर को मारा, राम ने रावण को संहारा, पारथ ने भारथ का युद्ध जीता और शिवजी ने त्रिपुरासुर का नाश किया ।

इतना कहकर देवता अन्तर्ध्यान हो गया । और उस बन प्रान्त को कंपायमान करती हुई चहुआन सेना आगे बढ़ी । तब तक देखते क्या हैं कि दुष्टों को दंड देकर आरतों के त्राणकर्त्ता त्रिनेत्र त्रिपुरारि श्रीशिव जी सर्वाङ्ग विभूति रमाए बड़े बड़े जटा लटकाए बूढा बैल पर चढ़े हुए चले आरहे हैं । उस भव के भव विभव पराभव कारी विभूति प्रिय विश्वंभर भोलानाथ के शीश पर गंगा थी, गले में गरल था और उनका अंग आवरण एक गज चर्म था । शिवजी को देखतेही सबके सब घोड़ों पर से उतर पड़े और पृथ्वीराज दौड़ कर उनके पैरों पर साष्टांग पड़ गया। इस पर शिवजी ने उसके पीठ पर हाथ रक्खा और कहा कि पृथ्वीराज तू अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा । यह कहकर और विभूति दे कर शिवजी अन्तर्ध्यान हो गए । शिवजी के विदा होने पर चार पैंड भी न चलें होंगे कि एक अत्यन्त तेजस्वी ब्राह्मण नरनाह कन्ह के सम्मुख आकर खड़ा होगया। उसे देखते ही कन्ह की आंखों के पट्टे आपही आप खुल पड़े । कन्ह उस उज्ज्वल मूर्ति ब्राह्मण के चरणों पर गिर पड़ा । उसने कन्ह के सिर पर हाथ फेर कर कहा युद्ध विद्या में अद्वितीय दक्ष, सदा यशस्वी मेरे अंश से उत्पन्न कन्ह अ... मेरा तेरा साक्षात् सूर्यमंडल में होगा[१] । इतना कह कर वह ब्राह्मण भी अन्तर्ध्यान हो गया। इसके बाद पृथ्वीराज कोई एक योजन मात्र गया होगा कि एक घन एवं पर्व्वत के समान भीष्म काय विद्युत के समान तेजमान नाना रंग की वैरखें और झंडियों से विभूषित एक बड़ी भारी देवमूर्ति दे... पड़ी । उसके साथ में भिन्न भिन्न बाजों की ध्वनि ... मुखताल बजाते हुए अगनित भूत वैताल भी थे। य... देख कर पृथ्वीराज ने राजमन्त्री जैतराव की तर... देखा । तब कविचन्द बोला "यह हनुमान जी ... यह कह कर कविचन्द आगे हो कर बोला "... वर आपके स्वरूप और बल का कौन पार पा स... है । हम मन्द बुद्धि मनुष्य आपकी महिमा को ... जाने । कृपा कर साधारण स्वरूप धारण कीजिये ... हनुमानजी के अन्तर्ध्यान होतेही स्वर्ण के ... भुजावाले धूम्रवर्ण सहस्रबाहु की प्रतिमूर्ति के दर्श... हुए । उसके नेत्रों से अग्नि की सी चिनगारि... छूट रही थीं उसकी हजार हथेरी साक्षात् शेर ... पंजे थे । कंधे पर धनुष और शीश पर ध्वजा फह... रही थी-उसके साथ में एक ओर डाकिनी और ... ओर शेर शोर कर रहे थे । निदान उसने भीमका... लंगोट बन्द लंगरीराय के पास जाकर उसके शीश प... हाथ दिया और आशीर्वाद देकर वह भी अन्तर्ध्यान हो गया । वहां से एक योजन आगे जाने पर उ... वर्ण सात सूंड़ें और हजार दांत वाले भद्र जा... एरावत नामक दंती पर सवार सूर्य्य के समान ... धारी इन्द्र ने आकर गोइन्दराय के सिर को ... किया और कहा कि अब मैं तुमसे स्वर्ग में मि... कुछ दूर और आगे जाने पर एक बावली के ... नारे एक बट वृक्ष मिला । इस बट वृक्ष में एक ... थी जिसमें से सूर्य्य के समान एक अद्वितीय

(१) तुम हम मंडल रवि मिलन-यहां पर ... गया है कि कन्ह का सूर्य्य का इष्ट था । इसी तरह आगे भी सब सामन्तों के इष्ट देवों की सूचना दी गई है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना ।

निम्न लिखित पुस्तकें "सेक्रेटरी नागरीप्रचारिणी सभा, बनारस सिटी" को लिखने से मिल सकती हैं ।

	मूल्य	डांकव्यय
मलिक मुहम्मद की अखरावट	।=)	)॥
कविवर बिहारीलाल-(बाबू राधाकृष्णदास रचित) ...	=)	)॥
हिन्दी भाषा के सामयिक पत्रों का इतिहास (बाबू राधाकृष्णदास रचित)	।)	)॥
समालोचना-(पण्डित गंगाप्रसाद अग्निहोत्री द्वारा अनुवादित) ...	=)	)॥
समालोचनादर्श--पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित) ...	≡)	)॥
कर्त्तव्याकर्तव्यशास्त्र- (पण्डित नारायण पांडे रचित) ...	॥)	-)
[illegible]चिका चिकित्सा	।)	)॥
[illegible]धन्द्र-पद्य-(बाबू जगन्नाथ दास रचित)	=)	)॥
[illegible]दुगीता-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित) ...	।-)	)॥
[illegible]लो-(बाबू गदाधरसिंह द्वारा अनुवादित)	≡)	)॥
नागरीप्रचारिणी पत्रिका (सभा द्वारा सम्पादित) १२ भाग छप चुके हैं (आठवां भाग नहीं है) मूल्य-प्रति भाग	१)	-)
[illegible]दी लेकचर-(बाबू हरिश्चन्द्र रचित)	-)	)॥
ध्रुवदास की भक्तनामावली, टिप्पणी सहित	॥≡)	-)
सदलमिश्र की चन्द्रावती	।-)	)॥
सूदन कवि का सुजानचरित्र	२)	=)
लाल कवि का छत्रप्रकाश	१।)	-)
नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी	।=)	)॥
प्राचीन-लेख-मणि-माला-१ भाग (बाबू श्यामसुन्दर दास लिखित) ...	१)	-)
अशोक का जीवनचरित्र (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित) ...	।)	)॥
नेपाल का इतिहास (पण्डित नारायण पांडे लिखित)	।-)	)॥
पृथ्वीराजरासो-पहिला भाग (समय १-११)	४)	।)
„ दूसरा-तीसरा भाग (समय १२-५४)	१०)	॥)
कुमारसम्भवसार (पण्डित महावीर प्रसाद द्विवेदी द्वारा अनुवादित) ...	≡)	)॥
श्री[illegible]र का जंगनामा	॥।)	-)
रामपद (ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा लिखित)	॥)	-)
सभा के पुस्तकालय की सूची	=)	)॥
ज्योतिविज्ञान (पण्डित गणपत जानकी राम दूबे लिखित)	॥)	-)
चन्द्रशेखर का हम्मीर हठ	॥)	)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महिलामृदुवाणी (मुंशी देवीप्रसाद लिखित)	१)	-)
दादूदयाल की बानी	१॥।)	=)
कवि नूरमुहम्मद की इन्द्रावती १ भाग	१॥)	=)
यूरोपीय दर्शन (पण्डित रामावतार पांडेय लिखित)	॥।)	-)
प्रबोधचन्द्रिका	॥।)	-)
विरहलीला—आनन्दघन	=)	)॥
दादूदयाल का सबद	१।)	=)
जोधराज का हम्मीररासो	२)	≡)
सरल व्यायाम (बाबू कालिदास लिखित)	।=)	-)
सुघड़ दर्जिन (बाबू ठाकुर प्रसाद लिखित)	॥।)	-)
पद्माकर कृत हिम्मतबहादुर विरदावली	॥=)	)॥
वनिताविनोद	१)	=)
नवीन दृष्टि में प्रवीन भारत	१)	-)
गीतावली	।)	)॥
योगदर्शन	२)	-)
गुरु गीता	।)	)॥
रामचरितमानस	८)	॥।)

नोट—ऊपर लिखी पुस्तकों में से अन्त की ७ पुस्तकों को छोड़कर शेष पुस्तकें ३ मूल्य पर काशी नागरीप्रचारिणी सभा के सभासदों को मिल सकती हैं। अन्तिम पुस्तक मूल्य सभासदों के लिये ६॥) रु० है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

६१ 2 II पुस्तकालय ६८ २४२ II
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

पुस्तक वितरण की तिथि नीचे अङ्कित है । इस तिथि सहित १५ वें दिन तक यह पुस्तक पुस्तकालय में वापिस आ जानी चाहिए अन्यथा .६ नये पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा ।

- 4 DEC 1964
- 5 MAY 1973
31 JUL 1973

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri